☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

बारवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

1 १२

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
२३ चेत २०१६ बिक्रमी	अरजण सिँघ दे गृह	बलौच पुरा	करनाल	०१
२३ चेत २०१६ बिक्रमी	ठाकर सिँघ दे गृह	नानक पुरा	करनाल	१०
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	भान सिँघ दे गृह	नानक पुरा	करनाल	१५
२४ चेत २०१६ बिक्रमी	जरनैल सिँघ दे गृह	शाहवाला	फिरोज़पुर	१६
२५ चेत २०१६ बिक्रमी	नछत्तर सिँघ दे गृह	शाहवाला	फिरोज़पुर	२५
२५ चेत २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	शाहवाला	फिरोज़पुर	३०
२५ चेत २०१६ बिक्रमी	करनैल सिँघ दे गृह	शाहवाला	फिरोज़पुर	३३
२५ चेत २०१६ बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	मनावां	फिरोज़पुर	३६
२६ चेत २०१६ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	मनावां	फिरोज़पुर	४८
२६ चेत २०१६ बिक्रमी	बलवंत सिँघ दे गृह	तलवंडी जले खां	फिरोज़पुर	४६
२६ चेत २०१६ बिक्रमी	राम सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर छाउणी	फिरोज़पुर	५०
२७ चेत २०१६ बिक्रमी	सलक्खण सिँघ दे गृह	रुकना मुंगला	फिरोज़पुर	६०
२६ चेत २०१६ बिक्रमी	सुरजण सिँघ दे गृह	रुकना मुंगला	फिरोज़पुर	६०
१ विसाख २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६३
२ विसाख २०१६ बिक्रमी	गुरनाम सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	७६
३ विसाख २०१६ बिक्रमी	हरनाम कौर दे गृह	वेरका	अमृतसर	६०
३ विसाख २०१६ बिक्रमी	पशौरा सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	६२
३ विसाख २०१६ बिक्रमी	मनजीत सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	६७
३ विसाख २०१६ बिक्रमी		पडोरी वड़ैच	अमृतसर	१०२
४ विसाख २०१६ बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	दबुरजी	अमृतसर	१११

1 १२

४ विसाख २०१६ बिक्रमी बख़शीश सिँघ दे गृह	कादराबाद	अमृतसर	११५
४ विसाख २०१६ बिक्रमी बूआ सिँघ दे गृह	बलपुरीआ	अमृतसर	११५
१ जेठ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१२०
६ जेठ २०१६ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	१३५
६ जेठ २०१६ बिक्रमी चेला सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	१३६
१० जेठ २०१६ बिक्रमी प्रकाश चंद दे गृह	जम्मू	जम्मू	१४२
१० जेठ २०१६ बिक्रमी सद्दरो देवी दे गृह	दुमाणा	जम्मू	१४५
१० जेठ २०१६ बिक्रमी करम देई दे गृह	करंघील	जम्मू	१४७
१० जेठ २०१६ बिक्रमी तेज भान दे गृह	शेख़सर	जम्मू	१४८
११ जेठ २०१६ बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह	शेख़सर	जम्मू	१५०
११ जेठ २०१६ बिक्रमी फरंगी राम दे गृह	तूतां वाली	जम्मू	१५३
११ जेठ २०१६ बिक्रमी ज्ञान चंद दे गृह	तूतां वाली	जम्मू	१५५
११ जेठ २०१६ बिक्रमी शांती देवी दे गृह	तूतां वाली	जम्मू	१५५
११ जेठ २०१६ बिक्रमी शाहणी दे गृह	तूतां वाली	जम्मू	१५६
११ जेठ २०१६ बिक्रमी गूड़ा राम दे गृह	तूतां वाली	जम्मू	१५७
१२ जेठ २०१६ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह	शेख़सर	जम्मू	१६०
१२ जेठ २०१६ बिक्रमी तेज भान दे गृह	शेख़सर	जम्मू	१६१
१२ जेठ २०१६ बिक्रमी राम चंद दे गृह देवा	शेख़सर	जम्मू	१६२
१२ जेठ २०१६ बिक्रमी पिप्पल थल्ले	मलूकां वाली	जम्मू	१६४
१२ जेठ २०१६ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह	सरदारी	जम्मू	१६४
१३ जेठ २०१६ बिक्रमी कत्था सिँघ दे गृह	मोयल	जम्मू	१६७
१३ जेठ २०१६ बिक्रमी सोभा सिँघ दे गृह	मोयल	जम्मू	१७१

2
१२

१३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	देवा सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१७४
१४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	रूड़ सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१७६
१४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१७८
१४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१८०
१४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१८३
१५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	बचन सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१८५
१५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१८६
१५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	वकील सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१६१
१५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	अंगरेज सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१६५
१५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	मेला राम दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१६७
१५	जेठ	२०१६	बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	१६६
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	कुलवन्त सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	२०४
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	जगत सिँघ बेला सिँघ	धिंगाली	जम्मू	२०६
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	अमरनाथ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	२०६
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	२१०
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	मंगल सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	२११
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	ज्ञान चंद दे गृह	खैरो वाली	जम्मू	२१२
१७	जेठ	२०१६	बिक्रमी	दौलत सिँघ दे गृह	नवां चक्क	जम्मू	२२०
१७	जेठ	२०१६	बिक्रमी		सीगरी	जम्मू	२२१
१७	जेठ	२०१६	बिक्रमी	पूरन चंद दे गृह	मलक कैंप	जम्मू	२२२
१७	जेठ	२०१६	बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	मलक कैंप	जम्मू	२२५
१८	जेठ	२०१६	बिक्रमी	सीतल सिँघ दे गृह	झंडे	जम्मू	२३५

3
१२

3
१२

१८	जेठ	२०१६	बिक्रमी	रसाल सिँघ, साहिब सिँघ	मनावर	जम्मू	२४०
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	लछमी देवी दे गृह	नगिआल	जम्मू	२४८
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	प्रकाशो दे गृह	नगिआल	जम्मू	२५१
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	गुरदित सिँघ, संसार सिँघ	छंब	जम्मू	२५२
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	माई शाहणी देवी दे गृह	छंब	जम्मू	२५७
१६	जेठ	२०१६	बिक्रमी	बीबी राम कौर दे गृह	छंब	जम्मू	२५८
२०	जेठ	२०१६	बिक्रमी	फुंमण सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	२६८
२०	जेठ	२०१६	बिक्रमी	प्रताप सिँघ दे गृह	दड़	जम्मू	२७१
२०	जेठ	२०१६	बिक्रमी	बाज सिँघ दे गृह	मट्टू	जम्मू	२७५
२१	जेठ	२०१६	बिक्रमी	झंडू राम दे गृह	जोड़ीआं	जम्मू	२८३
२१	जेठ	२०१६	बिक्रमी	भुल्ला राम, शिव सिँघ	जोड़ीआं	जम्मू	२८३
२१	जेठ	२०१६	बिक्रमी	चेला सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	२८७
२२	जेठ	२०१६	बिक्रमी	जोगिंदर सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	२६६
२२	जेठ	२०१६	बिक्रमी	सरदार सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	३०४
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	माया देवी दे गृह	सीड़	जम्मू	३०६
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	दौलत राम दे गृह	सीड़	जम्मू	३११
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	देवी सिँघ दे गृह	मघोवाली	जम्मू	३१३
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	दौलत राम दे गृह	कोटली राईआ	जम्मू	३१६
२३	जेठ	२०१६	बिक्रमी	प्रकाश चंद दे गृह	मघोवाली	जम्मू	३२४
२४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	ठाकर दास दे गृह	मघोवाली	जम्मू	३३०
२४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	तारा सिँघ दे गृह	दीवान गड़	जम्मू	३३३
२४	जेठ	२०१६	बिक्रमी	प्यारा सिँघ दे गृह	दीवान गड़	जम्मू	३३७

4
१२

२४ जेठ २०१६ बिक्रमी	जम्मू		३३६
२६ जेठ २०१६ बिक्रमी नरायण सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	३४१
३१ जेठ २०१६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	३५१
१ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३५५
१७ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३७२
१८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४०५
१८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी चरन सिँघ (बेनंती)	जेठूवाल	अमृतसर	४१४
१८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४१६
१६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४३५
२३ हाढ़ २०१६ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह	कोटली थान सिँघ	जलंधर	४४१
२४ हाढ़ २०१६ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह	धनौरी	अंबाला	४५०
२५ हाढ़ २०१६ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह	ध्यान पुर	अंबाला	४६१
२५ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह	चैड़ीआं	अंबाला	४६५
२५ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह	रंगील पुर	अंबाला	४७०
२६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी सुरजीतम सिँघ दे गृह	राजोमाजरा	अंबाला	४७५
२६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी भजन सिँघ दे गृह	शेख़ पुर	अंबाला	४७८
२६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी मेहर सिँघ दे गृह	शेख़ पुर	अंबाला	४८२
२६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी सेवा सिँघ दे गृह	खरड़	अंबाला	४८६
२७ हाढ़ २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह	चंडीगड़्ह		४६२
२७ हाढ़ २०१६ बिक्रमी नथ्था सिँघ दे गृह	बडहेड़ी	अंबाला	४६७
२८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी वीर सिँघ दे गृह	बठलाणा	अंबाला	५०२
२८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठा सिँघ दे गृह	बठलाणा	अंबाला	५१३

5 १२

२८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी	राम सिँघ, गुरदेव सिँघ	माणकपुर कॅलर	अंबाला	५१५
२६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी	संतोख सिँघ दे गृह	सोडीआं		५२५
३० हाढ़ २०१६ बिक्रमी	जुगिंदर सिँघ दे गृह	कंग	जलंधर	५३२
३० हाढ़ २०१६ बिक्रमी	गुरदेव सिँघ दे गृह	दोशांझ खुरद	जलंधर	५३८
३१ हाढ़ २०१६ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	५४३
३१ हाढ़ २०१६ बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	करतार पुर	जलंधर	५४६
१ सावण २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५५४
१ भादरों २०१६ बिक्रमी	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५६२
१० भादरों २०१६ बिक्रमी	मंगल सिँघ दे गृह	पधरी	फिरोज़पुर	५८८
१० भादरों २०१६ बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	मुंडी जुमाल	फिरोज़पुर	६००
११ भादरों २०१६ बिक्रमी	बागीचा सिँघ दे गृह	मुंडी जुमाल	फिरोज़पुर	६०७
११ भादरों २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	मुंडी जुमाल	फिरोज़पुर	६१२
११ भादरों २०१६ बिक्रमी	बलवंत सिँघ दे गृह	तलवंडी	फिरोज़पुर	६१३
११ भादरों २०१६ बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	रज्जी वाला	फिरोज़पुर	६१७
१२ भादरों २०१६ बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	मनांवा	फिरोज़पुर	६२४
१२ भादरों २०१६ बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	सद्दा सिँघ वाला	फिरोज़पुर	६३०
१३ भादरों २०१६ बिक्रमी	ज़ोरा सिँघ दे गृह	सद्दा सिँघ वाला	फिरोज़पुर	६४०
१३ भादरों २०१६ बिक्रमी	सीतल सिँघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	६४३
१३ भादरों २०१६ बिक्रमी	धन्ना सिँघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	६४८
१३ भादरों २०१६ बिक्रमी	सुरैण सिँघ दे गृह	निधां वाली	फिरोज़पुर	६५०
१४ भादरों २०१६ बिक्रमी	अरजण सिँघ दे गृह	बसती खलील	फिरोज़पुर	६६३
१४ भादरों २०१६ बिक्रमी	राम सिँघ दे गृह	गवाल टोली	फिरोज़पुर छाउणी	६७०

6
१२

7

१२

7

१२

१५	भादरों	२०१९	बिक्रमी	राम सिंघ दे गृह गवाल टोली	फिरोज़पुर छाउणी	६८६
१५	भादरों	२०१९	बिक्रमी	गुरचरन कौर दे गृह गवाल टोली	फिरोज़पुर छाउणी	६९१
१५	भादरों	२०१९	बिक्रमी	सुलक्खण सिंघ दे गृह रुकना मुंगला	फिरोज़पुर	६९५
१५	भादरों	२०१९	बिक्रमी	किरपाल सिंघ दे गृह गोलेवाला	फिरोज़पुर	७००
१६	भादरों	२०१९	बिक्रमी	गुरदेव कौर दे गृह गोलेवाला	फिरोज़पुर	७०७
१६	भादरों	२०१९	बिक्रमी	करम सिंघ दे गृह पिपली	फिरोज़पुर	७१५
१७	भादरों	२०१९	बिक्रमी	तेजा सिंघ दे गृह सादिक	फिरोज़पुर	७२८
१७	भादरों	२०१९	बिक्रमी	बूड़ सिंघ दे गृह नाथेवाल	फिरोज़पुर	७३७
१८	भादरों	२०१९	बिक्रमी	पूरन सिंघ दे गृह नाथेवाल	फिरोज़पुर	७४७
१८	भादरों	२०१९	बिक्रमी	सुदागर सिंघ दे गृह नाथेवाल	फिरोज़पुर	७५५
१९	भादरों	२०१९	बिक्रमी	महिंदर सिंघ दे गृह नाथेवाल	फिरोज़पुर	७५७
१९	भादरों	२०१९	बिक्रमी	जगीर सिंघ दे गृह माड़ी मुसतफा	फिरोज़पुर	७६०
१९	भादरों	२०१९	बिक्रमी	नाजर सिंघ, भाग सिंघ माड़ी मुसतफा	फिरोज़पुर	७६६
२०	भादरों	२०१९	बिक्रमी	नछत्तर सिंघ दे गृह पंज गराई	फिरोज़पुर	७७८
२०	भादरों	२०१९	बिक्रमी	गुरनाम सिंघ दे गृह पंज गराई	फिरोज़पुर	७८९
२०	भादरों	२०१९	बिक्रमी	भान सिंघ दे गृह पंज गराई	फिरोज़पुर	७९४
२०	भादरों	२०१९	बिक्रमी	गुलजार सिंघ दे गृह साहो	फिरोज़पुर	७९८
२१	भादरों	२०१९	बिक्रमी	बुग्गर सिंघ दे गृह बरगाड़ी		८०८
२१	भादरों	२०१९	बिक्रमी	बरगाड़ी		८१६
२१	भादरों	२०१९	बिक्रमी	बिकर सिंघ दे गृह जैतो	बठिंडा	८१७
२१	भादरों	२०१९	बिक्रमी	हरचंद सिंघ दे गृह हरिराए पुर	बठिंडा	८२६
२१	भादरों	२०१९	बिक्रमी	जगीर दास दे गृह खिआली वाला	बठिंडा	८३१

२२ भादरों २०१६ बिक्रमी आस कौर दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	८४२
२२ भादरों २०१६ बिक्रमी बखतौर सिँघ दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	८५२
२२ भादरों २०१६ बिक्रमी मुकंद सिँघ दे गृह	मराज	बठिंडा	८५२
२३ भादरों २०१६ बिक्रमी बधावा सिँघ दे गृह	मराज	बठिंडा	८६३
२३ भादरों २०१६ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह	भदौड़	बठिंडा	८६६
२३ भादरों २०१६ बिक्रमी सुख़राम दे गृह	चक्कर	लुधिआणा	८८०
२४ भादरों २०१६ बिक्रमी संत दरबारी नाल	लोपो	लुधिआणा	८६०
२४ भादरों २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह	बधनी	फिरोज़पुर	८६४
२४ भादरों २०१६ बिक्रमी दयाल सिँघ दे गृह	रामूं वाला	फिरोज़पुर	८६६
२५ भादरों २०१६ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह नवां रामूंवाला		फिरोज़पुर	८६८
२५ भादरों २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ, बीबी महिंदर कौर चड़िक		फिरोज़पुर	६००
२५ भादरों २०१६ बिक्रमी जरनैल सिँघ, नछत्तर सिँघ	शाह वाला	फिरोज़पुर	८०८
२६ भादरों २०१६ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	८१४
१ अस्सू २०१६ बिक्रमी हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६२१
५ अस्सू २०१६ बिक्रमी महिंगा सिँघ दे गृह	हरीपुर	जलंधर	६३१
६ अस्सू २०१६ बिक्रमी दयाल सिँघ दे गृह	जलंधर	जलंधर	६३६
६ अस्सू २०१६ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह	जलंधर	जलंधर	६४२
६ अस्सू २०१६ बिक्रमी सरदूल सिँघ दे गृह	जलंधर छाउणी		६४४
७ अस्सू २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह	ढड्डे कलां		६५५
७ अस्सू २०१६ बिक्रमी गुरमीत सिँघ दे गृह	हरदो फराला	जलंधर	६६१
८ अस्सू २०१६ बिक्रमी मनसा सिँघ दे गृह	हरदो फराला	जलंधर	६६७
८ अस्सू २०१६ बिक्रमी साधू सिँघ, प्रीतम सिँघ	फगवाड़ा	जलंधर	६६८

9
१२

८	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	संसार	सिँघ	दे गृह	डविड़ा रिहाणा	जलंधर	६७३
८	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	जीत	सिँघ	दे गृह	डविड़ा रिहाणा	जलंधर	६७७
६	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	केसर	सिँघ	दे गृह	डल्लेवाल	जलंधर	६८०
६	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	लाल	सिँघ	दे गृह	डल्लेवाल	जलंधर	६८४
१०	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	हजूरा	सिँघ	दे गृह	गुराइया	जलंधर	६६१
१०	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	निरंजण	सिँघ	दे गृह	लुधिआणा	लुधिआणा	६६५
११	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	धन्ना	सिँघ	दे गृह	ढहि पई	लुधिआणा	१००५
११	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	सरदारा	सिँघ	दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	१०१०
१२	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	साधू	सिँघ	दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	१०१८
१२	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	करम	सिँघ	दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	१०२३
१२	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	नाजर	सिँघ	दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	१०२४
१२	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	सवरन	सिँघ	दे नाल	जड़तौली	लुधिआणा	१०३२
१२	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	बाबू	सिँघ	दे गृह	डेहलों	लुधिआणा	१०३४
१३	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	प्रकाश	सिँघ	दे गृह	चीमां कलां	लुधिआणा	१०४३
१४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	प्यारा	सिँघ	दे गृह	दोसांझ कलां		१०४८
१४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	गुरदेव	सिँघ	दे गृह	नवा पिंड		१०५७
१४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	भगत	सिँघ	दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	१०६६
१४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	तेज	कौर	दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	१०६६
१४	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	लछमण	सिँघ	दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	१०७०
१५	अस्सू	२०१६	बिक्रमी			पिंड	समरा		१०७६
१५	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	प्रीतम	सिँघ	दे गृह	जंडिआला		१०८५
१५	अस्सू	२०१६	बिक्रमी	महिंगा	सिँघ	दे गृह	पबम		१०६३

9
१२

१६	अस्सू २०१६ बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	चीमां कलां	जलंधर	१०६७
१६	अस्सू २०१६ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	गांधरां	जलंधर	११०२
१७	अस्सू २०१६ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	१११२
१८	अस्सू २०१६ बिक्रमी	नसीब सिँघ दे गृह	बोपा राए	जलंधर	११२१
१८	अस्सू २०१६ बिक्रमी	पाल सिँघ दे गृह	लल्लीआं कलां	जलंधर	११२६
१६	अस्सू २०१६ बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	अहिमद पुर	जलंधर	११४२
१६	अस्सू २०१६ बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	अहिमद पुर	जलंधर	११४७
१६	अस्सू २०१६ बिक्रमी	गुरचरन सिँघ दे गृह	झंगी चक्क	जलंधर	११५१

10
१२

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✳ २३ चेत २०१६ बिक्रमी अर्जण सिँघ दे गृह बलोच पुरा ज़िला करनाल ✳

सचखण्ड निवासी साजण साज, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। निरगुण निरँकारा जाणे आपणा काज, पुरख अकाल
खेल कराइंदा। भूपत भूप राजन राज, शाह सुल्तान वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड
महल्ला इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा भूपन भूप, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। रेख रंग ना कोए रूप, हरि पुरख
१ निरँजण बेपरवाहीआ। एकँकारा आपणा देवे आप सबूत, दूसर देवे ना कोए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १
किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाईआ। सचखण्ड दवारे एकँकारा, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। निरगुण निरवैर
१२ निराकार हो उज्यारा, अजूनी रहित डगमगाइंदा। तख्त निवासी बण सिक्दारा, धुर फ़रमाणा हुक्म अल्ाइंदा। आदि जुगादी १२
जाणे कारा, करता पुरख खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आसण लाइंदा।
सचखण्ड दवारा साचा आसण, सति सतिवादी आप लगाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशण, प्रभ सज्जण सच्चा माहीआ। दाता
दानी शाहो शाबाशण, शहिनशाह वडी वड्याईआ। साचे मंडल पावे रासण, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड महल्ला इक्क इकल्ला, पुरख अगम्मा आप सुहाईआ। पुरख अगम्म अगम्म अथाह,
आपणी धारा आप चलाइंदा। सचखण्ड दवारे बैठ सच्चा शहिनशाह, धुर फ़रमाणा हुक्म अल्ाइंदा। निरगुण निरगुण बण मलाह,
खेवट खेटा रूप वटाइंदा। थिर घर निवासी देवे सच सलाह, शब्दी शब्द शब्द अल्ाइंदा। आपे जाणे आपणा राह, मार्ग
आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणी धार प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, सचखण्ड साचा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दवारा सोभावन्त, सतिगुर पूरा आप सुहाईआ। पुरख अबिनाशी
लेखा जाणे नार कन्त, नर नरायण वडी वड्याईआ। शब्दी शब्द बणाए बणत, पिता पूत वेस वटाईआ। आपणी महिमा

जाणे बेअन्त, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा पर्दा आप उठाईआ। सचखण्ड निवासी पर्दा चुक्क, दरगाह साची खेल कराइंदा। निरगुण निरवैर आपे उठ, असुते प्रकाश आप कराइंदा। आपणा नाउँ रख अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार जणाइंदा। आप प्रगटाए साचा सुत, शब्दी शब्द नाउँ रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुहाए रुत्त, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत्त कराए हित्त, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणी धारा आप चलाइंदा। सचखण्ड निवासी साची धार, एकँकार आप चलाईआ। त्रै त्रै मेला अगम्म अपार, पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, शब्दी शब्द शब्द हुक्म सुणाईआ। लख चुरासी कर त्यार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। गृह गृह अंदर हो उज्यार, दीआ बाती आप टिकाईआ। धुर फ़रमाणा नाद धुंन जैकार, अनहद रागी राग अलाईआ। अमृत सरोवर ठंडा ठार, दर दर आपणा बंक सुहाईआ। बोध अगाधा इक्क जैकार, पारब्रह्म ब्रह्मवेता करे पढ़ाईआ। एका अक्खर वेद चार, निष्अक्खर रूप समाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, त्रैगुण अतीता वेखे चाँईं चाँईंआ। वंडे वंड अपर अपार, वंडणहारा इक्क अख्वाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, लोआं पुरीआं आपणी रचन रचाईआ। रवि ससि कर उज्यार, मंडल मण्डप सोभा पाईआ। ज़िमीं असमानां दे सहार, जल थल महीअल डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण दए अधार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। मन मति बुध कर पसार, गृह बंक आप वड्याईआ। आत्म परमात्म खेल न्यार, ब्रह्म पारब्रह्म एका घर वसाईआ। साची सेजा कर त्यार, तख्त निवासी एका तख्त बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी वंड आपणे हथ्थ रखाईआ। साची वंड हरि निरँकारा, इक्क इकल्ला आप बणाइंदा। खाणी बाणी खोल्ह किवाड़ा, भेव अभेदा आप जणाइंदा। शास्त्र सिमरत बण लिखारा, बोध ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। गीता ज्ञान दे आधारा, अञ्जील कुराना रंग रंगाइंदा। मुकामे हक़ हक़ नगारा, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंडण आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची वंड लोकमात, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। जुग चौकड़ी देवे दात, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा बन्धन पाईआ। पंज तत्त काया जोड़ नात, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। गुर अवतार बण बण सज्जण साक, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्ह ताक, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। शब्द अगम्मी एका गाथ, रसना जिह्वा करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंडण आप वंडाईआ। साची वंड वंडणहारा, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए हुलारा, आत्म परमात्म खेल कराइंदा।

ईश जीव दे सहारा, जगदीश रंग चढ़ाइंदा। राग रागनी बोल जैकारा, जै जै आपणे नाउँ कराइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, नित नवित वेस वटाइंदा। अलख अगम्म अगोचर बेपरवाह परवरदिगारा, बेऐब आपणा नाउँ धराइंदा। हक़ हक़ीक़त बोल नाअरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। करनी करनी करता करे निरँकार, निरगुण आपणा खेल कराईआ। वंडे वंड अपर अपार, लेखा लिख लिख ना कोए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे हथ्थ रखे करतार, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। बण रथवाही सेवा करे अगम्म अपार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड निवासी धुर फ़रमाणा, एकँकार एका वार जणाइंदा। शब्दी सुत सुत बलवाना, बलधारी आप प्रगटाइंदा। ब्रह्म ब्रह्माद इक्क तराना, तुरया राग आप अलाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणा रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधाना, लख चुरासी बूझ बुझाइंदा। जुग चौकड़ी करे खेल महाना, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण धार आप चलाइंदा। निरगुण सरगुण साची धार, सति सतिवादी आप चलाईआ। पंज तत्त कर त्यार, तत्तव आपणा भेव चुकाईआ। आत्म परमात्म दे आधार, सुरती शब्द शब्द मिलाईआ। नाद धुन धुन जैकार, धुन आत्मक करे शनवाईआ। निर्मल दीआ एका बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। घर मन्दिर खोल्ह किवाड़, गृह बंक दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम खेले खेल बेपरवाहीआ। पंज तत्त गुर अवतार, तन काया आप वड्याइंदा। अंदर वड़ आप निरँकार, निरगुण आपणी खेल कराइंदा। हुक्मी हुक्म सति वरतार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वेखणहार, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। हुक्मे अंदर हो त्यार, हुक्मे बन्धन एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख्त निवासी सच्चा शाह, धुर फ़रमाणा इक्क जणाइंदा। धुर फ़रमाणा ग़रीब निवाज़, आदि अन्त इक्क जणाईआ। सतिजुग साचा साजण साज, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सीस जगदीश सुहाए ताज, पंचम आपणा राह वखाईआ। दो जहान चलाए जहाज़, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार देवे दाज, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। घर घर आपणा रच रच काज, करता पुरख वेख वखाईआ। दिवस रैण शब्द अगम्मी मारे अवाज़, तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंड आप कराईआ। साची वंड हरि करतार, आदि अन्त आप कराइंदा। लेखा जाणे जुग चार, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। नौ नौ खोल्ह किवाड़, नौ रस रस वखाइंदा। चार कुण्ट हो उज्यार, चौथे पद डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

४ १२

आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा भेव चार जुग, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतारां संदेशा देंदा रिहा लुक लुक, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम आपणी गोदी लए चुक्क, लोकमात कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह एकँकारा, सचखण्ड दवारे आसण लाइंदा। गुर अवतार मंगण दर भिखारा, ख़ाली झोली सर्ब वखाइंदा। देवणहारा वड दातारा, दानी आपणा नाउँ धराइंदा। एका वस्त देवे हरि थारा, अतोट अतुट रखाइंदा। गुर अवतार दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। हरि का नाउँ वणज वपारा, लोकमात हट्ट खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप समझाइंदा। साची सेवा विच जहान, दो जहानां वाली आप जणाईआ। गुर अवतारां देवे धुर फ़रमाण, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। निउँ निउँ सीस जगदीश सर्ब झुकाण, दोए जोड़ जोड़ शरनाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी हुक्मरान, सच तेरी शहिनशाहीआ। तूं वसें सचखण्ड सच्चे मकान, साचे तख्त आसण लाईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, लोकमात तेरी सेव कमाईआ। तूं वेखणा मार ध्यान, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, गुर अवतारां एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग जुग जुग, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। निरगुण सरगुण वेखे लुक लुक, आपणा पर्दा ना आप चुकाइंदा। भगत भगवन्त गुरमुख विरले आपणी गोदी लए चुक्क, निरगुण सरगुण दया कमाइंदा। कर खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार जणाइंदा। सन्त सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। गुरमुख अन्तर आपे उठ, आपणा दरस कराइंदा। गुरसिखां उपर हरि जू तुट्ठ, भेव अभेद चुकाइंदा। पावे सार काया कोट, किला बंक आप कराइंदा। तन नगारे लग्गे चोट, नाम डंका इक्क वजाइंदा। गुर शब्द रखाए साची ओट, गुर अवतार राह चलाइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत जोत समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल परवरदिगार, एका आपणा आप रखाईआ। हक़ हक़ीक़त पावे सार, लाशरीक बेऐब नाउँ खुदाईआ। मुकामे हक़ हो त्यार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। उच्ची कूक कूक पुकार, कलमा नबी करे पढ़ाईआ। आयत शरायत इक्क विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। जुग जुग वंड अलख अथाह, अगोचर आपणी कार कराइंदा। गुर अवतारां दे सलाह, एका दूआ तीजा बन्धन पाइंदा। चौथे रंग लए रंगा, पंचम आपणा भेव चुकाइंदा। छेवें घर मेला सहिज सुभा, सति सतिवादी दया कमाइंदा। अठ्ठां तत्तां जोड़ जुड़ा, नौ दर आपणा राह वखाइंदा। लख चुरासी

भरम भुला, अनुभव आपणा खेल कराइंदा। एका नाइआं जोड़ जुड़ा, दस दस वेखे साचा थाँ, दहि दिशा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। धुर फ़रमाणा सच संदेश सतिगुर पूरा आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी नर नरेश, निरगुण आपणी धार चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपे वेख, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, शंकर आपणा हुक्म मनाईआ। पीर पैग़म्बर औलीए वेखे शेख़, मुलां एका सबक करे पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी घट घट अंदर करनहारा हेत, नित नवित वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम धारे भेख, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा रिहा वेख, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, जुग चौकड़ी आप कराइंदा। चार जुग दा जगत विहारा, आपणे लेखे पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। हुक्मी हुक्म सति वरतारा, तेई अवतारां आप जणाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद करे ख़बरदारा, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। एका जोती दस अवतारा, गुर गुर एका बूझ बुझाइंदा। भगत भगवन्त दे सहारा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखो करो विचारा, नेत्र नैण नैण खुलाइंदा। मस्जिद मन्दिर मट्ठ शिवदुआला हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा।
५ हक़ हक़ीक़त ना करे कोए प्यारा, जगत शरअ शैतान नाल लड़ाइंदा। नाम सति ना कोए वणजारा, मन मति सर्ब कुरलाइंदा। ५
१२ राधा कृष्न ना कोए आधारा, सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा। सीता राम ना कोए प्यारा, कलयुग नटुआ घर घर स्वांग वरताइंदा। हरि का नाउँ ना किसे विचारा, पंडत पांधा भरम भुलाइंदा। मुलां शेख़ मुसायक गल विच पाई तसबी माला, तालब तुलबा ना कोए पढ़ाइंदा। करे खेल आप निरँकारा, लख चुरासी वेख वखाइंदा। सच संदेशा देवणहारा, धुर फ़रमाणा इक्क जणाइंदा। उठो वेखो करो ध्यान, आपो आपणी पाओ सारा, सारंगधर भगवान, बीठला इक्क समझाइंदा। कलयुग आई अन्तिम वारा, हरि जू पाँधी पन्ध मुकाइंदा। वेद व्यासा बण लिखारा, लिख लिख आपणा लेख जणाइंदा। ईसा बणया दर भिखारा, परवरदिगार ओट तकाइंदा। मुहम्मद चौदां तबक मारे नाअरा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। नाता तुट्टे चार यारा, चौथा जुग पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा अन्तिम वार, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात वखाईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, सरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। शब्दी शब्द डंक अपार, दो जहानां दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क जणाईआ। सच संदेशा पुरख अबिनाश, आपणा आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी

जुग वेखी रास, वेला अन्तिम अन्त आइंदा। सच वस्त ना किसे पास, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। आत्म जोत ना कोए प्रकाश, जगत अन्धेरा एका छाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखाए ना कोए साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा। पारब्रह्म अग्गे दोए जोड़ टेकण माथ, नेत्र नैण नैण सर्ब निवाइंदा। तूं साहिब पुरख समराथ, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। हउँ गा गा गए गाथ, बण सेवक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी लोकमात रचया इक्क सुअम्बर, आपणी अचरज खेल कराईआ। दो जहानां श्री भगवाना चौदां तबक चौदां लोक मेटे अडम्बर, रवि ससि विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैणां नीर रहे वहाईआ। लख चुरासी मन वासना फड़े बन्दर, कलयुग जूह अंदर फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथमी नचाए बण कलंदर, कल आपणी आप धराईआ। लेखा चुक्के शिवदुआला मढ्ढ मसीत मन्दिर, पुरख अकाल एका इष्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा साचा राणा तख्त निवासी पुरख अबिनाशी, एका हुक्म जणाईआ। एका हुक्म एकँकारा, अकल कल धारी आप जणाइंदा। गुर अवतार करो विचारा, हरि विचार विच कदे ना आइंदा। पीर पैग़म्बर रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयारा, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। कलमा नबी ना कोए प्यारा, काया काअबा ना कोए सुहाइंदा। आब हयात ना ठंडा ठारा, भर प्याला ना कोए प्याइंदा। नाता छुटया चार यारा, यारी यार ना कोए रखाइंदा। सदी चौधवीं आई हारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर सर्ब रखाइंदा। हुक्मे अंदर नेतन नेत, एका खेल कराईआ। सचखण्ड दवारा पहली चेत, इक्क नौ करी कुड़माईआ। इक्क इक्क दिन कर कर हेत, तेई अवतारां रिहा समझाईआ। तेई अवतार लहिणा चुक्या तेई चेत, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। अग्गे लहिणा देणा वेखे पीर पैग़म्बर मुलां शेख़, रुत्त रुतड़ी आप सुहाईआ। निरगुण सरगुण खेलण आया खेड, आपणी खेड ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपणा हुक्म ईसा मूसा, इलाही नूर आप जणाइंदा। कलयुग वेखे काला सूसा, तन बस्त्र फोल फुलाइंदा। हक़ हक़ीक़त सच हदीसा, हदूद अरबां वंड वंडाइंदा। अन्तिम लहिणा चुक्के उनीसा, एका नाया बन्धन पाइंदा। सब दा ख़ाली होए ख़ीसा, दर दरवेश आप बणाइंदा। चौथे जुग आपणी करनी वेखणा शीशा, दूसर मुख ना कोए डराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा आप मुकाइंदा। सब दा लहिणा चुक्के विच जहान, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। हक़ हक़ीक़त सच कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। पंचम जेठ अन्तिम इक्को वार मन्ज़ूर करे सलाम, सलामा अलैकम

६ १२

फेर ना कोए बुलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे के जाणा पैग़ाम, अन्त पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। परवरदिगार आया हजाम, सब दीआं लबां दए कटाईआ। कलयुग अन्त करे पहचान, सदी चौधवीं भुल्ल ना जाईआ। जिस दे उत्ते रखदे रहे ईमान, सो लोकमात फेरा पाईआ। जिस दे बरदे रहे गुलाम, बण सेवक सेव कमाईआ। सो प्रगट होया इक्क अमाम, वड वड्डा शहिनशाहीआ। दर जा के कर सलाम, निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा मिटाईआ। लेखा मुक्के मुहम्मद यार, यारी यार ना कोए निभाइंदा। सदी चौधवीं होए खुआर, चौदां तबक डेरा ढाहइंदा। एका हक़ बोल जैकार, शरअ शरीअत इक्क वखाइंदा। काया काअबा खोल्ह किवाड़, नूर नुराना डगमगाइंदा। साचा हुजरा कर त्यार, हज़रत आपणा रूप दरसाइंदा। लेखा सब दा दए निवार, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। कर किरपा परवरदिगार, बेनक़ाब तेरा पर्दा ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा साचा राणा अन्तिम लेखा लेखे लाइंदा। अन्तिम लेखा अन्त कल, कलधारी आप लगाईआ। जुग चौकड़ी करदा आया वल छल, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। सरगुण अंदर निरगुण रल, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, कलयुग अन्त अन्त कराइंदा।
७ लहिणा देणा विच संसारा, गुर अवतारां आप चुकाइंदा। कलयुग मेटे अन्ध अन्धयारा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहइंदा। पंज शैतान ७
ना होए हल्कारा, दर दर फेरा कोए ना पाइंदा। आसा तृष्ना ना कोए भण्डारा, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। वरन बरन
१२ ना होए खुआरा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोए जणाइंदा। एका मन्दिर वखाए सच दुआरा, हरि सरन सरनाई आप समझाइंदा। १२
सृष्ट सबाई इक्क जैकारा, एका नाम आप पढ़ाइंदा। एका इष्ट गुरदेव करे निमस्कारा, एका सजदा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा अन्तिम वार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। पिछला लहिणा चुक्के विच संसार, लोकमात रहिण ना पाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल एका आईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, साचे मन्दिर लए बहाईआ। सन्त सुहेले वेखे लाल, लाल अनमुलड़े आपणी गोद उठाईआ। गुरमुखां बणे आप दलाल, दो जहानां सेव कमाईआ। गुरसिखां नाता तोड़ काल महांकाल, एका नाम बन्धन पाईआ। मार्ग दस्स इक्क सुखाल, लख चुरासी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, धुर फ़रमाणा आप वरताईआ। धुर फ़रमाणा अन्तिम कल, हरि करता आप वरताइंदा। सच सिँघासण एका मल्ल, लोकमात खेल कराइंदा। शब्दी जोती आपे रल, गोबिन्द महल्ल सुहाइंदा। सम्बल

डेरा धाम अबचल, भेव कोए ना पाइंदा। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा रूप समाइंदा। सच संदेशा एका घल्ल, गुर अवतार लेखा लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग विच जहान, हरि जू हरि हरि आप लगाईआ। सचखण्ड दा सति निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मन्ने आण, राज राजान कोए रहिण ना पाईआ। तख़्त निवासी इक्क भगवान, साचे तख़्त सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म करे हुक्मरान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लख चुरासी मन्ने आण, अण्डज जेरज उत्भुज सेतज सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चुक्के काण, अन्त लेखा दए चुकाईआ। साचे गुरमुख कर प्रधान, घर घर एका दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, दो जहानां करे आप सफ़ाईआ। करे सफ़ाई सिफ्त सलाह, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादी इक्क मलाह, जुग जुग बेड़ा मात चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। चार वरनां डेरा ढाह, एका ब्रह्म वखाइंदा। ग़रीब निमाणे आप उठा, राज राजानां ख़ाक मिलाइंदा। ऊँच नीच बहाए एका थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। एका अमृत आत्म जाम दए प्या, अठसठ तीर्थ नहावण कोए ना जाइंदा। गृह मन्दिर अंदर शब्द अनादी दए सुणा, छत्ती राग भेव चुकाइंदा। घट मन्दिर दीपक जोती दए जगा, हवन दीप ना कोए कराइंदा। सच महल्ला दए वसा, काया खेड़ा डेरा लाइंदा। उच्च अटल्ला सोभा पा, सुहबत आपणी आप समझाइंदा। दो जहानां नौबत दए वजा, नाम डंका हथ्थ रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए बदला, सुरपति इन्द रहिण ना पाइंदा। रवि ससि किरन किरन जोती जोत लए मिला, जोती जाता जोत प्रगटाइंदा। गुरसिख साचे लए वड़या, वड वड्डा दया कमाइंदा। ब्रह्मा पारब्रह्म आपणे विच मिला, लेखा लेखे लेख लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सब दा लेखा आप चुकाइंदा। सब दा लेखा आप चुकाउणा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। नाम खण्डां विच ब्रह्मण्डां आप चमकाउणा, नेत्र प्रचण्ड आप प्रगटाईआ। गोबिन्द संग आप निभाउणा, पृथ्मी आकाश फेरा पाउणा, गगन मंडल चरनां हेठ दबाउणा, ब्रह्म ब्रह्मांड आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल ढोला सब ने गाउणा, शब्द विचोला गुर अख्वाउणा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रौला पाउणा, सत्तां दीपां धीर ना कोए धराउणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, निहकलंका नाउँ रखाउणा, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। गुरमुख विरला आप जगाउणा, आत्म अन्तर बूझ बुझाउणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। शब्द अनादी नाद वजाउणा, ब्रह्म ब्रह्मादी भेव खुलाउणा, अनुभव आपणा रूप दरसाईआ। साचे तख़्त डेरा

लाउणा, शाह पातशाह नाउँ धराउणा, शहिनशाही इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धुर फ़रमाणा, धुर दा राणा धुर दी धार विच संसार वड संसारी आप वरताईआ।

६ जन्म जन्म दा चुक्के फ़र्क, फ़िकरा एका हरि जणाईआ। नाता तुट्टे अठारां दस अठाई नरक, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। माणस विच्चों माणस आया परत, परतीनिध दए वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढया अरक, गुरसिख एका लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। पूरब लहिणा कुण्डली बारां रासी, हरि जू हरि हरि वेख वखाइंदा। पिछले जन्म जन्म उदासी, मन का मोह ना कोए चुकाइंदा। मरे मरे मर जम्मे राए धर्म दए फ़ासी, जम फ़ास ना कोए कटाइंदा। देवत सुर मुन जन करन हासी, मानुख माणस आपणा आप ना कोए बदलाइंदा। वेले अन्त सतिगुर पूरा मिले किसे ना साथी, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। चित्रगुप्त लहिणा देणा वखाए बाकी, लिख लिख लेख अग्गे टिकाइंदा। राए धर्म खोल्ह ताकी, कुम्भी राह इक्क जणाइंदा। बिन सतिगुर पूरे वेले अन्त कोई ना चाढ़े फड़ के घाटी, पार किनारा ना कोए कराइंदा। कोटन वार काया चोली लोकमात पाटी, चोला चोले नाल बदलाइंदा। जो जन सतिगुर सुणे साची साखी, साख्यात दर्शन पाइंदा। तिस मिटे अन्धेरी राती, नेत्र नैण चन्द चमकाइंदा। डूँग्घी नरक ना सुट्टे कोई खाती, हरि जू आपणा ख़ाता आप रखाइंदा। वेला अन्तिम पुच्छे वाती, जम नेड़ कोए ना आइंदा। जो जन सतिगुर विके साची हाटी, करता कीमत आपे पाइंदा। पूरब जन्म दी कुण्डली पाटी, राशि आपणे हथ्थ रखाइंदा। सो गुरसिख गुरसिखां दा बण जाए साथी, नरक विच कदे ना जाइंदा। राए धर्म ना रहे आकी, गुरसिख चरनां निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुम्भी नरक पार कराइंदा। कुम्भी नरक जाए छुट, गेड़ा गेड़ ना कोए रखाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा जाए तुठ्ठ, तिस राए धर्म ना दए सज़ाईआ। एका अमृत प्याए साचा घुट, निझर झिरना आप झिराईआ। गुरसिख अन्तिम एथों जाणा उठ, सचखण्ड मिले वड्याईआ। आप उठाए आहलणयों डिग्गे बोट, समरथ पुरख दया कमाईआ। कर किरपा जुग जन्म दी कढ्ढे वासना खोट, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। मेल मिलावा निर्मल जोत, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। गुरसिखां कलयुग अन्त सतिगुर पूरे इक्को कीती छोट, बिन पूजा पाठ, बिन पढ़यां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म मरन मरन जन्म फंदन फंद दए कटाईआ।

※ २३ चेत २०१६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह नानक पुरा ज़िला करनाल ※

जुग भावी वड बलवान, हरि भाणे आप रखाइंदा। वेखणहारा नौजवान, निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, साची कारे आपे लाइंदा। तख्त निवासी दे दे दान, साची भिच्छया झोली पाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। खेले खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। जेरज अंड कर पहचान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भावी आपणी सेव रखाइंदा। जगत भावी बाली बाल, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। सति पुरख निरँजण अवल्लड़ी चाल, जुग करता आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर वेखणहारा जीव जहान, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी कर परवान, सति परवाना इक्क फड़ाइंदा। नाम निधाना गुण निधान, गुणवन्ता आप जणाइंदा। गृह मन्दिर अंदर सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। गुर गुर रूप हरि भगवान, नर हरि आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भावी इक्क रखाइंदा। साची भावी धुर फ़रमाणा, हरि हरि आप रखाइंदा। आदि जुगादी खेल महाना, ब्रह्म ब्रह्मादी आप कराइंदा। निरगुण सरगुण वेखे मार ध्याना, नर हरि आपणा रूप वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाना, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। नाद अनादी धुर तराना, अनरागी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भावी आपणा हुक्म जणाइंदा। साचा हुक्म हरि हरि नरायण, एका एक जणाईआ। गुर अवतार रसना जिह्वा सारे कहिण, जस वेद पुराण सालाहीआ। निरगुण निरवैर निराकार अकाल मूर्त अजूनी रहित दिसे ना किसे नैण, लोचण खोल्ह्ण कोए ना पाईआ। लख चुरासी साक सज्जण सैण, सगला संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भावी भाणे विच रखाईआ। हरि भाणा एका वार, आदि पुरख पुरख समझाया। निरगुण निरगुण कर पसार, निरगुण साची सेवा लाया। शब्दी शब्द शब्द दुलार, सुत दुलारा एका जाया। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, गुर चेला रूप वटाया। मेल मिलाए अगम्म अपार, अलख अगोचर राह चलाया। वस्त अमोलक भर भण्डार, त्रैगुण आपणी वंड वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह पुरख समरथ, भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए अल्लाइंदा। निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मार्ग आपणा दस्स, कलयुग एका पर्दा लाहइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप नस्स नस्स, चौदां लोक चरनां हेठ दबाइंदा। चौदां तबक खेल तमाश, पुरख अबिनाश निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणा आप कराइंदा। रवि ससि ससि प्रकाशा, धरत धवल वेखे तमाशा, जल थल आपणी धार रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा भाणा आप समझाइंदा। साचा भाणा श्री भगवान, एका एक रखाईआ। जुग चौकड़ी मिटे निशान, थिर
कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे गाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अन्त ना पाए कोए श्री भगवान,
बेअन्त कहे लोकाईआ। तख्त निवासी नौजवान, साचा तख्त इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत
धर, जुग करता खेल कराईआ। जुग करता हरि करनेहारा, दिस किसे ना आइंदा। लख चुरासी कर पसारा, घट घट
आपणा आसण लाइंदा। निरगुण सरगुण दए आधारा, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। तत्तव तत्त करे विचारा, जोती जोत
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे लाह, निरगुण सरगुण दया कमाईआ।
नव नौ पार करा, साची नईया दए चढ़ाईआ। डूँघी कंदर फेरा पा, टेडी बंक पन्ध मुकाईआ। नाद अनादी इक्क सुणा,
धुन आत्मक करे शनवाईआ। सर सरोवर लए नुहा, दुरमति मैल दए धुवाईआ। कागों हँस लए उडा, हँस काग रूप वटाईआ।
बज़र कपाटी कुण्डा देवे लाह, दूई द्वैती दए मिटाईआ। साची हाटी दए खुल्हा, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। आत्म
झोली दए भरा, परमात्म दया कमाईआ। ब्रह्म खुशी लए मना, पारब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। जीव ढह पए सरना, ईश
आपणी गोद बहाईआ। जगदीश खेल रिहा करा, भेव कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवें चौकड़ी
११ जुग आप हंढा, भावी भाणे विच रखाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव लए खपा, जो घड़या भन्न वखाईआ। कोटन
कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेवा ला, जग पाँधी दए वड्याईआ। कोटन कोटि वेद शास्त्र सिमरत लए बणा, अक्खर
१२ अक्खर कर पढ़ाईआ। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर हज़रत हरि जू लए तरा, धरनी धरत धवल सुहाईआ। कोटन कोटि अञ्जील
कुरान तीस बतीसा ढोला गा, जगत हदीस दए सुणाईआ। अन्तिम सब दा लेखा दए मुका, लेखा कोए रहिण ना पाईआ।
जुगा जुगन्तर वेस वटा, निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाईंआ। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, धुर दी कार आप कराईआ। साचा
भाणा आप चला, आपे भाणे रिहा समाईआ। भावी नेत्र नैणां नीर रही वहा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चारों कुण्ट कोई
ना पकड़े बांह, सगला संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।
बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। निरगुण
सरगुण फड़ाए पल्ला, एका बन्धन नाम रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा रिहा वल छला, अछल छल आपणा वेस वटाइंदा।
जोती शब्दी आपे रला, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणा भाणा आपे मन्ना, सद भाणे विच रहाइंदा। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप रखाइंदा। कलयुग अन्तिम बल रख, रक्षक होए आप सहाईआ। निरगुण

नूर कर प्रतख, दो जहान करे रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा गाउँदी आई जस, सो साहिब फेरा पाईआ। त्रैगुण माया विच ना जाए फस, पंज तत्त ना डेरा लाईआ। एका नूर कर प्रकाश, शब्द अनादी नाद वजाईआ। भूपत भूप शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणी खेल कराईआ। जन भगतां पूरी करे आस, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सन्तां वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख मन्दिर पावे रास, घर गोपी काहन नचाईआ। गुरसिख जन्म जन्म दी बुझाए प्यास, जगत तृष्ना दए गंवाईआ। आपे वेखे खेल तमाश, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी भावी भाणे हत्थ रखाईआ। भावी भाणा नार कन्त, कन्त कन्तूहल खेल कराइंदा। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन हरि हरि बूझ बुझाइंदा। लख चुरासी माया बेअन्त, दूई पर्दा ना कोए उठाइंदा। नव नौ होए गढ़ हंगत, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर भाणे विच आप रखाइंदा। साचा भाणा हरि निरँकार, निरगुण निराकार आप जणाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, करता पुरख आप कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर नाउँ प्रगटाईआ। बोध अगाध बोल जैकार, खाणी बाणी राग अलाईआ। कलम शाही बण लिखार, कागद दए इक्क वड्याईआ। आपणा भेव रखे न्यार, अभेद ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी भाणा भावी आपणा खेल कराईआ। भावी कहे मेरा वर, लख चुरासी मैं हंढाया। भाणा कहे मेरा डर, भय विच जगत रखाया। दोहां विचोला आपे बण, पुरख अबिनाशी वेख वखाया। करे खेल साचा हरि, सब दा लहिणा दए मुकाया। कलयुग अन्तिम सद्दे दर, दर आपणे लए बहाया। इक्क दूजे दा फड़या लड़, फड़या लड़ छुट्ट ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा मनाया। भावी भाणे सुण लै कन्न, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी धार चलाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे दो जहान, दोए दोए आपणी धार वखाइंदा। जन भगतां बेड़ा रिहा बन्नू, लोकमात फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क जणाइंदा। सच संदेशा एकँकार, एका वार जणाईआ। भाणे रहिणा ख़बरदार, हरि भगवन रिहा उठाईआ। भावी करे ना कोए प्यार, जगत प्रीती रिहा गंवाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार, दूजा कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठाल, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दीनन आपणी गोद सुहाईआ। नाता तोड़े काल महांकाल, गुरमुख लाल आप जगाईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, सतिगुर चरन सच्ची शरनाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा जणाईआ। भावी भाणे सुण लै मीत, मित्र प्यारा हरि जणाइंदा।
कलयुग अन्त चलाए साची रीत, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। गुरमुख करे पतित पुनीत, पतित पावण दया कमाइंदा।
आत्म परमात्म सोहँ ढोला शब्द विचोला सुणाए साचा गीत, गीत गोबिन्द आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे आप वड्याइंदा। गुरसिख साचा वड्डा वड, हरि सतिगुर आप वड्याईआ।
लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणा बन्धन पाईआ। एका जाम प्याए मदि, अमृत रस वखाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे नद,
अनहद राग अल्हाईआ। जोत निरँजण कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। भावी भाणा ना करे विनाश, जिस सिर आपणा
हथ्थ टिकाईआ। अन्तिम खड़े आपणे पास, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। गुरसिख कदे ना होए उदास, जिस सतिगुर
मिल्या शब्द सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा माण वड्याईआ। माण वड़याई
लोकमात, हरि जू हरि हरि आप रखाइंदा। गुरसिखां देवे इक्को दात, नाम अमोलक झोली पाइंदा। गुरसिख मेट अन्धेरी
रात, सति सतिवादी चन्द चढ़ाइंदा। साचे सन्तां पुच्छे आपे वात, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त देवे साथ,
सगला संग आप हो आइंदा। एका अक्खर पूजा पाठ, रसना जिह्वा आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म सच्चा साक, सज्जण
१३ आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिखां देवे साचा १३
१२ वर, भावी भाणा नेड़ कोए ना आइंदा। भावी भाणा होए दूर, नेड़ कदे ना आईआ। जिस साहिब सतिगुर हाज़र हज़ूर, १२
हरि के पौड़े लए चढ़ाईआ। जन्म जन्म दी सेवा करे मन्ज़ूर, उजरत सब दी लेखे पाईआ। सर्ब कला आपे भरपूर, हर
घट आपे रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन तारे
आप प्रभ, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणा मेल कराइंदा। पंच विकारा देवे बध, नाम
खण्डा इक्क खड़काइंदा। नौ दुआरे पार हद्द, दसवें आपणी बूझ बुझाइंदा। विष्नूं वेखे विश्व यद, वास्तक आपणा खेल
कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तारे अन्तिम आप, आपणी
दया कमाईआ। जन्म जन्म दा मेटे पाप, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। कर्म कर्म दा मिटे रोग संताप, संसा कोए
रहिण ना पाईआ। गुरसिख उठाए जिउँ बालक बाप, पिता पूत खुशी मनाईआ। एका देवे साची दात, चरन प्रीती इक्क
जणाईआ। आत्म परमात्म सच्ची ज़ात, चार वरन नैण शरमाईआ। सोहँ ढोला साची गाथ, आदि अन्त इक्क रखाईआ।
कोटन कोटि नाउँ जगत सबंधी बणन साक, सज्जण आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अपारा, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका
नाउँ रखाइंदा। शब्द डंका विच संसारा, वड संसारी आप वजाइंदा। नव नौ करे ख़बरदारा, सति सतिवादी दया कमाइंदा।
कूड़ी क्रिया मिटे पसारा, जूठ झूठ रहिण ना पाइंदा। सच सुच करे वरतारा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। नौ खण्ड
पृथ्मी खोल्हे इक्क दुआरा, इष्ट गुरदेव एका नज़री आइंदा। एका चरन इक्क निमस्कारा, दूसर सीस ना कोए झुकाइंदा।
एका अमृत ठंडा ठारा, सरोवर इक्क इक्क भराइंदा। एका नूर इलाही परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर रखे भाणा, भाणा हुक्मे विच रखाईआ। हुक्म अंदर राजा राणा,
हुक्मे अंदर तख्ते तख्त सच्ची शहिनशाहीआ। हुक्मे अंदर आवण जाणा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। हुक्मे अंदर गावे
गाणा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर देवे धुर फ़रमाणा, बोध अगाध करे जणाईआ। हुक्मे अंदर, जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। हुक्मे अंदर खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा।
हुक्मे अंदर तेई अवतारा, भगत अठारां सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर ईसा मूसा कट के गए वगारा, हुक्मे अंदर नानक गोबिन्द
एका ढोला गाइंदा। हुक्मे अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर होया पार किनारा, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। आपणे हुक्मे अंदर
१४ आपे वसे आप करतारा, दूजा हुक्म ना कोए सुणाइंदा। कलयुग अन्त प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, गुर पीरां
१२ इच्छया पूर कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगदे रहे बण भिखारा, ख़ाली झोली सर्ब वखाइंदा। अन्तिम आए महांबली
बलकारा, बल आपणा आप धराइंदा। चार जुग दा लहिणा देणा चार खाणी चार बाणी दए नवारा, चार वेद पन्ध मुकाइंदा।
चारों कुण्ट एका नाअरा, चौथे घर लग्गे अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाणा आपणा आप
मिटाइंदा। आपणे भाणे आपे तोड़, आपणा खेल कराईआ। आपणे हुक्मे आपे जोड़, गुरसिख शब्दी मेल मिलाईआ। कलयुग
अन्तिम वेख अन्धेरा घोर, हरि घोरी फेरा पाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपणे संग लए जोड़, जोड़नहारा दिस ना
आईआ। अन्त कन्त भगवन्त निरगुण सरगुण जाए बौहड़, रूप अनूप वटाईआ। लख चुरासी वेखे परखे रीठा मिट्ठा कौड़,
घर घर आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण
नर, गुरमुखां देवे इक्को वर, भावी अन्त नेड़ ना आईआ। भावी अन्त आए ना नेड़े, जिस जन हरि हरि दया कमाइंदा।
आप वसे गुरसिख खेड़े, गुरसिख खेड़ा आपणा घर बणाइंदा। परम पुरख दासी दासा बण बण बन्न्हे बेड़े, बेड़ा लोकमात
चलाइंदा। आवण जावण लख चुरासी कटे गेड़े, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। हक़ो हक़ करे नबेड़े, पर्दा ओहला ना कोए

जणाइंदा। वसणहारा नेरन नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। चारों कुण्ट सति सरूपी शब्द अगम्मी पाए घेरे, हरि का घेरा ना कोए तुड़ाइंदा। अट्ठे पहर दिवस रहिण गुरसिख तेरे वसे डेरे, आपणा डेरा ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख आपणी गोद रखाइंदा। गुरसिख आपणी गोदी चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। आवण जावण जाए मुक्क, गेड़ा गेड़ ना कोए भुआईआ। रुत्त बसन्ती सुहाए अबिनाशी अचुत्त, आपणी दया आप कमाईआ। सचखण्ड निवासी सति पुरख निरँजण आपे तुट्ठ, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले, एका बन्धन नाम रखाईआ। एका बन्धन देवे पा, आत्म परमात्म खेल कराइंदा। परमानंदन दए वखा, निजानंद रस चुआइंदा। मस्तक टिक्का चन्दन दए लगा, जोत ललाटी डगमगाइंदा। ब्रह्मण्डन खण्डन पार करा, जेरज अंडन डेरा ढाहइंदा। नाम मृदंगन इक्क वजा, भय भयानक ना कोए वखाइंदा। साचा संगन बेपरवाह, सगला संग आप निभाइंदा। गुरसिख रंगण आप चढ़ा, रंग रंगीला इक्क रंगाइंदा। अन्त भावी दए मिटा, भाणा आपणे हत्थ रखाइंदा। सवच्छ सरूपी दरस करा, गुरसिख आपणी बूझ बुझाइंदा। शब्द बबाणे लए चढ़ा, दरगाह साची आप बहाइंदा। सचखण्ड दवारा दए सुहा, घर साचा आप वड्याइंदा।
१५ गुरसिख जोती जोत मिला, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आपणे विच लए समा, आपणा कीता आपणी झोली पाइंदा। १५
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भाणा भावी आपणे हुक्मे खेल कराइंदा।

१२ १२

✳ २४ चेत २०१६ बिक्रमी भान सिँघ नानक पुरा ज़िला करनाल ✳

सति सतिवादी साचा नाम, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। हँ ब्रह्म खेल महान, आत्म अन्तर पर्दा लाहइंदा। निरगुण सरगुण सच निशान, दरगाह साची धाम वखाइंदा। बिन अक्खर देवे ज्ञान, अख़शर रूप ना कोए वटाइंदा। बिन नेत्र देवे ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाइंदा। बिन मंग्गयां देवे माण, निमाणयां गले लगाइंदा। बिन बोल्यां जाणे राम, राम आपणा नाउँ धराइंदा। बिन दीपक मिटे अन्धेरी शाम, जोती नूर डगमगाइंदा। बिन कासद देवे पैग़ाम, सच संदेशा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क रखाइंदा। साचा नाम आदि अन्त, हरि जू एका एक जणाईआ। कोटन कोटि नाउँ महिमा करन अगणत, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। हरि का भेव जाणे गुरमुख विरला सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। एका नाम एका मंत, मन्त्र इक्को नाम दृढ़ाईआ। एका नार एका कन्त, पुरख

अबिनाशी इक्क अख्वाईआ। एका धाम सोभावन्त, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। एका बोध ज्ञान होए पंडत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका नाम वखाईआ। एको नाम हरि हरि नाद, अनादी नाद वजाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खेल कराइंदा। आप प्रगटाए आदि जुगादि, जुग जुग वेस कराइंदा। भेव खुल्हाए सन्तन साध, साची साधना आप कराइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप वटाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लाध, गुर गुर आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। जगत अन्धेरे विच्चों काढ, साचे मार्ग आपे लाइंदा। आत्म सेजा करे लाड, सुहञ्जणी सेज आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त इक्को नाम वखाइंदा। इक्को नाम हरि हरि जाप, रसना जिह्वा कहिण ना सके राईआ। जुगा जुगन्त वड प्रताप, गुर अवतार रहे जस गाईआ। कोटन कोटि मेटे संताप, संसा रोग रहिण ना पाईआ। मेल मिलाए कमलापात, घर मेला सच्चे माहीआ। हरि का नाउँ रूप रंग रेख ना कोई पात, ज़ात अज़ाती आपणी धार रखाईआ। आत्म परमात्म बंधाए नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म सुणाए गाथ, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। ईश जीव देवे साथ, सगला संग निभाईआ। लेखा जाणे अनाथी नाथ, नाथ अनाथी वड वड्याईआ। हरि का नाउँ सदा समराथ, समरथ पुरख आप प्रगटाईआ। साचे भगतां देवे आपणी वथ, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप उपजाईआ। एका नाउँ आत्म परमात्म निरगुण सरगुण धार, हँ ब्रह्म सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण गुर गुर लै अवतार, शब्दी शब्द ढोला गाए सच्चा माहीआ। पुरख पुरखोतम एका तार, एका गीत इक्क संगीत राग रंग इक्क रखाईआ । सचखण्ड निवासी वसणहारा धाम न्यार, एकँकार सति तराना बोल जैकार, जै जैकार आपणे नाउँ सुणाईआ। थिर घर खेल अगम्म अपार, तन्दी तन्द ना कोए सतार, रागी राग लए उच्चार, ढोलक छैणा साज ना कोए वजाईआ। पंज तत्त ना कोए आधार, मनमति बुध ना कोए विचार, रसना जिह्वा ना कोए शृंगार, शरअ शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। हरि का नाउँ दस्से सच दरबार, वरन बरन ना कोए आधार, दीन मज़्हब ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त इक्को नाम प्रगटाईआ। आदि अन्त इक्को नाम, हरि हरि आप प्रगटाइंदा । जुगा जुगन्तर जन भगतां देवे साचा जाम, अंमिउँ रस आपणा नाम प्याइंदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण देवे सति पैग़ाम, आपणी सिख्या सच समझाइंदा। निहकर्मी करे कराए साचा काम, कर्म कांड वंड ना कोए वंडाइंदा। सरगुण निरगुण देवणहारा दान, साचा दान वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जगत नेत्र नैण दिसे ना कोए निशान, हरि का नाम नज़र किसे ना आइंदा।

जगत जिह्वा बत्ती दन्द जीव जंत सारे गाण, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाइंदा। जिस जन उपर होए आप मेहरवान, एका देवे साचा दान, आत्म अन्तर नाम निधाना आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ एका हट्ट रखाइंदा। साचा नाउँ काया हट्ट, डूँघी कंदर आप रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त रसना जिह्वा मणका मणका माला रहे रट, जगत जीवण जुगत हथ्थ किसे ना आईआ। नौ नौ चार चार चार कुण्ट रहे नट्ठ, बण बण पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैण नज़र कोए ना पाईआ। चार दीवारी जगत खेड़ा मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ, सति सरूप शाहो भूप बिन रंग रूप सति सरूपी नज़र किसे ना आईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर उच्चे टिल्ले पर्बत कर के बैठे हठ, धूणी ता ता अग्न तपाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा नाउँ साचे मन्दिर बैठा रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कर किरपा जिस देवे दस्स, सो जन खोजण बन कदे ना जाईआ। गृह मन्दिर अंदर होए प्रकाश, प्रकाशवान आपणा नूर धराईआ। सो पुरख निरँजण शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। हँ ब्रह्म रखे पास, आत्म परमात्म होए ना
१७ कदे निरास, निरिच्छत आपणा भेव आप खुल्हाईआ। साचा राम साचा नाम साचा काम साचा शाम, मुकंद मनोहर लख़मी १७
नरायण आपणी तार सितार साची बंसरी नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप
१२ वरताईआ। एका नाम श्री भगवन्त, आदि जुगादि आप वरताइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण महिमा गायण अगणत, लिख १२
लिख लेख ना कोए समझाइंदा। पीर पैग़म्बर सारे कहिण हरि बेअन्त, बेऐब परवरदिगार हथ्थ किसे ना आइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कर कर ज्ञानत, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। तेरा नाउँ कोए ना जाणे आदि अन्त, बेअन्त तेरा भेव कोए ना पाइंदा। तेरी महिमा गा गा थक्के गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत सन्त, सति कह कह सर्ब सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवणहारा वर, नाम नामा आप वरताइंदा। नाम नामा वस्त अमोलक, अमुल आप वरताईआ । गुरमुखां रखे काया गोलक, घर घर विच दए वखाईआ । अनहद नाद अनादी वज्जे ढोलक, वजावणहारा नज़र ना आईआ। नाद सुणाए बिन रसना जिह्वा अणबोलत, अणबोलत करे पढ़ाईआ। एका नाम वखाए अडोलत, अडोल अडुल्ल कदे ना जाईआ। सच दुआरा साचा खोजत, हरि जू साचा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा नाउँ समझाईआ। आदि अन्त एका नाम, हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण कहे सतिनाम, नाम सति सरगुण रूप वखाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे भगवान, भगवन

आपणा भेव छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम आपणा नाम आप प्रगटाइंदा। अन्तिम आपणा नाउँ कर प्रगट, परम पुरख खेल खलाईआ। नानक निरगुण गया रट, रसना जिह्वा सोहँ ढोला गाईआ। गोबिन्द गुर कहे पुरख समरथ, पिता पूत वेस वटाईआ। तीर कमान मेरा भथ्था, साचा चिला सोहँ नाउँ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गायण जस, आत्म परमात्म एका घर वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी वेख्या हस्स हस्स, कोटन कोटि नाउँ धराईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त नाम अगम्मी डोरी पाए नथ्थ, नजर किसे ना आईआ। सच दुआरे इक्क इकट्ठ, सचखण्ड निवासी आप कराईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। सोहँ जपणा साचा जाप, जाप आपणा नाउँ वखाईआ। आत्म परमात्म बणाए वड प्रताप, वड प्रतापी होए सहाईआ। गुरमुख जाणे आपणा आप, हरि जू आपा बूझ बुझाईआ। नाता तुट्टे त्रैगुण ताप, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। जन्म जन्म दा मिटे पाप, कर्म कर्म रहे ना राईआ। आत्म परमात्म मेला जिउँ पूत माई बाप, पुरख अकाल आपणी गोद सुहाईआ। ईश जीव सज्जण साक, सगला संग आप रखाईआ। पारब्रह्म खोल्हे ताक, नूरी जल्वा दए दरसाईआ। आत्म सेजा साचे मन्दिर सुरती शब्द बोले इक्क वाक्, सोहँ ढोला सच्चा गाईआ। गुरमुख उतरे आपणे घाट मँझधार ना कोए रुड़्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन एका नाम वखाईआ।

एका नाउँ हरि का रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। एका धाम सच पलँग, सच सिँघासण इक्क सुहाइंदा। एका नाउँ इक्क मृदंग, हरि मृदंगा आप वजाइंदा। एका सूरबीर सरबंग, बलधारी आपणा बल रखाइंदा। एका घट घट अंदर जाए लँघ, लख चुरासी अंदर डेरा लाइंदा। एका करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम उठाइंदा। एका वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार चलाइंदा। एका गावणहारा छन्द, गीत गोबिन्द इक्क अल्लाइंदा। एका जुग चौकड़ी मेटणहारा पन्ध, बण पाँधी फेरा पाइंदा। एका जन भगतां देवे सच्चा अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। एका टुट्टी देवे गंढ, गंढणहार गोपाल दया कमाइंदा। एका कलयुग अन्तिम मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया धक्का लाइंदा। एका लख चुरासी वेखे नार दुहागण रंड, नव नौ आपणा फेरा पाइंदा। एका लहिणा देणा जाणे सूरज चन्द, आदि जुगादि जुग जुग आपणे हुक्म फिराइंदा। एका लख चुरासी तोड़णहारा फंद, फंदी आपणी आप कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्तिम देवे सच्चा वर, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। साचा नाउँ हँ ब्रह्म, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण ना मरे ना पए जम्म, हँ ब्रह्म जीव जंत आपणा खेल वखाईआ। आत्म परमात्म पवण स्वासी इक्को दम, एका रसना नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां करे सच पढ़ाईआ।

✳ २४ चेत २०१६ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

नव नौ चार खेल महान, सो पुरख निरँजण आपणा खेल कराईआ। तख्त निवासी वड मेहरवान, धुर फ़रमाणा हुक्म वरताईआ। बोध अगाधा इक्क ज्ञान, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। शब्दी शब्द कर बलवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणी धार वखाईआ। निरगुण सरगुण कर निशान, रूप अनूप आप वटाईआ। सच संदेशा धुर फ़रमाण, सति सतिवादी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार खेल कराईआ। नव नौं चार खेल पुरख समरथ, सति सतिवादी आप कराइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण साचा मार्ग दस्स, साचा राह आप वखाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता घट घट अन्तर आपे वस, निरगुण नूर नूर डगमगाइंदा। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म कर कर वस, हुक्मे हुक्म आप चलाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप जणाइंदा। साची खेल हरि निरँकार, आदि जुगादि कराईआ। धुर फ़रमाणा बोल जैकार, जै जैकार आपे गाईआ। निरगुण सरगुण दए आधार, लख चुरासी बन्धन पाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया आप वरताईआ। नाउँ निरँकारा कर उज्यार, साचा सोहला ढोला आपे गाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर रूप वटाईआ। महल अटल उच्च मनार, दर घर साचा आप वखाईआ। बोध अगाधी शब्द धुन्कार, अगम्मी नाद आप वजाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। तख्त निवासी शाह सिक्दार, शाहो भूप राजन राज, सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाईआ। साची धारा करता पुरख, कर करनी आप चलाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण करे परख, वड पारखू वेस वटाइंदा।

दीन दयाल ठाकर स्वामी बोध अगाधा शब्द अनादा आप बुझाए आपणी हरस, आसा तृष्ना ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी कर करतार, अचरज आपणा खेल कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, त्रै त्रै एका गंढु पुवाईआ। पंचम पंचम कर प्यार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण दे आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म पावे सार, परम पुरख वडी वड्याईआ। नाम निधाना इक्क जैकार, बिन रसना जिह्वा गाईआ। मर्द मर्दाना साचे तख्त बहे सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। आपणी सेवा करे बण बण सेवादार, गुर गुर आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। साचा खेल पुरख अकाला, अकल कल आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण करे खेल निराला, निराकार निरवैर अजूनी रहित दिस किसे ना आइंदा। गुर अवतार नाम अपार इक्क वखाए साची माला, मणका रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह हरि हरि मीता, एका एक चलाईआ। बोध अगाधी नाम अनडीठा, लोकमात मात प्रगटाईआ। खाणी बाणी चलाए रीता, नीतीवान वड वड्याईआ। वसणहारा धाम अनडीठा, लोकमात वेख वखाईआ। गुर अवतार अमृत धारा देवे ठांडा सीता, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि निरँकार, आदि पुरख आप लगाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, खाणी बाणी आपणा हुक्म वरताइंदा। सेवा ला गुर अवतार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। काया तत्त दे आधार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। धुर दी बाणी धुर दी धार, शब्द अनादी बोल जैकार, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाइंदा। दीआ बाती कमलापाती खोल्ह ताकी साची हाटी कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा आप गवाइंदा। बण साकी लेखा जणाए ख़ाकन ख़ाकी, पाकन पाकी साचा जाम, अमृत रस आप चखाइंदा। सर्ब गुणवन्ता पूरन भगवन्ता करे खेल बेअन्त बेअन्ता इक्क प्रगटाए आपणा नाम, नाम अनामी आप वड्याइंदा। दाता दानी श्री भगवान लेखा जाणे दो जहान, देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेशा नर नरेशा एका एक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। साचा खेल एकँकार, आपणा आप आप जणाईआ। लख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण बन्धन पाईआ। पंचम तत्त तत्त अखाड़, पंचम खेल करे अपार, पंचम नाद शब्द धुन्कार, पंचम सुहाए महल अटल मनार, पंचां मेले एका वार, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह पुरख अबिनाश, इक्क इकल्ला आप चलाईआ। तख्त निवासी

शाहो शाबाश, वसणहारा सचखण्ड महल्ला, दरगाह साची बैठा आसण लाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त श्री भगवन्त फड़ाए पल्ला, नाम डोरी इक्क वखाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, करे खेल अछल अछला, जुग करता वेस अनेका आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, हुक्मी हुक्म कर वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। धुर फ़रमाणा हरि संदेशा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ नर नरेशा, आपणा हुक्म वरताइंदा। वसणहारा साचे देसा, देस दसन्तर खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण कर कर वेसा, गुर गुर रूप वटाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी जाणे पेशा, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप वरताइंदा। धुर फ़रमाणा एका वार, एका एक जणाईआ। जुग चौकड़ी विच संसार, इक्क इक्क वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर भगत भगवन्त करन निमस्कार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। हुक्मे अंदर सन्त साजण मंगण बण भिखा़र, ख़ाली झोली सर्ब वखाईआ। हुक्मे अंदर गुरमुख करे दरस दीदार, जगत तृष्ना हरस मिटाईआ। हुक्मे अंदर गुरसिख खोल्हे बन्द किवाड़, बन्द ताकी आपे लाहीआ। हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यार, नूर नूर नूर प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर वेद चार, हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत करे प्यार, हुक्मे अंदर आपणा भेव आप खुल्हाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार, हुक्मे अंदर पीर पैग़म्बर कढ्ढुण वगार, बण वगारी फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर अञ्जील कुरान, हुक्मे अंदर बोध ज्ञान, हुक्मे अंदर नाम सति निशान, सति सतिवादी आप जणाईआ। हुक्मे अंदर गोबिन्द मेला विच जहान, करे खेल श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। साचा खेल अपर अपारा, सो पुरख निरँजण आप वरताइंदा। जुग चौकड़ी कर पसारा, नित नवित वेख वखाइंदा। गुरू अवतार भगत भगवन्त देंदा रिहा सहारा, समरथ पुरख चरन ध्यान इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग कोटन रूप अनूप वटाइंदा। जुग जुग खेल पुरख अगम्म , अगम्मड़ा आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बेड़ा बन्न्ह, लोकमात पार कराइंदा। गुर अवतार बण बण जननी जन, गोदी गोद सुहाइंदा। लेखा जाण पंज तत्त तन, तन मन्दिर डेरा लाइंदा। वस्त अमोलक एका धन, नाम निधाना आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप जणाइंदा। साची सेवा चार जुग, जुग करता आप जणाईआ। करदा रिहा खेल लुक लुक, ज़ाहर ज़हूर नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख विरले गोदी चुक्क, बिन डिठयां गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। जुग चौकड़ी

२१
१२

गए बीत, हरि सतिगुर आप बिताईआ। आप बैठा रिहा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जुग जुग चलाउँदा रिहा रीत, पीर पैग़म्बर गुर अवतार मात प्रगटाईआ। लख चुरासी परखदा रिहा नीत, नीतीवान आप हो जाईआ। भगतां दस्सदा रिहा सच प्रीत, प्रेम फंदन एका पाईआ। ठगौरी करदा रिहा मन्दिर मट्ठ शिवदुआला मसीत, चार दीवार बंक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत रीती आप चलाईआ। जगत रीती विच संसार, जुग करता आप चलाइंदा। कोटन कोटि नाउँ कर उज्यार, रसना जिह्वा जगत सुणाइंदा। कोटन कोटि इष्ट अपार, अपरम्पर भेव रखाइंदा। कोटन कोटि जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा भेव रखे हथ्थ, भेव कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी देवे मथ्थ, मथणहारा इक्क अख्वाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी सुणाउँदा रिहा गाथ, आपणा अक्खर कर पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण नित नवित कर कर हित्त देंदा रिहा साथ, लोकमात संग निभाईआ। जुग चौकड़ी वंडण वंडदा रिहा ज़ात पात, वरन गोत खेल कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लिखदा रिहा कलम दवात, लिख लिख लेखा जगत धराईआ। पुरख अबिनाशी दूर दुराडा तख्त निवासी वेंहदा रिहा मार झात, आपणी झाकी ना किसे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह आप चलाईआ। साचा राह आदि जुगादि, हरि करता आप चलाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड वज्जे नाद, तुरया राग आप अल्हाइंदा। आपे होए रहे विस्माद, बिस्मिल आपणी धार रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा खेल तमाश, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। जुग चौकड़ी जाए लँघ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड सुत्ता रहे सच पलँग, पावा चूल ना कोए बणाईआ। नाउँ निरँकारा वज्जदा रहे मृदंग, आदि जुगादि करे शनवाईआ। गृह मन्दिर अंदर इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, जुग जुग ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैग़म्बर साची सेवा लाईआ। साची सेवा डूँघा खात, भेव कोए ना पाइंदा। दो जहानां वेखण मार झात, हरि का अन्त नज़र किसे ना आइंदा। बण भिखारी मंगदे रहे दात, दाता दानी झोली आप भराइंदा। हुक्मे अंदर गा गा गए गाथ, आपणा राग ना कोए सुणाइंदा। निउँ निउँ टेकदे गए माथ, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रख

के गए आस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। नव नौ चार रखी आस, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ तेरे मिलण दी इक्क प्यास, दूजी तृष्ना ना कोए रखाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाश, भेव कोए ना पाईआ। बण बरदे तेरे दास, तेरी सेवा मात कमाईआ। अन्तिम इक्को इक्क अरदास, दोए जोड़ पए सरनाईआ। असीं प्रगटे तेरी शाख़, पत डाल्ही मात महकाईआ। तूं अन्तिम बणना राख, राखी तेरे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख रिहा समझाईआ। आदि पुरख एका बात, बिन अक्खर आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रखणा याद, नाउँ निरँकारा आप समझाइंदा। दिवस रैण गाउणी गाथ, साचा हुक्म आप वरताइंदा। करे खेल बौह बिध भांत, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। धुर फ़रमाणा एकँकार, एका एक जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सब मंगदे रहिण बण भिखार, भिखक आपणी दया आप कमाईआ। टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूँघी कंदर जंगल जूह फिरदे रहिण उजाड़ पहाड़, दर दर फेरा पाईआ। अंदर वड़ वड़ कढुदे रहिण हाढ़, मस्तक टिक्का धूढ़ी ला ला छाहीआ। निउँ निउँ करदे रहिण निमस्कार, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। उच्ची कूक कूक करदे रहिण पुकार, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुरमुख विरले लए उभार, अठ्ठ दस बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा आप रखाईआ। नव नौ चार साचा गेड़ा, हरि हरि आप चलाइंदा। खाणी बाणी वेद पुराणी रखे झेड़ा, वरन बरन वंड वंडाइंदा। अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। हरि का हुक्म मेटे केहड़ा, मेटणहार ना कोए अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल श्री भगवान, कलयुग अन्त जणाईआ। गुर अवतार आपणा दयो सर्ब ब्यान, नाम ब्याना इक्क रखाईआ। जिस दा रखदे आए ध्यान, निज आत्म ध्यान लगाईआ। जिस नूं मन्नदे आए भगवान, निरगुण सचखण्ड वसे साचा माहीआ। जिस दे उत्ते रखदे आए ईमान, कलमा कायनात पढ़ाईआ। जिस नूं सजदा सीस करदे रहे सलाम, सही सलामत फेरा पाईआ। जिस नूं मन्नदे रहे वड अमाम, सो परवरदिगार वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। साचा लेखा हरि भगवन्त, आपणा आप जणाइंदा। कलयुग वेला आए अन्त, निरगुण वेस वटाइंदा। लख चुरासी वेखे जीव जंत, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। गुरमुख उठाए साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाइंदा। सुरती शब्दी मेला नारी कन्त, कर किरपा आप कराइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी आप बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार वेख

वखाइंदा। एका नाम जणाए साचा मंत, मन्त्र आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग आपणा भेव खुल्हाइंदा। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, हरि सतिगुर आप जणाईआ। गुर अवतारां पन्ध मुकाउणा, पीर पैग़म्बर लहिणा झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा खेल आप रचाउणा, रच रच वेखे सच्चा माहीआ। साचा मार्ग आपे लाउणा, भेव कोए ना पाईआ। जन भगतां नाम आपे गाउणा, भगवन भगत मुख सालाहीआ। दर दर घर घर फेरा पाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा राह आप चलाईआ। कलयुग अन्तिम सच्चा राह, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। गुर पीर अवतार नाल रखाए गवाह, ब्यान कलमबन्द कराइंदा। अन्तिम कोई ना करे ना, लेखा सब दा आपणे हथ्थ रखाइंदा। वेख वखाए थाउँ थाँ, थान थनंतर डेरा लाइंदा। करे खेल बेपरवाह, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। गुरमुख साचे लए जगा, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। जन्म जन्म दे बख़्श गुनाह, दुरमति मैल आप धुवाइंदा। आपणी गोदी लए बहा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। बोध अगाधी शब्द जणा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप रखाइंदा। साची रीती चलाए जग, जग जीवण दाता दया कमाईआ। प्रगट हो सूरा सरबग, बल आपणा आप रखाईआ। इक्क बणाए साची यद, विश्व आपणा रूप वखाईआ। कल कलेश पार किनारा हद्द, हदूद अरबा आपणा आप वखाईआ। इक्क वजाए अगम्मी नद्द, अनहद रागी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्त कन्त भगवन्त एका घर वसाईआ। वसे घर श्री भगवान, निरगुण निरगुण रूप वटाइंदा। लोकमात हो प्रधान, दो जहानां वेख वखाइंदा। गुर अवतारां लए ब्यान, पर्चा आपणे हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवन्त सच निशान, लोकमात झुलाइंदा। भगतां पिच्छे आपणा आप तजया विच जहान, निरगुण हो के सरगुण अंदर डेरा लाइंदा। जीव जंत ना सके कोए पहचान, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। साचा नाउँ इक्क वखाण, जोग अभ्यास पन्ध मुकाइंदा। तीर्थ तट ना कोए अशनान, अठसठ राह ना कोए तकाइंदा। कृपानिध किरपा करे हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। धुर दी बाणी धुर फ़रमाण, धुर संदेशा इक्क सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, हरि जू की खेल वरताइंदा। भगत सुणन ला ला कान, कवण नाम हरि दृढ़ाइंदा। गुर अवतार ख़ुशी मनाण, पुरख अबिनाशी आपणा खेल कराइंदा। एका नाउँ दस्स विच जहान, दो जहानां राह वखाइंदा। आत्म परमात्म देवे माण, निमाणयां गले लगाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म करे कल्याण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ईश जीव देवे दान, जगदीश झोली पाइंदा। सुरती शब्दी मेला गोपी काहन, घर मंडल रास रचाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, सेज सुहञ्जणी सोभा

पाइंदा। सतिगुर रूप सदा बलवान, बिरध बाल नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल एका घर, गृह मन्दिर आप कराईआ। गुरमुख मेला नारी नर, नर नरायण वेख वखाईआ। सन्त सुहेले आपे फड़, आपणा बन्धन पाईआ। गुरमुख सेजा आपे चढ़, आपणी खुशी मनाईआ। ना कोए सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोटन कोटि बैठे रहिण दर, दर बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव रहे डर, सीस सके ना कोए उठाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला कलयुग अन्तिम वेस कर, निहकलंका नाउँ रखाईआ। भगत भगवान देवे साचा वर, बिन मंग्गयां झोली पाईआ। निरभउ चुकाए जगत डर, भयानक रूप ना कोए वखाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम जगत जुग, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेंहदा रिहा लुक लुक, आपणा मुख ना किसे वखाइंदा। कलयुग अन्तिम नर नरेश शेर हो के रिहा बुक्क, एका भबक नाम लगाइंदा। निरगुण धारों निरगुण प्या उठ, मात पित ना कोए बणाइंदा। आपे चढ़ के बैठा साची चोट, किनारा नज़र किसे ना आइंदा। सचखण्ड बणाए किला कोट, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका एक जणाइंदा । साचा मार्ग चार वरन, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। नेत्र खुल्ल्हे हरन फरन, पुरख अबिनाशी वेखे चाँईं चाँईंआ। सतिगुर पूरा तारनहारा गुरसिख तरनी तरन, जगत किनारा पार कराईआ। सचखण्ड दवारे साचे वड़न, बह बह आपणी खुशी मनाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अक्खर एको पढ़न, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार, वेखण चाँईं चाँईंआ। जोत ललाटी मस्तक टिक्का कौस्तक मणीआं आपे जड़न, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा नाउँ इक्क समझाईआ। साचा नाउँ आत्म परमात्म, परम पुरख आप जणाइंदा। लेखा जाणे ज़ाहर बातन, गुपत आपणा रंग रंगाइंदा। भेव खुल्हाए पृथ्मी आकाशन, गगन पातालां डेरा लाइंदा। लहिणा देणा जाणे पवण स्वासण, पवण पवणां विच समाइंदा। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी बणया दासी दासन, बण सेवक सेव कमाइंदा। गुरमुखां पूरी करे आसण, आपणी आसा आपे पूर कराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क इकल्ला पुरख अबिनाशण, जन्म मरन मरन जन्म विच कदे ना आइंदा।

✻ २५ चेत २०१६ बिक्रमी नछत्र सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

आपणी करनी रिहा कर, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण रूप निरगुण धर, निरगुण निराकार खेल कराईआ। जोती नूर जोत उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। दो जहानां पावे सार, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी लहिणा दए उतार, देणा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार करन विचार, हरि विचार विच किसे ना आईआ। भगत मंगण दर दुआर, बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी अन्त ना पारावार, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। ऐसी करनी करे करतार, भेव कोए ना पाइंदा। वेद शास्त्र गए हार, हरि का पन्ध ना कोए मुकाइंदा। लिख लिख थक्क गए लिखार, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। अन्त पा पा थक्के गुर अवतार, बेअन्त भेव ना कोए जणाइंदा। भगत चढ़ चढ़ थक्के महल्ल मनार, किनारा पार ना कोए कराइंदा। सन्त ला ला धूढ़ी छार, ख़ाकी ख़ाक आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। कवण करनी करे हरि, भेव किसे ना आईआ। जुगा जुगन्तर खेल कर, जुग करता वेख वखाईआ। लख चुरासी अंदर वड़, घट घट डेरा लाईआ। भगत भगवन्त आपे फड़, जुग जुग करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए लड़, पल्लू एका नाम वखाईआ। सच नुहाए साचे सर, सरोवर एका इक्क प्रगटाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भय अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साची करनी श्री भगवन्त, आदि जुगादि कराइंदा। त्रैगुण माया पा बेअन्त, लख चुरासी आप भुलाइंदा। भेव अभेदा जीव जंत, जीवण दाता पर्दा ना किसे उठाइंदा। लेखा जाण आदि अन्त, मध आपणा हुक्म वरताइंदा। सेवक सेवा कोटन साध सन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख अबिनाश, एका एक कराईआ। जुग चौकड़ी पा पा रास, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। दीआ बाती कर प्रकाश, कमलापाती दए वड्याईआ। आप आपणा खोल्हे ताक, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। साचा खेल ना कोई सके सोच, सोचिआं सोच विच कदे ना आईआ। भगत भगवान दर्शन रहे लोच, तरलोचण दए गवाहीआ। कबीरा चढ़ के वेखे किला कोट, महल अटल बैठा सच्चा माहीआ। रविदास लगाए इक्क चोट, तन नगारा नाद वजाईआ। हरि का रूप निर्मल जोत, बिमल आपणी खेल वखाईआ। भगत भगवन्त ओत पोत, पिता पूत वेख वखाईआ। ताणा पेटा एका सूत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भेव ना किसे जणाईआ। ऐसी करनी करे करता पुरख,

नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि ना कोई सोग ना कोई हरख, हरख़ सोग ना कोए वखाइंदा। जन भगतां उपर कर कर तरस, मेहर नज़र इक्क रखाइंदा। अमृत मेघ एका बरस, अग्नी तत्त तत्त बुझाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग, माणस जन्म तेरा कढुदा रिहा अरक, गेड़ा गेड़े विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी जगत भट्ठी आप बणाइंदा। जगत भट्ठी बणाए बण भठयाला, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग खेल करदा रिहा निराला, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। भगतां तोड़ जगत जंजाला, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। एका मार्ग नाम सुखाला, सुखआसण दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। जुग जुग जाणे जगत तपस्सया, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। भगती अंदर भगत फसया, फस फस जगत चोटां खाइंदा। पुरख अबिनाशी दूर दुराडा फिरे नस्सया, हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। ऐसी करनी करे जग, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रगट हो सूरा सरबग, हर घट वेखे थाईं थाईंआ। नव नौ बुझाए अग्ग, तत्तव तत्त दए मिटाईआ। कलयुग अन्त हो प्रगट, परम पुरख वेस वटाईआ। भगत अठारां चरनां हेठां रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ।
२७ भगत दुआरे भगत हस्सण, घर साचे वज्जे वधाईआ। इक्क दूजे नूं सारे दस्सण, रसना रसना नाल मिलाईआ। करे खेल २७
१२ पुरख समरथन, समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लख चुरासी आया मथन, नव नौ रिड़कणा पाईआ। चार जुग इक्क १२
इक्क कर के लाए आपणे पत्तण, आपणे बेड़े नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराईआ। करे करनी करनेहारा, भेव कोए ना पाइंदा। जुग चार जो बणया रिहा वरतारा, दाता दानी आपणा नाउँ धराइंदा। देंदा रिहा सर्ब सहारा, सर्ब रक्षक सेव कमाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देंदा रिहा लारा, आपणा अन्त ना किसे जणाइंदा। छिन्न मातर दे दे गया इशारा, रमज़ रमज़ नाल मिलाइंदा। वेद व्यासा बण लिखारा, ईस मूसा मंग दुआरा, नानक गोबिन्द बण वणजारा, जगत जीवण हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। ऐसी करनी करे कवण, भेव किसे ना आईआ। हुक्मे अंदर उणंजा पवण, पवण पवणां विच समाईआ। लेखा जाणे अवण गवण त्रै, भवण धनी आपणा रूप वटाईआ। भेखा धारी करे भेख बल बवन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी किरत इक्क रखाईआ। करनी किरत करने योग, एका एक हरि अख्खाइंदा। निरगुण सरगुण सच संजोग, सच संजोगी मेल मिलाइंदा। इक्क दुआर दरस अमोघ, स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। लेखा

जाणे चौदां लोक परलोक आपणा हुक्म वरताइंदा। नाम अगम्मी सति सलोक, सति सतिवादी आप जणाइंदा। वसणहारा साचे कोट, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पुरख अकाल तेरी रख के गए ओट, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। कलयुग अन्त प्रगट करे निर्मल जोत, जोती जाता वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम करे करनी, करता पुरख वडी वड्याईआ। भाग लगाए उपर धरनी, धरत धवल आप सुहाईआ। नाता तोड़े वरनी बरनी, वरन बरन कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख लाए साचे सरनी, सरनगति इक्क समझाईआ। नेत्र खुल्हे हरनी फरनी, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराईआ। ऐसी करनी कलयुग अन्त, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। चार जुग दा पिछला मंत, मन्त्र मूल लेखे पाइंदा। सति सतिवादी महिमा अगणत, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आत्म परमात्म मेला नारी कन्त, कन्त कन्तूहल खुशी कराइंदा। गुरमुख गुर गुर वेखे साचे सन्त, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची करनी करे संसार, जग सागर वेख वखाईआ। जन्म कर्म दे विछड़े मेले यार, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी विच्चों लए उठाल, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। घर विच मेला साची धर्मसाल, गृह मन्दिर दए सुहाईआ। अमृत प्याए सच्चा जाम, रस निझर इक्क वखाईआ। बिन ढोलक छैणे वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा आप रखाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह दए वड्याईआ। आपणी करनी करे संभाल, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरमुख वेखे सज्जण लाल, लालण आपणे रंग रंगाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी विच्चों करे बहाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। मेहर नज़र पाए आप, आपणी दया आप कमाइंदा। आत्म परमात्म उपजे जाप, जगत विचोला नज़र कोए ना आइंदा। जुग चौकड़ी जिस दा करदे गए पूजा पाठ, सो पुरख निरँजण गुरमुख साचे वेख वखाइंदा। जिस दी वरन बरन गाउँदे रहे गाथ, रसना जिह्वा रंग रंगाइंदा। सो लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाइंदा। जिस दी धूढ़ी मंगदे तीर्थ अठसाठ, सो धूढ़ी मस्तक टिक्का गुरसिखां आप लगाइंदा। जिस नूं गाउँदे गए त्रिलोकी नाथ, सो अनाथ अनाथां वेख वखाइंदा। जिस नूं मनौदा गया राम बेटा दसराथ, सो राम रमइया आपणा फेरा पाइंदा। जिस दा नानक गोबिन्द मंगदे गए साथ, सो पुरख अकाल वेस वटाइंदा। जो आदि जुगादि सतिजुग त्रेता द्वापर भगतां देंदा रिहा दात, दानी आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द इक्क चढ़ाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतार पीर

पैग़म्बर डूँग्घा खात, आपणा खाता ना किसे वखाइंदा। तोड़े नाता वरन बरन ज़ात पात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ऐसी करनी आप कराइंदा। ऐसी करनी कवण करे तुध बिन, भगत भगवान रहे वड्याईआ। रूप रेख ना दिसे चिन्न, चित्रकार तेरा चित्तर सके ना कोए वखाईआ। आदि जुगादि करे खेल भिन्न भिन्न, बेअन्त तेरी वड्याईआ। लेखा देवें गिण गिण, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। करें वसेरा बिन छप्पर छन्न, साची छप्परी भगतां आप बणाईआ। नामा कहे धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। कवण बिध माधव जाए मन्न, गोसाँई आपणी दया कमाईआ। बेड़ा मात देवे बन्न, चप्पू एका नाम लगाईआ। रविदास कहे तेरा सच्चा धन्न, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। तुध बिन ऐसी कवण करे कार, करते भेव किसे ना आया। नव नौ चार तेरा मंगदे रहे दीदार, डूँग्घी कंदर अंदर डेरा लगाया। अठसठ तीर्थ होए खुआर, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाया। पंज तत्त काया दुखड़ा सहिन्दे रहे संसार, राज राजान देण सज़ाया। तेरे हुक्मे अंदर बण बरदे सेवा करदे रहे अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर तेरे तेरा अन्त किसे ना पाया। अन्त ना जाणे कोए मीत, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। आदि जुगादी आपणा गीत, गुर अवतार आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त साची रीत, सन्त साजण राह वखाइंदा। गुरमुख रखे सदा अतीत, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। गुरसिख काया मन्दिर देहुरा वेखे मसीत, साचा गुरुदुआर आप प्रगटाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे अनडीठ, निरगुण सरगुण नज़र किसे ना आइंदा। लहिणा देणा जाणे हस्त कीट, लख चुरासी वेख वखाइंदा। सति चलाए सतिजुग रीत, सति सतिवादी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपे कर वखाइंदा। करनी करे इक्क इकल्ला, वड्डा वड वड्याईआ। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू नज़र किसे ना आईआ। सच संदेश एका घल्ला, शब्दी शब्द नाद वजाईआ। जोती जोत आपे रला, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। सचखण्ड निवासी सच बणाए इक्क महल्ला, महिफ़ल आपणी लए लगाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग करदा रिहा वल छला, कलयुग अन्तिम आपणी करनी आपे कर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। आपणी करनी सच सिँघासण, सोभावन्त आप बणाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाशन, आकाश आकाशां डेरा ढाहइंदा। निरगुण वेस पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करता आप वटाइंदा। भगत भगवन्त दासी दासन, बण सेवक सेव कमाइंदा। नामे मंग पूरी आसण, साता दूआ जोड़ जुड़ाइंदा। बहत्तर नूर नूर प्रकाशण, नाड़ बहत्तर चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी पुरख समराथ, आपणी आप कराईआ। सत्तर बहत्तर देवे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। चुहत्तर सिखां लिखाए गाथ, गुरू दस मंग मंगाईआ। मिले वड़याई पहली विसाख, गुरू गोबिन्द दए गवाहीआ। सिँघ रूप सिँघ लए राख, रक्षक बण सहाईआ। सतारां सौ पैंठ बिक्रमी नदेड़ रखी आस, आसा इक्को ओट तकाईआ। पुरख अकाल होए प्रकाश, प्रकाश मेरा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चुहत्तर करे नाम रुशनाईआ। अठ्ठ तत्त जगत पसार, नौ खण्ड पृथ्मी रचन रचाईआ। प्रेम प्यार सुबर अपर अपार, वटणा वट वट चढ़ाईआ। नीली धारों आया बाहर, गोबिन्द सच्चा माहीआ। हरिसंगत करे सति प्यार, गुरसिख नैण वखाईआ। करे खेल अगम्म अपार, कोई लिख्त ना दए गवाहीआ। चार जुग जिस दा मंगदे रहे दीदार, जगत जुगत धूंणीआँ ताईआ। सो पाँधी बणया आप करतार, दर दर घर घर आपणा फेरा पाईआ। गुरसिखां कहे मैनूं सांझी रख लओ विच संसार, मैं बण सेवक सेवा लवां कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आंधी होया अन्ध अन्धयार, बिन गुरसिख चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नीले वाला इक्को अस्वार, नीली धार पार कराईआ। बूड़ सिँघ अंदर बाहर गुपत ज़ाहर कुंडा खोल्ह किवाड़, नित नित आपणा दरस कराईआ। जे कहो मिल्या सांझा यार, हरिसंगत संग आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ नौ नौ अठ्ठ लख चुरासी बन्धन पाईआ। अठ्ठ तत्त अप तेज वाए पृथ्मी अकाश मन मति बुध, आपणा खेल कराइंदा। नौ दर नौ खण्ड पृथ्मी जगत वासना रही कुद्द, नव खण्ड आपणी खेल कराइंदा। गुर करनी गुर करता गुरमुख लए बुझ, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रातीं सुत्तयां सुरती शब्द मिलाइंदा।

✳ २५ चेत २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

सति पुरख निरँजण नईया साची नौका, नईया आपणी आप चलाईआ। जन भगतां देवे साचा मौका, खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। नव नौ चार जो करदा आया धोखा, निरगुण आपणा रूप छुपाईआ। जिस दा मार्ग सारे कहिन्दे गए औखा, कोए जीव चढ़न ना पाईआ। बिन नानक कबीर कोए ना पहुंचा, दूर दुराडे बैठे डेरा लाईआ। कलयुग अन्तिम मार्ग लाए एका सौखा, रैहबर बणे बेपरवाहीआ। साते नाल मिलाया चौका, सति सतिवादी चार जुग वेखे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। साता चौका सति सति धार, चार जुग

आस रखाइंदा। सति पुरख निरँजण खेल अपार, चार वेद सर्ब जस गाइंदा। सति सतिवादी एकँकार, चार जुग वंड वंडाइंदा।
सति सतिवादी अगम्म अपार, चार वरन वेस वटाइंदा। सति पुरख निरँजण निरगुण नूर जोत उज्यार, चारे खाणी बोध
ज्ञान दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। सति सतिवादी सति
सति, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। चार जुग चार वरन चार कुण्ट एका मति, चारे दिशां दए समझाईआ। करे
खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार वखाईआ। प्रगट हो अलखणा अलख, अलख एका एक जगाईआ। गुरमुख गुरसिख
कर कर वक्ख, वक्खर आपणी वंड वंडाईआ। हिरदे अन्तर आपे वस, काया खेड़ा दए सुहाईआ। साचा मार्ग एका दस्स,
साचे पौड़े दए चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी पूरी करे आस, साता चौका बन्धन पाईआ। गुर अवतार वेखण खेल तमाश, हरि जू
आपणा स्वांग वरताईआ। कवण बिध वसे भगतां पास, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी प्यास,
आसा तृष्ना दए गंवाईआ। लख चुरासी करे बन्द ख़लास, बन्दीखाना आपणा नाउँ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साता चौका नानक गोबिन्द धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। बवन्जा अक्खर
करन पुकार, पैंतीस अक्खर बैठा मुख छुपाईआ। अल्फ़ ये ना पाई सार, हमज़ा रमज़ ना कोए लगाईआ। चौदां विद्या
३१ होण खुआर, चौदां तबक रहे शरमाईआ। कलमा पढ़ पढ़ नबी गए हार, रसूल बेअसूल ना कोए समझाईआ। जोती जोत ३१
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साता चौका आपणी वंड वंडाईआ। साता चौका चार जुग, जुग करता खेल कराइंदा।
१२ अन्तिम औध गई पुग, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। नव नौ जो रिहा लुक्क, अन्तिम पर्दा आप चुकाइंदा। आपणे मन्दिर १२
आपे उठ, प्रकाश प्रकाश आप वखाइंदा। दीन दयाल स्वामी तुठ्ठ, अतुट दात वरताइंदा। वेखणहारा चौदां लोक, त्रैभवन
धनी आपणा खेल कराइंदा। सति सतिवादी गुरसिख आपणी गोदी चुक्क चुक्क, गुर गुर नैण खुल्हाइंदा। उज्जल करे आपणा
मुख, मुख गुरमुखां आप सालाहइंदा। जन्म कर्म दा मेटे दुःख, दुखियां दर्द आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, साता चौका जोड़ जुड़ाइंदा। साता चौका जोड़े जोड़ा, जोड़ी आपणी आप बणाईआ। पुरख अगम्मी
चढ़े साचे घोड़ा, पवण घोड़ा नज़र किसे ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड फिरे दौड़ा, गगन पाताल चरनां हेठ रखाईआ। सस्से
उपर एका हौड़ा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दोवें राह चलाईआ। हँ ब्रह्म आपे बौहड़ा, ईश जीव करे कुड़माईआ।
सति पुरख निरँजण सति सतिवादी एका चौका चौथे पद लाए पौड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा
बन्धन आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा बन्धन चार सत्त, सति सतिवादी आप रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्को मत्त, दूसर

३२
१२

अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। आदि जुगादी साचा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। एका बूंद रक्त वेखे रत्त, रत्ती रत्त रंग रंगाइंदा। एका जाणे मित्त गत, गत मित्त आपणी आप बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत चार वंड वंडाइंदा। सत्त चार वंडे वंड, वंडणहारा आप अख्वाइंदा। वेखणहारा कोट ब्रह्मण्ड, अछल अछल वेस वटाइंदा। लोआं पुरीआं आए नढु, लोकमात फेरा पाइंदा। गीत सुहागी सोहला छन्द, गोबिन्द आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म सच अनन्द, अनन्द मंगल आपे गाइंदा। जन्म जुग दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। सति सतिवादी चौथे पद वखाए इक्क धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाइंदा। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान दए बहाल, शाह पाष्तशाह ना कोए वड्याइंदा। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता माया ममता तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। करे खेल पुरख अकाल, अकल कल आपणी धार वखाइंदा। सन्त सुहेले आपे भाल, गुर चेले रंग चढ़ाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, जगत वणजारा फेरा पाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पत डाली वेख वखाइंदा। पत डाली वेखे फुल्ल, पंखड़ी आपणी आप खिलाईआ। आदि जुगादी आपे जाणे आपणी कुल, कुलवन्ता बेपरवाहीआ। सरगुण हो हो जाए भुल्ल, निरगुण भुल्ल कदे ना जाईआ। जुगा जुगन्तर पाए मुल, करता कीमत आप चुकाईआ। गुरमुख बूटा ना जाए हुल, हरी सिंच क्यारी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साता चौका एका घर बहाईआ। एका घर इक्क दरवाज़ा, एका मन्दिर सोभा पाइंदा। एका साहिब ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। इक्क वजाए अनहद वाजा, रागी आपणा राग अल़ाइंदा। एका जुग जुग रचे काजा, करता पुरख आपणी कार कराइंदा। एका भगतां मारे वाजा, शब्द अगम्मी नाद सुणाइंदा। एका नौ खण्ड पृथ्मी फिरे भाजा, आउँदा जांदा दिस किसे ना आइंदा। एका दो जहानां बणे राजा, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाइंदा। एका गुरमुखां रखणहारा लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका प्रगट होए अन्तिम देस माझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ आपणा खेल कराइंदा। नव नौ सत्त चार, चार जुग वडी वड्याईआ। पुरख पुरखोतम करे प्यार, परम पुरख बेपरवाहीआ। गुरमुख सति सतिवन्ती वेखे नार, सतिगुर बण बण सज्जण माहीआ। दो जहानां लेखे जाणे अंदर बाहर, गुपत ज़ाहर भेव सके ना कोए छुपाईआ। नेत्र खोल़े गुर अवतार अंदर बोले, एकँकार, साचे सोहले करे जैकार, जै जैकार आपणा नाउँ वखाईआ। पीर पैग़म्बर गायण ढोले, पुरख अबिनाशी वसे परदे ओहले, मुख नक़ाब आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। सृष्ट सबाई आपे मौले, करे खेल उपर धौले, धरनी धरत रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सत्त चार दए वड्याईआ। सत्त चार वडी वड़याई, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। सत्तर बहत्तर होई कुड़माई, कुड़म कुड़मेटा फेरा पाइंदा। आपे धी आपे जवाई, सौहरे पेईए आपणा रंग रंगाइंदा। आपे डोली रिहा उठाई, बण कहार सेव कमाइंदा। आपे सगन रिहा मनाई, सगला संग आप हो जाइंदा। आपे बणे सच्चा माही, आपे नार बण बण वेस वटाइंदा। आपे सच सुहञ्जणी सेजा रिहा हंढाई, तख्त निवासी सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। आपे निरगुण सरगुण पकड़े बाहीं, फड़ बाहों गले लगाइंदा। आपे देवे ठंडी छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपे मेल मिलाए चाँईं चाँईं, गोबिन्द आपणा वेला अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साता चौका नाम नौका नईया एका इक्क चढ़ाइंदा। एका नईया पुरख नार, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाईआ। बिरध बालां दए माण, निमाणयां गले लगाईआ। गोबिन्द देवे इक्क फ़रमाण, सच फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। हुक्म वरते दो जहान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, अचरज खेल आप कराईआ। अचरज खेल करे असचरज, भेव कोए ना पाइंदा। चार जुग गुर अवतारां रिहा वर्ज, हुक्मे अंदर सर्ब भुवाइंदा। भगतां देंदा रिहा मूल कर्ज़, मकरूज आपणा नाउँ वखाइंदा। कलयुग अन्तिम पूरा करे फ़र्ज़, वेस अवल्लड़ा आप वटाइंदा। नव नौ चार गुरमुखां पूरी करे ग़रज़, आपणी ग़रज़ नाल मिलाइंदा। आपणी काया कर के हरज़, गुरमख़ काया डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सत्त चार भेव चुकाइंदा। चार सत्त नार कन्त, कन्त कन्तूहल ख़ुशी मनाईआ। चाढ़े रंग इक्क बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका नाउँ मणीआ मंत, मन मणका दए भुआईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। गुरसिख मेला सतिगुर बेअन्त, बेअन्त दए वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे सर्ब जीव जंत, बिन गुरसिख लेख किसे ना मात प्रगटाईआ।

✳ २५ चेत २०१६ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फ़िरोज़ पुर ✳

ब्रह्मण्ड खण्ड जै जैकार, जै जैकार सर्ब कराइंदा। सूरज चन्द जै जैकार, जै जैकार मंडल मण्डप सोभा पाइंदा। दो जहानां जै जैकार, लोआं पुरीआं जै जैकार नाअरा लाइंदा। पृथ्मी आकाश जै जैकार, जल थल महीअल जै जैकार सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव जै जैकार, करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द जै जैकार नाम ध्याइंदा। लख चुरासी जै जैकार, चार खाणी जै

जैकार गीत अलाइंदा। चार बाणी जै जैकार, चौथे पद जै जैकार सालाहइंदा। भगत भगवन्त जै जैकार, जै जैकार सन्तां संग निभाइंदा। गुरमुख गुर गुर जै जैकार, जै जैकार गुरसिख राग अलाइंदा। निरगुण सरगुण जै जैकार, जै जैकार पंचम भेव चुकाइंदा। तत्तव तत्त जै जैकार, जै जैकार आत्म परमात्म रंग रंगाइंदा। ईश जीव जै जैकार, जै जैकार ब्रह्म पारब्रह्म सुणाइंदा। गुर अवतार जै जैकार, जै जैकार शब्दी नाद वजाइंदा। सचखण्ड दवारे जै जैकार, जै जैकार थिर घर आपणा नाद सुणाइंदा। सुन अगम्म जै जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप सालाहइंदा। जै जैकार एकँकारा, आदि अन्त इक्क कराईआ। जै जैकार ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। जै जैकार दो जहानां नाअरा, निरगुण निरवैर आप सुणाईआ। जै जैकार करे कराए जुग चारा, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। जै जैकार नाम सति वणजारा, सति सतिवादी खेल कराईआ। जै जैकार ब्रह्म ब्रह्मादी हो उज्यारा, रूप अनूप आप वटाईआ। जै जैकार काया मन्दिर अंदर खोल्ह किवाड़ा, घर घर विच राग अलाईआ। जै जैकार ठांडे दरबारा, बंक दुआरे दए वड्याईआ। जै जैकार अलख अगोचर अगम्म अपारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। जै जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाअरा आप सुणाईआ। जै जैकारा जै जै वन्त, जै जै आपणा नाम जणाइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा खेल वखाइंदा। निरगुण निरवैर बणाए बणत, निराकार वेख वखाइंदा। जै जैकार साजण सन्त, सति सतिवादी बूझ बुझाइंदा। नाम जणाए मणीआं मंत, मन ममता मांहे समाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, भेव अभेद ना कोए खुलाइंदा। जै जैकार पूरन भगवन्त, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जै जैकार कमलापाती, कँवल नैण वडी वड्याईआ। जै जैकार पुरख अबिनाशी, अबगत आपणी खेल वखाईआ । जै जैकार सर्ब सुख दाती, सुख सहिज सहिज वड्याईआ। जै जैकार दिवस रैण प्रभाती, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। जै जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप दृढ़ाईआ। जै जैकार सूरबीर हरि जोध, जोबन एका एक रखाइंदा। आदि जुगादी अगाध बोध, भेव अभेदा आप जणाइंदा। लख चुरासी सोधन सोध, सोहला ढोला एका गाइंदा। नाता तोड़े लोभ मोह हँकार क्रोध, ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप सालाहइंदा। जै जैकार साख्यात, हरि जू हरि हरि खेल कराईआ। जै जैकार कायनात, कलमा नबी इक्क पढ़ाईआ। जै जैकार पारजात, पुरख अबिनाशी रंग वखाईआ। जै जैकार खोल्हे ताक, बन्द किवाड़ी दए तुड़ाईआ। जै जैकार चढ़ाए घाट, साचे सन्तन मेल मिलाईआ। जै जैकार मिटाए वाट, अगला लेखा ना कोए रखाईआ। जै जैकार रखाए

साथ, सगला संग आप हो जाईआ। जै जैकार जोड़ जुड़ाए साचा नात, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। जै जैकार मिटाए ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। जै जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका राग सुणाईआ। जै जैकार एका ढोला, एकँकार आपे गाइंदा। जै जैकार एका बोला, दो जहानां आप सुणाइंदा। जै जैकार एका सोहला, रागी राग आप अलाइंदा। जै जैकार एका तोला, लख चुरासी तोल तुलाइंदा। जै जैकार एका मौला, घट घट आपणा रूप वखाइंदा। जै जैकार बदले काया चोला, चोली आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाद आप वजाइंदा। जै जैकार साचा नाद, अनादी आप वजाईआ। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग जुग आपणा बन्धन पाईआ। पकड़ उठाए सन्त साध, साची सिख्या इक्क समझाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप वटाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जीव जंत सब करदे गए याद, गुर अवतार याददासत इक्क बणाईआ। जै जैकार कर रहे विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सोहला आपे गाईआ। जै जैकार जै देव, गुर इष्ट वडी वड्याईआ। निरगुण सरगुण लग्गे नेहों, प्रीतीवान प्रीती इक्क समझाईआ। गुर का अमृत मिट्ठा रस मेहों, मेघ मेघला आप बरसाईआ। अलख निरँजण बेपरवाह अभेओ, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा आप अलाईआ। सच संदेशा अनक बार, अनक कलधारी आप जणाइंदा। नर नरेशा एकँकार, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। धुर दा लेखा धुर दरबार, धुर दरबार आप पढ़ाइंदा। विष्न महेष ब्रह्म गणेश सेवादार, आदेस सर्ब सीस झुकाइंदा। नर नरेश बण सच्ची सरकार, बाशक सेज आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल वखाइंदा। खेल अवल्ला हरि करतार, आदि जुगादि कराईआ। जगत महल्ला कर त्यार, लख चुरासी डेरा लाईआ। जल थल महीअल पावे सार, धरत धवल दए वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कोटन कोटि नाउँ रख विच संसार, रसना जिह्वा जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतार कर कर गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हरि का अन्त ना पारावार, दो जहान आपणे चरनां हेठ रखाईआ। आदि अन्त खेल करे अपार, खेलणहारा इक्क हो जाईआ। अन्तिम निरगुण नूर जोत करे उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराईआ। आपणा वेस आपे धार, आदि अन्त खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम निराकार, निरवैर वेस वटाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, साचा नैण इक्क उठाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ पृथ्मी आकाश गगन मंडल वेखे एका वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल अन्तिम कल, हरि करता आप कराईआ। सच सिँघासण बैठा मल, सोभावन्त बेपरवाहीआ। सच संदेशा रिहा घल, करे सच पढ़ाईआ। वसणहारा जल थल, रूप अनूप आप दरसाईआ। जोती शब्दी गया रल, दिस किसे ना आईआ। चढ़ के बैठा महल अटल, उच्च मनारा सोभा पाईआ। बिन तेल बाती दीपक गया बल, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। चार जुग दा वेख विहार, पूरब लेखा सब दी झोली पाइंदा। प्रगट हो आप निरँकार, परवरदिगार वेस वटाइंदा। चार वरन इक्क आधार, एका बूझ बुझाइंदा। चारे बाणी इक्क जैकार, चारे खाणी आप समझाइंदा। चारे कुण्ट कर विचार, दहि दिशा वेख वखाइंदा। चौथे जुग पावे सार, चौथा पद इक्क वड्याइंदा। एका नाद शब्द धुन्कार, अनादी नाद आप वजाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। अगला लेखा श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखाईआ। जै जैकार दो जहान, जीवण जुगत दए समझाईआ। एथे ओथे देवे माण, सदा सुहेला होए सहाईआ। चार वरन ढोला एका गाण, घर वज्जदी रहे वधाईआ। चारे बाणी कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाईआ। चारे खाणी दे ज्ञान, गुर ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। सचखण्ड हो प्रधान, सच प्रधानगी इक्क कमाईआ। लोकमात सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। लोक चौदां मार ध्यान, चौदां तबक दए समझाईआ। आदि जुगादी इक्क निगहबान, दूजा नूर ना कोए दरसाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होया श्री भगवान, भगवन आपणा रूप वटाईआ। सृष्ट सबाई देवे दान, दाता दानी आप अख्वाईआ। अन्त कन्त करे कल्याण, काल ग्रास ना कोए कराईआ। जो जन गावे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार ब्रह्म ब्रह्मांड कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, इक्क जैकारा सर्ब सहारा, नाम आपणे जै कराईआ।

जै जैकार विष्नूं भगवान, विश्व आपणा खेल कराइंदा। सति सतिवादी हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक्क रखाइंदा। नौ चार चुकाए आण, आपणी आण एका पाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणे रूप वखाइंदा। दर दरवेश बह बह मंगण सारे दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क कराइंदा। जै जैकार हरि मेहरवान, एका एक जणाईआ। कलयुग उठे बाल अञ्याण, बाली बुध रखाईआ। पुरख अबिनाशी दे दान, खाली झोली अग्गे डाहीआ।

३७

१२

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क कराईआ। दे दान मेरे भगवन्त, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। कलयुग वेला आया अन्त, लोकमात रहिण ना पाईआ। दुखी होए तेरे सन्त, धरत धवल रही कुरलाईआ। लोकमात माया बेअन्त, आपणा बल रही जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी गढ़ बणी हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोई सहाईआ। ना कोई बणाए साची संगत, चार वरन पई लड़ाईआ। भेव ना पाए कोई पंडत, मुलां शेख़ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त दए वरताईआ। सतिजुग साचा करे ध्यान, प्रभ चरन ध्यान लगाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, मेहर एका झोली पाइंदा। साचा दे सति ज्ञान, वस्त महान इक्क वरताइंदा। जै जैकार करे जहान, तेरा ढोला एका गाइंदा। दूजा रहे ना कोए निशान, निशाना सब दा अन्त मिटाइंदा। तख्त निवासी बह राज राजान, साचा तख्त आप सुहाइंदा। हुक्मी हुक्म करे सच फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जै जैकार विष्नूं भगवान, भगवान ढोला आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। जै जैकार दे गीत, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। सतिजुग चले साची रीत, तेरा राह दए वखाईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ फेरा कोए ना पाईआ। घर घर मिले ब्रह्म मति, जगत ज्ञान ना कोए वड्याईआ। साचा मार्ग आपणा दस्स, बण रैहबर मेरे माहीआ। तेरा नाउँ करां प्रकाश, जै जैकार करे लोकाईआ। तेरे भगतां बणां दास, बण दासी सेव कमाईआ। तूं मेरी पूरी करनी आस, मैं इक्को इच्छया रिहा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जै जैकार तेरे नाम वड्याईआ। साची इच्छया पूरी कर, करनहार मेरे गुसाँईआ। आ के डिगा तेरे दर, इक्क तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्तिम दे दे वर, फड़ मेरीआं दोवें बाहींआ। कूड़ी क्रिया मिटे डर, सच सुच्च वज्जण वधाईआ। एका माण नारी नर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे साहिब सच्चे माहीआ। दे दे वर मेरे भगवन्त, सतिजुग झोली अग्गे डाहइंदा। तूं आदि जुगादि बणाएं बणत, घड़न भन्नणहार खेल कराइंदा। मैं तेरा गावां मंत, मन्त्र इक्को नाम दृढ़ाइंदा। लेखा जाणां जीव जंत, जंत जीव तेरा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए भाइंदा। तुध बिन अवर ना कोए दीसे, नेत्र नैण नज़र कोए ना आईआ। तूं शाह पातशाह जगत जगदीशे, जगदीशर तेरी वड वड्याईआ। मैं मन्नां तेरी हदीसे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा खेल बीस बीसे, एक एके नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। वज्जे वधाई तेरे नाउँ, हउँ सिफ्ती सिफ्त सालाहइंदा। तूं ठाकर स्वामी पिता माउँ, हउँ बालक रूप धराइंदा। तूं वसें हर

घट थाउँ, मैं तेरी ओट रखाइंदा। तूं करदा सच न्याउँ, साचे तख्त सोभा पाइंदा। तूं आदि अन्त पकड़ें बाहों, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, इक्क तेरी आस रखाइंदा। इक्को रखी तेरी आस, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। तिन्न जुग दी बुझे प्यास, अमृत मेघ इक्क बरसाना। मेरे वसणा सदा साथ, सगला संग निभाना। मैं गावां तेरी गाथ, निरगुण सरगुण इक्क तराना। तूं लहिणा चुकाउणा मस्तक माथ, पारब्रह्म श्री भगवाना। तूं होएं सहाई अनाथां नाथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा दाना। एका दान दे दे दात, तेरे अग्गे मेरी अरज़ोईआ। तूं पुच्छ मेरी वात, मैं तेरी ओट तकाईआ। चार कुण्ट अन्धेरी रात, तेरे बिन ना कोए बदलाईआ। तिन्न जुग ना खोल्या ताक, आपणे अंदर बन्द रखाईआ। लख चुरासी नालों तोड़ साक, नाता एका घर बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी चलां सदा रजाईआ। तेरी रज़ा मैनूं मन्ज़ूर, मेहरवान मेहरवान मेहरवाना। तूं आपणा नाम दे ज़रूर, रागी नादी ब्रह्मादी सुणे तेरा तराना। तूं प्रगट हाज़र हज़ूर, दर देणा दरस महाना। नौ खण्ड पृथ्मी तपे वांग तन्दूर, अमृत मेघ इक्क बरसाना। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मेट मिटाना। तेरे भगत मंगण तेरी धूढ़, तेरा राह तकाना। तूं बख्शीं सर्ब कसूर, रहिमत कर किरपा श्री भगवाना। श्री भगवान प्या हस्स, हस्स हस्स खुशी मनाईआ। अन्त चले ना कोई किसे वस, सतिजुग तेरी धीर धराईआ। कलयुग कूड़ा जाणा नस्स, आपणा भार उठाईआ। पुरख अबिनाशी गुरमुखां अंदर जाणा वस, तेरा संग निभाईआ। प्रेम प्यार अंदर जाए फस, साची डोरी तन्द बंधाईआ। कूड़ी क्रिया देवे झस, उपर आपणा भार टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धीरज इक्क धीर धराईआ। धीरज देवे सच भरवासा, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। सतिजुग तेरे अंदर सति सति वासा, सति सतिवादी आप कराइंदा। गुरमुख देणा तेरा साथा, सगला संग निभाइंदा। चार जुग चार वरन जणाए इक्को गाथा, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणी धार चलाइंदा। पूरा करे भविख्त वाक्, गुर अवतार भेव चुकाइंदा। अग्गे चलाए आपणा साका, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। निरगुण नूर जोत प्रकाशा, प्रकाश आपणा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा संग वखाइंदा । सतिजुग साचे तेरा संग, सगला आप निभाईआ। नौ नौ वज्जे इक्क मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाईआ। दो जहानां बैठा लँघ, सच सिँघासण आसण लाईआ। सृष्ट सबाई सुणाए छन्द, गीत गोबिन्द आप अल्लाईआ। हरिजन देवे इक्क अनन्द, घर घर विच खुशी मनाईआ। लेखे लाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा संग वखाईआ। तेरा संग सोहँ सो, हँ ब्रह्म आप बणाइंदा। आदि अन्त आपे हो, आपणी खेल कराइंदा। आदि जुगादी बीज बो, लख चुरासी फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। अन्त पत डाली आपे लए खो, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग इक्क वखाइंदा। सगला संग सति सरूप, सति सतिवादी आप जणाईआ। आत्म परमात्म दस्से आपणी कूट, एका मन्दिर वज्जे वधाईआ। इक्क सुल्तान इक्क भूप, एका शाहो दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग रखाईआ। साचा संग सोहँ नाद, अनादी आप वजाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रखे साथ, सगला संग आप हो आइंदा। विष्नूं सेवा करे छिन छिन दास, सेवक आपणा नाउँ धराइंदा। भगवन जोत करे प्रकाश, नूरो नूर डगमगाइंदा। जै जैकार करे पृथ्मी आकाश, रवि ससि एका ढोला गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग आप निभाइंदा। सतिजुग उठ करे निमशकार, तेरी वाह वाह वडी वड्याईआ। तेरे नाउँ जै जैकार, जै जैकार जगत शनवाईआ। मार्ग लाया अपर अपार, बेअन्त वडी वड्याईआ। जीउँदयां गुरमुख वसे नाल, मरयां जूनी जूनी ना कोई भुआईआ। लेखा लिख अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात कराईआ। छत्ती जुग दा दए अधार, गुर अवतारां झोली पाईआ। बहत्तर जन कर प्यार, जन जननी बणया पिता माईआ। सत्तर वेखे साचे लाड़, गुरसिख साचे घोड़ चढ़ाईआ। चुहत्तरां आई आपणी वार, सत्त चार वज्जे वधाईआ। करे खेल आप निरँकार, निरगुण आपणा पर्दा लाहीआ। गोबिन्द गुर गुर हो त्यार, त्रैगुण मीता ठांडा सीता सच सति फेरा पाईआ। सतिजुग साची रीता चले विच संसार, साता चौका नौका नईआ इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग देवे साचा दान, जै जैकार एका राग अल्हाईआ।

✳ २५ चेत २०१६ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे घर
पिण्ड मनावां ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

सचखण्ड निवासी श्री भगवाना, सति सति आपणी धार चलाइंदा। निरगुण नूर जोत महाना, प्रकाश प्रकाश आप धराइंदा। शाहो भूप बण राज राजाना, शहिनशाह आपणी खेल कराइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवाना, रहिमत आपणी आप कराइंदा। परवरदिगार नूर नुराना, जल्वा नूर आप धराइंदा। अजूनी रहित खेल महाना, मात पित ना कोए बणाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि करतार, आदि अन्त इक्क कराईआ। सचखण्ड निवासी हो त्यार, दरगाह साची धाम सुहाईआ। धुर फ़रमाणा एका वार, एकँकारा आप जणाईआ। अगम्म अगम्मड़ी करे कार, करता पुरख भेव ना आईआ। आपणी इच्छया कर विचार, आशा एका एक प्रगटाईआ। साची भिच्छया देवणहार, वस्त अमोलक आप वरताईआ। निरगुण निरगुण निरगुण कर प्यार, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। महल अटल उच्च मनार, निहचल धाम आप सुहाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला आप वसाईआ। सच महल्ला श्री भगवन्त, सचखण्ड दवारा आप वसाइंदा। आपे महिमा जाण अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। वेस वटाए नार कन्त, निरगुण रूप अनूप रखाइंदा। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवार श्री भगवान, इक्क इकल्ला आप सुहाईआ। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। सो पुरख निरँजण नौजवान, बिरध बाल ना रूप धराईआ। हरि पुरख निरँजण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता खेल महान, खेलणहारा नज़र ना आईआ। श्री भगवान देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ वसे सच मकान, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। छप्पर छन्न ना कोए निशान, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। इक्क इकल्ला वड मेहरवान, आपणी दया आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप वड्याईआ। सचखण्ड दवारा एका एक, एकँकारा आप सुहाइंदा। निरगुण निरवैर आपे वेख, पेखत पेखत आपणी खुशी मनाइंदा। आपे वसे साचे देस, दूजा दर ना कोए वड्याइंदा। नर निरँकारा बण नरेश, निरगुण आपणा हुक्म चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल निरगुण धार, निरँकार आप कराईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। निर्मल बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाईआ। साचा साथी परवरदिगार, सगला संग आप हो जाईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यार, महल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड दवारा साचा घर, हरि जू हरि हरि आप सुहाइंदा। पुरख अकाल अंदर वड़, सच सिँघासण आसण लाइंदा। निरगुण निरगुण घाड़न घड़, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। करनी किरत करता पुरख आपे कर, निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। ना जन्मे ना जाए मर, अजूनी रहित वेस अनेक आप वटाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा घाड़न घड़, हरि घड़ घड़ खुशी मनाईआ। ना कोई दिसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। इक्क इकल्ला अंदर वड़, हरि जू आपणा आसण लाईआ। ना कोई दूसर मीत मुरार, लाशरीक इक्क अख्वाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। आपणी इच्छया बोल जैकार, जै जैकार इक्क सुणाईआ। आपणा नाउँ रख निरँकार, निरगुण आपणा नाम सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारे चाओ घनेरा, सति पुरख निरँजण आप रखाइंदा। आपे वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए जणाइंदा। आप सुहाए साचा खेड़ा, बंक दुआरी सोभा पाइंदा। आपणा नाउँ रखे मेरा तेरा, तेरा मेरा आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड दवारे आपे प्रगट, हरि जू आपणी धार चलाइंदा। एकँकारा खोल्ह हट्ट, बण वणजारा सेव कमाइंदा। निर्मल नूर जोत लट लट, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा ऊँचो ऊँच, अगम्म अथाह आप बणाईआ। ना कोई वंड चार कूट, दहि दिशा ना कोए रखाईआ। ना कोई पिता ना कोई पूत, ना कोए जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपणा खेल खलाईआ। सचखण्ड दवारा कर त्यार, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। आपणा बल आपे धार, बल आपणा वेख वखाइंदा। आपणी दिशा पावे सार, दूजा हिस्सा ना कोए वंडाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कल आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। साची इच्छया आपे रख, आपणा भेव खुल्हाईआ। निरगुण निरगुण हो प्रतख, प्रतख नूर वखाईआ। सचखण्ड दवारे बोल अलख, एका नाअरा लाईआ। आपे विच्चों कर के आपा वक्ख, आप आपणी बणत बणाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह चलाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। सचखण्ड दवारे आपे वस, साचा घाड़न लए घड़ाईआ। पूरी करे आपणी आस, आसा आसा विच मिलाईआ। आपे खेले खेल तमाश, खेलणहारा आप हो जाईआ। आपे वसे आपणे पास, साचा संग आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी इच्छया आप धराईआ। आपणी इच्छया एकँकार, आदि पुरख आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे खेल अपार, अपरम्पर आप कराइंदा। जोती जाता हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। तख्त निवासी सच्ची सरकार, शाह पातशाह वेस वटाइंदा। हुक्मी हुक्म देवे एका वार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। भूपत भूप कर त्यार, राज राजान वेस वटाइंदा। घर मन्दिर सोहे बंक दुआर,

४१
१२

४२
१२

अंदर आपणा आसण लाइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, साची खुशी आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप जणाइंदा। साची इच्छया श्री भगवान, आपणी आप प्रगटाईआ। इक्क इकल्ला बैठा विच मकान, कम्म किसे ना आईआ। निरगुण नूर ना कोई निशान, रूप रेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मता आप पकाईआ। आपणे नाल करे सलाह, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। निरगुण निरगुण लए मिला, मेल मिलावा आप बणाइंदा। पूत सपूता लए जा, जननी जन आप अख्वाइंदा। दाई दाया बेपरवाह, दिस किसे ना आइंदा। घर विच घर लए बणा, थिर घर आपणी बणत बणाइंदा। छोटा बाला विच वसा, शब्दी नाउँ धराइंदा। सीस आपणा हथ्थ टिका, समरथ दया कमाइंदा। महिमा अकथ आप पढ़ा, अक्खर वक्खर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप समझाइंदा। साची इच्छया शब्दी धार, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, घर घर विच करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी कर पसार, पसर पसारी वेख वखाईआ। धुर फ़रमाणा एका वार, हरि हुक्मी हुक्म जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रै त्रै मेला जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपे लए जणाईआ। साची इच्छया शब्दी सुत, पिता पूत आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे सोहे रुत्त, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। बाल निधाने जाणा उठ, साची सिख्या हरि समझाइंदा। पुरख अबिनाशी रिहा तुठ्ठ, दीनन आपणी दया कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुहाए रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे बह बह साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, तख्त निवासी आप जणाईआ। त्रैगुण मेला मेल मिलाना, पंचम पंच करे कुड़माईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोआं आकाश बणाना, आकाश आकाशां नाल मिलाईआ। जल थल महीअल खेल महाना, धरनी धरत धवल वड्याईआ। इक्क इकल्ला देवे दाना, साची इच्छया पूर कराईआ। विष्नूं देवे विश्व ज्ञाना, एका बूझ रखाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म इक्क वखाना, पारब्रह्म वंड वंडाईआ। शंकर खेल होए महाना, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। तिन्नां विचोला शब्दी सुत अख्वाना, बन्धन एका डोर बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया लए समझाईआ। साची इच्छया श्री भगवान, आपणी आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्रधान, जगत प्रधानगी आप बणाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़ विच जहान, दो जहानां वाली खेल कराइंदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलान, मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। घर विच घर सच मकान, बेमुकाम आप बणाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, वस्त अमोलक इक्क

वखाइंदा। शब्द अनाद सची धुन्कान, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। आत्म जोती नूर महान, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया शब्दी झोली पाइंदा। शब्दी सुत उठ बलवान, हरि साचे आदि जगाया। लख चुरासी इक्क निशान, लोकमात वखाया। बोध अगाधा दे ज्ञान, ब्रह्मा वेता आप पढ़ाया। चारे वेदां देवे माण, विद्दत आपणा खेल कराया। वंडे वंड श्री भगवान, चारों कुण्ट वेख वखाया। उतर पूरब पच्छिम दक्खण रवि ससि सूरज चन्न कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे दान, दीनन आपणी दया कमाया। चारे खाणी खोल्ह दुकान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रिहा वरताया। चारे बाणी मारे बाण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाया। चार वरन खेल महान, जुग चौकड़ी वंड वंडाया। चार यारी मेले आण, मेल मिलावा सहिज सुभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया शब्दी सुत दए समझाया। साची इच्छया झोली पा, भिच्छया आपणा नाम रखाईआ। लख चुरासी घाड़न लए घड़ा, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, लोकमात बेड़ा आप चलाईआ। शब्द अगम्मी दे सलाह, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा साचा गीत, हरि गोपाल आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी चले रीत, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। परम पुरख समरथ स्वामी बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। घर घर मन्दिर अंदर वड़ वड़ लख चुरासी परखे नीत, सच सिंघासण सोभा पाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप समझाइंदा। साची धार पुरख अकाल, आदि आदि जणाईआ। निरगुण सरगुण बणे दलाल, जगत दलाली इक्क वखाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर हो दयाल, दीनन आपणा भेव खुल्हाईआ। सेवा लाए काल महांकाल, साची सेवा इक्क समझाईआ। नव नौ बणाए सच्ची धर्मसाल, सत सत वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। साचा मार्ग जाए लग्ग, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। लख चुरसी त्रैगुण बन्न्हे तग, तन्दन तन्द ना कोए तुड़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी खेले खेल जीवण जग, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे एका गुण समझाइंदा। शब्द दुलारे सुणया कन्न, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा हुक्म लवां मन्न, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। तेरी वड़याई तेरा नाउँ मेरा धन, वस्त अमोलक इक्क रखाईआ। मैं बालक तूं जननी जन, तूं पिता मेरी माईआ। तूं आदि बेड़ा दिता बन्न्ह, मैं जुग जुग सेव कमाईआ। सेवा लावां सूरज चन्न, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, इक्को दिता सच्चा वर, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईंआ। शब्दी सुत चढ़या चाअ, थिर घर आपणी खुशी मनाइंदा। जुग चौकड़ी सेवा लवां कमा, साची सेवा झोली पाइंदा। निरगुण सरगुण बणां मलाह, लोकमात फेरा पाइंदा। नित नवित देवां सच सलाह, सिफ्त सलाह तेरा नाउँ वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडण वंडां थाउँ थाँ, थान थनंतर आपणा भेव खुल्हाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड अनादी नाद दयां वजा, लोआं पुरीआं राग अल्हाइंदा। ज़िमी असमानां वेखां आ, धरत धवल डेरा लाइंदा। पंज तत्त हंडावां जगत मकां, सच मकान इक्क वखाइंदा। निरगुण सरगुण रूप धरा, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। आत्म परमात्म मेल मिला, गुर गुर आपणा नाउँ रखाइंदा। दो जहानां देवे सच सलाह, सलाहगीर आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए मिलाइंदा। तुध बिन अवर ना कोई ओट, सुत दुलारा रिहा सुणाईआ। तूं पुरख अकाल निर्मल जोत, सचखण्ड वसें साचे माहीआ। सच दुआरा किला कोट, बंक गढ़ बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला मेरी सेवा लेखे लाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सति सतिवादी दया कमाइंदा। आदि आदि दिता दान, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। शब्द सुत बाल निधान, साची सिख्या हरि समझाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, तेरा हुक्म वरताइंदा। निरगुण सरगुण कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। गुर अवतार दे दे दान, लोकमात आप वड्याइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखान, कलयुग आपणा वेस वटाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी सेवा लगाए श्री भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जुग जुग सच संदेशा देवे आण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, जीव आत्म आत्म ज्ञान अठारां अध्याए अठ्ठ दस भेव चुकाइंदा। मुकामे हक़ सच ईमान, इस्म आज़म रूप धराइंदा। परवरदिगार हो मेहरवान, रहिमत आपणी आप कमाइंदा। पीर पैग़म्बर देवे दान, हज़रत आपणी खेल कराइंदा। नबी रसूलां रखे आण, धुर फ़रमाणा हुक्म वरताइंदा। साचा कलमा इक्क कलाम, नूर इलाही आप जणाइंदा। निरगुण रूप सच अमाम, नज़र किसे ना आइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद दए पैग़ाम, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। लेखा लिख लिख अञ्जील कुरान, काया कुरा खोज खुजाइंदा। सति सतिवादी साचा नाम, नाम सति सति पढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। नानक गोबिन्द इक्क निशान, सच निशाना आप झुलाइंदा। कोटन कोटि जुग करे खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खाणी बाणी कर प्रधान, एका आपणा नाउँ वड्याइंदा। साचे सुत रखणा याद, हरि साचा सच जणाईआ। तेरी सेवा लाई आदि, अन्त भुल्ल कदे ना जाईआ। पुरख अबिनाशी

सुणे फ़रयाद, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। घर घर वेखे तेरा नाद, नाद धुन जगत शनवाईआ। भेव चुकाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्म खोजे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाईआ। आपणा लेखा दस्से आप निरँकार, आदि पुरख समझाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार, थिर कोए रहिण ना पाया। अन्तिम चौकड़ वेखे आप करतार, करता पुरख खेल कराया। धुर दा हुक्म एका वार, सच संदेशा दए सुणाया। प्रगट करे तेई अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल मिलाया। मेल मिलावा ईसा मूसा मुहंमद यार, अल्ला राणी पल्लू आप फड़ाया। निरगुण जोती गुर गुर धार, इक्क दस वंड वंडाया। नानक गोबिन्द पैज स्वार, दो जहानां खेल वखाया। सच संदेशा एका वार, नर नरेशा दए समझाया। आवे जावे अगम्म अपार, रूप रंग रेख ना कोए रखाया। लिख लिख लेखा सर्ब विचार, सच संदेशा गए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव रिहा जणाया। साचा भेव देवे खोल्ह, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि करया साचा कौल, अन्त दए निभाईआ। प्रगट होए उपर धौल, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल कराउणा, शब्दी सुत सुत जणाया। जोती जामा वेस वटाउणा, नूरो नूर डगमगाया। सचखण्ड दवारा लोकमात वसाउणा, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा उठाया। साचा पर्दा देवे चुक्क, हरि जू आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी पैंडा जाए मुक्क, पाँधी कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग होए अन्धेरा घुप्प, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। सच सुच जाए छुप, कूड़ी क्रिया मिले वड्याईआ। ना कोई मात पित दिसे पुत्त, भैण भाई साक सज्जण सैण ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जावण रुट्ठ, लोकमात सके ना कोए मनाईआ। साधां सन्तां काया भाण्डे ख़ाली होवण ठुट्ठ, नाम वस्त ना कोए रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पए लुट्ट, चोर यार घेरा पाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण बुत्त, काया मन्दिर अंदर वज्जे ना कोए वधाईआ। फुल्ल फलवाड़ी ना मौले रुत्त, रुत्त बसन्त ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी हरि जू दस्से, आपणी खुशी मनाइंदा। सचखण्ड दवारे बह बह हस्से, भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी जीव जंत माया अन्तर फसे, फांदी फंद ना कोए कटाइंदा। घर घर नागणी वड़ वड़ डस्से, सांतक सति ना कोए कराइंदा। कलयुग चारों कुण्ट उठ उठ नट्ठे, आपणा बल धराइंदा। माण गंवाए तीर्थ अठसठे, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दुरमति मैल ना कोए धुवाइंदा। घर घर दर दर कूड़ कुड़यारा सत्थर घत्ते, जगत सफ़ा ना कोए उठाइंदा। हरि

का नाम ना बीजे कोए वत्ते, बण किरसाणा हल्ल ना कोए चलाइंदा। लाड़ी मौत चार कुण्ट नच्चे, घूँगट मुख ना कोए वखाइंदा। राए धर्म कोलों कोई ना बचे, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। चित्तर गुपत वखाए सफ़े, लिख लिख लेखा अग्गे धराइंदा। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर शिवदुआले मट्ठ जगत माया खादे गफ्फ़े, अमृत नाम हथ्थ किसे ना आइंदा। रसना कहिण पुरख अकाल दे असीं सके, अंदरों मेल ना कोए मिलाइंदा। धीआं भैणां सारे तक्के, नेत्र नैण ज्ञान ना कोए खुल्हाइंदा। चौदां तबक कोई ना मेटे फट्टे, शरअ शरीअत सच ना कोए समझाइंदा। चौदां लोक लाहा कोई ना खट्टे, चौदां विद्या माण वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव दस्से भगवन्त, आपणी दया कमाईआ। कलयुग वेला आए अन्त, नर नरायण होए सहाईआ। लख चुरासी वेखे जीव जंत, जगत साध सन्त नाल मिलाईआ। आप बणाए साची बणत, घाड़न घड़े बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी लेखा दए मुकाईआ। जुग चौकड़ी लेखा अन्त मुकाउणा, हरि जू हरि हरि आख सुणाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां लहिणा देणा झोली पाउणा, बाकी कोए नज़र ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पन्ध मुकाउणा, बण पाँधी राह ना कोए चलाइंदा। नानक गोबिन्द लेखा लिख्या पूर कराउणा, वेद व्यास ध्यान लगाइंदा। ईसा मूसा नेत्र नैण वखाउणा, मुहम्मद एका ओट तकाइंदा। निहकलंक जामा पाउणा, नाम डंका इक्क वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाउणा, जगदीश आपणी खेल कराइंदा। चार वरन आप उठाउणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आपणे अंग लगाइंदा। साचा मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सति सतिवादी खेल कराइंदा। शब्दी तेरा ढोला गाउणा, साचा सोहला आप सुणाइंदा। गोबिन्द खेड़ा इक्क वसाउणा, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। गुरमुखां बेड़ा बन्न्ह चलाउणा, एका चप्पू नाम जणाइंदा। कलजग कूड़ा मोह तुड़ाउणा, सच सुच नाता आप बंधाइंदा। कल कल्की अवतार अख्वाउणा, कल आपणी आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम वरते कल, कल कल्की भेव ना आईआ। करे खेल अछल अछल, वल छल धारी बेपरवाहीआ। सच सिंघासण पुरख अबिनाशण एकँकारा एका मल्ल, दो जहानां फेरा पाईआ। सच संदेश नर नरेश निरगुण सरगुण देवे घल, चार वरन करे पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी साचा दीपक जाए बल, एका ज्ञान नूर रुशनाईआ। धाम वखाए इक्क अबचल, साची नगरी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम मिलणा मात, मात पित खेल कराइंदा। सति स्वामी देवे दात, नेहकामी झोली आप भराइंदा। अन्तरजामी पुच्छे वात, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा।

दो जहानां वेखे डूँघा खात, खाता आपणे चरनां हेठ रखाइंदा। चार जुग दी जाणे गाथ, बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम आपणा नाउँ धराइंदा। निहकलंक रखे नाउँ, नर निरँकार वडी वड्याईआ। वसणहारा हर घट थाउँ, लख चुरासी रिहा समाईआ। गुरमुख पकड़े आपे बाहों, गुरसिख साचे लए मिलाईआ। करे कराए सच न्याउँ, तख्त निवासी सच्चा माहीआ। सदा सुहेला इक्क इकेला समरथ पुरख देवे ठंडी छाउँ, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्द मिलावा चाँईं चाँईंआ। शब्दी जोती एका मेला, मिल मिल खुशी मनाइंदा। गोबिन्द ढोला गुर गुर चेला, गुर चेला वेस वटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, साची सखी मिल मिल मंगल गाइंदा। आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए वखाइंदा। करे खेल इक्क इकेला, आदि अन्त भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द दुआरा इक्क वखाइंदा। शब्द दुआरा एका एक, सो पुरख निरँजण आप समझाईआ। पुरख अकाल साची टेक, दूसर होर ना कोए सहाईआ। निरगुण सरगुण लए वेख, बणे विचोला सच्चा माहीआ। ना कोई रूप रंग ना रेख, जोती जाता डगमगाईआ। करया आप अवल्लड़ा वेस, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त साचा हरि, कलयुग आपणी खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम खेल करना, करनहार करतारा। लख चुरासी आपे वरना, चार वरनां इक्क आधारा। अक्खर वक्खर ढोला एका पढ़ना, सोहँ शब्द नाम जैकारा। सचखण्ड दवारे गुरमुख चढ़ना, गुर किरपा उतरे पारा। नाता तुट्टे जम्मण मरना, मरन जन्म ना होए विच संसारा। नेत्र खुल्ले हरना फरना, नज़री आए एकँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथमी सुणाए इक्क जैकारा। इक्क जैकारा जै जै जैकार, दो जहानां दए जणाईआ। पुरख अकाल हो त्यार, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। नव नौ सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा दए वखाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, बख्शे चरन सरन सरनाईआ। गुरसिखां करे आप प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। आप उठाए आपणे लाल, करता कीमत आपे पाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, जगत दलाली इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी जोती मेला विच जहान, पंज तत्त तत्त ना कोए वड्याईआ।

✳ २६ चेत २०१६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह मनावां ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

जन्म मरन दए स्वार, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। राए धर्म ना करे खुआर, जगत खुआरी आप चुकाइंदा। माणस जन्म ना आए हार, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। एथे ओथे दए सहार, दो जहानां वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। जन्म मरन दुःख देवे कट, लख चुरासी फंद कटाईआ। एका देवे नाम सति, सति सति करे पढ़ाईआ। एका देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लेखा जाणे पंज तत्त, तत्तव आपणे रंग रंगाईआ। चरन कँवल साचा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आदि अन्त पुच्छे वात, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जन्म मरन दुःख जाए लथ्थ, गेड़ा गेड़ ना कोए भुआईआ। जिस जन देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म परमात्म साची गाथ, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। किरपा करे पुरख समराथ, समरथ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत झेड़ा दए चुकाईआ। जन्म मरन होए दूर, पंज तत्त बन्धन ना कोए रखाईआ। एका देवे सति सरूर, सति सतिवादी दया कमाईआ। अन्तिम मेला जोती नूर, नूर नूर विच मिलाईआ। जन्म जन्म दे बख्शे कसूर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म मरन भउ चुकाईआ। जन्म मरन भउ देवे लाह, लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सति सतिवादी बण मलाह, साचा बेड़ा आप उठाइंदा। एका नाउँ देवे सलाह, दूजी सिख्या ना कोए समझाइंदा। अन्त पकड़नहारा बांह, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। दो जहानां सिर रखे ठंडी छाँ, छहबर आपणे नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण पार कराइंदा। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, जूनी जून ना कोए भुआईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल आपणी गोदी लए चुक्क, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। चरन कँवल एका ओट, एका मन्दिर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती मेला गुर गुर चेला, हरि हरि खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेला, सगला संग आप हो आइंदा। आत्म परमात्म चाढ़े तेला, ब्रह्म पारब्रह्म खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला साचे घर घर आपणा आप वखाइंदा।

✳ २६ चेत २०१६ बिक्रमी बलवन्त सिँघ दे गृह तलवंडी जले खां ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

सति पुरख निरँजण एक, एकँकारा खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी नर नरेश, नर नरायण हुक्म वरताइंदा। निरगुण धर धर सरगुण वेस, संसार सागर खेल वखाइंदा। गुरमुख विरले देवे भेत, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। आत्म परमात्म करे हेत, नित नवित वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकँकार आपणा नाउँ रखाइंदा। एकँकारा इक्को इक्क, दूजा संग ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी पाए भिख, वस्त अमोलक आप वरताईआ। साचा लेखा देवे लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। वंडणहारा साचा हिस्स, साची वंडण आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख विरले पए दिस, दूसर नजर किसे ना आईआ। देवे वड़याई साचे सिख, गुरमुख होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल कराईआ। एकँकार एकम एक, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। वसणहारा साचे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। लख चुरासी आपे वेख, वेखणहारा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इक्क इक्क हो आइंदा। इक्क इकल्ला एकँकार, एका रूप धराईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, एका वेखे चाँई चाँईआ। दो जहानां दए आधार, नाम वणज इक्क कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हो उज्यार, रूप अनूप आप वटाईआ। गुरमुख सज्जण वेखे वारो वार, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। बिस्मिल देवे आप हुलार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणा रंग वखाईआ। इक्क इकल्ला वार अनेक, अनक कल खेल कराइंदा। जुगा जुगन्तर साची टेक, टेक रघुनाथ इक्क रखाइंदा। नेत्र लोचण आपे पेख, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। आपे खोल्हणहारा भेत, अनुभव आपणी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। एकँकारा दीना निध, दीनन दया कमाईआ। हरिजन कारज करे सिद्ध, आपणी दया कमाईआ। जन्म कर्म दी जगत बिध, बिध नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरिजन हरि हरि वेख वखाइंदा। देवणहारा नाम भण्डारा, अतोट अतुट आप वरताइंदा। साची वस्त वस्त हरि थारा, निरगुण एका झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। दया कमाए ठाकर स्वामी, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घट घट आपणा आसण लाईआ। बोध अगाध अगम्मी बाणी, शब्दी नाद सुणाईआ। अमृत सरोवर ठंडा पाणी, निज घर झिरना दए झिराईआ। आत्म जोती नूर नुरानी, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। गुरमुख देवे इक्क निशानी, जग जीवण गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहरवान पाए भिख, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। कर्म नेहकर्म आपे लिख, जन्म जरम लेखे लाइंदा। एथे ओथे इक्क इकल्ला पए दिस, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वस्तू जगत झोली आप भराइंदा। जगत वस्त वस्त अनमुल्ल, हरि जू हरि हरि आप वरताईआ। भाग लगाए साची कुल, लोकमात मात वड्याईआ। फुल्ल फलवाड़ी पए फुल्ल, हरयावल एका घर वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे वस्त दात अतुल, पिता पूत मात हित्त बंस सरबंस अंस रूप वटाईआ।

✳ २६ चेत २०१६ बिक्रमी राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ✳

सो पुरख निरँजण खेल कराउणा, हरि बेअन्त वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वेस वटाउणा, इक्क इकल्ला भेव ना राईआ। एकँकारा नाउँ धराउणा, अलख अगोचर अगम्म अथाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि निरँजण नूर प्रगटाउणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते खेल कराउणा, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। श्री भगवान सच निशान झुलाउणा, सति सतिवादी आपणे हथ्थ रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ हुक्म वरताउणा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। सचखण्ड दवारा इक्क सुहाउणा, साचे बंक सोभा पाईआ। तख्त निवासी साचा तख्त आप वडिआउणा, पावा चूल ना कोए बणाईआ। शाहो भूप हरि आसण लाउणा, राज राजान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल हरि कराउणा, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण नूर आप प्रगटाउणा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। सचखण्ड दवारा आप सुहाउणा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। आपणी इच्छया पूर कराउणा, साची भिच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोल्हे निरँकार, दिस किसे ना आईआ। वसणहारा सचखण्ड दवार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। घर विच घर कर त्यार, थिर घर घाड़न लए घड़ाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव श्री भगवन्त, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे नार कन्त, कन्त कन्तूहल वेस वटाइंदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। सचखण्ड दवारे सोभावन्त, दर घर साचा आप सुहाइंदा। जोती धार बणाए बणत, शब्दी सुत आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे रख, निरगुण आपणा खेल कराइंदा।

निराकार निरवैर हो प्रतख, रूप अनूप आप वखाइंदा। साचे मन्दिर आपे वस, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। निरगुण मार्ग निरगुण दस्स, निरगुण राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणा खेल करे करतार, करता पुरख वडी वड्याईआ। जोती जाता बेपरवाह परवरदिगार, नूर नुराना शहिनशाहीआ। मुकामे हक़ कर पसार, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा आदि अन्त हरि जू आपे आप चुकाइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। आदि अनादी एका मंत, मन्त्र नाम आप दृढ़ाइंदा। लख चुरासी बणाए बणत, घड़न भन्नणहार खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव हरि जणाउणा, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी हुक्म वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शब्दी सुत सेवा लाउणा, साची सेवा इक्क समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाउणा, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। सुरपति इन्द करोड़ तेतीस आप जगाउणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सूरज चन्न दर बहाउणा, हुक्मी हुक्म हुक्म वरताईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाउणा, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। मंडल मण्डप आप सुहाउणा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। ज़िमीं असमानां वेख वखाउणा, दो जहानां रंग रंगाईआ। चौदां तबक नैण उठाउणा, चौदां लोक चरनां हेठ रखाईआ। अवण गवण वेख वखाउणा, त्रै भवन आपणा भेव चुकाईआ। निरगुण सरगुण राह वखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। साचा भेव जणाए निरँकार, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादी साची कार, करता पुरख आप कराईआ। निरगुण सरगुण जाणे धार, वड दाता शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा इक्क इकल्ला आप सुणाईआ। सच संदेशा इक्क सुणाउणा, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण नाल मिलाउणा, नज़र किसे ना आइंदा। एकँकार पल्लू आप फड़ाउणा, एका आपणी गंढु बंधाइंदा। आदि निरँजण दीपक इक्क जगाउणा, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता हुक्म वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। श्री भगवान धुर फ़रमाणा इक्क जणाउणा, बोध अगाधी आपे गाइंदा। पारब्रह्म प्रभ भेव खुलाउणा, आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। ब्रह्म लेखा आप चुकाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। साचा राह विच संसार, वड संसारी आप चलाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, अपरम्पर वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी दए अधार, एका बन्धन नाम पाईआ। सेवा ला गुर अवतार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। नाद शब्द धुन धुन्कार, अनादी

अनहद आप वजाईआ। अमृत सरोवर ठंडा ठार, गृह झिरना आप झिराईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, आदि निरँजण वेखे चाँईं चाँईंआ। ब्रह्म पारब्रह्म दए आधार, घर मेला सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म इक्क प्यार, एका सेज सुहाईआ। ईश जीव दए आधार, जगदीश वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा लेखा आप चुकाउणा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। विष्नूं पर्दा आपे लौहुणा, विश्व धार वेख वखाइंदा। ब्रह्मे ब्रह्म भेव खुलाउणा, अभेद आपणी दया कमाइंदा। शंकर सीस जगदीश झुकाउणा, निउँ निउँ एका अलख जगाइंदा। पुरख अबिनाशी हुक्म वरताउणा, आप आपणा हुकम समझाइंदा। चार वेदां भेव खुलौणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा अगम्म अपार, एका एक जणाईआ। सो पुरख निरँजण होया ख़बरदार, हरि पुरख निरँजण दए सालाहीआ। एकँकारा होया बेदार, ग़फ़लत रूप ना कोए वखाईआ। आदि निरँजण नूर उज्यार, जल्वा नूर इक्क दरसाईआ। अबिनाशी करता परवरदिगार, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। श्री भगवान सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। पारब्रह्म धुर फ़रमाण हो मेहरवान, ब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, जुग करता आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे दान, धरत धवल गोद सुहाईआ। नाम निधाना धुर फ़रमाण, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। लेखा जाण शास्त्र सिमरत वेद पुराण, पुराण प्राणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल पुरख अगम्म, आदि अन्त जणाइंदा। करता पुरख जाणे आपणा कम्म, करनी करता किरत कमाइंदा। आदि जुगादि बेड़ा बन्न, दो जहान खेल कराइंदा। कर प्रकाश सूरज चन्न, दिवस रैण वंड वंडाइंदा। लख चुरासी जननी जन, दाई दाया सेव कमाइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त तन, त्रैगुण माया बन्धन पाइंदा। आपे घड़े आपे लए भन्न, भेव अभेद आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल हरि समझाउणा, भुल्ल कोए ना जाईआ। निरगुण जोती नूर धराउणा, नूर नुराना डगमगाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाउणा, नव नौ चार रहिण ना पाईआ। सच संदेशा इक्क सुणाउणा, धुर फ़रमाणा आप अलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग अन्तिम चौकड़ पन्ध मुकाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेई अवतारां आप उठाउणा, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद नबी रसूल आपणा बन्धन पाउणा, साची डोर हथ्थ रखाईआ। नानक गोबिन्द जोती धार वखाउणा, दस दस दया कमाईआ। सच दुआर आप सुहाउणा, सचखण्ड वासी आपणी दया कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान आपणी झोली पाउणा, साची झोली इक्क

वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड हरि वेख वखाउणा, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहीआ। शब्दी नाद डंक वजाउणा, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाउणा, पुरीआं लोआं आप हिलाईआ। नाम भण्डार इक्क वरताउणा, दो जहानां आप वखाउणा, चौदां तबक फेरा पाउणा, चौदां लोक भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा एका वार सुणाईआ। सच संदेशा अन्तिम वार, आदि पुरख जणाइंदा। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। मात पित ना कोए प्यार, साक सज्जण सैण ना कोए जणाइंदा। महल अटल उच्च ना कोए मनार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। रूप रंग रेख ना कोए विच संसार, वरन बरन ज़ात ना वंड वंडाइंदा। किला कोट ना कोई मनार, जगत आसण सेज ना कोए हंढाइंदा। शस्त्र बस्त्र ना कोई कटार, तेज़ धार तलवार ना कोए बणाइंदा। असव घोड़ा ना कोए अस्वार, सोलां कलीआं आसण ना कोए विछाइंदा। सरगुण रूप ना कोए आधार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए रखाइंदा। गुर पीर ना कोए अवतार, पीर पैग़म्बर मुलां शेख़ मुसायक रूप ना कोए वखाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण चार जुग गए हार, हरि का अन्त किसे ना आइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए पुकार, निउँ निउँ सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। भिखक बण बण मंगदे गए भिखार, प्रभ अग्गे सर्ब झोली डाहइंदा। कलयुग अन्तिम आवे निहकलंक नरायण नर अवतार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा एकँकारा आप सुणाइंदा। सच संदेशा एकँकार, अकल कला जणाईआ। सचखण्ड निवासी हो त्यार, करे खेल बेपरवाहीआ। नूरी जल्वा नूर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। वेखे विगसे पावे सार, घट घट आपणा खेल कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मंगदे गए दीदार, दोए जोड़ जोड़ शरनाईआ। पुरख पुरखोतम कर निमस्कार, सजदा सीस झुकाईआ। वाह वा तेरी कुदरत परवरदिगार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरा अन्त ना पारावार, कथनी कह ना सके राईआ। लिख लिख लेखक लेख गए हार, कातब आपणा बल धराईआ। मुख़ातब हो के करे ना कोई गुफ़तार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप वरताईआ। एका हुक्म अन्तिम वार, हरि जू हरि हरि आप वरताइंदा। निरगुण निरगुण लै अवतार, सरगुण सिख्या इक्क समझाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जैकार इक्क अल्हाइंदा। लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, मकरूज नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म श्री भगवाना, आदि आदि जणाईआ। अन्तिम प्रगट हो वाली दो जहानां, दोए दोए आपणी धार वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एका देवे धुर फ़रमाणा, सच

संदेशा आप अलाईआ । वेख वखाए तख्त निवासी राजा राणा, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ । साचा हुक्म धुर दरबार, धुर दरबारी आप वरताइंदा। लोकमात खेल अपार, ख़ालक ख़लक आप कराइंदा। सचखण्ड दा सच विहार, धरत धवल उपर कराइंदा। नव नौ लहिणा देणा करे पार, चार चार पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाइंदा। साची धारा एका वार, हरि एका एक चलाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्नूं ढह ढह पए दुआर, मंगे चरन सरन सरनाईआ। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शंकर करे हाहाकार, बाशक तशका गलों लाहीआ। त्रैगुण माया करे गिरयाज़ार, खुलड़े केस रही वखाईआ। पंज तत्त डिगा मूँह दे भार, बल आपणा ना कोए धराईआ। नेत्र वेखण तेई अवतार, हरि जू की खेल वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस करया पार, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। ईसा मूसा कहे मेरा परवरदिगार, मेरे पिच्छे होए सहाईआ। मुहम्मद धाहां रिहा मार, अद्ध विच बैठा रिहा कुरलाईआ। बौहड़ी बौहड़ी नाता तुट्टा चार यार, सगला संग ना कोए वखाईआ। अल्ला राणी दिसे ना नार मुटयार, आपणा मुख गई छुपाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चौदां तबक गिरयाज़ार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। कलमा कायनात ना कोए प्यार, नबी रसूल देवे ना कोए गवाहीआ। हुक्म देवे परवरदिगार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वड अमाम सच्चा सिक्दार, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। करे खेल अगम्म अपार, बेअन्त बेअन्त आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क समझाईआ। सच संदेशा सचखण्ड, सति सतिवादी आप जणाइंदा। निरगुण नानक सरगुण कर के गया वंड, धुर फ़रमाणा इक्क समझाइंदा। गोबिन्द गीत सुहागी गाया छन्द, पुरख अकाल इक्क मनाइंदा। अन्तिम तोड़े बन्दी बन्द, कल कल्की फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा एका वार, आप सुणाए हरि निरँकार, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। दूजा संग ना कोई साथ, सगला संग आप हो जाईआ। करे खेल पुरख समराथ, समरथ पुरख वड्ड वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाउँदा रिहा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मार्ग दस्स, लोकमात मात समझाईआ। काया मन्दिर अंदर आपे वस, पंज तत्त दए वड्याईआ । एका नूर जोत प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। एका शब्द नाद धरवास, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। सारे रखदे गए आस, एका ओट तकाईआ । कलयुग अन्तिम आवे पुरख अबिनाश, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। लख चुरासी वेखे खेल तमाश, खेलणहारा आप हो जाईआ। घर घर मन्दिर अंदर डूँघी कंदर पावे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन आप नचाईआ। भगत

भगवन्त पूरी करे आस, आसा आसा नाल मिलाईआ। साचे सन्तां वसें पास, सतिगुर आपणा नाउँ धराईआ। गुरमुखां करे बन्द खुलास, लख चुरासी दए कटाईआ। गुरसिखां नज़री आए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। करे खेल कमलापात, कँवल नैण वडी वड्याईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, धूंआँधार रहिण ना पाईआ। मनमति ना रहे नार कमज़ात, साची सिख्या दए समझाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरनां देवे साथ, बरन अठारां गंढु पुआईआ। सर सरोवर अठसठ वखाए तीर्थ ताट, तट किनारा इक्क प्रगटाईआ। लहिणा देणा जाणे मन्दिर मस्जिद माठ, शिवदुआले आपे फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सच सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। सच सुनेहड़ा देवे घल्ल, पर्दा कोए रहिण ना पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जो करदा रिहा वल छल, लुक लुक आपणा हुक्म सुणाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, सचखण्ड निवासी फेरा पाईआ। पावे सार जल थल, महीअल आपणा रूप वखाईआ। निरगुण दीपक जोती जाए बल, जगत अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। लख चुरासी दूई द्वैती मेटे सल, दुरमति मैल धुवाईआ। घर घर अंदर बण किरसाणा चलाए हल्ल, साचा बीज नाम बजाईआ। सतिजुग लाए साचा फल, फुल्ल फुल्लवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सुण भगवान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सीस निवाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हउँ बाली बुध नादान, तेरा भेव कोए ना आईआ। तेरे हुक्मे अंदर गाया गाण, लोकमात सेव कमाईआ। तेरा दस्स के आए सच निशान, जीव जंत समझाईआ। सचखण्ड वसे श्री भगवान, साचे तख़्त सोभा पाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां साधां सन्तां देवे दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। आत्म परमात्म कर प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। धुरदरगाही सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। काया काअबा कर परवान, साचा हुजरा दए सुहाईआ। सति सतिवादी इक्क ईमान, शरअ हदीस इक्क पढ़ाईआ। बिस्मिल रूप अञ्जील कुरान, करनी करता आप कराईआ। मुकामे हक़ हो प्रधान, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर आप समझाईआ। देवणहार सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम इक्को वार सब नूं करे सलाम, सलामांलैकम आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क समझाईआ। सच सुनेहड़ा शब्दी धुन, हरि अनादी नाद वजाइंदा। बिन कन्नां गुर अवतार लैण सुण, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। नेत्र पेख लख चुरासी करे छाण पुण, घट घट आपणा फेरा पाइंदा। नव नौ वेखे गुण अवगुण, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। गुरमुख सज्जण लए चुण, आप आपणी वंड वंडाइंदा। खोल्हणहार समाधी सुन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म वरते निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम उतरे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। राज राजान करे खुआर, शाह पातशाह सीस ताज ना कोए टिकाईआ। वरन बरन आए हार, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्क आधार, सत्त दीप वडी वड्याईआ। एका नाम बोल जैकार, जै जैकार दए समझाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। घट घट अन्तर कर पसार, बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क अलाईआ। धुर फ़रमाणा एका एक, एकँकारा आप सुणाइंदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण साची टेक, सृष्ट सबाई आप जणाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। करनहारा बुध बबेक, ववेकी आपणा राह वखाइंदा। भगत भगवन्त करे हेत, नित नवित मेल मिलाइंदा। साचे सन्तां आपे वेख, आप आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग लहिणा आप मुकाइंदा। कलयुग लहिणा झोली पा, पिछला मूल चुकाईआ। नव नौ चार पन्ध मुका, आपणा खेल दए वखाईआ। चार जुग दी वंड वंडा, चार यारी अन्त कराईआ। करे खेल बेपरवाह, दिस किसे ना आईआ। निरगुण नूर जोती वेस वटा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गोबिन्द मेला सहिज सुभा, मेल मिलावा साचे थाईंआ। सम्बल डेरा एका ला, बंक दुआरा दए वड्याईआ। खड़ग खण्डा इक्क चमका, ब्रह्मण्डां रिहा डराईआ। नव नव खण्डां वंडां आपे पा, जन भगतां वंड आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी विच्चों लए जगा, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। आत्म दरसी दरस दए करा, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता, आपणा खेल कराइंदा। जन भगतां बन्ने साचा नाता, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। लहिणा देण चुकाए ज़ातां पातां, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। दरस दखाए इक्क इकांता, नूरो नूर डगमगाइंदा। अमृत देवे बूंद स्वांता, निझर झिरना आप झिराइंदा। बोध अगाध सुणाए गाथा, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अंदर बाहर देवे साथा, गुपत ज़ाहर संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप जगाइंदा। साचे भगतां हरि जू मीता, मित्र प्यारा आप अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी जाणे रीता, साचा मार्ग आप चलाइंदा। लेखा जाणे मन्दिर मसीता, शिवदुआले मठ्ठ बन्धन पाइंदा। बैठा रहे इक्क अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। लेखा जाणे हस्त कीटा, कीट हस्त आप समाइंदा। जन भगतां देवे नाम अनडीठा, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठा, जिस जन आपणे अंग लगाइंदा। गुरमुख गुर गुर ठांडा सीता, घर आपणे आप बहाइंदा। चरन कँवल बंधाए प्रीता, साची रीती मात चलाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे आप मिलाइंदा। गुरमुख मेला एका घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। जगत भय चुक्के डर, भयानक रूप ना कोए वखाईआ। आत्म नुहाए साचे सर, दुरमति मैल आप धुवाईआ। बज़र कपाटी तोड़ गढ़, दूई द्वैती दए मिटाईआ। निर्मल नूर आपे कर, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। आत्म सेजा आपे चढ़, करे खेल बेपरवाहीआ। सुरती शब्दी लए फड़, डोरी नज़र किसे ना आईआ। आप बन्न्हाए आपणे लड़, नारी कन्त रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। लख चुरासी करे पार किनारा, नौ खण्ड पृथमी आपणे घाट रखाइंदा। राए धर्म दए ललकारा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। काल बोले इक्क जैकारा, चारों कुण्ट राग अल्लाइंदा। चित्रगुप्त बण लिखारा, लेखा सब दा आप वखाइंदा। महांकाल वरते वरतारा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तेई अवतार इक्को बोल जैकारा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर गुर अवतार, गुर गुर सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर शब्द जैकार, धुन अनाद नाद शनवाईआ। हुक्मे अंदर वेद चार, शास्त्र सिमरत हुक्मे विच प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर जुग चार, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। हुक्मे अंदर पीर पैग़म्बर दए आधार, हुक्मे अंदर धरत धवल भुवाईआ। हुक्मे अंदर करे पार किनार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग हुक्मे अंदर घल्लदा रिहा गुर अवतार, साची सेवा सेव समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो आप निरँकार, बल आपणा आप रखाईआ। पिछला लहिणा सब दा दए नवार, बाकी कोए नज़र ना आईआ। नौ खण्ड पृथमी बन्न्हे एका धार, ब्रह्मण्ड खण्ड करे शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे पार किनार, आसण सिँघासण देण तजाईआ। सुरपति लहिणा देणा झोली देवे डार, इन्द इन्दरासण ना कोए सुहाईआ। गुरमुख साचे लए उठाल, आप बणाए आपणे लाल, लालण आपणा रंग रंगाईआ। स्वामी ठाकर होए दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। त्रैगुण तोड़ जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आप वखाए सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा इक्क सुहाईआ। एथे ओथे चले नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अगला लेखा रखे हथ्थ, दूसर अवर ना कोए वड्याइंदा। आपणी महिमा गाए अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। नव नौ चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। आत्म परमात्म मार्ग दस्स, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। घट घट अन्तर आपे वस, आपणा भेव खुल्लाइंदा। शब्दी तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। जन भगतां गावे आपे जस, जस भगतां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। प्रगट हो इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी धार रखाईआ। सच संदेश एका घल्ला, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म फड़ाए पल्ला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या चार वरन, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। खोलृणहारा नेत्र हरन फरन, भेव अभेद आप समझाइंदा। नाता तोड़ मरन डरन, जीवण मुक्त आप कराइंदा। करता पुरख करनी करन, मंगण किसे दर ना जाइंदा। निरभउ चुकाए भय डरन, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुरसिख साचे सरनी पड़न, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। सचखण्ड दवारे साचे वड़न, अद्भविचकार ना कोए अटकाइंदा। अन्तिम जोती जोत रलण, जोती जोत आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचा चले जग, जग जीवण दाता आप चलाईआ। करे खेल सूरा सरबग, बल आपणा आप वखाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपे लभ्भ, जुग जन्म विछड़े लए मिलाईआ। अमृत जाम प्याए मध, रसना रस दए तजाईआ। नौ दुआरे करे पार हद्द, घर दसवां इक्क वखाईआ। अनहद वज्जे साचा नद, अनरागी राग अलृाईआ। डूँघी भँवरी आपे कढ्ढ, टेढी बंक डेरा ढाहीआ। आपणी सेजा आपे सद्द, आपे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरमुख देवे वड्डा माण, निमाणयां गले लगाइंदा। आत्म अन्तर इक्क पहचान, बिन नेत्र आप वखाइंदा। बिन रसना सुणाए गान, बिन तन्दी तन्द हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला ग़रीब निवाज़ा, एका घर कराईआ। गृह मन्दिर खुलृाए आप दरवाज़ा, दर्दी आपणा दर्द वंडाईआ। घर नज़री आए राजन राजा, शाहो भूप साचे तख्त आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए फड़, गुर गुर एका बूझ बुझाईआ। एका गुर इक्क निशान, एका घर वखाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका आसण लाइंदा। एका शाह इक्क सुल्तान, एका हुक्म मनाइंदा। एका वेखे दो जहान, जुग जुग एका वेस वटाइंदा। एका विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, एका गुर अवतार आप प्रगटाइंदा। एका खाणी बाणी करे प्रधान, एका परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। एका लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। एका अन्तिम पन्ध मुकाए आण, बण पाँधी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरे खाते पाइंदा। कलयुग लहिणा डूँघा सागर, खाता नज़र किसे ना आईआ। कलयुग जीव भरमे भुल्ले काया गागर, गृह मन्दिर खोज ना कोए खुजाईआ। नौ

खण्ड पृथ्मी साचा बणया ना कोए सौदागर, जगत वणजारा सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन उठाए हरि जू आप, दीन दयाल दया कमाइंदा। कोटन कोटि जन्म उतारे पाप, पतित पुनीत आप कराइंदा। मेट मिटाए त्रैगुण ताप, तीनों ताप नेड़ ना आइंदा। आत्म परमात्म साचा जाप, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, जो जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ध्याइंदा। काया मन्दिर अंदर मिटे अन्धेरी रात, दिवस रैण साचा नूरी चन्द चढ़ाइंदा। नाम अनमुल्ली देवे दात, ठग्ग चोर यार कदे लुट्ट कोए ना जाइंदा। आप उतारे आपणे घाट, घाटा पिछला पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए वर, आप आपणा बन्धन पाइंदा। बन्धन पाए नाम डोर, सोहँ तन्दी तन्द बंधाईआ। बंध वखाए पंज चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। आसा तृष्ना हउँमे हंगता देवे होड़, सस्से उपर होड़ा लाईआ। आत्म परमात्म देवे जोड़, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। सति सतिवादी पुरख अबिनाशी आदि जुगादी चढ़या रहे अगम्मी घोड़, दो जहानां फेरा पाईआ। गुरमुख साचे जाए बौहड़, नज़र किसे ना आईआ। पूरब जन्म बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। सचखण्ड दवारे वखाए एका पौड़, चौथे डण्डे आप चढ़ाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सतिगुर पूरे नूं गुरसिखां दी सदा लोड़, बिन गुरमुखां हरि जू कम्म किसे ना आईआ। भगतां पिच्छे रिहा दौड़, बण के पाँधी जगत राहीआ। साचे सन्तां वेखे कर के ग़ौर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यार, गुर चेला खेल कराईआ। प्रगट हो अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कराईआ। अलख निरँजण बोल अलख जैकार, जै जैकार दए सुणाईआ। गुरमुखां तोड़ गढ़ हँकार, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। घर विच घर मन्दिर दए वखाल, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। घट तीर्थ दए नुहाल, अठसठ फेरा कोए ना पाईआ। गृह दीपक जोती देवे बाल, तेल बाती ना कोए मिलाईआ। आपे पुच्छे आ के हाल, मुरीद मुर्शद वेखे चाँईं चाँईंआ। नाता तोड़ काल महांकाल, दीन दयाल आपणी गोद बहाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आप बठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ।

✳ २७ चेत २०१६ बिक्रमी सुलखण सिँघ दे गृह रुकना मुंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

अनमंगी मंग अनमुलड़ी दात, अनडिठड़ी आप वरताईआ। दुःख दलिद्र मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी रुत्त आप सुहाईआ। रोग सोग चिंता दुःख जाए विनास, हरि अबिनाशी दया कमाईआ। सति वस्त होए प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत दलिद्र दए कटाईआ।

✳ २७ चेत २०१६ बिक्रमी सुरजण सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर ✳

हरि किरपा गुर जाणयां, गुर किरपा मेला निरँकार। गुर किरपा हरि पछाणयां, हरि किरपा गुरमुख वड़याई विच संसार। आदि जुगादी करे खेल महानयां, बेअन्त परवरदिगार। दो जहानां वेखे राजन राणयां, शाह सुल्तानां पावणहारा सार। बेड़ा चलाए बिन वञ्झ मुहाणयां, आप आपणी किरपा धार। सतिजुग त्रेता द्वापर आपे माणयां, कलयुग अन्तिम खेल करे अपार। निरगुण निरगुण पहरे बाणयां, सरगुण नाम शब्द धुन्कार। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाणयां, उत्भुज सेत्ज खोल्ह किवाड़। जेरज अंड भेव चुकानयां, नव नौ दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा करे आप निरँकार। हरि किरपा गुर मेलया, गुर किरपा मेला पुरख अबिनाश। खेले खेल गुरू गुर चेलया, दो जहानां पावे रास। वसणहारा धाम नवेलया, तख्त निवासी शाहो शाबाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत करे प्रकाश। निरगुण जोत पुरख अकाला, गुर गुर देवे माण वड्याईआ। गुर गुर रूप सुत दुलारा बाला, बाला आपणी गोद बहाईआ। सचखण्ड निवासी चले अवल्लड़ी चाला, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण करया खेल निराला, पंज तत्त आपणा बन्धन पाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर कर उजाला, जोती जाता वेस वटाईआ। प्रगट हो हरि गोपाला, गुर गुर आपणा नाउँ वड्याईआ। नव नौ वेखे साची धर्मसाला, गृह बंक देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। साची बूझ साचे घर, हरि साचा सच जणाइंदा। गुर गुर देवे आपणी सूझ, नाम निधाना झोली पाइंदा। भेव खुल्हावणहारा गूझ, दूई द्वैती पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर मन्त्र नाम आप दृढ़ाइंदा। गुर मन्त्र नाम साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। गुर अवतारां दे सहार, लोकमात वेख वखाईआ। कलम दवात दे आधार, लेखा जाणे कलम छाहीआ। जुग

चौकड़ी पावे सार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग घलदा रिहा अवतार, गुर शब्दी डंक वजाईआ। सच संदेशा देवणहार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर साची सेवा लाईआ। साची सेवा गुर गुर घाल, लख चुरासी आप कमाइंदा। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाइंदा। साचा अक्खर इक्क सखाल, नाम नामा आप प्रगटाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्ह्राइंदा। जुग जुग भेव अवल्लड़ा, गुर गुर आप जणाइंदा। गुर अवतार फड़ाए पलड़ा, पल्लू आपणी गंढु बंधाइंदा। आप वसणहारा निहचल धाम अटल्लड़ा, उच्च महल्ले डेरा लाइंदा। सच संदेश एका घल्लड़ा, नाउँ निरँकारा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ जपाइंदा। जुग जुग सेवा लोकमात, मातर भूमी आप लगाईआ। निरगुण सरगुण दे दे दात, गुर शब्द करे कुड़माईआ। भगत भगवन्त बन्ने नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। सन्त सुहेला सुणाए आपणी गाथ, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी दे दे साथ, पंज तत्त आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आप, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। दो जहानां साचा जाप, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा नाउँ समझाईआ। गुर गुर नाउँ शब्दी धार, हरि हरि जोती रूप धराइंदा। दोहां विचोला एकँकार, आपणा खेल आप कराइंदा। निरगुण आत्म निरगुण परमात्म फड़ फड़ मेले विच संसार, मेलणहारा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। निरगुण शब्द निरगुण जोत, जोती जाता आप अख्वाइंदा। निरगुण वसे सचखण्ड दवारे साचे कोट, छप्पर छन्न ना कोए बणाइंदा। निरगुण शब्द निरगुण नूर रखे ओट, ओट इक्को आस वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा भेव खुल्ह्राइंदा। गुर गुर हरि जू खोल्हे भेव, अभेद आप जणाईआ। निरगुण निरँकार आपणा नाउँ आपे बोल, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। घर विच घर ताकी देवे खोल्ह, मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। उलटा करे नाभी कौल, कँवल नाभी आप उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर सतिगुर मीता साचे सिख, साची सिख्या आप जणाइंदा। अगला लेखा देवे लिख, पिछला लहिणा आपणी झोली पाइंदा। दो जहान वंडाए साचा हिस्स, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। कर किरपा दर्शन देवे जिस, तिस आपणे रंग रंगाइंदा। घर घर स्वच्छ सरूपी पए दिस, नेत्र लोचण नैण इक्क खुल्ह्राइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। गुर गुर नाउँ शब्द मृदंग, वड मर्दाना आप वजाईआ।

६१
१२

सो पुरख निरँजण सूरा सरबंग, सतिगुर गुर खेल कराईआ। गुरमुखां देवे इक्क अनन्द, अनन्द आत्म इक्क रसाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाहे झूठी कंध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा पर्दा लाहीआ। गुरमुख पर्दा जाए लथ्थ, जिस जन हरि हरि दया कमाइंदा। घर विच मिले आप समरथ, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। बोध अगाध सुणाए गाथ, अनहद नादी नाद वजाइंदा। घट मन्दिर देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। एका अक्खर पूजा पाठ, जगत वक्खर आप पढ़ाइंदा। सति सतिवादी साची दात, सोहँ झोली आप भराइंदा। रसना जिह्वा इक्को जाप, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। अन्त उतारे आपणे घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। गुर सतिगुर स्वामी एका ठाकर, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो उजागर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। दो जहानां बण सौदागर, लख चुरासी वणज दए कराईआ। गुरमुख विरले निर्मल कर्म करे उजागर, जिस जन आपणा दरस वखाईआ। एथे ओथे दो जहान ज़िमीं असमान देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। सतिगुर दाता सदा स्वामी, साहिब सुल्तान वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट निहकलंक नेहकामी, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट आपणा आसण लाईआ। गुरमुख विरले सुणाए आपणी बाणी, दूसर नेड़ कोए ना आईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दी गायण अकथ कहाणी, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सचखण्ड दी सच निशानी, गुरसिख लोकमात प्रगटाईआ। आपे होए जाण जाणी, बूझणहारा बूझ बुझाईआ। एका देवे पद निरबाणी, चौथे पद आप समाईआ। लेखा चुकाए आवण जाणी, आवण जाण रहिण ना पाईआ। लख चुरासी फंद कटाणी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। आत्म परमात्म मेला साचे हाणी, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सदा सदा सदा सहाईआ। सतिगुर सहाई सदा सद, जुग जुग वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त आपे लभ्भ, आप आपणा बन्धन पाइंदा। पंच विकारा देवे दब्ब, माया ममता मोह मिटाइंदा। अमृत रस वखाए कँवल नभ, निझर झिरना आप झिराइंदा। जगत वासना पार हद्द, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। लख चुरासी विच्चों करे अड्ड, आपणे मन्दिर आप बहाइंदा। अंदर वड़ वड़ डूँघी कंदर सुणाए सुहागी छन्द, रसना जिह्वा ना कोए हलाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, एका बन्धन नाम रखाइंदा। जन भगतां पिच्छे कटे हरि जू पन्ध, बण पाँधी फेरा पाइंदा। लख चुरासी जीव जंत नेत्र होया अन्ध, आत्म ज्ञान ना कोए रखाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सब नूं सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना मात बदलाइंदा। गुरमुख विरले खुशी करे बन्द बन्द, जिस

जन आपणा दरस दखाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जाता डगमगाइंदा। दिवस रैण अठ्ठे पहर इक्क अनन्द, जगत सोग नेड़ ना आइंदा। कृपानिध ठाकर स्वामी साहिब दयाल पाए ठंड, अग्नी तत्त ना कोए तपाइंदा। नाता तुट्टे नार दुहागण जीव रंड, हरि जू कन्त कन्तूहल गुरमुख आप प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणे अंग लगाइंदा। सतिगुर मीता ठांडा सीता, सांतक सति सति कराईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीता, भेव कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम चरन कँवल वखाए इक्क प्रीता, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। सोहँ नाम देवे अनडीठा, अनडिठड़ी कार कराईआ। अठ्ठे पहर गुरमुखां वसे चीता, चितवित ठगौरी कोए ना पाईआ। घर घर विच ठाकर दुआरा मन्दिर शिवदुआला गुरदवार मसीता, जिस घर वसे साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा एकँकार, दूजा अवर ना कोए जणाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार सेवादार, साची सेवा आप लगाइंदा। अन्तिम दोए दोए जोड़ कर कर गए निमस्कार, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए पुकार, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। एका ओट रख के गए संसार, निरगुण निरगुण आस सर्ब रखाइंदा। कल प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख सज्जण लए उठाल, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। नाता तोड़े शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक ज़ात पात वरन गोत ना कोए रखाइंदा। ग़रीब निमाणयां उपर होए दयाल, शाह सुल्तानां करे कंगाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा एका गुण आप रखाइंदा। एका गुण पुरख अगम्म, भेव कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्न्ह, लोकमात आप चलाईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल श्री भगवन, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जन भगतां बणे जननी जन, जन जणेंदी एका माईआ। एका राग सुणाए कन्न, बिन तन्दी तन्द सतार वजाईआ। करे प्रकाश जीव अन्न्ह, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। पंच विकारा देवे डंन, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेले थाउँ थाईंआ।

✳ १ वसाख २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✳

साचे तख्त बैठ सुल्तान, तख्त निवासी दया कमाइंदा। सति पुरख निरँजण हो मेहरवान, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण नौजवान, एकँकारा बल प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, अबिनाशी करता खेल कराइंदा।

६४ १२ ६४ १२

श्री भगवान सचखण्ड सुहाए सच मकान, पारब्रह्म प्रभ रूप अनूप धराइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता हो प्रधान, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। महल अटल उच्च मनार बण हुक्मरान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह वड्डु मर्दान, वड मर्दानगी आप कमाइंदा। आदि अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर पुरख अकाल करे पहचान, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। थिर घर दुआरा खोल्ह किवाड़ा आपे वेखे हरि जू आण, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। सच सिँघासण सोभावन्त, सति सतिवादी आप सुहाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भेव कोए ना पाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग करता वड वड्याईआ। नाता जाणे नार कन्त, नर नरायण बेपरवाहीआ। नाम निधाना सुणाए मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। सचखण्ड दवारे सोभावन्त, थिर घर आपणी ख़ुशी मनाईआ। निर्मल जोत इक्क इकन्त, बिमल आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण दए वड्याईआ। सच सिँघासण शाहो भूप, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, हरि पुरख निरँजण खेल कराइंदा। एकँकारा सति सरूप, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। आदि निरँजण वसणहारा आपणी कूट, दिशा वंड ना कोए वंडाइंदा। अबिनाशी करता आपणा देवे आप सबूत, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। एकँकारा मुकामे हक़ वसे आप महबूब, नूर नुराना डगमगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ नारी कन्त बण बण पूत, पूत सपूता खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप वड्याइंदा। सच सिँघासण वड्डा वड, हरि जू हरि हरि आप वड्याईआ। आपणे विच्चों आपे कढ्ढ, आपणा प्रकाश आप धराईआ। आपे जाणे आपणी हद्द, पार किनार ना कोए रखाईआ। आपे भूप राज राजान आपे दर दरवेश बण बण लए सद्द, सच संदेश आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख़्त बैठ सच्चा शहिनशाहीआ। साचे तख़्त बहे शहिनशाह, दिस किसे ना आइंदा। सचखण्ड दवारे चलाए आपणा राह, रैहबर आपणा हुक्म वरताइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा, धुर दी कार आप कराइंदा। निरगुण निरगुण बण मलाह, खेवट खेटा रूप वटाइंदा। थिर घर मेला सहिज सुभा, सचखण्ड आपणा पर्दा लाहइंदा। एका जोती नूर धरा, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल श्री भगवान, आदि पुरख आप कराईआ। सचखण्ड दवारे बैठ सच सुल्तान, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। आदि जुगादि हो प्रधान, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। इक्क इकल्ला देवणहारा दान, दोए दोए झोली आप भराईआ।

आपणी इच्छया कर परवान, साची भिच्छया दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म हरि वरताया, भेव कोए ना पाइंदा। आदि पुरख आदि आपणी धार चलाया, लेखा लेख ना कोए गणाइंदा। थिर घर दुआरा आप खुल्हाया, साचा घाड़न आप घड़ाइंदा। निरगुण आपणा नाउँ धराया, निरगुण निरगुण सेज हंढाइंदा। अंदर बाहर डेरा लाया, गुपत ज़ाहर रंग वटाइंदा। जननी जन आप अखवाया, बण दाई दाया सेव कमाइंदा। जोती नूर डगमगाया, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। सचखण्ड दवारे खेल समझाया, थिर घर आपणा पर्दा पाइंदा। सुत दुलारा एका जाया, शब्दी नाउँ रखाइंदा। साची सेवा इक्क समझाया, विष्न ब्रह्मा शिव झोली पाइंदा। त्रैगुण माया रंग रंगाया, रजो तमो सतो एका गंढु रखाइंदा। पंचम जोड़ा आप जुड़ाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रूप वटाइंदा। आकाश प्रकाश गगन मंडल पुरी लोअ सुहाया, जल थल महीअल खेल कराइंदा। धरनी धरत धवल दए वड्याआ, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। लख चुरासी घाड़न आप घड़ाया, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। शब्द अनादी नाद सुणाया, अनरागी राग अल्हाइंदा। विश्व भण्डार आप वरताया, विष्नूं झोली आप भराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वंड वंडाया, ब्रह्मा वेता सेव कमाइंदा। धूंआँधार सुन्न अगम्म पर्दा लाहया, भोला नाथ शंकर शरअ ना कोए पढ़ाइंदा। नाम खण्डा सच त्रसूल हथ्थ फड़ाया, जो घड़या भन्न वखाइंदा। सांगोपांग आप हंढाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त आपे चढ़, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, आदि पुरख जणाईआ। निरगुण सरगुण खेल महाना, करे कराए बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी वंड वंडाना, बन्धन आपणा आपे पाईआ। एका अक्खर देवे दाना, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। चारे वेद अगम्मी गाना, ब्रह्मा मुखड़ा मुख सलाहीआ। चारे जुग जुग निशाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। चारे बाणी गुण निधाना, परा पसन्ती मद्धम बैख़री आप सुणाईआ। चारे वरन कर प्रधाना, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रंग रंगाईआ। चारों कुण्ट खेल महाना, उतर पूरब पच्छिम दक्खण आप कराईआ। जुग चौकड़ी करे कराए खेल श्री भगवाना, भेव कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण देवे दाना, वस्त अमोलक आप वखाईआ। पंज तत्त काया पहरे बाना, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। आत्म परमात्म खेल महाना, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। ईश जीव दए ज्ञाना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुर गुर रूप हो मेहरवाना, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। धुर दी खेल खेल महाना, आदि अन्त ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप चलाईआ। तख्त निवासी साचा राजा, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। आदि पुरख आदि रचया काजा, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर ग़रीब निवाज़ा, निवण

सो आपणी धार चलाइंदा। निरगुण सरगुण लोकमात फिरे भाजा, भेव कोए ना पाइंदा। नाम अनमुलड़ी वस्त देवे दाजा, जुग जुग आप वरताइंदा। जन भगतां रखे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साचे सन्तां अंदर वजाए अनहद वाजा, तन्दी तार ना कोए हलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा हरि करतार, आपणा आप जणाईआ। जुग चौकड़ी कर त्यार, वंडण वंड मात वंडाईआ। गुर अवतार सेवादार, पीर पैग़म्बर नाल रलाईआ। लख चुरासी नाम अधार, सिख्या साख्यात पढ़ाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क जैकार, नाम निधाना दए सुणाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। चलाए रथ विच संसार, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा एका वार समझाईआ। सच संदेशा एका वार, हरि जू हरि हरि हरि आप सुणाया। शब्द सुत रहिणा ख़बरदार, जुगा जुगन्तर खेल कराया। लख चुरासी तेरा आधार, ख़ाली कोए रहिण ना पाया। घट घट नूर तेरा उज्यार, जोत निरँजण डगमगाया। घर घर अमृत ठंडा ठार, बूंद स्वांती कँवल भराया। घर घर नाद शब्द धुन्कार, धुन आत्मक राग अल़ाया। घर घर मन्दिर खोल्ह किवाड़, निर्मल दीवा बाती इक्क टिकाया। घर घर आत्म परमात्म करे प्यार, प्रेम सेजा इक्क सुहाया। घर घर ब्रह्म पारब्रह्म दए आधार, आप आपणा मेल मिलाया। घर घर ईश जीव सुणे पुकार, नेरन नेर डेरा लाया। घर घर मेला कन्त भतार, घर घर सुहञ्जणी रुत्त वखाया। घर घर सखीआं मंगलाचार, घर घर गीत गोबिन्द अल़ाया। घर घर मेला गुर अवतार, गुर शब्दी आप कराया। घर घर पीर पैग़म्बर दए आधार, दस्तगीर आपणा दस्त मिलाया। घर घर मुकामे हक़ होए उज्यार, नूर नुराना डगमगाया। घर घर मेला सांझे यार, शरअ शरीअत ना वंड वंडाया। घर घर ठाकर मन्दिर दिसे गुरुदुआर, मस्जिद वंड ना कोए वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचे हरि, साचा सुत साची सेवा लाया। बाल निधाना शब्दी सुत, साची सेव कमाईआ। कर निमस्कार अबिनाशी अचुत्त, ढह प्या सरनाईआ। जुग चौकड़ी सुहावां तेरी रुत्त, रुत्त रुतड़ी मात महकाईआ। गुर अवतार रूप कहावां पंज तत्त काया बुत्त, नूर नूर नाल मिलाईआ। सच दवारिउँ आपे उठ, आपणा नाद वजाईआ। ब्रह्म उत्ते पारब्रह्म जाए तुठ्ठ, भेव अभेद खुल्हाईआ। एका नूर जगाए निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। भाग लगाए काया कोट, नगर खेड़ा इक्क वसाईआ। शब्द अगम्मी लग्गे चोट, तन नगारा इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे मंग रखाई आस, शब्दी सुत झोली डाहइंदा। तेरा नूर मेरा प्रकाश, जोती जोत डगमगाइंदा। मैं तेरा सेवक दास, जुग जुग तेरी सेव कमाइंदा।

मैं लख चुरासी अंदर पावां रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाइंदा। मैं लेखा जाणा दस दस मास, मात गर्भ वेख वखाइंदा। आदि अन्त ना होवां नास, इक्क तेरी ओट तकाइंदा। लेखा जाणा पृथ्मी आकाश, गगन मंडल आपणे हुक्म रखाइंदा। सद वसां तेरे पास, तेरा विछोड़ा मोहे ना भाइंदा। तेरा नाउँ मेरी याद, कथा कथ इक्क अलाइंदा। गुर अवतारां सुणावां नाद, पीर पैग़म्बर कलमा आप पढ़ाइंदा। तेरा खोलां भेव बोध अगाध, अगम्म अगम्मड़ी खेल कराइंदा। साचे भगतां करां लाड, आप आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। दर तेरे सीस जाए झुक्क, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। तूं सचखण्ड दवारे रिहा लुक, निरगुण तेरा नूर महाना। मैं लोकमात लख चुरासी अंदर पवां बुक्क, एका गावां तेरा तराना। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रखां तेरी ओट, तेरे चरनां सीस झुकावां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन फिरां मात नथावां। पुरख अबिनाशी हो दयाल, सुत शब्द दए वड्याईआ। उठ दुलारे मेरे लाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। तेरे संग रखावां महांकाल, काल तेरे चरनां हेठ दबाईआ। दो जहान तेरी धर्मसाल, चौदां लोक तेरी शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या श्री भगवान, आदि पुरख समझाइंदा। जुग चौकड़ी झुल्ले तेरा निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुर अवतार मन्नण आण, हुक्मी हुक्म सर्ब रखाइंदा। पीर पैग़म्बर सीस झुकायण आण, सजदा जगदीश सर्ब वखाइंदा। मेरा तेरा इक्क फ़रमाण, धर्म दुआरे आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखां आण, तेरा संग निभाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कर परवान, सति परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। अन्तिम चौकड़ खेल करां महान, लोकमात वंड वंडाइंदा। शब्दी तेरा नाउँ बलवान, बलधारी आप वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। पंज तत्त खोलू दुकान, गुर अवतार वंड वंडाइंदा। तेई अवतारां देवे दान, भगत अठारां नाल मिलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद दे पैग़ाम, शरअ शरीअत आप जणाइंदा। चार यारी इक्क इस्लाम, इस्म आज़म आप समझाइंदा। एका जोती दस दस धाम, धाम अवल्लड़ा आप वखाइंदा। पंचम पंच कर परवान, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे आण, नज़र किसे ना आइंदा। रसना जिह्वा सारे गाण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण आप पढ़ाइंदा। देवणहारा गीता ज्ञान, अठ्ठ दस भेव चुकाइंदा। लेखा जाण अञ्जील कुरान, अज़मत आपणी आपणे विच छुपाइंदा। खाणी बाणी इक्क निशान, सति निशाना इक्क लगाइंदा। तेरा नाउँ कर प्रधान, जगत प्रधानगी आप कराइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेशा इक्क अलाइंदा। कलयुग खेल करे महान, भेव कोए ना पाइंदा। छोटा बाला करे नौजवान, नईया

आपणे नाम बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार धार समझाइंदा। नव नौ चार चले धार, हरि धारी आप चलाईआ। खेले खेल विच संसार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम आपे जाणे आपणी कार, करता पुरख कार कमाईआ। शब्दी तेरा नाद इक्क जैकार, दो जहानां दए सुणाईआ। लेखा चुकाए पंज तत्त गुफ़तार, गुफ़त शनीद रूप वखाईआ। अहिबाब रबाब वजाए सतार, बिन तन्दी तन्द हिलाईआ। ग़फ़लत विच ना आए परवरदिगार, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। छोटे सुत तैनूं फेर करां त्यार, बाल बाला नाउँ रखाईआ। तेरी देवां पैज स्वार, लोकमात मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत आप समझाईआ। शब्द सुत तेरा साचा संग, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण वजाए मृदंग, मृदंगा दिस किसे ना आइंदा। गृह मन्दिर अंदर आपे लँघ, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। अठ्ठे पहर इक्क अनन्द, दिवस रैण ना वंड वंडाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, अन्धेरा नूर ना कोए रखाइंदा। ना कोई गीत ना कोई छन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। ना कोई मार्ग ना कोई पन्ध, ना कोई सेवक सेव कमाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, आप आपणी कल वरताइंदा। कलयुग वेस विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्तिम भेव चुकाइंदा। तेरा अन्तिम भेव हरि निरँकार, एका एक समझाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल अपार, गुर अवतार सेव कमाईआ। पीर पैग़म्बर बण भिखार, दर दर बैठण अलख जगाईआ। कलयुग अन्तिम पावे सार, तेरे सिर हथ्थ टिकाईआ। एका जोती दस अवतार, गोबिन्द बाला नाउँ धराईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जगदीश आप सुहाईआ। रामा कृष्ना रूप अपार, ईसा मूसा नूर रुशनाईआ । लेखा जाण मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी पर्दा लाहीआ। चार वरनां इक्क प्यार, पंचम मीता खेल कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बोल जैकार, वाह वा गुरू इक्क मनाईआ। फ़तेह डंका विच संसार, राउ रंकां गया समझाईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। साचे असव होए अस्वार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। पवण पवणां वसे बाहर, उणंजा पवण नैण शरमाईआ। दो जहानां पावे सार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे इक्क माण वड्याईआ। देवे वड़याई हरि जू माण, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। सति सतिवादी धुर फ़रमाण, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जोधा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप रखाइंदा। दाता दानी वड मेहरवान, दूजे दर ना मंगण जाइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर प्रधान, लख चुरासी सेव लगाइंदा। अन्तिम सब दा लेखा चुकाए आण, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गोबिन्द बख्शे इक्क ध्यान, चरन सरन हरि समझाइंदा।

पुरख अकाल नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। साचे तख्त सोहे श्री भगवान, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, हुक्मे अंदर सर्ब रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव हरि जू आप जणाइंदा। गोबिन्द वेख हरि पसारा, घर घर विच खुशी मनाईआ। पुरख अकाल तेरा अखाड़ा, वाहवा वज्जदी रहे वधाईआ। तूं साहिब सतिगुर एकँकारा, अकल कल तेरी शहिनशाहीआ। मुकामे हक़ वसें परवरदिगारा, मिहबान बीदो तेरी वड वड्याईआ। बी खै़र या अल्ला इलाही तेरा नाअरा, नर नरायण तेरा जस गाईआ। चतुर्भुज तेरा खेल न्यारा, दिस किसे ना आईआ। धन्न भाग सुत दुलारा कीता प्यारा, प्रेम प्रेम नाल वंडाईआ। तेरे दर होया वणजारा, साचा वणज मंग मंगाईआ। तूं साहिब ठाकर हमारा, हउँ सेवक ख़ाक रमाईआ। तूं वसें सचखण्ड दवारा, मैं लोकमात तेरा राग अलाईआ। करां खेल अगम्म अपारा, मन्नां तेरा हुक्म मेरे माहीआ। पुरख अबिनाशी दए सहारा, एका ओट जणाईआ। अमृत देवे सति भण्डारा, साची भिच्छया झोली पाईआ। पंचम रंग रंगे न्यारा, निरगुण सरगुण रंग चढ़ाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपे वसे सब तों न्यारा, दिस किसे ना आईआ। पंचम पंच बोल जैकारा, फ़तेह डंका इक्क सुणाईआ। एका शब्द बोल जैकारा, निउँ निउँ बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द जल्वा आप वखाईआ। गोबिन्द जल्वा जोती जाता हरि जू हरि हरि आप वखाइंदा। इक्को पीआ इक्को विधाता, इक्को घर सुहाइंदा। इक्को वरन इक्को ज़ाता, इक्को ब्रह्म प्रगटाइंदा। इक्को नाम इक्को गाथा, इक्को शब्द सुणाइंदा। इक्को अमृत इक्को बाटा, इक्को प्याला भर जाम प्याइंदा। इक्को सतिगुर वसे साथा, हरि जू विछड़ कदे ना जाइंदा। इक्को दीना नाथ वेखे अनाथा, निर्धन आपणे गले लगाइंदा। इक्को पूजा इक्को पाठा, इक्को राम रूप समाइंदा। इक्को सेजा इक्को खाटा, एका आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द भेव चुकाइंदा। गुर गोबिन्द भेव चुकाया, पुरख अकाल दया कमाईआ। घट घट अन्तर नज़री आया, निरगुण सरगुण रिहा समाईआ। साचा मन्दिर इक्क वखाया, घर घर विच बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव दिता खोल्ह, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। तेरा मेरा एका तोल, साचा कंडा इक्क वखाइंदा। आदि जुगादि रहां अडोल, लोकमात ना कोए डुलाइंदा। गोबिन्द वसां तेरे कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। गोबिन्द पर्दा गया लथ्थ, हरि जू हरि हरि दया कमाईआ। एका नूर पुरख समरथ, घट घट नज़री आईआ। चार वरनां मार्ग दस्स, एका गुण गया समझाईआ। पंचम अन्तर आपे वस, आपणा रंग चढ़ाईआ। अमृत जाम प्याला दे दे रस, रस

रसीआ सुख उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल हरि सज्जण सुहेला, शब्दी सुत जणाइंदा। निरगुण निरगुण कर कर मेला, सरगुण सरगुण पन्ध मुकाइंदा। गोबिन्द कहे आपे गुर आपे चेला, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा श्री भगवान, आपणा आप जणाईआ। गोबिन्द सुणना कर ध्यान, धुर दरबारी आप उठाईआ। आपे गुर आपे चेला करे खेल दो जहान, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा दए चुकाईआ। चेला गुर तेरा नाद, हरि जू खुशी मनाइंदा। गोबिन्द वेख खेल ब्रह्माद, ब्रह्मांड रंग रंगाइंदा। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी दे दे दाद, गुर अवतार मात प्रगटाइंदा। नाउँ धर धर सन्त साध, आपणा भेव खुल्हाइंदा। गुरमुखां अंदर वड़ वड़ मारे वाज, आपणा राग सुणाइंदा। गुरसिख जुग जुग सच्चे लाध, आपणा बन्धन पाइंदा। जुग चौकड़ी वेख तमाश, कलयुग सब दा मूल चुकाइंदा। कीता कौल रखणा याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द आप वड्याइंदा। शब्दी गुर मंगे मंग, निरगुण अग्गे झोली डाहीआ। कवण वेला चाढ़ें रंग, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईंआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आएं लँघ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। गुर चेला गाएं छन्द, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। मेरी टुट्टी देणी गंढु, आपणी गंढु पुआईआ। मैं वेखां इक्क अनन्द, अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी साहिब सुल्तान, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम होवां प्रधान, भेव अभेद खुल्हाइंदा। जिस दी गुर अवतार मन्नदे गए आण, सो आपणा पर्दा लाहइंदा। जिस नूं निरगुण रूप कहिन्दे गए भगवान, नज़र किसे ना आइंदा। जिस नूं मन्नदे सचखण्ड वसे मकान, नेत्र नैण ना कोए वखाइंदा। करां खेल अन्त महान, वेस अवेस वटाइंदा। लोकमात होवां मेहरवान, दो जहानां डंक वजाइंदा। आपणा नाउँ रख विष्नूं भगवान, लख चुरासी भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, निष्अक्खर अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा देवे लाह, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। गोबिन्द देवे सच सलाह, सलाहगीर बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम जाए आ, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। प्रगट होए सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा खेल कराईआ। निहकलंक नाउँ लए रखा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। ना कोई भैण ना भ्रा, पुत्तर धी ना कोए जवाईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ लवे डेरा ला, चार दीवार बन्द ना कोए कराईआ। आपणी जोत नूर करे रुशना,

नूरो नूर डगमगाईआ। सुत दुलारे पल्ला तेरे हथ्थ दए फड़ा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। साचे घोड़े दए चढ़ा, असव आपणा इक्क वखाईआ। महांबली आपणा नाउँ लए धरा, बल आपणा लए जणाईआ। सम्मत सम्मती वेख वखा, थित वार ना वंड वंडाईआ। अन्तिम चार जुग नौ सौ चुरानवें चौकड़ी लहिणा देणा दए मुका, बाकी कोए नज़र ना आईआ। गुर अवतारां लए उठा, सतिजुग त्रेता द्वापर पिछला लहिणा पुच्छे चाँईं चाँईंआ। भगत अठारां लए जगा, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लए समझा, समझ समझ नाल मिलाईआ। गुरू दस लए मिला, मिल मिल आपणी खेल वखाईआ। चार यारी पन्ध दए मुका, पंचम नाता तोड़ तुड़ाईआ। त्रैगुण डेरा देवे ढाह, विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाईआ। लोकमात सचखण्ड दवारा दए बणा, जिस दुआरे चरन छुहाईआ। साचे भगत लए प्रगटा, भगवन आपणी बूझ बुझाईआ। निर्मल जोती दए जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अमृत बूंद स्वांती दए प्या, निझर झिरना इक्क झिराईआ। इक्क इकांती दरस दए करा, बहु भांती वेस वटाईआ। उत्तम ज़ाती दए बणा, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। साची गाथी दए सुणा, चार वरनां करे पढ़ाईआ। मन हाथी देवे ढाह, मूँह दे भार सुटाईआ। बुद्धि बबेक दए करा, ववेक आपणा आप समझाईआ। मति मतवाली राहे देवे पा, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पीर पैग़म्बर दए हला, सच हलूणा एका लाईआ। उठ के आउणा वाहो दाह, सच दुआरे आप बुलाईआ। दर आया सच संदेशा दए सुणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। उठो नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखो थाउँ थाँ, नैतर नैण नैण खुल्हाईआ। आपो आपणे पकड़ो बांह, जिस जिस दा होणा मात सहाईआ। पहली चेत सारे कर गए ना, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं तेरे चरनां मिले अजे ना थाँ, दूर दुराडा राह तकाईआ। वरन बरन साडे बख्श गुनाह, ज़ात पात ना कोए सफ़ाईआ। जुग जुग रीती गए चला, जगत नाउँ वड्याईआ। तेरी कीती अन्त ना सके पा, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। साचा लेखा श्री भगवन्त, आपणा आप जणाइंदा। कलयुग वेला आवे अन्त, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा चुकाए सर्ब सन्त, सन्त सतिगुर आपणी खेल कराइंदा। कलयुग माया पाए बेअन्त, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी गढ़ बणाए हउमे हंगत, माया ममता नाल मिलाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ पढ़ शास्त्र सिमरत वेद ना कोए समझाइंदा। निरगुण रूप सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। एका नूर जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म पुरख अबिनाशा, आपणा आप

वरताईआ। दो जहानां वेखे खेल तमाशा, पुरीआं लोआं नाच नचाईआ। जन भगतां करे पूरी आसा, निरासा कोए नज़र ना आईआ। कलयुग अन्तिम बण के दासी दासा, निरगुण आपणी सेव कमाईआ। शाह पातशाह शाहो शाबाशा, शहिनशाह आपणा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा सब दा आप मुकाईआ। सब दा लहिणा गया मुक्क, हरि जू हरि हरि आप मुकाइंदा। अगला बेड़ा ल्या चुक्क, आपणे कंध रखाइंदा। पुरख अबिनाशी एका उठ, दो जहान वेख वखाइंदा। भगतां उपर आपे तुट्ठ, आपणी बूझ बुझाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच ना वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म बणाए साचा सुत, जन जननी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप सालाहइंदा। भगत सलाहे हरि जू आप, दूसर भेव कोए ना राया। आपे जाणे वड प्रताप, आपे पावणहारा माया। कलयुग अन्तिम बण बण सज्जण साक, गुरसिख साचे मेल मिलाया। पहलों किरपन खोल्हे आपणा ताक, मन्दिर अंदर डेरा लाया। फेर सुणाए साचा जाप, हँ ब्रह्म दए समझाया। सो पुरख निरँजण कमलापात, नारी नर नरायण हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराया। साचा खेल भगतन मीता, कलयुग अन्त आप कराईआ। पारब्रह्म दी कोई ना जाणे रीता, वेद पुराण शास्त्र सिमरत रहे जस गाईआ। गुर
७२ अवतार पीर पैग़म्बर कहिण प्रभू अनडीठा, अन्त किसे ना आईआ। कलयुग अन्त साचे भगत करे प्रीता, प्रीती आपणे नाल ७२
लगाईआ। सतिजुग चलाए साची रीता, रीतीवान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची
१२ धार आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे हथ्थ रख ज़ोर, हरि जू आपणा हुक्म वरताइंदा। दूजा रहिणा ना कोए होर, इष्ट देव १२
ना कोए मनाइंदा। लख चुरासी पकड़े डोर, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। करे प्रकाश अन्धेरा घोर, निरगुण साचा चन्द चढ़ाइंदा। पंच विकार ना पावे शोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आप गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप वड्याइंदा। साचे भगत अन्तिम वार, कलयुग आप प्रगटाईआ। छत्ती जुग दा कर्ज़ उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज़ निभाईआ। लोकमात खेल अपार, पारब्रह्म आप वखाईआ। सचखण्ड दा सच मनार, लोकमात लए प्रगटाईआ। बहत्तर भगतां दे आधार, साढे तिन्न तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। लेखा लिख रविदास चुमार, जीव जगत गया समझाईआ। सत्तरां देवे एका दान, सति वस्त झोली पाईआ। सचखण्ड मिले सच मकान, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। नाता तुट्टे ज़िमीं असमान, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सत्तर बहत्तर कर परवान, धुर परवाना हथ्थ फड़ाईआ। एथे ओथे निगहबान, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। पहली चेत्र खेल महान, चेतन आपणी धार जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर

मन्नणी पए सब नूं आण, ना कोई सके सीस उठाईआ। गुर चेला आप होए प्रधान, जोत शब्द रूप वटाईआ। पिता पूत नौजवान, ना मरे ना जाईआ। उठो सारे करो ध्यान, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। चुहत्तरां पावां आपणी आण, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पहली वसाख़ दिवस महान, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तरां एका वंड समझाईआ। चुहत्तरां वंड वंडे निरँकार, हरि जू भेव खुल्हाइंदा। आदि रचना रची जिस अपार, सो अन्त वेख वखाइंदा। विष्नूं होणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी हुक्म सुणाइंदा। दूजा ब्रह्मा कर त्यार, तेरा संग निभाइंदा। तीजा शंकर कर विचार, संसा कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रजो तमो सतो त्रै त्रै मेला आप मिलाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश उठ बल धार, हरि सच्चा आप जणाईआ। निरगुण सरगुण तेरा करे पसार, तेई अवतार वंड वंडाईआ। भगत अठारां होणा ख़बरदार, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। गुर दस्स करो विचार, हरि जू हुक्मी हुक्म जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद हो बेदार, चार यार नाल जगाईआ। पंचम एका एक विहार, परम पुरख दए समझाईआ। पंचम बोलया अन्त जैकार, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन परवान, दर बैठे सीस झुकाईआ। त्रैगुण माया
७३ कहे मैं बाल नादान, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। पंज तत्त कहिण साडा ना कोए निशान, बिन तेरे ना कोए झुलाईआ। ७३
तेई अवतार कहिण तेरा मन्नयां धुर फ़रमाण, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। भगत अठारां कहिण असीं मन्नीएं आण, चरन
१२ कँवल कँवल चरन इक्क सरनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे तेरा सुण पैग़ाम, दर तेरे सजदा सीस झुकाईआ। चार यार १२
कहिण होए गुलाम, गुरबत कोए रहिण ना पाईआ। गुर दस कहिण तेरा नाउँ सतिनाम, सति सति तेरी वड्याईआ। पंचम पंच नैण शरमाण, ना कोई सके नैण उठाईआ। पंचम ढोले साचे गाण, वाह वा वज्जदी रहे वधाईआ। चुहत्तर मन्नण तेरी आण, अग्गे सीस ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सच संदेश, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। उठो सारे लओ वेख, हरि जू आपणा हुक्म वरताइंदा। लख चुरासी सुंञा खेत, राखा कोए नज़र ना आइंदा। लोकमात दा छड्डो हेत, हरि जू डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे आए अभेत, सो आपणा भेव खुल्हाइंदा। जिस दे पिच्छे सीस पाई रेत, सो अग्नी तत्त बुझाइंदा। जिस ने हुक्म सुणाया पहली चेत, सो आपणा हुक्म मनाइंदा। चार जुग खेडां आए खेड, अन्तिम हरि जू सब दी खेड ढाहइंदा। आपणी गोदी लए लपेट, बाहर ना किसे कढाइंदा। चुहत्तरां आपे ल्या वेख, निरगुण निरगुण आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंड आप वंडाइंदा। साची वंड अगम्म अपार, सचखण्ड दवारे आप कराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जिस दा अन्त ना आया पारावार, बेअन्त कह कह गए गाईआ। सो सब दा लेखा रिहा निवार, लेखे आपणे विच पाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी कोई अग्गे दिसे ना गुर अवतार, पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। चुहत्तर बणन सेवादार, दरगाह साची सेव कमाईआ। तेरा टुट्ट ना जाए प्यार, अतुट तेरी शहिनशाहीआ। पैंडा मुक्क ना जाए संसार, बण पाँधी ना कोए मुकाईआ। सिख्या दे दे आए हार, तेरा भेव कोए ना पाईआ। वेद चार करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुराण अठारां रोवण ज़ारो ज़ार, वेद व्यास रिहा समझाईआ। गीता ज्ञान दए आधार, भगत भगवान करे पढ़ाईआ। अञ्जील कुरान इलाही कलाम, कलमा नबी रसूल सुणाईआ। जबराईल इसराईल मेकाईल असराफ़ील दे दे थक्के पैग़ाम, पैग़ाम आपणा भेव जणाईआ। नानक निरगुण बोल सतिनाम, सति सति करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म अन्तिम भाणा, हरि जू आप मनाइंदा। चुहत्तरां देवे चरन ध्याना, चरन कँवल इक्क वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत्त तेई अवतार अठारां भगत ईसा मूसा मुहम्मद चार यार दस गुर पंचम गायण इक्को गाणा, हरि जू हरि हरि आप पढ़ाइंदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरवाना, लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण होए प्रधाना, लख चुरासी आसण लाइंदा। आओ रल मिल सारे पुरख अबिनाशी बन्नीए गाना, चार वरन एका ब्रह्म साचा धर्म समझाइंदा। शब्द अगम्मी तीर निशाना, आप चलाए वड बलवाना, ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराइंदा। भगतां देवे इक्को माणा, आत्म अन्तर सच्चा गाणा, सोहँ सो पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा आप कराइंदा। वीह सौ उन्नी भगत विसाखी, हरि जू सचखण्ड धार चलाईआ। चार जुग जिन्हां दी करदा आया राखी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिन्हां पढ़ाउँदा आया आपणी साख़ी, भेव अभेद खुल्हाईआ। आबे हयात अमृत रस साची मध पिआउँदा आया बण बण साकी, साका आपणा दए सुणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तन हंढाया ख़ाकी, गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाउँ धराईआ। कलयुग अन्तिम करे आप चलाकी, भेव कोए ना पाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशी, आपणी धार आप चलाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाशी, गगन मंडल फेरा पाईआ। बहत्तरां भगतां पूरी करे आसी, नाड़ बहत्तर कर रुशनाईआ। सत्तरां करी सच्ची शादी, हरि जू आपणे अंग लगाईआ। चुहत्तरां बणया मात पित आदि जुगादी, जुग जुग आपणा लहिणा दए समझाईआ। निरगुण सरगुण सदा रिहा विस्मादी, बिस्मिल आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साची सिखी

आप बणाईआ। साची सिखी गुर अवतार, हरि जू आपणी आप बणाइंदा। वरन गोत ना कोए आधार, ज़ात पात ना वंड वंडाइंदा। ऊँच नीच ना कोए विचार, राउ रंक ना कोए अखवाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह ना कोए हँकार, आसा तृष्ना ना कोए वधाइंदा। हउमे हंगता गढ़ ना कोए उसार, जूठ झूठ डेरा कोए ना लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म खण्ड दुआरे साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिक्खी सचखण्ड, हरि अबिनाशी आप बणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी वंडदा रिहा वंड, अन्तिम एका रूप समाईआ। चरन कँवल दुआरे बहा सुणावे छन्द, एका ढोला आपे गाईआ। गुरमुख गुर गुर इक्क अनन्द, दूजा भेव ना लागे राईआ। जुग चौकड़ी ढट्ठी कंध, शरअ पर्दा कोए ना पाईआ। इक्को गीत इक्को छन्द, इक्को गोबिन्द रिहा गाईआ। इक्को सेज इक्क पलँग, एका सुत्ता साचा माहीआ। इक्को रूप इक्को रंग, इक्को रेख रिहा समझाईआ। इक्को करवट इक्को कंड, इक्को मुखड़ा रिहा दिखलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तरां एका घर बहाईआ। इक्को घर इक्को मन्दिर, इक्को सोभा पाइंदा। इक्को दुआरा इक्को अंदर, एका नज़री आइंदा। इक्को खेड़ा इक्को नगर, एका सोभा पाइंदा। इक्को आसा इक्को सधर, इक्को पूर कराइंदा। इक्को ओट इक्को चादर, इक्को पर्दा पाइंदा। इक्को हज़ूर इक्को हाज़र, एका हज़रत खेल कराइंदा। इक्को देवे सदा आदर, फड़ फड़ आपणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे सिख आप बणाइंदा। साचे सिख गए बण, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी लए जण, आपे बणया जणेंदी माईआ। गुरू अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान सारे कहिण धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। पहली वसाख तेरा हुक्म लईए मन्न, पंदरां कत्तक बीस बीस तेरे चरन सीस झुकाईआ। तेरा संदेशा सुणया बिन कन्न, तेरा वज्जया नाद इलाहीआ। तेरे हुक्मे अंदर शरअ शरीअत आए बन्न, वंडण लोकमात वंडाईआ। तूं अन्तिम आपणी हथ्थीं देवें भन्न, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। एका मंग दे दातार, सति सति सति सति सीस झुकाया। निरगुण रूप तेरा अपार, निरगुण रूप प्रगटाया। नाता छड्ड के आए विच संसार, पंज तत्त चोला जगत हंढाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या वारो वार, बेअन्त तेरी शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरनां सीस टिकाया। पुरख अबिनाशी सदा मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। आओ सारे रल मिल गाओ श्री भगवाना, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। कलयुग मिटे अन्त निशाना, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा होए प्रधाना, भगत भगवान लए जगाईआ। बहत्तरां देवे इक्को माणा, एका रंग रंगाईआ। सत्तरां आप

करे पछाणा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सत्तर बहत्तर सरगुण होए प्रधाना, निरगुण चुहत्तर आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा एको अन्त सुणाईआ। सच संदेशा एकँकारा, अन्त अन्त जणाइंदा। दूजी वार करो विचारा, विचार विचार नाल मिलाइंदा। इक्क इक्क नूं दयो सहारा, इक्क इक्क नाल बन्धन पाइंदा। अन्तिम लेख लिखाए हरि जू बण लिखारा, कलयुग अन्तिम गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्को इक्क सिख तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा आप सुणाइंदा। सच संदेशा दो जहानां वाली, सचखण्ड दवारे आप जणाईआ। सारे अन्त रहो ना ख़ाली, इक्क इक्क नाल गंढु पुआईआ। कलयुग अन्तिम चले चाली, चाल निराली हरि रखाईआ। प्रगट हो जोत अकाली, अकल कल रूप वटाईआ। इक्क इक्क टाहण इक्क इक्क डाल्ही, इक्क इक्क पत इक्क इक्क पंखड़ी लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ। सारे कहिण दीन दयाल, तेरा मन्नीए धुर फ़रमाणा। तूं वसणा साडे नाल, तेरा खेल दो जहानां। तेरे गुरमुख लईए भाल, सेवा कर मात महाना। तूं सानूं चुहत्तरां दिता दान, असीं चुहत्तरां बन्नीएं गानां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड बलवाना। चुहत्तरां गाना लैणा बन्नू, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। निरगुण सरगुण चढ़ाए चन्न, लोकमात करे रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे गए मन्न, विष्न ब्रह्मा सीस झुकाईआ। बिन तेरे गुरमुखां किसे हथ्थ गानां ना देईए बन्नू, नौ खण्ड पृथमी सुंञी दिसे लोकाईआ। जिस दुआरे तूं साहिब ग्यों मन्न, तिस दुआरे हउँ बालक बण बण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा माण वड्याईआ। चुहत्तर रखे निरगुण धार, आपणा खेल समझाया। चुहत्तर करे मात उज्यार, पंज तत्त दए वड्याआ। साचे गुरमुख कर प्यार, सतिगुर गोदी आप बहाया। पहली जेठ दए आधार, जेठा पुत्त होए सहाया। साया हेठ रखे आप निरँकार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कागद कलम ना लिखे कोई वार, समुंद सागर मस रही कुरलाया। बनास्पत रोवे ज़ारो ज़ार, तेरा अन्त किसे ना पाया। बिन भगतां देवें ना किसे दीदार, दर्दी दर्द ना कोए वंडाया। कलयुग खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राग रिहा अल्हाया। तिन्न तिन्न पंज अपार, हरि जू आपणी खेल कराईआ। तेई दे इक्क आधार, अठारां एका गंढु पुआईआ। दस दे इक्क सहार, सतिगुर साख्यात दरस दिखाईआ। तिन्न चार खोल्ह किवाड़, आपणा भेव जणाईआ। पंचम बोलया अन्त जैकार, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। चुहत्तरां किहा अन्तिम वार, सम्मत अठारां खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारे बोल जैकार, बल बावन दिता समझाईआ। सतिजुग दा कौल इकरार, कलयुग अन्तिम पूर कराईआ।

ढाई कर्म दा मात आधार, दोए दोए आपणी वंड वंडाईआ। इतल वितल सितल तेरी खेल अपार, तिन्न जुग तेरी आस तकाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, तेरा लेख गया समझाईआ। ईसा मूसा कर पुकार, परवरदिगार ओट तकाईआ। मुहम्मद कहे मेरा सांझा यार, हज़रत आपणा रूप वटाईआ। नानक निरगुण कहे महांबली आवे आपणी वार, भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द कहे कल कल्की लै अवतार, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। करे खेल अपर अपार, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाईआ। सिँघ गुरदयाल बोल जैकार, पुरख अबिनाशी अग्गे वास्ता पाईआ। नामा रो रो कह गया पुकार, छप्परी जगत वंड वंडाईआ। धन्ना लस्सी गया प्याल, अन्तिम इक्को ओट रखाईआ। कवण वेला तारें जट्ट गंवार, बिन पढ़यां ज्ञान दिवाईआ। चौदां विद्या करें खुआर, एका नाम दएं वड्याईआ। चौदां लोक दएं हुलार, नाम हुलारा एका लाईआ। चौदां तबक मारें मार, खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ। लहिणा देणा गुर अवतारां दएं उतार, एका आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात रहे ना विच संसार, एका इष्ट आत्म परमात्म दएं वखाईआ। दृष्ट खोलें आप निरँकार, जिउँ रामा वशिष्ट समझाईआ। कूड़ कुड़यारा तोड़ें गढ़ हँकार, रावण डेरा अन्तिम ढाहीआ। लेखा जाणे कान्हा कंसा दएं अधार, गोवर्धन धारी मुकंद मनोहर लखमी नरायण चतुर्भुज आपणा खेल कराईआ। अष्टभुज आदि भवानी, निरगुण नूर जोत निशानी, सच घर दी वड महांराणी, आपणा जोबन वेख वखाईआ। गुर अवतारां दे दे बाणी, अक्खर वक्खर सुणाएं कहाणी, पद निरबाण आप जणाईआ। अन्तिम सब दी मेट निशानी, आपे होएं दो जहानां वाली, दूजा कोए नज़र ना आईआ। कलयुग मेटें रैण अन्धेरी काली, नौ खण्ड पृथ्मी वखाएं सच्ची धर्मसाली, मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआला एका घर वखाईआ। लहिणा चुक्के तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती घर घर लहर वहाईआ। सूरज चन्न जल पाणी अमृत आपे झट्ट, घट घट आपणा खेल वखाईआ। मन का मणका आपे रट, रसना जिह्वा पवण स्वास स्वास स्वासां नाल मिलाईआ। सुरती शब्दी एका रथ आपे चढ़ाए पुरख समरथ, सतिजुग महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। बल बावन मार्ग देणा दस्स, चुहत्तरां तेरे होया वस, सिँघ गुरदयाल रिहा समझाईआ। सत्तरां जगत मनजीता आया नस्स, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। बहत्तरां सिँघ जगदीशा रिहा हस्स, घर साचे खुशी मनाईआ। सिँघ सवरन ल्या इक्को रस, ध्रू दुआरा पदवी पाईआ। सिँघ पाल सब नूं मार्ग रिहा दस्स, सत्तरवां सत्तरां नाल रिहा समाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद उणंतर अठाठ सताठ खेल तमाश, चार यारी छिआठ पैंठ चौंठ तरेठ गंढु पुआईआ। दस गुर दे दे साथ, बवन्जा आपणा अंक जणाईआ। अठारां भगत खेल तमाश, तिन्न पंज पैंतीस बन्धन पाईआ। तेई अवतार कर प्रकाश, बारां अंक नाल समझाईआ। पंज तत्त खेल तमाश, सत्तवें आपणी गंढु

पुआईआ। त्रैगुण पाए साची रास, चौका आपणे अंग लगाईआ। तीआ दूआ एका शंकर ब्रह्मा विष्न करे प्रकाश, प्रकाशवान आप हो जाईआ। चुहत्तर सचखण्ड दवारे करे दास, ना कोई सके सिर उठाईआ। पीर पैग़म्बर गुरू अवतार भगत सारे मिल के करन इक्क अरदास, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी कीती होए रास, साडी चले ना कोए चतुराईआ। तेरे हुक्मे अंदर बण के गए दासी दास, लोकमात सेव कमाईआ। अन्त आए तेरे पास, बैठे चरन ध्यान लगाईआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा राख, तुध बिन ओट ना कोए तकाईआ। रल मिल तेरा लम्भया सच्चा साथ, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा इक्क प्रकाश, दो जहान करे रुशनाईआ। जन भगतां दर्शन देवे साख्यात, घर घर आपणा रूप प्रगटाईआ। हरिसंगत बध्धा आपणा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। नेड़ ना आए मनमति नार कमज़ात, कुलखणी दर रहिण ना पाईआ। जन भगतां बणे भगत साक, पुरख अकाल विचोला इक्क अख्वाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह हाट, बण हट्टवाणा वणज कराईआ। इक्को नाम देवे दात, इक्को वार झोली पाईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रात, घर घर विच चन्द चढ़ाईआ। गुरमुख सेजा आत्म वेख खाट, सच सिंघासण दए सुहाईआ। सुरत सवाणी पुच्छे वात, शब्द हाणी दए मिलाईआ। घर विच मेला कमलापात, कन्त कन्तूहल ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चुहत्तरां देवे इक्क सरनाईआ। इक्क सरनाई सरन गत, सो पुरख निरँजण आप रखाइंदा। इक्को नाम इक्को तत्त, पंज तत्त इक्क समझाइंदा। इक्को मार्ग इक्को रथ, रथ रथवाही इक्को नज़री आइंदा। एका यार एका सत्थर बैठा घत्त, सत्थर यार इक्क हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची सिक्खी आपे रखे खंडिउँ तिक्खी, वालों निक्की नज़र कोए ना पाइंदा। जिस सिक्खी नूं गोबिन्द गाया, सो पुरख अकाल बणाईआ। सचखण्ड दवारा इक्क सुहाया, सतिगुर पूरे सच्चे माहीआ। आपणा मार्ग आपे लाया, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दुवारिउँ वंड कराया, पहलों ओथे डेरा ढाहीआ। जिस दुवारिउँ गुर पीर अवतार घलाया, ओस दुआरे लए बहाईआ। जिस दुवारिउँ वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान ढोला गाया, तिस दुआरे खाते पाईआ। जिस मन्दिर अंदर पर्दा ओहला रिहा रखाया, तिस पर्दा दए चुकाईआ। जुग जुग विचोला शब्द बणाया, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिखी आप समझाईआ। वालों निक्की कर त्यार, त्रैगुण अतीता वेख वखाइंदा। मुनी ऋषी ना पावे कोई सार, पंडत पांधा मुलां शेख़ ग्रंथी पन्थी नैण ना कोए वखाइंदा। लोकमात ना दिसे कोई रेख, सचखण्ड रेखा आप बणाइंदा। हरि का रूप मुछ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोई मूंड मुंडाइंदा। आत्म

ब्रह्म हर घट रिहा वेख, पारब्रह्म फेरा पाइंदा। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप चलाइंदा। खंडिउँ तिक्खी हरि जू धार, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। बिन गुरू अवतार कोई ना उतरे पार, पार किनारा ना कोए कराईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, घर साचे आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त झोली पाईआ। साची वस्त साचा दान, हरि जू हरि हरि आप वरताइंदा। नानक निरगुण कर प्रधान, सब दी झोली आप भराइंदा। गोबिन्द सूरा बण बलवान, आपणा खेल कराइंदा। कलयुग मेटे झूठ निशान, कूड़ी क्रिया मोह तुड़ाइंदा। साचे भगत करे परवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जिस जन देवे सोहँ दान, सो जन जन्म मरन विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह अगम्म अपार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हँ ब्रह्म दे अधार, पारब्रह्म लए मिलाईआ। सोहँ शब्द जै जैकार, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। सोहँ रूप तेई अवतार, गुर गुर एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म सोहँ खेल खलाईआ। सोहँ धार विच संसार, सति सतिवादी आप चलाइंदा। चुहत्तर निरगुण कर परवान, चुहत्तर सरगुण रंग रंगाइंदा। पहली जेठ करे प्यार, प्रीतम प्यारा दया कमाइंदा। नारी पुरष दे अधार, बिरध बालां आप तराइंदा। शाह कंगालां करे पार, जो जन सरनाई आइंदा। बणे दलाल आप निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, अनुभव आपणी धार रखाइंदा। दूख विनासी मिटाए दुःख, दुखियां दुःख मिटाइंदा। घर उपजाए साचा सुख, भुक्ख्यां भुख गवाइंदा। दूर कराए ना माणस ना मनुक्ख, मोह ममता आप चुकाइंदा। अंदर वड़ ना बहे कोई लुक, लुक्यां बाहर कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुख घर घर विच सुख वखाइंदा।

✳ २ वसाख २०१६ बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर ✳

सचखण्ड दवारा आप सुहा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। तख्त निवासी एका तख्त वड़या, शाहो भूप आसण लाइंदा। राजन राज आप अख्वा, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। निरगुण नूर जोती डगमगा, जल्वा नूर आप धराइंदा। करे खेल अगम्म अथाह, बेपरवाह, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण निरगुण करे सलाह, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, हुक्मी हुक्म आप मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा

पाइंदा। सचखण्ड दवारा हरि निरँकार, एका एक सुहाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, हुक्मी हुक्म आप मनाईआ। निरगुण सरगुण दे आधार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी वेख विचार, दो जहान दए वड्याईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे आप अखाड़, गगन मंडल सोभा पाईआ। लहिणा देणा जाणे रवि ससि सूरज चन्न सतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड साचा सोभावन्त, श्री भगवान आप सुहाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी धार चलाइंदा। जुगा जुगन्तर साचा मंत, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। निरगुण निराकार निरवैर बणाए बणत, अजूनी रहित खेल कराइंदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोए चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवार सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, एकँकारा बेपरवाहीआ। जोती नूर आदि निरँजणा, अबिनाशी करता खेल कराईआ। श्री भगवान साचा सज्जणा, पारब्रह्म प्रभ संग निभाईआ। नाद अनादी नाद एका वज्जणा, निरगुण निरांकार आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड दवारे देवे माण, हरि वड्डा वड वड्याईआ। किरपा कर श्री भगवान, सच महल्ला दए सुहाईआ। दीआ बाती इक्क महान, कमलापाती आप जगाईआ। चार दीवारी ना कोए मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी बणत बणाईआ। सचखण्ड दवारा एका एक, एकँकारा आप सुहाइंदा। आपणे नेत्र आपे पेख, आप आपणी खुशी मनाइंदा। आपे जाणे आपणा भेत अभेत, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। निरगुण निरगुण करे हेत, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वड़, साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचा तख्त सच महल्ला, हरि साचा सच सुहाईआ। वसणहारा इक्क इकल्ला, अकल कल बेपरवाहीआ। जोती शब्द आपे रला, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। आपणे प्रकाश आपे बला, तेल बाती ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे वसे नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। नर नरायण इक्को दाता, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। आदि जुगादी खेल तमाशा, निरगुण निरवैर आप वखाइंदा। थिर घर साचे कर प्रकाशा, नूरो नूर नूर धराइंदा। शब्दी शब्द दे दिलासा, सच भरवासा इक्क समझाइंदा। साचे मंडल पावे रासा, निरगुण नूर नूर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि करतार, आदि पुरख आप कराईआ। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया इक्क वरताईआ। साची सिख्या एकँकार, अकल कल करे पढ़ाईआ। मुनी ऋषी

ना पावे सार, मुकामे हक़ परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही सांझा यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हक़ हक़ीक़त आपणे विच छुपाईआ। मुकामे हक़ हक़ नज़ारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। नूरी जल्वा नूर उज्यारा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। नाद धुंन बोल जैकारा, आप आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। शब्दी शब्द सुत दुलारा, पिता पूत वेस वटाइंदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर पसारा, रवि ससि सूरज चन्न किरन किरन चमकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए आधारा, त्रैगुण आपणा बन्धन पाइंदा। पंचम वेख सच अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल कराइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़े बण ठठयारा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। मन मति बुध दे आधारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। ईश जीव खेल न्यारा, जगदीश वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा सचखण्ड निवासी आप सुणाइंदा। सचखण्ड निवासी धुर फ़रमाणा हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। लख चुरासी कर प्रधाना, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। पंज तत्त तत्त निशाना, ब्रह्म मति मत कुड़माईआ। शब्द अगम्मी एका गाना, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत सरोवर कर परवाना, निझर झिरना आप झिराईआ। निर्मल दीआ जोत महाना, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। घर विच घर खेल करे श्री भगवाना, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण देवे माण वड्याईआ। निरगुण सरगुण साचा नाता, लोकमात जोड़ जुड़ाइंदा। नाम निधान अगम्मी गाथा, सच संदेशा आप सुणाइंदा। पंज तत्त चलाए हरि जू राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। साचा मन्त्र पूजा पाठा, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंडण आप वंडाइंदा। साची वंडण वंड संसार, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। लेखा जाणे वेद चार, चार जुग करे कुड़माईआ। चारे खाणी कर प्यार, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। चार वरन दे आधार, चार यारी बन्धन पाईआ। नव नौ खोल्हू दुआर, करे खेल बेपरवाहीआ। सेवा ला गुर अवतार, गुर शब्दी हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। जुग चौकड़ी बन्धन पाए हरि, हरि भेव कोए ना आइंदा। निरगुण सरगुण नूर आपे धर धर, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर डर, अजूनी रहित नज़र किसे ना आइंदा। वेद शास्त्र सिमरत पुराण आपे पढ़ पढ़, आपणी महिमा आपे गाइंदा। अञ्जील कुराना आपे धर धर, धर धरनी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा साचा

गीत, सतिगुर पूरा आप सुणाईआ। वसणहारा धाम अनडीठ, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। जुग चौकड़ी चलाए आपणी रीत, भेव कोए ना पाईआ। पंज तत्त काया करे ठांडी सीत, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। नज़री आए इक्क अतीत, त्रैगुण बन्धन ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट आपणी जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल वरताईआ। जुग चौकड़ी खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। गुर अवतार फड़ाए पल्ला, नाम नामा बन्धन पाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, नज़र किसे ना आइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लख चुरासी अंदर निरगुण नूर जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाइंदा। सच सुनेहड़ा हरि निरँकार, आदि आदि जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करया ख़बरदार, त्रैगुण निंद्रा रहे ना राईआ। पंज तत्त करे बेदार, आलस होर ना कोए पाईआ। चार वेद दे आधार, चार जुग करे पढ़ाईआ। चारे खाणी पावे सार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैख़री आपे गाईआ। साचा हुक्म देवे एका वार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यार, लोकमात खेल कराईआ। शब्दी शब्द बोल जैकार, जै जै एका नाम कराईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, गुर गुर आपणा रूप वखाईआ। काया काअबा खोल्ह किवाड़, सच महिराबे

८२ डेरा लाईआ। पीर पैग़म्बर दे आधार, दस्तगीर आपणा दस्त मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ८२

जुग चौकड़ी गेड़ा आप दवाईआ। जुग चौकड़ी गेड़े अंदर रख, हरि जू हुक्मे हुक्म भुवाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रतख,

१२ गुर गुर वेस वटाइंदा। नाउँ निधाना बोल अलख, अलख अलखणा पर्दा लाहइंदा। जीव जंत मार्ग दरस, भगत भगवन्त १२

आप उठाइंदा। साचे सन्तां देवे अमृत रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। गुरमुखां हिरदे अंदर वस, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। गुरसिखां मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द इक्क चमकाइंदा। त्रैगुण विच ना जाए फस, पंचम मोह ना कोए रखाइंदा। जुग जुग पूरी करे आस, आसावन्त आप हो जाइंदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ प्रभास, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। फोलणहारा आप कैलाश, डूँघे सागर डेरा लाइंदा। लख चुरासी अंदर रखे वास, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। दो जहानां पावे रास, गुर अवतार पीर पैग़म्बर गोपी काहन नचाइंदा। लेखा जाणे दस दस मास, मात गर्भ फेरा पाइंदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, अबिनाशी आपणा नाउँ धराइंदा। पर्दा लाहे पृथ्मी अकाश, गगन गगनां उपर डेरा लाइंदा। लेखा जाणे पवण स्वास, उणंजा पवण आप झुलाइंदा। जुग चौकड़ी आपणी पति आपे राख, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सुहाए साचा घर, लोकमात वेख वखाइंदा।

लोकमात वेखणहारा, निरगुण आपणा खेल कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे पार किनारा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, वेस अनेका आप वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखारा, लेखा जाणे कलम शाहीआ। गीता ज्ञान दे आधारा, अठ्ठ दस वणज कराईआ। अञ्जील कुरान बोल नाअरा, बिस्मिल आपणा रूप वखाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे सहारा, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। कलमा हक़ परवरदिगारा, ला हक़ करे पढ़ाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड निवासी हो त्यारा, निरगुण आपणी धार चलाईआ। नानक सरगुण दे आधारा, पंचम तत्त तत्त वड्याईआ। सतिनाम बोल जैकारा, जै जैकार सर्ब लोकाईआ। एका जोत दस अवतारा, फ़तेह डंका गुर वजाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करे खेल वारो वारा, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, धुर फ़रमाणा धुरदरगाही साचा राणा एका एक जणाईआ। एका एक सच संदेशा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। पुरख अकाल रहे हमेशा, जन्म मरन विच ना आइंदा। लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। गुर अवतार धर धर भेसा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। अन्तिम आपणे हथ्थ रखे लेखा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा। नव नौ चार मुक्के पन्ध, हरि पाँधी आप मुकाईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि गाए छन्द, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। भेव अभेद जणाए बत्ती दन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। नव नौ चार पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलयुग आई अन्तिम वारा, नौ खण्ड पृथ्मी अन्धेरा छाईआ। पुरख अबिनाशी एका हुक्म करे वरतारा, धुर संदेशा आप सुणाईआ। नैण खुल्हाए तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खोल्हे किवाड़ा, बन्द ताकी ना कोए रखाईआ। नानक गोबिन्द दे हुलारा, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। त्रैगुण माया पार किनारा, पंज तत्त डेरा देवे ढाहीआ। वरन बरन ना रहे अखाड़ा, जूठ झूठ ना नाच नचाईआ। विभचार कोए ना रहे नारा, नर नरायण आपणा हुक्म वरताईआ। निर्मल जोत कर उज्यारा, दो जहान करे रुशनाईआ। विष्नूं दोए जोड़ करे निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। ब्रह्मा नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। शंकर बाशक तशका गलों लाहे हारा, हथ्थ त्रिसूल सुटाईआ। इन्दर मंगे चरन धूढ़ी छारा, करोड़ तेतीसा नाल मिलाईआ। तेई अवतार करन विचारा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद बोले नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नानक गोबिन्द फ़तह डंक इक्क नगारा, एका वार गया वजाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, महांबली नाउँ धराईआ। सम्बल

वसे धाम न्यारा, भेव कोए ना पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वेखे आप मनारा, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। नव नौ चार करे पार किनारा, मँझधारा फेरा पाईआ। वेखणहारा डूँघे सागर वडी गारा, आप आपणा पर्दा लाहीआ। मुहम्मद कहे मेरा परवरदिगारा, हज़रत आवे चाँईं चाँईंआ। ईसा कहे देवे अन्त सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। वेद व्यास बण लिखारा, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा गया समझाईआ। पुरख अबिनाशी अन्त ना पारावारा, हरि का अन्त ना कोए लिखाईआ। लिख लिख थक्के जीव संसारा, कातब आपणा बल ना कोए रखाईआ। समुंद सागर मस बण बण रोवे ज़ारो ज़ारा, बनास्पत रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, नव नौ लेखा दए मुकाईआ। नव नौ लेखा होए पार, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, लोकमात वेस वटाईआ। सचखण्ड दा सच दुआर, धरत धवल उपर आप सुहाईआ। छत्ती जुग दा कर्ज उतार, चारे कुण्टां दए वखाईआ। लहिणा मुकाए तेई अवतार, बाकी कोए नज़र ना आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद रखे ना कोए उधार, लहिणा सब दी झोली पाईआ। मेल मिलाए गुर गुर धार, इक्क दस वडी वड्याईआ। आपणा नाउँ रख निहकलंक नरायण नर अवतार, साचा डंका नाम वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे आसण लाईआ। साचा आसण गया लग्ग, नज़र किसे ना आइंदा। करे खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण दीपक गया जग, दो जहान अन्धेर मिटाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लभ्भ, सन्त सुहेले आप मिलाइंदा। अमृत चवाए कँवल नभ, नाभी मुखड़ा आप भुवाइंदा। पंच विकारा देवे दब्ब, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आप गवाइंदा। अनहद शब्द वजाए नद, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। नौ दुआरे पार हद्द, डूँघी भँवरी आप लँघाइंदा। हरिजन बणाए आपणी यद, विश्व आपणा खेल वखाइंदा। लख चुरासी नालों कर कर अड्ड, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। लेखा जाणे तिन्न सौ सठ हाडी हड्ड, बहत्तर नाड़ी गंढु पुवाइंदा। धाम रखाए एका पद, चौथे पद आप बहाइंदा। निरगुण सरगुण लडाए लड, प्रेम रीती आप वखाइंदा। नाम प्याए साची मदि, अठ्ठे पहर खुमार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सचखण्ड साचा सोभनीक, सति सतिवादी आप सुहाईआ। इक्क इकल्ला लाशरीक, आपणा आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरा तारीक, चन्द चांदनी करे रुशनाईआ। करे खेल अगम्म अनडीठ, बेअन्त बेपरवाहीआ। गुरमुख मिठ्ठे करे कौड़े रीठ, विख अमृत रूप बणाईआ। दरस दखाए इक्क अतीत, त्रैभवण धनी सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा मुकाए मन्दिर मस्जिद मठ्ठ मसीत, काया काअबा इक्क वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरते जग, सो पुरख निरँजण आप वरताइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी बन्ने तग, दिस किसे ना आइंदा। घट घट अंदर करे हज्ज, बण हाजी फेरा पाइंदा। मुर्शद मुरीद आपे लए लभ्भ, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका लाइंदा। साचा मार्ग अन्तिम कल, हरि जू हरि हरि आप लगाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा रिहा वल छल, रूप अनूप धराईआ। गुर अवतार मात घल, साची सेवा इक्क समझाईआ। सच सिँघासण आपे मल, सचखण्ड आपणी खेल रचाईआ। कलयुग अन्तिम आया चल, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। लख चुरासी वेखे पत डाल्ही फल, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क समझाईआ। सच संदेशा अन्तिम वार, हरि जू हरि हरि आप सुणाया। कल कल्की लै अवतार, निरगुण आपणा राह चलाया। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए आधार, पूजस पूज ना कोए पुजाया। त्रै पंज नाता तुट्टा सगला यार, मित्र मीत ना कोए अख्वाया। तेई अवतार मुक्का उधार, लोकमात रहे ना राया। ईसा मूसा अन्त दीदार, दीद ईद आप चन्द चढ़ाया। मुहम्मद लहिणा चुक्के चार यार, यारी संग ना कोए रखाया। जोती मेला गुर गुर धार, दस दस आपणे विच मिलाया। पंचम पंच पंच जैकार, जै जै एका नाद सुणाया। नौ खण्ड पृथ्मी एका धार, धुर दरबारी आप बणाया। चार वरनां कर प्यार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका घर वखाया। ऊँच नीच ना कोए विचार, ज़ात पात ना वंड वंडाया। आत्म परमात्म दे आधार, ब्रह्म पारब्रह्म वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाया। सतिजुग साचा चले राह, निरगुण दाता आप चलाईआ। शब्दी गुर इक्क मलाह, लख चुरासी बेड़ा लए तराईआ। पंज तत्त देवे ना कोए सलाह, त्रैगुण ना देवे कोई गवाहीआ। इक्क प्रगटाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। हँ ब्रह्म लख चुरासी बणत ल्या बणा, सो पुरख निरँजण घाड़न आप घड़ाईआ। जुग जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोटन कोटि नाम गए ध्या, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। गोबिन्द कह के गया मेरा मेहरवां, मेहरवान वडी वड्याईआ। गुर चेला हो वसे थाँ थाँ, चेला गुर आपणा रूप वटाईआ। अन्तिम मेला मेले सहिज सुभा, भेव कोए ना पाईआ। निहकलंक नाउँ लए रखा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। साचा मन्दिर दए सुहा, हरि मन्दिर हरि जू डेरा लाईआ। गुरमुख विरले लए जगा, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। नाम खण्डा लए चमका, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ अंदर दए टिका, बाडी बणत ना कोए बणाईआ। हुक्म देवे आप शहिनशाह, साचे तख्त वसे सच्चा माहीआ। कलयुग कूड़ी सफ़ा दए उठा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ।

सब दा लेखा दए मुका, गुर अवतार आप जगाईआ। ईसा मूसा झोली दए भरा, काला सूसा खेल वखाईआ। मुहम्मद चौदां तबकां दए फिरा, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाईआ। चौदां विद्या वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता रूप अनूप सति सरूप आपणी खेल कराईआ। आपणा खेल करे समरथ, भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम देवे मथ, नाम निधाना इक्क रखाइंदा। भगत भगवन्त लए रख, बहत्तर एका अंक बणाइंदा। सत्तरां देवे एका मति, ब्रह्म मति इक्क दृढ़ाइंदा। चुहत्तरां चरनां हेठां रख, सचखण्ड आपणा दर सुहाइंदा। उच्ची कूक बोल अलख, एका नाअरा आप सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण हो प्रतख, हँ ब्रह्म मेल मिलाइंदा। आपणे खाते लए घत्त, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त भगत भगवन्त आपणी गोद रखाइंदा। जुग चौकड़ी गा गा गए जस, गुर गुरबाणी नाद वजाइंदा । अन्तिम आप हो प्रगट, प्रगट आपणा खेल जणाइंदा। करे खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताइंदा। गुरमुख विरले मार्ग दस्स, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्क सुहाइंदा। सोहे सिँघासण पुरख अबिनाशा, नज़र किसे ना आईआ। दो जहान वेखे तमाशा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाईआ। गुरमुखां अंदर पावे आपणी रासा, साचे मन्दिर खुशी मनाईआ। आत्म सेजा भोग बलासा, भस्मड़ आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। जन भगतां लख चुरासी कटे जम की फ़ासा, राए धर्म नेड़ ना आईआ। सोहँ शब्द सच धरवासा, नानक गोबिन्द गया गाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम खोल्ह्या आप खुलासा, निर्भय आपणी धार चलाईआ। नाता तोड़े दस दस मासा, जो जन रसना जिह्वा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। साचा मन्त्र दृढ़ा एक, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म करे बुध बबेक, ववेकी आपणी खेल वखाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंचम तत्त ना कोए भरमाइंदा। सतिगुर साहिब दयाल नेत्र लैणा पेख, घर घर विच डेरा लाइंदा। हरि का रूप मुछ दाढ़ी ना दिसे केस, सीस जगदीश ना कोए मुंडाइंदा। निर्मल जोत आदि जुगादि रहे हमेश, नूर नुराना नूर धराइंदा। कलयुग अन्त मेटे कलेश, कल आपणी आप वखाइंदा। सोहवणहारा बाशक सेज, सांगोपांग आप तजाइंदा। शब्द अगम्मी सुनेहड़ा भेज, गुरसिख साचे आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार लहिणा झोली पाइंदा। नव नौ चार देवे लहिणा, लहणेदार आप अख्वाया। गुर अवतारां वखाए नैणां, पीर पैग़म्बर नाल मिलाया। वरन बरन अन्त ना रहिणा, पुरख

अबिनाशी दए मिटाया। सोहँ शब्द सब ने कहिणा, बीस बीसा दए सलाहया। हरि का भाणा सहिणा पैणा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे हुक्मे विच रखाया। हुक्मे अंदर हरि करतार, आपणा हुक्म जणाईआ। एका नाइआं कर विचार, भेव अभेद खुल्हाईआ। सत्त चार दे आधार, चुहत्तर अंक आप बणाईआ। सारे बोलो जै जैकार, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। लख चुरासी हरि पसार, आत्म परमात्म गंढ पुवाईआ। एका शब्द एका धार, एका धुन नाद वजाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, गुरू घर इक्क समझाईआ। एका पुरख एका नार, पिता पूत इक्क हो जाईआ। एका सज्जण मीत मुरार, सगला संग इक्क निभाईआ। एका जुग चौकड़ी करे पार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे हुक्म वरताईआ। निहकलंका लै अवतार, नाम डंका इक्क सुणाईआ। गुरमुख जन का कर त्यार, आपणा लहिणा देवे चाँईं चाँईंआ। जूठा झूठा शंका मेट संसार, संसा रोग दए गंवाईआ। बाल अञ्याणयां खोल्हे आप किवाड़, राती सुत्तयां दरस कराईआ। करे प्रकाश नाड़ नाड़, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। शब्द घोड़े आपे चाड़्ह, साचा असव लए दौड़ाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गुरसिख तेरे चरनां हेठ लताड़, आप आपणी उँगली लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ करन निमस्कार, जिस मार्ग गुरसिख जाईआ। जिस जन मिल्या पारब्रह्म आप निरँकार, दूजे दर ना मंगण जाईआ। खाणी बाणी वेद पुराण अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत उच्ची कूक कूक करन पुकार, भगत भगवन्त रहे जस गाईआ। जिस जन मिले ठाकर स्वामी निरगुण दाता आप निरँकार, तिस पूजा पाठ ना कोए कराईआ। सोवत जागत देवे आप दीदार, निकट निकटी हो के वखाईआ। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड लख चुरासी सुत्ती पैर पसार, त्रैगुण माया पर्दा रही पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। सब दा लेखा जाए मुक्क, मुकावणहारा आप निरँकार। जूठा झूठा बूटा जाए सुक्क, अन्त रहे ना विच संसार। सिँघ शेर पुरख अबिनाशी प्या बुक्क, दो जहानां मारे भुबकार। चार जुग दे गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए उठ, दोए जोड़ करन निमस्कार। ठाकर स्वामी जाणा तुट्ठ, दर तेरे बणे भिखार, वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब नाता गया छुट, ना कोई सज्जण मीत मुरार। गोबिन्द कहे मैं अमृत दे के आया साचा घुट्ट, पंज प्यारे कर त्यार। कलयुग अन्तिम घर घर पई फुट्ट, एका भुलया हरि अकाल। अन्तिम सब दा खाता जाणा लुट्ट, बचया रहे ना कोई शाह कंगाल। निरगुण निराकार जोधा सूरबीर बलवान पुरख अबिनाशी एका पए उठ, आप आपणा बल धार। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे किला कोट, चार जुग दी ढाह चार दीवार। तीर निराला अणयाला जाए छुट्ट, दो जहानां मारे मार। कूड़ी क्रिया कढ्ढे कुट्ट, माया

ममता कर खुआर। गुरमुख बणाए आपणे साचे सुत, आपणे सुत नींहां हेठ सवाल। मेल मिलाए अबिनाशी अचुत, काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन बणाए साचे लाल। लाल लालण चाढ़े रंग, रंग रंगीला आप अख्वाइंदा। पुरख अबिनाशी सूरा सरबंग, सूरबीर दया कमाइंदा। काया मन्दिर डूँग्घी कंदर सुखमन टेढी बंक आपे लँघ, ईड़ा पिंगल डेरा ढाहइंदा। अनहद नादी नाद वजाए मृदंग, छत्ती राग भेव चुकाइंदा। अमृत सरोवर आप नुहाए पाए ठंड, अठसठ तीर्थ गुरमुख नुहावण कोए ना जाइंदा। आत्म सेजा इक्क पलँग, सच सिँघासण इक्क वड्याइंदा। सुरती शब्दी इक्क अनन्द, अनन्द कारज आप कराइंदा। आत्म परमात्म पाए गंढु, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। दिवस रैण परमानंद, निजानंद रस चखाइंदा। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ध, निर्मल जोत जोत जगाइंदा। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, लख चुरासी गेड़ कटाइंदा। आपे चुक्के आपणी कंड, गुरमुख आपणे कंध उठाइंदा। दो जहान मुका पन्ध, सचखण्ड दवारा इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला दिवस राती, रुत्त रुतड़ी आप सुहाइंदा। अट्ठे पहर रखे प्रभाती, प्रभ आपणा खेल वखाइंदा। नाता तोड़े ज़ात पाती, वरन गोत ना कोए जणाइंदा। निर्मल आप जगाए साची बाती, काया मन्दिर आप टिकाइंदा। आपे सोए साची खाटी, आपणी करवट आप बदलाइंदा। देवे दरस बहु बिध भांती, रूप अनूप आप वखाइंदा। गुरमुख लाए आपणी छाती, सीना नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुखां मारे इक्को तीर काती, मनमति तीर चलाइंदा। वेले अन्त ना देवे कोए निजाती, गुर अवतार पल्लू सर्ब छुडाइंदा। लख चुरासी आवण जावण गेड़े फाँसी, राए धर्म हुक्म वरताइंदा। चित्रगुप्त करे हासी, लिख लिख लेखा सर्ब वखाइंदा। लाड़ी मौत करे दासी, दासां दासी आप बणाइंदा। गुरसिख कोई ना देवे बाकी, जिस सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। कर किरपा खोल्हे काया ताकी, बज़र कपाटी कुंडा लाहइंदा। चौदां लोक वखाए एका हाटी, चौदां तबक चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। हरिजन वड्डा लोकमात, सति सतिगुर इक्क समझाईआ। नाम निधाना देवे दात, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। चरन बंधाए एका नात, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाईआ। लेखा जाणे पित मात, पूत सपूता गोद सुहाईआ। कलयुग अन्तिम पुच्छे वात, गुर गोबिन्द गया लिखाईआ। पुरख अकाल रखे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन दया आप कमाईआ। आपणी बाणी गाए गाथ, चार वरन करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म पूजा पाठ, अक्खर वक्खर ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार जुग दा लेखा दए मुकाईआ। लेखा मुके चार जुग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अन्तिम औध सब दी गई पुग, थिर कोए नज़र ना आईआ। तुध बिन देवे ना कोए सुध, ना चले कोए चतुराईआ। सतिजुग कहे मैं बैठा लुक्क, तिन्न जुग ना लई अंगड़ाईआ। कर किरपा प्रभ झोली चुक्क, मेरी आसा पूर कराईआ। बिन तेरी किरपा मेरा बूटा रिहा सुक्क, गुरमुख हरे ना कोए कराईआ। मैं सीस झुकावां झुक झुक, दोए जोड़ पड़ां सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, तेरी किरपा जावां उठ, आपणा बल धराईआ। कर किरपा दे दान, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। मैं छोटा बाल अंजाण, तूं शहिनशाह वड बलवाना। तूं वाली दो जहान, मैं वेखां तेरा निशाना। तूं देणा धुर फ़रमाण, मैं गावां तेरा गाणा। तेरे भगतां मेलां आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरे सतिगुर हो मेहरवाना। पुरख अबिनाशी अगम्म अथाह, अगम्मड़ी कार आप समझाइंदा। तेरा मार्ग दिता ला, सतिजुग राह चलाइंदा। एका नाउँ ल्या प्रगटा, सोहँ तेरी झोली पाइंदा। आत्म परमात्म नाता दिता जुड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म वखाइंदा। बहत्तर भगत लए उठा, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। सत्तरां सति सतिवादी दर दिता वखा, नेत्र नैण नैण जणाइंदा। लोकमात तेरा निशाना दिता बणा, छत्ती छत्ती वंड वंडाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ आसण दिता ला, रविदास चुमारा सेव कमाइंदा। अग्गा पिच्छा आपे वेखे वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी एका मन्त्र दिता पढ़ा, विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब जस गाइंदा। चार जुग दे गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत आपणी गोदी लए बहा, सीस सीस ना कोए उठाइंदा। अग्गे आपणा मार्ग दिता ला, साचा राह इक्क चलाइंदा। सोहँ गाउणा सब ने नाँ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप अलाइंदा। नज़री आए हर घट थाँ, सतिजुग तेरा संग निभाइंदा। बीस बीसा पकड़े बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा सुणया मात, घर घर वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे दात, दूजा वंड ना कोए वंडाईआ। सृष्ट सबाई साची गाथ, एका एक जणाईआ। नव नौ चलाए आपणा राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सर्ब कला आपे समरथ, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, साचे पन्ध आप चलाईआ। जन भगतां अन्तर आपे वस, जगत बसन्तर दए बुझाईआ। एका मन्त्र गाउणा हस्स हस्स, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। गुरसिख तेरा एथे ओथे दो जहान होवे जस, जस हरि जू आपे गाईआ। कलयुग अन्तिम त्रैगुण विच ना जाणा फस, सतिगुर पूरा फाँसी आप कटाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा वस, जिथे वसे सतिगुर सच्चा माहीआ। जन्म जन्म दी

पूरी होई आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। कर किरपा कीती बन्द ख़लास, बन्दीछोड़ फेरा पाईआ। गुरनाम हरि का दास, हरि की सेवा हरि मन्दिर बिन रसना जिह्वा गाईआ। बिन रसना जिह्वा हरि का गीत, गुरमुख विरला गाइंदा। लख चुरासी फिर फिर थक्की मन्दिर मसीत, काया मन्दिर ना कोए खुल्ह्‌लाइंदा। हरि का शब्द साचा सतिगुर मिल्या ना इक्क अनडीठ, निज नेत्र दरस कोए ना पाइंदा। रसना जिह्वा गा गा थक्की गीत, अजपा जाप ना कोए कराइंदा। जिस जन सतिगुर पूरा करे आप प्रीत, सच प्रीती आप निभाइंदा। सतिजुग चलाई साची रीत, निरगुण सरगुण आप उठाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जाइंदा। गुरसिख तेरे ढोले गाए हरि जू गीत, आपणा गीत ना कोए वड्याइंदा। अठ्ठे पहर दिवस रैण वसे तेरे चीत, चितवित ठगौरी कोए ना पाइंदा। आप बैठा रहे अतीत, गुरमुख अतीत आप कराइंदा। कलयुग जीव माया रुले विष्टा कीट, जूनी जून आप भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप उठाइंदा। गुरमुख विरला जाए उठ, जिस सतिगुर आप उठाईआ। देवे दरस नाम भण्डार अतुट, निखुट कदे ना जाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार वखाईआ। काया मौले सोहे धरत बसन्ती रुत्त, पत डाली आप महकाईआ। पारब्रह्म दे साचे पुत्त, गुरमुख गुरसिख नाउँ धराईआ। अन्तिम गोदी लए चुक्क, शब्द बबाणे आप टिकाईआ। लोकमात चों साचे बूटे पुट्ट, सचखण्ड दवारे लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्क निशान, लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए धार आप चलाईआ।

✳ ३ वसाख २०१६ बिक्रमी हरनाम कौर वेरका ज़िला अमृतसर ✳

सति दुआरा पद निरबाणी, निरबाण पद सुहाईआ। नित नवित तेरी बाणी, हरि जू तेरा नाम समझाईआ। जुग चौकड़ी अकथ कहाणी, कथनी कथा सिफ्त सालाहीआ। लोकमात सति निशानी, सति पुरख निरँजण इक्क रखाईआ। पंज तत्त काया अन्तर जाण जाणी, जानणहार खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम कर मेहरवानी, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारा खोल्ह्‌ दुकानी, दर दरवाज़ा इक्क वखाईआ। साचे तख्त बैठ शाह सुल्तानी, सच सिँघासण सोभा पाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवे माणी, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। लेखा चुका चार खाणी, चार जुग पन्ध मुकाईआ। हुक्म मन्नणा इक्क भगवानी, श्री भगवान आप समझाईआ। मेल मिलावा नूर नुरानी, जोती नूर नूर समाईआ।

लेखा जाणे आवण जाणी, आवत जावत आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड दी साची गाथा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण चलाए राथा, रथ रथवाही दिस ना आइंदा। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणा हुक्म वरताइंदा। प्रगट हो शाहो शाबाशा, शहिनशाह आपणा भेव चुकाइंदा। चार जुग चौकड़ी कर कर दासी दासा, सेवक सेवा रूप जणाइंदा। इक्को मन्त्र दे भरवासा, हरि नामो नाम दृढ़ाइंदा। सरन सरनाई सच भरवासा, सति सतिवादी आप रखाइंदा। अन्तिम करे पूरी आसा, तृष्ना तृखा सर्ब बुझाइंदा। प्रगट हो पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी धार रखाइंदा। वेखणहारा खेल तमाशा, दो जहानां वेख वखाइंदा। साचे मन्दिर पावे रासा, सचखण्ड साचा आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप चलाइंदा। धुर दी धार धुर दरबारा, हरि साचा सच चलाईआ। आदि पुरख हरि कर पसारा, अन्त आपे वेख वखाईआ। लेखा जाण गुर अवतारा, पूरब लहिणा रिहा समझाईआ। उठो वेखो नैण नज़ारा, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। प्रगट होए परवरदिगारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जिस दीआं गाउँदे आए वारां, खाणी बाणी नाल सालाहीआ। जिस दी सिफ्त कर कर बणे लिखारा, लिख लिख लेख मात धराईआ। जिस ने अन्तिम कीआ पार किनारा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्तिम हो न्यारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। लेखा जाण गुर अवतारा, पूरब वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपार, अपरम्पर आप कराइंदा। सचखण्ड दा सच विहार, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। जुग चौकड़ी किसे ना पाई सार, गुर अवतार सीस झुकाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए पुकार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। जिस जन देवे आप दीदार, दरसी आपणा तरस कमाइंदा। सो जन बोले मात गुफ़तार, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। अन्तिम पंज तत्त काया चोला गए हार, सगला संग ना कोए निभाइंदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वेखणहार, सचखण्ड दवारे आसण लाइंदा। कलयुग अन्तिम खोल्ह किवाड़, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगह साची धाम वड्याइंदा। दरगाह साची सच सिँघासण, हरि साचा आपे लाईआ। चार जुग कर कर दासी दासन, सेवक सेवा इक्क समझाईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल खेल तमाशन, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जन भगतां करे पूरी आसण, आसा आपणी पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची धाम सुहाईआ। दरगाह साची सच सुल्ताना, एका आसण लाइंदा। तेई अठारां दस त्रै दे ज्ञाना, चार चार आप समझाइंदा। पंचम पंच कर प्रधाना, नादी नाद नाद वजाइंदा। नर नरेश इक्क

सुणाए गाना, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची खेल कराइंदा। दरगाह साची खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निउँ निउँ करन निमस्कारा, दर बैठे ससि झुकाईआ। अन्तिम होया पार किनारा, लोकमात बन्धन ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी एका मिले तेरा दुआरा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। दिवस रैण दरस दीदारा, दीद दीद नाल मिलाईआ। चरन सरन धूढ़ी ख़ाक मिले छारा, मस्तक टिक्का एका लाईआ। तेरे नाम वज्जदी रहे सतारा, दूसर राग ना कोए अलाईआ। एका अल्फ़ तेरा न्यारा, आरफ़ भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह साची बैठे सीस झुकाईआ। दरगाह साची झुकया सीस, सिर नज़र कोए ना आइंदा। किरपा करे आप जगदीश, जगदीशर खेल कराइंदा। देवणहारा आप असीस, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम पीसण ल्या पीस, मात चक्की इक्क वखाइंदा। अन्तिम सब नूं देवे इक्क हदीस, शरअ शरीअत इक्क जणाइंदा। पुरख अबिनाशी आप जणाए आपणी प्रीत, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। सतिजुग चलाए साची रीत, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सचखण्ड दवारे सारे गाओ सोहँ गीत, गीत अतीत आप कराइंदा। लोकमात नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ चार दीवार वंड ना कोए वंडाइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, घट घट आपणा आसण लाइंदा। जन भगतां काया करे ठांडी सीत, अमृत रस आप प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहान एका नाम पढ़ाइंदा।

✳ ३ वसाख २०१६ बिक्रमी पशौरा सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर ✳

दर दरवेश बण भिखार, दरगाह साची सीस झुकाईआ। चुहत्तर दोए जोड़ कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सुल्तान परवरदिगार, बेऐब नूर खुदाईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, लाशरीक आसण लाईआ। नूरी जल्वा नूर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। सच सिँघासण कर प्यार, साचे तख्त सोभा पाईआ। सच संदेशा एका वार, धुर फ़रमाणा मन्नयां हुक्म रजाईआ। तेरा ढोला गाईए वार, पिछली करे ना कोए पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी उतरी पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। लख चुरासी नाता तुट्टा सगला यार, सगला संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार जगायण अलख, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख

अबिनाशी हो प्रतख, सति सतिवादी आप जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी विच्चों चुहत्तर कीते वक्ख, आप आपणा बन्धन पाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा वस, दूसर दर ना कोए खुल्हाईआ। एका नूर जोत प्रकाश, दीआ बाती ना कोए जगाईआ। कलयुग अन्तिम पूरी करां सब दी आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। नाता छुट्टा पृथ्मी आकाश, गगन मंडल पन्ध मुकाईआ। एका बख्शे सचखण्ड दवारे सच निवास, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। एका नाउँ इक्क स्वास, बिन पवणां पवण चलाईआ। करे खेल शाहो शाबाश, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। एका मंडल पावे रास, गोपी काहन इक्क नचाईआ। एका करे बन्द खुलास, जुग चौकड़ी बन्धन आप कटाईआ। एका देवे सच निवास, दरगाह साची भूमका आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। दर दुआर मंगण दान, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, इक्क तेरी ओट रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खाणी बाणी गा गा आए तेरा गान, रसना जिह्वा कर पढ़ाईआ। लेखा लिख लिख शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे इक्को मंग, सत्त चार खेल रखाइंदा। ठाकर स्वामी सूरा सरबंग, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त भगत भगवन्त वजाए मृदंग, नाम
९३ मृदंगा हथ्थ उठाइंदा। दो जहानां चौदां लोक त्रैभवण धनी आपे वेखे लँघ, चौदां तबक फेरा पाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा ९३
जीव जंत साध सन्त भुख नंग, गृह गृह मन्दिर आपणा डंक वजाइंदा। पावे सार कोटन कोटि ब्रह्मण्ड रवि ससि सूरज
१२ चन्न, हुक्मी हुक्म आप भुवाइंदा। कलयुग अन्तिम लेखा जाणे पृथ्मी नौ खण्ड, सत्तां दीपां आपणा हुक्म वरताइंदा। गुरमुख १२
साचे सज्जण सुहेले सति सतिवादी आप चढ़ाए साचे चन्द, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, एका देवे आत्म अनन्द, परमानंद विच वखाइंदा। सचखण्ड दवारे हरि निरँकारे इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। निरगुण सरगुण आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म वंडी वंड, ईश जीव जगदीश झोली आप भराइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, सचखण्ड दवारे वंडी वंड, दरगाह साची साचा थान वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहिणा ख़बरदार, बेख़बर आप जणाईआ। कलयुग आई अन्तिम वार, लोकमात लहिणा रिहा मुकाईआ। चार वरन चौथे जुग होए खुआर, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देण दुहाईआ। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान करन पुकार, ग़रीब निमाणे कूक कूक सुणाईआ। तीर्थ तट ना कोए पावे सार, मन्दिर मस्जिद मट्ठ ना कोए आधार, आत्म ताकी बन्द किवाड़ा ना कोए खुल्हाईआ। साचा साथा एकँकार, आदि जुगादी करे खेल अपार, जुग जुग आपणा हुक्म

वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करे पार, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, सरगुण सरगुण पर्दा दए उठाईआ। सचखण्ड दा सच जैकार, जै जैकार आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बणे भिखार, दर बैठे मंग मंगाईआ। वाह वा कुदरत तेरी यार, कादर करते भेव कोए ना पाईआ। तेरी रहिमत अपर अपार, रहीम रहिमान तेरी वड्याईआ। दर मंगण एका वार, इक्क इकल्ला पुरख अबिनाशी देवे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे सच भण्डारा देवणहारा एकँकारा गुर अवतारां बण वरतारा, साची भिच्छया झोली पाइंदा। साची भिच्छया एका एक, सो पुरख निरँजण आपे पाईआ। सतिजुग साची रखणी टेक, पुरख अबिनाशी सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम मिटे रेख, रूप रंग नज़र कोए ना आईआ। चार वरन करे इक्क आदेश, अठारां बरन इक्क पढ़ाईआ। दो जहानां सच नरेश, नर निरँकारा बल धराईआ। घट घट अंदर रिहा वेख, आत्म सेजा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साची भिख्या भिखक झोली आप भराईआ। भिखक भिख्या देवे वस्त, अमोलक आप वरताइंदा। लेखा जाणे कीट हस्त, राउ रंक खेल कराइंदा। लहिणा देणा चुकाए दस्त बदस्त, दस्तगीर फेरा पाइंदा। वेख वखाए उदे असत, उतर पूरब पच्छिम दक्खण आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त हरि भण्डार, सति सतिवादी आप वरताईआ। सचखण्ड दवारे हो त्यार, सच सिँघासण आसण लाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, साची चोटी आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया आप वखाईआ। साची भिच्छया एका रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। चुहत्तरां देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। नव नौ चार दा अन्तिम छन्द, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। आत्म परमात्म टुट्टी लए गंढ, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। पंच विकारा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग इक्क खड़काइंदा। नाता तुट्टा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज ना फेर भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची वस्त आपणा नाउँ, नर निरँकारा आप वरताइंदा। जुगा जुगन्तर पंज तत्त देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सुरती शब्दी पकड़नहारा बाहों, साचा बन्धन एका पाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची आप वखाइंदा। आदि जुगादी पिता माउँ, गुर अवतार पूत सपूते गोद बहाइंदा। कलयुग अन्तिम करे सच न्याउँ, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा आप मुकाइंदा। साचा लहिणा विच संसार, सतिगुर साचा आप मुकाईआ।

चार वरनां दए प्यार, वरन गोत ना कोए रखाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका मन्दिर देवे वाड़, काया बंक बंक वड्याईआ। मेट मिटाए अग्नी हाढ़, तत्तव तत्त ना कोए जलाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। कर किरपा लाए पार, किरपन आपे होए सहाईआ। एथे ओथे दो जहानां दरस दए वखाल, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, राज राजानां बन्धन पाईआ। अन्तिम आपणा हल्ल करे सवाल, बण सवाली मंगण दर किते ना जाईआ। चरनां हेठ रखाए काल महांकाल, हुक्मी हुक्म आप भुवाईआ। जुग चौकड़ी करे बहाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म मनाईआ। गुरमुखां वेखे कीती घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, गुर गुर वेस वटाईआ। अंदर बाहर सुरत लए संभाल, गुपत ज़ाहर खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक्क वखाईआ। साची वस्त एकँकार, अकल कल आपणी आप वरताइंदा। जुग चौकड़ी सच भण्डार, विष्न ब्रह्मा शिव आप वरताइंदा। तेई अवतारां दे आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत अठारां खोल्ह किवाड़, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे नानक गोबिन्द धार, जोती जोत डगमगाइंदा। आदि जुगादी इक्क अवतार, गुर गुर आपणा नाउँ रखाइंदा। शब्द अनादी बोल जैकार, बोध अगाधी ढोला गाइंदा। दो जहानां पावे सार, त्रैभवण खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचे तख्त बैठा चढ़, उच्च महल्ले सोभा पाइंदा। उच्च महल्ला सच मनारा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। एका वसे एकँकारा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यारा, सरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। नाम निधाना बोल जैकारा, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। कागद कलम लिखणहारा, लिख लिख लेख जगत समझाईआ। आपे वसे सब तों न्यारा, दिस किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अपारा, भेव अभेद खुल्हाईआ। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, महांबली रूप अनूप आप प्रगटाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। जेरज अंडां दए हुलारा, उत्भुज सेत्ज नाल भुआईआ। लख चुरासी उतरे पार किनारा, मँझधारा आप रुड़्हाईआ। कलयुग मिटे कूड़ कुड़यारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सतिजुग वरते सच वरतारा, गुरमुख साचे नाल मिलाईआ। भगतन मेला भगत दुआरा, श्री भगवान आप कराईआ। सन्तन देवे इक्क आधारा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। गुरसिखां करे सच प्यारा, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। जीवंदयां करे पार किनारा, मरयां जम नेड़ कदे ना आईआ। चित्रगुप्त ना बणे लिखारा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना करे शृंगारा, गुरसिख प्रनावण कदे ना आईआ। पुरख अबिनाशी अगम्म अगोचर अलख अथाह बेपरवाह मीत मुरारा, मित्र

प्यारा आपणी सेव कमाईआ। अन्तिम देवे इक्क हुलारा, लोआं पुरीआं करे पार किनारा, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबाईआ। देवे वस्त नाम हरि थारा, थिर घर बोले नाम जैकारा, सचखण्ड वसे आप निरँकारा, निरगुण जोती जोत रुशनाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, बेअन्त बेऐब परवरदिगारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सति सतिवादी सति वरताए इक्क भण्डारा, जुग चौकड़ी आपणे हथ्थ वखाईआ। दो जहान करन जै जैकारा, जै जैकार आपणे नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दवारे साची वस्त आप वरताईआ। साची वस्त वस्त अमोलक अनमुल्ल आप वरताइंदा। रखणहारा काया गोलक साचे मन्दिर आप सुहाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गाथा गाए हरि अनबोलत, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। जुगा जुगन्तर सदा अडोलत, अडुल आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना आप वरताइंदा। नाम निधाना डूँग्घा सागर, दिस किसे ना आइंदा। आप रखाए काया गागर, गहर गम्भीर भेव ना पाइंदा। जिस जन देवे आपे आदर, बण दर्दी दर्द वंडाइंदा। आपणे घर करे सौदागर, सच वणजारा आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप वखाइंदा। आपणा नाउँ वखाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मेटे पाप, पतित पापी लए तराईआ। नाता तोड़े तीनों ताप, त्रैगुण अग्न ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म सच्चा जाप, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। नाता तुट्टे पूजा पाठ, जिस जन अपणा रंग रंगाईआ। लेखा चुक्के तीर्थ अठसाठ, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी नहावण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन नुहाए आपणे घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। साचा घाट सतिगुर चरन, दूसर तट ना कोए रखाइंदा। खोलूणहारा हरन फरन, निज नेत्र आप खुलाइंदा। नाता तोड़े मरन डरन, जन्म मरन भेव चुकाइंदा। लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। पुरख अकाल एको सरन, एका नूर नज़री आइंदा। करता पुरख करे करनी करन, करनहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची साचा धाम सुहाइंदा। दरगाह साची धाम अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप सुहाइंदा। नर हरि नरायण बैठा इक्क इकल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ाया पल्ला, पल्लू आपणा नाउँ रखाइंदा। सच संदेश नर नरेश बोध अगाधी एका घल्ला, अक्खर वक्खर नाम पढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लख चुरासी आपे फला, पत डाली आप महकाइंदा। कलयुग अन्तिम आपे होए झल्ला, सृष्ट सबाई एका झलक वखाइंदा। लेखा चुक्के राणी अल्ला, बिस्मिल रूप ना कोए धराइंदा। चार यारी मारे हल्ला, चौदां तबक वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप

कराइंदा। आपणा खेल करता पुरख, कुदरत कादर आप कराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए जणाईआ। ग़रीब निमाणयां उपर कर कर तरस, आप आपणा मेल मिलाईआ। अमृत मेघ एका बरस, अग्नी तत्त आप बुझाईआ। रातीं सुत्तयां देवे दरस, जागदयां आपणा नूर वखाईआ। लेखा तोड़ अर्श फर्श, काया कुरे दए वड्याईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, गुरमुख हवस ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच नगारा एकँकारा नौबत आपणे नाम वजाईआ। नौबत नाम वज्जे डंका, रहीम रहिमान आप वजाइंदा। आप उठाए राउ रंका, रइयत हरि जू भेव चुकाइंदा। इक्क सुहाए साचा बंका, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। गुरसिखां भुवाए मन का मणका, मन वासना मोह मिटाइंदा। एका नूर जोती तनका, त्रैगुण माया पन्ध मुकाइंदा। आप उठाए भम्बीरी छिलका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर हरि आपणी दया कमाइंदा। नर हरि नरायण दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख सज्जण वेखे लाल, लाल अनमुलड़े आप उठाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, अट्ठे पहर वज्जदी रहे नाम वधाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, जीवण जुगत आप जणाईआ। साहिब सुल्तान करे प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाईआ। जन्म जन्म दी वेखे घाल, कीती घाल झोली पाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद बण बण सच्चा माहीआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले भगत भगवन्त आपे भाल, मिल मिल आपणा बन्धन पाईआ। एथे ओथे दो जहानां चले नाल नाल, सचखण्ड निवासी विछड़ कदे ना जाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी शब्दी शब्द बण दलाल, साचा वणज दए कराईआ। लेखा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त वेखे चाँईं चाँईंआ। गुरसिख आप उठाए आपणे लाल, छोटे बाले गोद बहाईआ। एका देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ाना आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड झुलाए सति निशान, लोकमात देवे दान, नौ खण्ड पृथ्मी एका एक आपणा नाउँ वंड वंडाईआ।

✳३ वसाख २०१६ बिक्रमी मनजीत सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर ✳

निरगुण सरगुण सति सहारा, निराकार आकार बणाइंदा। तत्तव तत्त दे आधारा, नर नरायण खेल कराइंदा। पुरख अबिनाशी बण वणजारा, साचा वणज कराइंदा। शब्द अगम्मी खोल्ह भण्डारा, बण वरतारा आप वरताइंदा। सच महल्ले देवणहारा, एकँकारा आप अख्वाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण निरगुण कर पसारा, निरवैर

वेख वखाइंदा। मेल मिलाए धुर दरबारा, दर घर साचा आप सुहाइंदा। नारी कन्त बण प्यारा, पीआ प्रीतम वेस वटाइंदा। जननी जन सुत दुलारा, पूत सपूता आप प्रगटाइंदा। वस्त अमोलक देवे थारा, थिर घर वासी आपणी दया कमाइंदा। घाड़त घड़े बण ठठयारा, आप आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणी खेल वखाइंदा। अनुभव खेल करे करतार, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणी इच्छया आपे धार, रूप अनूप आप प्रगटाईआ। विष्न विश्व दे आधार, रूप रंग रंग रूप विच समाईआ। चरन कँवल अमृत ठंडा ठार, रगड़ रगड़ नाल मिलाईआ। जोती जोत जोत पसार, बिमल आपणा रूप वखाईआ। कँवली कँवल खेल न्यार, निराकार आप कराईआ। अंदर वड़ होए उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपणा भेव हरि करतारा, अबिनाशी करता आप खुल्हाइंदा। विष्नूं विश्व कर पसारा, पारब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। ब्रह्म दे इक्क आधारा, अंस बंस आप सुहाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दरबारी वेस वटाइंदा। वेखणहारा सुन अगम्म धूंआँधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सुन अगम्म देवे साथ, एका संग निभाईआ। आपे इच्छया भोला नाथ, भोले भाउ लए प्रगटाईआ। तिन्नां विचोला बण रघुनाथ, रघुपत आपणी सेव कमाईआ। निरगुण हो के देवे साथ, सगला संग निभाईआ। नाम निधाना बन्न्हे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। रूप वखाए इक्क इकांत, अकल कला वड वड्याईआ। साची भिच्छया देवे दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विश्व संदेशा इक्क सुणाईआ। विष्नूं संदेशा एकँकार, एका वार जणाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म खेल कराइंदा। शंकर तेरी शरअ धार, शरीअत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा सच संदेशा, पुरख अकाल सुणाईआ। सचखण्ड दवारे करे वेसा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। आदि जुगादि रहे हमेशा, ना मरे ना जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दसाया एका पेशा, लख चुरासी घाड़न लैणा घड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ सच संदेशा, सति सतिवादी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। विष्नूं सुणया हरि फ़रमाणा, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। ब्रह्मा वेखे मार ध्याना, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। शंकर करे चरन ध्याना, नेत्र नैण ना कोए दसाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क तराना, सचखण्ड निवासी आपे गाइंदा। वस्त अमोलक देवे दाना, दाता दानी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बेड़ा बन्न्ह, साचा मार्ग दए लगाईआ। तिन्नां देवे आपणा

धन्न, त्रैगुण माया झोली पाईआ। सतो रजो तमो बणया आपे जननी जन, जन जणेंदी होया माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। रजो तमो बध्धा नाता, सतो सति सति दृढ़ाइंदा। आपे जाणे आपणा डूँग्घा खाता, नज़र किसे ना आइंदा। त्रै त्रै चलाए राथा, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। नाद अनादी एका गाथा, बोध अगाधी आप पढ़ाइंदा। सो पुरख निरँजण देवणहारा दाता, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा आप वरताइंदा। त्रै त्रै मेला अगम्म अपारा, अलख अलखणा आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर निमस्कारा, दर बैठे सीस झुकाईआ। हउँ बाल बाल नादान, ना चले कोए चतुराईआ। त्रैगुण मिल्या तेरा दान, वस्त आपणी झोली पाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो मेहरवान, साडी आसा पूर कराईआ। अन्तिम देणा इक्क निशान, सच निशाना दए समझाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, अप तेज वाए पृथमी आकाश आपणी वंडण आप वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्न तिन्न पंज जोड़ जुड़ाईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त, हरि जू हरि हरि झोली पाइंदा। आप उपजाए आपणी रत्त, रत्ती रत्त ना कोए वखाइंदा। आदि जुगादी एका सति, सति सतिवादी आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्नूं मार्ग देवे दस्स, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। ब्रह्मे देवे ब्रह्म रस, साची वंडण वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, आदि पुरख जणाईआ। पंज तत्त मेला विच जहान, दो जहानां वाली आप कराईआ। लख चुरासी होए प्रधान, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। विष्नूं सेवा करे बण बलवान, घर घर आपणा रिज़क पुचाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म करे निशान, आपणी वंड वंडाईआ। शंकर अन्तिम लेखा चुकाए आण, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पंज तत्त बणे मकान, पंज दस्स वंड वंडाईआ। पंजी आपे वेखे आण, किरती परकिरती बन्धन पाईआ। हड्ड मास नाड़ी बूंद रक्त कर प्रधान, साचा मेला आप मिलाईआ। पंचम पंच इक्क निशान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाईआ। आसा तृष्ना वड बलवान, माया ममता झोली पाईआ। हउमे हंगता इक्क निशान, बंक दुआरे दए वसाईआ। जूठ झूठ कर प्रधान, घर घर आपणा खेल कराईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, जगत वासना विच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घाड़न लए घड़ाईआ। साचा घाड़न हरि जू घड़, पंज तत्त काया खेल कराइंदा। आप उपाए घर विच घर, बाडी होर ना कोए लगाइंदा। सच महल्ले आपे वड़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। उच्चे टिल्ले आपे चढ़, सच मनारा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड आप वंडाइंदा। आपणी वंड निरगुण धार, सरगुण बूझ बुझाईआ। आपणी इच्छया कर त्यार, साची सिख्या इक्क रखाईआ।

मन मति बुध दे आधार, आप आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मति एका गुण जणाईआ। मति मतवाली आपणा गुण, गुणवन्ता आप जणाइंदा। बुध बबेकी छाण पुण, गुण अवगुण आप समझाइंदा। मन मनुआ हरि जू आपे चुण, जगत दुआरे तख्त बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। जगत निवासी मनुआ राज, मन ममता नाल रलाईआ। घट घट अंदर बणाए समाज, पंच विकारा नाल रलाईआ। आसा तृष्ना मारे वाज, हउँमे हंगता लए उठाईआ। कूड़ी क्रिया करे नाच, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन वासना जगत बन्धन पाईआ। मन वासना जगत अखाड़ा, नव नौ खेल कराइंदा। नव नौ खोल्ह दुआरा, दर दुआरी भेव छुपाइंदा। मन्दिर अंदर डूँघी गारा, काया भँवरी आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा। आपणा वेस आपे कर, सरगुण निरगुण दए वड्याईआ। सुरती सुरत आपे धर, मूर्त अकाल वेख वखाईआ। ना पुरख ना नारी नर, निरवैर आपणा खेल कराईआ। एका जोती नूर वर, वर दाता सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया बंक दए वड्याईआ। काया बंक डूँघा सागर, हरि हरि जू आप बणाइंदा। मन वासना देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सबर सबूरी देवे साबर, बुध बबेकी मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच वेस वटाइंदा। घर घर विच वेस अपारा, हरि हरि हरि आप कराइंदा। लेखा जाणे नौ दुआरा, नव नौ आपणा पन्ध मुकाइंदा। कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का जोती नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना आप जगाइंदा। कवरी भँवरी भेव न्यारा, भेव आप खुल्हाइंदा। इक्क वखाए डूँघी गारा, सुखमन टेढी बंक बणाइंदा। ईड़ा पिंगल चोबदारा, साची सेवा सेवक आप समझाइंदा। अठ्ठे पहर करे खबरदारा, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। नौ अठारां खेल अपारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे आर पार किनारा, दिस किसे ना आइंदा। कोटन कोटि जीव जंत वड़ वड़ थक्का विच संसारा, पार किनारा नज़र किसे ना आइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जिस जन किरपा करे आप निरँकारा, आप आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। निरगुण रूप हो उज्यारा, गुर गुर आपणा संग निभाइंदा। सतिगुर बण मीत मुरारा, आपणा पल्लू आप फड़ाइंदा। अग्गे पिच्छे दे सहारा, पंच विकारा आपे ढाहइंदा। मनुआ मन तोड़ हँकारा, सांतक सति सति कराइंदा। दहि दिशा ना लाए उडारा, चार कुण्ट ना फेरा पाइंदा। करे खेल आप करतारा, गुर गुर आपणा नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा । सतिगुर पूरा हरि हरि मीत, आपणी दया कमाईआ। नाम सुणाए साचा गीत, गीत गोबिन्द आप अल्हाईआ। आप चलाई

भगतां रीत, भगतन देवे माण वड्याईआ। जगत वासना करे ठंडी सीत, अग्नी तत्त तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुखमन टेढी बंक डूँघी गार आपे पार कराईआ। आपे करे पार किनारा, गुरमुखां पल्लू आप फड़ाइंदा। ईड़ा पिंगल करन निमस्कारा, जिस दुआरे सतिगुर जाइंदा। अग्गे शब्द नाद अनहद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक राग सुणाइंदा। निरगुण दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। सुरती शब्दी इक्क प्यारा, प्रीतम प्यारा आप कराइंदा। कागों हँस उडा उडारा, हँस काग रूप वटाइंदा। करे खेल अपर अपारा, एका आपणा बन्धन पाइंदा। बजर कपाटी पार किनारा, साची हाटी इक्क वखाइंदा। आत्म सेजा खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आप वखाइंदा। सच सिँघासण हरि जू बैठा बण भतारा, कन्त कन्तूहल वेस वटाइंदा। गुरमुख सुरती प्रनाए नारा, नारी नर एका रंग हो जाइंदा। दस्म दुआरी खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। पंज तत्त ना कोए आकारा, त्रैगण रूप ना कोए रखाइंदा। आपणी इच्छया कर वरतारा, दस्म दुआरी पार कराइंदा। सुन अगम्म खेल न्यारा, अलख अगोचर आप कराइंदा। सुन अगम्म चरनां हेठ लताड़ा, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। थिर घर साचे बोल जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। शब्दी शब्द शब्द वणजारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। आपे करे आपणा सति वरतारा, सति सतिवादी खेल कराइंदा। चरन छुहाए सचखण्ड दवारा, थिर घर आपणे हेठ रखाइंदा। निर्मल दीआ इक्क उज्यारा, आदि जुगादि डगमगाइंदा। शब्द नाद ना कोए धुन्कारा, रागी राग ना कोए सुणाइंदा। अमृत जल ना कोए ठंडा ठारा, रसीआ रस ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार ना गाए कोई वारा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। पीर पैग़म्बर मारे ना कोई नाअरा, जल्वा नूर एका डगमगाइंदा। आदि जुगादी हो उज्यारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। गुर गुर रूप कर पसारा, सतिगुर आपणी धार चलाइंदा। भगतां कराए नाम वणजारा, साचा हट्ट इक्क खुल्हाइंदा। नौ दुआरे करे खुआरा, दसवें आपणा मेल मिलाइंदा। सुखमन देवे आप इशारा, सुरती शब्द घोड़ चढ़ाइंदा। आपे वेखे बण अस्वारा, शाहसवारा नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त भगत भगवन्त नेत्र पेख गा गा गए वारा, जगत लेख जगत समझाइंदा। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा, मंज़ल चढ़ दरस कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत साचे आपे फड़, सच दुआरे आप बहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन लगाए आपणे लड़, तिस निर्मल जोत मिलाइंदा।

✳ ३ वसाख २०१६ बिक्रमी पिण्ड पंडोरी वड़ैच ज़िला अमृतसर ✳

सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, सति सतिवादी आपणी धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, भेव अभेद आपणे विच छुपाइंदा। एकँकारा सिफ्त सलाह, सिफ्त विच कदे ना आइंदा। आदि निरँजण नूर रुशना, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान वसे साचे थाँ, महल अटल सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता झुलाए सच निशां, दरगाह साची आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ प्रगटाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। वसणहारा सच मकां, सचखण्ड दवारा आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल सच महल्ला, सति सतिवादी आप कराईआ। निरगुण निरवैर इक्क इकल्ला, पुरख अकाल आसण लाईआ। जोती धार आपे रला, नूर नूर नूर समाईआ। सच दुआरे आपे खला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि बेअन्त, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे अदि अन्त, मध आपणी धार चलाइंदा। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग करता नाउँ रखाइंदा। आप जणाए आपणा मंत, मन्त्र आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। लेखा जाणे नार कन्त, कन्त कन्तूहल खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप प्रगटाइंदा। आपणी धार श्री भगवान, आदि पुरख आप प्रगटाईआ। सचखण्ड वस सच्चे मकान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। तख्त निवासी राज राजान, भूपत भूप वड वड्याईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। महल अटल उच्च मकान, सच दुआरे सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। मुकामे हक़ बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अगोचर भेव कोए ना पाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, दरगाह साची आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दवारा हरि जू हरि, आदि जुगादि आप वड्याईआ। निरगुण रूप अंदर वड़, सच सिँघासण आसण लाईआ। सच महल्ले आपे खड़, स्वच्छ सरूप रूप अनूप वटाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड दवारा एका घर, हरि जू हरि हरि आप वसाइंदा। लेखा जाणे नरायण नर, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। बण बाडी घाड़त लए घड़, घड़न भन्नणहार नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा बंक बणाइंदा। बंक दुआरा सचखण्ड,

सति सतिवादी आप बणाईआ। आपे जाणे आपणी वंड, वंडणहारा दिस ना आईआ। इक्क इकल्ला वसे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। पार किनारा कोए ना जाणे पन्ध, पाँधी बण पन्ध ना कोए मुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी गाए एका छन्द, सोहला ढोला आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड साचे सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख ना कोए मुकाइंदा। रूप वटाए नारी कन्त, साची सेज आप हंढाइंदा। जननी जन बणाए बणत, दाई दाया सेव कमाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे साचे दर, दर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। दर दरवाजा एकँकार, हरि जू आपणा आप खुल्हाईआ। दूसर कोए ना पावे सार, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। दिशा कुण्ट ना कोए विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे माण वड्याईआ। सचखण्ड देवे आपे माण, आपणी दया कमाइंदा। आपे वेखे मार ध्यान, बिन नेत्र नैण उठाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाइंदा। साचे तख्त बैठ राजान, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाइंदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। हँ ब्रह्म कर परवान, शब्दी सुत एका जाइंदा। घर विच घर खोल्ह दुकान, साचा बंक आप सुहाइंदा। थिर घर देवणहारा माण, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप निरगुण धार, जोती शब्द कर उज्यार, सोहँ आपणा रूप प्रगटाइंदा। हं रूप शब्द नाता, सो पुरख निरँजण आप जुड़ाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे बह बह गाए आपणी गाथा, लेखा लिखण विच ना आईआ। आपणी इच्छया रच रच वेखे पुरख समराथा, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आदि जुगादि देवे सगला साथा, सगला संग आप हो जाईआ। आपे सोया आपणी खाटा, सेज सुहञ्जणी आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती धार रूप प्रगटाईआ। जोती धार सचखण्ड, प्रकाश प्रकाश विच रखाइंदा। पुरख अबिनाशी वंडे वंड, वंडणहारा दिस ना आइंदा। थिर घर चढ़ाए आपणा चन्द, सूरज चन्द नाल ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा आप बहाइंदा। सुत दुलारा छोटा बाल, हरि शब्दी आप प्रगटाईआ। करे खेल दीन दयाल, दयानिध वड वड्याईआ। थिर घर बणाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क प्रगटाईआ। साचा दीपक जोती बाल, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती शब्दी खेल खलाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता, एका आपणी कार कमाइंदा। सचखण्ड निवासी वेखे

खेल तमाशा, वेखणहारा आपणी खेल खलाइंदा। थिर घर करे आपे वासा, शब्दी शब्द रंग चढ़ाइंदा। देवणहारा साची दाता, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आपे पिता आपे माता, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। आप सुणाए आपणी गाथा, बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। आप चलाए आपणा राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचाइंदा। आपणी रचना रच निरँकार, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। दाई दाया बण अपर अपार, जननी जन वेखे चाँईं चाँईंआ। पूत सपूता कर त्यार, सुत दुलारे दए वड्याईआ। नाम निधाना एका वार, सच निशाना दए वखाईआ। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़, थिर घर साचे आप बहाईआ। उच्ची बोल बोल जैकार, बिन रसना जिह्वा गाईआ। मेरा तेरा इक्क विहार, दूजी धार ना कोए रखाईआ। पिता पूत सति वरतार, सति सतिवादी साची कार कराईआ। निरगुण निरगुण खेल अपार, निरगुण निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती शब्दी खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका घर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आदि पुरख खेल अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। शब्दी सुत सुत दुलारा, थिर घर साचे आप बहाइंदा। पुरख अगम्म बण वणजारा, वस्त अगम्मड़ी आप वरताइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी माण आप दिवाइंदा। शब्द दुलारा थिर घर साचे गया वस, हरि सतिगुर आप वसाईआ। एका मार्ग दिता दस्स, रैहबर बणे बेपरवाहीआ। आदि जुगादि तेरी पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोए रखाईआ। निरगुण जोत निरगुण प्रकाश, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण सेवक निरगुण दास, निरगुण साची सेव कमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। थिर घर पाए आपणी रास, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। नेत्र वेखे खेल तमाश, बंस सरबंस दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत माण रखाईआ। शब्दी सुत सुण संदेशा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। शाह पातशाह तूं सच नरेशा, तख्त निवासी सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। नित नवित आदि जुगादि दर्शन तेरा पेखा, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। झोली अड्डे छोटा बाला, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सचखण्ड वसें धाम निराला, पुरख अकाला तेरा अन्त कोए ना पाईआ। थिर घर मिली सच्ची धर्मसाला, जिस दुआरे दएं बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला आपणे नाल मिलाईआ। कवण वेला मेलें मेल, शब्दी शब्द शब्द जणाइंदा। अन्त बणें सज्जण सुहेल, सगला

संग निभाइंदा। तेरा विछोड़ा ना झल्लां कोए वेल, बिन तुध मेरा संग ना कोए निभाइंदा। करना खेल गुरू गुर चेल, चेला गुर तेरी धार रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आदि पुरख दया कमाईआ। सुत दुलारे वड बलवान, तेरा बल दए प्रगटाईआ। निरगुण झुलाए तेरा सच निशान, सति सतिवादी दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद बिठाए आण, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। पंज तत्त खेल करे महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा आप सुणाईआ। सच संदशा एका वार, एकँकार आप जणाइंदा। शब्द दुलारे हो त्यार, पुरख अबिनाशी आप उठाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल उसार, रवि ससि नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप सुणाईआ। सति सतिवादी देवे दान, अनडिठड़ी वस्त आप वरताईआ। शब्दी शब्द खेल महान, हरि शब्द आप प्रगटाईआ। त्रैगुण देवे दान, पंज तत्त लए प्रगटाईआ। लख चुरासी करे प्रधान, घट घट तेरा आसण लाईआ। खेले खेल दो जहान, दोए दोए आपणा रूप प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण देवे माण, साख्यात रूप धराईआ। सच संदेशा धुर फ़रमाण, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। तेरा लेखा ज़िमी असमान, गगन मंडल तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप समझाईआ। सुत दुलारे सुण रे मीत, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गाए गीत, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। निरगुण सरगुण चलाए रीत, रीतीवान आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, श्री भगवान आप जणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाना, साची सेवा इक्क लगाईआ। जुग चौकड़ी वंड वंडाना, वंडण आपणे हथ्थ रखाईआ। वेद शास्त्र सिमरत गाए गाणा, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त देवे दाना, दाता दानी दया कमाईआ। साचे सन्तां वखाए तेरा निशाना, नाम निशाना इक्क झुलाईआ। गुरमुखां वखाए पद निरबाणा, परम पुरख बेपरवाहीआ। गुरसिखां तोड़े माण अभिमाना, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी प्रगट होए विच जहानां, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाईआ। साचे सुत नेत्र खोल्ह, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी तोलणा तोल, चार चार वंड वंडाइंदा। चारे खाणी जाणा मौल, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरा रंग रंगाइंदा। चारे बाणी बोलणा बोल, परा पसन्ती मद्धम बैख़री तेरा राग अल्हाइंदा। चार वरन लेखा लाउणा उपर धौल, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। चारों कुण्ट करना कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। चार

यारी जाणा मौल, मौला आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा श्री भगवन्त, आदि आदि जणाईआ। तेरा लेखा जुगा जुगन्त, जुग जुग आप समझाईआ। लख चुरासी बणाए बणत, घड़ भाण्डे सोभा पाईआ। तेरी महिमा जणाए अगणत, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। तेरी सेवा लाए साध सन्त, भगत भगवन्त आप उठाईआ। तेरा नाउँ प्रगटाए मंत, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सुत दुलारा कर परवान, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। जुग चौकड़ी सेवा करां महान, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। गुर अवतारां सच संदेशा धुर फ़रमाण, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म खेल महान, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याइंदा। ईश जीव दे ज्ञान, जगत ज्ञाना आप कराइंदा। सतिजुग साचा वेखां आण, रूप अनूप आप धराइंदा। जीवां जंतां दे दे माण, जीवण जुगत जगत समझाइंदा। आत्म सरोवर पीण खाण, अमृत रस इक्क वखाइंदा। साचा नाद अगम्मी धुन्कान, धुन आत्मक राग अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी सेवा कर, हरि तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जाए हर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नव नौ चार वेखां घर घर, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सति सतिवादी सत्तां दीपां अंदर वड़, पर्दा पर्दा दए उठाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर नाउँ निरँकारा निष्अक्खर आपे पढ़, जगत विद्या करे पढ़ाईआ। एका चौका लाए लड़, चौदस आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सेवा सच कमाईआ। साची सेवा लोकमात, बण सेवक सेव कमाइंदा। जुग जुग सुणाए साची गाथ, साची गाथा आप अल्लाइंदा। कर खेल पुरख समराथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रगट, गुर अवतार नाउँ रखाइंदा। वसणहारा घट घट, नज़र किसे ना आइंदा। नित नवित मार्ग दस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे एह समझाइंदा। सुत दुलारे रखणा याद, श्री भगवान आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी सुणदा रहे फरयाद, नित नवित मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम आपणा खेल करे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरते संसार, संसा कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी आदि आदि कीता ख़बरदार, बेख़बर आप जगाईआ। सचखण्ड दवारे ना बणे कोई लिखार, बिन लिख्यां लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क समझाईआ। सच संदेशा एकँकारा, एका एक जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वेखे वारो वारा, वेस अनेक

वटाइंदा। गुर अवतार दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। पीर पैग़म्बर कर प्यारा, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दे सहारा, खाणी बाणी अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप वड्याइंदा। साचे सुत कर ध्यान, सचखण्ड निवासी आप सुणाईआ। कलयुग अन्तिम होए मेहरवान, मेहरवान दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी होए प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दे दे गए निशान, अन्त निशाना दए वखाईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणे चरना हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क जणाईआ। सच संदेशा लैणा जाण, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा खेल वरताइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग मेट निशान, सच निशाना इक्क झुलाइंदा। गुर अवतारां देवणहारा दान, दाता दानी दया कमाइंदा। प्रगट होए विच जहान, दो जहानां वाली फेरा पाइंदा। नाउँ रखाए निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। धुर फ़रमाणा देवे आण, सच संदेशा इक्क जणाइंदा। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, लख चुरासी आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। खोल्हे भेव आप करतारा, हरि जू हरि हरि दया कमाईआ। कलयुग आए अन्तिम वारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। नव नौ होए हाहाकारा, चार चार करे लड़ाईआ। ना कोई देवे जगत सहारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। त्रै पंज मारे ललकारा, पंचम आपणा ज़ोर वधाईआ। नाता तुट्टे तेई अवतारा, सगला संग ना कोए रखाईआ। भगत अठारां ना कोए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। आपणा पर्दा देवे लाह, श्री भगवान खेल कराईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बणे ना कोए मलाह, नईया नाम ना कोए चढ़ाईआ। चार यारी ना कोए सलाह, सलाहगीर कोए रहिण ना पाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा जाए छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नानक निरगुण कलयुग जीव देण भुला, नाम सति ढोला कोए ना गाईआ। गोबिन्द सिख्या देण रुला, गुरसिख सिख रूप ना कोए वटाईआ। अमृत जाम ना देवे कोई पिला, अमृत रस ना कोए चखाईआ। चारों कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा विभचार जाए छा, सति सति नज़र किते ना आईआ। करे खेल बेपरवाह, आपणा नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा हरि करतारा, एका एक एक जणाइंदा। अन्तिम प्रगट होए आप निरँकारा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। वेद व्यासा बण लिखारा, लिख लिख लेख सर्ब समझाइंदा। ईसा कूक कूक करे पुकारा, परवरदिगार ओट तकाइंदा। मुहम्मद कहे सांझा यारा, हज़रत अन्तिम

फेरा पाइंदा। नानक निरगुण सरगुण कहे महांबली उतरे अवतारा, मात पित ना कोए बणाइंदा। गुर गोबिन्द बोले इक्क ललकारा, चार वरन आप समझाइंदा। कल कल्की खेल करे न्यारा, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। वंड वंडां वंडे विच संसारा, वंडणहारा दिस ना आइंदा। कलयुग मेटे धुँदूकारा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। चार वरनां करे प्यारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे खुआरा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड बुलाए सति जैकारा, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। लख चुरासी आत्म परमात्म घट घट वेखे लग्गा अखाड़ा, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाइंदा। आत्मक धुन अनहद नाद वजाए सच्ची धुन्कारा, धुन राग आप अलाइंदा। अमृत आत्म सर सरोवर देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। दीवा बाती कमलापाती जोत निरँजण करे उज्यारा, बन्द किवाड़ी ताकी आपे कुण्डा लाहइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, कलयुग अन्तिम होए उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि जणाया, आपणी दया कमाईआ। सुत दुलारा सति समझाया, साची सिख्या इक्क रखाईआ। नव नौ बेड़ा पार कराया, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। पुरख अबिनाशी खेल रचाया, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेख रिहा जणाईआ। साचा लेखा लैणा जाण, पिता पूत खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होए वाली दो जहान, दोए दोए रूप वखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वेखे सच मकान, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। सतिगुर पूरा गुर गोबिन्द सूरा नौजवान, जन्म मरन विच ना आइंदा। नाम खण्डा तेज़ कृपान, काया गात्रे रखे विच म्यान, लोहार तरखाण घाड़त घड़त ना कोए रखाइंदा। बहत्तर नाड़ी करे परवान, तिन्न सौ सट्ठ हाडी देवे दान, मन मनुआ तोड़े अभिमान, साचा नाम झुलाए निशान, सति सतिवादी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्त आपणा भेव जणाइंदा। अन्तिम खोल हरि जू भेव, अभेद आप खुल्हाईआ। लहिणा चुक्के चार वेद, शास्त्र सिमरत पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्मे अंदर गए खेड, जगत खडारी आप खडाईआ। अन्तिम साची सेजा गए लेट, पुरख अबिनाशी आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त भगवन्त आपणी खेल वरताईआ। शब्दी सुत तेरा मार्ग एका लाउणा, इष्ट एका आप दरसाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी एका अक्खर आप पड़्हौणा, चौदां विद्या माण गवाइंदा। चौदां तबकां फेरा पाउणा, चौदां लोक पन्ध मुकाइंदा। अवण गवण फेरा पाउणा, त्रैभवण धनी

१०८
१२

त्रैगुण अतीता ठांडा सीता पत्तत पापी आप आप तराइंदा। लख चुरासी परखे नीता, लेखा जाणे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां आपणे हुक्म चलाइंदा। कलयुग अन्तिम वेला बीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत आप समझाइंदा। शब्दी शब्द वेला अन्त, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। एका प्रगट होए मंत, मन्त्र हरि हरि नाम दृढ़ाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस हरि सतिगुर बूझ बुझाईआ। लख चुरासी माया पाए बेअन्त, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। नव नौ गढ़ बणे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए दरसाईआ। जीव जंत होए नंगत, नाम दोशाला उपर कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा माण वड्याईआ। देवे वड़याई वड्डा वड, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुग चौकड़ी मात सद्द, साची सिख्या सिख समझाइंदा। अन्तिम आपणा भार गए लद, पंज तत्त काया चोला थिर रहिण ना पाइंदा। हुक्मे अंदर वंड के गए हद्द, हदूद अरबा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच संदेशा निरगुण कह गए नद, रागी राग राग अलाइंदा। अन्तिम पारब्रह्म परमेश्वर स्वामी चरन कँवल दुआरे लए सद्द, साचा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा आपणा नाउँ लोकमात पिच्छे गए छड्ड, जीव जंत सर्ब गाइंदा। नानक गोबिन्द कह के गए पुरख समरथ, पुरख अकाल एका गुर अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप

१०६ हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कलयुग १०६

अन्तिम लहिणा देणा चुकाए तेई अवतारा, भगत अठारां आपणे खाते पाईआ। वेख वखाए एका जोती दस अवतारा, दहि

१२ दिशा नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल बोल जैकारा, गोबिन्द गुर गया समझाईआ। अन्तिम आवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, १२

निरगुण दाता बेपरवाहीआ। साचा मार्ग चलाए विच संसारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नाम वणज कराए इक्क वपारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हट्ट चलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सोहँ बोलण शब्द जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। सतिजुग दस्से इक्क दुआरा, सति सतिवादी एका नज़री आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधारा, आत्म परमात्म खुशी मनाईआ। ईश जीव इक्क अखाड़ा, घर घर विच नाच नचाईआ। मेटे अग्नी तत्ती हाढ़ा, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। लेखा जाणे पुरख नारा, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। लहिणा चुक्के चार यारा, चार यारी पन्ध मुकाईआ। मुहम्मद लेखा मुक्के अन्तिम वारा, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। अल्ला राणी रोवे नेत्र ज़ारो ज़ारा, नैणां नीर रही वहाईआ। ईसा मूसा करन पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गोबिन्द बोले सच जैकारा, फ़तेह डंका इक्क वजाईआ। नौ खण्ड पृथमी बणे सची सरकारा, पुरख अकाल आप बणाईआ। बीस बीसा प्रगट होए अगम्म अपारा, जगत जगदीशा एका छत्र सीस झुलाईआ। शब्दी सुत तेरा

११०
१२

प्यारा, अन्तिम आपणे नाल कराईआ। एथे ओथे दो जहान खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हुक्मी हुक्म हुक्म वरताईआ। हुक्मे अंदर हुक्म समाया, बचया कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रूप वटाया, रेख सब दी दए गंवाईआ। नर नरेश सच संदेश इक्क सुणाया, सोहँ ढोला एका गाईआ। विष्न ब्रह्मा महेष आप जगाया, शंकर एका हुक्म वरताईआ। बाशक तशका सांगोपांग सेज आप तजाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणी सेवा आपे लाया। हुक्मे अंदर सेवा लग्ग, हरि साची सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर सूरा सरबग, सूरबीर फिरे चाँईं चाँईंआ। हुक्मे अंदर वेखणहारा सारा जग, जगत जुगत आप बणाईआ। हुक्मे अंदर आपे गया बज्झ, तोड़नहारा आप हो जाईआ। शब्द दुलारे मार्ग दस्स, साचा राह वखाईआ। पुरख अबिनाशी मेला हस्स हस्स, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। लोकमात भगतां अंदर गया वस, भगत दुआरा इक्क सुहाईआ। निरगुण निराकार निरवैर अजूनी रहित पुरख अकाल अबिनाशी करता आया नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। गुरमुख प्रेम प्यार अंदर गया फस, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम शब्द सरूपी गुरसिखां गाए जस, जस आपणा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी मेला गुरू गुर चेला, गुर चेला निरगुण निरगुण आप अख्वाईआ। आपे चेला आपे गुर, गुर करता आप अख्वाइंदा। आपे लेखा जाणे धुर, धुरदरगाही वेख वखाइंदा। आपे शब्द नाद सुर, ताल तलवाड़ा आप वजाइंदा। आपे सुरती शब्दी जाए जुड़, आपे मिल मिल खुशी मनाइंदा। आपे सस्से उपर लाया होड़, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। आपे हँ ब्रह्म वेखे दौड़, आत्म परमात्म पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति पुरख निरँजण साची धार आप चलाइंदा।

लड़का तेरा राम गढ़, पच्छिम दिशा डेरा लाईआ। मन्दिर अंदर बैठा वड़, पंडत संग रखाईआ। दिवस दिवस रहे डर, बाहर निकल ना मुख वखाईआ। तुसां जाणा आपणे घर, बच्चा आपे मुड़ घर फेरा पाईआ। सतिगुर पूरा शब्द सरूपी लए फड़, मन मनुआ दए भुआईआ। डूँघी कंदर जाए वड़, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तकदीर कर तदबीर, देवे मात बदलाईआ।

✳ ४ वसाख २०१६ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड दबुरजी ज़िला अमृतसर ✳

पुरख अकाल सच्चा शहिनशाह, निरगुण जुग जुग खेल कराइंदा। साचे तख़्त बैठ बेपरवाह, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़त लए घड़ा, घट घट अन्तर आपणा आसण लाइंदा। चार खाणी वंड वंडा, वेद शास्त्र सिमरत पुराण सिफ्त सालाह आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी वंड वंडा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाइंदा। नव नौ धारा आप चला, दो जहानां राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। शाह पातशाह राज राजान, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। तख़्त निवासी वड मेहरवान, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। आदि जुगादी धुर फ़रमाण, सच संदेशा नाम सुणाईआ। गुर अवतार दे दे दान, पीर पैग़म्बर भेव खुल्हाईआ। भगत भगवन्त इक्क निशान, सति सतिवादी आप वखाईआ। सन्तन देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। जुग जुग लेखा जीव जहान, जुग करता आप चुकाईआ। सतिजुग त्रेता खोल्ह दुकान, द्वापर आपणा हट्ट चलाईआ। कलयुग खेल श्री भगवान, निरगुण सरगुण आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह शाहो भूप, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। वसणहारे चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाइंदा। लख चुरासी ताणा पेटा जाणे सूत, आपणा बन्धन नाम रखाइंदा। शब्द दुलारा साचा दूत, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां ज़िमीं असमानां आप फिराइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखे जूठ झूठ, नौ खण्ड पृथमी पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल हरि निरँकारा, जुग जुग लोकमात कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। राज राजानां शाह सुल्तानां दए हुलारा, साचा मार्ग एका लाईआ। कलयुग मंगी मंग, बण भिखारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाए परवरदिगारा, बेऐब बेपरवाहीआ। तेरा नूर मुकामे हक़ नज़ारा, नज़र किसे ना आईआ। तूं वसणहारा ठांडे दरबारा, तेरे चरन सच्ची सरनाईआ। लोकमात त्रैगुण अग तपे अंग्यारा, पंज तत्त करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दरबारी आप वरताइंदा। सतिजुग चलाए आपणे भाणा, कलयुग अन्तिम मेट मिटाइंदा। तख़्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। जूठ झूठ कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाना, बण पाँधी फेरा पाइंदा। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक एका रंग रंगाना, रंग रंगीला खेल कराइंदा। लख चुरासी आत्म स्वामी एका एक नाउँ जपाणा, रसना जपत जपत समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया वेख वखाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया डंक, नौ खण्ड करे शनवाईआ। नेत्र रोवे राउ रंक, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वेला आया अन्तिम अन्त, गोबिन्द वेखे चाँईं चाँईंआ। आप बणावणहारा आपणी बणत, साची साजण रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूठ झूठ दए मिटाईआ। जूठ झूठ मेटे पखण्ड, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम आया कन्ढ, कन्ढी पार आप कराइंदा। राज राजानां देवे दंड, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। ग़रीब निमाणयां देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। सच सुच चढ़ाए साचा चन्द, सति सतिवादी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। कूड़ा नाता जाए तुट्ट, लोकमात रहिण ना पाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक जीव जंत जगत बन्धन कोलों जायण छुट्ट, सतिगुर पूरा आप छुडाईआ। कोई ना रखे किसे ओट, सीस सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त दए समझाईआ। वेला अन्तिम रिहा आ, हरि जू आपणा पन्ध मुकाइंदा। जूठ झूठ दए मिटा, सच सुच आप वरताइंदा। कूड़ा राजा कोई दिसे ना, रइयत आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख साचे लए प्रगटा, साचे मार्ग आपे लाइंदा। सति सतिवादी सति विधान लए बणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सति विधान बणे जग, जग जीवण दाता आप बणाईआ। सृष्ट सबाई बुझे अग्ग, तत्ती वा ना लागे राईआ। मूर्ख मुग्ध अञ्ञाण करे अड्ड, आप आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। कूड़ी क्रिया बीस बीस, हरि बीसा आप मिटाइंदा। अग्गे चले सच हदीस, सच हदीसा आप चलाइंदा। छत्र झुल्ले एका सीस, नौ खण्ड पृथ्मी एका राह वखाइंदा। कलयुग अन्तिम पीसण ल्या पीस, कूड़ी चक्की पन्ध मुकाइंदा। शाह सुल्ताना करे ख़ाली ख़ीस, दर दर भिख्या आप मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, भेख पखण्ड लोकमात मटाइंदा। भेख पखण्ड मिटे जोरू ज़ोर, ज़र लोकमात रहिण ना पाईआ। आपणे हथ्थ पकड़े डोर, दूजा शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। ना कोई लुट्टे ठग्ग चोर, यारी यार ना कोए कमाईआ। ग़रीब निमाणयां पुरख अबिनाशी निरगुण दाता दर दर घर घर आपे जाए बौहुड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेस धर, बीस बीसा पिछली करे सर्ब सफ़ाईआ। आदि पुरख हरि खेल रचाया, भेव कोए ना पाइंदा। शब्दी सुत इक्क उपजाया, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडाइंदा। रवि ससि नूर नूर चमकाया, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गोद उठाया, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। त्रैगुण माया रंग रंगाया, पंचम आपणा

पर्दा लाहइंदा। लख चुरासी घाड़न आप घड़ाया, घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। शब्दी नाद ब्रह्मा वेता इक्क पढ़ाया, अक्खर वक्खर आप जणाइंदा। चारे वेदां राग अल्लाया, चारे जुग वंड वंडाइंदा। चारे खाणी खेल कराया, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज आपणा बन्धन पाइंदा। चारे बाणी बोल सुणाया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। लख चुरासी खेल रचाया, आप आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण वेस वटाया, जोती जाता डगमगाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाया, घर घर विच वेस वटाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म लए उपजाया, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। ईश जीव करे कुड़माया, घर साचा सगन मनाइंदा। निर्मल दीआ बाती इक्क जगाया, नूर नुराना डगमगाइंदा। अनहद नादी नाद वजाया, रागी आपणा राग सुणाइंदा। सर सरोवर इक्क भराया, गृह अमृत आप रखाइंदा। आपणी वंड आप वंडाया, करनी करता आप कराइंदा। गुर गुर रूप मात धराया, शब्दी शब्द हुक्म सुणाइंदा। सन्त कुमारा बराह आपणा खेल कराया, यगै पुरष नाद वजाइंदा। हाव ग़रीव वेख वखाया, नर नरायण हुक्म वरताइंदा। कपल मुन जोत जगाया, दत्ता त्रै आप समझाइंदा। रिखप आपणा मार्ग लाया, पिरथू एका सेव लगाइंदा। मत्तस जल थल विच समाया, कछप मिन्दिरा पिट्ठ उठाइंदा। धनंतर एका मन्त्र पढ़ाया, मोहणी आपणा रूप वटाइंदा। हँसा सोहँ साची चोग चुगाया, माणक मोती आप वखाइंदा। नर सिँघ आपणा खेल कराया, आप आपणी दया कमाइंदा। बावण बल वंड वंडाया, धरत धवल वेख वखाइंदा। नर नरायण फेरा पाया, बालक धू राह चलाइंदा। हरी हरि आपणे अंग लगाया, गज बेड़ा पार कराइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड वंडाया। सिमरत शास्त्र आप लिखाइंदा। एका परस राम मिलाया, राम आपणा रूप वखाइंदा। वेद व्यासा जस हरि हरि गाया, पुराण अठारां भेव चुकाइंदा। लख चार हज़ार सतारां सलोक गणाया, बारां अक्खर अंक बणाइंदा। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण नाम धराया, कान्हा कृष्णा भेव अभेद खुल्लाइंदा। साची सखीआं मिल मिल मंगल गाया, मंडल रास आप रचाइंदा। भगत भगवान आप समझाया, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। नूरी जल्वा नूर धराया, नूर नुराना डगमगाइंदा। मूसा कोहतूर समझाया, ईसा आपणा ज़हूर बणाइंदा। परवरदिगार खेल कराया, बेऐब नज़र किसे ना आइंदा। हक़ हक़ीक़त दए पढ़ाया, लाशरीक कलमा नबी आप सुणाइंदा। मुहम्मद ढोला एका गाया, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाइंदा। अञ्जील कुराना मार्ग लाया, शाह सुल्ताना खेल कराइंदा। सचखण्ड आपणा मता पकाया, निरगुण नूर नूर प्रगटाइंदा। पंज तत्त चोला आप हंढाया, नानक नाम रखाइंदा। सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल आपणी दया कमाया, निरगुण नानक आपणे दर मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। नानक निरगुण सच दुआर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ।

दर्शन कर एकँकार, अकल कल करे वड्याईआ। तेरा मेरा इक्क आधार, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। कर किरपा दे वस्त अपार, साची मंग मंगाईआ। बिन तेरे नामे सृष्ट सबाई होई छार, कलयुग कूड़ अन्धेरा गया छाईआ। पुरख अबिनाशी वड दातार, दीनन आपणी दया कमाईआ। सतिनाम वणज वपार, साचा हट्ट आप खुल्हाईआ। वरन बरन करे पार किनार, ऊँच नीच ज़ात पात ना कोए रखाईआ। एका जोती दस अवतार, पुरख अकाल वेख वखाईआ। पूत सपूता कर त्यार, गुर गोबिन्द नाउँ धराईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। अमृत आत्म ठंडा ठार, सच सरोवर इक्क वखाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी करे खेल अगम्म अपार, पुरख अकाल साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। हुक्मी हुक्म करे वरतार, गुर अवतार सेवादार, पीर पैग़म्बर निउँ निउँ सीस करन निमस्कार, सजदा एका इक्क झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर लोकमात मार्ग आप चलाईआ। लोकमात मार्ग दस्स, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। भगतां अन्तर आपे वस, आपणा पर्दा लाहइंदा। जिस जन मेला मेले सच घर हस्स, तिस मति कोए नज़र ना आइंदा। ज़ात पात दीन मज़्हब वरन गोत गुरमुख चरनां हेठां देवे झस, सच पुरख अकाल हर घट रव्या नज़री आइंदा। कलयुग अन्तिम करे खेल आप समरथ, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वेस सर्ब मिटाइंदा। जगत वेस हरि मिटाउणा, कलयुग अन्त करे सफ़ाईआ। तेई अवतार आपणे दर बहाउणा, भगत अठारां दए सरन सरनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद संग यार बरदा आप कराउणा, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। एका जोती दस दस धार जोती जोत जोत समाउणा, नूर नूर विच रखाईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड लख चुरासी एका इष्ट हरि वखाउणा, गुर अवतार इक्क समझाईआ। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला एका नज़री आउणा, घट घट करे आप रुशनाईआ। रसना जिह्वा गाणा एका गाउणा, पारब्रह्म प्रभ सिफ्त सालाहीआ। जिस ने आदि जुगादि जुग जुग आपणा राह वखाउणा, सो अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। सब दा लेखा आप मुकाउणा, पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म आप रिहा वरताईआ। सति सतिवादी मार्ग लाउणा, वरन बरन अठारां चार वंड ना कोए वंडाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश भाई भैण बणाउणा, साक सज्जण सैण एका नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग वेस मात धर, बण बण रैहबर राह वखाईआ। जम की फाँसी लथ्थे फाह, जम नेड़ अन्त ना आईआ। राए धर्म ना दए सज़ा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना लए प्रना, साचा सगन ना कोए मनाईआ। सतिगुर शब्दी होए सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आवण जावण पन्ध दए मुका, मात गर्भ अग्न ना कोए तपाईआ। उज्जल मुख दए

११५
१२

करा, जो मंगे हरि सरनाईआ। जड़ बूटा देवे ला, कृपानिध दया कमाईआ। एथे ओथे दो जहानां अमृत रस दए खुवा, तृष्ना तृखा भुख गंवाईआ। गुरमुखां देवे सच्चा थाँ, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। सदा सुहेला रखे ठंडी छाँ, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस आप उडाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा पकड़े बांह, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। होवे सुख पुत्त मां, घर वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ।

✳ ४ वसाख २०१६ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे गृह कादराबाद ✳

हरि हरि नाउँ गुर गुर धार, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। भगत भगवन्त हो त्यार, निराकार खेल कराइंदा। सन्त साजण पावे सार, हरि सतिगुर वेस वटाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे भाल, गोझ ज्ञान जणाइंदा। गुरसिखां देवे एका दान, नाम भण्डारा झोली पाइंदा। आत्म अन्तर इक्क अशनान, सच सरोवर आप नुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप सालाहइंदा। सतिगुर मीत गुर गुर रीत, हरि हरि जुग जुग आप चलाईआ। जन भगतां बख्शे सच प्रीत, प्रीतीवान इक्क अख्वाईआ। सन्त रखाए आप अतीत, त्रैगुण फंदन दए तुड़ाईआ। गुरमुखां देवे नाम अनडीठ, डूँग्घी कवरी आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार सद बख्शीश, बख्शिश आपणी आप जणाईआ। साची बख्शीश नाम निधान, निरगुण दाता आप रखाइंदा। कलयुग अन्तिम कर परवान, गुरमुख आपणे अंग लगाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, सच दुआरे आप झुलाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भेव कोए ना पाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बल आपणा आप रखाइंदा। सम्मत सम्मती वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। गुरसिख देवे आपे माण, आपणा माण गुरसिख आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि हरि खेल गुर गुर मेल गुरमुख रंग रंगाइंदा।

✳ ४ वसाख २०१६ बिक्रमी बूआ सिँघ पिण्ड बल्ल पुरीआं ✳

सचखण्ड निवासी धुर फ़रमाण, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। भूपत भूप बण राज राजान, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। नाम निधाना देवे दान, इच्छया भिच्छया झोली पाइंदा।

आदि जुगादी वड मेहरवान, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। दीवा बाती कमलापाती इक्क महान, दरगह साची आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा हरि निरँकार, एकँकारा आप जणाईआ। सचखण्ड दवारे हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। सच संदेशा एका वार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। विष्नूं करे ख़बरदार, आलस निंद्रा दए गंवाईआ। ब्रह्मे नेत्र नैण उग्घाड़, लोचण हरि जू आप खुल्हाईआ। शंकर बाशक तशका वेख हार, कंठमाल रिहा समझाईआ। त्रैगुण माया होणा ख़बरदार, निरभउ भय आपणा रिहा जणाईआ। पंज तत्त तेरा इक्क अखाड़, लख चुरासी वेख वखाईआ। लेखा जाण गुर गुर धार, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। भेव खुल्हाए हरि अवतार, रूप अनूप आप जणाईआ। सच संदेशा देवणहार, नर नरेशा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख़्त वसे साचा माहीआ। साचे तख़्त हरि जू चढ़, सच सिँघासण आसण लाइंदा। निरगुण नूर आपे धर, पुरख अकाल डगमगाइंदा। आपणी आसा आपे वर, नार कन्त खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम भेव अपर, अपरम्पर आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर लए फड़, दस्तगीर आप जणाइंदा। शरअ शरीअत वेखे खड़, लाशरीक हुक्म वरताइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दवारे साचा खेल

११६ कराइंदा। सचखण्ड दवारे खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण निरगुण नूर आपे बला, ११६

तेल बाती ना कोए रखाईआ। एकँकारा फड़ाए पल्ला, आपणी गंढु आप पुवाईआ। आदि निरँजण जोती शब्दी आपे रला,

१२ रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। अबिनाशी करता वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सच सिँघासण आसण लाईआ। श्री १२

भगवान करनहारा वल छला, अछल छल आपणी कार कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म फड़ाए आपणा पल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क समझाईआ। सच संदेशा साजण साज, सति सतिवादी आप जणाइंदा। धुरदरगाही ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे वेख वखाइंदा। दो जहान श्री भगवान आप सुवारे आपणा काज, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। गुर अवतारां दे दे दाज, नाम निधाना आप वरताइंदा। चार जुग दा सच समाज, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। वरन चार खेल तमाश, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश नाच नचाइंदा। चारे जुग वेखणहारा शब्द अगम्मी मारे वाज, जुगा जुगन्तर आप सुणाइंदा। गुर गुर धार सुणाए नाद, अनहद नादी नाद वजाइंदा। भेव खुल्हाए साचे साध, सन्तन आपणा मेल मिलाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप वटाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाउँदा आया सति जहाज़, निरगुण सरगुण सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, कलयुग अन्तिम सच दुआरे हुक्म वरताइंदा। सच दुआरे सच वरतारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। लेखा जाणे नव नौ चार चार धारा, चार कुण्ट फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी दो जहान जैकारा, जै जै एका राग अलाईआ। घर घर मन्दिर कर पसारा, घर घर विच आसण लाईआ। लख चुरासी देवणहारा अमृत आत्म ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। आदि जुगादी इक्क सिक्दारा, हुक्मी हुक्म सर्ब भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा एका वार सुणाईआ। सच संदेशा विष्न ब्रह्मा शिव धार, रजो तमो सतो आप जगाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोल्ह किवाड़, बंक दुआरी बंक वखाइंदा। लेखा जाणे तेई अवतार, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। ईस मूसा पावे सार, संग मुहम्मद हुक्म वरताइंदा। चार यारी मारे मार, नव नौ आपणा हुक्म सुणाइंदा। नानक निरगुण इक्क सतार, नाम सति सति वजाइंदा। गोबिन्द फ़तेह डंक जैकार, दो जहानां आप सुणाइंदा। ब्रह्मा लिख लिख थक्का वेद चार, हरि का अन्त कोए ना आइंदा। शास्त्र सिमरत गए हार, बेअन्त भेव कोए ना पाइंदा। वेद व्यासा बण लिखार, जीव जंत जंत समझाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे पार, कलयुग एका अंक जणाइंदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, मात पित ना कोए बणाइंदा। मुहम्मद दोए जोड़ करे निमस्कार, सजदा सीस जगदीश झुकाइंदा। ईसा दर बणे भिखार, ख़ाली झोली आप वखाइंदा। मेरी भिच्छया रख परवरदिगार, इक्को तेरी ओट तकाइंदा। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ार, अल्ला राणी नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। कलयुग अन्तिम बण बण सेवादार, तेरी साची सेव कमाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर कर पसार, उम्मत नबी वेख वखाइंदा। चौदां विद्या खेल अपार, एका अल्फ़ नूर धराइंदा। साबत सूरत आप करतार, शरअ शरीअत वंड वंडाइंदा। चौदां तबकां दे आधार, चौदां लोक नाल रलाइंदा। त्रैभवन धनी तेरा अन्त ना पारावार, त्रैगुण तेरा खेल ना कोए जणाइंदा। लेखा जाणे पीर पैग़म्बर दस्तगीर उठाए चार यार, यारी यारां नाल रखाइंदा। एका जोती दस अवतार, निरगुण नानक सोहला गाइंदा। महांबली उतरे आपणी वार, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। गोबिन्द कहे पिता पूत करे प्यार, पुरख अकाल नाता जोड़ जुड़ाइंदा। कल कल्की लै अवतार, सम्बल नगरी डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट हो अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी कार कमाइंदा। निरगुण निरगुण दए सुणा, सरगुण सरगुण आप समझाइंदा। चार जुग दा लेखा रहिणा ना, लोकमात निशान मिटाइंदा। चार वरनां डेरा देवे ढाह, बरन अठारां ना वंड वंडाइंदा। चारे कुण्ट एका नाम दए जपा, रसना जिह्वा आप समझाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लेखा जाणे सहिज सुभा, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। चार जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर बण बण गए गवाह, हुक्म

अदालत इक्क जणाइंदा। प्रगट होवे अन्त बेपरवाह, परवाह ना कोए रखाइंदा। गुरमुख साचे लए जगा, जागरत जोत इक्क रखाइंदा। अमृत आत्म जाम दए प्या, काया बाटा आप वखाइंदा। अनहद नादी नाद दए सुणा, छत्ती राग भेव ना आइंदा। सतिजुग साचा मार्ग दए ला, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। राज राजाना शाह सुल्तानां तख्तों देवे लाह, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। दो जहानां बणे मलाह, बण खेवट खेटा बेड़ा पार कराइंदा। रैहबर बणे आप ख़ुदा, रहिमत रहीम रहिमान आप कराइंदा। करे खेल बेपरवाह, सही सलामत फेरा पाइंदा। नौबत वज्जे थाँ थाँ, नाम डंका हत्थ उठाइंदा। भगत भगवन्त लए मिला, मेल मिलावा आप मिलाइंदा। सन्त साजण रंग रंगा, रंग रंगीला इक्क वखाइंदा। गुरमुख सज्जण चरन कँवल लए बहा, सरन सरनाई इक्क रखाइंदा। गुरसिख ढूंडे थाउँ थाँ, लख चुरासी अंदर वड़ वड़ सुरती शब्दी आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रै पंज लेखा आप चुकाइंदा। लेखा चुक्के त्रै पंज, पंचम आपणा राग अल्हाईआ। तेई अवतार करन ना रंज, साची सिख्या दए समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लाए कोए ना पज, हुक्मी हुक्म हुक्म भुवाईआ। नानक गोबिन्द सचखण्ड दवारे बहे सज, हरि साजण आप बहाईआ। कलयुग कूड़ा ढूठा जाए भज्ज, क्रिया कोए नज़र ना आईआ। चार वरन एका नाम डोरी जाए बज्झ, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कलयुग अन्तिम रखे लज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। ग़रीब निमाणयां पर्दा देवे कज्ज, नाम दोशाला हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दा लहिणा अन्त मुकाईआ। चार जुग दा मुके लहिणा, सो पुरख निरँजण आप वखाइंदा। जन भगतां वखाए नेत्र नैणां, नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। लख चुरासी भाणा सहिणा पैणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। लख चुरासी लाड़ी मौत खाए डैणा, राए धर्म हुक्म वरताइंदा। गुरमुख विरले सतिगुर सरनाई बहणा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। आत्म परमात्म मन्ने कहिणा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग लाए करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सति सतिवादी चलाए सच विहार, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म होए जै जैकार, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। बणे तोला आप करतार, लख चुरासी तोल तुलाईआ। मौला रूप अगम्म अपार, बिस्मिल आपणा खेल वखाईआ। राती रुती थिती कोए ना जाणे वार, घड़ी पल ना कोए जणाईआ। रागी नादी करे खुआर, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। एका हुक्म सच्ची सरकार, सचखण्ड निवासी आप सुणाईआ। सतिजुग लग्गे विच संसार, बीस बीसा रुत्त सुहाईआ। माया राणी ख़ाली ख़ीसा नर नार, नर नरायण दए सज़ाईआ। गुरमुख विरले लए उभार, आत्म अन्तर

११८ १२

बूझ बुझाईआ। लहिणा चुक्के तेई अवतार, भगत अठारां आपणे विच छुपाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लेखा जाण चार यार, अन्तिम चरनां हेठ रखाईआ। एका जोती दस अवतार, जोती जोत जोत समाईआ। निहकलंक लै अवतार, नाम डंका इक्क वजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात आप कराईआ। भगत भगवन्त कर त्यार, आदि अन्त दए जणाईआ। साता दूआ कर श्रृंगार, बहत्तर आपणे रंग रंगाईआ। सत्तरां देवे इक्क आधार, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। चुहत्तरां लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतार, बाकी कोए नज़र ना आईआ। प्रगट हो आप करतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा सांझा यार, वरन गोत वंड ना कोए रखाईआ। सतिगुर पास साची अक्ख, गुर नेत्र आप खुल्हाइंदा। पंच विकारा कर वक्ख, आपणा घर समझाइंदा। शब्द नाद बोल अलख, सच जैकारा लाइंदा। नूर नुराना आपे दस्स, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। सति सरूपी देवे दरस हो प्रतख, परम पुरख रंग रंगाइंदा। हरिजन करे पूरी आस, जो जन चरन ध्यान लगाइंदा। साचे नेत्र वखाए रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन वेख्यां हर घट आपणी खेल कराइंदा। गुर बाणी हरि का जस, गुर गुर हुक्मी हुक्म गाईआ। निरगुण सरगुण अंदर वस, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल नानक करे पूरी आस, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। साचे मंडल साची रास, जोती जाता दए वखाईआ। लहिणा तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन मंडल उपर डेरा लाईआ। सचखण्ड दवारे कर कर वास, सच सिँघासण सोभा पाईआ। धुर फ़रमाणा देवे धुर धरवास, धुर दरबारी आप जणाईआ। आत्म परमात्म घट घट वास, वरन गोत ना कोए रखाईआ। पंज तत्त चोला काया गुर अवतारां होवे नास, थिर कोए रहिण ना पाईआ। हरि का शब्द सदा प्रकाश, ना मरे ना जाईआ। जुग चौकड़ी गाउँदे रहे रसन स्वास, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर बाणी भेव खुल्हाईआ। हरि का नाउँ गुर गुर बाणी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। सतिगुर महिमा अकथ कहाणी, लिख लिख लेख बणाइंदा। गुर गुर रूप खेल महानी, बिन सतिगुर बाणी नाउँ ना कोए अल्हाइंदा। बिन बाणी सतिगुर कोए ना होए जाण जाणी, गुर गुर निशाना नज़र कोए ना आइंदा। दोहां विचोला शाह सुल्तानी, आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक देवे साचा वर, गोबिन्द एका बूझ बुझाइंदा। नानक गोबिन्द पर्दा खोल्ह, हरि जू हरि हरि आप बुझाईआ। सतिगुर साजण बोले बोल, अक्खर वक्खर आपे गाईआ। हरि का नाउँ तोले तोल, तोलणहारा आप हो जाईआ। शब्दी गुर घट घट जाए मौल, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। बाणी गुर गुर बाणी आदि जुगादी इक्क दूजे

दे वसण कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक्क समझाईआ। गुर शब्द साचा गुर, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। नानक निरगुण गया जुड़, निरवैर भेव खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण आपे बौहुड़, भेव अभेद आप जणाइंदा। नाता तोड़े मिट्ठा कौड़, रस अनडिठा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर बाणी आप प्रगटाइंदा। गुर बाणी सतिगुर राग, रसना जिह्वा आपे गाईआ। बाणी मेला शब्द सुहाग, गुर गुर कन्त हंढाईआ। दोहां विचोला बणे आप, निरंतर आपणी धार वखाईआ। आत्म परमात्म सचा जाप, जीवण जुगत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर का शब्द एका गुर वड्याईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका बूझ बुझाइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। महिमा अकथ बोले जैकारा, जै जै आपणे नाउँ कराइंदा। चलाए रथ विच संसारा, बोध ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। समरथ पुरख करे खेल अपारा, नानक गोबिन्द साचा फ़िरका इक्क समझाइंदा। साचा फ़िरका बिन ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा मेटे अन्धेरी रात, आत्म चन्द इक्क चढ़ाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणाया साक, आपणा बन्धन पाईआ। पंचम मीता बोल वाक्, सीस आपणा रिहा झुकाईआ। गुर चेला वसे पास, चेला गुर रूप वटाईआ। हरि का नाउँ ना जाए विनास, गुर शब्द आदि जुगादि समाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर बूझे कर क्यास, ख़िआनत नेड़ कदे ना आईआ। अन्त उतारे आपणे घाट, मँझधार ना कोए रुड़्हाईआ। पंज तत्त चोला देवे कोए ना साथ, नानक गोबिन्द शब्द सरूप शब्दी गुर इक्क अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया करे विनास, फ़तेह डंका इक्क वजाईआ। पुरख अकाल लख चुरासी गाए स्वास स्वास, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। गुर शब्द सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा घट घट वसे पास, गुर बाणी गुर शब्द कहाणी, कह कह गुर गुर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दी साची राणी, सचखण्ड दी सच सवाणी, लोकमात भगत भगवन्त साचे सन्त गुरमुख गुरसिख गुर गुर शब्द आप प्रनाईआ।

✳ पहली जेठ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✳

सचखण्ड दवारे सच दरबारा, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। हरि पुरख निरँजण कर पसारा, निरगुण धारा नूर डगमगाइंदा। एकँकारा खेल न्यारा, भेव अभेद ना कोए पाइंदा। जोत निरँजण कर पसारा, आदि निरँजण खेल कराइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। श्री भगवान करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर

अगम्म अथाह आपणी धार आप चलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, निरवैर निराकार पुरख अकाल अजूनी रहित रूप रंग
रेख ना कोए रखाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी वड बलकारा, राजन राजान आपणा हुक्म आप वरताइंदा।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दवारे आपे खड़, साचा बंक आप वड्याइंदा।
साचा बंक हरि हरि भूप, एकँकारा आप सुहाईआ। निरगुण नूर जगा जोत, जोती जाता डगमगाईआ। वसणहारा साचे
कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड
साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। आदि जुगादी एका कन्त, श्री भगवान सोभा पाइंदा। आप बणाए आपणी
बणत, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा नूर प्रगटाइंदा। बोध अगाधा एका मंत, अक्खर
वक्खर आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा।
सचखण्ड दवारा खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, निरगुण बैठा आसण लाईआ।
आपणे दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सच
दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दवारा राजन राज, निरगुण नर हरि आप सुहाइंदा। करे खेल ग़रीब निवाज़, नेत्र नैण
 नज़र किसे ना आइंदा। शब्द अगम्मी इक्क आवाज़, महल अटल आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १२१
किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दवारा सच सिँघासण, सति सतिवादी आप सुहाईआ। करे खेल
 १२
पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। निरगुण जोत पाए रासन, बेअन्त बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपे
जाणे आपणा खेल तमाशण, बेऐब परवरदिगार सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड
साची धार चलाईआ। सचखण्ड सोहे साचा बंक, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, नूर नुराना डगमगाइंदा।
लेखा जाणे नार कन्त, कन्त नार आप अख्वाइंदा। आपे चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। आपणी महिमा जाणे
अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क बणाइंदा।
सचखण्ड दवारा उच्च महल्ला, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। वसणहारा इक्क इकल्ला, एकँकार आपणा बल रखाईआ।
आदि जुगादी अछल अछला, वल छल आपणी धार चलाईआ। जोती शब्दी आपे रला, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ।
नर नरेश आपे फड़े आपणा पल्ला, पल्लू आपणी गंढ बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि
पुरख एका हरि, सच सिँघासण साचा दए वड्याईआ। सच वड़याई पुरख अगम्म, अगम्मड़ा आप कराइंदा। आदि जुगादी

आपे जम्म, मात पित ना कोए रखाइंदा। सदा सुहेला करे कम्म, करता आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्, सचखण्ड दवारे आप चलाइंदा। आपे जननी आपे जन, जन जणेंदी माई आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप उपाइंदा। सच दुआरा एका एक, एकँकारा आप प्रगटाईआ। आपे रखे आपणी टेक, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। आपे लिखणहारा लेख, लेखा लिखे बिन कलम शाहीआ। आदि जुगादी रहे बबेक, ववेकी आपणी धार प्रगटाईआ। आपणा नूर आपे वेख, पेख आपणी खुशी मनाईआ। वसणहारा सचखण्ड दवारे साचे देस, दरगाह साची धाम सुहाईआ। बेऐब खुदाई इक्क आदेस, मुकामे हक़ हक़ रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचा तख्त आप सुहाईआ। साचा तख्त सच्चा शहिनशाह, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। निरगुण निरवैर बण मलाह, हरि पुरख निरँजण खेल कराइंदा। सति सति सतिवादी चलाए एका राह, एकँकारा आप प्रगटाइंदा। करे खेल बेपरवाह, आदि निरँजण नूरो नूर नूर धराइंदा। महल अटल डेरा ला, अबिनाशी करता खुशी मनाइंदा। चार कुण्ट नैण उठा, बिन नेत्र वेख वखाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा हर घट थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपणा पर्दा लए उठा, पुरख अकाल अनुभव आपणी खेल कराइंदा। राज राजान भूपत भूप आप अख्वा, सीस जगदीश ताज टिकाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म प्रगटा, सच संदेशा नर नरेशा सचखण्ड दवारे आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। हरि का भेव आदि जुगादि, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। इक्क इकल्ला अछल अछेद, वल छल आपणी खेल कराईआ। रूप रंग ना कोए रेख, असुते प्रकाश वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपणा पर्दा चुक्क करतार, करता आपणा भेव जणाइंदा। आदि आदि खेल कर अपार, अपरम्पर आपणा राह वखाइंदा। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धार, निरगुण निरगुण आप टिकाइंदा। निरगुण पुरख निरगुण नार, निरगुण कन्त कन्तूहल साची सेज हंढाइंदा। निरगुण दाई दाया अगम्म अपार, निरगुण जननी जन आप अख्वाइंदा। निरगुण सुत दुलारा कर त्यार, पूत सपूता गोद बहाइंदा। निरगुण खोल्हणहार किवाड़, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। सचखण्ड अंदर खेल अपार, हरि करता आप कराइंदा। थिर घर दुआरा कर त्यार, शब्दी सुत आप बहाइंदा। करे खेल अपर अपार, भेव अभेद ना किसे जणाइंदा। आदि जुगादी एकँकार, अकल कल आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। आपणा पर्दा देवे लाह, पारब्रह्म वडी वड्याईआ।

आदि रचन जो लई रचा, अन्त लेखा दए मुकाईआ। सचखण्ड निवासी सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। थिर घर वेखे बेपरवाह, पर्दानशी सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा दए सुणाईआ। सच संदेशा एकँकार, अकल कलधारी आप जणाइंदा। शब्दी शब्द वड बलकार, जोधा सूरबीर आप प्रगटाइंदा। सुत दुलारे दे आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साची वस्त भर भण्डार, सति भण्डारा आप वखाइंदा। हुक्मी हुक्म सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जननी जन खेल अपार, विष्न ब्रह्मा शिव गोद सुहाइंदा। त्रैगुण दात देवे दातार, पंचम आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा सिख समाइंदा। साची सेवा शब्द सुत, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, बेअन्त वड वड्याईआ। सचखण्ड दवारे सुहाई रुत्त, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाईआ। आपणी इच्छया आपे उठ, साची भिच्छया दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। धुर फ़रमाणा साची धार, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। पुरख अकाल खेल कीआ अपार, भेव अभेद आप जणाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, नव नौ आपणी वंड वंडाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर कर ख़बरदार, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। रवि ससि दे आधार, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसार, लोआं पुरीआं बन्धन पाइंदा। जुग चौकड़ी दे आधार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्यार, नाता बिधाता इक्क रखाइंदा। गुर अवतार दे आधार, जोती जाता नूर धराइंदा। शब्द अनादी इक्क धुन्कार, घट घट मन्दिर आप सुणाइंदा। भगत भगवन्त कर पसार, नूर नुराना नूर वखाइंदा। पीर पैग़म्बर सांझा यार, मुकामे हक़ हक़ जल्वा धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। आपणा भेव खोल्ह निरँकार, पर्दा कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल जुग चौकड़ी चार, नव नौ आपणा बन्धन पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कर खुआर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। चारे वेदां दए अधार, चार वरन माण वड्याईआ। चार कुण्ट नूर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल कर आपणा खेल जणाइंदा। निरगुण निरवैर वेस धर, अजूनी रहित रूप वटाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी महिमा गए कर, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जिस दा ध्यान गए धर, सो आपणा पर्दा लाहइंदा। अञ्जील कुरान गीता ज्ञान जिस दा अक्खर वक्खर गए पढ़, सो चौदां विद्या मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप खुल्हाइंदा। पर्दा खोल्हे श्री भगवान, भेव कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी जुग जुग खेल महान, निरगुण सरगुण

आप कराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग हो प्रधान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए डंक वजाईआ। अन्त रिहा ना कोए निशान, खाकी ख़ाक गए समाईआ। निरगुण कर कर सर्ब ध्यान, सरगुण बैठे सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मन्न मन्न आण, कलयुग नैण नैण शरमाईआ। इक्क इकल्ला नौजवान, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। आदि जुगादी खेल महान, अन्त कह कह गए सर्ब सुणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, ज़िमी असमान चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोए अख्वाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दोए जोड़ करन निमस्कारा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। आदि अन्त मध ओट रख के गए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा पूर कराइंदा। सब दी आसा पूरन कर, पारब्रह्म प्रभ खेल कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दिता वर, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। पंचम घाड़न ल्या घड़, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। तेई अवतार बंधाए लड़, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। भगत अठारां लाई जड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। ईसा मूसा नूर धर, संग मुहम्मद जल्वा इक्क रुशनाईआ। चार यारी बाहों फड़, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। नानक निरगुण घाड़न घड़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा इक्क वखाईआ।
१२४ एका जोती वर दस, दहि दिशा वेख वखाईआ। पंचम मेला निरगुण कर, कर किरपा ख़ुशी मनाईआ। अन्तिम लाए जड़, १२४
दो जहानां फेरा पाईआ। पंच प्रधान आपे कर, दरगाह साची देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१२ कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा हरि निरँकारा, कलयुग अन्त अन्त जणाइंदा। प्रगट हो निहकलंक नरायण १२
नर अवतारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। धरनी धरत धवल दे सहारा, जुग जुग लहिणा मूल चुकाइंदा। बल बावन नाल करया उधारा, अन्तिम लेखा लेखे लाइंदा। छत्ती जुग दा पार किनारा, नानक मेला मेल मिलाइंदा। गोबिन्द सुणे कूक पुकारा, पिता पुरख अकाल दया कमाइंदा। नीहां हेठां दिता सहारा, जग जीवण दाता वेख वखाइंदा। नामे तेरी सुण पुकारा, छप्पर छन्न आप सुहाइंदा। धन्ने मेला जट गंवारा, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। गोबिन्द कहे कूक पुकारा, उच्ची नाअरा एका लाइंदा। नानक निरगुण कहे महांबली उतरे अवतारा, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। गोबिन्द दोए जोड़ करे निमस्कारा, सम्बल नगरी राह तकाइंदा। शब्द खण्डा वेखे दो धारा, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाइंदा। कल्ग़ी तोड़ा सीस दस्तारा, दोए जहान सीस झुकाइंदा। अन्तिम खेल करे अपारा, नज़र किसे ना आइंदा। वेद व्यासा बण लिखारा, लिख लिख लेखा सर्ब जणाइंदा। निहकलंक चवीआं अवतारा, निरगुण आपणा

रूप प्रगटाइंदा। साख्यात प्रगट होए विच संसारा, बेअन्त बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड बणाए इक्क दुआरा, सचखण्ड निवासी आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जुग चौकड़ी खेले खेल, खेलणहार नज़र ना आईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सज्जण सुहेल, सतिगुर दाता वड वड्याईआ। सद वसणहारा धाम नवेल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। लहिणा देणा चुकाए गुरू गुर चेल, गुर चेला रूप वटाईआ। भगत भगवन्त लए मेल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान बणे सज्जण सुहेल, सगला संग आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। हुक्मे अंदर आदि चुगादि, हरि करता खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर शब्द नाद, थिर घर साचे आप वजाइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आप प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर बोध अगाध, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां आप पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर प्रगटाए सन्त साध, हुक्मे अंदर भगत भगवन्त खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर वेस वटाए मोहण माधव माध, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण आप अख्वाइंदा। हुक्मे अंदर रखे याद, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। हुक्मे अंदर खेल करे वाहद, लाशरीक आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर ख़ाकी ख़ाक, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर पाकी पाक, पतित पुनीत वेस धराइंदा। हुक्मे अंदर बन्धन साक, बंधप आपणी गंढु पुवाइंदा। हुक्मे अंदर कलयुग सतिजुग त्रेता द्वापर कराए पार घाट, किनारा आपणा ना किसे जणाइंदा। हुक्मे अंदर दो जहानां वेखे वाट, चौदां लोकां चरनां हेठ रखाइंदा। हुक्मे अंदर सुणाए साची गाथ, चौदां तबक आप पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर दिवस रात, सूरज चन्न सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर पिता मात, पूत सपूता वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर देवे दात, दाता दानी दया कमाइंदा। हुक्मे अंदर वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। हुक्मे अंदर करे खेल पुरख समराथ, समरथ आपणी खेल वखाइंदा। हुक्मे अंदर कोटन कोटि तरलोकी नाथ, हुक्मे अंदर कोटन राम प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर भरे आपणे खात, ख़ाली हुक्मे अंदर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा हुक्म आपणे हथ्थ, सो पुरख निरँजण आप रखाईआ। आदि जुगादि चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतारां मार्ग दस्स, लोकमात सेव लगाईआ। सरगुण अंदर निरगुण वस, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द अगम्मी तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। अंदर वड़ वड़ गाए जस, दिस किसे ना आईआ। त्रैगुण अंदर ना जाए फस, पंज तत्त ना कोए वखाईआ। लेखा जाणे अन्धेरी रैण मस, चन्द चांदनी नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हुक्मे अंदर उपजाए

सचखण्ड दवारा, थिर घर आपणी खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर बण वणजारा, साचा हट्ट आप चलाइंदा। हुक्मे अंदर सच भण्डारा, दाता दानी आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण कर पसारा, लख चुरासी बन्धन पाइंदा। हुक्मे अंदर आवे जावे वारो वारा, आपणा भेव ना किसे समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करता पुरख आप अख्वाइंदा। हुक्मे अंदर तख्त ताज, सचखण्ड आप प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर साचा राज, धुरदरगाही आप कमाईआ। हुक्मे अंदर रच रच काज, दो जहानां वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर देवे दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। हुक्मे अंदर कमलापात, आपणी खेल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझाईआ। साचा हुक्म हरि निरँकार, कलयुग अन्त अन्त जणाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, लेखा लिख्त ना कोए समझाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गए हार, हरि का रूप नज़र किसे ना आइंदा। चौदां विद्या रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर नीर प्रगटाइंदा। कागद कलम करे पुकार, बेअन्त तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म सच संदेशा, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। शाह पातशाह नर नरेशा, नर निरँकार वड वड्याईआ। पकड़ उठाए ब्रह्मा विष्न महेषा, भोला नाथ दए जगाईआ। त्रैगुण तेरा जाणे लेखा, पंज तत्त
१२६ भेव चुकाईआ। तेई अवतार आपणे नेत्र पेखा, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। भगत अठारां इक्क संदेशा, सति सतिवादी आप १२६
१२ सुणाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारी जाणे लेखा, अलख अगोचर अगम्म वड वड्याईआ। नानक गोबिन्द वेखे साचा खेता, फुल्ल फुलवाड़ी एका लाईआ। पंचम बणया एका मीता, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम मेटे रीता, सतिजुग साची धार चलाईआ। नाता तोड़े मन्दिर मसीता, शिवदुआला मट्ठ नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादी ठांडा सीता, सति सतिवादी राह प्रगटाईआ। नव नौ तेरा वेला बीता, जुग चौकड़ी पन्ध गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क समझाईआ। सच सुनेहड़ा एकँकार, कलयुग अन्त अन्त जणाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। तख्त निवासी हो त्यार, साचे तख्त आसण लाइंदा। लोकमात दए आधार, धरत धवल वंड वंडाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर कर त्यार, उच्च अटल्ला सोभा पाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, पृथ्मी आकाश आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करे ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। एका नाया दे आधार, बीस बीसा वड वड्याइंदा। सत्तर बहत्तर कर प्यार, सति सतिवादी रंग चढ़ाइंदा। चुहत्तरां वेखे वेखणहार, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करया ख़बरदार, त्रै त्रै मेला आप मिलाइंदा।

पंचम पंच दए आधार, तेई अठारां जोड़ जुड़ाइंदा। तिन्न चार कर प्यार, दस दस बन्धन पाइंदा। पंच वखाए इक्क घर बार, चुहत्तर अंक जोड़ जुड़ाइंदा। सचखण्ड दवारे सारे मिल के गाओ, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जैकार, जै जैकार आप कराइंदा। ज़ात पात वरन गोत बरन नाता तुट्टे विच संसार, मज़्ब वंड ना कोए वंडाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोए आधार, हर घट एका नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा पहली वसाख आप जणाइंदा। पहली वसाख हरि जणाया, भुल्ल रहे ना राईआ। चुहत्तरां लेखा इक्क वखाया, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। गुर अवतार पीर करो सलाहया, भगतां नाल मिलाईआ। त्रैगुण डेरा देवे ढाहया, पंज तत्त करे सफ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव माण दए गंवाया, पारब्रह्म वड वड्याईआ। आदि जिस ने नूर धराया, सो नूर वेखे सच्चा माहीआ। लोकमात सचखण्ड दवार इक्क बणाया, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तरां एका हुक्म सुणाईआ। एका हुक्म अन्तिम वार, गुर अवतारां हरि जणाइंदा। उठो वेखो विच संसार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। नाता तुट्टा तेई अवतार, घर घर सगन ना कोए मनाइंदा। कलमा नबी ना कोए आधार, धीरज धीर ना कोए वखाइंदा। सजदा सीस ना कोए निमस्कार, काया काअबा ना कोए सुहाइंदा। नानक गोबिन्द ना कोए

१२७ प्यार, पंचम मेला ना कोए मिलाइंदा। अनहद नाद ना कोए धुन्कार, शब्दी शब्द ना कोए सुणाइंदा। पुरख अकाल ना १२७

१२ कोए वणजार, साचा हट्ट ना कोए खुल्हाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी आई हार, सत्त दीप साची वंड ना कोए वंडाइंदा। सृष्ट १२

सबाई होई विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। गुर अवतार करो विचार, साची सिख्या ना कोए समझाइंदा। वरन बरन रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। त्रैगुण माया रही ललकार, पंच विकारा आपणा बल धराइंदा। गुर की सिख्या गई हार, सतिगुर इष्ट नज़र किसे ना आइंदा। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, आत्म परमात्म गंढ ना कोए पुवाइंदा। ब्रह्म मेला ना कोए पारब्रह्म दुआर, प्रकाश प्रकाश ना कोए रखाइंदा। जीव ईश ना कोए प्यार, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाइंदा। कलमा नबी ना कोए जैकार, साची सदा ना कोए लगाइंदा। मुकामे हक़ ना कोए विहार, हक़ हक़ीक़त ना कोए फोल वखाइंदा। लाशरीक बेऐब परवरदिगार, नूरी जल्वा ना किसे वखाइंदा। चार कुण्ट धूंआँधार, कलयुग अन्त अन्धेरा छाइंदा। साचा मीआं होया ख़बरदार, अल्ला राणी बीवी वेख वखाइंदा। निरगुण नानक वेखे खोल्ह किवाड़, बंक दुआरी पर्दा लाहइंदा। गोबिन्द होया शाह सवार, शस्त्र बस्त्र तन सजाइंदा। लोआं पुरीआं चरनां हेठां रिहा लताड़, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखे इक्क दुआर, इक्क इकल्ला सोभा पाइंदा। निउँ निउँ सीस करे निमस्कार, निउँ निउँ सजदा आप

जणाइंदा। वाहवा तेरी कुदरत मेरे यार, तूं कादर कुदरत आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्मरां भगवान, कलयुग अन्त आप जणाईआ। उठो सारे करो ध्यान, वेला गया हत्थ ना आईआ। चुहत्तरां मिले इक्क मकान, दूजा दर ना कोए वखाईआ। मुहम्मद लेखा चुका चौदां तबक ज़िमी असमान, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। नानक गोबिन्द खेल महान, जोती जोत जोत समाईआ। तेई अवतार इक्क ध्यान, इष्ट गुरदेव एका नज़री आईआ। अठारां भगत इक्क ज्ञान, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। त्रैगुण माया तोड़े माण, पंज तत्त डेरा आपे ढाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव बख्शे चरन ध्यान, कँवल कँवल सच्ची सरनाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, भगवन आपणी खेल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तरां आपणी गोद बहाईआ। चुहत्तरां आपणी गोदी चुक्क, हरि जू चुक्क चुक्क खुशी मनाइंदा। अन्तिम पैंडा सब दा गया मुक्क, गुर अवतार पीर पैग़म्बर माण ना कोए रखाइंदा। सब दी सफ़ा गई उठ, सत्थर होर ना कोए विछाइंदा। चरनामित पीओ घुट्ट, अमृत जाम इक्क वखाइंदा। पुरख अबिनाशी दे सारे सुत, पिता इक्को नज़री आइंदा। पंज तत्त काया दिता बुत्त, अन्तिम जोती मेल मिलाइंदा। जिस दी
१२८ रख के गए ओट, सो पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। इक्क प्रगटाए निर्मल जोत, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। जन भगतां १२८
उत्ते होए आप मोहत, मुहब्बत आपणी आपे पाइंदा। मेल मिलाए काया किला कोट, दूजे दर ना फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करतार, करता पुरख आप कराईआ। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण आपणा डंक वजाईआ। चरन कँवल बहाए गुर अवतार, पीर पैग़म्बर सजदा सीस झुकाईआ। एका कलमा नबी रसूल रहे उच्चार, इक्क पढ़ाए कलाम इलाहीआ। एका बोल सति जैकार, फ़तेह डंका रहे वजाईआ। एका चतुर्भुज खेल अपार, आदि शक्ति इक्क रुशनाईआ। एका वसणहारा सचखण्ड सच्चे दरबार, तख्त निवासी इक्क अख्वाईआ। एका वरते वरतावे वरतणहार, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच संदेशा एका वार सुणाईआ। सच सुनेहड़ा शब्दी धार, धुरदरगाही आप सुणाइंदा। पहली जेठ करो विचार, हरि जू हरि हरि भेव खुल्हाइंदा। चुहत्तरां करे इक्क प्यार, सच प्यार आप बन्हाइंदा। इक्क इक्क नाल विहार, इक्क इक्क सब दी झोली पाइंदा। लख चुरासी विच्चों करना बाहर, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म अन्तिम मात, हरि जू हरि हरि आप वरताईआ। चुहत्तरां दिती इक्को दात, इक्क इक्क वंड वंडाईआ।

इक्क इक्क बन्ने साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सत्तर बहत्तर देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराईआ। निरगुण खेल अपर अपारा, पारब्रह्म प्रभ आप कराइंदा। चुहत्तर बणाए दर वणजारा, वणज एका हट्ट कराइंदा। चार जुग लहिणा देणा कर्ज़ उतारा, बाकी कोए रहिण ना पाइंदा। सुणनहार सर्ब पुकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा सचखण्ड दवारे आप सुणाइंदा। सच संदेशा ल्या सुण, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, बेअन्त तेरी वड्याईआ। लख चुरासी छाण पुण, जन भगतां होए सहाईआ। इक्क इक्क अन्तिम लईए चुण, चुण चुण तेरी झोली पाईआ। तेरा भेव ना पाए कोए रिख मुन, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा तेरा वर, दर बैठे सीस झुकाईआ। दर तेरे झुकया सीस, सत्त चार सीस झुकाया। तूं साहिब सच्चा सुल्तान जगदीश, जुग जुग तेरी वड्याआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सुणाई तेरी हदीस, तेरा नाउँ नाउँ अल्लाया। लोकमात पीसण पीस, साची सेवा सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे वास्ता पाया। तेरे अग्गे वास्ता अन्तिम पा, पल्लू रहे छुडाईआ। इक्क इक्क गुरमुख साडे नाल मिला, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। जिस सिर हथ्थ साहिब सुल्तान मेहरवान तूं दिता टिका, तिस वेखां चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका वस्त मंग मंगाईआ। साची वस्त मंगी मंग, सचखण्ड निवासी तेरे दुआर। गुरसिख चढ़ाउणा साचा रंग, मिले मेल अन्तिम वार। गुरमुख वज्जे मृदंग, घट घट अंदर अनहद धुन्कार। साचे सन्त चढ़े चन्द, निर्मल जोत होए उज्यार। साचे भगत परमानंद, निजानंद इक्क आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच कराउणा इक्क विहार। सच विहारा करना मात, पुरख अकाल तेरी सरनाया। तेरे भगत मंगी दात, दूजी ओट ना कोए रखाया। सत्तरां बहत्तरां बणयों पिता मात, आप आपणी गोद बहाया। चुहत्तरां कराई साडी याद, चार जुग दे विछड़े मेल मिलाया। तूं करता करीम कादर काद, नूरो नूर नूर रुशनाया। आदि जुगादि ना होए तेरी वफ़ात, ना मरे ना जाया। नूर इलाही इक्को ज़ात, जल्वा जलाल इक्क रखाया। करें खेल बहु बिध भांत, पारब्रह्म वड वड्याआ। लख चुरासी विच्चों काढ, साचे सिख लए प्रगटाया। निरगुण हो करें लाड, सरगुण रूप नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुरमुख साचे लए मिलाया। गुरसिख तेरा सच मनारा, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। त्रैगुण करे चरन निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पंज तत्त रोवे ज़ारो ज़ारा, जिस तन वसया सच्चा

माहीआ। तेई अवतार करन प्यारा, गुरसिख वेखण चाँईं चाँईंआ। मुर्शद मुरीद दए आधारा, ईसा मूसा मुहम्मद चार यारा गंढु पुवाईआ। एका जोती दस अवतारा, नानक गोबिन्द रंग वखाईआ। भगत अठारां इक्क सहारा, वाह वा तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। छे घर नौ दुआर नामा छीपो उतरो पारा, छप्पर छन्न आप छुहाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपारा, निरगुण निरवैर आप वखाईआ। छत्ती छत्ती पार किनारा, छत्ती छत्ती बन्द तुड़ाईआ। भगवन्त बणाए भगत दुआरा, भगवन आपणी सेव कमाईआ। नीहां हेठ दबाए सुत दुलारा, गोबिन्द रत्ती रंग रंगाईआ। सोना रुपा पार किनारा, धरत धवल दए छुहाईआ। हरिसंगत तेरा इक्क प्यारा, लोकमात दए प्रगटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चल के आवण वेखण सच दुआरा, जिस दुआरे हरि जू सेव कमाईआ। करोड़ तेतीसा करे निमस्कारा, सुरपति राजा इन्द धूढ़ी चरनां ख़ाक रमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणे भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम पार किनारा, सब दी जड़ दए उखड़ाईआ। सत्तरां कराए इक्क विहारा, चार कुण्ट दा चार मनारा ढाहीआ। तरलोकी उत्ते इक्क सहारा, सचखण्ड निवासी गुरमुखां आप बणाईआ। चुहत्तरां मेला कराए गुर अवतारा, पिछला लेखा लेखे पाईआ। पूरब कर्म आप विचारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी लिख लिख ना कोए समझाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सर्ब पुकारा, अन्त नज़र किसे ना आईआ। आपे जाणे घड़न भन्नणहारा, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारा, नर हरि आपणी जोत धराईआ। वज्जदी रहे सच सतारा, तन्दी तन्द ना कोए रखाईआ। चुहत्तरां करे आप उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप हो आईआ। वर दाता हरि मेहरवान, मिहबान दया कमाइंदा। सतिजुग दा सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। सचखण्ड निवासी खेल महान, ख़ालक ख़लक आप कराइंदा। गुरमुख वेखे बाल अंञाण, आप आपणी उँगली लाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं नैण उठाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दा जाणे ज्ञान, अज्ञान आपणा रूप छुपाइंदा। गुर अवतारां देवणहारा दान, आपणा नाम जणाइंदा। वेखणहारा कृष्ना काहन, बंसरी नाम मधुर धुन आप वजाइंदा। लेखा जाणे सीता राम, सीआ सईया आपणा रंग वखाइंदा। नईया चलाए दो जहान, मइया आपणा इष्ट प्रगटाइंदा। साचा सईया श्री भगवान, साख्यात खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे आपे चढ़, तख्त तख्त सोभा पाइंदा। तख्त सुहाया आप प्रभ, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंक नाउँ रखाईआ। वसणहारा घट घट, लख

चुरासी भेव चुकाईआ। वरन बरन मेटे फट्ट, दूई दवैत दए गंवाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वखाए इक्क हट्ट, शरअ शरीअत दए मिटाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, अनहद नादी नाद वजाईआ। कर प्रकाश पार कराए हद्द, जिस जन आपणी दया कमाईआ। अमृत जाम प्याए मदि, रस रसया रस चखाईआ। विष्नूं तेरी वेखे यद, ब्रह्मा तेरा ब्रह्म लख चुरासी पर्दा देवे लाहीआ। शंकर लैणा देवे ना कोए छड्ड, जो घड़या भन्न वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान चरन दुआरे सद्द, सच संदेशा दए सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा आपणा भार गए लद्द, सिर आपणे आप उठाईआ। हुक्मे अंदर हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई कीते अड्ड अड्ड, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। अन्तिम लेखा सब दा रखे आपणे हथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप मिलाईआ। हरिजन मिलणा हरि आप मिलाउणा, गुर अवतार नाल मिलाया। सचखण्ड दवारे आप बहाउणा, बह बह आपणा रंग वखाया। निरगुण सरगुण भेव चुकाउणा, बज़र कपाटी कुण्डा लाहया। पारब्रह्म ब्रह्म नूर धराउणा, नूरो नूर नूर रुशनाया। अनहद नादी नाद वजाउणा, आत्मक एका राग अलाया। साची सेजा आप बहाउणा, सोभावन्त साची सेज आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप उठाया। साचे भगत जायण जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। आत्म अन्तर इक्क वैराग, बण वैरागी आप उपजाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। गुर अवतार रखणा याद, भगत भगवान आप समझाईआ। निरगुण सरगुण सुणन आया फ़रयाद, फ़र्ज़ ज़ुलम सब ते दए लगाईआ। गुरमुख साचे लडाए लाड, जिउँ बालक माता गोद सखाईआ। लहिणा देणा चुकाए कल कि आज, थित वार घड़ी पल्ल वंड ना कोए वंडाईआ। शब्द अगम्मी मारे आवाज़, रागी राग ना कोए सुणाईआ। आत्म परमात्म रखे सांझ, त्रैगुण माया बन्धन दए तुड़ाईआ। प्रगट होया ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे लए उठाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो रखदा आया लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्तिम साजण ल्या साज, सतिगुर आपणी खेल वखाईआ। चार वरन वखाया इक्क जहाज़, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। लेखा जाणे गुपत ज़ाहर बातन बात, बातन आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका नाम वजाईआ। एका डंका वज्जे नाउँ, हरि जू हरि हरि आप वजाइंदा। करे खेल अगम्म अथाहों, अलख अगोचर वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण करे न्याउँ, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। भगत भगवन्त पकड़े बाहों, पकड़ी बांह ना कोए छुडाइंदा। गुरसिख लेखा जाणे पिता माउँ, पूत सपूत आप बणाइंदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक्क जपाए साचा नाउँ, सोहँ अक्खर आप

पढ़ाइंदा। खेवट खेटा बणे मलाहो, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पीर पैग़म्बर आप समझाइंदा। पीर पैग़म्बर नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाईआ। कवण कूट मौला रिहा मौल, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। निरगुण सरगुण तोलणहारा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लेखा जाणे काया चोल, काया चोली वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी रही अनभोल, हरि का भेव कोए ना पाईआ। नानक निरगुण कहे हरि वसे सदा भगतां कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। भगत कबीर रहे अडोल, अडुल मिली तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्त चुकाया पर्दा ओहल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप जगाईआ। हरिजन जागे गुर गुर धार, गुर सूरबीर बलवान आप जगाइंदा। सत्तर बहत्तर मेला मेल विच संसार, संसार सागर पार कराइंदा। आदर देवे वारो वार, करता कादर वेख वखाइंदा। चुहत्तरां मेला अन्तिम वार, गुर अवतार नाल रखाइंदा। इक्की जेठ करे विहार, जेठा पुत्त शब्दी आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा शब्द दुलारे, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। मेरे भगत सदा कुँवारे, मेरे बिना ना कोए प्रनाईआ। कलयुग अन्तिम बैठे आ किनारे, किनारा नज़र किसे ना आईआ। उच्ची कूक कूक रहे पुकारे,
१३२ गोबिन्द मिल्या सच्चा माहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धारे, कृपानिध वडी वड्याईआ। प्रगट हो विच संसारे, निरगुण १३२
जोत करे रुशनाईआ। हरिजन मेले आपणे दुआरे, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। चुहत्तरां आई अन्तिम वारे, साता चौका
१२ बन्धन पाईआ। सचखण्ड दी साची धारे, धरनी उपर दए प्रगटाईआ। करे खेल अपर अपारे, आदि पुरख वडी वड्याईआ। १२
शब्दी सुत गुरसिख तेरे प्यारे, बिन तेरे सके ना कोए जगाईआ। इक्की जेठ चुहत्तरां दे जाणा दुआरे, घर घर आपणा पन्ध मुकाईआ। जे गुरसिख सुत्ता होवे पैर पसारे, फड़ पैरों लैणा हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द तेरी सेवा इक्क लगाईआ। गुर शब्द उठ बल धार, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा नाउँ करदे रहे उज्यार, मेरा भेव कोए ना पाइंदा। अन्तिम दस्सां सच विहार, साचा राह इक्क वखाइंदा। गुरमुख साचे लैणे उठाल, जिस जन आपणी गोद वखाइंदा। जुग जन्म दे मेरे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, राए धर्म मुख भुवाइंदा। चित्रगुप्त लेखा ना सके वखाल, लाड़ी मौत मींढी सीस ना कोए गुंदाइंदा। जिस दी करां आप प्रितपाल, तिस नेड़ जम ना आइंदा। तूं जा के सुरत संभाल, कलयुग वेला वक्त सुहाइंदा। चुहत्तरां वसावां तेरे नाल, आप आपणा बन्धन पाइंदा। घर घर दीपक जोती देणी बाल, जोती जोत नाल मिलाइंदा। नात तुट्टे शाह कंगाल,

नारी पुरष ना वंड वंडाइंदा। लहिणा देणा बिरध बाल, बाली बाला आप वखाइंदा। तूं वसणा थिर घर सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड हरि जू आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्दी सुत आप समझाइंदा। शब्दी सुत सीस झुका, हरि पुरख अग्गे करे निमस्कारा। मैं इक्की जेठ जावां वाहो दाह, गुरमुखां चल दुआरा। बाहों पकड़ लवां उठा, तेरे चरन दयां सहारा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा पन्ध मुका, अन्त वखावां पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तरां मेला एका वारा। चुहत्तरां मेला देवां मेल, मेरे साहिब सच्चे गोसाँईंआ। जोत जगावां बिन बाती तेल, बेअन्त बेपरवाहया। अचरज वखावां तेरा खेल, खेलां खेल हर घट थाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाया। मंगां मंग देणा दान, हरि दातार तेरी वड्याईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, शहिनशाह शाह सच्चा पातशाहीआ। एका बख्शणा चरन ध्यान, कँवल कँवल तेरी सरनाईआ। मेरा तेरे उपर माण, तूं पिता तूं ही माईआ। चुहत्तरां भगतां वेखां आण, लोकमात सहिज सुभाईआ। लख चुरासी विच्चों करां पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मेरी वड़याई तेरे हथ्थ, शब्द सुत आख सुणाइंदा। तूं दीन दयाल ठाकर स्वामी समरथ, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार तेरी महिमा गा गा गए अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। मैं आदि जुगादि गावां तेरा जस, जस वेद पुराण सालाहइंदा। अन्तिम पूरी करनी आस, निरासा रूप ना कोए रखाइंदा। तेरे दुआरे जावां वस, सच दुआरा मोहे भाइंदा। तूं भगतां मिलणा हस्स, हस्स हस्स भगत ख़ुशी वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर नज़र कोए ना आइंदा। तुध बिन दूसर नाहीं कोए, हरि जू तेरी वड वड्याईआ। तेरे भगत तेरे जेहे होए, तेरा नूर तेरी रुशनाईआ। तेरा नाउँ मिले ढोए, ढोलक छैणा ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सच्ची आस रखाईआ। सच्ची तेरी इक्को आस, आसा आसा विच रखाइंदा। पारब्रह्म तेरा सच प्रकाश, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। जुगा जुगन्तर तेरा धरवास, मेरी धीर धराइंदा। सदा सुहेले वसणा पास, तेरा विछोड़ा मोहे ना भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला तेरे भगत तेरी झोली पाइंदा। साचा वेला श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। इक्की जेठ खोलूणा इक्क ब्यान, ब्याना मेरे नाउँ रखाईआ। चुहत्तर भगत कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। हाढ़ सतारां होण प्रधान, पर्दा हरि जू दए चुकाईआ। हरिसंगत पक्के इक्क पकवान, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। इक्की इक्की सेव महान, साची सिक्खी दए

समझाईआ। धारों तिक्खी करे खेल महान, निक्की निक्की दए वड्याईआ। चिट्ठी लिखी धुर फ़रमाण, शब्दी सुत करे पढ़ाईआ। अल्फ़ ये ना सके पछाण, पैंती अक्खरी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। इक्की जेठ दिवस सुहाउणा, हरि जू शब्दी शब्द जणाइंदा। चुहत्तरां लेखा लेख लिखाउणा, लिख लिख लेखा हत्थ फड़ाइंदा। लख चुरासी पन्ध कटाउणा, जन्म जन्म ना कोए भुवाइंदा। मात गर्भ फेर ना आउणा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। अद्धविचकार ना किसे अटकाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच विहारा आपणे हत्थ रखाइंदा। चुहत्तर विहारा सत्त चार, सति सतिवादी आप कराईआ। चार जुग दा खेल अपार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। चार वेद खोल्ह किवाड़, चार वरन दए समझाईआ। चार यारी पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सति विहारा हरि निरँकारा, निरगुण आपणा आप कराईआ। सति विहारा करना जग, जीवण जुगत आप जणाइंदा। गुरमुख मेलणे उपर शाह रग, शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दे हीरे नग, आपणी जड़त आप जुड़ाइंदा। अन्तिम पर्दा लए कज्ज, शब्द दुशाला हत्थ उठाइंदा। वेखणहारा नौ खण्ड पृथ्मी भज्ज भज्ज, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। हरि भगत दुआरे बहे सज्ज, साजण आपणी दया कमाइंदा। पीर पैग़म्बरां कराए हज्ज, साचा काअबा आप खुल्हाइंदा। शिवदुआला मन्दिर मस्जिद मट्ठ आपे दस्स, टल आपणे नाम खड़काइंदा। गुरुदुआरा अन्तर वस, गुर गुर शब्दी बूझ बुझाइंदा। कलयुग अन्तिम खेड़ा करे भट्ठ, भट्ठी अग्नी आप तपाइंदा। साधां सन्तां वेखे धीरज जत, सति सन्तोख कवण रखाइंदा। कवण जाणे ब्रह्म मति, ब्रह्म तत्त कवण मिलाइंदा। कवण मिले कमलापति, कँवल नैण कवण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म दो जहान, हरि जू हरि हरि आप वरताईआ। लेखा जाणे जीव शैतान, शरअ शरीअत फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे सिदक ईमान, सबर सबूरी कवण हंढाईआ। साध सन्त वेखे मार ध्यान, कवण बैठा ताड़ी लाईआ। कवण वसे सच मकान, घर घर विच सोभा पाईआ। कवण वेखे अमृत पीण खाण, बिन रसना रस चखाईआ। कवण बिन पढ़यां करे ज्ञान, निष्अक्खर नाद सुणाईआ। कवण कोटन प्रकाश करे भान, बिन तेल बाती दीपक दए जगाईआ। कवण आत्म सेजा होए बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। कवण पंचम नाद शब्द सुणे धुन्कान, छत्ती राग पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा हुक्म आप वरताईआ। नर हरि हरि

नरायण, नर नारी खेल कराइंदा। रसना किसे ना सके कहिण, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां हरि आपे आए लैण, नित नवित वेस वटाइंदा। नाता तोड़े मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण ना कोए वखाइंदा। तन बस्त्र पाए नाम गहिण, साचे भूशन बस्त्र आप सुहाइंदा। इक्क वखाए साचा नैण, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। एथे ओथे बणे साक सज्जण सैण, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला मेल मिलाया, मिलणी जगदीश आप कराईआ। गुर चेला बण बण खेल कराया, खेलणहारा नज़र ना आईआ। बण सज्जण सुहेला फेरा पाया, फिर फिर वेखे सर्ब लोकाईआ। चुहत्तरां अंक आप जुड़ाया, साता चौका गंढु पुवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सेव कमाया, सेवक बणे सेवादार, कर कर सेवा खुशी मनाईआ ।

✳ ६ जेठ २०१६ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ✳

सुणो हरि गाथा अनडिठ, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जुग चौकड़ी साध सन्त गुर अवतार पीर पैग़म्बर काया मन्दिर अंदर लेखा दस के गए सवा गिट्ठ, निरगुण पैमाना परम पुरख आपणा इक्क बणाईआ। लख चुरासी अंदर वन्डया हिस्स,
१३५ हिस्सा हिसाब किताब विच नव नौ आप रखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्क दूजे नूं पए दिस, दिशा उतर पूरब पच्छिम दक्खण ना वंड वंडाईआ। जे कोई पुच्छे हरि जू वसे धाम किस, हरि गुण गा गा हरिभगत देण जणाईआ। जीव
१२ जंत जगत जज्ञासू पीसण रिहा पिस, दो जहान श्री भगवान त्रैभवन धनी आपणी चक्की इक्क चलाईआ। अन्तिम सब नूं देवे आपणी पिठ्ठ, लोकमात सब दा लेखा दए मुकाईआ। निरगुण निरगुण घर सरगुण नाता तोड़ करे साचा हित्त, भविक्ख भेख आपणी रेख रंग ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुखां लेखा आप लिख, गुर अवतारां लहिणा मूल चुकाईआ। नित नवित आवे जावे करे खेल सचखण्ड निवासी साचे देस, लोक परलोक आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, अनडिठड़ी गाथा पुरख समराथा, अजूनी रहित अनभउ प्रकाश पुरख अबिनाश आपणी आप जणाईआ। साची गाथा सुणो जन मीत, हरि मित्र प्यारा आप जणाइंदा। नव नौ चार चलाई रीत, गुर अवतार सेव लगाइंदा। मार्ग दस्स दस्स मन्दिर मस्जिद मट्ठ मसीत, निरगुण आपणा मुख छुपाइंदा। कलयुग अन्त अवल्लड़ी रीत, रीतीवान आप कराइंदा। आत्म परमात्म साचा गीत, चार खाणी चार बाणी चार कुण्ट सीस निवाइंदा। जन भगतां नाद सुणाए इक्क अनडीठ, छत्ती राग भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

१३६ १२

आपणी किरपा कर, बिन अक्खर अक्खर आप बणाइंदा। सुणो राग रंग महल्ल, महल्ला हरि जू आप बणाया। गुरमुख वेख उच्च अटल्ल, घर घर विच सोभा पाया। कह कह गए घर अबचल, अबचल नगर हरि आप बणाया। किसे हथ्थ ना आवे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल, कोटन कोटि जल थल रहे कुरलाया। गगन उपर गगन दीपक रिहा बल, बिन अग्नी हवन कराया। दूर दुराडा वेख नानक कबीर गया मन्न, बेअन्त तेरी प्रभ माया। तूं दाता दातार जननी जन, हउँ बालक सेव कमाया। सो पुरख निरँजण एका राग शब्द सुणाया कन्न, बिन रसना जिह्वा गाया। निरगुण नानक कहे धन्न धन्न धन्न, सरगुण नानक वंड वंडाया। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, निहकर्मी जन भगतां कर्म कांड रोग मिटाया। इक्क वखाई साची सरन, सरनगति आप हो आया। कथा अकथ कहाणी इक्को पढ़न, सुण सुण हरि जू खुशी मनाया। सुरत सवाणी आपणी मंज़ल चढ़न, मंज़ल चढ़ महबूब आपणा इक्को पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा नाम इक्क सुणाया। सुण सुण थक्के जगत कन्न, काया काग वांग कुरलाईआ। इक्को साहिब जाए मन्न, मन मनसा पूर कराईआ। सुणे सुणाए गुण निधान, गुणवन्ता गुण साचा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्क वर, सुन्न समाध कर अज़ाद, इस्म आज़म मुआज़म नूरी अक्खर इक्क सुणाईआ। नूरी अक्खर इक्को अल्फ़, आरफ़ हथ्थ किसे ना आया। ईसा मूसा चढ़ के चुक्या हल्फ़, दोए जोड़ सजदा सीस झुकाया। चारों कुण्ट नज़री आए तेरी तरफ़, दिशा वंड ना कोए वंडाया। तेरा नूर अर्श कुर्श, काया काअबा रूप वखाया। जल्वा जलाल उपर फर्श, ख़ाकी ख़ाक सोभा पाया। रहीम रहिमान कीता तरस, रहिमत आपणी आप कमाया। हरि का संदेश जगत अक्खर करे लिख्त पढ़त, भगत अक्खर कलम शाही नाल ना कोए रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा राग सुणाया।

✳ ६ जेठ २०१६ बिक्रमी चेला सिँघ दे गृह जम्मू ✳

तख्त निवासी एकँकार, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। निरगुण निरवैर निराकार हो त्यार, अनभउ प्रकाश आप धराइंदा। घर विच घर खोल्ह किवाड़, थिर घर साची बणत बणाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म वरतार, अबिनाशी करता आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। साची धार पुरख अकाला, हरि जू हरि हरि आप चलाईआ। सचखण्ड बैठा सच्ची धर्मसाला,

दरगाह साची धाम सुहाईआ। निरगुण जोत नूर निराला, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, निरगुण नर हरि नरायण कराइंदा। सच सिंघासण एका मला, सति पुरख निरँजण सोभा पाइंदा। सति संदेश एका घल्ला, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि करतार, दरगाह साची आप कराईआ। इक्क इकल्ला हो त्यार, साची बणत आप बणाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। कलयुग अन्त खेल अपार, करनी करता आप अख्वाईआ। सुत दुलारा शब्दी धार, धार धार विच प्रगटाईआ। थिर घर साचे देवे वाड़, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। साची रचना पुरख अबिनाश, सो पुरख निरँजण आप रचाइंदा। हरि पुरख निरँजण कर प्रकाश, एकँकारा डगमगाइंदा। आदि निरँजण खेल तमाश, श्री भगवान आप वखाइंदा। अबिनाशी करता हो हो दास, पारब्रह्म प्रभ साची सेवा आप कमाइंदा। सचखण्ड दवारे आपणी करे पूरी आस, आसा आसा विच मिलाइंदा। थिर घर साचे कर निवास, सुत दुलारा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप प्रगटाइंदा। साची धारा थिर घर, हरि साचा करता आप प्रगटाईआ।
१३७ आपे नारी आपे नर, नर नरायण वड वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल वखाईआ। आपणी सेजा आपे चढ़, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण मेला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप १३७
१२ हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी आपणी धारा आप प्रगटाईआ। साची धारा पुरख अकाल, पुरख इकल्ला १२
आप प्रगटाइंदा। वसणहारा सचखण्ड दवार, धुर दरबारा आप सुहाइंदा। सुत दुलारा जन्मे एका लाल, लालन आपणी गोद बहाइंदा। थिर घर साचे दए बहाल, गृह मन्दिर बंक वड्याइंदा। आदि जुगादि सदा सद करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। निरगुण दाता पुरख बिधाता बण रखवाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा वेस वटाइंदा। थिर घर वेस श्री भगवान, निरगुण निरगुण आप प्रगटाईआ। सुत दुलारा कर बलवान, बल आपणा आप समझाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वखाईआ। दाता भिखारी खेल महान, घर घर विच सोभा पाईआ। तख्त निवासी हो मेहरवान, शाह पातशाह शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। भूपत भूप बण राज राजान, इक्क इकल्ला साचे तख्त आसण लाईआ। दर दरवेश बण दरबान, सीस जगदीश आपणा आप झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ मंगे दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर भेव ना कोए जणाईआ।

दूसर भेव ना कोई राह, मार्ग हथ्थ किसे ना आइंदा। तख्त निवासी बण मलाह, आदि आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। शब्द सरूपी सुत बणा, जननी जन आपणी गोद उठाइंदा। दाई दाया सेव कमा, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। रैहबर बण बेपरवाह, बेनज़ीर नज़र आपणी आप टिकाइंदा। जोती नूर कर रुशना, नूर नुराना डगमगाइंदा। दीआ बाती आप टिका, दरगाह साची आप सुहाइंदा। कमलापाती वेख वेख आपणी खुशी रिहा मना, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड दवारा इक्क वड़या, वड वड्डा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपे चढ़, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचे तख्त चढ़ निरँकार, सचखण्ड साचा हुक्म जणाईआ। थिर घर खोल्ह आप किवाड़, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं भर भण्डार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, त्रै त्रै एका रंग रंगाईआ। पंचम जोड़ अगम्म अपार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश निरगुण निरगुण गंढु पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा आदि पुरख पुरख अबिनाशा, दरगाह साची आप सुणाईआ। दरगाह साची मुकामे हक़, हक़ हक़ीक़त आप जणाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार बणाइंदा। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। सुत दुलारे मार्ग दस्स, शब्दी शब्द
१३८ आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क जणाए साचा रस, रस आपणा आप प्रगटाइंदा। १३८
साचा रस श्री भगवान, आपणा आप प्रगटाईआ। शब्दी सुत देवे दान, दाता दानी झोली पाईआ। चरन कँवल कँवल ध्यान,
१२ कँवल कँवल वेख वखाईआ। आप वसाए सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूरज चन्न ना कोई भान, नूर १२
नूर ना कोए वड्याईआ। ना ज़िमी ना असमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप सुणाईआ। साचे सुत सच संदेशा, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। तख्त निवासी इक्क नरेशा, निरगुण निरँकार आप अख्वाइंदा। आदि जुगादी साचा पेशा, बेपरवाह आप प्रगटाइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, घर घर आपणा भेव खुल्हाइंदा। रूप रंग ना कोए रेखा, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्ह निरँकार, अभेद आप जणाईआ। सुत दुलारे कर विचार, सति सतिवादी आप समझाईआ। तेरा मेरा इक्क भण्डार, अखुट्ट कदे ना जाईआ। देवणहार हरि दातार, सचखण्ड वसया सच्चा माहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए आधार, तेरी गोदी गोद सुहाईआ। पंज तिन्न वणज वपार, हट्ट हट्टवाणा इक्क वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ कर आकार, सच अखाड़ा दए वखाईआ। रवि ससि दए आधार, नूर नूर नूर रुशनाईआ। लख चुरासी कर त्यार, त्रै त्रै मेला सहिज

सुभाईआ। निरगुण सरगुण वेख पसार, ब्रह्म पारब्रह्म वंड वंडाईआ। ईश जीव खेल अपार, जगत जगदीश आप समझाईआ। आत्म परमात्म खेल न्यार, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखे विगसे वेखणहार, वेख वेख वेख बिगसाईआ। चार कुण्ट इक्क अखाड़, उतर पूरब दक्खण पच्छिम आपणा रंग रंगाईआ। दहि दिशा वेख पुलाड़, पारब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी वंड संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी झोली पाईआ। वस्त अगम्म अगोचर कर त्यार, त्रैभवण धनी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत इक्क समझाईआ। शब्दी सुत सुत दुलार, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यार, निराकार आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेवा आप वखाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाणा आप अलाइंदा। थिर घर बैठ करन सच्ची कार, सच सुच आप दृढ़ाइंदा। तेरा लेखा अपर अपार, अपरम्पर आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी तेरा रूप प्रगटाइंदा। लख चुरासी तेरा रूप, शब्दी शब्द हरि जणाइंदा। लेखा जाणे शाहो भूप, भूपत आपणी खेल रचाइंदा। वसणहारा चारे कूट, तेरा नाद नाद सुणाइंदा। निरगुण सरगुण ताणा पेटा सूत, तन्द तन्द नाल जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी खेल कराइंदा। लख चुरासी खेलणा खेल, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। निरगुण सरगुण कर कर मेल, पंचम पंच पंच वखाईआ। करना प्रकाश बिन बाती तेल, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। आत्म परमात्म मेला सज्जण सुहेल, घर घर विच खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, हरि जू हरि हरि आप समझाइंदा। सचखण्ड दवारे देवे भिख, थिर घर शब्दी झोली आप भराइंदा। इक्क रखावे तेरा हिस्स, नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेद अभेव आप समझाइंदा। तेरा हिस्सा वंडे वंड, नर हरि साचा आप जणाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड करे कुड़माईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। तेरा नाउँ सुणाए छन्द, गीत गीत आप अलाईआ। बन्धन पाए बन्द बन्द, बन्दी सके ना कोए तुड़ाईआ। तेरा रूप तेरा अनन्द, घर घर विच दए टिकाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर सूरज चन्द, आदि जुगादि सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर कोट ब्रह्मण्ड, खण्डन खण्ड खण्ड वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी एका वस्त दए वरताईआ। शब्द सुत उठ बलवान, हरि जू हरि हरि आप उठाइंदा। निरगुण वेखे मार ध्यान, निरगुण मेल मिलाइंदा। निरगुण गोपी

निरगुण काहन, निरगुण बंसरी नाम सुणाइंदा। निरगुण वसे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण देवे धुर फ़रमाण, सच संदेशा आप अलाइंदा। निरगुण लख चुरासी करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव करे ज्ञान, निष्अक्खर अक्खर आप पढ़ाइंदा। निरगुण एका खेल करे महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। नूर इलाही हो प्रधान, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। मिहबान बीदो नौजवान, बिस्मिल आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, धुर संदेशा नर नरेशा थिर घर साचे आप सुणाइंदा। सुत दुलारा हो त्यार, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। हउँ बालक सेवक सेवादार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी लख चुरासी वेखां विच संसार, बण सेवक सेव कमाईआ। निरगुण रूप मेरा ना कोई आकार, पंज तत्त वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध तेरा भेव दयां खुलाईआ। कवण बिध खोलां भेव, शब्दी सुत मंग मंगाइंदा। कवण रूप करां सेव, बण सेवक सेव कमाइंदा। तूं आदि जुगादी अलख अभेव, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। देवे वर श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। मेरा खेल आदि

१४० अन्त, मध तेरी धार वखाईआ। ब्रह्म जणाई जीव जंत, लख चुरासी विच समाईआ। करां खेल इक्क बेअन्त, बेअन्त वड वड्याईआ। तेरा रूप प्रगटा बण बण साचा कन्त, नारी निरगुण वेस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १४०

१२ कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द दए समझाईआ। सुत शब्द हरि कर प्यार, परम पुरख दया कमाइंदा। जुग जुग खेल करां अपार, भेव कोए ना पाइंदा। पंज तत्त नाता जोड़ संसार, गुर अवतार तेरा नाउँ रखाइंदा। पीर पैग़म्बर दे आधार, कलमा नबी इक्क पढ़ाइंदा। भगवन्त भगत खोल किवाड़, तेरा नाद धुन सुणाइंदा। साचे सन्तां वेख विचार, नेत्र नैण तेरा वखाइंदा। बिन पढ़यां दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग आप वखाइंदा। साचा मार्ग लोकमात, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। शब्दी शब्द देवे दात, पंचम पंच पंच कुड़माईआ। निरगुण निरगुण बन्ने नात, सरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। जुग जुग वेखे मार झात, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खेल कराईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, इक्क इकल्ला वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। आपणा पर्दा देवे खोल, खोलणहार इक्क अख्वाइंदा। तेरा नाउँ तेरे मन्दिर देवे बोल, अनबोलत आपणा राग अलाइंदा। लख चुरासी जीव जंत आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तेरे कंडे देवे तोल, तोलणहारा

नज़र किसे ना आइंदा। बैठा रहे सदा अडोल, अनुभव आपणी खेल वखाइंदा। लख चुरासी अंदर रिहा मौल, मौला आपणा रंग रंगाइंदा। सुत दुलारे तेरे संग करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा रखे माण उपर धौल, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। अन्तिम सद्दे आपणे कोल, गृह मन्दिर आप बहाइंदा। तेरा भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, चौदां विद्या अन्त ना आइंदा। चौदां लोक रहे डोल, चौदां तबक सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाणा एका वार सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा हरि जगदीश, आदि पुरख आप जणाईआ। सुत दुलारे सच हदीस, सचखण्ड निवासी इक्क रखाईआ। जुग चौकड़ी पीसण पीस, कोटन काल काल बिताईआ। शाहो भूप बण बण सीस जगदीश सोहे कोए ना करे रीस, नव नौ नईया जगत डुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह करना खेल, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। नव नौ चार लख चुरासी आत्म परमात्म वेखे जेल, बन्धन बंध ना कोए तुड़ाईआ। जुग जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त बण बण सज्जण सुहेल, सोहला हरि हरि नाम सुणाईआ। पुरख अबिनाशी वसे सदा नवेल, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म साचा राणा, राजन राज आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखे आपणे भाणा, सद भाणे आप वखाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करे खेल महाना, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान, अञ्जील कुरान बोध अगाध खाणी बाणी पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म शब्द ज्ञान, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बाल अञ्याण, दे मत्त आप समझाईआ। गुर अवतार कर प्रधान, नाम प्रधानगी हथ्थ फड़ाईआ। सति सति संदेशा देवे श्री भगवान, साची सिख्या इक्क वखाईआ। निष्अक्खर कर परवान, अक्खर अक्खर वंड वंडाईआ। लेखा लिख लिख लेख महान, लोकमात दए वड्याईआ। पीर पैग़म्बर करन कलाम, कायनात नात सुणाईआ। दो जहानां इक्क पैग़ाम, वड पैग़म्बर आप पढ़ाईआ। आपे पकड़नहारा दामन दाम, दामनगीर बेपरवाहीआ। साचा सजदा करे सलाम, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। साचे सुत तेरा खेल महान, अबिनाशी अचुत आप वखाईआ। अन्तिम चौकड़ वेखे आण, निरगुण निरगुण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेशा आप समझाईआ। धुर संदेशा एका वार, इक्क इकल्ला आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी जाए हार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। अन्तिम ब्रह्मा विष्न शिव रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। त्रैगुण माया करे पुकार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। पंज तत्त मंगण धूढ़ी

छार, मस्तक टिक्का ख़ाक ना कोए रमाइंदा। तेई अवतार दोए जोड़ करन निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार करन हाहाकार, अल्फ़ ये पन्ध ना कोए मुकाइंदा। दस गुर जोत इक्क निरँकार, निरगुण वेख वेख बिगसाइंदा। गोबिन्द मेला सुत दुलार, चेला गुर वड वड्याइंदा। पंचम पंच कर परवान, पंच प्रधान आप वखाइंदा। पंचम सोहण दर राजान, दरगाह साची आप बहाइंदा। पंजां देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द भेव खुल्हाइंदा। शब्द सुत रखणा याद, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण सुणे फ़रयाद, अन्तिम आपणा वेस वटाईआ। एकँकारा देवे दाद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि निरँजण दो जहानां लए लाध, त्रै त्रै आपणा पन्ध मुकाईआ। श्री भगवान लख चुरासी विच्चों लए काढ, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। अबिनाशी करता मोहण माधव माध, मोह आपणा इक्क वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे साथ, सगला संग रखाईआ। ब्रह्म गाए तेरी गाथ, हँ ब्रह्म वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण वखाए आपणा घाट, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। नव नौ चार मुके वाट, पाँधी पन्ध ना कोए वखाईआ। सत्त चार रूप दरसाए साख्यात, निरगुण सरगुण लए समझाईआ। जन भगतां करे पूरी आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिखां अंदर कर कर वास, गृह मन्दिर दए सुहाईआ। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, पुरख अबिनाशी लए मिलाईआ। करे कराए बन्द ख़लास, लख चुरासी बन्धन दए तुड़ाईआ। जिस उपजाया मासों मास, तोला रत्ती मासा अन्त आपणे हथ्थ वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फेरा पाईआ। निरगुण निरगुण रखे साथ, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म करे निवास, निज घर साचे वज्जे वधाईआ। प्रगट हो पुरख अबिनाश, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सम्बल नगर रख निवास, गोबिन्द वेखे चाँईं चाँईंआ। उच्चा टिल्ला पर्बत माण गंवाए कैलाश, केशव आपणी खेल वखाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सुत दए वड्याईआ।

✳ १० जेठ २०१६ बिक्रमी प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू ✳

हरि तख्त निवासी शाहो शाबाश, शहिनशाह दया कमाइंदा। सुत दुलारे पूरी आस, बिन आसा आप वखाइंदा। विष्नूं विश्व रखे साथ, सगला संग निभाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म करे प्रकाश, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। शंकर खेल वेख कैलाश, कल आपणी आप प्रगटाइंदा। त्रैगुण माया तोड़े फास, फंधन आपणा आप बंधाइंदा। पंज तत्त करे दासी दास, दासन

दास सेव कमाइंदा। तेई अवतार जाणे खेल तमाश, खेलणहारा भेव ना आइंदा। भगत अठारां इक्को राग रिहा भास, धुन अनादी नाद सुणाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद चार यार उपजाए आपणी शाख़, पत डाल्ही आप महकाइंदा। गुर गुर अन्तर करे वास, दस दस आपणा मेल मिलाइंदा। पंचम मेला पुरख अबिनाश, निरगुण जोती जोत समाइंदा। सचखण्ड निवासी आपे जाणे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जुग चौकड़ी हास बलास, बेअन्त बेपरवाह आपणी धार वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ जाणे घाट, पत्तण माही डेरा लाइंदा। नव नौ चार वेखे वाट, दो जहानां नैण उठाइंदा। लोक परलोक सगला साथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल हरि हरि रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। सच दुआरे सति पलँग, थिर घर साची सेज सुहाईआ। आदि जुगादि ब्रह्माद वज्जे मृदंग, पारब्रह्म आपणा राग अलाईआ। लख चुरासी जीव जंत आत्म परमात्म इक्क अनन्द, अनन्द आपणा आप वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी अञ्जील कुरान गाए छन्द, सोहला ढोला आप प्रगटाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंडे वंड, जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्द, मंडल मण्डप गृह गृह एका नूर रुशनाईआ। नव नौ चार पाए बन्धन बन्द, बन्दी बन्द ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी ओहला द्वैती कंध, पर्दा राखे बेपरवाहीआ। बेपरवाह पर्दा ढक, शब्दी शब्द खेल खलाइंदा। पुरख अकाल अकाल समरथ, समरथ आपणा वेस वटाइंदा। बिन रसना जिह्वा महिमा गाए अकथ, लेखा लेख आप समझाइंदा। साचे मन्दिर आपे जाणे आपणा जस, जस वेद पुराण हथ्थ ना आइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहानां रिहा नस्स, बण पाँधी सेव कमाइंदा। सति सतिवादी हर घट आपे वस, घट घट आपणा खेल वखाइंदा। शब्द अगम्मी एका नद, अनादी नाद आप सुणाइंदा। सदा सुहेला रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। सुत दुलार तेरी सुणे फ़रयाद, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा बिन लिख्यां लेख, लिख्त विच कदे ना आइंदा। वेखणहारा बिन रूप रंग रेख, रूप रंग रेख विच कदे ना आइंदा। जुग चौकड़ी अवल्लड़ा भेख, बण भेखी वेस वटाइंदा। थिर घर सुहाए तेरा देस, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। लख चुरासी अन्तर कर प्रवेश, तेरी विषेशता आप वधाइंदा। इक्क इकल्ला लए वेख, दूसर दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक्क समझाइंदा। गृह मन्दिर हरि मकान, बेमुकाम आप जणाईआ। धरत धवल ना कोए निशान, धरनी धार ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देण ब्यान, कलम शाही नाल गवाहीआ। हक़ हक़ीक़त लाशरीक

१४३
१२

ना सके कोए पहिचान, पहचान विच कदे ना आईआ। रसना जिह्वा गाए पीर मिहबान, मेहरबान, वडी वड्याईआ। भगत भगवन्त मंगण एका दान, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। करे खेल श्री भगवान, भेव अभेद आप छुपाईआ। सुत दुलार कर प्रधान, जगत प्रधानगी इक्क वखाईआ। सति संदेशा देवे आण, सति सति सति सालाहीआ। ब्रह्म मति दे इक्क ज्ञान, आत्म तत्त तत्त जणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर घट वसे साचा साँईंआ। साँईं सच्चा वसे हर घट, घट घट भेव जणाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। लख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुण्ट आप भुवाइंदा। शब्दी तेरा मार्ग दस्स, गुर गुर आप सालाहइंदा। गुर सतिगुर कर प्रकाश, नूरी जोत डगमगाइंदा। पंज तत्त पूरी करे आस, सच भरवासा इक्क वखाइंदा। काया मन्दिर अंदर वखाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल रूप वटाइंदा। प्रगट होए साख्यात, सखी सरवर सुल्तान शाह पातशाह आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द गुर सालाहइंदा। शब्दी शब्द गुरदेव, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ जाणे साची सेव, सेवक सेवा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह अभेव, भेव अभेद ना किसे जणाईआ। आदि जुगादि सदा सदा नेहकेव, निहचल धाम बैठा आसण लाईआ। तेरा गीत गाए गोबिन्द बिन रसना जेहव, रस आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत तेरी सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। रुतड़ी सोहे हरि बसन्त, पत डाल्ही आप महकाइंदा। तेरा खेल जुगा जुगन्त, लख चुरासी बूटा लाइंदा। वेखणहारा श्री भगवन्त, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। घट घट बणाए आपणी बणत, घर घर आपणा आसण लाइंदा। तेरा नाउँ जणाए मंत, मन मणीआं आप प्रगटाइंदा। सुरत सवाणी बणे कन्त, कन्त कन्तूहल शब्दी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे दर, दर मन्दिर आप सुहाइंदा। दर मन्दिर गृह प्रकाश, घर घर नाद वजाईआ। आदि अन्त पावे रास, निरगुण सरगुण गोपी काहन नचाईआ। निराकार साकार खेल तमाश, निराधार वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जुग जुग रखण आस, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच प्रकाश करे गृह मन्दिर, घर घर वज्जे वधाईआ। तेरा मेला साचे अंदर, अंदरे अंदर वेख वखाईआ। तेरा वासा डूँग्घी कंदर, कन्दुा घाट ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, एका गुण समझाईआ। एका गुण हरि गुणवान, सच सच दृढ़ाइंदा। शब्दी मेला विच

जहान, हरिजन रूप वखाइंदा। हरिभगत कर परवान, आप आपणे अंग लगाइंदा। हरि सन्त सति निशान, सति दुआरे आप उठाइंदा। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, सुघड़ आपणा बन्धन पाइंदा। गुरसिख लेखा मुके आण, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। कर प्रकाश उच्च मकान, दीआ बाती कमलापाती आप जगाइंदा। साचा साथी बणे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लेखा लिख्त विच ना आइंदा।

✳ १० जेठ २०१६ बिक्रमी सदरो देवी पिण्ड दुमाणा जम्मू ✳

आदि जुगादि सति भण्डारा, हरि हरि राम नाम वरताइंदा। जुगा जुगन्तर खोल्ह दुआरा, गुर अवतार सेव लगाइंदा। आत्म परमात्म दे सहारा, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे अगम्म अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप उपाइंदा। साचा नाम एकँकार, ओअंग आपणा रूप जणाईआ। करे खेल अपर अपार, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। लख चुरासी दए आधार, जीव जंत समझाईआ। शब्द अनादी इक्क धुन्कार, नाद अनादी आप अल्हाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, आदि जुगादी वड शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप वड्याईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, नर हरि नरायण आप प्रगटाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यार, परम पुरख झोली पाइंदा। काया मन्दिर खोल्ह किवाड़, गृह साचे आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप वखाइंदा। साचा नाम बिन रूप रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। घट घट वजाए मृदंग, मर्द मर्दाना आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म इक्क अनन्द, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप वखाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, हरिभगत लए प्रगटाईआ। गीत सुहाग सुणाए छन्द, अक्खर राम नाम पढ़ाईआ। जगत विकारा खण्ड खण्ड, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम नाम इक्क समझाईआ । राम नाम गुरू गुरदेव, देव आत्मा आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ साची सेव, निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। गायण गीत रसना जेहव, मन्दिर मसीत शिवदुआला मट्ठ वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम हर घट आप धराइंदा। घट घट अंदर हरि हरि राम, रमइया आपणा रूप वखाईआ। जन भगतां करे पूरन काम, पूरन इच्छया आप कराईआ। अमृत आत्म प्याए जाम, जगत तृष्ना भुख गंवाईआ। अन्ध अन्धेर मिटाए अन्धेरी शाम, निरगुण साचा चन्द चढ़ाईआ। एका जोत करे प्रकाश कोटन भान, रवि ससि मुख शरमाईआ।

सति पुरख निरँजण सति सतिवादी देवे दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। एका सुणाए शब्द धुन्कान, अनादी धुन आप उपजाईआ। गुरमुख सज्जण बह बह गाण, गावत गा गा खुशी मनाईआ। काया मन्दिर सच मकान, हरि जू ठाकर बैठा आसण लाईआ। दिवस रैण रैण दिवस वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। जिस जन देवे आपणा नाम, सच पैग़ाम दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राम राम एका नाम नाम समझाईआ। राम नाम इक्को रंग, दूसर वेस ना कोए वटाइंदा। इक्को सेज इक्क पलँग, एका आसण लाइंदा। इक्क मर्दाना इक्क मृदंग, एका नौबत आप वजाइंदा। एका दूई द्वैत भरमां ढाहे झूठी कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। इक्क वखाए परमानंद, निज आत्म रस चखाइंदा। इक्क मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार झूठा गंद, सच सुच इक्क दृढ़ाइंदा। इक्क भगत भगवान पाए आत्म ठंड, परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाइंदा। काया गोलक साचा मन्दिर, हरि जू हरि हरि आप बणाया। जन भगतां वखाए अंदरे अंदर, दूसर नज़र किसे ना आया। लख चुरासी मन वासना भाउँदी बन्दर, मन का मणका ना कोए भुवाया। साढे तिन्न हथ्थ वसे खण्डर, महल अटल ना कोए रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम हर घट आप
१४६ छुपाया। घट घट अंदर हरि का नाउँ, हरि जू हरि हरि आप टिकाईआ। गुरमुखां वखाए फड़ फड़ बाहों, निज नेत्र नैण १४६
खुल्हाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी मेल मिलाए अगम्म अथाहों, बेपरवाहो वड वड्याईआ। लेखा जाणे पिता माउँ, बालक
१२ आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन एका राम नाम समझाईआ। एका १२
राम नाम वड वड्डा गुण, हथ्थ किसे ना आइंदा। लख चुरासी सरवण रही सुण, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। आत्म उपजे ना कोई धुन, रसना जिह्वा राग सर्ब अल्हाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भगत भगवन्त साचे सन्त जुगा जुगन्तर लए चुण, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस आपणी दया कमाइंदा। दया कमाए ठाकर स्वामी, निर्धन सरधन देवे वड्याईआ। ग़रीब निमाणा अन्तरजामी, निर्धन आपणा रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी इक्को बाणी, भगत भगवन्त आप सुणाईआ। सीता सुरती राम कहाणी, गोपी काहन बंसरी नाम वजाईआ। साची नईया खेल महानी, साचा सईया आप वखाईआ। अमृत जल ठंडा पाणी, घर सागर दए प्रगटाईआ। मेल मिलावा हाणीउँ हाणी, हरि जू आपणी बणत बणाईआ। राम नाम अकथ कहाणी, बिन हरिभगत हथ्थ किसे ना आईआ। भरमे भुल्ली चार खाणी, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका राम नाम जन भगतां झोली आप भराईआ। राम नाम झोली भर, भय भयानक आप आप धराइंदा। निरभउ चुकाए झूठा डर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। हरिजन इक्को अक्खर लए पढ़, चौदां विद्या माण मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी देवे इक्को दान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एका मन्त्र नमो जप, वास्तक साची बूझ बुझाईआ। त्रैगुण ममता तोड़े तप, अग्नी तत्त दए गंवाईआ। इक्क वखाए साचा हट्ट, चौदां लोक हट्ट विच खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव एका मन्त्र रहे रट, एका नाम रसना जिह्वा नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा मन्त्र, मन्त्र नाम आप पढ़ाईआ। नाम मन्त्र हरिजन पढ़, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। राम रमइया नरायण नर, नर हरि आपणा खेल कराइंदा। डुब्बदे पत्थर जायण तर, जिस जन आपणा चरन छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े जग लए फड़, फड़ फड़ आपणी गंढु पुवाइंदा ।

✳ १० जेठ २०१६ बिक्रमी कर्म देई दे गृह करंघील जम्मू ✳

राम भगत राम भगत, राम राम राम वड्याईआ। राम नूर राम शक्ति, बेअन्त बेपरवाहीआ। राम बूंद राम रक्त, राम हर घट रिहा समाईआ। राम निरगुण राम सरगुण जगत, अजूनी जून राम खेल खलाईआ। राम आदि जुगादि जुग जुग होए प्रगट, दर दर घर घर आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नूर नूर वखाईआ। नूर राम राम नाम, नाम नामा हरि जणाइंदा। आदि जुगादी इक्को बाण, एकँकारा आप उठाइंदा। जुगा जुगन्तर दो जहान, दोए दोए रूप वेख वखाइंदा। शब्दी जोती हो प्रधान, जोती जाता वेस वटाइंदा। नाउँ रख गोपी काहन, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। गृह बंसरी नाम धुन्कान, घट मन्दिर आप वजाइंदा। करे खेल नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणे रंग रंगाइंदा । राम भगत जुगत धार, जग जीवण आपणे हथ्थ रखाईआ। एथे ओथे वेखे विगसे करे विचार, पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह वड वड्याईआ। कादर कुदरत ख़ालक ख़लक पावे सार, मख़लूक आपणे रंग रंगाईआ। सालस बण आप निरँकार, हक़ हक़ीक़त वेखे सांझा यार, लाशरीक नूर खुदाईआ। दर बदर फिरे वारो वार, बण दरवेश परवरदिगार एका अल्फ़ी तन हंढाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे विच संसार, जन जननी रूप वटाईआ। जन जननी पारब्रह्म, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले शब्दी धारा आपे जम्म, आप आपणी गोद सुहाइंदा। नाम निधाना श्री भगवाना सति सतिवादी बेड़ा बन्न्, अवण गवण पार वखाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी एका राग सुणाए कन्न, राग रागां मूल चुकाइंदा। भाण्डा भरम भउ गढ़ हँकारी तोड़ गृह मन्दिर वखाए एका प्रकाश साचा चन्न, सूरज चन्द मुख शरमाइंदा। भगत भगवान घर जाए मन्न, मन्न मनसा पूर वखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नज़र ना आए नेत्र अन्न्, ज्ञान नेत्र गुरमुखां आप खुल्हाइंदा।

✳ १० जेठ २०१६ बिक्रमी तेज भान दे गृह शेख़सर जम्मू ✳

साचे तख्त हरि जू चढ़दा, सचखण्ड निवासी आसण लाईआ। आपणी करनी करता पुरख आपे करदा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लेखा जाणे दो जहान दा, लोक परलोक वेख वखाईआ। सति संदेश नर नरेश श्री भगवान शब्द अगम्मी आया घल्लदा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अमृत रस चरन कँवल पी पी पलदा, अनुभव आपणी धार चलाईआ। दीपक प्रकाश बिन बाती तेल बलदा, सचखण्ड निवासी घर घर करे रुशनाईआ। अग्नी हवन त्रैभवन कदे ना सड़दा, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। भगत भगवन्त सन्त सुहेले आपे फड़दा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज घाड़न घड़दा, भन्नणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। रूप धरे नर हरि नरायण हरि दा, नारी कन्त आप अख्वाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बणे बरदा, बण सेवक सेव कमाईआ। निष्अक्खर साचे मन्दिर बह बह आपे पढ़दा, अक्खशर मातलोक करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त आसण लाईआ। साचे तख्त हरि सुल्तान, तख्त निवासी आसण लाइंदा। दो जहानां भूप राजान, भूपत भूप खेल कराइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, सच संदेशा आदि जुगादि सुणाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, रूप अनूप आप वटाइंदा। निरगुण सरगुण दे ज्ञान, बोध अगाध आप जणाइंदा। साची रीती विच जहान, जग जीवणदाता आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल हरि निरँकार, आदि जुगादि जणाईआ। जुग चौकड़ी कर कर पार, लेखा लहिणा दए मुकाईआ। सेवा ला गुर अवतार, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। पीर पैग़बर करे ख़बरदार, बेख़बर आप जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा वारो वार, वार थित ना कोए वखाईआ। सति संदेशा देवणहारा अन्तिम वार, आदि पुरख आदि आदि करे जणाईआ। साचे

सुत दे आधार, शब्दी शब्दी बूझ बुझाईआ। कलयुग अन्तिम होए त्यार, त्रैगुण अतीता आपणा रंग वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाईआ। खेले खेल पुरख अकाल, अकल कल भेव ना आइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, दो जहानां वेख वखाइंदा। लेखा जाणे काल महांकाल, भेव अभेद आप जणाइंदा। लख चुरासी फुल्ल फुलवाड़ी वेखे पत डाल्ह, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। जुगा जुगन्तर भगत भगवन्त साची घालण घाल, कीती घाल लेखे लाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन वेखे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची धार आप बंधाइंदा। साची धारा हथ्थ निरँकार, निरगुण आपणा खेल कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेवा इक्क समझाईआ। जुग चौकड़ी कर विचार, आप आपणा बन्धन पाईआ। अन्तिम लहिणा देणा दए कर्ज उतार, सब दा लेखा आप मुकाईआ। शब्द संदेशा नर नरेशा देवणहारा एका वार, इक्क इकल्ला आप सुणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। सच सुनेहड़ा देवणहार, हरि जू आपणा हुक्म वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, सोया कोए नजर ना आइंदा। जगत अवल्लड़ी चले चाल, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख सज्जण गुर गुर भाल, हरि हरि मेला आप कराइंदा। एथे ओथे दो जहान अंदर बाहर गुपत ज़ाहर चले नाल नाल, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, निर्धन सरधन देवे माण, माण निमाणयां आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान, भगतन आपणे रंग रंगाइंदा। भगतन रंग रंग चलूल, काया चोला आप रंगाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सदा सुहेला ना जाए भूल, अभुल्ल बेअन्त बेपरवाहीआ। गुरमुख बणाए उपजाए आपणी कुल, कुलवन्ता आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। सदा सुहेला आपे होए सुलाहकुल, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तोलणहारा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। एथे ओथे दो जहान रहे अडोल, ना डोले ना कोए डुलाईआ। साची वस्त हरि रखे कोल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप वरताईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारा आपे खोल्ह, थिर घर आपणा हट्ट चलाईआ। नाम धारन एकँकारा बोल, आपणा अंक दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए वखाईआ। दूसर अवर ना कोए पेख, नज़र नैण नैण ना आइंदा। पुरख अबिनाशी निरगुण सरगुण वटाए भेख, भेख अवल्लड़ा आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, लोकमात फेरा पाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, विष्न ब्रह्मा

शिव सेव कमाइंदा। लेखा जाणे मूंड मुंडाए धारी केस, धरनी धरत धवल आपणा चरन टिकाइंदा। लेखा जाणे पीर पैग़म्बर गुर अवतार दहि दिशा आपे वेख, साचा हिस्सा आप वंडाइंदा। लहिणा देण चुकाए औलीए पीर मुलां शेख, शरअ शरीअत वंड वंडाइंदा। सन्त सुहेले भगत भगवन्त गुरू गुर चेले रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। दरस दिखाए नेतन नेत, सदा सद करे साचा हेत, नित नवित वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर आपणा आसण लाइंदा। हरि मन्दिर सोहे साचा आसण, हरि जू हरि हरि आप लगाईआ। तख्त निवासी पुरख अबिनाशण, साचे तख्त सोभा पाईआ। हुक्मे अंदर पृथ्मी आकाशन, गगन मंडल रवि ससि सूरज चन्द रिहा भुवाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे कराए दासी दासन, सेवक सेवादार साची सेव इक्क समझाईआ। घट घट अंदर नूर कर प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। शब्द अनाद धुन अनहद वाजण, घर मन्दिर आप सुणाईआ। करे खेल ग़रीब निवाजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाईआ। सच दुआरा सोभावन्त, सतिगुर पूरा आप सुहाइंदा। आपणी महिमा जाणे बेअन्त, भेव अभेद ना किसे खुल्हाइंदा। करे खेल आदि अन्त, जुग जुग आपणी धार चलाइंदा। लख चुरासी साचा कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। गुरमुख गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, भगत
१५० भगवान आपणे रंग रंगाइंदा। लहिणा देणा चुकाए साचे सन्त, सति सतिवादी फेरा पाइंदा। कलयुग वेखे लेखा अन्तिम अन्त, १५०
अन्त आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी धर
१२ आपे कल, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। नव नौ चार अछल अछल, वल छल आपणी धार वखाईआ। सच सिँघासण १२
बैठा मल, एथे ओथे दो जहान आपणा हुक्म आप वरताईआ। आप प्रगटाए आपणा बल, बलधारी आप हो जाईआ। जोती शब्दी निरगुण निरगुण रल, सरगुण सरगुण लए उठाईआ। वसणहारा धाम अबचल, अबचल नगरी इक्क वखाईआ। सम्बल संदेसा एका घल्ल, सच सच दए प्रगटाईआ। नव नौ खण्ड पृथ्मी जाए हल्ल, धौल धर्म नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म बिन हुक्मे आप वरताईआ।

✳ ११ जेठ २०१६ बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह शेखसर जम्मू ✳

भगवन रूप आया भगवान, गृह भगतां भाग लगाइंदा। विश्व विष्नूं देवण आया दान, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा।

ब्रह्मा ब्रह्म देवे सच ज्ञान, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। शंकर लहिणा चुकाए अन्त कल्याण, कल आपणी आप रखाइंदा। त्रैगुण मंगे चरन ध्यान, नेत्र नैण नैण शरमाइंदा। पंज तत्त वेखे मार ध्यान, कवण दुआरे हरि जू सोभा पाइंदा। गुर अवतार तुटण माण, अभिमाण नज़र कोए ना आइंदा। पीर पैग़म्बर सारे गाण, ग़फ्लत विच कोए रहिण ना पाइंदा। भगत भगवान चरन धूढ़ देवे अशनान, तीर्थ तट इक्क वखाइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वखाइंदा। निरगुण सरगुण खेल महान, जोती जाता डगमगाइंदा। वसणहारा सच मकान, साची नगरी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा रूप धराइंदा। आपणा रूप भगवन रख, रक्षक हरि हरि आप कराईआ। निरगुण निरगुण हो प्रतख, सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। सति सतिवादी बोल अलख, अलख एका नाअरा लाईआ। हँ ब्रह्म मार्ग दस्स, दहि दिशा दए वड्याईआ। भगतन अन्तर आपे वस, वस्तू आपणी दए वखाईआ। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी गवाउँदा रिहा आपणा जस, कलयुग अन्तिम जस भगतां आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा रूप वटाईआ। भगवन रूप अगम्म अपार, नर हरि नरायण आप वटाइंदा। भगतन वेखे सच
१५१ दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। तख्त निवासी हो उज्यार, एका डंका नाम वजाइंदा। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा १५१
नज़र ना आइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। धुर फ़रमाणा एका वार, एकँकार
१२ आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा वेस वटाइंदा। वेस अवल्लड़ा एकँकार, १२
अकल कलधारी आप वटाईआ। भगत वछल हो त्यार, गिरवर गिरधार, दीनन आपणी दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, नेत्र नैण जाग खुल्हाईआ। आओ वेखो हरि दुआर, हरि जू बैठा आसण लाईआ। अमृत जल ठंडा ठार, चरन कँवल कँवल रखाईआ। कैलाश तेरा वेख पुलाड़, कल आपणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन मेले घर सच्चे सच्चा साँईंआ। घर मेला चाउ घनेरा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। भगवन वसे भगतन नेरा, नेर नेर आपणी दया कमाईआ। विष्नूं वेखे खुल्ला वेहड़ा, वाहवा वडी वड्याईआ। ब्रह्मा वेखे पारब्रह्म खेड़ा, कवण घाट बैठा आसण लाईआ। शंकर कहे कवण करे हक़ नबेड़ा, आदि जुगादि हुक्मी हुक्म वरताईआ। त्रैगुण बन्नृणहारा बेड़ा, आपणी गंढु वखाईआ कलयुग अन्तिम निरगुण जोत नाउँ रखाए सिँघ शेरा, शमशीर आपणा नाउँ हथ्थ उठाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कर कर खेल अन्तिम आपणा पाया घेरा, बाहर निकल कोए ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैग़बर आपणा आपणा ला ला बैठे डेरा, धूणी जगत ख़ाक रमाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। वेखणहारा हरि भगवान, भगवन आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे जीव जहान, जोग जुगत आप बणाइंदा। देवणहारा जीआं दान, दानी दाता दया कमाइंदा। करनहार अन्त कल्याण, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवन्त कर परवान, सच परवाना इक्क जणाइंदा । सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, हँ ब्रह्म आपणे लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप सालाहइंदा। हरिजन सालाहे आप हरि, वड वड्डा वड वड्याईआ। विष्नूं हो हो देवे वर, घर घर फेरा पाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म रूप अंदर वड़, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। शंकर सीस चरनां धर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। त्रैगुण ममता जाए मर, मरन जीवण आपणे हथ्थ रखाईआ। पंज तत्त काया घाड़न घड़न, घड़ घड़ भन्ने बेपरवाहीआ। सच महल्ले आपे चढ़, साचे तख्त सोभा पाईआ। नव नौ चार पार कर, पारब्रह्म प्रभ खुशी मनाईआ। भगतन मेला इक्को दर, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। सति सतिवादी अक्खर पढ़, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। एका रूप नरायण नर, नर नारी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत भगवन आपणी गोद सुहाईआ। साची गोद सोहण भगत, हरि भगवन आप उठाइंदा। देवे वड़याई विच जगत, जीवण जुगत आप जणाइंदा। लेखे लाए बूंद रक्त, रत्ती रत्त रत्त सुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां मेल मिलाइंदा। भगवन मेला भगत दुआर, नौ खण्ड पृथमी रही कुरलाईआ । निउँ निउँ सजदा करे सर्ब संसार, ख़ालक ख़लक नज़र ना आईआ। उच्ची उच्ची कूक करन पुकार, रसना जिह्वा रही कुरलाईआ। मन्दिर मट्ठ शिवदुआला गुरुदुआर होया विभचार, विभचारी आपणी धार ना किसे जणाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, सरगुण अन्तर लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा सांझा यार, सगला संग आप रखाईआ। कर्म धर्म जन्म वरन बरन करे पार, साची सरन आप समझाईआ। करनी करन करता पुरख एकँकार, कल आपणी आप वरताईआ। निहकलंक नर नरायण कल्कीधर हो उज्यार, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ । भगत भगवन्त साचे सन्त गुरमुख गुरसिख लाए पार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। नाता तोड़ जगत संसार, संसार सागर करे पार, मँझधार ना कोए रुड़्हाईआ। जन भगतां करन आए आप दीदार, आपणा दीदार होर ना किसे कराईआ। लख चुरासी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर कलयुग अन्त होए ना कोए सहाईआ। हुक्मे बद्धे खायण मार, हुक्मी हुक्म आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। सति दुआरे दर घर साचे सारे करन निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरि भगतन वेखे चाँईं चाँईंआ। चाउ घनेरा हरि प्रभ मीत, एका एक रखाइंदा। आपे जाणे अवल्लड़ी रीत,

भेव कोए ना पाइंदा। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, गुरमुख अंदर डेरा लाइंदा। सदा सुहेला वसे चीत, विछड़ कदे ना जाइंदा। जन भगतां गाए आपे गीत, आपणा गीत भगतां आप सुणाइंदा। काया अन्तर करे ठांडी सीत, जगत बसन्तर आप बुझाइंदा। चरन दुआरा हस्त कीट, कीट हस्त एका रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप वड्याइंदा। भगत वड़याए नर हरि, नरायण आपणी महिमा ना किसे जणाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सारे कहिण, कह कह पल्लू गए छुडाईआ। नेत्र पेख सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ नैण नैण मिलाईआ। चरन कँवल उपर धवल सारे मंगण ख़ाक रेण, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। आदि जुगादि जुग जुग चुकाए लहण देण, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत भगवन्त सदा सुहेला साक सज्जण बणे सैण, सगला संग आप निभाईआ। कलयुग अन्तिम एका वार कर इकट्ठे आया लैण, अग्गे पिच्छे कोए रहिण ना पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन रसना कहिण, तिस सचखण्ड दवारे दए बहाईआ।

१५३
१२

✳ ११ जेठ २०१६ बिक्रमी फ़रंगी राम दे गृह तूतां वाली जम्मू ✳

पुरख अबिनाशी इक्क इकेला, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। मेल मिलाए गुरू गुर चेला, गुर चेला रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त सज्जण सुहेला, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सन्त साजण जाणे वेला, थित वार ना कोए रखाइंदा। गुरमुख गुर गुर मेलण मेला, मिल मिल आपणी ख़ुशी मनाइंदा। गुरसिखां चाढ़े साचा तेला, त्रैगुण अतीता सगन मनाइंदा। धाम वसाए इक्क नवेला, निरगुण सरगुण आप वड्याइंदा। अचरज खेल प्रभू प्रभ खेला, खेलणहारा दिस ना आइंदा। जन भगतां कटे राए धर्म दी जेला, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर वेखणहारा मेला, समुंद सागर फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल श्री भगवान, सति सतिवादी आप कराईआ। सचखण्ड दा सच निशान, सति दुआरे आप प्रगटाईआ। धरनी धरत धवल देवे माण, चरन कँवल कँवल चरन देवे सरन सच्ची सरनाईआ। सतिजुग दा सति निशान, सति धर्म नींह रखाईआ। करे खेल नौजवान, नर नरायण वड वड्याईआ। अस्थिल सोहे इक्क मकान, बेमुकाम आप बणाईआ। आपे होया जाणी जाण, दूसर भेव ना कोए रखाईआ। तख़्त निवासी वड मेहरवान, साचे तख़्त बह बह हुक्म मनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नेत्र खोल्ह करन ध्यान, नैण नैण नैण उठाईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा वेख होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गा गा आए गाण, रसना जिह्वा सेव कमाईआ। आदि अन्त श्री भगवन्त हरि का रूप ना सके सर्ब पछाण, बेअन्त कह कह पल्लू आए छुडाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, दो जहानां वेस वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क ज्ञान, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। जोती शब्दी निरगुण निरगुण आपणी धार आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। अमृत सरोवर आप प्याए ठांडा जला, जलधारा सर्ब समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा वेस आप धराइंदा। वेस धरे नर निरँकार, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। सति सतिवादी साची कार, सति पुरख निरँजण आप कमाइंदा। बोध अगाधी शब्द जैकार, जै जैकारा आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण दए आधार, गुर अवतार वेख वखाइंदा। दीवा बाती कमलापाती कर उज्यार, गृह मन्दिर आप टिकाइंदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। लहिणा देणा जाणे बाकी विच संसार, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। बन्द किवाड़ा खोल्हे ताकी, घर घर विच वखाए साची हाटी, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाइंदा। तीर्थ ताटी इक्क इकांती चढ़ चढ़ वेखे उच्ची
१५४ घाटी, उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पाइंदा। जन भगतां देवे साची दाती, अन्त मेट अन्धेरी राती, गृह मन्दिर साचा चन्द चढ़ाइंदा। १५४
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जुग करता आपणा खेल कराइंदा। जुग
१२ करता खेल करे अगम्म, भेव किसे ना आया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बेड़ा बन्न्ह, जुग जुग आपणे कंध उठाया। गुर १२
अवतार देवे नाम धन, धन ख़ज़ाना इक्क वरताया। भगत भगवान जाए मन्न, मन मणका आप भुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल सबाया। खेले खेल सर्ब घट वासी, घट अन्तर सोभा पाइंदा। प्रगट हो पुरख अबिनाशी, आबिनाशी आपणी धार चलाइंदा। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां बणे दासन दासी, सेवक सेव रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। मेल मिलाए दर घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। निरगुण रूप निरगुण धर, धर धर धरनी दए वड्याईआ। सन्त सुहेले आपे वर वर, वर घर आपणा आप जणाईआ। आत्म परमात्म आपे फड़ फड़, नाम डोरी गंढु वखाईआ। काया मन्दिर उच्चे टिल्ले आपे चढ़ चढ़, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। सति दुआरे आपे खड़ खड़, साख्यात रूप निरगुण नूर करे रुशनाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़ पढ़, जन भगतां करे पढ़ाईआ। आपणी मरनी आपे मर मर,

१५५

१२

गुरसिख जीवत रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं लेखा जाणे थनंतर, थिर घर वासी खेल खलाइंदा। नव नौ वेखे लग्गी बसन्तर, ब्रह्मण्ड खण्ड अग्नी तत्त तपाइंदा। दो जहानां कलयुग अन्त इक्क सुणाए साचा मन्त्र, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म बणाए बणतर, ईश जीव जोड़ जुड़ाइंदा। एका ढोला गगन गगनंतर, सचखण्ड निवासी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। गृह मन्दिर सोहे पंज तत्त, तत्तव आपणा आप बुझाईआ। एका रूप जणाए ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। सति सन्तोख धीरज देवे सति, सति सतिवादी दया कमाईआ। आत्म परमात्म बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। इक्क सुणाए साची गथ, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्तिम पवे भट्ठ, भट्ठ खेड़ा सर्ब वखाईआ। जन भगतां मार्ग साचा दस्स, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका राह चलाईआ। हरिजन हरि जू गाए जस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ।

✳ ११ जेठ २०१६ बिक्रमी ज्ञान चन्द दे गृह तूतां वाली जम्मू ✳

साची साखी साख्यात, नक़ाब मुख सुहाईआ। उकाब लेखा पारजात, आकबत वेखे सच्चा माहीआ। हरि गोबिन्द देवे दात, दीनन दया कमाईआ। पूरब लहिणा कर्म बरात, जन्म जुगत वड्याईआ। लहिणा देणा रखे हाथ, लख चुरासी कोटन कोटि जीव भुवाईआ। गुर गुर कथा कर कर बात, बातन भेव अभेद खुल्हाईआ। पशू पंखी पंछी पूरी करे आस, सख़ी सरवर सुल्तान सच्चा शहिनशाहीआ। बेआब ना होए कोई बेआस, आसा सब दी पूर कराईआ। आदि जुगादि सर्ब गुणतास, गुण आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी किरत सब दी रिहा भाख, बिन नेत्र वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चोला चोले नाल बदलाईआ।

✳ ११ जेठ २०१६ बिक्रमी शांती देवी दे गृह तूतां वाली जम्मू ✳

चोरां यारां चुक्की ठग्गी, ठग्ग गुरमुख रूप वटाईआ। त्रैगुण तत्त बुझी अग्गी, अग्नी तत्त गंवाईआ। रसना जिह्वा

नाता छुटा मदी, मदि रसना मोह मिटाईआ। राए धर्म दी छुट्टी बद्धी, चुरासी तन्द आप कटाईआ। चौथे जन्म निमस्कार कीती अद्धी, हरि गोबिन्द सीस झुकाईआ। पौली बण चलाई खड्डी, खड्डा कन्ढी इक्क पुटाईआ। माटी ख़ाक रुली हड्ड हड्डी, नाड़ी नज़र कोए ना आईआ। बीत गई साढे तिन्न सदी, सद्दा घर घर देवे माहीआ। आत्म परमात्म आपे फद्दी, जन्म जन्म विच भुवाईआ। दर दर घर घर लहिणा देणा लेखा देवे हिसाब किताब रिहा ना कोए छड्डी, लेखा आपणा आप मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, लख चुरासी आपणी गोद वखाए विश्व यद्दी, यद आपणी आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग लहिणा लेखे पाईआ।

✳ ११ जेठ २०१६ बिक्रमी शाहणी दे गृह तूतां वाली जम्मू ✳

हरि हरि नाउँ हरिजन रंग, हरी हरि एका वस्त वरताइंदा। हरि हरि नाउँ हरिजन मृदंग, हरी हरि आत्म परमात्म आप वजाइंदा। हरि का नाउँ हरिजन संग, हरी हरि सगला संग निभाइंदा। हरि का नाउँ हरिजन अनन्द, हरी हरि आत्म अनन्द इक्क प्रगटाइंदा। हरि का नाउँ हरिजन छन्द, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। हरि का नाउँ हरिजन तोड़े बन्दी बन्द, लख चुरासी फंद कटाइंदा। हरि का नाउँ हरिजन टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल दीन दयाल दया कमाइंदा। हरि का नाउँ हरिजन सदा बख्शंद, समरथ सिर हथ्थ आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका मन्त्र, नाउँ आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म साचा मन्त्र, लख चुरासी जीव जंत वड्याईआ। लेखा जाणे गगन गगनंतर, गृह मन्दिर काया अंदर घर घर खुशी मनाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन बुझाए बसन्तर, सांतक सति सति कराईआ। माणस जन्म बणाए बणतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र नाम समझाईआ। एका मन्त्र वड देवी देव, हरि नमो नमो जणाइंदा। आदि जुगादी अलख अभेव, भेद अभेद आप खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण साची सेव, सेवक सेवा आप कराइंदा। रसना जिह्वा अमृत मेव, राम रस आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र नाम सुणाइंदा। साचा मन्त्र आदि जुगादी सोहँ सो, हँ ब्रह्म ब्रह्म समझाईआ। दुरमत्त मैल देवे धो, निर्मल नूर नूर नूर रुशनाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म जाए छोह, ईश जीव करे कुड़माईआ। भगतां जिहा प्रभ आपे हो, भगवन रंग चढ़ाईआ। धुरदरगाही जुगा जुगन्तर लै के आया ढोआ ढो, साचा नाम हरिजन झोली पाईआ। साचे मन्दिर निरगुण जोत करे लोअ, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। नाता तोड़े जगत विकारा पंचम मोह, माया ममता दए

गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म एका घर वसाईआ।

✳ ११ जेठ २०१६ बिक्रमी गूढ़ा राम दे गृह शेख़सर जम्मू ✳

निरगुण सरगुण शब्द इकट्ठ, सरगुण निरगुण आप कराइंदा। भगत भगवन्त मार्ग दस्स, सन्त साजण राह चलाइंदा। गुरमुख गुर गुर हिरदे वस, हरि हरि आपणा भेव खुल्हाइंदा। गुरसिख अमृत साचा रस, चरन सरोवर इक्क वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे खेल तमाश, जोती जाता डगमगाइंदा। आदि जुगादि आपणी पूरी करे आस, आशा आपणी आप प्रगटाइंदा। लोक परलोक कर कर वास, दो जहानां आसण लाइंदा। लख चुरासी धरनी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह अकल कलधार, हरि जू हरि हरि आप चलाईआ। भगतन देवे इक्क आधार, सन्तन मेला सहिज सुभाईआ। जुग चौकड़ी उतरे पार, कोटन कोटि काल बिताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा कर कर गए हार, अन्तिम नैणां नीर वहाईआ। बल रिहा ना अन्तिम वार, धीरज धीर ना कोए वखाईआ।
१५७ दोए जोड़ करन निमस्कार, हरि सरन सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा १५७
लेखे लाईआ। लेखा लेखे लाए समरथ, विष्न ब्रह्मा शिव जणाइंदा। कलयुग अन्त चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा।
१२ १२
जन भगतां देवे साची वथ, वस्त आपणी आप वरताइंदा। आत्म परमात्म पाए नथ्थ, सोहँ डोरी हथ्थ रखाइंदा। सच दुआरे इक्क इकट्ठ, इक्क इकल्ला आप वखाइंदा। आपे गाए आपणी गाथ, गाथा आपणी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल विश्व रंग, विष्नूं हरि हरि आप जणाईआ। सच सुहञ्जणी सेज पलँग, पारब्रह्म प्रभ आप हंढाईआ। आदि अन्त शब्दी जोती एका तन्द, डोरी आपणा नाम रखाईआ। घट घट अंदर वजाए मृदंग, गृह गृह आपणा नाद सुणाईआ। जीव जंत लेखा जाणे साध सन्त, श्री भगवन्त भगवन आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, विश्व आपणी खेल रचाईआ। विश्व खेल विष्नूं दात, हरि जू हरि हरि आप वरताइंदा। निरगुण निरगुण जोड़े नात, नाता निरगुण आप बंधाइंदा। निरगुण पूजा निरगुण पाठ, निरगुण पाठशाला सोभा पाइंदा। निरगुण मन्दिर निरगुण हाट, निरगुण काया बंक वड्याइंदा। निरगुण सरोवर निरगुण अमृत मारे ठाठ, निरगुण तट किनारे डेरा लाइंदा। निरगुण निरगुण पुच्छे वात, आत्म परमात्म दया कमाइंदा।

निरगुण निरगुण करे घात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल विष्न विचार, विष्नूं हरि समझाईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। लख चुरासी पावे सार, जीव जंत भेव खुल्हाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, ऊँचो ऊँच वड वड्याईआ। महल अटल बैठ सच्ची सरकार, साचे तख्त दए वड्याईआ। एका हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। विष्नूं तेरा लहिणा देणा तेरी झोली देवे डार, अन्तिम ख़ाली हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा नर नरेशा इक्क इकल्ला आप सुणाईआ। इक्क इकल्ला अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। शब्दी देवे सच सलाह, सलाहगीर आपणा रूप वटाइंदा। जुग चौकड़ी बण बण मलाह, खेवट खेटा लख चुरासी बेड़ा मात तराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़ंबर दे दे आपणा नाँ, नाउँ निधाना आप प्रगटाइंदा। भगत भगवन्त साचे सन्त गुरमुख सज्जण बणाए हँस काँ, कागों हँस आप उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। विष्नूं मार्ग एका ओट, एका हरि जणाईआ। एका नूर एका जोत, एका रंग वखाईआ। एका किला एका कोट, एका बंक सुहाईआ। एका वरन एका गोत, एका साची वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल करनेहारा, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। विष्नूं विश्व कर पसारा, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। अन्तिम वेखे हो उज्यारा, बेअन्त आपणा पर्दा लाहइंदा। लोकमात कर पसारा, परम पुरख डेरा लाइंदा। निहकलंक नाउँ रख अगम्म अपारा, अपरम्पर आपणा राह चलाइंदा। साचे भगतां देवे इक्क सहारा, भगवन आपणा रूप वखाइंदा। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी सचखण्ड खोल्हे सच दुआरा, सच दरवाज़ा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्नूं एका गुण समझाइंदा। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि हरि आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवान, तेरा मेला सहिज सुभाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, एका घर दए वधाईआ। एका मन्दिर कर परवान, एका सेजा आसण लाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाण, सच संदेशा दए सुणाईआ। एका भूप बण राजान, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क अल्हाईआ। सच संदेशा आलमीन, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। लेखा जाणे लोक तीन, त्रैभवन धनी आपणी चाल चलाइंदा। भगत भगवन्त खेले खेल जिउँ जल मीन, जल मीन आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणे रंग वखाइंदा। रंग अवल्ला एका गूढ़ा, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। घर प्रकाश

१५८
१२

जोती नूरा, गृह मन्दिर होए रुशनाईआ। आसा मनसा करे पूरा, तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। माण अभिमान तोड़े ग़रूरा, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। दरस दखाए हाज़र हज़ूरा, घर घर आपणा वेस वटाईआ। आपणा फ़र्ज़ करे पूरा, लख चुरासी फ़र्ज़ ज़ुलम रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्नूं लेखा दए समझाईआ। विष्नूं लेखा दस्से हरि, दीद दीद नाल मिलाइंदा। आदि जुगादि करदा रिहा वल छल, अछल छलधारी आपणा रूप वटाइंदा। कलयुग अन्तिम लोकमात सच सिंघासण भगत दुआरे बैठा मल, दूसर दर ना कोए वड्याइंदा। सच संदेशा एका घल्ल, घर घर गुरमुख आप जगाइंदा। वार थित वेला जणाए ना किसे घड़ी पल, पहर वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्नूं तेरा बन्धन पाइंदा। विष्नूं तेरा साचा बन्धन, बन्धन हरि हरि आप जणाईआ। कर डण्डोत एका बन्दन, बन्दन आपणा रूप वखाईआ। मस्तक धूढ़ी साचा चन्दन, मस्तक ललाट लगाईआ। कलयुग अन्तिम होवे खण्डन, खण्डा हरि जू रिहा खड़काईआ। लेखा जाणे ब्रह्मण्ड ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड फेरा पाईआ। सेवा लाए त्रिलोकी नंदन, त्रैलोकां फिरे वाहो दाहीआ। दीन दयाल सदा बख़्शंदन, हरिजन साचे लए बख़्शाईआ। जन भगतां तोड़े द्वैत फंदन, फाँसी आपणी गल विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न वखाए एका घर, घर मन्दिर आप सुहाईआ। विष्न वेख हरि विद्याला, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। जन भगतां जिथे बणे रखवाला, सेवक सेव कमाइंदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, राए धर्म ना नैण उठाइंदा। त्रैगुण माया तोड़े जंजाला, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। मार्ग दस्से इक्क सुखाला, साचे धन्दे आप लगाइंदा। आपे फिरे होए बेहाला, निहचल आपणा रूप वटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणाई सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दवारा आप प्रगटाइंदा। सत्तर बहत्तर खेल निराला, चुहत्तर आपणी गोद उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त नेत्र पेखण हरि जू खेल करया निराला, करनी करता आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। जुग चौकड़ी लोकमात घाल के आए सारे घाला, भेव अभेद हरि ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जनभगतां आपणा भेव समझाइंदा। जुग चौकड़ी ना दस्सया भेव, बेअन्त आपणी खेल कराइंदा। गुर अवतार ला ला सेव, पीर पैग़म्बर हज़रत हुक्म वरताइंदा। करोड़ तेतीसा देवी देव, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। अलख अलख अलख गाए सब दी रसना जेहव, प्रतख हथ्थ किसे ना आइंदा। आपणा नाउँ दे दे रसना मेव, रसीआ रस मुख चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां वखाए आपणा घर, घर भगतां आप वसाइंदा। भगतां घर वसया खेड़ा, खेड़ा

१५६ १२

हरि जू आप वसाईआ। आपणा पहलों रोड़या बेड़ा, गुरमुखां बेड़ा फेर तराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी विच्चों जुग जुग लम्भया खेड़ा, खेड़ा कलयुग अन्तिम लिख लिख दए समझाईआ। सचखण्ड निवासी दा खुल्ह्रा वेहड़ा, बिन भगतां ना कोए सुहाईआ। अन्त कल हरि जू कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव ना राईआ। निरभउ होए चुकाए डर सिँघ शेरा, शेर आपणा नाउँ प्रगटाईआ। रातीं सुत्तयां पाए घेरा, गुरसिख नट्ठ किते ना जाईआ। आपणी हथ्थीं बन्न्हे बेड़ा, डूँग्घी भँवर लए तराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बैठा रिहा कर के जेरा, अन्त विछोड़ा सहि ना सके राईआ। दूर दुराडा धुरदरगाही चल के आया नेरन नेरा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। जन भगत मिलाए मिल लाए ना देरा, दीनन आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी जगत भुलाए कर कर हेरा फेरा, हेरा फेरी सार किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे लए जगाईआ। आपे आपणा जाणे आप, भेव किसे ना राया। आपे बणे माई बाप, आपे दाई दाया सेव कमाया। आपे बंधाए साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। आपे देवे साची दात, पूत सपूता झोली पाया। आपे अन्तिम आपणा लेखा जाणे खात, खाता आपणे विच छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग आपणे अन्तर जो रख्या घाटा, कलयुग अन्त पूरा लए कराया।

१६० १६०

१२ १२

✳ १२ जेठ २०१६ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह शेख़सर जम्मू ✳

जगत विकार तिक्खा कंडा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। आसा तृष्ना करया गंदा, हवस हिरस ना कोए मिटाइंदा। मन वासना फिरे बन्दा, बन्दगी विच ना कोए समाइंदा। आप गंवाए आपणा परमानंदा, निजानंद हथ्थ किसे ना आइंदा। जगत नेत्र दोए अन्धा, नेत्र ज्ञान ना कोए खुल्ह्राइंदा। आवण जावण ना चुक्के पैंडा, लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। गुरमुख विरला गुर सरनाई साची रहिन्दा, रहि रहि आपणी खुशी कराइंदा। सतिगुर भाणा सिर ते सहिन्दा, सहि सहि सीस झुकाइंदा। आत्म परमात्म इक्को नाउँ रसना कहिन्दा, गीत गोबिन्द अल्ह्राइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कंडे विच गुरमुख फूल आप उपजाइंदा। कलयुग विकारा तिक्ख़ी सूल, सूली सब दे गल लटकाईआ। सृष्ट सबाई रही भूल, अभुल्ल मिले ना बेपरवाहीआ। भाग ना लग्गे किसे कुल, जीव जंत रिहा कुरलाईआ। त्रैगुण माया रहे रुल, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक समाईआ। फुल्ल फुलवाड़ी ना मौले फुल्ल, पत डाल्ही ना कोए महकाईआ। नौ खण्ड पृथमी बूटा

रिहा हुल, सिंमल रुक्ख रुक्ख लहराईआ। गुरमुख विरले हरि का नाउँ एका अक्खर गाया बुल, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। करता कीमत पाए मुल, सालस आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सदा सदा सहाईआ। कलयुग विकार तिक्खी धार, चार वरन वरन जणाइंदा। सब दा चोला रही पाड़, पर्दा उपर ना कोए रखाइंदा। विंनी जाए नाड़ नाड़, बहत्तर अंक ना कोए बणाइंदा। तत्तव तत्त रिहा साड़, सांतक सति ना कोए कराइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना लाए पार, मँझधार ना कोए तराइंदा। दूर दुराडा नेरन नेरा वेखणहारा सांझा यार, सगला संग आप अख्वाइंदा। सिफ्त सालाही वसे बाहर, सिफ्त विच कदे ना आइंदा। अल्फ़ ये जगत विहार, आरफ़ आपणा बन्धन पाइंदा। भगत फ़िकरा कर त्यार, फ़ितरत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिकरीए ज़िकर कीता एका वार, ज़ौक ज़ाकर आपणे रंग रंगाइंदा। नेत्र पेख सर्ब संसार, सूफ़ी आपणा रूप वटाइंदा। फ़ातया पढ़े अन्तिम वार, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक दबाइंदा। साख्यात रूप निरँकार, जन भगतां वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम मेट कूड़ी क्रिया एका देवे नाम आधार, आधार आपणा आप रखाइंदा। सोहँ शब्द कर त्यार, तार सतार आप वजाइंदा। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख कलयुग क्रिया विच्चों कढ्ढे बाहर, ज़ाहर आपणा रूप वखाइंदा। एथे ओथे दो जहान ना आए हार, जो जन महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान रसना गाइंदा ।

१६१

१२

✳ १२ जेठ २०१६ बिक्रमी तेज भान शेख़सर जम्मू ✳

हरि किरपा गुर प्रताप, गुर किरपा नाम वड्याईआ। नाउँ निधाना हरि हरि जाप, जीवण जुगत जुगत समझाईआ। काया कपड़ धो उतारे पाप, पतित पुनीत आप कराईआ। धूंआँधार मेटे अन्धेरी रात, सति ज्ञान शब्द दृढ़ाईआ। माणस जन्म वखाए साचा हाट, घर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। निर्मल जोत वखाए ललाट, हलत पलत सदा सुखदाईआ। जन्म जन्म दी मेटे वाट, अगला पन्ध ना कोए रखाईआ। कर किरपा जिस जन देवे आपणी गाथ, गाथा मन्त्र इक्क समझाईआ। फड़ बाहों चढ़ाए साचे राथ, गुर शब्दी रथ चलाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम पुच्छे वात, निरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। वरन बरन नाता तोड़ ज़ात पात, ज़ात आपणी दए समझाईआ। हरिजन रखे सदा साथ, आप आपणी उँगली लाईआ। गुरसिख कदे ना होवे घात, राए धर्म ना घाउ लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जिस बंधाया चरन नात, तिस नाता ना कोए तुड़ाईआ।

✳ १२ जेठ २०१६ बिक्रमी राम चन्द दे गृह पिण्ड देवा जम्मू ✳

आपे दाता आपे दानी, दयावान हरि अखवाइंदा। आपे अमृत आपे पाणी, आपे जल जल रूप वटाइंदा। आपे महिमा अकथ कहाणी, आपे लिख लिख लेख वखाइंदा। आपे निरगुण जोत नुरानी, आपे सरगुण डेरा लाइंदा। आपे जाणे बोध अगाधी साची बाणी, आपे आपणा राग अल्लाइंदा। आपे शाह पातशाह शहिनशाह सुल्तानी, आपे हुक्म हुक्म वरताइंदा। आपे लेखा जाणे आवण जाणी, दोए जहानां वेस वटाइंदा। आपे खेले खेल वड बलवानी, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आपे जुग जुग भगत प्रगटाए सच निशानी, जगत निशाना आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दात आप वरताइंदा। दाता दानी दीन दयाल, दर्दी दर्द वंडाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल निराल, खालक खलक विच रखाइंदा। ग़रीब निमाणे करे सदा प्रितपाल, बाल अञ्याणे गोद बहाइंदा। भगत भगवन्त वेखे लाल, लालन आपणा रंग रंगाइंदा। वस्त अमोलक देवे नाम सच्चा धन माल, माल ख़ज़ीना इक्क लुटाइंदा। सदा सदा सद चले नाल, आप आपणा संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता दानी दया कमाइंदा। दाता दानी देवण जोग, सो पुरख निरँजण इक्क वड्याईआ। आदि जुगादी है भी होग, ना मरे ना जाईआ। जुग जुग करे सच संजोग, जन भगत नाम कुड़माईआ। देवे दरस आप अमोघ, स्वच्छ सरूपी रूप वखाईआ। कटणहारा जन्म विजोग, पूरब लहिणा लेखे लाईआ। नाता तोड़े हरख सोग, चिंता दुःख ना कोए जणाईआ। आत्म भोगे साचा भोग, रस रसीआ एका रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। नाम वस्त राम रमइया, नर हरि नरायण आप वरताइंदा। आदि जुगादी साचा सईया, सगला संग निभाइंदा। लेखा जाणे जोती मईया, मात पित हित्त वखाइंदा। इक्क वखाए साची नईया, नौका नाम आप धराइंदा। लेखा जाण भैण भइया, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप वरताइंदा। देवे दान दयानिध, दीन दयाल बेपरवाहीआ। जन भगतां करे कारज सिद्ध, करता पुरख वड वड्याईआ। आदि जुगादि जुग जुग आपे जाणे आपणी बिध, भेव अभेद ना किसे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान साची वस्त एका हथ्थ वखाईआ। दयावान हरि जू ठाकर, आपणा खेल खलाइंदा। भगत भगवन्त देवे आदर, लोकमात सोभा पाइंदा। सति सतिवादी शब्दी चादर, नाम दुशाला इक्क उठाइंदा। इक्क इकल्ला देवे आदर, आदरश आपणा आप वखाइंदा। करीम करता बण बण कादर, कुदरत आपणे रंग रंगाइंदा। सेवक बण बण तेग़ बहादर, तेग़ आपणे सीस टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान इक्क

वखाइंदा । साचा दान देवे सीस, हरि जू वडी वड वड्याईआ। करे खेल आप जगदीश, जगत जुगत भेव ना राईआ। जन भगतां दस्से सच हदीस, हरफ़ बहरफ़ आप पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम पीसण रिहा पीस, जूठ झूठ चक्की मात चलाईआ। लेखा जाणे इक्क नौ उनीस, नौ इक्क वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान इक्क समझाईआ। साचा दान इक्को हरि, दूसर अवर ना कोए वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां देवे फड़, राज राजानां ख़ाक मिलाइंदा। साचे मन्दिर आपे वड़, गृह बह बह ख़ुशी मनाइंदा। निष्अक्खर बाणी आपे पढ़, पढ़ पढ़ राग सुणाइंदा। सन्त सुहेले लाए लड़, फड़ फड़ आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप वरताइंदा। नाम वरताए ग़रीब निवाज़, हरि जू आपणी दया कमाईआ। चन्द चांदना साजण साज, नूर नूर नूर रुशनाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, माथा मस्तक आपणे चरन छुहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गाथ, कलयुग अन्तिम झोली पाईआ। फड़ उतारे आपणे घाट, सति किनारा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त बेपरवाहीआ। बेपरवाह देवे दाना, नज़र किसे ना आइंदा। सति सरूपी बन्न्है गाना, घर बह बह सगन मनाइंदा। राम राम मिले भगवाना, चन्द चन्द चन्द चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौथे मेल मिलाइंदा। सतिजुग तक्की वाट, त्रेता नैण उठाईआ। द्वापर सुत्ता गोदावरी घाट, गंगा कन्ढ्ढा रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम चीथड़ गए पाट, काया कपड़ कम्म किसे ना आईआ। किरपा करी पुरख समरथ, समरथ आपणी दया कमाईआ। पकड़ उठाया आपणे हत्थ, हत्थ हत्थ नाल मिलाईआ। तख्त निवासी बह बह गाए जस, जस हरिजन आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंदर जाए वस, साचा खेड़ा आप बणाईआ। आपणा आप कीता दान, बाकी नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण हो हो वड़या काया विच मकान, सरगुण अंदर साचा आसण लाइंदा। रूप रंग रेख नज़र ना आए विष्नूं भगवान, हरिजन आपणा रूप वखाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाइंदा। आपणी भेटा आपणा सीस जगदीश कर कुरबान, सच हदीस फेर पढ़ाइंदा। सोहँ शब्द इक्क निशान, धुर निशाना आप वखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणा आप कर के दान, जन भगतां झोली मात भराइंदा। आपणा आप हरि दीआ दान, भेव कोए ना पाइंदा। गुरमुख करन मात परवान, परम पुरख मंग मंगाइंदा। वसण देणा विच मकान, काया कोठड़ी राह तकाइंदा। नित नित गुरमुख गावां तेरे गान, दूजी मंग ना कोए मंगाइंदा। दिवस रैण दर्शन पावां आण, दूर दुराडा पन्ध ना कोए जणाइंदा। बिन सुणयां सुणावां फ़रमाण, फ़रमांबरदार हो सेव कमाइंदा। आप बणया रहां अञ्ञाण, गुरमुख लोकमात वड्याइंदा। आपणा

मेट के जगत निशान, भगत निशाना जगत झुलाइंदा। आपणा नाउँ रख विष्नूं भगवान, भगवान गुरमुख रंग रंगाइंदा। घर घर दर दर पुच्छे आण, आप आपणी फेरी पाइंदा। जंगल जूह उजाड़ ढूंडे बीआबान, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाइंदा। डूँग्घी कंदर वेखे खाण, कन्ढी आपणा चरन टिकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर सुणाउँदा रिहा गान, कलयुग अन्तिम गीत आप अलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग भगतां आप वंडाइंदा।

✳ १२ जेठ २०१६ बिक्रमी मलूकां वाली पिप्पल दे थल्ले जम्मू ✳

टिल्ला छुटया गोरख नाथ, गुर चेले ध्यान लगाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े लभ्भदे साथ, साथी नज़र कोए ना आईआ। मछन्दर सुणाउँदा रिहा गाथ, जलन्धर मुंदरा कन्न लटकाईआ। अन्तिम मुकावे कौण वाट, मुकावणहारा इक्क अख्वाईआ। लेखा जाणे नौ नाथ, सिद्ध चुरासी सहिज सुभाईआ। सारे पुच्छण आपणी आपणी गाथ, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाईआ। वेले अन्त पुच्छे कवण वात, साडा पन्ध दए मुकाईआ। गोरख कहे बणो इक्क जमात, साची सिख्या दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए पुरख अबिनाश, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ फड़ पहलों करे आपणे दास,
१६४ फेर सब दा लहिणा दए चुकाईआ। तुहाढ्ढा मेला करे ख़ास, खुलासा आपणा आप खुलाईआ। कन्ढी कन्ढे मेटे प्यास, प्यास अन्तर दए बुझाईआ। गुरसिख सज्जण सुहेले रखे आपणे साथ, बण संगी संग निभाईआ। आपणी हथ्थीं धूढ़ी टिक्का मस्तक लाए ख़ाक, ख़ाक सब दे उपर पाईआ। जिस दे पिच्छे बणदे रहे चाक, चाक बण चाकरी सेव कमाईआ। सो साहिब दयाल ठाकर आपणा खोले ताक, दीवा बाती इक्क जगाईआ। गोरख अन्त ना निभे साथ, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। तीजा जन्म सिँघ तारे रख्या साक, सज्जण सैण आपणा बन्धन पाईआ। अन्तिम साथ लै पुरख अबिनाश, पिछला लहिणा रिहा मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गोरख चेले बणाए आपणे दास, अगला फ़ास सर्ब कटाईआ।

१२

✳ १२ जेठ २०१६ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह पिण्ड सरदारी जम्मू ✳

अलख अलख अलख निरँजण, गुर चेले रहे ध्याईआ। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भञ्जण, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। नेत्र ज्ञान पाया अञ्जण, नाम बिभूती इक्क वखाईआ। चरन धूढ़ कराया मजन, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जन्म जन्म

दी लथ्थी थक्कण, थक्के मांदे पन्ध मुकाईआ । नेत्र नैण बिन नेत्र तक्कण, दरसी दरस दरस रघुराईआ। कलयुग अन्तिम आया रखण, बण रक्षक फेरा पाईआ। इक्क वखाए साचा पत्तण, पत्तण बैठा हरि हरि माहीआ। वेले अन्त परदे ढकण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर चेले आए भोजण छकण, हथ्थ खप्परी इक्क उठाईआ। अलख अलख रसना कर कर थक्की यतन, युकती युग ना कोए समझाईआ। पुरख अबिनासी घट घट वासी कलयुग अन्तिम वरोलण आया आपणा मक्खण, लख चुरासी नाम मधाणा पाईआ। दूर दुराडे गोरख मछन्दर जलन्धर बह बह तक्कण, सीस जगदीश झुकाईआ। शौह दरया विच्चों आया कढ्ढण, बण मलाह खेवट खेटा फेरा पाईआ। वेखणहारा डूँग्घी खण्डण, भँवर भँवरी फोल फुलाईआ। एका वार आया सद्दण, सद्दा हरि हरि आप पुचाईआ। जिस नूं कहिन्दे गोपाल मोहण मूर्त मधण, माधव आपणा भेव खुल्ह्लाईआ। आदि जुगादी विष्नूं यदन, विश्व आपणी धार वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आया फंदन, बण फांदकी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। अलख निरँजण जगत जैकारा, रसना जिह्वा गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। गेरू कपड़ा तन शृंगारा, चारों कुण्ट कुण्ट भुवाईआ। सरवण पाए ना कोई धुन्कारा, अनहद नादी ना नाद सुणाईआ। साचा मुंदरा ना कोए प्यारा, मूधा कँवल ना कोए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जै जैकार अलख निरँजण रघुनाथ, रघू एका धार चलाइंदा। वेखणहार पुरख समराथ, समरथ आपणा पर्दा आप उठाइंदा। निरगुण दो जहानां रिहा तुढ्ढ, बण बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर गुर चेले मार्ग दस्स, साचे राहे आपे पाइंदा। घट घट अन्तर आपे वस, वस वस आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, प्रगट आपणा रूप वटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखणहारा लख चुरासी कमलापति, कँवल नैण आप खुल्ह्लाइंदा। नाथां सिद्धां वेखे धीरज जत, सति सन्तोख भेव चुकाइंदा। बिन गुरमुख कोई ना रखे पत्त, कोटन कोटि जीव भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अलख अलखणा खेल कराइंदा। अलख अलख रसना गा, गा गा ख़ुशी मनाईआ। गोरख मछन्दर गए सुणा, मन मन्दिर इक्क सुहाईआ। तन अंदर डेरा साचे ला, घट मुंदरा नाम वखाईआ। किंगी नाद सिंगी वजा, तुरया राग राग अल्ह्लाईआ। बिन्दी टिप्पी इक्क वखा, निक्की निक्की धार जणाईआ। धुर दी लिखी ना कोई मेटे ना सके मिटा, मेटणहारा इक्क अख्वाईआ। जिस दा ढोला रहे गा, सो साहिब सच्चा माहीआ। जुग जुग चोला दए बदला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। खेले खेल हौली हौली सहिज सुभा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर वसे बेपरवाहीआ। अलख

निरँजण हरि हरि गीत, गीत गीत अलाया। उच्चे टिल्ले जगत रीत, रीतीवान नज़र ना आया। सदी सदी गई बीत, काल काल रूप वटाया। पुरख अबिनाशी इक्क अतीत, त्रैभवन धनी आपणा खेल रचाया। रविदास चुमारे लिख्या लेख, ना कोई मेटे मेट मिटाया। ब्राह्मण जाणे आपणा भेख, ब्राह्मण ब्राह्मणी ना कोए जाया। लिखणहारा हरि जू लेख, लेखा आपणे हथ्थ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल अपारा, रविदास आप कराईआ। लेखा जाणे जगत चम्मयारा, आत्म आधारा वड वड्याईआ। इक्क कसीरा कर प्यारा, तकसीर तकदीर दए बदलाईआ। आत्म ब्रह्म दे सहारा, जीव जीव जीव समझाईआ। डुब्बदा पाथर लाए किनारा, चरन आपणा पाहन छुहाईआ। जिस उपर तिक्खी करे आरा, रम्बी एका रगड़ा लाईआ। तिस अंदर वड भण्डारा, भर बैठा बेपरवाहीआ। शाह पातशाह बणे वणजारा, दर सीस सीस झुकाईआ। ब्राह्मण रोवे ज़ारो ज़ारा, वेला गया हथ्थ ना आईआ। हरिभगत करे सदा प्यारा, हरख सोग ना कोए जणाईआ। गंगा तेरा नाता जोड़या विच संसारा, संसार सागर खेल वखाईआ। तूं आया चल दुआरा, तेरा दुआर दयां समझाईआ। तेरा मेरा इक्क विहारा, प्रभ साचे रिहा भाईआ। तूं वड्डा वड सिक्दारा, जिस कंगण हथ्थ ल्या चाँईं चाँईंआ। मेरा तेरे नाल उधारा, अन्तिम लेखा मेटे बेपरवाहीआ। ब्राह्मण मंगे चरन धूढ़ ख़ाक छारा, मस्तक टिक्का रिहा लाईआ। कवण वेला मिले हरि निरँकारा, आप आपणा दए समझाईआ। रविदास बोले कूक जैकारा, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। नौ जन्म आउणा विच संसारा, नौ दुआरे वासना बाहर कढ्ढाईआ। तीजे जन्म लेखा जाणे शाह सिक्दारा, जन्म जन्म आप भुवाईआ। कन्न पा के मुंदरां तन लाए ख़ाक छारा, बिभूती बिभूत नाल रमाईआ। गोरख देवे फेर सहारा, सहिज जुगत इक्क समझाईआ। बिन हरि कोए ना जाए हरि के दुआरा, अद्धविचकार बैठे सारे आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण आपणा रूप वखाईआ। प्रगटाए प्रगटे आप रविदास चुमारा, जगत चमरेटा मूल चुकाईआ। ब्राह्मण देवे ब्रह्म सहारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोगी जोग वेखणहारा, जीवण जुगत आप जणाईआ। चारों कुण्ट फिरे बण हल्कारा, घर घर साचा हुक्म सुणाईआ। गुरमुख वेखे वारो वारा, हरिजन सज्जण लए उठाईआ। सन्त सुहेले करे प्यारा, दूसर अंग ना कोए लगाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतारा, लेखा अवर ना कोए रखाईआ। पावे फेरा अगम्म अपारा, हेरा फेरा दए मिटाईआ। उच्चे टिल्ले वसे गुरसिख रूप उच्च मनारा, राम राम चन्द दए वड्याईआ। चरन कँवल दे सहारा, हरि जू संगत संग निभाईआ। वाहो दाही आए आपणी धारा, धार किसे ना होर समझाईआ। नौ नाथ चुरासी सिद्ध राह विच मिल करन निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। चरपट नाथ रिहा

कुँवारा, सुरती शब्द ना किसे प्रनाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल आप निरँकारा, सतिगुर सच्चा शहिनशाहीआ। जन्म जन्म दा विछड़या मेले गुरमुख तारा, तार आपणी नाल मिलाईआ। जंगल जूह विच बण लिखारा, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। करया खेल अपर अपारा, लिख्त पढ़त विच ना किसे समझाईआ। अग्नी जेठ ना तत्ती हाढ़ा, तत्तव तत्त ना कोए रखाईआ। हरिसंगत देवे आण सहारा, सरदारी आपणा चरन छुहाईआ। सम्मत वीह सौ उन्नी जिस जन दे के जाए दरस दीदारा, बण दर्दी दर्द वंडाईआ। एथे ओथे देवे नाम भण्डारा, अखुट्ट कदे ना जाईआ। गुरमुख गुरसिख बोले इक्को सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। दर आयां सब पार उतारा, मोए पित्तर पार कराईआ। वाहवा लेख लिख्या चम्मयारा, चम्म दृष्टी सब दी दए गंवाईआ। एका इष्ट नज़र आए निरँकारा, वशिष्ट राम रूप वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म अजन्म दोवें कर परवान, घर परवानगी आपणे पाईआ।

✳ १३ जेठ २०१६ बिक्रमी कथ्था सिँघ दे गृह पिण्ड मोइल जम्मू ✳

साचे तख्त सोहे भगवान, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। सीस ताज जगदीश महान, अबिनाशी करता आप सुहाइंदा। शाहो भूप बण मेहरवान, राजन राज हुक्म वरताइंदा। धुर फ़रमाणा इक्क ज्ञान, निरगुण निरवैर आप सुणाइंदा। दो जहानां हुक्मरान, भेव आपणा आप खुल्हाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वेखे मार ध्यान, पूरब लेखा आप फिराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा माण, त्रै पंज आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारे हरि जू चढ़, तख्त निवासी सोभा पाईआ। महल अटल उच्च मनारे खड़, सति सरूप आप वटाईआ। बोध अगाधी अक्खर पढ़, निष्अक्खर करे जणाईआ। आदि आदि जिस लाई जड़, अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण सरगुण मात धर, लख चुरासी बन्धन पाईआ। गुर अवतार दे दे वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। करे खेल नरायण नर, नर हरि वड्डा वड वड्याईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, भन्नणहार आप अख्वाईआ। लेखा जाणे चोटी जड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा खेल वरताईआ। सचखण्ड सोहे सच दुआरा, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। निरगुण रूप अगम्म अपारा, अलख अगोचर खेल कराइंदा। दीपक दीआ कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्दी नाद नाद धुन्कारा, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाइंदा। हुक्मी हुक्म इक्क वरतारा, धुर फ़रमाणा आप अल्हाइंदा। गुर अवतारां वेखणहार अखाड़ा, लोकमात वेस वटाइंदा।

पीर पैग़म्बर वेखे परवरदिगारा, नूर इलाही नूर वखाइंदा। मुकामे हक़ हो त्यारा, हक़ हक़ीक़त रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे खड़, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। दरगाह साची सोहे धाम, हरि जू हरि हरि आप सुहाईआ। करे खेल एका राम, एकँकार वड वड्याईआ। वेस वटाए साचा शाम, शहिनशाह बेपरवाहीआ। दो जहानां साचा नाम, लोआं पुरीआं करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव प्याए जाम, अमृत रस रस चखाईआ। पीर पैग़म्बर दे कलाम, कलमा नबी आप सुणाईआ। करे खेल श्री भगवान, गुर अवतार सेवा लाईआ। भगत भगवन्त दे दे दान, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। साचे सन्तन कर परवान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुखां देवे इक्क ज्ञान, ज्ञान नेत्र आप खुल्हाईआ। गुरसिखां वेखे हरि जू आण, नेत्र नैण नैण मिलाईआ। नव नौ चार खेल महान, चार चार वज्जे वधाईआ। नव सति होए प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाईआ। धुरदरगाही सच निशान, सो पुरख निरँजण आप उठाईआ। सच संदेशा दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बरां आप सुणाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड दवारे धुर फ़रमाणा, धुरदरगाही आप जणाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त श्री भगवाना, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर गायण गाणा, गीत गोबिन्द

१६८ आप सुणाइंदा। अन्तिम रखे आपणे भाणा, सीस जगदीश सब दा आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १६८

१२ किरपा कर, सच संदेशा एका वार सुणाइंदा। सच संदेशा एका वार, हरि जू हरि हरि आप जणाया। सचखण्ड दवारा खोल्ह १२

किवाड़, लोकमात दए वड्याआ। भगत भगवन्त कर त्यार, त्रैगुण लेखा दए चुकाया। पंचम नाता तोड़ संसार, पंचम आपणा रंग रंगाया। एका अमृत जाम प्याए ठंडा ठार, अग्नी तत्त दए बुझाया। एका बाणी बोध अगाध, शब्दी शब्द नाद सुणाया। चार वरन एका दाद, वस्त अमोलक आप वरताया। लख चुरासी विच्चों काढ, साचे मन्दिर आप बहाया। छत्ती जुग दा साचा राग, बिन रसना जिह्वा गाया। छत्ती राग होए विस्माद, सीस सके ना कोए उठाया। धन्न दुआरा हरि निरँकारा जन भगतां करे साचा लाड, सच आपणी गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा रूप वटाया। सचखण्ड रूप अपर अपारा, हरि जू हरि हरि आप रखाईआ। रंग रेख ते वसे बाहरा, नज़र किसे ना आईआ। काग़द कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार करन पुकारा, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर मंगण दुआरा, परवरदिगारा वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, चौथे जुग आपणी रचन रचाईआ। प्रगट हो अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। सचखण्ड दा सच दुआरा, धरत धवल

दए सुहाईआ। आपे वेखे वेखणहारा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपार, हरि जू हरि हरि आप कराया। लहिणा चुक्के गुर अवतार, गुर गुर रूप ना कोए दसाया। ईसा मूसा लेखा चुक्के मुहम्मदी यार, यारी यार ना कोए निभाया। कलमा नबी ना कोए आधार, इलाही कलाम ना कोए सुणाया। तीर्थ तट ना कोए किनार, सरोवर कोए रहिण ना पाया। मक्का काअबा नज़र ना आए परवरदिगार, नज़र नज़र नाल ना कोए मिलाया। सब दा लेखा चुक्या अन्तिम वार, पुरख अबिनाशी आप चुकाया। एका वार सद्द सच्चे दरबार, सच संदेशा दए सुणाया। सारे रल मिल गाओ एकँकार, पिछला कलमा देणा भुलाया। अन्तिम आई चुहत्तरां वार, साता चौका जोड़ जुड़ाया। नाम खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां हरि जू रिहा वखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडी वंडा, अन्तिम आपणी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच संदेशा नर नरेशा एका एक सुणाया। सच संदेशा सुण सुण कान, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। तेरी कुदरत वड मेहरवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं हाकम हुक्मरान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, जन तेरी सेव कमाईआ। मातलोक होए प्रधान, इक्क तेरी ओट तकाईआ। तेरे हुक्मे अंदर झुलाए निशान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। तेरी
१६६ शरअ अञ्जील कुरान, शरीअत एका वंड वखाईआ। तेरा संदेशा वेद पुराण, जीव प्राणी गए समझाईआ। तेरा पर्दा बोध १६६
ज्ञान, खाणी बाणी आप खुल्हाईआ। तेरा अन्त ना पाया विच जहान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम सारे चरनी
१२ डिग्गे आण, माण ताण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी सच सरनाईआ। १२
सच सरनाई गुर अवतार हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। चरन कँवल कँवल सहार, धरत धवल ना कोए वखाइंदा। इक्को गुलशन खिड़े गुलज़ार, गुल आपणा आप महकाइंदा। फुल्ल फुलवाड़ी लाई जुग चार, कलयुग अन्तिम आपणी झोली पाइंदा। वरन बरन बणाए डाल्ह, अन्तिम लेखा लेख चुकाइंदा। हुक्मे अंदर घालण लई घाल, कीती घाल लेखे पाइंदा। अग्गे हल्ल ना करे कोए सवाल, ज़ेर ज़बर ना कोए जणाइंदा। करे खेल साहिब दयाल, दीनन आपणा रूप वखाइंदा। प्रगट हो विच जहान, दो जहानां वेख वखाइंदा। आदि जुगादी सति फ़रमाण, सच संदेशा आप सुणाइंदा। भगत भगवन्त कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान, डूँघी कंदर फेरा पाइंदा। करे खेल नौजवान, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। साचे सन्तां देवे इक्क ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा रंग रंगाइंदा। सचखण्ड दवारे साचा रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। निरगुण रूप निरगुण पलँग, निरगुण साची

सेज हंढाईआ। निरगुण नाम निरगुण मृदंग, निरगुण तार सतार हलाईआ। निरगुण सूरबीर सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साची धारा आप समझाईआ। साची धारा हरि रघुनाथ, रघुपत आपणी आप जणाइंदा। सन्त सुहेले दे दे साथ, सगला संग निभाइंदा। राह तक्कण बह बह कन्ढी घाट, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। पारब्रह्म कवण वेला मुकाए वाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। तक्कण वाट नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी तोले साचा तोल, तोलणहार इक्क हो जाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। कवण वेला आए कोल, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का देवे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह तेरा खेल अपारा, भेव कोए ना आइंदा। गुर अवतार सद्द लए दुआरा, पीर पैग़म्बर नाल मिलाइंदा। नाथ सिद्ध कढुण हाढ़ा, नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाइंदा। तुध बिन दिसे ना कोए सहारा, उच्चा टिल्ला पर्बत कम्म किसे ना आइंदा। पाटे चीथड़ ना दिसे कोए किनारा, साची नईया ना कोए चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को भाइंदा। गोरख मछन्दर रहे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तूं साहिब दयाल सदा दातार, दीन दयाल तेरी वड्याईआ। अलख निरँजण बेऐब परवरदिगार, सीस जगदीश इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सरन सच्ची सरनाईआ। साची सरन मिले मात, एका ओट तकाईआ। चरन धूढ़ी मिले ख़ाक, ख़ाक होर ना कोए रमाईआ। इक्को खुल्ह्े तेरा ताक, ताकी कोए रहिण ना पाईआ। साचा मिले सज्जण साक, सगला संग तजाईआ। सच जोगीशर एका दस्सणी जाच, बण याचक मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा वर बेपरवाहीआ। कन्न मुंदरां भगवा वेस, तेरा भेव कोए ना आया। चार कुण्ट वेख्या देस, तेरी दिशा वंड ना कोए वंडाया। तूं आदि जुगादि रहें हमेश, हरि जू हरि हरि आपणा खेल कराया। अन्तिम कल इक्क आदेश, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा दए सुणाया। सच संदेशा हरि निरँकार, एका एक जणाईआ। उठो नाथो करो विचार, नाथ अनाथां हरि सहाईआ। गुरमुखां अग्गे करो पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिन्हां अंदर वड़या आप निरँकार, बाहर निकल कदे ना जाईआ। हुक्मे अंदर होया सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। रातीं सुत्तयां होए पहरेदार, दिवस अंग संग रहि रहि खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, बिन गुरमुखां हुक्म दूजी कार ना कोए कमाईआ। उठो नाथ खोल्हो अक्ख,

१७० १२

हरि आख़र आप सुणाइंदा। पुरख अकाल होया प्रतख, प्रतख आपणी धार चलाइंदा। भगतां नालों कदे ना होए वक्ख, वक्खरा रूप ना कोए वखाइंदा। गुरमुखां दा रल मिल सारे गाओ जस, जस वेद पुराण कदे ना आइंदा। इक्क चम्मयारा पए हस्स, चम्म दृष्टी सब दी लेखे लाइंदा। इक्क ब्राह्मण करना वस, ठग्गी सब दी जगत गवाइंदा। पुरख अबिनाशी मार्ग देवे दस्स, दस्स दस्स आपणी ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे तख़्त सोभा पाइंदा। साचा तख़्त मेरे निरँकार, गुर गुर रिहा सुणाईआ। तेरे चरन कँवल बलिहार, बलिहारी तेरी वड वड्याईआ। दोए जोड़ करां निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। आदि जुगादी तेरी साची कार, करता पुरख बेपरवाहीआ। जन भगतां बणे मीत मुरार, मित्र प्यारा नाउँ रखाईआ। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकार, नाम खण्डा हथ्थ रखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत फिर फिर वेखी डूँघी गार, तेरी सार किसे ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां बणें यार, सत्थर यारां आप हंढाईआ। अंदरे अंदर सुणें पुकार, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। अलख निरँजण तेरी कटदे रहे वगार, बण वगारी सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा वेख्या सति दरबार, सच सच तेरी सरनाईआ। राह जांदयां देवें तार, बण रैहबर सच्चा माहीआ। पिछला लेखा देवें पाड़, दूसर देवे ना कोए सज़ाईआ। साचे पौड़े देवें चाड़्ह, एका डण्डा नाम फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। देवे वर पुरख समरथ, समरथ दया कमाइंदा। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ, उधार अवर ना कोए रखाइंदा। पाँधी राही बण बण चरन गए ढठ्ठ, फड़ बाहों आप उठाइंदा। इके वार कर इकट्ठ, एका घर मिलाइंदा। इक्की जेठ आउणा नठ्ठ, सच संदेशा आप सुणाइंदा। हरिसंगत विच बहणा फस, पिछली फ़ास आप कटाइंदा। पुरख अबिनाशी अगला मार्ग देवे दस्स, जोग जुगत आप जणाइंदा। नाद सिंगी जाए वज्ज, पवण वाजा आप हिलाइंदा। दरस करना रज्ज रज्ज, बिन नेत्र दरस कराइंदा। संगत संग बहणा सज, हरिसंगत अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा सब दा आपणे हथ्थ रखाइंदा।

✳ १३ जेठ २०१६ बिक्रमी सोभा सिँघ दे गृह पिण्ड मोइल जम्मू ✳

तिनका तिनका करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जन का लहिणा दे उधार, देवणहार वड गोसाँईंआ। जंगल बेले तक्की वाट, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। कवण वेला मिले साथ, बण साथी होए सहाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट,

परम पुरख खेल खलाईआ। चार खाणी वखाए एका हाट, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज नाल मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छे वात, वातावरन आप जणाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, नाता साचा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा मात चुकाईआ। तिनका तिनका रिहा रो, नेत्र नैण नीर वहाइंदा। पुरख अबिनाशी तेरे चरन जाईए छोह, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। असीं लै के आए ढोआ ढो, छप्पर छन्न रूप वटाइंदा। मिल मिल सारयां कीता मोह, तेरा मोह ना कोए तुड़ाइंदा। अमृत मेघ देणा चो, रस एका नज़री आइंदा। आपणा आप बैठे खो, डाली पत नज़र कोए ना आइंदा। सुण के आए तेरी सो, सो पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। गुरमुखां जोगा गया हो, होर वंड ना कोए वंडाइंदा। नज़र ना आए त्रै लोअ, त्रै लोक मुख भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी आस इक्क रखाइंदा। तिनका तिनका रखी आस, कुल्ली कक्ख कक्ख वड्याईआ। जंगल जूह लग्गी प्यास, बिन तेरे ना कोए बुझाईआ। रल मिल सारे गाईए तेरी गाथ, सद वज्जदी रहे वधाईआ। आदि जुगादी तूं देवें सगला साथ, नाथ अनाथां लएं तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तिनका तिनका चढ़या चा, चार कुण्ट खुशी मनाइंदा। पतिपरमेश्वर मिल्या मलाह, बेड़ा कलयुग अन्त चलाइंदा। जन भगतां
१७२ नाल करे सलाह, सलाहगीर आप हो आइंदा। वेखणहारा थल अस्गाह, जल थल आपणी खेल कराइंदा। घर घर पकड़नहारा बांह, बाहों पकड़ गले लगाइंदा। आत्म परमात्म एका नाउँ, नाउँ निरँकारा आप समझाइंदा। जन्म जन्म दा लहिणा दए मुका, मौका आपणे हथ्थ रखाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, चरन कँवल कँवल बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। तिनका तिनका मंगे मंग, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। तूं साहिब दयाल सूरा सर्बंग, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। सच सेज सुहञ्जणी पलँग, पारब्रह्म आप सुहाईआ। गृह मन्दिर अंदर इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। चार दीवारी कीता बन्द, बन्दीख़ाना एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तिनका तिनका रिहा हस्स, घर आपणे खुशी मनाइंदा। हरि जू होया भगतां वस, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। आओ रल मिल सारे गाईए जस, जिस दर हरि जू सोभा पाइंदा। प्रेम प्यार अंदर जाईए फस, दूसर फांदी ना कोए होर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए भाइंदा । तुध बिन अवर ना कोई ओट, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरी इच्छया तेरा कोट, तेरा भगत रिहा बणाईआ। तेरी भिच्छया निर्मल जोत, घर घर करे रुशनाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरन कँवल मिले सरनाईआ। तिनका तिनका मंगे दान, दोए जोड़ जोड़ पुकारया। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, शाह पातशाह अगम्म अपारया। हउँ बालक मूर्ख मुग्ध अञ्याण, तेरा अन्त ना पारावारया। दर बैठे नैण शरमान, नैण नैण ना कोए उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरन कँवल बलिहारया। चरन कँवल जाईए बलिहार, बलि बलि तेरी वड्याईआ। तेरे भगतां कर दीदार, दरस तेरा नज़री आईआ। छड्ड के आए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, रूप रूप नाल वटाईआ। किनका किनका कर प्यार, एका दूजा बन्धन बंध रखाईआ। छप्पर छन्न अपर अपार, छहबर तेरे नाम लगाईआ। रातीं सुत्तयां रहीए ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। उपर मुख कर तेरा गुरसिख गाए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकार, सुण सुण सारे खुशी मनाईआ। नैण तक्कण एका वार, कँवल नैण मिले सच्चा माहीआ। उपर पर्दा बैठे डार, आप आपणा अग्न तपाईआ। गुरमुख रख्या ठंडा ठार, बण सेवक सेव कमाईआ। कर किरपा देणा तार, तेरी इक्को ओट रखाईआ। चल के आया सच दुआर, दर दरवाजा दिता खुल्लाईआ। उठ के वेखीए चारों कुण्ट फूलण बरख़ा होए अपार, देवत सुर रहे बरसाईआ। रिख मुन करन निमस्कार, जोदड़ी दोए जोड़ जोड़ धूढ़ी ख़ाक चरन रमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बोलण जै जैकार, जै जैकार दो जहान वज्जे वधाईआ। अंदर वड़या हरि निरँकार, उपर तक्कण विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाईआ। तेरी कुदरत तेरा अन्त ना पारावार, आदि अन्त बेअन्त बेअन्त आपणी धार चलाईआ। जिस नूं लभ्भदे रहे सन्त, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाईआ। सो कलयुग अन्तिम घर बैठयां बणावण आया बणत, कुल्ली कक्खां नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीनन आपणी दया कमाईआ। तिनका तिनका सुण पुकार, हरि जू दया कमाइंदा। पहलों बेड़ा करां पार, छप्पर छन्न जो अंग लगाइंदा। उत्भुज लेखा दए निवार, उतप्त आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां संग गुर गुर रंग चढ़ाइंदा। गुरमुखां संग उधरे कक्ख, तिनका तिनका मिले वड्याईआ। प्रभ मिलण दी रखी आस, आसा पूरन दए कराईआ। गृह मन्दिर निरगुण जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान वेखे चाँईं चाँईंआ। जंगल जूह बुझाए प्यास, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। धरत धवल दा बूटा उपर लाए आप आकाश, सिंच हरया आप कराईआ। सेवा करे बण बण दासी दास, वड देवी देव बेपरवाहीआ। एथे ओथे सदा सुहेला इक्क इकेला जन भगतां वसे सदा पास, वसेरा आपणे घर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा गिण गिण झोली पाईआ।

✳ १३ जेठ २०१६ बिक्रमी देवा सिँघ दे गृह पिण्ड धिंगाली जम्मू ✳

आपणे कोल ना रखे कुछ, ख़ाली हथ्थ बेपरवाहीआ। जन भगतां कोलों चले पुच्छ पुच्छ, बण पाँधी सच्चा राहीआ। गुरमुखां अंदर रखी सुच, आपणा तन अग्नी भेंट चढ़ाईआ। आपणी आसा पूरी करी लोच, लोचण आपणे दर्शन पाईआ। हरिजन भाण्डा ल्या पोच, पंज तत्त माटी साफ़ कराईआ। लेखा जाणे पुष्कर करौच, लखण आपे सोभा पाईआ। जम्बु कोए ना सोचे सोच, सान सलमल दए वड्याईआ। कुशा आपे जाए पहुंच, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादी बिन भगतां जाए औंत, बूटा जड़ ना कोए लगाईआ। सुरती शब्द ना जाणे खौंत, नारी कन्त ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। आपणे कोल ना रखे कुछ, कीमत भगतां हरि हरि पाइंदा। सचखण्ड निवासी आपे उठ, धरत धवल डेरा लाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी तुठ, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। जन भगत बणाए साचे सुत, सीस जगदीश हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम मौली रुत्त, पत डाल्ही आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप सालाहइंदा। हरिजन सालाहे आप प्रभ, दीनन आपणी दया कमाईआ। जुग विछड़े जग लए लभ्भ, फिर फिर आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस नूं नूर इलाही कहिन्दे रब्ब, आलमीन वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन देवे हरि हरि माण, निमाणा आपणी सेव कमाइंदा। प्रगट हो श्री भगवान, प्रगट गुरमुख आप कराइंदा। आपणा मेट जगत निशान, जगत निशाना भगत वखाइंदा। आपे बणे दर दरबान, दर दरवेश फेरा पाइंदा। गुरमुख बणाए साचा काहन, बण गोपी सेव कमाइंदा। हरिजन वेखे साचा राम, सीता सुरती नाल प्रनाइंदा। मुरीद मुर्शद सुणाए कलाम, कलमा नबी आप अल्हाइंदा। घर घर सुत्तयां देवे पैग़ाम, सच पैग़म्बर फेरा पाइंदा। सच सुअम्बर रचया आण, हरि जू साचा सगन मनाइंदा। उठो सिक्खो करो ध्यान, हरि जू आपणा ध्यान वखाइंदा। एका राग सुणना गान, छत्ती राग मुख भुवाइंदा। जो जन रसना गाए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिस जन गुर अवतार पीर पैग़म्बर अग्गे हो हो हथ्थ मिलाइंदा। हथ्थ मिलावण दस्त बदस्त, दस्तगीर दए वड्याईआ। नाता चुक्कया कीट हस्त, हस्त कीट मिल्या सच्चे शहिनशाहीआ। हरि का भगत सदा मस्त, नाम मस्ती इक्क रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर कट के गए आपणा वक्त, आपणा वक्त ना किसे समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवणहारा शक्ति, अन्तिम शक्ति लए खिचाईआ। चार कुण्ट हुक्मे अंदर कर कर गए हरक्त, बण बण पाँधी फेरा पाईआ। अन्त सारे कहिण प्रभ तेरी बरक्त, बिन तेरे ख़ाली हथ्थ फिराईआ। हुक्मे अंदर कीती शरक्त, शरअ शरीअत वंड वंडाईआ।

बिन हरिभगत किसे दुआरे हरि जू ना होया प्रगट, कोटन कोटि गुर अवतार गए सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, कलयुग अन्तिम हरिजन आपणा रंग वखाईआ। भगतन रंग वखाए इक्क, एकँकार दया कमाइंदा। जिस दी गुर अवतार रखदे गए सिक, सो साहिब फेरा पाइंदा। जिस दा गीत गाउँदे रहे लिख लिख, सो लेखा अन्त मुकाइंदा। जिस दे बरदे बणदे रहे सिख, सो साची सिख्या इक्क पढ़ाइंदा। आपणा नाम बिन मंग्गयां पावे भिख, पूरब लहिणा वेख वखाइंदा। कर किरपा चरन लाया जिस, तिस राग ना कोए सुणाइंदा। जन्म जन्म दी लथ्थी विस, रंग एका नाम रंगाइंदा। अन्तर आत्म मारे खिच्च, परमात्म बन्धन पाइंदा। अट्ठे पहर रहे गुरसिखां विच, विचला भेव ना किसे जणाइंदा। दरस दीदार दी रखे सिक, सिखर चोटी चढ़ चढ़ डेरा लाइंदा। आपणी हथ्थीं लेखा लिख, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे दर सुहाइंदा। सच्चा दर गुरमुख दरवाजा, गुर गुर वेख वखाईआ। शाह सुल्तान फिरे भाजा, निमाणयां वेखे चाँईं चाँईंआ। भूपत भूप वड राजन राजा, ग़रीब निमाणे वेखे थाउँ थाईंआ। आपणा रचया आपे काजा, कुदरत कादर नाल मिलाईआ। त्रैभवन वजाए वाजा, वाह वा तेरी वज्जे वधाईआ। जिस घर गुरमुख जा निवाजा, तिस दर धरनी निउँ

१७५ निउँ सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आवे भाजा, करोड़ तेतीसा फूलन बरखा लाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सुणावन १७५

आपणा रागा, उच्ची कूक कूक अल्लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस दुआरे आपणा साजण साजा, तिस कोटन

१२ कोटि ब्रह्मण्ड बैठे सीस झुकाईआ। कोटन ब्रह्मण्ड झुकया सीस, सीस सके ना कोए उठाईआ। नज़री आया इक्क जगदीश, १२

जगत रीती रिहा भुवाईआ। चार जुग दी मेटे हदीस, हदीस इक्को इक्क पढ़ाईआ। जन भगतां दुआरे आपणा पीसण पीस, बण सेवक सेव कमाईआ। गुरमुखां पिच्छे लाया आपणा सीस, गुरमुख आपणा सीस रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन सदा सदा सदा सालाहीआ। समझ विच जे जाए आ, बेसमझ ना कोए अख्वाईआ। फड़ फड़ बाहों सारे लैण ढाह, पुरख अबिनाशी नट्ठ किते ना जाईआ। ठग्ग चोर यार झूठे बणन सारे गवाह, लोकमात फ़तवा देण वखाईआ। मुलां शेख़ पंडत पांधे आपणा आपणा लेखा देण वखा, जो लिख्या कलम शाहीआ। सब नूं भुल्ल जाए बेपरवाह, जे आपणी समझ दए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रो रो मार गए धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अछल अछल इस दा कोई नहीं विसाह, किस वेले काया खेड़ा देवे ढाहीआ। अंदर वड़ वड़ रैहबर बण बण दए सालाह, मार्ग आपणा आप लगाईआ। कर मुहब्बत करे नकाह, सुहबत आपणी दए जणाईआ। अन्तिम फ़ातया

सब दा दए पढ़ा, फ़तेह आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची समझ आपणे अंदर रिहा छुपाईआ। साची समझ रही छुप, चारों कुण्ट मुख छुपाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी रही चुप्प, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भेजे सुत, पिता पूत खेल वखाईआ। कर किरपा जन भगतां आपणा दरस देंदा रिहा कुछ, रूप अनूप अनूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम एकँकारा एका उठ, पुरख अबिनाशी आपणा पर्दा लाहीआ। निरगुण निरवैर गया तुठ्ठ, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। लख चुरासी कोलों बैठा लुक, जन भगतां आपणा भेव खुल्हाईआ। रातीं सुत्तयां घर घर आ के लए पुच्छ, निरगुण सरगुण आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, समझ समझ नाल मिलाईआ।

✳ १४ जेठ २०१६ बिक्रमी रूड़ सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

धवल कहे मेरे वड्डे भाग, वडभागी हरि हरि पाया। धरनी कहे मेरी खुल्ही जाग, नेत्र नर हरि नज़री आया। धरत कहे मोहे उपजे वैराग, पुरख अबिनाशी ढोला गाया। धूढ़ कहे मैं चरन लाग, आपणा लेखा लेख चुकाया। माटी कहे मेरा होया काज, करता पुरख वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा हर घट थाया। धरनी कहे मेरी खुल्ही अक्ख, आख़र दर्शन हरि हरि पाईआ। धरत कहे प्रभ हो प्रतख, जन्म जन्म दी चिंत मिटाईआ। धवल कहे मेरी रखी पत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ख़ाक कहे मेरी लेखे लाई रती रत्त, अंग अंग नाल मिलाईआ। माटी कहे बीज बीजया साचे वत्त, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। फुल्ल फुलवाड़ी होए उतप्त, पत डाल्ही संग वखाईआ। चार कुण्ट मौले रुत्त, रुत्त रुतड़ी सोभा पाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई वेखे उठ उठ, नव नौ लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक्क गोसाँईआ। धरनी कहे चढ़या रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। धरत कहे मेरी सेज सुहाई पलँग, पुरख अबिनाशी चरन टिकाइंदा। धवल कहे मेरा साचा संग, हौला भार आप कराइंदा। ख़ाक कहे मोहे मिले अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। माटी कहे खुशी मेरा बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी बख़्शंद, बख़्शिश आपणी आप कराइंदा। नव नौ चार मुका के पन्ध, पाँधी आपणा फेरा पाइंदा। मेरे गृह बह के गाए छन्द, आपणा ढोला आप सुणाइंदा। लेखा जाणे नव खण्ड, नौ नौ आपणा पर्दा लाहइंदा। वेख वखाए सूरज चन्द, मंडल मण्डप फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। धरनी कहे मोहे चढ़या चाअ, चाउ घनेरा इक्क जणाईआ। धवल कहे मिल्या सच्चा पातशाह, शहिनशाह वडी वड्याईआ। धवल कहे मेरी पकड़ी बांह, वेले अन्त अन्त सहाईआ। ख़ाक कहे मोहे लेखे ल्या ला, लेखा आपणी झोली पाईआ। माटी कहे चरन कँवल दिती पनाह, मिली सच सच्ची सरनाईआ। करया खेल बेपरवाह, बेअन्त आपणा रूप वटाईआ। जुग जुग लेखा दए मुका, लेखा लिख लिख आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं वेखणहारा, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। निरगुण निरगुण बण वणजारा, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, आप आपणा भेव चुकाइंदा। भगत भगवन्त दे आधारा, सन्त साजण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। धार चले उपर धवल, धरन मिले वड्याईआ। धरत कहे मेरा मौलया कँवल, कँवल फुल्ल महकाईआ। मेल मिलावा साँवल सवल, सुंदर आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। धरनी धरत धवल देवणहार सहारा, सच सहारा इक्क वखाइंदा। कलयुग अन्तिम करे पार किनारा, पार किनारा इक्क वड्याइंदा। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, नर हरि आपणा रूप

१७७ वटाइंदा। धरनी करे हौला भारा, धवल आपणा रंग वखाइंदा। लहिणा देणा चुकाए दुष्ट दुराचारा, हँकारी गढ़ आप तुड़ाइंदा। १७७

अठसठ तीर्थ वेखणहारा, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। नाता तोड़े मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा, गुर गुर हट्ट इक्क खुल्हाइंदा।

१२ वणज कराए सच वपारा, दो जहानां फेरा पाइंदा। खोल्हणहारा ठांडा दरबारा, दर दरवाज़ा इक्क रखाइंदा। महल अटल १२

उच्च मनारा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। भगतन मेला हरी दुआरा, हरि दर आपणा आप प्रगटाइंदा। नाउँ रख विच संसारा, भगत दुआरा आप सुहाइंदा। धरनी धरत धवल निउँ निउँ करे निमस्कारा, निमख निमख आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी उपर रखे धवल, धवल उपर रखे धरत, धरत उपर जाणे आपणा हेत, हेत मिलाए नाल भगत, भगत मेला हरि जू अन्त, अन्त लेखा साहिब कन्त, साहिब कन्त वेखणहार जुगा जुगन्त, जुगा जुगन्त श्री भगवान बणाए बणत, बणाए बणत महिमा अगणत, महिमा अगणत गुरमुख साचे सन्त, साचे सन्त सतिगुर आपणे लेखे लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ।

✳ १४ जेठ २०१६ बिक्रमी भगा सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

आदि जुगादि खबरदार, सो पुरख निरँजण आपणी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण परवरदिगार पर्दा आपणे हथ्थ रखाइंदा। एकँकारा शाह सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता पावे सार, सारंगधर भगवान, बीठलो आप अख्वाइंदा। श्री भगवान दए दीदार, दरसी दरस आप वखाइंदा। पारब्रह्म लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी वेस वटाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची भिच्छया आप सुहाइंदा। सचखण्ड निवासी सच दुआरा कर त्यार, सचखण्ड आप सुहाइंदा। तख्त निवासी सोहे तख्त अपार, बण बाडी घड़त घड़ाइंदा। धुर फ़रमाणा देवे एका वार, सच संदेशा आप सुणाइंदा। शब्दी शब्द सेवादार, सेवक सेवक इक्क बणाइंदा। दो जहान महल्ल उसार, त्रैभवन वेख वखाइंदा। चौदां हट्ट खोल्ह किवाड़, चौदां लोक छप्पर छन्न छुहाइंदा। गृह गृह मन्दिर दीपक बाल, जोती जाता नूर टिकाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पावे सार, त्रैगुण आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि निरँकारा, धुरदरगाही आप वरताईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, बेअन्त वड वड्याईआ। जल जल बिम्ब रूप अपारा, बिमल आपणी खेल कराईआ। धरनी धरत धवल सहारा,
१७८ धर धर एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल १७८
१२ पुरख समरथ, नर हरि नरायण आप जणाइंदा। पंज तत्त चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। चारे खाणी देवे वथ, १२
उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। साचा भेव श्री भगवान, एका एका वार जणाईआ। धरनी धवल धरत दिता दान, वड दानी वस्त वरताईआ। लख चुरासी होए प्रधान, जीव जंत जंत समझाईआ। खेले खेल श्री भगवान, भगवन रूप अनूप वटाईआ। जुग चौकड़ी वेखे आण, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। वेस वटाए गोपी काहन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह सुणे फ़रयाद, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। धवल अन्तिम रखणा याद, याददाशत आप समझाइंदा। जिस ने रचन रची आदि, अन्त लेखे आपणे पाइंदा। सति निशाना देवे गाड, दो जहानां आप वखाइंदा। वेस वटाए माधव माध, मोहणी आपणा रूप जणाइंदा। भगत भगवन्त साचे लाध, मिल मिल आपणा सगन मनाइंदा। तेरे उपर बह बह लए आराध, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्म वरते हरि निरँकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नव नौ चार खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। सेवा ला गुर अवतार,

तिन्न पंज तिन्न तेई एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या हरि निरँकार, गुर गुर आपणा भेव खुलाइंदा। धरनी तेरा लेखा अपर अपार, हरि जू आपणे हथ्थ रखाइंदा। फुल्ल फुलवाड़ी मौले रुत्त बहार, लख चुरासी गुलशन आप खिलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे वारो वार, सत्त दीप चरनां हेठ दबाइंदा। सेवा कर कर गुर अवतार, पीर पैग़म्बर मुलां शेख़ मुसायक तेरी गोद बहाइंदा। भगत भगवन्त दे आधार, सच आधारता इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या श्री भगवन्त, हरि हरि आप जणाईआ। खेलां खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग वेला आए अन्त, अन्त आवे सच्चा माहीआ। फेर बणाए तेरी बणत, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण दए समझाईआ। सुणयां गुण हरि निरँकार, धरनी नैणां नीर वहाया। कवण वेला आए अन्त विच संसार, संसा मेरा दए गंवाया। प्रगट होए आप करतार, निरगुण आपणा रूप वटाया। मेरा हौला करे भार, दुखी दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाया। मेरी सुणे आण पुकार, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। मेरे उत्ते आउण गुर अवतार, आपो आपणी वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला सुहाए घर, मेरे बंक दए वड्याआ। पुरख अबिनाशी रिहा दस्स, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। कलयुग अन्तिम आवां नस्स, निरगुण रूप वटाईआ। चार जुग नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पिछला लहणां करां बस, अगला आपणे हथ्थ रखाईआ। किसे ना चले कोई वस, सब दा लेखा दयां मुकाईआ। लख चुरासी त्रैगुण अंदर गई फस, फाँसी सके ना कोए कटाईआ। प्रगट होए पुरख समरथ, समरथ आपणा गुण दए समझाईआ। धरनी तेरा लेखा रखे आपणे हथ्थ, साढे तिन्न तिन्न वंड वंडाईआ। रविदास चुमारा पहलों गा के जाए जस, जस हरि हरि आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार हरि वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरी वंड, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। जन भगतां देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी देवे कंड, आपणा कन्ढा पार ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप समझाइंदा। भेव अभेद लैणा जाण, आदि पुरख आदि जणाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होए श्री भगवान, भगवन आपणा रूप वटाईआ। सब दा लहिणा देणा चुकाए आण, लेखा सब दी झोली पाईआ। करे खेल आप महान, वेद शास्त्र भेव ना जाणे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। देवे वड़याई वडा वड, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। आपणे विच्चों आपणे भगत कढ्ढ, लोकमात जन्म दिवाइंदा।

लख चुरासी अन्तिम लए छड्ड, नाता नाल ना किसे जुड़ाइंदा। जन भगतां दे के आपणा अद्ध, अद्ध सीस उत्तों वार वखाइंदा। धरनी तेरे उपर सद, तेरी गोद सुहाइंदा। अमृत जाम प्याए मदि, दूजा नशा ना कोए चढ़ाइंदा। एका नाद जाए वज, अनहद रागी राग अलाइंदा। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। भगत भगवन्त दोवें बहण सज, साख्यात आपणा रूप वटाइंदा। अन्तिम रखे तेरी लज, पर्दा आपणा उपर पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप वखाइंदा। साची सिख्या साख्यात, हरि जू हरि जणाईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल तमाश, भेव अभेदा आप खुलाईआ। जन भगतां करे पूरी आस, तेरी आसा नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी शाहो शाबाश, शहिनशाह बेपरवाहीआ। नाता तोड़ पृथ्मी अकाश, मंडल मण्डप डेरा ढाहीआ। साचा साजण लए साज, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शे सरन सच्ची सरनाईआ। साची सरन देवे भगवान, अन्त अन्त आप समझाइंदा। कलयुग वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। भगत भगवन्त करे परवान, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। सचखण्ड दा सच निशान, धरनी धरत धवल उपर आप बणाइंदा। अंदर वड़ वेखे वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। चार कुण्ट दिसे बीआबान, नव नौ अन्धेरा छाइंदा। चारे खाणी होए वैरान, बूटा मात ना कोए लगाइंदा। भगतां मिले आप भगवान, भाग धरत उपर वखाइंदा। जुग जुग दी लग्गी बुझे आग, अग्नी तत्त ना कोए वखाइंदा। सन्त सुहेले बणाए सज्जण साक, दूजा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। घर मिले रसूल पाक, पाकी पाक ख़ाक सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा खोले ताक, चार कुण्ट अन्धेर मिटाइंदा। इक्क जणाए भविख्त वाक, नाम नगारा इक्क वजाइंदा। प्रगट हो साख्यात, साखी आपणी आप सुणाइंदा। दो जहानां हरि जू गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा पर्दा लए ढाक, पति भगतां हथ्थ रखाइंदा।

✳ १४ जेठ वीह सौ उन्नी बिक्रमी करतार चन्द दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

प्रभ चरन मेरी निमस्कारा, धरत धवल खुशी मनाईआ। चरन धरया विच संसारा, किरपा कर बेपरवाहीआ। निमाणयां मिल्या इक्क सहारा, आस निरास ना कोए रखाईआ। डुबदयां मिल्या अन्त किनारा, साचे तट मिले वड्याईआ। नाता छुटया झूठे यारा, सईया एका मेल मिलाईआ। नेत्र नैण कीआ दीदारा, दर दुआर दर्शन पाईआ। गीत गा सुहागी वारा, साचा ढोला मेल मिलाईआ। पाया पुरख एकँकारा, पुरखोतम संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देणी साची सरन सरनाईआ। सरन मिली सरनागत, गत आपणी ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ कमलापति, कमली कोझी गले लगाईआ। लेखे लग्गी गोबिन्द दुलारे रत्त, रत्ती रत्त मेरी कीमत पाईआ। बीज बिजाया साचे वत, किरपा करी बेपरवाहीआ। बूटा मौलया साढे तिन्न हथ्थ, वंडन वंड इक्क वखाईआ। अग्गे पिच्छे सत्थर घत, हरि जू आपणी सेज सुहाईआ। अंदर वड़ पुरख समरथ, मेरी बणत बणाईआ। माण तोड़ उच्चे टिल्ले पर्बत, परम पुरख खेल खलाईआ। साचा मार्ग इक्को दस्स, सिख्या साची करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण हो हो वस, सरगुण आपणा मेल मिलाईआ। अमृत सरोवर साचा रस, बण रसीआ रस चखाईआ। लख चुरासी विच्चों कर कर वक्ख, वक्खरी आपणी गंढु बंधाईआ। भगत भगवन्त कर प्रतख, पारखू आपणा वेस वखाईआ। मेरे उपर बह बह गाए जस, सिफ्त सालाह सच्ची सालाहीआ। मेरी अन्तिम पूरी करे आस, हिरस हवस ना कोए वधाईआ। कूड़ी क्रिया तुट्टा फ़ास, फाँसी अवर ना कोए चढ़ाईआ। चरनां हेठां रखाया पृथ्मी आकाश, आकाश चरनां हेठ दबाईआ। जन भगतां पिच्छे आया ख़ास, ख़ाहिश मेरी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी बणत अन्त बणाईआ। मेरी बणत गई बण, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। आपणा ढोला राग सुणाया कन्न, साचा सोहला आप जणाइंदा। सांतक सति होया तन, शीतल धार इक्क वहाइंदा। कूड़ कुड़यारा देवे डंन, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। काची माटी भाण्डा देवे भन्न, भन्नणहारा फेरा पाइंदा। किरपा कर श्री भगवन, श्री धर आपणे रंग रंगाइंदा। लोकमात बण जननी जन, जन आपणे आप प्रगटाइंदा। एका दे नाम धन्न, धन्न ख़ज़ाना आप लुटाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, नादी नाद आप वजाइंदा। एका नूर चढ़ाए चन्न, प्रकाश प्रकाश आप वखाइंदा। एका बेड़ा देवे बन्नृ, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र आप उठाइंदा। मेहर नज़र रख करतार, करते मेरी बणत बणाईआ। जुग जुग दा दर्द निवार, दुःख सुख विच बदलाईआ। कर्म कांड कर कर पार, निहकर्मी दया कमाईआ। वरन बरन कर खुआर, साची सरन इक्क जणाईआ। लहिणा चुका गुर अवतार, पीर पैग़म्बर खाता दए मुकाईआ। साचा साका एकँकार, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, बेपरवाह इक्क अख्वाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यार, सरगुण निरगुण लए मिलाईआ। नाम वजाए इक्क सतार, सति सतिवादी राग अलृाईआ। भवजल करनहारा पार, भय भयानक होए सहाईआ। बोध अगाधी इक्क जैकार, जै जैकारा दए सुणाईआ। रागी नादी वसे बाहर, बेअन्त वड वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां सुणे पुकार, सुण सुण आपणा फेरा पाईआ। मैं अन्तिम रोवां ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। खुलृी मींढी होई बेहाल, साचा सीस ना कोए गुंदाईआ। चारों कुण्ट

कूड़ कुड़यारा कलयुग कूके काल, काल दुहाई रही सुणाईआ। कोई नज़र ना आवे साचा लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अबिनाशी हो कृपाल, किरपन आपणी दया कमाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, उठ उठ आपणी सेव कमाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाही इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्त होया सहाईआ। वेले अन्त हो सहा, सईया आपणी दया कमाइंदा। निरगुण हो हो पकड़ी बांह, सरगुण नज़र किसे ना आइंदा। जिस ने सत्थर दिता वछा, सो अन्तिम आप उठाइंदा। जिस ने खेल दिता करा, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। जिस ने हुक्म दिता वरता, सो हुक्मे अंदर वंड वंडाइंदा। नव नौ चार डेरा ढाह, डेरा आपणा आप बणाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह रूप वटाइंदा। भगत दुआरा इक्क वसा, वस घर आपणे सोभा पाइंदा। मेरी कुक्ख दिती सुहा, उज्जल मुख मुख वखाइंदा। मेरा दुखड़ा दिता गवा, रोग नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मेरा दुखड़ा होया दूर, धवल घर घर रही सुणाईआ। मेरी आसा होई पूर, तृष्ना अवर ना कोए वधाईआ। मेरा नाता तुट्टा कूड़, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी मिली चरन धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। मेरी चोली चढ़या रंग गूढ़, गूढ़ा रंग उतर कदे ना जाईआ। मेरा भण्डारा होया भरपूर,
१८२ निखुट कदे ना जाईआ। मेरे पिछले बख्शे सर्ब कसूर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। मेरा ठंडा कीता तपदा तन्दूर, अग्नी १८२
तत्त तत्त बुझाईआ। इक्क वखाया सच ज़हूर, ज़ाहरा आपणा नूर प्रगटाईआ। जिस दी सो सुणदी रही दिसदा दूर, सो
१२ नेड़े आया चल के माहीआ। जन भगतां मिले आप ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। मेरा कलयुग अन्तिम तुट्टा ग़रूर, १२
निउँ निउँ आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी तृखा अग्न बुझाईआ। तृखा अग्नी बुझी प्यास, सांतक सति सति वरताया। पुरख अबिनाशी खेल तमाश, लोकमात आप रचाया। जन भगतां हो हो दासी दास, घर घर आपणा राग सुणाया। मैं वेखां आस पास, अंदर बाहर गुपत ज़ाहर, निरगुण आपणा डेरा लाया। जन भगतां पिच्छे करे मेरी बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाया। मेरा कारज आया रास, करता कीमत लए पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेले आपणे दर, दर भगतां इक्क सुहाया। भगतां दर पुनी आस, आसा पूरन हरि रघुराईआ। समझ विच ना आए क्यास, बेसमझ दए दुहाईआ। गुरमुख प्रगटाए आपणी शाख़, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी विच्चों लुक लुक रिहा राख, राखी कर कर खुशी मनाईआ। किस नूं सच्ची दस्सां बात, सुणन वाला नज़र कोए ना आईआ। रसना सारे मैनूं कहिन्दे धरत मात, मेरे उत्ते बह बह विभचार रहे कमाईआ। चार

वरन दी कूड़ी जमात, ज़ामन नज़र कोए ना आईआ। पीर पैग़म्बर गाउँदे रहे भांत भांत, मेरे उपर वंड वंडाईआ। मक्का काअबा बण बण ख़ात, ख़ाता जीवां रिहा जणाईआ। बिन पुरख अबिनाशी कोई ना देवे सांत, गुर अवतार आपणी आपणी वंड गए वंडाईआ। दीन मज़्हब बन्नृ बन्नृ नात, नाता आपणे संग रखाईआ। पारब्रह्म दी गा गा गाथ, सेवा सच सच कमाईआ। अन्तिम सारे गए ख़ाली हाथ, लिख्त पढ़त संग ना कोए लै जाईआ। मेरे उत्ते मेरी धूढ़ी लै लै टेकदे रहे मस्तक माथ, श्री भगवान इक्को ओट रखाईआ। पुरख अबिनाशी अन्त बणाई ढेरी ख़ाक, ख़ाक मेरी झोली पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवें बणाउँदी रही साक, पिछला नाता ना किसे जणाईआ। कलयुग अन्तिम इक्को मिल्या रसूल पाक, रहिमत आपणी रिहा कमाईआ। पुरख अबिनाशी खोलृ वखाया साचा ताक, दर दीवार नज़र कोए ना आईआ। नैण नेत्र उठ के वेख्या झाक, निरगुण नूर डगमगाईआ। चरन कँवल कोटन कोटि गुर अवतार, कर कर बैठे आस, आसा विच ध्यान लगाईआ। हौली हौली मैं वी गई फस, दोए जोड़ जोड़ सीस झुकाईआ। करवट बदल पुरख अबिनाश, धुर फ़रमाणा दिता सुणाईआ। तेरे उत्ते मेरी रास, मंडल आपणा दए वड्याईआ। भगत दुआरा बणे साख्यात, सखी तेरा संग निभाईआ। भगत भगवान देवे दात, बण दाता आप वरताईआ। वरन बरन दब्बे तेरे डूँग्घे खात, खाता फेर ना कोए फुलाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी तेरे उपर बणाए सच जमात, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी झोली पाए गाथ, ख़ाली झोली आप भराईआ। भगत दुआरे जा के टेकणा माथ, मस्तक निउँ निउँ सीस लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर भगतां संग वखाईआ ।

✳ १४ जेठ २०१६ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

किरपा कर श्री भगवान, इक्को तेरी ओट तकाईआ। तेरे भगत करन परवान, मेरी घाल लेखे पाईआ। मैं जावां बण निधान, बाली बुध रूप वटाईआ। दूरों वेखां सच निशान, सति सतिवादी रिहा झुलाईआ। दर चरनीं डिगां आण, माण ताण ना कोए वड्याईआ। मैं दे के आवां आपणा सच ब्यान, ब्याना आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईंआ। सच दुआरे जावां नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। तेरे भगतां वेखां सच इकट्ठ, किस बिध बैठे डेरा लाईआ। कवण जाप रहे जप, जप जप आपणी खुशी मनाईआ। कवण धाम उतरे तप, अग्नी तपश दए बुझाईआ। कवण वेला रखें पत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कवण गीत गावां जस,

ढोला तेरे नाम सुणाईआ। कवण दुआरे जावां वस, वस वस खुशी मनाईआ। चार जुग नौ खण्ड पृथ्मी रही निरास, आसा पूर ना कोए कराईआ। मेरा सीना होया पाश, पाश चार कुण्ट वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, जिस घर मिले सच वड्याईआ। साचा घर सच महल्ला, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी विच इक्क इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। हेठां उपर पुरख अबिनाशी एका खला, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती धार शब्दी रला, शब्दी नाद डंक सुणाइंदा। जन भगत फड़ाया आपणा पल्ला, पल्ला दो जहान फिराइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुग चार पहलों घल्ला, घल्ल घल्ल आपणा हुक्म सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम आवे महांबीर नूर इलाही अल्ला, मुकामे हक़ हक़ सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर इक्क समझाइंदा। साचा दर इक्क मनारा, हरि जू हरि हरि आप समझाईआ। ओथे बैठा इक्क दातारा, निरगुण बैठा सेज सुहाईआ। भगतां बणया आप वणजारा, साचा हट्ट रिहा चलाईआ। लेखा लिखे बण लिखारा, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। सेवा करे रविदास चुमारा, चमरेटा कर कर खुशी मनाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, वेख वेख आपणा मार्ग लाईआ। सच सच दा सच मनारा, दर घर साचे आप सुहाईआ। छत्ती छत्ती पार किनारा, बत्ती बत्ती हरि गुण गाईआ। रत्ती रत्ती रत्त दए सहारा, रत्ती रत्त नीहां हेठ दबाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। सेवा लाए सुत दुलारा, गोबिन्द साची सेव समझाईआ। बाल अंञाणे कर प्यारा, प्यार प्यार नाल बंधाईआ। तेरी गोद दए हुलारा, धरत धवल धवल सुहाईआ। उपर बणाए सच मनारा, तेरा भार आपणे उपर उठाईआ। तूं आउणा चल दुआरा, हरि जू हरि हरि रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दर दए वखाईआ। साचा दर वेखणा आ, हरि जू हरि हरि आप वखाइंदा। आदि जुगादि लख चुरासी जीव जंत तूं बैठी खा, खा खा तेरा अन्त ना कोए कराइंदा। पहलों बणे सब दी मां, फेर सब दा निशान निशाना नज़र कोए रहिण ना पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ अन्तिम करे सच न्यॉं, न्यॉंकार आपणा फेरा पाइंदा। गोबिन्द बाले नीहां हेठ दबा, उत्ते भगत दुआर सुहाइंदा। तेरा लहिणा मूल चुका, मूल आपणा तेरी झोली पाइंदा। करे खेल बेपरवाह, नेत्र नैणां सर्ब वखाइंदा। सत्तर बहत्तर बणे गवाह, शहादत इक्को वार रखाइंदा। चौथे जुग रचया साह, साहिब आपणा हुक्म वरताइंदा। साचे तख्त बैठ हुक्म दिता सुणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। हरिभगत सुहेले बख्शे सर्ब गुनाह, गुण आपणा झोली पाइंदा। कलयुग अन्तिम बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। आवे जावे सुणावे सच सलाह, सलाह विच आप कदे ना आइंदा।

करे प्यार जिउँ पुत्रां मां, मात पुत्त गुरमुख रूप वटाइंदा। धरनी धरत धवल तेरी पकड़ बांह, गोबिन्द नाल रलाइंदा। गोबिन्द मंगे पुरख अबिनाशी चरन पनाह, हरि चरन तेरे उपर टिकाइंदा। तेरा दए बणाया साचा थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। जन भगतां नावें गया ला, नावां फेर ना कोए मिटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी झूठा खेड़ा देवे ढाह, ढाह उसार आपणा हुक्म वरताइंदा। धन्न भाग जन भगतां मिल मिल सोहँ ढोला लैणा गा, थल अस्गाह तेरा संग वखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस जन लए अपणा, अन्त आपणे विच मिलाइंदा।

✳ १४ जेठ २०१६ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

मिले दुआर भगतां संग, संग इक्को इक्क रखाईआ। जिन्हां चढ़या तेरा रंग, तिन्हां वेखां चाँईं चाँईंआ। तेरी सोहे सेज पलँग, आसण सिँघासण तेरी वड्याईआ। तेरे गृह मिले अनन्द, घर तेरे खुशी मनाईआ। गुरमुख तेरे वेखां चन्द, बिन चांदनी करन रुशनाईआ। तूं साहिब टुट्टी दिती गंढु, गंढु आपणे नाम पुवाईआ। बिन भगतां फिरां रंड, चार कुण्ट कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, मेरा लेखा लेखे पाईआ। लेखा लेखे गया लग्ग, मिल्या हरी दुआर। भगत प्रेम प्यार गई बज्झ, आप आपा दिता वार। दर दुआरे बहां सज, दोए जोड़ जोड़ निमस्कार। मेरी रखी पत्त लज्ज, कलयुग कल अन्तिम वार। दयाल पर्दा दिता कज्ज, काल मारे ना अन्तिम वार। मैं नेत्र वेखां रज्ज रज्ज, तेरे भगतां दरस दीदार। कोझी कमली ना कोए आचार चज, मूर्ख मुग्ध लैणा उभार। नव नौ पार कर के आई हद्द, दूर दुराडा पैंडा मार। मेरे बुढे होए हड्ड, चार जुग कटी वगार। तेरे नालों रही अड्ड, मेरे नैण होए शर्मशार। कर किरपा अन्तिम ल्या सद्द, मेरे साहिब सच्चे सुल्तान। मैं होई गद गद, तेरा वेख धुर निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर करीं परवान। होई परवान दर तेरे, तेरी ओट रखाईआ। मैं चल के आवां भगतां डेरे, डेर अवर ना कोए जणाईआ। तूं दर्शन देणा हो के नेरे, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तूं वसें साढे तिन्न हथ्थ काया खेड़े, खेड़ा आपणा आप बणाईआ। जन भगतां फड़ फड़ बन्न्हें बेड़े, बेड़ा मेरा नाल रलाईआ। तुध बिन पार हरिभगत वेखां केहड़े केहड़े, बिन तेरी किरपा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि कटे गेड़े, गेड़ा पन्ध ना कोए मुकाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होया सिँघ शेर शेर दलेरे, दलेरी आपणी रिहा वखाईआ। जन भगतां कहे मैं तेरा तुसीं मेरे, मेरे तेरे विच भेव ना राईआ। मैं भुल्ली भटकी आ गई वेहड़े, रो रो नेत्र दयां वहाईआ। पुरख अबिनाशी

१८५
१२

मेट झेड़े, झिड़क पिच्छां ना देणा हटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कहे मेरे भगतां वसणा आ के खेड़े, तेरा खेड़ा देण वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी गत मित गुरमुखां हथ्थ रखाईआ।

✳ १४ जेठ २०१६ बिक्रमी इन्दर सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

सचखण्ड सच्चा दरबारा, लोकमात मिली वड्याईआ। धरनी धरत धवल सहारा, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। सो पुरख निरँजण करया खेल न्यारा, निरगुण आपणी धार चलाईआ। हरि पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़ा, सच महल्ला दए सुहाईआ। एकँकारा कर पसारा, दर घर वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरँजण निरगुण जोत नूर कर उज्यारा, दीआ बाती डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे ठांडा दरबारा, अलख निरँजण खुशी मनाईआ। श्री भगवान पावे सारा, महांसारथी फेरा पाईआ। पारब्रह्म लाया अखाड़ा, आप आपणी रचन रचाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे आप सुहाईआ। सच दुआर श्री भगवान, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। लोकमात कर परवान, नाम निशाना इक्क वखाइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाइंदा। खेले खेल नौजवान,
१८६ नव नौ पन्ध मुकाइंदा। चार चार कर परवान, चौथे जुग वेस वटाइंदा। प्रगट हो श्री भगवान, नर नरायण नाउँ धराइंदा। १८६
साचे तख्त बैठ शाह सुल्तान, सच संदेशा इक्क अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा, आप सुहाइंदा। सच दुआरा सोभावन्त, सति सतिवादी आप सुहाईआ। लोकमात बणाई बणत, घड़न भन्नणहार वड वड्याईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, जुग जुग लेख ना कोए समझाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सच दुआरा लोकमात आप प्रगटाईआ। लोकमात सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप बणाइंदा। वेखणहार कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड आपणा पर्दा लाहइंदा। गीत गोबिन्द गाए छन्द, ढोला सोहला आप प्रगटाइंदा। आदि जुगादी इक्क अनन्द, अनन्द मंगल आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआरा सोहे हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण खोल्हया सरगुण दर, दर दरवाज़ा दए जणाईआ। तख्त निवासी साचे तख्त बहे चढ़, सच सिँघासण आसण लाईआ। निरभउ भय वखाए सर्ब डर, भयानक आपणा रूप वटाईआ। महल अटल उच्च मनारे आपे खड़, खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारा हरि निरँकार, पुरख अकाल आप

वड्याइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। तख्त निवासी बण सिक्दार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा।
नव नौ चार जाणे विहार, पूरब लेखा सर्ब मुकाइंदा। चतुर्भुज ख़बरदार, बल आपणा आप वखाइंदा। आदि शक्ति नूर
उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। बेऐब खुदाई परवरदिगार, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। निरगुण रूप राम पसार, रमइया
आपणी खेल कराइंदा। सच संदेशा देवे एका वार, शब्द सुनेहड़ा आप घलाइंदा। विष्नूं रहिणा ख़बरदार, आलस निंद्रा
पर्दा लाहइंदा। ब्रह्मे वेख मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। शंकर देवे इक्क ज्ञान, शरअ आपणी आप समझाइंदा।
त्रैगुण माया कर परवान, सति परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। पंज तत्त बाल अञ्याण, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश बन्धन पाइंदा।
लख चुरासी वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। जानणहारा सर्ब ज्ञान, ज्ञान आपणे विच छुपाइंदा। राग अनादी बोल
बेज़बान, तार सतार आप हिलाइंदा। शास्त्र सिमरत जाणे श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
सच संदेशा आप सुणाइंदा। सच संदेशा एका एक, आदि पुरख आप जणाईआ। ब्रह्मे मति बख्शे टेक, चरन कँवल सच्ची
सरनाईआ। आत्म ब्रह्म सर्ब दा लेख, लेखा लेखे लए लगाईआ। ईश जीव बदले भेख, वेस वेस वेस वटाईआ। आत्म
परमात्म जाणे देस, देस दसन्तर इक्क समझाईआ। सर्ब जीआं दा नर नरेश, नर नरायण हरि अख्वाईआ। रूप रंग ना
१८७ कोए रेख, मुच्छ दाढ़ी ना कोए प्रगटाईआ । सदा सुहेला रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। लेखा जाणे गणपति गणेश, गहर १८७
गम्भीर सच्चा साँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा एका एक जणाईआ। सच संदेशा
१२ लैणा जाण, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। प्रगट हो श्री भगवान, लोकमात खेल कराइंदा । ब्रह्मे सुत वेखे बाल अंञाण, १२
सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार आपणी गोद बहाइंदा। बराह देवे इक्को दान, यगै पुरष रंग रंगाइंदा। हाव ग़रीव करे
पछाण, नर नरायण भेव खुलाइंदा। दता त्रै कर परवान, कपलमुन मुख सालाहइंदा। रिखप देव कर प्रधान, पिरथू एका
रंग रंगाइंदा। मत्तस चरन कँवल कर परवान, कछप एका वंड वंडाइंदा। धनंतर जणाए वड विदवान, मोहणी आपणा खेल
कराइंदा। हँसा रूप नौजवान, बावन आपणा बल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा
इक्क जणाइंदा। सच सुनेहड़ा सिँघ नर, नर नरायण आप जणाईआ। लेखा जाणे हरी हरि, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। आदि
जुगादी वेस धर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ले आपे
चढ़, जुग विछड़े वेखे चाँईं चाँईंआ। वेखणहारा एकँकार, अकल कल आप अख्वाइंदा। सृष्ट सबाई कर प्यार, दृष्ट आपणी
इक्क जणाइंदा। अलख अगम्म अगोचर बेपरवाह परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। खेल करे अपर अपार, अपरम्पर

भेव कोए ना पाइंदा। परस राम दे आधार, राम रमइया रंग रंगाइंदा। जनक सपुत्तरी कन्त भतार, नाता जोड़ बन्धन पाइंदा। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां बोध दृढ़ाइंदा। कान्हा कृष्ना रूप अपार, जगत जगदीश सीस ताज सुहाइंदा। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण करे खेल अपर अपार, मुकट बैण नज़र किसे ना आइंदा। एका भगत कर परवान, आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, अठारां अध्याए गीता आप सुणाइंदा। अन्तिम मेट जगत निशान, करे खेल श्री भगवान, रूप अनूप आप रखाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। नूरी नूर प्याए जाम, आबहयात मुख छुहाइंदा। काया काअबा कुरा कर त्यार, ज़रा ज़रा रूप दरसाइंदा। कायनात करे ख़बरदार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा एका वार जणाइंदा। सच संदेशा लैणा सुण, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। निरगुण सरगुण समझाए साचा गुण, भेव अभेद आप खुल्ाईआ। लख चुरासी विच्चों चुण, ब्रह्म पारब्रह्म आप जणाईआ। एका राग उपजाए धुन, आत्मक धुन नाद वजाईआ। खोल्णहारा साची सुन, सुन्न समाध आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। धुर फ़रमाणा निरगुण धार, शब्दी शब्द शब्द जणाइंदा। पंज तत्त कर प्यार, तत्तव एका रंग रंगाइंदा। ब्रह्म मति दे आधार, पारब्रह्म खेल खलाइंदा। कमलापति मीत मुरार, कँवल नैण नैण वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क समझाइंदा। सच सुनेहड़ा साचा गीत, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। ब्रह्म करे सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। आत्म परमात्म रखे ठांडी सीत, सांतक सति सति कराईआ। जुगा जुगन्तर चलाए साची रीत, गुर अवतार सेवा लाईआ। वेखणहारा हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक्क वखाईआ। सच संदेशा एको एक, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। आदि पुरख साची टेक, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड निवासी हर घट रिहा वेख, लख चुरासी डेरा लाइंदा। निरगुण सरगुण कर बबेक, ववेकी आपणी धार रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा गुर गुर मीत, मित्र प्यारा इक्क जणाईआ। त्रैभवन धनी बैठा आप अतीत, त्रैकाल दरसी नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गावे साचा गीत, गीत आपणा नाउँ सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, नर हरि नरायण आप कराइंदा। निरगुण निरगुण फड़ाए पल्ला, सरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। धुर संदेशा एका घल्ला, नानक अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, रल मिल आपणी

खुशी मनाइंदा। आपणे दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या गुर गुर रंग, रंग रंगीला आप समझाईआ। आत्म परमात्म सच पलँग, सति सतिवादी आप हंढाईआ। अठ्ठे पहर वज्जे मृदंग, दिवस रैण नाद अलाईआ। काया मन्दिर अंदर जमना सुरस्ती वगे धार गंग, गोदावरी आपणा रंग वखाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एका जोती नूरी चन्द, नूर नूर नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे गुज़री चन्द, बन्दीख़ाना दए समझाईआ। रूप वटाए आपे सिँघ, सिँघ आपणी धार बणाईआ। दाता दानी वड मरगिंद, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, साचा ढोला एका सोहला सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। सोहला गाया हरि गोबिन्द, भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी मेटे चिन्द, नित नित वेस वटाइंदा। ठाकर स्वामी सदा बख़्शंद, बख़्शिश आपणा हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवन्त बणाए साची बिन्द, सुत अनादी नाउँ धराइंदा। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, चिंता रोग ना कोए वखाइंदा। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड आपणी खोज खुजाइंदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, नीर सीर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोल्हे हरि, हरि जू दया आप कमाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी देंदा रिहा वर, गुर अवतार आप समझाईआ। पीर पैग़म्बर दे दे डर, नौबत एका नाम वजाईआ। दस्तगीर अन्त लए फड़, बदस्त वेख वखाईआ। दो जहानां वेस धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम रिहा सुणाईआ। चार जुग अन्त संदेशा, हरि जू हरि हरि आप जणाया। पुरख अबिनाशी घट घट वेसा, लख चुरासी डेरा लाया। बिन हरिभगत नेत्र किसे ना पेखा, लख चुरासी रो रो नैणां नीर वहाया। कबीर जुलाहा दए आदेसा, सजदा निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाया। आपणा लेखा देवे दस्स, चार जुग वडी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी होए भगतां वस, दूसर संग ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दवारयों आए नस्स, ध्रू प्रहिलाद लए तराईआ। नामे छप्परी लई छत्त, बण बाढी सेव कमाईआ। धन्ना सत्थर बैठा घत्त, सीस जगदीश रिहा झुकाईआ। करे खेल पुरख समरथ, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। दो जहानां वेखे नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे तत्त अठ्ठ, नौ दुआर खोज खुजाईआ। दसवें देवे साचा रस, रस रसीआ रस चखाईआ। हरिजन मेला हस्स हस्स, हँस मुख सोहँ साची चोग चुगाईआ। चार जुग गुर अवतारां कोलों गवाउँदा रिहा आपणा जस, धुर फ़रमाणा

शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा एका वार अलाईआ। सच संदेशा दिता घल्ल, हरि जू आपणी दया कमाईआ। चार जुग जो करदा रिहा वल छल, अछल छल धारी भेस वटाईआ। जन भगतां अंदर गया रल, दिस किसे ना आईआ। सति सतिवादी बूटा लाए फल, फलवाड़ी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खुलाईआ। भेव खोले हरि निरँकार, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। उठो वेखो पाओ सार, हरि जू की की खेल रचाइंदा। जिस नूं गाउँदे रहे जुग चार, रसना जिह्वा सेव कमाइंदा। जिस नूं कह कह गए बेअन्त बेअन्त बेपरवाह परवरदिगार, अन्त कदे ना आइंदा। जिस दे पिच्छे मन्दिर मस्जिद मट्ठ गुरुदुआर कीते त्यार, खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी संग निभाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल करे अपर अपार, निरगुण जोत नूर उज्यार, शब्दी डंका विच संसार, दो जहानां आप सुणाइंदा। पुरी लोअ होए बेज़ार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखण चारों कुण्ट नैण उठाल, नेत्र नैणां नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म सुण फ़रमाणा, हरि जू हरि हरि रिहा जणाईआ। निरगुण बणया साचा राणा, सरगुण नज़र किसे ना आईआ। लोकमात होया प्रधाना, जगत प्रधानगी रिहा कमाईआ। जन भगतां बन्ने इक्को गाना, तन्द नज़र
१६० किसे ना आईआ। आपे बणया बेपहचाना, चारों कुण्ट फिरे वाहो दाहीआ। करे खेल मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाईआ। १६०
१२ लेखा जाणे गोपी कान्हा, मंडल रास आप रचाईआ। राम सीता सीता राम हो प्रधाना, परम पुरख आपणा खेल खलाईआ। १२
चतुर्भुज नौजवाना, नव निध आपणी धार वखाईआ। कलयुग अन्तिम इक्क निशाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा रिहा घलाईआ। सच संदेशा हरि भगवान, एका एक जणाया। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात प्रगटाया। किरपा कर श्री भगवान, सति सतिवादी रंग चढ़ाया। साचे भगतां दिता दान, दानी बण के हरि जू आया। पूरब लेखा चुक्या आण, अग्गे आपणी गोद सुहाया। एथे ओथे देवे माण, दरगाह साची मेल मिलाया। राए धर्म चुकी काण, चित्रगुप्त लेख मुकाया। लाड़ी मौत ना करे पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताया। आपणा खेल करे करतार, खेलणहार आप हो आईआ। जुग जन्म दे विछड़े यार, अन्तिम मेले चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखण वारो वार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा बरखे फूलण धार, अमृत मेघ मेघ छहबर लाईआ। साची सखीआं मंगल चार, गीत गोबिन्द गोबिन्द अलाईआ। वाहवा वज्जदी रहे सतार, सति सतिवादी आप वजाईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, उठ उठ आपणी सेव कमाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल,

क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश, एका गंढु पुवाईआ। रातीं सुत्तयां चले नाल नाल, सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ आपणी सेव कमाईआ। गुरमुखां पिच्छे फिरे आपे बेहाल, बेहबल हो हो रिहा कुरलाईआ। बिन भगतां हल्ल ना करे कोई सवाल, हरि जू पट्टी आपणी रिहा वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी विच्चों भाल, गुरसिख गुर गुर लए जगाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, भगत दलाली आप कमाईआ। वेखणहारा हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणी दए समझाईआ। करया खेल बेमिसाल, मिसल भगतां लई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा देवे एका वर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपणी बूझ देवे ज्ञान, ज्ञान ज्ञान नाल मिलाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाइंदा। सुरती शब्दी देवे माण, शब्द सुरत संग रखाइंदा। एका राग सुणाए कान, रागी राग आप अलाइंदा। एका अमृत पीण खाण, आबहयात आप प्याइंदा। एका मन्दिर वखाए मकान, काया काअबा आप खुलाइंदा। एका भगत इक्क भगवान, एका इष्ट देव मनाइंदा। एका नूर जोत महान, एका सचखण्ड डेरा लाइंदा। एका जुग जुग वेखे आण, रामा कृष्ना रूप वटाइंदा। एका नानक गोबिन्द कर प्रणाम, एका मन्त्र सति सति दृढ़ाइंदा। एका ईसा मूसा मुहम्मद दए पैग़ाम, शरअ शरीअत इक्क समझाइंदा। एका अन्तिम सब ते लाए आप इलज़ाम, बरी कोए रहिण ना पाइंदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण आप सुणाए आपणा कलाम, कलमा नबी ना कोए पढ़ाइंदा। फड़ रसूलां करे गुलाम, हुक्मे अंदर सर्ब रखाइंदा। करे खेल श्री भगवान, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां भगत दुआरा करना पए परवान, पारब्रह्म प्रभ हुक्म सुणाइंदा। जिस गृह वसे आप भगवान, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। आत्म परमात्म ईश जीव जगत जुग दान, ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, हरिभगत हरि दर आप वसाइंदा।

✳ १५ जेठ २०१६ बिक्रमी वकील सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

सूफ़ी सिफ्त करन सालाह, सही सलामत बेपरवाहीआ। रैहबर रहिमत दए कमा, रहीम रहिमान वडी वड्याईआ। सुहबत आपणी दए जणा, साख्यात रूप प्रगटाईआ। नौबत नाम दए वजा, चौदां तबक इक्क शनवाईआ। पीर पैग़म्बर लए उठा, पाक रसूल हुक्म वरताईआ। जगत सुअम्बर लए रचा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। सूफ़ी रखण इक्को आस, खुदी खुदावंद दए गंवाईआ। वसणहारा उपर अकाश, प्रकाश आपणा नूर धराईआ। बरदे बण बण रहीए दास, दासी दास सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस बेपरवाहीआ।

देवे दरस साची दीद, दीदार जल्वा नूर इलाहीआ। चन्द चौधवीं चढ़े ईद, ईद उलफ़ितर आप मनाईआ। लेखा जाणे जगत बकरीद, बाकी सब दी रिहा चुकाईआ। शयद वेखे आप सईद, सैदुल आपणा रूप वटाईआ। मुक्दस होए इक्क अकीद, अकीदत आपणी दए जणाईआ। पीर पैग़म्बरां दए रसीद, रसीदा पक्का मुख लगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर ताईद, ताकत आपणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सूफ़ी सिफ्त लग्गा नाअरा, हक़ हक़ हक़ जणाइंदा। वाह वा कुदरत तेरी यारा, भेव अभेद ना कोए आइंदा। पीर पैग़म्बर रोवण ज़ारो ज़ारा, ज़ाहर ज़हूर तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। हक़ मुकामे परवरदिगारा, लाशरीक खेल कराइंदा। चौदां तबकां दे सहारा, अन्तिम नईया शौह दरया रुढ़ाइंदा। ख़लक मख़लूक ख़ालक वेखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। सूफ़ी उच्च रिहा कूक, कूक कूक सुणाईआ। बेपरवाह सब नूं रिहा फ़ूक, नाम फ़ुकारा एका लाईआ। वेखणहारा चारे कूट, उतर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। लख चुरासी लेखा जाणे ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी बेपरवाहीआ। जगत उम्मत गई ऊत, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सूफ़ी सुफ़न रिहा पुकार, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। कलयुग खेल करें अपार, बेअन्त मेरे माहीआ। लुक लुक तेरा करां दीदार, पुच्छ पुच्छ तेरे दर ते जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन धीर ना कोए धराईआ। तुध बिन देवे ना कोए धीर, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। नाता तुट्टा संग मुहम्मद चार वीर, चार यारी ना कोए निभाइंदा। चोटी चढ़ चढ़ वेख अख़ीर, आख़र नज़र कोए ना आइंदा। कलयुग बदलणहार तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरी नज़र ना आए तस्वीर, तसबी माला कम्म किसे ना वखाइंदा। शरअ शरीअत वज्झा ज़ंजीर, तुध बिन अवर ना कोए कटाइंदा। तूं वड दाता पीरन पीर, बेऐब खेल कराइंदा। वेखणहारा शाह हकीर, हज़रत आपणा रूप वटाइंदा। ग़रीब निमाणयां दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाइंदा। आबेहयात निर्मल सीर, भर प्याला जाम प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाइंदा। तेरे दर रखी ओट, ओट अवर ना कोए जणाईआ। नव नौ चार वेख्या किला कोट, इलाबुत तेरी वड्याईआ। केतमाल सुणी तेरी सरोत, सरवण सरवण नाल मिलाईआ। नूर नुरानी निर्मल जोत, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ रख परवरदिगार, पर्दा तेरा इक्क रखाइंदा। चारे कुण्ट होया दुख्यार, दर्दी दर्द ना कोए वंडाइंदा। आहां भर भर रोवे ज़ारो ज़ार, कलयुग ज़बाह सर्ब कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला दरस तेरा पाइंदा। तेरे दरस दरस उडीक, एका नैण नैण उठाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, वेला गया हथ्थ ना आईआ। तुध बिन होया जगत पलीत, पाक पाक ना कोए कराईआ। नग़मा सुणाए ना साचा गीत, नज़म आपणी ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। देणी मंग बण सख़ावत, सख़ी सरवर तेरी वड्याईआ । चार कुण्ट होणी बग़ावत, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। नबी रसूल पीर पैग़म्बर करन अदावत, सगला संग ना कोए निभाईआ। साची करे ना कोए रफ़ाकत, रफ़ीक तौफ़ीक तौफ़ीक तोहे इक्क खुदाईआ। मेरी चले ना कोए ल्याकत, इलम उल्मा ना कोए पढ़ाईआ। वेले अन्तिम आउण वाली क्यामत, पैग़ाम सब नूं रिहा सुणाईआ। तुध बिन रहे ना कोई सही सलामत, सलामां अलैकम सब दी दए मुकाईआ। एका लग्गे बिरहों अलामत, आलमीन आप लगाईआ। आपे मेटणहारा जगत नज़ामत, नज़ाम आपणा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे सजदा सीस झुकाईआ। सजदा सीस करां सलाम, चरन चरन सच्ची सरनाईआ। मैं बरदा बण ग़ुलाम, ग़ुरबत आपणी दयां मिटाईआ। इक्को पढ़ां तेरी कलाम, कलमा नबी ना कोए सुणाईआ। कलयुग अन्तिम सब दे उत्ते लग्गा इलज़ाम, बरी कोए रहिण ना पाईआ। चौदां लोक अन्धेरी शाम, चौदां तबक साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। जबराईल मेकाईल असराईल असराफ़ील देवे ना कोए पैग़ाम, बैठे सारे नैण शरमाईआ। वेख वेख तेरी खेल होए हैरान, तेरा भेव कोए ना पाईआ। मगर लग्गा सर्ब शैतान, शरअ सब दी रिहा गंवाईआ। मुलां शेख़ मुसायक होए बेईमान, बेवा होई अन्त लोकाईआ। नाता तुट्टे अञ्जील कुरान, काया काअबा दए दुहाईआ। अन्तिम दिसे फ़नाह मकान, फ़ातया पढ़े आप खुदाईआ। रैहबर बण आप रहिमान, रहीम आपणी दया कमाईआ। सूफ़ी सादर कर परवान, सबर बेसबर तेरी सरनाईआ। आबरू इज्जत विच जहान, जाबर ज़बर रहे गंवाईआ। मुहब्बत मिले ना किसे मकान, मसीत मस्जिद रही कुरलाईआ। दर तेरे करी सलाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मिले नूर खुदाईआ। नूर खुदाई जल्वा जलाल, ज़ाहर ज़हूर आप जणाइंदा। हक़ हक़ीक़त वेखे हलाल, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम हो कृपाल, कृपानिध हुक्म सुणाइंदा। करया खेल बेमिसाल, बेनज़ीर वेस वटाइंदा। जगत चली अवल्लड़ी चाल, निराली आपणी धार वखाइंदा। साचे सूफ़ी भगत करे त्यार, महिफल आपणी आप लगाइंदा। ग़फ़्लत तोड़ विच संसार, उल्फ़त आपणी आप समझाइंदा। रैहबर बण परवरदिगार, साचा राह इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा सुण सुण सूफ़ी हरि जू हरि हरि

१६३
१२

आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा मसरूफ़ी, सरफ़ आपणा वक्त कराईआ। चौदां लोक इक्को भूपी, भूपत भूप राज कमाईआ। शरअ शरीअत ज़ंजीर तोड़े झूठी, एका बन्धन नाम रखाईआ। वेखणहारा चारे कूटी, दहि दिशा फेरी पाईआ। आपणा देवणहारा सच सबूती, साबत आपणा नूर वखाईआ। जिस दी चार जुग पंडत पांधे देंदे रहे आहूती, हवन अग्नी घ्रित मिलाईआ। जिस दी साध सन्त मलदे रहे भबूती, भेख आपणा रिहा वटाईआ। जिस दा पीर पैग़म्बर पंज तत्त हंडाउँदे रहे कलबूती, सो आपणी कल आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा दए सुणाईआ। सच संदेशा रिहा सुणा, हरि हरि आपणी दया कमाइंदा। बेपरवाह बणया मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। चार वरन दए पनाह, जो जन सरनाई आइंदा। पहलों पीर पैग़म्बर गुर अवतार भगत भगवन्त चरनां हेठ लए रखा, फेर आपणा हुक्म वरताइंदा। शरअ मज़्ह़ब दीन कोई सके ना अटका, जिस जन आपणा भेव खुल्हाइंदा। नज़री आए इक्क खुदा, खुदी तकब्बर माण मिटाइंदा। बेसबर प्याला दए प्या, आबेहयात मुख लगाइंदा। काया कबर विच्चों लए कढा, करबला नज़र कोए ना आइंदा। सच बहश्त दए बणा, इष्ट आपणा इक्क वखाइंदा। साचा गृहस्त रिहा कमा, बीवी खावंद रूप वटाइंदा।
१६४ अल्ला राणी चरनां नाल छुहा, चार वरन रंग रंगाइंदा। सूफ़ी मति मिले सहिज सुखदा, सुख आपणे घर विच वखाइंदा। १६४
मुफ़तो मुफ़ती सौदा रिहा विका, कीमत करता ना कोए लगाइंदा। सूफ़ीआं उत्तों आप होए फ़िदा, फ़ितरत आपणी आप मिटाइंदा।
१२ जन भगतां कोलों होए ना कदे जुदा, जुज़ आपणा आप बणाइंदा। रहिमत करे हो मेहरवान, मेहरवान आपणी खेल कराइंदा। १२
इक्क वखाए सच निशान, निशाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। कायनात वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। आसमान बणाया साइबान, भेव कोए ना पाइंदा। अद्धविचकार मुहम्मद बह बह लिखे कुरान, तीस बतीस ढोला गाइंदा। शरअ शरीअत होए अन्त फ़नाह, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पापियां अपराधीआं बख्शे सर्ब गुनाह, जो जन चरनी सीस निवाइंदा। दामनगीर दामन पकड़े बांह, फड़ बाहों गले लगाइंदा। ज़ामन बणे सच्चा शहिनशाह, साची ज़ामनी आप दिवाइंदा। आमो सामणे इक्क दूजे दे बणन गवाह, अग्गा पिच्छा ना कोए जणाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता कलयुग अन्तिम किसे उत्ते ना करे कोई विसाह, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। दीन मज़्ह़ब शरअ लग्गण देवे ना किसे दा दाअ, फड़ बाहों आप गिराइंदा। मुलां शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रंथी पन्थी गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान सब नूं दए वखा, वक्खरी आपणी धार चलाइंदा। भगत दुआरा इक्क सुहा, सूफ़ी सब दा रूप वटाइंदा। चल के आउणा मिले पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई जिउँ पिता मां, बालक आपणी गोद उठाइंदा।

✳ १५ जेठ २०१६ बिक्रमी अंग्रेज़ सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

सूफ़ी सिफ्त सालाही वेखे यार, याद आपणी आप जणाईआ। पीर पैग़बंर कर ख़बरदार, आपणा भेव जणाईआ। ईसा मूसा कर बेदार, बैतल आपणा धाम जणाईआ। मुहम्मद मुहब्बत दे अधार, अहिमद एका गुण जणाईआ। अल्ला राणी कर श्रृंगार, नेत्र नैण कजला पाईआ। बीवी ख़ावंद खेल अपार, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। ख़लक नूर हो उज्यार, ज़हूर आपणा दए जणाईआ। फर्श वेखे ख़ाक सार, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक वड्याईआ। अर्श कुर्श ख़बरदार, कलमा कलाम आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा लेखे लाईआ। सूफ़ी यार लए सद्द, सद्दा आपणा नाम लगाईआ। शरअ शरीअत कर कर पार हद्द, हदूद अरबा आपणा वंड वंडाईआ। अन्त अख़ीरी खाता कढ्ढ, साचा खाता दए वखाईआ। कमलापाता रखे पत, पति पतिवन्ता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाशरीक वेस वटाईआ। लाशरीक करे मदद, आप आपणा बल धराइंदा। वेखणहारा आपणा अदद, अंक होर ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा आप चुकाइंदा। सूफ़ी पीर चुक्या लेखा, पीर पैग़म्बरां आप चुकाईआ। मुहम्मद यार नेत्र पेखा, नैण नैण नाल मिलाईआ। तिन्नां दिता सच संदेशा, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सूफ़ी तरे पीर पैग़म्बर, पैग़ाम तेरा इक्क सुण सुण ख़ुशी मनाईआ। कलयुग तेरा वेख अडम्बर, चौदां लोक रहे कुरलाईआ। दीन इलाही रचया सुअम्बर, करे खेल बेपरवाहीआ। प्रगट होया वड पैग़म्बर, हज़रत नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भाई भाईआं नाल मिलाईआ। भाई भाई होए मेला, चार यारी रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं सज्जण सुहेला, घर सद सद दए समझाईआ। अन्तिम लेखा जाणे वेला, वेला आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे जुग चौथा अंग लए प्रगटाईआ। चौथा रंग हरि करतार, हरि हरि आप जणाइंदा। मुहम्मद विछोड़ा विछड़े यार, यार विछड़े मेल मिलाइंदा। चौथा कर ख़बरदार, चौथे दर भेव खुल्हाइंदा। चौथी कुण्ट दे दीदार, चार वरनां डेरा ढाहइंदा। करे खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला मेल मिलाइंदा। मेल मिलाए इक्क ख़ुदा, बी ख़ैर वडी वड्याईआ। आपे करनहार जुदा, जुज़ आपणे आप बणाईआ। आपे मार्ग लावणहारा सिध्धा, साचा राह आप वखाईआ। कलयुग अन्त बणाई बिधा, बिध नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा लेखे पाईआ। लेखा लग्गे चौथे यार, यार यारां नाल मिलाइंदा। मुहम्मद

नाता तुटया विच संसार, शरअ शरीअत ना कोए रखाइंदा। पुरख अबिनाशी करया ख़बरदार, सच संदेशा आप सुणाइंदा। मेल मिलावा धुर दरबार, दरगाह साची इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला विछोड़ा आप मिलाइंदा। पिछला विछोड़ा होया दूर, दूर दुराडा दए मुकाईआ। चौथे यार मिल्या हज़ूर, हाज़र आपणा दरस दिखाईआ। सदी चौधवीं सुणाए नाद तूर, रागी आपणा राग अलाईआ। सर्ब कलां हो भरपूर, पूरी आशा दए कराईआ। बख्शणहार बख्शे आप कसूर, कसर आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, यार यारी गंढु पुवाईआ। चौथा यार सिँघ अंग्रेज़, मुहम्मद होई जुदाईआ। वारो वार वेखे सेज, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। अग्गे पिच्छे सब नूं भेज, अन्तिम मेला लए मिलाईआ। दो जहानां वाली आपे पेख, पेख पेख खुशी मनाईआ। आपणे घर लिख्या लेख, मन्दिर आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी सफ़ा दए उठाईआ। उठे सफ़ा होए सिफ़रा, सृष्टी सिफ़र रूप वखाईआ। पुकार सुणे ना कोटी हीम इबरा, इबरतनाक करे जुदाईआ। लेखा चुक्के काअबा किबला, केवल इक्को इक्क रहि जाईआ। हरि का नाम खुदा पैग़ाम पीर पैग़म्बर गुर अवतार सिमरा, सिमर सिमर सिमर खुशी मनाईआ। अन्तिम लेखा चुकणा बन बिन्दरा, पुरख अबिनाशी

१६६ हुक्म वरताईआ। नेत्र रोवे सुरपति राजा इन्दरा, इन्द इन्दरासण दए तजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ख़ाली पिंजरा, पारब्रह्म प्रभ रिहा वखाईआ। दो जहान वज्जे नाद किंगरा किंगरा, हुक्मी हुक्म करे शनवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मिटाई आलस निंद्रा, नींद सुख दी एका चरन सवाईआ। मैं तेरा हां चौथा यार, मुहम्मद हो सहाईआ। मेरे सिर कुला ना कोए दस्तार, मैहन्दी रंग ना कोए चढ़ाईआ। मुलां शेख़ ना सुणे कोई पुकार, तेरी कुरान दए गवाहीआ। भुला फिरां विच संसार, मिल्या मेल ना सच्चे माहीआ। सदी चौधवीं आई हार, आपणा बैठा डेरा ढाहीआ। धुरदरगाही हुक्म दिता एका वार, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। आउणा चल सच्चे दरबार, पिछला लेखा दयां मुकाईआ। किधर जावां मेरे मददगार, इक्क तेरी ओट रखाईआ। मुहम्मद दोए जोड़ कर के कहे निमस्कार, मेरी वाह ना चले राईआ। मैं वी भिख्या मंगां ओसे दरबार, जिस दरबारे तेरी होए शनवाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, लोकमात बैठा सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, यारी इक्को आपणे नाल रखाईआ।

✳ १५ जेठ २०१६ बिक्रमी मेला राम दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

लेखे अंदर लेखा रख, लिख लिख आपणा हुक्म जणाईआ। लेखे अंदर करे वक्ख, हरि जू वक्खरी धार चलाईआ। लेखे अंदर लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखे अंदर कक्खों करे लख, लखों कक्ख आप बणाईआ। लेखे अंदर मार्ग दस, हरि हरि नाम करे पढ़ाईआ। लेखे अंदर हिरदे वस, हरिजन साचे लए जगाईआ। लेखे अंदर मेटे रैण अन्धेरी मस, चन्द चांदनी इक्क चमकाईआ। लेखे अंदर देवे रस, अमृत रस आप चखाईआ। लेखे अंदर गाए जस, जन भगतां आप सालाहीआ। लेखे अंदर वसे घट घट, हर घट रमिआ सच्चा माहीआ। लेखे अंदर लहिणा देणा मुकाए तीर्थ तट, तट सरोवर इक्क समझाईआ। लेखे अंदर खेल करे पुरख समरथ, वड दाता बेपरवाहीआ। लेखे अंदर गाए गाथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण सुणाईआ। लेखे अंदर देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लेखे अंदर बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। लेखे अंदर बणे पिता मात, पूत सपूता गोद रखाईआ। लेखे अंदर पुच्छे वात, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। लेखे अंदर खेले खेल बहु बिध भांत, रूप अनूप आप वटाईआ। लेखे अंदर वेखे ज़ात पात, वरन बरन वंड वंडाईआ। लेखे अंदर करे बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। लेखे अंदर देवे जम का फ़ास, फ़ांसी गल विच लटकाईआ। लेखे अंदर पूरन करे आस, आसा पूरन आप हो जाईआ। लेखे अंदर होए दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। लेखे अंदर लहिणा चुकाए दस दस मास, मात गर्भ फेर ना आईआ। लेखे अंदर लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासां नाल मिलाईआ। लेखे अंदर भेव खुल्हाए पृथ्मी आकाश, आकाश मंडल दए वड्याईआ। लेखे अंदर खेले खेल खेल तमाश, गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा आप मुकाईआ। लेखे अंदर लेखा लिख, लिख लिख आपणा भेव जणाइंदा। लेखे अंदर देवे भिक्ख, साची भिच्छया झोली पाइंदा। लेखे अंदर जाए दिस, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। लेखे अंदर वंडाए हिस्स, हिस्सा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखे अंदर बणाए सिख, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आप जणाइंदा। लेखे अंदर लोकमात, मातर भूमी वेख वखाईआ। लेखे अंदर मारे झात, दो जहानां पर्दा लाहीआ। लेखे अंदर लहिणा देणा चुकाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला बैठा आसण लाईआ। लेखे अंदर दिवस रात, राती रुत्ती थित वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आप मुकाईआ। लेखे अंदर गुर अवतार, हरि हरि सेव कमाइंदा। लेखे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव दए दीदार, दीद दीद नाल मिलाइंदा। लेखे अंदर भरे भण्डार, वड भण्डारी दया कमाइंदा। लेखे अंदर कर शृंगार,

नेत्र नैण नैण मटकाइंदा। लेखे अंदर हो त्यार, त्रैभवन धनी आपणा खेल खलाइंदा। लेखे अंदर करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। लेखे अंदर शब्द धुन्कार, नाद नाद प्रगटाइंदा। लेखे अंदर लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां महल्ल उसार, महल अटल आसण लाइंदा। लेखे अंदर त्रैगुण बन्ने धार, पंज तत्त आपणी गंढु पुवाइंदा। लेखे अंदर लख चुरासी कर पसार, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। लेखे अंदर भगत भगवन्त लए उभार, भगवन आपणा रूप वखाइंदा। लेखे अंदर बोल जैकार, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। लेखे अंदर करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल रचाइंदा। लेखे अंदर होवे ज़ाहर, लेखे अंदर मुख छुपाइंदा। लेखे अंदर करे प्यार, लेखे अंदर करवट आप बदलाइंदा। लेखे अंदर बणे मीत मुरार, लेखे अंदर छतरू रूप वखाइंदा। लेखे अंदर लहिणा देणा करे आर पार, लेखे अंदर मँझधार रुढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचे लेखे रखे भगत, भगवन आपणी दया कमाईआ। लेखे अंदर सर्ब जगत, जग जीवण दाता आपणी खेल कराईआ। लेखे अंदर बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी बन्धन पाईआ। लेखे अंदर वेला वक्त, थित वार रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा आप गणाईआ। लेखे अंदर त्रै त्रै लोक, चौदस चौदां खेल खलाइंदा। लेखे अंदर शब्द सलोक, आदि जुगादि राग अलाइंदा। लेखे अंदर देवे मोख, मुक्त भुगत आप बणाइंदा। लेखे अंदर देवे जोग, जोगीशर वेस वटाइंदा। लेखे अंदर भोगे भोग, होए भस्मड़ भौर सिद्धाइंदा। लेखे अंदर कटे रोग, रोगी आपणा रंग रंगाइंदा। लेखे अंदर धुर संजोग, बण संजोगी बन्धन पाइंदा। लेखे अंदर चुकाए विजोग, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। लेखे अंदर चुगाए चोग, सोहँ हँसा माणक मोती मुख रखाइंदा। लेखे अंदर काया सुहाए किला कोट, बंक दुआरी फेरा पाइंदा। लेखे अंदर लाए चोट, तन नगारा आप वजाइंदा। लेखे अंदर कढ्ढे खोट, माया ममता मोह मिटाइंदा। लेखे अंदर जगाए निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। लेखे अंदर जन भगतां उपर होए मोहत, निरगुण निरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे आपणे पाइंदा। लेखे अंदर भगत सुत, भगवन दया कमाईआ। लेखे अंदर अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार चलाईआ। लेखे अंदर सुहाए रुत्त, रुत्त बसन्ती वड वड्याईआ। लेखे अंदर वेखे उठ, नेत्र नैण नैण खुलाईआ। लेखे अंदर जाए तुड्ठ, दीनन होए आप सहाईआ। लेखे अंदर देवे अमृत आत्म घुट, निझर झिरना दए झिराईआ। लेखे अंदर लेखा लाए काया बुत्त, पंज तत्त तत्त समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिख लिख दए समझाईआ। लेखे अंदर लेखा गिण, जन भगतां दया कमाइंदा। कोट जन्म दा लेखा मुकाए विच छिन, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा।

१९९
१२

रविदास चुमारा साढे तिन्न हथ्थ सीआं गया मिण, मिण मिण भगतां वंड वंडाइंदा। सचखण्ड दवारे गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्क दूजे नूं पुच्छण, हरि का दर्शन पाया किन किन, कवण दुआर वज्जी वधाईआ। सारे कहिण गोबिन्द बाले नीहां हेठ आया चिण चिण, तिस घर बैठा आसण लाईआ। जन भगतां दरस दिखावे छिन छिन, घड़ी पल्ल ना वंड वंडाईआ। रूप वटाए भिन्न भिन्न, भिन्नड़ी रैण दए गवाहीआ। जे कोई वेखे रूप रंग रेख चिन्न्ह, नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां सेवा करे दिन बदिन, बण सेवक सेव कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लेखा लेखे लाए आप गिण, गिणती विच आप कदे ना आईआ। गिणती विच ना आए गणत, हिन्दसा अन्त ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि गिण गिण थक्के सन्त, बल आपणा आप धराईआ। कोटन कोटि पा पा थक्के अन्त, अन्त नज़र किसे ना आईआ। कोटन कोटि बण बण मंगदे रहे मंगत, मंग मंग भिच्छया ना किसे मुकाईआ। कोटन कोटि करदे रहे निउँ निउँ मिन्नत, मिन्नतां कर कर भेद ना किसे खुल्ह्हाईआ। सारे कह कह गए बेअन्त, हरि बेअन्त बेपरवाहीआ। सचखण्ड दवारे सुत्ता रहे साचा कन्त, लख चुरासी सेज हंढाईआ। कलयुग करे खेल आप अन्त, अन्तर आपणी दया कमाईआ। जन भगतां चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। रल मिल नेड़े दूर ऊँच नीच राउ रंक बणाई संगत, संगत आपणा रूप बणाईआ। संगत दुआरे होए मंगत, प्रेम भिच्छया झोली पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां पिछला लेखा कीता खण्डत, खण्डा आपणा विच फिराईआ।

✳ १५ जेठ २०१९ बिक्रमी लक्ष्मण सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

निरगुण नूर आया परत, परता मंगे थाउँ थाईंआ। नव नौ चार दा कढ्ढे फ़र्क, फ़िकरा आपणा आप सुणाईआ। दीन मज़्हब करने तरक, तुरत आपणा हुक्म जणाईआ। निरवैर खेल करे हो नधड़क, धड़ा आपणा आप लए बणाईआ। दो जहानां कढ्ढे अटक, अद्धविचकार ना कोए लटकाईआ। ज़बाह छुरी ना करे कोए झटक, हलाल रूप ना कोए वखाईआ। लोक चौदां रहे तबक, तबक चौदां रहे कुरलाईआ। गुर अवतार कहिण पढ़ीए तेरा सबक, पीर पैग़म्बर एका नाउँ रहे गाईआ। नौ खण्ड पृथमी हुंदी दिसे ग़रक, दे सहार ना कोए बचाईआ। किसे लेखे लग्गे ना रख्या बरत, रोज़ा बांग ना कोए वड्याईआ। पूरी होए ना किसे शर्त, शरअ सब दी दए खपाईआ। चार जुग दी पिछली कढ्ढे फ़रद, पूरब लहिणा दए वखाईआ। बेदर्दी कोई ना करे दरद, भाणा आपणा इक्क जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे वरज़, अग्गे पूज ना कोए वखाईआ। लख चुरासी

चुकाए कर्ज़, मकरूज आपणा फ़र्ज़ पूर कराईआ। करे खेल अण्डज जेरज, उत्भुज सेत्ज वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सही सलामत फेरा पाईआ। सही सलामत करे सलाम, अलैकम एका इक्क जणाईआ। उठो सारे सुणो पैग़ाम, पारब्रह्म प्रभ रिहा जणाईआ। अन्तिम पूरा करे काम, निहकर्मी कर्म कमाईआ। नगर खेड़ा वेखे दो जहान ग्राम, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। चौदस चन्द वेखे शाम, रैण अन्धेरी पर्दा लाहीआ। रवि ससि उपाए भान, नूर नूर नूर धराईआ। वेद शास्त्र सिमरत जाणे पुराण, अञ्जील कुरान लए उठाईआ। खण्डा चिला वेखे तीर कमान, शस्त्र बस्त्र फोल फोलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखे नौजवान, बिरध बाल लए समझाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, धरत धवल खेल कराईआ। ज़िमीं असमानां होए जाणी जाण, गगन मंडल पर्दा लाहीआ। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर देवणहारा धुर फ़रमाण, धुर दा लेखा दए समझाईआ। करे खेल श्री भगवान, खेल अवल्लड़ी आप जणाईआ। जोती जाता हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। सचखण्ड निवासी सच मकान, सचखण्ड दवारा आप वड्याईआ। तख्त बैठे नौजवान, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। हुक्मी बणया हुक्मरान, हाकम आपणा बल रखाईआ। आओ सारे दयो ब्यान, कलमबन्द रिहा कराईआ। अन्तिम लेखा चुकाए आण, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेअन्त बेअन्त आपणी धार चलाईआ। आपणी धार चलाए मखलूक, ख़ालक ख़लक वेस वटाइंदा। वेखणहारा लख चुरासी काया कलबूत, कलमा नबी इक्क पढ़ाइंदा। देवणहारा सच सबूत, साबत सिदक इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। खोले भेव पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कराईआ। सब दा लेखा चुकाए दंम, दमढ़ी कोए रहिण ना पाईआ। हुक्मे बाहर देवे डंन, अंदर हुक्म सर्ब फिराईआ। ला के सुणना सारे कन्न, एका राग रिहा अलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बण जननी जिस नूं लए जन, बणया धन्न धन्न जणेंदी माईआ। इक्क वसेरा रखे बिन छप्पर छन्न, छहबर आपणे नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा इक्क इकल्ला रिहा सुणाईआ। इक्क इकल्ला एकम एक, अल्फ़ अल्फ़ी तन हंढाइंदा। चौदां लोकां रिहा वेख, वेख वेख खुशी मनाइंदा। तकदीर तदबीर रख्या भेस, तकसीर भेव ना कोए खुलाइंदा। चार कुण्ट जगत हँकारी होया शेख़, शरअ वंड ना कोए वंडाइंदा। कूड़ी क्रिया रिहा खेड, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा चुक्क करतार, चौखट एका नाम वखाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, वक्ख वक्ख आपणी धार चलाईआ। पहले गुर अवतारां लेखा रिहा निवार, पिछला लहिणा

दए मुकाईआ। अग्गे लिख लिख बणे लिखार, जन भगतां दए वड्याईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, दिस किसे ना आईआ। पीर पैग़म्बर कर दीदार, दूर दुराडे खुशी मनाईआ। भगत सुहाए बंक दुआर, दर दुआरे फेरा पाईआ। दोहां विचोला एकँकार, अकल कल आपणी खेल चलाईआ। गुर अवतार तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाया। भगतां बणया आप मलाह, कलयुग बेड़ा आप चलाया। पुरख अकाल दोहां देवे सच सलाह, साचा मार्ग इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल कराया। आपणा खेल करे रसूल, रहिमत आपणे हथ्थ रखाईआ। नी नी करन कबूल, किबला एका घर वड्याईआ। दरगाह साची सच असूल, असलीअत दए समझाईआ। मेरा हुक्म इक्क माअकूल, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। माया ममता ना जाणा भूल, अभुल्ल रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा एका वार, इक्क इकल्ला आप जणाईआ। सुण सुण होणा ख़बरदार, ख़ालक ख़लक रिहा उठाईआ। करे खेल परवरदिगार, बेपरवाह नूर रुशनाईआ। चौदां तबकां दए हुलार, चारों कुण्ट हुलारा लाईआ। एका हुक्म करे वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा साचा सज्जण, घर साचे आप सुणाईआ। साचा सज्जण बणे यार, यारड़ा आपणा खेल कराइंदा। चौदां सदीआं कर कर उधार, आपणा भेव आप छुपाइंदा। चार यार कटदे रहे वगार, वगारी आपणे मार्ग लाइंदा। अन्तिम सारे गए हार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। इल लिला बिस्मिला बिस्मिल रूप नज़र ना आए विच संसार, संसा रोग ना कोए चुकाइंदा। मुसला विछा विछा बैठे उपर छार, सजदा सीस ना कोए झुकाइंदा। नेत्र नज़र ना आया परवरदिगार, पर्दा आपणा ना कोए उठाइंदा। बैठे रहे डूँघी गार, उच्चे टिल्ले पर्बत ना कोए चढ़ाइंदा। कलयुग अन्त सुणया प्रगट होया आप निरँकार, जिस दा भेद कोए ना पाइंदा। सद्दा देवे वारो वार, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाइंदा। नौ खण्ड पृथमी ला के बैठा इक्क दरबार, सत्तां दीपां राह चलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चार जुग दे गद्दी उत्तों दए उठाल, सदी चौधवीं फेरा पाइंदा। त्रैगुण माया बद्धी चरन नाल, जन भगतां चरनां हेठ दबाइंदा। सचखण्ड दवार बणाया सच्ची धर्मसाल, चारों कुण्ट आप सुहाइंदा। चार वरन पिच्छे घालण रिहा घाल, ऊँच नीच मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण बण के आया दलाल, जगत दलाली आप कमाइंदा। एथे ओथे करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक वेस वटाइंदा। जन भगतां करया हल्ल सवाल, सोहला आपणा नाम सुणाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, गृह गम्भीर वेस वटाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा।

वेस धर धुर दरबारी, दरगाह आपणे संग निभाईआ। लोकमात खेल न्यारी, ख़ालक खेले बेपरवाहीआ। चौदां तबक तबक सरदारी, सरधा पूर रिहा समझाईआ। कलयुग आई अन्तिम वारी, वारता पिछली दए समझाईआ। मुहम्मद खड़ा दर दुआरी, बण दरवेश सीस झुकाईआ। अल्ला राणी नार कुँवारी, लोकमात ना किसे प्रनाईआ। दोए नैण रही शृंगारी, पट्टी सीस सीस गुंदाईआ। नेत्र रखे तिक्खी धारी, कलयुग काला कजला रूप पाईआ। चारों कुण्ट फिर फिर हारी, ख़ावंद मिल्या ना सच्चा माहीआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चौदां सदीआं ना बणी किसे दी लाड़ी, लाड़ा कोए नज़र ना आईआ। इक्को वास्ता घत्ते अग्गे परवरदिगारी, मेहरवान मेहरवान तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। मैं फिर फिर थक्की जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, मदीना मक्का फेरा पाईआ। मेरी सेज ना किसे स्वारी, मेरी तृष्ना पूर ना कोए कराईआ। मेरे साहिब तूं जितया मैं हारी, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाईआ। कवण वेला तेरे चल आवां दरबारी, दर दुआरे फेरा पाईआ। मैं सुणयां तूं मेल मिलावें हाणीआं हाणी, संजोग विजोग आपणे हथ्थ रखाईआ। मैं उठ उठ वेखी चारे खाणी, चारों कुण्ट नज़र ना आईआ। मैं वेख्या अठसठ तीर्थ ठंडा पाणी, सत्त समुंद सागर फेरा पाईआ। मैं नेत्र तक्कया चन्द चौधवीं चानणी, चन्द मोहे कोए ना भाईआ। मैं कमली होई सवाणी, मेरी सुरत ना कोए समझाईआ। तेरे चरन उत्तों कुरबानी, सीस आपणा भेंट चढ़ाईआ। आपणी दस्स सच्ची निशानी, कवण दुआरे आसण लाईआ। तेरा इक्को पद निरबाणी, परम पुरख तेरी वड्याईआ। अञ्जील कुरान गा गा थक्की तेरी कहाणी, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। मैं घर घर फिर फिर ख़ाक छाणी, तेरे पिच्छे आपणी ख़ाक उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची तेरी ओट रखाईआ। पीर पैग़म्बर एका ख़ावंद, ख्वाहिश हरि जू आप जणाइंदा। आदि जुगादि मुकामे हक़ रहे बन्द, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। पीर पैग़म्बर कलमा गा गा गए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहइंदा। जुगा जुगन्तर ढोला छन्द, सोहला आपणा राग अल़ाइंदा। बिन हरिभगत कोई ना माणे मेरा अनन्द, आपणा रस ना किसे चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेशा इक्क सुणाइंदा। धुर संदेशा परवरदिगार, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। जगत सुआणी कर विचार, अकथ कहाणी रिहा दृढ़ाईआ। अंमित ठंडा पाणी सच दरबार, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। निरगुण नूर नूर उज्यार, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। वसणहारा धाम न्यार, ख़ालक ख़लक वड वड्याईआ। मेरे मिलण दा जिस प्यार, साची रीती दयां समझाईआ। मस्जिद मसीती विच्चों होणा बाहर, लोक लाज मात तजाईआ। फेर चल के आउणा भगतां दुआर, मेरे भगत देण समझाईआ। बाहों फड़ के कहिण औह दिसे निरँकार, जिस नूं लभ्भे ख़लक खुदाईआ।

चौदां सदीआं दी विछड़ी मेले दुहागण नार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरन कँवलां विच लए बहाल, सीस चुन्नी इक्क वखाईआ। नेत्री आए मुहम्मद होया बेहाल, बेहबल हो हो दए दुहाईआ। चार यार दिसण कंगाल, ख़ाली हथ्थ वखाईआ। सारे रल के पुरख अबिनाशी अग्गे करो सवाल, बण सवाली झोली डाहीआ। कर किरपा चरन प्रीत जे जोड़े आपणे नाल, नालश सब दी दए गंवाईआ। भगतां नाल लए बिठाल, बाहों फड़ गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। सच संदेशा राणी अल्ला, एका एक जणाया। उठ उठ कहे मेरी बिस्मिला, बिस्मिल तेरी धार वहाया। कवण वेला जन भगतां फड़ां पल्ला, फड़ पल्लू गंढु पुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क सुणाया। पल्लू फड़न दा जे चढ़या चाअ, चाउ घनेरा आप रखाईआ। पुरख अबिनाशी साह रिहा सुधा, नकाह पढ़े थाउँ थाईंआ। सत्तरां बहत्तरां लेखा दिता मुका, चुहत्तरां अन्तिम वंड वंडाईआ। इक्की दिवस दए सुहा, जेठ जेठ करे कुड़माईआ। सत्त चार लए जगा, चार सत्त वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सब दा लेखा रिहा मुकाईआ।

मेरे परवरदिगार मैं अवांगी। आप आपणा भेंट चढ़ावांगी। हथ्थीं मैहन्दी लाल लगावांगी। सीस गुंद गुंद खुशी मनावांगी। नेत्र उठ उठ दर्शन पावांगी। जस तेरयां भगतां गावांगी। आपणे नैण शरमावांगी। मुहम्मद फड़ बाहों समझावांगी। चार यारी हलूण उठावांगी। पिछली विगड़ी फेर बणावांगी। जे रुठा चरनी पै पै प्रभू मनावांगी। नेत्र नैण नीर रो रो, तेरे चरन कँवल धो धो, खुशी आपणा आप करावांगी। रसना गा गा सोहँ सो, सो पुरख निरँजण पिछला कलमां भुलावांगी। तेरे नेड़े बहवां हो हो, हौका फेर ना कोए वखावांगी। तेरे भगतां चरन धूढ़ी लै के जावां सौं, तिन्न जुग आपणा मुख छुपावांगी। तेरे मिलण दा मैनूं गौं, दूजी ओट ना कोए जणावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा देणी कर, बिन तेरी किरपा तेरे दर कदे ना आवांगी। बिन किरपा ना लभ्भे दर, चौदां तबक कूक सुणाईआ। जिध्धर जावां आवे डर, घर घर पई लड़ाईआ। सृष्ट सबाई त्रैगुण अग्नी अंदर रही सड़, पंज तत्त काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर खेह उडाईआ। तेरा नाउँ भुलया नारी नर, विभचार होई लोकाईआ। मैं साचे हुज़रे वेख्या चढ़, महबूब नज़र किते ना आईआ। मैं धरती उत्ते डिगी दड़, नक्क नथ्थ सुहाग कटाईआ। कर किरपा तूं ल्या फड़, रहिमत आपणी आप कमाईआ। मैं लग्गी तेरे

भगतां लड़, लड़ी विच लैणा बंधाईआ। एथे ओथे दो जहान लगावीं जड़, तेरी लग्गी जड़ सके ना कोए उखड़ाईआ। आ मेरे मीआं मैं तेरा कलमा रही पढ़, तूं मेरा मैं तेरी सोहँ तेरी धार समाईआ। तेरी सेज बहवां चढ़, चढ़ चढ़ आपणी खुशी मनाईआ। चरन कँवल कँवल चरन सेवा कर, सर आपणा कलम कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन होर ना कोए सहाईआ। तुध बिन अवर ना दीसे कोए, नेत्र नैण नैण उठाया। चौदां लोक ना कोई लोए, दीपक दीआ ना कोए रुशनाया। दरगाह देवे ना कोई ढोए, दर दरवाज़ा ना कोए खुल्हाया। मैं सुण के आई तेरी सोए, ग़रीब निमाणयां रिहा गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा दुखड़ा दे मिटाया।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी कुलवन्त सिँघ पिण्ड धिंगाली जम्मू ✳

तुलसी माला हवन दीप घ्रित करे पुकार, कली फूल गुलशन गुल गुल सीस झुकाईआ। पवण सुगंधी नेत्र रोवे धूंआँधार, जगत वासना दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दर दर घर घर वेख्या घर बार, घर विच घर खुशी ना कोए मनाईआ। मन्दिर मट्ठ अग्नी ला ला मैनूं रहे साड़, प्रेम अग्नी ना कोए लगाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी तेरा मिल्या ना अजे प्यार, चारों कुण्ट फिर फिर थक्के पन्ध अन्त ना कोए मुकाईआ। रुत्त बसन्त ना खिड़ी गुलज़ार, पत डाली ना कोए महकाईआ। पंडत पांधे बाहरों करन मेरा प्यार, अन्तर नज़र कोए ना आईआ। घर घर तुलसी बूटा रहे शृंगार, तुलहा आपणा ना कोए बणाईआ। जीव जगत होया खुआर, बिन हरि भगती भगत ना कोए वड्याईआ। कर किरपा अन्तिम वार, अन्त दुआरा इक्को नज़री आईआ। साध सन्त गए पछाड़, पिच्छा दे दे मुख भुवाईआ। नाता तोड़ गए सगले यार, याद नज़र किसे ना आईआ। आपणा आप गए हार, जित होर ना कोए वखाईआ। आए चल सच्चे दरबार, दर बैठे सीस झुकाईआ। एका बख्श चरन प्यार, मिले सरन सच्ची सरनाईआ। सेवा करीए सच दरबार, दूजे दर ना फेरा पाईआ। हवन दीप घ्रित तेरे नूर होए उज्यार, बाती कमलापाती रूप वटाईआ। तुलसी बूटा चरनां छार, धूढ़ी धूढ़ टिक्का लाईआ। बण खण्ड खेल अपार, फल फुल्ल सोभा पाईआ। मुकंद मनोहर कर प्यार, डोर तेरे हथ्थ रखाईआ। तुट्टा नाता जोड़ विच संसार, दोए जोदड़ी मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे वज्जे वधाईआ। दर घर साचा हरि जू हरि, हरि हरि आप जणाइंदा। इक्को ठाकर देवे वर, ठाकर दुआरा इक्क समझाइंदा। इक्को सागर जाणा तर, समुंद सरोवर पार कराइंदा। इक्को आदर देवे दर, दर आयां गले लगाइंदा। इक्को अंदर जाणा वड़, साचा

मन्दिर आप वखाइंदा। इक्क सरनाई जाणा पढ़, चरन कँवल सरन आप समझाइंदा। इक्को पल्लू लैणा फड़, फड़या पल्लू ना कोए छुडाइंदा। इक्को अक्खर लैणा पढ़, कलयुग आख़र आप पढ़ाइंदा। इक्को अग्नी जाणा सड़, प्रेम अग्नी आप लगाइंदा। इक्को मरनी जाणा मर, जन्म मरन फंद कटाइंदा। साचा बूटा जाणा बण, सच फुलवाड़ी आप लगाइंदा। तुलसी देवे एका धन्न, नाम धन्न झोली पाइंदा। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बन, खोज खोज आपणा पर्दा लाहइंदा। निमां निमां करे प्रकाश चन्न, चन्द चांदनी मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर एका माण रखाइंदा। दर देवे माण, माण निमाणा आप हो जाईआ। सच संदेशा धुर फ़रमाण, धुर दी धार आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवान, भागवत भगवत भगवन एका रूप वटाईआ। लेखा जाणे आवण जाण, आवण जावण दए मुकाईआ। बैठे तख्त सच्चा सुल्तान, तख्त निवासी सोभा पाईआ। चारे खाणी देवे इक्क ज्ञान, चारे बाणी नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला लए मिलाईआ। घर मेला तुलसी बूटा, तुरया आपणा राग सुणाईआ। नाता तोड़े जूठा झूठा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। अमृत सरोवर भरे ठूठा, ठंडा जल आप प्याईआ। कृपाल प्रभ एका तुट्ठा, तुट्ठ आपणी दया कमाईआ। तैनूं लगाए साची गुट्ठा, किनारा आपणे घर वखाईआ। ना कोई वड्डा ना कोई छोटा, एका रंग रंगाईआ। ना कोई पुत्त ना कोई पोता, पुत्तर धीआं गुरमुख दए वड्याईआ। आदि जुगादि कदे ना सोता, सोवत रैण ना कोए विहाईआ। निर्मल नूर निरगुण जोता, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देवे माण वड्याईआ। तुलसी कहे मेरे राम, कली कली तेरे नाम महकाईआ। दर आ के पीवां अमृत जाम, जामा आपणा लवां बदलाईआ। धूप कहे मेरा धुर धाम, तेरी चरन धूढ़ ख़ाक रमाईआ। सुगंधी कहे मेरी प्रणाम, परम पुरख तेरी सरनाईआ। हवन कहे मेरी मिटी शाम, प्रभ साचे जोत नूर करी रुशनाईआ। घृत कहे मिल्या प्रभ भगवान, आसा तृष्ना दूर कराईआ। नाता तुट्टा जगत निशान, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। घर मन्दिर मिल्या आण, गृह आपणी खुशी मनाईआ। सति धर्म दा सच निशान, सति सतिवादी इक्क अख्वाईआ। जिस दुआरे भगत भगवन्त बह बह इक्क दूजे नूं गाण, होर करे ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला कहे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। दर आई अठोतरी माला, उठ उठ रही सुणाईआ। वेखो सिखो मेरा मुख होया काला, दुरमति धोवे ना कोए शाहीआ। कलयुग जीव मंगण हाला, मेरा मणका मन की वासना नाल रलाईआ। किसे ना मिल्या राह सुखाला, सुख सागर ना कोए नुहाईआ। हथ्थ विच फड़ के नाले जपण नाले कढ्ढण गालां, पिछला लेखा गए गंवाईआ। मनमुख जीव इक्क दूजे दा होए भणवया

साला, भणवया साला बण बण अगला साक ना कोए बणाईआ। त्रैगुण माया पाया जंजाला, कलयुग सके ना कोए तुड़ाईआ। मेरे आसरे मिले पीणा खाणा, प्रभ सके ना कोए मिलाईआ। मैं आप भुल्ली मरना जीणा, जीवण मुक्त ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी घाल लेखे लाईआ।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी जगत सिंघ, बेला सिंघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

सतिगुर घर साचा सुख, सुख नज़र किते ना आइंदा। सतिगुर घर मिटे दुःख, दुखियां दुःख दर्द गवाइंदा। सतिगुर घर उज्जल मुख, दुरमति मैल मैल धुवाइंदा। सतिगुर घर सुफल कुक्ख, मात गर्भ लेखे लाइंदा। सतिगुर घर नाता तुट्टे उलटा रुख, अजूनी जून फंद कटाइंदा। सतिगुर घर अमृत मिले घुट, रस रसना मुख लगाइंदा। सतिगुर घर आवण जावण जाए छुट, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। सतिगुर घर सोहे साची रुत्त, रुत्त बसन्त आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर घर मिले सांत, सांतक सति सति वरताईआ। सतिगुर घर साची दात, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सतिगुर घर नाता तुट्टे ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। सतिगुर घर मिटे अन्धेरी रात, जगत अन्धेरा रहे ना राईआ। सतिगुर घर सुणे साची गाथ, एका मन्त्र नाम पढ़ाईआ। सतिगुर घर लहिणा देणा चुक्के पिता मात, साची गोद इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर घर साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। सतिगुर घर इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। सतिगुर घर इक्क छन्द, गीत सुहागी आप अलाइंदा। सतिगुर घर एका वंड, दूसर वंड ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुलाइंदा। सतिगुर घर एका वस्त, वस्तू हरि हरि आप वरताईआ। देवणहारा आपणे दस्त, दस्तगीर बेपरवाहीआ। लहिणा चुक्के कीट हस्त, हस्त कीट आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। सतिगुर घर साचा माण, निमाणयां हरि रखाइंदा। सतिगुर घर साचा दान, दयावान झोली पाइंदा। सतिगुर घर इक्क निशान, दो जहानां आप वखाइंदा। सतिगुर घर एका माण, ऊँच नीच ना कोए बणाइंदा। सतिगुर घर एका पीण खाण, अमृत आत्म रस चखाइंदा। सतिगुर घर इक्क पछाण, वड्डा छोटा ना कोए जणाइंदा। सतिगुर घर इक्क परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। सतिगुर घर इक्क प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। सतिगुर घर सोहे रुत्त,

२०६
१२

रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। सतिगुर घर साचे सुत, हरिजन बैठे डेरा लाईआ। सतिगुर घर लेखे लग्गे पंज तत्त काया बुत्त, बुत्ती होर ना कोए पाईआ। सतिगुर घर सुरत सवाणी पए उठ, सतिगुर पूरा आप उठाईआ। सतिगुर घर निर्मल जगे जोत, जोत जोत रुशनाईआ। सतिगुर घर इक्को कोट, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। सतिगुर घर निकले खोट, झूठी वासना रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाईआ। सतिगुर घर साचा मन्दिर, हरि मन्दिर आप वखाइंदा। सतिगुर घर चुक्के अन्धेरा डूँघी कंधर, अन्ध अज्ञान ना कोए रहाइंदा। सतिगुर घर मन वासना बज्झे बन्दर, दहि दिशा ना कोए भुवाइंदा। सतिगुर घर होए प्रकाश डूँघी कंदर, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप वखाइंदा। साचा घर गुरुदुआरा, गुर गुर एका एक जणाईआ। जुग जुग वेखे वेखणहारा, वेस अनेका रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लख चुरासी फोल फुलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी बोल जैकारा, जै जै आपणे नाउँ कराईआ। कागद कलम दे सहारा, सृष्ट सबाई दए समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा जाणे अपर अपारा, अगम्म अगोचर भेव ना राईआ। सचखण्ड वसे वसणहारा, सति सतिवादी धार चलाईआ। थिर घर खोल्ह आप किवाड़ा, आपणा पर्दा दए उठाईआ। सुन अगम्मी पार किनारा, सुन्न समाध डेरा ढाहीआ। लख चुरासी कर पसारा, घर घर मन्दिर रिहा सुहाईआ। जन भगतां देवे दरस दीदारा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती खुशी मनाईआ। गुर का घर गुर जानणहारा, दूसर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर दए वड्याईआ। गुर का घर मिले संजोग, धुर संजोगी आप मिलाइंदा। गुर घर मिटे रोग, रोगी नज़र कोए ना आइंदा। गुर घर चुगे साची चोग, नाम चोगा मुख वखाइंदा। गुर घर मिटे जगत विजोग, विजोगी आपणा बन्धन पाइंदा। गुर घर ना कोई सोग, चिंता दुःख ना कोए रखाइंदा। गुर घर न कोए भोग, भोगी आपणा भोग भोगाइंदा। गुर घर सति सलोक, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। गुर घर कोए ना सके रोक, ऊँच नीच ज़ात पात वरन गोत, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। गुर घर आयां सब नूं होए छोट, कर किरपा पार लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुर घर सच्चा दरवाज़ा, दर दर आपणा आप जणाईआ। गुर घर वसे ग़रीब निवाज़ा, रूप अनूप वेस वटाईआ। गुर घर सोहे राजन राजा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुर घर निरगुण फिरे भाजा, निरवैर निराकार बेपरवाहीआ। गुर घर लख चुरासी रचया काजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर घर देवे माण वड्याईआ। गुर घर

मिटे संताप, संसा कोए रहिण ना पाईआ। गुर घर मिटे पाप, पतित पापी दए तराईआ। गुर घर इक्को जाप, जपत जपत जीव सुख पाईआ। गुर घर इक्को पाठ, पाठशाला दए समझाईआ। गुर घर इक्को घाट, साचा पत्तण दए प्रगटाईआ। गुर घर मुक्के वाट, लख चुरासी पन्ध ना कोए भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वखाईआ। गुर घर सच टिकाणा, सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। गुर घर शब्द बबाणा, हरिजन साचे आप चढ़ाइंदा। गुर घर खेले खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर घर एका रंग रंगाइंदा। गुर घर कलयुग अन्तिम कल, पुरख अकाल अकाल जणाईआ। लख चुरासी वल छल, अछल अछल रिहा कमाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, अटल्ल पदवी दए जणाईआ। सच सुनेहड़ा साहिब घल्ल, गुर सतिगुर रिहा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर घर इक्क प्रगटाईआ। गुर घर इक्क आदेश, देस दसन्तर सीस झुकाइंदा। गुर घर इक्क नरेश, नर नरायण आसण लाइंदा। गुर घर इक्क हेत, लख चुरासी हित कमाइंदा। गुर घर इक्क खेत, फुल फलवाड़ी मात महकाइंदा। गुर घर बसन्ती रुत्त रहे चेत, चेतन सब नूं आप कराइंदा। गुर घर नाता तुट्टे जिन प्रेत, भूतक भेव आपणा भेव खुल्ल्हाइंदा। गुर घर इक्को तन्द बन्न्हे साचा सूत, सूतक होर ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क वड्याइंदा। साचा घर गुर का हट्ट, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। दुःख दर्द दलिद्र देवे कट, निमख निमख दए कटाईआ। कर किरपा तन पहनाए साचा पट्ट, पट्टी आपणे नाम पढ़ाईआ। गुर के मन्दिर साचा मार्ग देवे दस्स, हरि मन्दिर दए बहाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान वेख वखाईआ। जुग जुग पूरी करदा आया आस, आसावान दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रिहा रुलाईआ। गुरमुख विरले करे बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक्क वड्याईआ। घर मन्दिर सोभावन्त, हरि जू हरि हरि आप सुहाइंदा। हरिजन मेला हरि हरि कन्त, निरगुण नारी सरगुण सेव कमाइंदा। नाम अधारा मणीआं मंत, मन मन्दिर भेव चुकाइंदा। महिमा जणाए आप बेअन्त, अगणत आपणा लेखा आप गणाइंदा। गुरमुख वेखे साचे सन्त, सति सति आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप वड्याइंदा। घर वड्डा वड बलकार, बल बावन दए समझाईआ। जिस तख्त सोहे आप निरँकार, सो तख्त लए प्रगटाईआ। जिस मन्दिर करे आकार, निराकार दए वखाईआ। जिस चरन धरे दरबार, सो दरबारा लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वखाईआ। साचा घर गुर गुर

खेल, खेलणहारा आप जणाइंदा। आदि जुगादी इक्को मेल, मिल मिल आपणा राह वखाइंदा। कर प्रकाश बिन बाती तेल, निरगुण जोती जोत डगमगाइंदा। सच दुआरे सज्जण सुहेल, बह बह आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क सालाहइंदा। घर सलाहे हरि निरँकारा, घर आपणा आप तजाईआ। निरगुण निरगुण नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग देंदा रिहा लारा, हुक्मे हुक्म सर्ब भुवाईआ। सचखण्ड लोकमात ना किसे वखाया सच मनारा, मुनी ऋषी कोटन कोटि गए ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वारो वारी मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले बणाउँदे रहे विच संसारा, गुर का घर इक्क ना कोए बणाईआ। हरि का मन्दिर सब तों न्यारा, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। इक्को वसे ठाकर स्वामी अपर अपारा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। इक्को नाद वज्जे धुन्कारा, इक्को रागी राग अलाईआ। एका दीपक होए उज्यारा, दूसर नूर ना कोए रुशनाईआ। इक्को तख्त बहे आप करतारा, कुदरत वेखे चाँईं चाँईंआ। इक्को हुक्म करे वरतारा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। इक्को भरनहार भण्डारा, सच वस्तू आप वरताईआ। इक्को प्रगटावणहारा गुर अवतारा, जुग जुग आपणी खेल कराईआ। इक्को खोलणहारा सच किवाड़ा, साची बणत दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, गुरू दरबारा दए वखाईआ। चार वरनां देवे माणा, ऊँचां नीचां इक्क टिकाणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाईआ। आपे गाए आपणा गाणा, जन भगतां सिफ्त सालाहीआ। चारों कुण्ट खेल महाना, चौथे जुग जुग जणाईआ। लख चुरासी नौ दुआरे फिरे जहाना, बिन नौ दुआर चार खाणी कोए रहिण ना पाईआ। पशू पंछी पंखी हस्त कीट चीऊटी मिले श्री भगवाना, सर्ब घट आपणा रंग वखाईआ। सो घर होए परवाना, जिस घर बह बह हरि जू आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग लेखा रिहा मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, कलयुग अन्तिम दिता दाना, भगत भगवन्त बणाया निशाना, निशाना इक्को मात झुलाईआ।

२०६ १२

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी अमर नाथ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

जगत नाता पाए गंढु, गंढुणहार दया कमाइंदा। मात पित सीने ठंड, शीतल धार आप वहाइंदा। सुत दुलारा नूरी चन्द, नूर नूर नाल मिलाइंदा। दुःख सुख विच वखाए अनन्द, अनन्द इक्को गुण वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत नाता आप बंधाइंदा। जगत नाता मात पित, घर वज्जे वधाईआ। पूत सपूता करे हित्त, दुक्खड़ा दर्द गंवाईआ। पुरख अबिनाशी रखणा चित्त, भुल्ल कदे ना जाईआ। रुत्तड़ी सोहे साची थित, बाल बाला लेखे पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जग बूटा देवे लाईआ। जग बूटा लाए बण बण माली, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। आपे भरे झोली ख़ाली, ख़ाली झोली आप भराइंदा। फल लगाए साची डाली, रंग आपणा आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाइंदा। साची वस्त दिता दान, हरि जू हरि हरि दया कमाईआ। पिछली वस्त लैणी पछाण, अंग अंग नाल जुड़ाईआ। करया खेल आप महान, हरिजन साचे दए वड्याईआ। बालक नाउँ रखणा दास भगवान, भाग घर नूं दए लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला दुःख दए गंवाईआ।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

साचा घर हरि मनारा, मोहण हरि हरि आप बणाइंदा। सेवा कर अगम्म अपारा, आपणी सेवा लेखे लाइंदा। प्रगट हो विच संसारा, साख्यात खेल कराइंदा। लेखा जाणे सदा सदा सद जुग चारा, चौकड़ी आपणा बन्धन पाइंदा। चार वरन वरन सहारा, बरन बरन गंढु पुवाइंदा। अन्तिम करे पार किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप उपाइंदा। साचा घर उपमा जोग, गुर गुर रहे सालाहीआ। निमस्कार करन चौदां लोक, चौदां तबक सजदा सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा विष्न ब्रह्मा शिव मंगे मोक्ष, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। भगत भगवन्त बोलण इक्क सलोक, सोहला हरि हरि नाम जणाईआ। दो जहानां दिसे साचा कोट, कोटी कोट बैठे ध्यान लगाईआ। निराकार निरवैर अजूनी रहित जगाए जोत, जोती जाता करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथमी जणाए आपणी सरोत, सृष्ट सबाई आप समझाईआ। आदि जुगादि गुर इक्को बहुत, दूसर गुर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर घर वेखे चाँई चाँईंआ। गुर घर वेखे सच महल्ला, महल्ल आपणा आप जणाईआ। पावे सार इक्क इकल्ला, अकल कल वेस वटाईआ। पंचम मेला दरगाह साची फड़ाया पल्ला, बन्धन एका एक रखाईआ। सच संदेश नर नरेश आप घल्ला, साचा हुक्म हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप सलाहीआ। साचा घर पंच परवाना, हरि आपणे राह चलाइंदा। पंचम पंच कर प्रधाना, पंचम एका रंग वखाइंदा। पंच सुहाए दर राजाना, दर एका एक प्रगटाइंदा। पंचां देवे इक्को माणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पंचां करया गुर ध्याना, गुर सतिगुर हरि जू नज़री आइंदा। पंजे दोए जोड़ होए निमाणा, आपणा बल ना कोए रखाइंदा। असीं मन्न के आए तेरा भाणा, दर तेरा इक्को भाइंदा। तूं साहिब

सच्चा राणा, शाह पातशाह अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी किसे ना मिले कोई टिकाणा, दीन मज़्ब सर्ब लड़ाइंदा। वंडी वंड राज राजाना, खण्ड खण्ड सर्ब कराइंदा। कोई पढ़े वेद पुराणा, कोई शास्त्र सिमरत अंग लगाइंदा। कोई धरे ध्यान गीता ज्ञाना, कोई अञ्जील कुरान नाअरा सुणाइंदा। कोई खाणी बाणी वेखे निशाना, जगत निशाना सोभा पाइंदा। तेरा भेव ना जाणे कोए श्री भगवाना, तेरा निशाना नज़र किसे ना आइंदा। असीं रल के मंगण आए सच्चा दाना, दाता दानी तूं अख्वाइंदा। चार वरन चार कुण्ट झुला इक्क निशाना, दूसर होर ना कोए रखाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो श्री भगवाना, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। बल बावन करे परवाना, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। लोकमात बणाए सच मकाना, मुकामे हक़ खेल कराइंदा। लख चुरासी जीवां देवे माणा, माणस मानुख मानव साढे तिन्न हथ्थ गंढु वखाइंदा। अंदर बाहर खेल करे श्री भगवाना, भगवन आपणा रूप वटाइंदा। साचे भगत उठाए वाली दो जहानां, उठ उठ आपणी सेव कमाइंदा। साचा घर वखाए निहकलंक बली बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। नाउँ रखे इक्क महाना, भगत दुआरा मात प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस घर गुर शब्द मिले वर, सतिगुर इक्को नाम सालाहइंदा।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ✳

इक मंगल दिवस रात, घड़ी पल वंड वंडाइंदा। इक्क मंगल हरि की गाथ, आदि जुगादि सर्ब गुण गाइंदा। इक्क मंगल नाता पिता मात, जगत नाता बन्धन पाइंदा। गुरसिख मंगल वसे सतिगुर पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। कट संगल कीता पारजात, पारखू आपणी दया कमाइंदा। जग जीवण दाते पुच्छी वात, वाहवा आपणी खेल वखाइंदा। लेखा चुक्के तात आठ, तत्त तत्त नाल मिलाइंदा। उत्तम करे आत्म ज़ात, परमात्म रंग वखाइंदा। निरगुण बण बण बणया साक, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। इक्क मंगल जगत वंड, हिस्सा मात रखाईआ। इक्क मंगल नाद विच ब्रह्मण्ड, शब्दी शब्द अलाईआ। इक्क मंगल वसे जीउ पिण्ड इंड, पंज तत्त काया डेरा लाईआ। गुरमुख मंगल मेला गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आपणी गोद बहाईआ। नेत्र वेखे सुरपति इन्द, सुरती मात वल लगाईआ। ब्रह्मे शिव होई चिन्द, हरि जू की की खेल रचाईआ। ग़रीब निमाणे बणाए आपणी बिन्द, पिता पूत दए वड्याईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, रस आपणा आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्क मंगल आए जाए, जुग जुग वेस वटाइंदा। इक्क मंगल रसना जिह्वा गाए, बत्ती दन्द मुख सालाहइंदा। इक्क मंगल लख चुरासी फिर फिर कुरलाए, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। गुरमुख मंगल रहे हरि सरनाए, दूजी ओट ना कोए जणाइंदा। देवणहारा निथाव्याँ थाएँ, साचे धाम आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। इक्क मंगल अठ्ठ पहर, आपणा रंग वखाईआ। इक्क मंगल थिर घर लाए लहर, रागी राग सुणाईआ। इक्क मंगल लाड़ी मौत वेखे कहर, मर जम्मे मर मर फेरा पाईआ। गुरमुख मंगल हरि सतिगुर चरन करे सैर, सयाह रूप सचखण्ड आसण लाईआ। किसे नज़र ना आवे ऐर ग़ैर, गुरमुखां आपणा मुख वखाईआ। हरि किरपा हरि कीती मेहर, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। चौथे जुग प्रगट होया इक्को शेर, शरअ सब दी दए बदलाईआ। दो जहानां भेड़ रिहा भेड़, फड़ गरदन इक्क दूजे नाल टकराईआ। जन भगतां लहिणा रिहा नबेड़, पूरब लेखा झोली पाईआ। एका रूप वटाए आपणा केहर, भबक आपणे नाम लगाईआ। नव नौ रिहा घेर, चार कुण्ट फिरे दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि भगत एका रूप समाईआ ।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी ज्ञान चन्द दे गृह खैरो वाली जम्मू ✳

नव नौ चार रहे कुरला, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रोवण मारन धाह, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। रवि ससि नेत्र नैण रहे उठा, चार कुण्ट राह तकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस रहे झुका, निउँ निउँ आपणा माण गंवाईआ। गुर अवतार करन सलाह, आप आपणा मता पकाईआ। पीर पैग़म्बर परवरदिगार तक्कण राह, चौदां तबकां वेख वखाईआ। धरत धवल खुलड़े केस रही वखा, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। समुंद सागर तन देवे भा, सांतक सति ना कोए रखाईआ। त्रैगुण माया आपणा पल्लू रही छुडा, पंज तत्त फिरे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, साची खेल रिहा कराईआ। साची खेल पुरख समरथ, दो जहानां आप कराइंदा । सृष्ट सबाई चलावणहारा रथ, निरगुण आपणा मुख छुपाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता मार्ग दस्स, भेव अभेद आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखणहारा खेल तमाश, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार चलाइंदा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान वेख वखाइंदा। मंडल मण्डप पावे रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। हरि का खेल अपर अपार, भेव कोए ना पाईआ। एका शब्द शब्द बलकार, बल आपणा आप जणाईआ।

वेखणहारा वेखे बैठ सच्चे दरबार, महल अटल आसण लाईआ। करता पुरख करनी करे करनेहार, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा हरि निरँकारा, एका एक जणाइंदा। आदि आदि कर पसारा, अन्तिम आपणा वेख वखाइंदा। मध मध दी जाणे धारा, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वंड वंडाइंदा। विष्नूं विश्व कर प्यारा, ब्रह्मा पारब्रह्म प्रगटाइंदा। शंकर देवे इक्क सहारा, सीस जगदीश हथ्थ टिकाइंदा। त्रैगुण नाता अपर अपारा, रजो तमो सतो बन्धन पाइंदा। पंज तत्त तत्त अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रंग रंगाइंदा। लख चुरासी खोल्ह् किवाड़ा, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। निरगुण दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्दी नाद सच्ची धुन्कारा, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सारा, आप आपणी वंड वंडाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर त्यारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण भर भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आत्म परमात्म खेल न्यारा, ईश जीव गंढु रखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वंड वंडे वंडणहारा, आप आपणी वंड वंडाइंदा। पंज तत्त वेख काया मनारा, रूप अनूप आप छुपाइंदा। आपे जाणे आपणी धारा, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल लख चुरासी, जीव जंत कराईआ। गृह गृह मन्दिर घर घर निरगुण नूर जोत प्रकाशी, दर दर आपणा नाद सुणाईआ। मन्दिर अंदर कर कर वासी, शाहो शाबाशी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इक्क फ़रमाण, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। लख चुरासी कर परवान, त्रैगुण अतीता पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। सरगुण रूप कर प्रधान, जगत प्रधानगी आप कराइंदा। माणस मानुख देवे दान, बुध बबेकी रंग रंगाइंदा। मन वासना खेल महान, नौ दर आपणा खोज खुजाइंदा। खेले खेल श्री भगवान, भगवन आपणा रूप वटाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क मकान, बिन छप्पर छन्न छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंक आप वड्याइंदा। साचा बंक पुरख अबिनाश, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। आत्म परमात्म वसे पास, सगला संग निभाईआ। लहिणा चुकाए पृथ्मी आकाश, आकाश आपणा रूप वखाईआ। मेल मिलाए पवण स्वास, स्वास स्वासां नाल समाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण हो हो दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना हरि निरँकारा, निरगुण निरवैर आप रचाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, गुर गुर वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार आप अलाइंदा। जीवां जंतां दए सहारा,

२१३ १२

साची सिख्या इक्क समझाइंदा। आत्म अन्तर खोल्ह किवाड़ा, भेव अभेद आप समझाइंदा। कर प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अग्नी तत्त तत्त बुझाइंदा। इक्क वखाए सच दुआरा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। पुरख अबिनाशी साचे तख्त बहे सच्ची सरकारा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। वंडे वंड अपर अपारा, साची वंडण आप कराइंदा। विष्नूं देवे सति भण्डारा, ब्रह्मे ब्रह्म ब्रह्म आपणा झोली पाइंदा। शंकर अन्तिम करे सँघारा, संसा रोग ना कोए रखाइंदा। भगवन विष्नूं इक्को धारा, विश्व रूप वटाइंदा। ब्रह्मा नाद शब्द बोल जैकारा, चारे वेद अल्हाइंदा। एका जोत शंकर आधारा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। इक्क त्रसूल दे सहारा, त्रिलोकी बन्धन पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी बोध अगाधी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप चलाइंदा। साची धार हरि निरँकार, आदि पुरख पुरख चलाईआ। वंडण वंड अगम्म अपार, अलख अगोचर आप कराईआ। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज कर त्यार, हुक्मे हुक्म आप फिराईआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैख़री आप सुणाईआ। चारे जुग दे आधार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा बन्धन पाईआ। चारे वरन कर ख़बरदार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश भेव अभेद छुपाईआ। चारे कुण्ट कर पसार, चार यारी रंग रंगाईआ। इक्को चौकड़
२१४ कर त्यार, गुर अवतार सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप जणाईआ। धुर २१४
दी कार श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। गुर अवतार कर प्रधान, सच संदेशा नाम सुणाइंदा। जीवां जंतां
१२ दे ज्ञान, आत्म ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। चरन कँवल सच ध्यान, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। एका राग सुणाए कान, अनहद १२
नाद धुन अल्हाइंदा। इक्क मन्दिर वखाए मकान, सचखण्ड दवारा सोभा पाइंदा। एका शाह पातशाह सच्चा हुक्मरान, सीस जगदीश इक्क सुहाइंदा। एका जुग जुग वेखे आण, नित नवित वेस वटाइंदा। एका तेई अवतारां देवे दान, वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान मेल मिलाइंदा। एका भगत अठारां करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। एका ईसा मूसा करे प्रधान, संग मुहम्मद भेव चुकाइंदा। एका लेखा जाणे अञ्जील कुरान, तीस बतीसा हदीसा आप पढ़ाइंदा। एका वसे मुकामे हक़ सच मकान, तौफ़ीक ख़ुदाए इक्क रखाइंदा। एका मिहबान बीदो देवे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। एका शरअ शरीअत समझाए कलाम, कलमा नबी आप अल्हाइंदा। एका देवणहारा मन्त्र सतिनाम, नाम सति रूप वखाइंदा। एका पंज तत्त चोला देवे माण, नानक निरगुण सरगुण नाल मिलाइंदा। एका जोती दस रूप खेल करे महान, गोबिन्द आपणी गोद सुहाइंदा। एका धुर फ़रमाण साचा गाण, लोकमात करे परवान, सच संदेशा हरि निरँकारा, निरगुण धारा आप जणाइंदा।

एका पंचम लेखा जाणे दो जहान, श्री भगवान साचे तख्त सोभा पाइंदा। एका रूप श्री भगवान विष्नूं आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका चौकड़ एका धन्दा, लख चुरासी आप जणाइंदा। लख चुरासी साची घाल, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। सृष्ट सबाई साचा धन माल, एका वणज नाम कराईआ। गुर अवतार करन प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी बण रखवाल, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा वेखे थाउँ थाईंआ। लहिणा मंगे लहणेदार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाया। सचखण्ड वसे आप निरँकार, दरगाह साची धाम सुहाया। थिर घर वसे सुत दुलार, शब्दी शब्द नाउँ प्रगटाया। सुन अगम्मी पार किनार, सुन्न समाध दए खुल्ह्राया। दो जहानां चरनां हेठ लताड़, आप आपणा पन्ध मुकाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर कर ख़बरदार, आलस निंद्रा दए गंवाया। जुग चौकड़ी कर कर पार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे लेखे लाया। अन्तिम प्रगट हो नर निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाया। जिस नूं गाउँदे वेद चार, पुराण अठारां रहे ध्याया। जिस दी सिफ्त करे गीता ज्ञान, ध्याए अठारां राग अल्ह्राया। जिस दी महिमा गाए अञ्जील कुरान, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहया। जिस नूं नानक गोबिन्द करे प्रणाम, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। सो साहिब सच्चा सुल्तान, सति पुरख निरँजण वेस वटाया। कलयुग अन्तिम वेखे आण, रूप अनूप आप वटाया। सच संदेशा देवे आण, धुर दरबारी आप जणाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत करो सर्ब ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाया। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी बणया बाल अञ्याण, बाली बुध भेव ना राया। नेत्र नैण किसे नज़र ना आए श्री भगवान, मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले कोटन कोटि बैठे डेरा लाया। सच ना वखाए कोए निशान, सच निशाना ना कोए झुलाया। सृष्ट सबाई बीआबान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले देण दुहाया। समुंद सागर सर्ब कुरलाण, जल थल महीअल हरि का रूप, नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणा हुक्म आप वरताया। आदि हुक्म रचना रच, अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। नव नौ खेल कीआ सच्च, हरि सच्चा वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी काया भाण्डे माटी वेखे कच्च, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई होणी भट्ठ, कलयुग अग्नी एका ताईआ। किसे तन ना दिसे रत्ती रत्त, रत्ती रत्त गया सुकाईआ। जीव जंत भुल्ले ब्रह्म मति, मनमति करी कुड़माईआ। साधां सन्तां छड्डया धीरज जत, धीआं भैणां रहे तकाईआ। किसे ना मिले कमलापति, जगत दुहागण नार रही कुरलाईआ। धरनी धरत धवल सत्थर बैठी घत्त, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कलयुग अन्तिम सारे गए नट्ठ, पल्लू कोए ना किसे फड़ाईआ। अठसठ तीर्थ

खाली दिसण तट, सर सरोवर ना कोए वड्याईआ। ऊँची कूकण चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबक देण दुहाईआ। कलयुग मारी इक्को सट्ट, सब नूं मूँह दे भार सुटाईआ। गुरमुख विरले हरि का नाउँ रहे रट, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी प्रगट होवे झट्ट, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आत्म सेजा वेखे खाट, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। निरगुण कट के आए वाट, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जन भगतां पुच्छे आपे वात, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द इक्क चमकाईआ। शब्द अगम्मी देवे दात, बण दानी आप वरताईआ। हरिजन तेरा होवे ना घात, अन्त देवे ना कोए सज़ाईआ। चित्रगुप्त ना वखाए खात, राए धर्म सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी पुच्छे तेरी वात, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। मेल मिलाए कमलापात, कँवल नैण वडी वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणी गोद बहाईआ। पिता पूत करे लाड, बणे जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि अन्त हरि जू लहिणा, श्री भगवान आपणा खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पए देणा, लुकया कोए रहिण ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव भाणा सहिणा, करोड़ तेतीसा हुक्मे अंदर फिराइंदा। भगत भगवान दर साचे बहणा, साचा मन्दिर इक्क वड्याइंदा। कलयुग अन्त वखाए नैणां, नेत्र लोचण आप खुल्लाइंदा। हरिजन पाए साचा गहिणा, काया कंचन रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आदि अन्त सच वरतारा, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। हरि पुरख निरँजण हो न्यारा, निरगुण वेखे थाउँ थाईंआ। एकँकारा खेल करे अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेअन्त वड वड्याईआ। आदि निरँजण जोती जोत जोत उज्यारा, दो जहानां पावे सारा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता सुहाए साचा बंक दुआरा, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। श्री भगवान सच निशान झुलाए आप करतारा, करता पुरख सेव कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो उज्यारा, निरगुण सरगुण जाणे धारा, ब्रह्म लेखा दए मुकाईआ। एका नाद शब्द धुन्कारा, एका गुरू कर पसारा, लख चुरासी वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, नाम डंका इक्क वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदारा, साधां सन्तां दए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए चुकाईआ। सब दा लेखा चुकाए श्री भगवान, कलयुग अन्त अन्त जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण दान, दयावान रिहा समझाईआ। तेई अवतार वेखणा मार ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। भगत भगवान दए ज्ञान, अठ्ठ दस दए वड्याईआ। चार तिन्न कर परवान, सति परवाना दए जणाईआ। गुर दस दस निशान, हरि निशाना इक्क झुलाईआ। पंचम पंच होए प्रधान, सचखण्ड साचे

वज्जी वधाईआ। लोकमात चुक्की काण, आण होर ना कोए रखाईआ। लेखा चुक्के चार जुग जीव जहान, चौकड़ आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। सब दा लेखा जाणा चुक्क, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग पैंडा रिहा मुक्क, श्री भगवान रिहा मुकाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जो बैठा रिहा लुक, गुर अवतारां सेव लगाईआ। अन्तिम अन्त पया बुक्क, भब्बक आपणे नाम लगाईआ। निरगुण निरवैर प्या उठ, उठ आपणी खुशी मनाईआ। जन भगतां उपर जाए तुठ्ठ, दीन दयाल होए सहाईआ। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ, नव नौ फेरा पाईआ। मेल मिलावा अबिनाशी अचुत्त, चितवित ठगौरी कोए ना पाईआ। एका वार सुहाए साची रुत्त, रुत्त बसन्त आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। सब दा लेखा लेखे जाए लग्ग, लगावणहार आप लगाईआ। करे खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, सतिगुर पूरा वेस वटाईआ। चार वरन मार्ग एका दस्स, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका जोत नूर प्रकाश, एका नाद शब्द धुन शनवाईआ। एका पूरी करे आस, आसा तृष्ना दए गंवाईआ। एका वसे सदा पास, सच सतिगुर विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुखां करे बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन

मेले चाँईं चाँईंआ। हरिजन मेला सच दुआर, हरि सतिगुर आप कराइंदा। आत्म परमात्म दे आधार, ईश जीव रंग वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म भेव न्यार, एका घर मिलाइंदा। आत्म सेजा कर त्यार, फूलण बरखा आपे लाइंदा। निर्मल दीआ बाती इक्क

उज्यार, जोत निरँजण डगमगाइंदा। कमलापाती अमृत आत्म देवे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। बजर कपाटी खोल्हे ताक, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। आप सुणाए आपणा भविख्त वाक्, अनहद नादी नाद वजाइंदा। सुरत सवाणी आपे लाध, शब्दी मेल मिलाइंदा। डूँघी भँवरी लए काढ, काया कवरी खोज खुजाइंदा। सुखमन टेढी देवे दाद, ईड़ा पिंगल मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर मिलाइंदा। हरिजन मेला साचे घर, घर दसवें मिले वड्याईआ। नाता तुट्टे नारी नर, बिरध बाल रूप नज़र कोए ना आईआ। इक्को अक्खर आत्म परमात्म सारे लैण पढ़, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, चोटी जड़्ह ना कोए रखाईआ। सुरती शब्दी आपे फड़, अंदरे अंदर मेल मिलाईआ। साचे पौड़े निरगुण चढ़, उच्च महल्ले दए बहाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़्ह, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। आपणी किरपा आपे कर, सतिगुर मेले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए तराईआ। भगत दुआरा इक्को इक्क, हरि हरि आप बणाइंदा। जगत गाथा लिख लिख,

जीव जंत समझाइंदा। हरिजन देवे साची भिक्ख, भिच्छया नाम आप वरताइंदा। बिन नेत्र नैण आवे दिस, निज नेत्र आप
खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे दया कमाइंदा। निज नेत्र हरि जू खोल्ह, प्रकाश
प्रकाश नाल मिलाईआ। बिन रसना जिह्वा आपे बोल, आपणा राग सुणाईआ। बिन कंडे तोले साचा तोल, तोला बणे
साचा माहीआ। लख चुरासी विच्चों लए विरोल, गुरमुख साचे आप जगाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण वसे कोल, आप आपणा
संग रखाईआ। देवे वड़याई उपर धौल, धरनी निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अंदर वड़ वड़ उलटा करे नाभ कौल, कँवल
कँवला दए उलटाईआ। अमृत प्याए साची पौहल, रस इक्को इक्क वखाईआ। नज़री आए अल्ला अव्वल, नूरो नूर नूर
इलाहीआ। दरस दखाए साँवल सवल, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, हरिजन आपणे घर मिलाईआ। हरिजन आपणा वेख घर, घर घर विच आप वखाइंदा। पंच विकारा चुक्के
डर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। अमृत नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धुवाइंदा। कागों हँस देवे कर,
सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। सुरत सवाणी लए वर, शब्दी कन्त इक्क वखाइंदा। साची सेजा बहणा चढ़, आत्म
सेजा इक्क वड्याइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भय आपणा इक्क रखाइंदा। गुरमुख वखाए साचा घर, घर मन्दिर आप
उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप समझाइंदा। साचा घर हरि जू हरि, एका
एक बणाईआ। गुरमुख विरला वेखे अंदर वड़, दूसर नज़र किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई रही लड़, पंज तत्त करे लड़ाईआ।
अद्धविचकारे सारे बैठे अड़, जोग अभ्यास रहे कमाईआ। अक्खां मीट ध्यान धर, कन्न उँगलां रहे पाईआ। बन्द स्वासे
नाभी दर, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। डूँग्घी गुफ़ा बैठे वड़, बाहरों दरवाज़ा बन्द वखाईआ। बिन सतिगुर किरपा कोए
ना जाए आपणे घर, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कलयुग सन्त रोवण ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। भगत गाथा
गायण पढ़ पढ़, नानक कबीर ढोला गाईआ। आपणा नाता छुट्टे ना चेतन जड़्ह, सति सति ना कोए समाईआ। पुरख
अबिनाशी कृपानिध ठाकर स्वामी जिस जन किरपा दए कर, कर किरपा बूझ बुझाईआ। बाहों फड़ वखाए घर, घर घर
विच खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां एका घर बहाईआ । हरिभगत तेरा
सच दुआरा, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। आदि जुगादि उच्च मनारा, निहचल एका धाम रखाइंदा। चरन कँवल उपर
धवल दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। मेल मिलाए गुपत ज़ाहरा अंदर बाहरा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा
बन्धन पाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। ग़रीब निमाणयां जगत

२१८ १२

निताणयां करे पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन बोले जैकारा, लख चुरासी विच कदे ना आइंदा। आपणी गोद चुक्के हरि निरँकारा, निरगुण हो हो सेव कमाइंदा। एथे ओथे दो जहान दए सहारा, लोक परलोक चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर हरिजन साचे आप वसाइंदा। साचे मन्दिर हरिजन वसेरा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी दिसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग चाओ घनेरा, भगत भगवन्त मिल मिल खुशी मनाईआ। इक्क दूजे नूं मिल मिल कहिण तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव कोए ना राईआ। तूं साहिब ठाकर स्वामी हउँ बालक निक्का चेरा, चरन कँवल कँवल चरन इक्क शरनाईआ। तेरा वसदा रहे खेड़ा, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी कहे बिन भगत किसे कम्म ना आए मेरा वेहड़ा, मेरी रुत्त ना कोए सुहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर इक्क इक्क कर के बन्ह्दा रिहा बेड़ा, नित नवित वेस वटाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कर के बैठा रिहा जेरा, आपणे भाणे विच समाईआ। कलयुग अन्तिम पाया फेरा, निरगुण निरँकार वेस वटाईआ। जन भगतां बन्ह्े इक्को वार बेड़ा, साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। जे कोई पुच्छे भगत जन केहड़ा, अगों देणा सच सुणाईआ। जिन्ह्ां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सिँघ शेरा, सीस सेहरा रिहा गुंदाईआ। सोहँ जाप जपाया तूं मेरा मैं तेरा, आत्म परमात्म एका घर मिलाईआ। लख चुरासी डुब्बणा डेरा, कलर कंध दए रुड़्हाईआ। अन्तिम देवणहारा गेड़ा, कोहलू चक्की चक्क भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां दए वड्याईआ। हरि भगतां देवे माण, बण निमाणा खेल कराइंदा। लख चुरासी विच्चों लए पछाण, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। वेखणहारा दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा फेरा पाइंदा। घर घर दर दर निरगुण सरगुण देवे धुर फ़रमाण, सच संदेशा आप सुणाइंदा। उठो वेखो मार ध्यान, नेत्र नैण नैण खुल्ह्ाइंदा। जिस नूं आदि जुगादि जुग जुग मन्नदे रहे विष्नूं भगवान, विश्व आपणी धार चलाइंदा। लोकमात होया प्रधान, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। सृष्ट सबाई देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्मा वेता नाल पढ़ाइंदा। विष्नूं घर घर देवे दान, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे रंग रंगाइंदा। हरिजन तेरा साचा रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। आत्म सेजा वेख पलँग, बस्त्र आपणा लए वछाईआ। इक्क जणाए सच अनन्द, अनन्द अनन्द आप हो जाईआ। भेव खुल्ह्ाए परमानंद, परम पुरख दया कमाईआ। गीत सुणाए सुहागी छन्द, साचा ढोला आपे गाईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। पंच विकारा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। सुरत सवाणी ना

२१६ १२

होए रंड, नाता बिधाता दए जुड़ाईआ। मेटे रैण चढ़ाए चन्द, नूर नूर नूर रुशनाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना आप तुड़ाईआ। साहिब कृपाल सदा बख़्शंद, बख़्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, जिस जन बख़्शे चरन सरन सरनाईआ। राए धर्म ना देवे दंड, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। अन्त मिलावा सचखण्ड, जोती जोत जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां होए सदा सहाईआ।

✳ १७ जेठ २०१६ बिक्रमी दौलत सिँघ दे गृह नवां चक्क जम्मू ✳

आवण जावण हरि हरि खेल, हरि करता आप कराइंदा। हरिजन सज्जण साचे मेल, जुग जुग रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेल, बण सतिगुर दया कमाइंदा। कर प्रकाश बिन बाती तेल, दीपक दीआ इक्क जगाइंदा। धाम वखाए घर नवेल, घर घर विच पर्दा लाहइंदा। लेखा जाण गुरू गुर चेल, गुर गोबिन्द धार समाइंदा। कटणहारा धर्म राए दी जेल, लख चुरासी फंद तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण आपणे हथ्थ रखाइंदा। आवे जावे श्री भगवान, जुग जुग वेस वटाईआ। साचे सन्तां देवे दान, नाम सति झोली पाईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, ब्रह्म मति दए समझाईआ। सर सरोवर सच अशनान, काया मन्दिर अंदर दए कराईआ। बोध अगाधी नाद धुन्कान, घर घर विच राग सुणाईआ। आत्म परमात्म देवे माण, ब्रह्म पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। लेखा जाणे दो जहान, ईश जीव वंड वंडाईआ। कर किरपा करे कल्याण, काल ग्रास ना अन्त वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण आपणी बणत बणाईआ। आवे जावे श्री भगवन्त, नित नवित वेस वटाइंदा। पावे सार लख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाइंदा। जन भगतां देवे नाम मणीआ मंत, मन का मणका आप भुवाइंदा। गढ़ तोड़ हउँमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क समझाइंदा। माणस जन्म बणाए बणत, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण श्री भगवाना, हरि जू हरि हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां बख़्शे चरन ध्याना, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच मकाना, मक्का काअबा रूप वटाईआ। निर्मल नूर नूर महाना, नूरी नूर करे रुशनाईआ। दिवस रैण इक्क तराना, तुरया राग राग अल्लाईआ। नाम धन्न दौलत ख़ज़ाना, सच भण्डार दए वरताईआ। करे खेल बीना दाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण भेव चुकाइंदा। आवण

जावण आपणा राह चलाईआ। आवे जावे खेल करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। गुरमुख सज्जण लाए पार, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाइंदा। गुर गुर रूप लै अवतार, शब्दी शब्द शब्द सुणाइंदा। साची सखीआं मंगलाचार, मिल मिल गीत गोबिन्द अलाइंदा। भाग लगाए काया महल अटल मनार, गुरुदुआर इक्क वखाइंदा। साचा मन्दिर कर त्यार, त्रैगुण अतीता आसण लाइंदा। एका ठाकर होए उज्यार, स्वामी एका रूप वटाइंदा। खेल करे परवरदिगार, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। निज नेत्र दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। हरिजन हरि जू पैज स्वार, माणस जन्म लेखे लाइंदा। एका देवे वस्त अपार, नाम निधाना झोली पाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह नज़र किसे ना आइंदा। गुरसिख सज्जण लए उठाल, दिवस रैण करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। कलयुग अन्त अवल्लड़ी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आवण जावण पतित पावण, हरिजन आपणे लेखे पाइंदा। आवण जावण लेखे ला, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। पार उतारे फड़ फड़ बांह, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सति सतिवादी बण मलाह, सति पुरख निरँजण बेड़ा आप चलाइंदा। पार कराए जल थल अस्गाह, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ चरनां हेठ दबाइंदा। दरगाह साची वखाए साचा थाँ, थान थनंतर आप वड्याइंदा। जन भगतां बणे पिता मां, पूत सपूता गोद बहाइंदा। जिस जन जपाए आपणा नाँ, आत्म परमात्म रंग चढ़ाइंदा। होए सहाई सभनी थाँ, घट घट आपणा वेस वटाइंदा। आवण जावण लेखे लए ला, लाशरीक दया कमाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस जन ल्या गा, जन्म मरन मरन जन्म विच कदे ना आइंदा।

✳ १७ जेठ २०१६ बिक्रमी पिण्ड सींगरी जम्मू ✳

लख चुरासी हरि प्रकाश, घट घट नूर धराइंदा। गुरमुख विरले पूरी होवे आस, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी मिटे प्यास, तृष्ना तृख भुख गवाइंदा। माणस जन्म करे रास, मानुख आपणे लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणा भेव चुकाइंदा। लख चुरासी रही कुरला, जन्म अजन्म विच भुवाईआ। नेत्र नैणां नीर रही वहा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुरमुख विरले सतिगुर मिले सच मलाह, जग बेड़ा लए तराईआ। आत्म परमात्म जपाए साचा नाँ, नाउँ निरँकारा इक्क समझाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, बुद्धि काग दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। लख चुरासी उलटा गेड़ गेड़ा, गेड़े विच भुवाइंदा।

जन्म मरन लग्गा झेड़ा, मर मर पन्ध ना कोए मुकाइंदा। उजड़े वसे काया खेड़ा, रुत्त बसन्त ना कोए वखाइंदा। हरिजन विरले हरि जू बन्ने बेड़ा, एका चप्पू नाम लगाइंदा। दरस दखाए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन करे आपणी मेहरा, मेल विछोड़ा आप जणाइंदा। मेल विछोड़ा लख चुरासी, जुग जुग गेड़ा आप दिवाईआ। जीव जंत धर्म राए दी चढ़न फाँसी, जम फास ना कोए कटाईआ। जन भगतां होए सहाई पुरख अबिनाशी, जग आपणी दया कमाईआ। माणस जन्म करे रहि रासी, रैहबर बण बण फेरा पाईआ। सुरती शब्द ना रहे प्यासी, नाम प्याला जाम प्याईआ। अन्तिम करे बन्द ख़लासी, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण लेखा पाईआ। लख चुरासी होई बेहाल, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। अन्तिम खाए सब नूं काल, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। गुरमुख विरले हरि जू वेखे लाल, गुर गुर आपणी गोद सुहाइंदा। गुरमुखां बणे आप दलाल, लोकमात वणज कराइंदा। दिवस रैण कर प्रितपाल, अग्नी तत्त तत्त बुझाइंदा। घर मन्दिर इक्क वखाल, दर साचा आप सुहाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, त्रैगुण मीता आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेख वखाइंदा। लख चुरासी खेल अवल्ला, भेव कोए ना पाईआ। करे कराए इक्क इकल्ला, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। जीव जंत भुलाए कर कर वल छला, वल छल आपणी धार चलाईआ। गुरमुख विरले फड़ाए पल्ला, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। जोती धार शब्दी रला, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। गुरमुखां संग गुरसिख रला, गुर सिख्या सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शनाख़त आपणी दए कराईआ।

✳ १७ जेठ २०१६ बिक्रमी पूरन चन्द दे गृह मलक कैंप ✳

सतिगुर किरपा गुर मिले मीत, मित्र प्यारा संग रखाइंदा। काया करे ठंडी सीत, तन अग्नी तत्त बुझाइंदा। आत्म परमात्म जणाए रीत, रीतीवान दया कमाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म बंधाए प्रीत, प्रेम बन्धन एका पाइंदा। अनहद शब्द सुणाए गीत, गीत अनादी आप अलाइंदा। रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच भेव चुकाइंदा। वखाए धाम सच अनडीठ, घर घर विच पर्दा लहिन्दा। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जाइंदा। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, जिस जन आपणा रूप दरसाइंदा। निरगुण नर हरि नरायण वसे चीत, अन्तर मन्त्र मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि

सतिगुर दया कमाइंदा। सतिगुर किरपा गुर गुर जाण, गुर देवे माण वड्याईआ। नाता तोड़े जीव जहान, जीवण जुगत दए समझाईआ। सच संदेशा देवे आण, घर घर नाद अलाईआ। मेल मिलाए श्री भगवान, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। एका अक्खर दए ज्ञान, आख़र आपणा रंग वखाईआ। अन्ध अन्धेर मिटे निशान, साचा चन्द दए चढ़ाईआ। घर विच घर वखाए श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर देवे माण वड्याईआ। सतिगुर किरपा गुर गुर मेला, गुर गुर आपणा रंग वखाइंदा। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, जुग जुग वेस वटाइंदा। कटणहारा चुरासी जेला, जम का भय भउ मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर भेव चुकाइंदा। सतिगुर किरपा मिले गुर गुर सागर, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। लेखा जाणे काया गागर, पंज तत्त वेखे चाँईं चाँईंआ। निर्मल नूर करे उजागर, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। साचे हट्ट वणज कराए बण सौदागर, घर घर विच वस्त विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरदेव इक्क अख्वाईआ। सतिगुर किरपा मिले गुरदेव, गुर गुर खेल कराइंदा। आत्म परमात्म साचा मेव, रस रसीआ रस वखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अभेव, बज़र कपाटी पर्दा लाहइंदा। दरस दखाए इक्क निहकेव, निहचल आपणा धाम प्रगटाइंदा। लेखा जाणे रसना जेहव, जेहवा रसना आपणा गुण वखाइंदा। दाता दानी वड देवी देव, देवत सुर मुन जन एका घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा वेस वटाइंदा। सतिगुर किरपा गुर वेस अवल्लड़ा, आदि जुगादि वटाईआ। जन भगत फड़ाए साचा पलड़ा, एका पल्लू लए उठाईआ। जीवण दाता मार्ग दस्से राह सुखल्लड़ा, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुर बूझे हरि सतिगुर धार, भेव अभेद जणाईआ। घर मन्दिर वज्जे इक्क सतार, तन्दी तन्द ना कोए रखाईआ। दिवस रैण होए गुफ़तार, गुफ़त शनीद खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरदेव दया कमाईआ। गुरदेव इक्को सतिगुर साजण, शब्दी शब्द नाउँ धराइंदा। तख्त निवासी राज राजन, शाहो भूप हुक्म वरताइंदा। आदि जुगादी जुग जुग रचे आपणा काजन, करता पुरख खेल कराइंदा। लख चुरासी चलाए जहाज़न, बण खेवट खेटा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। गुर गुर भेद सतिगुर रंग, सार कोए ना पाईआ । गुरमुख विरला जाणे जिस मेल मिलाए सूरा सरबंग, सुरती शब्द शब्द कुड़माईआ। आत्म परमात्म देवे अनन्द, अनन्द मंगल गीत अलाईआ। साचा ढोला इक्को सोहला सुणाए छन्द, शंका होर रहिण ना पाईआ। प्रकाश प्रकाश चढ़ाए चन्द, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। नाम जपाए बिन बत्ती दन्द,

मन का मणका आप भुवाईआ। ठाकर स्वामी हो बख्शंद, साहिब दयाल आपणा दरस दए वखाईआ। मेट मिटाए दूई द्वैती भरमां कंध, काल महांकाल भय दे ना सके राईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपणी वंडण आपे वंड, आपणे मन्दिर लए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर खेल कराईआ। गुर सतिगुर सच्चा एकँकार, आदि पुरख अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर हो त्यार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा वारो वार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए आधार, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द सेव लगाइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत दे ज्ञान, पीर पैग़म्बर अञ्जील कुरान आप पढ़ाइंदा। खाणी बाणी इक्क निशान, शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, त्रैगुण अतीता नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्न रवि ससि भान, मंडल मण्डप डगमगाइंदा। पृथ्मी आकाश हो प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर सच्चा श्री भगवन्त, भगवन एका रूप वटाईआ। खेले खेल आदि अन्त, नित नवित कर कर हित्त भगतां लए मिलाईआ। बन्धन पाए नार कन्त, काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। नाम सुणाए एका मंत, महिमा जाणे बेअन्त अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। तोड़णहारा गढ़ हउँमे हंगत, हरिजन बणाए साची संगत, सगला संग आप हो जाईआ। गुरमुख गुरसिख दूजे दर ना जाए मंगत, देवे ज्ञान ना कोए पंडत, बोध अगाध एका नाद दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा निरगुण निराकार इक्क हो जाईआ। सतिगुर सच्चा निराकार, निरवैर पुरख अख्वाइंदा। लख चुरासी जूनी वसे बाहर, घट घट आपणा रूप दरसाइंदा। मरे ना जम्मे विच संसार, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। हुक्मे अंदर घल्ले गुर अवतार, गुर गुर सेव जणाइंदा। कोटन कोटि साध सन्त कर त्यार, श्री भगवन्त हुक्म मनाइंदा। सचखण्ड वसे वसणहार, थिर घर शब्दी राग अलाइंदा। सुन अगम्मी खेल अपार, धूंआँधार मेट मिटाइंदा। काया कपड़ खोल्ह किवाड़, आत्म दरसी दस्म दुआरी डेरा लाइंदा। साची सेजा सोहे अपार, निर्मल जोत जगे उज्यार, दीआ बाती कमलापाती आप टिकाइंदा। साचे मन्दिर होए धुन्कार, अनहद वज्जे इक्क सतार, तन्दी तन्द ना कोए वखाइंदा। करे खेल अपर अपार, एका वेखे वेखणहार, अंदर बाहर गुपत ज़ाहर, आपणा रूप वटाइंदा। जोती जाता हरि करतार, पुरख बिधाता बेऐब परवरदिगार, नूरी जल्वा नूरो नूर डगमगाइंदा। आत्म परमात्म दए आधार, पारब्रह्म खेल अपार, ब्रह्म मेले आपणी धार, तत्त नज़र कोए ना आइंदा। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना होए खुआर, हउमे

हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। जिस जन सतिगुर करे प्यार, लख चुरासी विच्चों लए निकाल, राए धर्म फंद ना कोए पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, गुरमुख उठाए आपणे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, सतिगुर आपणा नाउँ रखाइंदा। सतिगुर सच्चा साहिब दयाल, दयाल रूप आप हो जाईआ। नाता तोड़े कलयुग काल, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी विच्चों भाल, गुरमुख आपणा बन्धन पाईआ। एका मार्ग दस्से सुखाल, सुखमन टेढी बंक अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। ईड़ा पिंगल होए बेहाल, सुण सुण शब्द नैण शरमाईआ। काया मन्दिर अंदर तुट्टे बज़र कपाटी ताल, पर्दा दूई दए उठाईआ। सुरत सवाणी शब्दी पुच्छे हाल, हाल मुरीदां आप सुणाईआ। हरिजन सज्जण साचे भाल, आपणे घर घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा हरिजन देवे माण वड्याईआ। सतिगुर पूरा साहिब ठाकर, ठोकर आपणे नाम लगाइंदा। आदि पुरख दर आयां घर देवे आदर, आपणा आदर्श आपणा आप वखाइंदा। किरपा करे करीम करता कादर, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। सतिगुर सच्चा मेहरवान, साख्यात रूप वटाईआ। जन भगतां देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। दरगह साची वखाए सच निशान, सचखण्ड दवारे रिहा झुलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। अग्गे पिच्छे फिरे श्री भगवान, हरिजन तेरी सेव कमाईआ। नाता तोड़े जगत शैतान, शरअ शरीअत नेड़ ना आईआ। चार वरन वखाए इक्क मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा देवे वर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पुरख अबिनाशी घट घट वासी नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि पुरख सतिगुर वेखे खेल तमाशी, जन भगतां पूरन करे आसी, आसा तृष्ना लोकमात जगत आपणी जुगत दए बुझाईआ।

✳ १७ जेठ २०१६ बिक्रमी भाग सिँघ दे गृह मलक कैंप जम्मू ✳

पहलों बणो आप भट्ट, भट्ट आपणा रूप बणाईआ। गुरू ग्रन्थ आपणे खाते लओ घत्त, दूसर पास नज़र कोए ना आईआ। पन्थ ख़ालसे कोलों लओ खस, ख़ाली हथ्थ दयो वखाईआ। करे खेल पुरख समरथ, धुर दी बाणी लए अलाईआ। एका नूर एका जोत एका शब्द लए रट, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। लेखा उपर लेखा कोए ना सके रख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। भट्ट बणना विच संसार, संसा मूल रहिण ना पाईआ। गुरू

ग्रन्थ नज़र ना आवे किसे दुआर, बन्द दुआरे लओ कराईआ। फिर अर्ज़ करो सच सच्चे दरबार, दर्दी दर्दीआं दर्द दर्द लए वंडाईआ। एका चौका तीआ सिफ़रा अंक करे त्यार, अंक अंक नाल मिलाईआ। छत्ती राग राग गुफ़तार, राग रागनी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साची दया हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। भट्ट बण करो कम्म, भट्ट आपणा रूप वटाईआ। सृष्ट सबाई ख़ाली दिसे चम्म, दम दम रही कुरलाईआ। गुरू ग्रन्थ किसे नज़र ना आए गुरुदुआरा छपरी छन्न, हट्टो हट्ट ना कोए विकाईआ। फिर साहिब सतिगुर दूजी बीड़ देवे बन्न्ह, कर किरपा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंक अंक नाल मिलाईआ। भट्ट सोहे भट्ट घर, भट्ट भेंटा आप जणाइंदा। लेखा जाणे दो जहान श्री भगवान, आदि जुगादि नादी नान नाद वजाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क फ़रमाण, गुरुआं पीरां देवे दान, नानक अर्जन लेख महान, लिख लिख लेखा हरि समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। गुर ग्रन्थ जाए लुक, नज़र किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कोलों लैणा पुच्छ, दहि दिशा फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा नाउँ करे फेर उतप्त, तेई अठारां दस आपणा बन्धन पाईआ। इकवन्जा बवन्जा होए वस, करे खेल पुरख समरथ, साची गाए अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा दए सुणाईआ। सच संदेशा सुणना मीत, हरि हरि आप जणाइंदा। गोबिन्द वाली वेखो रीत, गोबिन्द कवण खेल कराइंदा। गुरू ग्रन्थ गुर नज़र ना आए किसे पास हस्त कीट, घर घर ख़ाली हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेख दए धर, धरनी उपर आप प्रगटाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। तख़्त निवासी एकँकारा, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, आदि जुगादि खेल कराइंदा। जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण बन्न्हे धारा, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, सति सतिवादी आप चलाईआ। घर विच घर कर प्रगट, थिर घर साचे बणत बणाईआ। करे खेल अकथना अकथ, बोध अगाधी नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। भेव अभेद हरि निरँकारा, आपणा आप खुल्हाईआ। आदि आदि कर पसारा, नर नर वेस वटाईआ। शब्दी शब्द सुत दुलारा, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे भण्डारा, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। पंचम तत्त तत्त अखाड़ा, लख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि निरँकार, आदि जुगादी एका लाइंदा। सचखण्ड निवासी करे साची कार, करता पुरख खेल कराइंदा। लख चुरासी भर भण्डार, घट घट आपणी वस्त टिकाइंदा। निर्मल दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती सोभा पाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, गृह गृह आपणी आप टिकाइंदा। वेखे विगसे वेखणहार, नेत्र नैणां नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रचना इक्क रचाइंदा। साची रचना श्री भगवान, एका एक रचाईआ। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आत्म परमात्म दे दे दान, ब्रह्म पारब्रह्म आपणी अंस बणाईआ। जीव जंत कर प्रधान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे राह चलाईआ। चारे बाणी बोल ज्ञान, एका नाद नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल शब्दी धार, पुरख अकाला आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर पसार, सच अखाड़ा आप लगाइंदा। घड़ घड़ भाण्डे वेखे वेखणहार, बण ठठयारा घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा राह आप चलाइंदा। साचा चलाए हरि जू राह, भेव कोए ना पाईआ। निरगुण निरगुण बण मलाह, सरगुण बेड़ा आप चलाईआ। आपणा देवे नाम सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि पुरख खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। निरगुण सरगुण दे सहारा, जोती जोत नूर टिकाइंदा। एका मन्दिर कर पसारा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अग्गे निरगुण सीस झुकाइंदा। निरगुण दाता निरगुण भिखारी, निरगुण साचे तख्त सुहाईआ। निरगुण भूप राज सिक्दारी, निउँ निउँ निरगुण सीस झुकाईआ। निरगुण जोधा सूर वड बलकारी, निरगुण बलहीण आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण दाता निरगुण दानी, निरगुण झोली अग्गे डाहइंदा। निरगुण नूर निरगुण जोत नुरानी, निरगुण अन्ध अन्धेर समाइंदा। निरगुण शब्द निरगुण बाणी, निरगुण नादी नाद वजाइंदा। निरगुण अकथ निरगुण कहाणी, निरगुण घर घर राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। निरगुण नर वंडे वंड, वंडणहार आप अख्वाईआ। निरगुण खेल करे ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड रचन रचाईआ। निरगुण खेल करे सचखण्ड, थिर घर शब्दी सुत दए बहाईआ। निरगुण प्रकाश करे सूरज चन्द, चन्द चांदनी दए चमकाईआ। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव पाए बंध, बन्धन आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण इक्क सुणाए सुहागी छन्द, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ।

निरगुण दाता सूरा सरबंग, शाह सुल्तान वडी वड्याईआ। निरगुण कोलों निरगुण मंगे मंग, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण देवे आपणा दान, निरगुण झोली आप भराइंदा। साची वस्त वस्त महान, विश्व एका एक वरताइंदा। सरगुण निरगुण कर परवान, निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हिस्सा आप कराइंदा। साचा हिस्सा श्री भगवन्त, आदि पुरख आप वंडाईआ। देवे माण लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ नार कन्त, साची सेज सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया हरि निरँकार, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। सरगुण सरगुण करे प्यार, मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। लहिणा देणा जाणे विच संसार, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप आप वटाइंदा। आपणा रूप आपे रख, हरि हरि आपणी खेल कराइंदा। गुर गुर रूप हो प्रतख, साख्यात धार चलाइंदा। शब्द अगम्मी आपणी वथ, जुग जुग मात वरताइंदा। साचा मार्ग आपे दस्स, बण रैहबर सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाइंदा। भेव अभेदा श्री भगवान, एका एक जणाईआ। विष्नूं देवे विश्व दान, सच भण्डारा झोली पाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म कर परवान, पारब्रह्म सरनाईआ। शंकर लेखा अन्त जहान, देवे देवणहार मुकाईआ। निरगुण सरगुण वेखे आण, जोती जाता डगमगाईआ। गुर अवतारां दे दे दान, नाम निधाना इक्क वखाईआ। सच संदेशा दो जहान, दोए दोए रूप आप जणाईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण, पुराणी आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाईआ। साचा मन्त्र आदि अन्त, हरि जू आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्तर, गुर अवतार आप पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घर घर वेख वखाइंदा। आपणा ब्रह्म जाणे निरंतर, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप सालाहइंदा। साचा नाउँ सिफ्त सालाह, वेद शास्त्र करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए प्रगटाईआ। आपणे मार्ग आपे ला, आपणा राह जणाईआ। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ा, नाता वेखे चाँईं चाँईंआ। साचा ढोला इक्क सुणा, सच धुन इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनभउ प्रकाश आप कराईआ। अनुभव प्रकाश गुर गुर धार, गुर शब्दी रूप वटाइंदा। लेखा जाणे जुग चार, चौकड़ आपणी वंड वंडाइंदा। बोध अगाधा बोल जैकार, जै जै आपणे नाउँ कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप उपजाइंदा। साचा नाउँ

निष्अक्खर रंग, रूप रंग रेख नज़र ना आईआ। निरगुण डोरी निरगुण पतंग, गुर अवतार रिहा उडाईआ। आत्म परमात्म वसे संग, सगला संग आप हो जाईआ। एका मन्दिर वज्जे मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे लँघ, सच सिँघासण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि गुर मन्त्र आप पढ़ाईआ। साचा मन्त्र गुर अवतार, हरि जू हरि हरि आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे वेद चार, ब्रह्मा मुख मुख सालाहइंदा। वेद व्यासा दए आधार, पुराण अठारां आप अलाइंदा। गीता ज्ञान ज्ञान विचार, कान्हा कृष्ना बंक सुहाइंदा। अञ्जील कुरान गए पुकार, ईसा मूसा संग मुहम्मद आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा आप सुणाइंदा। सच संदेशा आदि अन्त, हरि जू हरि हरि आप सुणाईआ। भेव अभेदा कोट कोट सन्त, कोटन कोटि गया समझाईआ। देवे दात भगत भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। महिमा जणाए आप अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा खेल कराईआ। गुर गुर रूप शब्द अगम्म, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। जुग जुग बेड़ा देवे बन्न्, लख चुरासी कंध उठाइंदा। करे वसेरा बिन छप्परी छन्न, महल अटल उच्च मनार ना कोए सुहाइंदा। थिर घर साचा बैठा मल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती नूर एका रल, नूर नूर विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा रूप समझाइंदा। सतिगुर रूप शब्दी जोती धार, धार धार विच मिलाईआ। सचखण्ड खेल करे करतार, करता पुरख बेपरवाहीआ। सरगुण देवे मात आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंज तत्त काया कर प्यार, करता पुरख दए वड्याईआ। साचे चोले पावे सार, चोला चोले नाल बदलाईआ। नानक गोला इक्क दरबार, हरि साचा आप बणाईआ। साचा ढोला एकँकार, एका वार दए पढ़ाईआ। नाम सति सति जैकार, जै जैकार आप सुणाईआ। निर्मल दीआ बाती इक्क उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। कमलापाती साचे तख्त बैठा आप करतार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा एका एका वार दए समझाईआ। नानक निरगुण सरगुण धार, हरि हरि आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहर, गुपत ज़ाहर पर्दा लाहइंदा। नाद वजाए सति सतार, तन्दी तन्द ना कोए रखाइंदा। बोध अगाधी इक्क जैकार, जै जैकार आप सुणाइंदा। अठ्ठे पहर दरस दीदार, नेत्र लोचण आप खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा श्री भगवन्त, पंज तत्त नानक आप समझाईआ। निरगुण नानक खेले खेल नारी कन्त, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। साचे चोले चढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका नाम मणीआं

मंत, महिमा कथ्थ कथ्थ सुणाईआ। लेखा लिखे गुरू ग्रन्थ, गुर गुर आप जणाईआ। एकँकार महिमा अगणत, करता पुरख वड वड्याईआ। सति नाम आदि अन्त, जुगा जुगन्त सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सच संदेशा, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। हरि पुरख निरँजण नर नरेशा, नर हरि आपणी दया कमाइंदा। एकँकारा करे आदेसा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। जोती नूर नूर प्रवेशा, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता करे वेसा, वेस अनेक आप वखाइंदा। श्री भगवान काया मन्दिर वेखे साचा देसा, देस दसन्तर आप सुहाइंदा। पारब्रह्म जाणे लेखा, लेखा आपणा आप जणाइंदा। ब्रह्म मिटाए भरम भुलेखा, दूई पर्दा आप चुकाइंदा। एका गुरू आदि जुगादि रहे हमेशा, जन्म मरन विच ना आइंदा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसा, मूंड मुंडाया ना कोए वखाइंदा। विष्नूं वेखे बाशक शेषा, सांगोपांग सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। एका अक्खर निरगुण जोत, निरगुण निरँकारा आप पढ़ाईआ। निरगुण नानक ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़्ब ना कोए रखाईआ। ना कोई आसा तृष्ना दिसे खोट, माया ममता ना कोए वड्याईआ। पुत्तर धीआं ना ओत पोत, नार कन्त ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाईआ। साची सेवा निरगुण नानक निरँकार, हरि हरि आप जणाइंदा। अंदर वड़ करे गुफ़तार, भेव अभेद आप खुल्ाइंदा। सच सारंगा कर त्यार, जनक सेवा सेवा लेखे लाइंदा। इक्क मृदंगा एका वजाए एकँकार, दूजा राग ना कोए अल्ाइंदा। लेखा बणया विच संसार, लिख लिख आप समझाइंदा। एका अक्खर अपर अपार, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। गुर नानक अंगद झोली दिता डार, अमरू साची बूझ बुझाइंदा। राम दास मंगया बण भिखार, ख़ाली आपणे हथ्थ वखाइंदा। अर्जन बोल बोल जैकार, जै जैकारा रसना गाइंदा। एका जोती नूर अपार, नूर नुराना डगमगाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर कर त्यार, हरि मन्दिर रूप वटाइंदा। निर्मल दीआ इक्क उज्यार, दिवस रैण डगमगाइंदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। सच सुनेहड़ा एका वार, नानक अर्जन रूप वटाइंदा। अर्जन लेखा अपर अपार, अपरम्पर आपणे हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवन्त कर त्यार, बण साजण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरू इक्क प्रगटाइंदा। साचा गुरू सच उपदेश, एका एक जणाईआ। निरगुण नूर निरगुण वेस, सरगुण चोला लए बदलाईआ। वेखणहारा नेतन नेत, नित नवित दया कमाईआ। भगत भगवन्त करे हेत, भावी भउ दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। अर्जन लेखा शब्दी धार, शब्दी शब्द वंड वंडाइंदा। जोती नूर कर उज्यार, हरिगोबिन्द खेल कराइंदा। पंज तत्त तत्त आधार, हरिराय सोभा पाइंदा। ब्रह्म मति इक्क ज्ञान, हरिकृष्न वड वड्याइंदा। गुर तेग़बहादर अन्तिम दे के गया ब्यान, मार सोहले राग अल्हाइंदा। नानक लेखा सब नूं करना पए परवान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। अन्तिम प्रगट होए जोधा सूरबीर बली बलवान, गोबिन्द नौजवान बल आपणा आप धराइंदा। सुत दुलारा श्री भगवान, पूत सपूता रूप वटाइंदा। एका जोती खेल महान, खड़ग खण्डा इक्क चमकाइंदा। पंचम देवे साचा दान, पंचम नाता मोह चुकाइंदा। पंचम उत्तों हो आप कुरबान, आपणा सीस भेंट कराइंदा। बण नादाना मंगे दान, अग्गे आपणी झोली डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गोबिन्द धार इक्क समझाइंदा। नानक गोबिन्द गुरू ग्रन्थ रचया आदि, आदि एकँकार वड्याईआ। एका दिता नाम प्रसाद, चार वरन जीव जंत वरताईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश कोई ना जाणे आपणी दाद, हक़ हकूक ना कोए रखाईआ। हरि का शब्द वसे ब्रह्माद, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। घट घट अंदर रिहा विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप वखाईआ। दिवस रैण वजाए नाद, धुन आत्मक राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब पर्दा दए उठाईआ। गुर नानक रचया आदि ग्रंथ, गुर गुर वड्याईआ। सिख्या

२३१ दे संख असंख, कोटी कोट जीव समझाईआ। लेखे लाए रसना जिह्वा मणीआ मंत, जिस सरवण आप सुणाईआ। जोती २३१

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा भेव दए जणाईआ। हरि

१२ का भेव नानक गा, शब्दी शब्द वड्याआ। आदि पुरख जुग जुग बणे मलाह, बेड़ा लोकमात तराया। गुर अवतारां दए १२

सलाह, सलाहगीर आपणा नाउँ धराया। एथे ओथे पकड़े बांह, हुक्मे अंदर रिहा फिराया। वस्त अमोलक झोली पाई आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाया। नानक बाणी अर्जन पुकार, हरि गुण गुण जस जस गाईआ। एका जोती खेल अपार, नौ दर वेखे थाउँ थाईंआ। नौ दुआरे सृष्ट होए खुआर, कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। गुर का हुक्म भुल्ले जीव गंवार, गुर ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोती आपणे घर वखाईआ। नानक जोती अन्तिम अन्त, आपणा खेल कराईआ। माया पाए आप बेअन्त, बेअन्त वडी वड्याईआ। धीर मल्लीए गढ़ बणयां हउमे हंगत, हरि का नाउँ गए गंवाईआ। जिस नानक अंग लाया अंगद, अंगीकार अंग गए छुडाईआ। पहलों आए बण के मंगत, ख़ाली झोली अग्गे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए दृढ़ाईआ। आदि नानक निरगुण धार, अन्त गोबिन्द रूप समाईआ।

भुलेखा कढ्ढे सर्ब संसार, नाम दाता क्यों खण्डा रिहा चमकाईआ। नानक निरगुण सरगुण चार कुण्ट फिरदा रिहा बण भिखार, गल अल्फ़ी इक्क हंढाईआ। नानक जोती गोबिन्द सूरा सीस धर इक्क दस्तार, कल्ग़ी तोड़ा रिहा सजाईआ। गुरमुखां अंदर आई विचार, घर बह बह मता पकाईआ। सतिगुर पूरा किसे ना मारे खण्डे धार, शब्द ज्ञान दे समझाईआ। नानक सब नाल करदा रिहा प्यार, घर घर जा जा रुस्से लए मनाईआ। गोबिन्द उच्ची कूक रिहा ललकार, सीस धड़ अड्ड कराईआ। नानक बोल के गया सति नाम जैकार, गोबिन्द फ़तेह डंका क्यों वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत संसा रिहा मिटाईआ। जगत संसा गुरमुख भेख, हरि भेदी भेद जणाइंदा। आदि बणाई जिस ने रेख, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। नानक निरगुण वटाया वेस, गोबिन्द चोला तन हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप प्रगटाइंदा। आपणा लेखा श्री भगवान, नानक गुरू गुरू जणाईआ। धीर मलीए कर बेईमान, मुख काला दए वखाईआ। अंदर वड़या पंज शैतान, पंजां शरअ दिती गंवाईआ। किरपा कर गुण निधान, कोई भेव ना जाणे राईआ। इक्को जोत कर प्रधान, गुरू गोबिन्द दए वड्याईआ। जिस सिंघ नाउँ रखाया आण, सो सिख्या सिख समझाईआ। शब्द निराला तीर चलाया बाण, बाणी एका गुण वखाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर शब्द ज्ञान, गुर गुर आपणे अंग रखाईआ। एका कन्ना विच निशान, आपणा निशाना दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ गुर वड्डा वड वड्याईआ। गुरू गोबिन्द सिंघ लेख लिखारा, लिख लिख आप जणाइंदा। एका कन्ना विच संसारा, आपणी वंड वंडाइंदा। उच्ची कूक बोल जैकारा, नौ खण्ड पृथमी आप अलाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल होए अपारा, श्री भगवान आप कराइंदा। चारों कुण्ट होए धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले होए हाहाकारा, गुरुदुआरा गुरू नज़र कोए ना आइंदा। दीन मज़्हब रोवण ज़ारो ज़ारा, शरअ शरीअत झगड़ा एका पाइंदा। एका कन्ना उठे जोधा बलकारा, जो आपणी वंड वंडाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कर खेल आपणी धारा, धार आपणी आप जणाइंदा। धीर मलीआ की करे विचारा, धीरज धीर ना मात धराइंदा। करया खेल आप निरँकारा, गोबिन्द साची सेवा लाइंदा। अन्तिम दे के गया सहारा, गुरसिखां एह समझाइंदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, कल कल्की अवतार फेरा पाइंदा। मेरा कन्ना करे प्यारा, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल भट्ट सवय्या, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। भट्टां पहलों आपणी डोबी नईया, मन हँकार वधाईआ। फेर गीत गाया प्रभ साचे सईया, राम दास होए सहाईआ। गुर अर्जन पकड़े आपे बहीआ, बाहों पकड़ गले लगाईआ। कलयुग

जीवां भेव ना रइया, मनमति रही कुरलाईआ। जिस ने गाया हरि सवय्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या दए समझाईआ। एकँकारा कर पसारा, साची धारा बोध अगाधी शब्द दृढ़ाईआ। आदि अन्त खेल अपारा, जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लेखा जाणे गुर अवतारा, गुर गुर एका दए वड्याईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, पुरख अबिनाशी अन्त ना पारावारा, पारब्रह्म बेपरवाह सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल अपर अपार, करे कराए करनेहार, करनी करता वड वड्याईआ। नानक गोबिन्द सच विहार, गुरू ग्रन्थ हरि नाउँ पसार, भगत भगवन्त करे विचार, दूसर भेव कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाईआ। एका प्रगटे हरि का नाउँ, प्रगट हरि हरि आप जणाइंदा। वेखणहारा हर घट थाउँ, घर घर डेरा लाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाहों, बेपरवाह फेरा पाइंदा। हरिजन पकड़े निरगुण बाहों, सरगुण आपणी गोद उठाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, काग हँस रूप वटाइंदा। सदा सुहेला सिर देवे ठंडी छाउँ, समरथ आपणा हथ्थ टिकाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन कोटि काल वेख वखाइंदा। कोटन कोटि बीते जुग, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार चोग गए चुग, हरि हरि नाउँ रसना जिह्वा गाईआ। कोटन कोटि रूप वटाए चौदां लोक चौदां तबक, कोटन कोटि खेल कराईआ। कोटन कोटि गा गा थक्के शब्द सलोक, बेअन्त बेअन्त कह कर खुशी मनाईआ। कोटन कोटि मंगदे रहे मोख, मुक्त दुआरे सीस निवाईआ। कोटन कोटि रख रख गए ओट, पारब्रह्म प्रभ सच्ची सरनाईआ। कोटन कोटि दरस मंगदे रहे निर्मल जोत, जोती जोत जोत मिलाईआ। कोटन कोटि आहलणयों डिग्गे बोट, लोकमात ना फेर उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी मुके पन्ध, हरि जू पाँधी आप मुकाइंदा। तेई अवतार अठारां भगत गा गा गए छन्द, छन्दा बन्दी जोड़ जुड़ाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद तीस बतीसा गाया छन्द, कलमा कलाम वड अमाम आप जणाइंदा। चार यारी पा पा बन्द, बन्दीख़ाना इक्क वखाइंदा। गुरू गुर लिख लिख गए गुरू ग्रन्थ, अन्त गोबिन्द सेव कमाईआ। कोटन वार प्रगटया पन्थ, कोटन वार बैठा मुख छुपाईआ। धीर मलीए की जानण प्रभ का अन्त, किस बिध आपणी खेल रचाईआ। रचनहारा असंख असंख ग्रन्थ, असंख असंखां विच समाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे बेअन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा दए मुकाईआ। लहिणा मुके गुर अवतार,

पंज तत्त नाता आप तुड़ाईआ। त्रैगुण माया करे खुआर, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा दर नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, सुरपति इन्द दए दुहाईआ। भगत भगवान अग्गे करन पुकार, ढह ढह चरनां सीस निवाईआ। एका जोती दस अवतार, गुर गुर आपणा राग अलाईआ। चार वरन गए हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, साचा कन्त नज़र किसे ना आईआ। गुर का शब्द ना कोए प्यार, पढ़ पढ़ भुल्ली होई नथावीं वेले अन्त पकड़े कोए ना बाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सब दा लहिणा आपणे खाते रिहा पाईआ। साचा खाता परवरदिगार, बेनज़ीर आप प्रगटाइंदा। लहिणा देणा चुक्के चार यार, संग मुहम्मद पन्ध मुकाइंदा। ईसा मूसा शरअ शरीअत तोड़ ज़ंजीर, फड़ अख़ीर आपणी गोद बहाइंदा। प्रगट होया वड पीरन पीर, दस्तगीर दस्तबरदार सर्ब कराइंदा। मुकामे हक़ बैठा चोटी चढ़ अख़ीर, मेहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। पिछला लेखा जाणा चुक्क, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया पैंडा रिहा मुक, पुरख अबिनाशी आप मुकाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहित अनभउ प्रकाश रिहा बुक्क, रूप रंग रेख ना किसे जणाईआ। सच दुआरयों आपे उठ, उठ उठ आपणा फेरा पाईआ। बण दयाल ठाकर स्वामी पुरख पुरखोतम प्या तुट्ठ, हरिजन साचे लए मिलाईआ। अमृत आत्म जाम प्याए इक्को घुट, त्रैगुण माया नाता जावे तुट, पंच विकार नेड़ ना आईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत हउँमे हंगता कढ्ढे खोट, एका रंग दए चढ़ाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सतिगुर पूरा इक्को बहुत, कोटन कोटि गुरू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्तिम लेखा रिहा चुकाईआ। लेखा चुक्के विच संसार, वड संसारी आप चुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, त्रैगुण ज़ोर ना कोए जणाइंदा। पंज तत्त रोवे ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ार इक्क सुणाइंदा। चार जुग होए खुआर, जगत खुआरी आप मिटाइंदा। चार वरन होए बेज़ार, साचा संग ना कोए निभाइंदा। चार खाणी ना कोए आधार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। चार बाणी कोए ना पाए सार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी काया मन्दिर अंदर कोए ना गाइंदा। गुर अवतार कर कर गए पुकार, लिख लिख लेखा जगत वखाइंदा। कलयुग अन्तिम कलयुग जीव आपणा आप गए हार, आपणा पर्दा ना कोए खुलाइंदा। इक्क दूजे नूं देण ज्ञान, घर ना मिले शब्द निशान, सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा। रसना कहिण मिल्या भगवान, जूठ झूठ विष्टा खाण, अंदर वड़ दरस कोए ना पाइंदा। अक्खीं मीट धरन ध्यान, उच्चा वेखण हरि मकान, चरन बह बह महिफ़ल कोए ना लाइंदा। पुरख अबिनाशी

खेल महान, कलयुग अन्तिम होया जाणी जाण, जानणहारा भेव अभेदा आप समझाइंदा। बिन सतिगुर पूरे वेले अन्त ना करे कोए कल्याण, काया कपड़ लेखे कोए ना लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नानक गोबिन्द मेला साचे घर, दर दरवाज़ा आप खुलाइंदा। दर दरवाज़ा निरगुण खोल, थिर घर साचे दया कमाईआ। सचखण्ड दवारे आपे बोल, आप आपणा नाउँ समझाईआ। आत्म परमात्म तोले तोल, तोलणहारा फेरा पाईआ। लख चुरासी अंदर बैठा रहे अडोल, अडुल कदे ना जाईआ। नज़र ना आए वसदा कोल, त्रैगुण पर्दा रही पाईआ। जिस जन बज़र कपाटी देवे खोल्ह, आप आपणा रूप दरसाईआ। तिस काया फुलवाड़ी जाए मौल, पत डाली आप महकाईआ। उलटा करे नाभ कौल, अमृत झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, गुर गुर शब्द शब्द वड्याईआ। हरि शब्द नानक निरँकार, नानक शब्द गोबिन्द रूप वटाईआ। गोबिन्द शब्द गुरमुख प्यार, नानक नाल मिलाईआ। गुरू ग्रन्थ विचोला कलम छाही नाल करे त्यार, हरि संदेशा गुर सुणाईआ। जिस बोलया सो पावे सार, दूसर कोई भेव ना जाणे राईआ। भट्ट सवैय्या हरि गुर चरन निमस्कार, सतिगुर मार्ग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर एका शब्द एका नाद आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद, सन्त साध भगत भगवन्त जुगा जुगन्त मणीआ मंत नार कन्त महिमा अगणत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान, खाणी बाणी बन्धन पाईआ।

२३५ १२

✳ १८ जेठ २०१६ बिक्रमी शीतल सिँघ पिण्ड झण्डे ज़िला गुरदासपुर ✳

श्री भगवान भगतन संग, आदि जुगादि समाइंदा। निरगुण निरँकार निरवैर चढ़ाए साचा रंग, रंग मजीठ आप रंगाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए छन्द, नाम निधाना आप अल्हाइंदा। ईश जीव मेटे चिन्द, चिंता रोग ना कोए वखाइंदा। सुत अनादी बणाए बिन्द, बण खण्ड आपणा फेरा पाइंदा। देवे वस्त गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप वरताइंदा। अमृत आत्म सागर सिन्ध, निझर झिरना इक्क झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त खेल कराइंदा। भगत भगवन्त साचा मीत, जुग जुग दया कमाईआ। लोकमात चलाए अवल्लड़ी रीत, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। नाता तोड़े हस्त कीट, ऊँच नीच एका रंग वखाईआ। करे कराए पतित पुनीत, वरन बरन दए गंवाईआ। जाम प्याए अमृत ठांडा सीत, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाईआ। अन्तर आत्म परखे नीत, मन मति बुध

ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। भगत भगवान इक्को रंग, आदि जुगादि खेल कराइंदा। इक्को सेज इक्क पलँग, सच सिँघासण इक्क वड्याइंदा। एका मन्दिर इक्क अनन्द, एका घर बह बह मंगल गाइंदा। एका नूर जोती चढ़े साचा चन्द, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, अनहद नादी नाद वजाइंदा। एका जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, पूरब लेखा लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां आप तराइंदा। भगत भगवन्त इक्क निशान, सचखण्ड निवासी आप प्रगटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर दे दे दान, कलयुग साची बणत बणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, त्रैभवन धनी आपणी खेल रचाईआ। चौदां लोक खोल्ह हट्ट दुकान, सत्त सत्त वंड वंडाईआ। एका वस्त नाम प्रधान, घर अमोलक आप टिकाईआ। गुरमुख विरला करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लख चुरासी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। घर घर वड़या पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। आसा तृष्ना लग्गी खाण, हउँमे हंगता गढ़ बणाईआ। बिन भगत नज़र ना आए किसे भगवान, लोचण नैण दरस कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अन्त वैरान, पत डाल्ही कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त वेखे चाँईं चाँईंआ। भगत भगवन्त इक्क दुआरा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। भगत भगवन्त इक्क सहारा, एका दूआ मोह वधाइंदा। भगत भगवन्त इक्क वणजारा, घर घर विच हट्ट खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त इक्क नग़ारा, काया नौबत आप वजाइंदा। भगत भगवन्त इक्क जैकारा, आत्म परमात्म सोहँ ढोला गाइंदा। भगत भगवन्त इक्क अखाड़ा, सखी काहन रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप सलाहइंदा। भगत भगवन्त इक्क सलाह, हरि जू आपणी आप जणाईआ। निरगुण सरगुण लए प्रना, नारी कन्त रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी दए सलाह, सच संदेशा इक्क जणाईआ। अन्ध अन्धेर दए मिटा, दीपक जोत नूर रुशनाईआ। बज़र कपाटी दए तुड़ा, द्वैती पर्दा आपे लाहीआ। अनहद राग दए सुणा, पंचम मिल मिल आपणा ढोला गाईआ। साचा जाम दए प्या, आबहयात इक्क वखाईआ। जगत विकारा करे फ़नाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आपणी खेल रचाईआ। भगत भगवन्त खेल रच, रच रच वेख वखाइंदा। जुग जुग मार्ग लाए सच्च, साची गाथा आपे गाइंदा। लख चुरासी राह देवे दस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। हरिजन मेला हस्स हस्स, हँस मुख दया कमाइंदा। हिरदे अंदर वस वस, आप आपणा भेव चुकाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जन भगतां गाए हरि जू जस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण नाल मिलाइंदा। जग जीवण दाता पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। एथे

ओथे दो जहान श्री भगवान सद आवे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। लख चुरासी करे बन्द ख़लास, आवण जावण पतित पावण बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त इक्को वेस, वेस अनेक वटाईआ। लेखा जाणे हरि नरेश, नर नरायण बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम गुरमुख सज्जण आपे वेख, सन्त सुहेले लए उठाईआ। लेखा जाणे पूरब रेख, लहिणा लहणे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे माण वड्याईआ। भगत वड़याई लोकमात, हरि जू हरि हरि आप दिवाइंदा। चरन प्रीती साची दात, नित नवित झोली पाइंदा। अन्तर मन्त्र बिन रसना जिह्वा सुणाए गाथ, निअक्खर आप पढ़ाइंदा। सरगुण देवे सगला साथ, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। लहिणा देणा तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पार कराइंदा। रवि ससि सूरज चन्न मंडल मण्डप दासी दास, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण शाबाश, शहिनशाह आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त इक्को घर वसाइंदा। इक्को घर करे वसेरा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। हरि जू वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मिल मिल करे चाओ घनेरा, चाओ घनेरा इक्क वखाईआ। जूठा झूठा भरम भउ ढाहे डेरा, सच सुच दए दृढ़ाईआ। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी दो जहान श्री भगवान शब्द अगम्मी पाए घेरा, पुरीआं लोआं आपणा बन्धन पाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होया निरगुण निरवैर सिँघ शेरा, शेर आपणा रूप वखाईआ। भगत भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त इक्क दूजे नूं कहिण मैं तेरा तूं मेरा, सोहँ ढोला रसना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त दए समझाईआ। भगत भगवन्त इक्को ढोला, सोहँ धार चलाइंदा। हँ ब्रह्म आपे बोला, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण बण बण तोला, हं आपणा अंक जणाइंदा। एकँकार बण विचोला, साचा सालस आप हो जाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रखदा रिहा पर्दा ओहला, गुर अवतारां सेवा लाइंदा। कलयुग अन्तिम आपणा पूरा करे कौला, वेद व्यासा सच खुलासा जो लिखाइंदा। प्रगट होए उपर धवला, धरनी धरत धवल समझाइंदा। नज़री आए एका नूर इलाही अव्वला, आलमीन हक़ हक़ीक़त खोज खुजाइंदा। भेव चुकाए कान्हा कृष्ना साँवल सवला, मुकंद मनोहर लखमी नरायण मुक्ट बैण नेत्र नैण नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप जगाइंदा। भगत भगवन्त जायण जाग, जागरत जोत इक्क जगाईआ। अन्तर आत्म इक्क वैराग, बण वैरागी रिहा उपजाईआ। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल दए धुवाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, श्री भगवान वडी वड्याईआ। मेल मिलावा मोहण माधव माध, मोहणी आपणा रूप वखाईआ।

चार जुग दी सुणे फ़रयाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणा भेव समझाईआ। धुर फ़रमाणा देवे दाद, नाम अमोलक वस्त झोली पाईआ। जगत नईया चलाए सच जहाज़, खेवट खेटा रूप अनूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए मिलाईआ। भगत मिलावा सच घर, घर साचा आप जणाइंदा। जन्म जन्म दा चुक्के डर, निरभउ आपणा भय वखाइंदा। आत्म परमात्म लए वर, वर दाता आप अख्वाइंदा। लेखा चुक्के नारी नर, नर नरायण आपणे अंग लगाइंदा। आत्म अंदर साचे मन्दिर उच्चे टिल्ले वेखे चढ़, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आपे फड़, सुरती शब्दी बन्ने लड़, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। शब्दी सुरती साचा नाता, नित नवित जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण पिता माता, लोकमात वेख वखाईआ। साची सिख्या इक्को गाथा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, पूरब वेखे बेपरवाहीआ। होए सहाई अनाथ नाथा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, मेहरवान मेहरवान मेहर आपणी नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान एका दर बहाईआ। भगत भगवान दर साचे बहणा, नर हरि आपणा खेल कराइंदा। इक्क दूजे दा दर्शन नैणा, नैण नैणां नाल मिलाइंदा। आत्म परमात्म मन्ने कहिणा, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। जन्म जन्म दा चुक्के देणा, दे दे आपणी खुशी वखाइंदा। साचे भगत तन पाए गहिणा, बस्त्र आपणे नाम रंगाइंदा। हरि का भाणा सिर ते सहिणा, साची सिख्या सिख जणाइंदा। लख चुरासी जूठा झूठा वहण वहणा, कूड़ी क्रिया नाल रुढ़ाइंदा। अन्तिम नाता तुट्टे मात पित भाई भैणा, साक सज्जण सैण नारी कन्त संग ना कोए जाइंदा। लाड़ी मौत लख चुरासी खाए डैणा, राए धर्म आपणा खाता आप वखाइंदा। गुरमुख विरले हरि सरनाई रहिणा, सरनगति जिस जन आपणी आप दिवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान इक्क मकान, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। भगत भगवान इक्क मकान, मुकामे हक़ जणाईआ। भगत भगवान इक्क निशान, सचखण्ड निशाना दए वखाईआ। भगत भगवन्त इक्क ज्ञान, सोहँ अक्खर करन पढ़ाईआ। भगत भगवान इक्क दान, प्रेम वस्त झोली पाईआ। भगत भगवान इक्क अशनान, मिल मिल आपणी मैल गंवाईआ। भगत भगवान इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। भगत भगवान इक्क पहचान, दूजी ओट ना कोए वखाईआ। भगत भगवान काया चोले अंदर वसण इक्क म्यान, दूजा म्यान ना कोए बणाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा गायण गान, गा गा आपणी खुशी मनाईआ। भगत भगवान नाता तोड़न सगल जहान, साचा नाता इक्क रखाईआ। भगत भगवान खेलण खेल महान, गोपी काहन

रूप वटाईआ। भगत भगवान नौजवान, बिरध बाल ना कोए वखाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे नूं करन परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगत भगवान इक्क कहाणी, कह कह आपणा गीत बणाइंदा। भगत भगवान इक्को बाणी, बाण निराला तीर चलाइंदा। भगत भगवान एका मन्दिर वसे सच मकानी, मुकाम किसे ना होर वखाइंदा। भगत भगवान इक्क दूजे तों होण कुरबानी, सीस धड़ वंड ना कोए वंडाइंदा। भगत भगवान खेले खेल राजा राणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवान इक्क महल्ल, महिफ़ल आपणी रहे लगाईआ। भगत भगवान उच्च अटल्ल, अटल्ल मन्दिर बैठे आसण लाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे नाल गए रल, जोती जोत जोत मिलाईआ। भगत भगवान विछड़ ना जायण घड़ी पल्ल, चौकड़ी जुग आपणा खेल वखाईआ। भगत भगवान एका दीपक जायण बल, तेल बाती ना कोए पाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा मेटण सल, आप आपणा देण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दूजे नूं सच संदेशा घल्ल घल्ल, लोकमात सचखण्ड सचखण्ड लोकमात प्रगटाईआ। लोकमात सचखण्ड दवारा, श्री भगवान आप प्रगटाइंदा। भगतां पावण आए सारा, नित नित वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर ध्रू प्रहिलाद देंदा रिहा सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी दे दे लारा, गुर अवतार वेख वखाइंदा। पीर पैग़म्बर दे सहारा, लोकमात नईया आप चढ़ाइंदा। चौदां तबक तबक अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल श्री भगवन्त, जुग चौकड़ी आप कराईआ। अन्तिम करे सर्ब दा अन्त, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। गा गा गए सर्ब बेअन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणे हथ्थ रखे वड़याईआ। हथ्थ वड़याई वड्डा वड, श्री भगवान आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण खेल करे अड्ड अड्ड, अन्तिम इक्को रंग वखाइंदा। लख चुरासी आपणे विच्चों कढ्ढ, अन्तिम आपणे खाते पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वंड वंड गए हद्द, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वरन बरन गंढु पुवाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ आपणा खेल वखाइंदा। शब्द जणाए महिमा अकथ, बोध अगाध नाम दृढ़ाइंदा। वेखणहारा काया मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ, नौ खण्ड पृथमी घर घर फेरा पाइंदा। आतष्म गाए ना साचा जस, परमात्म नज़र किसे ना आइंदा। शरअ शरीअत रही नच्च, दीन मज़्हब डौरू वजाइंदा। कूक कुरलाए काया माटी भाण्डा कच्च, जिस घड़या तिस दा अन्त कोए ना पाइंदा। त्रैगुण अंदर रहे मच्च, पंज तत्त अग्नी लाइंदा। हरि का मन्दिर दिसे ना सच्च, चार खाणी चार बाणी जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

भगत भगवान दया कमाइंदा। दयानिध ठाकर स्वामी, आपणी दया कमाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घर घर वेख वखाईआ। पुरख अकाल अगम्मी बाणी, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सतिजुग दी साची राणी, साचा मार्ग दए वखाईआ। इक्क वखाए पद निरबाणी, निराकार बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त दए निशानी, जगत निशाना दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह वड देवी देवा, देवत सुर आपणे रंग रंगाइंदा। आदि जुगादी इक्को मेवा, अमृत रस मुख पुवाइंदा। करे खेल अलख अभेवा, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। जन भगतां लेखे लाए रसना जेहवा, गुण आपणा इक्क समझाइंदा। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, जोती नूर डगमगाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला, अकल कल आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहइंदा। सिफ्ती सिफ्त सलाहे जगत, सिफ्त विच कदे ना आईआ। देवे वड़याई हरि जू भगत, भगवान आपणी गोद बहाईआ। लेखे लाए बूंद रक्त, मात गर्भ होए सहाईआ। अन्तिम मेला जोती जोत नार कन्त, कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। चोली चाढ़े रंग बसन्त, बसन बनवारी आप रंगाईआ। एका अक्खर मणीआ मंत, ममता मोह दए मिटाईआ। सोहँ ढोला साचा छंत, छत्ती राग रहे जस गाईआ। आदि जुगादि शब्द गुर गुर बणाई बणत, विष्न ब्रह्मा शिव रूप प्रगटाईआ।
२४० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरंतर ब्रह्म देवे दान, पारब्रह्म होए हैरान, भगतां मिल्या श्री भगवान, भगवन मेला विच जहान, जीवण जुगत जन आपणे हथ्थ रखाईआ। २४०

१२ १२

✳ १८ जेठ २०१६ बिक्रमी रसाल सिँघ, साहिब सिँघ दे गृह मनावर जम्मू ✳

आदि जुगादी साची कार, धुर करता आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हरि पुरख निरँजण बणत बणाइंदा। एकँकारा वड बलकार, आदि निरँजण नूर धराइंदा। अबिनाशी करता पावे सार, श्री भगवान दया कमाइंदा। पारब्रह्म करे प्यार, ब्रह्म आपणे अंग लगाइंदा। सचखण्ड दवारा खोल्ह किवाड़, थिर घर आपणा राग अल्हाइंदा। शाहो भूपी बण सिक्दार, साचे तख्त सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। नूर इलाही नौजवान, जल्वा नूर आप धराइंदा। मुकामे हक़ हो प्रधान, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। लाशरीक इक्क मेहरवान, मेहबान आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल पुरख अबिनाश, हरि जू

हरि हरि आप कराईआ। आपणे अंदर रिहा विस्माद, सचखण्ड साचे रिहा समाईआ। थिर घर बोले इक्क अनाद, अनरागी आपणा राग अलाईआ। वेस वटाए बोध अगाध, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, घर वसे सच्चा माहीआ। सच्चा माही परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। जोती जाता बेऐब परवरदिगार, इक्क इकल्ला वेस वटाइंदा। सच महल्ला कर त्यार, दर घर साचा आप सुहाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, सच भण्डारा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहित आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे रख, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। सचखण्ड दवारे हो प्रतख, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। असुते प्रकाश होए प्रकाश, प्रकाशवान नज़र किसे ना आइंदा। खेलणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण निराकार अनुभव आपणी धार चलाइंदा। अनुभव धार श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। सचखण्ड दवारे हो प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाईआ। सति सतिवादी इक्क निशान, निरगुण निरगुण लए उठाईआ। दाता जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। खेले खेल हरि महान, साची गणत गणी ना जाईआ। नारी रूप वाली दो जहान, कन्त सुहाग आप अख्वाईआ। सुत दुलारा कर प्रधान, शब्दी शब्द लए प्रगटाईआ। धुरदरगाही इक्क फ़रमाण, सच संदेशा दए सुणाईआ। जोती जोत जोत देवे दान, दाता दानी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अपरम्पर आपणा खेल कराईआ। अपरम्पर खेल पुरख समरथ, आदि आदि आप कराइंदा। सचखण्ड दवारे चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। थिर घर बह बह गाए जस, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। आपणे मन्दिर आपे वस, साचा बंक आप सुहाइंदा। आपे जाणे आपणा रस, रस रसीआ भेव ना कोए खुल्लाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण वस, निरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण मार्ग निरगुण दस्स, निरगुण राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया विश्व धार, हरि हरि आप प्रगटाईआ। एका विष्नूं कर त्यार, देवे वड वड्याईआ। साचा अमृत ठंडा ठार, कँवल कँवला दए वखाईआ। कर किरपा आप निरँकार, आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। एका ब्रह्म ब्रह्म पसार, पारब्रह्म प्रभ वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग सुन्न अगम्म, हरि जू हरि हरि आप लगाइंदा। आदि जुगादी करे कम्म, भेव कोई ना पाइंदा। आपणी कुक्खों आपे

जम्म, मात पित आपणा नाउँ धराइंदा। आपे बेड़ा रिहा बन्न्, बण मलाह आप उठाइंदा। आपे कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न आप अख्वाइंदा। आपे जननी आपे जन, दाई दाया बण बण सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्नूं अंदर आपे वड़, ब्रह्म पारब्रह्म आपणा रंग वखाइंदा। ब्रह्म वेता हो प्रधान, करे खेल श्री भगवान, एक ओंकारा वड वड्याईआ। एका नूर एका चन्न, नूर नुराना डगमगाईआ। करे वसेरा बिन छप्परी छन्न, मंडल मण्डप ना कोए सुहाईआ। एका राग सुणाए कन्न, बोध अगाधी नाद वजाईआ। एका पुरख जाए मन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर मेला सहिज सुभाईआ। शंकर मेला एका घर, घर सुहञ्जणा आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी देवे वर, विष्न ब्रह्मा बन्धन पाइंदा। तिन्नां नाता साचे हरि, हरि जू आपणे रंग रंगाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए वखाइंदा। दरस दखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। भेव चुकाए नारी नर, नर नरायण नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। निष्अक्खर आखर इक्को पढ़, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। सति सरूपी अंदर वड़, साचे मन्दिर डेरा लाइंदा। सच सिँघासण आपे चढ़, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप लाइंदा। आपणा मार्ग हरि जू ला, त्रै त्रै बन्धन पाईआ। त्रैगुण माया लए प्रगटा, आपणा रंग वखाईआ। पंचम नाता सहिज सुभा, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश खेल कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लए लगा, गुण अवगुण इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण रैहबर भेव चुकाईआ। बण रैहबर आप खुदा, भेव अभेद आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण कर जुदा, सरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। बिस्मिल रूप हो फ़िदा, फितरत आपणी आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दीपक दए जगा, बिन बाती तेल डगमगाइंदा। साचा दीआ होए उज्यार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण वेखे विगसे वेखणहार, सचखण्ड साचा बंक सुहाईआ। एकओंकारा कर पसार, अकल कल आपणा रूप वटाईआ। आदि निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, शीतल धारा इक्क जणाईआ। अबिनाशी करता ख़बरदार, बेख़बर लए उठाईआ। श्री भगवान नौजवान इक्क झुलाए सच निशान, सति सतिवादी आप वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे ज्ञान, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। त्रै पंज मेला खेल महान, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। नारी कन्त रूप महान, जोती जाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा नर नरेशा आदि पुरख एका वार मंगाईआ। एका वार सच संदेशा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बन्न्हे नर नरेशा, नर नरायण हरि हरि खेल कराइंदा। तिन्नां दरस्से साचा पेशा, पेशवा

आपणा रूप वखाइंदा। वसणहारा साचे देसा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाइंदा। सूरज चन्द किरन किरन करे प्रवेशा, जोती नूर नूर धराइंदा। आपणे हथ्थ रखे लेखा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे चुक्क, हरि हरि खेल कराईआ। निरगुण अंदर निरगुण उठ, सरगुण बन्धन पाईआ। दयाल ठाकर स्वामी आपे तुट्ठ, साचा घाड़न लए घड़ाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी जड़्ह लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुहाए रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाईआ। साची सेवा एकओंकार, एका एक जणाइंदा। विष्नूं देवे सच भण्डार, सति भण्डारा हथ्थ फड़ाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म वंड वंडाइंदा। शंकर लहिणा देणा कर्ज़ देणा उतार, जो घड़या भन्न वखाइंदा। त्रैगुण तेरी बन्न्हे धार, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज झोली पाइंदा। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैख़री आप सुणाइंदा। चारे जुग खेल न्यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप कराइंदा। चारे वरन करे ख़बरदार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वेस वटाइंदा। चारे कुण्टां पावे सार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण, आपणा हुक्म वरताइंदा। इक्क चौकड़ी खेल न्यार, चौथे जुग वेस वटाइंदा। चार यारी रूप अपार, नूर इलाही रंग रंगाइंदा। आदि पुरख करे खेल अपर अपार, पुरख पुरखोतम आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी आपणा बन्धन पाइंदा। लख चुरासी पाए डोर, शब्दी तन्द बंधाईआ। पंज तत्त काया नाता जोड़, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश खेल कराईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाता देवे जोड़, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। पंच नाद शब्द धुंन करे घणघोर, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। ईश जीव खेल कराए मोर तोर, तोरा मोरा एका घर जणाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म इक्क दूजे दी दस्से लोड़, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपे चढ़े साचे घोड़, शब्द अगम्मी घोड़ा आप दुड़ाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां निरगुण सरगुण जाए बौहड़, वेस अनेका रूप वटाईआ। वेखे रस मिट्ठा कौड़, लख चुरासी फोल फुलाईआ। एथे ओथे दो जहान लगाए साचा पौड़, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, सति सतिवादी साची कार, करता पुरख आपणी आप कमाईआ। साची कार करनेहारा, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। लख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लाइंदा। दीआ बाती इक्क उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अनहद नाद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक राग सुणाइंदा। अमृत जल ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। खोल्हणहारा बन्द किवाड़ा, बन्द ताकी आपणा पर्दा पाइंदा। सुखमन वेखे टेढी गारा, ईड़ा पिंगल गंढु

पुवाइंदा। पंच विकार करे खुआरा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आत्म परमात्म दे सहारा, एका घर बहाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यारा, आपणे अंग लगाइंदा। ईश जीव नाता पुरख नारा, नर नरायण सेज हंढाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, करता पुरख भेव कोए ना पाइंदा। सति सतिवादी साची धारा, ब्रह्म ब्रह्मादी इक्क जैकारा, जै जैकार आप अलाइंदा। ब्रह्मा वेता दे सहारा, चारे वेदां बण लिखारा, लोकमात वंड वंडाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, बेअन्त बेअन्त बेऐब परवरदिगारा, नूरो नूर नूर समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, कुदरत आपणा खेल कराइंदा। कुदरत कादर हरि हरि खेल, निरगुण सरगुण आप कराईआ। लख चुरासी कर कर मेल, घर घर डंक वजाईआ। सज्जण सुहेला बण बण चाढ़े साचा तेल, दर दर खुशी वखाईआ। रूप वटाए गुरू गुर चेल, गुर आपणा नाउँ वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि नर नरायण आप कराइंदा। गुर गुर रूप अपर अपारा, शब्दी शब्द वेस वटाइंदा। लख चुरासी दे सहारा, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म खोल्ह किवाड़ा, नाता बिधाता इक्क बंधाइंदा। मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा, नूर नुराना चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा खेल कराइंदा। गुर गुर खेल अपर अपार, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, साख्यात रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता पावे सार, द्वापर देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाईआ। साची कार करने योग, हरि करता आप कराइंदा। गुर गुर मेला धुर संजोग, हरि संजोगी आप कराइंदा। शब्द अगम्मी देवे चोग, रसना रस इक्क चखाइंदा। भेव चुकाए चौदां लोक, लोक परलोक डेरा ढाहइंदा। बोध अगाधी सच सलोक, सोहला आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा भेव चुकाइंदा। गुर गुर भेव खुल्हावणहारा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। एका नाम वणज वपारा, लोकमात हट्ट चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेई वार लै अवतारा, भिन्न भिन्न आपणा रूप वखाईआ। भगत अठारां दे सहारा, सहिज गुण आपणा दए जणाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद देवे वर परवरदिगारा, बेपरवाह वडी वड्याईआ। मुकामे हक़ हक़ नज़ारा, बेनज़ीर आप दरसाईआ। मिहबान बीदो बीख़ैर या अल्ला आलमीन कायनात खोल्ह किवाड़ा, पर्दा दूई दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार यारी बन्धन पाईआ। चार यारी बन्धन पा, एका डोर बंधाइंदा। खेले खेल सिफ्त सलाह, सलाहगीर आपणी धार वखाइंदा। कलमा कलाम नबी रसूल आप पढ़ा, आपणी रहिमत आप कमाइंदा। चौदां तबकां कुण्डा लाह, नूरो नूर नूर दरसाइंदा।

एका अल्फ़ बण आरफ़ दए दृढ़ा, बे युकती आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, एकओंकारा आप वटाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, एका पल्लू गंढु पुवाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लोकमात वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती धार शब्दी रला, पंज तत्त दए वड्याईआ। सच संदेश एका घल्ला, नानक निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। एका जोती घर साचा मल्ला, पंज तत्त अंदर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल गुरू गुर धार, सतिगुर साचा आप कराइंदा। शब्दी शब्द कर पसार, हरि शब्दी वेख वखाइंदा। सरगुण नानक निरगुण प्यार, निरगुण नानक आप समझाइंदा। एका वस्त दए अपार, नाम सति सति वरताइंदा। चार वरन वणज वपार, चारों कुण्ट कुण्ट वरताइंदा। करे खेल हरि करनेहार, एक गोबिन्द वेस वटाइंदा। गोबिन्द खण्डा तेज कटार, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जगदीश सोभा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या वारो वार, नित नवित आपणा रूप धराइंदा। जन भगतां करे सच प्यार, भगत भगवन्त मार्ग इक्क लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा खेल आपणे हथ्थ रखे निरँकारा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जुग चौकड़ी वेखे वारो वारा, नित नवित फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग विष्न ब्रह्मा शिव बण बण सेवा करदे रहे सेवादारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कोटन कोटि वार आए गुर अवतारा, लोकमात फेरा पाईआ। अन्तिम चौकड़ वेद व्यास बण के गया लिखारा, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा दए समझाईआ। ईसा कहे मेरा परवरदिगारा, नूरी पिता फेरा पाईआ। मुहम्मद कूक कूक पुकारा, अमाम आवे साचा राहीआ। नानक निरगुण दे दे गया सहारा, निहकलंक आपणा डंक दए वजाईआ। गोबिन्द चरन कँवल पारब्रह्म मंगी मंग एका वारा, कलयुग एका आस तकाईआ। कल कल्की लए अवतारा, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पावे सारा, बेअन्त वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चार जुग दा लाहे उधारा, कर्ज़ा कोए रहिण ना पाईआ। नाता तोड़े मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआला गुरुदुआरा, हरि मन्दिर इक्क दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, श्री भगवान इक्क रघुराईआ। राम रम्मईआ करनेहार पार किनारा, साची नईआ इक्क वखाईआ। कान्हा कृष्ना सांझा बोले सति जैकारा, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। साची सखीआं मंगल चारा, गोपी काहन आप नचाईआ। नानक गोबिन्द खोलू किवाड़ा, चार वरन गया समझाईआ। कबीर कूके सचखण्ड दवारा, पुरख अबिनाशी वसे साचा माहीआ। साचे भगतां करे प्यारा, साचे सन्तां गोद बहाईआ। गुरमुखां देवे धूढ़ी छारा, मस्तक टिक्का

एका लाईआ। गुरसिखां अमृत देवे ठंडा ठारा, नाभी कँवल दए उलटाईआ। कलयुग अन्तिम आए निहकलंक नर अवतारा, नर हरि आपणा वेस वटाईआ। लोकमात बणाए सचखण्ड दवारा, थिर घर आपणा चरन वखाईआ। सच संदेशा दए एका वारा, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाईआ। त्रैगुण माया आउणा चल सच्चे दरबारा, पंज तत्त आपणे नाल मिलाईआ। तेई अवतार सोहण बंक बोलण जैकारा, आपणा आपणा राग अलाईआ। भगत अठारां करन निमस्कारा, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सजदा सीस कर कहिण परवरदिगारा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। नानक गोबिन्द वेख खेल चमत्कारा, चानण नूर नूर दरसाईआ। पंच परवान होया धुर दरबारा, पंचम मिल मिल खुशी मनाईआ। कलयुग लहिणा अन्तिम चुक्के विच संसार, सो पुरख निरँजण आप चुकाईआ। चार वरनां होए पार किनारा, ऊँच नीच कोई रहिण ना पाईआ। सर्ब जीआं एका नज़री आए मन्दिर ठाकर दुआरा, गुरू घर इक्क वड्याईआ। एका सजदा सीस करे निमस्कारा, मक्का काअबा साचा हुजरा इक्क वखाईआ। दो जहान श्री भगवान करे निमस्कारा, वाहवा तेरी वडी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग देंदा रिहा लारा, आपणा अन्त ना किसे जणाईआ। कलयुग अन्त साचा खोलू भगत दुआरा, भगवन आपणी जोत करे रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां दे सहारा, कोझे कमले गले लगाईआ। नेत्र नैण देवे दरस दीदारा, लोचण लोचण आप खुलाईआ। घर घर मन्दिर पावे फेरा आप करतारा, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। डौरू नाद वजाए सच नगारा, एका आपणा नाम सुणाईआ। राए धर्म ना करे खुआरा, चित्रगुप्त ना लेख लिखाईआ। लाड़ी मौत ना करे शृंगारा, वेले अन्त ना लए प्रणाईआ। प्रगट होया हरि निरँकारा, जन भगतां लए तराईआ। एथे ओथे दए सहारा, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। लख चुरासी पार किनारा, गर्भ जून ना फेरा पाईआ। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोले जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, कलयुग अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। सन्त सुहेले वेखे सन्त, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख मेला नारी कन्त, नर नरायण आप मिलाइंदा। गुरसिख चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग मजीठी उतर कदे ना जाइंदा। आपणी महिमा जणाए अगणत, अजपा जाप आप समझाइंदा। माणस जन्म बणाए बणत, मानुख आपणा भेव खुलाइंदा। गढ़ तोड़े हउँमे हंगत, निवण सु अक्खर इक पढ़ाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पांधा पंडत, मुलां शेख़ नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाइंदा। हरिजन मेला चरन कँवल वखाए साचा जन्नत, कोटन कोटि स्वर्ग गुरमुख चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग वेखे गुरमुख रंग, गुर गुर वड वड्याईआ। आत्म

सेजा सच पलँग, बैठा आसण लाईआ। अनहद नाद वज्जे मृदंग, धुन नाद सुणाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सूरबीर बेपरवाहीआ। दिवस रैण इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच मिलाईआ। भेव चुकाए परमानंद, निजानंद दए समझाईआ। जो जन गाए आत्म परमात्म छन्द, सो पुरख निरँजण वेखे थाउँ थाईंआ। हँ ब्रह्म लए गंढ, पारब्रह्म आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा हरि का जाप, कलयुग अन्त अन्त वड्याईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, लख चुरासी गोद सुहाईआ। रसना जप जप उतरे ताप, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। जन्म जन्म दा मेटे पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। बज़र कपाटी जाए पाट, पाथर रूप नज़र ना आईआ। फड़ फड़ चढ़ाए साचे घाट, काया मन्दिर अंदर मेल मिलाईआ। शब्द अगम्मी देवे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। रातीं सुत्तयां सुणाए गाथ, घर घर आपणा ढोला गाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब वेखे बेपरवाहीआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन रच्छया आप कराईआ। सति सतिवादी खोल्हया ताक, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। नाता तोड़या ज़ात पात, एका ब्रह्म दए समझाईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वात, गुर शब्दी फेरा पाईआ। हरि चरन बन्हाए साचा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा दए छुपाईआ। लहिणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा गया समझाईआ। सुरती शब्दी मेला कमलापात, कँवल नैण रंग रंगाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ दाता इक्क अख्वाईआ। लख चुरासी पाए नथ्थ, नौ खण्ड पृथमी आप भुआईआ। झूठा बुरज जाए ढढ्ढ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे तत्त अठ्ठ, अप तेज वाए पृथमी अकाश, मन मति बुध ना कोए वड्याईआ। लेखे लग्गे ना रत्ती रत्त, हड्ड मास नाड़ी चम्म कम्म किसे ना आईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना रखे पत, लख चुरासी जीव जंत जंत कुरलाईआ। हरि का नाउँ ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई एका मति, तत्तव तत्त दए जणाईआ। सच जैकारा बोल अलख, अलख निरँजण लए बुलाईआ। भगत भगवन्त कर कर वक्ख, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्स, दसवें मेला सहिज सुभाईआ। नौ दुआरे सत्थर जाए लथ्थ, जगत वासना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप जगाईआ। हरिजन सच्चा जाए जाग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। काया मन्दिर लग्गे भाग, घर दीपक नूर वखाइंदा। त्रैगुण अग्नी बुझे आग, अमृत मेघ बरसाइंदा। मेल मिलाए कन्त सुहाग, जगत रंडेपा आप कटाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। आत्म अन्तर देवे इक्क वैराग, बण वैरागी फेरा पाइंदा। सतिगुर

पूरा रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम रचया काज, गुरमुख सज्जण नाल मिलाइंदा। सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ मारे अवाज़, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। दो जहानां रिहा भाज, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, फड़ फड़ आपणा घर वखाइंदा। हरि घर ठांडा दरबार, दर दरवाज़ा नज़र कोए ना आईआ। अठ्ठे पहर नाद धुन्कार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। दीपक दीआ इक्क उज्यार, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। कमलापाती मीत मुरार, हरि जू बैठा आसण लाईआ। नित नवित देवे दरस दीदार, दरसी आपणा तरस कमाईआ। जन्म जन्म दी हरस मेटे विच संसार, हवस होर ना कोए वधाईआ। अर्श फर्श सोहे इक्क दरबार, श्री भगवान आप लगाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, लोकमात वेख वखाईआ। मुर्शद मुरीद पकड़े आण, मुहब्बत आपणे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम लेखा आपणे लेखे लाईआ। साचा लेखा लख चुरासी, हरि हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां होए दासन दासी, बण सेवक सेव कमाइंदा। साचे मंडल बह बह पाए रासी, गोपी काहन नाच नचाइंदा। आपणा नाउँ रख पुरख अबिनाशी, जन्म मरन विच ना आइंदा। जुग जुग वेखणहारा खेल तमाशी, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। मनमुख राए धर्म देवे फाँसी, अठारां दस बन्द कराइंदा। चित्रगुप्त बह बह करे हासी, लेखा लोक ना कोए मिटाइंदा। गुरमुख विरला आपणी करे बन्द ख़लासी, दोए जोड़ बन्दन हरि सतिगुर चरन सीस निवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे साचा दान, वस्त अमोलक काया गोलक आपणा नाम टिकाइंदा।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी लछमी देवी दे गृह नगयाल जम्मू ✳

चार कुण्ट रही रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पारब्रह्म तेरी दस्से ना कोई सो, घर साचा ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करया धरोह, ध्रू प्रहिलाद रूप ना कोए वटाईआ। साचा नाम ढोआ देवे ना कोई ढो, घर घर दर दर पई लड़ाईआ। सति ज्ञान सति सतिवादी सारे बैठे खोह, ख़ाली मन्दिर देण दुहाईआ। सच सरनाई कोई ना सके छोह, चरन कँवल मिले ना किसे वड्याईआ। झूठी माया लग्गा मोह, माया ममता बन्धन पाईआ। इक्क दूजे नूं रहे कोह, दीन मज़्हब आपणा बल धराईआ। दुरमति मैल ना सके कोई धो, प्रकाश रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण दुआरे मिले तेरी सरनाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा दस्स, राउ रंकां रंक जणाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। जुगा जुगन्तर मार्ग दस्स, गुर अवतार पीर पैग़म्बर राह चलाइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी बोल अकथ, अकथ अकथनी भेव खुल्हाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग पन्ध मुकाया नठ्ठ नठ्ठ, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। नव नौ ख़ाली दिसे हथ्थ, साची वस्त हथ्थ ना कोए रखाइंदा। सृष्ट सबाई चले मनमति, गुरमति अंग ना कोए लगाइंदा। सच जणाए ना कोई तत्त, अग्नी तत्त सर्ब तपाइंदा। आत्म अन्तर हिरदे हरि ना जाए वस, हरि का मन्दिर ना कोए वखाइंदा। तीर निराला ना मारे कस, मन हँकारी गढ़ ना कोए तुड़ाइंदा। पुरख अकाल ना सुणाए कोई जस, नाम निधाना ना कोए अल्हाइंदा। कूड़ी क्रिया अंदर गए फस, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। होई रैण अन्धेरी मस, चौधवीं चन्द ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द संदेशा इक्क सुणाइंदा। शब्द संदेशा चार वरन, ऊँच नीच राउ रंक आप जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ तरनी तरन, तारनहारा वेस वटाईआ। आदि जुगादि करनी करन, करता पुरख खेल कराईआ। खोल्हणहारा हरन फरन, निज नेत्र दरस दिखाईआ। नाता तोड़े मरन डरन, डरन मरन भय ना कोए जणाईआ। इक्क रखाए साची सरन, सरनगति वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म बरन दए समझाईआ। उठो वेखो नेत्र खोल्हो, हरि हरि आप सुणाइंदा। चार वरन अठारां बरन एका मन्त्र हरि हरि बोलो, नामा नाम दृढ़ाइंदा। काया कंडे तन मन तोलो, तोलणहारा एका नाम कंडा लाइंदा। बज़र कपाटी कुण्डा खोल्हो, घर घर विच वेस वटाइंदा। आप चुकाए पर्दा ओहला, पर्दा ओहला कोई रहिण ना पाइंदा। काया चुकणहारा डोला, साचा सोहला गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। मन वासना ना पाए रौला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार अग्नी अग ना कोए लगाइंदा। नज़री आए इक्को मौला, बिस्मिल आपणा रूप वखाइंदा। उलटा करे नाभ कौला, अमृत झिरना आप झिराइंदा। दरस दखाए साँवल सौला, कान्हा कृष्ना वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार कुण्ट आप जणाइंदा। चार कुण्ट जाणा जाण, नव नौ लेखा रिहा मुकाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरिजन सज्जण वेखे आण, जीवन जुगत दए जणाईआ। जन्म जन्म दी चुक्के काण, पूरब पूरब लेखे लाईआ। नाता तोड़ जीव जहान, एका आपणा बन्धन पाईआ। सति सतिवादी सच मकान, सच भूमका दए सुहाईआ। सो दर सोहे सच अस्थान, थान थनंतर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन रिहा जगाईआ। जागणहारा देवे दात, दाता दानी दया कमाइंदा। कलयुग

मेटे अन्धेरी रात, रैण अन्धेरी पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख विरले रखे साथ, सगला संग आप निभाइंदा। लेखा जाणे तरलोकी नाथ, तरलोकी नंदन मेल मिलाइंदा। हो सहाई जिउँ राम बेटा दसराथ, दो जहानां आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, निरगुण सरगुण जोत करे रुशनाईआ। भगत भगवन्त जुगा जुगन्तर पूरी करे आस, आत्म परमात्म मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। घर मन्दिर दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। निज आत्म रखे वास, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। लेखा जाणे पवण सुआस, सुआस सुआसां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाईआ। भेव अभेदा श्री भगवन्त, नव नौ आप खुलाइंदा। सृष्ट सबाई एका कन्त, नर नरायण वेस वटाइंदा। लहिणा देणा चुकाए सर्ब जीव जंत, देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी गीत सुणाए सुहागी छंत, सोहला ढोला आप प्रगटाइंदा। जन भगतां जन्म जन्म विच बदलाए चोला, चोला आपणे रंग रंगाइंदा। सच दुआरा एको खोल्हा, चार वरन माण रखाइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बैठ अडोला, अडुल डुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वरन बरन खोल्हे भेव, अभेद आपणा आप जणाईआ। वेखणहारा चार वेद, वेद शास्त्र करे पढ़ाईआ। करे खेल अछल अछेद, अछल आछल वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खेलण आया खेल, निरगुण सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। सच संदेशा नर नरेशा एका भेज, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। सीस निवाए शमस तबरेज़, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सृष्ट सबाई रिहा जणाईआ। सृष्ट सबाई सच संदेशा, सदी चौधवीं आप जणाइंदा। बीस बीस खेल नर नरेशा, राग छत्तीस बन्धन आप तुड़ाइंदा। दो जहान नेत्र पेखा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका राग अलाइंदा। लहिणा देणा चुकाए औलीए पीर शेख़ा, हज़रत आपणा रूप वटाइंदा। वेखणहारा विष्न ब्रह्मा शिव गणपति गणेशा, करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द इन्द इन्दरासण फेरा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहान श्री भगवान रहे हमेशा, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। कलयुग अन्तिम निरगुण निराकार निरवैर हो प्रवेशा, परम पुरख आपणा खेल कराइंदा। वेखणहारा देश प्रदेशा, देस देसन्तर आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका सरन, सरनगति हरि रखाइंदा। सच सरनाई सरनगति, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को मति, मति भेद आप मिटाइंदा। लख चुरासी इक्को तत्त, तत्तव तत्त आप समझाइंदा। माणस मानुख इक्को रत्त, रत्ती रत्त रत्त रंगाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को पति, कमलापति आप अख्वाइंदा। साचा मार्ग अन्तिम दस्स, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। भगतां अन्तर आपे वस, भगती रंग चढ़ाइंदा। हरिजन कदे ना होए उदास, चिंता सोग ना कोए

रखाइंदा। पुरख अबिनाशी वसे पास, सदा सुहेला डेरा लाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन इक्क सहारा, सृष्ट सबाई उच्च मनारा, भगत दुआरा आप वखाइंदा। भगत दुआरा भगती रंग, भगवन आप चढ़ाया। एका सेज इक्क पलँग, एका बैठा आसण लाया। एका नाम इक्क मृदंग, गीत सुहागी एका गाया। एका रस इक्क अनन्द, रस रसीआ इक्क अख्वाया। इक्क प्रकाश एका चन्द, नूरो नूर इक्क धराया। एका दयाल साहिब बख्शंद, बख्शिश आपणी रिहा कराया। एका तोड़णहारा लख चुरासी फंद, जम की फाँसी रिहा तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जंत साध सन्त श्री भगवन्त भगत भगवान हो मेहरवान, सरन चरन चरन सरन सरनाई इक्क रखाया।

✳१६ जेठ २०१६ बिक्रमी बीबी प्रकाशो दे गृह पिण्ड नगयाल जम्मू ✳

शब्द नाद गृह एका वज्जा, घर मन्दिर होए शनवाईआ। जन्म जन्म दा दुक्खड़ा भज्जा, भव सागर पार कराईआ।
कर्म कर्म दा पर्दा कज्जा, निहकर्मी होए सहाईआ। हरि दर्शन कर हरिजन रज्जा, लख चुरासी रही बिल्लाईआ। सच
२५१ दुआरे बह बह सो पुरख निरँजण सजा, सचखण्ड साचा रूप वखाईआ। जो घड़या सो अन्तिम भज्जा, थिर मात रहिण २५१
ना पाईआ। कोझा कमला होए सुचज्जा, जिस सतिगुर देवे सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१२ कर, मेहरवान वड वड्याईआ। कोझा कमला निर्धन पावे सार, महांसारथी खेल कराइंदा। जुगा जुगन्तर बुझाए बसन्तर १२
हरिजन करे प्यार, प्रेम रीती साची मात वखाइंदा। साची नीती काया पतित पुनीती, दुरमति मैल धो अमृत मेघ रस साचा चो, सांतक सति कराइंदा। एका अक्खर आत्म परमात्म सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। निर्धन निराकार निरवैर निरगुण आपणा खेल कराइंदा। कृपानिध ठाकर स्वामी रहिमत रहीम रहिमान, आपणे हथ्थ रखाइंदा। सिदक सबूरी सच ईमान, घर घर मिले रम्मईआ घट कँवल नैण मुक्ट बैण, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। भगत भगवन्त चुकाए लहिणा देण, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। साचे सन्तां दरस दखाए नेत्र नैण, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। गुरमुखां नाता तोड़े मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण आपणे रंग रंगाइंदा। गुरसिख सच सरनाई दर घर साचे बहण, पुरख अबिनाशी चरन कँवल उपर धवल धरनी धरत धरत वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए एका दर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर मन्दिर होए

सोभावन्त, छपरी छन्न मिले वड्याईआ। जिस गृह वसे भगवन्त, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। लेखा चुक्के आदि अन्त, बेअन्त आपणे अंग लगाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, खेले खेल सूरा सरबंग, नाम वजाए इक्क मृदंग, धुंन अनहद आपणी रागी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सरोवर वखाए साची गंग, जमना सुरस्ती निउँ निउँ सीस झुकाईआ। निउँ निउँ सीस झुकायण सब, जगदीश वडी वड्याईआ। करे खेल आदि जुगादि पुरख पुरखोतम हो प्रगट, परम पुरख वडी वड्याईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर गुर चेले आत्म परमात्म लए सद्द, ब्रह्म पारब्रह्म आपणा बन्धन पाईआ। बोध अगाध सुणाए गथ, खेल वखाए इक्क समरथ, समरथ दाता नज़र किसे ना आईआ। ग़रीब निमाणयां जुगा जुगन्तर गाए जस, वेद पुराण सालाहीआ। कलयुग अन्तिम पूरी करे आस, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। लख चुरासी कटे जम फास, फाँसी राए धर्म ना कोए वखाईआ। हरि नरायण निहकर्मी दरस दखाए साख्यात, साजण सतिगुर दया कमाईआ। जिस जन देवे आपणी नाम दात, तन मन अंदर बाहर गुपत ज़ाहर आपणा रंग चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला वसे साथ, संग आपणा छड्ड कदे ना जाईआ।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी गुरदित सिँघ, संसार सिँघ छम्ब जम्मू ✳

सचखण्ड दवार होए इकट्ठे, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे सीस झुकाईआ। चार जुग जुग फिरदे रहे नट्ठे, हुक्मे हुक्म सेव कमाईआ। लोकमात मार्ग जीव जंत घत्ते, बण बण रैहबर राह चलाईआ। कोटन कोटि नाम आए दस्से, रसना जिह्वा गुण गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बैठे सच सरनाईआ। सच सरनाई लई तक्क, श्री भगवान वडी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बैठे थक्क, तेरा पन्ध ना कोए मुकाईआ। इक्क दूजे नालों होवो अड्ड, जुग जुग वेख वखाईआ। तेरा दुआरा छड्ड छड्ड, धरत धवल फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मारन ताअना, त्रैभवन धनी वेख वखाइंदा। जुग जुग बध्धा तेरा गाना, तेरा सगन मनाइंदा। तूं साहिब दयाल बीना दाना, दाना बीना इक्क अख्वाइंदा। लेखा जाणे लोक तीनां, चौदां तबकां वेस वटाइंदा। तेरे हथ्थ मरना जीणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म जिउँ जल मीना, जल थल महीअल आपणा खेल कराइंदा। तेरा रंग सदा सद भीन्ना, भिन्नड़ी रैण सोभा पाइंदा। हउँ ठाकर तेरे बण मस्कीना, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

२५२
१२

किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, माण ताण ना कोए जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मिल मिल कहिण, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। इक्को नेत्र इक्को नैण, एका अक्ख खुल्हाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी मुक्कया लहण देण, साचा लेखा आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मंगण मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। साहिब सतिगुर होणा संग, सगला संग निभाईआ। निरगुण सरगुण लाउणा अंग, अंगीकार वड वड्याईआ। तेरा नाम वजाया मृदंग, मृदंगा तेरा नाम सुणाईआ। चार जुग वंडण वंड, साचा हिस्सा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पूरी आस कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कहिण शाबाश, शहिनशाह तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी खेले रास, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणा नाच नचाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गगन मंडल सोभा पाइंदा। आपे जाणे आपणा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची सिख्या दर साचे इक्क जणाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, एका शब्द जणाईआ। शब्द संदेशा श्री भगवान, दो जहान अल्हाईआ। दो जहान होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड खेल करे गुण निधान, गुण आपणा ना किसे समझाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, बण बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार दे दे ज्ञान, लिख लिख लेख गए समझाईआ। पीर पैग़म्बर कर कर कलाम, कलमा नबी गए सुणाईआ। बण बण उच्चे उच्च अमाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचे खेल अपारा, हरि हरि आप कराइंदा। तख्त निवासी एकँकारा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत पुराण पावे सारा, पतित पावन भेव ना आइंदा। कागद कलम बण बण लिखारा, इक्क जणाए सच इशारा, शरअ शरीअत वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कराइंदा। धुर दी कार परवरदिगार, दरगाह साची सच सुहाईआ। मुकामे हक़ खेल अपार, मेहबान आप कराईआ। लाशरीक हो त्यार, शरक्त जगत दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। सचखण्ड निवासी नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाइंदा। चारों कुण्ट गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे बोल, रसना जिह्वा सर्ब सुणाइंदा। पारब्रह्म तेरे आए कोल, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। एका तोलणा साचा तोल, तुध बिन तोला नज़र कोए ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लख चुरासी नाल कर कर आए घोल, जगत अखाड़ा नाम वखाइंदा।

तेरा नाउँ थर थर घर घर आए बोल, अनबोलत राग अलाइंदा। कलयुग अन्त सच वस्त ना दिसे किसे कोल, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। गाफ़ल सृष्टी होई अनभोल, तेरा भय ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन तेरा भेव किसे ना आइंदा। दे वर सच्चे भगवान, तेरे अग्गे करी अरजोईआ। हउँ बालक बाल निधान, बाली बुध कम्म किसे ना आईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरे चरनां सेव कमाईआ। तूं शहिनशाह हुक्मरान, तेरा हुक्म वडी वड्याईआ। तूं जुग जुग खेले खेल महान, निरगुण सरगुण सेवा लाईआ। सरगुण निरगुण करे परवान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। तेरा नाम अगम्मी दान, बण दाता आप वरताईआ। तेरा संदेशा धुर फ़रमाण, दो जहान करे सुणवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर कर आए कल्याण, कलमा नबी नबी पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम किसे दर ना दिसे कोए निशान, नौ खण्ड पृथ्मी सिम्मल रुक्ख रही लहराईआ। असीं वेख होए हैरान, साडी कीती कम्म किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई गई आण, बेवा रूप खावंद सच ना कोए हंढाईआ। घर घर वड़या पंज शैतान, पंचम शरअ रिहा सुणाईआ। गुर का शब्द ना कोए ज्ञान, गुर मन्त्र हिरदे जन ना कोए वसाईआ। चुगली निन्दया सुण सुण थक्के कान, सरवण सरोत तेरे नाम कोए ना पाईआ। तेरा रूप ना सक्या कोए पछाण, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे इक्को ओट रखाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, सति सतिवादी आप जणाइंदा। आदि जुगादि चले ना किसे कोई वस, मेरा अन्त कोए ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्को वार कहो बस, बसता सब दा आप बंधाइंदा। दो जहानां वेखणहारा नस्स नस्स, छिन्न भंगर फेरा पाइंदा। लख चुरासी दए फास, फाँसी आपणी इक्क लटकाइंदा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, नूर आपणा आप धराइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन करे दासी दास, दूसर वंड ना कोए रखाइंदा। एका कलमा पृथ्मी अकाश, एका नाम करे प्रकाश, एका पवण इक्क सुआस, एका काया मंडल पाए रास, घर घर आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे गए झुक्क, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी दे हुक्म साडा पैंडा जाए मुक्क, लोकमात वाट कोए रहिण ना पाईआ। तेरे दुआरे सचखण्ड बैठे लुक, आपणा दरस ना किसे कराईआ। तूं सब दा दाता सांझा यार लख चुरासी कोलों जा के पुच्छ, क्यों तेरे तैनूं गए भुलाईआ। असीं आपणे हथ्थ वस्त ना रखीए कुछ, ख़ाली हथ्थ रहे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । पुरख अबिनाशी चढ़या चाअ, सतिगुर साचा खुशी मनाइंदा। नौ सौ

चुरानवें चौकड़ी जुग मैं तक्कदा रिहा राह, आपणा वेला आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्त बणां मलाह, लोकमात फेरा पाइंदा। पिछला लेखा दयां चुका, अग्गे आपणा रंग वखाइंदा। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान दयां मिटा, आत्म ब्रह्म सर्ब दृढ़ाइंदा। रामा कृष्ना नानक गोबिन्द संग मुहम्मद ईसा मूसा इक्क पैग़ाम दयां सुणा, पीर पैग़म्बर आप उठाइंदा। सही सलामत आदि जुगादि इक्क खुदा, राम रहीम रहिमान सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, समरथ आपणी दया कमाइंदा। समरथ पुरख पुरख स्वामी, श्री भगवान वडी वड्याईआ। सर्ब घटां घट अन्तरजामी, घट घट वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुरुआं पीरां शब्द अगम्मी पढ़ाउँदा रिहा बाणी, बाण निराला तीर लगाईआ। ब्रह्मा वेद चार कहाणी, शास्त्र सिमरत वड विदवानी, पुराण अठारां वेद व्यासा राग अलाईआ। गीता ज्ञान सच निशानी, कान्हा कृष्ना खेल महानी, भगत भगवन्त दए वड्याईआ। अञ्जील कुरान शरअ इस्लामी, कलमा कलाम पढ़ाए वड मिहबानी, मिहबान बीदो कायनात आप सुणाईआ। नानक निरगुण खेल महानी, पाया पद इक्क निरबानी, नाम सति मिली निशानी, दो जहानां एका नाद वजाईआ। एकँकारा करे परवानी, भेव कोए ना पाए विदवानी, विदित बैठी मुख छुपाईआ। गोबिन्द सूरा शाह सुल्तानी, मिल्या मेल श्री भगवानी, पूत सपूता सुत दुलारा साची गोद सुहाईआ। वरन बरन जगत कहाणी, ज़ात पात शरअ वेखानी, कलयुग सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल करे करतार, हरि करता आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो विच संसार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। घट घट राम रमिआ पसार, रम्मईआ आपणा पर्दा लाहइंदा। एका नूर नूर कर त्यार, नूर नूर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा साचे घर, सचखण्ड वासी आप सुणाइंदा। सचखण्ड निवासी कृपानिध आपणी किरपा आप कमाईआ। कलयुग अन्तिम होए इक्क प्रसिद्ध, गुर अवतार लेखा लेखे दए लगाईआ। करे कराए आपणी बिध, अन्त कोई पा ना सके राईआ। जन भगतां कारज करे सिध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र हरि निरँकार, एका एक जणाइंदा। अन्तिम कल वेखां संसार, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। चार वरन विच्चों लवां उठाल, उठ उठ आपणी सेव कमाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, सच दलाली इक्क जणाइंदा। वस्त विकावां हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे हथ्थ वखाइंदा। भगत भगवन्त साचे भाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल पुरख अबिनाश,

एका एक जणाईआ। करां खेल अन्त तमाश, लोकमात फेरा पाईआ। भगत भगवन्त बणाए सच जमात, आपणी पट्टी नाम पढ़ाईआ। वरन बरन सुट्टे डूँग्घे खात, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। हरिजन साचे देवे दात, सन्त साजण मेल मिलाईआ। गुरमुखां पूरी करे आस, जगत तृष्ना भुख गुआईआ। गुरसिखां होए दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। लख चुरासी गल पाए जम का फास, फाँसी कोए ना सके तुड़ाईआ। राए धर्म करे हास, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सच वस्त ना किसे पास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। आपणा खेल हरि कराउणा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण जामा लोकमात पाउणा, रूप अनूप आप धराइंदा। भगत भगवन्त वेख वखाउणा, निज नेत्र मेल मिलाइंदा। सच दुआरे सच बहाउणा, सच सोहला राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पैग़म्बर आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार रखणा याद, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। कलयुग अन्त सुणे फरयाद, फिर फिर आपणी खुशी मनाईआ। भगत भगवन्त लए काढ, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। शब्द निशाना एका गाड, धरनी धरत धवल दए झुलाईआ। पिछला लेखा चुकाए जो वंड वंड आए हद्द, शरअ हद्द कोए रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को वज्जे नद, नाम नगारा इक्क सुणाईआ। इक्को काअबा होए हज्ज, हुजरा इक्को दए वखाईआ। इक्को मन्दिर लए सद्द, राम एका नज़री आईआ। एका गुरुदुआर बहे सज्ज, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। चार जुग दी चुकाए लोक लाज, जन भगतां एका घर मिलाईआ। साहिब साजण साचा साज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे लोचण, इक्को आस रखाईआ। सचखण्ड दवारे चरन कँवल बह बह सोचण, सोचिआं सोच विच कदे ना आईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्को है भी होसी, सैभं रूप ना कोए वटाईआ। साडी काया लोकमात हो गई थोथी, अन्तिम नाता आए तुड़ाईआ। लिख लिख रख के आए पोथी, जीव जंत गए भुलाईआ। गुर का शब्द ना जाणया माणक मोती, मनमुख ख़ाक रहे रुलाईआ। अंदर वड़ी वासना खोटी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। कोई चढ़या ना उपर चोटी, कबीर जुलाहा दए दुहाईआ। शमश तबरेज़ खल्लृ लुहाई होया बोटी बोटी, अग्नी तत्त तत्त जलाईआ। नानक निरगुण वेखे कोटन कोटी, सचखण्ड साचे कोट चढ़ चढ़ दरस कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी कलयुग अन्तिम प्रगट करे इक्को निर्मल जोती, फड़ फड़ देवे ना कोए सज़ाईआ। ना वडी ना दिसे छोटी, निराकार निरँकार नज़र किसे ना आईआ। ना कोई हवन पवन ना कोए अहूती, घिृत दीप समग्री कोए ना रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस धर, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क इकल्लड़ा आदि जुगादि जुग जुग फड़ाए पलड़ा, नाम पल्लू जगत नेत्र नैण पलक नज़र किसे ना आईआ।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी माई शाहणी दे गृह छम्ब जम्मू ✳

हरिजन उच्ची सदा शान, शहिनशाह सतिगुर आप कराइंदा। जिस जन देवे चरन ध्यान, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। आत्म बख्शे इक्क ज्ञान, अन्तर विद्या नाम पढ़ाइंदा। अमृत रस पीण खाण, धीरज सति सन्तोख इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। साची शान हरि चरन, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। जिस मिलयां चुक्के भय डरन, भउ रूप ना कोए दरसाईआ। नेत्र खुल्ल्हे हरन फरन, अन्ध अन्धेर दए गुआईआ। नाता तुट्टे वरन बरन, ज़ात पात कोए रहिण ना पाईआ। मिले मेल हरि करनी करन, करता पुरख होए सहाईआ। देवे वड़याई उपर धरन, धरनी धरत धवल रंग रंगाईआ। उलटा करे नाभ कँवल, कँवल नैण खेल कराईआ। जिस ने नूर धराया अवल्ल, आदि पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह शाहान इक्क अख्वाईआ। साची शान दर हज़ूर, जिस जन हाज़री लेखे लाइंदा। जन्म जन्म दे मुआफ़ करे कसूर, गुस्सा आप ना कोए वखाइंदा। जुग जुग दा पैंडा नेड़े ल्याए दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। मस्तक लाए चरन धूढ़, मूर्ख मूढ़े माण दिवाइंदा। एका बख्शे साचा नूर, नूरो नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। दया वड़याई देवे माण, दीन दयाल खेल कराइंदा। घर सागर कराए अशनान, दुरमति मैल धुआइंदा। निर्मल कर्म कर उजागर देवे दान, नाम वस्त झोली पाइंदा। सुरती शब्दी मेला गोपी काहन, घर बह बह सखीआं मंगल साचा गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण निमाणयां आप उठाइंदा। माण निमाणयां सिर रखे हथ्थ, सति पुरख वडी वड्याईआ। सति सतिवादी देवे वथ, घर साचे आप वरताईआ। काया मन्दिर अंदर देवे ढक, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम पति लए रख, पति पतिवन्ता फेरी पाईआ। मेल मिलाए हस्स हस्स, हरि जू आपणा रंग वखाईआ। दर घर मार्ग साचे दस्स, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। हरिजन साचे लख चुरासी नालों करे वक्ख, वक्खरी आपणी धार वखाईआ। खोल्हणहारा इक्को अक्ख, अक्खर इक्को करे पढ़ाईआ।

हिरदे अंदर आपे वस, बस्ती आपणी लए वसाईआ। निमाणयां निताणयां निर्धन हो हो गाए जस, सिफ्ती सिफ्त करे सालाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे आस, जुग जन्म जो जन बैठे ध्यान लगाईआ।

✳ १६ जेठ २०१६ बिक्रमी बीबी राम कौर दे गृह छम्ब जम्मू ✳

सचखण्ड दवारे साचा खेल, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाश बिन बाती तेल, आदि निरँजण डगमगाइंदा। वसणहारा धाम नवेल, सच सिँघासण आसण लाइंदा। निरगुण सरगुण करे मेल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर एका दर बहाइंदा। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी बण बण सज्जण सुहेल, सच संदेशा नर नरेशा इक्क सुणाइंदा। लहिणा मुक्या गुर गुर चेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड दवारे श्री भगवान, तख्त निवासी सोभा पाईआ। भूपत भूप राज राजान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, एका बैठा आसण लाईआ। जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण देवणहार सलाह, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। बोध अगाधा भेव चुका, नाउँ निरँकारा आप जणा, एका नाम दए वड्याईआ। हुक्मी हुक्म खेल करा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी करनेहारा, करता पुरख खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, हरि पुरख निरँजण आपणा पर्दा लाहइंदा। निरगुण नूर एकँकारा, आदि निरँजण जोती जाता डगमगाइंदा। श्री भगवान वसणहारा धाम न्यारा, महल अटल अगम्म अथाह बेपरवाह, दर घर साचे सोभा पाइंदा। श्री भगवान आदि जुगादि बणे मलाह, नित नवित आपणा वेस वटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेल खला, खेलणहारा आपणा रंग आप रंगाइंदा। सचखण्ड दवारा दए वड़या, तख्त निवासी तख्त सुहाइंदा। भूपत भूप रूप वटा, सीस जगदीश ताज सुहा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। नूरो नूर नूर रुशना, बेऐब बेऐब खुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परवरदिगार आपणा राह आप चलाइंदा। परवरदिगार राह अवल्ला, एकँकारा आप चलाईआ। वसणहारा सच महल्ला, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। निरगुण नूर दीपक जोती आपे बला, जल्वा जलाल इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारे हरि जू चढ़, हरि पुरख निरँजण आपणा खेल कराइंदा। आपे खोलणहारा साचा दर, दर दरवाज़ा नज़र किसे ना आइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, घड़ आपणा रंग रंगाइंदा। आपणे अन्तर आपे वड़, वड़ आपे सोभा पाइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़, फड़ आपणा बन्धन पाइंदा। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण बण बण कन्त कन्त कन्तूहल सेज

हंढाइंदा। आपे सुत दुलारा जण, जण शब्दी सुत आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाइंदा। सुत दुलारा आपे जण, जण जणेंदी बणे माईआ। दाई दाया खेल कर, घर साचे खुशी मनाईआ। थिर घर दुआरे आपे वड़, पूत सपूते दए वड्याईआ। एका अक्खर जाणा पढ़, निष्अक्खर दऐ सुणाईआ। पुरख बिधाता देवे दान एका एक नाम वर, वर आपणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल श्री भगवन्त, शब्दी शब्द शब्द जणाइंदा। तेरी महिमा इक्क अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। हरि जू हरि बणाए बणत, ना कोई दूसर संग रखाइंदा। ना कोई जाणे आदि अन्त, आपणी गोद बहाइंदा। हरि का नाउँ मणीआ मंत, हरि निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। खेलणा खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग तेरी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एका वार सुणाइंदा। सति संदेशा लैणा सुत, हरि जू करे जणाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। थिर घर सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। निरगुण निराकार निरवैर अजूनी रहित अनभउ प्रकाश आपे उठ, असुते प्रकाश आप कराईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी साहिब सतिगुर आपे तुट्ठ, आपणी इच्छया साची भिच्छया आपे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा साची धार, देवणहारा एकँकार, इक्क इकल्ला दए समझाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, एका एक खेल कराइंदा। इक्क महल्ल इक्क मनारा, एका आसण लाइंदा। एका सुत इक्क दुलारा, एका हुक्म जणाइंदा। एका वणज इक्क वपारा, एका हट्ट खुल्हाइंदा। एका वस्त दए हरि थारा, नज़र किसे ना आइंदा। दर घर साचे कर प्यारा, बण जननी जन साचा सुत गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाइंदा। साचा वेस श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सुत दुलारे देवे दान, दाता दानी वड वड्याईआ। तेरा उपजाए सच निशान, बेअन्त बेपरवाहीआ। विष्नूं विश्व कर परवान, वास्तक आपणे रंग रंगाईआ। एका अमृत पीण खाण, कँवल कँवला आप टिकाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म कर प्रधान, पारब्रह्म प्रभ वंड वंडाईआ। बण विचोला नौजवान, आपणा खेल दए समझाईआ। सुन अगम्म वेखणहारा धूंआँधार सुंञ मसाण, अनडिठ आपणा राह चलाईआ। शंकर मेल श्री भगवान, कंकर कंकर आपणा मृदंग वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। साचा खेल हरि करतारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, सच प्रीती इक्क जणाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर वखाइंदा। एका इष्ट निरगुण जोत निराकारा, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। एका

देवणहार भण्डारा, अतोट अतुट रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या एका एक, एकँकारा आप जणाईआ। विष्नूं देवे विश्व टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पारब्रह्म हरि जू नेत्र पेख, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शंकर करे साचा हेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क जणाईआ। सच संदेशा हरि हरि नाउँ, एका एक जणाइंदा। आपे वसे हर घट थाउँ, घट घट डेरा लाइंदा। पकड़नहारा दरगाह साची बाहों, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। तख्त निवासी करे सच न्याउँ, शाह पातशाह अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। आपे पिता आपे माउँ, पूत सपूता आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेशा इक्क सुणाइंदा। धुर संदेशा धुरदरगाही, हरि हरि आप जणाईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशनाई, नूर नुराना डगमगाईआ। साचा मन्दिर रिहा सुहाई, घर वसे सच्चा माहीआ। बेऐब परवरदिगार नाउँ खुदाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख पुरख वड्याईआ। आदि पुरख श्री भगवाना, नर हरि आपणा खेल कराइंदा। त्रै त्रै देवे एका दाना, त्रैगुण झोली पाइंदा। रजो तमो सति निशाना, सति सतिवादी आप वखाइंदा। पंचम बन्ने एका गाना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन इक्क वखाइंदा। खेले खेल दो जहानां, दोए दोए आपणी धार चलाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर परवाना, रवि ससि सूरज चन्न किरन किरन चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हुक्मरान, हरि साचा आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणना कर ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। लख चुरासी होए प्रधान, त्रै पंज एका बन्धन पाईआ। आत्म परमात्म खेल करे महान, ईश जीव दए वड्याईआ। ब्रह्म पारब्रह्म झुलाए निशान, सति निशाना दए वखाईआ। बोध अगाधी इक्क ज्ञान, आपणा नाउँ करे पढ़ाईआ। सरगुण रूप विच जहान, साख्यात दए वखाईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, जगत तृष्ना नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा समझाईआ। साचा भेव हरि जू खोल्ह, एका एक जणाइंदा। निष्अक्खर अन्तर आपे बोल, एका राग अल्हाइंदा। लख चुरासी तोलणा तोल, नाम कंडा हथ्थ फड़ाइंदा। घट घट अंदर जाए मौल, मौला एका रूप वटाइंदा। गृह गृह रखे आपणा कौल, कँवल नाभी अमृत आप भराइंदा। निरगुण जोत प्रगट हो उपर धौल, जोत निरँजण डगमगाइंदा। निरगुण सरगुण वसे कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। बज़र कपाटी पर्दा ओहल, माया ममता संग रलाइंदा। पंच विकारा करे घोल, काम कोध लोभ मोह हँकार अंग जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क जणाइंदा। सच सुनेहड़ा हरि निरँकारा,

२६०
१२

एका एक जणाईआ। लख चुरासी कर पसारा, पसर पसारी वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण बन्ने धारा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जल बिम्ब वेखणहार अखाड़ा, पवण पवणां नाल समाईआ। आत्म परमात्म दे आधारा, गुर गुर शब्दी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप जणाईआ। साची खेल वंडे वंड, वंडणहार भेव ना आइंदा। नाता जोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज खेल कराइंदा। चार वेद गाए छन्द, ब्रह्मा आपणा मुख सालाहइंदा। चारे बाणी इक्क अनन्द, परा पसन्ती मद्धम बैखरी एका रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडे वंड, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण देवे वंड, वेस अनेक वटाइंदा। पंज तत्त काया चोले चाढ़े चन्द, नूर नुराना डगमगाइंदा। सदा सुहेला होए बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ वखाइंदा। भरम भुलेखा दूई द्वैती हउमे हंगता ढाहे कंध, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग सरगुण धार, हरि जू हरि हरि आप चलाईआ। सेवा ला गुर अवतार, जुग जुग वेख वखाईआ। पीर पैग़म्बर दए आधार, दस्तगीर दस्त मिलाईआ। गुर गुर शब्दी खोल्ह किवाड़, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। भगत भगवन्त कर प्रधान, जगत प्रधानगी दए वड्याईआ। साचे सन्तां मेला सुरती शब्दी गोपी काहन, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप मिलाइंदा। गुरमुख काया मन्दिर अंदर वेखण सच मकान, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। गुरसिख अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भुख ना लागे राईआ। चौदां लोक खोल्ह दुकान, हरि जू एका हट्ट खुल्हाईआ। चौदां तबकां दे निशान, सच निशाना दए प्रगटाईआ। लेखा जाणे श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। साचा भेव पुरख अगम्म, आदि जुगादि चुकाइंदा। आपे जाणे आपणा कम्म, दूसर अन्त किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता दुवापर कलयुग बेड़ा बन्न्ह, गुर अवतारां वेख वखाइंदा। सुणावणहारा राग अनादी एका कन्न, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। लख चुरासी घड़े लए भन्न, घड़न भन्नणहार आपणा हुक्म वरताइंदा। हुक्मे अंदर सूरज चन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपारा, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। गुर अवतारां दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लोकमात कर वणजारा, वणज वपारी हट्ट चलाईआ। लहिणा जाणे तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लेखा जाणे चार यारा, यारी यारां नाल निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। साचा खेल हरि भगवन्त, आदि जुगादि कराइंदा। गुर गुर वेस नारी कन्त,

कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। रसना जिह्वा नाउँ मणीआ मंत, मन मणका आप भुवाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाइंदा। लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी वेख वखाइंदा। जुग जुग बणाए बणत, जुग जुग खेड़ा आपे ढाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। आपणा रंग हरि रंगीला, एकँकारा आप जणाईआ। आदि जुगादी छैल छबीला, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात बणा कबीला, हुक्मी हुक्म इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस दस धार वेख वखाईआ। एका जोती दहि दिश धार, हरि जू हरि हरि आप चलाइंदा। नानक गोबिन्द साची धार, गुर गुर वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जै आपणे नाम कराइंदा। नाम सति सति आधार, फ़तेह डंका इक्क वजाइंदा। पंचम पंच पंच प्यार, पंच परवान आप वखाइंदा। गानां बन्ने वाली दो जहान, नज़र किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम औध मुक्की आण, लेखा लेखे सब दा पाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बीते विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणा खेल आप कराइंदा। कलयुग वेला अन्तिम आया, हरि जू आपणी खेल कराईआ। सचखण्ड दवारा इक्क सुहाया, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार दर बुलाया, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आए दर, दर बैठे सीस झुकाईआ। सतिगुर फड़या तेरा लड़, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरा अक्खर आए पढ़, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ह्ब वरन बरन शरअ शरीअत आए लड़, जीव जंत कर लड़ाईआ। तेरे विछोड़े वैराग अंदर आए सड़, तेरी बिरहों टिकण ना देवे राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम बीते सृष्ट सबाई गई छल, अछल अछल तेरी वड्याईआ। तेरे दुआरे आए चल, निहचल धाम बैठा आसण लाईआ। नेत्र नैण तक्क साडे वल, दरस प्यासे रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा श्री भगवान, हरि जू एका एक सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत करो ध्यान, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। कलयुग अन्तिम वेला चुक्या आण, चार कुण्ट डंक ना कोए वजाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी नेत्र पेखो जीव जंत होए शैतान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे कहिण, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। बिन तेरे कोई ना दिसे साचा नैण, जग नेत्र कम्म किसे ना आईआ। जुग जुग चुकाए लहिणा देण, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप

२६२
१२

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। मंगी मंग सच दुआर, एका झोली रहे वखाईआ। इकट्ठे होए एका वार, चार जुग विछड़े लए मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा नाउँ लोकमात गाउँदे रहे वारो वार, रूप अनूप अनूप वटाईआ। निउँ निउँ सजदा करदे रहे संसार, वाहवा तेरी वड्याईआ। तूं करता करीम परवरदिगार, रहिमत तेरी इक्को भाईआ। सदा सलामत रहें सचखण्ड दवार, ना मरे ना जाईआ। गुर अवतार तेरे बरदे सेवादार, पीर पैग़म्बर दर दरवेश बैठे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साडी पूरी आस कराईआ। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अग्गों प्या हस्स, हस्स हस्स आप सुणाइंदा। इक्क दूजे नूं दयो दस्स, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। लोकमात चों आए नस्स, सच दुआरा एका भाइंदा। अग्गे खेल करे पुरख समरथ, नथ्थ आपणे हथ्थ वखाइंदा। जूठा झूठा डेरा करे भट्ठ, भट्ठ खेड़ा आप कराइंदा। चार वरन सुणाए एका जस, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश मेल मिलाइंदा। निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, घर घर दीपक आप जगाइंदा। जन भगतां वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। वेखणहारा पृथ्मी आकाश, प्रिथम आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेद आप खुल्हाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चढ़या चाअ, चाओ घनेरा इक्क रखाईआ। धन्न वड़याई पारब्रह्म प्रभ बणे मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां देवे इक्क सलाह, एका अक्खर दए समझाईआ। आदि पुरख इक्क जणाए आपणा नाँ, आपणा नाउँ अन्तिम अन्त दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपे वेख वखाईआ। गुर अवतार उठ उठ वेखण, हरि जू की की खेल कराइंदा। ज़ात पात दी मेटे रेखन, वरन बरन ना कोए रखाइंदा। वसणहारा देस परदेसण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणयां चरनां हेठ दबाइंदा। निराकार निरवैर धरया भेसा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। सीस झुकाए विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा, सुरपति इन्द नाल मिलाइंदा। चतुर्भुज नेत्र नैण आपे पेखा, आदि शक्ति नूर नुराना नूरो नूर इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सचखण्ड दवारे गाउण गीत, हरि जू हरि हरि खेल कराईआ। असी वंडां कर कर आए मन्दिर मस्जिद मट्ठ मसीत, शिवदुआले गुर दर वंड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां दस्से इक्को रीत, बिन हरि अवर ना कोए सहाईआ। काया अंदर साचे मन्दिर उच्च महल्ले बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, राउ रंक ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अनडीठ, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे सालाहीआ। निर्धन सरधन वसे चीत,

चेतन आपणा रूप धराईआ। आत्म परमात्म बन्ने रीत, पतित पुनीत आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे दए वड्याईआ। गुर अवतारां चढ़या रंग, सचखण्ड साचे आप रंगाया। करे खेल सूरा सरबंग, पुरख अबिनाशी वेख वखाया। लख चुरासी आत्म सेजा वेखे पलँग, घर घर मन्दिर आप उपाया। निरगुण अनहद अनाद वजाए मृदंग, अनहत आपणी सेवा लाया। अमृत सरोवर साची धार वहाए गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती निउँ निउँ सीस झुकाया। घर मन्दिर देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाया। गुर अवतार सारे गाउण छन्द, पुरख अबिनाशी ढोला इक्क प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव ना किसे जणाया। हरि का भेव ना पाए कोई अन्त, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कर गुर अवतार पल्लू गए छुडाईआ। सृष्ट सबाई एका कन्त, लख चुरासी नर नरायण निरगुण सरगुण लए प्रनाईआ। वेस वटाए आदि अन्त जुगा जुगन्त, पंज तत्त काया चोले दए वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी घल्लदा रिहा भगत भगवन्त साचे सन्त, सति असति आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम पाए फेरा, बेफ़िकर बेपरवाहीआ। नव नौ चार करे नबेड़ा, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। लोकमात सचखण्ड वखाए साचे डेरा, डेरा आपणा आपे लाईआ। मेटणहार चुरासी गेड़ा, जम की फाँसी दए कटाईआ। धरत धवल तेरा खुल्ल्हा करे वेहड़ा, धरनी होए आप सहाईआ। त्रैगुण माया तेरा कटे जेड़ा, बन्धन बंध कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे नूं कहिण, तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ गीत साचा ढोला गाईआ। निरगुण पुरख प्रगट होया नाउँ रखाया सिँघ शेरा, शेअर आपणा दए सुणाईआ। ग़रीब निमाणे तारे कर कर मेहरां, मेहर नज़र बेनज़ीर आपणी एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा दए चुकाईआ। साचा लहिणा विच संसार, हरि जू हरि हरि आप चुकाइंदा। लेखा जाणे आप करतार, करता पुरख कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जुग जुग विछड़े मेले यार, जन्म विछोड़ा पन्ध कटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त करे प्यार, प्रेम प्यार वेख वखाइंदा। सतिजुग दी साची कार, करनी करता आप कराइंदा। पूरब लेखा लए विचार, वेद व्यासा ढोला गाइंदा। ईसा मुहम्मद कर के गए गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा पर्दा लाहइंदा। नानक निरगुण वाजां रिहा मार, महांबली आपणे वारे फेरा पाइंदा। गोबिन्द पूत सपूता कहे ललकार, कल अन्तिम कल कल्की लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सम्बल डंका वज्जे अपार, दो जहानां आप अल्लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होयण ख़बरदार, त्रैगुण माया नाल उठाइंदा। पंचम पर्दा देवे पाड़, लेखा जाण तेई अवतार, भगत भगवन्त संग मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साची किरपा आपणी आप कमाइंदा। साची किरपा करने योग, युगती आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि सदा संजोग, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म भोगे भोग, भस्मड़ रूप नज़र ना आईआ। भगत भगवन्त गुर अवतार पीर पैग़म्बर जणाए एका ओट, ओट आपणी इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा लेखा लेखे पाईआ। साचा लेखा लेखे जाए लग्ग, श्री भगवान आप लगाइंदा। चार जुग जो रहे अलग्ग, कलयुग अन्तिम मेल मिलाइंदा। त्रैगुण अग्नी बुझे अग्ग, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। आत्म अन्तर इक्क वैराग, पुरख अबिनाशी आप उपजाइंदा। हरि जू मिले कन्त सुहाग, जगत दुहागण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सुरत सवाणी जाए जाग, शब्द हाणी मेल कराइंदा। अकथ कहाणी सुणाए राग, अनुभव अन दृष्ट आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। खेल खलाए एका एक, आदि अन्त वडी वड्याईआ। भगत भगवन्त साचे वेख, लोकमात लए जगाईआ। बहत्तरां लिखणहारा लेख, लिख लिख लेखा दए समझाईआ। सत्तरां रखे एका टेक, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। चुहत्तरां करे आप बबेक, ववेकी आपणा नाउँ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। साचा लेखा लेखे जाए लग्ग, हरि सतिगुर आप लगाईआ। भगत भगवन्त साचे सद्द, सच दुआरे लए मिलाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणी बूझ बुझाईआ। अनहद राग सुणाए नद, अनादी नाद वजाईआ। लेखा जाणे विश्व यद, विश्व आपणा खेल कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेखे हद्द, हदूद अरबा आप वंडाईआ। जीव जंत लख चुरासी हरि जू देवे छड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाईआ। साचा राह चले जहान, दो जहानां वाली आप चलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। राम कहे मैं तेरा राम, कृष्न कहे मैं तेरा निशान, निरवैर रूप भेव कोए ना पाइंदा। ईसा कहे तूं मेरा अमाम, मूसा कहे तूं पकड़ें दाम, मुहम्मद कहे प्याएं जाम, आब हयात हथ्थ रखाइंदा। चारे यार सुणन पैग़ाम, इज़राईल जबराईल मेकाईल असराफ़ाईल साची सेव कमाइंदा। नानक सचखण्ड करे परवान, नाम सति मिल्या दान, निरगुण वेखे इक्क भगवान, दूसर नज़र कोए ना पाइंदा। गोबिन्द सूरबीर बलवान, खड़ग खण्डा तेज़ कृपान, चण्ड प्रचण्डा ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब कुरलाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि चरन कँवल करन सर्ब ध्यान, नाता तोड़ माण अभिमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचा राह आप जणाइंदा। साचा राह सच महल्ला, सति पुरख निरँजण आप समझाईआ। कलयुग अन्तिम रहे अटल्ला, अटल्ल पदवी दए जणाईआ।

सच सिँघासण हरि जू मल्ला, निरगुण बैठा आसण लाईआ। भगत भगवान फड़ाए पल्ला, फड़या पल्लू छुट्ट ना जाईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। सच संदेश एका घल्ला, दो जहान करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाईआ। साची धारा पुरख अकाल, तेरी सब नूं भाईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, काल महांकाल तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त सुणयां मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा रूप वटाईआ। भगत भगवन्त लए भाल, लख चुरासी फोल फुलाईआ। नाता तोड़े शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जिस दी घालण आए घाल, सो ख़ालक लोकमात फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम बणे दलाल, जगत दलाली इक्क कराईआ। हक़ीक़त वेखे हक़ हलाल, छुरी चलाए ना जगत कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा ल्या सुण, हरि जू हरि हरि आप सुणाया। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, बेअन्त तेरी वड्याआ। लख चुरासी छाण पुण, हरिजन साचे लएं तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाया। दर घर साचा सोभनीक, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे जस गाईआ। तेरा दिसे ना कोए शरीक, लाशरीक तेरी रुशनाईआ। चौदां तबक मेटणहार तारीक, अन्ध अन्धेर दएं गंवाईआ। सदी चौधवीं वेखे ठीक, ठीकर सब दा भन्न वखाईआ। पीर पैग़म्बर तेरे दर ते मंगदे रहे भीख, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। ईसा मूसा ख़ाली ख़ीस, नेत्र नैण नीर वहाईआ। उम्मत नबी भुल्ली हदीस, कलमा अमाम ना कोए सुणाईआ। तेरे दर ना झुकया सीस, साचा सजदा ना कोए वखाईआ। मक्का काअबा जूठा झूठा पीसण ल्या पीस, काया हुज़रे सच महिराबे चढ़ दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्त मिले तेरी सरनाईआ। सच सरनाई देवे दस्स, नर हरि आप जणाइंदा। हाढ़ सतारां होए इकट्ठ, सत्तर बहत्तर चुहत्तर मेल मिलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां आउणा नट्ठ, राह मार्ग इक्क जणाइंदा। अग्गे मिले पुरख समरथ, समरथ आपणा खेल कराइंदा। लहिणा देणा चुकाए सब दा सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चुमारा नाल रलाइंदा। दो जहानां एका डोरी देवे घत्त, बन्धन बंध ना कोए तुड़ाइंदा। भगत भगवन्त मिल मिल गायण जस, जस भगतां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल लैणा जाण, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। प्रगट होए श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाईआ। लेखा जाणे चार जुग जगत निशान, पूरब वेखे थाउँ थाईंआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वखाए इक्क मकान, दूजा मकबरा ना कोए बणाईआ। पंडत पांधे मुलां शेख़ ग्रन्थी पन्थी होण हैरान, हरि हरि की खेल रचाईआ। सर्ब जीआं

देवे इक्को ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। पशू पंखी पंछी तरवर सरवर सारे गाण, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। आदि जुगादि सदा सदा करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त करे कुरबान, लख चुरासी करबला रूप वखाईआ। सतिजुग सच करे प्रधान, सच सच मिले वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रिख मुन सारे गाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सतिजुग झुल्ले सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे दान जीव जहान, जीवण जुगत इक्क जणाईआ। घर सखीआं मिले आपे काहन, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण रूप वटाईआ। सीता सुरती मेला सीआ राम, घट घट रमिआ राम फेरा पाईआ। ईसा मूसा दए पैग़ाम, हज़ारा दरूद करे पढ़ाईआ। इस्म आज़म इक्क निशान, एका नूर दए दरसाईआ। मुहम्मद एका अल्फ़ करे परवान, उल्फ़त होर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर दए वखाईआ। एका अक्खर नाम सति, सतिगुर नानक नाम दृढ़ाया। आत्म परमात्म ब्रह्म मति, तत्त तत्त नाल मिलाया। जीव जंत बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत्त, रत्ती रत दए सुकाया। इक्क जणाए साची गाथ, गाथा एका एक पढ़ाया। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणी गोद उठाया। लहिणा देणा वेखे मस्तक माथ, कौस्तक मणीआ पर्दा दए चुकाया। जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, पिछला घाटा पूर कराया। अग्गे नेड़े दस्से वाट, लख चुरासी पन्ध मुकाया। गोबिन्द गुर वखाए साची खाट, आत्म सेजा इक्क सुहाया। निर्मल जोत जगे ललाट, नूर नुराना डगमगाया। बज़र कपाटी जाए पाट, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया। अन्तिम मिटे अन्धेरी रात, साचा चन्द दए चमकाया। इक्क बंधाए चरन नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाया। वेले अन्तिम पुच्छे वात, निरगुण सरगुण लए मिलाया। दरस दिखाए इक्क इकांत, अकल कल आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि इक्को नाम दए दृढ़ाया। इक्को नाम एका घर, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। लख चुरासी जिस घाड़न ल्या घड़, सो प्रभ वेखे चाँईं चाँईंआ। घर मन्दिर अंदर उच्चे टिल्ले जाए चढ़, सच सिँघासण आसण लाईआ। सुरती शब्दी लए फड़, आत्म परमात्म बन्न्हे लड़, ब्रह्म पारब्रह्म एका घर बहाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे सन्त दर्शन वेखण अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी आपणा दरस कराईआ। करे प्रकाश बहत्तर नड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी काया माटी दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच घर लडाए लड, पिता पूत बालक रूप सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई वखाए इक्को यद, विष्नूं बंस दए सुहाईआ।

२६८ १२

✳ २० जेठ २०१६ बिक्रमी फुंमण सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ✳

हरि सतिगुर सच्चा मेहरवान, सदा सहायक खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण जाणी जाण, जीव जंत जंत समाइंदा। लख चुरासी वेखे आण, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। भगत भगवान वखाए सच मकान, तन मन्दिर डेरा लाइंदा। बिरध बाल जवान देवे इक्को माण, वड्डा छोटा ना कोए रखाइंदा। मात पित बण श्री भगवान, छोटे बाले गोद उठाइंदा। सति सन्तोखी अमृत नाम, सच प्याला जाम प्याइंदा। आत्म परमात्म इक्को गान, गीत सुहागी आप सुणाइंदा। नाता तुट्टे मढ़ी पवण मसाण, मसला इक्को वार हल्ल कराइंदा। साचे सन्त अन्त ना कदे पछताण, पसचाताप ना कोए कराइंदा। सिदक सबूरी दस्से सच ईमान, इस्म आपणा आप वखाइंदा। इलम आलम उल्मा देवे इक्क निशान, अल्फ़ आरफ़ आप पढ़ाइंदा। एका अक्खर गुण निधान, वक्खर सब तों आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे खेल कराइंदा। एका अक्खर निरगुण रूप, राम रहीम आप प्रगटाईआ। आदि जुगादि वखाए सति सरूप, सच सच रिहा समाईआ। वसणहारा चारे कूट, घट घट आपणा डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण दए सच सबूत, नानक ढोला एका गाईआ। पिता पुरख अकाल शब्दी शब्द बणाए साचा सुत, अबिनाशी अचुत दया कमाईआ। भगत भगवान भगती सुहाए साची रुत्त, वार थित ना कोए रखाईआ। जगत विकारा मन हँकारा देवे कुठ, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सुरत सुआणी जाए उठ, उठ नेत्र नैण खुल्ल्हाईआ। सखीआं कोलों लए पुच्छ, मिल सखीआं मंगल गाईआ। कवण दुआरे मिले सुख, सुख सांतक सति दए कराईआ। उज्जल होए मात मुख, धरत धवल दए वड्याईआ। सफ़ल कराए मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाईआ। जन्म जन्म दी मिटे भुक्ख, आसा होर ना कोए वधाईआ। नाता तुट्टे मात गर्भ उलटा रुख, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप समझाईआ। साची सिक्खी साची मति, एका वार जणाईआ। सतिगुर पूरे चरन नत, नाता इक्क दृढ़ाईआ। कर किरपा जिस देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म लए जणाईआ। नाड़ नाड़ ना उब्बले रत्त, पंज तत्त ना कोए हल्काईआ। जगत विकारा आपणे खाते लए घत्त, डूँघा खाता हरि रखाईआ। सति सन्तोख धीरज शब्द ज्ञान देवे मत्त, मनमति दए दुरकाईआ। सच वणजारा खोल्ह्रे हट्ट, घर एका नाम विकाईआ। चरन सरोवर तीर्थ तट, तट किनारा दए वखाईआ। इक्क चढ़ाए साचे रथ, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। वेखणहारा साढे तिन्न हथ्थ, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। आदि जुगादि सर्ब कला समरथ, सो पुरख निरँजण वड्डा शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग मार्ग रिहा दस्स, दस्स दस्स मार्ग आप समझाईआ। त्रैगुण माया विच ना जाणा फस,

पंचम बन्धन ना कोए रखाईआ। प्रभ मिलण दी रखणी आस, एका आसा दए जणाईआ। जन्म जन्म दी मेटे प्यास, अमृत जाम इक्क प्याईआ। आवण जावण लख चुरासी करे बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। सन्त सुहेला सदा वसे पास, इक्क इकेला सच्चा माहीआ। मिल मिल सखी गोपी काहन पाए रास, मंडल मण्डप नाच नचाईआ। ढोला सोहला गाए शाहो शाबाश, रागी अनरागी आपणा राग अलाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रिहा समाईआ। आदि जुगादि ना होए नास, अबिनाशी आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क जणाईआ। सच संदेशा सज्जण मीत, मित्र प्यारा इक्क जणाइंदा। आदि जुगादी अचरज रीत, भेव अभेद आप छुपाइंदा। वसणहारा धाम अनडीठ, अतीत आपणी कल प्रगटाइंदा। हरिजन बख़्शे सच प्रीत, प्रीतीवान वेख वखाइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, नित नवित आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग आपणा रूप वटाइंदा। कलयुग रूप दीन दयाल, दयानिध आप वटाईआ। गुरमुख वेखे बाल अञ्याण, बाली बुध्ध लेखे लाईआ। फड़ बणाए चतुर सुजाण, सुघड़ देवे आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आप चलाईआ। साचा मार्ग इक्को हरि, हरि जू गुर अवतारां आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर सजदा रहे कर, निउँ निउँ
२६९ सीस सर्ब झुकाइंदा। कलमा अमाम रहे पढ़, इलाही कलाम आप जणाइंदा। निरगुण निरवैर चुकाए डर, डर आपणा इक्क २६९
समझाइंदा। भगत भगवन्त लए फड़, फड़ बाहों आप उठाइंदा। कलयुग अन्तिम किरपा कर, कर किरपा मेल मिलाइंदा।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी दया कमाइंदा। हरिजन वेखे हरि निरँकार, हरी हरि आपणी खेल कराईआ। लेखा जाणे अंदर बाहर, डूँघी भँवर रिहा समाईआ। काया कवरी खोल्ह किवाड़, कुण्डा आपणा देवे लाहीआ। देवणहारा दरस दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। माण वड़याई एका हथ्थ, हथ्थ नज़र किसे ना आइंदा। सृष्ट सबाई गाए गथ, रसना जिह्वा नाल रलाइंदा। नज़र ना आए पुरख समरथ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। हरिजन विरला नेत्र पेख पेख गाए जस, हाल मुरीदां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हिरदे अंदर आपे वस, हसरत हरिजन आप मिटाइंदा। मिटाए हसरत देवे दरस, दरस आपणा आप कराईआ। बाल बाले कर कर तरस, रहिमत आपणी आप कमाईआ। माणस जन्म ना होवे हरज़, हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। गुरसिख तैनूं कोई ना सके वर्ज, साक सज्जण सैण झूठा बन्धन रहे पाईआ। सतिगुर पूरा जुग जुग जन भगतां लाहवण आया कर्ज़, पिछला कर्ज़ा मूल चुकाईआ। अग्गे होण ना देवे कोई हरज़, झूठी हरक्त

दए मिटाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार जिस जन चरन कीती अर्ज़, आरज़ू आपणी झोली पाईआ। गुरमुख बाल सुघड़ सुजान, पुरख नार बणाए आप मरद, मर्द मर्दाना एका रंग चढ़ाईआ। लख चुरासी पुठी होई नरद, गुरमुख खेल सार पाश आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन हरि की गोद सुहाईआ। भैरों कुरलावे कूक पुकार, कूक कूक सुणाईआ। मन्दिर मिले ना कोए दुआर, दुआरका रूप नज़र कोए ना आईआ। जगत संधूर होया खुआर, सच ललाट ना कोए रुशनाईआ। मैं वेख्या नेत्र नैण उग्घाड़, चार कुण्ट नैण उठाईआ। इक्को बाला बाले कर प्यार, बली आपणी दए जणाईआ। पूरब लहिणा नाल निरँकार, भगतां भगती सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। छोटा बाला बाल अजाण, जन्म चौथे वेस वटाईआ। सन्त धूढ़ी मिल्या दान, मस्तक टिक्का लाईआ। हरि सन्त देवे इक्क ज्ञान, बिन हरि अन्त ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। पिछला लेखा हँस राज, चौथे जन्म मुकाईआ। चौथे जन्म भैरों मन्नदा रिहा गुरू महाराज, नित उठ उठ तिलक लगाईआ। अन्त ना सौरया माणस जन्म काज, लख चुरासी ना कोए कटाईआ। साचे सन्त दिता दाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। होती मर्दान मार आवाज़, सिँघ कर्म गया सुणाईआ। तेरी सतिगुर रखे लाज, जिस हथ्थ मेरी वड्याईआ। ठाकर कहे कवण समाज, सच समाज दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच समझाईआ। हँस राज सुणी बात, सन्त सज्जण आप जणाईआ। भैरों अन्त ना देवे साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। राज हँस आया भैरों पास, दोए जोड़ रिहा सुणाईआ। मैं सुण के आया इक्को बात, तेरा नाता अन्त निभण ना पाईआ। बिन हरिभगत कोए ना पुच्छे वात, पाहन पत्थर रहे कुरलाईआ। भैरों कहे मैं तेरा दास, जिस सिख्या सच समझाईआ। प्रभ मिलण दी मैं वी रखी आस, कवण वेले लए मिलाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा खेल तमाश, लहिणा लहिणा लहिणा घर घर झोली पाईआ। चौथे जुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथा जन्म आपणे लेखे लाईआ। चौथा जन्म छोटा बाला, लोकमात माणस रूप वटाइंदा। उपर चढ़या बिरछ डाला, इच्छया आपणी आप प्रगटाइंदा। भैरों फिरे होए कंगाला, कंगाली मात ना दूर कोए कराइंदा। इक्क दूजे नूं पुच्छण हाला, अंदरे अंदर राग अल्हाइंदा। कवण बिध मिले गुर गोपाला, आप आपणी गोद बहाइंदा। साचा मार्ग इक्क सुखाला, अनुभव दृष्टी आप जणाइंदा। लेखे लग्गे छोटा बाला, बाल तेरा बन्धन तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। छोटा बाला लेखे

गया लग्ग, भैरों आपणी खुशी मनाईआ। अन्त मिले सूरा सरबग, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अग्नी बुझाए अग्ग, तत्ती वा ना लागे राईआ। एका बन्ने साचा तग, ना कोई सके तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां विचोला आपणा भेव जणाईआ। दोहां विचोला श्री भगवान, हरि हरि जू दया कमाइंदा। निक्का बाला कर परवान, पिछला लहिणा झोली पाइंदा। नाता तुट्टे पवण मसाण, दीन दयाल आपणे रंग रंगाइंदा। चरन कँवल मिले इक्क अस्थान, धाम भूमका सच सुहाइंदा। माता पिता ना होए हैरान, हरि जू आपणी गोद बहाइंदा। लिख्या लेख रहे जगत निशान, सब निशाना ना कोए मिटाइंदा। मर मर जम्मे कोटन वार जीव जहान, बिन सतिगुर पूरे अन्त लेखे कोए ना पाइंदा। जिस बेनन्ती सुणे आप भगवान, तिस सुगंधी साची आप महकाइंदा। पिता पुत्तर इक्क निशान, वासना जगत ना कोए वधाइंदा। घर बैठयां तैनूं दर्शन देवे आण, बण दर्दी दर्द वंडाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी फंद कटाइंदा।

✳ २० जेठ २०१६ बिक्रमी प्रताप सिँघ पिण्ड दड़ जम्मू ✳

२७१ आदि पुरख हरि खेल कराउणा, सो पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। हरि पुरख निरँजण मार्ग लाउणा, एकँकारा वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरँजण दीपक जगाउणा, अबिनाशी करता हथ्थ रखाईआ। श्री भगवान सच निशान झुलाउणा, पारब्रह्म प्रभ सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाउणा, रूप अनूप आप दरसाईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहाउणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। तख्त निवासी आसण लाउणा, शाह पातशाह शहिनशाह साचे तख्त आप सुहाईआ। धरत धवल मात वडिआउणा, धरनी आपणी बूझ बुझाईआ। चार जुग दा पन्ध मुकाउणा, लेखा लेखे दए लगाईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाउणा, सच संदेशा दए अलाईआ। राज राजान शाह पातशाह वड सुल्तान आप अख्वाउणा, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। सच दरबारा इक्क वखाउणा, घर ठांडे वज्जे वधाईआ। सुत दुलारा इक्क उठाउणा, शब्दी शब्द लए समझाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाउणा, गगन पतालां फेरा पाईआ। ज़िमीं असमानां नैण खुल्हाउणा, समुंद सागर खोजे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ। साची कार करे करतारा, लोकमात वेस वटाईआ। इक्क बणाए सच दुआरा, सचखण्ड साचा नाउँ रखाईआ। दीवा बाती कमलापाती कर उज्यारा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल करे रुशनाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब परवरदिगारा, खेले खेल दो जहान श्री भगवान रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी वेखणहारा मार ध्यान, अक्ख प्रतख आप खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहार

ज्ञान, बोध अगाधा आपणा पर्दा आप चुकाईआ। त्रैगुण रखणहारा माण, पंज तत्त देवणहारा दान, दाता दानी आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतारां देवणहारा नाम निधान, खेले खेल दो जहान, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, परम पुरख वड्ड मेहरवान, निरगुण जोत जोती जाता पुरख बिधाता, आपणा भेव आप चुकाईआ। सति सतिवादी सति निशान आप उठाए नौजवान, लोकमात रिहा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। सच दुआरा हरि सुहाउणा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। साचे मन्दिर अंदर बह बह आसण लाउणा, आसण सिँघासण इक्क वड्याईआ। सच संदेश इक्क अलाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कराईआ। साची कार करे नरायण, नर हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादि गुर अवतार जिस दी महिमा रसना कहिण, कह कह सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब दयाल ठाकर स्वामी भगत पेखे आपणे नैण, लोचण आपणा आप खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चुकाए लहण देण, देवणहारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क वड्याईआ। साचा मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। लोकमात बणाए साची बणत, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। महिमा जणाए इक्क अगणत, चार वरन पन्ध मुकाइंदा। एका रूप वखाए साचे सन्त, दूई द्वैती रोग मिटाइंदा। लेखा जाणे भगत भगवन्त, भगवन आपणा रंग चढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नेत्र खोल्ह वेखण अन्त, हरि जू आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेद अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेद हरि आप जणाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। लोकमात सच निशान झुलाउणा, दो जहानां वाली सेव कमाइंदा। साचे मन्दिर आसण लाउणा, सच सिंघासण सोभा पाइंदा। गुर अवतारां दर मंगाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव उठाइंदा। वेद पुराण वेख वखाउणा, शास्त्र सिमरत नाल रलाइंदा। गीता ज्ञान पर्दा लौहणा, अञ्जील कुराना फोल फुलाइंदा। खाणी बाणी वेख वखाउणा, वेखणहार नज़र किसे ना आइंदा। नौ नौ चार पन्ध आप मुकाउणा, आगे पाँधी नज़र कोई ना आइंदा। सृष्ट सबाई साचा ढोला आत्म परमात्म सुहागी छन्द इक्क सुणाउणा, रसना जिह्वा गीत अल्हाइंदा। आत्म परमात्म लेखा बत्ती दन्द गाउणा, गा गा आपणा खेल वखाइंदा। दूई द्वैती भाण्डा भरम भनाउणा, माया ममता मोह मिटाइंदा। हउँमे हंगता जूठ झूठ बाहर कढाउणा, सच सुच आप दृढ़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी एका इष्ट गुरदेव आप अख्वाउणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आप समझाइंदा। जल्वा नूर इक्क धराउणा, नूर इलाही वेस वटाइंदा। पीर पैग़म्बर मुलां शेख़ मुसायक आप पड़्हौणा, कलमा नबी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप समझाइंदा। साचा मार्ग

लग्गे मात, मातर भूमी दए वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणे इक्क जमात, एका जुज़ दए वखाईआ। एका अक्खर एका गाथ, एका नाम करे पढ़ाईआ। एका सतिगुर पुरख समराथ, दूजी ओट ना कोए वखाईआ। एका पती कमलापात, कँवल नैण इक्क अख्वाईआ। एका जुग जुग पुच्छे वात, गुर अवतार सेव लगाईआ। एका पीर पैग़म्बर देवे दात, साची वस्त आप वरताईआ। इक्क बंधाए साचा नात, चरन कँवल वडी सरनाईआ। एका मेटे अन्धेरी रात, जुग जुग लहिणा लहिणा वेख वखाईआ। एका लेखा जाणे कायनात, एका सृष्ट सबाई रिहा समाईआ। एका बैठा रहे इकांत, सचखण्ड आसण लाईआ। एका वेस वटाए बहु बिध भांत, भेव अभेद ना किसे जणाईआ। एका कलयुग अन्तिम जन भगतां पुच्छे वात, जुग जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। निरगुण निरगुण बणे सज्जण साक, सरगुण बंधप रूप वखाईआ। पार किनारे लाए घाट, तट किनारा इक्क जणाईआ। हरिजन मेटे पिछली वाट, पूरब लेखा दए चुकाईआ। अग्गे खेल करे पुरख समराथ, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जगत वासना पाए नथ्थ, मनुआ उठ ना दहि दिस धाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। अमृत आत्म बुझाए प्यास, तृष्ना जगत रहे ना राईआ। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। घर मन्दिर पावे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। साची वस्त सद रखे पास, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जन भगतां करे बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। नाता तुट्टे दस दस मास, उलटा रुख ना फेर लटकाईआ। गुरमुख तेरी सुणे सदा अरदास, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो शाहो शाबाश, शख्सीअत वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन होए ना कोए उदास, स्वच्छ सरूपी दरस दखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप लगाईआ। साचा मार्ग मात लगाउणा, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। पिछला लेखा झोली पाउणा, आपणे खाते आप रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर बहाउणा, चरन सरन इक्क समझाइंदा। सब ने ढोला मिल के गाउणा, श्री भगवान आप अलाइंदा। दीन मज़्ब शरअ शरीअत पन्ध चुकाउणा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। एका नूर नज़री आउणा, जोती जाता डगमगाइंदा। एका नाद तूर सुणाउणा, तुरीया राग आप अलाइंदा। एका घट घट अंदर डेरा लाउणा, निज घर आपणी ताड़ी लाइंदा। एका ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाउणा, वेखणहारा आपणी दया कमाइंदा। एका मन्दिर डूँघी कंदर, घर विच घर आप बणाउणा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। इट्ट गारा कोए ना लाउणा, बाढी बणत ना कोए बणाइंदा। बिन तेल बाती दीपक आप जगाउणा, हवन घ्रित ना कोए पाइंदा। पवण सुगंधी विच रखाउणा, जगत धूप ना कोए वखाइंदा। अनहद नादी नाद वजाउणा, घर घर विच राग सुणाइंदा। विस्मादी

विस्माद हो हो खेल कराउणा, ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजाइंदा। साचा मार्ग इक्क समझाउणा, सृष्ट सबाई एका राह चलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी नाम निधाना अक्खर इक्क पढ़ाउणा, चौदां विद्या मोह मिटाइंदा। चौदां लोकां फेरा पाउणा, चौदां तबक आप उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पर्दा लौहणा, इष्ट एका नज़री आइंदा। सच संदेश नर नरेश दो जहान श्री भगवान, कलयुग अन्तिम आप सुणाउणा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप चलाइंदा। साचा मार्ग चले जग, जग जीवण दाता आप चलाईआ। प्रगट हो सूरा सरबंग, साख्यात खेल कराईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, काग हँस रूप वटाईआ। जगत तृष्ना बुझाए अग्ग, अमृत आत्म जाम प्याईआ। दर्शन देवे उपर शाह रग, शहिनशाह हथ्थ वड्याईआ। घर दीपक जोती जाए जग, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अनहद सुणाए साचा नद, छत्ती राग भेव ना आईआ। घर घर हरि जू रिहा सद्द, सद्दा देवे थाउँ थाईंआ। पार किनारे नौ करो हद्द, नौ दर खोजो बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म होई अड्ड, अन्तिम मेला दए मिलाईआ। वेखणहारा काया कवरी डूँग्घी भँवरी खड्ड, निरगुण सरगुण अंदर वड़ वड़ वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। साचा मार्ग हरि का गीत, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। सतिजुग चले साची रीत, एका इष्ट हरि जणाइंदा। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, एका मन्दिर सोभा पाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आए इक्क अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच एका घर बहाइंदा। चरन कँवल बंधाए सच प्रीत, दूसर दर सीस ना कोए झुकाइंदा। काया करे ठंडी सीत, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावण फेरा पाइंदा। सदी चौधवीं जाए बीत, चौदां तबक सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग इक्क प्रगटाइंदा। साचा मार्ग साहिब सुल्तान, सति सतिवादी सति लगाईआ। एका पूजा रहे श्री भगवान, दूसर देव ना कोए मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, सुरपति इन्द करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। तेई अवतार करन परवान, भगत अठारां खुशी मनाईआ। ईसा मूसा करन सलाम, मुहम्मद सजदा सीस झुकाईआ। नानक निरगुण कहे सति नाम, तेरा भाणा सच रजाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल सृष्ट सबाई देवे दान, देवणहार इक्क अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम होए प्रधान, वड प्रधानगी आप कमाईआ। लेखा जाणे दो जहान, लख चुरासी दए समझाईआ। नाउँ रख विच जहान, निहकलंका मिले वड्याईआ। सम्बल वसे धाम मुकाम, सच सिँघासण आसण लाईआ। नाम खण्डा तेज़ कृपान, ब्रह्मण्डां लए चमकाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे आण, सतिजुग साचा राह चलाईआ।

नौ खण्ड पृथ्मी जीव जंत साध सन्त पुरख अकाल एका गाण, एका हरि जू नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर निर्मल जोत, नूर नुराना डगमगाइंदा। ना कोई किला ना कोई कोट, चार दीवार ना कोए रखाइंदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, बरन अंग ना कोए लगाइंदा। एका आपणा नाउँ सुणाए सच सरोत, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। आदि जुगादि सतिगुर पूरा इक्को बहुत, गुर गुर आपणी दया कमाइंदा। लख चुरासी काया अन्तर कढ्ढे खोट, सच सुच आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आत्म परमात्म नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म, बेअन्त खेल कराईआ। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता रोग ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ा ठीकर देवे भन्न, काची माटी रहिण ना पाईआ। सतिजुग चढ़ाए साचा चन्न, सति सति करे रुशनाईआ। भगत भगवान बेड़ा देवे बन्न्ह, बण खेवट खेट सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। एका राग सुणाए कन्न, सोहँ अक्खर ढोला गाईआ। लेखा जाणे जननी जन, दाई दाया सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, साचा राह सति सति आप चलाईआ।

२७५

१२

✳ २० जेठ २०१६ बिक्रमी बाज सिँघ दे गृह पिण्ड मद्दू जम्मू ✳

सो पुरख निरँजण साची कार, हरि करता आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। एकँकारा कर पसार, निरगुण धार आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यार, जल्वा नूर आप दरसाइंदा। अबिनाशी करता वेखणहार, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। श्री भगवान खेल करे अपार, अलख अगोचर भेव कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, निरगुण आपणा संग निभाइंदा। सचखण्ड दवारा कर त्यार, सति सतिवादी आसण लाइंदा। दीआ बाती इक्क अपार, कमलापाती आप जगाइंदा। साची खाटी कर त्यार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, राज राजान एका सेव कमाइंदा। दर दरवेश बण भिखार, सीस जगदीश आप झुकाइंदा। आपे जाणे आपणी कार, करनी करता आप कराइंदा। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया आप प्रगटाइंदा। जोती जाता खेल अपार, पुरख बिधाता आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल श्री भगवन्त, हरि जू हरि हरि आप वरताईआ। करे खेल बेअन्त बेअन्त, बेअन्त वड वड्याईआ। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लिख लिख ना कोए समझाईआ। आपे बण बण नार कन्त, सेज

सुहञ्जणी आप हंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल आदि जुगादि, जुग करता आप कराइंदा। निरगुण नूर रहे विस्माद, बिस्मिल आपणी धार चलाइंदा। देवणहारा साची दाद, नाम अमोलक आप वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आपे काढ, जन जननी आप अख्वाइंदा। त्रैगुण अतीता लडाए लाड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। भेव चुकाए सचखण्ड निवासी दूसर संग ना कोए रखाईआ। एका नूर जोत प्रकाशी, नूर नुराना डगमगाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साचे मंडल पावे रासी, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवक बणाए दासन दासी, साची सेवा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराईआ। करनी करता हरि करतारा, आपणी खेल कराइंदा। त्रैगुण तत्त भर भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। पंज तत्त तत्त अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप कराइंदा। लख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। लख चुरासी जगत निशान, धरत धवल दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेखे आण, घर घर मेला सहिज सुभाईआ। सच संदेशा देवे आण, अक्खर निषअक्खर करे पढ़ाईआ। ब्रह्मा वेता कर परवान, ब्रह्म विद्या इक्क जणाईआ। चारे वेदां खोल्ह दुकान, चारे जुग हट्ट चलाईआ। चारे कुण्ट खेल महान, चार वरन दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाईआ। साची धार निरगुण सरगुण, हरि जू हरि हरि आप चलाइंदा। आत्म परमात्म इक्क सुणाए साची धुन, धुन अनादी आप जणाइंदा। लख चुरासी छाण पुण, गुर गुर आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करनेहारा, एका एक एक अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात वेस वटाईआ। जीवां जंतां दए सहारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर दए वड्याईआ। एका नूर इक्क पसारा, पुरख अगम्म एका नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करतार, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। गुर अवतार सेवादार, पीर पैग़म्बर नाल रलाइंदा। भगत भगवन्त दे दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। साचे सन्त कर प्यार, सतिगुर आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरमुखां काया खोल्ह बन्द किवाड़, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। हरिजन मेल मिलाए चरन दुआर, चरन सरन

इक्क रखाइंदा। गुरमुख फड़ फड़ बेड़ा करे पार, गुर गुर आपणी गोद बहाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग आउँदा रिहा विच संसार, सरगुण आपणा राग अलाइंदा। एका चौकड़ वंड करे अपार, तेई अवतारां करे प्यार, भगत अठारां दए आधार, ईसा मूसा मुहम्मद खोल्ह किवाड़, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। नानक गोबिन्द निरगुण नूर कर उज्यार, मेल मिलाए सच दुआर, दर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। वेद शास्त्र लए उच्चार, सिमरत वेखे आपणी वार, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। पुराण अठारां दे आधार, अञ्जील कुरान करे उज्यार, कलमा कलाम नूर इलाही आप समझाइंदा। खाणी बाणी वणज वपार, सुरती शब्दी नाता कन्त भतार, पुरख बिधाता आपणे रंग रंगाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वेखे वारो वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग चौकड़ी बीते कोट, कोटन कोटि रूप वटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त लोकमात शब्द नगारे ला के गए चोट, चोटी चढ़ चढ़ ध्यान लगाईआ। जीव जंत आत्म कढ्ढे ना कोए खोट, आसा तृष्ना लोभ मोह हँकार ना कोए तजाईआ। नाता जुड़या वरन गोत, शरअ शरीअत गल्ल विच पाई फाहीआ। किसे नज़र ना आए निरगुण जोत, पारब्रह्म प्रभ बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी हरि जू वेख, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। मेटणहारा सब दी रेख, आपणी रेख ना किसे वखाइंदा। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, थिर घर आपणा रूप प्रगटाइंदा। लोकमात खेडां लए खेड, रामा कृष्ना नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करे करतार, करनी करता आप अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वार, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, निहकलंका आपणा नाउँ रखाईआ। साचा डंका अगम्म अपार, दो जहानां दए सुणाईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मण्डां खण्डां दए जगाईआ। साचे तख़्त बैठ सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा बल धराईआ। सच संदेशा देवे एका वार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। लोकमात करे सच विहार, वड बिवहारी बेपरवाहीआ। विष्नूं आउणा चल दुआर, दर दरवाज़ा रिहा खुल्हाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म करे प्यार, पारब्रह्म वड वड्याईआ। शंकर तेरा वेखे बाशक तशका हार, हथ्थ त्रसूल कवण सुहाईआ। सुरपति तेरा लहिणा देणा कर्ज़ दए उतार, करोड़ तेतीसा नाल मिलाईआ। गुर अवतार कर विचार, पूरब लेखा दए समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खोल्ह किवाड़, मक्का काअबा एका नूर दए जणाईआ। एका जोती दस अवतार, गुर गुर आपणा हुक्म मनाईआ। कढ्ढे करे आप करतार, थित वार दए समझाईआ। बिन ढाएओं ढढ्ढे अन्तिम वार, बल आपणा हीण वखाईआ। सद्दे दिते दर दरबार, बेहद्द

आपणी हद्द पार कराईआ। विष्नूं वेखे साची यद्द, बंस सरबंस कवण सुहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच्चों कढ्ढ, ब्रह्म वेखे सर्ब लोकाईआ। शंकर लेखा दए ना छड्ड, जो घड़या भन्न वखाईआ। अवतार रसना कहिण साचे पारब्रह्म तेरी वडी वड वड्याईआ। गुर गुर मानण साचा अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। भगत भगवान गावण बत्ती दन्द, रसना जिह्वा नाल हिलाईआ। वसणहारा सर्ब ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड आपणी जोत करे रुशनाईआ। वेखणहारा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहीआ। जुग चौकड़ी देवणहारा दंड, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे भेख पखण्ड, नौ दर खोजे चाँईं चाँईंआ। लख चुरासी नार दुहागण होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साची खेल करे समरथ, समरथ पुरख बेपरवाहया। राम राम ना गाए कोए गथ, हिरदे राम ना कोए वसाया। कूड़ी क्रिया घर घर रही नट्ठ, सच सुच बैठी मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। राम कहे ना मिल्या राम, राम गत किसे ना पाईआ। हिरदे हरि ना करे बिसराम, आत्म सेज ना कोए हंढाईआ। काया वसे खेड़ा नगर ना ग्राम, घर मन्दिर ना कोए वधाईआ। आसा तृष्ना लोभ मोह हँकार होण काम, काम कामनी दए दुहाईआ। अमृत रस पीए ना कोई जाम, मदिरा दर दर रही कुरलाईआ। निरगुण जोत जगे ना कोई भान, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। नज़र आए ना किसे घनईया शाम, नाम बंसरी ना कोए वजाईआ। कँवल नैण ना दए पैग़ाम, सच संदेश ना कोए सुणाईआ। सृष्ट सबाई होई बेईमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, कलयुग अन्त अन्त कराइंदा। वेखणहार सर्ब संसारा, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी हाहाकारा, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। ऊँच नीच राउ रंक होण खुआरा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। हरि का नाम ना किसे प्यारा, सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा। सच वणज ना कोए वणजारा, साचा हट्ट ना कोए खुल्हाइंदा। चौदां लोक धूंआँधारा, सति ज्ञान ना कोए प्रगटाइंदा। चौदां तबक मारन नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। एका भुलया परवरदिगारा, सही सलामत नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचे तख्त आपे चढ़, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा अन्तिम कल, हरि जू हरि हरि आप घलाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा रिहा वल छल, गुर अवतार आपणी सेव लगाईआ। बैठा रिहा धाम अटल्ल, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। जोती शब्दी रिहा रल, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। पावणहारा सार जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम हरि जू आ, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। वेद व्यासा लेखा पूरा दए करा, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा आपणा रंग रंगाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया दए गवा, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। मूसा मंगी मंग परवरदिगार मेरा आए खुदा, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाइंदा। मुहम्मद कहे अमाम अमामां सिर फेरा जाए पा, दिशा लहिंदी वंड वंडाइंदा। नानक निरगुण सीस रिहा झुका, महांबली राह तकाइंदा। गोबिन्द लेखा लिख लिख गया समझा, सृष्ट सबाई आप अल्लाइंदा। कल कल्की आवे बण बेपरवाह, सम्बल आपणा असण लाइंदा। चार जुग दा लहिणा दए मुका, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान वेख वखाइंदा। चार वरन डेरा देवे ढाह, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। राज राजानां देवे ख़ाक मिला, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। सृष्ट सबाई एका मन्त्र नाम दए पढ़ा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। चतुर्भुज रूप वटा, आदि शक्ति नूर वखाइंदा। साची किरपा करे आप मेहरवां, मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाइंदा। सच दुआरा लोकमात, हरि जू अन्त अन्त सुहाईआ। चार वरन देवे इक्को दात, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म साची गाथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। मेल मिलाए त्रिलोकी नाथ, अनाथ अनाथां होए सहाईआ। दरस दिखाए राम रामा बेटा दसराथ, घर घर आपणा रूप जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद मेला पाकी पाक, पतित पुनीत दए कराईआ। नानक वखाए साची खाट, आत्म सेजा आप सुहाईआ। गोबिन्द मेटे दूई वाट, द्वैती कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। जन भगतां पुच्छे हरि जू वात, भगत भगवान लए मिलाईआ। इक्को देवे साची गाथ, साचा सोहला आप सुणाईआ। चौदां लोक वखाए एका हाट, एका वणज नाम कराईआ। अठसठ तीर्थ वेखे ताट, तट किनारा इक्क दृढ़ाईआ। एका रसना एका जिह्वा एका पूजा एका पाठ, गुर इष्ट देव इक्क दरसाईआ। एका सेजा एका बस्त्र एका खाट, एका आसण सिंघासण दए प्रगटाईआ। एका जोत इक्क ललाट, एका मेटे अन्तिम वाट, बण पाँधी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग इक्क लगाईआ। साचा मार्ग श्री भगवन्त, कलयुग अन्त अन्त लगाइंदा। हरिजन वेखे साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाइंदा। सुरती शब्दी मेला नारी कन्त, कन्त कन्तूहल खुशी वखाइंदा। ज़ात पात वरन गोत गढ़ तुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए साची संगत, सगला संग आप निभाइंदा। काया चोली चाढ़े रंगत, रंग मजीठी आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा जेरज अंडज, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे हुक्म वखाइंदा। हुक्मे अंदर चार खाणी, ख़ाकी ख़ाक वखाइंदा। हुक्मे अंदर

अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर चलाइंदा। हुक्मे अंदर अठसठ तीर्थ पाणी, सर सरोवर रूप वटाइंदा। हुक्मे अंदर अकथ कहाणी, गुर अवतार सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर देवे पद निरबाणी, परम पुरख दया कमाइंदा। हुक्मे अंदर मेला भगत भगवानी, भगवन आपणा रंग वखाइंदा। हुक्मे अंदर चरन धूढ़ मिले अशनानी, दुरमति मैल धुवाइंदा। हुक्मे अंदर गोपी काहनी, साचे मंडल रास रचाइंदा। हुक्मे अंदर सीता राम राजा राणी, तख्त निवासी तख्त सुहाइंदा। हुक्मे अंदर ईसा मूसा मुहम्मद खेल कराए अल्ला राणी, आलमीन इलाही नूर इक्क प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर नानक गोबिन्द दस दस गए निशानी, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। हुक्मे अंदर वेद शास्त्र सिमरत पुराण पुराणी, दाता दानी आप वरताइंदा। कलयुग अन्तिम करे खेल नौजवानी, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। प्रगट होए लासानी, लाशरीक नज़र ना आइंदा। आत्म परमात्म पढ़े बाणी, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तीर निराला बिरहों मारे कानी, कायनात आप हिलाइंदा। सर्ब जीआं घट जाण जाणी, जानणहारा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साची धार वखाइंदा। सतिजुग साची धार पुरख समरथ, श्री भगवान आप जणाईआ। सृष्ट सबाई एका गाथ, एका मन्त्र दए समझाईआ। इक्क चढ़ाए साचे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। एका तीर्थ एका ताट, तट किनारा इक्क वखाईआ। एका मन्दिर एका मस्जिद एका माठ, गुरुदुआरा इक्क वड्याईआ। एका पूजा एका पाठ, एका रसना जिह्वा गुण सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी साचा मार्ग इक्क प्रगटाईआ। साचा मार्ग हरि जू लाउणा, सतिजुग साचे दए वड्याईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी लेख चुकाउणा, लेखा अन्त अन्त चुकाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, ग़रीब निमाणयां लए उठाईआ। साचा ढोला सोहँ बोला आत्म परमात्म सब ने गाउणा, घर घर वज्जे वधाईआ। पुरख पुरखोतम हरिजन मेल मिलाउणा, जोती जोत जोत समाईआ। काया किला कोट इक्क बणाउणा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। ठाकर स्वामी इक्क मनाउणा, सजदा सीस इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं लछमी एका रंग वखाइंदा। विष्नूं लछमी साचा रंग, बस्त्र भूशन आप रखाइंदा। छैल छबीला सेज पलँग, सति सतिवादी आप हंढाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी इक्क मृदंग, बण मृदंगा आप वजाइंदा। ब्रह्मा वेता खेवट खेटा साचा सुत सुहाए रुत्त, लोकमात धरनी धरत धवल वड्याइंदा। नारद वेखे उठ उठ, सुरस्ती कोलों रिहा पुच्छ, हरि जू वसे केहड़े गुठ, चारों कुण्ट नैण उठाइंदा। गुर अवतार जुग जुग आए गए लुक, अन्त आदि कोए ना चुक्के आपणी कुक्ख, गोदी गोद ना कोए सुहाइंदा। हरिजन वेखे आपणे पुत्त, पिता पूत दया कमाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी साहिब सुल्तान सति सतिवादी जाए तुठ्ठ, दीनन

२८० १२

आपणे रंग रंगाइंदा। कँवल नाभी अमृत जाम निझर झिरना देवे घुट, रस रसया रस चखाइंदा। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी जाए तुट, गेड़ा गेड़ ना कोए रखाइंदा। अन्त मिलाए निर्मल जोत, जोती जोत जोत समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी साची धारा आप प्रगटाइंदा। साची धार चलाए मात, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। शब्द अगम्म वड करामात, निहकर्मी आप प्रगटाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन इक्को देवे दात, इक्क भण्डारा दए भराईआ। इक्क दुआरा चरन बन्न्हाए साचा नात, श्री भगवान सच्ची सरनाईआ। दीन मज़्ह्ब ना रहे कोई ज़ात, वंडण वंड ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ फड़ रखे आपणे साथ, नेत्र नैणां दए वखाईआ। उठो वेखो नेत्र खोल्हो मारो झात, लोकमात चार कुण्ट पई लड़ाईआ। किसे नज़र ना आए रसूल पाक, राम राम ना बणया साचा साक, कृष्न काहन रूप ना कोए वखाईआ। नानक गोबिन्द नज़र ना आए किसे घाट, कलयुग जीव बेड़ा शौह दरयाए रहे रुड़्हाईआ। आपणी मुका ना सके कोई वाट, मुलां शेख़ मुसायक पीर पंडत पांधे थक्के मांदे ग्रन्थी पन्थी जीवां जंतां रहे समझाईआ। माणस जन्म आया घाट, घाटा पूर ना कोए कराईआ। अन्तिम धर्म राए दे पैणा खात, चित्रगुप्त लेखा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा कलयुग अन्तिम सृष्ट सबाई दए सुणाईआ। सृष्ट सबाई रिहा सुणा, हरि जू शब्दी डंक वजाइंदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, बेनक़ाब आपणा पर्दा आप उठाइंदा। कलयुग अन्त बणे मलाह, सतिजुग बेड़ा आप चलाइंदा। साचे भगतां लए उठा, भगवन आपणा भेव खुल्हाइंदा। स्वच्छ सरूपी दरस करा, रातीं सुत्तयां मेल मिलाइंदा। अनुभव दृष्टी दए खुल्हा, दृष्ट इष्ट आप हो जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहे सीस झुका, नेत्र नैण चरन कँवल ध्यान लगाइंदा। करे खेल सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाइंदा। साची धार विच संसार, सहिब सुल्तान आप चलाईआ। आत्म परमात्म देवे ज्ञान, पट्टी अवर ना कोए पढ़ाईआ। नेत्र खोल्हो वेखो मार ध्यान, हरि जू हरि घट रिहा समाईआ। घर घर वड़या पंज शैतान, शरअ आपणी रिहा जणाईआ। जो जन रसना जिह्वा सिमरे हरी हरि राम, राम रमइया होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीआं दा इक्को दाता, एका घर रिहा वखाईआ। एका घर एका मन्दिर, एका हरि जू आसण लाइंदा। एका वसे डूँग्घी कंदर, अन्ध अन्धेर इक्क चुकाइंदा। एका तोड़नहारा बज़र कपाटी जंदर, आकाश प्रकाश इक्क वखाइंदा। एका फड़नहारा मन मनुआ बन्दर, नाम डोरी हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन

साचे आप जगाइंदा। हरिजन सज्जण जावे जाग, जग जीवण दाता आप जगाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए आग, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, गुर शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। एथे ओथे दो जहान पर्दा देवे ढाक, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लख चुरासी विच्चों लए रख, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। नेत्र नैण खोल्हे इक्को अक्ख, दोए दोए लोचण बन्द कराईआ। सृष्ट सबाई नालों करे वक्ख, भगत भगवान दए वड्याईआ। साचा नाउँ साचा मार्ग आपे दस्स, साचे घर लए मिलाईआ। हरिजन पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जगत माया पुत्तर धीआं दात, दाता दानी आप वरताईआ। जगत बन्न्हे जुगती नात, नाता नाते नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ख़ाली भाण्डे दए भराईआ। ख़ाली भाण्डे कर भरपूर, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। निरगुण बख्शे निरगुण नूर, नूर नूर नाल मिलाइंदा। आदि जुगादी सरधा पूर, श्री भगवान खेल खलाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची धूढ़ मस्तक टिक्का लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन साचे पूरन आसा, आसवंद आप कराईआ। हरि सरन चरन इक्क भरवासा, दीन दयाल होए सहाईआ। काया चोली वेखे कासा, अंदर मन्दिर खोज खुजाईआ। सच वस्त सद्द रखे पासा, जिउँ भावे तिउँ वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। वड़याई देवे हरि भगवान, वड वड्डा खेल कराइंदा। जीव जीवत जीव दान, जीवण जुगत जुगत जणाइंदा। बूंद रक्त खेल महान, साची शक्ति विच भराइंदा। पंज तत्त काया कर प्रधान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। मन मति बुध खोल्ह दुकान, आसा तृष्ना माया ममता पंचम साचा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त काया चोली, हरि जू हरि हरि आपे पाईआ। सेवक बणाए साची गोली, सेवा सच सच जणाईआ। कारज रास चुक्के काया डोली, डोला आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे एका वर, जगत फलवाड़ी रही मौली, पत डाली फुल्ल आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं बिध जाणे आण, पर्दा ओहला ना कोए रखाईआ। पर्दा ओहला ना कोई लुक, घट घट अंदर डेरा लाइंदा। गुरमुख बूटा जाए ना सुक्क, अमृत सिंच हरा आप कराइंदा। फल लगाए जननी कुक्ख, कुक्ख मुख आप सालाहइंदा। जन्म जन्म दा मिटे दुःख, दुःख दुक्खड़ा आप गवाइंदा। दया कर अबिनाशी अचुत, चेतन सता विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति बूटा सच मात सति सतिवादी सति दुआरे आप लगाइंदा ।

✳ २१ जेठ २०१६ बिक्रमी झण्डू राम दे गृह पिण्ड जौड़ीआं जम्मू ✳

मीन गत जाणे जल, गत मीन जल जणाईआ। भगत गत जाणे भगवन, भेव होर ना किसे समझाईआ। आदि अन्त जाए मन्न, जुग जुग होए सहाईआ। थल अस्गाह बेड़ा बन्न, मारू पन्ध आप मुकाईआ। निर्धन दे दे साचा बल, बलधारी दया कमाईआ। राम रूप अंदर जाए रल, निरगुण सरगुण विच समाईआ। घर प्रकाश जाए बल, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। अन्त मिलाए जिउँ मीन जल, जल मीन विच वखाईआ। जन्म जन्म दा देवे फल, पत डाली आप महकाईआ। ग़रीब निमाणयां कलयुग अन्तिम मिली भल्ल, निमाण निमाणयां लए तराईआ। अग्नी तत्त ना तपे खल्ल, खलड़ी चम्म ना कोए तपाईआ। राए धर्म ना सुट्टे डूँघी डल्ल, कुम्भी नरक ना डेरा लाईआ। बन खण्ड फिरे ना जंगल झल्ल, जिस जन आपणी झलक वखाईआ। टिल्ले पर्बत जायण हल्ल, हरिजन अटल्ल इक्क रखाईआ। अंदर बह बह सुणे सुणाए आपणी गल्ल, गलवकड़ी एका पाईआ। सिँघासण आसण बहे मल्ल, सोभावन्त बेपरवाहीआ। विछड़ ना जाए घड़ी पल्ल, थित वार ना कोए रखाईआ। गुरमुख कहे गुर मीन जल, गुर गुर गुर जोत समाईआ। मीन जल इक्क रंग, रंग नज़र किसे ना आईआ। जल मीन सदा संग, सगला संग आप रखाया। गुरसिख मीन मंगे साची मंग, गुर अमृत जल मेघ इक्क बरसाया। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, आप आपणा बन्धन पाया। माणस जन्म ना होए खण्ड, मानुख आपणे लेखे लाया। सति दुआर चढ़ाए चन्द, सति सरूप रूप वटाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस जन होए आप बख्शंद, तिस जल मीन रूप वखाया। वड्डा सहारा सतिगुर आप, सर्ब जीवां पित माईआ। पूरब जन्म दे मेटे पाप, दुःख रोग संताप गंवाईआ। दुरमति मैल देवे काट, निर्मल आत्म दए कराईआ। पूत ना आए जम की फास, पिता पन्ध दए मुकाईआ। माता अग्गे रहे हरि के दास, तिन्नां लेखा दए चुकाईआ। माणस जन्म आया रास, सुण बेनन्ती दया कमाईआ। अंदर अंदर दए धरवास, मन चिंता दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिता पुत्त अन्तिम माई लेखे लाईआ।

✳ २१ जेठ २०१६ बिक्रमी भुल्ला राम, शिव राम दे गृह पिण्ड जौड़ीआं जम्मू ✳

गुरसिख पुकारे मछली मीन, जल सीर नज़र कोए ना आईआ। मैं फिर के आई लोक तीन, विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। कोई ना करे ठांडा सीन, त्रैगुण अग्न ना कोए बुझाईआ। चाढ़े रंग ना कोए भीन्न, भिन्नड़ी रैण ना कोए सुहाईआ। कूड़ी क्रिया होए अधीन, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, तेरी प्रीत रही तरसाईआ। जल मीन गुरमुख कूके, कूक कूक सुणाईआ। सृष्ट सबाई ख़ाली ठूठे, सरोवर कोए नज़र ना आईआ। जगत जीव होए झूठे, गुर पीर अवतार पैग़म्बर देवे ना कोए गवाहीआ। ख़ाली दिसण सारे बूटे, फल फुल्ल ना कोए महकाईआ। सति ना सोहे कोई रुत्ते, बसन्त रूप ना कोए वटाईआ। गूढ़ी नींदे मूर्ख सुत्ते, मुख पर्दा ना कोए उठाईआ। बिन हरि नामे सारे लुट्टे, ख़ाली दर रहे वखाईआ। तेरे नालों हरि जू रुठे, बैठे मुख भुवाईआ। मैं फिर के आया चारे गुठ्ठे, चार कुण्ट पन्ध मुकाईआ। धर्म राए इक्को उठे, हस्स हस्स रिहा समझाईआ। कलयुग अन्तिम फड़ फड़ कुट्टे, ना सके कोए बचाईआ। मूर्ख मुग्ध अञ्याण टंगे पुट्ठे, जो बैठे नाम भुलाईआ। डुंघे खाते अन्तिम सुट्टे, कुम्भी नरक वास वखाईआ। तेरी सरनाई तक्के अबिनाशी अचुते, तेरे चरन मिले वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख कोलों पुच्छे, कवण दुआरे हरिजन हरि जू लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा नाम वर, जगत अग्नी तत्त बुझाईआ। गुरमुख मीन कल रही रो, नेत्र नैणां नीर वहाया। चार जुग मैं सुणदी रही तेरी सो, सो पुरख निरँजण तेरा रूप नज़र किसे ना आया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रख्या मुखड़ा धो धो, नेत्र नैण तेरे वल उठाया। तूं सचखण्ड निवासी सच दुआरे रिहों सौं, आपणी करवट ना मात बदलाया। गुर अवतार रहे गौं, गीत गीत नाल मिलाया।
२८४ तेरा नाउँ दस्सदे रहे निरभउ, भय अवर ना कोए रखाया। जुग जुग जन भगतां देवे ढोआ ढो, नाम अनमुल्ला आप वरताया। २८४
साचा बीज देवें बो, लोकमात बूटा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध
१२ बिन अवर ना कोए सहाया। गुरसिख मीन मारे ताअना, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। तूं साहिब सुल्तान सच्चा सुल्ताना, १२
वड वड्डा शहिनशाहीआ। तुध बिन दिसे घर बेगाना, घर सज्जण रुत्त ना कोए सुहाईआ। कलयुग सागर देवे ना कोए माणा, डूँग्घी भँवर रिहा वखाईआ। चारों कुण्ट दिसे वैराना, ख़िज़ां रुत्त नज़री आईआ। किरपा कर ठाकर स्वामी, तुध बिन मिले ना कोए टिकाणा, दर बदर फिर फिर वेखी सर्ब लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद मट्ठ बैठे जीव शैताना, शरअ कर रही लड़ाईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण नेत्र नैण नैण शरमाना, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार होए हैराना, हरि का संग ना कोए रखाईआ। जुग जुग दस्स के आए गाना, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। हरि जू रखे सब नूं आपणे अंदर भाणा, भाणा आपणे उत्ते वरताईआ। मनमुख जीव ना किसे पछाणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। माया ममता जीव लुभाना, आसा तृष्ना करी कुड़माईआ। गुर चरन ना लग्गे सच ध्याना, सुरती शब्द ना कोए जणाईआ। नाम सति ना मिले बबाणा, लोआं पुरीआं बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा

साचा घर, तुध बिन अग्न ना कोए बुझाईआ। तुध बिन अग्न ना बुझे तत्त, सांतक सति ना कोए कराईआ। तीर्थ तट उब्बले रत्त, रत्ती रत्त दए दुहाईआ। ज्ञान ध्यान ना कोए सति असति, निरगुण इष्ट ना कोए प्रगटाईआ। सृष्ट सबाई बैठी सत्थर घत्त, यारड़ा नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा मार्ग साचा दस्स, तेरी मीन रही तरसाईआ। कवण दुआरे पूरी होए आस, तृष्ना जगत दएं मिटाईआ। कवण सागर वसें पास, कवण सरोवर दएं नुहाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी अन्तिम पूरी करें ख्वाहिश, आपणी ख्वाहिश नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम बैठी हो बेआस, बेआस पार ना कोए कराईआ। लेखे लग्गे ना किते स्वास, स्वास स्वास ना कोए सहाईआ। मैं फिर फिर वेखे गोपी काहन पाउँदे रास, मंडल मण्डप नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। मछली मीन जल जल पाणी, गुर चरन सरन सरनाईआ। एका देवे सच निशानी, सति सतिवादी नैण वखाईआ। जुग चौकड़ी रैण विहाणी, लोकमात रहिण ना पाईआ। वेखणहारा खाणी बाणी, पद निरबाणी इक्क जणाईआ। लख चुरासी जाण जाणी, जानणहारा वेस वटाईआ। इक्क सुणाए अकथ कहाणी, कथ कथ आपणा राग अलाईआ। हरिजन वेखे मार ध्यानी, नेत्र नैण नैण उठाईआ। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क ध्यानी, सरन सरन दए सरनाईआ। आवण जावण चुकाए जम की काणी, राए धर्म ना फास वखाईआ। फड़ बाहों प्याए अमृत ठंडा पाणी, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या हरि करतार, जल जल रूप आप दरसाइंदा। काया गागर कर त्यार, अमृत आत्म आप भराइंदा। फड़ नुहाए एका वार, जन्म जन्म दी मैल गवाइंदा। सच सरोवर देवे वाड़, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढाइंदा। माहीगीर ना पावे कोई जाल, फांदकी फंद ना कोए लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जल इक्क वखाइंदा। साचा जल अमृत रस, गुर गुर किरपा आप जणाईआ। गुरमुख गुरसिख इक्क दूजे दे होण वस, जल मीन रूप वटाईआ। प्रेम प्यार अंदर जायण फस, दूजा फांदी फड़न कोए ना आईआ। इक्क दूजे दा मानण रस, जगत तृष्ना नेड़ ना लागे राईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, नित नवित वेखण चाँईं चाँईंआ। आत्म परमात्म गाए जस, जस ढोला सोहँ इक्क सुणाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा वस, दूजी तिख़ा रहे ना राईआ। करे कराए पूरी आस, श्री भगवान दया कमाईआ। जन्म जन्म दी कटे फास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। सुणया गुण माछली चढ़या चाउ, मीन मन ही खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या मलाह, जगत बेड़ा दए तराईआ। सच सरोवर दए नुहा, घर साचे आप प्रगटाईआ। अमृत बूंद

स्वांती दए चुआ, बिलप तिंखा ना लागे राईआ। दर्द दुःख विछोड़ा दए गवा, साचा सुख इक्क उपजाईआ। अग्नी तत्त दए बुझा, त्रैगुण तत्ती वा नेड़ ना आईआ। एका ढोला दए सुणा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। काया चोला दए बदला, जन्म जन्म विच प्रगटाईआ। पर्दा ओहला दए उठा, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। मौला रूप बण जाए समा, नूर नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहरवान हरि करतार, आपणी दया कमाइंदा। जल सागर कढ्ढे बाहर, लोकमात पन्ध मुकाइंदा। आदर देवे दर दरबार, दर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। तिंखा तृष्ना ना रहे कोए संसार, हिरस हवस ना कोए जणाइंदा। चरन कँवल इक्क आधार, चरनोदक मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाइंदा। साचे मार्ग गुरमुख मीन, पीआ पीआ कुरलाईआ। इक्को नाम निधाना तेरी वज्जे बीन, बीआबान करे शनवाईआ। तेरा मार्ग निक्का अत महीन, तुध बिन पार ना कोए कराईआ। चाकर सेवक होई अधीन, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेला ल्या मिलाईआ। मेल मिलाया शब्दी रंग, गुर गुर खेल कराया। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, आपणा बन्धन पाया। नेत्र दरस कर पाई ठंड, दुक्खड़ा दुःख मिटाया। जगत रंडेपा चुक्या रंड, कन्त सुहाग इक्क हंढाया। पल्लू बन्ही नाम गंढु, अद्धविचकार ना कोए खुल्हाया। गीत सुहागी गावां छन्द, घर साचे मंगलाचार कराया। सच दुआरे होए अनन्द, अनन्द अनन्द नाल मिलाया। जुग जन्म दा चुक्या पन्ध, हरि सतिगुर सरन मिली सच सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे लेखे लए लगाया। गुरसिख मीन लेखा चुक्के, हरि जू हरि हरि आप चुकाईआ। सतिगुर सागर कदे ना सुक्के, आदि जुगादि भरपूर रिहा वखाईआ। गुरमुख अंदर वड़ वड़ लुक्के, ठांडे दरबारे सेज सुहाईआ। साची गोदी आपे चुक्के, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। दिवस रैण वात पुच्छे, घर घर फेरा पाईआ। देवे माण काया बुत्ते, जिस तन अंदर आपणा नाम टिकाईआ। पंच विकारा फड़ फड़ कुट्टे, नाम खण्डा इक्क वखाईआ। लख चुरासी कोटन विच्चों गुरमुख विरला उठे, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। कलयुग जीव रहे सुत्ते, हरि सागर नज़र किसे ना आईआ। मन वासना होई कुत्ते, वांग सुआन चारों कुण्ट फेरा रहे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला आत्म परमात्म धार, जल मीन रूप वखाइंदा। नज़र ना आए विच संसार, बेनज़ीर खेल वखाइंदा। अंदरे अंदर सुणाए सच्ची ग़ुफ़तार, अन्तर अन्तर बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वखाए साचा घर, निरभउ चुकाए भय डर, भावी भगवान आप मिटाइंदा। गुरमुख तेरी मिटे

भावी, भाणे आपणे विच रखाईआ। खेल करे जिउँ अर्जन रावी, रवादार आपणी खेल कराईआ। अन्तिम चुक्के आपणी बाहवीं, भुजां लोकमात उठाईआ। रुत्तड़ी रुत्त होए सुहावी, सतिगुर सच्चा आप सुहाईआ। कंडे तोले सावों सावीं, नाम वट्टा एका पाईआ। गुरमुख गीत सोहँ गावीं, पुरख अकाल दीन दयाल अन्त होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कटणहारा फाँसी फाही, फांदी आपणा बन्धन एका पाईआ।

✳ २१ जेठ २०१६ बिक्रमी चेला सिँघ दे गृह जम्मू ✳

सचखण्ड निवासी कर प्रकाश, नूरी नूर हरि उपजाइंदा। आदि जुगादी पूरी कर कर आस, आसा तृष्ना सर्ब बुझाइंदा। आदि अन्त दे विछड़े कर कर इकट्ठे रखे पास, सच धरवास इक्क जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा रास, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल चौकड़ी जुग, जुग करता आप कराईआ। नव नौ चार बैठा रिहा लुक लुक, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रिहा पुच्छ, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। कलयुग अन्तिम वेला गया ढुक, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल एका उठ, उठ उठ वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी दहि दिशा वेखणहारा चार कुण्ट, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करना, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। साचे तख्त आपे चढ़ना, सच सिँघासण आसण लाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार विष्न ब्रह्मा शिव आपे फड़ना, फड़ फड़ आपणे दर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा एकँकार, एका एक जणाईआ। सचखण्ड वासी करे ख़बरदार, बेख़बर कोए रहिण ना पाईआ। नव नौ चार उतरे पार, पार किनारा दए वखाईआ। कलयुग अन्तिम मन्न के बैठा हार, आपणा बल ना कोए दरसाईआ। उठो वेखो करो विचार, नेत्र नैण नैण समझाईआ। लख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वरन बरन करे पुकार, साची सार ना कोए पाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। गुर गुर जुग जुग दस्स के आए आपणी धार, धार मात मातलोक प्रगटाईआ। जीव जंत भुल्ले विच संसार, सार अन्त किसे ना पाईआ। लख चुरासी होई विभचार, विभचारी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण दए वखाईआ। नेत्र नैण लैणा तक्क, तकदीर सब दी आप जणाइंदा। कलयुग अन्त रहे ना शक्क, शिकवा सब दा आप मिटाइंदा। कोई ना सके पर्दा ढक्क, बेनक़ाब पर्दा सब दा

आप उठाइंदा। वेले अन्त ना सके कोई रख, गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ फड़ पहलों आपणे चरन बहाइंदा। कोई ना करे किसे दा कुछ, दीन मज़्हब ज़ात पात कम्म किसे ना आइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी धुरदरगाही सच्चा शहिनशाही इक्को मार्ग रिहा दस्स, देस दसन्तर आप समझाइंदा। तुहाढ्ढी करनी वेख वेख रिहा हस्स, आपणी खुशी आप मनाइंदा। अन्तर बह बह गाउँदे रहे मेरा जस, बाहर पंज तत्त काया चोला पोच पुचाइंदा। अन्तिम वेले सारे आए छड्ड, हड्ड मास नाड़ी रत्त, हथ्थ किसे ना आइंदा। निरगुण आपणी वस्त कीती अड्ड, अड्ड आपणी धार वखाइंदा। लोकमात विच्चों कढ्ढ, आपणयां चरनां हेठ दबाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लए रख, आपणी करनी करता आप कराइंदा। जुग जुग आपणा भेद शब्द संदेशे आया दस्स, सति सतिवादी राग अल्हाइंदा। नानक गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद कहे परवरदिगार अन्तिम आए नस्स, दूर दुराडे पन्ध मुकाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गा गा गए जस, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलम शाही लिख लिख गए हथ्थ, हथ्थ विच फड़ ना कोए वखाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, साची धार आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर शब्द अगम्मी डोरी पा पा नथ्थ, जुगा जुगन्तर मात नचाइंदा। अमृत आत्म दे दे रस, बूंद स्वांती मुख चुआइंदा। आपे करे कक्खों लख, करता कीमत आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा खेल कराइंदा। अन्तिम उठो वेखो मार ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। पोथी पुस्तक कोए नज़र ना आए जगत ज्ञान, ज्ञानी ध्यानी बैठे आपणा आप गंवाईआ। गुर का शब्द गुरू दे के गया सच ब्यान, ब्याना आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। कलयुग जीव ना सके पछाण, पछाण नज़र ना किसे कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुड़ के आए पुच्छे ना कोई कान, जम की काण ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। उठो वेखो नेत्र खोल्हो, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। आपणा आपणा लेखा आपे बोलो, बोला एका एक समझाइंदा। आपणा मार्ग आपे तोलो, हरि जू तोला एका कंडा हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, सत्त चार करे जणाईआ। विष्नूं नेत्र नैण शरमाण, नैण सके ना अग्गे उठाईआ। ब्रह्मा चरन कँवल कर ध्यान, नेत्र नीर रिहा वहाईआ। शंकर कहे तुट्टा मेरा माण, बलहीण दए दुहाईआ। त्रैगुण कहे मैं बाल अञ्याण, बाली बुध ना कोए चतुराईआ। पंज तत्त कहे मैं तेरा बरदा तेरी चरन धूढ़ी मंगी दान, दान तेरा आपणी झोली पाईआ। तेई अवतार कहिण तेरा भेत ना सके जाण, बेअन्त तेरी वड्याईआ। अठारां भगत कहिण तूं साहिब श्री भगवान, आपणे भाणे सदा सदा रिहा समाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद निउँ निउँ करन सलाम, सजदा सीस सीस झुकाईआ। चार यार

रखण तेरा ईमान, अमाम इक्को नज़री आईआ। बरदे रहे तेरे ग़ुलाम, तेरी सार किसे ना आईआ। नानक निरगुण कहे तेरा नाम सति नाम, सति तेरा रूप समाईआ। पंज तत्त काया चोले जिस देवें माण, सो तेरा जस रसना जिह्वा गाईआ। गोबिन्द कहे तू साहिब पुरख सुल्तान, हउँ बालक रूप सखाईआ। दर तेरे मंगां दान, साची वस्त झोली देणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए वड्याईआ। तुध बिन अवर ना कोए मंग, नानक गोबिन्द आस रखाईआ। तेरा नूर साचा चन्द, तेरे भगत जगत वड्याईआ। तूं दयाल सदा बख़्शंद, बख़्शिश तेरे हथ्थ वखाईआ। तूं टुट्टी देवें गंढु, गंढुणहार गोपाल गोसाँईंआ। कलयुग अन्तिम करें वंड, बेपरवाह सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साची खेल करें भगवान, नानक गोबिन्द सिफ्त सालाहइंदा। पंचम पंच करें परवान, पंचम इक्क निशान झुलाइंदा। पंचम वसे सच अस्थान, भूमिका आपणी आप सुहाइंदा। पंचम मंगण साचा दान, साची वस्त झोली पाइंदा। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात प्रगटाइंदा। नव नौ चार लेखा चुकाएं आण, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। साचे भगत कर प्रधान, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। आत्म परमात्म दे ज्ञान, नाम निशान इक्क वखाइंदा। काया मन्दिर सच मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल अन्तिम करना, सत्त चार देण दुहाईआ। निरगुण आपणा वेस धरना, रूप अनूप वटाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पार करना, पार किनारा इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ । साचा भेव श्री भगवन्त, एका एक जणाइंदा। कलयुग अन्त बणाए बणत, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। लेखे लाए साचे सन्त, सतिगुर मीत दया कमाइंदा। नाता जोड़ नार कन्त, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे आप सुहाइंदा। सच दुआरे हरि जू हरि, आपणी खेल कराईआ। नव नौ चौकड़ी पार कर, सच दरबारा इक्क लगाईआ। साचे तख्त आपे चढ़, सच सिँघासण रिहा सुहाईआ। पीर पैग़म्बर शब्दी फड़, गुर अवतार संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहणे झोली पाईआ। लहिणा देणा हथ्थ करतार, आदि अन्त चुकाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, साची खेल कराइंदा। भगत भगवन्त दे आधार, साची भिच्छया आप वरताइंदा। बहत्तर सत्तर कर उज्यार, दीपक जोत डगमगाइंदा। सच दुआरे दे आधार, महल अटल आप सुहाइंदा। गुर अवतार करन निमस्कार, पीर पैग़म्बर सीस झुकाइंदा। हुक्मी हुक्म सुणाए एका वार, ना कोई मोड़े मोड़ मुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार आप उठाइंदा। गुर अवतार गए जाग, हरि जू

२८६
१२

अन्त अन्त जगाईआ। सरन सरनाई गए लाग, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। वड वड मेरे होए भाग, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। जगत विछोड़ा बुझी आग, तृष्ना होर रहे ना राईआ। जिस दा गीत गाउँदे आए कन्त सुहाग, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। जिस दे पिच्छे करदे रहे वैराग, बण वैरागी आपणा रूप वखाईआ। जिस दे पिच्छे छड्डदे रहे सज्जण साक, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। सो साहिब रसूल मेरा पाक, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। जिस दे पिच्छे काया दब्ब के आए ख़ाकी ख़ाक, गोर आपणा आसण लाईआ। सो कलयुग अन्तिम प्रगट होए साख्यात, साची साखी दए समझाईआ। एका नाता बंधाए कायनात, सृष्ट सबाई एका रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब शरअ शरीअत डूँघे सुट्टे खात, फिर कोए ना बाहर कढाईआ। साडी पुच्छे अन्त ना कोई वात, गुर अवतार पल्लू आपणा रहे छुडाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, चौदस चन्द ना कोई चमकाईआ। पारब्रह्म प्रभ सब दी खिच्ची करामात, ख़ाली भाण्डे रिहा कराईआ। तोड़या माण तीर्थ अठसाठ, सरोवर सर ना कोए जणाईआ। नेत्र रोवण चौदां लोक ख़ाली हाट, चौदां तबक देण दुहाईआ। पीर पैग़म्बर कहिण साडा करया घात, छुरी बिस्मिल रूप चलाईआ। गुर अवतार कहिण साडा तुट्टा नात, मातलोक ना कोए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म तेरा भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। चार जुग दा शब्द ज्ञान, गुर अवतार तेरा तेरी झोली पाइंदा। आपणा बल तुट्टा माण, अभिमाण कोए नज़र ना आइंदा। दीन मज़्हब ना कोए निशान, तेरा निशाना सब नूं मेट मिटाइंदा। हुक्मे अंदर बण के गए हुक्मरान, जिउँ भावें तिउँ नाच नचाइंदा। तेरा संदेशा दे के आए विच जहान, जुग जुग तेरा नाम वड्याइंदा। कलयुग अन्तिम जीव जंत होए सर्ब बेईमान, साडी कीती याद ना कोए रखाइंदा। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, परानी पुराण ना कोए दिसाइंदा। दे दे थक्के गीता ज्ञान, आत्म ज्ञान नजर किसे ना आइंदा। मसले पढ़ पढ़ सुनायण अञ्जील कुरान, काया कुरा कोए ना फोल फुलाइंदा। बाणी पढ़ पढ़ होए प्रधान, बाण निराला तीर ना कोए लगाइंदा। जगत विद्या होई निधान, सावधान ना कोए कराइंदा। नाता जुड़या पीण खाण, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। बिन तेरे होए ना कोए परवान, पढ़या लिख्या सुणया कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार सीस झुकाइंदा। श्री भगवान उठ उठ वेखे, हरि हरि खेल कराइंदा। उठो वेखो मिटदी रेखे, हरि जू हरि आप मिटाइंदा। आपणे अन्तर सर्ब लपेटे, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। चार जुग दा रख्या चेते, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। वारो वारी घल्ले अगेते पछेते, अन्तिम इक्को वारी इकट्ठे आपणे घर रखाइंदा। लोकमात आए बण के दार ठेके, सब दा ठेका अन्त मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा सुण हुक्म जगदीश, सारे रहे सीस झुकाईआ। तेरे हुक्मे अंदर पढ़ी हदीस, तेरा नाउँ रसना गाईआ। लोकमात जुग जुग चक्की आए पीस, बण सुआणी पीसण पीस पिसाईआ। अन्तिम ख़ाली होए ख़ीस, सारे आपो आपणे लेखे वखाईआ। तेरी भुल्ले प्रभू रीत, जो रीत आए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा लहिणा दे समझाईआ। साचा लहिणा दस्से भगवान, एका वार जणाइंदा। जुग जुग देंदा रिहा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। बण बण आए गोपी काहन, सीता राम रूप वटाइंदा। पीर पैग़म्बर दे पैग़ाम, कलमा कलाम इक्क सुणाइंदा। गुर गुर दे शब्द निशान, सच निशाना मात झुलाइंदा। अन्तिम सब नूं पाई इक्को आण, बिन हरि अन्त ना कोए कराइंदा। सारे मंगदे गए दान, झोली गुर अवतार अग्गे डाहइंदा। कवण वेला किरपा करें आण, तेरा भेव किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या एका वार सुणाइंदा। साची सिख्या एका वार, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े मेले अन्तिम वार, दर दुआरे मेल कराईआ। भेव अभेदा खोल्ले आप करतार, पर्दा कोए रहिण ना पाईआ। अन्तिम लेखा चुकणा विच संसार, संसारी कोई रहिण ना पाईआ। सब ने गाउणा इक्क निरँकार, एका ढोला दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा चुकाईआ। पर्दा चुक्के पारब्रह्म, आपणी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी याद कर के आए दम दम, कलयुग अन्तिम पवण स्वास ना कोए रखाइंदा। निरगुण कराए निरगुण कम्म, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर किसे नज़र ना आए हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा चम्म, चमक रूप ना कोए वखाइंदा। दीन मज़्ब इक्को लग्गा ग़म, दूजी ग़मी ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा संसा आप चुकाइंदा। साचा संसा करे दूर, दूर दुराडा फेरा पाईआ। पिछले करे माफ़ कसूर, मुफ़त आपणी दया कमाईआ। अग्गे सब ने रहिणा हज़ूर, चरन दुआर इक्क समझाईआ। इक्को ढोला गाउणा ज़रूर, दीन मज़्ब ना कोए रखाईआ। गुर अवतार सारे करन मंज़ूर, तेरी मज़दूरी इक्को भाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त बेपरवाहीआ। असीं होए चकना चूर, बल आपणा गए गुआईआ। मुहम्मद कहे मैं लारा दे के आया बहिसतीं मिले हूर, हू हू तेरा भेव कोए ना पाईआ। मेरा तुट्टा माण ग़रूर, ग़ुरबत कोए रहिण ना पाईआ। मैं अन्त होया मजबूर, मेरी पेश ना चले राईआ। मैं तेरा भुलया नूर, तेरा नूर मेरी खुदाईआ। बिन तेरे मिले ना कोए शऊर, सोहबत मात ना कोए वड्याईआ। बिन तेरे मेरा काअबा तपया वांग तन्दूर, आब हयात ना कोए छिड़काईआ। उच्ची कूक कूक कहे मनसूर, समस तबरेज़ दए दुहाईआ। शहिनशाह पातशाह इक्क ग़फ़ूर, ग़फ़लत

२६२
१२

विच कदे ना आईआ। मेरा महबूब देवे इक्क सरूर, सुरती आपणे नाल मिलाईआ। मिले खुदावंद साची हूर, हुज़रे आपणे लए बहाईआ। सूफ़ी कहे मेरा मुर्शद मेरी आसा पूर, मुस्लिम सुन्नी ना कोए वखाईआ। चार यारी रहे दूर दूर, दर दरवाज़े नेड़ ढुकण ना पाईआ। जो दीसे सो अन्तिम कूड़, फ़नाह रूप आप समझाईआ। चलो रल के मंगीए चरन धूढ़, प्रभ सच्चा मेहर नज़र नज़र लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा रिहा जणाईआ। अन्तिम लेखा ल्या जाण, भुल्ल रही ना राया। जिउँ भावें तिउँ कर भगवान, हउँ बैठे सीस झुकाया। तेरे चरनां इक्क ध्यान, दूजी ओट ना कोए रखाया। जुग जुग सुणदे रहे तेरा फ़रमाण, बण फ़रमांबरदार सेव कमाया। साडी सिख्या भुल्ल गए जीव अञ्याण, बाली बुध दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिउँ भावें तिउँ लए चलाया। जिउँ भावें तिउँ लए रख, हथ्थ तेरे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम होया प्रतख, प्रतख तेरी शहिनशाहीआ। असीं नेत्र वेख्या तूं भगतां गाएं आप जस, जस भगतां आप सुणाईआ। लोकमात फड़ फड़ मेलें हस्स हस्स, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। प्रेम प्यार अंदर फस, जम की फाँसी रिहा कटाईआ। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी फेरा पाईआ। साडी कर पूरी आस, दर तेरे ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी कहे शाबाश, शहिनशाह एका हुक्म सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखो किसे घर ना साची रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच ना कोए नचाईआ। सीता सुरती ना दिसे राम पास, राम सीता होए ना कोए कुड़माईआ। अल्ला राणी पूरी करे ना कोई ख्वाहिश, ख्वाहिश मुहम्मद ना कोए रखाईआ। ईसा हो के बैठा निरास, नसीहत सारे गए भुलाईआ। मूसा उड्डिआ सर्ब विश्वास, विश्वास करे ना कोए खुदाईआ। नानक होया ना कोए दास, सीस आपणा भेंट कराईआ। गोबिन्द दिसे किसे ना पास, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। पारब्रह्म तेरे मिलण दी इक्को आस, गुर अवतार बैठे ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा खेल तमाश, तेरी बणत तोहे बण आईआ। सत्तर बहत्तर रखे पास, चरन कँवल नाल मिलाईआ। चुहत्तरां साडी सेवा लाई ख़ास, आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी किरपा वंड वंडाईआ। तेरी किरपा मिली दात, हरि दानी आप वरताया। सत्तर बहत्तर होए तेरी ज़ात, तेरा रूप समाया। तेरे अग्गे सारे छड्डीए आपणी करामात, तेरी वस्त तेरी झोली रखाया। तेरे चरन रहे नात, नाता कोए ना तोड़ तुड़ाया। तूं साहिब भगतां पुच्छे वात, हउँ तेरे भगतां आपणे अंग लगाया। तेरा मेरा ढोला गा गा गाथ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण चोला लए बदलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सत्त चार मेला होए सहिज सुभाया। सत्त चार मेला जोड़, आपणी दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं वेखां चढ़ के घोड़,

दो जहानां फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मेरे नाल पैदल पैणा दौड़, शाहसवार रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सच संदेशा सुणया कन्न, हरि जू हरि सुणाया। तेरा कहिणा लईए मन्न, निउँ निउँ सीस झुकाया। सेवा लाई साडे भाग धन्न, धन्न तेरी वड्याआ। तेरा नूर चढ़या चन्न, भगत रूप रुशनाया। तूं साहिब बेड़ा दिता बन्न, हउँ खेवट बण मात तराया। अन्तिम पूरा होवे कम्म, निहकर्मी आप कराया। दीन मज़्हब दा टुट्टे ग़म, शरअ शरीअत ज़ोर ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वरताया। साचा खेल साजण मीत, तेरा नज़री आईआ। ख़ाली दिसे मन्दिर मस्जिद मट्ठ मसीत, गुरुदुआर देण दुहाईआ। प्रगट होया इक्क अतीत, जो सब दी रीत चलाईआ। वेखणहारा हस्त कीट, घट घट रिहा समाईआ। अन्तिम ढोला गाए गीत, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। साची खेल करे करतार, तेरे चरन कँवल बलिहारी। सारे बैठे तेरे दुआर, निउँ निउँ सीस करन निमस्कारी। लोकमात खिड़ी गुलज़ार, भगत भगवन्त लाई फुलवाड़ी। असीं राह तक्कदे रहे जुग चार, जुग जुग नैण उठाल वारो वारी। अन्तिम दस्स के आए विच संसार, निहकलंक नरायण कलयुग आए अन्तिम वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच बिवहारी। साचा खेल कर भगवान, गुर अवतार रहे सीस झुकाईआ। सत्त चार जगत निशान, सच निशाना लए झुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे परवान, त्रैगुण मुख ना कोए भुवाईआ। पंज तत्त मन्नण तेरी आण, तेई अवतार तेरा राह तकाईआ। अठारां तिन्न चार होण कुरबान, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। गुर अवतार दस करन ध्यान, एका नज़र नज़र टिकाईआ। पंज बैठे सचखण्ड सच्चे बलवान, बल आपणा रहे जणाईआ। साडा मेल मिल्या नाल भगवान, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। असीं आ के बणाया सच्चा विधान, पंच प्रधान हो के खुशी मनाईआ। नौ सौ चुरानवें जुग दा चुकया ज्ञान, गुर अवतार देवे सर्ब समझाईआ। हुक्म मन्नणा पए दो जहान, हुक्मे अंदर सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी दिता धुर फ़रमाण, सच संदेशा इक्क जणाईआ। लोकमात प्रगटाउणा इक्क निशान, सच निशाना दए वखाईआ। भगतां हरि जू मिले आण, भगवन आपणी दया कमाईआ। साचे मन्दिर बह बह करे कल्याण, कल आपणी आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका घर वसाईआ। पंच प्रधान पंचम रंग, हरि जू हरि हरि आप चढ़ाया। पंचम उठ वजाया मृदंग, एका नाद सुणाया। जुग चौकड़ी होए भंग, हरि जू हरि हरि आप कराया। जन भगतां देवे इक्क अनन्द, आपणा रस वखाया। एका ढोला सुणाए छन्द, सोहँ सो आप प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। सच संदेशा कंचन धारा, पंचम आपणा हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर करन निमस्कारा, निमख निमख आपणा सर्ब कटाइंदा। रसना बोलण सारे मिल के सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। अग्गे करे फेर विहारा, पहलां आपणी ईन मनाइंदा। इक्की जेठ सब दा होया छुटकारा, छुट्टी सब नूं आप दिवाइंदा। सारे सौं जाओ पैर पसारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। इक्को हरि जू वजाए नगारा, नौबत आपणे नाम सुणाइंदा। दो जहान कराए वणज वपारा, सतिगुर साचा हट्ट चलाइंदा। चार जुग दा मुक्के लारा, अन्तिम आपणा पर्दा आप उठाइंदा। बिन भगतां हरि जू रिहा कँवारा, साचा सगन ना कोए मनाइंदा। कबीर उच्चे टिल्ले मन्दिर चढ़ चढ़ कढ्ढदा रिहा हाढ़ा, हाए हाए कर कुरलाइंदा। बौहड़ी बौहड़ी तैनूं लभ्भदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, तूं गुरमुखां अंदर डेरा लाइंदा। जिध्धर वेखां चारों कुण्ट नज़री आए सच्चा लाड़ा, लख चुरासी नार आपणी गोद बहाइंदा। तेरा भगत क्यों रिहा कँवारा, तुध बिन अंग ना कोए रखाइंदा। तेरा जोबन रूप नार मुटयारा, कन्त कन्तूहल इक्को मोहे भाइंदा। मैं नेत्र नैण श्रृंगारा, कजला धार नाम रखाइंदा। ऐनल हक़ बोल के नाअरा, मनसूर तेरी शरअ ज़ंजीर कटाइंदा। गोबिन्द फ़तेह बोल जैकारा, डंका तेरे नाम सुणाइंदा। नानक उपर चढ़ बोले ललकारा, सचखण्ड हरि जू नज़री आइंदा। अन्तिम इक्को रूप धरे निहकलंक नरायण नर अवतारा, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। आपणा करे सच विहारा, साचा राह आप चलाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। सच तौफ़ीक इक्क परवरदिगारा, तोहफ़ा आपणा कलमा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा मार्ग हथ्थ निरँकार, आदि जुगादि जुग जुग सारे गए सुणाईआ। जे कोई कहे मैं वड बलकार, बल देवणहार नज़र ना आईआ। जे कोई कहे मैं वड सरदार, तिन्नां लोकां बिनां सरदारी हथ्थ किसे ना आईआ। जे कोई कहे मैं बरखुरदार, प्रभ आपणा भेव दए खुल्हाईआ। नानक निउँ निउँ करे निमस्कार, नर निरँकार तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। गुर चेले तेरा विहार, गोबिन्द गया समझाईआ। असीं हुक्मे अंदर करने आए कार, तेरी किरत कमाईआ। तूं लेखे लैणी डार, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईंआ। पुरख अबिनाशी करया ख़बरदार, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। कलयुग आए अन्तिम वार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। साचे भगतां दए आधार, नानक लेखा लेखे लाईआ। सचखण्ड दवारे पंचम पंच कर निशान, जगत निशाना दए वखाईआ। साचा मन्दिर इक्क मकान, श्री भगवान आप सुहाईआ। साढे तिन्न हथ्थ देवे दान, सम्बल आपणा रूप वखाईआ। नीहां हेठ दबाए बाल, बली आपणी भेंट चढ़ाईआ। आपणा खून रत्ती रत्त देवे डाल, रत्ती

रत्त नाल मिलाईआ। सिँघ इन्दर कर पहलवान, पहली आपणी रसम वखाईआ। लोकमात दा नौजवान, नाम गुरज़ हथ्थ फड़ाईआ। सब दी शरअ मेटण आया भगवान, दर दरबान बण के सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे गाण, वाहवा हरि जू खेल रचाईआ। साचा सुत करया परवान, अबिनाशी अचुत दया कमाईआ। चौहत्तरां देवे इक्को दान, दाता दानी दया कमाईआ। चार जुग दी चुक्के आण, चौकड़ी बैठे मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन मिली साची गुरज, गुर सतिगुर आप दुआइंदा। लेखे लग्गा साढे तिन्न हथ्थ बुरज, उच्च मनारा आप सुहाइंदा। निमस्कार करे देवता सूरज, निउँ निउँ चरन धूढ़ रमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। मिली गुरज़ उपज्या बल, बल बावन खेल कराईआ। सतिजुग सरूप गया छल्ल, कलयुग अन्त लए प्रगटाईआ। जिस धरनी उपर वगदा रिहा हल्ल, तिस हौला भार वखाईआ। जन भगत दुआरा लग्गा फल, पत्त डाली आप महकाईआ। सेवा करे पुरख अकाल, अकल सब दी दए भुआईआ। गुर अवतार वेखण निहचल धाम बणया अटल्ल, अटल्ल पदवी इक्क वड्याईआ। श्री भगवान आसण बैठा मल्ल, अग्गे पिच्छे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुरज़ लै ना चढ़े चाअ, सिँघ इन्दर आप सुणाइंदा। तूं शहिनशाह शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, तेरे अग्गे सीस झुकाइंदा। मैं इक्क इकल्ला अग्गे जावां ना, आपणा संग ना कोए छुडाइंदा। कर किरपा फड़ा बांह, भ्रा भ्रावां नाल सुहाइंदा। मैं नीवां बण बण सेवा लवां कमा, बिन सेवा कोई कम्म किसे ना आइंदा। तेरे भगतां प्यार अमृत रस मेवा लवां खा, खा खा आपणा शुकर मनाइंदा। सत्तरां बहत्तरां वेखां थाँ थाँ, बहत्तर सत्तर तेरा रूप नज़री आइंदा। जे चुहत्तरां अंग लवें लगा, गुर अवतार शुकर मनाइंदा। पीर पैग़म्बर मैनूं देण सलाह, सलाहकार इक्को तूहे नज़री आइंदा। फड़ फड़ बाहों राहे लैणा पा, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आइंदा। जल थल डूँघे दिसण अस्गाह, उच्चे टिल्ले पर्बत तुध बिन पार ना कोए कराइंदा। प्यार भुल्ले ना पुत्तरां मां, पुत मात पित सदा भुलाइंदा। तुध बिन असीं होए जगत काँ, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। कर किरपा निथाव्याँ देणा थाँ, इक्को साची आस रखाइंदा। चुहत्तरां लेखे लैणा ला, लेखा तेरा मुक्क कदे ना जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लैण उभे साह, हौके भर भर सर्ब नीर वहाइंदा। त्रैगुण माया रही कुरला, पंज तत्त आपणा डेरा ढाहइंदा। तेई अवतार नैण रहे तका, कवण वेला हरि जू आसा पूर कराइंदा। भगत अठारां घर घर फेरी रहे पा, धन्न भाग हरि जू भगतां मेल मिलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद चार यारी सिर रही खुहा, दरोहे खुदाई नबी रसूल हरि जू आरज़ू करी कबूल, शरअ शरीअत मेट मिटाइंदा। अन्त

दिता जवाब इक्क माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सचखण्ड दा सच असूल, दीन मज़्ब ना कोए रखाइंदा। ना कोई कातिल ना मकतूल, छुरी शरअ ना कोए चलाइंदा। इक्को पाक आप रसूल, रसम आपणी अन्त अदा कराइंदा। सारयां करनी पए कबूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी ओट सर्ब तकाइंदा। सुण पहलवान साचे मल्ल, हरि जू रिहा सुणाईआ। तेरी मन्नां इक्को गल्ल, जन भगतां गलवकड़ी लवां पाईआ। वक्त लँघावां मिल रल, रल मिल आपणा वक्त लँघाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा रिहा ढिल, ढिलापन आपणा आप बणाईआ। कलयुग अन्तिम कर के आया वडा दिल, दिल दलेरी दए वखाईआ। लख चुरासी धरती विच्चों कढे डूँघी बिल, फड़ बाहों बाहर सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नजर इक्क उठाईआ। मेहरवान तेरी उडीक, नित नित ध्यान लगाया। तूं साहिब खुदा लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ। जुग जुग मेटणहार तारीक, अन्धेरा अन्ध रहे ना राया। ऊँचां नीचां करें इक्क प्रीत, राउ रंक ना कोए वखाया। जन भगतां मेलें ठीक, ठीकर द्वैती दएं तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस झुकाया। देवे वर बेपरवाह, आपणी दया कमाईआ। चले चलाए आपणी सदा रज़ा, रहिमत रहीम आप कमाईआ। आदि जुगादी जुग जुग आपणी जाणे अदा, द्वैती होर ना कोए रखाईआ। देवणहार सर्ब सज़ा, फ़तवा इक्को आप लगाईआ। पढ़नहार सच्चा नक़ाह, मुरीद मुर्शद लए मिलाईआ। पीर पैग़म्बर बण आप खुदा, असल असलीअत दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तरां देवे माण वड्याईआ। चुहत्तरां देवे माण भगवान, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। इक्क रविदास करे परवान, परवाना साचा हत्थ फड़ाइंदा। दो जहान दा सच निशान, गुर अवतारां आप वखाइंदा। जिस दे अधीन होया वाली दो जहान, आपणा लेख गुरमुख हत्थ फड़ाइंदा। गुरमुख बोले नाल ज़बान, ज़बा सब दी शरीअत हरि कराइंदा। एका नाम दए सुणा, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। चुहत्तरां वणज दए वखा, साचा हट्ट इक्क चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साता चौका देवे दान, रविदास चुमार करे वख्यान, गुरमुख आपणी रसना गाइंदा। सचखण्ड दा सच विहारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। पंजां विच्चों इक्क प्यारा, साची वंड वखाइंदा। चौहां देवे चार जुग सहारा, जगत जुगती आप दृढ़ाइंदा। पहला नाउँ कर प्यारा, सिँघ प्रीतम रूप वखाइंदा। दूजे देवे दरस दीदारा, पाल सिँघ पाटल विच उठाइंदा। तीजे घर खोल्ह किवाड़ा, गुरमुख नेत्र नैण मिलाइंदा। चौथे घर बोल जैकारा, बिशन सिँघ बिशन पता काहन आप सुणाइंदा। पंचम मेला ठाढे दरबारा, सिँघ दरबारा आपणी गोद उठाइंदा। छेवें गुरबख्श

हरि बख्शिश, कर बख्शीश आपणी इक्क जणाइंदा। सत्तवें मेला श्री भगवान, सिँघ भगवान आपणे रंग रंगाइंदा। बूड़ सिँघ अठ्ठ तत्त कर परवान, अठोतरी माला मोह मिटाइंदा। तल्बीर सिँघ तल्ब आपणे दर तालिब, आपणी सेव लगाइंदा। सिँघ सुलखण चुक्या जन्म मरन डर, भय भयानक रूप नज़र कोए ना आइंदा। दलीप सिँघ दर आपणे फड़, फड़ बाहों गले लगाइंदा। जरनैल सिँघ लगाई जड़, लोकमात ना कोए उखड़ाइंदा। पाल सिँघ ग़रीब निमाणे लेखे लग्गा सीस धड़, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। वरयाम सिँघ पौड़े गया चढ़, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। अजीत सिँघ मिल्या मेल इक्को हरि, मुर्शद मुरीद एका घर सोभा पाइंदा। मोहन सिँघ मोह चरन कँवल धर, मुहब्बत आपणा नाम वखाइंदा। जगीर सिँघ सच जगीर झोली देवे धर, अतोट अतुट आपणी वस्त इक्क वखाइंदा। करतार सिँघ करतार करनी करता कर, कतरा कतरा अमृत रस रस निझर आप झिराइंदा। गुरमुख सिँघ गुर होया वस, बेमुख हो ना रूप भुआइंदा। धिरता सिँघ धरनी गाए जस, जिस उपर चरन टिकाइंदा। राज सिँघ हरि के राज जोग अंदर गया फस, फाँसी जम्म ना कोए वखाइंदा। अतर सिँघ मेल मिल्या नस्स नस्स, डूँग्घी भँवरी पार वखाइंदा। मुनशा सिँघ गेड़े उलटी लट्ठ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। गुरबख्श सिँघ खेड़ा काया ना होए भट्ठ, भट्ठ खेड़ा जगत वखाइंदा। तेजा सिँघ लड़े डट डट, लड़ना झगड़ना सतिगुर सच्चे भाइंदा। लक्ष्मण सिँघ खोल्ह्या हट्ट, सतिगुर हट्ट नाम वकाइंदा। बली सिँघ बल गुरू मति, बिन गुरमति बल कम्म किसे ना आइंदा। केशो राम केशव देवे रस, किर्शमा आपणे नाम वखाइंदा। सोहण सिँघ सोभा लए खट्ट, पिता पूत सेव कमाइंदा। प्रेम सिँघ नाम वज्जे सट्ट, ठोकर आपणे नाम लगाइंदा। निरँजण सिँघ अञ्जण नेत्र देवे घत्त, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। मक्खण सिँघ मिले फट्ट, कन्त नार सेव कमाइंदा। मान सिँघ साची रत्त, रत्त पूरब लेखे पाइंदा। करतार सिँघ जुड़या नत्त, चरन कँवल बंधण इक्क रखाइंदा। धर्मबीर ठांडा सरीर, अमृत सीर जाम प्याइंदा। साधू सिँघ साधना साध सतिगुर साहिब रख्या याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। सुरिंदर सिँघ सुख एत प्रभ करे बुध बबेक, बाली बुध लेखे पाइंदा। अर्जन सिँघ मन्न अरजोई, चरन दुआर देवे ढोई, ढोआ धुरदरगाही एका हथ्थ फड़ाइंदा। रसाल सिँघ सुरती उठी सोई, सोइम आपणा रूप जणाइंदा। पूरन चन्द पूरा होए कोई कोई, जिस आपणा भेव खुल्ह्आइंदा। वकील सिँघ अग्गे वकालत करे ना कोई, आपणे हथ्थीं लेखा पाड़ वखाइंदा। रंगी राम मिल्या राम, जगत पूरन काम आप कराइंदा। भाग सिँघ लग्गा भाग, घर दीपक जोती जगे चराग, दीआ बाती सतिगुर आप लगाइंदा। ईश्र सिँघ मिल्या ईश, ईश जीव आपणी गोद बहाइंदा। सूरत सिँघ साची सूरत नज़री आए अकाल मूर्त, नाद तूरत इक्क अल्हाइंदा। संसार सिँघ लहिणा चुक्या संसार,

२६७
१२

अन्तिम बेड़ा होया पार, हरि जू आपणे कंध उठाइंदा। महिंगा सिँघ होया ससता, पुरख अबिनाशी बध्धा बसता, बद्धी गंढु ना कोए खुल्हाइंदा। दर्शन सिँघ दरश दीदार, बेड़ा करया पार किनार, मँझधार ना कोए रुड़ाइंदा। सुरैण सिँघ नेत्र पेख नरायण, निज नेत्र दर्शन पाइंदा। इन्दर सिँघ प्रभ आए लैण, वेले अन्त शब्द बबाण आप बठाइंदा। जगीर सिँघ मिली जगीर, हरि जू बदली मात तकदीर, जन्म जन्म विच भुआइंदा। राज सिँघ मिल्या महाराज, मानस जन्म सुआरया काज, अनन्द कारज आपणे नाल कराइंदा। प्रीतम सिँघ सच प्रीत, एथे ओथे धाम दए अतीत, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। ज्ञान सिँघ गुर शब्द ज्ञान, बिन लम्भयां मिल्या श्री भगवान, घर घर आपणा मेल कराइंदा। करतार सिँघ मिल्या करता पुरख, चुकया रोग सोग हरख, हरख़ सोग गुरसिख ना कोए वखाइंदा। सुरजीत सिँघ प्रभ कीता तरस, सर चरन कँवल सरोवर आप नुहाइंदा। वरयाम कौर मिल्या वर, हरि जू आपणा संग रखाइंदा। सुरजीत कौर लाई जड़्ह, बूटा लोकमात लहराइंदा। भगवान कौर दरस दिखाए अग्गे खड़, काया खिड़की पर्दा आप उठाइंदा। चन्नो ना जन्मे ना जाए मर, मर जीवत फेर जिवाइंदा। बंती किरपा दिती कर, सेवक सेवा सच समझाइंदा। दलीप कौर चुकया डर, हरि पुरख निरँजण पिछला जन्म पुरख कीती सेव धायल पूरी पाइंदा। दातो मिली हरि नाम दात, भगतां रली सच जमात, जम नेड़ कदे ना आइंदा। प्रेम देई छड्डया झूठा साक, सतिगुर पति लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। राम कौर हरि मिल्या बाप, जन्म जन्म दा मेटे संताप, सति सुच आपणा रंग रंगाइंदा। सन्त कौर गृह वसे आप, काया मन्दिर अंदर बह बह जपे जाप, आपणा नाम आप सुणाइंदा। राम प्यारी उतरे साचे घाट दो जहानां मुक्के वाट, लख चुरासी गेड़ ना कोए रखाइंदा। गुरचरन कौर गुर सच्चा नात, पुरख अबिनाशी बणया पिता मात, समरथ आपणी दया कमाइंदा। दलजीत कौर मिटे अन्धेरी रात, उत्तम होई मानस ज़ात, जन्म अजन्म लेखे लाइंदा। हरबंस कौर पंजवें जन्म पुच्छी वात, हरिराय गुर दिती दात, कलयुग अन्तिम लेख चुकाइंदा। सतिवन्त कौर देवे सति, आत्म अन्तर ब्रह्म मति, गतमित आपणी आप जणाइंदा। हरिभजन कौर टुट्टी गंढु, अग्गे वस्त दिती वंड, दस्त बदस्त हथ्थ फड़ाइंदा। गुरदेव कौर इक्क अनन्द, बिन रसना सुणाए सुहागी छन्द, छहबर आपणे नाम लगाइंदा। जसबीर कौर आत्म अन्तर ठंढ, लेखा चुक्के बत्ती दन्द, दहि दिशा आपणा नूर इक्क दरसाइंदा। चुहत्तरां मुक्कया अन्तिम पन्ध, सारे मिल के गावण छन्द, सतिगुर साजण पाए ठंड, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साता चौका जगत बणाए नईया नौका नौ दर आपणी बूझ बुझाइंदा। सत्त चार वज्जी वधाई, चुहत्तर आपणा अंक बणाईआ। गुर अवतार रहे जस गाई, रसना सोहला एका गाईआ। इक्की जेठ होई

कुड़माई, विष्न ब्रह्मा शिव देण वधाईआ। त्रैगुण फूल रिहा बरसाँई, पंज तत्त हस्स हस्स नाच नचाईआ। तेई अवतार वेखण नैण उठाई, भगत अठारां कहिण धन्न धन्न जणेंदी माई, जो जननी आपणी गोद सुहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करन सिफ्त सालाही, रहिमत रहीम रहिमान इक्क कमाईआ। नूर जल्वा दिता दरसाँई, अन्ध अन्धेर रहिण कोए ना पाईआ। चार यार बण बण पाँधी वेखण राही, साडी होई अन्त सफ़ाई, वेले अन्त देवे ना कोए गवाहीआ। नाता तुटया जगत लोकाई, लोकमात अन्त रहिण ना पाईआ। नानक कहे मेरा गोसाँई, जन भगतां बेड़ा रिहा तराई, निरगुण निरगुण निरगुण सेवा आपणी करे चाँई चाँई, चाउ घनेरा इक्क रखाईआ। गोबिन्द कहे मेरी घाल पाई थाईं, इकट्ठे कीते जट्ट झीवर छींबे नाई, इक्क अमृत जाम दिता पिलाई, रस आपणा आप चखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सारे मिल के देण वधाई, तेरी कीती सके ना कोए उलटाई, उलटी रीत मात चलाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां इक्क दुआरे भोजन दिता छकाई, आपणी छुरी आपणा खण्डा नाम विच फिराई, अग्गे दिसे ना कोए कसाई, कलम नाल सब दा लेख मिटाईआ। कोई रहे ना देण जोगा गवाही, सब फड़े बाहों चरनां हेठ दए दबाईआ। जो दोए जोड़ निमस्कार कर कहे मेरी प्रभू दए सफ़ाई, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। फिर निमाणयां निताणयां फड़ बाहों लए उठाई, आपणी गोद उठाईआ। चुहत्तरां सेवा इक्क समझाई, इक्की जेठ इक्की मिल मिल पाई, साची सिक्खी दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान भोजन छकाण चाँई चाँई, हाढ़ सतारां सत सत सत दए समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हौली हौली करदा जाए आपणा सच विहारा, पहला विहारा आपणी झोली पाईआ।

✳ २२ जेठ २०१६ बिक्रमी जोगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ✳

साबत रखीए ईमान, जन चुहत्तर रहे जणाईआ। चार जुग दे विछड़े इकट्ठे होए आण, हरि सतिगुर ल्या मिलाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार इक्क दूजे दी करो पछाण, नैण नैण नाल मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस बणाई अञ्जील कुरान, ज्ञान गीता जो दृढ़ाईआ। जिस दा जल्वा तक्कदे रहे नूर महान, नूरो नूर सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे चरनां करदे रहे ध्यान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जिस नूं मन्नदे रहे वड अमाम, बेऐब परवरदिगार सच्चा खुदाईआ। जिस दे उत्ते रखदे रहे ईमान, सिदक सबूरी नाल हंढाईआ। जिस दा सुणदे रहे पैग़ाम, हक़ अवाज़ इक्क इलाहीआ। जिस शत्रुनासत नाम, नाम सति करी पढ़ाईआ। जिस दामनगीर पकड़या दाम, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। जिहनूं मन्नदे रहे

रमइया राम, राम रूप हरि वेस वटाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे घनईया शाम, मिल सखीआं रास रचाईआ। जिस नूं गोबिन्द करे प्रणाम, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं मुरीद करदे रहे सलाम, सलामां अलैकम मुर्शद रिहा जणाईआ। जिस दा भगत जपदे रहे नाम, जुग जुग आपणी रसना जिह्वा गाईआ। जिस खेड़ा बणाया नगर ग्राम, पंज तत्त बणत बणाईआ। जिस करया प्रकाश रवि ससि सूरज चन्न कोटन भान, मंडल मण्डप बणत बणाईआ। जिस नाच नचाया गोपी काहन, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जिस नाद सुणाया साचे काहन, धुन आत्मक राग अलाईआ। जिस दी मन्नदे रहे आण, हुक्मे हुक्म रिहा फिराईआ। तिस दी सारे करो पहचान, प्रभ आपणा वेस वटाईआ। उठो सारे करो ध्यान, सचखण्ड साचे वज्जी वधाईआ। लोकमात होया प्रधान, परम पुरख बेपरवाहीआ। जिस कोलों लैंदे रहे दान, बण भिखारी झोली अग्गे डाहीआ। सो साहिब प्रगट होया आण, अणडिठड़ी खेल कराईआ। साचे तख्त बहे भगवान, तख्त निवासी सोभा पाईआ। महल अटल उच्च मकान, महिफ़ल आपणे नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर रिहा सुहाईआ। सत्त चार सच दस्सण चुहत्तर , हरि हरि अंग लगाया। भगत दुआरे एका वसण, दूजा दर ना कोए तकाया। इक्क दूजे वल उठ उठ नस्सण, बण पाँधी पन्ध मुकाया। मेटे रैण अन्धेरी मसण, चन्द चांदना करे रुशनाया। जुग जन्म दी टुट्टी आया गंढुण, फड़ पल्लू बंध बंधाया। लख चुरासी विच्चों आया कढुण, सच संदेशा इक्क सुणाया। धर्म राए दी फाही आया वढुण, नाम खण्डा हत्थ चमकाया। सच निशाना आया गड्डुण, दो जहानां दए झुलाया। गुरमुख साचे आया सद्दण, घर घर संदेशा दए सुणाया। भाग लग्गा देस माझण, मजन चरन धूढ़ इश्नान कराया। निरवैर बणया सच्चा सज्जण, भउ सब दा दए मिटाया। अन्तिम वेले होया पर्दा कज्जण, सिर आपणा हत्थ टिकाया। चार जुग दी रखे लज्जण, लाजावन्त वेख वखाया। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, भाण्डा भरम भउ दए भन्नाया। जो जन सच सरनाई लग्गण, तिस जम का लेख चुकाया। त्रैगुण माया बुझे अग्न, अग्नी तत्त ना कोए तपाया। आप उठाए आपणे कंधन, बण कहार सेव कमाया। मस्तक लाए साचा चन्दन, तिलक ललाटी सगन मनाया। करे खेल मुकंद मुकंदन, मनोहर आपणा रंग रंगाया। इक्क सुणाए सुहागी छन्दन, दूसर वंड ना कोए वंडाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे रल के करीए बन्धन, बन्दीख़ाना सब दा दए तुड़ाया। कलयुग अन्तिम पिछला लेखा करन आया खण्डण, खण्डा एको हत्थ उठाया। साची दात जन भगतां आया वंडण, नाम भण्डारा रिहा वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा दरसाया। सत्त चार करन पुकार, चुहत्तर इक्क आवाज़ उठाईआ। वाहवा तेरा मिल्या दरबार, दर तेरे ख़ुशी मनाईआ। नाता तुट्टा

३०१ १२

झूठे संसार, झूठी माया पोह ना सके राईआ। तेरे प्रेम पाया गल विच हार, अठ्ठे पहर सुगंध रखाईआ। किरपा करी अपर अपार, बेअन्त आपणी दया कमाईआ। डुब्बदे पाथर दए तार, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। सत्तर बहत्तर बाहवां रहे उलार, चुहत्तरां आपणे संग मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उच्ची बोलण कूक जैकार, जै जैकार सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वजाए ताल, नारद आपणा नाच नचाईआ। काल महांकाल होए बेहाल, प्रभ अचरज खेल वरताईआ। सचखण्ड दवारा जन भगतां लोकमात दिता वखाल, बण सेवक सेव कमाईआ। गुरसिखां पिच्छे घाले आपे घाल, उलटी रीत मात चलाईआ। निरगुण बण के आया दलाल, सरगुण वेखे थाउँ थाईंआ। पुच्छणहार मुरीदां हाल, मुर्शद बणया बेपरवाहीआ। गोबिन्द सूरा नाल नाल, सूरबीर फेरी पाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, एका रंग दए रंगाईआ। जुग चौकड़ी अन्तिम हल्ल करे सवाल, गुर अवतार गए ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर वज्जे वधाईआ। वज्जे वधाई साचे घर, भगत भगवन्त आप सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखण खड़, चारों कुण्ट घेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी सत्तर बहत्तर चुहत्तर बध्धा लड़, लड़ी आपणी आप बंधाईआ। एथे ओथे दो जहान निरगुण पौड़े आए चढ़, आउँदा जांदा नजर किसे ना आईआ। जिस जन उपर किरपा दिती कर, अद्धविचकार रहि कोए ना जाईआ। गुरमुख ना जन्मे ना जाए मर, जिस जन अन्तिम आपणी गोद बहाईआ। असीं कलयुग अन्तिम कर के जाणा सर, बल आपणा आप प्रगटाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर, मठ्ठ शिवदुआला चुकया डर, डर इक्को हरि रघुराईआ। जिस दी सरन जाईए पढ़, मिले सरन सच्ची सरनाईआ। जिस दा अक्खर नाम जाईए पढ़, सो निष्अक्खर दए वखाईआ। कागद कलम शाही अन्तिम जाए सड़, सतिगुर सच्चा अग्नी भेंट ना कोए कराईआ। जिउँ भावे तिउँ कोटन कोटि गुर अवतार लोकमात लए धर, आप आपणा नाउँ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ। सत्त चार करन पुकार, वाहवा हरि हरि खेल कराया। जो घलदा रिहा गुर अवतार, पीर पैग़म्बर मात प्रगटाया। जिस नूं खाणी बाणी गाउँदी रही जुग चार, बण निमाणी सेव कमाया। जिस दा अक्खर अक्खर कलम शाही करदी रही त्यार, त्रैगुण अंदर वड़ वड़ मुख छुपाया। जिस नूं निउँ निउँ सजदा सीस करदा रिहा संसार, दोए जोड़ जोड़ सरनाया। सो साहिब अन्तिम कलयुग प्रगट होया आप निरँकार, निरगुण आपणा रूप धराया। सन्त साजण लए उभार, सति सति मन्त्र इक्क पढ़ाया। सच महल्ल दए वखाल, जिस घर अंदर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए बुझाया। हरिजन तेरी बुज्झी बात, प्रभ आपणी दया कमाईआ। खाणी बाणी लोकमात तेरी गाए गाथ, गा गा आपणा झट्ट लँघाईआ। गुर अवतार

पीर पैग़म्बर तेरा मंगदे गए साथ, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। अन्तर मन्त्र कर कर पूजा पाठ, परम पुरख इक्क सालाहीआ। कलयुग जीवां दे गए दात, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। हरि का नाउँ लिख्या ना जाए नाल कलम दुआत, गुर का नाउँ लिख लिख दस्से कलम शाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पहलों पढ़न इक्क जमात, हरि जू आपणा जुम्मला दए समझाईआ। सरगुण फेर बंधाए नात, तत्त तत्त नाल मिलाईआ। इक्क सुणाए आपणी गाथ, गाथा आपणी आप प्रगटाईआ। अक्खर अक्खर जगत पाठ, पाठ जगत जीवण जुगत दए समझाईआ। गा गा दस्से इक्को हरि कमलापात, दूजा कोए नज़र ना आईआ। जिस दा दीन मज़्हब ना कोई ज़ात, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निक्के निक्के बाले छोटे छोटे साक, सरगुण नाता इक्क समझाईआ। अन्तिम सब नूं करे ख़ाकी ख़ाक, पाक आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। वाहवा खेल पुरख समरथ, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, बण रैहबर राह चलाइंदा। भगत भगवान मिलावा हस्स हस्स, दर घर साचे आप कराइंदा। पहलों भगतां होए वस, फेर भगतां बन्धन पाइंदा। सिफ्त सालाही गाए जस, जस आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची नईया इक्क चलाइंदा। साची नईया हरि हरि नाम, हरि सतिगुर आप चलाईआ। जुग चौकड़ी करे पूरन काम, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर प्रगट हो हो खेले खेल विच जहान, दो जहानां वाली फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरी शाम, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क चलाईआ। साचा राह जगत चुहत्तर, चौ अक्खर मूल मुकाया। नाता तुट्टे जगत बहत्तर, नाड़ बहत्तर लए जगाया। आस रखे इक्को सत्तर, सिफ़रा सत्त करे रुशनाया। चार जुग दे विछड़े कर इकत्तर, एका गुण दए समझाया। बीज बीजया साचे वत्तर, बण किरसाना हल्ल चलाया। पिछला खेत वड्ढ वड्ढ करे सत्थर, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। वेखणहारा उच्चे टिल्ले पत्थर, समुंद सागर फोल फुलाया। चोटी चढ़ के बैठा सिखर, दिस किसे ना आया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा रिहा फिकर, कवण वेला भगतां लवां मिलाया। पीर पैग़म्बर वेखण बित्तर बित्तर, नेत्र नैण नैण उठाया। हरि जू नज़री आए उधर इधर, ख़ाली कुण्ट ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाया। मेल मिलाया अन्तिम कल, हरि आपणी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे भल्ल, भल्ल आपणे हथ्थ रखाईआ। कीता इकरार नाल बल, बल बावन आपणी गंढ पुवाईआ। बणे महल्ल इक्क अटल्ल, हरि सतिगुर सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां अंदर बहे रल, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ।

चौथे जुग लग्गे फल, बूटा इक्को इक्क लहराईआ। बाकी सुट्टे डूँग्घी डल्ल, कोई सके ना बाहर कढ्ढाईआ। जिस साहिब होया वल, तिस अक्ख सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहणे झोली पाईआ। लहिणा मिल्या विच संसार, चुहत्तर एका रंग रंगाइंदा। मेल मिलाया सच दुआर, दर दरबारा इक्क सुहाइंदा। इक्की जेठ दिवस विचार, एका इक्की गंढु पुआइंदा। इक्की इक्की कुलां तार, सिखी सिख नाल प्रणाइंदा। तिक्खी दस्से आपणी धार, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई भेव कोए ना पाइंदा। शरअ शरीअत मारे तेज़ कटार, मज़्ह्ब दीन खण्ड खण्ड वखाइंदा। चौह वरनां विच्चों कढ्ढे इक्क प्यार, गुरसिख आपणा रूप वटाइंदा। फिर दस्से साची धार, धारना आपणी आप बदलाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यार, सोहँ ढोला इक्क सिखाइंदा। महाराज शेर सिँघ वड बलकार, निरगुण आपणा बल प्रगटाइंदा। विष्नूं देवणहार भण्डार, घर घर आपणा रिज़क पहुंचाइंदा। भगवन सब दी पाए सार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी गोद रखाइंदा। आदि अन्त तिस दी होए जै जैकार, जै जैकार आपणे नाउँ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग जाए चढ़, उतर कदे ना जाईआ। सतिगुर वेखे फड़ फड़, गुरमुख सज्जण मेल मिलाईआ। दीन दयाल प्रभ किरपा कर, किरपन आपणी गोद बहाईआ। घर विच सुहाए साचा घर, घर विच वज्जे वधाईआ। सोहँ रूप आत्म परमात्म बण, बण बण आपणे मन्दिर डेरा लाईआ। लेखा जाणे जनणी जन, दाई दाया वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार एका गुण रिहा समझाईआ। एका गुण शब्द विचार, बुद्धि कम्म किसे ना आईआ। बुद्धि रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैण नीर वहाईआ। मेरा बल गया हार, बलहीण रही कुरलाईआ। वल छल कर के छल्ल गया निरँकार, मेरी चली ना कोई चतुराईआ। मैं पढ़ पढ़ पाउँदी रही सार, पढ़यां हथ्थ किसे ना आईआ। मैं लभ्भदी रही मन्दिर मस्जिद मढ्ढ शिवदुआले गुरुदुआर, चार दीवारी अंदर वड़ वड़ सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम भगतां कोलों सुणया हरि जू वसे काया महल अटल विच मीनार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। बिन तेल बाती दीपक करे उज्यार, हवन घ्रित ना कोए वखाईआ। प्रेम सुगंधी इक्को डार, दूजा धूप ना कोए धुखाईआ। बिन तन्दी तन्द वजाए सितार, अनहद आपणा राग सुणाईआ। ढोलक छैणा ना कोए खड़कार, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। बुद्धि ओथे पावे ना कोई सार, मनमति चले ना कोए चतुराईआ। सुरती शब्द करे प्यार, प्रभ मिले सच गुसाँईंआ। लहिणा देणा चुक्के विच संसार, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाईआ। पूजा कराए इक्क दरबार, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। हरि का इष्ट लोकमात कोई कर ना सके प्यार, बण ठठयार घाड़त घड़त ना लए घड़ाईआ। काग़ज़ अक्खर ना कोए अकार, निराकार

नूर रुशनाईआ। माटी पत्थर ना कोए पसार, घड़ घड़ छैणीआं नाल बुत्त ना कोए बणाईआ। मस्तक धूढ़ ना कोए संदूर लाए निरँकार, सीस तेल ना कोए पुआईआ। कंघा वाह ना बन्ने दस्तार, टोपी चोटी ना कोए टिकाईआ। माला तिलक जञ्ञू ना कोए विहार, बोदी मूंढ ना कोए रखाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस ना कोए पसार, हत्थ पैर नक्क मूँह अंग अंग ना कोए प्रगटाईआ। सचखण्ड वसे निरगुण निराकार, निरँकार रूप रंग रेख आपणे विच छिपाईआ। नौ सौ चुरानवें जुग गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देंदा रिहा अधार, बण अधारी दया कमाईआ। कलयुग अन्त प्रगट हो के आया विच संसार, जे कोई लभ्भे नज़र किसे ना आईआ। सरगुण अंदर वड़ के दस्सया आप विहार, कवण बिध भगतां अंदर वड़ के हरि जू रिहा समाईआ। निरगुण निरगुण सुणाए जैकार, निरगुण आत्म निरगुण परमात्म पंज तत्त नाउँ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्त चार एका घर वसाईआ। सच्चा जुम्मला नूरी जलाल, ज़ाहर आपणा नूर वखाईआ। आपणे घर रखे बेमिसाल, मिसाल जगत विच नज़र कोए ना आईआ। पीर पैग़म्बर वेख होण बेहाल, जिस जन एका झलक वखाईआ। अग्गे कोई फेर ना करे सवाल, सारे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। रसना कहिण असीं तेरे छोटे बाल, तेरे मकतब विच करन आए पढ़ाईआ। इक्को अल्फ़ दे सिखाल, तेरी अल्फ़ तेरी उल्फ़त कर कर आपणी खुशी मनाईआ। असीं बणे रहीए कंगाल, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तेरा जुम्मला लोक परलोक कोई ना सके भाल, हत्थ फड़ लोकमात सके ना कोए वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, घर साचे रिहा समाईआ।

✳ २२ जेठ २०१६ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ✳

सचखण्ड निवासी सच दुआरा, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। तख्त निवासी बण सिक्दारा, साचा हुक्म आप वरताईआ। विष्नूं आए चल दुआरा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा मेरा इक्क अखाड़ा, एका घर वज्जे वधाईआ। तेरा मेरा इक्क सहारा, आदि जुगादि खेल रचाईआ। तेरा मेरा इक्क नगारा, अनादी नाद वड वड्याईआ। तेरा मेरा इक्क वणजारा, वणज साचा हट्ट खुल्हाईआ। तेरा मेरा इक्क भण्डारा, वस्त साची सच वरताईआ। तेरा मेरा इक्क शृंगारा, बस्त्र भूशन साचे आपणे रंग रंगाईआ। तेरा मेरा खेल नारी कन्त पुरख नारा, पुरखोतम भेव कोए ना पाईआ। तेरा मेरा इक्क आधारा, लहिणा देणा झोली पाईआ। आदि आदि करया इकरारा, एका हुक्म सुणाईआ। नौ सौ चुरानवें जुग बणया रिहा सेवादारा, जुग

जुग साची सेव कमाईआ। अन्तिम कल लेखा चुक्के विच संसारा, हरि जू हरि हरि आप चुकाईआ। एका बोले सति जैकारा, तेरे नाम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं आपणे दर बहाईआ। ब्रह्मा कहे पारब्रह्म, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। तेरी कुक्खों आपे जम्म, आपणा सगन मनाईआ। लख चुरासी बेड़ा बन्नृ, घर घर जोत टिकाईआ। करे खेल जगत महान, जीव जंत वड्याईआ। नूरी दे दे साचा दान, दीवा बाती इक्क रुशनाईआ। कमलापाती सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाईआ। जुग चौकड़ी खेल करदा रिहा महान, घट घट आपणा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी बीते आण, वेला अन्तिम रिहा दिसाईआ। ब्रह्मा होए आप हैरान, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। हरि जू खेल करे वाली दो जहान, दोए दोए आपणा रूप प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण सच संदेशा दिता आण, एका हुक्म सुणाईआ । अन्तिम लेखा चुक्के जीव जहान, जोती जाता आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्मा नेत्र नैण उठाईआ। शिवजी शंकर वेख त्रिसूल, त्रै त्रै लोक ध्यान लगाइंदा। तेरा भुल्ले ना कदे असूल, असलीअत तेरी मुख रखाइंदा। तूं दाता सर्ब कन्त कन्तूहल, लख चुरासी तेरे अंग लगाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर चुकावणहारा मूल, लेखा सब दी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शंकर आपणी मंग मंगाइंदा। शंकर मंगे आपणा दान, झोली आपणी अग्गे डाहीआ। भोला नाथ करना परवान, भोले भाउ आपणे नाल मिलाईआ। नव नौ चार चुका ज्ञान, ज्ञान ध्यान ना कोए दृढ़ाईआ। बाली बुध होया बाल नादान, बालक तेरा रूप अख्वाईआ। दर दुआरे देणा माण, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। कलयुग लैणा अन्त पहचान, इक्को तेरी ओट तकाईआ। लख चुरासी मेटदा रिहा जुग जुग निशान, बण सेवक सेव कमाईआ। अन्त संदेशा सुणया आण, निरगुण नूर लोकमात करे रुशनाईआ। लेखा चुकाए नाउँ रखाए विष्नूं भगवान, विश्व आपणी कल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर एका हथ्थ टिकाईआ। त्रैगुण तत्ती नेत्र रोवे, रो रो दए दुहाईआ। खुल्ह्ड़े केस फड़ फड़ खोहवे, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पुरख अबिनाशी कलयुग अन्तिम सच फ़रमाना लै के आया ढोए, हरिजन साचे दए सुणाईआ। मेरी वात ना पुच्छे कोए, मेरा माण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन मिले ना कोए वड्याईआ। ना कोई वड़याई मेरे हरि, त्रैगुण नैणां नीर वहाया। मैं चल के आई तेरे दर, बण बरदी सेव कमाया। कोझी कमली बाहों लैणा फड़, इक्को आसरा रही तकाया। कलयुग अन्तिम मूँह दे भार डिग्गी दड़, मदहोश आपणा आप रही गुआया । कोई ना बन्नृाए तेरे लड़, पल्लू लड़ ना कोए बंधाया। तूं मात लगाई मेरी जड़, वेले अन्त क्यों रिहा उखड़ाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरन सरन मिले सच सरनाया। पंज तत्त रहे कुरला, बौहड़ी बौहड़ी देण दुहाईआ। साडा मन्दिर क्यों रिहा ढाह, बेरहिम रहिमत आपणी आप कमाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे अंदर देंदे रहे थाँ, बिन साडे गुर पीर अवतार नज़र कोए ना आईआ। साडे अंदर वड़ वड़ तेरा गाउँदे रहे नाँ, नाउँ निरँकारा मात सुणाईआ। कर किरपा सिर रख ठंडी छाँ, इक्क ओट तेरी तकाईआ। साडा निशाना मेट ना, तेरे हथ्थ साडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, इक्क तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार बैठे उठ, तेई आपणा राह तकाईआ। पहलों बणाए आपणे सुत, बणा सुत माण रखाईआ। द्वापर त्रेता सतिजुग सुहाउँदे रहे तेरी रुत्त, रुत्त रुतड़ी मात महकाईआ। अन्तिम तेरे कोल आए उठ, आपणे पल्ले गंढु ना कोए रखाईआ। कर किरपा आपणी गोदी चुक्क, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तेरे बूटे तुध बाझों जाण सुक्क, हरे मात ना कोए वखाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी बैठा रिहों लुक, कलयुग अन्तिम आपणा वेस वटाईआ। सिँघ रूप हो के रिहों बुक्क, जम्बक सारे रहे कुरलाईआ। साडे कोलों पिछला लेखा ना पुच्छ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे मिले वड्याईआ। पीर पैग़म्बर करन सलाह, ईसा मूसा मुहम्मद नैण नैण नाल मिलाईआ। पहलों फड़ फड़ मार्ग राहे दिता पा, हुक्मी हुक्म सेव लगाईआ। आपणा नूर कर जुदा, जुज आपणा रिहा जणाईआ। तेरा नाउँ दस्स के आए ख़ुदा, ख़ालक ख़लक ख़लक समझाईआ। असीं होए बेवफ़ा, वफ़ात आपणी तेरे हथ्थों कराईआ। तूं होणा ना अन्त ख़फ़ा, इक्को रहिमत मंग मंगाईआ। साडी चुक्क ना मूल सफ़ा, सिफ्त तेरी रहे कर कर सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे मिले वड्याईआ। गुर अवतार दस्स दस्स कहिण, दहि दिशा वेख वखाया। तुध बिन कोए नज़र ना आए नैण, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। लख चुरासी झूठा नाता साक सज्जण सैण, माया ममता मोह वधाया। अन्तिम लाड़ी मौत खाए डैण, थिर कोए रहिण ना पाया। कलयुग अन्तिम कर किरपा लोकमात जन भगतां आएयों लैण, लहिणा देणा मात चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, असां एका आस तकाया। दस गुर हो इकट्ठे, प्रभ डिग्गे सरन सरनाईआ। जुग जुग गेड़ें उलटी लट्ठे, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। पीर पैग़म्बर सारे आपणी हथ्थीं तेरी कलाम लिख लिख दे के आए पट्टे, पट्टेदारी बणाई सर्ब लोकाईआ। इक्क दूजे नूं फड़ फड़ दीन इस्लामा विच कटे, हद्द हदूद वंड वंडाईआ। कलम शाही नाल लिख लिख लेख फट्टे, फट्ट कोए ना सके मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, तुध बिन लेख अवर ना कोए मुकाईआ। दस गुर इक्को गाथा, कह कह रहे सुणाईआ। तूही पिता तूही माता, तेरी इक्को गोद सुहाईआ। तेरी सरन तेरा नाता, तेरे चरन सोभा पाईआ। तेरा नूर तेरी ज़ाता, तेरा ज़हूर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, घर साचे बह बह खुशी मनाईआ। भगत अठारां कहिण कौण, कवण आपणी रुत्त सुहाइंदा। कलयुग मेटे तत्ती पौण, सांतक सति सति वरताइंदा। हंकारया फड़ फड़ भन्ने धौण, मूँह दे भार सटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। भगत अठारां चरनी डिग्ग, आपणा माण मुकाया। पुरख अबिनाशी तेरे दुआरे मंगीए भिक्ख, भिक्खक झोली दे भराया। जुग चौकड़ी लेखा रिहा मुक्क, वेला अन्त नज़री आया। किसे कोल दिसे ना कुच्छ, ख़ाली हथ्थ रहे वखाया। साडी करनी हुण ना पुच्छ, जिउँ भावे तिउँ लै चलाया। सृष्ट सबाई बैठी रुस्स, मुखड़ा मुख मुख भुआया। कबीर जुलाहा कहे मैनूं लग्गा दुःख, मेरी सिख्या सिख के भगत ना कोए अख्वाया। मुड़ मुड़ जूनी मात गर्भ उलटा रुख, दस दस मास अग्न कुण्ड तपाया। असीं दूर दुराडे बैठे लुक, नेत्र नैण रहे शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अभुल्ल अभुल्ल अभुल्ल, भुल्ल सब दी दे बख़्शाया। बख़्शणहार इक्क गोपाल, हरि जू हरि हरि खेल कराईआ। सचखण्ड दे साचे लाल, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। पहला लेखा सिँघ पाल, सच पालकी विच रखाईआ। सिँघ सवरन हो दयाल, सावण रुत्त आप सुहाईआ। मनजीत लेखा दो जहान, बाली बुध बुध वड्याईआ। जगदीश सिख्या दए सखाल, साची सिख्या एका रंग वखाईआ। बल बावन खेल न्यार, बल उठया आपणी वार, दोए जोड़ कर निमस्कार, गोबिन्द लेखा अन्तिम वार, सिँघ गुरदयाल आपणी झोली पाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, करे कराए करनेहार, करता पुरख एकँकार, दूजा भेव कोए ना पाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, राजन राज आप गिरधार, सीस ताज जगत जगदीश इक्क सुहाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लहिणा देणा कर्ज़ दए उतार, वरन बरन करे ख़ुआर, ज़ात पात मारे मार, आत्म परमात्म एका रंग रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, पंज तत्त मेल मिलाए नाल, तेई अवतार बण दलाल, ईसा मूसा मुहम्मद चार यार जल्वा दए वखाल, गुर दस करे प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। सच संदेशा इक्क सिखाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा रिहा जणाईआ। साचा लहिणा अन्तिम मीत, पंचम मीता आप चुकाइंदा। सचखण्ड दी साची रीत, निरगुण सरगुण इक्क प्रीत, प्रीतीवान आप जणाइंदा। त्रैगुण अतीता ठांडा सीत, बैठा रहे इक्क अतीत, त्रैभवन धनी आपणी खेल आप कराइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां साधां

सन्तां अन्तिम आपे लए जीत, जित हार आपणे हथ्थ वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लख चुरासी परखणहारा नीत, घट घट आपणा खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण ईश जीव, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म सुनावणहारा साचा गीत, सोहला ढोला आप प्रगटाइंदा। नाता तोड़नहार मन्दिर मसीत, धाम वखाए इक्क अनडीठ, महल अटल अटल्ल इक्क रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा रखे आपणे हथ्थ, हरि आपणी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी वेस वटा पुरख समरथ, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। अक्खर बाणी बोध अगाध अकथनी अकथ, कथ कथ रसना जिह्वा गीत अलाइंदा। साधां सन्तां जीवां जंतां जीवण जुगती मार्ग दस्स, जगत धन्दे आप लगाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश मंडल मण्डप पावे रास, नित नवित करे हित अबिनाशी अचुत आपणा रूप अनूप धराइंदा। कलयुग अन्तिम एकँकारा वड बलकारा पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्क इकेला गया उठ, उठ उठ आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करन करावणहार करता कुदरत आपणा रंग वखाइंदा। कुदरत कादर वखाए रंग, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। सचखण्ड निवासी इक्क वजाए मृदंग, वड मर्दाना आप वजाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, दो जहान श्री भगवान धरत धवल पृथ्मी आकाश चरनां हेठ दबाईआ। जुगा जुगन्तर बुझाए बसन्तर सुणाए मन्त्र, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट आपणा आसण लाईआ। वसणहारा गगन गगनंतर, लेखा जाणे ब्रह्म निरंतर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता मेटणहार अन्धेरी राता सच सुणाए साची गाथा, निष्अक्खर पढ़ पढ़ साचे मन्दिर उच्ची चोटी चढ़ चढ़ आपणा राग अलाइंदा। कलयुग अन्तिम धर्म दुआरे आपे खड़ खड़, गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ फड़, लहिणा देणा नेत्र नैणां सब नूं रिहा वखाईआ। सरन सरनाई सारे पढ़ पढ़, मूँह दे भार डिग्गे दड़ दड़, अग्गे कोई ना सके अड़ अड़, आपणा बल ना कोए जणाईआ। आपणी किरपा आपे कर कर, देवणहारा साचा वर वर, जुग जुग वेखणहारा दर दर, घर घर आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आप मुकाईआ। सब दा लेखा अगम्म अपार, अलख अगोचर आप मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए उठाल, सच संदेशा नर नरेशा इक्क सुणाइंदा। शब्द अगम्मी बण दलाल, वेखणहारा हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणा भेव चुकाइंदा। गुरमुख सज्जण लए भाल, आपे वेखे बाले बाल, बाल अञ्याणे गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा एकँकारा विच संसारा, वड संसारी आप लगाइंदा। वड संसारी वड्डा वड, भेव किसे ना आया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी कुक्खों कढ्ढ, अन्तिम आपणे विच लए छुपाया। अक्खर नाम लोकमात जाए छड्ड, निष्अक्खर

नाम निरगुण निरगुण विच रखाया। पंज तत्त काया चोले विच्चों कढ्ढ, आप आपणी गोद टिकाया। अग्नी भेंट पंज तत्त काया हड्ड, धूंआँधार धार समाया। जुग जुग चलाए आपणी यद्द, भगतां भगवान लए प्रगटाया। सच दुआरे आपे सद्द, सच संदेशा दए सुणाया। करे कराए पार हद्द, पार किनारा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाया। जुग जुग राह अवल्लड़ा, चले चलाए हरि निरँकार। कलयुग अन्तिम करया खेल सुखल्लड़ा, सुख आत्म दए आधार। जोती शब्दी आपे रलड़ा, पंज तत्त ना कोए आकार। सच संदेशा इक्को घल्लड़ा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सति जैकार। जन भगत दुआर आपे खलड़ा, हरिजन साचे पाए सार। निहचल धाम वखाए इक्क अटल्लड़ा, ऊँचो ऊँच ऊँच मुनार। दीप प्रकाश एका बलड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपारा खेल न्यारा, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। कलयुग अन्तिम पार किनारा विच संसारा, निरगुण धारा आप वखाईआ। ऊँच नीच राउ रंक दे सहारा, एका नाम वणज वपारा, साचा हट्ट इक्क चलाईआ। एका मन्दिर गुरू दुआरा, इक्क ठाकर स्वामी पाए सारा, इक्को बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, नर हरि आपणी दया कमाईआ। नर हरि नरायण जोत निरँकार, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। पीत पीतम्बर सोहे सीस दस्तार, शब्द आधार इक्क रखाइंदा। सद्दा देवे दो जहान वारो वार, चार जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। सारे रल मिल गाउणा इक्क करतार, करनी करता आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, चरन कँवल सच ध्यान, अशनान अन्तर आत्म इक्क कराइंदा।

✳ २३ जेठ २०१६ बिक्रमी माया देवी दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ✳

बिन देख्यां लए देख, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। बिन पेख्यां लए पेख, पेखत पेखत खुशी मनाईआ। बिन लेखिउँ लिखे रेख, लेखा आपणा दए जणाईआ। बिन देसों वसाए साचा देस, आप आपणी वंड वंडाईआ। बिन नरेशों होए नरेश, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणी वंड वंडाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, ज्ञान आपणा नाउँ जणाइंदा। बिन तीर्थ कराए अशनान, चरन धूढ़ आप नुहाइंदा। बिन वस्तों देवे दान, नाम अनडिठी दौलत आप वरताइंदा। बिन पंज तत्त बणे साचा काहन, निरगुण नूर आप प्रगटाइंदा। बिन करनी देवे माण, करता पुरख जिस जन दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क रखाइंदा। बिन जगायां

जाए जाग, जागणहारा इक्क अख्वाईआ। बिन भागां लाए भाग, जिस दुआरे चरन छुहाईआ। बिन चिरागों जगाए चिराग, नूर आपणा इक्क धराईआ। बिन रस्सीउँ पकड़े वाग, बण सेवक सेव कमाईआ। बिन माघ मजन कराए साचे माघ, गुरसिख रत्ती रत्त वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। बिन जाणयां जाए जाण, जानणहार इक्क अख्वाइंदा। बण निमाणा निमाणयां देवे माण, माण इक्को इक्क वखाइंदा। जुग जुग विछड़े मेले दर दर आण, दर दरवेश खेल कराइंदा। बिन रसना जिह्वा गाए गाण, गाणा इक्को इक्क अल्ाइंदा। बिन बत्ती दन्द पीण खाण, अमृत रस इक्क चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा रंग वखाइंदा। बिन रंग चढ़ाए रंग, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। बिन डोर उडाए पतंग, सुरती शब्द नाल बंधाईआ। बिन ढाहिउँ ढाहे कंध, दूई द्वैती दए मिटाईआ। एका देवे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। गुरमुख पाए बन्धन बंध, बन्दीख़ाना इक्क वखाईआ। जिस बन्दीख़ाने भगत भगवान मिल मिल गायण छन्द, दूसर कोए रहिण ना पाईआ। उपर चढ़े ना कोए नाल कमंद, महल अटल नज़र किसे ना आईआ। कोटन कोटि जीव जंत साध सन्त जुग जुग मंगां रहे मंग, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ध्यान लगाईआ। पुरख बिधाता हरिजन विरले वसे संग, बण संगी साथ निभाईआ। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, बण पाँधी फेरा पाईआ। सचखण्ड दी साची वंड, गुरमुख साचे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बिन नेत्र वेखे नेत, नेड़ दूर ना कोए रखाइंदा। बिन पुछयां करे हेत, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। कलयुग अन्तिम मेटणहारा रेख, रेखा आपणी आप बदलाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष, गणेश गणपति आपणे राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करता कर कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। निरगुण सरगुण जोत धर धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। करे खेल जन्मे जन्म मर मर, मरन जम्मण गेड़े विच भुआईआ। वेस वटाए उच्च महल्ले चढ़ चढ़, दर घर साचे सोभा पाईआ। राग सुणाए निष्अक्खर पढ़ पढ़, अन्तर आत्म एका राग अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाद दए समझाईआ। साचा नाद श्री भगवान, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। थिर घर वजाए आप भगवान, भगवन आपणी सेव कमाइंदा। नज़र ना आए कोए निशान, आकार आकार ना कोए प्रगटाइंदा। कर किरपा देवे दान, गुर अवतारां अंदरे अंदर सुणाइंदा। भगत भगवन्त कर परवान, काया चोली अंदर राग अल्ाइंदा। साचे सन्तां सति निशान, घर घर विच आप वखाइंदा। निरगुण निरगुण खेल महान, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। एका

देवे सच ध्यान, चरन कँवल दरसाइंदा। एका आत्म दे ज्ञान, निष्अक्खर रूप वखाइंदा। बोलणहारा बे ज़बान, रसना जिह्वा ना कोए हलाइंदा। हुक्म देवे इक्क फ़रमाण, सच संदेशा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाद घर घर विच आप अलाइंदा। साचा नाद शब्द धुन, धुन आत्मक करे शनवाईआ। गुरमुख विरला लए सुण, जिस हरि जू आप सुणाईआ। आप जणाए आपणे गुण, अवगुण ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी छाण पुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राग इक्क समझाईआ। साचा राग गुरू गुर धार, घर घर विच आप जणाइंदा। किरपा कर अपर अपार, अपरम्पर आपणा भेव खुलाइंदा। रसना रस कर त्यार, रस अमृत मुख चखाइंदा। बत्ती दन्द दे आधार, सच आधारी दया कमाइंदा। अंदरों कढुणहारा बाहर, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। पंज तत्त बोल जैकार, नाद शब्दी नाद वजाइंदा। ब्रह्मण्ड विच कर पसार, जेरज अंड आप समझाइंदा। कलम शाही कर त्यार, सरगुण आपणी धार जणाइंदा। अक्खर अक्खर कर पसार, पसर पसारी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। खेल अनादी शब्दी बोध, बोध ज्ञान दृढ़ाईआ। भगत भगवन्त हिरदा सोध, हरि के पौड़े दए चढ़ाईआ। जीवण जुगत ना करे जोध, जोधा आपणा बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाद आप प्रगटाईआ। साचा नाद आए बाहर, रसना जिह्वा गुण गुण गाईआ। अन्तर अक्खर होए उज्यार, निरगुण सरगुण रूप वखाईआ। लोकमात कर त्यार, गुर गुर सेवा सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अक्खर रखे वक्खर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चोटी चढ़ के बैठा सिखर, सिक गुरमुख मिलण दी इक्क रखाईआ।

✳ २३ जेठ २०१६ बिक्रमी दौलत राम दे गृह पिण्ड कलोए जम्मू ✳

हरि किरपा गुर होए दयाल, गुर किरपा मिले जीव वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, घर घर विच बूझ बुझाईआ। जोत निरँजण दीपक एका बाल, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ। आत्म परमात्म वसे नाल, सगला संग रखाईआ। भय ब्यापे ना कोई काल, राए धर्म ना दए सजाईआ। लेखे लग्गे पंज तत्त काया माटी खाल, हड्ड मास नाड़ी रत्त करता कीमत पाईआ। हरि का नाउँ जो जन घालण रहे घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। वेले अन्त करे प्रितपाल, एथे ओथे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, हरि भगतन भगती इक्क दृढ़ाईआ। साची भगती आत्म रंग, गुर सतिगुर आप दृढ़ाइंदा। हरि किरपा नाता तुट्टे भुख नंग, सति सन्तोख धीरज सति, जत ज्ञान इक्क समझाइंदा। काया अन्तर पए ठंड, मन मनसा मोह चुकाइंदा। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाह कंध, नूर ज़हूर इक्क कराइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म सुणाए छन्द, गीत गोबिन्द इक्क अल्ाइंदा। दिवस रैण रहे अनन्द, अठ्ठे पहर जाम प्याइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, जुग जुग पार कराइंदा। दीन दयाल सदा बख़्शंद, ठाकर स्वामी हरिजन आप उठाइंदा। लेखा जाणे रसना जिह्वा बत्ती दन्द, घट घट अंदर खोज खुजाइंदा। माणस जन्म बेड़ा बन्न्ह, लोकमात पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। दयावान दीन दयाला, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वडी वड्याईआ। जन भगतां दस्से राह सुखाला, इक्को मन्त्र नाम पढ़ाईआ। गुर गुर रूप होए दलाला, सच दलाली इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह श्री भगवान, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। गुर गुर देवे एका दान, गुरमुखां झोली आप भराइंदा। घर मेला सुरती शब्दी काहन, गोपी आपणा नाच नचाइंदा। भेव चुकाए सीता राम, राम सीता इक्को रंग वखाइंदा। शब्द अगम्मी तीर निराला उठाए बाण, अणयाला आप चलाइंदा। नाता तोड़े पंज शैतान, झूठी शरअ ना कोए वखाइंदा। एका नाद सुणाए कान, धुंन अनादी आप अल्ाइंदा। कर प्रकाश कोटन भान, गुर सतिगुर वेख वखाइंदा। लग्गे भाग सच मकान, काया कंचन गढ़ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मिलाए आपणे घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर मन्दिर सोहे ठांडा दरबार, पंचम पंच जोड़ जुड़ाया। कमलापाती करे प्यार, बूंद स्वांती अमृत मुख चुआया। मेटे अन्धेरी राती धूंआधार, जोत निरँजण कर रुशनाया। देवे दरस दीन दयाल, दीदार सुअच्छ सरूपी रूप वखाया। आशा तृष्ना हउमे हंगता देवे मार, साची संगत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या एका अक्खर नाम पढ़ाया। साची सिख्या गुर शब्द वीचार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। चरन कँवल कँवल चरन धरत धवल दए सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वरन गोत ज़ात पात ऊँच नीच दु:ख दए निवार, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्म रूप नज़र आए संसार, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे एका नूर दए दरसाईआ। एका नूर साचा दरस, गुर सतिगुर आप कराइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, सांतक सति सति वरताइंदा। अमृत मेघ इक्को बरस, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाइंदा। एका राग सुणाए तर्ज़, साचा ढोला एका गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेटे विछोड़ा दरद, दर्दी आपणा दर्द वंडाइंदा।

दर्दी दर्द वंडाए दीनां नाथ, अनाथ अनाथां होए सहाईआ। हरिभगत चढ़ाए साचे राथ, महांसारथी बण रथवाही सेव कमाईआ। पार किनारे लाए घाट, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। जुग चौकड़ी अन्त भगवन्त जन भगतां पुच्छे वात, नित नवित कर कर हित्त, लोकमात फेरा पाईआ। कलयुग अन्त एका अक्खर देवे दात, आत्म परमात्म करे सच पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं पित मात, निरगुण सरगुण आपणी गोद उठाईआ।

✳ २३ जेठ २०१६ बिक्रमी देवी सिँघ दे गृह मघो वाली जम्मू ✳

थिर घर कहे मेरे दीन दयाल, थिर दिती माण वड्याईआ। सति सति दा सच निशान, सचखण्ड निवासी इक्क प्रगटाईआ। सुत दुलारा अवल्लड़ा लाल, लालन आपणे घर बहाईआ। मैं नेत्र पेख पेख होवां निहाल, आदि जुगादि खुशी मनाईआ। मेरा बंक बणया सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पूरी आस कराईआ। थिर घर दुआर मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। मेरा अन्तर सुहाई साची सेज पलँग, नेत्र नैण नज़र किसे ना आया। तेरा सुत दुलारा उत्ते चढ़ चढ़ बणे मलँघ, आप आपणा नाच नचाया। इक्क सुणाए सच मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा बेपरवाहया। सुत दुलारा तेरा उठ, मेरा घर सुहाईआ। सुहञ्जणी होई मेरी रुत्त, रुत्तड़ी इक्क महकाईआ। तूं साहिब ठाकर स्वामी अबिनाशी अचुत, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मन्दिर दिता सुहाईआ। मेरा मन्दिर तेरी निशानी, निशाना होर ना कोए रखाईआ। दीपक जगे जोत नुरानी, तेल बाती ना कोए पाईआ। करे खेल गुण निधानी, गुण आपणा आप जणाईआ। निष्अक्खर इक्को पढ़े बाणी, साचे बाले आप पढ़ाईआ। इक्को गाए अकथ कहाणी, कह कह खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिती सच वड्याईआ। थिर घर दुआरा प्या हस्स, प्रभ चरन ध्यान लगाया। मेरा खेड़ा गया वस, सुत तेरे आसण लाया। सच नूर कर प्रकाश, मेरा अन्ध अन्धेर मिटाया। तेरी इच्छया पूरी आस, मेरी आसा इच्छया विच टिकाया। नित नवित वसां तेरे चरन कँवल पास, चरन चरनोदक एका मंग मंगाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लग्गे ना फेर प्यास, तृष्ना मूल ना लागे राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेरी आसा पूर कराया। थिर घर दरबारे चढ़या चाअ, चाओ घनेरा इक्क रखाईआ। सचखण्ड दवारे अंदर मेरा घाड़त ल्या घड़ा, घड़न भन्नणहार आपणी दया कमाईआ। मेरी छप्पर छन्न लई सुहा, छहबर आपणी आप लगाईआ। आपणा

नूर कर रुशना, मेरी आसा पूर कराईआ। सुत दुलारा आपणा जाअ, शब्दी शब्द वंड वंडाईआ। मेरे तख्त दिता बहा, तख्त निवासी इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची दिती वड्याईआ। थिर दरबारा वेखे खेल, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। जोती शब्दी कर कर मेल, आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण निरगुण सज्जण सुहेल, सगला संग निभाइंदा। आदि आदि आपे जाणे आपणा वेल, अन्त अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। वसणहारा धाम नवेल, अगम्म अगम्मड़ी कार कराइंदा। वेस वटाए गुरू गुर चेल, गुर चेला आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे माण रखाइंदा। थिर घर साचा खोल्हे अक्ख, आपणा नैण उठाईआ। प्रभ प्रगट होया घर प्रतख, प्रतख आपणा रूप वटाईआ। सुत दुलारे कर के वक्ख, घर मेरे दए बहाईआ। इक्क सुणाए साचा जस, जस आपणा नाउँ प्रगटाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, साची खेल आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरी महिमा तोहे बण आईआ। थिर घर साचा करे पुकार, घर घर विच दए सुणाईआ। सुत दुलारा इक्क आधार, दूसर दिसे ना कोए सहाईआ। जुग चौकड़ी वेखे विच संसार, कोटन कोटि गए बिताईआ। रैहबर बण बण गए गुर अवतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को तेरा सच्चा दर, दर साचा इक्क रखाईआ। थिर घर कहे कोटन अवतार, तेरा शब्दी सुत सेवा लाइंदा। आवण जावण विच संसार, जुग जुग वेस वटाइंदा। गा गा जावण आपणी वार, जो सोहला राग सुणाइंदा। लिख लिख दे के जाण विच संसार, कागज़ कलम बन्धन पाइंदा। आपणी महिमा दस्स गुफ़तार, गुफ़त शनीद राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे बैठा चढ़, थिर घर वसाया मेरा घर, घर मेरा सोभा पाइंदा। थिर घर साचा कहे सुण प्रभ मेरा हाल, मैं आपणा हाल दयां सुणाईआ। तेरा शब्द सुत करे कमाल, कोटन कोटि पीर पैग़म्बर लए बणाईआ। निरगुण सरगुण कर दलाल, लोकमात फेरा पाईआ। किरन किरन किरन विच्चों एका किरन दए नूरी जलाल, धरत धवल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाया साचा घर, घर साचे खुशी मनाईआ। थिर घर कहे तेरा सुत दुलारा, भेव कोए ना आइंदा। जुगा जुगन्तर बण वणजारा, साचा हट्ट इक्क खुल्हाइंदा। आपणे घर विच्चों इक्क निक्का किणका गुर अवतारां दे आधारा, लोकमात सेव लगाइंदा। छोटी मोरी चोरी चोरी पर्दा आपे पाड़ा, निक्की निक्की नंना बण बण आपणी गुफ़तार सुणाइंदा। गुर अवतार करन वीचारा, शब्दी अन्त ना पारावारा, काया अंदर वजाए किंग सितारा, अनादी अनहद नाद सुणाइंदा। नेत्र खोल्हण नज़र ना आवे नौ खण्ड पृथमी विच संसारा, अंदर वड़ के बैठा डूँघी गारा, आउँदा जांदा

नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दिता सच्चा वर, मेरा मन्दिर सोभा पाइंदा। थिर घर दुआरा कहे मेरे भगवान, वाहवा तेरी वडी वड्याईआ। तेरा सुत इक्को नौजवान, ना मरे ना जाईआ। जुगा जुगन्तर देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदशा दए जणाईआ। तेरी इच्छया हो प्रधान, वरदान देवे सच्चा माहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव खेल महान, त्रैगुण मेला बन्धन पाए आण, पंज तत्त आपणी इच्छया लए प्रगटाईआ। लख चुरासी कर निशान, घट घट वेखे आप मकान, निरगुण सरगुण देवे दान, दाता दानी बण बण दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, रहिमत मेरे उत्ते कमाईआ। रहिमत करी आप रहिमान, थिर घर साचा कूक सुणाइंदा। शब्दी शब्द शब्द निशान, दो जहानां इक्क वखाइंदा। लख चुरासी कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लेखा लाए आप विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, तेरे चरन कँवल बह बह तेरा शुकर मनाइंदा। तेरे चरन कँवल सच सहारा, थिर घर रिहा सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेखदा रिहा वारो वारा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। तेरे हुक्मे अंदर तेरा सुत करदा रिहा आप पसारा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड सूरज चन्न कर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधारा, शास्त्र सिमरत वेद बण लिखारा, गुर अवतारां कर उज्यारा , नूर आपणा आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दिता सच्चा वर, तेरी महिमा दयां सुणाईआ। तेरी महिमा हरि अकथ, थिर घर साचा आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी वेख्या चलदा रथ, दो जहान खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण हो हो वक्ख, सरगुण निरगुण अंग लगाइंदा। तेरा जस नाउँ दस्सया हस्स, हस्स मुख सालाहइंदा। अन्तिम सब दी कर बस, बसता काया बन्नू वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाया साचा घर, जिस दुआरे बह बह खुशी मनाइंदा। थिर घर साचा कहे बोल, सच जैकार लगाईआ। नव नौ चार वेख्या तेरा तोल, अतुल तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी कर कर घोल, निरगुण सरगुण सरगुण नाल लड़ाईआ। आप बैठा रिहों अडोल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर फराईआ। अन्त कोई ना आया तेरे कोल, राह विच बैठे डेरा लाईआ। इक्क नानक मिली साची पहुल, अमृत चरन बूंद छुहाईआ। इक्क कबीरा गया मौल, जिस कीमत करते पाईआ। कोटन कोटि अवतार पैग़म्बर आपणे चरनां हेठां छड्डे रोल, रौला सारे रहे पाईआ । लोकमात चौदां लोक चौदां तबक जो वजा के आउँदे रहे ढोल, आप आपणा बल वखाईआ। तेरे दर दूर दुराडे बैठे रहे अनभोल, आप आपणा तेरे चरन ना सके छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दिता साचा वर, दर साचा मेरा नाउँ धराईआ। थिर घर मेरा

३१५ १२

रख्या नाउँ, थिर तेरी वड्याईआ। जुग जुग वेखां तेरा न्याउँ, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग, निरगुण हो के फड़या बाहों, सरगुण रूप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा दर, दर साची दयां जणाईआ। थिर घर कहे तूं निरगुण निरँकार, निराकार तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल वेख्या सरगुण धार, तत्त तत्त नाल मिलाईआ। कर किरपा एका वस्त झोली डार, ख़ाली झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, घर साचे आस रखाईआ। साचा वर कवण करतार, हरि जू पुच्छ पुछाइंदा। जुग चौकड़ी वेखदा रिहा संसार, लख चुरासी खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेवा लाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले राह चलाइंदा। वसणहारा हस्त कीटा, करे खेल इक्क अणडीठा, अनुभव आपणी धार रखाइंदा। भगत भगवान बण बण मीता, जगत जुगत चलाई रीता, साचे सन्त संग निभाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम कीता, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेला बीता, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। त्रैगुण वेखे तपे अंगीठा, पंज तत्त चढ़े उपर चिता, चिंता चिख़ा इक्क जलाइंदा। थिर घर प्यारे सुत दुलारे तेरी वंड इक्को दिता, तेरे घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खोल्ह भगवन्त, थिर घर साचे रिहा जणाईआ। कलयुग खेल करां वेले अन्त, बेअन्त आपणी धार रखाईआ। निरगुण मेला नार कन्त, कन्त सुहाग निरगुण आप अख्वाईआ। वसणहारा लख चुरासी जीव जंत, हुक्मे हुक्म आपणा पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। सच संदेशा कवण दर, हरि जू हरि जणाया। थिर घर मंगे एको वर, निउँ निउँ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, सच सुनेहड़ा रिहा जणाया। घर विच सुहावां साचा घर, बंक बंक नाल मिलाया। सुत दुलारा इक्को फड़, साचे मन्दिर दयां बहाया। निरगुण हो के वेखां खड़्, रूप रंग रेख ना कोए रखाया। जिस लगाई लख चुरासी जड़्, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे दए उठाया। थिर घर साचे कर ध्यान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सुत दुलारा वड बलवान, जुग जुग खेल कराइंदा। आदि मंगी इक्को दात कर ध्यान, चरन कँवल सीस झुकाइंदा। कवण वेला मेरा विछोड़ा चुकाएं दो जहान, जोती जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। कीता कौल श्री भगवान, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आण, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। साचा खेल करे वाली दो जहान, दोए दोए धार आप समझाइंदा। घर विच घर सच मकान, थिर घर तेरी

बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच दुआरा, लोकमात करे पसारा, पसर पसारी वेख वखाइंदा। थिर घर साचे रहिणा त्यार, हरि साचा सच जणाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल अपार, भेव कोए ना पाईआ। तेरा मन्दिर करे त्यार, निरगुण हो हो सेव कमाईआ। साचे तख्त बैठ सरकार, शहिनशाह वड वड्याईआ। सुत दुलारे दए आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नज़र ना आए विच संसार, बेनज़ीर आपणा खेल आप वखाईआ। साचा करे सति विहार, सति सतिवादी पर्दा लाहीआ। बोध अगाधी इक्क जैकार, जै जैकार आप सुणाईआ। थिर घर तेरा सच विहार, लोकमात दए समझाईआ। शब्द सुत कर प्यार, अबिनाशी अचुत्त रंग चढ़ाईआ। एका मन्दिर दए वखाल, साचे घर रहे रुशनाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। अठ्ठ पहर घाले घाल, घालणहारा आप हो जाईआ। पकड़ उठाए साचा लाल, लालन आपणी गोद बहाईआ। एका नाउँ दए सिखाल, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। एका देवे नूर जलाल, जल्वा नूर रूप इलाहीआ। एका कलमा दए सिखाल, वड पैग़म्बर सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दुआरा वेखे खड़, नर नरायण आपणा रूप वटाईआ। थिर घर साचे तेरा सुहाए बंक, बंक दुआरी दया कमाइंदा। नव नौ चार दा मेटे शंक, शरअ संसा ना कोए रखाइंदा। तेरे मन्दिर वजाए डंक, डंक आपणा नाम रखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी लेखा जाणे राउ रंक, चारे खाणी खोज खुजाइंदा। इक्क सुणाए साचा मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। प्रगट हो श्री भगवन्त, थिर घर तेरा दुआर आप वड्याइंदा। आत्म परमात्म मेला मिलाए निरगुण निरगुण नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहाइंदा। सोहँ नाम सुणाए अन्त, मंत आपणे विच मिलाइंदा। थिर घर शब्दी बणे बणत, सचखण्ड हरि जू आसण लाइंदा। आपणी महिमा गणाए अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर दुआरे आप समझाइंदा। थिर घर दुआरा कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग किस बिध उतरे पार, पार किनारा कवण कराईआ। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। हुक्मे अंदर जुग जुग सेवादार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर मात फिराईआ। अन्तिम लहिणा दे दे जुग जुग चार, चार चार पन्ध दए मुकाईआ। नौ दर वेखे खोल्ह किवाड़, नव खण्ड आपणा रंग वखाईआ। अन्तिम खेल करे अपार, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जाता वेस वटाईआ। जिस दी आस रखदे गए गुर अवतार, पीर पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। जिस बणाया तेरा दरबार, थिर घर दिती वड्याईआ। जिस नूं कहिन्दे एकँकार, अकल कल आपणी दए धराईआ। जिस ने करया आदि जुगादि पसार, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जो ब्रह्म ब्रह्मा दए आधार,

ब्रह्मांड आपणा खेल कराईआ। सो साहिब प्रगट होए अन्त विच संसार, निरगुण आपणे नाउँ करे रुशनाईआ। जोती शब्दी इक्क प्यार, एका गंढु पुआईआ। वरन गोती वसणहारा बाहर, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। इक्क इकलोती निरगुण जोत उज्यार, नूर नुरानी रही रुशनाईआ। तेरा सुहाए आप दुआर, दर दरवाज़ा लए खुल्हाईआ। शब्दी सुत आप उठाल, सच संदेशा दए सुणाईआ। उठ दुलारे मेरे लाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नौ सौ चुरानवें जुग दी लेखे लावे घाल, पूरब लहिणा झोली पाईआ। लख चुरासी विच्चों भगत भगवन्त लए संभाल, दर दर घर घर आपणा फेरा पाईआ। नाता तोड़े शाह कंगाल, शहिनशाह एका रंग सर्ब रंगाईआ। एका करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। निरगुण लोकमात हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। थिर घर तेरा दुआरा दए वखाल, आपणे चरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। थिर घर अग्गों कहे पुकार, मेरी समझ समझ विच ना आईआ। एथे मेरे नाल करें प्यार, इक्क इकल्ला सुत दुलारा विच बहाईआ। कलयुग कौण बणे तेरा मीत मुरार, लोकमात संग रखाईआ। जीव जंत होए विभचार, विभचारी रूप सृष्ट सुभाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त भगत दे दे आए तेरा ज्ञान, लोकमात जुग जुग सेव कमाईआ। लिख लिख कलम शाही दे के आए हलफीआ ब्यान, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। किसे लिख्या वेद किसे पुराण, कोई शास्त्र देवे दान, गीता ज्ञान कोए दृढ़ाईआ। कोई लिख लिख आया अञ्जील कुरान, कोई बाणी मारया निराला बाण, तीर निशाना इक्क चलाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी तेरी होई बेईमान, आपणा आप गई भुलाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए किसे श्री भगवान, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। आत्म परमात्म ना कोए ज्ञान, पढ़ पढ़ रसना कोटन देण दुहाईआ। किस नाल मेला करें विच जहान, सगला संग कवण रखाईआ। तेरा थिर घर दुआरा बिन तेरे मात दिसे वैरान, सोभावन्त ना कोए सहाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। थिर घर दुआरे कर ध्यान, बिन मेरी रहिमत तेरी बणत ना कोए बणाईआ। कलयुग अन्त खेल करां महान, महांबली आपणा नाउँ रखाईआ। लोकमात किसे दी मन्ना ना आण, आपणी आण सब नूं दयां मनाईआ। नौ सौ चुरानवें जुग दे विछड़े भगत बण भगवन्त मेला आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दुआरे चरन कँवल धरां आण, सो दुआरा थिर घर रूप वटाईआ। शब्दी शब्द झुलाए मेरा निशान, बण सेवक सेव कमाईआ। आत्म परमात्म इक्को राग गाण, सोहँ ढोला जै जैकार सुणाईआ। करे खेल वड बलवान, बलधारी आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस आदि रचना रची आण, सो अन्त वेखे चाँईं चाँईआ। आपणा नाउँ रख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे ठंडीआं छाईआं।

३१८ १२

✳ २३ जेठ २०१६ बिक्रमी दौलत राम दे गृह कोटली राईआ जम्मू ✳

सोहँ धारा आत्म परमात्म बन्धन, ब्रह्म पारब्रह्म कुड़माईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का लग्गा साचा चन्दन, निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। त्रैगुण माया त्रैगुण अतीता कटे फंदन, तन्दी तन्द ना कोए बंधाईआ। काया मन्दिर अंदर दरस दखाए त्रिलोकी नंदन, गोपी काहन आपणा खेल कराईआ। गीत सुहागी सुणाए साचा छन्दन, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। अनन्द अनन्द वखाए इक्क अनन्दन, मुकंद मनोहर लखमी नरायण वड वड्याईआ। करे खेल सद बख्शंदन, वड दाता बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर जन भगतां होए टुट्टी गंढुण, गंढुणहार गोपाल हरि गुसाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर मेला सच प्यार, घर घर विच सोभा पाइंदा। सीता सुरती कर प्यार, राम रम्मईआ अंग लगाइंदा। कूड़ी क्रिया जंगल जूह उजाड़ पहाड़, माया ममता हउमे हंगता थल असगाह पार कराइंदा। आत्म दयां शब्द ज्ञान, सच निशान इक्क रखाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन हरि जू हरि नरायण, नर एका राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोलणहारा हरन फरन आदि जुगादी तरनी तरन, तारनहार एकँकार गृह मन्दिर अंदर बज़र कपाटी कुण्डा तोड़ तुड़ाइंदा। आत्म सरोवर ठंडा ठारा, निझर झिरना झिराय अपर अपारा, कँवल नाभ नाभी कँवल आप उलटाइंदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा, दीवा बाती कमलापाती घर साचे आप जगाइंदा। आत्म परमात्म खेल न्यारा, पारब्रह्म ब्रह्म दए सहारा, ईश जीव जगत विहारा, बिवहारी आपणी धार चलाइंदा। वरन गोत ज़ात पात सब ते वसे बाहरा, ब्रह्म पारब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। माया ब्रह्म खेल न्यारा, वेखे विगसे वेखणहारा, लख चुरासी त्रैगुण माया झूठी छाया बन्धन पाइंदा। वसणहारा सच दुआरा, रूप रंग ते वसे बाहरा, निरगुण नूर निराकार आपणा रूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा आप सुहाइंदा। दर साचे मंगलाचार, पारब्रह्म ब्रह्म करे जणाईआ। अनहद शब्द अनादी नाद सच्ची धुन्कार, धुंन आत्मक राग अलाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणा राह चलाईआ। भगत भगवन्त लए जगा, शब्द सुनेहड़ा इक्क घला, बिन अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर मेल मिलाईआ। साचा मन्दिर हरीदुआर, हरि जू हरि हरि आप उपाइंदा। पंज तत्त अंदर खेल अपार, निरगुण सरगुण अंदर बह बह आप कराइंदा। आत्म सेजा कर त्यार, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। बिन रसना जिह्वा करे गुफ़तार, आपणी रफ़तार ना किसे समझाइंदा। दीद ईद शुनीद दए दीदार, दर साचे नूरो नूर दरसाइंदा। काया माटी साची हाटी वेखणहारा खोल्ह किवाड़, चौदां तबक

एका सबक राम राम आप पढ़ाइंदा। त्रैगुण माया अग्न बुझाए तत्ती हाढ़, करे प्रकाश बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ी एका रूप दरसाइंदा। जन भगतां फिरे पिच्छे अगाड़, सेवा करे एकओंकार, अकल कल आपणा रूप वटाइंदा। सतिजुग त्रेत द्वापर जुग जुग पावे सार, बण महांसारथी साचा रथ आप चलाइंदा। कथनी बदनी वसे बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल उच्च मीनार इक्क सुहाइंदा। काया मन्दिर साचा गढ़, हरि जू हरि हरि आप सुहाईआ। लख चुरासी अंदर वड़, घर घर सेज हंढाईआ। शब्द अगम्मी एका पढ़, निरगुण सरगुण दए सुणाईआ। आपे वेखे घाड़न घड़, घड़ घड़ आपे भन्न वखाईआ। महल अटल उच्च मीनारे आपे चढ़, गृह मन्दिर अंदर बैठा नूर कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म आपे फड़, सुरती शब्दी बन्ने लड़, आप खुल्हाए साचा दर, दर दरवेश नर नरेश हो दयाल, करता पुरख ठाकर स्वामी गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी आत्म धार, ब्रह्म ब्रह्म करे पसार, पारब्रह्म होए सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। लख चुरासी इक्को नाता, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। करे खेल प्रभ पुरख बिधाता, जुगत आपणे हत्थ रखाइंदा। जुग जुग वेखे खेल तमाशा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवणहारा सच दिलासा, धीरज धीर इक्क रखाइंदा। भगत भगवान पूरी करे आसा, आसा मनसा, मनसा आसा आपणे विच छुपाइंदा। साचे मंडल बह बह पाए रासा, गोपी काहन सुरती शब्दी नाच नचाइंदा। चरन कँवल उपर धवल धरनी धरत दए धरवासा, पुरख अकाल हो दयाल इक्को ओट वखाइंदा। करनहारा बन्द खुलासा, लेखा जाणे पवण स्वासा, पुरख अबिनाशी शाहो शाबाशा, साचा लेखा आपणे हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए काया घर, साचे मन्दिर बह बह खुशी मनाइंदा। साचा मन्दिर काया अंदर, हरि जू हरि हरि आप बणाया। पावे सार डूँघी कंदर, डूँघी भँवरी फोल फोलाया। आपे मारे आपणा जंदर, ना कोई सके मात तुड़ाया। लख चुरासी जगत वासना नौ दुआरे भाउँदी बन्दर, आसा मनसा मनसा आसा ना कोए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए साचा घर, घर मन्दिर कर रुशनाया। घर मन्दिर खुल्हे ताकी, हरि सतिगुर आप खुल्हाईआ। जन भगतां लहिणा देणा देवे बाकी, आप आपणा मेल मिलाईआ। अमृत जाम प्याए साचा साकी, अठे पहर खुमार रखाईआ। निरगुण शब्द चढ़ाए साची घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। आत्म सेज सुहाए साची खाटी, सच सिँघासण सोभा पाईआ। करे खेल बाजीगर नाटी, नट्ट नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। आदि जुगादि सर्ब जीआं दा इक्को कमलापाती, कँवल नैण सच्चा शहिनशाहीआ। खेले खेल दिवस राती, घड़ी पल्ल वंड ना कोए वखाईआ। जन

भगतां सदा सदा रखे प्रभाती, प्रभ आपणा नूर चमकाईआ। चार वरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश पुच्छणहारा वाती, ऊँच नीच राउ रंक आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाए काया मन्दिर, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। साची प्रभ देवे वीचार, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। आत्म दीआ कर उज्यार, दीपक जोत जोत जगाइंदा। नाता तोड़ सर्ब संसार, आत्म परमात्म गंढु पुआइंदा। वरन बरन कर खुआर, घर इक्को सोभा पाइंदा। पुरख अबिनाशी हर घट रिहा पसार, दूसर रूप नज़र कोए ना आइंदा। जन भगतां देवे आप कर प्यार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जुग चौकड़ी खेल न्यार, नव नौ चार वेख वखाइंदा। लेखा जानणहारा वेद चार, शास्त्र सिमरत पुराण पुराणी मोह वखाइंदा। गीता ज्ञान कर प्रधान, अठारां अध्याए हरि गाए भगत भगवान आप समझाइंदा। अञ्जील कुरान सच निशान, मिहबान बीदो मिहबान, मुकामे हक़ लाशरीक परवरदिगार आप अल्लाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद दे पैग़ाम, निउँ निउँ सजदा जणाए इक्क सलाम, अलैकम आपणा रूप दरसाइंदा। नानक निरगुण मन्त्र सतिनाम, सरगुण साजण पूरा करे काम, करता पुरख करनेहारा साची करनी किरत समझाइंदा। गोबिन्द मेला सुत दुलारा पुरख अकाल इक्क जैकारा, जै जैकार आपणे नाउँ जणाइंदा। चार वरन इक्क प्यारा, एका मन्दिर एका ठाकर एका गुरूदआरा, इष्ट दृष्ट इक्क खुल्लाइंदा। एका शब्द एका नाद एका धुन्कारा, मंगलाचार इक्क कराइंदा। एका पुरख पुरखोतम लख चुरासी वेख सृष्ट सबाई नारा, कन्त रूप अनूप धराइंदा। एका वसणहारा थिर घर सच्चे दरबारा, शब्दी रूप अनूप धराइंदा। एका सचखण्ड करे पसारा, सचखण्ड वासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। एका जुगा जुगन्तर लए अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। एका विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, त्रैगुण माया पंज तत्त जोड़ जुड़ाइंदा। एका इन्द इन्दरासण वेखे वेखणहारा, करोड़ तेतीसा फोल फुलाइंदा। एका भगत भगवन्त दए भण्डारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। एका सन्त साजण मेले विच संसारा, साख्यात रूप वटाइंदा। एका गुरमुख दए हुलारा, शब्द शब्दी रस वखाइंदा। एका गुरसिख सिख्या दए अपर अपारा, वरन बरन ज़ात पात नाता तोड़ तुड़ाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यारा, निहकर्मी कर्म कांड मूल चुकाइंदा। जिस काया मन्दिर अंदर वखाए आपणा सच दुआरा, सो जन निउँ निउँ सीस सीस झुकाइंदा। एका इष्ट मन्ने एकँकारा, एकँकारा हर घट डेरा लाइंदा। तेई अवतार उच्ची कूक बोल गए जैकारा, जै जैकार सर्ब सुणाइंदा। तोड़णहारा गढ़ हँकारा, गढ़ हँकारी आप खपाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद यारा, यारी यारां नाल रखाइंदा। भगत भगवन्त कर पसारा, पसर पसारी खेल कराइंदा। दस गुरू गुर इक्क वणजारा, साचा हट्ट जणाइंदा। चौदां तबक वेखणहारा, लोक चौदां साचा सोहला आपे गाइंदा। मंडल मण्डप पृथ्मी आकाश पुरी लोअ लावणहार

अखाड़ा, आप आपणा नट्टूआ नाच नचाइंदा। जीवण जुगत जाणे भुगत लख चुरासी अंदर वड़ वड़ वेखे डूँग्घी गारा, निज घर बह बह ताड़ी लाइंदा। सर्ब जीआं देवे इक्क सहारा, आत्म राम सर्ब प्यारा, राम राम रस जिह्वा इक्क वखाइंदा। एका कृष्न मीत मुरारा, एका ब्रह्मा विष्न दए सहारा, एका शंकर गंढु पुवाइंदा। एका ईसा मूसा मुहम्मद वखाए परवरदिगारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाइंदा। काया मन्दिर उच्च महल्ल सुणाए साचा नाअरा, साचे हुजरे सोभा पाइंदा। मुकामे हक़ हक़ वणजारा, करे खेल अगम्म अपारा, लाशरीक तौफ़ीक आपणी आप वखाइंदा। एका मन्दिर सच दुआरा, नानक गोबिन्द करे प्यारा, प्रेम रीती साची नीती जग जीवण दाता लोकमात समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन काया मन्दिर अंदर आपणा भेव चुकाइंदा। काया अंदर चुक्के भेव, हरि सतिगुर आप चुकाईआ। मिले प्रभ अलख अभेव, बेअन्त बेपरवाहीआ। नज़री आए वड देवी देव, देव आत्मा होए सहाईआ। भगत भगवन्त जणाए साची सेव, सेवक एका घर बहाईआ। लहिणा देणा मुके रसना जिहव, अजपा जाप आप वखाईआ। अमृत रस चखाए मेव, रसना रस दए मुकाईआ। कौस्तक निरगुण मस्तक लाए थेव, चौदां रतन रतन वड्याईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सदा नेहकेव, ग़रीब निमाणयां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां आत्म परमात्म मार्ग दए समझाईआ। आत्म परमात्म चुक्के ओहला, द्वैती पर्दा आप उठाईआ। भाग लगाए काया चोला, पंज तत्त अंदर वेख वखाईआ। एका राग सुणाए सोहला, छत्ती राग भेव ना आईआ। उलटा करे नाभ कौला, अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती घर विच दए वखाईआ। मेल मिलाए काहन कृष्न साँवल सवला, मुक्ट बैण बेपरवाहीआ। नूर इलाही इक्को अव्वला, आलमीन रूप खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन एका अक्खर दए पढ़ाईआ। एका अक्खर आख़र राम, राम रमइया आप प्रगटाइंदा। धुरदरगाही साचा नाम, जन भगतां झोली पाइंदा। मदि प्याला इक्को जाम, अमृत एका वार प्याइंदा। मिटे रैण अन्धेरी शाम, साचा चन्द आप चमकाइंदा। भाग लगाए काया खेड़ा नगर ग्राम, घर घर विच सोभा पाइंदा। साचा पंडत अंदर वड़ करे बिसराम, सुख आसण इक्क वखाइंदा। रसना जिह्वा ना कोए कलाम, कलमा नबी आप समझाइंदा। धुर संदेशा धुर कलाम, बिन लिख्यां आप जणाइंदा। बिन वेख्यां मिले राम, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर भगत दुआरा, जन भगतां आप समझाइंदा। जन भगतां देवे इक्को रमज़, रमज़ रमज़ नाल मिलाईआ। कोटन विच्चों जाए गुरमुख विरला समझ, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। दूई द्वैत माया ममता हउँमे हंगता जूठी झूठी कढ्ढे मरज, मरीज़ आपणे लेखे लाईआ। ज़ात पात वरन गोत मिटाए दरद, दर्दी

आपणा दर दए वखाईआ। नाम छुरी तिक्खी रख करद, पंच विकारा दए झटकाईआ। रुत्त मिटाए गर्म सर्द, एका रंग रंग रंगाईआ। गुरमुख मर्दाना होए मरद, मर्द मर्दानगी इक्क वखाईआ। नाता तोड़ अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्क दुआरा दए वखाईआ। हरिजन अन्तर वेख दुआरा, दर घर साचे खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म तेरे चरन सरन सच्ची निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। चार कुण्ट नौ खण्ड इक्को नज़री आए मन्दिर मस्जिद ठाकर दुआरा, मट्ठ शिवदुआला एका रूप वटाइंदा। घर घर दिसे राम पसारा, राम न्यारा आपणा हुक्म वरताइंदा। बल धरे दसरथ दुलारा, दूल्हा बण बण वेस वटाइंदा। खेले खेल विच संसारा, जगत सागर फोल फुलाइंदा। काया गागर अन्त किनारा, जन भगतां आप जणाइंदा। आत्म परमात्म मिलाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। सोहँ शब्द बोल जैकारा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर देवे वर, भगत भगवन्त आपे फड़, काया मन्दिर उच्चे टिल्ले चढ़, किला तोड़ हँकारी गढ़, निवण सो अक्खर जगत वक्खर ब्रह्म मति आत्म अन्तर आप पढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर गया बीत, राम कृष्न सेव कमाईआ। कलयुग खेल इक्क अनडीठ, नानक गोबिन्द गया समझाईआ। वेद व्यासा लिख लिख रीत, साची रीती गया जणाईआ। निरगुण बैठा इक्क अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। कलयुग अन्तिम जाए बीत, चार लख बत्ती हज़ार आरयू आपणे हुक्मे अंदर आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। राम कृष्न कर पसारा, नानक गोबिन्द आपणा डंक गए वजाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, उच्ची कूक गया समझाईआ। ब्राह्मण गौड़ा पूत सपूता उतरे आपणी धारा, उच्चे टिल्ले पर्बत सच सिँघासण आपणा आसण लाईआ। सम्बल वसे धाम न्यारा, उच्च महल्ल इक्क मनारा, नज़र किसे ना आईआ। नानक निरगुण कहे पुकारा, महांबली आए आपणी वारा, निहकलंका आपणा नाउँ रखाईआ। गोबिन्द तक्के राह किनारा, कल कल्की लए अन्त अवतारा, कलयुग वेखे वेखणहारा, रूप रंग रेख आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणे हुक्मे अंदर रिहा फिराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धार, लोकमात चलाईआ। सतिजुग उतरया आपणी वार, त्रेता अन्त रहिण ना पाईआ। द्वापर आई हार संसार, सागर बैठा पन्ध मुकाईआ। कलयुग लेखा लिख्या अपर अपार, चार लख मिली वड्याईआ। बत्ती दन्द गा गा थक्के बत्ती हज़ार, बत्ती बतीसा नाल रलाईआ। पुरख अबिनाशी सच विहार, जिउँ भावे तिउँ आपणे भाणे लए चलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर पसार, चारों कुण्ट डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

३२३
१२

आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ा कर पसारा, आपणा खेल कराया। सृष्ट सबाई होई विभचारा, साचा कन्त ना कोए हंढाया। धीआं भैणां करन वपारा, वणज वणजारा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग आपणा भेव चुकाया।

✳ २३ जेठ २०१६ बिक्रमी प्रकाश चन्द दे गृह मघो वाली जम्मू ✳

सचखण्ड निवासी थिर घर साजण साजा, लोकमात हरि बणत बणाईआ। करया खेल ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे दए वड्याईआ। ओथे नज़र ना आए कोई राजा, शहिनशाह ना कोए अख्वाईआ। शब्द अगम्मी रचया काजा, धुर संदेशा आख सुणाईआ। रोज़ा बांग ना कोए निमाज़ा, सजदा कर ना सीस झुकाईआ। ढोलक छैणा ना कोई वाजा, उच्ची कूक ना कोई सुणाईआ। मस्जिद मन्दिर मट्ठ शिवदुआले ना कोई दरवाजा, सेवादार ना कोई बणाईआ। मक्का काअबा ना कोई हाजी हाजा, हुजरा माटी ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा आप सुहाईआ। थिर घर साचा सच दुआर, थिर घर साचा आप बणाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, हरि साची धार चलाइंदा। लेखा जाण गुर अवतार, भगत भगवान खेल कराइंदा। सच संदेशा देवणहार, भेद अभेद आप खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी मारनहार मार, नाम खण्डा हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाइंदा। सच दुआरा एकँकारा, एका एक सुहाईआ। इक्को नाम इक्क जैकारा, एका घर वज्जे वधाईआ। एका बंक खोल्ह किवाड़ा, एका मन्दिर दए वसाईआ। एका वसे वसणहारा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। एका करे सच विहारा, जन भगतां मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे खेल वखाईआ। थिर घर साचा साचा मेला, हरि आपणा आप लगाइंदा। कलयुग अन्तिम बण बण सज्जण सुहेला, सगला संग आप निभाइंदा। आदि जुगादी वसणहारा धाम नवेला, ब्रह्म ब्रह्मादी भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सज्जण आप अख्वाइंदा। साचा सज्जण बण बण मीत, थिर दुआरे दए वड्याईआ। भगत भगवन्त साची रीत, जुगा जुगन्तर आप चलाईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, साचा हट्ट इक्क खुल्हाईआ। निरगुण निरगुण सुणाए गीत, सरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म सच प्रीत, साची सिख्या इक्क सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा दए सुहाईआ। थिर घर साचा हरि सुहाउणा, श्री भगवान आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख वखाउणा, वेखणहारा फेरी पाइंदा। भगत

भगवन्त आप उठाउणा, लोकमात नैण खुल्हाइंदा। फड़ फड़ बाहों गले लगाउणा, आप आपणी दया कमाइंदा। साचा अक्खर इक्क पड़्हौणा, अजपा जाप आप जणाइंदा। अन्तर मन्त्र इक्क वखाउणा, बसन्तर लग्गी अग्ग बुझाइंदा। दर दरवाजा इक्क खुलाउणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। साची हाटी वणज कराउणा, वस्त इक्को इक्क विकाइंदा। नाम ख़ज़ाना आप लुटाउणा, अतोट अतुट पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी थिर घर वेखणहारा, वेख वेख आपणी खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, भेव अभेदा दए जणाईआ। नव नौ चार पार किनारा, लेखा अन्त दए मुकाईआ। सति सतिवादी खोल्ह किवाड़ा, हरिजन साचे लए मिलाईआ। देवणहारा दरस दीदारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। माणस जन्म पावे सारा, पूरब लहिणा जाणे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर दुआरे मिल्या माण, हरि जू हरि हरि आप दिवाया। लोकमात कर परवान, परम पुरख वेख वखाया। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, सोहँ मन्त्र आप सुणाया। नाता तुट्टा जगत जहान, जग जीवण दाता हरि जू पाया। कागद कलम शाही होई हैरान, हरि हरि अचरज खेल रचाया। बिन मेरे पढ़यां गुरमुखां कीता आप ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। मैं वेंहदी रही मार ध्यान, चारों कुण्ट नैण उठाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणा दे दे गए ब्यान, लोकमात विच धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणी खेल कराया। थिर घर वज्जे इक्को नाद, अनादी आप वजाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्म खोजे चाँईं चाँईंआ। सन्त सुहेले आपे लाध, फड़ फड़ बाहों लए जगाईआ। निरगुण सरगुण लडाए लाड, आप आपणी गोद बहाईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाईआ। सतिजुग प्रगटाए साचे साध, साची साधना आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे गुरमुखां गुरसिखां रखे लाज, लाजावन्त भेव ना राईआ। रातीं सुत्तयां मार आवाज़, जुग जुग रुठ्यां लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे इक्क घर सुहाईआ। थिर घर मेला गुरमुख रंग, गुर गुर आप चढ़ाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, नाम डोरी तन्द बंधाइंदा। नाता छुटया बत्ती दन्द, जिह्वा गुण ना कोए रखाइंदा। आत्म परमात्म देवे इक्क अनन्द, निज घर बह बह ताड़ी लाइंदा। सोहँ गीत सुहागी छन्द, विष्न ब्रह्मा शिव रसना कह कह शुकर मनाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कट कट गए आपणा पन्ध, वेले अन्त कोए रहिण ना पाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी सर्ब जीआं बख्शंद, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। वसणहारा दुआरे सचखण्ड, सचखण्ड आपणी जोत जगाइंदा।

थिर दरबारा बेड़ा बन्न्, शब्दी शब्द वंड वंडाइंदा। नूरी किरन सूरज चन्द, चन्न चन्न चन्न रुशनाइंदा। जन भगतां बणे मात पित जननी जन, साक सज्जण आप अख्वाइंदा। थिर दरबारा कहे धन्न धन्न, पुरख अबिनाशी तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर आप वड्याइंदा। थिर घर सोहे मेरे भगत, भगवन्त मिले वड्याईआ। लेखे लग्गे बूंद रक्त, जिस आपणे रंग रंगाईआ। सेवा करे आदि शक्ति, चतुर्भुज होए सहाईआ। ना कोई वेला ना कोई वक्त, थित वार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। वड माण देवे हरि, हरि आपणी दया कमाइंदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले, गुरमुख गोबिन्द आपे फड़, गुरसिख बन्धन पाइंदा। राम राजा साचे तख्त बहे चढ़, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। कान्हा कृष्ना बन्न्हाए आपणे लड़, बन्धन एका डोर रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा हरि निरँकारा, थिर घर लोकमात सुहाइंदा। थिर घर दुआर सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। खेले खेल हरि पुरख आदि निरँजणा, नर नरायण वड वड्याईआ। एकओंकारा दीना नाथ दर्द दुःख भय भञ्जणा, अनुभव आपणी खेल रचाईआ। आदि निरँजण सूरा सरबंगणा, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। श्री भगवान सच महल्ल चढ़ाए इक्क रंगणा, रंग उतर कदे ना जाईआ। अबिनाशी करता वजाए मृदंगणा, अनादी नाद इक्क सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल करे सचखण्डना, सचखण्ड थिर घर रूप वखाईआ। ब्रह्म ब्रह्म मनाए सगना, साचा सगन इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा खेल कराईआ। थिर घर खेल करे करतार, करनहारा आप अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैभवन धनी आपणी धार चलाइंदा। चरन कँवल खोल्ह् किवाड़, थिर घर साचे दए बहाल, शब्द अगम्मी कर पसार, पसर पसारी सोभा पाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर दुआरा इक्क वड्याइंदा। थिर दुआरा अन्तिम कल, हरि जू आप वड्याईआ। सच संदेशा एका घल्ल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए बुलाईआ। दूर दुराडे नेरन नेरे आइन चल, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। अग्गे हो ना करे कोई गल्ल, बैठे नैण नैण छुपाईआ। दीन मज़ब लग्गा सल्ल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। उठ के तक्कण इक्क दूजे वल, हरि जू की रचन रिहा रचाईआ। निरगुण रूप दीपक जोत रिहा बल, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। सचखण्ड दवारे वेखे खल्ल, सुअच्छ सरूपी रूप वटाईआ। भुल्ल ना जाए घड़ी पल्ल, अभुल्ल बेपरवाहीआ। वेखणहारा लख चुरासी कुल, कुलवन्ता आपणी दया कमाईआ। जगत डाल्ही फल फुलवाड़ी वेखे फुल्ल, नौ सत्त नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ।

सच दुआरे सद्द दातार, हरि जू आपणा खेल जणाइंदा। पीर पैग़म्बर नैण लओ उग्घाड़, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। गुर गुर वेखो कर ध्यान, हरि ध्यानी ध्यान वखाइंदा। भगत भगवन्त करन परवान, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कलयुग अन्तिम सब दा लए ब्यान, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नेत्र वेखो हिन्दू मुस्लिमान, सिख ईसाई कवण रंग समाइंदा। कलयुग जीव पढ़ पढ़ थक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। बाणी तीर निराला ना मारे बाण, अणयाला रूप ना कोए वखाइंदा। कामी क्रोधी होए शैतान, शरअ शरीअत नाच नचाइंदा। साबत रखे ना कोए ईमान, साचा काअबा ना कोए सुहाइंदा। मन्त्र पढ़े ना कोए सतिनाम, अन्तर आत्म ना कोए मिलाइंदा। किसे मिले ना घर भगवान, सुंञी सेज सर्ब वखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी होए वैरान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर विच प्रभास, आसा पूर ना कोए कराइंदा। जूठ झूठ माया ममता कूड़ कुड़यारा पीण खाण, सच सुच रसना जिह्वा ना कोए गाइंदा। पंज तत्त अंदर काया वड़या इक्क शैतान, मन्न वासना जगत भुआइंदा। भरमे भुल्ले जीव नादान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रसना बोलो आपणी ज़बान, हरि जू सब दे ब्यान बिन कलम दुआत आपणे अन्तर बन्द वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे खेल कराइंदा। थिर घर दुआरे साचा वाली, वली अहिद एका सुत बणाईआ। धुरदरगाही बण के माली, बूटा वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर अन्तिम सारे कहिण साडे हथ्थ ख़ाली, वस्त कोए ना हथ्थ रखाईआ। सतिजुग त्रेता दुअपर कलयुग लोकमात तेरी घालण घाली, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। तेरा नाउँ दे के आए जगत दलाली, साचा हट्ट इक्क खुल्हाईआ। मार्ग दस्सया शाह कंगाली, शहिनशाह एका राह चलाईआ। कलयुग अन्त सृष्ट सबाई होई बेहाली, बेहबल हो रो रो दए दुहाईआ। चारो कुण्ट रैण अन्धेरी काली, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। मावां पुत्रां सेज सुखाली, सुख जगत जगत बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा आपणे ख़ाते रिहा पाईआ। साचा खाता दए वखाल, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। दीन मज़्हब ज़ात पात अन्त आए ज़िवाल, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। शरअ शरीअत मन्ने ना कोए सवाल, साचा मसला हरि जू आप हल्ल कराइंदा। इक्को घर शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वड्याइंदा। थिर घर दुआरे दए बहाल, फड़ बाहों भेव खुल्हाइंदा। उठो वेखो चलो नाल नाल, निरगुण निराकार लोकमात आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर दुआरे आप सुहाइंदा। थिर घर दुआरा आप सुहाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। भगत भगवन्त फड़ बहाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जीव जंत पर्दा लौहणा, मुख नक़ाब ना कोए

टिकाइंदा। साचा मन्दिर इक्क वखाउणा, जिस अंदर हरि जू जोत जगाइंदा। काया खेड़ा आप वसाउणा, पंचम झेड़ा आप मुकाइंदा। डुब्बदा बेड़ा पार कराउणा, बण खेवट खेटा पार कराइंदा। दीन मज़्हब दा पन्ध मुकाउणा, अन्तिम लेखा लेखे लाइंदा। गीत सुहागी छन्द सुणाउणा, चार वरनां आप पढ़ाइंदा। सोहँ ढोला सब ने गाउणा, दो जहान बचया कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां शुकर मनाउणा, कलयुग अन्तिम हरि जू फेरा पाइंदा। पूरब जन्म लहिणा देणा सर्ब चुकाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा आप वड्याइंदा। दर साचा वडा बलकार, बल बावन दए जणाईआ। तेरी सीआं कर्ज़ा दिता उतार, एका ढइया झोली पाईआ। एका नईया चले विच संसार, साचा सईया आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। बल तेरा सच मनारा, बावण आपणा रंग रंगाइंदा। इतल वितल सितल दा पार किनारा, लोकमात सोभा पाइंदा। गोबिन्द देवणहार हुलारा, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। सचखण्ड दा सच वणजारा, साची वस्त आप वरताइंदा। पंचम मीता हो उज्यारा, ठांडा सीता वेस वटाइंदा। इक्को गीत बोल जैकारा, जै जैकार आप अल्लाइंदा। थिर घर मन्दिर कर त्यारा, सचखण्ड आपणा रंग वखाइंदा। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर वसे हरि निरँकारा, हरि जू आपणा रूप प्रगटाइंदा। अग्गे पिच्छे दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर तेरा माण रखाइंदा। थिर घर तेरा माण रखंता, रघुपत एका एक अख्वाईआ। साची भूमका आप सुहंता, सोभनीक वडी वड्याईआ। करे खेल श्री भगवन्ता, भगवन आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे माण रखाईआ। सच दुआरे एकँकार, आपणा माण रखाइंदा। भगत भगवन्त कर त्यार, तार सतार इक्क हिलाइंदा। बहत्तर नाड़ कर उज्यार, बहत्तर आपणा भेव चुकाइंदा। सत्तर देवे सति दी धार, सांतक सति सति कराइंदा। चुहत्तर चुहत्तरां करे पार किनार, वेला अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआर सुहाए चुहत्तर, सत्त चार रंग रंगाया। मिले वड़याई जन बहत्तर, समरथ पुरख होए सहाया। एका वार कर इकत्तर, एकता रूप दए दरसाया। नाम सुणाए साचा मन्त्र, मति भेद ना कोए वखाया। बणावणहारा साची बणतर, घाड़न घड़त लए घड़ाया। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, गतमित आपणे हथ्थ रखाया । लेखा जाणे गगन गगनंतर, दो जहानां फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क वड्याआ। सच दुआरा हरि हरि चरन, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जन भगतां चुक्के मरन डरन, जन्म मरन फंद कटाईआ। नेत्र लोचण नैण खुल्ल्हे हरन फरन, प्रतख आपणा रूप दरसाईआ। भउ चुक्के वरन

३२८ १२

बरन, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। करता पुरख करनी करन, हरिजन कीमत आपे पाईआ। जिस जन रखाए आपणी सरन, तिस विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। थिर घर दुआरे सोहँ शब्द एका पढ़न, सचखण्ड निवासी वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारे अन्तिम चढ़न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे लए बहाईआ। भगत भगवन्त घर साचे बहणा, घर साचा इक्क सुहाइंदा। कलयुग अन्त वखाए नैणां, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। आत्म परमात्म सति सतिवादी पाए गहिणा, बस्त्र आपणा नाम वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। हरिजन सच्चा सच दुलारा, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। सचखण्ड दा सच हुलारा, सति सतिवादी आप झुलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, हरिजन तेरा भेव कोए ना पाईआ। छत्ती जुग दा पार किनारा उच्च मनारा, गुरमुख दूर दुराडे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवारे साचा रंग, सतिगुर पूरा आप रंगाइंदा। इक्को सेज इक्क पलँग, एका आसण सच वखाइंदा । इक्को लावणहारा अंग, अंगीकार इक्क कराइंदा। इक्क जणाए साचा अनन्द, परमानंद आपणा रस वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे आप बहाइंदा। दर घर साचे जोती जाता, जोती जोत जोत मिलाईआ। ना कोई पिता ना कोई माता, साक सज्जण सैण भैण भाई कोए नज़र ना आईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई तीर्थ अठसाठा, मन्दिर मस्जिद मट्ठ गुरदवार रूप ना कोए वखाईआ। ना कोई राम बेटा दसराथा, ना कोई कृष्न तरलोकी नाथा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। ना कोई पीर पैग़म्बर मुलां शेख़ मुसायक देवे साथा, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। नानक निरगुण पाकी पाका, पतित रूप ना कोए वखाईआ। गोबिन्द चरन कँवल बह बह गाए साका, महिमा अकथ कथ्थ सुणाईआ। करे खेल पुरख समराथा, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्त जन भगतां जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, आपणी भिच्छया आपे झोली पाईआ। फड़ फड़ बाहों दए दिलासा, धीरज धीर इक्क रखाईआ। अन्तिम सचखण्ड दवार करे निवासा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ । गुरमुख बणया कंचन कोई ना तोले तोला मासा, रत्ती रत्त मुल्ल ना कोए पुवाईआ। पुरख अबिनाशी करनहारा बन्द ख़लासा, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ । माणस जन्म करे रासा, लख चुरासी ना कोए भुवाईआ। नाता तुट्टे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर आपणा नूर करे रुशनाईआ। जन भगत रहे ना कोई प्यासा, अमृत मेघ इक्क प्याईआ। लेखे लाए रसन स्वासा, जो जन सोहँ ढोला गाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बरां साधां सन्तां हरि जू आपणा पहलों दस्सया खोल्ह खुलासा, भुलया कोए रहिण ना पाईआ। चार जुग

आपणे नालों छोटीआं छोटीआं गुर अवतार पैग़म्बर प्रगटाउँदा रिहा शाख़ां, आपणी जड़ ना किसे समझाईआ। अन्तिम सारे बेअन्त कह कह होए निरासा, अन्त कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच दुआरे दए वड्याईआ। सच दुआर मिली वड़याई, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। जन भगत होए कुड़माई, पुरख अबिनाशी सगन मनाइंदा। सेवा करे बण बण नैण नाई, नज़र किसे ना आइंदा। साचा गानां रिहा बन्नाई, नाम तन्द हथ्थ उठाइंदा। मैहन्दी रंगण इक्क रंगाई, लाल गुलाला रंग चढ़ाइंदा। पट्टी सीस रिहा गुंदाई, नेत्र नैण नैण मटकाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल रचाई, भेव कोए ना पाइंदा। त्रेता राम सीता इक्क व्याही, कृष्न राधा मेल मिलाइंदा। कलयुग अन्तिम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर गुरमुख सज्जण फड़ फड़ बाहीं, साचे डोले आप बहाइंदा। सचखण्ड दवारे लै के जाए चाँईं चाँईं, चाओ घनेरा इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुरती आप प्रनाइंदा। गुरमुख सखी कर परवान, परम पुरख दया कमाइंदा । निरगुण बण बण साचा काहन, बंसरी एका नाम सुणाइंदा। साचे मन्दिर रमइया राम, राम आप दृढ़ाइंदा। एका इच्छया दए पैग़ाम, अल्ला राणी बन्धन पाइंदा। ख़ावंद बीवी खेल महान, जगत सदीवी वेख वखाइंदा। नेत्र नैण नीवें होए क्यों, मस्त जवानी इक्क वखाइंदा। नूर इलाही बेपरवाही, सिदक सबूरी चौदां तबक वेख वखाइंदा । जल्वा तक्कणहार कोहतूरी सर्ब कल आपे भरपूरी, वसणहारा नेड़े दूरी, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सज्जण साचे फड़, सचखण्ड दवारे जाए चढ़, साचा डण्डा ब्रह्म ब्रह्मण्डां पारब्रह्म प्रभ आप लगाइंदा। उच्चा डण्डा उच्च महल्ल, हरि जू हरि हरि आप लगाईआ। वेखणहारा इक्क अटल्ल, अटल्ल बैठा बेपरवाहीआ। भगतां अंदर आपे रल, आपणा पर्दा दए खुलाईआ। जुग चौकड़ी जो करदा रिहा वल छल, अछल छलधारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, थिर घर साचा कर परवान, सचखण्ड वखाए इक्क निशान, साढे तिन्न हथ्थ माण रखाईआ।

✳ २४ जेठ २०१६ बिक्रमी ठाकर दास दे गृह मघो वाली जम्मू ✳

कर्म कांड जगत बन्धन, माया जंजाल ना कोए तुड़ाइंदा। हँकार विकार ना करे खण्डण, जूठ झूठ मोह ना कोए चुकाइंदा। सच दुआर ना करे कोए बन्धन, सीस जगदीश ना कोए झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, अन्तिम घर घर वेख वखाइंदा। सच सुच्च ना कोए धार, लख चुरासी जीव कुरलाईआ। मूर्ख मुग्ध होए गंवार, मनमति रही कुरलाईआ। अन्तर आत्म ना कोए प्यार, परम आत्म ना कोए मिलाईआ। अग्नी तत्त तपे अंग्यार, धूआँधार रही वखाईआ। घर घर नाता जुड़या जगत विकार, पंचम पंच देण दुहाईआ। शब्द राग ना कोए धुन्कार, सुन्न समाध ना कोए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म ना बणे मददगार, मुद्दई मुद्दाअलैह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा ख़लक खुदाईआ। सच नाम ना कोए सति, सति सति ना कोए दृढ़ाइंदा। गृह मन्दिर ना कोए ब्रह्म मत, ब्रह्म रूप ना कोए वखाइंदा। हरि चरन ना कोए नत, जगत नाता सर्ब रखाइंदा। बन्धन प्या मात पित, भाई भैण साक सज्जण मोह ना कोए चुकाइंदा। सतिगुर करे ना कोए हित्त, हवस हिवस ना कोए मिटाइंदा। चारों कुण्ट रस दिसे फिक, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। लिख लिख अक्खर शाही मंगी भिक्ख, भिच्छया सति ना कोए पाइंदा। नर नरायण नेत्र पए ना किसे दिस , सवच्छ सरूपी दरस कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी सुत्ता दे कर पिट्ठ, आपणी करवट ना हरि बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। सच सुच्च ना कोए प्यार, रीती प्रेम ना कोए जणाईआ। गृह गृह वसे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, गढ़ झूठा नज़री आईआ। रसना जिह्वा ना कोए आधार, दन्द बत्तीस ना कोए वड्याईआ। भगत भगवन्त ना करे कोए विचार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। माया रुल्ले रोवण ज़ारो ज़ार, चरन प्रीती घोल ना कोए घुंमाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जुगा जुगन्तर वेखणहार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई ना कोए संग, साचा संग ना कोए निभाइंदा। माणस माटी होए भंग, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गीत सुहागी ना सुणाए कोए छन्द, रसना जिह्वा सर्ब कुरलाइंदा। टुट्टी देवे ना कोए गंढ, गंढणहार गोपाल दयाल, नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई वेखे रंड, हरि कन्त सेज ना कोए सुहाइंदा। सृष्ट सबाई होई रंड, चार वरन दए दुहाईआ। चारों कुण्ट कल्लर कंध, कलयुग अन्तिम रिहा ढाहीआ। कोई ना सके बेड़ा बंध, बन्न्हणहार ना कोए अख्वाईआ। कलयुग जीव भागां मंद, आपा चीन भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेपरवाहीआ। सति सतिवाद ना कोए रस, रस अमृत ना कोए वखाइंदा। मन कामना जीव होए वस, वासना राम ना कोए रखाइंदा। जगत इच्छया रहे नस्स, वांग सुआन सर्ब भुवाइंदा। ना कोई मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। कूड़ी क्रिया अंदर गए फस, फाँसी जम ना कोए कटाइंदा। डूँग्घी

भँवरी गए धस, फड़ बाहों पार ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। सच ना दिसे कोए हट्ट, हटवाणा नज़र कोए ना आईआ। लहिणा चुक्या तीर्थ अठसठ, नारी पुरष नर नरायण नैण दर्शन कोए ना पाईआ। तट किनारा दीसे भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। सच सुच्च ना कोए विहार, बिवहारी नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवन्त ना कोए प्यार, पारब्रह्म ना कोए ध्याइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म कांड लेखा आप चुकाइंदा। कर्म कांड त्रैगुण माया, माया ममता वेख वखाईआ। कूड़ कुड़यारी वेखे छाया, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। आदि जुगादी दाई दाया, सेवक सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। मात पित पिता पूत उपाया, उतप्त आपणा रंग रंगाईआ। जुगा जुगन्तर खेल कराया, लख चुरासी लए प्रगटाईआ। भगत भगवन्त दे वड्याआ, अभेव अभेदा आप खुल्हाईआ। साचे मार्ग फड़ फड़ लाया, ज्ञान ध्यान इक्क समझाईआ। इक्को ओट अन्त रखाया, तन नगारे चोट लगाईआ। सिदक सबूरी तन हंढाया, मज़बूरी आपणा नाम रखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत दए रुढ़ाया, अग्नी भेंटा सेव कमाईआ। चरन प्रीती प्रीती चरन दए सरनाया, इष्ट देव इक्क वखाईआ। हक़ हक़ीक़त खोज खुजाया, लाशरीक बेपरवाहीआ। जगत शरीअत बन्धन पाया, बन्दीख़ाना वेखे सर्ब लोकाईआ। मुर्शद मुरीद लए तराया, तार सतार इक्क हिलाईआ। एका नूर नूर नज़री आया, बेनज़ीर नज़र आपणे नाल मिलाईआ। सतिजुग प्रहिलाद लेखे लाया, कलयुग मनसूर दए वड्याईआ। इक्क इक्क कर के गोद बहाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। काया तत्त अग्नी जगत तपाया, आत्म शांत शांत रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनसूर प्रहिलाद दे दे दाद, लोकमात दिती वड्याईआ। लोकमात वड़याई देह, तन माटी वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म साचा नेंह, नेंहों आपणे नाल लगाइंदा। अमृत अंमिउँ रस बरसे मेंह, मेघला आपणी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर हरि नरायण निरगुण सरगुण हो हो लेखा पार कराइंदा। प्रहिलाद मनसूर उतारया पार, पूरी आसा आप कराईआ। वेखणहारा सदा जुग चार, चौकड़ आपणा बन्धन पाईआ। नित नवित लै अवतार, हित्त आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला होए आप सहाईआ। सदा सुहेला होए सहायक, हरि साहिब सच्चा सुल्ताना। सृष्ट सबाई इक्को नायक, नर नरायण वड मर्दाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल करे महाना। कलयुग अन्तिम खेल महान, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। प्रगट हो श्री भगवान, भगत जन लए उठाईआ। एका बख़्श चरन ध्यान, चरन

चरनोदक मुख चुआईआ। किरपा करे वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। लेखा कट दो जहान, लेखे आपणे विच पाईआ। एका शब्द दे ज्ञान, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। एका ब्रह्म कर परवान, पारब्रह्म लए मिलाईआ। साचे भगतां दे दे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। ना कोई मारे जीव जहान, हरनाक्ष बण हथ्थ कटार ना कोए उठाईआ। ना कोई सूली चाढ़े फड़ जवान, मनसूर गल्ल विच फास ना कोए लटकाईआ। कर किरपा मिल्या आप भगवान, हरिजन साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाया आपणा घर, दरगह देवे माण वड्याईआ। दरगाह देवे हरि जू माण, निमाणयां गले लगाइंदा। मनसूर वेखे मार ध्यान, मनसा सब दी हरि जू पूर कराइंदा। कलयुग अन्तिम कर परवान, गुरमुख परवाने आपणी भेंट चढ़ाइंदा। प्रहिलाद रसना कहे धन्न भगवान, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। कलयुग अन्त सच निशान, दो जहान आप झुलाइंदा। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत सन्त साजण दे दे माण, पिछला माण सर्ब चुकाइंदा। जन भगतां भगती करी आप आण, साची शक्ति बणाई नार रकान, अंदर वड़ वड़ सेवा करे महान, देव देवा हँ ब्रह्म भोग लगाए साचा रस मेवा अलख अभेवा आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साख्यात साखी जन भगतां आप सुणाइंदा।

✳ २४ जेठ २०१६ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह दीवान गढ़ जम्मू ✳

सचखण्ड निवासी साचा सिशन, सच्चा हाकम हुक्म जणाइंदा। सतिजुग चलाए साचा मिशन, मिसल सब दी पिछली पाड़ वखाइंदा। दर मंगाए ब्रह्मा शिव विष्न, शब्दी डोरी बंध बंधाइंदा। त्रैगुण पंज तत्त सीस झुकण, चरन धूढ़ मस्तक मंग मंगाइंदा। गल पल्लू पायण राम कृष्न, अग्गे नैण ना कोए उठाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद हुसैन हसन, अली शाह शाह रग आपणी आप कटाइंदा। नानक गोबिन्द भाणा मन्नण, कीता हुक्म ना कोए उलटाइंदा। भगत अठारां कहिण तूं श्री भगवानन, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। हरि जू हरि प्रगट होए नौजवानन, बल आपणा आप धराइंदा। वेखणहार ज़िमीं असमानन, गगन मंडल खोज खुजाइंदा। सूरज चन्द देवणहारा चानण, जोती नूर नूर टिकाइंदा। शब्द अगम्मी चलावणहारा बानण, तीर अणयाला इक्क रखाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत पुराण, भेव खुल्हावणहार ज्ञानन, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी बणनहारा ज़ामन, साची ज़ामनी इक्क वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होए हैरानन, हरि का भेव कोए ना आइंदा। कलयुग

रैण अन्धेरी शामन, सच प्रकाश ना कोए वखाइंदा। घर घर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकारन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत आप कमाइंदा। दो जहानां साचा जज्ज, लख चुरासी वेख वखाईआ। सच सिंघासण बैठा सज, तख्त निवासी साचे तख्त डेरा लाईआ। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी दो जहान श्री भगवान सब दे खोलूणहारा पाज, पूरब लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। हुक्मे अंदर साचे मन्दिर उच्च महल्ले लए सद्द, सच संदेशा इक्क घलाईआ। निरगुण धार कर प्यार चरन कँवल आउणा नद्व, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। एकँकारा हरि निरँकारा पुरख अबिनाशी करे सच इकट्ठ, एका बन्धन देवे पाईआ। नाता तोड़ के आउणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, गुरुदुआरा अंग ना कोए रखाईआ। अग्गे खेल करे समरथ, समरथ दाता बेपरवाहीआ। लेखा लिखे आपणे हथ्थ, दूसर संग ना कोए रखाईआ। चौथे जुग लहिणा भट्ठ, भट्ठ खेड़ा दए वखाईआ। एका वार वछाए सत्थर सथ्थ, सफ़ा सब दी दए उठाईआ। सच विधान एका रख, पंचम देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। साचा सिशन एकँकार, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। चार जुग निवासी कर खबरदार, आलस निंद्रा सर्ब मिटाइंदा। वेखणहारा निरगुण जोत नूर कर प्रकाश, प्रकाशी आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, हरि जू आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर कर गिरफ़तार, आपणी गरिफ़त विच लिआईआ। सारे बद्धे कहिण तूं दाता तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जुग जुग करदे आए मात विहार, रामा कृष्ना नाउँ धराईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बण सरदार, सजदा एका सीस वखाईआ। नानक गोबिन्द बण पनिहार, सेवक सेवा सेव कमाईआ। लिख लिख अक्खर जगत ला के आए कार, सरगुण तेरी धार चलाईआ। तेरा रूप दस्स ना सके विच संसार, तेरी महिमा लिख लिख मात सुणाईआ। उच्ची कूक कह कह आए पुकार, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। साचा सिशन श्री भगवान, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाइंदा। सारे मन्नो इक्क ईमान, शरअ शरीअत इक्क जणाइंदा। सारे बोलो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। मन्नणी पए सब नूं आण, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। निउँ निउँ सारे चरन कँवल करन ध्यान, नेत्र नैण नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म हरि जू दए दलील, एका एक समझाईआ। अग्गे सुणे ना कोए अपील, ना कोई देवे सति सफ़ाईआ। सचखण्ड ना मिले कोए वकील, अद्धविचकारे सारे बैठण डेरा ढाहीआ। ना कोई पहने बस्त्र नील, कुण्डल कन्न ना कोए लटकाईआ। ना कोई रूप रंग

दिसे छैल छबील, जोबन तन ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। साचा हुक्म शाह सुल्ताना, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। मन्नणा पए अन्तिम भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। हुक्मे अंदर राजा राणा, हुक्मे अंदर रइयत रूप वखाइंदा। हुक्मे अंदर आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर पीर अवतार गायण गाणा, लिख लिख लेख जगत समझाइंदा। हुक्मे अंदर आवण जाणा, हुक्मे अंदर दो जहाना वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर देवे धुर फ़रमाणा, पिछला लेखा मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या साचे सिख, हरि हरिजन आप जणाईआ। अगला लेखा देवे लिख, लेखा पिछला आप मिटाईआ। सति धर्म नाम सति पाए भिख, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। एका नैण आए दिस, दोए लोचण बन्द कराईआ। किरपा करे उपर जिस, जिस आपणा भेव खुल्हाईआ। जन्म जन्म दी मेटे तरिख, तृष्ना अग्न ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म लोकमात, कलयुग अन्त अन्त वरताइंदा। चार जुग दा तुट्टे नात, नाता बिधाता आप कराइंदा। सतिजुग सुणाए साची गाथ, साची गाथा आप अल्हाइंदा। चार वरन झुकाए एका माथ, मस्तक नूर इक्क रुशनाइंदा। चारों कुण्ट एका पाठ, रसना जिह्वा एका गुण समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणा रंग रंगाइंदा। हुक्मे अंदर रंग अतीत, हरि सच्चा सच रंगाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, चौदस आपणा मूल मुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए अन्त ठीक, ठीकर सब दा भन्न वखाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार कर कर गए उडीक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए लाशरीक, सब दी शरअ दए गंवाईआ। आपणी धारा रखे बरीक, लिखण पढ़न विच ना आईआ। काया अंदर वड़ वड़ गुरमुखां कराए सच प्रीत, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। मेल मिलाए धाम अनडीठ, अनडिठड़ी रीती आप वखाईआ। सोहँ ढोला गाए आत्म परमात्म गीत, गीत गोबिन्द आप अल्हाईआ। काया करे ठांडी सीत, हिरदे हरि जू आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा दरगाह साची आप सुणाईआ। दरगाह साची सच सुहञ्जणा, हरि जू हरि हरि सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजना, नाथ अनाथां वेख वखाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान हो परवान नेत्र नाम निधान पाए अञ्जणा, अज्ञान अन्धेर लोकमात मिटाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी साचे मंडल पावे रासी, जन भगतां चरन धूढ़ कराए मजना, दुरमति मैल आप धुवाइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशान, वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकान, जन भगतां करे बन्द खुलासी, आवण जावण पतित पावण लख चुरासी गेड़ चुकाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग सति सतिवादी, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। आदि जुगादी इक्को वादी, आपणी कीती करता भुल्ल कदे ना जाईआ। शब्द जणाए बोध अगाधी, नाद वजाए इक्क अनादी, अनहद रागी राग सुणाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कागी, जन भगतां आत्म जाए साधी, साधन आपणा आप कराईआ। लेखे लाए काया माटी हाडी, रत्ती रत्त आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धन्दा एका दए वखाईआ। एका धन्दा हरि निरँकार, लख चुरासी आप जणाइंदा। पिछला लहिणा ना रहे विच संसार, हरि जू हरि हरि आप मुकाइंदा। सब ने बोलणा इक्क जैकार, जै जैकारा इक्क सुणाइंदा। एका मन्दिर होए उज्यार, हरि जू दीपक जोत जगाइंदा। इक्क सरोवर करे त्यार, अमृत ठंडा जल भराइंदा। गुरमुख साचे लए नुहाल, सांतक सति सरूप वखाइंदा। अन्त नेड़ ना आए काल, महांकाल मुख शरमाइंदा। तोड़नहारा जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। एथे ओथे सगल संग चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क संदेशा शाह कंगाल, सच दुआरे आप जणाइंदा। सच दुआरे हरि सच वसेरा, विष्न ब्रह्मा शिव चरन बहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पायण घेरा, चारों कुण्ट डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी तेरा वेंहदे रहे वेहड़ा, घर साचे सद्द ना कदे बहाईआ। लोकमात पा पा आए फेरा, बण मुसाफ़र फेरी पाईआ। तेरा भेव दस्से केहड़ा केहड़ा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरे हुक्मे अंदर दीन मज़्ब पा के आए झेड़ा, तुध बिन सके ना कोए मिटाईआ। चार कुण्ट चार वरन ज़ात पात वसया खेड़ा, काया खिड़की ना कोए खुल्हाईआ। उलटा वहण डूँघा गेड़ा, बण पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। हुक्मे अंदर गए आपणी वेरा, वेरवा तेरा पा पा आए सुणाईआ। अन्तिम कह के आए पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जिस उपर करे आपणी मेहरा, तिस आपणे नाल लए मिलाईआ। भाण्डा भरम भउ भनाए झूठा ढाहे डेरा, डेर कदे ना लाईआ। निज नेत्र दिसे नेरन नेरा, निज घर बैठा आसण लाईआ। आदि जुगादि बन्न्हणहारा बेड़ा, नाम चप्पू इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे हथ्थ रखी खेल करतार, जुग चौकड़ी नाच नचाइंदा। कोई कहे मैं रच के आया वेद चार, शास्त्र सिमरत कोए जणाइंदा। कोई कहे लेखा लिख्या अठारां पुराण, गीता ज्ञान कोए दृढ़ाइंदा। कोई कहे कलमा जणाया अञ्जील कुरान, मसला हक़ हक़ अल्लाइंदा। कोई कहे बाणी निराला मारया बाण, अणयाला तीर चलाइंदा। कोई कहे एको एक पुरख अकाल, बण सुत दुलारा सेव कमाइंदा। कोई कहे भगती देवे दान, भगवन आपणी वस्त झोली पाइंदा। पुरख अबिनाशी कहे जिस उपर होवां आप मेहरवान, बिन भगती लेखा लेखे पाइंदा। भाग

लगावां काया मन्दिर सच मकान, सच सिँघासण इक्क सुहाइंदा। कलयुग अन्तिम गुरमुख गुर गुर कर परवान, नाम परवानगी हथ्थ वखाइंदा। एका वार सचखण्ड दवारे करे रवान, रवानगी आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। साची सखी मिलावां काहन, काहन सुरती शब्दी बन्धन पाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवती भगवत आपणी गोद टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पृथ्मी आपणी धार चलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निरिच्छत इच्छया जन भगतां आप रखाइंदा।

✳ २४ जेठ २०१६ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह दीवान गढ़ जम्मू ✳

ठाठां विच्चों इक्को लहर, सच प्रेम दए वड्याईआ। जुग जन्म दा मेटे कहर, अग्नी तत्त बुझाईआ। मेल मिलावा गम्भीर गहर, गहरी भँवरी फोल फुलाईआ। पंच विकारा मारे ऐर ग़ैर, ग़ैरत आपणी इक्क जणाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सैर, साख्यात रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाईआ। अगम्म अथाह चाढ़े रंग, रंग मजीठी इक्क रंगाइंदा। साची डोर बन्ने तन्द, काचा तन्द ना कोए बणाइंदा। पुरख अबिनाशी पाए बन्धन बंध, बन्दीख़ाना सर्ब तुड़ाइंदा। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ध, अन्ध अन्धेर आप मिटाइंदा। इक्क वखाए परमानंद, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सर्ब जीआं दा साचा छन्द, सोहँ ढोला आप अलाइंदा। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, वड सागर आपणा रूप वखाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, चिंता चिक्खा अग्न बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल वखाइंदा। गहर गम्भीर गुणवन्त, अगम्म अथाह वड वड्याईआ। हरिजन मेले साचे सन्त, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए मिलाईआ। जिउँ नानक अंग लाया अंगत, गुर गुर आपणे अंग लगाईआ। मेल मिलाए फड़ फड़ संगत, विछड़ी कूंज डार रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवणहारा थाउँ थाईंआ। जगत विछोड़ा मिटे पन्ध, आवण जावण रहिण ना पाईआ। गुरमुख नाता तोड़े मदिरा मास गंद, जगत वासना ना होए हल्काईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल गुसाँईंआ। जो जन सति सतिवादी गावे साचा छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र मेहर इक्क टिकाईआ। मेहर नज़र हरि देवे पा, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। त्रैकाल दरसी त्रैगुण माया कटे फाह, फाँसी जम ना कोए लटकाइंदा। एका नाउँ दए समझा, नाउँ निरँकारा आप सुणाइंदा। डूँघी भँवरी बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। सति सतिवादी

३३७ १२

दए सलाह, साचे मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, डूँघा सागर नज़र किसे ना आईआ। फिर फिर थक्के विष्न ब्रह्मा शिव सुरपति राजा इन्द, इन्दरासण तज तज फेरा पाईआ। बिन हरिभगत दूसर बणाए किसे ना आपणी बिन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गहर गम्भीर आपणा नाउँ धराईआ। गहर गम्भीर होए गुरसिख, जिस हरि हरि दर्शन पाया। सतिगुर दीन दयाल लेखा दए लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। सदा सुहेला रखे साया हेठ, तत्ती वा ना लागे राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अथाह आपणा राह जणाया। अगम्म अथाह हरि बेअन्त, अन्त कोए ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्क भगवन्त, जुग जुग वेस वटाइंदा। हरिजन मेले साचे सन्त, सतिजुग आपणा रंग रंगाइंदा। कर किरपा बणाए बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख रलाए गुरसिख पंगत, आत्म नाता जोड़ जुड़ाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दूजे दर होण ना देवे मंगत, देवणहार बेपरवाहीआ। पंज तन पाक होए मात, मातर भूमी मिली वड्याईआ। पुरख अबिनाशी चरन कँवल जोड़ नात, नाता आपणे नाल रखाईआ। कलयुग काया चोला रख्या साथ, अंदर बाहर आपणा संग रखाईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुकाया मस्तक माथ, आपणे
३३८ हथ्थ रखी वड्याईआ। पंजां बणाई इक्को ज़ात, नाता तन दए तुड़ाईआ। निरगुण आत्म परमात्म पुच्छी वात, समरथ आपणी ३३८
दया कमाईआ। दरस दिखाया हो के साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। सचखण्ड दवारे पंजे होए पाक, पाक तन
१२ लोकमात मिली वड्याईआ। जगत निशानी रहि जाए धूढ़ी खाक, मनमुखां सिर पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १२
किरपा कर, पंज तन पाक आपणे रंग रंगाईआ। अली मुहम्मद इक्को राह, आलमीन आप अख्वाइंदा। आलमगीर कायनात करे नक़ाह, मुख नक़ाब पर्दा रखाइंदा। कोई कहे पोश रखे सयाह, सूरत सच ना किसे वखाइंदा। मुहम्मद जिस अग्गे मंगी दुआ, सो दूर दुराडा नेड़े हो हो फेरा पाइंदा। जिस अग्गे सजदा सीस दिता झुका, सो आपणे झरोके विच्चों खोल्ह आपणी नज़र तकाइंदा। जिस नूं किहा पाक इक्क खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। सो साहिब कोटन कोटि अली लए बणा, आपणी एका नज़र उठाइंदा। इक्क रसूल दए असूल, आलम करे पढ़ाईआ। इक्क रसूल दोहां विच्चों साबत रहे इक्क माकूल, जिस आपणी बणत बणाईआ। बाकी रसूल सारे जाण भूल, आप भुल्ल विच कदे ना आईआ। सो खुदावंद करीम सब दे बणावणहारा कानून, काइदा इक्को इक्क पढ़ाईआ। अल्फ़ पढ़ के सारे होए ममनून, मोमन आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रसूल रशू लिला सलव सलम स्वाद सादक सबर आपणा आप हंढाईआ।

चार यार कहिण सुण रसूल, रसम कवण जगत चलाईआ। मुहम्मद कहे मैं ना जाणा कवण कातिल कवण मकतूल, कवण छुरी रिहा वखाईआ। इक्क रसूल होए बेआब, इक्क आबहयात मंग मंगाईआ। इक्क रसूल मुरीदां मिले विच खुवाब, इक्क खुवाब विच नज़र ना आईआ। इक्क रसूल तक्के पुन सवाब, इक्क रसूल पुन सवाब ना कोए रखाईआ। इक्क रसूल होए मुख नक़ाब, इक्क रसूल पर्दानशीं ना कोए वड्याईआ। इक्क रसूल वजाए रबाब, इक्क अहिबाब आपणा रंग वखाईआ। इक्क रसूल लिख लिख जाए किताब, इक्क रसूल किताबां रिहा पढ़ाईआ। सो रसूल सच्चा जनाब, जिस मख़लूक लई उपाईआ। सदा रहे आदि जुगादि, मुकामे हक़ आसण लाईआ। कोई कहे करीम करता काद, कादर कुदरत आपणी खेल कराईआ। इक्क रसूल करे याद, इक्क रसूल याददासत आपणी सब नूं रिहा कराईआ। इक्क रसूल काया माटी नाड़ी मास हाड, इक्क रसूल निरगुण नूर रुशनाईआ। इक्क रसूल मात पित, पित भाई भैण बणाए दादी दाद, इक्क रसूल रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। सो रसूल करना याद, जिस याद कीत्यां विसरे आपणी पिता माईआ। इक्क रसूल पाक इक्क रसूल ख़ाक, इक्क रसूल नाद, इक्क रसूल स्वाद, शहीद देवे ना किसे शहादत, अग्गे हो ना किसे बचाईआ। थोड़ी बन्दगी लेखे लाए इबादत, किनका किनका झोली पाईआ। निक्की निक्की हरि जू आपणी रखी आदत, बाल बालां नाल लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त शहीद ना किसे जणाईआ।

✳ २४ जेठ २०१६ बिक्रमी जम्मू ✳

चार खाणी सुण पुकार, ख़ाना आपणा अन्त खुल्हाईआ। चार वरन पावे सार, अन्जाण बेपरवाहीआ। चार कुण्ट वेख विचार, वेखणहारा वेखे थाउँ थाईंआ। चार जुग कर्ज़ उतार, लहिणा देणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल पुरख समरथ, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। कूड़ी क्रिया जाए ढठ्ठ, कूड़ा बंधप तोड़ तुड़ाइंदा। कूड़ा खेड़ा होए भठ्ठ, अग्नी भठ्ठ आप तपाइंदा। कूड़ा मार्ग जाए नस्स, साचा मार्ग आप वखाइंदा। कूड़ी रैण मिटे अन्धेरी मस, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। कूड़ा नाता जाए छड्ड, सच सुच्च बन्धन पाइंदा। कूड़ी माया वेखे काया माटी हड्ड, सच निरगुण नूर जणाइंदा। कूड़ कुड़यार कलयुग यद, सच सतिजुग राह वखाइंदा। कूड़ रस रसना मदि, सच अमृत रस चखाइंदा। कूड़ ढोल मृदंग नगारा वज्जे नद, सच आत्मक नाद सुणाइंदा। कूड़ कुड़यार लोकमात विच्चों देवे कढ्ढ, सच धर्म इक्क निशान झुलाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा राह वखाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। आपणा रूप धरे सच्च, साची सिख्या इक्क समझाईआ। पंच विकार ना जाए नच्च, नटुआ नट्ट ना रूप वटाईआ। गुरमुख अग्न ना जाए मच, तत्ती वा ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल खेले बेपरवाहीआ। खेल खेलणहार गोपाल, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। सतिजुग दी सच धर्मसाल, सच दुआरा आप सुहाइंदा। भगत भगवन्त लए बिठाल, बह बह आपणा रंग रंगाइंदा। साचा मन्त्र नाम सुखाल, साखी आपणी आप पढ़ाइंदा। लेखा जाण शाह कंगाल, काया कपड़ कोट आपणा रंग रंगाइंदा। धर्म दुआरे बण दलाल, पंच सवारी पार कराइंदा। भगत उधारी इक्क निरँकार, नाम जैकारी आप अलाइंदा। वज्जे सतारी दो जहान, दोए दोए आपणा रंग वखाइंदा। भगत उडारी श्री भगवान, दर घर साचे आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वखाइंदा। भगत उडारी शब्दी डोर, डोर तन्द नज़र किसे ना आईआ। कर प्रकाश अन्ध घोर, घोर अन्ध दए मिटाईआ। कूड़ कुड़यारा ना पावे शोर, जूठ झूठ ना कोए हल्काईआ। मेटणहारा पंचम चोर, पंचम मोह दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां जाणे साची लोड़, हरिजन साचे खोज खुजाईआ। भगतां लोड़े आप हरि, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। दर दरवेश फिरे दर दर, दर दर आपणी अलख जगाइंदा। पावे सार घर घर, घर घर विच पर्दा लाहइंदा। वेखणहारा नारी नर, नर नरायण खेल कराइंदा। पावे सार डूँघे सर, सर सरोवर फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। भेव चुकाए डूँघे सागर, गहर गम्भीर दया कमाईआ। वेखणहारा काया गागर, काया कवरी खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म गृह मन्दिर देवे आदर, माण ताण इक्क रखाईआ। साचा वणज वपार कराए सौदागर, साची वस्त इक्क वखाईआ। लेखा जाणे तेग़ बहादर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। खेल वखाए चाओ घनेरा, भिन्नड़ी रैण रही जस गाईआ। हरिजन कहे मैं तेरा तूं मेरा तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव ना जाणे कोए राईआ। तेरे अंदर साचे मन्दिर लाया डेरा, काया किला कोट सुहाईआ। रसना सृष्ट सबाई कहे सिँघ शेरा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भगत दुआरा खुल्ला रख्या वेहड़ा, गुरमुख सज्जण लए मिलाईआ। अन्तिम कल चुकाया झेड़ा, साचा खेड़ा आप वसाईआ। रुढ़दा बन्ने लाया बेड़ा, मँझधार बाहर कढ्ढाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होया दलेरा, बल आपणा आप प्रगटाईआ।

३४० १२

✻ २६ जेठ २०१६ बिक्रमी नरायण सिँघ कंग दे गृह ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, अलख अगोचर आपणी धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, बेअन्त भेव कोए ना पाइंदा। एकँकारा सति सतिवादी सति मलाह, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर रुशना, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा हर घट थाँ, दो जहानां खेल कराइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशां, धर्म निशाना इक्क वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस लए वटा, रूप अनूप आप धराइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, हुक्मी हुक्म आप अलाइंदा। आपणी इच्छया लए प्रगटा, साची इच्छया इक्क रखाइंदा। सचखण्ड दवारा लए बणा, छपरी छन्न ना कोए छुहाइंदा। निर्मल दीआ बाती लए टिका, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। कमलापाती नाउँ रखा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। शाहो भूप बण शहिनशाह, राज राजान आपणा बल धराइंदा। सीस जगदीश ताज टिका, दर बंक इक्क वड्याइंदा। दर दरवेश बण दर बैठे सीस झुका, अलख अलखणा आपणी अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दवारे साची धार करे कराए करनेहार, करता पुरख आपणी कार आप कराइंदा। करता पुरख करने योग, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। आपे करे आपणा सति संजोग, रूप रंग रेख ना किसे जणाईआ। आपे पढ़े आपणा सति सलोक, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। आपे आपणा दुआरा प्रगटाए साचा कोट, चार दीवार ना कोए जणाईआ। आपे कर प्रकाश निर्मल जोत, नूरो नूर नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी गृह मन्दिर आप सुहाईआ। गृह मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। करे खेल प्रभ बेअन्त, आपणी धारा आप प्रगटाइंदा। आपे नार आपे कन्त, कन्त कन्तूहल आप अख्वाइंदा। आप बणाए साची बणत, बसन बनवारी आपणा रंग रंगाइंदा। आपे महिमा गाए अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दवारा वड्डा वड, हरि जू हरि हरि आप वड्याईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आपणे नूर हो प्रगट, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। आपे जाणे महिमा अकथ, कथनी कोए कथ ना सके राईआ। आप चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे धन्दे लाईआ। आपणा करे आपे वस, आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड दवारे साचा राणा, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। तख्त निवासी शाह शाहाना, साचे तख्त सोभा पाइंदा। निरगुण नूर नूर महाना, नूरो नूर

नूर डगमगाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, तख्त निवासी तख्त सोभा पाइंदा। तख्त निवासी एकँकार, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। वसणहारा धाम न्यार, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। लाशरीक परवरदिगार, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया झोली पाईआ। नार कन्त कर विहार, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। पूत सपूता इक्क दुलार, हरि शब्दी शब्द प्रगटाईआ। दाई दाया बण आप करतार, सेवक सेवा सेव कमाईआ। करे कराए सच विहार, बिवहारी आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे वेखे खड़, पूत सपूता आपणी गोद बहाईआ। पूत सपूता साचा सुत, हरि शब्दी शब्द प्रगटाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। सचखण्ड दवार सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। निरगुण धार आपे उठ, निरगुण आपणा रंग वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवार आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवार सुहञ्जणा, हरि सतिगुर आप सुहाईआ। करे खेल आदि निरँजणा, आदि पुरख बेपरवाहीआ। सदा सुहेला दर्द दुःख भय भञ्जणा, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। मीत प्यारा बण बण सज्जणा, साचा संग आप रखाईआ। आपे धूढ़ी आपे मजना, सच अशनान आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे वसे हरि, थिर घर आपणा हुक्म जणाईआ। थिर घर साचा खेल करतार, हरि करता आप कराइंदा। आपणी इच्छया लए उसार, घर घर विच आप टिकाइंदा। साचे सुत कर प्यार, शब्दी हुक्म मनाइंदा। अंदर वड़ना हो त्यार, घर साचा इक्क वखाइंदा। आदि जुगादि दीप उज्यार, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाइंदा। अठ्ठे पहर करे गुफ़तार, दिवस रैण ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचे सुत सुत समझाइंदा। साचे सुत बाल नादान, हरि सतिगुर आप समझाईआ। धुर संदेशा हुक्मरान, एका वार सुणाईआ। तेरा मेरा इक्क निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निरगुण रूप श्री भगवान, निरगुण शब्द करे जणाईआ। खेलां खेल दो जहान, दोए दोए आपणी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा समझाईआ। सुत दुलारे उठ उठ जाग, सो पुरख निरँजण आप जगाया। थिर घर साचे लगा भाग, हरि पुरख निरँजण वेखे बेपरवाहया। एकँकारा कन्त सुहाग, गृह मन्दिर सोभा पाया। आदि निरँजण इक्क चिराग, दीपक जोती डगमगाया। श्री भगवान पकड़े वाग, अबिनाशी करता साचा सोहला गाया। पारब्रह्म मंगे लाग, नैण नाई कोए नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे रच रच

काज, करता पुरख वेख वखाया। रचया काज पुरख अगम्म, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी धार आपे बन्न्ह, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश नर नरेश सुत दुलारे इक्क जणाइंदा। सच संदेशा हरि निरँकार, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। शब्दी सुत उठ बलकार, बल एका एक रखाईआ। तेरी इच्छया खेल करां अपार, अपरम्पर रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी रचना दए समझाईआ। आदि रचना हरि रचा, शब्दी शब्द जणाइंदा। साचा खेल कर बेपरवाह, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। निरगुण नूर नूर ख़ुदा, ज़हूर ज़हूर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप वखाइंदा। साचे सुत उठ दुलार, हरि जू हरि हरि आप जणाया। मेरी इच्छया तेरा वरतार, तेरी इच्छया मेरे रंग समाया। मैं करता पुरख करनेहार, सचखण्ड बैठा आसण लाया। थिर घर खोल्ह तेरा दुआर, घर घर विच आप बहाया। तेरी वस्त तेरी झोली देवां डार, बण दानी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया। धुर फ़रमाणा हरि जगदीश, एकँकारा आप जणाईआ। छत्तर झुले तेरे सीस, सुत शब्द मिले वड्याईआ। कोई ना करे तेरी रीस, लासानी आपणा रंग रिहा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ।

३४३ ॥ १२

साचा खेल करे करतार, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। विष्न विश्व कर त्यार, ब्रह्मा ब्रह्म रूप प्रगटाइंदा। शंकर देवे इक्क आधार, सुन अगम्म खेल कराइंदा। मंडल मण्डप महल्ल उसार, लोआं पुरीआं आपणा बन्धन पाइंदा। त्रैगुण माया कर उज्यार, त्रैगुण अतीता वेख वखाइंदा। पंज तत्त कर पसार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश गंढु पुआइंदा। निरगुण सरगुण वेख विचार, भेव अभेद आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत एका कारे लाइंदा। एका कारे जाए लग्ग, हरि सुणया धुर फ़रमाणा। तूं साहिब दयाल ठाकर स्वामी सूरा सरबग, शाह पातशाह सच्चा राणा। निरगुण सरगुण चलाउणा मेरा जहाज़, मैं ग़रीब निमाण निमाणा। तेरी किरपा मेरा ताज, प्रगट होए दो जहानां। तूं साजण ल्या साज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द सुत मंगे बण नादाना। बण नादाना मंगे बाल, पुरख अबिनाशी अग्गे करे अरज़ोईआ। सदा सदा सदा प्रितपाल, प्रितपालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह मैं कंगाल, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। दो जहान बणना दलाल, सच दलाली इक्क कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सुत शब्दी आप जणाइंदा। तेरा खेल करां महान, भेव कोए ना पाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरा ज्ञान, नाम

३४४
१२

निधान इक्क दृढ़ाइंदा। रवि ससि किरन किरन परवान, नूर नूर नूर चमकाइंदा। मंडल मण्डप खोल्ह दुकान, अनुभव तेरा रंग वखाइंदा। लख चुरासी जगत निशान, लोकमात वंड वंडाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज कर परवान, सांतक सति सति दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप अल्हाइंदा। धुर फ़रमाणा एकँकार, एका वार सुणाईआ। लख चुरासी कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। चारे खाणी खोल्ह दुकान, लोकमात मात दए वड्याईआ। धुर दी बाणी शब्द बबाण, नाम निधान दए जणाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैख़री गान, अनडिठया आपणा गाना रिहा सुणाईआ। चार वेद ब्रह्म निशान, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। चार जुग वंड वंडान, चार वरन होए कुड़माईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराईआ। सेवक सेवा लाए वड बलवान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए समझाईआ। शब्द सुत कर परवान, प्रभ चरनी सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी दिता दान, सच सच्चा रिहा भराया। जुग चौकड़ी खेल महान, तेरी कुदरत वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंड आप वंडाया। साची वंड जुग चौकड़ी चार, चार चार नाल मिलाईआ। पंचम पंच पंच जैकार, पंचम पंच करे पढ़ाईआ। छे छे खोल्ह किवाड़, सन्त साजण मेल मिलाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण साची कार, हरि करता आप कराईआ। अठ्ठां तत्तां वसे बाहर, नौ दर वेखे थाउँ थाईंआ। दहि दिशा पावे सार, घर साचे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा हरि जू खोल्ह, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तोले तोल, गुर अवतार सेवा लाइंदा। पीर पैग़म्बर अन्तर आत्म मौल, मौला आपणा रंग वखाइंदा। उलटा करे नाभ कौल, अमृत झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। साचा राह नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग, शब्दी शब्द हरि जणाइंदा। अन्त औध जाए पुग, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पैंडा जाए मुक्क, हरि जू हरि हरि आप मुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बूटा जाए सुक्क, पुरख अबिनाशी आप सुकाइंदा। जुग चौकड़ी जो बैठा रिहा लुक, सचखण्ड वासी नज़र किसे ना आइंदा। अन्तिम अन्त प्रगट हो हो पए बुक्क, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाइंदा। साचा राह लैणा जाण, हरि साचा सच जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग झुल्ले निशान, जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। गुर अवतार शब्द ज्ञान, ज्ञान शब्द नाल मिलाईआ। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। निरगुण नूर जोत महान, जोत जोत करे कुड़माईआ। सतिजुग खेल गुण निधान, सति

सति रिहा दृढ़ाईआ। त्रेता खेल करे महान, त्रिया आपणा अंक बणाईआ। द्वापर दोए दोए रूप दो जहान, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर चलाए मन्त्र नमो सति ब्रह्म मति, आत्म तत्त आप दृढ़ाईआ। आत्म तत्त तत्त ज्ञान, तत्तव तत्त आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई साची मति, ब्रह्म मति आप समझाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त आप सुकाइंदा। पंज तत्त काया चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। भगत भगवान मार्ग दस, साचे राह आप चलाइंदा। करे कुड़माई हस्स हस्स, आप आपणा बन्धन पाइंदा। सचखण्ड निवासी आए नस्स, लोकमात फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी खेल अवल्ला, हरि सतिगुर आप कराईआ। वसणहारा निहचल धाम उच्च अटल्ला, निहचल बैठा आसण लाईआ। पावे सार जलां थलां, जल थल महीअल आपणा वेस वटाईआ। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। जन भगत फड़ाए पल्ला, डोरी शब्द इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग जीवण दाता बेपरवाहीआ। जग जीवण हरि इक्को दाता, जीव जंत आप समझाइंदा। लख चुरासी पिता माता, पूत सपूत गोद सुहाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पढ़ाए आपणी गाथा, धुर संदेश नर नरेश आप जणाइंदा। दाता दानी सुणाए साका, साख्यात भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म जोड़े नाता, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। ईश जीव मिटे अन्धेरी राता, दूई द्वैती पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। जुग चौकड़ी वेस अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वारा, वेखणहारा नज़र ना आइंदा। सेवा ला तेई अवतारा, भगत अठारां हुक्म सुणाइंदा। ईसा मूसा एका नाअरा, हक़ हक़ीक़त पर्दा लाहइंदा। मुहम्मद बोले तेरा दुआरा, चौदां तबक कुण्डा लाहइंदा। नानक निरगुण मिल्या निरगुण धारा, सरगुण रंग जगत वखाइंदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, दर दुआरे आप बहाइंदा। मिल मिल सखीआं मंगलाचारा, गीत सुहागी आप अलाइंदा। नाम सति सति प्यारा, सति सतिवादी रंग चढ़ाइंदा। सचखण्ड दवारे जै जैकारा, जै जैकार आप कराइंदा। लोकमात दा मात पित सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव चुकाइंदा। जुग जुग भेव खुलावणहारा, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर सिफ्त सालाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण बण लिखार, लिख लिख लेखा दए जणाईआ। भगत भगवान खोलू किवाड़ा, आत्म ताकी कुण्डा लाहीआ। अग्नी तत्त करे ठंडा ठारा, शीतल शीतल धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, एका एक जणाईआ। सचखण्ड

वासी साचा राणा, शहिनशाह बेपरवाहीआ। थिर घर वेखे बाल अञ्याणा, सुत दुलारे दए वड्याईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरा खेल महाना, गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा संग रखाईआ। भगत भगवान गायण गाणा, साचे सन्त सति सति दृढ़ाईआ। गुरमुख मारे निराला बाणा, अणयाला तीर चलाईआ। गुरसिख बख़्शे चरन ध्याना, माण मोह ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणे हुक्मे अंदर फिराईआ। जुग चौकड़ी हुक्मे अंदर, हरि जू गेड़ा आप दिवाइंदा। हुक्मे अंदर मट्ठ शिवदुआले मस्जिद मन्दिर, गुरुदुआर बणाइंदा। हुक्मे अंदर पावे सार डूँघी कंदर, लख चुरासी वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर पाए बन्धन, हुक्मे अंदर लाए चन्दन, हुक्मे अंदर करे खण्डण, खण्डा आपणे हथ्थ रखाइंदा। हुक्मे अंदर पावे सार विच ब्रह्मण्डण, हुक्मे अंदर कोटन कोटि त्रिलोकी नंदन, लोकमात सेव लगाइंदा। हुक्मे अंदर जन भगतां तोड़े फंदन, हुक्मे अंदर साहिब बख़्शंदन, बख़्शिश आपणी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करता पुरख आपणी करनी आप कराइंदा। करनी करे हरि करतारा, भेव कोए ना पाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सर्ब पुकारा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। लिख लिख लेख बण लिखारा, धुर फ़रमाणा हुक्मी हुक्म हुक्म जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा। आपणा वेस आपे धर
३४६ धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। आपणा खेल आपे कर कर, करता पुरख वेख वखाईआ। एका निरभउ चुकाए ३४६
डर डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। आपणे मन्दिर आपे खड़ खड़, सचखण्ड दवारे दए वड्याईआ। आपणा अक्खर
१२ आपे पढ़ पढ़, निष्अक्खर दए समझाईआ। आपणे गुरमुख आपणे सन्त भगत भगवन्त फड़ फड़, जुग जुग आपे लए मिलाईआ। १२
आपे देवणहारा साचा वर वर, साची वस्त आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुत रिहा समझाईआ। साचे सुत श्री भगवान, आदि आदि जणाया। नव नौ चार खेल महान, जुग चौकड़ी वेख वखाया। गुर अवतार कर बलवान, बल आपणा नाल मिलाया। पीर पैग़म्बर दे दे दान, दाता दानी वेख वखाया। वरन बरन कर प्रधान, दीन मज़्ब वंड वंडाया। मन्दिर मस्जिद मट्ठ गुरुदुआर खोल्ह मकान, चार दीवारी बन्द कराया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान इक्क दृढ़ाया। खाणी बाणी खेल महान, लिख लिख लेखा लेख समझाया। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ सुजान, जिस पर्दा दए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क रखाया। सच संदेसा सुण ला कन्न, कन्नां एका विच रखाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, भन्नणहार हथ्थ वड्याईआ। पंज तत्त काया गुर अवतार पीर पैग़म्बर चढ़े चन्न, जोती जोत होए रुशनाईआ। रसना जिह्वा कहे धन्न धन्न, धन्न तेरी प्रभ वड्याईआ। पुरख

अकाल दीन दयाल सच खुदा लैणा मन्न, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाईआ। भेव ना जाणे कोए आत्म अन्न, अन्ध अन्धेर जगत वखाईआ। सच निशाना इक्को छन्द, गीत गोबिन्द सर्ब अल़ाईआ। ना कोई बन्धन ना कोई बंध, बन्दीख़ाना ना कोए वखाईआ। आत्म अन्तर इक्को परमानंद, निज़ानंद करे रसाईआ। आत्म परमात्म पए गंढु, घर साचे वज्जे वधाईआ। जगत विकारा खण्ड खण्ड, तृष्ना मोह ना लागे राईआ। सुरत सवाणी ना होए रंड, हरि शब्दी कन्त हंढाईआ। जन्म जन्म दा मुक्के पन्ध, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। घर साचे होए कारज अनन्द, अनन्द मंगल एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेखे चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करे पार किनारा, पार ग्रामी खेल वखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। निरवैर पुरख अपर अपारा, निराकार वेस वटाइंदा। अजूनी रहित वसे सब तों बाहरा, दिस किसे ना आइंदा। एकँकारा कर पसारा, अकल कल आपणा रंग रंगाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत करन पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। वेद व्यासा बण लिखारा, लिख लिख एका मंग मंगाइंदा। ईसा सजदा सीस करे खुदावंद मेरे परवरदिगारा, ख़ाकी ख़ाक धूढ़ रमाइंदा। मुहम्मद कहे साचा यारा, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला आलमीन आपणी दया कमाइंदा। नानक निरगुण कहे नर नरायण निरँकारा, बिन निरँकार दूजा दर कोए नज़र ना आइंदा। गोबिन्द पुरख अकाल दा सुत दुलारा, उच्ची कूक कूक अल़ाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वेखे विगसे करे विचारा, विचार विच किसे ना आइंदा। सारे मंगण दोए जोड़ कर निमस्कारा, देवणहारा इक्क अख्वाइंदा। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड रहिणा ख़बरदारा, बेख़बर आप जगाइंदा। सच सुच सदा सदा इक्को नाअरा, नर नरायण आप लगाइंदा। इक्क मन्दिर इक्क मकान इक्क घर बारा, इक्क सेज हंढाइंदा। इक्क पुरख एका नारा, एका कन्त आपणी गोद बहाइंदा। एका सखीआं एका मंगलाचारा, एका गीत सुणाइंदा। एका विष्नूं एका ब्रह्म करे पसारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। एका गुर इक्क अवतारा, एका रूप अनूप वटाइंदा। एका शब्द इक्क पसारा, प्रेम प्यार इक्क बंधाइंदा। एका वणज इक्क वपारा, एका हट्ट चलाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यारा, निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। पंज तत्त दे सहारा, साख्यात रूप वटाइंदा। गुर नानक तोले एका धारा, धार आपणी ना कोए बदलाइंदा। तेरा तेरा करे सच विहारा, तेरा मेरा भेव किसे ना आइंदा। सृष्ट सबाई बोल जैकारा, एका हुक्म सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम निहकलंक नरायण नर आए अवतारा, मात पित ना कोए बणाइंदा। गोबिंद लिख लिख लेख अपारा, लेखा लिख्त जगत जणाइंदा। कल कल्की लै अवतारा, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत्त

दीप खोल्हे इक्क दुआरा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका घर वखाइंदा। एका मन्दिर एका मस्जिद एका मट्ठ एका शिवदुआला, गुरुदुआरा एका घर बणाइंदा। पंचम पंचम बोल जैकारा, पंचम भेव अभेद खुल्हाइंदा। कलयुग अन्तिम होवे धुँदूकारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। गुर का शब्द ना करे कोई विचारा, कलमा अमाम ना कोए सुणाइंदा। घर घर होए जगत विभचारा, विभचार रूप घर घर नज़री आइंदा। ना कोई कन्त ना कोई नारा, नार कन्त जगत वेस ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन वखाए इक्को घर, साचा राह आप समझाइंदा। चार वरन इक्को ज़ात, ब्रह्म पारब्रह्म जणाईआ। चार वरन इक्को दात, हरि जू आपणा नाम वरताईआ। चार वरन इक्को गाथ, पुरख अबिनाशी ढोला सुणाईआ। चार वरन इक्को पित मात, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। चार वरन इक्को साक, सज्जण सैण सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम हरि जू वेखे मार झात, झाकी आपणी ना किसे वखाईआ। साचे सन्त बणाए सच बरात, बराती गुरमुख नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साची धारा आप समझाईआ। साची धार चार वरन, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। जन भगतां भगवान खोल्हे नेत्र हरन फरन, आपणा दरस कराइंदा। भउ चुकाए मरन डरन, मरन डरन पन्ध मुकाइंदा। करता पुरख करनी करन, हरि करनी आप कमाइंदा। आत्म परमात्म लग्गे सरन, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्क दुआरे खड़न, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। जगत बुद्धि जीव लड़न, हरि का भेव किसे ना आइंदा। त्रैगुण माया अग्नी सड़न, पंज तत्त शांत ना कोए कराइंदा। गुरमुख साची डोली चढ़न, जिस सतिगुर आप चढ़ाइंदा। सच दुआरे जा के वड़न, दर दुआरा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग सतिजुग धार, पुरख अकाल आप लगाईआ। हरिसंगत देवे साचा माण, माण अभिमाण दए मिटाईआ। मुलां शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रंथी गए हार, गुर का ज्ञान नजर किसे ना आईआ। रसना कह कह थक्के ज़बान, आपणी ज़बान ज़बाह ना कोए कराईआ। कोई मसला पढ़े अञ्जील कुरान, काया कुरा ना फोल फुलाईआ। नानक सतिगुर दे के गया मन्त्र सतिनाम, नाम सच पढ़ाईआ। जो गुरमुख नारी हरि सतिगुर मिले आण, तिस होए मात कुड़माईआ। चौथी लांव होए परवान, पुरख अबिनाशी आपणे अंग लगाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोए निशान, शरअ वंड ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म वसे इक्क मकान, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर देवे निशान, साहिब सतिगुर गया समझाईआ। अंदर वेखो मार ध्यान, सतिगुर लावां पढ़ पढ़ खुशी मनाईआ। जिस गोबिन्द मिल्या आण, तिस नाता तुट्टा जगत लोकाईआ। जिस नानक सतिगुर लए

पछाण, तिस काण ना रहे राईआ। जिस साहिब सुल्तान पुरख अबिनाशी करता पुरख पुरख मिले भगवान, भगौती भय ना कोए डराईआ। नरायण सिँघ ना समझो बाल अञ्याण, सिँघ संगत मिली वड्याईआ। पुत्तर धी जगत निशान, लिख्त लेख रिहा समझाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पिच्छों बणना इक्क विधान, पिछला लेखा दए मुकाईआ। दीन मज़्हब सारे हो जाओ सावधान, वेला गया हथ्थ ना आईआ। गुर गोबिन्द लिख के गया कलम नाल निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरमुख जोड़ी जुड़ी जहान, दो जहान वज्जे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। करोड़ तेतीसा होया हैरान, सुरपति नैण रिहा शरमाईआ। गुर अवतार खुशी मनाण, थिर घर साचे सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल श्री भगवान, साहिब आपणा राह चलाईआ। चार जुग दी वंडण वंड मेटे निशान, साचा राह इक्क वखाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। फ़तेह डंका वज्जे गोबिन्द सिँघ सूरबीर नौजवान, चारों कुण्ट कुण्ट शनवाईआ। नानक सिख्या सब नूं करनी पए परवान, धुर परवाना हरि सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग दा साचा राह, निरगुण सरगुण दए सलाह, पुरख अबिनाशी इक्क मलाह, दूजा बेड़ा ना कोए चलाईआ। हुक्मे अंदर खेल तमाशा, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर मंडल रासा, गोपी काहन नचाइंदा। हुक्मे अंदर जन भगतां करे पूरी आसा, आसा मनसा पूर कराइंदा। हुक्मे अंदर सच धरवासा, धुर दरबारी आप रखाइंदा। हुक्मे अंदर खेल पृथमी आकाशा, गगन गगनंतर वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर गुरमुख गुरसिख पूरी करे अरदासा, अर्ज अरज़ोई आपणे लेखे लाइंदा। दीन मज़्हब पारब्रह्म चलाई आपणी शाख़ा, कलयुग अन्तिम आपणे लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गोबिन्द नाम वड्याइंदा। नानक गोबिन्द साची धार, चार वरन कुड़माईआ। काया मन्दिर अंदर सच दुआर, गुरू गुर ज्ञान दए समझाईआ। अमृत आत्म ठंडा ठार, निझर झिरना इक्क वखाईआ। जोत निरँजण होए उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। दूई द्वैती पर्दा पाड़, बजर कपाटी दए खुलाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक राग अलाईआ। आत्म सेजा खेल अपार, ब्रह्म वेखे चाँई चाँईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव कोए ना पाईआ। दूल्हा बणे सिरजणहार, साचा झूला आत्म नारी अकल कल धारी आप झुलाईआ। जोड़ी जुड़े विच संसार, हरि सतिगुर लोकमात जुड़ाईआ। काया तन जगत प्यार, आत्म परमात्म रंग वखाईआ। सो विवाह होए परवान, जिस विवाह अंदर गुरमुख बैठे चाँई चाँईआ। गुरू ग्रन्थ गुर सच्चा साहिब हर घट करे ध्यान, हाज़र हज़ूर हर घट नज़री आईआ। सतिजुग साचा कर परवान, जीउ पिण्ड तन काचा काची माटी गगरी सच समग्री, एका हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। पंज तत्त ना कोए गाथा, खाणी रचन ना कोए रचाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणा हुक्म वरताइंदा। सति सतिवादी सति चलाए राथा, सतिगुर हरि जू सेव कमाइंदा। जन भगतां मेले कट के दूरी वाटा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जन्म जन्म दा चुक्या घाटा, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन साचा मिल्या सज्जण, घर साचे वज्जी वधाईआ। भाण्डे भरम गढ़ हँकारी भज्जण, निवण सो अक्खर इक्क वड्याईआ। कूड़ी क्रिया जीव तजण, प्रेम प्यार इक्क सिखाईआ। नानक गोबिन्द अनहद वाजे वज्जण, छत्ती राग रहे जस गाईआ। एकँकारा सब दे परदे कज्जण, नाम सति करे रुशनाईआ। करता पुरख कराए मजन, चरन धूढ़ अशनान कराईआ। निरवैर रखे लज्जण, निराकार होए सहाईआ। निरभउ भय चुकाए दो जहानन, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खुशी वखाईआ। साचे घर अगम्मी वाजा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाइंदा। गुरमुख गुर गुर साजण साजा, गुर किरपा वेख वखाइंदा। गृह मन्दिर भूपत मिले राजन राजा, शाह पातशाह दया कमाइंदा। गुरसिख तजे लोक लाजा, गुरमुख लाज विच कदे ना आइंदा। जिस मिल्या ग़रीब निवाज़ा, गुरमति माण सर्ब गवाइंदा। आप स्वारे सतिगुर काजा, रच रच काजा वेख वखाइंदा। अन्तिम कलयुग प्रगट होया देस माझा, नाम डंक इक्क सुणाइंदा। गुरमुखां पिच्छे फिरे भाजा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्त आपणा खेल वखाइंदा। अन्त खेल करे अपारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। चार वरन सच दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। चौदां लोक रोवण ज़ारो ज़ारा, चौदां तबक देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी करया खेल अपारा, लोकमात वेस वटाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, इक्को अल्फ़ रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अनन्द अनन्द अनन्द विच वखाईआ। साचा अनन्द गाया मंगल, घर साचे वज्जी वधाया। जन्म जन्म दा टुट्टा संगल, हरि जू हरि हरि आप कटाया। आत्म परमात्म पाया बन्धन, बन्दीख़ाना नज़र होर ना आया। रसना गाउणा सोहँ छन्दन, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान होए सहाया। साची जोड़ी मस्तक लग्गे चन्दन, चन्द चांदनी मुख शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग रीत करे अतीत, मन्दिर मस्जिद मट्ठ ना कोए मसीत, हरिसंगत दए माण वड्याआ। हरिसंगत रसना जै जैकार, जै जैकारा आप कराईआ। जोड़ी जुड़े विच संसार, जोड़नहारा आप जुड़ाईआ। साची घोड़ी शब्द चाड़्, आवण जावण पन्ध मुकाईआ।

आत्म परमात्म इक्क प्यार, सच आधार इक्क रखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज वार बोले जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ।

✳ ३१ जेठ २०१६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे नवित जेठूवाल ✳

सो पुरख निरँजण अगम्मड़ा गीत, नर हरि नरायण आप अलाइंदा। हरि पुरख निरँजण साहिब अनडीठ, भेव अभेद आप खुलाइंदा। एकँकारा आदि जुगादि चलाए साची रीत, निरगुण वसे धाम न्यारा। आदि निरँजण सद अतीत, जोती जाता नूर उज्यारा। अबिनाशी करता हरि जू मीत, सच मन्दिर सुहाए सच दुआरा। श्री भगवान लेखा जाणे हस्त कीट, आदि जुगादी इक्क अवतारा। पारब्रह्म प्रभ सचा मीत, निरगुण करे खेल अपारा। सचखण्ड दवारे नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ ना कोए गुरदवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतारा। करता पुरख खेल अवल्ला, आदि जुगादि आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण नूर जोत शब्द रला, दीपक दीपक आप प्रगटाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशण आसण लाइंदा। पावे सार जलां थलां, डूँघी भँवरी वेख वखाइंदा। सति संदेश नर नरेश एका घल्ला, दो जहान आप जणाइंदा। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड फड़ाए पल्ला, पल्लू एका एक रखाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सचखण्ड निवासी सच दुआरा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा खेल आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी एकँकार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। निरगुण सरगुण भेव न्यार, निराकार साकार वेस वटाईआ। जुगा जुगन्तर हो त्यार, त्रैगुण अतीता, आपणा वेस वटाईआ। ठांडा सीता सच दरबार, धुर दरबारा दए सुहाईआ। आवे जावे वारो वार, लोक परलोक वेख वखाईआ। धरत धवल दे सहार, धरनी आपणे रंग रंगाईआ। लख चुरासी पावे सार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। बोध अगाधा शब्द जैकार, जै जैकार नाद सुणाईआ। सचखण्ड दी साची धार, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण वेखणहारा, एकँकारा सिफ्त सालाहइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, अबिनाशी करता साथ मिलाइंदा। श्री भगवान दे हुलारा, पारब्रह्म प्रभ गोद सुहाइंदा। पूत सपूता सुत दुलारा, निरगुण निरगुण अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी हरि करतार, आदि जुगादि जुग जुग आप कराईआ।

निरगुण सरगुण हो त्यार, सरगुण निरगुण सीस झुकाईआ। निरगुण ढोला सति जैकार, सरगुण सोहला आपे गाईआ। बण विचोला अगम्म अपार, काया चोला वेख वखाईआ। साचा तोला दो जहान, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। पर्दा ओहला खोल्ह किवाड़, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जोड़ा जोड़ विच संसार, जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। साचा घोड़ा सच त्यार, शब्दी शब्द वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा खेल आदि जुगादि, जुग करता आप वखाइंदा। सचखण्ड निवासी वजाए नाद, अनादी नाद आप सुणाइंदा। शब्द अगम्मी बोध अगाध, बोध अगाध आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। जुग जुग खेल हरि करतारा, आदि जुगादी आप कराईआ। जुग चौकड़ी पावे सारा, नव नौ आपणा रंग रंगाईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, कोटन कोटि गुर आपणी सेव लगाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। देवणहार इक्क निरँकारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा आया वारो वारा, कोटन कोटि काल बिताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे दे सहारा, सेवक साची सेवा इक्क समझाईआ। कलयुग अन्त खेल करे न्यारा, निरगुण आपणा राह चलाईआ। चौदां तबकां कर खुआरा, चौदां लोक माण गुवाईआ। एका गुरमुख कर प्यारा, गुर गोबिन्द अंग लगाईआ। भगत भगवान दे सहारा, महांसारथी साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणी धार आप चलाईआ। साची धार पुरख अगम्म, अगम्मड़ा आप चलाइंदा। लेखा जाणे लख चुरासी पवण दम, दम दमां विच समाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां जाणे कम्म, निहकर्मी कर्म कांड आप रखाइंदा। जुगा जुगन्तर हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता रोग ना कोए सताइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रगट श्री भगवन, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। कलयुग अन्तिम हरिजन चढ़ाए साचे चन्न, चन्द चांदना मुख शरमाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, कन्ना कोए ना नाल मिलाइंदा। एका नाम वखाए धन्न, नाम ख़ज़ीना धन्न आप लुटाइंदा। एका जननी एका जन, दाई दाया इक्क वड्याइंदा। एका खेल करे श्री भगवन, भगवन आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव हरि जू चुक्क, पर्दा आपणा दए उठाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा लुक, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। सरगुण रूप गुर सुखणा गए सुक्ख, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। अन्तिम सब दी सफ़ा गई उठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। लुकया रहे ना कोई किसे गुट्ठ, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। करे खेल अबनाशी अचुत्त, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जन भगत सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। सेवा करे अबिनाशी अचुत्त, चित वित ठगौरी

कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची कारे आपे लाईआ। साची कार आपे लग्ग, हरि जू हरि हरि सेव कमाइंदा। नाउँ धराय सूरा सरबग, सर्ब कल आप हो जाइंदा। जोत निराला दीपक जग, अन्ध अन्धेर आप मिटाइंदा। साची धारों हो प्रगट, धार धार विच रखाइंदा। लहिणा देण चुकाए हथ्थो हथ्थ, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम मार्ग दस्स, साचा राह आप वखाइंदा। भगत भगवन्त मेला हस्स हस्स, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। धुरदरगाही वेखे नस्स नस्स, दो जहानां फेरा पाइंदा। कृपानिध ठाकर स्वामी जन भगतां हरि जू होए वस, वस आपणा ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा आप कराइंदा। सच विहारा श्री भगवान, कलयुग अन्त अन्त कराईआ। सचखण्ड दा सच निशान, सति दुआरे आप झुलाईआ। सतिजुग दा रंग महान, जन भगतां आप चढ़ाईआ। सतिजुग दा सति विधान, सतिगुर साचा आप बणाईआ। देवणहारा जीआ दान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सुरती शब्दी साचा काहन, एका बंसरी नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा रखे आपणे हथ्थ, लिखणहार आप अख्वाया। जुग चौकड़ी चलाए रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाया। जन भगतां देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाया। सति सतिवादी मार्ग दस्स, बण रैहबर वेख वखाया। जन्म जन्म दी पूरी कर कर आस, आसा तृष्ना दए गंवाया। नाता तुट्टे जगत भोग बलास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराया। साचा खेल करे करतारा, हरि जू आपणी दया कमाईआ। सतिजुग दा सच विहारा, साख्यात दए वखाईआ। नामे तेरा कर्ज़ उतारा, छप्परी मन्दिर रूप वखाईआ। धन्ने तेरा सोहे दुआरा, गंवार जट्ट मिले वड्याईआ। कलयुग अन्त होए उज्यारा, उजरत मंगे ना कोए सच्चा माहीआ। भगत भगवन्त वखाए सच मनारा, महल अटल भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखण नैण उग्घाड़ा, लोकमात ध्यान लगाईआ। बहत्तर अंक अंक प्यारा, सत्तर डंक विच संसारा, डंका एका नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। साचा रंग सतिवादी धार, सतिगुर पूरा आप रंगाइंदा। साता चौका इक्क विहार, चौका साता जोड़ जुड़ाइंदा। सति सतिवादी होया ख़बरदार, बेख़बर चार जुग आप उठाइंदा। चार जुग दा कर्ज़ उतार, चारे वेद वेख वखाइंदा। चारे खाणी खोल्ह किवाड़, चारे बाणी भेव चुकाइंदा। चारे कुण्ट हो उज्यार, चार वरन पर्दा लाहइंदा। चार यारी कर खुआर, चौथे घर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सत्त चार चार सत्त, देवणहार ब्रह्म मत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म रंग

३५३ १२

रंगीला, रंगण एका एक चढ़ाईआ। धुरदरगाही शब्द वसीला, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। एथे ओथे छैल छबीला, बिरध बाल ना कोए जणाईआ। जन भगत बणाया सच कबीला, हरि जू बणया पिता माईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार जो चढ़ के आया असव नीला, पुरख अकाल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा भेव हथ्थ भगवान, भेव किसे ना आया। कलयुग अन्त हो प्रधान, दो जहान दए समझाया। सतिजुग दा सति निशान, सति पुरख निरँजण दए झुलाया। सत्तर बहत्तर कर परवान, चुहत्तरां एका घर वखाया। गुर अवतार मंगण दान, दर बैठे सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी कर परवान, नेत्र नैणां नीर रहे वहाया। लोकमात खेल करे महान, ख़ालक ख़लक विच समाया। तेरे भगतां बणे सच पकवान, जिस अन्तर आपणा भोग लगाया। असीं चल के आईए खाण, ज़ात पात दीन मज़्हब मोह चुकाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान गीत तेरा गाण, सोहँ ढोला इक्क सुणाया। चार जुग दे बाल अञ्याण, तेरा भेव किसे ना पाया। लिख लिख आए वेद पुराण, शास्त्र सिमरत नाल मिलाया। गीता ज्ञान जगत निशान, निरगुण सरगुण दए समझाया। अञ्जील कुरान खेल महान, कलमा नबी रसूल पढ़ाया। खाणी बाणी कर प्रणाम, नानक गोबिन्द सीस झुकाया। किसे अन्त ना पाया विच जहान, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू गए छुडाया। कलयुग अन्तिम जन भगतां करया आप परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाया। चार वरन इकट्ठे कीते आण, ऊँच नीच ना कोए रखाया। साचे दर सोहण सुहाए आप मेहरवान, मेहर नज़र इक्क टिकाया। कर किरपा श्री भगवान, तुध बिन अवर ना कोए सहाया। तेरे हुक्मे अंदर इकट्ठे होए आण, सत्त चार जोड़ जुड़ाया। चरन कँवल इक्क ध्यान, उपर नैण ना कोए उठाया। चार जुग तेरा नाम संदेशा शब्दी दे दे आए ब्यान, जीव जंत जगत समझाया। कलयुग अन्त करे कल्याण, कल करता आपणी लए प्रगटाया। नाउँ रख निहकलंक बली बलवान, बल सब दा दए गंवाया। तेई अवतार होए हैरान, विष्न ब्रह्मा शिव नीर वहाया। भगत अठारां सीस झुकाण, ईसा मूसा मुहम्मद चरन धूढ़ ख़ाक रमाया। गुर दस दहि दिशा एका ढोला गाण, वाहवा मेरे साहिब तेरी वड्याआ। कलयुग अन्तिम आपणे दर कर परवान, दूसर राह नज़र कोए ना आया। इक्को गाईए तेरा गाण, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे खेल महान, लोकमात वेखे बेपरवाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे अन्त दान, जगत भण्डारी भण्डारा इक्क वखाईआ।

✳ पहली हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ✳

सति पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाह, सति सतिवादी खेल कराइंदा। सच सिँघासण आसण ला, निरगुण नूर डगमगाइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पा, सचखण्ड दवारा आप वड्याइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह, बेअन्त आपणी कल धराइंदा। सो पुरख निरँजण नाउँ रखा, भेव अभेद आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण वेस वटा, जोती जाता पर्दा लाहइंदा। एकँकारा खेल खला, साचा रंग आप वखाइंदा। आदि निरँजण नूर रुशना, नूरो नूर नूर समाइंदा। अबिनाशी करता सच दुआरे डंक वजा, एका डंका आप जणाइंदा। श्री भगवान निशान झुला, सच निशाना आप वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, रूप अनूप आप दरसाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, हुक्मी हुक्म आप अलाइंदा। धुर फ़रमाणा आपे गा, साचा गाणा आप सुणाइंदा। आदि रचना जिस लई रचा, रच रच आपणा खेल कराइंदा। सचखण्ड दवारा इक्क प्रगटा, प्रगट आपणी जोत वखाइंदा। ना कोई पिता ना कोई मां, पूत सपूत ना कोए अख्वाइंदा। ना कोई मन्दिर ना मकां, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। निरगुण नूर नूर रुशना, जोती जाता पर्दा लाहइंदा। आपणा लेखा आपणी झोली पा, आपणा खाता आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाइंदा। वेखणहारा एकँकार, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। निरगुण निराकार हो उज्यार, निरवैर आपणा भेव चुकाइंदा। अजूनी रहित खेल अपार, करता पुरख आप कराइंदा। सति दुआरा खोल्ह किवाड़, घर घर विच आप वड्याइंदा। सचखण्ड दवारे पैज स्वार, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। शब्दी सुत इक्क दुलार, जन जननी आप प्रगटाइंदा। दाई दाया बण निरँकार, साची सेवा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआरा सच सिँघासण, हरि जू हरि हरि आप लगाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता धार चलाईआ। आपणे मंडल पावे रासण, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी बण बण साथन, सगला संग आप निभाईआ। रथ रथवाही बण चलाए राथन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क वड्याईआ। सचखण्ड दवारा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप बणाया। आपणी इच्छया आपणे विच्चों कढ्ढ, आप आपणा रंग रंगाया। आपे बैठा साचे मन्दिर सज, सति सतिवादी डेरा लाया। कर खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा राह चलाया। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथ कथ भेव ना किसे सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप वसाया। सचखण्ड दवारा गया वस, सो पुरख निरँजण आप वसाइंदा। निरगुण निराकार निरवैर अजूनी रहित करे कराए असुते प्रकाश, प्रकाशवान आपणा

भेव आप जणाइंदा। आपणे गृह आपणे मन्दिर आपणे घर आप कर कर भोग बलास, साची सेज आप हंढाइंदा। तख्त निवासी शाहो शाबाश, आपे करे आपणी पूरी आस, आसा होर ना कोए वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची धार, आदि पुरख पुरख निरँकार करे कराए करने हार, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। दूसर संग ना कोए साथ, भेव अभेद आप जणाईआ। आदि आदि चलाया राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। शब्दी सुत सुत दिती दात, बण दानी आप वरताईआ। थिर घर दुआर सुणाई एका बात, बातन आपणा भेव खुल्ाईआ। आपे बण बण पित मात, साक सज्जण आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाईआ। सचखण्ड दवारा सुहञ्जणा, हरि सतिगुर साचा आप सुहाइंदा। कर प्रकाश आदि निरँजणा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भय अवर ना कोए रखाइंदा। दर घर साचे साचा सज्जणा, दरगाह साची संग रखाइंदा। ना घड़या ना भज्जणा, जन्म मरन ना कोए रखाइंदा। ताल नगारा इक्को वज्जणा, रागी राग ना कोए सुणाइंदा। सुत दुलारा पूत सपूता थिर घर साचे एका सद्दणा, सद्द सद्द आपणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी एका हुक्म जणाइंदा। शब्द सुत सुण साचे लाल, हरि सतिगुर आप सुणाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बणया रिहा मात दलाल, दो जहानां दलाली इक्क कमाया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली दिते डाल, त्रैगुण रंगण रंग रंगाया। पंज तत्त रखाए पत डाल, लख चुरासी पंखड़ी आप खिलाया। आत्म परमात्म खेल निराल, ब्रह्म पारब्रह्म वंड वंडाया। ईश जीव वखाए धर्मसाल, काया खेड़ा इक्क वसाया। निरगुण सरगुण राह सखाल, शब्दी शब्द भेव चुकाया। एका मन्त्र खोल्ह किवाड़, सच संदेशा आप अल्ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द रिहा जणाया। सुत शब्द उठ जाग, हरि सतिगुर आप जगाइंदा। आदि लगाया तैनूं भाग, तेरा राह वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव साजण साज, तेरी गोद बहाइंदा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड निवाज, लोआं पुरीआं तेरे रंग रंगाइंदा। त्रै पंज मेला रच रच काज, लख चुरासी घड़ घड़ भाण्डे, तेरा रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर कर कर नाच, बण नटुआ स्वांग वरताइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश पंचम काज, काया गगरी आप सुहाइंदा। आत्म परमात्म मन्दिर साज, घर घर विच आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत एक सुणाइंदा। शब्दी सुत खोल्ह अक्ख, सो पुरख निरँजण आप सुणाया। आदि तेरी वंडी वंड कीता वक्ख, वक्खरा राह इक्क वखाया। लख चुरासी अंदर वस, घट घट डेरा लाया। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, बण पाँधी राह चलाया। जोत निरँजण कर प्रकाश, अनहद नादी नाद वजाया। आत्म परमात्म

३५६
१२

खेल तमाश, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाया। सुण संदेशा हरी दुआर, सुत शब्द सीस झुकाइंदा। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरा भेव कोए ना आइंदा। मैं बाल अञ्याणा तेरा सुत मेरे परवरदिगार, तेरी किरन नूर अख्वाइंदा। हुक्मे अंदर सेवा करां विच संसार, बण बरदा सेव कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पाणी हार, दोए जोड़ सीस सर्ब झुकाइंदा। दर दरवेश मंगण भिखार, ख़ाली झोली सर्ब जणाइंदा। तूं देवणहार दातार, तुध बिन आसा पूर ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। मंगां मंग प्रभ स्वामी ठाकर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मेरा नूर कर उजागर, तेरे नूर होए रुशनाईआ। जुग चौकड़ी बणया रिहा सौदागर, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। वसदा रिहा काया गागर, पंज तत्त अंदर डेरा लाईआ। तेरे नाउँ दे दे आदर, लोकमात खुशी मनाईआ। तूं करीम करता कादर, रहिमत तेरी मेरे रहिमान, मेरी बणत बणाईआ। मुकामे हक़ तेरा निशान, नसीहत तेरी मोहे भाईआ। मेरा सजदा मेरी प्रणाम, मेरा सीस जगदीश तेरे चरन छुहाईआ। तेरा कलमा सच कलाम, तेरा नाम मेरे अमाम, एका नौबत रिहा वजाईआ। मैं बणया रिहा गुलाम, बण बरदा सेव कमाईआ। पंज तत्त काया दे दे माण, गुर अवतार जगत वड्याईआ। तेरा संदेशा सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। तेरे हुक्मे अंदर कोटन राम, कृष्न काहन गए अख्वाईआ। तेरा खेल दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन आस ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी सच संदेशा बोले, बोलणहारा इक्क अख्वाइंदा। सुत शब्द तेरे वसां कोले, पर्दा ओहला आप रखाइंदा। जुग चौकड़ी तेरे कोलों रखे ओहले, लोकमात वेस वटाइंदा। माण दिवाया पंज तत्त चोले, जगत डोला आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म सच संदेश, सचखण्ड निवासी आप सुणाईआ। आदि जुगादी इक्क नरेश, ना मरे ना जाईआ। हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव महेष, गणपति गणेश सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर लख चुरासी रिहा वेख, घट घट सेज हंढाईआ। हुक्मे अंदर धारे भेख, भेखी आपणा रूप वटाईआ। हुक्मे अंदर वेखे मंडल देस, मण्डप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क जणाईआ। साचा हुक्म एकँकार, एका वार जणाइंदा। शब्द सुत हो त्यार, आलस निंद्रा ना कोए जणाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल करया अपार, भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात वखाइंदा। सच दुआरा कर त्यार, नर निरँकारा आसण लाइंदा। तख़्त निवासी शाह सिक्दार, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचे सुत उठ बल धार,

हरि सतिगुर आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ करन निमस्कार, दूर दुराडे सीस झुकाईआ। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पंज तत्त कहिण होए खुआर, साडी सार कोए ना पाईआ। तेई अवतार करन पुकार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए औध हंढाईआ। भगत अठारां नेत्र नैण उठाल, राह तक्कण सच्चे माहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद होए कंगाल, लुट्टी गई ख़लक खुदाईआ। चार यार होए बेज़ार, दर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। बाहों फड़ सब नूं लैणा उठाल, बचया कोए रहिण ना पाईआ। नानक गोबिन्द दस दस कर सवाल, एका जोती मंग मंगाईआ। निरगुण रूप पुरख अकाल, आदि जुगादी पिता माईआ। पंचम मेला सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, पंच परवान हरि चरन मिले सरनाईआ। चार जुग दे शाह कंगाल, इकट्ठे करन एका थाईंआ। अग्गे पिच्छे चलणा नाल नाल, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क जणाईआ। सच सुनेहड़ा सुणना अन्त, एकँकार आप जणाइंदा। कलयुग वेला आए अन्त, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। जिस नूं कहिन्दे गए हरि बेअन्त, सो बेअन्त फेरा पाइंदा। जिस नूं सुणदे गए कन्त, सो कन्त कन्तूहल वेस वटाइंदा। जिस दा पढ़दे गए मंत, सो मन्त्र आप सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप जणाइंदा। सुत दुलारा गया जाण, घर साचे वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म तेरा खेल महान, तुध बिन भेव कोए ना पाईआ। बाली बुध मैं बाल अञ्याण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेलया खेल महान, कोटन कोटि वेस वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दे दे तेरा दान, नाम ख़ज़ाना इक्क वरताईआ। सति संदेशा सच निशान, सति सतिवादी इक्क जणाईआ। थिर घर साचा खोल्ह दुकान, तेरा हट्ट चलाईआ। चौदां लोक होए हैरान, चौदां तबक नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। दूसर ओट ना रखी आस, सुत शब्दी सीस झुकाइंदा। आदि जुगादि प्रभू तेरा दास, दूसर हुक्म ना कोए मनाइंदा। चरनां हेठ कोटन कोटि पृथमी आकाश, रवि ससि नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुग जुग बूटे लाए तेरी शाख़, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण दीवा बाती कर प्रकाश, कमलापाती वेख वखाइंदा। बण साकी जाम प्या बुझाए प्यास, अमृत झिरना इक्क झिराइंदा। नाद शब्द धुन राग बिन रसना स्वास, घर घर विच गीत सुणाइंदा। निरगुण सरगुण वसे पास, सरगुण अंदर निरगुण आसण लाइंदा। आत्म परमात्म दे धरवास, धर्म दुआरा इक्क वड्याइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म बुझाए प्यास, तृष्ना तिर्ख़ा ना कोए वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल अन्तिम कल, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। जुग

चौकड़ी करदा रिहा वल छल, अछल छलधारी वेस वटाईआ। गुर अवतार मात घल्ल, जीव जंत जंत समझाईआ। अन्तिम सारे जोती गए रल, पंज तत्त कम्म किसे ना आईआ। झूठा नाता हड्ड मास नाड़ी खल्ल, रक्त बूंद बन्धन पाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, अटल पदवी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल पुरख समरथ, सुत शब्दी आप जणाइंदा। जुग जुग चलाया रथ, रथ रथवाही नज़र किसे ना आइंदा। ब्रह्मा वेता गा गा गथ, चारे वेद वेद वड्याइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण मार्ग दस्स, पुराण प्राणी ना कोए पुजाइंदा। गीता ज्ञान अलखणा अलख, अलख निरँजण आप अलाइंदा। अञ्जील कुराना गा गा जस, तीस बतीसा आप सुहाइंदा। खाणी बाणी कर कर हठ, गुर शब्दी बन्धन पाइंदा। अन्तिम लोकमात गुर अवतार पीर पैग़म्बर काया चोला छड्ड के गए नट्ठ, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। शब्दी गुर इक्को इक्क सच्चा जस, जस हरि जी आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर वस, ब्रह्मण्ड खण्ड आप भुवाइंदा। सूरज चन्न रहे नस्स, नस्स नस्स पन्ध ना कोए मुकाइंदा। लख चुरासी त्रैगुण माया रही फस, फाँसी जम्म ना कोए तुड़ाइंदा। साचा तीर निराला मारे ना कोए कस, अणियाला बाण ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द आप वड्याइंदा। सुत शब्द कर दलील, हरि साचे सच जणाया।
३५६ नौ सौ चुरानवें निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बणदा रिहा वकील, लोकमात फेरा पाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील ३५६
कुरान खाणी बाणी कर कर गए अपील, प्रभ अग्गे वास्ता पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच
१२ विहार रिहा जणाया। सुत दुलारा वेख निरँकार, थिर घर साचे ख़ुशी मनाइंदा। पुरख अबिनाशी तेरा अन्त ना पारावार, १२
बेअन्त तेरा ढोला गाइंदा। तेरा चोला बदल्लया वेख्या विच संसार, संसार सागर नज़र किसे ना आइंदा। जिस दा सोहला गा गा गए गुर अवतार, पीर पैग़म्बर ओट रखाइंदा। जिस दी महिमा गा गा थक्के वेद चार, शास्त्र सिमरत पुराण पुराणी वेद व्यासा आस रखाइंदा। सो साहिब खेल करे अपार, परम पुरख फेरा पाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए जणाइंदा। उठ शब्द सुत सच विहार, हरि साचा सच कराइंदा। चार जुग दी कन्डयां वाड़, अन्तिम आपणी हथ्थीं हूंझ वखाइंदा। वरन बरन करे पार, दीन मज़ब ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोए विहार, आत्म ब्रह्म सर्ब दृढ़ाइंदा। साचे तख्त बैठा आप करतार, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर ख़बरदार, खण्डा एका हथ्थ फड़ाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दए उठाल, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होया दीन दयाल, दयानिध ठाकर आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुरदरगाही, हरि हरि आप जणाया। सुत दुलारा बणया राही, शब्दी सेव कमाया। तेई अवतार उठो मेरे छोटे भाई, हरि जू सद्दा रिहा घलाया। भगत अठारां बणो राही, पैंडा अन्त मुकाया। ईसा मूसा मुहम्मद चार यार करो सलाही, सलाहगीर नज़र कोए ना आया। दस गुरू वेखो चल के माही, पुरख अबिनाशी फेरा पाया। पंजां वखाए साचा थाईं, थान थनंतर इक्क वड्याआ। सब दा लेखा रिहा मुकाई, पूरब लेखा जो जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। सारे उठो हो त्यार, शब्दी शब्द जणाइंदा। कलयुग दा अन्त विहार, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। सचखण्ड बणाया इक्क दुआर, दर दरबारा आप सुहाइंदा। लोकमात करे उज्यार, उजरत होर ना कोए लगाइंदा। निरगुण निर्धन दए दीदार, भेव अभेव आप खुल्हाइंदा। वेखणहारा शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुराना पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल एका वार, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। विष्नूं तेरा विश्व भण्डार, आपणे हत्थ वखाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म प्रभ मेटे चाँईं चाँईंआ। शंकर तेरी शरअ शृंगार, हत्थ त्रसूल आप सुटाईआ। त्रैगुण तेरा तुट्टा जंजाल, तोड़नहारा एको आईआ। पंज तत्त तत्त होए बेहाल, बेहबल हो हो नीर वहाईआ। तेई अवतार करन सवाल, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। भगत अठारां कहिण तूं प्रितपाल, तुध बिन ओट ना कोए रखाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद चार यार कहिण तूं सांझा यार, तेरी शरअ समझ विच ना आईआ। नानक निरगुण कहे एकँकार, घट घट आसण बैठा लाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल, इक्को पिता माईआ। अन्तिम सब दा लेखा लए संभाल, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। करे खेल दीन दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। चार जुग दे अन्त कंगाल, आपणी गोद बहाईआ। इक्क वखाए साची धर्मसाल, सचखण्ड दवार कुण्डा लाहीआ। दीन मज़्हब शरअ विच्चों करे बहाल, शरीअत डंन ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी इक्क दलाल, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। जन भगतां बणे आप रखवाल, बण रक्षक सेव कमाईआ। नाता तोड़े काल महांकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। लाड़ी मौत होए बेहाल, गुरमुख दर रहिण ना पाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पंडत पांधा मुलां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर एका घर दए बहाल, मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला एका रंग रंगाईआ। अठसठ तीर्थ गुरमुख काया अंदर दए वखाल, गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। एका शब्द हरि भेव खुलाउणा, भेव अभेद जणाईआ। शब्द विष्नूं शब्द ब्रह्म शब्द शिव रंग रंगाउणा, शब्द त्रैगुण वेख वखाईआ।

३६१ १२

शब्द पंज तत्त बन्धन पाउणा, शबत निरगुण सरगुण रंग वटाईआ। शब्द सूरज शब्द चन्द शब्द मंडल मण्डप डेरा लाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड शब्दी नाच नचाईआ। शब्द धरनी धरत धवल शब्द जल थल महीअल डेरा लाउणा, रूप अनूप आप धराईआ। शब्द घाड़न घड़ बण ठठयार सेव कमाउणा, लख चुरासी हट्ट शब्द चलाईआ। शब्द मन मति बुध वंड वंडाउणा, शब्द घर विच घर लए बणाईआ। शब्द नौ दुआरे खोल्ह वखाउणा, जगत तृष्ना आसा मनसा काम क्रोध लोभ मोह हँकार शब्द प्रगटाईआ। शब्द नौ दुआरे पन्ध मुकाउणा, डूँग्घी भवरी पार कराउणा, सुखमन टेढी नूर धराउणा, ईड़ा पिंगला चरन सरन सरनाईआ। शब्द सरोवर इक्क नुहाउणा, शब्दी कागों हँस बणाउणा, शब्द अनादां नाद सुणाउणा, धुंन आत्मक राग अलाईआ। शब्दी जोती जोत जगाउणा, आत्म सेजा डेरा लाउणा, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। शब्द आत्म शब्द ईश जीव बन्धन पाउणा, शब्द ब्रह्म लए समझाईआ। शब्द गुरू गुर वेस वटाउणा, तत्तव तत्त करे कुड़माईआ। शब्द बोध अगाधी ढोला गाउणा, हरि हरि जस सुणाईआ। शब्द बणाउणा शब्दी ढाउणा, शब्दी खेल कराईआ। शब्दी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मार्ग लाउणा, शब्दी वेखे चाँईं चाँईंआ। शब्द राम कृष्न कोटन कोटि अवतार प्रगटाउणा, कोटन कोटि ईसा मूसा मुहम्मद बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि नानक गोबिन्द पुरख अकाल नर निरँकार इक्क मन्नाउणा, नाम सति एका गाईआ। कोटन कोटि गोबिन्द रूप इक्क मनाउणा, दो जहान वज्जे वधाईआ। अन्तिम आस इक्क रखाउणा, चार जुग दा बन्धन बंध तुड़ाईआ। निहकलंक कल कल्की अवतार, हरि जू फेरा पाउणा, जिस दा लेखा सके ना कोए मिटाईआ। दो जहानां खेल कराउणा, विष्न ब्रह्मा शिव आपणी जोत विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द अन्त प्रगटाईआ। एका शब्द गुरू गुरदेव, हरि अन्तिम आप प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म करे सेव, दूजी चाकरी ना कोए कमाइंदा। हँ ब्रह्म साचा मेव, सो पुरख निरँजण आप खुवाइंदा। आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल आपणा धाम प्रगटाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह अभेव, भेव अभेद आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा डंका आप वजाइंदा। साचा डंका एकँकार, आदि अन्त वजाईआ। मध खेल वेखे गुर अवतार, बण गुर गुर सेव कमाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यार, नूरो नूर करे रुशनाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी करे कराए सच विहार, भेव कोए ना पाईआ। लिख लिख लेखा कर कर गए पुकार, अन्तिम आवे निहकलंक अवतार, बल आपणा आप धराईआ। कूड़ी क्रिया दए निवार, जूठ झूठ करे खुआर, दीनां मज़्ह्बां मारे मार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। राज राजानां करे खुआर, तख्तों फड़ फड़ दए उतार, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नौ खण्ड दा इक्क विहार, सत्तां दीप

बोले जैकार, जै जैकार इक्क सुणाईआ। लोकमात लगाए सच दरबार, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पीर पैग़म्बर आ के करन निमस्कार, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाईआ। लोकमात तुट्टा नाता पंज तत्त ना कोए प्यार, प्रेमी प्रेम ना कोए रखाईआ। इक्को तेरे नाम जैकार, दूजा कलमा ना कोए पढ़ाईआ। तेरे मन्दिर तेरे चरन पारब्रह्म हिन्दू मुस्लिम सिख ना कोए विचार, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। तूं आदि जुगादि साहिब दयाल, ठाकर स्वामी बणे ठठयार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। तेरे भांडिआं अंदर वड़ वड़ आए गुर अवतार, बण चाकर सेव कमाईआ। सृष्टी किसे ना निभी नाल, दृष्टी तेरे नाल मिलाईआ। तेरा इष्ट इक्क करतार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे फेरा पाईआ। श्री भगवान हरि समझाए, एका शब्द जणाईआ। चार जुग दा लहिणा देणा रिहा मुकाए, मौक्या सब नूं दए वखाईआ। धोखा कदे ना करे हरि राय, सौखा राह आप जणाईआ। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख विरले आप तराय, जिस जन आपणी दया कमाईआ। कर किरपा गोद बहाए, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखो याद, हरि साचे सच जणाया। कलयुग अन्त तुहाड्डी सुण फ़रयाद, निरगुण आपणा फेरा पाया। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान लडाए लाड, सति सतिवादी गोद वखाया। आपणे विच्चों आपे काढ, अन्तिम आपणे विच मिलाया। पंज तत्त निशाना नाउँ जगत रखा दिती दाद, अन्तर नज़र कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार रिहा जणाया। एका वार लैणा जाण, हरि सतिगुर आप जणाईआ। कलयुग अन्त होए मेहरवान, मेहर आपणी नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े मेले आण, मेल मिलावा आप कराईआ। साचे भगत कर परवान, भगती आपणी झोली पाईआ। गुरमुख वेख बाल अञ्याण, आप आपणे अंग लगाईआ। दो जहान बणाए चतुर सुघड़ सुजान, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। इक्को आत्म दिता दान, परमात्म गंढु वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे वेखो मार ध्यान, नौ खण्ड पृथमी नैण उठाईआ। आपणा लेखा लिख लिख जो दे के आए ब्यान, ब्याना लोकमात भराईआ। कलयुग जीव अन्त होए सारे शैतान, शरअ घर घर पाई लड़ाईआ। पंडत पांधे मुलां शेख़ होए बेईमान, बेवा आत्म दए दुहाईआ। चार कुण्ट किसे नज़र ना आए भगवान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले सर्ब कुरलाण, उच्ची कूक देण दुहाईआ। सानूं पढ़ पढ़ थक्की ज़बान, अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। जिस दी सिफ्त करे ईमान, सो साहिब नज़र किसे ना आईआ। जिस दा मैं निमाणी सुणावां पैग़ाम, सो पैग़म्बर बैठा सच्चा माहीआ। मैं छोटी बाली अञ्याण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मेरी

विद्या होई नादान, अन्तिम कम्म किसे ना आईआ। चार वेद सर्ब पछताण, पुराण अठारां रहे कुरलाईआ। गीता कहे मेरा कोई ना जाणे ज्ञान, इक्क अर्जन दिता कृष्न पढ़ाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कहे मैथों कोई ना लवे साचा दान, नाम भिच्छया झोली कोए ना पाईआ। मैनूं पढ़ पढ़ मेरा साहिब ना सके पछाण, जिस मेरी बणत बणाईआ। जिस नूं नानक निरगुण करे प्रणाम, सो पारब्रह्म आया वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, गुर अवतारां दए वखाईआ। पढ़ पढ़ कोए ना सक्या पछाण, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। किरपा करी अन्त महान, लोकमात फेरा पाईआ। साचे भगतां दिता इक्को दान, चार जुग दूसरे हथ्थ किसे ना आईआ। अंदर वड़ ना लाए कोई ध्यान, जोग अभ्यास ना कोए कराईआ। जल धारा ना कोए अशनान, धूणी ता ना ख़ाक रमाईआ। नैण मूंद ना कोए ज्ञान, उँगली कन्न ना कोए रखाईआ। सूरज देवता ना कोए निशान, किंगरी नाद ना कोए वजाईआ। जो जन इक्क वार कहे सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तिस एथे ओथे दो जहानां आपणी गोद बहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आओ वेखो हरि जू करया खेल महान, चार जुग दी कीती रिहा उलटाईआ। साचे भगतां दे दे दान, सत्तरां दिती सिख वधाईआ। गोबिन्द सुत गुर मिल्या आण, सरसा लेखा दए चुकाईआ। बहत्तरां झुलया इक्क निशान, नामे छप्परी लेखे पाईआ। धन्ना जट्ट होया परवान, कलयुग अन्तिम घर जट्टां वज्जी वधाईआ। चुहत्तरां अन्त करी कल्याण, कलयुग मेटे काली शाहीआ। विष्नूं तेरा खोह के भण्डारा दान, जन भगतां हथ्थ फड़ाईआ। प्रगट हो हरि मेहरवान, आपणी खेल कराईआ। वीह सौ उन्नी हाढ़ सतारां सब दा लेखा चुकाए आण, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। दीन मज़्हब ना चले कोए दुकान, जगत हट्ट शरअ ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी गाए एका गान, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। एका दीन इक्क ईमान, इक्क पैग़म्बर नज़री आईआ। एका अल्फ़ इक्क अमाम, एका उल्फ़त दए सुणाईआ। एका मन्त्र सति नाम, सति सति दए जणाईआ। एका फ़तेह डंका वज्जे जहान, वाहिगुरू फ़तेह इक्क कराईआ। एका राम राम होए प्रणाम, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। एका नज़री आए काहन, लख चुरासी गोपी रिहा हंढाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका गुरुदुआर दए समझाईआ। एका नाद शब्द धुन्कान, एका घर घर राग सुणाईआ। छत्ती राग होण हैरान, नारद सुत सुरस्ती माईआ। साडी अन्त होई कल्याण, कला हरि जू आप वरताईआ। आपणा नाउँ कर प्रधान, सच प्रधानगी दए वखाईआ। चुहत्तरां भण्डार चलाए इक्क महान, सतिजुग साचा राह वखाईआ। तेई अवतार भगत अठारां दस गुर ईसा मूसा मुहम्मद चार यार आउण बण महिमान, हरि जू महिमानी आप खुवाईआ। लेखा चुक्के महीना रमज़ान, रमज़ इक्को दए लगाईआ। जूठ झूठ नाता मेटे पीण खाण, खाणा एका रसना

दए लगाईआ। सारे रल मिल कहिण वाहवा तेरी वड़याई मेरे भगवान, तेरी तोहे बण आईआ। चार जुग असीं तेरे हुक्मे अंदर फिर के आए जहान, लोकमात फेरा पाईआ। नव नौ खोल्ह खोल्ह दुकान, तेरा राग राग सुणाईआ। तेरा अन्त ना सके पछाण, बेअन्त तेरी वड्याईआ। कर किरपा इकट्ठे कीते आण, एका चरन मिली शरनाईआ। सतारां हाढ़ अद्धी रात असीं आपणा आपणा देईए ब्यान, तेरे अग्गे हरि सुणाईआ। अग्गे छड्डुया दीन ईमान, शरअ होर ना कोए बणाईआ। तेरे चरन सजदा सलाम, सलामा अलैकम तेरी सरनाईआ। तेरे भगतां कोलों मंगीए दान, दानी इक्को नज़री आईआ। तेरी वड़याई ग़रीब निमाणे करे परवान, परवाना आपणा नाम हथ्थ फड़ाईआ। ख़ाक मिलाए राज राजान, शाह सुल्ताना दर भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, असीं रल मिल आईए चाँईं चाँईंआ। पुरख अबिनाशी दस्से हाल, सुण लओ ला कर कन्न। साचे भगतां करी कमाल, लोकमात कलयुग अन्तिम चढ़े साचे चन्न। मैं बण निमाणा होया दलाल, पंज तत्त काया आपणा ठीकर भन्न। सतिजुग दे सांचे डाल, साची गड्डी रखां बन्न्ह। एका करां वसल जमाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा रिहा घल्ल। आओ वेखो साचे भगत, भगवान रिहा जणाईआ। जिस दी वड़याई चार जुग करे जगत, जुगत हरि जू रिहा बणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों आया वक्त, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। पहलों मात पित बणाई रक्त, जन जननी गोद सुहाईआ। फेर कर किरपा भरी आपणी शक्ति, शब्द सुरत करी कुड़माईआ। पिछली मेटी सारी हरक्त, अग्गे आपणी उँगली लाईआ। इक्को नाम झोली पाई बरक्त, ठग्ग चोर यार कोई लुट्ट लै ना जाईआ। पंज विकार ना करे शिरक्त, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए लड़ाईआ। मैं भगतां मिल मिटाई आपणी हसरत, हरि जू गुर अवतारां रिहा समझाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी सचखण्ड बैठा करदा रिहा कसरत, आपणा बल वधाईआ। कदे माण दिवाया रामा दसरथ, कदे नंद जसोधा दिती कृष्न वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां रिहा सालाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखो मार ध्यान, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। बिन भगतीउँ दिता दान, नाम ख़ज़ाना आप लुटाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, सत्तर बहत्तर चुहत्तर जोड़ जुड़ाइंदा। रातीं सुत्तयां पुच्छे आण, सुफ़न सखोपत जागरत तुरया एका रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप वड्याइंदा। हरिभगत तेरी वड़याई, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। एका घर होए कुड़माई, हरि जू नाता आप जुड़ाइंदा। अठ्ठे पहर रहे शनवाई, शुनीद दीद एका रंग रंगाइंदा। एका ढोला सुणाए चाँईं चाँईं, सोहला आपणा राग अल्हाइंदा। मौला

बणया आप गोसाँईं, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। हरिजन पकड़ उठाए बाहीं, बण सेवक सेव कमाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला नर नरायण देवे ठंडीआं छाईं, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप प्रगटाइंदा। साचे भगत भगवन्त मीत, मित्र प्यारा आप प्रगटाईआ। सतिजुग दी साची रीत, साढे तिन्न हथ्थ अंदर दए वखाईआ। आत्म परमात्म गाए गीत, ईश जीव रिहा जस गाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म बन्हाए प्रीत, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, घर विच घर होए रुशनाईआ। महल्ल वखाए इक्क अनडीठ, चार दीवार ना कोए बणाईआ। दिवस रैण ठंडा सीत, तत्ती वाओ ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल हरि जू करना, करनहार प्रभ आया। नाता तोड़े वरनां बरनां, बरन एका आत्म परमात्म दए जणाया। सति पुरख निरँजण साची सरना, सरनगति इक्क कराया। लहिणा देणा चुक्के मरना डरना, जन्म मरन फंद तुड़ाया। मात गर्भ फेर ना वड़ना, दस दस मास ना अग्न तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह दए समझाया। सतिजुग साचा राह समझाउणा, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। पूरब लेखा पन्ध मुकाउणा, पाँधी कोए नज़र ना आइंदा। सच दुआरा इक्क सुहाउणा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सति भण्डारा इक्क चलाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाइंदा। करोड़ तेतीसा नाल रलाउणा, सुरपति इन्द बन्हू वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान एका भोजन भोज कराउणा, भुजां आपणीआं नाल चतुर्भुज वरताइंदा। आदि शक्ति तेरा भेव खुलाउणा, शक्ती सर्ब विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत लेखा आप चुकाइंदा। जगत लेखा चुक्के जग, जग जीवण दाता आप चुकाईआ। जन भगतां दरस दिखाए उपर शाह रग, रघुपत आपणा मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दी बुझे अग्ग, त्रैगुण अग्ग ना लग्गे राईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। काया मन्दिर अंदर कराए साचा हज्ज, काअबा इक्को नज़री आईआ। सन्त सुहेले आपे सद्द, गुर चेले भेव चुकाईआ। भगत भगवन्त लख चुरासी विच्चों कर अड्ड, एका बन्धन नाम पाईआ। अन्तिम सचखण्ड दवारे आए छड्ड, शब्द बबाणे लए चढ़ाईआ। विष्नूं तेरी विश्व यद, ब्रह्मे तेरी पारब्रह्म ब्रह्म आपणे लेखे लाईआ। पंज तत्त काया विच्चों कढ्ढ, निरगुण निरगुण लए मिलाईआ। दस्म दुआरी गुरसिख तेरी निक्की जिही नेड़े हद्द, तेरा पहला चरन दस्म दुआरी विच टिकाईआ। अनहद शब्द थल्ले जाणा छड्ड, अग्गे राग सके ना कोए वज्ज, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। सुन अगम्म चुक्के हद्द, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। थिर घर साचे लए सद्द, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। प्रभ चरन कँवल जाणा बज्झ, अलख अगोचर अगम्म अथाह अगम्म

अगम्मड़ा बिन हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा, गुरसिख करे गुर गुर कुड़माईआ। सचखण्ड दवारे चरन चरनामत प्याए मदि, मधुर एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए तराईआ। जन भगतां तारे हरि जू बेड़ा, कलयुग अन्तिम बन्नृण आया। कर किरपा वसाए साढे तिन्न हथ्थ काया खेड़ा, अंदर खिड़की आप खुल्हाया। अग्गे खुल्ल्हा वखाए वेहड़ा, हरि जू आपणे रंग रंगाया। मात पित भाई भैण साक सज्जण नार कन्त धीआं पुत्तर चुक्के झेड़ा, झंजट होर ना कोए रखाया। सतिगुर साचा ग़रीब निवाज़ा अंदर वड़ सच महल्ले चढ़ गुरमुख आत्म सुरती करे हक़ नबेड़ा, हक़ीक़त आपे वेख वखाया। चार जुग विच हरि जू कोलों पुच्छो आया केहड़ा केहड़ा, बिन नानक कबीर दरस किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे खड़, चरनां हेठ वसाया गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां इक्को वेहड़ा। साचा वेहड़ा साचे घर, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नारी नर, नार कन्त ना कोए वखाईआ। ना कोई भय ना कोई डर, भउ अवर ना कोए जणाईआ। ना कोई गुरू पीर दिसे अवतार, साध सन्त नज़र कोए ना आईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पाठ पुराण, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। ना कोई अञ्जील कुरान करे कलाम, ना कोई खाणी बाणी दए पैग़ाम, ना कोई कलम ना कोई शाहीआ। इक्को एक वसे श्री भगवान, रूप रंग रेख ना कोए निशान, निशाना आपणा आप जणाईआ। जन भगतां हो मेहरवान, कलयुग अन्त करे परवान, एका देवे शब्द ज्ञान, ज्ञान ज्ञान नाल मिलाईआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर वेखे परखे हरि जू आण, नाम कसवटी हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क पसारा, एकँकारा आपणा आप कराईआ। सचखण्ड दवारा लोकमात साढे तिन्न हथ्थ आप जणाइंदा। छत्ती जुग दा सच चिराग़, छत्ती छत्ती वंड वंडाइंदा। निरगुण दा सरगुण सुहाग, हरि जू कन्त फेरा पाइंदा। कोझी कमली ग़रीब निमाणी रखे लाज, लाजवन्त दया कमाइंदा। कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तिम खोल्हे पाज, पर्दा कोए रहिण ना पाइंदा। चार जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म दा वंडण आए लाग, खाणी बाणी जीवां जंत झोली इक्क भराइंदा। बिन भगतां किसे नाल ना बणाया साचा साक, ख़ाकी ख़ाक सर्ब रुलाइंदा। इक्को इक्क रसूल पाक, पतित पुनीत आपणा नाउँ धराइंदा। इक्को इस्म इक्को आज़म इक्को ज़ात, इक्को महिफ़ल हरि लगाइंदा। इक्को पट्टी इक्क जमात इक्को जुम्मला, इक्को कलमा इक्को अल्फ़ हरि पढ़ाइंदा। बिन हरिभगत होए ना कोई उल्मा, मुर्शद मुरीद आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप वड्याइंदा। साचा भगत सूफ़ी सति, शरअ विच कदे ना आईआ। साचा भगत ब्रह्म मत, मन मति ना कोए रखाईआ। साचा भगत मेटे कर्मगत, कर्म कांड ना कोए जणाईआ। साचा भगत बंधाए इक्क नत्त, नाता

बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। साचा भगत चढ़े सच रथ, रथ रथवाही होए पुरख बेपरवाहीआ। साचा भगत सचखण्ड दवारे जाए वस, प्रभ चरन सरन मिले सरनाईआ। साचा भगत कबीर जुलाहा बण के मार्ग गया दस्स, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बिन हरि जू आए कोए किसे ना कम्म, दम लेखे ना पाईआ। झूठी माटी काया चम्म, दमढ़ी हट्ट ना कोए विकाईआ। साचे भगतां हरि करे परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान, मेरे भाई दिते मिलाईआ। सत्तरां बहत्तरां इक्क निशान, चुहत्तरां हथ्थ आप झुलाईआ। सेवा करे श्री भगवान, बण सेवक फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम तुट्टा साडा माण, अभिमान कोए रहे ना राईआ। लख चुरासी घड़नहारा तरखाण, अन्तिम सब दा लेखा दए मुकाईआ। जिस दा कुहाढ़ा सथरा तेसा सके ना कोए पछाण, आरी नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे अञ्याण, भेव कोए ना पाईआ। सब दे बूटे लाए विच जहान, अन्तिम वढ्ढ वढ्ढ आपणे खाते पाईआ। करया खेल इक्क महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा उठाईआ। साचे भगत जाणा उठ, साहिब सतिगुर आप उठाइंदा। पुरख अकाल गया तुठ्ठ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी वस्त आप वरताइंदा। बिन करनीउँ आपणी गोदी लए चुक्क, जन्म जन्म दी मैल धुवाइंदा। मात गर्भ दा उलटा रुख, साचा बूटा सचखण्ड वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण झुक झुक, मुख नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी ग़रीब निमाणयां वल कीता रुख़, हँकारीआं आपणी पिठ्ठ वखाइंदा। दर्दीआं नाल दर्द वंडण आया दुःख, दर्द दुःख भय भंजन आपणा नाउँ रखाइंदा। जिस विष्न ब्रह्मा शिव कढ्ढे आपणी कुक्ख, सो गुरमुख आपणी कुक्ख बहाइंदा। अन्तिम पैंडा जाए मुक्क, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी गोद बहाइंदा। भगत विचारे करन सलाह, इक्क दूजे नाल मता पकाईआ। सत्तर बहत्तर चुहत्तर लए मिला, मेला आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा आप सके असीं ना पा, पूरब लेखा जाणे कोए ना राईआ। पुरख अबिनाशी की की खेल रिहा करा, करनी किरत आप कमाईआ। साडे ढोले रिहा गा, ढोलक छैणा ना कोए वजाईआ। असीं अंदरों पोले साडे उत्ते पर्दा रिहा पा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। वेख द्रोपदी चढ़या चाअ, भैण मिले साचे भाईआ। मैनूं इक्क कृष्न ल्या बचा, जिस कृष्न त्रिलोकी चरनां हेठ दबाईआ। एथे कृष्न बैठा सीस झुका, कँवल नैण नैण चरनां वल लगाईआ। साचे तख्त बैठा आप शहिनशाह, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। एका वार चार जुग दे विछड़े भगत लए मिला, भावी नेड़ कोए ना आईआ। जिन्हां पिच्छे गुर अर्जन तत्ती रेत सीस गया पुवा, गुर तेग़बहादर सीस दिता कटाईआ। गोबिन्द बाले नीहां हेठ गया चिणा, सो मन्दिर बैठा लोकमात बणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सिँघासण ल्या वछा, रविदास चुमारा दए

गवाहीआ। गुर गोबिन्द रिहा ध्या, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तूं पिता तूं मेरी मां, मेरा तेरा भेव ना राईआ। तेरी गोद रिहा सुहा, गोदी एका एक वड्याईआ। सोढी बंस दिता वड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जणाईआ। हरिजन साचे कर ख्याल, बेख्याल आप जणाइंदा। जिस दे पिच्छे क्षमज़ तबरेज़ होया हलाल, खल्ल आपणी आप लुहाइंदा। जिस दे पिच्छे गुर अवतार पीर पैग़म्बर बणे दलाल, सो दिलबर वेस वटाइंदा। जिस दे पिच्छे नीहां हेठ दिते बाल, जगत महल्ल सो सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहारा, करे कराए करनेहारा, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत शराइत मेटे निशान, उन्नी उनीसा खेल महान, एका नाइआं नाइआं एका, एका गंढु पुवाइंदा। कोटन कोटि रहे तरस, जीव जंत जगत कुरलाईआ। कोटन कोटि रहे भटक, पशू पंछी देण दुहाईआ। कोटन कोटि रहे अटक, बैठे ध्यान लगाईआ। कोटन कोटि रहे लटक, केस हथ्थां नाल बंधाईआ। बिन गुरमुख होवे ना किसे दरस, सतिगुर गुरसिख दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। कोटन कोटि करन ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। कोटन कोटि करन ज्ञान, पढ़ पढ़ जिह्वा जगत सुणाईआ। कोटन कोटि करन अशनान, अठसठ तीर्थ फेरा पाईआ। कोटन कोटि करन दान, बण दानी सेव कमाईआ। कोटन कोटि कर कर बैठे माण, अभिमाण रूप वटाईआ। कोटन कोटि होए शैतान, पंच विकार करे लड़ाईआ। कोटन कोटि बोल बोले ज़बान, ज़बाह ज़बान ना किसे कराईआ। बिन गुरमुख सतिगुर मिले किसे ना आण, नेत्र रोवे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन गुरसिख दया ना किसे कमाईआ। कोटन कोटि तक्कण राह, नेत्र नैण उठाईआ। कोटन कोटि रहे गा, रसना जिह्वा गीत सुणाईआ। कोटन कोटि करन सलाह, आसा मनसा नाल मिलाईआ। कोटन कोटि सीस रहे झुका, जगदीश भेंट चढ़ाईआ। कोटन कोटि होए बेवफ़ा, बैठे मुख भुवाईआ। कोटन कोटि ताअने रहे लगा, निन्दक निन्दया मुख भराईआ। कोटन कोटि घर घर झगड़ा रहे पा, मनमति करे लड़ाईआ। बिन गुरमुख पूरे कोई दरस ना सके पा, सतिगुर दूजे घर दरस देण कदे ना जाईआ। कोटन कोटि रहे तक्क, नेत्र नैण उठाया। कोटन कोटि मंगण हक़, ख़ाली झोली रहे वखाया। कोटन कोटि आपणी खल्ल लुहा के बैठे सक्क, तन पिंजर वांग सुकाया। कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बैठे अक्क, धूणी ता ता वक्त लँघाया। कोटन कोटि गुरसिखां अग्गे पावण डक्क, मनमुख आपणा बल वखाया। बिन गुरसिख पूरे सतिगुर किसे हिरदे जाए ना वस, सुंञी सेज दिसे सर्ब लोकाईआ। कोटन कोटि रखी आस, आस आस विच रखाईआ। कोटन कोटि होए उदास,

उदासी लोकमात लगाईआ। कोटन कोटि ध्यायण स्वास स्वास, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। कोटन कोटि कहिण शाबाश, वाहवा तेरी वड्याईआ। कोटन कोटि बैठे निरास, निर्धन आपणा आप भुलाईआ। कोटन कोटि करन हास बलास, झूठा धन्दा खेल वखाईआ। बिन गुरमुख पूरे सतिगुर किसे ना वसे पास, रातीं जा के दरस ना किसे दिखाईआ। ना कोई ताअना ना कोई मेहणा, गुरसिख इक्को रंग रंगाया। जिस जन हरि जू दरस दिखाए नैणां, सो कहिण किसे ना पाया। लख चुरासी झूठे वहण वहणा, गुरमुख विरला लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड़याई विच कदे ना आया। हरि वड़याई कदे ना लोड़े, ग़रीब निमाणयां आप वड्याइंदा। जो जन हरि का दर्शन लोड़े, अन्तर आत्म इक्क ध्यान समझाइंदा। रातीं सुत्तयां घर घर बौहड़े, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। हरि जू परखणहारा मिट्ठे कौड़े, गुरमुख मिट्ठा रस आप चखाइंदा। डूँघी कंदर लाए पौड़े, चौथा डण्डा इक्क बणाइंदा। साचे असव चढ़या फिरे घोड़े, साचा घोड़ा शाह सवार आप दौड़ाइंदा। गुरसिख दा गुरसिख दोसत होए सतिगुर बौहड़े, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्तिम बेड़ा रोड़े, शौह दरया आप सुटाइंदा। साचा दरस जो जन लोड़े, सो जन संगत विच मिलाइंदा। सस्से उपर लाए होड़े, होड़ा निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। हाए उत्ते टिप्पी इक्क दूजे नाल जोड़े, आत्म परमात्म गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन हरिभगत साचा दरस ना किसे वखाइंदा। साचा यार ना कोई मित्र, बिन सतिगुर नज़री आया। झूठी क्रिया झूठे सज्जण झूठा जिकर, बण ज़िकरीआ ज़िकर ना कोए जणाया। गुरसिख मूर्ख मुग्ध दा क्यों करें फिकर, फ़िकर विच गुरसिख कदे ना आया। चारों कुण्ट वेखे उधर इधर, हरि सतिगुर बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रातीं सुत्तयां गुरमुखां दरस दए कराया। गुरसिखां दरस देवे पहली हाढ़, इक्क सौ इक्क सिख दया कमाईआ। करे प्रकाश नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ इक्क रुशनाईआ। साचे मन्दिर आपे चाड़, हरि मन्दिर दए वखाईआ। साचे अंदर करे प्यार, गृह आपणा बंक सुहाईआ। सो गुरमुख उधारे पार, जो बैठा ध्यान लगाईआ। जिस तन अंदर हँकार, मन अंदर कूड़ी छाहीआ। तिस दा संग गुरसिख ना कोए प्यार, गुरमुख प्यार गुर चरन सच्ची सरनाईआ। साचा मित्र एकँकार, आदि जुगादि सगला संग निभाईआ। एथे ओथे चले नाल नाल, दुखियां दर्दी दर्द वंडाईआ। साचा सज्जण लैणा भाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। देवी देवत ना कोई सके वेख, रसन जिह्वा रहे जस गाईआ। रसना कर कर रस रस हेत, रस आपणा भेव ना आईआ। काया अन्तर सुंञा खेत, फल बूटा नज़र कोए ना आईआ। सुरपति इन्द ना कोए

भेत, करोड़ तेतीस ना कोए वड्याईआ। अष्टभुज ना जाणे लेख, सिँघ अस्वार ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कालका एका बन्धन पाईआ। कालका बन्धन पाए काल, महांकाल खेल कराइंदा। ना कोई हल्ल करे सवाल, सवाल आपणा ना कोए समझाइंदा। ना नज़र आए दलाल, जगत दलाली ना कोए कमाइंदा। मन इच्छया घालण घाल, मन बन्धन बंध बंधाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवत इक्क समझाइंदा। साचा देवत एका देव, देव आत्मा आप जणाईआ। जिस दी बिरथी ना जाए सेव, कीती घाल झोली पाईआ। जिस नूं गा ना सके जेहव, जेहवा गुण ना कोए वड्याईआ। जिस दा इक्को रस साचा मेव, गुरमुख खा खा खुशी मनाईआ। आदि जुगादि सदा नेहकेव, निहचल धाम वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवत सुर सुर समझाईआ। देवत सुर कोई ना पूज, पूजणहारा नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई दूई द्वैती कढ्ढे दूज, इष्ट रूप ना कोए वखाइंदा। सुरती शब्द ना होए सूझ, सूझ बुध विच ना पाइंदा। हरि का भेव सदा सद गूझ, डूँग्घे ख़ाते आप रखाइंदा। सच प्रीती जो जन जाए झूज, आप आपणा मूल मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची पूजा इक्क समझाइंदा। साची पूजा देवत सुर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। होए प्रकाश अन्ध घोर, घोर अन्धेर रहे ना राईआ। पंच विकार पाए ना शोर, शरअ पवे ना कोए लड़ाईआ। दूजे हथ्थ ना कोए डोर, घर बैठा सच्चा माहीआ। अठ्ठे पहर गुरसिख मिलण दी रखे लोड़, आप आपणा ध्यान लगाईआ। साचे देवत नाल आप आपा लए जोड़, सो देवत होए सहाईआ। रस फिका कोए ना कौड़, जिह्वा रस ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत आसा दए जणाईआ। जगत आसा तृष्ना पवण स्वास, बिन रंग रूप आप जणाइंदा। देवी देवत कोई ना आवे विच क्यास, साका पढ़ ना कोए सुणाइंदा। मन धरे ना धीरज धरवास, दहि दिशा उठ उठ धाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा जगत गुरू फिर फिर वेखी शाख़, शनाख़त विच गुरू कदे ना आइंदा। कर किरपा जिस नूं करे आपणा दास, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। तिस गुरमुख कारज होवे रास, हरि करता आप कराइंदा। मन वासना बहु बिध भांत, बुद्धि बुध नाल भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत खेल इक्क जणाइंदा। जगत आस डूँग्घी भँवर, भँवर भँवर विच रखाईआ। भेव ना पाया साढे तिन्न हथ्थ कवर, कवरी नज़र किते ना आईआ। साचा देवत बैठा अंदर, गहर गवर गम्भीर बेपरवाहीआ। आपणा हाल किस अग्गे दस्सें अवर, घर विच ना सके सुणाईआ। बाहर वासना झूठा टब्बर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जो जन सरनाई आए सिँघ शेर बब्बर, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। कर किरपा आत्म परमात्म देवे सन्तोख सबर, साबत आपणा

दरस दखाईआ। भेव खुल्हाए जाबर जबर, जमदूत नेड़ ना आईआ। मन वासना बन्न्हे बन्दर, दहि दिश ना उठ उठ धाईआ। वेख वखाए काया कंदर, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। भाग लगाए साचे मन्दिर, जगत आसा वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आत्म गत जणाईआ। अन्तर काया बौह बौह रंग, मन मनुआ आप वटाइंदा। अठ्ठे पहर डोर पतंग, गुड्डी आकाश विच उडाइंदा। कदे भुख कदे नंग, कदे शहिनशाह रूप वटाइंदा। कदे स्वामी कदे भिखारी मंगे मंग, मन वस किसे ना आइंदा। देवी देवत घर ना वेख्या लँघ, मन्दिर हट्ट ना कोए जणाइंदा। जब तक्क सतिगुर पूरा आत्म अन्तर ना देवे अनन्द, जगत तृष्ना ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे निरँकार, निरगुण आप जणाईआ। कर किरपा जिस देवे दरस दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। सुरत सवाणी ना रहे कुँवार, शब्द हाणी दए मिलाईआ। अमृत रस पाणी ठंडा ठार, निझर झिरना दए झिराईआ। बोध अगाधी शब्द बाणी सच्ची धुन्कार, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जिस गुरसिख मिले आप करतार, करता पुरख दए वड्याईआ। तिस गुरसिख देवी देवते करन सर्ब निमस्कार, बैठे सीस झुकाईआ। गुरमुख मंगण जाए ना किसे दुआर, जिस मिल्या गोबिन्द सच्चा माहीआ। काया अंदर कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता विष्टा भरया भण्डार, मल मूत्र नाल रलाईआ। मन मति बुध त्रै रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैण वहायण वारो वार, वारता आपणी रहे सुणाईआ। सतिगुर साचा दए दीदार, साडा दुक्खड़ा दए निवार, घर मन्दिर इक्क वखाल, वेख आपणे नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन वखाए सच्चा घर बार, काया मन्दिर अंदर खोल्ह किवाड़, सो गुरमुख दूजा घर ना वेखण जाईआ। हरि का खेल अकथना अकथ, निरगुण निराकार आप चलाइंदा। नक्क मूँह ना कोए हथ्थ, पंज तत्त ना कोए वखाइंदा। निरगुण हो हो भगतां अंदर जाए वस, सरगुण आपणे अंग लगाइंदा। शब्द अगम्मी बाणी दस्स, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। अमृत आत्म साचा रस, बण रसीआ आप चखाइंदा। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, दो जहानां चरनां हेठ रखाइंदा। गुरमुख सौदा इक्को हट्ट, हरि जू साचा हट्ट जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त वस्त नाल बदलाइंदा। वस्त अंदर वस्त रख, वस्तू आपणी दए जणाईआ। घर विच घर कर प्रतख, घर घर विच खेल कराईआ। दर दर विच बोल अलख, अलख आपणी दए सुणाईआ। निरगुण निरगुण कर कर पक्ख, आप आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे नाल बदलाईआ। लेखे अंदर लग्गे लेखा, लेखा लेखे नाल मिलाइंदा। साचे दर ना कोए भुलेखा, भरम भुलेखा सर्ब कढाइंदा। गुरमुख हरि जू

३७१
१२

नेत्र पेखा, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा रंग रंगाइंदा। भरम भुलेखा होए दूर, दूर दुराडा आप चुकाईआ। दरस दखाए हाज़र हज़ूर, हज़रत इक्को सच्चा शहिनशाहीआ। एका बख़्शे जोती नूर, नूर नुराना कर रुशनाईआ। कर किरपा बख़्शणहारा कसूर, बेकसूर आप खुदाईआ। गुरमुखां अग्गे होए आप मज़बूर, मज़बूरी आपणी सके ना फेर तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हथ्थ हथ्थ नाल वटाईआ। हथ्थ नाल वट्टे हथ्थ, हथ्थो हथ्थ वटाइंदा। हरि का खेल सदा अकथ, कथनी कथ ना कोए अल्हाइंदा। वेखणहार पुरख समरथ, थाउँ थाईं वेख वखाइंदा। लख चुरासी पावणहारा नथ्थ, जीव जंत आप भुवाइंदा। वसणहारा घट घट, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले कर करवट, करवट आपणी आप बदलाइंदा। भरम भुलेखा डूँग्घा सागर, बिन सतिगुर पार ना कोए कराईआ। काया अंदर निरगुण निरवैर निर्मल कर्म करे उजागर, उजरत मंगे ना बेपरवाहीआ। जिस जन करे आपणे नाम सौदागर, साचा वणज आप वखाईआ। तिस हट्ट वखाए काया गागर, वस्त अमोलक विच टिकाईआ। दर आयां घर देवे आदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाईआ।

✳ १७ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✳

आदि पुरख श्री भगवान, सचखण्ड निवासी साची खेल कराइंदा। आदि जुगादी तख्त निवासी नौजवान, निरगुण निरवैर निराकार आपणी धार चलाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, राज राजान धुर फ़रमाणा हुक्म आप अल्हाइंदा। सचखण्ड दवार खोल्ह किवाड़, जोती नूर कर उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। वेखे विगसे वेखणहार, इक्क इकल्ला एकँकार, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। आपणी इच्छया कर पसार, करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव श्री भगवन्त, एकँकार आप खुल्हाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। शब्द अनादी एका मंत, हरि मन्त्र नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। नूर नुराना नूर अल्ला, परवरदिगार भेव चुकाइंदा। मुकामे हक़ वसे निहचल धाम अटल्ला, महल अटल आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा।

साचा खेल पुरख समरथ, आदि जुगादी आप कराईआ। निरगुण निरगुण हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह हट्ट, घर वसे सच्चा माहीआ। निर्मल नूर जोत उज्यार, प्रकाश प्रकाश विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपार, अपरम्पर आप कराइंदा। वसणहारा धाम न्यार, निरगुण सचखण्ड सोभा पाइंदा। साचा खेल करे निरँकार, एकँकारा आप कराइंदा। वसणहारा धाम सचखण्ड दवार, दर दरवाज़ा साचा आप सुहाइंदा। थिर घर देवे इक्क भण्डार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। पूत सपूता कर त्यार, साचा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कमाइंदा। करनी करता करता पुरख, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। सचखण्ड दवारे ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिंता रोग ना कोई जणाईआ। निरगुण निरगुण कर परख, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त अन्त आदि आपणा बन्धन आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि अन्त खेल अपार, हरि सतिगुर आप कराइंदा। वसणहारा धाम न्यार, रूप अनूप रूप वटाइंदा। आदि शक्ति कर त्यार, चतुर्भुज रूप वटाइंदा। अनभउ प्रकाश हो उज्यार, नूरो नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोल्ह भगवान, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। सचखण्ड उपजे सच निशान, सति सतिवादी आप उपाईआ। दो जहानां राज राजान, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। पंचम पंचम कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। शब्दी सुत कर बलवान, पूत सपूता लए उठाईआ। थिर घर साचे देवे दान, दाता दानी आप वरताईआ। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, भूपत भूप करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना रचनहार, शब्दी सुत आप उपाइंदा। विष्नूं विश्व कर त्यार, ब्रह्मा पारब्रह्म वड्याइंदा। शंकर देवे इक्क आधार, शीश जगदीश हथ्थ टिकाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं कर अकार, निराकार वेख वखाइंदा। सूरज चन्द रवि ससि कर त्यार, मंडल मण्डप डगमगाइंदा। धरनी धरत धवल दे अधार, जल बिम्ब रूप वखाइंदा। किरन किरन कर त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव हरि जू चुक्क, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। शब्दी शब्द आपे उठ, रूप अनूप आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए सुत, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। सचखण्ड दवार सुहाए साची रुत्त, थिर घर देवे इक्क वड्याईआ। वेखणहार अबिनाशी अचुत्त, चेतन आपणी धार चलाईआ। आदि जुगादि सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। कँवल कँवला कर उतप्त, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे खेले खेल अगम्म, अलख अगोचर आप खलाइंदा। निरगुण धार विष्न जम्म, ब्रह्मा आपणी कुक्ख सुहाइंदा। ब्रह्मे देवे साचा कम्म, करता पुरख कारज रचाइंदा। लख चुरासी बेड़ा बन्नू, जोती जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। त्रैगुण माया जननी जन, रजो तमो सतो एका गंढु पुआइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश देवे धरवास, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। शब्दी शब्द देवे दान, नाद अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी रूप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, नर नरायण वडी वड्याईआ। चतुर्भुज हो त्यार, रूप अनूप रिहा वखाईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, बैऐब नूर खुदाईआ। नूरो नूर परवरदिगार, हज़रत आपणा भेख वटाईआ। एका कलमा बोल जैकार, कायनात करे पढ़ाईआ। इक्क महबूब सांझा यार, साचे हुजरे आसण लाईआ। इक्क अहिबाब वजाए सतार, सांतक सति सति समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, सच अधार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, पंज तत्त मेला मेल मिलाया। त्रैगुण भर भण्डार, साची वस्त वरताया। लख चुरासी खोलू किवाड़, अण्डज जेरज उत्भुज सेतज वंड वंडाया। सच नाद शब्द धुन्कार, ब्रह्मा सुत सुत पढ़ाया। चारे वेदां खेल अपार, चारे जुग वंड वंडाया। चारे वरनां दए आधार, चारों कुण्ट वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क लगाया। साचा मार्ग लोकमात, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। पुरख अबिनाशी साचा नाम दए करामात, वस्त अमोलक इक्क वखाइंदा। पुरख अगम्म ना कोई ज़ात पात, वरन बरन ना कोई जणाइंदा। आत्म परमात्म साचा नात, लख चुरासी जोड़ जुड़ाइंदा। अक्खर वक्खर इक्को गाथ, एका सिख्या सच समझाइंदा। एका पूजा एका पाठ, एका मन्दिर हरि वखाइंदा। एका साहिब पुरख अबिनाश, परवरदिगार इक्क अख्वाइंदा। एका खेले खेल खेल तमाश, एका ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। एका नूर जोत प्रकाश, एका बिमल रूप बण जाइंदा। एका सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका घर घर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। साची करनी करने जोग, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। आदि जुगादी धुर संजोग, धुर संजोगी आप मिलाईआ। वेखणहारा गगन मंडल त्रैलोक, त्रैभवन धनी अवन गवन फेरा पाईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त जोग, एका एक समझाईआ। शब्द सुणाए सच सलोक, जुग जुग देवणहार वड्याईआ। लख चुरासी देवणहारा मोख, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म श्री भगवान, जुग जुग आप वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर दे दे दान, चारे वेदां लेख लखाइंदा। पुराण

अठारां कर प्रधान, प्राणी पुराण आप पढ़ाइंदा। लेखा चुक्के सीता राम, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। अञ्जील कुरान सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। साचा मन्त्र सति नाम, नाम सति आप जणाइंदा। आत्म परमात्म इक्क निशान, लख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। सचखण्ड सच विधान, सच दुआरे आप सुहाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, हुक्मी हुक्म इक्क वरताइंदा। साचे तख्त श्री भगवान, एका एक सोभा पाइंदा। जुगा जुगन्तर ना आए हाण, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खलाइंदा। साचा खेल पारब्रह्म, ब्रह्म एका करे पढ़ाईआ। करता पुरख करे कम्म, करनी आपणी आप कमाईआ। पवण स्वासी दमां दम, दमां नाल मिलाईआ। करे खेल पंज तत्त काया माटी चम्म, हँ ब्रह्म भेव छुपाईआ। निरगुण निरगुण बेड़ा बन्नृ, सरगुण सरगुण लए तराईआ। जोती नूर सच्चा प्रकाश, चन्द चांदनी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। साचा पर्दा पुरख अकाल, आदि पुरख आप चुकाइंदा। चार जुग साची चाल, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लेखा संभाल, वड संसारी खेल वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, करोड़ तेतीसा संग निभाइंदा। सुरपत इन्द कर बेदार, नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। पंज तत्त कर प्यार, ब्रह्म पसार वड वड्याइंदा। शब्दी शब्द शब्द धार, जोती जोत
३७५ डगमगाइंदा। लेखा जाण गुर अवतार, गुरू गुर नाउँ आप प्रगटाइंदा। ब्रह्मा सुत सन्त कुमार बराह रूप अपर अपार, हाव ३७५
१२ ग़रीव यगे पुरख खेल खलाइंदा। नर नरायण हो उज्यार, कपलमुन वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १२
किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल करे करतार, दत्ता त्रै वड्याईआ। वेखे विगसे वेखणहार, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। रिखव देव कर त्यार, एका मन्त्र नाम पढ़ाईआ। पृथू लेखा अपर अपार, धरनी धवल पथ वखाईआ। मत्तसय वेखे जलधार, कछप एका रूप चढ़ाईआ। जगत धनंतर देवे आधार, साचा मन्त्र इक्क समझाइंदा। नर सिँघ हो त्यार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। हँसा नाम शब्द बोल जैकार, ब्रह्मे सुत करे पढ़ाईआ। बाले ध्रू करे पार, नरायण आपणी दया कमाईआ। गज देवणहार सहार, हरि आपणी सेव कमाईआ। बल बावन खोल्ह किवाड़, अभेद भेद दए जणाईआ। मंगणहारा दर दरबार, बण दरवेश फेरा पाईआ। नर सिँघ करे ख़बरदार, प्रहिलाद दए वड्याईआ। साचा डंका अपर अपार, लोकमात आप वजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव संदेशा देवे वारो वार, दो जहानां करे शनवाईआ। सतिजुग वेखे वेखणहार, वार अठारां पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी सच्चा माहीआ। सति सतिवादी सच रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह वेस वटाइंदा। देवणहार सच

अनन्द, राम राम रूप वटाइंदा। एका देवे टुट्टी गंढु, गंढुणहार आप अखवाइंदा। लेखा जाणे परस राम प्रभ आपणा हुक्म वरताइंदा। आप जणाए साचा चन्द, वेद व्यासा नूर चमकाइंदा। कान्हा कृष्ना सच संदेश, एका एक जणाइंदा। मुकंद मनोहर लखमी नरायण, भगत भगवान चन्द चमकाइंदा। शब्दी शब्द सुणाए छन्द, गीता ज्ञान अठारां अध्याए भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह वखाइंदा। जुग जुग खेल अपार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। ईसा मूसा कर त्यार, जल्वा नूर नूर दरसाईआ। मुकामे हक़ इक्क जैकार, नाअरा हक़ हक़ लगाईआ। किरपा कर परवरदिगार, एका मुहम्मद लए जगाईआ। शरअ शरीअत कर प्यार, अलख अगोचर इक्क समझाईआ। साची प्रीत वेखणहार, मुख नक़ाब पर्दा दए उठाईआ। चौदां तबक खोल्ह किवाड़, चौदां तबकां खोज खुजाईआ। दहि दिशा पावे सार, चारे कुण्टां फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका नूर होए उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। बिस्मिल रूप सर्ब संसार, कलमा कलाम इक्क वखाईआ। साचा सजदा परवरदिगार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुगा जुगन्तर चार यारी वंड वंडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लख चुरासी सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ रखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता गाथ, करे सच पढ़ाईआ। गुरमुख हरिभगत सुणाए एका छन्द, ब्रह्म विद्या आप जणाईआ। लेखे लाए रत्ती रत्त, रत्ती रत्त विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारे नूरी धार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाल रलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर प्यार, कलयुग वेस वटाईआ। नानक गोबिन्द कर प्यार, नाम सति करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग निभाईआ। काल महांकाल रोवण ज़ारो ज़ार, निरगुण आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जुग जुग हुक्म हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बण वणजारा, लोकमात खेल वखाइंदा। सेवा ला गुर अवतारा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा सर्ब मुकाइंदा। अन्तिम लेखा हरि मुकाउणा, हरि जू हरि हरि दए जणाईआ। कलयुग अन्तिम फेरा पाउणा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। निरगुण आपणा नाउँ धराउणा, नर निरँकार वेस वटाईआ। सच धर्म दा सच दुआर मात बणाउणा, चौदां लोक करे रुशनाईआ। चार वरनां आप समझाउणा, बरन अठारां करे पढ़ाईआ। राउ रंकां एका घर वसाउणा, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। एका मन्त्र सर्ब दृढ़ाउणा, नाद तूरत इक्क वजाईआ। एका राम नज़री आउणा, एका कृष्न रूप वखाईआ। एका दर्शन नानक पाउणा, एका गोबिन्द मिले

माहीआ। एका ठाकर घर बहाउणा, ना ओह मरे ना जाईआ। एका ढोला मंगल गाउणा, इक्क सुणाए कलाम अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम जाए बीत, लोकमात रहिण ना पाईआ। चार जुग दी अन्तिम रीत, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। सचखण्ड निवासी ठांडा सीत, त्रैगुण मीता वेखे चाँईं चाँईआ। चारों कुण्ट देवे दुहाई मन्दिर मसीत, गुरदवारे शिवदुआले मड्ड रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख अगम्मा, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। वेखणहारा लख चरासी काया माटी चम्मां, घर घर आपणा आसण लाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुगा जुंगतर बेड़ा बन्न्हा, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। हरि पुरख अबिनाश पृथ्मी अकाश ज़िमीं असमान गगन गगनंतर मन्ना, नौ नव चार आपणा फेरा पाइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्ना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे करतार, कुदरत वेखे चाँईं चाँईआ। कलयुग अन्तिम लए अवतार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सचखण्ड दा सच दुआर, लोकमात लए प्रगटाईआ। साचा तख्त कर त्यार, तख्त निवासी आसण लाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, दो जहानां हुक्म मनाईआ। पंचम बन्न्हे सीस दस्तार, राउ रंकां वेख वखाईआ। शाह शहाना राज राजाना करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। नव नौ आए अन्तिम हार, सीस सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आप भेव चुकावण आया, कलयुग अन्तिम वार। निरगुण नूर वेस वटाया, निहकलंक नरायण नर अवतार। वेद व्यासा लेख पूर कराया, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत बैठा खेल करे अपार। आदि शक्ति नाउँ धराया, रूप रंग नज़र ना आए विच संसार। चतुर्भुज हो फेरा पाया, बल बावन खेल न्यार। मोहन माधव वेस वटाया, लख़मी नरायण हो त्यार। भगतन नैण आप खुल्हाया, खोलणहार बन्द किवाड़। त्रैभवन धनी फेरा पाया, चौदां तबक दए हुलार। सच संदेशा इक्क सुणाया, दूजी होर ना कोई विचार। ना कोई मोड़े मोड़ मुड़ाया, ना कोई मेटणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबार श्री भगवाना, लोकमात मात जणाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ दा हथ्थ निशाना, नव नौ चार आपणी वंड वंडाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बरां बन्न्हे गाना, साचा सगन आप मनाइंदा। सच संदेश वड बलवाना, परम पुरख आप सुणाइंदा। लोकमात हरि जू हरि होया प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। सति सतिवादी सच निशाना, सच दुआरे आप झुलाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को कान्हा, लख चुरासी गोपी वेख वखाइंदा। पारब्रह्म वड मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, शाह पातशाह नज़र कोई

३७७ १२

ना आइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वखाए इक्क मकाना, काया पर्दा खोल् वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। कलयुग अन्तिम हरि जू रंग, आपणा आप रंगाईआ। सचखण्ड निवासी सच पलँग, लोकमात सुहाईआ। शब्दी ढोला इक्क मृदंग, दो जहान दए सुणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड आपे लँघ, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी सुत्ता रिहा दे कर कंड, करवट सक्या ना आप बदलाईआ। गुर अवतारां सुणाउँदा रिहा छन्द, पुरख अबिनाशी ढोला गाईआ। अन्त मुका गए पन्ध, बण पाँधी फेरा पाईआ। आदि जुगादि कोए ना जाए हंढ, थिर कोई रहिण ना पाईआ। सरगुण मेला बत्ती दन्द, रसना जिह्वा करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच दुआर, लोकमात करे उज्यार, नौ खण्ड पृथ्मी दए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सति दुआरा, सति सतिवादी आप खुलाइंदा। निरगुण निरवैर अजूनी रहित साजण साचा, पुरख अकाल एका गाइंदा। चौथे जुग अन्तिम कल प्रगट हो देस माझा, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। भूपन भूप राजन राजा, मीतन मीत आप अख्वाइंदा। पुरख अबिनाशी करन आया साचा काजा, करनी करता आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोल्हे करतार, करे खेल बेपरवाहीआ। वीह सौ बिक्रमी हो त्यार, त्रैभवन धनी आपणा फेरा पाईआ। चौथे जुग सच विहार, सति सतिवादी आप कराईआ। तख्त निवासी हो त्यार, साचे तख्त आसण लाईआ। सच संदेशा दिता एका वार, दो जहानां करे शनवाईआ। गुर पीर अवतार पैग़म्बर आवण चल दुआर, निरगुण दुआरे निरगुण फेरा पाईआ। साची रुत्ती बसन्त वेख सतारां हाढ़, आपणे रंग रंग रंगाईआ। पिछली बीती कर विचार, ब्रह्माद रिहा समझाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखणहारा आईआ। जिस दा नाम बोध अगाध, पीर पैग़म्बर रहे सुणाईआ। सो सुणन आया फ़रयाद, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। लख चुरासी आपणे विच्चों लई काढ, अन्तिम आपणे विच छुपाईआ। अन्तिम सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदा रिहा निरगुण सरगुण वाड़, सति सतिवादी दया कमाईआ। नाम निधाना अन्तिम सुणाउँदा रिहा राग, राग अनादी धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सच सिँघासण सच दुआरा आप सुहाईआ। सच सिँघासण सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आसण लाइंदा। सच संदेशा दए सुणा, हुक्मी हुक्म इक्क वरताइंदा। विष्नूं चरनी जाणा आ, ब्रह्मा डेर ना कोई रखाइंदा। शंकर सीस देणा झुका, करोड़ तेतीसा नैण शरमाइंदा। चौवीआं अवतार दोए जोड़ करो प्रणाम, प्रणाम इक्को इक्क रखाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद करो सलाम, इस्लामा अलैकम नाल रलाइंदा। चार यार मंगो पनाह, पनाह एका घर वखाइंदा। दस गुरू करो सलाह, सलाहगीर इक्क

वखाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण नैण लओ उठा, हरि जू एका अक्ख खुल्हाइंदा। खाणी बाणी ध्यान लओ लगा, ध्यानी इक्क ध्यान जणाइंदा। त्रैगुण माया नौ खण्ड पृथ्मी वेख लख चुरासी चारों कुण्ट फेरा पा, दहि दिशा वंड वंडाइंदा। पंज तत्त चोला बेड़ा अन्तिम अन्त लैणा बंधा, साचा डोला इक्क वखाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सोहला ल्या गा, राम कृष्न इष्ट देव देव आत्म प्रकाश सर्ब मिलाइंदा। कलमा कलाम नबी रसूल पीर पैग़म्बर गए पढ़ा, शरअ शरीअत वंड वंडाइंदा। सति नाम ढोला इक्क गा, ब्रह्म मत इक्क दृढ़ा, नानक चोला इक्क वटाइंदा। गोबिन्द डंका इक्क वजा, लख चुरासी गया समझा, चार वरना रिहा सुणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश नज़र कोए ना आइंदा। पतिपरमेश्वर ठाकर स्वामी निहकर्मी जोती जाता पुरख बिधाता, आत्म अन्तर साचा मन्त्र इक्क नाम सच ना कोई मन्दिर ना मसीत ना कोई ज़ात ना कोई पाता, एका रंग पुरख समराथा, देवणहार साची दाता, दाता दानी दया कर विष्न आपणे गले लगाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जिस दी लिख लिख सुणाउँदे रहे गाथा, कलम शाही वंड वंडाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे कमलापाता, कँवल नैण वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच दुआरा इक्क सुहाइंदा। सच दुआर सुहावना, प्रभ देवणहार वड्याईआ। हाढ़ सतारां दिवस वड़यावना, वड दाता दए वधाईआ। सम्मत उन्नी नाल मिलावणा, बीस बिक्रमी मेल कराईआ। दो जहानां रंग रंगावणा, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। सचखण्ड दवार लोकमात प्रगटावना, प्रगट आपणा नूर करे रुशनाईआ। विष्नूं तेरा विश्व भेव खुल्हावणा, ब्रह्मे तेरा वेखे ब्रह्म सर्ब लोकाईआ। शंकर तेरी त्रसूल बाहर कढावणा, त्रैमुख वेखे बेपरवाहीआ। त्रैगुण तेरा पर्दा लाहवणा, मुख नक़ाब रहिण ना पाईआ। पंज तत्त तेरा डेरा ढावना, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। तेई अवतार दर बुलावणा, भज्जे आवण वाहो दाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद संग रलावना, जग करता रिहा मिलाईआ। सच मसला इक्क समझावणा, बिस्मिल नूर वेखे नूर खुदाईआ। साचा नाम इक्क जनावणा, चिल्ले तीर इक्क चलाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखावणा, समुंद सागर वेखे डूँघी खाईआ। चौदां तबकां भेव पावना, चौदां लोक पर्दा दए उठाईआ। गुर अवतार दर बहावणा, नानक गोबिन्द एका हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्तिम अन्त करावणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिजुग साचा इक्क लगावणा, सति सतिवादी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दवारा निरगुण लोकमात कर उज्यारा, नाउँ रखाए भगत दुआरा, भगवान आपणा नाउँ जणाईआ। सच दुआरे आपे चढ़या, सच दुआरे सोभा पाइंदा। पीर पैग़म्बर दर ते खड़्या, साची सेव कमाइंदा। अग्गे हो अंदर कोई ना वड़या, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ ठाकर स्वामी नर नरायण निश्अक्खर

एका पढ़या, चौदां विद्या भेव कोए ना आइंदा। तेरा नूर ना मरे ना कदे सड़या, मढ़ी गोर ना कोई दबाइंदा। लख चुरासी काया भाण्डा घाड़न घड़या, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच जगदीश सोभा पाइंदा। सच सिँघासण पारब्रह्म, ब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। निहकर्मी करे आपणा कम्म, कर्म कांड ना कोई रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडणहारा वंड, वरन बरन बरन वरन आपणा खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम जीव जंत साध सन्त, गुरमुख गुरसिख नेत्र नैण नैण दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर कलयुग अन्तिम रच सुअम्बर, दर घर साचे आप बहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर घत्ती आउण वहीर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तेरी चोटी इक्क अखीर, आखर तेरा भेव कोई ना आईआ। तूं साहिब बेनज़ीर, नज़र सब दी रिहा भुआईआ। चार जुग तेरे हुक्म अंदर होई तदबीर, करे तेरी पढ़ाईआ। पंज तत्त काया जगत सरीर, जग भुल्ली सर्ब लोकाईआ। शरअ शरीअत दीन मज़्हब मार ज़ंजीर, ना कोई सके मात तुड़ाईआ। त्रैगुण माया लग्गी भीड़, हौला संग ना कोए जणाईआ। झूठी काया बस्त्र चीर, लख चुरासी रही हंढाईआ। नीर विरोले जीव जंत सीर, नीर सीर ना कोए प्याईआ। चार जुग करी वंड पा पा लकीर, हद्द हद्दी आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। विष्नूं आया पन्ध मुका, दूर दुराडा चरनी सीस झुकाइंदा। ब्रह्मा रोवे मारे धा, मेरा मेरा नज़र ना आइंदा। शंकर त्रसूल रिहा सुटा, कंठ माला बाशक तशका गलों लाहइंदा। करोड़ तेतीसा माण रिहा गवा, सुरपति तख्त ना कोए हंढाइंदा। तेई अवतार इक्क दूजे नाल करन सलाह, मते नाल मता पकाइंदा। ईसा मूसा तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। मुहम्मद रोवे मारे धाह, अल्ला राणी संग ना कोई निभाइंदा। चार यारी पल्लू रही छुडा, दस्तगीर नज़र कोए ना आइंदा। नानक निरगुण मंगे इक्क पनाह, गोबिन्द झोली अग्गे डाहइंदा। तेरी कुदरत सच्चे पातशाह, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। जिउँ भावे तिउँ रिहा चला, तेरा भाणा ना कोई मेट मिटाइंदा। तख्तों राजा राणा देवे लाह, सीस ताज ना कोई टिकाइंदा। जुग चौकड़ी करे फ़नाह, ख़ाकी ख़ाक मिलाइंदा। रहिमत रहीम रहिमान दए कमा, रैहबर बण बण हुक्म मनाइंदा। सबर सबूरी साबर बण बण जाम रिहा प्या, आबे हयात मुख लगाइंदा। साचे हुजरे सच अलाह, आप आपणा नूर दरसाइंदा। महबूब महिराब इक्क खुल्हा, महिबान सोभा पाइंदा। नूरो नूर हज़रत पैग़म्बर ख़ालक बण बेगुनाह, गुनाह नज़र कोई ना आइंदा। मुकामे हक़ तेरा मकान, तेरा आसण वेख कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। सजदा सीस गया झुक, चौदां

तबक सीस झुकाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी रहिउँ लुक, आपणा रूप ना मात प्रगटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पंज तत्त काया अंदर निरगुण सरगुण रहे पढ़ाईआ। कर खेल अबिनाशी अचुत्त, चेतन आपणी धार वखाईआ। कलयुग अन्तिम आएयों उठ, लोकमात फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते गइउँ तुट्ठ, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश जो बैठे रुठ, वेले अन्त लए मिलाईआ। आत्म परमात्म सुहाए साची रुत्त, दूसर करे ना कोई पढ़ाईआ। जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। आसा तृष्ना जाए छुट्ट, हउमे हंगता ना कोई लड़ाईआ। जूठ झूठ जड़्ह देवे पुट्ट, सच सुच्च करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, घर वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर ब्रह्मा विष्न शिव अग्गे आओ लँघ, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। सति सतिवादी बैठा उपर पलँग, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। दो जहानां वजाए नाम मृदंग, वड मर्दाना खेल कराइंदा। लख चुरासी इक्क अनन्द, घर घर मंगल गाइंदा। कलयुग अन्तिम मुक्या पन्ध, लोकमात रहिण ना पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडां रिहा वंड, वंड वंड एका खेल वखाइंदा। कोई कहे पिता दसरथ राम चन्द, कोई काहन कृष्न ध्यान जणाइंदा। कोई कहे मूसा मेटे पन्ध, कोहतूर नूर चमकाइंदा। कोई कहे ईसा चढ़ना चन्द, खुदावंद आपणा रूप वटाइंदा। कोई कहे मुहम्मद गाए छन्द, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। कोई कहे नानक बेड़ा रिहा बन्न्ह, चार वरन पार कराइंदा। कोई कहे गुज़री चन्द, गोबिन्द आपणा वेस वटाइंदा। पुरख अकाल कहे मेरा कोई ना जाणे अन्त, बेअन्त आपणा वेख वखाइंदा। जिस नूं चार जुग गाउँदे गए भगत सन्त, सो सतिगुर फेरा पाइंदा। जिस दुआरे गुरमुख मंगत, अग्गे झोली सर्ब डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। कलयुग अन्तिम आया हरि, हरि जू आपणा वेस वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को दर, दर दरवाज़ा दए वखाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात जाण हरि, लोकमात रहिण ना पाईआ। ऊँच नीच चुक्के डर, भाण्डा भरम दए भनाईआ। घट घट अंदर आपे वड़, दर दरवाजे दए खुल्ह्राईआ। इक्को अक्खर निरगुण पढ़, सरगुण दए वड्याईआ। आदि लगाई जिस ने जड़्ह, सो वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। साचे तख्त हरि जू हुक्मरान, हरि हरि आपणा हुक्म वरताइंदा। विष्नूं आपणे दे ब्यान, ब्याना होर ना कोए रखाइंदा। ब्रह्मे आपणी कर कल्याण, चार वेद अन्त ना वखाइंदा। शंकर आपणा वेख मकान, मकान कवण दुआर सुहाइंदा। तेई अवतार करो ध्यान, कवण कूटे हरि जू आसण लाइंदा। ईसा मूसा उठ करो सलाम, सजदा कवण कबूल कराइंदा। नानक गोबिन्द करो परवान, परवाना कवण हथ्थ फड़ाइंदा। भगत अठारां

मंगो दान, दाता दानी कवण वरताइंदा। सचखण्ड दवारे खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख लिख लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्नूं निउँ निउँ कहे बोल, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। मेरा मुक्का भण्डारा तूं तोलया तोल, तोलणहारा इक्क अख्वाईआ। चार जुग चौकड़ी तेरा भेव ना पाया वेख्या वज्जदा रोल, अलख अलख ना लख्या जाईआ। कोई वस्त ना मेरे कोल, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। मैं सुत्ता रिहा अनभोल, तेरा भेव रत्ती ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह प्या तेरी शरनाईआ। ब्रह्मा उठे मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। मेरा ब्रह्म भुलया तेरा राह, राह खैहड़ा नज़र ना आइंदा। नाता सके ना कोई जुड़ा, जोड़ी जोड़ ना कोई बणाइंदा। सस्से उपर होड़ा कोई सके ना ला, कोई निरगुण सरगुण ना वेस वटाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन मेरा ब्रह्म कोई कम्म ना आइंदा। त्रैगुण माया रही कुरला, कूक कूक सुणाईआ। मेरे मुख ते लग्गी छाह, काली छाही ना कोई धुआईआ। मैं तेरा भुल्ली राह, बेअन्त मेरे माहीआ। लख चुरासी गल विच पाया फाह, ना सके कोई तुड़ाईआ। जीव जंत विच भुल्ला, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन मिले ना कोई वड्याईआ। पंज तत्त वहाइन नीर, रो रो हाल सुणाया। बौहड़ी बौहड़ी वज्जा ज़ंजीर, ना सके कोई तुड़ाया। अठ्ठे पहर लग्गी पीड़, चार जुग ना कोए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर अमृत आपणा नीर प्याया। तेई अवतार सोए उठे, हाढ़ सतारां वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी चरन ढट्ठे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपणे जुग विच बणे रहे हट्टे कटे, तेरा बल वखाईआ। वसदे रहे काया मटे, पंज तत्त चोला जगत हंढाईआ। तेरे नाम रहे रत्ते, रुत्त रुतड़ी इक्क सुहाईआ। तेरे सुणाउँदे रहे पते, धुर फ़रमाणा गीत अल्लाईआ। तेरे दरस्स के आए पते, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। ना रोवे ना कदे हस्से, हरख सोग ना कोई रखाईआ। एका रंग रहे पहर अठ्ठे, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। गुर अवतार आपणे ख़ाते घत्ते, खात नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन सरन ना कोई सरनाईआ। पीर पैग़म्बर करन सलाम, सिर सजदा सीस झुकाया। तूं पैग़म्बर वड अमाम, तेरा अन्त किसे ना पाया। तूं साहिब हुक्मरान, हउँ फ़रमांबरदार सेव कमाया। कायनात तेरा ध्यान, ब्यान तेरा कलमा इक्क जणाया। दरगाह तेरी सच निशान, मुकामे हक़ हक़ वखान, नूरी जल्वा नूर जहान, मेरे परवरदिगार तेरे डिग्गे घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठे अलख जगाया। दर दुआरे

जगा अलख, अलख निरँजण इक्क मनाया। निरगुण निरगुण हो प्रतख, नानक निरगुण वेख वखाया। गोबिन्द कहे मेरा कमलापति, कँवल नैण नैण मटकाया। आदि जुगादी इक्को पत्त, लख चुरासी लए प्रनाया। वसणहारा घट घट, हर घट अंदर डेरा लाया। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, हउँ बालक सेव कराया। खाणी बाणी कर के आए जस, जस वेद पुराण सलाहया। अन्तिम वेला आए दस्स, लख चुरासी आपणा हाल सुणाया। साडा कोई ना चले वस, करन करावणहार करे खुदाया। अन्तिम कलयुग होए प्रगट, लोकमात फेरा पाया। वेखणहारा चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबकां कुण्डा लाहया। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा नाउँ वखाया। सीआं वंडे साढे तिन्न हथ्थ, सम्बल आपणा डेरा लाया। भगत भगवन्त लए रख, रक्षक आपणी सेव कमाया। बिन पढ़यां बिन गायां खोल्ह अक्ख, अक्ख अक्ख नाल मिलाया। सचखण्ड दवारा देवे दस्स, सति सतिवादी आप सुणाया। हरिसंगत कर इकट्ठ, एका मन्त्र दए पढ़ाया। तेई अवतारा करे इकट्ठ, दस गुरू नाल रलाया। पीर पैग़म्बर पैण हस्स, वाह वाह तेरी वड्याआ। बिन नथ्थों पाई नथ्थ, शब्दी डोर बंध बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सतिगुर खेल रचाया। दूर दुराडे आए दुआर, लोकमात फेरा पाईआ। वेख्या सोहणा तेरा दरबार, वड दाते बेपरवाहीआ। कोई ना पावे तेरी सार, उच्चा डण्डा हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत
३८३
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा साचा राणा, सच हदीस इक्को हुक्म सुणाईआ। एका हुक्म सुनणा कन्न, बिन कन्नां आप जणाइंदा। इक्क फ़रमाणा लैणा मन्न, बिन लिख्यां लेख लिखाइंदा। एका रसना कहिणा धन्न धन्न, बिन
१२
रसना राग जणाइंदा। एका वसना छप्परी छन्न, बिन छप्पर छन्न छुहाइंदा। एका राग गाउणा तन, पंज तत्त काया बिन तन्दी तन्द तार सतार ना कोए हिलाइंदा। एका प्रकाश करे नेत्र अन्ध, निरगुण नूर जोत धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे सच दरबारा, आप लगाए हरि निरँकारा, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। निरगुण आसण गया लग्ग, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। लोकमात सूरा सरबग, सर्ब कला खेल कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए सद्द, सद्दा देवे चाँईं चाँईंआ। त्रैगुण माया लई बंध, बन्दीख़ाने आपणे पाईआ। पंज तत्त लए बन्न्ह, डोर आपणे हथ्थ उठाईआ। गुर अवतार आपणी झोली रहे अड्ड, चरन कँवल लए बिठाईआ। पीर पैग़म्बर आपणे वेखे आपणी हद्द, हद्द आपणी दए समझाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी रही लँघ, वेला अन्तिम गया आईआ। कलयुग मुकणहारा पन्ध, पुरख अबिनाशी आप मुकाईआ। लख चुरासी लेखा चुकना पूरन झब्ब, ज़ात पात वरन गोत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठ साचा हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म सुण कन्न ला, लाशरीक आप जणाइंदा। जुग जुग गुर अवतार

पीर पैग़म्बर बणे मलाह, निरगुण सरगुण बेड़ा आप बंधाइंदा। मन्त्र नाम कलमा आए पढ़ा, कलमा कलमी खेल कराइंदा। गुर गुर आपणा नाउँ धरा, धुर संदेशा राग अल्लाइंदा। अन्तिम सब दा लेखा दए मुका, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सारे इकट्ठे करो सलाह, हरि जू सच्चो सच जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी दए जणा, दो जहानां नाल मिलाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई होए बेईमान, ईमान सच ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार सारे उठे एका वार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। चारों कुण्ट करन विचार, विचारी विचार नाल रलाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, विभचार करे लोकाईआ। नार कन्त ना कोई आधार, मात पित ना कोई वड्याईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद हाहाकार, जगत स्यासत करे लड़ाईआ। हरि का नाम ना कोई प्यार, गुरसिख रूप ना कोई वखाईआ। गीता ज्ञान ना कोई आधार, प्राणी पुराण ना कोई समझाईआ। अञ्जील कुरान ना कोए आधार, आयत शरायत ना कोई शनवाईआ। गुरू ग्रन्थ ना कोई विचार, गुरू गोबिन्द ना कोई मिलाईआ। उच्ची कूक कूक करन पुकार, जगत तृष्ना होई हल्काईआ। शिवदुआले मट्ठ ख़ाली दिसण दुआर, तीर्थ तट हरि जू रूप ना कोई धराईआ। विष्नूं विश्व ना कोई भण्डार, शांतक सति ना कोई कराईआ। ब्रह्मे ब्रह्म ना कोई पसार, पारब्रह्म नज़र ना आईआ। शंकर सहिंसा रहे ना कोई संसार, भेव अभेव ना कोए वखाईआ। त्रैगुण पर्दा सके ना कोई पाड़, पंज तत्त सति ना कोए जणाईआ। सत्तर बहत्तर चुहत्तर करे ना कोई उज्यार, सत्त चार ना संग रखाईआ। गुर अवतार वेखण वारो वार, आपणी अक्ख खुल्लाईआ। पीर पैग़म्बर बौहड़ी बौहड़ी करदा रहे पुकार, दरोही खुदाए पई दुहाईआ। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। खुल्ली मैंहडी गुत्त नार मुटयार, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। नेत्र नैण ना कोई श्रृंगार, साचा नैण ना कोई मटकाईआ। अक्ख नाल अक्ख ना मिलावे सांझा यार, हक़ रूप नज़र किसे ना आईआ। अलख होए ना कोए जैकार, उच्चे टिल्ले पर्बत बैठे डेरे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उठ उठ तक्कण, नेत्र नैण नैण उठाया। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा सत्त दीप कोई ना दिसे साचा मक्खण, छाछ रूप नज़री आया। कोए ना किसे आए रखण, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ भज्जण, त्रैगुण अग्नी इक्क लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा रचाया। विष्न ब्रह्मा शिव मारी कूक, कूक कूक सुणाईआ। लख चुरासी साडा आवा गया ऊत, प्रभ तेरी करे ना कोई पढ़ाईआ। दिसे कोई ना साचा पूत, सपूत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिउँ भावे तिउँ आपणे कर, साडी चले ना

कोई चतुराईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों प्या हस्स, हस्स हस्स आप जणाइंदा। किसे दा चले ना कोई वस, हरि जू आपणा हुक्म चलाइंदा। जिस ने आदि मार्ग दिता दस्स, अन्तिम आपणे लेखे पाइंदा। एकँकार लेखा चुका करे ना बस, त्रैगुण माया आपणे चरनां हेठ दबाइंदा। पंज तत्त थल्ले देवे ढक, फेर बाहर ना कोए कढाइंदा। गुर अवतार खोल्या हट्ट, बण हटवाणा आप चलाइंदा। अन्तिम मारे इक्को सट्ट, शब्द हुलारा इक्क वखाइंदा। चरन दुआरे आए नस्स, सच दुआरा इक्क वखाइंदा। आपणा आपणा हाल रहे दस्स, पिछला लेखा पुच्छ पुछाइंदा। एथों कोई ना जावे नस्स, हरि जू आपणा घेरा पाइंदा। आपणी करनी गए फस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेई अवतार पुच्छ पुछाइंदा। तेई अवतार दस्सो हाल, हरि जू हरि आप सुणाया। सतिजुग त्रेता द्वापर बणया काल, काल आपणा रंग रंगाया। महांकाल वसणहारा धर्मसाल, धर्म दुआरे डेरा लाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, जगत जुगत आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा मंग मंगाया। एका लेखा मंगे जगदीश, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस दा पीसण ल्या पीस, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जिस दी गा गा आए हदीस, पढ़ पढ़ कर पढ़ाईआ। सो साहिब सिर धर के बैठा ताज सीस, सीस जगदीश आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। तेई अवतार उठ करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाया। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या वारो वार, वाह वाह तेरी वड वड्याआ। तेरा नाउँ पंज तत्त प्यार, तत्तव तत्त नाल मिलाया। ब्रह्म मत मति एका वार, पारब्रह्म ब्रह्म समझाया। तेरे भगतां सच विहार, साचे सन्तां संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नूर तेरा रुशनाया। तेरा नूर तेरी जोत, तेरे रंग समाईआ। जुगा जुगन्त वसे काया किला कोट, पंज तत्त तत्त बंधाईआ। शब्द नगारे लाए चोट, मति मन बुध आप समझाईआ। पत्तत पुनीत तेरी ओट, एका एक सरनाईआ। जुग बीते कोटी कोट, कोटन कोटि गए विहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सरनाईआ। सरनगति प्रभ तेरी ठाकर, तेई अवतार रहे जणाईआ। तेरा दुआर वड्डा सागर, हउँ मछली तरन ना जाईआ। दर आयां घर देवे आदर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। तूं शाह वड बहादर, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। तूं पिता पूत पिदर मादर, पिसर तेरी खेल नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी ओट तकाईआ। तेरी ओट आए तक्क, तक्कया इक्क सहारा। तूं साहिब पुरख समरथ, तिस बख्शणहारा। लोकमात आए नट्ठ, त्रिलोकी नाथ लए अवतारा। जगत ज्ञान मन्त्र दस्स, अक्खर अक्खर कर वरतारा। तेरी गा गा महिमा जस,

भरया आप भण्डारा। बिन भगतां किसे ना आवे वस, दस्सया राह सुखाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आए चल तेरे दुआरा। दर दुआरे तेरे भगवान, तेरी सरन तकाईआ। तेई अवतार मंगण दान, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। बणदे रहे काहन, गोपी सुरती शब्द बंधाईआ। तेरा झुलया इक्क निशान, निशाना इक्को घर सुहाईआ। असीं चरनीं डिग्गे आण, ढह पए सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तुटया माण, बण निमाणे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा साचा वर, वर दाता तूं रघुराईआ। तूं दाता दातार, बेअन्त बेअन्त अख्वाइंदा। तूं भण्डारी वड भण्डार, सच भण्डार आप वरताइंदा। तूं बख्शिंद बख्शणहार, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। असीं तेरे चन्द तेई अवतार, तूं पिता इक्क अख्वाइंदा। ख़ाली आए सर्ब दरबार, हथ्थ नज़र कोई ना आइंदा। जिउँ भावे तिउँ लैणा तार, तेरे अग्गे तेरा बरदा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल हरि करतार, एका वार जणाईआ। सुण हुक्म तेई अवतार, त्रैगुण आपणा रहे जणाईआ। कलयुग अन्तिम आई वार, पुरख अबिनाशी खेल रचाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात रिहा कराईआ। इक्क सुहाए उच्च दुआर, महल अटल करे रुशनाईआ। निरगुण जोती नूर पसार, नूरो नूर नूर बेपरवाहीआ। चौथे जुग लहिणा देणा कर्ज़ उतार, मकरूज़ आपणा फ़र्ज़ दए वखाईआ। कातिल मकतूल वेखे इक्क दुआर, वेखणहारा इक्को आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेई अवतारां दए सालाहीआ। तेई अवतार रखणा याद, हरि हरि साचा सच जणाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, पारब्रह्म वेस वटाइंदा। जुग जुग देवणहारा दाद, आपणा नाम आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल रहे सुण, सुण सुण शुकर मनाया। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, तेरा अन्त किसे ना पाया। एका नाद एका धुन, एका राग रिहा सुणाया। चौदां तबक चौदां लोक चौदां विद्या आप आपणा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाया। सचखण्ड दवारे बैठ परवरदिगार, बेपरवाह खेल कराईआ। ईसा मूसा आए दुआर, दस दस कदम पिच्छे बैठे सीस झुकाईआ। तेरे हुक्मे अंदर बणे फरमांबरदार, फ़र्ज़ आपणा पूर कराईआ। तेरा हुक्म संदेशा विच संसार, सादक सिदक सबक पढ़ाईआ। एका अल्फ़ कर त्यार, आरफ़ करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। दर दुआरे बैठे पाँधी, आपणा पन्ध मुकाईआ। चौथे जुग थक्की मांदी, आपणा हाल रही सुणाईआ। चौदां तबक वगी आंधी, मुहम्मद नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अल्ला राणी गीत सुणाइंदी, साचा ढोला एका गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

३८६ १२

किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरन मिले सरनाया। ईसा मूसा दुआरे ढठ्ठ, दर सजदा सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी कर किरपा पुरख समरथ, समरथ तेरी वड्याईआ। अन्तिम करनी पूरी आस, नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। सच संदेशा हुक्म अमाम, आलमीन आप जणाइंदा। धुरदरगाही इक्क पैग़ाम, वड अमाम आप सुणाइंदा। दस्तगीर पकड़े दामन, दस्त बरदार दस्त मिलाइंदा। इक्क वखाए सच जाम, आबेहयात इक्क वखाइंदा। एका करे खेल तमाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। मुहम्मद छोटा बाला गया रुढ्ढ, दर दर आपणा हाल सुणाईआ। मेरा ख़ाली दिसे बुत्त, बुत्त तेरा रंग वखाईआ। मेरे कोल ना कोई कुच्छ, ख़ाली भण्डार नज़री आईआ। मैं आया दूरों पुच्छ, मिले दर तेरे सरनाईआ। क्यों साहिब बैठा लुक, परवरदिगार मुख छुपाईआ। तेरे हुक्म अंदर कलयुग गया बुक्क, चार कुण्ट डंक वजाईआ। सच सुच्च कढ्ढी कुट्ट, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। नव नौ चार पई लुट्ट, सच वस्त रहिण ना पाईआ। तूं क्यों गया रुस्स, आपणी करवट ना बदलाईआ। मेरे चौदां तबक मैथों गए रुस्स, तेरा दरस करन ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तेरी सरन सरनाईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, दीन दयाल दया कमाईआ। सद तेरा वेखे हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। करे खेल इक्क कमाल, कायनात वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरे आप बहाइंदा। दर दुआरे आओ नेड़े, नेरन नेरा आप जणाइंदा। दुर दुराडे मुक्के झेड़े, जग झगड़ा आप मुकाइंदा। अग्गे वेखो तेई अवतार केहड़े केहड़े, भाई भाईआं नाल मिलाइंदा। पारब्रह्म दे खुल्ल्हे वेहड़े, अद्धविचकार वंड ना कोई जणाइंदा। रल मिल बहणा साचे खेड़े, साचा खेड़ा इक्क सुहाइंदा। आपे करे हक़ नबेड़े, हक़ो हक़ सब दी झोली पाइंदा। जुग जुग देंदा आया गेड़े, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आप पाए साचे घेरे, घेरा आपणे नाम पाइंदा। एथे बहणा वड्डे कर के जेरे, हरि जू एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच इज़ाजत देवे अमाम, अग्गे आ के करो सलाम, अलैकम आपणा नाउँ वटाइंदा। आए करन सर्ब सलाम, पारब्रह्म सीस झुकाईआ। रैहबर बण विच संसार, बेख़बर साची सच आपणी आप सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ आया जाबर ज़बरदस्त दस्तगीर, दस्तबरदार करे सर्ब लोकाईआ। लेखा जाणे खुदा बदलणहार तदबीर, तकसीर सब दी रिहा मिटाईआ। हाए बौहड़ी दरोही खुदाए साचे कटे ज़ंजीर, शरअ ज़ंजीर नज़र कोई ना आईआ। बीपहर महिबान बीदो बी ख़ैर या मूबैन बी ख़ैर या अलाह आलमीन इक्को इक्क रंग बेनज़ीर, बेअन्त नज़री आईआ। जिस नूं कहिन्दे बेनज़ीर, सो आपणी नज़र साडे उत्ते पाईआ।

चार जुग आपणे दुआरे अग्गे खिच्च के रखी लकीर, कोई गुर अवतार अग्गे लँघ ना पाईआ। मुख नक़ाब रख पर्दा ओहला रखदा रिहा बण हकीर, आपणी हरक्त ना किसे वखाईआ। जिस दे पिच्छे चौदां तबक होए दिलगीर, सो पीर मिल्या सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिती इक्क सरन सरनाईआ। ईसा मूसा चरन ढट्ठ, ढह ढह शुकर मनाया। मेरे ख़ुदा साडा तुट्टा हठ, माण मोह ना कोई रखाया। तसबी मणका मौला तेरा नाम इक्क रट, रट्टा शरीअत जगत मुकाया। इक्क तेरा वेख्या हट्ट, कवण कूट मुहम्मद मूसा ईसा बैठे डेरा लाया। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, तेरी सरन सच्ची सरनाया। पुरख अबिनाशी आपणे चरनां हेठां रख, हुक्मी हुक्म मनाया। तुहाड्डा लेखा मुकाणा करना बस, नानक निरगुण वेखे ध्यान लगाया। सचखण्ड दवारे रिहा हरि हरि गा, बिन रसना जिह्वा गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाया। आ नानक वेख सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप सुहाईआ। निरगुण निरगुण कदे ना होए रंड, निरगुण कन्त निरगुण नार रिहा हंढाईआ। निरगुण पीर निरगुण सन्त, निरगुण रत्ती रत्त सुहाईआ। निरगुण मणीआ निरगुण मंत, निरगुण सतिनाम पढ़ाईआ। निरगुण आदि निरगुण अन्त, निरगुण आपणा खेल समझाईआ। निरगुण जीव निरगुण जंत, निरगुण घट घट डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार इक्क वखाईआ। साचा प्यार नाल पाए बन्धन, बन्धन एका एक रखाइंदा। सचखण्ड निवासी साचा चन्दन, चौदां रतन रंग रंगाइंदा। दो जहानां करे बन्दन, बन्दना साची इक्क समझाइंदा। लेखा जाणे इक्क अनन्दन, रुत्त रुत्त विच रंगाइंदा। वसणहारा कोट ब्रह्मण्डण, ब्रह्मण्ड खण्ड खेल कराइंदा। गुर गुर करे वंडण, दस दस आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती डगमगाइंदा। एका जोती साचा नूर, नूर नुराना नूर धराईआ। एका ज़ाहर होए ज़हूर, ज़ाहर आपणा खेल खिलाईआ। एका सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब थाईंआ। एका वसे नेड़े दूर, दूर दुराडा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण लए मिलाईआ। निरगुण नानक दस दस धार, गुर गुर रूप जणाइंदा। एका घर करे प्यार, एका आपणी खेल खलाइंदा। एका राग एका नाद, एका नूर नज़री आइंदा। एका शब्द नाम जैकार, एका राम सीता सुरती संग निभाइंदा। एका काहन करे प्यार, एका राधा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर आप सुहाइंदा। साचा घर सोभावन्त, हरि हरि जू आप सुहाईआ। लेखा जाणे भगत भगवन्त, भगत साचे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा देवे सुणाईआ। सच संदेशा थान थनंतर, निरगुण निरगुण आप जणाया। चार जुग दा साचा मन्त्र, सति सतिवादी

आप सुणाया। सतिजुग बणाए साची बणतर, घड़न भन्नणहार खेल आप खिलाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, अन्तर आसण आपणा लाइंदा। त्रैगुण बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। लेखा जाणे गगन गगनंतर, मंडल मण्डप एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक्क लगाया। सच दरबार सोहे भगत, हरि भगवान सीस झुकाईआ। तेरा खेल वेख्या जगत, जग जीवण तेरी वड्याईआ। तेरा नूर तेरी रक्त, तेरी बूंद भगत कुड़माईआ। तेरी धार तेरी शक्ति, तेरा नाम तेरा जस गाईआ। तेरा वेला तेरा वक्त, तेरी थित तेरी वंड वंडाईआ । इक्क कबीरे मिटी हरस, चढ़ मन्दिर दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा खेल कराईआ। कबीर जुलाहा उच्चे टिल्ले गया वस, हरि जू हरि हरि मेल मिलाइंदा। भगत भगवान पए हस्स, हँसमुख खेल खिलाइंदा। प्रेम प्यार अंदर गए फस, नाता बिधाता ना कोई तुड़ाइंदा। कबीर कहे मैं तेरा गाया जस, रसना जिह्वा नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर जुलाहे आप समझाइंदा। कबीर जुलाहा हरि जू दस्से, एका शब्द जणाईआ। हर घट हरि आपे वसे, घर घर डेरा लाईआ। कदे रोवे कदे हस्से, आप आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप चुकाईआ। कबीर अग्गों मारे ताहना, एका एक जणाइंदा । तूं वसणहारा सचखण्ड मकाना, तेरा घर नज़र किसे ना आइंदा। भरमे भुल्ले जीव जहाना, जीवण जुगत ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला जन भगतां मेल मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी हो खुशहाल, एका वक्त रिहा समझाईआ । अन्तिम कलयुग होवां दयाल, दीन दयाल दया कमाईआ। भगत वेखां साचे लाल, लोकमात खुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लवां उठाल, उठ उठ आपणा राह चलाईआ। देवां माण सिँघ पाल, विच पालकी सच बहाईआ। जगदीश सिँघ दीपक बाल, साचा नूर करा रुशनाईआ। सिँघ मनजीत मन्न सुवाल, मन वासना दए मुकाईआ। सिँघ सवरन ना खाए काल, महांकाल नेड़ ना आईआ। गुरदयाल वेखे सच्ची धर्मसाल, बल दुआरा सोभा पाईआ। बावन चले नाल नाल, बलधारी रूप वखाईआ। पंच कर दर परवान, सच संदेशा दए सुणाईआ। नानक लेखा कर परवान, लेखा आपणे लेखे पाईआ। पंच परवान पंच प्रधान, पंचां देवे दरगाह देवे माण, दरगाह साची दर परवान, एका एक दर दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पंज भगत पंज दुलार, पंच आपणे राह चलाइंदा। कबीर तेरी सुण पुकार, हरिजन संग नाल रलाइंदा। कलयुग वेखे आप निरँकार, वार थित ना कोई जणाइंदा। राम रूप हो त्यार, कृष्न काहन रंग रंगाइंदा। ईसा मूसा दे अधार, भीतर आपणी गंढु पुवाइंदा।

नानक निरगुण इक्क जैकार, जै जैकार आप सुणाइंदा। साचा खोल्ह इक्क किवाड़, धरत धवल धौल वड्याइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी दा भार दए उतार, भगवन सिर आपणे भार उठाइंदा। लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। कबीर कहे सुण मीत, मित्र प्यारे आप सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग गाउँदे रहे गीत, तेरा नाम ध्याईआ। शिवदुआले मट्ठ बणाए मन्दिर मसीत, गुरदवारे नाल रलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाए गीत, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नाल मिलाईआ। खाणी बाणी भेव ना पायण राग छत्तीस, लख चुरासी बण सेवक सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बरां दए हदीस, साची सच करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम ख़ाली करे ख़ीस, शाह सुल्तान देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान दए समझाईआ। कबीर जुलाहा दोए जोड़, सरन सरनाई सीस झुकाइंदा। तूं सदा जाएं बौहड़, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। जन भगतां बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। रस करें मिट्ठा कौड़, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। दो जहानां लाएं पौड़, उच्च डण्डा हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकाइंदा। सुण भगत दस्से भगवान, दहि दिशा आपणी खेल
३६० कराईआ। जोती नूर होवां दो जहान, हँ ब्रह्म करां कुड़माईआ। हँ ब्रह्म करां प्यार, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म ३६०
देवां दान, ईश जीव गंढु पुवाईआ। पंज तत्त काया मन्दिर वेख मकान, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। डूँघी भँवरी हो
१२ प्रधान, काया कवरी कुंडा लाहीआ। आत्म सेजे इक्क निशान, निर्मल नूर जोत रुशनाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कान, १२
अनहद नादी राग सुणाईआ। पवण पाणी सर्ब शरमाण, जोती जोत खेल कराईआ। सुरती शब्दी इक्क ज्ञान, बिनां अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। बजर कपाटी खोल्ह दुकान, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। साचे मन्दिर हो प्रधान, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। भगत भगवान करे पहचान, पहचान विच आप किसे ना आईआ। चार जुग अन्तिम विछड़े मेले आण, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। वीह सौ बिक्रमी हो प्रधान, निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। धुर संदेशा देवे आण, भारत खण्ड करे जणाईआ। कलयुग मेटे पिछला निशान, सतिजुग निशाना दए जणाईआ। गुरमुख साचे देवे दान, दाता दानी आपणा नाउँ वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर जुलाहे रिहा समझाईआ। कबीर जुलाहे वेखण आउणा, हरि जू हरि सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल कराउणा, खाणी बाणी भेव कोई ना आइंदा। सच महल्ल इक्क प्रगटाउणा, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाइंदा। दीपक जोती इक्क जगाउणा, तेल बाती ना कोए पाइंदा। शब्दी अगम्मी एका गाउणा, रसना जिह्वा

ना कोई हिलाइंदा। बहत्तर नाड़ रंग रंगाउणा, नूर नूर डगमगाइंदा। भगत भगवान आप उठाउणा, पूरब लेखा लेखे पाइंदा। बहत्तरां आपणी गोद बहाउणा, दर मन्दिर कुण्डा लाहइंदा। सत्तरां आपणे दर रखाउणा, चुहत्तरां आपणे अंग लगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ उठाउणा, ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण आउणा, बण पाँधी पन्ध मुकाउणा, दर आ दर्शन पाउणा, दरसी दरस दरस आप कराइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार शुकर मनाउणा, शुकर गुज़ार सर्ब अख्वाइंदा। गुर अवतार जस गाउणा, जस सतिगुर इक्क सुणाइंदा। सच दुआर आप प्रगटाउणा, प्रगट आपणा रंग रंगाइंदा। तिस दुआरे भगतां गीत हरि जू गाउणा, गीत गोबिन्द आप सुणाइंदा। भगत अठारां नाल मिलाउणा, चल चल आपणी खुशी मनाउणा, एका काया बन्धन पाउणा, एकँकार एका आपणा रंग वखाइंदा। दूजे दर भेव चकाउणा, सुत दुलारे वेख वखाइंदा। तीजे दर पर्दा लाहाउणा, एका नूर धराइंदा। चौथे पद डेरा लाउणा, डेरा आपणा आप जणाइंदा। पंचम राग इक्क अलाउणा, पंचम पंचम एका घर बहाइंदा। छेवें छप्पर छन्न इक्क सुहाउणा, साचे घर दर्शन पाइंदा। साची छप्परी भाग लगाउणा, सति पुरख निरँजण डेरा लाइंदा। अठ्ठां तत्तां भेव चुकाउणा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेख वखाइंदा। नौ नौ वेख वखाउणा, नौ दुआरे पर्दा लहिन्दा। दस्म दुआरा आप सुहाउणा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। हाज़र हो के दरस दखाउणा, आप आपणा वेस वटाइंदा। वीह सौ उन्नी बिक्रमी आप खेल वखाउणा, हाढ़ सतारां वंड वंडाईआ। साचे भगतां माण दिवाउणा, भगत भगवान आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर आप सुहाइंदा। साचा दर सुहाए जगदीश, जगदीश आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। साहिब सुल्तान छत्र झुलाए सीस, छत्तरधारी इक्क हो जाईआ। दो जहानां मन्नणी पए हदीस, कोए सके ना सीस उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरते करतार, वरतावणहार आप अख्वाया। चुहत्तरां करे आप त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल आप मिलाया। त्रैगुण तेरा सति भण्डार, पंज तत्त लेखा रिहा चुकाया। गुर अवतार होए बेदार, सोया कोए रहिण ना पाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार, यारी यार नाल वखाया। भगष्त अठारां दे आधार, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। दस गुरू करो विचार, वेला अन्तिम नेड़े आया। सब दा लहिणा मुक्या अन्त संसार, लेखा कोए रहिण ना पाया। उठो सारे करो इकरार, इकरारनामा हरि जू रिहा लिखाया। दीन मज़्ब सब नूं छड्डणा पए विहार, बिवहारी आपणा विहार जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा जणाईआ। सारे उठण उठ उठ वेखण, इक्क दूजे वल ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम मिटण लग्गी रेखण, हरि जू हरि हरि आप मिटाईआ। निरगुण भेख धारया

भेखण, भेखाधारी भेस वटाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना केसन, ना कोई मूंड मुंडाईआ। इक्को राम इक्क रहीम इक्को दस दस्मेशन, इक्को गोबिन्द खेल कराईआ। आदि जुगादि रहे हमेशन, ना मरे ना जाईआ। सब दा लेखा आया मेटण, मेटणहार इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म दी सरन लेटण, सच सिँघासण रिहा विछाईआ। सच दुआरे लए लपेटण, आपणा पर्दा इक्को पाईआ। छोटे बाले बण बण खेडण, पुरख अबिनाशी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार सच्ची कुड़माईआ। करे कुड़माई बण मलाह, हरि जू खेल कराइंदा। गुर अवतार पैग़म्बर करो सलाह, साचा नाता आप जड़ाइंदा। इक्क दूजे दी पकड़ो बांह, हथ्थ नाल हथ्थ मिलाइंदा। अल्ला मीआं सब दा बणे पिता मां, नारी कन्त वेस वटाइंदा। राम कृष्न आप अख्वा, नानक गोबिन्द रंग रंगाइंदा। चार जुग दे गुर अवतार आपणी गोद बहा, अगला लेखा आप जणाइंदा। खाणी बाणी दो जहानी शाह सुल्तानी देवे पन्ध मुका, बण पाँधी फेरा पाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग देंदा आया पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी भेव चुका, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। कोई सके ना सिर उठा, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। चौदां तबक ढेरी बैठा ढाह, चौदां लोक सर्ब कुरलाइंदा। राए धर्म दोए जोड़ पए सरना, चित्तर गुपत आपणा लेख ना कोई वखाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल रिहा करा, आप आपणी धार चलाइंदा। कबीर जुलाहे दए वखा, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। नामे उठ वेख मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल रलाइंदा। धन्ने जट्ट तेरा पिछला लेखा दए मुका, जट्ट जट्टां नाल मिलाइंदा। करे खेल बेपरवाह, आप आपणी कल धराइंदा। हरिभगत लए जगा, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग दए चला, कलयुग लेखा पूर कराइंदा। सिर सके ना कोई उठा, सीस जगदीश सर्ब झुकाइंदा। गोबिन्द पुरख अकाल रिहा सुणा, जुग जुग आपणा डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा दो जहानां वाली निरगुण नूर जोत अकाल, श्री भगवान भगत अधार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत जन आए दुआर, हरि हरि माण रखाइंदा। लोकमात दा सच विहार, बण विवहारी आप वखाईआ । सचखण्ड दा सच दुआर, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। रविदास चम्मयार बण लिखार, साढे तिन्न गया समझाईआ। निरगुण नानक कूक कूक पुकार, एका सोहला गया सुणाईआ। सोहँ ढोला अपर अपार, काया चोला दए बदलाईआ। वेद व्यासा बन्ने धार, वेद कतेब मुख शरमाईआ। तूही तूही कर पुकार, गोबिन्द गोबिन्द गया समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, ना कोई पिता ना कोई माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार करो ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। इक्को शरअ इक्क अमाम, इबकुल वक्त

इक्क समझाइंदा। एका इस्म आज़म करना प्रणाम, इस्लाम एका घर वखाइंदा। एका हुज़रे बह बह दए पैग़ाम, एका काअबा आप वखाइंदा। एका पैग़म्बर बणे अमाम, आप आपणा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। गुर अवतार एका राग, हरि जू आप सुणाईआ। पिछला लेखा दयो त्याग, अगला मार्ग रिहा जणाईआ। आत्म परमात्म उपजे वैराग, वैरागी रिहा समझाईआ। सुरत सुवाणी जाए जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। बण बण हँस बणाए काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाइंदा। घर विच घर जगाए चिराग, एका जोत करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझाए आग, अग्नी अग्ग ना कोई लगाईआ। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, दुरमति मैल धुवाईआ। ऐथे ओथे बणे सज्जण साक, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। नूरी खुदाया पाक, एका अल्फ़ी तन हंढाईआ। पिछले औगण करे मुआफ़, मुफ़त सौदा रिहा वरताईआ। अग्गे कोई ना रहे गुसताख़, गुसा कोई रहिण ना पाईआ। कलयुग वेखण आया घाट, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। कबीर जुलाहे वेख नैणां साथ, जन भगतां रिहा तराईआ। लेखा मुक्या साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, सच्चा आपणा दरस दखाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैग़म्बर दस्सदे रहे करामात, सो करामात आपणा रंग रिहा वखाईआ। उठो वेखो मार झात, झाकी अंदर नज़री आईआ। शाह अस्वारा पाकी पाक, पीर पैग़म्बर मेल मिलाईआ। भगत भगवन्त उतारे इक्को घाट, पतन इक्को इक्क अख्वाईआ। चार वरन खोल्ह्या इक्को हाट, साचा हट्ट दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। साचा हुक्म दो जहान, दो जहानां वाली आप सुणाइंदा। शब्दी सुत इक्क बलवान, थिर घर दुआरे इक्क रखाइंदा। विष्नूं तेरा तोड़े माण, ब्रह्मे तेरा मोह मिटाइंदा। सतिजुग तेरी कर कल्याण, कुला आपणी आप रखाइंदा। तेई अवतार दे दे दान, गुर अवतार संग रखाइंदा। उठो सारे इक्को वार करो प्रणाम, हथ्थ परवाना नाम फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क जणाइंदा। सति संदेशा इकवन्जा बवन्जा धार, सति सत्त चार वज्जी वधाईआ। चार जुग दा मीत मुरार, अन्तिम वेखण आईआ। करनी करता पावे सार, कादर करीम आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चुहत्तर सारे गए मिल, मिल मिल हाल सुणाया। तेरा नूर सदा बिस्मिल, बिस्मिल तेरा रंग वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठे अलख जगाया। दर जगाई इक्क अलख, अलख निरँजण दए वड्याईआ। अगला मार्ग देणा दस्स, आपणी दस्सणी पढ़ाईआ। तेरे अग्गे साडी बस, चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, मिले ओट शरनाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, एका

हुक्म जणाइंदा। चुहत्तरां मिले इक्क मलाह, मलाहगीर आप अख्वाइंदा। इक्क दूजे दी पकड़े बांह, मेल विछोड़ा आप कराइंदा। इक्क सारे गाउँदे नाँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। इक्को बणया सच्चा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाइंदा। इक्क बणाणा पिता मां, पिता मां इक्क हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म सुण दातार, सब ने सीस झुकाया। गोबिन्द सूरा उठ बलकार, नेत्र नैण नैण उठाया। तेरा रूप पुरख अकाल, अकाल तेरी वड्याआ। तेरी सिफ्त ना दीन दयाल, सिफ्ती सिफ्त ना कोई सालाहया। आदि जुगादि करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाया। मैं छोटा तेरा लाल, लाल नीहां हेठ दबाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग कर तेरी भाल, निरगुण सरगुण खोज खुजाया। कलयुग बणे इक्क दलाल, आप आपणा वेस वटाया। संग रखाए काल महांकाल, महांबीर भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ते पाया। तेरे अग्गे वास्ता मोर, दोए जोड़ सीस झुकाया। तूं चढ़या साचे घोड़, शाह अस्वार बेपरवाहया। तेरी लग्गी निभे तोड़, मेरी सके ना कोई तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाया। दर तेरे सीस गया झुक, हरि सतिगुर मीत मुरार। तेरा भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेटणहार। सुत तेरा दुलार आपणी गोदी लैणा चुक्क, देणा इक्क हुलार। कलयुग पन्ध जाए मुक्क, अन्त रहे ना विच संसार। लख चुरासी नाता जाए छुट्ट, कूड़ी क्रिया कूड़ पसार। बल बलवान जाए उठ, निहकलंक नरायण नर अवतार, नौ खण्ड पृथ्मी वेखे रुख, सत्तां दीपां बोल जैकार। साडे वस ना चले कुच्छ, करता कीमत पावे सार। तेरे कोलों सके ना कोई लुक्क, लुकया रहे ना समुंद सागर डूँघी गार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे चरन होया पनिहार। पुरख अबिनाशी दया कमा, रसना हुक्म सुणाइंदा। तेरा मेला सहिज सुभा, घर साचे आप कराइंदा। तेरे मन्दिर डेरा ला, तेरा लहिणा आप मुकाइंदा। गुर चेला रूप आप वटा, सज्जण सईआ लोकमात फेरा पा, सम्बल नगरी इक्क वखाइंदा। भगत भगवन्त लए जगा, जीवण जुगत इक्क समझाइंदा। चार जुग दे विछड़े लए मिला, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाइंदा। सत्तर बहत्तर चुहत्तर एका गंढु दए पुआ, आपणी हथ्थीं गंढु वखाइंदा। सचखण्ड सच दुआरा लोकमात दए प्रगटा, प्रगट आपणा नूर वखाइंदा। तिस दुआरे आसण लए लगा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर लए बुला, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। सुलाकुल बण खुदा, सुला सब दी आप कराइंदा। मुला मुसायक पीर कोई दिसे ना, शेख़ नज़र कोई ना आइंदा। पंडत पांधे दए मुका, थक्का मांदा पार करा, ग्रन्थी पन्थी साची सैंची इक्क वखाइंदा। ईसा मूसा लए

जगा, परवरदिगार हुक्म मनाइंदा। काला सूसा तन छुहा, मुख नक़ाब पर्दा लाहइंदा। साचा ढोला एका गा, दो जहान सुणाइंदा। मौला रूप आप वटा, मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। दो जहानां नाअरे ला, सृष्ट सबाई आप जगाइंदा। कर खेल बेपरवाह, ख़ालक ख़लक आप हिलाइंदा। पहला दूजा दर खुल्ह्, तीजे आपणे नैण जणाइंदा। चौथे दर सोभा पा, पंचवें आपणा राग अल्ह्इंदा। छे सत्त जोत जगा, अठ्ठ नौ वंड वंडा, दसवें लहिणा मूल चुका, दस्म दुआरी कुण्डा लाहइंदा। गोबिन्द साचे सुत जगा, दस इक्क ग्यारां जगत तन मुनार आप बणाइंदा। दस दस दो बारां, बारां बारां लेखा ला, नौ दर दरबार सुहाइंदा। तेरां तेरां लेखा दए मुका, राज राजानां शाह सुल्तानां साधां सन्तां ख़ाक मिलाइंदा। चौदां चौदां दया कमा, इक्की इकी वंड वंडा, पंदरां पंदरां तीर्थ तट्टां वेख वखा, अठसठ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे विच समाइंदा। सम्मत सोलां भर भण्डार, मस्तूआणे आप वरताइंदा। सम्मत सत्तरां खेल करतार, सूलां सत्थर इक्क विछाइंदा। सम्मत अठारां लए मुका, भारत खण्ड आपणा हुक्म जणाइंदा। सम्मत उंनी आपणा पर्दा देवे लाह, पुरख अकाल आपणा नूर वखाइंदा । सतिजुग साचा मार्ग देवे ला, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी झोली पा, आपणे घर बहाइंदा। साचे भगत कर रुशना, ज़ात पात मेट मिटाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मज़्ह्ब गवा, मज़ा इक्क चखाइंदा। शाह रग उपर बैठा दिसे खुदा, आपणी नौबत नाम वजाइंदा। अनहद राग रिहा सुणा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। पढ़ पढ़ पार सके ना कोई करा, पढ़ना लिखणा कम्म किसे ना आइंदा। जिस जिस सतिगुर पूरा मिले आ, अन्त आपणी गोद बहाइंदा। सतिजुग साचा चले राह, हरि साचा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, सुणया धुर फ़रमाणा। आए चल तेरे दुआर, मन्नयां तेरा भाणा। चार जुग दे विछड़े मेले यार, गुर अवतार कर प्यार, एका देणा सच आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे दर मंग मंगाना। मंगी मंग साचे घर, हरि सतिगुर दया कमाईआ। दीन मज़्ह्ब दा चुक्का डर, शरअ करे ना कोई लड़ाईआ। तुसां रल के बहणा इक्को घर, घर मेरे वज्जे वधाईआ। जिस ने घाड़न ल्या घड़, सो वेखे थाउँ थाईंआ। उठो सारे रल के इक्को शब्द लओ पढ़, हरि सतिगुर आप सुणाईआ। सच दुआरे जाणा वड़, बिन हरि फिर बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। सति सतिवादी पल्लू लैणा फड़, घर साचे गंढु पुआईआ। एका मिले नरायण नर, बण नारी सेव कमाईआ। सचखण्ड विच लग्गे जड़्ह, ना सके कोई उखड़ाईआ। लेखा जाणे सीस धड़, सीस धड़ करे वड्याईआ। जगत विहार विच ना जाणा अड़, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

३६५
१२

आप आपणी किरपा कर, एका भेव रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे कहिण, वाह वाह तेरी वड वड्याईआ। प्रभ दरस पाया तेरा नैण, नैण तेरा कँवल रुशनाईआ। धन्न भाग तूं आया लैण, बण बण आएं पाँधी राहीआ। कलयुग अन्तिम बण साक सज्जण सैण, सगला संग निभाईआ। सब ने मन्नया तेरा कहिण, तेरा कीता कथन ना जाईआ। तेरा नाम साचा कहिण, बस तेरी इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा पल्लू लईए फड़, तेरे भगतां नाल मिल जाईआ। तेरे भगतां मिलण आए, मल्लया सच दुआर। लोकमात फेरे पाए, निरगुण निरगुण निरगुण धार। जे कोई वेखे नज़र ना आए, दर बैठे गुर अवतार। पुरख अबिनाशी खेल कराए, खेलणहार एकँकार। साचे भगतां रिहा जगाए, देवे नाम हुलार। आओ उठो लहिणा देणा दए चुकाए, प्रभ आया चुकावणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां दए सहार। उठो भगत करो त्यारी, हरि साचा आप कराइंदा। पहलों आई बहत्तरां वारी, सत्तरां फेर नाल रलाइंदा। चुहत्तरां आत्म रहे ना कँवारी, परमात्म आपणी गंढु पुआइंदा। नाल रलाए संगत सारी, जो सोहँ ढोला गाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बणया सिक्दारी, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर इका घर बह बह करन विचारी, विचारयां विचार विच किसे ना आइंदा। सब दी आत्मा कहे तूं जितया मैं हारी, तेरी जित साडी हार ख़ुशी मनाइंदा। तेरी सोहे उच्च अटारी, जिस दुआरे बह बह ख़ुशी कराइंदा। तेरे भगतां मिली सरदारी, लोकमात बेड़ा पार कराइंदा। तूं दाता परवरदिगारी, तेरा अन्त ना कोई पाइंदा। तूं फिरे पिच्छे अगाड़ी, अग्गे पिच्छे सेव कमाइंदा। असीं ख़ुशी करीए सतारां हाढ़ी, बहत्तर सत्तर चुहत्तर जै जै जैकार कराइंदा। विष्नूं दोए जोड़ फिरे गुरसिखां दुआरी, आप आपणा फेरा पाइंदा। ब्रह्मा ख़ाली झोली रिहा वखाली, दोए जोड़ मंग मंगाइंदा। शंकर कहे मैं वारी, आपणा माण गवाइंदा। हरिसंगत उठो दर्शन करो जोत निरँकारी, निरगुण लोकमात फेरा पाइंदा। नानक कहे जोधा बलकारी, जिस गोबिन्द पिता मनाइंदा। जन भगतां करे रखवाली, प्रितपालणहार आप अख्वाइंदा। सतिजुग साची लाए फुलवाड़ी, साध संगत मेल मिलाइंदा। सम्मत वीह सौ उंनी सब दी चोटी गई मुंनी, ना कोई मुस्लिम ना कोई सुन्नी, हिन्दू सिख ना कोई अख्वाइंदा। करे खेल वड गुण गुणी, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। जन भगतां पैज स्वारी, अंदर वड़ वड़ मेल मिलाइंदा। निरगुण बण के आए नार मुटयारी, पुरख अबिनाशी जोत शब्द धार लोकमात ना कोई प्रनाइंदा। जन भगतां मिल्या आपणी वारी, सत्तरां मिले दिन दिहाढ़ी, बहत्तरां करे सच प्यारी, चुहत्तरां नेड़ ना आए मौत लाड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। तेरा खेल श्री भगवान, हरि जू हरि हरि वेख

वखाया। चार जुग तेरा पकवान, लख चुरासी रिज़क सबाया। कलयुग अन्तिम होया मेहरवान, मेहरवान वेस वटाया। निरगुण नूर हो प्रधान, लोकमात फेरा पाया। जन भगतां दिता दान, बिन भगती झोली पाया। बिन पढ़यां दिता ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाया। रातीं सुत्तयां मिले आण, दिने हथ्थ किसे ना आया। जे कोई पुच्छे किथे वसे भगवान, सब तों बैठा मुख लुकाया। गुरमुखां लेख चुकाया आण, आप आपणा पर्दा लाहया। असीं चल के आए दर दरबान, दर दरवेश फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे मंगण मंग मंगाया। तेरे घर सच भण्डार, हरि जू इक्को मंग मंगाईआ। कलयुग आएयों निहकलंक नरायण नर अवतार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। उन्नी हाढ़ दिवस विचार, सतारां हाढ़ खुशी मनाईआ। तेरयां भगतां सच भण्डार, चुहत्तरां एका वंड वंडाईआ। असीं मंगण आए चल दुआर, तूं आपणे आप वरताईआ। साडा बणया रहे प्यार, प्यार तोड़ सके ना कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, दीन दयाल दया कमाईआ। चुहत्तरां भगतां कर प्यार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर देण दुहाईआ। तोबा तोबा तेरे अग्गे सांझे यार, तेरे अग्गे रहे सुणाईआ। सोभा करे सर्ब संसार, सच भण्डार इक्को नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा आप वरताईआ। सच भण्डार आपणा खुल्हा, बण ख़ाकी ख़ाक वखाइंदा। सब नूं मिले इक्को राह, रैहबर इक्को नज़री आइंदा। आपणा पल्लू दए फड़ा, आप आपणी गंढु दुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवार आप सुहाइंदा। सच भण्डार रसना चक्ख, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। चार जुग जो बैठे रहे वक्ख वक्ख, भगत दुआरे लए मिलाईआ। आपे करनहारा कक्खों लख, लखों कक्ख दए कराईआ। रल मिल सारे जाण वस, घर साचे विच वड्याईआ। पारब्रह्म दा गाउणा जस, पुरख अकाल जणाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान गाउणा हस्स, गुर अवतार पीर पैग़म्बर खुशी मनाईआ। आपणी रसना देवे रस, बिन रसना जिह्वा रस रसकाईआ। घर साचे पूरी करे आस, निरासा कोई रहिण ना पाईआ। पिछला करे ना कोई क्यास, लोकमात होई जुदाईआ। चार जुग गुर अवतार मेरी बणे रहे शाख़, अन्तिम बूटा एका फूल अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सम्मत उन्नी खेल एका, एका नाया मंग मंगाइंदा। गुर अवतार पढ़ो हदीसा, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। दो जहानां ख़ाली खीसा, ख़ालक ख़लक भेव चुकाइंदा। लहिणा चुक्के बीस बीसा, ईसा मूसा मोह तुड़ाइंदा। छत्तर झुल्ले एका सीसा, जगदीश आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवार साचा खेल कराइंदा। तेरा ढोला गाईए निरँकार,

निरगुण तेरी वड वड्याईआ। तेरा बोला इक्क जैकार, जै जै जैकार वज्जे वधाईआ। तेरा सोहला अगम्म अपार, अलख अगोचर सच्ची शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। घर साचे सच्चा इक्को राग, एका एक जणाइंदा। घर साचे उपजाए इक्क वैराग, वैराग इक्को इक्क जणाइंदा। घर साचे इक्क साक, हरि सज्जण संग निभाइंदा। घर साचे सच्चा इक्को ताक, बिन ताकी आप खुल्हाइंदा। घर साचे इक्को साचा घाट, किनारा इक्को नज़री आइंदा। घर साचे इक्को खाट, सच खटोला आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा हरि जू वर, तेरा नाम अभुल्ल, भुल्ल कदे ना जाइंदा। तेरे नाम ना भुल्ले गीत, हरि जू तेरी वड वड्याईआ। साडा नाता कटया मन्दिर मसीत, मड्ढ शिवदुआले फेरा कोए ना पाईआ। पारब्रह्म तेरी साची रीत, ब्रह्म मन्ने चाँई चाँईंआ। तूं बैठा सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। कलयुग अन्तिम ल्या जीत, सतिजुग साचा राह चलाईआ। जन भगतां चरन कँवल बंधाए प्रीत, प्रीती आपणी आप समझाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, इक्क अठ्ठ वंड वंडाईआ। लख चुरासी परखे नीत, नीतीवान सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा खेल वखाईआ। हरि जू तेरा भण्डारा तेरा भगत, लोकमात वरताया। तेरा नाम तेरी शक्ति, तेरा रंग वखाया। तेरा नूर आदि अन्त, जुगा जुगन्त होए रुशनाया। तेरा भेव साध सन्त, हरिजन साचे रहे खुल्हाया। तेरा नाउँ मणीआ मंत, रसना जिह्वा गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाया। साचा मन्त्र सोहँ धार, हरि हरि आप जणाईआ। महाराज शेर सिंघ वड बलकार, बल आपणा आप वखाईआ। विष्नूं विश्व करे विचार, वास्तव आपणा रूप दरसाईआ। भगवान रूप जोत उज्यार, आदि जुगादि समाईआ। जै जैकार ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मादी ब्रह्माद कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतारां रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखो उडीक, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण दए तारीख़, वेला वक्त सच समझाइंदा। हाढ़ सतारां इकट्ठे होए चार जुग दे फ़रीक, फिरके सब दे आप गुआइंदा। हाढ़ अठारां आया नज़दीक, हरि जू साची दया कमाइंदा। नेड़े होए वसे बारीक, निज घर आपणा आप वखाइंदा। बारां वजे अमृत प्याले भर के पीणे ठीक, अतोट अतुट आप रखाइंदा। सब दा लेखा रखे ठीक, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर अवतारां आप समझाइंदा। सम्मत अठारां सच धारा, हाढ़ अठारां नाल रलाईआ। वक्त वखाए वक्त बारां, बारां बारी पर्दा लाहीआ। आपणी हथ्थीं बणे वरतारा, गुर अवतारां

३६८
१२

भण्डार दए खुआईआ। सारे मिल मिल लाओ इक्क जैकारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए सहारा, सत्तां दीपां होए सहाईआ। दो जहानां इक्क नज़ारा, नाम आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। गुर अवतार खुशी मनाउँदे, रसना जिह्वा रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी ढोले गाउँदे, अन्तिम वेला नेड़े आया। चार जुग रहे पछताउँदे, पछतावा दए मुकाया। जिस दे सद रहे गाउँदे, सो आपणा ढोला रिहा गाया। जिस दे अग्गे वास्ता रहे पाउँदे, सो आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा रिहा सुणाया। सुणो छोटे बाले बाल, हरि जू हरि हरि आख सुणाईआ। चार जुग करदे रहे संभाल, जुग जुग वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम बण दलाल, इकट्ठे कीते एका थाँईंआ। लेखे लाई घाली घाल, आपणे थाइें पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप जणाईआ। हाढ़ अठारां चढ़ना चाअ, गुर अवतार खुशी मनाइंदा। सच भण्डारा लैणा खा, भगतां घर रंग रंगाइंदा। पुरख अबिनाशी बणया मलाह, नेत्र नैणां दर्शन पाइंदा। सब नाल इकट्ठी करे सलाह, सलाहगीर आप बण जाइंदा। नानक सतिगुर लए मना, गल पल्लू एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। नानक गुरू इक्क मनाओ, चुहत्तर करन सालाहीआ। पुरख अकाल मिलाए फड़ के बाहों, घर मेला सहिज सुभाईआ। ग़रीब निमाणयां करे सच न्याउँ, नर निरँकारी इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। नाउँ निरँकार कर वीचार, नानक निरगुण वेख वखाया। तेरे अग्गे इक्क पुकार, आपणा हाल रिहा सुणाया। तूं दस्स सच्चा वरतार, दर तेरे आसण लाया। साडा पिछला लेख दे निवार, अग्गे कोए रहिण ना पाया। सचखण्ड दवारे सेवादार, चरन सेवक सेव कमाया। लोकमात ना कोई धार, चिंता सोग ना कोए रखाया, लख चुरासी भावें रख भावें मार, तेरे हथ्थ तेरी वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क अल्हाया। नानक निरगुण सच संदेशा, जन सज्जण आप सुणाईआ। मेरा पुरख इक्क नरेशा, नर नरायण वडी वड्याईआ। आदि जुगादी सदा हमेशा, बण शहिनशाह खेल खलाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड जपाए जाप, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे चरनां हेठ दबाईआ। कोटन कोटि प्रगटाए ब्रह्मा विष्न महेष, कोटन कोटि गुर अवतार सेव लगाईआ। कोटन कोटि दर मंगण बण बण भिखार, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। मेरा साहिब इक्क आदेसा, सीस जगदीश इक्क झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे साचा वर, नानक मंगण कदे

३६६ १२

ना जाईआ। नानक मंगण ना जाए दर, हरि दरवाज़ा ना कोए खड़काइंदा। निर्भय कोलों रहे डर, अग्गे हो ना कोए सुणाइंदा। जिस ने घाड़न ल्या घड़, सो घड़नहार खेल कराइंदा। रल मिल चरनी डिगीए दड़, सीस जगदीश इक्क सुहाइंदा। जे कोई अग्गे गया अड़, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दा कलमा रहे पढ़, सो कलमा आप सुणाइंदा। भगतां अंदर बहे रल, रल मिल साचा घर सुहाइंदा। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा डेरा लाइंदा। कलयुग करया अछल अछल, वल छल आपणा खेल खलाइंदा। जोती शब्दी गया रल, नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां पल्लू रिहा फड़, आपणा पल्लू भगतां फेर फड़ाइंदा। डूँघी कंदर वेखे वड़, उच्चे टिल्ले डेरा लाइंदा। ना कोई कोट ना कोई गढ़, किला कोई नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव कोई ना पाइंदा। साचा भेव ना कोई करतार, भेव अभेव ना कोई जणाईआ। असीं मंगण आए चल दुआर, बण भिखारी अग्गे ख़ाली झोली डाहीआ। किरपा कर आप दातार, दाता दानी आप अख्वाईआ। हुक्मे अंदर खेल न्यार, हुक्मे अंदर सूरज चन्न भज्जण वाहो दाहीआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार, पीर पैग़म्बर फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर खेल सर्ब संसार, हुक्मे अंदर वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर कलयुग अन्त, भगत भगवन्त भण्डार, हुक्मे अंदर बहत्तर चुहत्तर सत्तर मिले वड्याईआ। हुक्मे अंदर खोल्ह दुआर, हुक्मे अंदर बण वरतारा सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर सीस निवाउँदे तेई अवतार, आप आपणा रंग रंगाईआ। हुक्मे अंदर खाणा पीणा देवे अठारां हाढ़, आप आपणी दया कमाईआ। नाता छुटे झूठे यार, साची यारी इक्क निभाईआ। रल मिल बोलीए इक्क जैकार, जै जै जैकार करे लोकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगली लिख्त हाढ़ अठारां दए कराईआ।

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबार, हरि दरबारी आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण भगत भण्डार, वड भण्डारी आप वरताइंदा। एकँकार कर पसार, हरि पसर पसारी वेख वखाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, जोत सरूपी घट घट डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहार धाम न्यार, सच सिँघासण इक्क सुहाइंदा। श्री भगवान खेल अपार, आप आपणा वेस वटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, निरगुण सरगुण खेल खलाइंदा। एका ब्रह्म दए आधार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बन्धन आपे पाइंदा। साचा बन्धन पाए बंध, बन्नणहार आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्न, नूर नुराना डगमगाइंदा। वेखणहारा ब्रह्मण्ड खण्ड, जेरज अंड फोल फुलाइंदा। आदि जुगादी

गावणहारा छन्द, गीत आपणा आप सुणाइंदा। सदा सुहेला सूरा सरबंग, सर्ब दयाल वेस वटाइंदा। दो जहानां इक्क अनन्द, त्रैभवन धनी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी मिटे पन्ध, पाँधी आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा राह चलाइंदा। निरगुण राह चले अपारा, आपणी खेल कराईआ। नौ नव चार पार किनारा, नईआ आपणा नाम वखाईआ। साचा सईआ परवरदिगारा, सांझा यार आप अख्वाईआ। भैणां भईआ बणाए सर्ब संसारा, सज्जण मीत आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क सुहाईआ। दर साचा सोहे दरवाज़ा, दर दुआर आप खुल्लाइंदा। प्रगट होए ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। इक्क वजाए अगम्मी वाजा, तार सतार ना कोई हिलाइंदा। भगतां पिच्छे फिरे भाजा, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। जुग जुग रखे लाजा, जुग जुग साची सेव कमाइंदा। लख चुरासी साजण साजा, गुर अवतार वंड वंडाइंदा। भूपत भूप राजन राजा, शाह पातशाह आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू आपणी खेल खिलाइंदा। करे खेल पुरख निरँजण समरथ, बेपरवाह वडी वड्याईआ। आदि जुगादी महिमा अकथ, जुगा जुगतंर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म इक्को मति, ब्रह्म मत इक्क समझाईआ। अन्तर अन्तर इक्को तत्तव तत्त, तत्तव तत्त दए समझाईआ। सुरती शब्दी मेला करे हरि प्रगट, प्रगट आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर दए वड्याईआ। साचा मन्दिर सोहे दुआर, बंक दुआरी आप सुहाइंदा। तख्त निवासी हरि निरँकार, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। चारे खाणी वेखणहार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। जन भगत दुआरे होए मंगत, जन भगत दुआरे फेरा पाइंदा। हरिजन मेला साची संगत, संगत आपणा आप वखाइंदा। मानस जन्म ना होए भंगत, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। पंच विकारा करे खण्डत, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग चाढ़े चलूल, उतर कदे ना जाईआ। विष्नूं तेरा चुकाए मूल, ब्रह्मे तेरा लेखा तेरी झोली पाईआ। शंकर तेरे हथ्थ त्रसूल, त्रैगुण पंज तत्त असलीअत आपणी दए समझाईआ। सब नूं करनी पए कबूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड वड्याईआ। हरि वड्डा वड वड़याई, भेव कोई ना पाईआ। करे खेल बेपरवाही, निरगुण सरगुण जोत रुशनाईआ। साची सिख्या इक्क समझाई, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा हरि निरँकारा, निरगुण आपणा आप जणाईआ। निरगुण मेला गुरू गुर चेला, भगत भगवन्त आप जणाइंदा। परम पुरख परमात्म सज्जण सुहेला, साचा संग निभाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, साचे कोट डेरा लाइंदा। अचरज खेल आपे खेला, खेलणहार

दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन साचे तारे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपे बण माई बाप, पिता पूत खेल खलाईआ। कलयुग अन्त मेटे संताप, सहिंसा रोग रहे ना राईआ। नाम जणाए साचा जाप, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जन्म जन्म दे उतार पाप, घर सरोवर ताल नुहाईआ। बज़र कपाटी जाए पाट, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो जन गाए साची गाथ, एथे ओथे होए सहाईआ। सदा सुहेला वसे साथ, सगला संग निभाईआ। लेखा चुक्के आण बाट, मात गर्भ कदे ना आईआ। अग्नी तपे ना दस दस मास, लख चुरासी फंद कटाईआ। लेखा चुक्के ज़ात पात, वरन गोत ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ।

सतारां हाढ़ फड़ाए लड़, फड़या लड़ छुट्ट ना जाईआ। सचखण्ड दवारे साचे मन्दिर जाणा वड़, जिस दा डण्डा नज़र ना आईआ। हरि जू दरस दखाए अग्गे खड़, सवच्छ सरूपी रूप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। जगत विद्या ना रिहा पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले कर किरपा लए फड़, मेल मिलाए थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे नारी नर, बाल बिरध होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दोए जोड़ पए सरनाईआ। दर आए होए परवान, सतारां हाढ़ खुशी मनाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के जहान, राए धर्म ना दए सजाईआ। अमर पद साचा पाण, जो सोहँ सोहला गाईआ। जम दी आप चुकाए कान, कान अंदर ना कोई रखाईआ। जिस जिस दर्शन कीता आण, तिस तृष्ना भुख गंवाईआ। अन्त कन्त भगवन्त करे कल्याण, काया कपड़ आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे मेहर मेहरवान दया कमाईआ। दयावान पुरख इक्को दाता, आदि अन्त अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम होया ज्ञाता, घर घर खोज खुजाइंदा। भगत भगवन्त बंधाए नाता, हरिसंगत मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म सुणाए गाथा, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। आत्म नूर इक्क ज़ाता, वरन गोत ना वंड वंडाइंदा। कलयुग मिटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आए लेखे लाइंदा। दर आए होए मन्ज़ूर, जगत मज़दूरी लेखे लाईआ। जन्म जन्म दा मुआफ़ करे कसूर, सीस जगदीश हथ्थ रखाईआ। सतिगुर पूरा सर्ब कला भरपूर, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। नौ सौ चरानवें चौकड़ी जुग वसदा रिहा दूर, अन्तिम कलयुग नेड़न नेड़ दरस दखाईआ। हरिजन आसा कर पूर, हरिसंगत मेल मिलाईआ। मस्तक लाए साची धूढ़, कौस्तक मणीआ

मुख शरमाईआ। काया चोली चाढ़े रंग गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। जोती बख्शे साचा नूर, जिस जन आपणा भेव खुल्हाईआ। किसे ना मिले बहशती हूर, हरि की प्रीत हरि चरन कँवल आदि अन्त सच्ची सरनाईआ। अन्त मुहम्मद रिहा झूर, चार यारी ना संग निभाईआ। अल्ला राणी ना होई मन्ज़ूर, अन्तिम फतवा इक्को लाईआ। कँवारी कन्या दूर दूर रही घूर, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। मेरा साहिब पैग़म्बर हज़रत मिले ज़रूर, हाज़री लए लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए समझाईआ। हरिजन तेरा इक्को रंग, हरि सतिगुर आप रंगाया। तेरी सेज तेरा पलँग, निरगुण निरगुण आप हंढाया। शब्द अनाद वजाए मृदंग, अनहद नादी नाद वजाया। तेरे अंदर इक्को अनन्द, नौबत नाम रिहा वजाया। तेरे अंदर सुत्ता दे कर कंड, आपणा मुख छुपाया। तेरे अंदर साचा चन्द, नूरी दरस दए कराया। कलयुग अन्तिम टुट्टी गंढु, सतिजुग साचा लए उठाया। जन भगतां आत्म पाए ठंड, परमात्म होए सहाया। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाया। सृष्ट सबाई सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाउणा छन्द, वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक दए समझाया। ना कोई पूजा करीर जंड, सूरज जल ना कोई चढ़ाया। ना कोई पिण्डी वंडे वंड, इष्ट देव ना कोई मनाया। ना कोई विष्न ब्रह्मा गाए छन्द, शंकर सीस ना कोए झुकाया। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर स्वामी इक्को सुणाए छन्द, परवरदिगार ढोला गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आए लेखे लए लगाया। दर आए आपणे लाए लेखे, लेखा लिखणहार करतारा। कोई ना रहे भरम भुलेखे, प्रगट होया नर निरँकारा। राज राजानां शाह सुल्तानां दए संदेशे, सच संदेशा विच संसारा। वेखणहारा औलीए पीर शेखे, नूरी जल्वा करे उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क सहारा। भगत सहारा देवे सहायक, हरि साचा दया कमाईआ। सदा सुहेला इक्को नायक, भेव अभेद इक्क खुल्हाईआ। एथे ओथे दो जहानां सदा सुखदायक, सुख सागर रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन रंग चढ़े अगम्मा, अगम्मड़ा रूप चढ़ाइंदा। काया चोली रंगे चम्मा, चम्म दृष्टी ना कोई रखाइंदा। सतिजुग बेड़ा साचा बन्ह्हा, भगत भगवन्त सेव कमाइंदा। एका राग सुणाया, लग्ग मातर ना कोए लगाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्ना, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। पंच विकारा गुरमुख डंना, खण्डा इक्को नाम चमकाइंदा। भगत सुहेला इक्क इकेला लोकमात आया भन्ना, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा बिन छप्पर छन्ना, साचा मन्दिर इक्क सुहाइंदा। छप्पर छन्न वसे दुआर, दुआरका रूप वटाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत वेखे चाँईं चाँईंआ। भगतां मेला विच संसार, हरि भगवान आप कराईआ।

भगत वेख नौजवान, नव नौ चार रिहा फेरा पाईआ। सति सरूपी साचा काहन, खेले खेल बेपरवाहीआ। पीर पैग़म्बर दे पैग़ाम, पीर दस्तगीर करे शनवाईआ। एका मन्त्र बोल जैकार, नाअरा इक्को इक्क सुणाईआ। वज्जे डंका फ़तेह दो जहान, दो जहानां वाली आप वजाईआ। राउ रंकां दे ज्ञान, जीवां जंतां लए समझाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, साख्यात रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे लए लगाईआ। हरिजन लेखा इक्क दुआर, हरिमन्दिर आप लिखाइंदा। ना कोई पुरख ना कोई नार, बिरध बाल ना कोई वखाइंदा। एका मन्त्र नाम आधार, एका इष्ट देव वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत आपणे दर सुहाइंदा। हरिसंगत सोहे साचे दर, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। अन्तिम मेला लए कर, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जिस ने घाड़न ल्या घड़, घड़ घड़ वेख वखाईआ। साचे पौड़े जाए चढ़, साचे मन्दिर आसण लाईआ। आत्म परमात्म एका अक्खर रिहा पढ़, साची करे पढ़ाईआ। एका जाणे चोटी जड़, आप आपणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे साचा दान, आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, जगत नाता तोड़ तुड़ाईआ। जगत नाता तोड़े आप, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। अन्ध अन्धेर कर प्रताप, काया मन्दिर आप सुहाइंदा। इक्क जपाए साचा जाप, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सोहँ सो माई बाप, हँ ब्रह्म पिता पूत खेल खलाइंदा। सति सतिवादी साचा साथ, सदा संग रहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, गृह मन्दिर झोली पाइंदा। गृह मन्दिर सोहे सच महल्ला, सतिगुर आप सुहाईआ। वसणहारा इक्क इकल्ला, एका घर मिले वड्याईआ। पावे सार डूँघी डल्ला, समुंद सागर खोज खुजाईआ। जोती शब्दी निरगुण धार आपे रल्ला, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। लेखा जाणे जलां थलां, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। लहिणा जाणे राणी अल्ला, इलाही नूर इक्क खुदाईआ। भगत फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू एका एक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं जग देवे वर, दर आयां करे परवान, गुरमुख बेमुख लए तराईआ। गुरमुख मंगे आत्म दरस, एका ओट तकाईआ। मनमुख लग्गी जगत हरस, हिरस हवस वधाईआ। पुरख अबिनाशी दोहां करे तरस, दर आयां लेखे पाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा खोज खुजाईआ। मात गर्भ ना आए नरक, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। जूनी जून ना जाए धड़क, जिस जन आपणा दरस दखाईआ। अद्धविचकार ना जाए अटक, सच दुआरे दए बहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निराकार

निरवैर पुरख जूनी रहित आपणा पूरा करन आया फ़र्ज, फ़र्ज आपणा पूरा दए कराईआ। आपणा फ़र्ज करे प्रभ पूरा, पूरन आपणी दया कमाइंदा। आदि अन्त ना रहे अधूरा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। दर आयां बख्शे सर्ब कसूरा, जो जन निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जन्म जन्म दा हूंझे कूड़ा, दुरमति मैल धुआइंदा। जन भगतां पिच्छे अन्त होया मज़बूरा, मज़बूरी आपणी ना किसे जणाइंदा। सेवक बणे बण बण मज़दूरा, हरिजन सेवक बण बण तेरी सेव कमाइंदा। गुरमुख उपजे साचा नूरा, बिन गुरमुख हरि जू नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां सद हाज़र हज़ूरा, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा इक्क ज्ञान, आत्म अन्तर मेल मिलाइंदा।

✳ १८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✳

तेरा खेल पुरख समरथ, जुग चौकड़ी भेव किसे ना पाया। कर किरपा अन्तिम ल्या सद्द, दर साचा इक्क सुहाया। दूर दुराडा मुका के आए पन्ध, बण पाँधी फेरा पाया। लँघ के वेखी तेरी हद्द, पार किनारा नज़री आया। दर्शन करके
४०५ होए गद गद, नूरी नूर नूर रुशनाया। सति सतिवादी वेखी तेरी यद्द, विष्नूं खेल रिहा कराया। इक्को दर इक्को पद, ४०५
एका घर सोभा पाया। इक्को गीत साचा छन्द, नाद अनादी इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१२ कर, दर तेरा इक्क सुहाया। आए दर बण भिखारी, भिखक तेरी वड वड्याईआ। आदि जुगादि खेल न्यारी, निरगुण १२
निरवैर आप कराईआ। चुग चौकड़ी वेखे वारो वारी, भेद अभेद ना कोई समझाईआ। कलयुग आई अन्तिम वारी, नव नौ चार डेरा ढाहीआ। सभना मिले गुर अवतारी, पीर पैग़म्बर लेखा रहे चुकाईआ। बणया भूप वड सिक्दारी, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाईआ। भगतां देवे माण लोकमात करे उज्यारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। आए दुआरे चढ़या चाउ, हरि सज्जण नज़री आया। जुग चौकड़ी डेरा ढाह, आपणा खेल रचाया। पूरब लहिणा सर्ब मुका, अग्गे लेखा रिहा जणाया। नेत्र नैण इक्क खुल्हा, आत्म परमात्म वेख वखाया। साचा गहिणा बस्त्र पा, छैल शबीला एका तन रंग रंगाया। भगत कबीला मात बणा, लोकमात संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वड्याआ। घर साचा तेरा सच महल्ला, महिफल साची हरि लगाईआ। भगत भगवन्त फड़ाए पल्ला, पल्लू एका रिहा वखाईआ। नैण शरमाए राणी अल्ला, मुहम्मद सीस रिहा झुकाईआ। तेई अवतार चरन कँवल

होया झल्ला, ढह ढह सीस झुकाईआ। नानक गोबिन्द दर एका मल्ला, घर वज्जदी रहे वधाईआ। भगत भगवान मेटे सल्ला, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। आपणी फुलवाड़ी आपे रला, पत डाली फुल्ल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल करे करतार, लिखण आए दर दुआरी। इक्को नूर कर उज्यार, नूरो नूर जोत उज्यारी। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, करे कराए सच विहारी। भगत दुआर कर पसार, लोकमात बणाए अटल्ल अटारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारी। अगम्म अपार खेल करदा, करनहार इक्क अख्वाइंदा। आदि जुगादी कदे ना डरदा, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त आपणे फड़दा, फड़ फड़ बाहों बाहर कढाइंदा। करे खेल नर हरि नरायण नर दा, नर हरि आपणी सेव कमाइंदा। अग्नी हवन कदे ना सड़दा, मढ़ी गोर ना कोए दबाइंदा। भगत दुआरे आपे वड़दा, बह बह आपणा आसण लाइंदा। सति सरूपी अक्खर पढ़दा, पढ़ पढ़ अक्खर आप सुणाइंदा। किला तोड़ हँकारी गढ़ दा, गढ़ हँकारी मेट मिटाइंदा। लेखा जाणे चोटी जड़् दा, अंदर बाहर वेख वखाइंदा। मर्द मर्दाना आप बणदा, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। जुग चौकड़ी पाणी भरदा, बण सेवक सेव कमाइंदा। आपणी करनी आपे करदा, करता पुरख नाउँ रखाइंदा। भगत दुआरे आपे खड़दा, खड़ खड़ आपणा दरस वखाइंदा। बिन तीर कमानों आपे लड़दा, खण्डा शस्त्र ना कोई चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप बंधाइंदा। साची धार बन्ह् निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। सद्दा दे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर दर बुलाईआ। चार जुग दे विछड़े यार, भगत भगवन्त लए जगाईआ। बहत्तरां देवे इक्क आधार, सत्तरां अक्ख खुल्ह्ाईआ। चुहत्तरां कराए सच प्यार, साता चौका नाल रलाईआ। सति पुरख दी साची कार, चौथे जुग रिहा समझाईआ। चार वरन दा इक्क दुआर, सति सन्तोख धीर धराईआ। सति सति दी साची कार, चार चार चार जणाईआ। करे खेल अपर अपार, लेखा लिख लिख रिहा समझाईआ। कलयुग आई अन्तिम वार, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। वंडण वंड वंडे संसार, वंड वंड वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम करे ख़बरदार, बेख़बर आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करने आया, निरगुण रूप अगम्म अपार। चार जुग दी धारा आपणे अंदर धरने आया, निरगुण निरवैर निराकार। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया फड़ने आया, जोधा सूरबीर बली बलकार। साचे असव घोड़े चढ़ के आया, महांबली हो त्यार। आपणी करनी करने आया, करनहार इक्क ओंकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। खेल आपारा हरि जू हरि, हरि हरि आप कराईआ।

जुग जुग वंडदा रिहा भण्डारा, गुर अवतारां झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम इक्क दुआरा, सब नूं दए वखाईआ। भगत भगवान करे इशारा, एका राह चलाईआ। सचखण्ड निवासी बण वणजारा, लोकमात फेरा पाईआ। होका देवे बैठ धुर दरबारा, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। करे कराए सच विहारा, बिवहारी बणया सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग रीती रिहा मुकाईआ। जग रीती लहिणा जाए चुक्क, हरि हरि जू आप चुकाइंदा। कलयुग पैंडा जाए मुक्क, अन्त अखीर आप मुकाइंदा। लख चुरासी बूटे जाणे सुक्क, गुर अवतार पीर पैग़म्बर हरया सिंच ना कोए कराइंदा। गुरमुखां आपणी गोदी लए चुक्क, मुख फेर ना उलटाइंदा। इक्को हरि रखे कुक्ख, जन जननी रूप वटाइंदा। जीव जंत वेखे लुक, घर घर अग्नी अन्त तपाइंदा। वेला अन्तिम गया ढुक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। साची कार करणे योग, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जै जैकार करन चौदां लोक, चौदां तबक नाअरा लाईआ। अल्फ़ ये इक्क सलोक, तिन्न पंज करे पढ़ाईआ। बावन रूप करे खेल ना कोई सके रोक, रोकणहारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वणज आप कराईआ। साचा वणज सच वणजारा, सति सतिवादी आप कराइंदा। गुर अवतारां दे भण्डारा, बण भण्डारी वेख वखाइंदा। जगत दुआरा खोल्ह किवाड़ा, घर साचा इक्क सुहाइंदा। चल के आए विच संसारा, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। चुहत्तरां देवे इक्क सहारा, धीरज धीर इक्क धराइंदा। शास्त्र सिमरत लिख लिख आप लिखारा, ब्रह्मा वेता ब्रह्म समझाइंदा। इक्की इकी हरि करतारा, दर एका बन्धन पाइंदा। इक्क इकल्ला एकओंकारा, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। पंज तत्त वेखे जगत टिकाणा, काया मन्दिर सोभा पाइंदा। साचे भगतां कर प्यारा, प्यार प्यार नाल वटाइंदा। रंग रत्तड़ा एक ओंकारा, रंग रंगीला रंग रंगाइंदा। दर घर सुहाए ठांडा दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। अग्नी तत्त मिटे हाढ़ा, सांतक सति सति वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां आप वखाइंदा। गुर अवतार खोल्हो अक्ख, हरि सतिगुर आप सुणाया। भगत भगवान करे प्रतख, प्रतख आपणे नाल मिलाया। निरगुण हो के गाए जस, जस वेद पुराण भुलाया। लहिणा चुकाए तत्त अठ्ठ, नौ दुआरे खोज खुजाया। अठसठ खेड़ा करे भठ्ठ, गुरमुख खेड़ा दए वड्याआ। सचखण्ड निवासी आया नठ्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाया। दिवस रैण नाम रिहा रट, जन भगतां माला इक्क पहनाया। साची सेजा सोहवे खाट, आत्म अन्तर आसण लाया। सच प्याए इक्को अमृत बाट, निझर झिरना दए झिराया। अन्तिम नेड़े रखी वाट, दूर दुराडा पन्ध गुआया। आओ रल के सारे पुच्छो वात, दाता दर आपणा पर्दा लाहया। जुग जुग खेले खेल बहु बिध भांत, आपणा भेव

ना किसे जणाया। कलयुग वेख अन्धेरी रात, निरगुण आपणा वेस वटाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोई ना झगड़ा पाए ज़ात पात, अन्तिम बैठे मुख छुपाया। निरगुण सारे गाउण गाथ, सरगुण कम्म किसे ना आया। माण तुट्टे त्रिलोकी नाथ, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ नेत्र नैणां नीर वहाया। कोटन कोटि ब्रह्मे वेद मुख मुख करन पाठ, आपणा भेव किसे ना आया। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर गुर गुर कर कर याद, आपणी याद गए चुकाया। कोटन कोटि वजा नाद, आपणा नाद गए सुणाया। कोटन कोटि गा गा गाथ, वाहिद इक्को नाम ध्याया। कोटन कोटि रसना जिह्वा गए आराध, अराधनहारा, नज़र किसे ना आया। कोटन कोटि भगत भगवन्त दर वेखे सन्त साध, ख़ाली झोली रहे वखाया। कलयुग अन्तिम सुणे आप फरयाद, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाया। जन भगतां करे साचा लाड, पूत सपूते गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराया। गुर अवतार मलण हथ्थ, हथ्थ हथ्थ नाल रगड़ाईआ। साडा चले ना कोई वस, बेवस होई लोकाईआ। तेरी माया अंदर गए फस, साडा नाम कम्म किसे ना आईआ। जगत विकारे पाई नथ्थ, ना सके कोए तुड़ाईआ। ख़ाली होए मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआले देण दुहाईआ। पत्थर पाहन ठाकर गए नट्ठ, साचा ठाकर नज़र किसे ना आईआ। कलम शाही गाथ लिख तेरे टिक्के लाए तिलक, तेरा भेव कोए ना पाईआ। पूजा कर कर थक्के पिप्पल पत्त, पत्त डाली सेव कमाईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ तट, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। जिध्धर वेखीए अग्गों मारे कलयुग सट्ट, हुक्मे बध्धा सेव कमाईआ। काया मन्दिर दिसे ना कोई हट्ट, कलयुग साध सन्त बैठे अंदर कुण्डा लाईआ। असीं सरगुण नालों निरगुण हो के तेरी चरनी आए ढट्ठ, वक्खरा तेरा राह वखाईआ। दर तेरे ते आ के वेख्या तूं भगतां करें वक्ख, दीन मज़्ब ज़ात पात धक्का दिता लाईआ। जगत विद्या ख़ाली हथ्थ, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। शाह पातशाह किसे ना मिले कुल्ली कक्ख, छप्परी नामे वड वड्याईआ। अन्तिम खेड़ा होणा भट्ठ, भठयारा एका अग्नी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल दस्स भगवान, आए तेरे दुआरे। साडा चुकया जगत निशान, ना कोई दिसे विच संसारे। लख चुरासी होई बेईमान, बेवा रूप नार विभचारे नज़र ना आए साचा काहन, गोपी नैण ना कोई शृंगारे। सीता मिले ना सईआ राम, राम करे ना कोई प्यारे। ईसा मूसा दए ना कोई पैग़ाम, हक़ हक़ीक़त ना कोई विचारे। मुहम्मद सुणे ना कोई कलाम, कलमा नबी ना कोई जैकारे। नानक मन्त्र ना कोई सतिनाम, मार्ग भुल्लया सर्ब संसारे। गोबिन्द डंका ना किसे ज़बान, आत्म परमात्म करे वणज ना कोई वणजारे। नौ खण्ड पृथ्मी होई शैतान, शरअ शरीअत देवे सर्ब हुलारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर

तेरे सदा सदा करीए निमस्कारे। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। सारे उठ के करो प्रणाम, हरि पुरख आप समझाइंदा। सारे मन्नो इक्क इस्लाम, इस्म आज़म इक्क जणाइंदा। सारे जाणो इक्क भगवान, इक्को नज़री आइंदा। सारे मन्नो एका राम, एका घर डेरा लाइंदा। सारे वेखो इक्क निशान, सो पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। सारे खाओ इक्क पकवान, शरअ वंड ना कोए वंडाइंदा। सूर देवे ना कोए दान, गऊ भेंट ना कोए चढ़ाइंदा। ज़बाह करे ना कोई कृपान, सीस धड़ ना कोए कटाइंदा। मारनहार इक्क भगवान, जीवण जुगत आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। हुक्म सुणया धुर फ़रमाणा, सारे नैण रहे उठाईआ। प्रभ जी मन्नीए तेरा भाणा, तेरे चरन मिले सरनाईआ। तूं साहिब सुल्ताना साचा राणा, हउँ रईयत रूप वटाईआ। पीर पैग़म्बर ना कोई अख्वाना, गुर अवतार ना कोए वड्याईआ। तेरे दर रहीए बण बण बालक अञ्याणा, बाली बुध इक्क वखाईआ। लोकमात ना वेखीए मार ध्याना, ध्यान ध्यान ना कोए जणाईआ। सम्मत वीह सौ वीह बिक्रमी साडा चुक्के पीणा खाणा, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी दस्से हाल, सुणो मीत मुरार। अन्तिम सब नूं खाए काल, कोई रहे ना विच संसार। लख चुरासी होए बेहाल, नेत्र नैण रोवे ज़ारो ज़ार। फल ना दिसे किसे डाल, सृष्ट सबाई मारे मार। सारे आए चल दुआर, किरपा करे आप भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा इक्को वार, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम सोहे दरबार, दर साचे आप बहाइंदा। चार जुग दा झगड़ा मेट निरँकार, अगला मार्ग आप लगाइंदा। नाता तुट्टा मुहम्मद यार, शरअ शरीअत ना कोए वखाइंदा। कलमा नबी ना कोई पुकार, अल्फ़ ये ना कोए पढ़ाइंदा। दर सजदा करे दरबार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। तेरा बरदा होया फ़रमांबरदार, बण सेवक सेव कमाइंदा। डरदा डरदा करे पुकार, हौली हौली आख सुणाइंदा। सदी चौधवीं गई हार, चौदां तबक सब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा कलमा तेरे अग्गे रखाइंदा। तेरा कलमा तेरी आयत, तेरे अग्गे टिकाईआ। सच खुदाए दिती इनाइत, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। चौदां तबक इक्क अशाइत, शरीअत इक्क पढ़ाईआ। लेखा मुक्या काएनात, कानी तीर हथ्थ सुटाईआ। फातया पढ़या एक फात, फतहि तेरी सर्ब खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर आस रखाईआ। पुरख अबिनाशी करे पुकार, एका शब्द जणाया। तेरी मेरी निरगुण गुफ़तार, राग राग ना कोए सुणाया । लहिणा देवे वारो वार, लेखा सब दा रिहा मुकाया। नाता तोड़

तेरा संसार, चरन कँवल रहे बहाया। पिच्छों मारे सब नूं मार, नाम खण्डा इक्क उठाया। मुस्लिम सुन्नी जाए हार, हरि जू आपणा हुक्म वरताया। वीह सौ उन्नी कर खुआर, जगत खुआरी इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाया। सच सुनेहड़ा बातन बात, हरि जू हरि हरि आख सुणाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रिहा समाईआ। अन्तिम करे पूरी आस, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। लेखा लेखे जाए लग्ग, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, रूप अनूप आप वखाइंदा। सच दुआरे आपे सद्द, चरन सरन इक्क बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर आप वखाइंदा। एका घर नेत्र पेख, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। भगत भगवान दा खेल वेख, लोकमात आप कराइंदा। सब दी मेटणहारा रेख, रेखा आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाइंदा। साचा राह सति सतिवाद, एका एक एक जणाईआ। एका हुक्म ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म समझाईआ। एका पुरख आदि आदि, एका अन्त बणे माईआ। एका लेखा जाणे जुगादि, जुग जुग वेखे थाउँ थाईंआ। एका आपणे विच्चों लए काढ, एका अन्तिम आपणे विच लए मिलाईआ। दर दुआरे आपणे सद्द, गुर अवतार गोद बहाईआ। एका देवणहारा दाद, वस्त अमोलक आप वरताईआ। एका वेखणहारा हाद, पार किनारे बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल हरि जू करना, करन करावण आया। कलयुग अन्तिम हरिजन वरना, भगत भगवन्त होए सहाया। इक्क खुल्हाए साचा दरना, सचखण्ड सच निशान झुलाया। गुरमुख गुरसिख लाल दुलारे मिल मिल इक्को अक्खर एको पढ़ना, साचा सोहला आप सुणाया। साचे मन्दिर एको वड़ना, घर मन्दिर दए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाया। साचा खेल एकओंकार, गुर अवतार आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी कर कर खेल अपार, आपणा आप रिहा छुपाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सच भण्डारा दए वरतार, बण वरतारा सेव कमाईआ। चुहत्तरां सिखां देवे एका वार, घर साचे झोली आप भराईआ। इक्की इकी कर परवान, साची सिक्खी लए बणाईआ। तिक्खी रखे दो जहान, धार आपणे नाम रगड़ाईआ। देखो उठ के सारे कृष्न राम, हरि साचा की की खेल रिहा रचाईआ। पीर पैग़म्बर सारे उठ के करो सलाम, सजदा इक्को वार वखाईआ। गुरू गुर करो प्रणाम, परम पुरख रिहा समझाईआ। जिस दा गाउँदे आए नाम, सो नामे छप्पर रिहा छाईआ। बहत्तर जामे दिता दान, एका वार जन्म लए बदलाईआ। करया खेल विच जहान, दो जहानां करे रुशनाईआ। विष्नूं हथ्थों

खोह के दान, जन भगतां हथ्थ फड़ाईआ। लोकमात पकाए पकवान, बण सेवक सेव कमाईआ। चार जुग दे विछड़े गुरमुख खाण, जिस रसना खाधा जन्म मरन विच ना आईआ। आदि जुगादी दुखड़े सर्ब मिट जाण, दुखियां दुःख रिहा मिटाईआ। सतिगुर मिल्या हाणी हाण, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उठ के करो पछाण, हरि आपणा रूप रिहा दरसाईआ। इक्को जोत नूर नुरान, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। भगतां अंदर वड़ वड़ खेल करे महान, सचखण्ड दवार आपणा घर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। उठो वेखो चढ़दा रंग, हरि जू आप रंगाइंदा। बण भिखारी मंगो मंग, भगत दुआरा इक्क सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी बैठा सच पलँग, कन्त कन्तूहल आप अख्वाइंदा। जिस दी रसना जिह्वा पाउँदे डण्ड, सो डण्डा आपणा हथ्थ उठाइंदा। जिस दी किसे ना दिसी कंड, सो आपणा मुख वखाइंदा। जिस दे पिच्छे बणे नार दुहागण रंड, कन्त अन्त परणाइंदा। जिस दे पिच्छे पंज तत्त काया जुआनी गई हंढ, लम्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दे पिच्छे लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड कटया पन्ध, सो पाँधी बण के पन्ध मुकाइंदा। अंदर वड़ वड़ ढोले गाउँदे छन्द, सो आपणा राग अलाइंदा। जिस दे पिच्छे घस गए बत्ती दन्द, बिन दन्दां राग अलाइंदा। जिस दे पिच्छे पूजदे सूरज चन्द, सो साची जोत जगमगाइंदा। जिस दे पिच्छे लभ्भदे आत्म अनन्द, सो परमानंद वखाइंदा। जिस दे पिच्छे आपणी तुट्टी लई गंढ, गंढणहार फेरा पाइंदा। गुर अवतार उठो मंग लओ मंग, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। प्रभ ढावन आया कंध, मार ठोकर उपर उठाइंदा। जन भगतां बेड़ा देवे बन्न, हरि जू आपणे कंध उठाइंदा। बहत्तर गुरमुख चढ़े चन्न, लोकमात आप चढ़ाइंदा। सेवा करे श्री भगवंन, दूजा संग ना कोई रखाइंदा। नज़र ना आए नेत्र अन्न, गुरमुख ज्ञान नेत्र इक्क खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार आप कराइंदा। सच विहार करे मात, मातर भूमी दए वड्याईआ। चुहत्तरां बणाई इक्क ज़ात, साची ज़ात इक्क समझाईआ। नेड़ ना आए शरअ नार कमज़ात, दुहागण दर रहिण ना पाईआ। अन्तर आत्म इक्को पाठ, हरि सतिगुर आप सुणाईआ। सरोवर नुहाए साचे ताट, तीर्थ इक्क अशनान कराईआ। फड़ उतारे आपणे घाट, मँझधार ना कोई रुड़ाईआ। अग्गे नेड़े रखे वाट, पिछला पन्ध मुकाईआ। मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए माण वड्याईआ। जन भगत भण्डार गया खुल, हरि भण्डारी आप खुलाइंदा। तारनहारा इक्की इकी कुल, इक्की इकी कुला सेवा लाइंदा। करता कीमत पाए मुल, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरमुख वेखे साचे फुल्ल, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। चार जुग बूटा ना जाए हुल, पुरख अबिनाशी आप

लगाइंदा। सतिजुग तेरी साची कुल, सत्तर बहत्तर चुहत्तर जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क भण्डार दए अतुल, तोलणहार नज़र कोए ना आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। सच भण्डार हरि अतुट, जन भगतां झोली पाईआ। आदि जुगादि रहे निखुट, निखुट कदे ना जाईआ। कलयुग क्रिया जड़ पुट्ट, भगत बूटा इक्को लाईआ। चार वरन सुहाए रुत्त, बरन अठारां लए महकाईआ। आत्म परमात्म वखाए इक्को रुत्त, एका रंग दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति भण्डार आप वखाईआ। सति भण्डारा आटा दाल, घ्रित आपणा प्रेम वखाइंदा। जगत अवल्लड़ी चली चाल, चाल निराली आप रखाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, बण मुर्शद फेरा पाइंदा । निरगुण सरगुण बण दलाल, साची वस्त हट्ट विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भण्डार आप वरताइंदा। भगत भण्डार हरि निरँकार, आपणी हथ्थीं आप वरताईआ। खा के जाण गुरू अवतार, पीर पैग़म्बर ख़ुशी मनाईआ। ज़ात पात नाता तुट्टा संसार, शरअ वंड ना कोई वंडाईआ। आपणा आप गए हार, बलहीण देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी करे साची कार, करता पुरख कार कमाईआ। जुग चौकड़ी असीं कट के आए वगार, बण वैरागी फेरा पाईआ। लिख लिख संदशा देंदे आए संसार, कलम शाही जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल सेवादार, बण सेवक आप कराइंदा। भगत भगवान इक्क भण्डार, बण भण्डारी आप वरताइंदा । एका घर खायण गुर अवतार, दूसर दर ना कोई जणाइंदा। इक्को दर करन निमस्कार, इक्को दर सीस झुकाइंदा। एका बोल सर्ब जैकार, एका राग अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वरतारा आप अख्वाइंदा। सच वरतार आप करतार, करनी आपणी आप कमाईआ। इक्को वस्त दए खुवाल, अनडिठ आपणी दया कमाईआ। आपणा करे हल्ल सवाल, सवाली बण मंगण कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत भण्डार एका घर वखाईआ। हरिभगत भण्डारा दाल रोटी, हरि जू आपणी वंड वंडाइंदा। वेखणहारा चढ़ के उपर चोटी, कोट कोटी नाल रलाइंदा। सब दे विच्चों कढ्ढे वासना खोटी, जो जन रसना नाल रलाइंदा। अन्तिम मिलाए निर्मल जोती, लख चुरासी गेड़ कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा आप सुहाइंदा। सच भण्डारा चुहत्तर धार, दर एका बन्धन पाईआ। हरिसंगत तेरा वरतार, सतिगुर बणे सच्चा माहीआ। सम्मत उन्नी हो निहाल, निरगुण आपणी दया कमाईआ। सरगुण करे आप प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरिजन अन्त ना खाए काल, काल ग्रास ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त देवे झोली पाईआ। साची वस्त पाए

झोली, झूला आपणे नाम दुआइंदा। आत्म परमात्म होई गोली, साची सेवा इक्क रखाइंदा। सुरती शब्दी जाए मौली, मौला आपणे घर मिलाइंदा। अंदर लँघ सुणावे बोली, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। बज़र कपाटी पर्दा रिहा फोली, नाम संदेशा हथ्थ उठाइंदा। उलटी करे नाभी कँवली, कँवल नाभ आप उलटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भंडारा आप खुवाइंदा। सच भण्डारा अमृत रस, रस आपणा आप खुवाइंदा। गुर अवतार इक्क दूजे दे होण वस, वसीकार आप कराइंदा। अग्गों सारे कहिण बस, लोकमात नाता तोड़ तुड़ाइंदा। तेरे भगतां अंदर बहीए फस, सगला संग जणाइंदा। जिन्नां गवावें तूं साहिब जस, जिस दुआरे चरन टिकाइंदा। असीं मिलीए हस्स हस्स, गलवकड़ी एका पाइंदा। साचा मार्ग देणा दस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साचा राह, रैहबर आप जणाईआ। भगतां नाल करो सलाह, सलाहगीर आप हो जाईआ। निरगुण सरगुण बणे मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ। सारे रल के इक्को खाणा लओ खा, ज़ात पात छूत छात रहे ना राईआ। वड्डा छोटा ना कोई अख्वा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोई अख्वाईआ। सूर गाँ उपर हथ्थ ना सके कोई उठा, हिन्दू मुस्लिम देण सारे गवाहीआ। मुहम्मद अग्गों सीस झुका, मेरी उम्मत छुरी हथ्थ ना कोई उठाईआ। गोबिन्द दोए जोड़ मंगे पनाह, मेरा
४१३ सिख तेरे जीव उत्ते खण्डा ना कोए चमकाईआ। मेरे मिलण दी रखण भुख, मैं सब दी तृष्ना दयां बुझाईआ। नौ सौ ४१३
चुरानवे चौकड़ी रखे कुक्ख, कुक्ख नज़र किसे ना आईआ। इक्को वार मात जन्म दिता मात गर्भ उलटा रुक्ख, दस दस
१२ मास अग्न तपाईआ। कलयुग अन्तिम बणाए आपणे पुत्त, सुत दुलारे गोबिन्द भेंट चढ़ाईआ। सारे नेत्र वेखो उठ, हरि जू १२
आपणी दया कमाईआ। जेहड़ा लुकया रिहा सचखण्ड दवारे साची गुठ्ठ, साख्यात आपणा नूर करे रुशनाईआ। किसे कोलों ना लैणा पुच्छ, घर मिल्या सच्चा माहीआ। आओ सारे दस्सो दुःख, दुखड़े दए गंवाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां जगत जहानों कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ देवे पुट्ट, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। गुरमुखां राती सुत्तयां प्याए अमृत घुट्ट, दुरमति मैल धुवाईआ। आवण जावण लख चुरासी जाए छुट्ट, छुट्टी सब दे कोलों दए कराईआ। मनमुख जीव जगत नार दुहागण वड्डे नक्क गुत्त, हरि जू बणया आप कसाईआ। गुर अवतार हरि आपणे अंदर लए सुट्ट, ना कोई सके बाहर कढ्ढाईआ। सतिजुग सुहाए आपणी रुत्त, फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। हरिभगत भण्डारा एका एक अतुट्ट, हरि जू आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिभगत तेरी सुक्खना रिहा सुक्ख, आपणी सुक्ख ना कदे मंगाईआ।

✳ नीचे वाला शब्द चरन सिँघ हेमराज पुर ज़िला गुरदासपुर वाले ने बेमुख हो के चिठी पातशाह जी नूं लिखी १८ हाढ़ २०१६ नूं बेनती कर के पड़वाई गई ✳

साची चिठ्ठी सतिगुर ताज, तख्त निवासी आप सुहाइंदा। जिस अन्तर लुकया गुरू महाराज, नज़र किसे ना आइंदा। जिस कलम शाही नाल मारी आवाज़, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। करे खेल ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे वेख वखाइंदा। जिस दे पिच्छे आपणा करदा रिहा काज, बण करता खेल कराइंदा। जिस दे पिच्छे तारया इक्क जहाज़, आपणा बेड़ा आप उठाइंदा। तिस रखणहारा लाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अक्खर अक्खर नाल पढ़ाइंदा। चिठ्ठी अक्खर शब्द ज्ञान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। गुरमुख गुर गुर कर ध्यान, गुर गुर एका ओट तकाइंदा। दर्दी दर्द वंडे आण, बेदर्द ना कोए अख्वाइंदा। भगत भगवन्त मेल दो जहान, दोए दोए आपणे सुहाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख वेखे बाल अञ्याण, बाली बुध समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप गिणाइंदा। बाली बुध बाल अञ्याणा, भेव कोए ना राईआ। पुरख अबिनाशी सुघड़ सयाना, भुल्ल कदे ना जाईआ। दर आयां घर दए माणा, निमाणयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। इक्को अक्खर सुणाया आखर, एका एक जणाईआ। तोड़नहारा बज़र कपाटी पत्थर, पाथर आपणा दए टिकाईआ। सुख संदेशा दिता पात्र, पत्नी गुरमुख लए बणाईआ। बिन सतिगुर बणे ना कोई चातर, जगत चातरी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप चुकाईआ। आपणा लेखा गुरसिख मंग, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। मानस जन्म ना होवे भंग, जिस जन आपणी गोद बहाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, ज़िमी असमाना वेख वखाइंदा। आपे नंगी करनहारा कंड, आपे सिर समरथ हथ्थ टिकाइंदा। आपे करे नार दुहागण रंड, आपे बण बण कन्त सेज सुहाइंदा। आपे गीत सुणाए छन्द, आपे मुखड़ा मुख भुवाइंदा। आपे देवणहारा दंड, हरि आपे सुख उपजाइंदा। आपे रैण अमावस अन्धेरी चाढ़े चन्द, नूरो नूर आप चमकाइंदा। आपे करे भागां मंद, आपे उज्जल मुख कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच यात्रा इक्क वखाइंदा। सच यात्रा साची धार, साचे सच जणाईआ। गुरमुख करे ना कोई हँकार, प्रभ दर चले ना कोए चतुराईआ। जिस भावे तिस लवे तार, डोबणहार सर्ब लोकाईआ। अठ्ठे पहर मंगो चरन धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का रेण लगाईआ। कोई ना कहे गुरू करे विभचार, सतिगुर विभचार ना कोए कमाईआ। गुरमुख वेखे साची नार, आत्म सेजा रिहा हंढाईआ। पा गलवकड़ी करे प्यार, चतुर्भुज आपणी भुजां रिहा उठाईआ। सोया

रहे पैर पसार, नज़र किसे ना आईआ। कोई कहे पुरख अबिनाशी सुत्ता ग़ाफ़ल विच संसार, ग़फ्लत विच कदे ना आईआ। महिफ़ल झूठी दिसे संसार, जगत संसारी कम्म कोई ना आईआ। अन्तिम छड्ड जाण सर्ब यार, यारी यार ना कोई निभाईआ। बिन सतिगुर चरन चरन होए खुआर, खुआरी कोई ना सके कटाईआ। सिँघ किशन कोलों पुच्छ सच दीदार, जिस कीता दरस सच्चे माहीआ। जिस पिछला लहिणा दिता उतार, फड़ बाहों मेल मिलाईआ। रसना कहे जै बोल इक्क वार, साध संगत नाल रलाईआ। बिन हरिसंगत तेरा लेखा हरि ना सके पाड़, संगत देवे माण वड्याईआ। दर खलोते तेई अवतार, ना कोई देवे अग्गे हो गवाहीआ। पीर पैग़म्बर मन्न के बैठे हार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। गुर अवतार करन निमस्कार, गोबिन्द मुख ना कोए वखाईआ। जिस दुआरे बैठा निहकलंक नरायण नर अवतार, दूजा सके ना कोई छुडाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात कटण नहीं आया वगार, जन भगतां आपणे अंग लगाईआ। हरिसंगत जैकारा अठारां हाढ़, इक्क अठ्ठ बन्धन तुड़ाईआ। जगत लेखा देवे पाड़, पाड़ा ज़िमी असमान चुकाईआ। गुरमुख गुर सतिगुर घोड़े देवे चाड़, कलयुग डूँग्घी खड्ड लए उठाईआ। हरिजन करे हरि प्यार, हरि का पौड़ा इक्क वखाईआ। लम्बा चौड़ा दिसे ना विच संसार, नेत्र नैण ना कोई जणाईआ। मिट्ठा कौड़ा दर करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। चरन बख़्शे चरन ध्यान, चरन कँवल चरन सरनाईआ। मूर्ख मुग्ध दए ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। हरि सतिगुर धूढ़ी कराए अशनान, दुरमति मैल धुआईआ। दर आयां घर देवे माण, निमाणयां होए सहाईआ। कूड़ी क्रिया पीण खाण, खाणा पीणा रसन हल्काईआ। आत्म सुख श्री भगवान, सांतक सति सति कराईआ। अग्गे भुल्ल ना जाणा बण नादान, गुरसिखां हरि जू रिहा सुणाईआ। मास शराब ना हुण खाणा खाण, रसना रस ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत रिहा सुणाईआ। हरिसंगत सुण ला कर कन्न, हरि हरि आप सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी देवण आया डंन, एका डण्डा हथ्थ उठाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, भन्नणहार फेरा पाइंदा। जो जन कहिणा जाए मन्न, तन आपणे चरन सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाइंदा। जो जन खाए पीए मास शराब, हरि जू देवे आप सजाईआ। एथे ओथे दए अज़ाब, अज़मत आपणे हथ्थ रखाईआ। छुडा सके ना कोई नवाब, पीर पैग़म्बर ना कोई सहाईआ। चार जुग मानस जन्म मिले ना विच खुवाब, जूनी जून विच भुवाईआ। मुख रसना विष्टा रखे पेशाब, साचा रस ना कोई चखाईआ। जन्म जन्म रहे बेताब, आबेहयात ना कोई प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। जे कोई रसना लाए चाह, सतिगुर

साचा आख सुणाइंदा। वेखो धर्म राए देवणहारा फाह, गल फाँसी आप लटकाइंदा। लाड़ी मौत नाल करे नक़ाह, फातया इक्को वार पढ़ाइंदा। सतिगुर पूरा फेर ना पुच्छे सलाह, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। पिछला लेखा एका वार ल्या पड़वा, दूजी वार पड़वावण फेर कोई ना आइंदा। पुरख अबिनाशी फड़ फड़ दरवाजिउँ बाहर देवे कढा, अग्गे हो ना कोई छुडाइंदा। गुरमुख हो जो चोरी चोरी लाए दाअ, लग्गा दाअ कम्म किसे ना आइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक गुरमुखां नाल आप करे नक़ाह, गुरमुख आपणे अंग लगाइंदा। जिस जन रसना मास शराब चाह ल्या लगा, मुख काला दर दुआरा रहिण कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतारां हाढ़ वीह सौ उन्नी, गुर अवतार पीर पैग़म्बर लेखा गए चुकाईआ। सब दी चोटी हरि जी मुंनी, मुनी ऋषी देण दुहाईआ। भगत भगवान पुकार इक्को सुणी, सुण सुण खुशी मनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादि गुण गुणी, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। भुवावणहारा जून जूनी, अजूनी रहित वेस वटाईआ। साचे दर ना बणे कोई कानूनी, जगत कानून दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपणा हुक्म रखे ला, लाशरीक आप जणाइंदा। किसे कोलों ना लए सलाह, सलाहगीर ना कोई रखाइंदा। फड़ फड़ देवे अन्त आप सज़ा, जो गुरसिख गुरमुख हुक्म उलटाइंदा।
४१६ निरगुण बैठा आप मलाह, सरगुण बेड़ा पार कराइंदा। मास शराब दिती छुडा, पल्लू आपणा आप फड़ाइंदा। जो जन कलयुग ४१६
१२ अन्तिम रसना लाए चाह, तिस आपणी चाह ना कोई रखाइंदा। फड़ फड़ देवे आप सज़ा, जो गुरमुख गुरसिख हुक्म उलटाइंदा। १२
वेखो करे की खेल बेपरवाह, बेपरवाही आपणे हथ्थ रखाइंदा। अग्गे भुल्ल ना सके कोई बख्शा, पिछली भुल्ल आपणे लेखे लाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लोकमात लए प्रगटा, हीरे लाल माणक मोती निर्मल जोती आप जगाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहान वखाए इक्को सोटी, सो सोटी हँ ब्रह्म आप डराइंदा।

✳ १८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच रात नूं भगत दुआर पंचम घर ✳

सो पुरख निरँजण सति विहारा, आदि आदि हरि कराइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, जुगादि जुगादि वेख वखाइंदा। एकँकार कर पसारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, अनभउ प्रकाश कराइंदा। श्री भगवान पावे सारा, भगवन आपणा वेस वटाइंदा। अबिनाशी करता सति हुलारा, सति सतिवादी आप रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो न्यारा, निराकारा रूप धराइंदा। सच सिँघासण अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप प्रगटाइंदा। महल अटल उच्च

मनारा, साचा मन्दिर आप उपाइंदा। नाउँ रख सचखण्ड दवारा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाइंदा। दीआ बाती इक्क उज्यारा, कमलापाती आप कराइंदा। रवि ससि ना कोई अधारा, मंडल मण्डप ना कोई वड्याइंदा। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, अनक कल आपणी आप जणाइंदा। भूपत भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। राजन राज वड बलकारा, बल आपणा आप वखाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। दर दरवेश बण दरबारा, घर साचे अलख जगाइंदा। निउँ निउँ चरन करे निमस्कारा, सीस सीस जगदीश झुकाइंदा। लेखा जाणे सच दरबारा, दरगाह साची धाम वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। सो पुरख निरँजण करनी करदा, करता आपणी खेल आप कराईआ। हरि पुरख अबिनाशी निर्भय हो कदे ना डरदा, भय अवर ना कोई रखाईआ। अजूनी रहित कदे ना मरदा, जीवण मरन ना कोए वड्याईआ। आदि निरँजण इक्को नूर धरदा, नूर नुराना सच्चा माहीआ। अबिनाशी करता घर साचे वड़दा, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। अबिनाशी करता आपणा नूर आपे वरदा, नार कन्त खेल वखाईआ। श्री भगवान सच सिँघासण आपे चढ़दा, निरगुण आपणी सेज हंढाईआ। दर दरवेश बणे बरदा, घर सेवक सेव कमाईआ। आपणा अक्खर निष्अक्खर आपे पढ़दा, करे सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दर सच्चा इक्क सुहाईआ। सो पुरख निरँजण साचा घर, हरि जू हरि हरि आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे वर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। एकँकारा वेखे घर घर, रूप रंग रेख ना कोई रखाइंदा। आदि निरँजण नूर धर, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आपणा नाउँ आपे पढ़, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। श्री भगवान आपणा निशान सचखण्ड दवारे आपे धर, सति स्वामी आप झुलाइंदा। पारब्रह्म भय मन्ने आपणा डर, भउ आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाइंदा। साची रचना सचखण्ड, हरि साची सच कराईआ। निरगुण निरगुण वंडे वंड, वंडणहारा बेपरवाहीआ। एका राग गाए छन्द, साचा सोहला आप सुणाईआ। एका नूर इक्क अनन्द, एका मन्दिर वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल साचे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। पुरख अबिनाशी निरगुण नर, नर हरि आपणा आप रूप वटाइंदा। करता पुरख करनी कर, कादर आपणा भेव चुकाइंदा। परवरदिगार नूर धर, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क वड्याइंदा। सचखण्ड दवारा साचा मन्दिर, गृह मन्दिर इक्क उपाईआ। हरि पुरख निरँजण वसे अंदर, अन्तर आपणा नूर धराईआ। एकँकार करे खेल डूँघी कंदर, भेद अभेद ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। साचा पर्दा हरि निरँकार, निरगुण आपणा आप उठाइंदा। सचखण्ड दवारा कर त्यार, घर साचे सोभा पाइंदा। सच सिँघासण कर पसार, पुरख अबिनाशी आसण लाइंदा। जोत अगम्मी कर उज्यार, नूर नुराना नूर रुशनाइंदा। सीस जगदीश सोहे दस्तार, पंचम आपणा रंग वखाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, सच संदेशा इक्क अलाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। नार कन्त कर विहार, रुत्त बसन्ती आप वखाइंदा। निरगुण कर प्यार, साची सेज सेज हंढाइंदा। दाई दाया अगम्म अपार, बण सेवक सेव कमाइंदा। जनणी जन खेल करे करतार, आप आपणा भेव खुलाइंदा। सुत दुलारा कर त्यार, पूत सपूता गोद उठाइंदा। शब्दी नाउँ रख अपर अपार, आप आपणे अंगण लाइंदा। साचे मन्दिर दए आधार, घर घर विच आप प्रगटाइंदा। सच अंदर खोल्ह किवाड़, थिर घर एका एक प्रगटाइंदा। बाल अञ्याणा देवे वाड़, सुत दुलारा आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल वखाइंदा। सचखण्ड अंदर थिर घर, धुरदरबारी आप बणाईआ। शब्द सुत अंदर वड़, बह बह खुशी मनाईआ। एका अक्खर रिहा पढ़, सो पुरख निरँजण ढोला गाईआ। हँ ब्रह्म आपे कर, रूप अनूप आप जणाईआ।
४१८ घर विच काया साचा दर, घर वज्जदी रहे वधाईआ। पिता पूत वेखे खड़, मात आपणा नाउँ जणाईआ। जोती जोत सरूप ४१८
हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। थिर घर वसे छोटा बाला, हरि जू हरि हरि आप बहाया। शब्दी
१२ सुत खेल निराला, निरगुण रिहा कराया। आदि अन्त होए रखवाला, सिर आपणा हथ्थ उठाया। इक्क बणाई सच्ची धर्मसाला, १२
सच दुआरा अंदर आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप वड्याआ। साचा मन्दिर थिर घर दुआर, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। हरि पुरख निरँजण कर त्यार, वेखे चाँईं चाँईंआ। एकँकार खेल करे अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। आदि निरँजण एका दीआ देवे बाल, तेल बाती ना कोई रखाईआ। अबिनाशी करता करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। श्री भगवान साचा नूर दए जमाल, जल्वा नूर नूर रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल करे बेमिसाल, मिसल आपणी आप बणाईआ। सुत दुलारे देवे ध्यान, चरन कँवल कँवल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर बैठा साचा सुत, सतिगुर साचा आप बहाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, अचुत दिस किसे ना आईआ। आदि सुहाई आपणी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। सचखण्ड दवारयों आपे उठ, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी आपे तुट्ठ, रूप अनूप प्रगटाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। लेखा जाणे सति पूत, पूत सपूता आपे जाईआ। आप बिठाए साची कूट, किला

४१६
१२

मन्दिर इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा सोभावन्त, सति सतिवादी आप सुहाईआ। करे खेल बेअन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। आपणी रचना रची आदि वेखणहार अन्त, मध आपणा खेल खलाईआ। लेखा जाण नार कन्त, कन्त कन्तूहल सहिज सुभाईआ। सुत दुलारे बणाई बणत, घर साचे साचे लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक करे पढ़ाईआ। साचे सुत कर पढ़ाई, हरि हरि नाम जणाइंदा। नाम अनादी तेरी कुड़माई, घर मन्दिर मेल मिलाइंदा। आदि जुगादि ना होए जुदाई, जुदा भेव ना कोई रखाइंदा। एका नूर होए रुशनाई, रोशन ज़मीर आप कराइंदा। एका मन्दिर बहणा चाँई चाँई, दूजा घर ना कोई वड्याइंदा। दर्शन पाइन हर घट थाईं, घट घट आपणा रूप हरि जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटे बाले आप जणाइंदा। छोटा बाला सुत दुलारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। थिर घर वेखे तेरा दुआरा, घर साचे मिली वड्याईआ। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। तेरे चरन करां निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। हउँ सेवक सेवा सेवादारा, बण याचक सेव कमाईआ। तूं बख्शीं बख्शणहारा, बख्शिश हथ्थ तेरी वड्याईआ। एका देणा सच भण्डारा, दर साचा मंग मंगाईआ। एका देणा दरस दीदारा, दरस हरस दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द दए समझाईआ। सुत शब्द जाणा जाग, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। तेरे हथ्थ फड़ावां वाग, आपणी डोर इक्क उठाइंदा। तेरे मन्दिर लावां भाग, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। तेरे अन्तर इक्क वैराग, वैरागी आपणा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेख आप जणाइंदा। साचा खेल जाणा जाण, हरि साचा सच जणाईआ। सिर रखे हथ्थ भगवान, भगवान आपणी दया कमाईआ। थिर घर तेरा झुल्ले निशान, सचखण्ड मेरी वज्जे वधाईआ। मेरा नाउँ होए प्रधान, तेरी करे वड वड्याईआ। तेरी वड़याई मेरा चरन ध्यान, मेरा चरन तेरी सरनाईआ। मेरा हुक्म तेरा फ़रमाण, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। साहिब सुल्तान सतिगुर सच्चा निरगुण देवे दान, साची वंड वंडाईआ। तूं बहणा बण के काहन, पुरख अबिनाशी वेखे चाँई चाँईआ। करे खेल हरि दो जहान, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक एका एक वरताईआ। वस्त अमोलक हरि जू दस्से, थिर घर वज्जे वधाईआ। नर नरायण निरगुण बह हस्से, आपणी खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारे सदा वसे, थिर घर आपणा फेरा पाईआ। सुत दुआरे देवे रसे, रस रसीआ एका रस वखाईआ। तेरा मेरा इक्को हिस्से, जिस आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

आपणा भेव रहे खुलाईआ। आपणा भेव हरि जू खोले, खोले खोलणहार। थिर घर साचे आपे मौले, आपणी किरपा धार। पुरख अबिनाशी कुण्डा खोले, आपणा पर्दा दए उतार। आप गाए साचे ढोले, ढोला बोले एका वार। निरगुण निरगुण वसे तेरे चोले, चोला वेखे अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर पावे तेरी सार। थिर घर पावे सार, सार समालया। देवे दरस दीदार, जोत अकालया। करे खेल अपर अपार, पुरख अबिनाशी सचखण्ड वसणहार सच्ची धर्मसालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साची डालीआ। साची डाली वस्त अमोलक, हरि जू हरि हरि आप वरताईआ। थिर घर लगाए एका गोलक, दूसर नज़र किसे ना आईआ। नाद अनादी वजाए ढोलक, रागी राग सुणाईआ। रसना बिन दन्द बोलत, अनबोलत भेव मुकाईआ। सच दुआरा एका खोलत, खोल खोल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाया। तेरा लेखा हरि बेअन्त, समझ विच ना आइंदा। तूं साहिब सुल्तान साचा कन्त, दर घर साचा सोभा पाइंदा। मैं बाल निधान दर दरवेश मंगत, बण भिखारी झोली डाहइंदा। मेरी चोली चाढ़ रंग, मंग इक्को इक्क मंगाइंदा। आदि जुगादि लगाउणा अंग, अंगीकार इक्क अख्वाइंदा। मेरा नूर ना होवे भंग, तेरा नूर यार बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आदि आपणी दया कमाईआ। सुत दुलारे साचे लाल, थिर घर तेरा रंग रंगाईआ। तेरा जल्वा नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। तेरे अन्तर दीपक बाल, एका मन्दिर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त दए वरताईआ। साची वस्त देवे दात, दाता दानी आप वरताइंदा। उत्तम रखे तेरी ज़ात, आपणा रूप वखाइंदा। चरन कँवल बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क इकेला देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। करे खेल पुरख समराथ, समरथ आपणा राह चलाइंदा। तेरे अंदर रखे वथ, वस्तू आपणी आप प्रगटाइंदा। विष्नूं तेरी झोली घत्त, विश्व आपणा खेल कराइंदा। साचा अमृत देवे झट्ट, चरन चरन नाल रगड़ाइंदा। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाश आपणा नूर वखाइंदा। कँवल कँवल खेल तमाश, पारब्रह्म ब्रह्म वेस वटाइंदा। धूंआँधार सुन अगम्म पूरी आस, शंकर भोग बलास कराइंदा। तेरे वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी रास, तेरी झोली पाइंदा। हरि जू वेखे खेल तमाश, त्रै त्रै एका रंग रंगाइंदा। पंज तत्त वेखे रास, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश बन्धन पाइंदा। मंडल मण्डप गगन गगनंतर वेखे खेल तमाश, नूर नुराना नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत आप वड्याइंदा। साचे सुत तेरी आस, हरि जू हरि हरि पूर कराईआ।

लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर प्रकाश, सूरज चन्द किरन किरन रुशनाईआ। मंडल मण्डप खेल तमाश, खेलणहारा वेख वखाईआ। जल थल महीअल उच्चे टिल्ले धरनी धरत धवल दए धरवास, धरवासा आप बंधाईआ। सति सतिवादी साची रास, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दए वड़याईआ। शब्द सुत वड्डा वड, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। आपणे अन्तर आपे कढ्ढ, आपे वेख वखाइंदा। आप लडाए साचा लड, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आप सुहाए आपणी यद, साची यद आप बणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रगट, प्रगट आपणी खेल कराइंदा। त्रैगुण माया बन्न्हे नत्त, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। खेले खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी साची वंड वंडाइंदा। शब्दी वंड साची धार, हरि हरि आप जणाईआ। विष्नूं करना इक्क प्यार, एका घर रिहा जणाईआ। साची वस्त एका वार, हरि साचा झोली पाईआ। ब्रह्मे देणा ब्रह्म दुआर, ब्रह्मे बंस बंस वखाईआ। शंकर करे इक्क बलकार, बल देणा चाँई चाँईआ। तिन्नां विचोला एकँकार, साचा ढोला रिहा सुणाईआ। करे कौला इक्क इकरार, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। तेरा करे सति पसार, सति सतिवादी दया कमाईआ। लख चुरासी करे त्यार, त्रैगुण अतीता सच्चा माहीआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भाण्डे घड़े बण ठठयार, दर घर साचे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचे सुत कर ध्यान, हरि जू आख जणाया। लख चुरासी तेरा निशान, निरगुण सरगुण दए झुलाया। करे खेल श्री भगवान, चारे वरन वंड वंडाया। चारे बाणी बोल बेज़बान, ज़बान शरअ दए जणाया। चारे जुग कर प्रधान, चारे वेदां भेव खुल्हाया। चार कुण्टां होए हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा रिहा उठाया। सुत शब्द रखणा याद, हरि साचा याद कराइंदा। जिस ने रचना रची आदि, सो आपणी खेल कराइंदा। वेखे विगसे हरि ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड आपणे रंग रंगाइंदा। नाउँ वजाए नाद, अगम्म ढोला आपे गाइंदा। जीव जंत साजण साज, नौ दर काया खोज खुजाइंदा। आत्म परमात्म देवे दाद, रसना जिह्वा जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए सज्जण साक, साचा बन्धन इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा राह चलाइंदा। शब्द सुत तेरा चले राह, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण बणे मलाह, बेड़ा दो जहान उठाइंदा। एकँकारा दए सलाह, सलाहगीर आप हो आइंदा। आदि निरँजण करे रुशना, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता बेपरवाह, पर्दानशीन आप हो जाइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशां, निशाना इक्को इक्क उठाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म लए प्रगटा, घट मन्दिर जोत जगाइंदा। साची सेजा लए सुहा, सच सिंघासण सोभा

४२१ १२

पाइंदा। तेरी नौबत दए वजा, एकँकारा आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल खिला, वेस अनेका रूप वटाइंदा। शब्दी सुत नाउँ धरा, अबिनाशी अचुत खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप जणाइंदा। सुत दुलारे वेख हरि हरि धार, नर निरँकार आप चलाईआ। जुग जुग खेल करे अपार, तेरे नाउँ दए वड्याईआ। नाउँ धर गुर अवतार, पीर पैग़म्बर लए प्रगटाईआ। तेरा सो वेला विच संसार, बण विचोला दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचे सुत तेरी शक्ति, हरि जू हरि हरि आप भराइंदा। जुगा जुगन्तर तेरी सुहाए रुत्त, वेला आपणे हथ्थ रखाइंदा। मेल मिलावा साचे भगत, पंज तत्त काया जोड़ जुड़ाइंदा। लेखे लाए बूंद रक्त, रत्त रत्ती रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत तेरा रूप, साचे सुत जणाईआ। करे खेल चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। जुग जुग देवे सच सबूत, गुर पीर अंदर गोझ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा समझाईआ। साची सिख्या गुरसिख धार, हरि हरि आप जणाइंदा। साचे सन्त तेरा प्यार, हरिजन साचे आप कराइंदा। खेले खेल अपर अपार, बेअन्त अथाह राह चलाइंदा। नार कन्त इक्क आधार, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। रंग बसन्ती साचा चाड़्ह, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। किरपा कर एकँकार, नाम सुगंधी तेरी इक्क महकाइंदा। वासना गंदी कढ्ढे विच संसार, साचा छन्दी ढोला गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी तेरी झोली पाइंदा। जुग चौकड़ी तेरी झोली, सो सतिगुर आपे पाईआ। साचे सुत बणना गोली, जुग जुग सेव कमाईआ। आपणे रंग खडाउणी होली, रंगण सच चढ़ाईआ। एका तोलणा साचा तोल आपणे कंडे लैणा तोली, कंडा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा समझाईआ। सच संदेशा सुणया हरि, सुत शब्दी सीस झुकाया। धन्न भाग प्रभ दिता वर, मेरा साहिब मेरी झोली रिहा भराया। निरभउ हो चुकाया डर, भय अवर ना कोई जणाया। कर किरपा पल्लू ल्या फड़, ना सके कोई छुडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हुक्मे अंदर कार कमाया। तेरे हुक्मे अंदर करां कार, करता पुरख सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करां त्यार, त्रैगुण पंज तत्त सहिज सुभाईआ। लख चुरासी भरां भण्डार, खाणी बाणी नाल मिलाईआ। गुर अवतार दए आधार, पीर पैग़म्बर करां पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी वेखां वारो वार, लोकमात फेरा पाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते इक्को देणा साचा वर, कवण वेला अन्त लएं मिलाईआ। तेरा विछोड़ा ना सकां जर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा जणाईआ।

साचे सुत सुण सुण दूत, हरि साचा सच जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तेरा पंज तत्त, काया रूप वटाइंदा। एका ताणा पेटा सूत, एका रंग वखाइंदा। वसणहारा जगत कलबूत, काया कपड़ आप बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, धुरदरगाही आप जणाईआ। साचे सुत बण जा राणा, हरि राजन राज दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखण तेरा भाणा, तेरे भाणे विच रखाईआ। तेरा नाउँ गायण गाणा, गा गा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची सिख्या इक्क जणाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, हरि शब्दी आप जणाइंदा। बिन कलम शाही लेखा देवे लिख, लिखणहारा नज़र ना आइंदा। सचखण्ड निवासी वंडे साचा हिस्स, हिस्सा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी पीसन ल्या पीस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चक्की आप चलाइंदा। कर किरपा भेजे जिस जिस, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाइंदा। फड़ फड़ सेवा लाए तिस, साची सेवा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत वंड वंडाइंदा। शब्दी सुत तेरी वंड, हरि साचा आप कराईआ। तेरा लेख विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड तेरी शनवाईआ। तेरा लहिणा विच वरभण्ड, वरभण्डी दए चुकाईआ। तेरा नाम तेज़ चण्ड, प्रचण्ड चण्डका रूप वटाईआ। तेरा चिला सचखण्ड, तीर निराला इक्क वखाईआ।
४२३ तेरा नाउँ सुहागी छन्द, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। तेरा नूर साचा चन्द, पीर पैग़म्बर सीस झुकाईआ। तेरा रस साचा ४२३
१२ अनन्द, अनन्द विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचे सुत दए १२
समझाईआ। साचे सुत सुण मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग चलाए तेरी रीत, हथ्थ तेरे वाग फड़ाइंदा। आप बैठा रहां अतीत, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। लोकमात धार वखावां मन्दिर मसीत, मसला एका नाम सुणाइंदा। करां खेल पाक पलीत, पतित आपणा भेव जणाइंदा। लेखा जाणा हस्त कीट, कीटां अंदर आपणा आसण लाइंदा। सद वसां धाम अनडीठ, नज़र किसे ना आइंदा। सुत्ता रहां दे कर पीठ, करवट मात ना कोई बदलाइंदा। गुर अवतारां दस्सां इक्क प्रीत, चरन कँवल कँवल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे करतार, लिखण पढ़न विच ना आईआ। चार वेद ना पावण सार, ब्रह्मा बैठा मुख शरमाईआ। शस्त्र सिमरत रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, लेखा पुराण अठारां गया समझाईआ। कृष्ना दे इक्क सहार, नाम बंसरी इक्क प्यार, अठारां अध्याए बण वणजार, आपणी वड़याई गया समझाईआ। मूसा तक्कया जल्वा नूर अपार, वड पैग़म्बर शाह सिक्दार, शाह सुल्तान सच्चा शहिनशाहीआ। ईसा कहे मेरे परवरदिगार, आदि जुगादी

मददगार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मुहम्मद सजदा सीस झुका वाह वाह कुदरत तेरी यार, यारी यारां नाल बंधाईआ। हक़ हक़ीक़त तेरा नाअर, लाशरीक इक्क वणजार, सरक्त अवर ना कोए वधाईआ। मुकामे हक़ तेरा पसार, महिबान बीदो बीखैर या अल्ला अलाही नूर रुशनाईआ। निरगुण तेरा वेख्या इक्क दुआर, उच्ची कूक कूक करे पुकार, एकँकार एका नूर नज़री आईआ। चरन कँवल ढह ढह प्या दुआर, शब्द सुत आपणी झोली अग्गे डाहीआ। देवणहार अगम्म अपार, नाम सति भरे भण्डार, साची वस्त दए वरताईआ । जोती जाता हो उज्यार, पुरख बिधाता पावे सार, आप आपणे रंग रंगाईआ। नानक निरगुण सरगुण दए आधार, निरगुण नानक करे जगत प्यार, पंज तत्त काया चोला इक्क हंढाईआ। एका जोती दस अवतार, दस दस आपणा भेव वखाईआ। दस्म दुआरी पार किनार, एका मन्दिर कर उज्यार, गोबिन्द बोले सच जैकार, जै जै जैकार करे लोकाईआ। पुरख अकाल बणना सहार, ना कोई मस्जिद ठाकरदुआर, ठाकर इक्को रिहा मनाईआ। उच्ची कूक कूक बुलावे नाअरा, साचा ढोला गाए साचे माहीआ। फतहि डंका वज्जे विच संसारा, राउ रंकां करे ख़बरदारा, बेख़बर सब नूं रिहा जगाईआ । शब्द अगम्मी खण्डा तिक्खी धारा, उच्चे टिल्ले पर्बत पावे सारा, डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। जुग चौकड़ी करे पार किनारा, जुग जुग वेखे वेखणहारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। शब्दी सुत तेरा वणजारा, जोती
४२४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचे सुत तेरा रंग, हरि जू हरि जणाइंदा। नव ४२४
नौ जाए लँघ, वेला अन्त अन्त समझाइंदा। गोबिन्द सेजा सच पलँग, सतिगुर आप हंढाइंदा। पुरख अकाल सूरा सरबंग,
१२ मर्द मर्दाना सेव कमाइंदा। साचे मन्दिर आपे लँघ, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १२
किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म लैणा जाण, आदि पुरख समझाया। शब्दी तेरा बल बलवान, बलधारी लए प्रगटाया। जुग जुग खेले खेल महान, गुर अवतार नाउँ रखाया। अन्तिम लेखा वेखे आण, निरगुण आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत रिहा सिखाया। साची सीखआ सुणी निरँकार, निरगुण भुल्ल कदे ना जाईआ। तेरे हुक्मे अंदर गुर अवतार, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। अन्तिम लेखा विच संसार, गोबिंद मेला सहिज सुभाईआ। चेला गुर बण करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, लख चुरासी फोल फुलाईआ। वरन बरन दए आधार, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। एका पिता पुरख अकाल, परम पुरख दए समझाईआ। गुर अवतारां पंज तत्त चोला खाए काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, दर घर साचे आसण लाईआ । सुत दुलारा करे प्रितपाल, जुग जुग फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

भेव रिहा खुलाईआ। तेरा भेव पुरख अगम्म, मेरी समझ विच ना आइंदा। कवण वेला करे कम्म, कवण खेल कराइंदा। कवण वेला बेड़ा देवे बन्न्ह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। कवण वेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाइंदा। साचा वेला दस्स भगवान, सुत दुलारा आप सुणाईआ। जुग जुग तेरा खेल महान, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। करोड़ तेतीसा मन्ने आण, सुरपति इन्द नाल रलाईआ। तेई अवतार करन परवान, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाईआ। ब्रह्मा सुत बाल निधान, बराह चले ना कोई चतुराईआ। यगै पुरष हैरान, हाव ग़रीव ना कोई वड्याईआ। नर नरायण खेल महान, कपल मुन दया कमाईआ। दत्ता त्रै देवे ज्ञान, रिखप देव आप समझाईआ। पृथू वेखे आपे आण, मत्तसय लेखा सहिज सुभाईआ। कछव देवे सच्चा दान, धनंतर दुआवे माण वड्याईआ। मोहणी रूप करे मेहरवान, तेरा भेव कोई ना पाईआ। बावन खेले खेल महान, बल आपणे लेखे लाईआ। हँसा बोले इक्क ज़बान, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। नर सिँघ भेख धरे बलवान, रूप रंग रेख ना किसे समझाईआ। नर नरायण तेरा निशान, ध्रू बाले सार ना राईआ। गज बन्धन कटे आण, तन्दवे तन्द तन्द तुड़ाईआ। परस राम देवे माण, ब्राह्मण एका गुण समझाईआ। क्षत्री बणे वड बलवान, राम दसरथ बेटा जाईआ। वेद व्यासा लिखे लेख महान, कुँवारी कन्या मात उठाईआ । कान्हा कृष्ना बण जवान, सेवा करे बण रथवाहीआ। भगत भगवन्त दे ज्ञान, गीता ज्ञान गया दृढ़ाईआ। मूसा ईसा इक्क पैग़ाम, बण पैग़म्बर गए सुणाईआ। मुहम्मद देवे सच कलाम, कलमा नबी पढ़ाईआ। नानक निरगुण झोली पाए सतिनाम, नाम सति इक्क वखाईआ। गोबिन्द फतहि डंका वजाए दो जहान, दो जहानां आपणा भेव चुकाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल महान, गुर अवतार भेव पा ना सके राईआ। बेअन्त बेअन्त कह के सारे गाण, गा गा ख़ुशी मनाईआ। मैं छोटा बाल निधान, सुत दुलारा चरनां उपर सीस टिकाईआ। जुग चौकड़ी वंडे वंड विच जहान, शब्द शब्दी रूप वटाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देवे माण, चार वरन अठारां बरन नौ अठारां ख़ुशी मनाईआ। चौदां वरन बणाए वधान, विद्दत आपणी धार चलाईआ। चौदां लोक खोल्ह दुकान, चौदां हट्ट आप चलाईआ। चौदां तबकां इक्क ज्ञान, एका कलमा नबी पढ़ाईआ। करे खेल श्री भगवान, तेरा अन्त कोई ना पाईआ। आपणा अन्त दस्स निशान, जिस वेले लए मिलाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, शब्दी सुत रिहा समझाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवे माण, लेखा लिख लिख लोकमात समझाईआ। कलयुग अन्तिम चार कुण्ट होए हैरान, हरि का भेव कोई ना पाईआ। घर घर वड़े पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ । आसा तृष्ना पीण खाण, हउंमे हंगता करे कुड़माईआ। गुरुदुआर मन्दिर

मस्जिद स्यासत चले दुकान, हरि का नाउँ दर इष्ट ना कोई वखाईआ। धीआं भैणां तक्कण नौजवान, नेत्र नैण ना कोई शरमाईआ। वेसवा रूप सर्ब बण जाण, विभचार जगत हंढाईआ। धरती रोवे बेज़बान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरमुख साचे अंदर वड़ वड़ सर्ब कुरलाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर पीर अवतार मुख छुपान, अग्गे हो ना कोई बचाईआ। सारे कहिण एको एक श्री भगवान, आदि अन्त वडी वड्याईआ। लिख लिख लेख दस्स दस्स जाण जहान, कलयुग अन्तिम आवे फेरा पाईआ। नाउँ रखे निहकलंक बली बलवान, बल सब दा दए मिटाईआ। दीन मज़्ब दा मिटे निशान, शरअ शरीअत दए गंवाईआ। चार जुग दा लेखे मंगे आण, गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए उठाईआ। लोकमात वखाए सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। भगत भगवन्त कर परवान, दर परवानगी इक्क कराईआ। साचा तख्त सच निशान, सति सतिवादी आप बणाईआ। पिछला लेखा चुक्के विच जहान, चुकावणहारा फेरा पाईआ। दो जहानां बणे हुक्मरान, हुक्मी एका हुक्म सुणाईआ। करे खेल नौजवान, रूप रंग रेख आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी बणे साचा काहन, गोपी एका घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा जणाईआ। सुत दुलारे अन्तिम आउणा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सच विहारा मात कराउणा, लग्ग मातर मेट मिटाइंदा। अल्फ़ ये मोह चुकाउणा, तत्त पंज भेव चुकाइंदा। आपणी सो आप सुणाउणा, आपणा खेल आप समझाइंदा। आपणे जेहा आपे हो फेरा पाउणा, दूजा संग ना कोई रखाइंदा। गुरमुख साचा मात उठाउणा, फड़ बाहों गले लगाइंदा। भगत भगवन्त मेल मिलाउणा, मिल मिल आपणा राह जणाइंदा। सन्त कन्त रंग लगाउणा, अंगीकार आप कराइंदा। गुरमुख गुर गुर गोद बहाउणा, गुरसिख आपणी धार जणाइंदा। सुरत सुहागी शब्द वखाउणा, आत्म परमात्म खोज खुजाइंदा। आदि जोधा हरि आपणा नाउँ धराउणा, सूरबीर वेस वटाइंदा। नाम खण्डा इक्क चमकाउणा, ब्रह्मण्डां आप डराइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाउणा, चारे खाणी फोल फुलाइंदा। दीन मज़्ब शरअ शरीअत दूई कन्ढा ढौहणा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। साचा मानस बन्दा इक्क बणाउणा, गंदा कोई रहिण ना पाइंदा। खण्डा गोबिन्द हथ्थ उठाउणा, लेखा पूर कराइंदा। साचा शब्द इक्क सुणाउणा, सोहँ ढोला गाइंदा। परमानंद इक्क उपजाउणा, निजानंद रस चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव जणाइंदा। सुत दुलारे कलयुग अन्तिम आवांगा, हरि जू आख सुणाईआ। साचा राग इक्क सुणावांगा, आपणा नाउँ प्रगटाईआ। सच दरबार इक्क लगावांगा, वेखे सर्ब लोकाईआ। सच सिँघासण इक्क विछावांगा, सचखण्ड रूप वटाईआ। निरगुण नूर जोत चमकावांगा, जोती जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर बुलावांगा, हुक्मी हुक्म हुक्म फिराईआ।

४२७
१२

पिछला लेखा सर्ब चुकावांगा, लेखा लेख ना कोई मिटाईआ। अग्गे सच्चा हुक्म वरतावांगा, एका हुक्म करे शनवाईआ। आपणा बल आप वखावांगा, बल आपणा आप धराईआ। जन भगतां लेखे लावांगा, लेखा इक्को इक्क जणाईआ। चार वरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर बहावांगा, दर इक्को इक्क खुल्हाईआ। इक्को गीत सुणावांगा, इक्को वज्जे वधाईआ। इक्को मन्दिर बणावांगा, एका रुत्त सुहाईआ। शब्दी सुत तेरा नाउँ प्रगटावांगा, पंज तत्त ना कोई वड्याईआ। गुर पीर अवतार तेरी गोद बहावांगा, सच अदालत इक्क लगाईआ। उच्ची कूक कूक सुणावांगा, भुल्ला रहे ना कोई जीव लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। कलयुग अन्तिम पाउणा फेरा, हरि जू हरि हरि इक्क सुणाइंदा। शब्दी एका घेरा, दो जहान आप रखाइंदा। सोहँ रूप तेरा मेरा, मेरा तेरा भेव चुकाइंदा। नाउँ रख सिंघ शेरा, शेर भब्बक इक्क लगाइंदा। आदि जुगादी बण दलेरा, आपणा बल आप धराइंदा। चार जुग दा ढाहे डेरा, ढाह ढेरी ख़ाक मिलाइंदा। एका देवे आपणा गेड़ा, गेड़नहार आप अख्वाइंदा। लख चुरासी खुल्हा वेहड़ा, धरत मात सोभा पाइंदा। हो के आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा लेखा अन्तिम कल, हरि जू आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी अछल अछल, वल छल धार चलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मात घल्ल, जगत संदेशा दए सुणाईआ। दर्शन दे दे घड़ी घड़ी पल पल, पलक पलक पढ़ाईआ। हरि की कोई ना सके झाल झल्ल, झलक नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दवार बैठा मल, सच सिंघासण सोभा पाईआ। किरन नूर जोत प्रकाश करे पंज तत्त माटी काया खल्ल, ख़ालक दए माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराउणा। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, दूसर नज़र किसे ना आउणा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लोकमात वेस वटाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अछल अछला। अछल अछल खेल संसार, कलयुग अन्त दए कराईआ। साचे भगत कर त्यार, भगवन मेला लए मिलाईआ। चार जुग दा लहिणा दए उतार, कर्ज़ा मकरूज ना कोई रखाईआ। नेत्र नैणां दरस दए वखाल, रूप अनूप आप वटाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण बणे दलाल, लोकमात फेरा पाईआ। हरिजन साचे लए भाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। गुरमुख उठाए आपणे लाल, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाल, घर बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लहिणा आप

चुकाईआ। कलयुग अन्तिम जाए आ, थिर कोए रहिण ना पाया। करे खेल आप ख़ुदा, ख़ुदी सब दी दए मिटाया। पीर पैग़म्बर जो करे जुदा, अन्तिम चरना हेठ दए दबाया। सूफ़ी जिस दे उत्तों हुंदे रहे फ़िदा, सो हज़रत दए गवाहया। आपणा राह वखाए संसार सिदा, पीर पैग़म्बर सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्तर आप चुकाया। कलयुग अन्तिम जाणा जाण, जानणहार आप जणाईआ । प्रगट होवे श्री भगवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। भगत दुआर बणाए आण, छत्ती जुग दा लेख मुकाईआ। बहत्तर देवे दान, बहत्तर नाड़ करे रुशनाईआ। सत्तरां इक्को इक्क ज्ञान, मन्त्र इक्को इक्क पढ़ाईआ। चुहत्तरां देवे दान, सच भण्डार इक्क वरताईआ। सेवक बणे नौ जवान, आप आपणा बल धराईआ। साचे घर पक्के पकवान, पक्का रिध्धा आपे वेख वखाईआ। चार जुग दी पिछली मेटे मुकाण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी आपणे पेटे पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर औलीए सच दए फ़रमाण, दे फ़रमाणा आपणे दर बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। हुक्मे अंदर आउणा गुर अवतार, सतिगुर साचा आप मंगाईआ। भगत दुआरे बह निरँकार, हरि करतार आसण लाईआ। पिछला लेखा मंगे वारो वार, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। अन्तिम सारे होए शर्मशार, नेत्र नैण ना सके कोई उठाईआ। फतवा दिता इक्को वार, एका हुक्म सुणाईआ। हक़ो हक़ करे नबेड़, नखेड़ा इक्को इक्क जणाईआ। केहड़ा केहड़ा दस्स के आया विच संसार, जीवां जंतां जगत कर पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी वसे सब तों बाहर, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए कराईआ। अन्तिम लेखा करने आया, करता पुरख करतार। गुर अवतारां वेखण आया, निरगुण नूर जामा धार। पीर पैग़म्बर नज़र ना आया, जोधा सूरबीर बलकार। लाशरीक लड़ने आया, खेले खेल अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे अन्तिम वार। कलयुग वेला अन्तिम जग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, दूसर संग ना कोई रखाइंदा । लम्मा उच्चा कोई ना जाणे कद्द, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जिस दी किसे ना लभ्भी हद्द, गुर अवतार अद्धविचकार रखाइंदा। इक्को नानक दर सद्द, घर साचा इक्क वखाइंदा। नाम निधान साची मदि, गोबिन्द रंग चढ़ाइंदा। अन्तिम वेले लज्जया लए रख, सिर आपणे हथ्थ टिकाइंदा। पुरख अगम्मा हो प्रतख, प्रतख आपणी खेल कराइंदा। निरगुण नालों सरगुण वक्ख, सरगुण नालों निरगुण वक्ख वखाइंदा। दर दुआरे आपणे सद्द, बेहद्द हद्द पार कराइंदा। साची झोली लओ अड्ड, हरि जू आख सुणाइंदा। आपणा कलमा आपणी कलाम पिछली दयो छड्ड, लेखा पिछला हथ्थ ना किसे आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

४२८ १२

कर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाइंदा। सच सुनेहड़ा दिता आप, आपणा राग अल्लाईआ। पीर पैग़म्बरां माई बाप, पिता पूत वेख वखाईआ। सारे वेखो बस मेरी ज़ात, क्यों ज़ात पात मात वंड वंडाईआ। सारे बह जाओ इक्को जमात, पुरख अबिनाशी पट्टी रिहा पढ़ाईआ। इक्को ढोला गाओ गाथ, इक्को नाअरा रिहा समझाईआ। दर बैठा सच्चा माही सदा सुहेला देवे साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। कोई गा ना सके त्रिलोकी नाथ, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ चरनां हेठ रखाईआ। कोटन कोटि बेटे दसरथ राम, कोटन कोटि राम रम्मईआ रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखण आया, निरगुण आपणा जामा धार। गुर अवतार पेखण आया, सति सतिवादी सचखण्ड सच्चे दरबार। पिछला लेखा मंगण आया, अग्गे बन्न्हे साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा देवे सुत दुलार। सुत दुलारे चढ़या चाअ, चाओ घनेरा इक्क रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणया मलाह, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। चार जुग दे राह दए मिटा, इक्को मार्ग दए वखाईआ। इक्को इष्ट लए प्रगटा, सब दी दृष्ट लए खुल्लाईआ। इक्को नाम दए दृढ़ा, दृढ़ आपणा नाम जपाईआ। इक्को मन्दिर लए सुहा, घर मन्दिर सोभा पाईआ। इक्को जोत दए जगा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। इक्को नाद दए वजा, अनहद राग सुणाईआ। एका साज दए खड़का, पंच पंच करे शनवाईआ। एका मेला लए मिला, मिल्या मेल धुरदरगाहीआ। गुर चेला एका घर दए बहा, गुर गोबिन्द दए सालाहीआ। पारब्रह्म खेले खेल बेपरवाह, भेव कोए ना पाईआ। आपणी वारी गया आ, जन भगतां वारता रिहा लिखाईआ। साची इबारत लई बणा, ना कोई लिखे कलम शाहीआ। सफ़ारश करे ना कोई आ, सच अदालत हरि जू रिहा कमाईआ। आरफ़ सके ना कोई पढ़ा, आलम चले ना कोई वड्याईआ। जन भगतां आपणा तुआरफ़ रिहा करा, तोबा तोबा करन पीर पैग़म्बर देण दुहाईआ। तेरी सोभा सुण के गए आ, खुदावंद करीम सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा गणाईआ। लेखा देवे गिण गिण, अणगिणत खेल कराइंदा। गुर अवतार दे दे भेजे चिन्न चिन्न, पंज तत्त काया मेल मिलाइंदा। वेस वटाया भिन्न भिन्न, भिन्नड़ी रैण वेख वखाइंदा। हरि का नाम जणाया जिन जिन, तिन्ना आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा लेखा आप मुकाइंदा। अन्तिम लेखा शब्दी धार, तेरे संग मुकाईआ। तूं साहिब सुत दुलार, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। चार जुग दा जगत प्यार, कलयुग अन्तिम लहिणा दए मुकाईआ। जुगत भुगत अपर अपार, भगवान वेखे थाउँ थाईंआ। साचे सन्त लए उठाल, उठ उठ आपणा मेल मिलाईआ। भगतां बणे आप दलाल, दिलबर हो सेव कमाईआ। गुरसिखां

चले नाल नाल, गुर गुर सिख्या इक्क पढ़ाईआ। गुरसिख नेड़ ना आए काल, महांकाल नैण शरमाईआ। सतिगुर सच्चा करे भाल, आदि अन्त इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दए वड्याईआ। शब्द सुत तेरा वेला, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। घर मेला गुरू गुर चेला, गुर चेला खेल खलाइंदा। प्रभ मिल्या सज्जण सुहेला, हरि सज्जण दया कमाइंदा। अचरज खेल प्रभू कल खेला, जन आपणे रंग रंगाइंदा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग दा अन्तिम मेला, कलयुग हरि हरि आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम वेला सतारां हाढ़, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। भगतां फिरे पिच्छे अगाड़, अग्गे पिच्छे फेरी पाईआ। लख चुरासी चबाए आपणी दाढ़, ना सके कोई बचाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़, अग्नी तत्त रिहा जलाईआ। विष्नूं चल के आए दुआर, ब्रह्मा बैठा माण गंवाईआ। शंकर सुट्ट आपणा हथियार, बाशक तशका गल विच्चों लाहे हार, माला कंठ ना कोई सुहाईआ। तेई अवतार करन पुकार, तेरा भेव ना जाणे कोई राईआ। ईसा मूसा कर के गए विचार, तेरा कंडा नज़र कोई ना आईआ। मुहम्मद कलमा गया हार, हरजाना कोई भरन ना जाईआ। चार यारी होई बेज़ार, बेवा रूप अल्ला राणी रही कुरलाईआ। ख़ावंद मिल्या ना हरि निरँकार, बेख़ौफ़ ना होए राईआ। नानक सच दस्स के गया धार, नाम सति सति पढ़ाईआ। वरन बरन ना कोई संसार, आत्म परमात्म इक्क वखाईआ। गोबिन्द करे खेल न्यार, अमृत आत्म जाम प्याईआ। ग़रीब निमाणयां दे दे माण, जगत निमाणयां गले लगाईआ। पुरख अकाल लैणा पछाण, उच्ची कूक कूक गया सुणाईआ। सति सरूपी दए ज्ञान, भगतां करे जगत पढ़ाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर मारे बाण, अणियाला तीर चलाईआ। हरि का अक्खर कोई ना सके पछाण, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। जिस जन उपर होए आप मेहरबान, तिस आपणा पर्दा दए खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम निहकलंक बली बलवान, लोकमात फेरा पाईआ। पिछला मेटे सर्ब विधान, पिछली मुके सर्ब पढ़ाईआ। चार जुग दी लिख्त ना करे कोई कल्याण, कलमा होए ना कोई सहाईआ। जिस संदेशा दिता धुर फ़रमाण, जुग जुग करे पढ़ाईआ। सो अन्त लेखा मुकाए आण, लेखा आपणी झोली पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर होए हैरान, हरि जू की खेल वरताईआ। कलयुग अन्तिम मन्दिर मस्जिद मड्ड चुक्के काण, भगत दुआर दए वड्याईआ। जिस दुआरे हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई डिगण आण, अग्गे शरअ ना कोई वखाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, इक्को नज़री आईआ। नानक निरगुण करे परवान, परवानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। सजदा करे सीस आण, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। कान्हा कृष्ना गाए गान, वाह वाह दाता बेपरवाहीआ। रामा कहे राम महान, राम रमया

हर घट थाईंआ। पुरख अबिनाशी हर घट आत्म देवे ध्यान, ध्यान विच कदे ना आईआ । सच भण्डारा सच पकवान, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बिन रसना बिन दन्दां बह बह खाण, खा खा खुशी मनाईआ । इक्को वार करन ध्यान, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। साडा अरदासा चुकया विच जहान, साडी ओट ना कोई तकाईआ। तेरे हथ्थ तेरी अमानत दिती आण, आपणी वस्त ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी खुशी मना, एका हुक्म जणाइंदा। सारे मन्नों इक्क खुदा, एका नज़री आइंदा। पुरख अकाल लैणा ध्या, दूजा इष्ट ना कोई वखाइंदा। एका सोहला लैणा गा, गावणहारा आप जणाइंदा। चरन ध्यान लैणा लगा, जगत चरन ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। गुर अवतार चरनी गए लग्ग, घर साचे वज्जी वधाईआ। भगत भण्डारा खा के गए रज्ज, तृष्ना होर ना रही राईआ। पिछला खैहड़ा दिता छड्ड, लोकमात ना ध्यान लगाईआ। सरगुण निरगुण नालों हो के अड्ड, निरगुण निरगुण तेरे विच समाईआ। तेरे हुक्मे अंदर गए तूं हुक्मे अंदर लए सद्द, तेरा हुक्म साडी रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, दर तेरे आस रखाईआ। दर तेरे रखी आस प्रभ, इक्को ओट जणाया। धन्न भाग तूं ल्या सद्द, दर
४३१ साचे मेल मिलाया। जुग चौकड़ी विछड़े लए लभ्भ, दर भगतां फेरा पाया। शरअ शरीअत दिती वड्ढ, दीन मज़्ब मोह चुकाया। ४३१
सब दी बणाई इक्को यद, विष्नूं आपणी रंग रंगाया । पार किनारा होई हद्द, हद्द हदूद ना कोई वंडाया। तेरा गाईए साचा
१२ छन्द, बत्ती दन्द ना कोए वखाया। पिछला मिटया साडा पन्ध, अग्गे तेरी ओट तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप १२
आपणी किरपा कर, आपणे दर लैणा मिलाया। आपणे दर मिलाउणा जोत, जोती जाता जोत मिलाईआ । गुर अवतार इक्को गोत, पीर पैग़म्बर इक्क रुशनाईआ। पुरख अकाल सतिगुर सच्चा इक्को बहुत, दूजा गुरू रहिण कोई ना पाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी कढ्ढे खोट, खोटी दिशा दए घढाईआ। आलणयों डिग्गे वेखे बोट, गुरमुख साचे लए उठाईआ। आपे खोलणहारा सोत, पर्दा द्वैती दए उठाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे खुशी मनाईआ। साचे घर हरि का राग, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। गुर अवतारां कीता त्याग, पिछला ध्यान ना कोई लगाइंदा। पुरख अबिनाशी सज्जण साक, सगला संग रखाइंदा। प्रभ मिल्या पाकी पाक, आप आपणे दर बहाइंदा। जगत स्नेहा पात्र पात, लिख लिख लेख आप जणाइंदा। अन्तिम सब दा करे घात, घाउ डूँघा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा।

साचा राह हरि चलावना, हरि पौड़ा इक्क लगाईआ। सचखण्ड दवार इक्क सुहावना, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। गुर अवतार खुशी मनावणा, नेत्र पेख पेख बिगसाईआ। पुरख अकाल माण दवावणा, दो जहान वज्जे वधाईआ। मिल मिल ढोला इक्को गावना, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै जै जैकार कराईआ। मिल मिल पंगत मिल मिल संगत रंग चढ़ाउणा, पंगत संगत एका रंग रंगाईआ। चहुत्तरां दान लेखे लाउणा, साचा लेखा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सारे उठे आए दर, दर तेरा इक्क सुहाईआ। अग्गे प्रभ जू देवे वर, वर दाता बेपरवाहया। कवण नाम लईए पढ़, कवण कलमा नाल मिलाया। कवण मन्दिर बहीए चढ़, कवण दुआरे आसण लाया। कवण घर दर्शन करीए खड़, कवण नैण उठाया। कवण रूप चुकाए डर, भय भयानक दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाया। सम्मत वीह सौ उन्नी बिक्रमी सतारां हाढ़, हरि पिछला लेख चुकाईआ। करे खेल आप करतार, करनहार वड वड्याईआ। कलयुग लेखा दए निवार, नव नौ पन्ध मुकाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, वीह सौ वीह बिक्रमी माण रखाईआ। पंदरां कत्तक करे सच विहार, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां अगली करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची तारीख़ आप जणाईआ। सच तारीख़ दे आप, आपणा भेव खुल्हाया। वीह सौ वीह बिक्रमी करे वड प्रताप, वड प्रतापी फेरा पाया। सृष्ट सबाई दस्से इक्को जाप, शाह पातशाह आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। साचा पाठ दस्से हरि, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। पहली चेत्र वीह सौ वीह बिक्रमी देवे वर, वर दाता वड वड्याईआ । दिल्ली दुआरे जाए खड़, नौ खण्ड सत्त दीप दए समझाईआ। अग्गे सके ना कोई अड़, सब दा डेरा देवे ढाहीआ। सरन सरनाई जाणा पड़, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, भेव किसे ना आइंदा। पहली चेत्र हो प्रधाना, नाम प्रधानगी इक्क जणाइंदा। साचा लिख्त लेख लिखाणा, पिछला लेखा कढ्ढ वखाइंदा। राष्ट्रपत ना रहे अञ्याणा, बाली बुध आप समझाइंदा। वेखो हरि दा वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। ना कोई सुघड़ ना सयाणा, ज्ञान ध्यान ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म सुणावण जाए, हरि जू आपणा फेरा पाईआ। अगला लेखा कढ्ढ वखाए, भुल्ल रहे ना राईआ। तख्त निवासी साचे तख्त चरन छुहाए, चरन कँवल कँवल चरन मिले सरनाईआ। अबिनाशी करता फेरी पाए, फेरी फेरी दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, साचा डंका इक्क वजाए। साचा डंका वज्जे मात, हरि सतिगुर मात वजाइंदा। शाह सुल्ताना रलाए नाल ख़ाक, ख़ाकी रूप सर्ब वखाइंदा। गुरसिख सज्जण लए राख, राखा बण बण सेव कमाइंदा। नानक गोबिन्द लिख्या भविख्त वाक्, पुरख अबिनाशी पूर कराइंदा। वेद व्यासा बणया साक, सज्जण आपणे रंग रंगाइंदा। ईसा मेला पाकी पाक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप जणाइंदा। साचा राह भगत भगवन्त, सतिजुग आप सुहाईआ। सृष्ट सबाई इक्को मंत, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाईआ। लख चुरासी इक्को कन्त, एका वार लए प्रनाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, गुरमुख रंग उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुर अवतार भगत भगवन्त बिठाए इक्को पंगत, एको भोजन दए खवाईआ। ऐका भोजन हरि का नाउँ, हरि सतिगुर आप खुवाइंदा। एका भोजन हर घट थाउँ, घर घर आप रिज़क पुचाइंदा। एका भोजण पुत्तरां माउँ, पिता पूत आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द भण्डार आप वखाइंदा। शब्द भण्डार एका भोजण श्री भगवान, आप रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पैंडा कट के आए कोटन जोजन, जुज़ आपणे नाल रलाईआ। अग्गे रखे इक्क सोचण, सोच सोचिआं सोच विच ना आईआ। दरस दखाए आपणे गोचर, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करना, करनी आप कराइंदा। चार वरनां आपे वरना, दर घर आपणे दर बहाइंदा। भगत भगवान चुकाए डरना, डर भय ना कोई रखाइंदा। गुरमुख साचे घाड़न घड़ना, घड़ घड़ आपणे रंग रंगाइंदा। सचखण्ड दवारे हरिजन वड़ना, सतिगुर पूरा पार कराइंदा। जै जैकार सब ने करना, दूजा नाअरा ना कोई लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी साचा काहन, ब्रह्म ब्रह्मादी वेखे मार ध्यान, बोध अगाधी देवे शब्द निशान, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा एकँकार, ओंकार करे पढ़ाईआ। जिस ने पसरया आप पसार, सो वेखे चाँईं चाँईंआ। वीह सौ उन्नी बिक्रमी रुत्त सुहाए सतारां हाढ़, हरि जू हरि हरि दया कमाईआ। गुरसिख उठाए साचे लाड़, लाड़ी मौत नेड़ ना आईआ। शब्दी घोड़े देवे चाड़्, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लेखे लाईआ। हरिसंगत अंदर बिरध बाल, जवानी आपणा रंग वखाइंदा। मात गर्भ करे प्रितपाल, अग्नी हवन कुण्ड बचाइंदा। वेले अन्त बणे दलाल, बण विचोला सेव कमाइंदा। गुरमुख गुर गुर वेखे लाल, लाल अनमुलड़े आप जगाइंदा। जुग जुग अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाइंदा। जन भगतां पिच्छे घालण घाल, आपणी सेवा

४३३
१२

आप कमाइंदा। आपे बण मुर्शद मुरीदां पुच्छे हाल, भेव अभेद भेव खुलाइंदा। नीआं हेठ दे दे आपणे बाल, भगत दुआर आप सुहाइंदा। गोबिन्द रत्त रंगे रंग लाल, मस्तक तीर इक्क छुहाइंदा। त्रैगुण माया दब्बी नाल, जगत रुपया बन्द कराइंदा। साचा सईआ खेल करे कमाल, नईआ आपणी आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। सतिजुग मार्ग हरि की संगत, हरि जू हरि हरि आप बणाईआ। दूजे दर ना जाणा मंगत, देवणहार इक्क अख्वाईआ। नाता तोड़ भुख नंगत, भुख्यां नग्गयां गले लगाईआ। मेल मिलाए साची संगत, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोई जणाईआ। जिवें नानक अंग लगाया अंगद, तिउँ हरि जू हरि अंग लगाईआ। मानश जन्म ना होए भंगत, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। किसे कोल ना जाणा पंडष्त, पंडत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। मुलां शेख़ ना देवे कोई साची संगत, साची शरअ ना कोई वखाईआ। ग्रन्थी पन्थी कोए ना जाणे सन्त, मन का मणका ना कोई भुआईआ। चारों कुण्ट सृष्ट सबाई होई नंगत, हरि का नाम दोशाला उपर कोई ना पाईआ। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी कढ्ढ के बैठी घूंघट, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। गुरू दुआर मन्दिर मस्जिद रोवन मुंमट, उच्ची कूक कूक कुरलाईआ। दूई द्वैती अन्तिम मुक्की रसूल उम्मत, कलमा सके ना कोई पढ़ाईआ। सतिजुग करे ना कोई सुन्नत, सुन्नी रूप ना कोई वटाईआ। सीस करे ना कोई मूंडत, सीस जगदीश इक्क सुहाईआ। नाता तोड़ कूड़ो कूड़त, सच सुच्च करे कुड़माईआ। दर आई संगत मस्तक ला के जाए धूढ़त, धूढ़ चरन ख़ाक रमाईआ। सब दी आसा करे पूरत, निरासा कोई रहिण ना पाईआ। ना जाणे नेड़े दूरत, दूर दुराडा हो हो नेड़े आईआ। मनमुख जीव रहे झूरत, हरि जू हरि नज़र ना आईआ। सर्ब कला आपे भरपूरत, भण्डारा सर्ब रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोलो जैकारे, जै जै जैकार करे ब्रह्मण्ड खण्ड थिर घर वज्जे सच वधाईआ। सचखण्ड सुणे आप निरँकारे, निरगुण बैठा आसण लाईआ। गुरसिख होए प्यारे, जिस मिल्या गोबिन्द सच्चा माहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी देंदा रिहा निरगुण सरूप लारे, ला ला लारे वक्त लँघाईआ। कलयुग अन्तिम गुरसिख सुत्तयां आण उठाले, बाहों फड़ फड़ गले लगाईआ। लेखा चुकाए शाह कंगाले, कंगाल शाह रूप वटाईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाले, धर्म दुआरा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रचना आप रचाईआ।

✳ १६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठूवाल हरि भगत दुआर विच दया होई ✳

४३५

१२

सो पुरख निरँजण तेरा सहारा, सत्त चार ओट तकाईआ। हरि पुरख निरँजण तेरा दुआरा, नव चार भुल्ल ना जाईआ। एकँकार तेरा प्यारा, घर साचे मिले सरनाईआ। आदि निरँजण तेरा उज्यारा, गृह नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान तेरा हुलारा, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। अबिनाशी करते तेरा किनारा, दूर दुराडा नेड़े नज़री आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा वणजारा, साचा वणज देणा कराईआ। साहिब सुल्तान तेरा सच मनारा, सचखण्ड वडी वड्याईआ। सति सतिवादी सति दरबारा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। आदि जुगादि अगम्म अथाह बेपरवाह तेरा भण्डारा, दीन दयाल मुक्क कदे ना जाईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा, सदा सद सद वरताईआ। खेले खेल अपर अपारा, निरगुण सरगुण राह चलाईआ। सरगुण मेला विच संसारा, संसार सागर वेखे थाउँ थाईंआ। तत्तव तत्त तत्त पसारा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचा इक्क सुहाईआ। सत्त चार एका मंग, एका ओट तकाईआ। सत्त चार एका मृदंग, एका नाद धुन शनवाईआ। सत्त चार एका संग, दो जहानां संग रखाईआ। सत्त चार इक्क अनन्द, घर मन्दिर आप दरसाईआ। सत्त चार इक्क छन्द, एकँकार करे पढ़ाईआ। सत्त चार मुक्के पन्ध, पाँधी होए ना कोए राहीआ। सत्त चार इक्क चन्द, एका नूर करे रुशनाईआ। सत्त चार एका वंड, पुरख अकाल आप वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दया कमाईआ। सत्त चार एका धार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सत्त चार एका कार, हरि पुरख निरँजण आप समझाइंदा। सत्त चार इक्क प्यार, एकँकार आप बणाइंदा। सत्त चार इक्क उज्यार, आदि निरँजण आप वखाइंदा। सत्त चार इक्क शृंगार, अबिनाशी करता आप कराइंदा। सत्त चार इक्क विहार, श्री भगवान आप वखाइंदा। सत्त चार इक्क सतार, पारब्रह्म प्रभ आप सुणाइंदा। सत्त चार इक्क दुआर, सचखण्ड दवारा आप वखाइंदा। सत्त चार इक्क जैकार, थिर घर वासी शब्द नाद अल्हाइंदा। सत्त चार जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। सत्त चार एका ओट, एका एक सहाईआ। सत्त चार एका जोत, निर्मल बिमल रूप वखाईआ। सत्त चार एका गोत, एका नाता जोड़ जुड़ाईआ। सत्त चार एका सोत, सुरती सुरत शब्द मिलाईआ। सत्त चार एका होए मोहत, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सत्त चार एका राह, सो पुरख निरँजण आप वखाइंदा। सत्त चार इक्क सलाह, हरि हरि आप कराइंदा। सत्त चार इक्क मलाह, एकँकारा बेड़ा आप चलाइंदा। सत्त चार एका थाँ, आदि निरँजण आप वखाइंदा। सत्त चार एका पिता एका मां, पुरख

अबिनाशी आप अख्वाइंदा। सत्त चार जपावे एका नाँ, श्री भगवान भेव खुल्हाइंदा। सत्त चार पकड़े बांह, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। सत्त चार देवे ठंडी छाँ, सिर समरथ हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार आप तराइंदा। सत्त चार तारे गुर, सतिगुर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सत्त चार जोड़ गया जुड़, जुड़या जोड़ विछड़ ना जाईआ। सत्त चार चढ़े घोड़, साचे घोड़े आप चढ़ाईआ। सत्त चार जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे सर्ब लोकाईआ। सत्त चार बुझाए औड़, तृष्ना तृखा रहे ना राईआ। सत्त चार वेखे दौड़ दौड़, दो जहानां फेरा पाईआ। सत्त चार लगाए एका पौड़, उच्च महल्ले सोभा पाईआ। सत्त चार वेखे कर के ग़ौर, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। सत्त चार एका नाद, अनादी आप वजाइंदा। सत्त चार इक्क स्वाद, बिन रसना आप चखाइंदा। सत्त चार मार आवाज़, शब्द अगम्मी आप उठाइंदा। सत्त चार देवे दाद, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सत्त चार रखे लाज, लाजावन्त आप हो आइंदा। सत्त चार रचया काज, करता पुरख करनी आप कमाइंदा। सत्त चार बणे समाज, वरन बरन ना कोए बणाइंदा। सत्त चार साचा हाज, बण हाजी फेरा पाइंदा। सत्त चार सति निमाज़, निउँ निउँ सजदा सीस इक्क झुकाइंदा। सत्त चार वखाए इक्क महिराब, महबूब आपणा पर्दा लाहइंदा। सत्त चार वखाए इक्क नवाब, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। सत्त चार देवे एका राज, भूपत भूप दया कमाइंदा। सत्त चार रखे याद, याददाशत आपणी आपणे विच लुकाइंदा। सत्त चार करे लाड, पूत सपूता गोद उठाइंदा। सत्त चार मेटे वाद विवाद, विख रूप ना कोए रखाइंदा। सत्त चार आपे लाध, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। सत्त चार साजण साज, घड़ भाण्डे वस्त टिकाइंदा। सत्त चार चलाए जहाज, बण खेवट खेटा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार वंड वंडाइंदा। सत्त चार साचा जोग, जोगी जुगत आप जणाइंदा। सत्त चार साचा भोग, भोगी भस्मड़ खेल कराइंदा। सत्त चार इक्क संजोग, बण संजोगी मेल मिलाइंदा। सत्त चार इक्क सलोक, साचा सोहला नाम सुणाइंदा। सत्त चार एका कोट, एका मन्दिर आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार वेख वखाइंदा। सत्त चार इक्क जाता, जोती जाता दया कमाईआ। सत्त चार इक्को दाता, दाता दानी वेख वखाईआ। सत्त चार इक्को गाथा, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। सत्त चार इक्को नाथा, अनाथां होए सहाईआ। सत्त चार इक्को नाता, हरि चरन मिली सरनाईआ। सत्त चार सुणाए हरि जू बातां, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सत्त चार पुच्छे वातां, दर दर घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सत्त चार इक्क

महल्ल, महिफ़ल आपणी आप जणाइंदा। सत्त चार मेटे सल, दूई द्वैती मोह चुकाइंदा। सत्त चार जाए रल, रल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। सत्त चार लाए फल, फुल्ल फलवाड़ी मात महकाइंदा। सत्त चार देवे नाम धन, धन ख़ज़ीना इक्क लुटाइंदा। सत्त चार चाढ़े चन्न, जगत अन्धेर आप मिटाइंदा। सत्त चार जगत विकारां देवे डंन, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। सत्त चार करे प्रकाश नेत्र अन्न्, आत्म ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार खेल खलाइंदा। सत्त चार उच्च अटारी, महल अटल दए वड्याईआ। सत्त चार जोत निरँकारी, निरगुण आपणे रंग रंगाईआ। सत्त चार मिले सरदारी, दो जहानां माण रखाईआ। सत्त चार खेल न्यारी, निराकार आप कराईआ। सत्त चार जाए बलिहारी, बलि बलि आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे खुशी मनाईआ। सत्त चार चढ़या चाअ, पाया पुरख अबिनाशा। सत्त चार मिल्या मलाह, प्रभ होया दासन दासा। सत्त चार मिली सलाह, गुरचरन इक्क भरवासा। सत्त चार पकड़ी बांह, दया करे शाहो शाबासा। सत्त चार जपया नाँ सोहँ पूरी करे आसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा खेल तमाशा। सत्त चार साजण साज, हरि सज्जण खेल कराइंदा। सत्त चार ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। सत्त चार सीस टिकाए ताज, तख्त ताज ख़ाक मिलाइंदा। सत्त चार देवे राज, दो जहानां माण जणाइंदा। सत्त चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। सत्त चार खोल्हे भेव, अभेद आप जणाईआ। सत्त चार वड देवी देव, देवत सुर सीस झुकाईआ। सत्त चार खेल अहंमेव, हँ ब्रह्म दए वड्याईआ। सत्त चार अलख अभेव, अगम्म अथाह बख्शे सरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार एका घर वखाईआ। सत्त चार एका घर, घर बारी आप वखाइंदा। सत्त चार एका दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। सत्त चार एका वर, पुरख अबिनाशी झोली पाइंदा। सत्त चार बन्न्हे लड़, एका पल्लू गंढु दिवाइंदा। सत्त चार अंदर वड़, वड़ वड़ आपणी खुशी मनाइंदा। सत्त चार गुरमुख फड़, गुर गुर गोद बहाइंदा। सत्त चार लाए जड़्ह, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। सत्त चार खेले खेल, खेलणहारा आप खिलाइंदा। सत्त चार साचा मेल, मेल मिलावा आप जणाइंदा। सत्त चार सज्जण सुहेल, घर साचे सोभा पाइंदा। सत्त चार चाढ़े तेल, थिर घर वासी सगन मनाइंदा। सत्त चार मेल मिलावा इक्क अकेल, इक्क अकेला वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार वंड वंडाइंदा। सत्त चार साची वंड, वंडणहार आप कराईआ। सत्त चार विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड करे रुशनाईआ। सत्त चार लेखा चुक्के

जेरज अंड, अण्डज जेरज ना फेरा पाईआ। सत्त चार पाए बंध, बन्धन आपणा नाउँ रखाईआ। सत्त चार नंगी ना होवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सत्त चार डूँग्घा सागर, गहर गम्भीर इक्क जणाइंदा। सत्त चार भाग लगाए काया गागर, गृह मन्दिर फेरा पाइंदा। सत्त चार देवे आदर, दरगाह साची माण दिवाइंदा। सत्त चार पूत सपूता वेखे तेग़ बहादर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। सत्त चार करे उजागर, गोबिन्द आपणे रंग रंगाइंदा। सत्त चार मेला करीम कादर, करता पुरख रंग रंगाइंदा। सत्त चार बणे सौदागर, साची वस्त आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त चार जोड़ जुड़ाइंदा। सत्त चार जुड़या जोड़ा, हरि जू हरि हरि आप जुड़ाईआ। सस्से उपर लाया होड़ा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। हँ ब्रह्म आपे बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी दए वखाईआ। लख चुरासी विच्चों वेखे मिट्ठा कौड़ा, गुरमुख मिट्ठा रस आपणे रंग रंगाईआ। एथे ओथे दो जहानां श्री भगवाना निरगुण सरगुण अंदर फिरे दौड़ा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। साध सन्त जीव जंत आदि अन्त जुगा जुगन्त रसना कहिण राह बड़ा भीड़ा, अग्गे लँघ कोए ना जाइंदा। जगत विकार मारे ज़ंजीरा, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। कोटन कोटि अद्धविचकार बैठे पीर पैग़म्बर पीरा, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चोटी चढ़ के बैठा आप अख़ीरा, आख़र आपणा हाल सुणाइंदा। आख़र हाल सत्त चार, चार चार चार जणाइंदा। करे खेल आप निरँकार, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए रूप वखाइंदा। प्रगट हो हो गोपी काहन, साची सखीआं अंग लगाइंदा। साचे मन्दिर वेखे मार ध्यान, अंदरे अंदर वेख वखाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा गाए गान, बोध अगाधा राग अल्हाइंदा। खेले खेल नौजवान, मर्द मर्दाना वेस वटाइंदा। सति सतिवादी सति झुलाए निशान, चार कुण्ट कुण्ट वखाइंदा। आदि जुगादी सूरबीर वड बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। सत्त चार कर परवान, परे आपणी आप बणाइंदा। चार जुग दा लेखा चुकाए विच जहान, प्रभ आपणा खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मन्नण आण, सिर सिर आपणा हुक्म मनाइंदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान, शस्त्र बस्त्र तन ना कोए सजाइंदा। हुक्मे अंदर रखे ज़िमी असमान, सूरज चन्न आपणे हुक्मे अंदर फिराइंदा। शाह सवारा नौ खण्ड पृथमी लख चुरासी एका देवे सति लगाम, वागां आपणे हथ्थ रखाइंदा। असव घोड़े चढ़े वड अमाम, अमाम आपणा फेरा पाइंदा। चार जुग दे गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ के करे गुलाम, गुरबत सब दी आप मिटाइंदा। उठ के सारे करन सलाम, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी सुणाए इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। पिछला लेखा चुक्कया तमाम, तमां होर ना

४३८ १२

कोए वधाइंदा। पुरख अकाला आदि जुगादी अमाम, आमद आपणी ना किसे जणाइंदा। खुशामद कराए ना विच जहान, खुशी आपणे रंग रंगाइंदा। सही सलामत नौजवान, जन्म मरन विच ना आइंदा। जुग जुग मन्ने ना किसे दी आण, आपणी आण सर्ब मनाइंदा। उठो वेखो मार ध्यान, धरनी धरत धवल उपर डेरा लाइंदा। सत्त चार वेखे आण, वेखणहारा नज़र ना आइंदा। सति सतिवादी साते अग्गे सिफ़रा ला वखाए निशान, निशाना सिफ़रे नाल मिटाइंदा। एका साता कर परवान, दूआ निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। तख्त निवासी हो मेहरवान, शाहो शाबाशी खेल खलाइंदा। शहिनशाह शाह पातशाह बण हुक्मरान, हुक्मी हुक्म आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचे मार्ग लाए मौला, रहिमत आपणी आप कमाईआ। सारे दर ते करो कौला, कीता कौल भुल्ल कोए ना जाईआ। ना कोई मुड़ के जाए उपर धौला, धरनी ध्यान ना कोए लगाईआ। पुरख अबिनाशी सब दा आपणी हथ्थीं चुक्क के ल्यांदा डोला, आपणे घर लए बहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पाए कोए ना रौला, आपणा राग कोए ना सुणाईआ। पुरख अबिनाशी करया भार हौला, हौली हौली आपणे चरनां हेठ दबाईआ। सारे मिल के गाओ इक्को बोला, बोली आपणी दए समझाईआ। चार जुग दा लहिणा अंदर वड़ वड़ फोला, फोली सर्ब लोकाईआ। दीन मज़ब सब दा निकलया पोला, पौहल छकाई कम्म किसे ना आईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां सिर दर्द हो गया धौला, धरनी वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे अन्तिम तुहाढ्ढा होला, होली आपणी दए खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेहकलक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ आपणे अग्गे सब नूं लाईआ। फड़ फड़ हरि जू लाए अग्गे, एका हुक्म सुणाया। एका डोरी बन्ने तगे, ना कोई तोड़ तुड़ाया। ईसा मूसा मुहम्मद तन ना दिसे झग्गे, अल्फ़ी चीर ना कोए वखाया। सिरों पैरों फिरदे नंगे, बस्त्र तन ना कोए छुहाया। साडा पर्दा कवण कज्जे, माही परवरदिगार नज़र ना आया। दस्स के आए काया काअबा इक्को हज्जे, हाजी बण के फेरा कोए ना पाया। पंज तत्त काया कलबूत सब दे भज्जे, जगत महिराब ना कोए दसाया। चार कुण्ट फिरदे नस्से, नस्स नस्स पन्ध ना किसे मुकाया। पुरख अबिनाशी बह बह हस्से, आपणा खेल रचाया। कलयुग माण दिता इक्को सस्से, सतिगुर आपणा माण मिलाया। सस्सा किला साचा मार्ग दस्से, फड़ फड़ अंदर लए बहाया। बाहर निकल कोई ना नस्से, दरवाज़ा खोल्ह ना कोई जणाया। रल मिल प्रभ साचे दा गावण जस्से, एका सोहला ढोला अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्त चार आपणा राह चलाया। नंगे खड़े इक्क दूजे नूं मारन सैनत, इशारे नाल

समझाईआ। थिगड़ी कुड़ती ना तेड़ तहिमत, नेत्र वेख देण दुहाईआ। रसना कहिण खुदावंद करीम कर रहिमत, तुध बिन होर ना कोए सहाईआ। असीं सारे तेरे हुक्म नाल होए सहिमत, आपणी छड्डी सर्ब चतुराईआ। चौदां तबक दिसे ज़हिमत, बिन तेरे चरन सुख नज़र किते ना आईआ। तेरा नूर ऐन साची ऐनक, अनक कल करे रुशनाईआ। तेरी ग़ैन मेटे ग़फ्लत, ग़ैन ग़लबा एका पाईआ। साडी किसे कम्म ना आई मिहनत, जगत मसल्ला विछा विछा करी पढ़ाईआ। तेरे हत्थ साडी क्यामत, क्यामगाह तेरे चरन सरनाईआ। दरोही खुदाए हउँ तेरी अमानत, तेरे अग्गे भेंट चढ़ाईआ। तूं साहिब सदा सलामत, सही आपणा रूप वखाईआ। हउँ बाली बुध बाल अंजाणत, तेरा भेव कोए ना पाईआ। असीं कर के आए ममानत, दूई द्वैत ना कोए लड़ाईआ। कलयुग जीवां अमानत करी ख़िआनत, भय भउ ना कोए रखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ आपे जाणत, जानणहार तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सरन इक्क तकाईआ। कर किरपा साडा ढक दे नंग, नाअरा इक्क सुणाया। बिन तेरे परदे होए मलँघ, शरअ मतैहरा हत्थ उठाया। तेरा कलमा करे जंग, तिक्खी धार धार चमकाया। अन्त अन्त प्रभ टुट्टी गंढु, गंढुणहार इक्क अख्वाया। चौदां तबक दिसण रंड, सुहाग कन्त ना कोए हंढाया। साडी औध गई लँघ, वेला वक्त नेड़े आया। अन्त मुकाउणा एथों पन्ध, थिर कोए रहिण ना पाया। नज़र आए ना चौधवीं चन्द, जग अमावस अन्धेरा छाया। साडी किसे कम्म ना आई पाई डण्ड, उच्ची कूक कूक अल्लाया। बिन तेरी रहिमत नंगी होई कंड, सिर हत्थ ना कोए टिकाया। जगत शरीअत पाई वंड, असलीअष्त राह ना कोए रखाया। रसना गा गा थक्की बत्ती दन्द, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाया। तूं साहिब सदा बख्शंद, बख्शणहार बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाया। साडा वेख नंग नंगेज़, निगह आपणी आप उठाईआ। पर्दा मिले ना बिन तेरी सेज, परवरदिगार सच्चे माहीआ। आपणा दुशाला इक्को भेज, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। परवरदिगार पाए पर्दा, एका हुक्म सुणाइंदा। चौदां तबक वेखे सड़दा, अग्नी अग्ग लगाइंदा। पीर पैग़म्बर वेखो डरदा, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। कलमा कलाम वेखो हरदा, आपणा बल ना कोए धराइंदा। साहिब सुल्तान वड मेहरवान आपणा खेल आपे करदा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। फड़ फड़ बाहों सब नूं बणाए बरदा, बरदी आपणे नाम तन पहनाइंदा। आपणी करनी आपे करदा, करनहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। तेरा पर्दा मिले श्रृंगार, अल्फ़ी अवर ना कोए जणाईआ। तेरा जल्वा मिले दीदार, दीद ईद चन्द ना कोए चढ़ाईआ। तेरी

शुनीद सुणीए गुफ़तार, शरअ भुल्ले सर्ब लोकाईआ। तेरी ईद मुबारक होवे एका वार, एका नूर नूर रुशनाईआ। कर ताईद मेरे मेहरवान, दर तेरे ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। मेरा पर्दा सब नूं ढके, ढकणहार इक्क अख्वाइंदा। पीर पैग़म्बर कोई ना पिच्छा तक्के, ताकत सब दी आप मुकाइंदा। ख़ाली दिसण मदीने मक्के, सब दे मकबरे आप बणाइंदा। आपणी हथ्थीं पिछला लेखा दिते कटे, अग्गे आपणी वंड वंडाइंदा। चौदां सदीआं बणे रहे हट्टे कटे, अन्तिम माण गवाइंदा। बिन छुरी करद प्रभ आपे फटे, जगत हलाली वेख वखाइंदा। सब दे दन्द करे खट्टे, बल आपणा आप धराइंदा। फड़ फड़ बाहों चरनां हेठ सट्टे, सीस धड़ ना कोए उठाइंदा। नेज़िआं नाल पुट्टे गट्टे, पाणी हुक्के ना कोए भराइंदा। सूटा मार कोए ना खिच्चे, अग्नी सीस ना कोए सुहाइंदा। कोला चिमटे नाल ना कोए चुक्के, सब दा चम्म आपे लाहइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहि गए कच्चे, बिन सतिगुर अग्नी तत्त ना कोए तपाइंदा। पंज तत्त काया चोले सब दे मच्चे, जगत मुवाता आपे लाइंदा। लोकमात खा के आए भत्ते, सरगी वेला आप चखाइंदा। किसे नूं कह के आए तेरी अल्ला राखी रखे, रखणहारा दिस ना आइंदा। अक्खरां नाल कलमे लिख लिख फसे, बिन अक्खर कलमा लेखे कोए ना पाइंदा। किलीआं नाल टंगे छिके, शीआ सुन्नी मुस्लिम रूप वटाइंदा। कोई ना जाणे प्रभ के पाए हिस्से, लोकमात राह चलाइंदा। अन्तिम अन्त सब दी वरास्त आपणी हथ्थीं खिच्चे, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बाले निक्के निक्के, निक्की निक्की नंन्ही नंन्ही गुफ़तार सुणाइंदा। लोकमात जीव जंत कहिण गुरू गरंथ लिखे, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। साहिब सुल्तान जिध्धर वेखो उधर दिसे, घट घट आपणा आसण लाइंदा। जन भगतां फल खुवाए मिट्ठे, मिट्ठा आपणा नाउँ वड्याइंदा। करे खेल इक्क अनडिठे, अनडिठड़ी धार चलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भेजे हथ्थीं दे दे छिट्टे, बण हल्कारे सेवा लाइंदा। कितिआं विच वंडे हिस्से, हिस्सा सब दी वंड रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर आदि पुरख एका हरि, हरि जू आपणा भेव ना किसे जणाइंदा।

४४१

१२

✳ २३ हाढ़ २०१६ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह कोटली थान सिँघ ज़िला जलन्धर ✳

सति सतिवादी साची धारा, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। आदि जुगादी खेल अपारा, हरि पुरख निरँजण आप कराइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, रूप अनूप वेस वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए

जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव खड़े दुआरा, चरन कँवल ध्यान लगाइंदा। नेत्र नैण तक्कण गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर सीस झुकाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपारा, बेअन्त हरि हरि आपणा खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी निराकारा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा भेव आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। आदि जुगादी खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, हरि पुरख निरँजण आसण लाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, एकँकारा सोभा पाइंदा। निरगुण प्रकाश दीपक जोत आपे बला, आदि निरँजण डगमगाइंदा। सच संदेश नर नरेश पुरख अबिनाशी एका घल्ला, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। एथे ओथे दो जहान अछल अछला, श्री भगवान आपणे रंग आप समाइंदा। पारब्रह्म निरगुण निरगुण फड़ाए पल्ला, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप कराइंदा। साची खेल श्री भगवान, एकँकारा आप कराईआ। तख्त निवासी वड मेहरवान, शाहो भूप वड वड्याईआ। सति सतिवादी हुक्मरान, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। धुरदरगाही शाह सुल्तान, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे पैग़ाम, पारब्रह्म प्रभ करे पढ़ाईआ। एका मन्त्र सतिनाम, नाम सति सति जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह श्री भगवान, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड वसे सच मकान, सच सिँघासण आसण लाइंदा । भूपत भूप राज राजान, हुक्मी हुक्म हुक्म मनाइंदा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, आकाश प्रकाश आपणा वेस वटाइंदा। सति संदेशा देवे दो जहान, दोए दोए धार वेख वखाइंदा। जोती शब्दी हो प्रधान, एका डंका नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। लेखा जाण नार कन्त, नर नरायण खुशी मनाईआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। एका दृढ़ाए साचा मंत, मन्त्र नाम इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पारब्रह्म, भेव कोए ना पाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल कराइंदा। सदा सुहेला जाणे आपणा कम्म, इक्क अकेला वेख वखाइंदा। निरगुण निरगुण बेड़ा बन्नॣ, आपणे कंध उठाइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्न, मंडल मण्डप सोभा पाइंदा। भेव चुकाए पंज तत्त तन, त्रैगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। एका राग सुणाए कन्न, अनाद अनादी धुन वजाइंदा। करे वसेरा बिन छप्पर छन्न, साचा मन्दिर आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि,

साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, वड दाता बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त दे दीदार, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। साचे सन्तां खोलू किवाड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुखां चले नाल नाल, हरि जू विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिख सज्जण आपे भाल, प्रभ लोकमात दए वड्याईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे खेल कमाल, खेलणहारा दिस ना आईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, लोकमात जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे वसे सच सिँघासण आसण लाईआ। सच सिँघासण उच्च महल्ला, हरि जू हरि हरि आप सुहाइंदा। एकँकारा इक्क इकल्ला, अलख अगोचर डेरा लाइंदा। सच संदेश एका घल्ला, जुगा जुगन्तर राग अलाइंदा। गुर अवतार फड़ाए पल्ला, एका पल्लू गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। साची खेल हरि करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सचखण्ड खोलू आप किवाड़ा, थिर घर शब्दी रंग रंगाईआ । सुन्न अगम्मी पावे सारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, नाम हुलारा इक्क वखाईआ। लख चुरासी कर त्यारा, त्रैगुण अतीता वेखे थाउँ थाईंआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भर भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। निरगुण दीआ कमलापाती कर उज्यारा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। अनहद नादी नाद धुन्कारा, बोध अगाधा राग सुणाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी बाण आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी पावे सारा, कोटन कोटि काल बिताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार आपणी वारा, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। लेखा लिख लिख गए गुर अवतारा, जीव जंत जंत पढ़ाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण आपणा बल रखाईआ। ज़िमी असमाना मेटे पाड़ा, दो जहानां चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। आपणा वेस आपे रख, नर हरि नरायण आपणा खेल कराइंदा। शाह पातशाह शहिनशाह हो प्रतख, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। नव नौ लख चुरासी बैठी सत्थर घत्त, सत्थर यार ना कोए हंढाइंदा। जीव जंत साध सन्त काया उब्बले बहत्तर नाड़ी रत्त, सांतक सति ना कोए कराइंदा। गृह गृह मन्दिर घर घर होई मन मति, ब्रह्म मत ना कोए समझाइंदा। कूड़ कुड़यारा बज्झा नात, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाइंदा। आत्म बीज ना बीजे कोए वत, सति किरसाणा ना कोए अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस श्री भगवान, निरगुण सरगुण आप वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे चरन ध्यान, चरन कँवल

सच्ची सरनाईआ। गुर अवतारां देवे माण, श्री भगवान सिर हथ्थ टिकाईआ। सच संदेशा धुर फ़रमाण, पुरख अबिनाशी आप सुणाईआ। उठो वेखो नेत्र खोल्हो करो ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात होए वैरान, पुरख अबिनाशी लेखा रिहा चुकाईआ। लेखा जाणे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान गीता ज्ञान भेव अभेद दए चुकाईआ। तेई अवतार ना रहिण नादान, अठारां भगत वेखे प्रभ आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचा इक्क समझाईआ। साचा घर सच दरवाज़ा, धुर दरबारी आप जणाइंदा। आदि जुगादी ग़रीब निवाज़ा, गुर गुर रूप वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लख चुरासी जिस साजण साजा, त्रैगुण माया पंज तत्त बन्धन आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। ईश जीव रचया काजा, ब्रह्म पारब्रह्म खेल कराइंदा। पवण अगम्मी वजाए वाजा, सुर ताल ना कोए रखाइंदा। दो जहान फिरे भाजा, आउँदा जांदा नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा हरि जू चुक्क, गुर अवतार दए समझाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो रिहा लुक, सचखण्ड आपणा आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर, सति सरूप हो हो प्या बुक्क, एका भबक नाम रखाईआ। निरगुण निराकार निरवैर अजूनी रहित करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखणहारा किला कोट, घर घर आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां उपर होए मोहत, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा रंग रंगाईआ। साचा रंग रंगे निरँकार, रंगणहारा इक्क अख्वाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। निहकलंक लै अवतार, रूप अनूप आप वटाइंदा। पूरब लेखा लहिणा लए विचार, गुर अवतार मात सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर खोल्ह किवाड़, दस्तगीर वंड वंडाइंदा। मुकामे हक़ हो उज्यार, नूरो नूर डगमगाइंदा। लाशरीक परवरदिगार, पर्दानशी आपणा पर्दा आप उठाइंदा। सचखण्ड निवासी करे साची कार, सति सतिवादी आपणा राह चलाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया दए नवार, जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सतिजुग साचा करे उज्यार, सति सतिवादी चन्द चढ़ाइंदा। लोकमात हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक्क कमाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दए ज्ञान, वरन बरन आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म वखाए निशान, सच निशाना इक्क जणाइंदा। नाद धुन सुणाए राग कान, अनहद आपणा रागी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे हरि गोबिन्द, वेखणहारा वेस वटाईआ। जन भगतां लाहे सगली चिन्द, चिंता चिखा ना कोए जणाईआ। गुरमुख वेखे आपणी बिन्द, पूरब लहिणा झोली पाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ।

पुरख अबिनाशी सागर सिन्ध, कोटन कोटि गुर अवतार बैठा आपणे विच छुपाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी सदा बख्शिंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह प्रभ खेल करना, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। लहिणा देणा चुक्के वरनां बरनां, ज़ात पात ना वंड वंडाइंदा। नेत्र खोल्ले हरना फरना, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। सन्त कन्त मिटावे मरना डरना, जन्म मरन विच कदे ना आइंदा। गुरमुख इक्क वखाए साची सरना, चरन सरन कँवल ध्यान लगाइंदा। गुरमुख गुर चरन दुआरे साचे वड़ना, घर मन्दिर इक्क वखाइंदा। भय भयानक कदे ना डरना, भउ अवर ना कोए जणाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी अक्खर एका पढ़ना, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। हँ ब्रह्म प्रभ तरनी तरना, तारनहार आप हो जाइंदा। महल अटल उच्च मनार गुरमुख सज्जण साचे चढ़ना, सति सतिवादी सति आप चढ़ाइंदा। ऊँची कूक रसना जिह्वा निष्अक्खर अक्खर पढ़ना, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग आप निभाइंदा। आप निभावे साचा संग, सतिगुर हथ्थ वडी वड्याईआ। अठ्ठे पहर वजाए मृदंग, धुन नाद शनवाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, उतर कदे ना जाईआ। दिवस रैण इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। करे प्रकाश नूरी चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। त्रैगुण माया तोड़े फंद, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार हरि रघुराईआ। दूई द्वैत हउमे हंगता झूठी ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। गीत सुहागी इक्क सुणाए छन्द, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। सतिजुग सच दुआरे मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरी नंगी ना होवे कंड, समरथ तेरी ओट तकाईआ। एका वस्त साची वंड, अतोट अतुट रखाईआ। तेरे मन्दिर तेरे गृह तेरा गाए तेरा छन्द, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। कलयुग किरपा कर खण्ड खण्ड, खण्डा आपणा नाम चमकाईआ। लख चुरासी जीव जंत नार दुहागण होई रंड, हरि कन्त ना कोए मनाईआ। नौ खण्ड पृथमी दिसे भेख पखण्ड, तेरा भेव कोए ना पाईआ। मनमुख जीव भागां मंद, भाग आपणा ना सके वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम वेखे निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। नानक गोबिन्द मेला सच दरबार, दर दुआरा आप सुहाइंदा। सम्बल नगर हो उज्यार, जोती जोत डगमगाइंदा । साढे तिन्न हथ्थ वेखे जगत मनार, रविदास चुमारा नाल मिलाइंदा। छत्ती जुग दा सच विहार, लोक परलोक आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैण होए शर्मशार, सीस जगदीश ना अग्गे कोए उठाइंदा। दोए जोड़ करन निमस्कार, पारब्रह्म प्रभ बोल इक्क जैकार, जै जैकार आपणा नाउँ

४४५
१२

करांइदा। सचखण्ड निवासी सच विहार, सच दुआरे आप जणाइंदा। थिर घर पावणहारा सार, दर दरवेश खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग जुग रैहबर चलाए राह, रहिमत आपणी आप कमाईआ। कलयुग लेखा दए मुका, लोकमात रहिण ना पाईआ। वरन बरन दए मिटा, चार अठारां वंड ना कोए वंडाईआ। चारे खाणी दए समझा, चारे बाणी कर पढ़ाईआ। चार यारी दए मिटा, चार कुण्ट वेख वखाईआ। चारे वेदां भेव दए जणा, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, बण पाँधी फेरा पाईआ। नाम मृदंग इक्क वजा, वड मर्दानगी आप वखाईआ। सम्बल नगर डेरा ला, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म शाह सुल्तान, हरि जू हरि हरि आप चलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निउँ निउँ करन सर्ब सलाम, सजदा सीस जगदीश झुकाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाइंदा। चौदां तबक होए हैरान, हरि जू की खेल कराइंदा। चौदां लोक मिटे निशान, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। चौदां विद्या जगत नादान, आत्म ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। भगत दुआरा इक्क महान, श्री भगवान आप खुल्हाइंदा। सचखण्ड दा सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। वेखणहारा दो जहान, लोकमात फेरा पाइंदा। आत्म परमात्म करे परवान,
४४६ परम पुरख प्रभ दया कमाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, गुरुदुआरा इक्क सुहाइंदा। एका ठाकर स्वामी होए प्रधान, इष्ट ४४६
गुरदेव एका नज़री आइंदा। एका पैग़म्बर देवे दान, दस्तगीर एका दस्त मिलाइंदा। एका चतुर्भुज वखाए निशान, आदि
१२ शक्ति एका नूर धराइंदा। एका अक्खर कर प्रधान, जगत वक्खर आप पढ़ाइंदा। राग रागनी होए हैरान, गा गा हरि १२
का अन्त कोए ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह शुकर मनाण, शहिनशाह आपणा खेल आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम सारे रख के गए ध्यान, निगाहबान कवण वेस वटाइंदा। वड पैग़म्बर होए मेहरवान, मिहबान बीदो आपणी खेल कराइंदा। शरअ शरीअत वेखे आण, लाशरीक फेरा पाइंदा। राम रमइया इक्क भगवान, कान्हा कंसा लहिणा देणा मूल मुकाइंदा। ईसा मूसा इक्क पैग़ाम, संग मुहम्मद आप पढ़ाइंदा। नानक निरगुण सतिनाम, सति सति जणाइंदा। गोबिन्द डंका विच जहान, फ़तेह आपणा रूप वखाइंदा। सति संदेशा नौजवान, नौ नौ धार आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अपार, कुलवन्ता आप कराइंदा। बेअन्ता परवरदिगार, बेपरवाह राह चलाइंदा। कल कल्की लै अवतार, अकल कला खेल कराइंदा। पिछला लेखा मेटे सर्ब संसार, अगला मार्ग आपे लाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे खुआर, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले वेखे वारो वार, अठसठ तीर्थ आपणा फेरा पाइंदा। नव नौ

रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर देवे ना कोए सहार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। कागद कलम ना कोए आधार, लिख लिख शाही गई हार, हरि का रूप नज़र किसे ना आइंदा। जिस जन उपर किरपा करे आप निरँकार, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। कलयुग अन्तिम हो ख़बरदार, बेख़बर आप जगाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, भगवन आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, लालण आपणी गोद सुहाइंदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, कलयुग अन्तिम हल्ल करे सवाल, जिस जन आपणे अंग लगाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। वेखणहारा हक़ हलाल, हक़ हक़ीक़त खोज खुजाइंदा। एथे ओथे दो जहानां चले नाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साची धारा आप समझाइंदा। साची धारा साचे मन्दिर, हरि सतिगुर आप जणाईआ। काया माटी डूँग्घी कंदर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। भाग लगाए खेड़े खण्डर, खण्डा एका नाम चमकाईआ। मन वासना मेटे बन्दर, बन्दीख़ाना एका पाईआ। मेल मिलावा अंदरे अंदर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे मार्ग लाईआ। अंदरे अंदर मिले प्रभ आप, आपणी दया आप कमाइंदा। जन्म जन्म दा मेटे संताप, रोग सोग ना कोए वखाइंदा। सुरती शब्दी मेला कमलापात, कँवल नैण नैण नैण मटकाइंदा। फड़ उतारे आपणे घाट, पिछला घाटा पूर कराइंदा। अग्गे नेड़े दिसे वाट, कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाइंदा। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, दीन मज़्हब ना वंड वंडाइंदा। आत्म सेजा वेखे खाट, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। ईश जीव बन्ने नात, जगदीश रंग रंगाइंदा। सदा सुहेला देवे साथ, सगला संग आप हो जाइंदा। लेखा जाणे अनाथां नाथ, नाथ अनाथां आपणे गले लगाइंदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। एका रंग रंगाए कायनात, चार कुण्ट दहि दिशा दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। लख चुरासी वेखे मार झात, आत्म ताकी आप खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म पढ़ाए साची गाथ, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाइंदा। साचा राह चले संसार, सति सतिवादी आप चलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर कर गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। फड़ फड़ बाहों आपणे अंदर लए वाड़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। चार जुग दे विछड़े कर निमस्कार, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाईआ। जगत बल मेटे हँकार, अछल अछल वेस वटाईआ। जल थल महीअल पावे सार, उच्चे टिल्ले पर्बत डूँग्घे सागर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप

४४७ १२

समझाईआ। साचा खेल पुरख समरथ, अन्तिम आपणे हथ्थ रखाइंदा। सत्त चार पाए नथ्थ, एका डोरी नाम रखाइंदा। आपणे खाते लए घत्त, डूँघा ख़ाता आप वखाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश हड्ड मास नाड़ी ना कोई रत्त, मन मति बुध ना कोए दृढ़ाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल, एका निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान आपणा रूप प्रगटाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर दासी दास, सेवक साची सेव समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वेख खेल तमाश, ख़ालक ख़लक नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम जाणा जाण, जानणहार आप जणाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, भगतन मेला चाँईं चाँईंआ। एका जाणे गोपी काहन, बंसरी नाम इक्क सुणाईआ। लख चुरासी प्रनाए सुरती सीता राम, रमइया आपणी करे आप कुड़माईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी काया मन्दिर खेड़ा वेखे ग्राम, घट घट आपणा डेरा लाईआ। मधसूदन दामोदर स्वामी प्यावणहारा एका जाम, मधु प्याला दीन दयाला आत्म रस हो बेवस, बेदर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। आदि जुगादि ना होए विनाश, जुग चौकड़ी वेखे खेल तमाश, तेई अवतारां देवे रास, भगत अठारां करे बन्द खुलास, ईसा मूसा मुहम्मद एका नूर करे प्रकाश, नानक गोबिन्द मेल मिलाए शाहो शाबाश, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम चौथे जुग सब दी पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिखां लहिणा देणा चुकाए दस दस मास, मात गर्भ ना फेर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणे रंग रंगाईआ। दीनन रंग चाढ़े मजीठ, लोकमात उतर कदे ना जाइंदा। प्रभ करे खेल अनडीठ, जगत नेत्र दिस ना आइंदा। करवट लै ना बदले पीठ, भेव अभेद ना कोए खुलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए साचा गीत, हड्ड मास नाड़ी चम्म पर्दा पाइंदा। जुगा जुगन्तर जाणे आपणी रीत, मन्दिर मस्जिद मड्ड शिवदुआले बणाइंदा। वसणहारा हस्त कीट, ऊँच नीच भेव चुकाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। कलयुग अन्तिम जन भगतां करे सच प्रीत, परम पुरख आपणा मेल मिलाइंदा। सोहँ ढोला गाए गीत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, चौदां लोक सर्ब कुरलाइंदा। चौदां तबक परखणहारा नीत, नीतीवान फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पीर पैग़म्बर गुर अवतार साचे मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग लग्गे जग, जगजीवण दाता आप लगाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कग्ग, कागों हँस आप उडाईआ। दरस दिखाए उपर शाह रग, नौ दुआरे मोह मिटाईआ। जन्म जन्म दी बुझावणहारा अग्ग, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जो जन सरनाई गया लग्ग, जन्म मरन विच ना आईआ। एका अमृत जाम प्याए मदि, मधुर नैण आपणा दरस दखाईआ। जगत तृष्ना पार

४४८
१२

हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। गृह मन्दिर वज्जे साचा नद, अनहद राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे विष्नूं यद, विश्व आपणा भेव चुकाईआ। विष्न विश्व वेख कल, अकल कल धारी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी अछल अछल, वल छल आपणा रूप प्रगटाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, लोकमात फेरा पाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार भगत भगवन्त सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात घल्ल, जगत संदेशा शब्द सुणाइंदा। लख चुरासी जीव जंत माया ममता हउमे हंगता गए रल, आत्म परमात्म ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। कूड़ी क्रिया चढ़या रंग, काया माटी झूठी खल्ल, ख़ालक ख़लक नज़र किसे ना आइंदा। सति सन्तोख धीरज जत चार कुण्ट गया हल, दहि दिशा वंड ना कोए वंडाइंदा। पुरख अबिनाशी वड प्रबल, परम पुरख पुरख अबिनाशा आपणा फेरा पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पर्बत देवे हल, रवि ससि सूरज चन्न मंडल मण्डप चरनां हेठ दबाइंदा। लेखा जाणे धरनी जल, धवल आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर हरि हरि आपणा राग अलाइंदा। हरि मन्दिर हरि टिकाणा, हरि जू बैठा आसण लाईआ। शब्द अगम्मी इक्क बबाणा, आदि जुगादि उडाईआ। ना कोई वेखे राजा राणा, गुरमुख वेखण चाँईं चाँईंआ। जिस जन मिल्या श्री भगवाना, भगवन आपणी गोद बहाईआ। लेखा चुक्के दो जहानां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। प्रभ सरन हरि चरन कँवल मिले ध्याना, आत्म नेत्र काया खेत्र इक्क वखाईआ। एका एक पद निरबाणा, परम पुरख दए वड्याईआ। एका सति सन्तोखी बन्ने गाना, हरिजन साचा सगन मनाईआ। एका घर सोहे मकाना, मकबरा होर ना कोए वखाईआ। साचा हुजरा कर परवाना, सच महिराबे रंग चढ़ाईआ। साचा काअबा खेल महाना, दोए दोए आबा वेख वखाईआ। शाह नवाबा हो प्रधाना, रहिमत आपणी आप कमाईआ। नाद बांग धुन अज़ां एका गाणा, जुग जुग आप सुणाईआ। पीर पैग़म्बर संग मुहम्मद चार यार होए हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। तेरी कुदरत तेरा खेल दो जहानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। साचा मार्ग जाए लग्ग, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। जगत तृष्ना बुझे अग्ग, हरि पुरख निरँजण आप बुझाइंदा। भगत भगवान दर साचे सद्द, एकँकार पर्दा लाहइंदा। आदि निरँजण चाढ़े चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। अबिनाशी करता सुणाए छन्द, साचा ढोला आप अलाइंदा। श्री भगवान मुकाए पन्ध, नेड़ा दूर ना कोए जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वंडण वंड, ब्रह्म लेखा लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल अन्तिम जुग, जग करता आप कराईआ। कलयुग औध गई पुग, चार

बत्ती ना कोए जणाईआ। बिन हरि नामे बूटा रिहा सुक्क, हरा सिंच ना कोए कराईआ। सच सुच बैठा लुक, जूठ झूठ होई रुशनाईआ। पंच विकारा रिहा लुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। ना कोई जाए साचा सुत, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। नार कन्त ना सोहे रुत्त, विभचार रही कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार निराकार एका प्या उठ, बल आपणा आप प्रगटाईआ। चार जुग दे गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां कोलों रिहा पुच्छ, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। लोकमात कवण नाम कवण धन कवण वस्त रखी कोल, पर्दा पर्दा रिहा उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ तोलण आया साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। जीव जंत साध सन्त रहे अनभोल, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया करया घोल, प्रभ चरन घोली घोल ना कोए घुमाईआ। हरि का भेव ना पाए कोई पंडत पांधा रौल, मुलां शेख़ मुसायक पीर फ़तवा सके ना कोए लाईआ। अन्तिम प्रगट होया उपर धौल, धरनी हौला भार कराईआ। दर घर साचे बैठा रहे अडोल, अडोल डुल कदे ना जाईआ। भगत दुआरा एका खोल्ह, सच महल्ले दए वड्याईआ। सोहँ शब्द साचा बोल, चार वरन करे पढ़ाईआ। देवे वस्त इक्क अनमोल, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। सदा सुहेला रखे आपणे कोल, नानक निरगुण गया समझाईआ। मौला रूप हो के जाए मौल, मवल आपणा भेव चुकाईआ। आदि पुरख आदि करया कौल, अन्त आपणा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म देवे दान, ईश जीव जगदीश मेले आण, ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ आपणे विच समाईआ।

४५० १२

✳ २४ हाढ़ २०१६ बिक्रमी लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड धनौरी ज़िला अम्बाला ✳

सचखण्ड दवारे साची कार, हरि करता आप कराइंदा। आदि जुगादी खेल अपार, अलख अगोचर आप कराइंदा। सच सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, तख़्त निवासी सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म अपर अपार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। निरगुण दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, घर ठाकर स्वामी जोती जोत डगमगाइंदा। थिर घर खोल्हणहार किवाड़, वेखे विगसे वेखणहार, आपणी कल आप धराइंदा। रूप अनूप शाहो भूप बेअन्त बेऐब परवरदिगार, जल्वा नूर नूर चमकाइंदा। मुकामे हक़ वसे सांझा यार, दरगाह साची सोभा पाइंदा। महल अटल उच्च मनार, इक्क इकल्ला आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी श्री भगवान, हरि करता आप कराइंदा। सचखण्ड दवारे हो प्रधान, सति सतिवादी वेस वटाइंदा। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। निरगुण

निरगुण कर परवान, परम पुरख प्रभ आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल आप धराइंदा। साची कल आपे रख, हरि करता खेल कराईआ। सचखण्ड दवारे हो प्रतख, सति सतिवादी सोभा पाईआ। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणे अन्तर आपणी वथ, वस्त अमोलक आप प्रगटाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, बण रैहबर सेव कमाईआ। निरगुण जोत नूर प्रकाश, आदि निरँजण वड वड्याईआ। थिर घर साचे पावे रास, गोपी काहन वेख वखाईआ। करे खेल खेल तमाश, वड ख़ालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। सचखण्ड दवारा साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, त्रैभवन धनी आपणा रंग रंगाइंदा। एकँकारा कर पसार, इक्क इकल्ला सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। श्री भगवान वसणहारा धाम न्यार, उच्च महल्ला आप उपाइंदा। श्री भगवान सच निशान, निरगुण निरगुण आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। साची भिच्छया देवणहार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी भेव कोए ना आइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, हक़ हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा घाड़न घड़, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवार घाड़न घड़या, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। हरि साचा अंदर वड़या, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। निष्अक्खर आपणा आपे पढ़या, अक्खर रूप ना कोए वटाइंदा। साचा पल्लू आपे फड़या, फड़ पल्लू सगन मनाइंदा। निरगुण नारी निरगुण कन्त कन्तूहल एका वरया, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। दाई दाया पुरख अबिनाशी आपे बणया, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। जननी जन सुत दुलारा एका जणया, शब्दी नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारे साचा सुत, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार चलाईआ। निरवैर सुहाई आपणी रुत्त, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। सच दुआरे हो उतप्त, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। पंज तत्त ना कोए बुत्त, त्रैगुण रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचा सुत शब्दी धार, धार धार विच प्रगटाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव कोए ना आइंदा। सुत दुलारा कर त्यार, हरि निरँकारा हुक्म जणाइंदा। तेरा मेरा इक्क प्यार, हरि जू एका बन्धन पाइंदा। थिर घर साचे खोल्ह किवाड़, गृह मन्दिर आप बहाइंदा। वेखे विगसे वेखणहार, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। आदि जुगादी साची कार, जुग करता

आप कराइंदा। सुत दुलारे रहिणा ख़बरदार, बेख़बर आप उठाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। करनी करे आप निरँकार, निरगुण तेरा वेस वटाइंदा। साची सिख्या एका वार, साख्यात आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल आदि निरँजण, आदि आदि आप कराईआ। बोध अगाधा दर्द दुःख भय भञ्जण, अनुभव आपणा रूप दरसाईआ। नेत्र पाए एका अंजन, अंजन आपणा नाउँ रखाईआ। चरन धूढ़ कराए मजन, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। दो जहानां बण बण सज्जण, सगला संग निभाईआ। आपे होए परदे कज्जण, समरथ आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादि रखे लज्जण, लाजावन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा समझाईआ। सुत दुलारे उठ उठ जाग, आदि पुरख आप जगाइंदा। तेरे गृह लग्गे भाग, तेरा मन्दिर आप वड्याइंदा। तेरा रूप कन्त सुहाग, नर नरायण ख़ुशी मनाइंदा। तेरे अन्तर इक्क आवाज़, बेअवाज़ आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति संदेशा नर नरेशा एकँकार आप जणाइंदा। सति संदेशा एकँकार, अकल कल धारी आप जणाईआ। साचे सुत कर विचार, सति सतिवादी आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी धार, धार धार नाल प्रगटाईआ। त्रैगुण माया तेरा भण्डार, वड भण्डारी झोली पाईआ। पंज तत्त तेरा शृंगार, तत्तव तत्त आप रखाईआ। लख चुरासी तेरा आधार, जीव जंत दए वड्याईआ। रवि ससि तेरा उज्यार, मंडल मण्डप सोभा पाईआ। गगन मंडल तेरा अखाड़, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जल थल महीअल पावे सार, बेपरवाह बेपरवाहीआ। नईया चले अगम्म अपार, अलख अगोचर आप चलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, विश्व एका कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत हरि समझाईआ। शब्द सुत उठ नेत्र खोल्ह, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। निरगुण निरवैर रहे कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। आदि जुगादि दो जहान तोले तेरा तोल, तोलणहारा इक्क अख्वाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता गृह मन्दिर साचे जाए मौल, मौला आपणा वेस वटाइंदा। तेरे संग करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप समझाइंदा। धुर फ़रमाण पुरख समरथ, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। सुत दुलारे तेरा रथ, रथ रथवाही वेख वखाईआ। बोध अगाध महिमा अकथ, नाद शब्द धुन शनवाईआ। करे खेल अलखणा अलख, अलख अलखणा वड वड्याईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, साचे धन्दे आपे लगाईआ। निरगुण निरवैर अजूनी रहित सचखण्ड दवारे आपे वस, थिर घर वेखे चाँईं चाँईंआ। आत्म परमात्म एका रस, पारब्रह्म ब्रह्म लए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ।

साची सिख्या लैणी जाण, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। खेले खेल दो जहान, त्रैभवन धनी आपणी कार कमाइंदा। चौदां लोक करन परवान, नाम परवाना इक्क फड़ाइंदा। चौदां तबक खेल महान, चार कुण्ट वंड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव इक्क ज्ञान, अन्तर आत्म आप पढ़ाइंदा। लेखा लिखणहार महान, लिख लिख लेख आप समझाइंदा। वंडण वंड वंडे नौजवान, वंडणहारा दिस ना आइंदा। चारे वेद कर प्रधान, चारे खाणी देवे माण, चारे बाणी रखे आण, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। चारे जुग वेखे आण, चार वरन देवे दान, चार यारी खेल महान, चार चार आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण खेल महान, आत्म परमात्म वड बलवान, लेखा जाणे जीव जहान, जुगती आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख देवणहारा साचा वर, साचे मार्ग आपे लाइंदा। साचे मार्ग छोटा बाला, हरि जू हरि हरि आप लगाईआ। वेखे खेल हरि गोपाला, गुर गुर आपणा वेस वटाईआ। दीना बंधप दीन दयाला, दयानिध आपणी दया कमाईआ। जुगा जुगन्तर वेस अवल्लड़ा लेखा जाणे शाह कंगाला, शहिनशाह आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे एका तत्तव तत्त दए समझाईआ। साचा तत्त ब्रह्म नाद, पारब्रह्म जणाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल खेल आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। गुर अवतार देवे दाद, पीर पैग़म्बर रंग रंगाइंदा। घट घट सदा रहे विस्माद, बिस्मिल आपणी खेल कराइंदा । मेटणहारा वाद विवाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप जणाइंदा। साचा सुत शब्द दुलारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं ठाकर स्वामी वड सिक्दारा, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हउँ सेवक भिखक बण भिखारा, दर एका मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल न्यारा, भेव कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा करे बण सेवादारा, सेवक साची सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गृह तेरे मंग मंगाईआ। साची मंग मंगे दात, सुत शब्दी झोली डाहइंदा। पारब्रह्म प्रभ तेरे चरन कँवल साचा नात, दूसर नाता ना कोए रखाइंदा। तेरी मेरी इक्क ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाइंदा। तूं पिता साचा मात, हउँ बालक नाउँ रखाइंदा। खेल खेलें आदि जुगादि, जुग जुग तेरा खेल मोहे भाइंदा। लोकमात वज्जे नाद, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाइंदा। कवण वेला देवें दाद, आप आपणा रंग वखाइंदा। थिर घर दुआरे विच्चों काढ, लोकमात वेख वखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्तिम दस्स आपणी हाद, तेरी हदूद पार ना कोई कराइंदा। जुग चौकड़ी रखां तेरी याद, तेरा नाउँ सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म हरि निरँकार, एका वार जणाईआ। सुत दुलारे कर प्यार, परम पुरख दए वड्याईआ।

नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा खेल अपार, ख़ालक ख़लक रंग रंगाईआ। तेरा माण तेरा ध्यान तेरा ज्ञान गुर अवतार, गुर गुर तेरी बूझ बुझाईआ। पीर पैग़म्बर सारे गाण, सच्चा ढोला सच्चे माहीआ। भगत भगवान मंगण दान, दर बैठे सीस झुकाईआ। साचे सन्त करन ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। गुरमुखां देवें इक्क ज्ञान, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। गुरसिख साचे कर परवान, साची वस्त इक्क वखाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। साचा खेल करता पुरख, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी ना कोई सोग ना कोई हरख, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी सेवा लाइंदा। आत्म परमात्म दे दे दरस, अज्ञान अन्धेरा अन्ध मिटाइंदा। त्रैगुण माया मेटे हरस, हवस होर ना कोए जणाइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा खोज खुजाइंदा। अमृत मेघ एका बरस, अग्नी तत्त तत्त बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल श्री भगवन्त, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी आदि अन्त, जुग जुग आपणी कार कराइंदा। सेवा लाए साध सन्त, गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाल मिलाइंदा। बोध अगाधी हरि का नाउँ मणीआं मंत, मन वासना मेट मिटाइंदा। मार्ग धन्दे लाए जीव जंत, जीवण जुगत जगत समझाइंदा। अन्तिम खेल करे आपणा आप भगवन्त, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव जाए चुक्क, सो पुरख निरँजण आप चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध जाए मुक्क, जुग चौकड़ी रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी सचखण्ड दवारे जो बैठा लुक, निरगुण नूर नूर करे रुशनाईआ। करे प्रकाश साची जोत, जोती जोत डगमगाईआ। साचा मन्दिर किला कोट, घर घर विच दए वड्याईआ। नाम निधान लगाए चोट, तन नगारा इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। आपणा लेखा हरि जू दस्स, सचखण्ड दवारे खुशी मनाइंदा। सुत दुलारे थिर घर जाणा वस, हरि मन्दिर आप बणाइंदा। दो जहानां फिरना नस्स नस्स, आवण जावण पतित पावण तेरा राह चलाइंदा। लख चुरासी मार्ग देणा दस्स, जीव जंत जुगत जणाइंदा। गुर अवतार मिलावा हस्स हस्स, आप आपणा बन्धन पाइंदा। नाम निधाना गाए जस, रसना जिह्वा हुक्म सुणाइंदा। आत्म परमात्म पूरी करे आस, ईश जीव जोड़ जुड़ाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म होए दास, बण दासी सेव कमाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा हरि नरायण, एका एक जणाईआ। जुग चौकड़ी वहे वहण, लोकमात वेख वखाईआ। गुर

अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान सारे रसना कहिण, लिख लिख हुक्मी हुक्म मनाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त ना कोए चुकाए लहण देण, हरि कन्त ना कोए मिलाईआ। पंज तत्त काया चोला पा पा गहिण, जगत बस्त्र गए हंढाईआ । अन्तिम लाड़ी मौत खाए डैण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवन्त मिले सज्जण साक सच्चा सैण, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेत रिहा समझाईआ। साचा भेव हरि निरँकार, एकँकारा आप जणाईआ। जगत जुगत कर त्यार, तेरी धार वखाईआ। सेवा ला तेई अवतार, भगत अठारां दए वड्याईआ। ईसा मूसा कर ख़बरदार, संग मुहम्मद कर कुड़माईआ। चार यारी वेखे वेखणहार, यारी यारां नाल निभाईआ। नानक निरगुण हो त्यार, दो जहानां फेरा पाईआ। नाम सति वणज वपार, चार वरन दए कराईआ। ऊँच नीच भेव निवार, ज़ात पात दए मिटाईआ। एका सति बोल जैकार, जै जैकार दए सुणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा वेखे विच संसार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। एका चन्द होए उज्यार, सतिगुर सच करे रुशनाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, वेखणहारा दिस ना आईआ । पीर पैग़म्बर कर कर गए पुकार, नव नव गए सुणाईआ। सोभा तेरी परवरदिगार, अञ्जील कुरान कर पढ़ाईआ। मसला लिख लिख कर त्यार, मुसल्ला जगत गए विछाईआ। तीस बतीसा इक्क विहार, बिवहारी हरि वखाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। नानक निरगुण पाया दरस दीदार, दीद ईद इक्क मनाईआ। तू ही तू कर पुकार, मैं ममता गया मिटाईआ। सोहँ रूप तेरा करतार, सो पुरख निरँजण तेरी वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म तेरा पसार, लख चुरासी जीव जंत जणाईआ। कलयुग खेल अन्त अपार, हरि करता वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण लोकमात लै अवतार, महांबली फेरा पाईआ। गोबिन्द एका बोल जैकार, फ़तेह डंका नाम वजाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, दो जहानां आपणे चरनां हेठ दबाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, महल अटल डेरा लाईआ। दिस ना आए विच संसार, जुग जुग नेत्र देण दुहाईआ। शब्दी सुत रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी लए मनाईआ। गोबिन्द तेरा रंग अपार, हरि गोबिन्द आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लेखा आपणे लेखे लाईआ। नव नौ चार पार किनारा, अन्तिम हरि जू हरि जणाइंदा। सुत शब्द तेरा सच प्यारा, परम पुरख आप निभाइंदा। निहकलंक नर नरायण लै अवतारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। दो जहानां दए हुलारा, चौदां तबक आप हिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैण नीर सर्ब वहाइंदा। करोड़ तेतीस ना कोए आधारा, सुरपति इन्द सर्ब कुरलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन निमस्कारा, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। साचे तख्त बहे आप करतारा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। कलयुग

अन्तिम वेखे वेखणहारा, नव नौ आपणा राह चलाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ फेरा पाए गुरुदुआरा, गुर गुर आपणा भेव जणाइंदा। अठसठ वेखे तट किनारा, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। शब्द अनाद अनादी धुन्कारा, घर मन्दिर आप अलाइंदा। पूत सपूता मेल मिलावा एका धारा, धार धार नाल रखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, कोटन कोटि ब्रह्मा दर बैठा सीस झुकाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार इक्को ढोला गायण साची वारा, वाह वा हरि हरि आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, अन्तिम मेला आप मिलाइंदा। अन्तिम मेला कलयुग अन्त, सो पुरख निरँजण आप मिलाईआ। हरि पुरख निरँजण खेले खेल खेल बेअन्त, बेपरवाह वडी वड्याईआ। एकँकार आपणी महिमा गणाए अगणत, वेद पुराण भेव ना राईआ। आदि निरँजण करे प्रकाश साचा धाम सुहंत, दर घर साचे होए रुशनाईआ। अबिनाशी करता एका नाम जणाए मणीआ मंत, वरन बरन करे पढ़ाईआ। श्री भगवान वेखे साचे सन्त, सन्त सतिगुर लए मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला नारी कन्त, आत्म सेजा खुशी मनाईआ। लख चुरासी गढ़ तुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। कोई ना जाणे भेव पांधा पंडत, मुलां शेख़ मुसायक रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी खेले खेल बेपरवाहीआ। शब्दी खेल अगम्म अथाह, निरगुण नर हरि आप कराइंदा। सति सतिवादी बण मलाह, सति पुरख निरँजण बेड़ा आप चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैग़म्बर दए पढ़ा, निष्अक्खर आप जणाइंदा। एका सोहला साचा ढोला लैणा गा, गावणहारा गीत अलाइंदा। हौली हौली चोला लैणा बदला, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। मौला रूप नज़री आए इक्क खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। परमात्मा आत्मा नालों ना होए जुदा, जुज वंड ना कोए वंडाइंदा। राम रमइया वेखणहारा थाउँ थाँ, रहिमत आपणी आप कमाइंदा। नानक निरगुण गया समझा, गोबिन्द पुरख अकाल ध्याइंदा। सचखण्ड बैठा डेरा ला, थिर घर शब्दी सुत वड्याइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खेल रिहा करा, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। शब्द अनादी बोध अगाधा नाद रिहा सुणा, धुन आत्मक राग अलाइंदा। पंचम सखीआं मिल मिल मंगल रिहा गा, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। डूँघे सागर वेखे नेत्र नैण उठा, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पकड़नहारा बांह, बण सेवक सेवा आप कमाइंदा। कलयुग अन्तिम फेरी पाए आ, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। निहकलंक नरायण नर, साचा डंका दए वजा, डौरू एका एक रखाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां तख्तों देवे लाह, तख्त ताज सीस ना कोए हंढाइंदा। वरन बरन ज़ात पात दए गवा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। एका रसना एका जिह्वा एका हरि का नाउँ दए समझा, हरि जू घट घट

अंदर आसण लाइंदा। एका मन्दिर एका मस्जिद एका गुरुदुआरा दए बणा, एका ठाकर स्वामी नज़री आइंदा। एका आत्म एका परमात्म एका पर्दा दए चुका, बज़र कपाटी कुण्डा लाहइंदा। एका साकी एका जाम दए प्या, अमृत आबे हयात मुख चुआइंदा। एका कागद एका कलम एका लिखणहारा छाह, लेखा लिख लिख इक्क सुणाइंदा। एका सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा हंढा, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। एका पीर पैग़म्बर औलीआ नाउँ रखे ख़ुदा, एका रहिमत रहिमान आप जणाइंदा। एका गुर अवतारां सिख्या रिहा पढ़ा, मन्त्र अन्तर आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। एका मस्जिद शिवदुआले मद्ध रिहा बणा, एका लेखा आपणे लेखे पाइंदा। एका रामा कृष्ना वेखणहारा थाउँ थाँ, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। एका नानक निरगुण सचखण्ड दवारे मेल मिलावा सहिज सुभा, एका गोबिन्द सुत दुलारा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सुत दुलारे देवे वर, हरि जू आपणी बूझ बुझाइंदा। सुत दुलारा कर प्रणाम, हरि चरन मंगे सरनाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा नाम, जुगा जुगन्तर मात वड्याईआ। हउँ सेवक बणां ग़ुलाम, बण बरदा सेव कमाईआ। गुर अवतार तेरा निशान, पीर पैग़म्बर नूर रुशनाईआ। सति संदेशा दो जहान, सति सतिवादी इक्क सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेले खेल खेल महान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल जणाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मा मनवन्तर मिले ना कोए निशान, जगत निशाना सर्ब मिटाईआ। करे खेल आप भगवान, भावी आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणी कल वरताईआ। निहकलंक बली बलवान, बल बावन दए मिटाईआ। लेखा चुक्के सीता राम, कान्हा कृष्ना आपणी गोद सुहाईआ। शब्द अगम्मी मारे बाण, तीर निराला इक्क चलाईआ। चौदां तबक होण वैरान, वैरी नज़र किसे ना आईआ। पीर पैग़म्बर करन सलाम, अलैकम देण सदा वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी सुत देवे वर, अन्त अन्त दए जणाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आदि जुगादी वेस वटाउणा, ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाइंदा। नौबत नाम इक्क वजाउणा, साचा डंका हथ्थ उठाइंदा। आत्म परमात्म आप उठाउणा, साची सिख्या सिख जणाइंदा। कूड़ कुड़यारा डेरा ढाउणा, माया ममता मोह मिटाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बाहर कढाउणा, आत्म अन्तर एका रंग रंगाइंदा। जगत बसन्तर आप बुझाउणा, सोहँ मन्त्र इक्क पढ़ाइंदा। सतिजुग साची बणत बणाउणा, चार वरन खोले हरन फरन नेत्र नैण एका रूप दरसाइंदा। करे खेल हरि करनी करन, करता पुरख फेरी पाइंदा। निरभउ भय चुकाए मरन डरन, जून अजून पन्ध मुकाइंदा। वेखणहारा घड़न भन्नण, घड़न भन्नण आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरमुख

गुर गुर साची चोटी चढ़न, भगत भगवान आप मिलाइंदा। दयाल दयाल प्रभ साची सरन, सति सतिवादी इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे भेव खुल्हाइंदा। सुत दुलारे खुल्हया भेत, हरि जू हरि हरि आप खुल्हाया। पारब्रह्म तेरा अन्तर हेत, दर तेरे होए सहाया। नाता तुट्टे पंज तत्त काया खेत, हड्ड मास नाड़ी बन्धन ना कोए रखाया। तेरा नूर चेतन चेत, चित वित ठगौरी कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेले अन्त तेरा दरस नेत्र पाया। नेत्र दरस अन्तिम वार, एका मंग मंगाईआ। नाता तुट्टे सर्ब संसार, संसा रोग रहे ना राईआ। घर मन्दिर होए उज्यार, गृह आपणी खुशी मनाईआ। कमलापाती देणा दरस दीदार, कलयुग रैण अन्धेरी राती देणी खपाईआ। बहु बहु भांती तेरा खेल वेख्या अपर अपार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा नाउँ ध्याईआ। कलयुग अन्तिम आवें आपणी धार, मात पित ना गोद सुहाईआ। जननी बणे ना कोए विच संसार, रसना सीर ना कोए चखाईआ। गोबिन्द कर के गया विहार, पुरख अबिनाशी पूर कराईआ। महांबली आवे अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। पिछला लेखा दए निवार, अगला मार्ग आपे लाईआ। सृष्ट सबाई मन्ने एका पुरख अकाल, अकल कला वज्जे वधाईआ। भगत भगवन्त वेखे साचे लाल, लालण आपणी गोद बहाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, महांबली होए सहाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, त्रैभवण धनी दए वड्याईआ। एथे ओथे सदा सुहेला चले नाल नाल, पुरख अबिनाशी विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख गुर गुर हरि का नाउँ साची घालण रहे घाल, कीती घाल थाएँ पाईआ। चार वरन इक्को नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना रिहा लुटाईआ। गोबिन्द गुर गुर करे सदा प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। सुणे सुणाए मुरीदां हाल, मुर्शद बणया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्त शब्द लए मिलाईआ। शब्द मिलावा निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच समाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहर निरगुण गुपत निरगुण ज़ाहर, निरगुण नूर नूर चमकाइंदा। निरगुण पिता निरगुण पूत निरगुण करे प्यार, निरगुण साचे धाम सुहाइंदा। निरगुण हट्ट निरगुण वणजार, निरगुण वेखे वेखणहार, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। निरगुण गुर निरगुण अवतार, निरगुण पीर पैग़म्बर दए सहार, परा पसन्ती मद्धम बैख़री आपणा राग अल्हाइंदा। निरगुण मन्दिर निरगुण गुरुदुआर, निरगुण ठाकर स्वामी आपणा आसण लाइंदा। निरगुण खोल्हणहार किवाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती शब्दी शब्दी जोती एका रंग वखाइंदा। जोती शब्दी साची कल, हरि करता आप कराईआ। जुगा जुगंतर अछल अछल, वल छल धारी भेव ना राईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। आपणे दीपक आपे बल,

४५८
१२

जोती जोत करे रुशनाईआ। सच संदेशा नर नरेशा एका घल्ल, शब्दी शब्द करे पढ़ाईआ। अन्तिम जोती जाए रल, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जोती शब्दी एका मन्त्र, मन्त्र नाम सति समझाईआ। शब्दी अंदर जोती रंग, जोती रंग शब्द चढ़ाइंदा। एका सेज इक्क पलँग, एका कन्त हरि हंढाइंदा। एका नाम इक्क मृदंग, एका नौबत नाद वजाइंदा। एका मन्दिर वेखे अंदर लँघ, एका दीपक डगमगाइंदा। एका सतिगुर सूरा सरबंग, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। एका देवे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। एका टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दरगाह साची सचखण्ड सारे गावण इक्को छन्द, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती शब्दी आपणा रंग वखाइंदा। जोती शब्दी रंग पेख, हरि जू पेखत पेख खुशी मनाईआ। आदि जुगादी लिखणहारा लेख, लेखा लिख लिख दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे दर दरवेश, बण दरबान सीस झुकाईआ। सहँसर मुख थक्का शेष, दोए सहँसर जिह्वा गुण कहिण ना सके राईआ। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी पारब्रह्म श्री भगवन्त मेटणहार रेख, रेखा आपणी लए प्रगटाईआ। लहिणा देणा जाणे गुर दस्मेश, दहि दिशा फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई दो जहान नौ खण्ड पृथ्मी खोले भेत, अभेव दए जणाईआ। सतिगुर वसणहारा नेतन नेत, निज घर बैठा डेरा लाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला जुग चौकड़ी खेले खेड, लख चुरासी पावे सारा, वरभण्डी ब्रह्मण्डी आपणा नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, चार वरन सुणाउणा एका छन्दी छन्द, एका राग अलाईआ। चार वरन साचा छन्द, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। भगत ब्रह्म प्रभ देवे अनन्द, अनन्द कारज आप कराइंदा। जगत जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, घर साचे मेल मिलाइंदा। निरगुण प्रकाश चढ़े चन्द, जोत निरँजण डगमगाइंदा। दूई द्वैती जूठी झूठी ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। लेखा चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज ना कोए भुआइंदा। शब्दी सुत तेरा परमानंद, परम पुरख रस चखाइंदा। खुशी करे बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सर्ब जीआं दा इक्को छन्द, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी सुत अबिनाशी अचुत, कलयुग अन्त सुहाए तेरी रुत्त, भगत भगवान झुलाए निशान, लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए रूप शाहो भूप सति सरूप वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा एका रंग ज़िमी असमान वज्जे मृदंग, ब्रह्मण्ड खण्ड एका धार वखाइंदा। भगत भगवन्त लोकमात चढ़े चन्द, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द सच्चा वर, वर घर साचा आप वखाइंदा। मात पित पंज तत्त तत्त हड्ड मास नाड़ी रक्त बूंद खेल कराइंदा। पुत्तर धीआं जगत नत, साक सज्जण सैण बन्धन इक्क वखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ काया चले रथ, पवण स्वासी सेव कमाइंदा। रसना जिह्वा गाए जस, बत्ती दन्द मुख सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग नाता जीव जुड़ाइंदा। जग नाता काया जोड़, तत्तव तत्त तत्त जणाईआ। मन वासना चढ़े घोड़, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। मति मतवाली ना सके होड़, बैठी माण गंवाईआ। बुद्धि रखे ना कोए ज़ोर, जाबर नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मात पित पूत कलयुग नाता दए समझाईआ। कलयुग मंगी मंग भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। लेखा मेरी अन्तिम वार, पिता पूत मात दए ना कोए वड्याईआ। नार कन्त ना करे प्यार, सुहाग सच ना कोए हंढाईआ। घर घर होए क्रोध हँकार, गढ़ कूड़ा नज़री आईआ। झूठा नाता दिसे संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। झूठा नाता जगत जग, जग जीवण दाता इक्क समझाइंदा। घर घर वेखो लग्गी अग्ग, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। कूड़ी क्रिया जीव जंत गया बज्झ, सच सुच ना कोए दृढ़ाइंदा। मां पुत्त कोलों जाण भज्ज, फड़ बाहों गले ना कोए लगाइंदा। कलयुग वेखे आपणा हज्ज, बण हाजी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया देवे कढु, माण अभिमाण दए मिटाईआ। पूत सपूत दुआरे सद्द, दर साचे दए समझाईआ। बाली बुध रखे लज, बिरध अवस्था माण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर मेला दए मिलाईआ। अन्त सरीर मिले को पासा, पासा हरि जू आप जणाईआ। चरन कँवल कँवल भरवासा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। मन मनसा पूरी होए आसा, आसा आसा नाल मिलाईआ। एथे ओथे मेला शाहो शाबाशा, हरि सतिगुर होए सहाईआ। गुरसिख कदे ना होए निरासा, जो जन इक्क ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, काया रोग दए मिटाईआ। काया रोग मिटे दुःख, दुःख तन ना लागे राया। सोहँ जप साचा सुख, आत्म परमात्म होए सहाया। मात गर्भ कटे उलटा रुख, गेड़ा गेड़े ना कोए भुआया। आपणी गोदी लए चुक्क, वेले अन्त अन्त सहाया। लेखे लग्गे काया बुत्त, पंज तत्त आपणी गंढु पुवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे एका वर, तिस जन दुःख ना लागे राया।

✳ २५ हाढ़ २०१६ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह ध्यान पुर ज़िला अम्बाला ✳

आदि जुगादी एकँकार, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। वसणहार सचखण्ड सच्चे दुआर, धुर दरबारे आसण लाइंदा। जोती जाता हो उज्यार, पुरख बिधाता वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे दुआर, कलयुग आपणा रंग रंगाइंदा। विष्न करे ख़बरदार, सच संदेशा नर नरेशा इक्क सुणाइंदा। त्रैगुण माया खोल्ह किवाड़, पंज तत्त आपणा भेव चुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे सहार, सति सतिवादी राह चलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लेखा जाणे गीता ज्ञान, गुर गुर अंजन नेत्र नाम, नाम निधाना इक्क रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल आदि जुगादि, जुग करता आप कराईआ। वेखणहार ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी रचन रचाईआ। शब्द अगम्मी एका नाद, दो जहानां आप सुणाईआ। भगत भगवन्त सन्त सज्जण साचे लाध, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता वेस वटाईआ। जुग करता हरि करतारा, करनी आपणी किरत कमाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। जुगा जुगन्तर वेखे विगसे वेखणहारा, वेद कतेब भेव ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करया पार किनारा, नव नौ चार आपणा रंग रंगाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सर्ब पुकारा, उच्ची कूक कूक सर्ब संसारा, गुर अवतार करन निमस्कारा, पीर पैग़म्बर सजदा सीस झुकाइंदा। मुकामे हक़ वसे परवरदिगारा, जल्वा नूर नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा राह चलाइंदा। सति सतिवादी साचा राह, जुग जुग आप चलाइंदा। गुर अवतारां दे सलाह, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त भेव खुल्हा, आत्म पर्दा ताकी लाहइंदा। साचे सन्तां सति जणा, सति सतिवादी रंग वखाइंदा। गुरमुख गुर गुर लए मिला, गुर एका हट्ट खुल्हाइंदा। गुरसिख सज्जण लए जगा, जागरत जोत जोत जगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलयुग अन्तिम आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, करनी करता आप कराइंदा। करनी करता करे भगवान, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण नौजवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, तख्त निवासी साचा तख्त इक्क सुहाईआ। आदि निरँजण देवे दान, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। श्री भगवान झुलाए सच निशान, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे

सीस झुकाईआ। अबिनाशी करता इक्क सुणाए धुर फ़रमाण, सच संदेशा सच्चा माहीआ। पारब्रह्म प्रभ करे परवान, आपणा लेखा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल पुरख अबिनाशा, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। कलयुग वेखे अन्त तमाशा, त्रैगुण अतीता आपणा वेस वटाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ठांडा सीता, त्रैगुण अग्नी ना तत्त बणाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला आपे जाणे आपणी रीता, वेद कतेब शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव कोए ना आइंदा। जुगा जुगन्तर साहिब सुल्ताना पतित पुनीता, पतित पापी पार कराइंदा। निर्धन सरधन होए मीता, मित्र प्यारा आपणा नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण निरगुण करया वेस, वेस अनेका आप वटाईआ। वसणहारा सम्बल देस, साचे बंक दए वड्याईआ। दो जहानां नर नरेश, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे चाँईं चाँईंआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जिस दी सिफ्त सालाह करे गुर गुर दस्मेश, दहि दिशा वेखे नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए रलाईआ। दूसर संग ना कोए साथ, हरि जू आपणा खेल खलाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे मार झात, निरगुण निरगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। दो जहानां खोलणहारा ताक, त्रैभवन धनी आपणा राह चलाइंदा। भगत भगवन्त सज्जण साक, हरिजन मेला मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म सुणाए साचा नाद, धुन आत्मक राग अलाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाए हो विस्माद, बिस्मिल आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, जुग जुग आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि अन्त खेल अपारा, श्री भगवान आप कराईआ। कलयुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। महल अटल उच्च मनारा, सचखण्ड वेखे बेपरवाहीआ। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, शब्दी सुत सुत उठाईआ। नाता चुक्के पुरख नारा, नार कन्त श्री भगवन्त एका एक एक रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा वेस आप रखाईआ। साचा वेस श्री भगवान, कलयुग अन्त अन्त कराइंदा। पूरब लेखा लिख्त महान, लिख्या लेख लेखे लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर मंगया दान, कलयुग अन्तिम झोली पाइंदा। तेई अवतार करन प्रणाम, भगत अठारां सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद सजदा सीस सलाम, बरदा आपणा हुक्म वरताइंदा। नानक गोबिन्द एका अक्खर कर परवान, परम पुरख सति परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। सरगुण निरगुण कर कर ध्यान, ध्यानी ध्यान ध्यान मिलाइंदा।

उच्ची कूक कूक सुणाण, अक्खर वक्खर जोड़ जुड़ाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सरगुण खेले खेल श्री भगवान, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां पावे आण, उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म मनाइंदा। लख चुरासी देवे दान, जीव जंत साध सन्त श्री भगवन्त आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म साचा गान, ब्रह्म पारब्रह्म वेखे मार ध्यान, ईश जीव जगदीश बन्धन जुग करता आप पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप वटाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। एकँकारा शब्दी जोती आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए वटाईआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, सचखण्ड दवारे एका नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान सच संदेश एका घल्ला, ब्रह्मण्ड खण्ड करे पढ़ाईआ। श्री भगवान गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेटणहारा सल्ला, दूई द्वैती दए गंवाईआ। पावे सार जला थला, जल थल महीअल डूँघी कंदर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, बेअन्त बेअन्त बेअन्त आपणी महिमा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी महिमा रखे हथ्थ, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। जुग करता चलाए जुग जुग रथ, गुर अवतार सेव लगाईआ। लख चुरासी पाए नथ्थ, नाम डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। बोध अगाधी महिमा अकथ, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। पीर पैग़म्बर मार्ग दस्स, अल्फ़ ये करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, मध आपणी धार चलाईआ। साची धार हरि करतार, एकँकार आप चलाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अपार, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। कल कल्की लै अवतार, रूप अनूप वेस वटाइंदा। सम्बल नगरी हो उज्यार, बंक दुआरा इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड निवासी सच बणाऐ इक्क दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त दए दीदार, आत्म दरसी दरस कराइंदा। मेटे हरस सर्ब संसार, संसा रोग मोह चुकाइंदा। कागद कलम ना पावे सार, लिख लिख सयाही मुख शरमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बेऐब परवरदिगार, नूरी जल्वा नूर धराइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। वड अमाम बण सिक्दार, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा खेल रचाइंदा। निरगुण खेल अन्तिम कल, कल करता आप कराईआ। लख चुरासी भुलाए कर कर वल छल, अछल छलधारी नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां अन्तर जोती जोत जाए रल, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ।

दरस दखाए घड़ी घड़ी पल पल, पलक आपणी आप उठाईआ। सच सुनेहड़ा एका घल्ल, विष्न ब्रह्मा शिव लए जगाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सच दुआरे आउणा चल, सच दरबारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा कलयुग अन्त अन्त सुणाईआ। सच संदेशा एकँकार, अकल कलधारी आप सुणाइंदा। सृष्ट सबाई होए खुआर, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। पीर पैग़म्बर आप आपणा गए हार, शरअ शरीअत वंडण वंड ना कोए वंडाइंदा। गा गा थक्के वेद चार, वेद व्यासा लिख लिख पुराण अठारां पुराण प्राणी ना कोए मिलाइंदा। गीता ज्ञान हाहाकार, कान्हा रूप नज़र कोए ना आइंदा। अञ्जील कुरान मसला हक़ ना किसे विचारा, मुस्लिम सुन्नी नेत्र रो रो नैण नैण सर्ब कुरलाइंदा। नज़र ना आए परवरदिगारा, रहिमत रहीम रहिमान ना कोए वखाइंदा। नानक निरगुण भुल्लया सर्ब संसारा, गोबिन्द गुर गुर चरन कँवल ध्यान ना कोए लगाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ गुरुदुआरा शिवदुआला हरि का रंग ना कोए वखाइंदा। जगत स्यासत झूठ अखाड़ा, धीरज धर्म ना कोए धराइंदा। पुरख अबिनाशी वेखणहारा, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, निहकलंका आपणा नाउँ रखाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह साचा मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग वरते सच वरतारा, राउ रंक सोहे इक्क दुआरा, ज़ात पात ऊँच नीच वरन
४६४ बरन सर्ब मेट मिटाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यारा, सोहँ शब्द सच जैकारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। ४६४
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचा लग्गे
१२ मात, हरि सतिगुर आप लगाईआ। बीस बीसा देवे दात, जगत जगदीशा वड वड्याईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, जूठ १२
झूठ दए खपाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बंधाए नात, ज़ात पात कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम निहकलंक नर नरायण, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। वज्जे डंक राउ रंक जीव जंत रसना कहिण, वाहवा तेरी कुदरत तेरा भेव कोए ना पाइंदा। भगत भगवन्त साचे सन्त दर्शन पेखण नैण, नेत्र नैण निज आत्म आप खुल्हाइंदा। आवण जावण पतित पावण चुकाए लैण देण, लख चुरासी फंद कटाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान बणे साक सज्जण सैण, आत्म नाता जुड़या ना कोए तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साची धार लगाइंदा। सतिजुग धार जाए लग्ग, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। करे खेल सूरा सरबग, सूरबीर बेपरवाहीआ। त्रैगुण अग्नी बुझाए अग्ग, सांतक सति सति कराईआ। पंच विकारा देवे दझ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। ग़रीब निमाणयां अन्तर

बहे सज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। चार वरन इक्क नगारा जाए वज्ज, चार कुण्ट खुशी मनाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के मक्का काअबा हाजी हज्ज, काया हुजरा सच महिराबे, निरगुण नूर एका नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग लेखा श्री भगवान, सृष्ट सबाई आप जणाइंदा। सर्ब जीआं दा साचा काहन, पुरख अकाल खेल कराइंदा। परवरदिगार हो मेहरवान, मिहबान बीदो आपणा रंग रंगाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, लोकमात मात झुलाइंदा। जीव जंत देवे इक्क ध्यान, हरि चरन सरन सरन चरन हरि समझाइंदा। इष्ट देव श्री भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप गायण एका गान, अन्तर मन्त्र अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म करे परवान, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे मार ध्यान, ईश जीव आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, नर हरि नरायण आपणा भेव आप चुकाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी बणाए सच विधान, विधाता आपणी दया कमाइंदा।

✳ २५ हाढ़ २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड चैड़ीआं ज़िला अम्बाला ✳

नर नरायण हरि आदि जुगादि, निरवैर पुरख खेल कराइंदा। शब्द अगम्मी बोध अगाध, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। साचा मेला सन्त साध, सतिगुर पूरा आप कराइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप जणाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लाध, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण वेस वटाइंदा। नर नरायण इक्क इकल्ला, एकँकार वड वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, थिर घर आपणा भेव जणाईआ। पावे सार जलां थलां, जल थल महीअल डूँग्घे सागर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। भगत भगवन्त फड़ाए पल्ला, नाम पल्लू इक्क वखाईआ। जोती शब्दी निरगुण सरगुण आत्म परमात्म आपे रला, ब्रह्म पारब्रह्म भेव खुल्हाईआ। दूई द्वैती शरअ शरैअती ज़ात पात मेटणहारा सल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे सोभा पाइंदा। नर नरायण पुरख अबिनाशा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण घट घट अंदर रखे वासा, लख चुरासी डेरा लाइंदा। आदि निरँजण नूर प्रकाशा, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता दासी दासा, बण सेवक सेव कमाइंदा। श्री भगवान शाहो शाबाशा, सचखण्ड दवारे दरगाह साची आसण लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पूरी करे आसा, वस्त अमोलक झोली

४६६
१२

पाइंदा। ब्रह्म ब्रह्म करे खेल ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड शाहो शाबाशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। नर नरायण एकँकार, अकल कला वड्याईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे वसणेहार, निरगुण नूर निरवैर पुरख बेअन्त बेपरवाहीआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर साची कार करे कराए करनेहार, करता पुरख आपणी करनी आप कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, त्रैगुण मेला कन्त भतार, पंचम नाता जोड़ संसार, साची वंडण वंड वंडाईआ। निरगुण सरगुण दे आधार, लख चुरासी खेल अपार, परम पुरख पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण वड वड्याईआ। नर नरायण इक्को दाता, आदि जुगादि समाइंदा। सृष्ट सबाई पिता माता, पूत सपूत गोद बहाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन बंधे नाता, भगत भगवन्त जोड़ जुड़ाइंदा। एथे ओथे दो जहान रखे साथा, सगला संग आप हो आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गाए गाथा, गुर गुर सतिगुर आप पढ़ाइंदा। लहिणा देणा जाणे त्रिलोकी नाथा, त्रैभवण धनी लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ पुरी भेव अभेद आप चुकाइंदा। चौदां लोक गाए साका, चौदां तबक खोल्हे ताका, ज़िमीं असमान खेल महान, रवि ससि सूरज चन्द नूरो नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। नाउँ नरायण हरि जू रख, आपणी दया आप कमाईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रतख, पारब्रह्म भेव अभेद खुल्हाईआ। सन्त भगत भगवन्त सज्जण साचे लए रख, जुग जुग आपणा भेव चुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक मथ्थ, धुर मस्तक लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मार्ग दस्स, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बण रैहबर राह चलाईआ। निरगुण अंदर सरगुण वस, सरगुण निरगुण एका रस, रस रसीया एका गुण समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण वड वड्डा बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि निरँकारा, नर नरायण आप अख्वाइंदा। लख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लाइंदा। गुर अवतार सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वारा, कलयुग आपणा भेव चुकाइंदा। महांबली अछल अछल वसणहारा धाम न्यारा, निहचल धाम महल अटल सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, वेखे विगसे वेखणहारा, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण आपणा पर्दा आप उठाइंदा। नर नरायण पर्दा चुक्क, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा लुक, कलयुग अन्तिम प्रगट होवे सच्चा

शहिनशाहीआ। निर्मल नूर जोत करे प्रकाश, भाग लगाए साचे काया कंचन कोट, किला गढ़ दए सुहाईआ। शब्द अगम्मी तन नगारे लग्गे चोट, अनहद नादी धुन आत्मक एका राग सुणाईआ। सृष्ट सबाई लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात निरगुण नूर वखाए साची गोत, आत्म परमात्म पूत सपूता रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुगा जुगन्तर आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। पुरख अकाल इक्क इकल्लड़ा, लोकमात लए अवतार, जन भगतां मार्ग दए सुखल्लड़ा, निरगुण सरगुण कर प्यार, अन्तर आत्म फड़ाए पल्लड़ा, शब्दी शब्द हो उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण इक्क अवतार। नर नरायण निहकलंक, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर वजाए डंक, डंका एका नाम खुदाईआ। लेखा जाणे राउ रंक, राज राजान शाह सुल्तान, लेखा सब दा आप मुकाईआ। कलयुग अन्तिम इक्क सुहाए दुआर बंक, बंक दुआरे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण करे खेल बेपरवाहीआ। नर नरायण सूरा सरबंग, सर्ब कला अख्वाइंदा। आदि जुगादि ना होए भंग, सैभं आपणी कार कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त श्री भगवन्त आत्म परमात्म देवे इक्क अनन्द, अनन्द घाल इक्क वखाइंदा। निरगुण निराकार आदि निरँजण नूर नुराना चाढ़े चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। शब्द अगम्मी साचा छन्द, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। जुग चौकड़ी मेटे पन्ध, बण पाँधी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण खेल खलाइंदा। नर नरायण एको एक, इक्क इक्क अख्वाईआ। भगत भगवन्त साची टेक, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। सन्त सुहेला सदा बबेक, ववेकी आपणा भेव चुकाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो सज्जण सतिगुर पुरख लए पेख, पेख आपणे नैण खुशी मनाईआ। जगत नेत्र नज़र ना आए रूप रेख, रंग करता ना कोए दसाईआ। अनभउ प्रकाश अवल्लड़ा भेस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण खेले खेल बेपरवाहीआ। नर नरायण गहर गम्भीर, गुण सागर वड वड्याइंदा। वसणहारा पंज तत्त काया तत्त सरीर, तत्तव तत्त वेख वखाइंदा। जन भगतां देवे इक्को धीर, धीरज सति सन्तोख ज्ञान दृढ़ाइंदा। शब्द अणयाला बिरहों मारे तीर, बज़र कपाटी चीर चराइंदा। माया ममता हउमे हंगता दूई द्वैती जूठी झूठी कढ्ढे पीड़, सच सुच इक्क दृढ़ाइंदा। अमृत आत्म प्याए ठंडा सीर, निझर झिरना आप झिराइंदा। फड़ चोटी चाढ़े अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। बदलणहारा तकसीर, तदबीर आपणी आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम घत्त वहीर, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। लेखा जाणे पीर पैग़म्बर दस्तगीर, दस्तयाब आपणा दस्त आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, नर हरि नरायण आपणा रंग रंगाइंदा। नर नरायण एका रंग, हरि जू हरि हरि आप रंगाईआ। आत्म सेजा सच पलँग, सो पुरख निरँजण आसण लाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर नाम मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाईआ। साचे असव कसे तंग, शाह सवार सच सिँघासण आसण लाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां आपे लँघ, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गीत सुहागी गाए छन्द, आत्म परमात्म इक्क अनन्द, घर मेला सहिज सुभाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे गुजरी चन्द, गोबिन्द वेखे थाउँ थाईंआ। सृष्ट सबाई भागांमंद, कलयुग अन्तिम नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। गुरमुख विरले मिले सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नाम वखाए चण्ड प्रचण्ड, साचा खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण घर साचे खुशी मनाईआ। नर नरायण चाउ घनेरा, दर घर साचा आप सुहाइंदा। जन भगतां दिसे नेरन नेरा, मनमुखां नज़र किते ना आइंदा। आत्म परमात्म घर घर वखाए खुल्ला वेहड़ा, गृह मन्दिर अंदर आपणा डेरा लाइंदा। दिवस रैण रैण दिवस आपणा रंग वखाए सन्झ सवेरा, सच प्रभाती आपणा पर्दा लाहइंदा। गुरमुख गुर गुर कहे तूं मेरा मैं तेरा, नानक ढोला साचा सोहला, पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड निवासी एका धार एका राग अल्लाइंदा। सोहँ सद सच विचोला, आदि जुगादि बणया तोला, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बदलणहारा चोला, काया चोला तन ना कोए हंढाइंदा। पुरख अबिनाशी रखणहारा पर्दा ओहला, ब्रह्म पारब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। हरिजन हरि जू वसे कोला, निज घर आत्म डेरा लाइंदा। नर नरायण निरगुण रूप हो हो मौला, बिस्मिल आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। नर नरायण जपत जप जीव, जीवण जुगत जगत जणाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सींव, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। गोबिन्द सूरा सुत दुलारे रख के गया हेठां नींव, सतिजुग साची नींह धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण एको अक्खर रिहा पढ़ाईआ। नर नरायण साचा अक्खर, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। आदि जुगादि रखे वक्खर, वक्खरी धार आप प्रगटाइंदा। पाड़नहारा बज़र कपाटी पत्थर, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। नेत्र नीर विरोले अथ्थर, निझर झिरना आप झिराइंदा। गोबिन्द वेखे साचा सत्थर, सत्थर यारड़ा आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण इक्को जाप जपाइंदा। नर नरायण इक्को जाप, जीवण मुक्त आप जणाईआ। त्रै त्रै मेटणहारा तीनों ताप, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। प्रगट होए प्रभ आपे

आप, आपणी कल आप रखाईआ। पूत सपूता गोद सुहाए बण बण माई बाप, पिता पूत सदा सखाईआ। चरन कँवल धरत धवल बन्ने साचा नात, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाईआ। चार वरन वखाए इक्क ज़ात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाईआ। नर नरायण पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता खेल कराईआ। घट घट अंदर जोत प्रकाश, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। गुरमुखां पूरी करे आस, गुर गुर आपणा दरस कराईआ। कलयुग अन्तिम दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। दो जहानां वेखे खेल तमाश, दोए दोए धार आप प्रगटाईआ। पावे सार पृथ्मी आकाश, गगन मंडल आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नरायण नर नर नरायण एका घर सोभा पाईआ। एका घर सोभावन्त, नर हरि नरायण आप सुहाइंदा। आदि जुगादि महिमा अगणत, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। मेल मिलाए साचे सन्त, सन्त साजण आपणी बूझ बुझाइंदा। लेखा जाण नार कन्त, कन्तूहल वेस वटाइंदा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणाए बणत, अन्तिम लेखा आप मुकाइंदा। तोड़णहारा गढ़ हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाइंदा। नर नरायण बणाए साची संगत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। गुरमुख दूजे दर ना होए मंगत, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। काया चोली चाढ़े रंगत, रंग मजीठी आप रंगाइंदा। माणस जन्म ना होए भंगत, लख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी दया कमाइंदा। नर हरि दीन दयाल, ठाकर आपणा रंग रंगाईआ। भगत भगवन्त वेखे साचे लाल, लालण आपणी गोद सुहाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। देवे नाम सच्चा धन माल, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ । शाहों करे कंगाल, कंगाल शाह दए बणाईआ। जन भगतां हल करे सवाल, रहिमत आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण हरि वसे साचे घर, घर साचा सचखण्ड दवारे दए वड्याईआ। गुरमुख कदे ना करे बस, इक्को आस तकाईआ। हरि जू हिरदे अंदर जाए वस, घर साचे दए वड्याईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस्स, साचा चन्द करे रुशनाईआ। अगला मार्ग देवे दस्स, पिछला लेखा रहे ना राईआ । दिवस रैण अठ्ठे पहर एथे ओथे दो जहान श्री भगवान गाए जस, जस वेद पुराण गा ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए जणाईआ। बस ना करे गुरसिख मीत, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। दिवस रैण गाए गोबिन्द गीत, गोबिन्द आपणा रंग वटाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला नज़री आए बैठा अतीत, त्रैगुण डेरा आपे ढाहइंदा। कया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा । लेखा जाणे पतित पुनीत, पतित पावण आपणा नाउँ धराइंदा। दो जहान चलाए साची रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

हरिजन साचे आप मिलाइंदा। बस बस ना गुरमुख कर, हरि हरि हरि खेल कराइंदा। प्रभ मिलण दा इक्को दर, घर घर विच आप जणाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भय अवर ना कोए रखाइंदा। आत्म अन्तर नुहाए साचे सर, कागों हँस बणाइंदा। सुरती शब्दी लए फड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। लेखा चुक्के पंज तत्त काया सरीर धड़, जगदीश आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दवारे जाणा वड़, राह विच ना कोए अटकाइंदा। गुरमुख सज्जण ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन मरन जन्म सतिगुर लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, घर विच कुण्डा लाहइंदा। घर विच कुण्डा घर विच ताकी, घर घर विच पर्दा लाहइंदा। पकड़ चढ़ाए उच्ची घाटी, गृह मन्दिर आप जणाइंदा। निरगुण नूर जोत जगाए ललाटी, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। मेल मिलाए कमलापाती, कँवल नैण आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे सदा साथी, सदा संग रखाइंदा। किरपा अंदर सदा स्वामी, आपणा खेल कराईआ। आदि जुगादि सदा सद नेहकामी, निहकर्मी कर्म कमाईआ। घट घट बैठा अन्तरजामी, अन्तर गत आप जणाईआ। दिवस रैण रैण दिवस गाए साची बाणी, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सुरत सवाणी सुघड़ सुचज्जी होए राणी, घर मिले सच्चा माहीआ। आत्म परमात्म प्याए ठंडा पाणी, निझर झिरना इक्क झिराईआ। लेखा चुक्के
४७० चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज नाता दए तुड़ाईआ। सतिगुर मिले शब्द हाणी, सुरत सवाणी आपणे संग रखाईआ। ४७०
दोहां विचोला पुरख अबिनाशी इक्क वखाए पद निरबाणी, निरबाण पद आपणा चरन वखाईआ। एथे ओथे अकथ कहाणी,
१२ बिन रसना जेहवा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे सच्चा वर, घर मन्दिर करे जोत रुशनाईआ। १२

✳ २५ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जगीर सिंघ दे गृह रंगील पुर ज़िला अम्बाला ✳

सति पुरख निरँजण साची कार, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण निरगुण हो उज्यार, निरवैर पुरख वेस वटाइंदा। सम्बल नगर धाम न्यार, दर घर साचे आसण लाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जैकारा एका नाउँ अलाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर नज़र किसे ना आइंदा। दो जहानां पावे सार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फोलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। पंज तत्त तत्त बणे दलाल, करे खेल श्री भगवान निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर

साचे सोभा पाइंदा। सोभावन्त श्री भगवान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण निराकार हो प्रधान, अकल कल खेले खेल शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सच संदेसा नर नरेशा लख चुरासी सुणाए कान, चारे खाणी करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, परम पुरख मेला सहिज सुभाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। ईश जीव इक्क निशान, जगदीस दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे दए वड्याईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सतिगुर पूरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवार बणाई बणत, सच सिँघासण आसण लाइंदा। करे खेल आदि अन्त, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी मणीआ मंत, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। भेव अभेदा खोले साधन सन्त, सन्त साजण आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू हरि हरि आपणा वेस वटाइंदा। वेस अपारा हरि निरँकारा, निरगुण धारा जोत जगाईआ। प्रगट हो विच संसारा, जुग चौकड़ी वेखे वारो वारा, नित नवित फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, लोआं पुरीआं दए हुलारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। रवि ससि करन निमस्कारा, मंडल मण्डप ढह ढह पए चरन दुआरा, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का एका ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर बैठा आसण लाईआ। हरि मन्दिर सोहे हरि निरँकार, सच सिँघासण आसण लाइंदा। दीआ बाती कमलापाती कर त्यार, त्रैगुण अतीता डगमगाइंदा। ठांडा सीता वसणहारा सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। कुदरत कादर वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा दिस ना आइंदा। जुग चौकड़ी हो त्यार सतिजुग त्रेता द्वापर लए हुदार, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। सेवा कर कर थक्के गुर अवतार, पीर पैग़म्बर गए हार, जीव जंत लख चुरासी गृह मन्दिर घर घर सर्ब कुरलाइंदा। आत्म करे ना कोई ठंडी ठार, नेत्र लोचण नैण देवे ना कोए दरस दीदार, ईद दीद चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार आप प्रगटाइंदा। साची धार प्रगट जोत, जोती जाता खेल कराइंदा। लख चुरासी एका ओट, एका इष्ट मनाइंदा। वरन बरन नाता तोड़े झूठी गोत, आत्म परमात्म एका गंढु पवाइंदा। आसा तृष्ना माया ममता हउमे हंगता कढ्ढे खोट, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। तन नगारे शब्द अगम्मी लाए चोट, अनाद अनादी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, कलयुग अन्त अन्त जणाईआ। सतिजुग त्रेता दआपर लोकमात चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, परम पुरख आपणा वेस वटाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत,

पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। वसणहारा साचे कोट, सम्बल डेरा एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच घर वसे सच्चा माहीआ। सम्बल नगर सच टिकाणा, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क बबाणा, हरि पुरख निरँजण आप उडाइंदा। एकँकारा हो प्रधाना, आदि निरँजण नूर धराइंदा। अबिनाशी करता जाणी जाणा, श्री भगवान सेव कमाइंदा। पारब्रह्म बण मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप रखाइंदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म निशाना, लख चुरासी घर घर आप टिकाइंदा। बोध अगाधी एका गाणा, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर परम पुरख वेखे मार ध्याना, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करे खेल श्री भगवाना, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक बली बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। दो जहान झुलाए सच निशाना, सति सतिवादी आप उठाइंदा। लेखा जाणे गोपी कान्हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप वड्याइंदा। दर घर सच्चा सचखण्ड, हरि साचा सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी वंडे वंड, दूसर संग ना कोए वखाइंदा। थिर घर साचे बह बह गाए छन्द, गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। लहिणा देणा चुक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

४७२ किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर मन्दिर आप वड्याइंदा। घर मन्दिर वेखे खोल्हे ताक, घर घर वज्जे वधाईआ। घर ४७२

मेला सज्जण पाकी पाक, पत्तत पुनीत लए तराईआ। घर सोहला ढोला गाए भविख्त वाक्, अनुभव आपणा भेव जणाईआ।

१२ घर आत्म परमात्म दस्से इक्को ज़ात, वरन बरन ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १२

करे खेल साचा हरि, दर साचे दए वड्याईआ। दर साचे वड़याई वड्डा वड, हरि सज्जण आप रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे अन्तर आपे कढ्ढ, लोकमात वेख वखाइंदा। जुगा जुगन्तर धुर दरबारी धुर दुआरे लए सद्द, सच फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल जणाइंदा। कलयुग खेल लैणा जाण, जानणहार आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी हो प्रधान, दो जहान वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दआरे सच निशान, लोकमात दए झुलाईआ। सतिजुग मार्ग लाए हो मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाईआ। भगत भगवन्त करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। वस्त अगम्मी देवे दान, निज घर साचे आप वरताईआ। सुरती शब्दी मेला गोपी काहन, एका बंसरी नाम सुणाईआ। पीर पैग़म्बर दए पैग़ाम, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। मुकामे हक़ वसे धाम, दरगाह साची आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आण, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुरमुख सज्जण लए पछाण, जुग विछड़े मेला लए मिलाईआ।

एका राग सुणाए कान, सोहँ ढोला सो पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। निरगुण निरगुण लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सम्बल नगर धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ आसण लाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार आप अलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, करोड़ तेतीसा सीस झुकाइंदा। तेई अवतार खड़े दुआरा, भगत अठारां नाल मिलाइंदा। ईसा मूसा करे पुकारा, मुहम्मद एका ओट रखाइंदा। नानक गोबिन्द बोल जैकारा, डंका फतहि इक्क सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होए कल्की अवतारा, कल आपणी आप धराइंदा। महांबली छले सर्ब संसारा, वल छल आपणा खेल वखाइंदा। शाह सुल्ताना करे खुआरा, राज राजानां मेट मिटाइंदा। ग़रीब निमाणयां दए हुलारा, फड़ बांहों गले लगाइंदा। ऊँचां नीचां वखाए इक्क दरबारा, ज़ात पात ना कोए वंडाइंदा। आत्म परमात्म दे सहारा, ब्रह्म पारब्रह्म वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर आप वड्याइंदा। हरि मन्दिर वेखे काया तन, तत्तव तत्त तत्त जणाईआ। आसा तृष्ना मेटे मन, मन वासना दए खपाईआ। पंच विकारा देवे डंन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। करे वसेरा साची छप्पर छन्न, चार दीवार ना कोए रखाईआ। होए प्रकाश कोटन कोटि सूरज चन्न, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साचा देवे नाम धन, धन ख़ज़ीना इक्क लुटाईआ। चार वरनां बेड़ा देवे बन्न्ह, बरन अठारां लेखे पाईआ। साचा राग सुणाए कन्न, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रसना कहिण धन्न धन्न, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, भन्नणहार तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। घड़न भन्नणहार समरथ, लख चुरासी खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। कलयुग अन्तिम सीआं वंडी साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चुमारा लेख लिखाइंदा। कलयुग अन्तिम खेड़ा होणा भट्ठ, त्रैगुण अग्नी तत्त तपाइंदा। पुरख अबिनाशी गेड़नहारा उलटी लट्ठ, उलटा गेड़ा आप दिवाइंदा। जन भगतां मार्ग दस्से सच सच्च, सच नाम समझाइंदा। काया माटी भाण्डा कच्च, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। मनुआ नटुआ रिहा नच्च, नच्च नच्च आपणा ताल वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुर गुर आप जणाइंदा। गुरमुख मीता गुर गुर सज्जण, हरि सज्जण दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम आया पड़दे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजण, दुरमति मैल धुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला एका घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। दीन मज़्हब

चुक्के डर, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा रिहा कर, पिछली रीती दए खपाईआ। मन्दिर मसीती एका नज़री आए हरि, ठाकर दुआरे ठाकर आपणा रूप वखाईआ। शिवदुआले साचे टिल्ले बहे चढ़, उच्च महल्ले सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे एका इष्ट दृढ़ाईआ। एका इष्ट आत्म गुरदेव, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। आदि जुगादि अलख अभेव, अगम्म अथाह खेल कराइंदा। हरिजन लेखे लाए सेव, सेवक आपणा रूप वटाइंदा। अमृत आत्म देवे मेव, हँ ब्रह्म एका रस चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन साचा जाए जाग, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर लग्गे भाग, गृह मन्दिर होए रुशनाईआ। दीपक जोती जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, एका बख्शे सरन सरनाईआ। पिता पूत लडाए लाड, गोद सुहञ्जणी आप सुहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पूरब लेखा रखे याद, कलयुग अन्तिम लहिणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा सतिगुर तार, तारनहार दया कमाइंदा। लख चुरासी गेड़ नवार, आवण जावण फंद कटाइंदा। नित नवित देवे दरस दीदार, निज नेत्र नैण खुल्ह्राइंदा। कर किरपा लाए पार, बेड़ा मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम पावे सार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सतिजुग साची करे कार, करनी करता आप कमाइंदा। चार वरनां दए अधार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आपणे अंग लगाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्क प्यार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सोहँ शब्द सति जैकार, जै जैकारा आप अल्ह्राइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच निशाना हरिजन साचा आप प्रगटाइंदा। हरिजन साचा सच निशान, हरि जू लोकमात झुलाईआ। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, निषअक्खर करे पढ़ाईआ। घट घट बैठा वेखे मार ध्यान, निज नेत्र नैण खुल्ह्राईआ। लख चुरासी होई हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। नाता जुड़या पंज शैतान, आसा तृष्ना करे लड़ाईआ। नज़र ना आए श्री भगवान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, जीवण जुगत ना कोए जणाईआ। जिस जन उपर होए आप मेहरवान, पूरब लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख वेखे थाउँ थाईंआ। गुरमुख वेखे थान थनंतर, सृष्ट सबाई फोल फोलाइंदा। आप बुझाए जगत बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। सोहँ सुणाए साचा मन्त्र, मन्त्र एका नाम जणाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, पड़दा ओहला ना कोए वखाइंदा।

खेले खेल गगन गगनंतर, मंडल मण्डप डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सज्जण मेले आण, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। लख चुरासी फोलण फोले, निरगुण वडी वड्याईआ। शब्द अगम्मी कंडे तोले, तोलणहारा नज़र किसे ना आईआ। साची धारन इक्को बोले, ना कोई मात सके बदलाईआ। भाग लगाए काया चोले, चोला आपणा लए वटाईआ। गुरमुख बिठाए साचे डोले, शब्दी डोला इक्क बणाईआ। एथे ओथे वसे कोले, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ।

✳ २६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी सुरजीतम सिँघ दे गृह राजो माजरा ज़िला अम्बाला ✳

सतिजुग दा सति विहारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। एकँकारा खोल्ह् किवाड़ा, आदि निरँजण दीप जगाइंदा। अबिनाशी करता दे सहारा, श्री भगवान ओट रखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बण वणजारा, लख चुरासी हट्ट चलाइंदा। आत्म परमात्म इक्क जैकारा, जै जै आपणा नाउँ अल्हाइंदा। साचा मार्ग विच संसारा, महांसारथी आप रखाइंदा। कलयुग उतरे पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाइंदा। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, नर हरि साची कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचे साची दात, सतिगुर पूरा आप दिवाईआ। एका अक्खर वड करामात, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। नाता तोड़े ज़ात पात, दीन मज़्हब दए मिटाईआ। सर्ब जीआं प्रभ देवे साथ, सगला संग आप अख्वाईआ। लेखा जाण त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म पूजा पाठ, साचा मन्त्र दए पढ़ाईआ। लेखा चुक्के तीर्थ अठसाठ, आत्म सरोवर एका दए नुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा खेल रचाईआ। सतिजुग साचा सति सतिवाद, सति सतिवादी मात लगाइंदा। कलयुग मेटे वाद विवाद, कूड़ कुड़यारा मोह तुड़ाइंदा। सृष्ट सबाई वज्जे एका नाद, धुंन आत्मक राग सुणाइंदा। शब्द अगम्मी बोध अगाध, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाइंदा। भगत भगवन्त मेल मिलावा मोहण माधव माध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा रंग रंगाइंदा। सतिजुग साचा चाढ़े रंग, रंगणहार आप अख्वाइंदा। कलयुग मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। सर्ब जीआं सुणाए एका छन्द, जीव जंत जंत जणाइंदा। भाण्डा भरम भउ ढाहे दूई द्वैती कंध, गढ़ हँकार आप तुड़ाइंदा। जीव जंत आत्म परमात्म देवे सच

अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा बन्धन पाइंदा। सतिजुग साचा बन्धन पा, पारब्रह्म प्रभ खेल कराइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दए मिटा, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वेखे थाउँ थाँ, गुर दर आपणा वेस वटाइंदा। साचा इष्ट इक्क प्रगटा, पुरख अकाल दीन दयाल नूर नुराना डगमगाइंदा। सृष्ट सबाई लए जगा, जागरत जोत इक्क वखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी लए पढ़ा, पुस्तक हथ्थ ना कोए रखाइंदा। सत्तां दीपां दए सलाह, सलाहगीर फेरा पाइंदा। साचा मार्ग देवे ला, दो जहानां साचे राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा संग निभाइंदा। सतिजुग तेरा साचा संग, हरि सतिगुर आप निभाईआ। घर घर वज्जे इक्क मृदंग, गृह गृह नाद सुणाईआ। नव दुआरे आपे लँघ, घर दस्सवें बूझ बुझाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, गोबिन्द गोबिन्द अलाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, हरिजन साचे लए मिलाईआ। नाता तुट्टे बत्ती दन्द, अजपा जाप आप कराईआ। लख चुरासी आवण जावण मुक्के पन्ध, गेड़ा गेड़ दए चुकाईआ। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान होए संग, सगला संग आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे धन्दे लाईआ। सतिजुग साचे साची ओट, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। धर्म दुआरा किला कोट, एका बंक सुहाइंदा। नाम निधाना लग्गे चोट, चोट नगारे आप लगाइंदा। लख चुरासी वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा वेस वटाइंदा। सतिजुग साचा वेस पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप कराईआ। जन भगतां मेला कर श्री भगवन, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्न, चन्द चांदनी इक्क चमकाईआ। पंच विकारा दए डंन, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। लेखा जाणे जननी जन, धन धन जणेंदी माईआ। एका राग सुणाए कन्न, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश अन्तिम जायण मन्न, निउँ निउँ सीस जगदीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा रंग वखाईआ। सतिजुग साचे चढ़े चा, भगत भगवन्त आप वड्याइंदा। पारब्रह्म प्रभ मिले मलाह, बण खेवट खेटा बेड़ा कंध उठाइंदा। आत्म परमात्म देवे सच सलाह, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। शब्द विचोला इक्क बणा, गुर गुर नाउँ धराइंदा। पिछला लहिणा दए चुका, चार युग आपणी झोली पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम पार करा, पार किनारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग साचा लए प्रगटा, लोकमात धरत मात गोद सहाइंदा। साची सिख्या इक्क जणा, साख्यात खेल कराइंदा। निरगुण भिच्छया आपणी पा, सरगुण झोली आप भराइंदा।

ऊँच नीच राउ रंक दिसे कोई ना, राज राजान शाह सुल्तान एका दर सुहाइंदा। हरिजन वेखे थाउँ थाँ, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फोलाइंदा। कर किरपा पकड़े बांह, पकड़नहारा दिस किसे ना आइंदा। दो जहानां करे सच न्याँ साचे तख्त सोभा पाइंदा। गुरमुखां सिर रखे ठंडी छाँ, अग्नी तत्त ना कोए तपाइंदा। कलयुग लहिणा देणा दए मुका, सतिजुग साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क वरताइंदा। साची वस्त सतिजुग धार, सति पुरख निरँजण आप वरताईआ। सर्ब जीआं दा इक्क प्यार, प्यार प्यार नाल बंधाईआ। सृष्ट सबाई इक्क धार, एका धन्दे दए लगाईआ। आत्म परमात्म इक्क जैकार, साचा सोहला इक्क सुणाईआ। ईश जीव दए अधार, जगदीस वडी वड्याईआ। ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाए मेलणहार, घर मेला सहिज सुभाईआ। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, घर ठाकर स्वामी वेखे चाँईं चाँईंआ। आत्म सेजा कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता घर घर विच खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग आपणा भेव चुकाईआ। सतिजुग खोल्हे हरि जू भेव, भेव अवल्लड़ा आप जणाइंदा। आदि पुरख वड देवी देव, देवत सुर सीस निवाइंदा। अलख अगम्म अथाह अभेव, अगोचर आपणी कार कराइंदा। जन भगतां देवे साचा मेव, रसना रस इक्क चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची वंड वंडाइंदा। सतिजुग साची वंडे वंड, कलयुग लहिणा दए मुकाईआ। पुरख अबिनाशी सुत्ता दे कर कंड, अन्त करवट लए बदलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेटे भेख पखण्ड, जूठ झूठ दए गंवाईआ। सतिजुग साचा चढ़े चन्द, सच सुच्च करे रुशनाईआ। भगत भगवन्त जणाए इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द इक्क दरसाईआ। बिन अक्खर सुणाए सोहला छन्द, गीत गोबिन्द आप अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस हरि करतार, आदि जुगादि वटाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। निहकलंक हो उज्यार, नाम डंका इक्क सुणाइंदा। सृष्ट सबाई करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। सतिजुग आवे आपणी वार, थित वार वेला वक्त ना कोए वखाइंदा। किरपा करे आप निरँकार, कर किरपा वेख वखाइंदा। बीस बीसा पावे सार, जगत जगदीसा वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा देवे दान, कलयुग मिटे अन्त निशान, कूड़ी क्रिया आप मिटाइंदा।

४७७
१२

✳ २६ हाढ़ २०१८ बिक्रमी भजन सिँघ दे गृह शेख पुर ज़िला अम्बाला ✳

सतिजुग चले साचा नाउँ, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। करे खेल अगम्म अथाहो, बेपरवाह भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म पकड़े बांहों, निरगुण निरगुण गोद बहाइंदा। दरगाह साची देवे सच्चा थाउँ, थान थनंतर आप वड्याइंदा। दो जहानां पिता माउँ, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचे देवे दात, दाता दानी आप वरताइंदा। भगत भगवन्त बन्ने नात, पुरख बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई एका गाथ, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एका पूजा एका पाठ, इष्ट गुरदेव इक्क वखाइंदा। एका तीर्थ एका ताट, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा खेल वखाइंदा। सतिजुग साचे देवे दान, देवणहार हरि अख्वाइंदा। कलयुग मेटे कूड़ निशान, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। वेखणहारा दो जहान, दोए दोए आपणा रूप धराइंदा। निरगुण सरगुण हो बलवान, सरगुण निरगुण आपणा बल रखाइंदा। शब्द अगम्मी वड मेहरवान मेहरवान मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा जाए खुल्ह, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। सतिजुग देवे नाम अनमुल्ल, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। लख चुरासी बणाए एका कुल्ल, वरन बरन ना वंड वंडाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश कोई ना कहे भुल्ल, आत्म परमात्म साचा नाता जोड़ जोड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा लए प्रगटाईआ। सतिजुग साचा मात रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। महांबली हो प्रतख, रूप अनूप आप जणाइंदा। भगत भगवन्त लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सति सतिवादी मार्ग दस्स, साचे राहे आपे पाइंदा। एका नाम सुणाए साचा जस, जस वेद पुराण चुकाइंदा। सन्तन मेला हस्स हस्स, घर साचे आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग आपणा नाउँ चलाइंदा। सतिजुग नाउँ सोहँ सो, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म बीज देवे बो, पत्त डाल्ही फुल महकाईआ। निरगुण जेहा निरगुण हो, सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह सतिजुग धार, सति सतिवादी आप चलाइंदा। चार वरनां दए अधार, एका घर बहाइंदा। चार वरनां इक्क प्यार, एका नैण नैण मिलाइंदा। चार वरनां इक्क जैकार, एका अक्खर नाम सुणाइंदा। चार वरनां इक्क शंगार, एका बस्त्र तन हंढाइंदा। चार वरनां इक्क वणजार, नाम हट्ट इक्क खुल्हाइंदा। चार वरनां इक्क दातार, निरगुण दाता नज़री आइंदा। सृष्ट सबाई पावे

सार, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाइंदा। सत्तां दीपां हो उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। पूरब लहिणा देणा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए नवार, लेखा लेखे सब दा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। सच सिँघासण आसण ला, सो पुरख निरँजण खेल खलाइंदा। शाहो भूप बण मलाह, सतिगुर आपणा नाउँ चलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त दर लए बुला, भगत भगवन्त पड़दा लाहइंदा। एका अक्खर एका वार एकँकारा दए सुणा, आखर आपणा भेव चुकाइंदा। सिफ्त सालाही बेपरवाह, सिफ्ती सिफ्त ना कोए जणाइंदा। रैहबर बणे आप ख़ुदा, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम फेरा पा, निहकलंक आपणा नाउँ वड्याइंदा। अमाम अमामां आप अख्वा, शाह सुल्ताना भेव चुकाइंदा। शब्द दमामा इक्क वजा, दो जहानां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे साचा वर, धरत मात साची गोद सुहाइंदा। सतिजुग छोटा वेखे बाला, बालक आपणी दया कमाईआ। करे खेल हरि गोपाला, गोबिन्द वड वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक्क वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, हरिजन जागरत जोत करे रुशनाईआ। लहिणा देणा चुक्के शाह कंगाला, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सतिजुग दस्से राह सुखाला, एका अक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुच्च रिहा दृढ़ाईआ। सच सुच्च साचा मन्त्र, नमो सति सति जणाइंदा। सर्ब जीआं गत जाणे अन्तर, घट घट डेरा लाइंदा। कलयुग मेटे अग्न बसन्तर, अमृत मेघ बरसाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को मन्त्र, सोहँ सो आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचे वड वड़याई, सो पुरख निरँजण आप दिवाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार वेखण चाँईं चाँईं, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल रचाई, लोकमात वंड वंडाइंदा। कलयुग अन्तिम होए जुदाई, जुदा आपणा अंग वखाइंदा। सतिजुग साचे करे कुड़माई, घर साचे आप बहाइंदा। धरनी धरत धवल मेला रिहा मिलाई, मिल मिल आपणा राग अलाइंदा। दोहां विचोला सच्चा शहिनशाही, शाह पातशाह आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा हुक्म चलाइंदा। सतिजुग हुक्म एका वार, सतिगुर पूरा आप सुणाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका घर दए बहाल, एका मन्दिर सोभा पाईआ। सृष्ट सबाई वखाए इक्क धर्मसाल, धर्म दुआरा आप सुहाईआ। दिवस रैण रैण दिवस करे प्रितपाल, समरथ पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे माण वड्याईआ। सतिजुग सोया कलयुग अन्तिम उठे, चौथा युग लए

अंगड़ाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म दया कमाईआ। लोकमात सुहाए साची रुत्ते, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। कूड़ कुड़यारा जड़ आपे पुट्टे, शौह दरयाए दए रुढ़ाईआ। पंच विकारा फड़ फड़ कुट्टे, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। गुरमुख वेखे जन्म जुग दे रुस्से, फड़ बांहों गले लगाईआ। पूरब लेखा आपे पुच्छे, दूसर संग ना कोए रलाईआ। देवे दरस जो अंदर बैठा लुके, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। सिँघ रूप हो हो बुक्के, शहिनशाह वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे आप जगाईआ। सतिजुग साचा जाए जाग, सो पुरख निरँजण आप जगाइंदा। अन्तर उपजे इक्क वैराग, बण वैरागी नैणां नीर वहाइंदा। चारों कुण्ट वेखे नज़र ना आए कोई सज्जण साक, साचा संग ना कोए निभाइंदा। पीर फ़कीर ना कोए पाकी पाक, ख़ाकी तन सर्ब डराइंदा। कोए ना चढ़े साचे राक, असव घोड़ा ना कोए दौड़ाइंदा। शरअ शरीअत बध्धा नात, कलयुग कलमा आप पढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई नाता जुड़या ज़ात पात, वरन बरन संग ना कोए छुडाइंदा। कोए ना जाणे हरि की ज़ात, अज़ाती भेव ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। सतिजुग उठ उठ नेत्र रोवे, नैण नैणां नीर वहाईआ। कवण बीज साचा बोवे, पत्त डाली दए महकाईआ। आपणे जेहा आपे होवे, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी दुरमति मैल धोवे, निर्मल नीर सीर प्याईआ। अमृत रस निझर चोवे, झिरना एका नाम झिराईआ। निरगुण जोत आत्म बलोवे, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। आत्म सेजा सच सिँघासण आपे सोवे, आलस निंद्रा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि सतिजुग साचे दए जणाईआ। सतिजुग साचा गया जाण, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। हउँ बालक बाल नादान, तेरा भेव कोए ना आइंदा। तूं साहिब चतुर सुघड़ सुजान, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जुग जुग खेल करे महान, तेरी महिमा गणत ना कोए गणाइंदा। कलयुग अन्तिम मेट कूड़ निशान, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। चार वरन करे परवान, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तेरा नाउँ सारे गाण, एका नाउँ आप समझाइंदा। तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा संग मुहम्मद दर दरबार मंगण दान, गुर अवतार सीस झुकाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, परम पुरख पतिपरमेश्वर आपणा बल आप जणाइंदा। एथे ओथे दो जहानां हो प्रधान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां एका नाउँ सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा नाउँ गुण निधान, गुणवन्ता आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन परवान, दर बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त साचे सन्त सारे गाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सतिजुग

मिल्या इक्को दान, पुरख अबिनाशी झोली पाईआ। सोहँ शब्द होए प्रधान, लख चुरासी दए वड्याईआ। पिछला मिटे सर्ब निशान, अग्गे लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका नाउँ दए समझाईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, दूसर अवर ना कोए रखाइंदा। सो पुरख निरँजण निराकार, निरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। हँ ब्रह्म कर पसार, लख चुरासी डेरा लाइंदा। काया माटी दे आधार, नाड़ी चमड़ा सोभा पाइंदा। जोती जाता हो उज्यार, पुरख बिधाता वेस वटाइंदा। इक्क इकांता वेखणहार, अकल कल भेव चुकाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे खुआर, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। ग़रीब निमाणयां पावे सार, जगत नताणयां गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग झोली आप भराइंदा। सतिजुग झोली नाम भण्डारा, हरि जू हरि हरि आप भराईआ। लोकमात दा सच विहारा, बण बिवहारी आप समझाईआ। भगत भगवन्त करे उज्यारा, भगवन मेला सहिज सुभाईआ। सच धर्म दा इक्क दुआरा, सति सतिवादी दए वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कर त्यारा, त्रैगुण अतीता वेखे चाँईं चाँईंआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर इक्को लाए सच्चा नाअरा, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर मन्दिर इक्क सुहाईआ। सतिजुग मन्दिर सच महल्ला, साढे तिन्न तिन्न बंक सुहाया। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, बण सेवक सेव कमाया। भगत फड़ाए आपणा पल्ला, भगवन आपणी दया कमाया। सतिजुग दस्से राह सुखल्ला, साचा मार्ग इक्क दृढ़ाया। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, अटल्ल पदवी दए वखाया। आपणे प्रकाश आपे बल्ला, जोती जोत रुशनाया। सच संदेस एका घल्ला, सो पुरख निरँजण गीत गोबिन्द आप अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग देवे साचा दान, गोपी काहन वेख वखाया। गोपी काहन भगत भगवन्त, घर एका सोभा पाईआ। एका सेजा सोभावन्त, एका मन्दिर खुशी वखाईआ। एका गृह बणाए बणत, एका दर मिले वड्याईआ। एका नाम एका मंत, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग देवे साचा वर, वर दाता आप अख्वाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख करनहार बेपरवाहीआ।

✳ २६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी मेहर सिँघ दे गृह शेख़ पुर ज़िला अम्बाला ✳

सचखण्ड निवासी सच दरबार, दरगाह साची आप लगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाइंदा। शब्दी सुत कर त्यार, सच संदेसा इक्क अलाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर ख़बरदार, दो जहानां वेख वखाइंदा। चौदां लोक दए आधार, चौदां तबक भेव चुकाइंदा। गुर पीर दए उठाल, पैग़म्बर आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आप लगाइंदा। सच दरबार लाए करतार, करता पुरख वडी वड्याईआ। तख़्त निवासी एकँकार, अकल कल आपणी खेल कराईआ। जुग जुग लहिणा देणा दए उतार, कर्ज़ा मकरूज ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, नर हरि आपणा वेस वटाईआ। बोध अगाधा बोल जैकार, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। सृष्ट सबाई पाए सार, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। हुक्मी हुक्म करे वरतार, सच संदेसा इक्क अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। सचखण्ड वसे शाह सुल्ताना, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादी हुक्मराना, जुग जुग हुक्म चलाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, दो जहानां वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क तराना, त्रैगुण अतीता आप सुणाइंदा। करे खेल वड बलवाना, बल आपणा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे सोभा पाइंदा। सच दुआरे राजन राज, शाहो भूप आसण लाईआ। पारब्रह्म प्रभ रचया काज, श्री भगवान वेखे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां रखे लाज, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। निरगुण सरगुण मारे अवाज़, सरगुण निरगुण लए जगाईआ। सति सतिवादी सति चलाए जहाज़, हरिजन बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। लोकमात वेखे मार झात, नेत्र नैण नैण खुलाईआ। गुरमुख बणाए सज्जण साक, सगला संग आप निभाईआ। पाक रसूल पाकी पाक, कलमा नबी नबी पढ़ाईआ। पतिपरमेश्वर प्रगट होया साख्यात, साखी सतिजुग दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे सोभा पाईआ। सच दरबारे एकँकार, इक्क इकल्ला आसण लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दोए दोए जोड़ करन निमस्कार, चरनी सीस सर्ब झुकाइंदा। करोड़ तेतीसा रोवे ज़ारो ज़ार, सुरपति इन्द नाल मिलाइंदा। तेई अवतार बणन भिखार, दर दर अलख सर्ब जगाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद गल अल्फ़ी एका डार, अल्फ़ ये पन्ध मुकाइंदा। उच्ची कूक कूक पुकार, आलमीन इलाही नूर इक्क दरसाइंदा। मुकामे हक़ खेल अपार, हक़ हक़ीक़त आप जणाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, महांबली आपणा वेस वटाइंदा। अमाम अमामां वड सिक्दार, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे चढ़, साचे तख्त सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारे हरि जू चढ़या, सच सिँघासण सोभा पाईआ। निरगुण पल्लू निरगुण फड़या, निरगुण निरगुण बंध बंधाईआ। निरगुण घाड़न निरगुण घड़या, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण अक्खर निरगुण पढ़या, चौदां विद्या ना कोए वड्याईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़या, जन्म मरन विच ना फेरा पाईआ। निरभउ हो कदे ना डरया, भय आपणा सर्ब वखाईआ। आपणा खेल आपे करया, करता पुरख वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वड़, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। गृह मन्दिर सच महल्ला, सचखण्ड निवासी आप सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, आदि जुगादी सोभा पाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, चरन कँवल कँवल चरन चरन चरन आप टिकाइंदा। जोती शब्दी निरगुण निरगुण आपे रल्ला, सरगुण आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा आप वड्याइंदा। सच दुआरा सोभनीक, सोभावन्त आप सुहाईआ। बेऐब परवरदिगार लाशरीक, इक्क इकल्ला खेल कराईआ। मेटणहारा जगत अन्धेरा तारीक, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। मार्ग दस्से इक्क बारीक, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सतिजुग मार्ग लाए ठीक, कलयुग ठीकर भन्न वखाईआ। दूर दुराडा दिसे नज़दीक, नेरन नेरा आपणा फेरा पाईआ। अठ्ठे पहर
४८३ वसे चीत, गुरमुख सज्जण आप जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जाणे साची रीत, रीतीवान वड वड्याईआ। करे ४८३
खेल आप अनडीठ, अनडिठड़ी धार चलाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को गीत, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। काया करे ठंडी सीत, १२
१२ अग्नी तत्त ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी परखणहारा नीत, घर घर बैठा डेरा लाईआ। घर घर अंदर वसे भगवान, नेत्र लोचण नैण दिस किसे ना आइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। आत्म अन्तर देवे ज्ञान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। एका राग सुणाए कान, छत्ती राग मुख शरमाइंदा। अनहद नाद वजाए सच्ची धुन्कान, धुंन आत्मक आप अल्हाइंदा। पंचम सखीआं मेला साचे काहन, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। सतिजुग साचे देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। सुरत सवाणी मिले हाणी राम, रमइया राम आपणे रंग रंगाइंदा। इलाही कलमा दए पैग़ाम, सदा अजां बांग आप सुणाइंदा। नानक गोबिन्द कर प्रणाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे खड़, स्वच्छ सरूप रूप दरसाइंदा। सचखण्ड दवारे स्वच्छ सरूप, सवै शक्ती आप जणाईआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा नज़री आईआ। मेटणहारा जूठ झूठ, सच सुच्च लए प्रगटाईआ। पावे सार पंज तत्त काया कलबूत, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। आत्म

आत्म देवे सच सबूत, परमात्म वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे बैठा सोभा पाईआ। सचखण्ड दवारा लोकमात, मातर भूमी आप बणाइंदा। निरगुण वेखे मार झात, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणा कुण्डा लाहइंदा। चौदां तबक खोल्हे ताक, चौदां हट्ट आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग मेला गुर गुर धार, गुर सतिगुर दए वड्याईआ। वरन बरन करे प्यार, साची सरन इक्क समझाईआ। एका अक्खर कर त्यार, पंच विकारा सत्थर दए कराईआ। बजर कपाटी पत्थर देवे पाड़, दूई दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। अग्नी लग्गे ना तत्ती हाढ़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाड़, शब्दी घोड़े आप चढ़ाईआ। एथे ओथे चले नाल नाल, दो जहानां विछड़ कदे ना जाईआ। रातीं सुत्तयां दरस दए दिखाल, अनदरसी आपणी दया आप कमाईआ। सदा सुहेला करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, गुरुदुआरा मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआला एका नज़री आईआ। समरथ पुरख दीन दयाल, साची सेजा बैठा आसण लाईआ। गुरमुख वेखे छोटे बाल, बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। एका मार्ग दए सखाल, जोती

४८४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड मेला सहिज सुभाईआ। सचखण्ड मेला गुर ४८४

गुर धाम, गुर मूर्त अकाल दृढ़ाइंदा। घर ठाकर स्वामी मिले राम, घर मन्दिर इक्क वड्याइंदा। घर मेला घनईया निरगुण

१२ शाम, साची बंसरी नाम सुणाइंदा। घर पीर पैग़म्बर दए कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाइंदा। घर नानक निरगुण जणाए १२

सति नाम, नाम सति सति बुझाइंदा। घर गोबिन्द गुर गुर करे प्रणाम, पुरख अकाल सीस झुकाइंदा। बण विचोला दो जहान, दोए दोए वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम मिटे निशान, पुरख अबिनाशी आप मिटाइंदा। सतिजुग सच करे प्रधान, सति सतिवादी राह चलाइंदा। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। गुरमुख सज्जण आप पछाण, गुर चेला रूप वटाइंदा। पूरब जन्म दा लहिणा देवे आण, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। भगत भगवन्त मिल मिल खुशी मनाण, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकान, बंक दुआरी बंक सुहाइंदा। रविदास चुमारा लिख लिख लेख महान, साढे तिन्न तिन्न वंड वंडाइंदा। सम्बल खेड़ा वसे नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। सतिजुग साचा करे परवान, साचा लेखा इक्क समझाइंदा। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सोहँ ढोला सारे गाण, आत्म परमात्म परम पुरख भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे देवे वर, वर दाता

आपणी दया कमाइंदा। वर दाता दीन दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। गुरसिख गुर गुर लए उठाल, गुर मन्त्र बूझ बुझाईआ। वेले अन्त ना खाए काल, महांकाल ना भय जणाईआ। सतिगुर पूरा वेले अन्त करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फल लगाए काया डाल, पत्त डाल्ही आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुर गुर लए उठाईआ। गुरमुख गुर गुर एका दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। गुरमुख गुर गुर एका घर, घर एका सोभा पाइंदा। गुरमुख गुर गुर एका वर, नार कन्त रूप वटाइंदा। गुर गुर गुरसिख इक्को अक्खर पढ़, आखर आपणा मेल मिलाइंदा। गुर गुर गुरसिख इक्क दुआरे खड़, सच दुआरा नज़री आइंदा। नाता तुट्टे सीस धड़, जगदीस आपणा रंग रंगाइंदा। सुरती शब्दी मेला कर, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचा काहन, लख चुरासी गोपी वेख वखाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। कलयुग करे पार किनारा, सतिजुग साचा मात धराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गायण साची वारा, वारा इक्को इक्क पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पार किनारा, खाणी बाणी दो जहानी आपणे लेखे लाईआ। चौदां हट्ट हट्ट वणजारा, चौदां तबक तबक नाअरा, हक़ हक़ीक़त
४८५ लाशरीकत शरअ आपणी आप जणाईआ। इक्को तौफ़ीक परवरदिगार करे खेल अगम्म अपार अलख अगोचर जाणे साची धारा, ४८५
धार धार विच्चों प्रगटाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क नाअरा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण
१२ नव नौ सत्त सति सर्ब जीव आत्म परमात्म दए पढ़ाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान आप निरँकारा, कागद कलम ना १२
लिखणहारा, समुंद मस रही कुरलाईआ। बनास्पत करे हाहाकारा, हरि का अन्त ना पारावारा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे भिखारा, दर बैठे अलख जगाईआ। जन भगतां करे आप प्यारा, निहकलंक लै अवतारा, सतिजुग दस्से राह न्यारा, एका नईया नाम चलाईआ। कुदरत कादर वेखणहारा, वेखे विगसे पावे सारा, भगत सुहाए भगत दुआरा, भगवन देवे माण वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान इक्क सहारा, गुरमुखां लाए पार किनारा, अद्धविचकार ना कोए डुबाईआ। सचखण्ड मिले घर बारा, जोती जोत जोत उज्यारा, शब्दी नाद नाद धुन्कारा, रागी नादी वसे बाहरा, गुण आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, लेखा जाणे जीव जंत, गुरमुख बणाए साची बणत, बेअन्त आपणे विच मिलाईआ।

✳ २६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी सेवा सिँघ दे गृह खरड़ ज़िला अम्बाला ✳

साचा किला सचखण्ड, दर घर साचे सतिगुर आसण लाइंदा। जुगा जुगन्तर वंडे वंड, वंडणहारा खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी मुक्के पन्ध, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गायण छन्द, हरि जू ढोला आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई वड़याई बत्ती दन्द, आत्म अनन्द आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण गुजरी चन्द, दो जहानां खेल कराइंदा। पंज तत्त काया जीउँ पिण्ड, जगत खेड़ा वेख वखाइंदा। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, वड सागर रूप वखाइंदा। तेग बहादर एका बिन्द, जगत नाता जोड़ जोड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा किला साचा कोट, हरि मन्दिर दए वड्याईआ। इक्क जगाए निर्मल जोत, नूरो नूर करे रुशनाईआ। सच नगारे लाए चोट, एका धौंसा नाम वजाईआ। साहिब दयाल ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे किले दए वड्याईआ। साचा किला सच महल्ला, सचखण्ड दवारा आप जणाइंदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जुगा जुगन्तर आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणी गंढु दिवाइंदा। निरगुण सरगुण कर कर हल्ला, भय भयानक रूप जणाइंदा। वसणहारा जलां थलां, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाइंदा। सच संदेसा नर नरेसा, पुरख अकाल दीन दयाल एका घल्ला, गोबिन्द गुर गुर आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। साचा किला सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। वेखणहारा एकँकार, दूसर संग ना कोए रलाईआ। घाड़त घड़े ना कोए विच संसार, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। रवि ससि ना कोए उज्यार, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। दीआ बाती ना देवे कोई बाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा किला साचा बंक, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। गोबिन्द मेला आदि अन्त, गुर चेला वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। देवे वड़याई विच जीव जंत, जीवण जुगत जुगत जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। पूत सपूता सुत दुलार, बाली बाला लए उठाईआ। लाल गोपाला हो उज्यार, लालन वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, अलख अगोचर आप कराइंदा। लेखा जाणे जननी जन, पूत सपूता गोद बहाइंदा। पुरख अकाल बेड़ा बन्न्ह, आपणे कंध

उठाइंदा। सच संदेसा देवे मन, एका राग अलाइंदा। हरि का भाणा लैणा मन्न, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सच वसेरा बिन छप्परी छन्न, महल अटल कम्म किसे ना आइंदा। एका नाम सच्चा धन्न, साची वस्त आप दरसाइंदा। कूड़ी क्रिया देणा डंन, खण्डा खड़ग आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव अकाल पुरख, पुरख पुरखोतम आप जणाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता चिखा ना कोए जलाईआ। आपे करे आपणी परख, परखणहारा वड वड्याईआ। आपे देवे आपणा दरस, दरसी आपणा दरस कराईआ। आपे मेटे जगत हरस, तृष्ना हरस ना कोए वखाईआ। आपे लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा फोल फोलाईआ। अमृत मेघ एका बरस, सांतक सति सति वरताईआ। जुगा जुगन्तर लाहे कर्ज, लहिणा देणा दए मुकाईआ। कलयुग आपणा पूरा करे फ़र्ज़, गोबिन्द सूरा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल एकँकार, अकल कलधारी आप जणाइंदा। पूत सपूता कर त्यार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाइंदा। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आप जणाइंदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखणहार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाइंदा। अण्डज जेरज दए हुलार, उत्भुज सेत्ज पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेसा एका एक सुणाइंदा। सच संदेसा हरि जू गीत, गुर गुर आप जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ साचा मीत, दूसर संग ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। सदा सुहेला ठांडा सीत, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। चरन कँवल कँवल प्रीत, कँवल नैण नैण मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाईआ। भेव अभेदा पुरख अकाल, एकँकारा आप जणाइंदा। गोबिन्द सूरा वेखे लाल, लालन आपणे अंग लगाइंदा। सेवा लाए काल महांकाल, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। गुरसिख वेखे साचे लाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा आप वड्याइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सतिगुर पूरा आप सुहाईआ। एका नाम महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आदि जुगादि जुग जुग खेल श्री भगवन्त, पेखणहारा बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर दरवेश रहिण मंगत, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर गुर एका बूझ बुझाईआ। गुर गुर बूझ देवे करतार, करता पुरख दया कमाइंदा। अन्तिम मेला विच संसार, गुर चेला नाउँ धराइंदा। कूड़ी क्रिया जगत विहार, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा।

सच सुच्च सच वणजार, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यार, गुरमुख गुर गुर आप प्रनाइंदा। किला कोट ना कोए आधार, इट्ट गारा कम्म किसे ना आइंदा। हुक्मे अंदर फ़रमाबरदार, बण सेवक सेव कमाइंदा। झूठा किला तज विच संसार, साचा छिला पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द आपणी कारे लाइंदा। गोबिन्द किला देणा तज, पुरख अकाल तजाईआ। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सचखण्ड दवारे बहणा सज, पुरख अकाल गोद सुहाईआ। कूड़ नगारा रिहा वज्ज, चारों कुण्ट करे शनवाईआ। दीन दयाल तेरी रखे लज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फ़तेह डंका जाए वज्ज, दो जहानां करे शनवाईआ। करे खेल पुरख समरथ, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी पाए नथ्थ, लख चुरासी आप भुवाईआ। साचा मार्ग दए दस्स, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म इक्क मनाईआ। जगत किला पुरी अनन्द, चार दीवारी आप जणाइंदा। हरि का किला सचखण्ड, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, निरगुण नूर डगमगाइंदा। इक्को पुरख अकाल गाए छन्द, गोबिन्द गीत इक्क अल्हाइंदा। दो जहानां मुक्के पन्ध, दर दुआर आप सुहाइंदा। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक दूई द्वैत झूठी ढाउणी कंध, कलर कंध रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। कलयुग किला देणा त्याग, त्यागी तेरे नाम वड्याईआ। दो जहानां लगे भाग, भाग आपणा लैणा वंडाईआ। तेरा नूरी जगे चिराग़, दो जहान करे रुशनाईआ। कलयुग जीवां धोणा दाग़, दुरमति मैल लुहाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे आग, तत्तव तत्त ना लागे राईआ। गुरमुखां देणा साचा राज, दरगाह साची आप बहाईआ। पुरख अबिनाशी रचया काज, लोकमात वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण सरगुण चलाए जहाज़, साचा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। शब्द अगम्मी मारे इक्क आवाज़, आत्म परमात्म करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा हरि नरायण, गुर गोबिन्द आप जणाइंदा। गोबिन्द पेखे आपणे नैण, निज नेत्र दरस कराइंदा। लोकमात चुक्के लैण देण, लहिणा देणा पार कराइंदा। पुरख अकाल साक सैण, सज्जण आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़ मात पित भाई भैण, पूत सपूत गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप वड्याइंदा। गोबिन्द किला देणा छड्ड, पुरख अकाल जणाईआ। पार किनारा तेरा हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। पिता पूत रिहा सद्द, घर साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड दवारे बहणा सज, सच सिंघासण सोभा पाईआ। दरसन करना रज्ज रज्ज, नेत्र नैण खुल्हाईआ। ग़रीब निमाणयां

पड़दा लैणा कज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच संदेसा सुण गोबिन्द, गुर आपणी खुशी मनाइंदा। कवण वेला प्रभ मेटे चिन्द, चिंता अवर ना कोए रखाईआ। आपणे लेखे लाए आपणी बिन्द, पिता पूत ना कोए अख्वाइंदा। गहर गम्भीर तूं सागर सिन्ध, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। मंगां मंग दर जगदीस, दोए जोड़ जोड़ निमस्कार। तेरा हुक्म मन्नी हदीस, मेरे साहिब परवरदिगार। कवण वेला छत्र सोहे सीस, सचखण्ड सच्चे दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा देवे आपणी वार, सच संदेसा श्री भगवान, गुर गोबिन्द आप जणाईआ। पुरी अनन्द छड्ड निशान, सच निशान दए वखाईआ। सचखण्ड दवार सति मकान सति सतिवादी आप बणाईआ। आदि जुगादि वसे भगवान, ना मरे ना जाईआ। गुर अवतारां देवे दान, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा चुकाए विच जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। साचा किला कर त्यार, कोट आपणी बणत वखाईआ। एका सस्सा गुण निधान, सतिगुर आपणे रंग रंगाईआ। होड़ा उपर वड बलवान, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। दो जहानां वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा नैण उठाईआ। सम्बल खेड़ा इक्क महान, गुर चेला मेल मिलाईआ। दाता दानी देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। पुरख अकाल हो मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेख इक्क समझाईआ। साची सिख्या लई सिख, हरि जू तेरी वड वड्याईआ। आपणी हथ्थीं लेखा दे लिख, लेखा लिखणा बिन कलम शाहीआ। लोकमात गुरमुख बणाए सिख, सिख आपणा रूप वटाईआ। दर दुआरे मंगी भिख, साची भिच्छया इक्क वरताईआ। जिस ते किरपा तिस तिस मिल्या सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरी अनन्द दा अन्त त्याग, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। तेरा लेखा कन्त सुहाग, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। पुरख अकाल चलाए तेरा जहाज़, बण खेवट खेटा सेव कमाइंदा। वेले अन्तिम रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तेरा नाउँ रख ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त संदेसा नर नरेशा एको वार जणाइंदा। अन्त संदेसा एकँकार, एका वार जणाईआ। गोबिन्द तेरा सच दुआर, दरगाह साची दए वखाईआ। पुरख अकाल वेखणहार, नेत्र पेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे मेले चाँईं चाँईंआ। चाउ घनेरा घर सच्च, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण

मार्ग दस्स, एकँकारा अंग लगाइंदा। आदि निरँजण कर प्रकाश, दीपक जोत जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता कर कर वास, गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। श्री भगवान बण बण दास, सेवक सेव आप कमाइंदा। पारब्रह्म वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। गोबिन्द मंडल साची रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। इक्क इकेला वसे पास, हरि जू विछड़ कदे ना जाइंदा। सरगुण पूरी करे आस, निरगुण आसा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि करतार, करता पुरख आप कराईआ। गोबिन्द मेला विच संसार, सो पुरख निरँजण मेल मिलावा करे साचे थाईंआ। पुरी अनन्द अनन्द विहार, गुजरी चन्द मिले वड्याईआ। पंज तत्त तत्त पसार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश करी कुड़माईआ। गुर मूर्त निराकार, अनभउ प्रकाश रिहा समाईआ। अजूनी रहित नज़र ना आए विच संसार, गोबिन्द अंदर बैठा डेरा लाईआ। काया किला ना कोए विचार, बंक दुआर ना कोए सुहाईआ। एका मन्दिर कर त्यार, त्रैभवण धनी आपणे अंदर रिहा छुपाईआ। साचा बोला बोल जैकार, एका डंका फ़तेह वजाईआ। बदले चोला आप करतार, हौला भार दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर इक्क दरसाईआ। साचा मन्दिर सच सिँघासण, दर घर साचे आप बहाइंदा। लेखा जाणे पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता वेख वखाइंदा। लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी अकाश, आकाशन गगन मंडल डेरा ढाहइंदा। गुर गुर जोत नूर प्रकाशन, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। गोबिन्द मेला पुरख अकाल, निरगुण सरगुण बणे साथन, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत किला आप तजाइंदा। जगत किला डेरा ढाह, पुरी अनन्द तजाईआ। गुरसिखां बणया आप मलाह, गोबिन्द दाता बेपरवाहीआ। साची सिख्या इक्क समझा, साची करे नाम पढ़ाईआ। माया ममता मोह तजा, पुरख अकाल ओट जणाईआ। डूँघे सागर वड़ना अन्तर इक्को चा, भय भउ ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांह, अग्गे बैठा साचा माहीआ। पुरख अकाल लैणा ध्या, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। साचे मन्दिर लए बहा, सच दुआरा इक्क वखाईआ। जिस घर वसे सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप कराईआ। पुरी अनन्द विच्चों गुरमुख कढ्ढ, गुर गोबिन्द खेल कराइंदा। मातलोक दी पार हद्द, आपणी हथ्थीं पार कराइंदा। साचे किले आवे छड्ड, सचखण्ड दवारे आप बहाइंदा। अट्ठे पहर रहे अनन्द, अनन्द अनन्द विच मिलाइंदा। गुजरी नूर चाढ़े चन्द, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। पुरी अनन्द तुट्टा नाता, गुरसिखां गुर समझाईआ। अग्गे

मिले पुरख बिधाता, आपणी गोदी रिहा टिकाईआ। इक्को पिता इक्को माता, जन जणेंदी मइया इक्क अख्वाईआ। एका चरन एका नाता, एका बन्धन रिहा पाईआ। एका मेल पुरख समराथा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। गुरमुखां देवे साची दाता, सति सन्तोख धीरज जत आप वरताईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वाता, पुरख अकाल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे किले दए वड्याईआ। किला छड्डया अनन्द पुर, पुरी गोबिन्द आप वसाईआ। गुरसिखां लेखा लिख्या धुर, धुर मस्तक लेख जणाईआ। चरन कँवल प्रभ जाणा जुड़, जोड़ी आत्म परमात्म दए जुड़ाईआ। पुरख अकाल पए बौहड़, दीन दयाल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वखाया आपणा घर, गोबिन्द गुरमुखां रिहा जणाईआ। पुर अनन्द किला दूर, दूर दुराडा आप जणाइंदा। पुरख अकाल हाज़र हज़ूर, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। जो जन सरसे लथ्थे पहले पूर, पिछला आपणा अंक पढ़ाइंदा। अन्तिम मेला मिले ज़रूर, ज़रूरत आपणी आप वधाइंदा। सर्ब कला हरि भरपूर, परम पुरख भेव खुल्हाइंदा। सचखण्ड दवारे गुरसिख खड़े ज़रूर, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। कलयुग किला तपे वांग तन्दूर, अग्नी तत्त नाल रलाइंदा। गोबिन्द पुरख अकाल करे मन्ज़ूर, मुफ़त आपणा नाम विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वखाए साचा हरि, सचखण्ड दवारा

४६१ आप सुहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोबिन्द लेखा विच जहान, कलयुग अन्तिम वेखे आण, निहकलंक बली ४६१

बलवान, किला कोट सच निशान, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकान, उपर वसे श्री भगवान, दीपक जोत जगे महान, अनहद

१२ राग सुणाए धुन्कान, बोध अगाधा एका राग अल्हाइंदा। किला छड्डया जगत जहान, अग्गे मेला पुरख सुजान, दोहां विचोला १२

नौजवान, गुरसिख गुर गुर मिल मिल खुशी मनाण, पाया पुरख हरि मेहरवान, हरख सोग सर्ब मिट जाण, इक्को सस्सा करे कल्याण, चार दीवारी ना कोए निशान, हँ ब्रह्म देवे दान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी खेल खिलाइंदा। गोबिन्द वेखे सूरा आण, शब्दी चिल्ला तीर कमान, उच्चे टिल्ले खेल महान, पर्बत चोटी होए हैरान, समुंद सागर सर्ब पछताण, हरि हरि भेव कोए ना आइंदा। गुरमुख गुर चरनी बह बह खुशी मनाण, साचा किला मिल्या विच जहान, नेड़ ना आए पंज शैतान, आसा तृष्ना होए वैरान, हउमें हंगता माया ममता पोह ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा सचखण्ड दवार, जिस गृह वसे आप निरँकार, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणा आसण लाईआ।

✳ २७ हाढ़ २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह चण्डीगड़्ह ✳

जै जैकार जगत जुग चार, चार वरन जणाईआ। जै जैकार गुर अवतार, पीर पैग़म्बर रहे गाईआ। जै जैकार विष्न ब्रह्मा शिव अधार, जै जैकार ब्रह्मण्ड करे रुशनाईआ। जै जैकार सृष्ट सबाई संसार, लख चुरासी जीवण जीव जुगत वड्याईआ। जै जैकार आत्म परमात्म आधार, पारब्रह्म ब्रह्म समझाईआ। जै जैकार घर मन्दिर दुआर, निज घर एका नाद सुणाईआ। जै जैकार शब्द धुन्कार, बोध अगाधा राग अल्ाईआ। जै जैकार गुरमुख प्यार, गुर गुर मेल मिलाईआ। जै जैकार हरी दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्ाईआ। जै जैकार मिले निरँकार, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति जैकारा इक्क लगाईआ। जै जैकार श्री भगवन्त, भगवन आपणा राग अल्ाइंदा। जै जैकार साचे सन्त, सतिगुर आपणी बूझ बुझाइंदा। जै जैकार हरि का मंत, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। जै जैकार आदि अन्त, पुरख अकाल इक्क वखाइंदा। जै जैकार महिमा अगणत, लेखा लिख ना कोए मुकाइंदा। जै जैकार बणाए बणत, मूर्ख मूढ़ चतुर सुजान वड्याइंदा। जै जैकार तोड़े गढ़ हउमें हंगत, माया ममता मोह मिटाइंदा। जै जैकार ज्ञान बोध आत्म पंडत, आत्म परमात्म खेल कराइंदा। जै जैकार नाता तोड़े जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज मोह मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा इक्क सुणाइंदा। जै जैकार गुरू गुरदेव, नमो नमो नमो वड्याईआ। जै जैकार अलख अभेव, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जै जैकार साची सेव, रसना जिह्वा कार कमाईआ। जै जैकार आत्म मेव, परमात्म रस वखाईआ। जै जैकार निहचल धाम वखाए इक्क निहकेव, देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा इक्क अल्ाईआ। जै जैकार सर्ब गुणवन्त, गुणवन्ता आप जणाइंदा। जै जैकार श्री भगवन्त, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रसना गाइंदा। जै जैकार मणीआं मंत, मन वासना मेट मिटाइंदा। जै जैकार माणस जन्म बणाए बणत, मानुख आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा इक्क लगाइंदा। जै जैकार दो जहान, दो जहानां वाली आप सुणाइंदा। जै जैकार खेल भगवान, भगवन आपणा भेव चुकाइंदा। जै जैकार नाम निधान, गुण निधाना वेख वखाइंदा। जै जैकार कराए हरि सुल्तान, शाह सुल्तान आपणा नाउँ वड्याइंदा। जै जैकार हरिजन सज्जण मेले आण, मेल मिलावा आप कराइंदा। जै जैकार लेखा जाणे जीव जहान, जीवण जुगत जगत समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति जैकारा इक्क अल्ाइंदा। जै जैकार चार वरन, सति जैकारा आप जणाईआ। जै जैकार चुकाए मरन डरन, जिस जन सतिगुर बूझ बुझाईआ। जै जैकार खोल्हे हरन फरन, नेत्र ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ।

जै जैकार करता पुरख मिले करनी करन, कीमत करता आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क सुणाईआ। जै जैकार गोबिन्द गीत, हरि सतिगुर आप अलाइंदा। जै जैकार सतिजुग रीत, सति पुरख निरँजण आप चलाइंदा। जै जैकार खेल अनडीठ, अनडिठड़े धाम आप कराइंदा। जै जैकार करे कराए पत्तत पुनीत, पत्तत पापी आप तराइंदा। जै जैकार काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत्त तत्त बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार एका नाम अलाइंदा। जै जैकार साचा नाउँ, हरि निरँकार आप जणाइंदा। जै जैकार सभनी थाउँ, पुरख अकाल आप रखाइंदा। जै जैकार करे सच न्याउँ, सच अदालत आप कमाइंदा। जै जैकार भगत भगवन्त पकड़े बांहों, फड़ बांहों गले लगाइंदा। जै जैकार निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, निमाणयां आपणा रंग रंगाइंदा। जै जैकार करे कराए सच्चा शाहो, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा एका लाइंदा। सति जैकारा सोहँ सो, सतिगुर पूरा आप लगाईआ। सतिजुग बीज साचा बो, हरिजन बूटा मात वखाईआ। दुरमति मैल दुरजन धो, निर्मल नीर सीर प्याईआ। पंच विकारा देवे कोह, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। गुरसिख गुर चरन जाए छोह, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। ज्ञान नेत्र करे लो, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा इक्क सुणाईआ। सोहँ सो सच जैकारा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सतिजुग करे सच विहारा, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई करे प्यारा, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। राउ रंक इक्क अधारा, ब्रह्म पारब्रह्म वंड वंडाइंदा। ख़ालक ख़लक वेखणहारा, मख़लूक आपणा भेव चुकाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, सो पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। एका अक्खर कर त्यारा, त्रैगुण माया पड़दा लाहइंदा। उच्ची कूक बोल जैकारा, साचा नाअरा आप सुणाइंदा। जै जैकार होए संसारा, ब्रह्मण्ड खण्ड गीत गोबिन्द इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा एकँकारा, अकल कल धारी आपणा नाउँ वड्याइंदा। सति जैकारा नाम अनमुल्ला, श्री भगवान आप जणाइंदा। आदि जुगादि कदे ना तुला, जगत तोल ना कोए वखाइंदा। जन भगतां देवे आप बौह मुला, करता कीमत ना कोए लाइंदा। आत्म परमात्म कराए सुलाह, दूई द्वैत मेट मिटाइंदा। भाग लगाए हरिजन कुला, कुल साची आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम जैकारा इक्क सुणाइंदा। नाम जैकारा हरिजन सुण, सुंन अगम्म तजाईआ। लेखा चुक्के अन्तर मुन, नेत्र मिले ना कोए वड्याईआ। साहिब जणाए आपणा गुण, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। सच अनाद एका धुंन, धुंन रागी राग सुणाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख चुण, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा हरिजन आप सुणाईआ। सच जैकारा नाम निधान, जन भगतां आप सुणाइंदा। दिस ना आए जीव जहान, जागरत जोत डगमगाइंदा। काया मन्दिर वसे मकान, साचा खेड़ा आप सुहाइंदा। अंदर वड़ वड़ देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। गुरमुख विरला वेखे आण, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। सोहँ अक्खर कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सारे गाण, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। सोहँ रूप आप भगवान, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। महाराज शेर सिँघ वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। विष्नूं वेखे मार ध्यान, विश्व आपणा नैण खुल्हाइंदा। भगवन जै जैकार दो जहान, आदि जुगादि आपणा रंग वखाइंदा। कलयुग अन्तिम गुरमुख वेखे बाल अञ्याण, फड़ बांहों गले लगाइंदा। वस्त अमोलक देवे दान, दाता दानी आप वरताइंदा। जै जैकार सच निशान, जगत निशाना हथ्थ वखाइंदा। गुरमुख गुर गुर मेले आण, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार आपणा नाउँ वखाइंदा।

मेहर करे हरि मेहरवान, महिमा आपणी आप जणाइंदा। आत्म अन्तर दे ज्ञान, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। दीपक जोती नूर महान, गृह मन्दिर आप टिकाइंदा। अनहद शब्द नाद धुन्कान, राग अनादी आप अल्हाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म वेखे मार ध्यान, ईश जीव जोड़ जोड़ाइंदा। किरपा करे श्री भगवान, भगवन आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया बंक इक्क सुहाइंदा। मेहरवान श्री भगवन्त, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। गुरमुख मेला नार कन्त, घर मन्दिर खुशी मनाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। देवे वड़याई विच जीव जंत, जीवण जुगत दए समझाईआ। आत्म परमात्म साचा मंत, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरिजन मेले थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र उठाए बेनज़ीर, नज़र आपणी आप उठाइंदा। बदलणहारा तकदीर तकसीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। त्रैगुण माया कटे ज़ंजीर, पंज तत्त आपणे रंग रंगाइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा सीर, निझर झिरना आप झिराइंदा। हउमे हंगता कढ्ढे झूठी पीड़, सच सुच्च आप समझाइंदा। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क रखाइंदा। मेहर नज़र रखे करतार, हरिजन साचे वड वड्याईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, सतिगुर आपणे चरन बंधाईआ। हरन फरन

नेत्र खोल्ह अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाह आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म कर उज्यार, निज नेत्र दरस वखाईआ। घर विच घर खेल करे अपार, अपरम्पर दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र एका नैण तकाईआ। एका नैण एका अक्ख, एका अक्खर हरि पढ़ाइंदा। हरिजन करे हरि जू वक्ख, वक्खर आपणी धार चलाइंदा। दरसन देवे हो प्रतख, प्रतख आपणा रूप वटाइंदा। अन्तर अन्तर मार्ग दस्स, जगत बसन्तर आप बुझाइंदा। रैण अन्धेरी मेटे मस्स, जोत निरँजण चन्द चढ़ाइंदा। तीर निराला मारे कस, शब्दी बाण चलाइंदा। घर विच घर मेला हस्स हस्स, गुरमुख गुर गुर आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नस्स नस्स, दो जहानां बण बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। मेहरवान दयानिध ठाकर स्वामी, आपणी दया आप कमाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घर घर वसे सच्चा माहीआ। शब्द अगम्मी जाणे बाणी, बोध अगाधा करे पढ़ाईआ। अमृत देवे सच्चा पाणी, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। आवण जावण चुक्के काणी, लख चुरासी फंद कटाईआ। सुरती शब्दी साचा हाणी, मेल मिलावा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र जिस जन उपर आपे पाईआ। मेहर नज़र रखे प्रभ आप, आपणी दया आप कमाइंदा। कोटन जन्म दा मेटे पाप, पत्तत पापी पार तराइंदा। रसना जिह्वा

४६५ दस्से जाप, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। हँ ब्रह्म मेटे संताप, संसा रोग ना कोए रखाइंदा। एका मन्त्र एका पूजा ४६५

एका पाठ, गुरदेव इष्ट इक्क वखाइंदा। इक्क सरोवर मारे ठाठ, तट किनारा इक्क जणाइंदा। एका सतिगुर वखाए साचा

१२ हाट, चौदां लोक मुख शरमाइंदा। चौदां तबक वखाए डूँग्घे खात, मुकामे हक़ आपणा आसण लाइंदा। मेहरवान पाकी १२

पाक, परवरदिगार आपणी रहिमत आप कमाइंदा। मुरीद मुर्शद बणाए सज्जण साक, सगला संग आप निभाइंदा। गुर पीर देवे साचा साथ, हरि सज्जण मेल मिलाइंदा। मेहरवान आत्म काया ताकी खोल्हे ताक, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। नज़री आए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। हरि नैण मेल अक्ख, आखर आपणा रंग वखाईआ। करनहारा लखों कक्ख, कक्खों लख दए बणाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, घर साचे करे रुशनाईआ। गुरसिख पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी करे बन्द खुलास, बन्दीखाना राए धर्म दए तुड़ाईआ। एथे ओथे दो जहान वसे पास, आदि अन्त आपणा संग वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी खेलणहारा खेल तमाश, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां ज़िमीं असमाना आपणा फेरा पाईआ। मेहरवान मेहरवान शहिनशाह शाहो शाबाश, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण नूर नूर नूर रुशनाईआ। मेहरवान निरगुण नूर, नूर नुराना डगमगाइंदा। सदा सुहेला हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा खेल कराइंदा। सर्ब कलां आपे भरपूर, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। जिस जन बख़्शे चरन धूढ़, मस्तक टिक्का एका लाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, आपे आपणा गुण जणाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग गूढ़, उतर कदे ना जाइंदा। सतिगुर पूरा सरबग सूर, सूरबीर इक्क अख्वाइंदा। अनहद अनाद वजाए साची तूर, तुरीआ राग आप अलूाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेटणहारा सर्ब कसूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। मेहरवान दीन दयाल, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण खेल महान, हरि पुरख निरँजण वेखे चाँईं चाँईंआ। एकँकारा देवे दान, दाता दानी वड वड्याईआ। आदि निरँजण नूर महान, घर घर दीप करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वड बलवान, बलि बलि आपणा आप प्रगटाईआ। श्री भगवान सच निशान, घर साचे दए वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे मार ध्यान, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर पूरा निरगुण सरगुण किरपा करे आण, किरपन आपणे अंग लगाईआ। सच संदेसा देवे धुर फ़रमाण, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पुरख पुरखोतम सीस सर्ब झुकान, दर बैठे ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि मंगण दान, खाली झोली अग्गे डाहीआ। मेहरवान इक्क भगवान, देवणहारा सभनी थाईंआ। जुग जुग लोकमात होए प्रधान, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। भगत भगवन्त रखाए आण, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां देवे ज्ञान, सति मन्त्र इक्क दृढ़ाईआ। गुरमुख सुणाए राग साचे कान, अनहद नादी नाद वजाईआ। गुरसिखां उपर होए आप मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला एका नूर इलाहीआ। मेहरवान बिस्मिल धार, विश्व आपणी खेल कराइंदा। गुरमुख गुर गुर कर प्यार, हरिजन हरि हरि रंग रंगाइंदा। घर विच घर वेखे विगसे पावे सार, मन्दिर अंदर डूँग्घी कंदर सोभा पाइंदा। नाद अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी गीत धुन्कार संगीत आपणा राग अलूाइंदा। सुणे सुणाए सुणनेहार, अंदर बाहर पावे सार, गुपत ज़ाहर खेल खलाइंदा। गुरमुख गुर गुर लए उठाल, आप आपणा मेल मिलाइंदा। हरिजन वेखे साचे लाल, पूत सपूता गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर मेहरवान आपणे हथ्थ रखाइंदा ।

४६६ १२

✳ २७ हाढ़ २०१६ बिक्रमी नथ्था सिँघ दे गृह पिण्ड बडहेड़ी ज़िला अम्बाला ✳

सो पुरख निरगुण वड मेहरवान, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण धुर फ़रमाण, सति सतिवादी आप जणाइंदा। एकँकारा देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आदि निरँजण हो प्रधान, नूर नुराना नूर धराइंदा। अबिनाशी करता खेल महान, दो जहानां आप कराइंदा। श्री भगवान सच निशान, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल सचखण्ड सच्चे मकान, सच दुआरा आप वड्याइंदा। भूपत भूप बण राजान, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। तख्त निवासी नौजवान, दर घर साचे सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल हरि निरँकार, आदि पुरख आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दवारे हो उज्यार, थिर घर आपणा कुण्डा लाहीआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। पूत सपूता कर त्यार, सुत दुलारा इक्क प्रगटाईआ। थिर घर साचे देवे वाड़, गृह मन्दिर माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा हरि निरँकार, आदि जुगादी इक्क सुणाइंदा। सचखण्ड सोहे सति दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। तख्त निवासी शाह सिक्दार, हुक्म आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी पुरख अकाल, इक्क इकल्ला आप कराईआ। सचखण्ड वसणहारा सच्ची धर्मसाल, दरगाह बैठा आसण लाईआ। करे खेल बेमिसाल, बेनज़ीर बेपरवाहीआ। मुकामे हक़ नूरी जल्वा जलाल, परवरदिगार आपणा वेस आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाईआ। दरगाह साची सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। निरगुण मेला नारी कन्त, कन्त कन्तूहल साची सेज आप हंढाइंदा। सति दुआर बणाए बणत, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। निरगुण निराकार अजूनी रहित आपणा मार्ग आपे दस्स, साचा राह आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे आपे वड़, अंदर मन्दिर सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारा ऊँच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, सच सिँघासण बैठा डेरा लाईआ। सच संदेस नर नरेश एकँकारा एका घल्ला, एका एक करे पढ़ाईआ। पूत सपूत फड़ाए पल्ला, शब्दी शब्द गंढु पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, जुग जुग आपणी कार

कमाईआ। आदि अन्त श्री भगवान, निरगुण आपणा खेल कराइंदा । वेखे विगसे दो जहान, दोए दोए धार आप हो आइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, परम पुरख वेस वटाइंदा। शब्दी सुत वड बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। वस्त अमोलक दे दे दान, दाता दानी झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे आपणा रंग रंगाइंदा। सच दुआरे साचा रंग, सतिगुर पूरा आप रंगाईआ। खेले खेल सूरा सरबंग, पारब्रह्म वड वड्याईआ। शब्द अगम्मी वजाए मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाईआ। निरगुण जोत चाढ़े चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी बण बख्शंद, बख्शश आपणी आप समझाईआ। आदि जुगादी गीत सुहागी छन्द, साचा सोहला आपे गाईआ। अन्तर अन्तर परमानंद, एका सुख रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आदि अन्त वेस अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सचखण्ड दवारे डेरा लाइंदा। शब्दी सुत फड़ाए पल्ला, थिर घर आपणा बन्धन पाइंदा। जल थल महीअल आपे रल्ला, डूँघी कंदर समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत आपणा फेरा पाइंदा। सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या विश्व धार, पारब्रह्म प्रभ आप समझाईआ। निष्अक्खर अक्खर कर त्यार, आख़र आपणी विद्या आप जणाईआ। लिखण पढ़न तों वसे बाहर, बेअन्त बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर खेल अपार, त्रैभवण धनी निरगुण आपणा मार्ग आपे लाईआ। एका सुत दे सहार, अबिनाशी अचुत्त करे प्यार, पूत सपूता गोद बहाईआ। रुत्त सुहाए खिड़े गुलज़ार, विष्न ब्रह्मा शिव लए उभार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंचम वेखे आप अखाड़, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, आपणा बन्धन पाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, लख चुरासी कर त्यार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख एका नर, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि नर नरायण, एकँकार इक्क अख्वाइंदा। रसना कोए ना सके कहिण, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप चुकाए लहण देण, सब दा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारे हरि जू वड़या, निरगुण आपणा रूप दरसाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़या, नज़र किसे ना आईआ। आपणी विद्या आपे पढ़या, आदि जुगादि करे पढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे आपे खड़्या, साख्यात निरगुण नूर कर रुशनाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या,

४६८ १२

घड़ वेखे चाँईं चाँईंआ। ना जन्मे ना कदे मरया, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एका एक सुहाईआ। सच दुआरा श्री भगवान, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्रधान, लख चुरासी खेल कराइंदा। बोध अगाधा इक्क ज्ञान, अन्तर आत्म आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म वरताइंदा। रवि ससि सूरज चन्न देवे प्रकाश साचे भान, जोती नूर नूर डगमगाइंदा। करे खेल नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर धरत धवल वेखे आण, धरनी आपणे रंग रंगाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत दे ज्ञान, जीव जंत हरि पढ़ाइंदा । गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात मात निशान, निरगुण सरगुण निशाना इक्क वखाइंदा। शब्द सरूपी देवे दान, नाम निधाना झोली पाइंदा। रसना जिह्वा सारे कहिण, बत्ती दन्द सिफ्त सलाहइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, निरगुण सरगुण सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खेल वखाइंदा। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, करे कराए हरि निरँकार। आदि जुगादी गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ाए पलड़ा, शब्द अगम्मी कर त्यार। सच संदेसा एका घलड़ा, धुर दी बाणी बोल जैकार। जोती शब्दी आपे रलड़ा, निरगुण रूप अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ बरसे ठंडा ठार। अमृत मेघ देवे बरस, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। भगत भगवन्त मिटाए हरस, सांतक सति सति कराईआ। घर घर विच वखाए दरस, आत्म परमात्म पड़दा लाहीआ। लेखा चुकाए अर्श फर्श, जल्वा नूर इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी हरि करतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप कराइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेखे वारो वार, लोकमात फेरा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर ख़बरदार, साची ख़बर आप सुणाइंदा। बणया रहे मददगार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। राती रुती थिती जाणे वार, अग्नी पौण पाणी आपणे हुक्म रखाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दो जहानां चरनां हेठ दबाइंदा। चौदां लोक खेल निरँकार, अक्खर आपणा आप सुणाइंदा। चौदां तबक एका नाअर, नाअरा हरि हरि आप अलाइंदा। हक़ हक़ीक़त कर विचार, लाशरीक खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दरगाह साची आप वड्याइंदा। दरगाह साची सच टिकाणा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। शाहो भूप बण साचा राणा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। गुर अवतार रखे आपणे भाणा, साचा भाणा आप मनाइंदा। शब्द अनादी देवे गाणा, आत्म रागी राग अलाइंदा। अमृत रस पीणा खाणा, तृष्ना तृखा भुख

मिटाइंदा। निर्मल जोत नूर महाना, घर घर विच आप टिकाइंदा। खेले खेल श्री भगवाना, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। आदि जुगादी वड मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क प्रगटाइंदा। सच दुआरा साचा घर, हरि सतिगुर आप प्रगटाईआ । सच सिँघासण बैठा चढ़, निरगुण आपणा आसण लाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर शब्द सरूपी आपे फड़, आपणा बन्धन पाईआ। जुगा जुगन्तर देवणहारा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साची सिख्या लैणी सिख, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पावे भिख, भिखक झोली सर्ब भराइंदा। जोत सरूपी निरगुण धार निरवैर एका आए दिस, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल लैणा जाण, श्री भगवान आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग निरगुण सरगुण होए प्रधान, नाम प्रधानगी आप कमाइंदा। लिख लिख लेखा जगत महान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकार अकल कल धारी आप जणाइंदा। अकल कलधारी हरि जू आप, आपणा भेव आप जणाईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, लख चुरासी गोद उठाईआ। जुग जुग मेटणहारा रोग संताप, संसा दुःख दए मिटाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवणहारा जाप, आपणा नाम करे पढ़ाईआ। मेटणहारा तीनों ताप, त्रैगुण माया बन्धन दए तुड़ाईआ। आपणा रखे वड प्रताप, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी धार चलाईआ। निरगुण धार अलखणा अलख, अलख अगोचर आप चलाइंदा। सति सरूपी हो प्रतख, जोती जामा वेस वटाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा । सदा सुहेला मार्ग दस्स, बण रैहबर राह वखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, प्रगट आपणा खेल वखाइंदा। पावे सार चौदां हट्ट, चौदां तबकां पड़दा लाहइंदा। लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, सर सरोवर फोल फोलाइंदा। वसणहारा घट घट, घर घर आपणा भेव चुकाइंदा। खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताइंदा। जन भगतां मार्ग साचा दस्स, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सुरती शब्दी साचे मंडल पाए रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। आत्म परमात्म वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म खेले खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता आपणा गुण आप समझाइंदा। ईश जीव दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाश, दो जहानां फेरी पाइंदा। हरिजन पूरी करे आस,

निरासा कोए नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि सचखण्ड दवारे साचे खड़, दो जहानां एका नैण उठाइंदा। दो जहानां एका अक्ख, नेत्र नेत्र नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी हो प्रतख, निरगुण आपणी धार चलाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लख चुरासी नालों करे वक्ख, फड़ फड़ बांहों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म मार्ग साचा दस्स, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा नूर करे रुशनाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। निरगुण धारों निरगुण जम्म, मात पित ना कोए बणाइंदा। जन भगतां बेड़ा जुग जुग बन्न्ह, सिर आपणे भार उठाइंदा। एका नाम देवे धन, धन ख़ज़ीना इक्क लुटाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, छत्ती राग भेव ना आइंदा। आपे बणे जननी जन, गुरमुख गुर गुर गोद उठाइंदा। आसा मनसा तृष्ना देवे बन्न्ह, मन ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे आप जगाइंदा। हरिजन साचा जाए जाग, जागरत जोत आप जगाइंदा। मन वैरागी होए वैराग, जगत वैराग ना कोए रखाइंदा। झूठी तृष्ना बुझे आग, अग्नी तत्त ना कोए तपाइंदा। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, दुरमति मैल धुवाइंदा। घर दीपक जोत जगे चिराग़, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। जुग जुग वेखे वेखण योग, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां मेला धुर संजोग, गुर चेला जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म सोहँ साची चोग, हँसा माणक मोती मुख रखाईआ। लेखा चुक्के त्रै त्रै लोक, लोक परलोक दए वड्याईआ। सतिजुग सुणाए सच सलोक, साचा सोहला आपे गाईआ। हरि का भाणा कोए ना सके रोक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लोकमात सचखण्ड दवारा बणाए सच्चा कोट, जिस दुआरे चरन छुहाईआ। गुरमुखां बख्शे इक्को ओट, पुरख अकाल होए सहाईआ। नाता तुट्टे वरन गोत, जात पात ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त आपणा रंग वखाईआ। आदि अन्त हरि हरि रंग, दिस किसे ना आइंदा। गुरमुख सेजा सच पलँग, सतिगुर पूरा सेज हंढाइंदा। अन्तर आत्म इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। सति सरूपी चढ़े चन्द, चन्द चांदनी आप चमकाइंदा। गीत सुहागी गाए छन्द, गोबिन्द सोहला राग अल्हाइंदा। पंच विकारा खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। सुरत सवाणी ना होए रंड, गुर शब्दी मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सच दुआर, सति सतिवादी

आप सुहाईआ। गुरमुखां करे आप प्यार, गुरसिख मेले चाँईं चाँईंआ। हरिजन खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। सन्त सुहेले लए उभार, गुर चेले वज्जे वधाईआ। भगत भगवन्त पैज स्वार, दर घर साचे देवे माण वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ देवे इक्क आधार, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। समरथ पुरख करे साची कार, करता कीमत आपे पाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े लए उठाल, कलयुग अन्तिम मेला सहिज सुभाईआ। गुर गुर वेखे साचे लाल, लाल गुलाला आपणा रंग रंगाईआ। एथे ओथे दो जहान करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, राउ रंक राज राजान एका घर दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम बण आप दलाल, जगत दलाली आप कमाईआ। जगत दलाल श्री भगवान, जन भगतां आप कमाइंदा। सच धर्म दा सच निशान, सति सतिवादी आप वखाइंदा। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, निश्अक्खर आप पढ़ाइंदा। चौदां विद्या होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मंगण दान, खाली झोली सर्ब भराइंदा। करे खेल आप मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। जुग चौकड़ी लेखा पूरा करे आण, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देवे इक्क ज्ञान, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए आप विधान, सत्तां दीपां मार्ग लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। ग़रीब निमाणयां करे प्यार, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। सतिजुग बन्न्हाए साची धार, कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सृष्ट सबाई वखाए इक्क दुआर, एका मन्दिर सोभा पाईआ। एका नाम जै जैकार, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। सतिजुग साचा धरे विच संसार, धरनी धरत धवल खुशी मनाईआ। भगत भगवन्त वेखे साचे लाल, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरयण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई देवे इक्क ज्ञान, एका मन्त्र अन्तर नाम दृढ़ाईआ।

✳ २८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी वीर सिँघ दे गृह पिण्ड बठलाणा ✳

सो पुरख निरँजण बेपरवाह, सचखण्ड दवारे आसण लाइंदा। हरि पुरख निरँजण शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा

नाउँ प्रगटाइंदा। एकँकारा हुक्मी हुक्म दए जणा, धुर संदेसा आप अलाइंदा। आदि निरँजण नेत्र नैण लए खुल्हा, रूप अनूप आप वटाइंदा। अबिनाशी करता पड़दा दए चुका, अनभउ प्रकाश आप कराइंदा। श्री भगवान सच निशान लए झुला, सति सतिवादी आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखे साचा थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। करे खेल अगम्म अथाह, अलख अगोचर आपणा रंग आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप वड्याइंदा। सो पुरख निरँजण साचा दर, दरगाह साची धाम सुहाईआ। निरगुण निराकार किरपा कर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। सच दुआरे आपे खड़, स्वच्छ सरूपी वेस वटाईआ। सीस जगदीस ताज धर, तख्त निवासी सोभा पाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। साचा भेव श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आदि जुगादी खेल महान, जुग करता आप कराइंदा। सच दुआरे हो प्रधान, आप आपणा बल रखाइंदा। इक्क इकल्ला नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। सदा सुहेला सद मेहरवान, मेहर नज़र नैण इक्क तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप उपाइंदा। सच दुआर आप उपा, हरि जू आपणी दया कमाईआ। छप्पर छन्न ना कोए छुहा, चार दीवार ना वंड वंडाईआ। दीवा बाती ना कोए टिका, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप उपजाईआ। साचा घर सच दरबारा, वड दरबारी आप उपाइंदा। करे खेल एकँकारा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। आपे वणज आप वणजारा, साचा हट्ट आप चलाइंदा। आपे वस्त रखे हरि थारा, आपणी वस्त आपणे विच छुपाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप बणाइंदा। दर घर साचा बणाए बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि आपणा रूप वटाइंदा। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, लिख लिख लेखा ना कोए जणाइंदा। करे खेल नार कन्त, कन्त नार एका रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एका आसण लाइंदा। सच सिँघासण एकँकार, आपणा आसण लाईआ। सचखण्ड दवारा कर त्यार, सति सतिवादी दए वड्याईआ। आपे वेखे वेखणहार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सूरज चन्द ना कोए उज्यार, मंडल मण्डप ना कोए रखाईआ। कमलापाती हो त्यार, त्रैभवण धनी बैठा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वड़, दर दरवाज़ा आप सुहाईआ। सचखण्ड दवार कर त्यार, हरि साचा खेल खलाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहर,

गुपत ज़ाहर नूरो नूर डगमगाइंदा। हुक्मे अंदर कर वरतार, हुक्मी हुक्म वेख वखाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, राजन राज वेस वटाइंदा। दर दरवाज़ा खोल्ह किवाड़, ग़रीब निवाज़ा वेख वखाइंदा। रचया काजा आप करतार, करता पुरख आपणी धार आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे देवे वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सचखण्ड दवारा दोए जोड़ करे प्रणाम, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ मंगां चरन ध्यान, बण याचक झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे मंग मंगाईआ। सचखण्ड दवार निक्का बाला, प्रभ अग्गे मंग मंगाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तूं बणया रहे रखवाला, इक्को तेरी ओट तकाइंदा। तेरा नूर सच्ची धर्मसाला, दर मन्दिर सोभा पाइंदा। एका देणा सच्चा धन माला, साची वस्त वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। सचखण्ड दवारे कर ध्यान, हरि सज्जण दए समझाईआ। करे खेल नौजवान, वड दाता बेपरवाहीआ। एका देवे सच्चा दान, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। पूत सपूता कर बलवान, सुत दुलारा एका जाईआ। घर विच घर खोल्हे दुकान, सचखण्ड अंदर थिर घर दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। सचखण्ड दवारे तेरी दाद, हरि सतिगुर तेरी झोली पाइंदा। आपणे विच्चों आपा काढ, शब्दी सुत नाउँ रखाइंदा। लेखा जाणे बोध अगाध, बोध अगाधी आपणा नाउँ समझाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सदा सुहेला सुणे तेरी फ़रयाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे तेरा छप्पर छन्न, हरि जू हरि हरि आप सुहाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। एका राग सुणना कन्न, राग अनादी रिहा जणाईआ। सच संदेसा लैणा मन्न, सद चलणा हुक्म रज़ाईआ। करे खेल श्री भगवन, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे दए समझाईआ। सचखण्ड दवार कर निमस्कार, दोए दोए सीस झुकाइंदा। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावार, अलख अगोचर तेरा भेव कोए ना पाइंदा। कर किरपा मेरी पाउणी सार, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। हउँ धूढ़ी मंगां छार, ख़ाकी ख़ाक मस्तक टिक्का लाइंदा। तूं देवणहार दातार, वड दानी तूं अख्वाइंदा। हउँ भिक्खक सेवादार, साची सेवा दर कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे हो त्यार,

सतिगुर आपणा भेव चुकाईआ। तेरे अन्तर खेल अपार, निरगुण निरगुण दए वखाईआ। नारी कन्त बण निरँकार, साची सेज लए हंढाईआ। दाई दाया अगम्म अपार, बण सेवक सेव कमाईआ। सुत दुलारा जणे आपणी वार, बणे धन्न जणेंदी माईआ। थिर घर खोल्हे आप किवाड़, साचे मन्दिर दए वड्याईआ। पूत सपूता अंदर वाड़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप वड्याइंदा। तेरे अन्तर आपणा नूर कढ्ढ, नूरो नूर डगमगाइंदा। तेरे अन्तर रखा आपणी यद, शब्दी सुत सुत बहाइंदा। तेरी रखां पार किनारा हद्द, हदूद आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे साची वस्त तेरे विच टिकाइंदा। साची वस्त झोली पा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। सुत दुलारे दए समझा, हरि शब्दी बूझ बुझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटा, तेरी धार धार धार नाल मिलाइंदा। त्रैगुण लेखा लेख वखा, लिख लिख आपणा भेव चुकाइंदा। पंचम नाता जोड़ जुड़ा, पुरख बिधाता वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड गगन मंडल तेरा रचन दए रचा, रच रच आपणा रंग रंगाइंदा। सुत दुलारा सेवा लए कमा, बण सेवक सेव कमाइंदा। रवि ससि लए चमका, किरन किरन नाल प्रगटाइंदा। लख चुरासी घाड़ण लए घड़ा, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण भेव चुका, रूप अनूप सति सरूप शाहो भूप, आपणा पर्दा आपे लाहइंदा। आत्म परमात्म खेले खेल बेपरवाह, ब्रह्म पारब्रह्म आपणी अंस सुहाइंदा। ईश जीव जगदीस बणत लए बणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे तेरा माण वधाइंदा। सचखण्ड दवारे तेरा माण, हरि चरन मिली सरणाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, वड दीनन दया कमाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप रखाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, आत्म अन्तर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड तेरा सच महल्ला, सतिगुर पूरा आप सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, एकँकारा डेरा लाइंदा। वसणहारा जलां थलां, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एका मल्ला, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। जोती शब्दी आपे रला, रल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। सच संदेस नर नरेश आदि जुगादि जुग घल्ला, बोध अगाधी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे तेरा माण रखाइंदा। सचखण्ड दवारे तेरी धार, हरि जू हरि हरि आप प्रगटाईआ। तेरे अन्तरों कढ्ढे गुर अवतार, सतिगुर आपणी गोद सुहाईआ। पीर पैग़म्बर दे सहार, लोकमात करे रुशनाईआ। दीवा बाती कमलापाती कर उज्यार, आत्म ताकी दए खुल्हाईआ। साचा

साकी बण बण अमृत देवे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। त्रैगुण अग्नी देवे साड़, सांतक सति सति वरताईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, गृह मन्दिर आप सुणाईआ। सच संदेसा गुर अवतार, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकार, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। जुगा जुगन्तर वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा दिस ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए पनिहार, बण याचक सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दवार सुहावणा, हरि साचा आप सुहाए। गुर अवतार सर्ब उपावना, पीर पैग़म्बर नाल रलाए। जोती जोत डगमगावणा, निरगुण नूर करे रुशनाए। निरगुण सरगुण खेल करावणा, सरगुण निरगुण वसे एका थाए। गुर पीर अवतार हुक्म सुणावणा, शब्द संदेसा इक्क अल्लाए। सृष्ट सबाई मार्ग इक्क वखावणा, जुगा जुगन्तर वेस वटाए। शास्त्र सिमरत वेद पुराण आपे गावणा, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आप समझाए। सचखण्ड दवारे उठ उठ वेख, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। तेरे अंदर निरगुण भेख, पुरख अबिनाशी बैठा आसण लाईआ। दो जहानां लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सृष्ट सबाई खेलां रिहा खेड, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या साहिब सुल्तान, प्रभ तेरी मोहे भाईआ। कर किरपा गुण निधान, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। सचखण्ड तेरा मकान, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी नूर महान, घर घर बैठा जोत टिकाईआ। कवण वेला होए प्रधान, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। मेला मिले विच जहान, धरत धवल धवल सुहाईआ। सरगुण आप करें परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। दर तेरे मंगी मंग, इक्को आस रखाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। तूं देवणहार सर्ब वरभण्ड, ब्रह्मण्ड आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला आपणा मेला लईं मिलाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। सुत साचे कर ध्यान, नर हरि नरायण आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। गुर अवतारां देवे दान, लोकमात सेव लगाइंदा। पीर पैग़म्बर दस्से कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। मुकामे हक़ इक्क निशान, सच निशाना आप जणाइंदा। उम्मत उम्मती दे पैग़ाम, सच संदेसा आप सुणाइंदा। रहिमत कर रहीम रहिमान, एका अल्फ़ आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव जाए

५०६
१२

चुक्क, सतिगुर पूरा आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी प्रभ करे खेल लुक लुक, निरगुण आपणा मुख छुपाईआ। सरगुण देवे एका आपणा नाम साची तुक, लग मातर ना कोए लगाईआ। पंचम अन्तर आपे उठ, उठ आपणा भेव खुल्हाईआ। आत्म परमात्म जाए तुट्ठ, परम पुरख होए सहाईआ। साचा जाम प्याए घुट्ट, अंमिउँ रस आपणा रस चखाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, प्रकाशवान दिसे खुदाईआ। करे खेल शाहो शाबाश, शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। वेखणहारा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फेरा पाईआ। साचे मंडल पावे रास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ। सचखण्ड दवारे रहिणा त्यार, हरि साचा सच जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे पार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। करोड़ तेतीसा लए उठाल, सुरपति इन्द नाल मिलाइंदा। तेई अवतार लए दलाल, जगत दलाली वेख वखाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद परखणहारा जल्वा नूर जलाल, हक़ हक़ीक़त खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल हरि हरि वंड, ब्रह्मण्ड वंड वंडाईआ। नव नौ चार सुत्ता रहे दे कर कंड, आपणी करवट ना हरि बदलाईआ। गुर अवतार सुणावण छन्द, सोहला ढोला मात अल्हाईआ। लेखा जाणे बत्ती दन्द, तीस बतीस करे कुड़माईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा जणाईआ। साचा भेव लैणा जाण, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सत्त चार हो प्रधान, सति सतिवादी पड़दा लाहइंदा। त्रै त्रै देवे एका दान, पंचम आपणी बूझ बुझाइंदा। तेई अवतार कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। भगत अठारां देवे दान, दाता दानी नज़र किसे ना आइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार दए पैग़ाम, कलमा नबी आप समझाइंदा। नानक निरगुण बोले सतिनाम, नाम सति सरगुण मन्त्र आप पढ़ाइंदा। एका जोती खेल महान, दस दस रूप नौजवान, दो जहानां फेरी पाइंदा। गोबिन्द सूरा वड बलवान, एका फड़ तीर कमान, शब्द निराला आप उठाइंदा। दरसन पेख पुरख अकाल, उच्ची बोल बोल जैकार, फतहि डंका इक्क वजाइंदा। सृष्ट सबाई करे ख़बरदार, सोया रहे ना कोई जीव गंवार, जीवण जुगत आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे तेरा पड़दा लाहइंदा। सचखण्ड दवारे सुण लै सुण रखणा याद, याददाशत ना हरि भुलाइंदा। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। आपणे अंदर रखे कोटन कोटि ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी कल वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुगा जुगन्तर देवे दाद, वस्त अमोलक आपणा नाम वरताइंदा। वेखणहारा भगत भगवन्त सज्जण साध, सांतक सति सति कराइंदा। गुरमुख गुर गुर आपे

लाध, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिख वजाए घर साचा नाद, अनाद अनादी राग सुणाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणी गोद बहाइंदा। एथे ओथे दो जहान करे लाड, पिता पूत वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे वेख अनन्द, सतिगुर पूरा आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जाए लँघ, कोटन कोटि काल बिताईआ। करे खेल सूरा सरबंग, बेअन्त वड वड्याईआ। सच दुआरा वेखे लँघ, घर मन्दिर फेरा पाईआ। दो जहानां सेज पलँग, सच सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द अगम्मी वज्जे तरंग, तुरीआ राग राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे एका ओट तकाईआ। सचखण्ड दवारे रखणी ओट, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। नव नौ चार झूठा दिसे किला कोट, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव ओत पोत, पुरख अबिनाशी आपणा बंस सुहाइंदा । गुर अवतारां दे दे निर्मल जोत, पंज तत्त काया माण रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल करे करतार, सति सतिवादी आप जणाईआ। नव नौ चार उतरे पार, पार किनारा आप वखाईआ। लिख लिख लेखा जाणे गुर अवतार, पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। अन्तिम प्रगट होवे महांबली अवतार, निहकलंका आपणा नाउँ रखाईआ। दो जहानां पावे सार, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल अपर अपार, भेव अभेदा आप छुपाईआ। लोकमात दए आधार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वेखे अन्त मुनार, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड तेरा मेला लए मिलाईआ। सचखण्ड तेरा अन्तिम मेला, सतिगुर पूरा आप मिलाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ अंदर वसे गुरू गुर चेला, गुर चेला आपणे रंग रंगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सज्जणा सुहेला, मिल मिल आपणे गीत सुणाइंदा। आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाए आपणा वेला, वेद कतेब भेद ना आइंदा। करे खेल इक्क इकेला, निरगुण निरगुण नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआरा साढे तिन्न हथ्थ, हरि जू हरि हरि आप सुहाईआ। अंदर वड़ पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। जन भगतां देवे नाम वथ, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सतिजुग सुणाए साची गाथ, कलयुग लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। सच दुआरा इक्क सुहाउणा, लोकमात मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी डेरा लाउणा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। सम्बल नगर नाउँ धराउणा, गुरू गोबिन्द दए गवाहीआ। वेद व्यासा पन्ध मुकाउणा, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा वेखे चाँई चाँईआ। सच अमाम फेरा पाउणा, चौदां तबकां लेखा दए चुकाईआ।

सृष्ट सबाई कलमा इक्क पढ़ाउणा, कायनात दए समझाईआ। लख चुरासी एका मार्ग पाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे एका गुण जणाईआ। सचखण्ड दवारा बणे मात, मातर भूमी हरि वड्याइंदा। चार वरनां बन्ने इक्को नात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोए रखाइंदा। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, वरन गोत ना कोए वखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी वखाए एका घाट, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। एका मन्त्र एका पाठ, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। एका पिता एका मात, पूत सपूता आप सुहाइंदा। एका मेटे अन्धेरी रात, कलयुग अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा धरनी धवल, हरि धरत दए वड्याईआ। जन भगतां उलटा करे नाभ कँवल, कँवली नाभ आप उलटाईआ। नज़री आए सांवल सवल, निरगुण दाता वड वड्याईआ। नूर इलाही एका अवल्ल, आलमीन वेखे सर्ब खुदाईआ। गुरसिखां प्याए अमृत पाहुल, रस आपणा आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल हरि जू करना, कलयुग अन्त अन्त जणाइंदा। सृष्ट सबाई आपे वरना, वर आपणा वेख वखाइंदा। नाम खण्डा एका फड़ना, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाइंदा। निरभउ हो कदे ना डरना, भय आपणा सर्ब वखाइंदा। जन भगतां चुकाए मरन डरना, जीवण मुक्त आप कराइंदा। नेत्र खोल्हे हरना फरना, निज नेत्र दरस कराइंदा। जिस जन बख्शे आपणी सरना, दूसर ओट ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप बणाइंदा। सचखण्ड दवारा सतिगुर चरन, लोकमात मिले वड्याईआ। घर खुल्ल्हे नेत्र हरन फरन, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। स्वामी ठाकर तरनी तरन, तारनहारा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त जुग करता आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग जाए लग्ग, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। कलयुग अग्नी बुझे अग्ग, सतिजुग सति सति वरताइंदा। सृष्ट सबाई सोहँ हँसा चोग चुगे शाह रग, उपर आपणा आसण लाइंदा। भगत भगवन्त दर साचे सद्द, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। कूड़ी क्रिया पार हद्द, जूठा झूठा मोह तुड़ाइंदा। पंच विकारा देवे कढ्ढ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। घर विच घर कराए साचा हज्ज, मक्का काअबा आप सुहाइंदा। साचे मन्दिर बहे सज, ठाकर आपणा डेरा लाइंदा। एका नाम दस्से सति, सतिनाम आप पढ़ाइंदा। गुरमुख विरला जाणे ब्रह्म मति, मन मत जीव सर्ब कुरलाइंदा। लख चुरासी नाड़ बहत्तर उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए सुकाइंदा। कलयुग कूड़ कुड़यार घर घर रिहा नच्च, चारों कुण्ट डौरू वाइंदा। त्रैगुण माया सृष्ट सबाई गई फस, बिन सतिगुर पूरे फंद ना कोए

कटाइंदा। वरन बरन रैण अन्धेरी होई मस, निरगुण चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। भोग बलास होए वस, आत्म रस ना कोए चखाइंदा। सति धर्म गया नस्स, नेत्र आपणा नैण छुपाइंदा। सृष्ट सबाई कलयुग अन्तिम खेड़ा होण वाला भट्ठ, कूड़ कुड़यारा अग्नी हेठां डाहइंदा। अन्तिम सड़ना पंज तत्त, अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश कम्म किसे ना आइंदा। करे खेल पुरख समरथ, ना कोए मेटे मेट मिटाइंदा। दो जहानां वाली होए आप प्रगट, प्रगट आपणी धार वखाइंदा। चौदां लोक चौदां तबक खाली करे हट्ट, पीर पैग़म्बर खाली हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, लख चुरासी वेख वखाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा, घट घट बैठा आसण लाईआ। चारों कुण्ट हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। नेत्र रोवे मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा, सांतक सति ना कोए कराईआ। पीर पैग़म्बर मारन नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरी कुदरत तूं ही जाणे परवरदिगारा, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। नानक गोबिन्द बण लिखारा, लिख लिख लेखा गया समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, कल कल्की आपणा नाउँ रखाईआ। सम्बल वसे धाम न्यारा, साचे मन्दिर आसण लाईआ। शब्द अगम्मी तेज़ कटारा, दो धारा आप उठाईआ। साचे असव होए अस्वारा, शाह स्वारा फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणयां दए सहारा, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाईआ।

५१० कलयुग अन्तिम कर पार किनारा, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। सृष्ट सबाई दए हुलारा, एका धक्का नाम लगाईआ। नौ ५१०

खण्ड पृथ्मी वखाए इक्क सच दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्लाईआ। घर घर वसे आप निरँकारा, साढे तिन्न हथ्थ अंदर

१२ बैठा डेरा लाईआ। जो जन आत्म परमात्म करे प्यारा, परमात्म आत्म लए मिलाईआ। सोहँ शब्द सच जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। सतिजुग वरते सति विहारा, पिछली भुल्ले सर्ब पढ़ाईआ। नज़री आए पुरख अकाल परवरदिगारा, राम रहीम एका नूर धराईआ। भगतां वखाए भगत दुआरा, जिस घर वसे आप मुरारा, बण बण मित्र साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दवारे देवे वर, तेरा घाड़न लए घड़, घड़ घाड़त आपे वेख वखाईआ। कलयुग आयू लख चार, बत्ती हज़ार नाल मिलाईआ। शास्त्र सिमरत करन वीचार, हरि वीचार विच कदे ना आईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। कलयुग देवे वस्त अपार, पुरख अबिनाशी झोली पाईआ। तेरा खेल विच संसार, सदा सुहेला लए समझाईआ। जूठ झूठ कर त्यार, माया ममता नाल मिलाईआ। हउमे हंगता गढ़ तेरा उसार, पंच विकार तेरी लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलयुग उमर जानणहारा, एका एक अख्वाइंदा। कलयुग वर देवे संसारा, संसार सागर फोल फोलाइंदा।

नाल रलाए मुहम्मदी यारा, यारी यारां नाल हंढाइंदा। कलमा कलाम कर त्यारा, शरायत आयत इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव खोल्हे समरथ, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। कलयुग लेखा हथ्थो हथ्थ, गुर गोबिन्द गया मुकाईआ। सृष्ट सबाई पा पा नथ्थ, एका बन्धन गया जणाईआ। छोटे बाले नीहां हेठां रख, कलयुग जड़्ह आप उखड़ाईआ। गोबिन्द मार ना सके कोई रख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा उखड़े जड़, सतिगुर पूरा आप उखड़ाइंदा। नानक निरगुण एका अक्खर पढ़, जीवां जंतां आप समझाइंदा। चार वरन सोहे एका दर, ज़ात पात ना वंड वंडाइंदा। घर घर अंदर निरगुण नूर बैठा वड़, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। ना जन्मे ना जाए मर, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे जग, जग जीवण दाता आप कमाईआ। कलयुग जीव बणाए कग्ग, मन मति करे लड़ाईआ। त्रैगुण माया लग्गी अग्ग, ना सके कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव रिहा जणाईआ। नानक निरगुण सतिनाम, चार वरन आप पढ़ाइंदा। धुरदरगाही इक्क कलाम, अन्तर आत्म आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा भेव खुल्हाइंदा। कलयुग वंड वंडी निरँकार, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। नानक निरगुण शब्द आधार, सरगुण करे सच पढ़ाईआ। गोबिन्द लेखा विच संसार, अन्तिम अन्त गया मुकाईआ। ऊँचां नीचां दे अधार, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोए वीचार, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। एका इष्ट पुरख अकाल, दूसर देव ना कोए मनाईआ। राह तक्के सांझे यार, सत्थर यारड़ा आप हंढाईआ। दोए जोड़ करे प्रणाम, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ होया अन्धयार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरे बाले तेरी उम्मत नीहां हेठां दिते सवाल, पीर पैग़म्बर ना कोए सहाईआ। मुहम्मद सदी चौधवीं कलयुग अन्त जुवाल, ज़ेर ज़बर ना कोए कराईआ। चौदां तबक होए हलाल, छुरी करद हथ्थ चमकाईआ। तेरा जल्वा नूर जलाल, नूर इलाही नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा आपणा आप मुकाईआ। कलयुग लेखा जीव कर्म, कुकर्मां नाम मिटाइंदा। सच ना दिसे कोए धर्म, धर्मी धर्म ना कोए वखाइंदा। सतिगुर मंगे ना कोए सरन, आपणा बल सर्ब जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा आप चुकाइंदा। कलयुग लेखा कूड़ कुड़यार, जीव जंत रिहा चुकाईआ। चारों कुण्ट नार विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। धीआं भैणां करन वपार,

नाम हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद अंदर हाहाकार, सति सति ना कोए वरताईआ। पिता पूत ना कोए अधार, मात पुत सेज सुहाईआ। गुर मन्त्र ना गाए कोए आपणी वार, रसना जिह्वा करे लड़ाईआ। पंडत ब्राह्मण मुल्ला शेख़ मुसायक पीर होण खुआर, धीआं भैणां रहे तकाईआ। नज़र ना आए हरि करतार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अंदर आपणे वेखो मार ध्यान, घर घर विच मिले ना सच्चा माहीआ। अठ्ठे पहर नचदा रहे शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। जिस जन गुर का शब्द मिल्या ज्ञान, तिस कलयुग नेड़ ना लागे राईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वेखे मार ध्यान, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया मेटे झूठ निशान, सच सुच्च दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग आयू लख चार बत्ती हज़ार, अंक अंक नाल कटाईआ। अनेक गुर अनेक लेखा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। गुरमुख दुआरे निकले भरम भुलेखा, जिस जन सतिगुर दया कमाइंदा। जिस गुरसिख गोबिन्द नेत्र पेखा, सो गुरसिख कलयुग वंड विच ना आइंदा। लेखे लग्गे मुच्छ दाढ़ी केसा, चरन कँवल कँवल चरन सीस झुकाइंदा। तिस साहिब को करे आदेसा, जो जुग जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान गुरमुख गुरसिख आपणे हुक्म चलाइंदा। हुक्मे अंदर कोटन जुग, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। हुक्मे अंदर कोटन बूटे गए सुक्क, हरे सिंच ना कोए कराईआ। हुक्मे अंदर बैठा रिहा लुक, हरि जू नज़र किसे ना आईआ। कोटन जुग हुक्मे अंदर रहे फिर, सच संदेसा दए सुणाईआ। कलयुग अन्त किसे पास ना दिसे कुछ, खाली हत्थ फिरे लोकाईआ। नज़र ना आए अबिनाशी अचुत्त, चेतन रूप ना कोए जणाईआ। कलयुग आयू कूड़ कुड़यारे लई लुट्ट, दिन दिहाढ़े लुट्ट मचाईआ। गोबिन्द सूरा फड़के लोकमात विच्चों कढ्ढे कुट्ट, ना सके कोए बचाईआ। हरि का हुक्म किसे कोलों ना सके छुप, सूरज चन्द चल चल थक्के पाँधी राहीआ। जिस जन अमृत आत्म जाम प्याए घुट्ट, सो गुरसिख सतिजुग वेखे चाँईं चाँईंआ। घर विच घर करे निर्मल प्रकाश जोत, जुगत जोत नाल मिलाईआ। कलयुग जीव आहलणयों डिगे बोट, बिन सतिगुर पूरे गोद ना किसे कोए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग काया रिहा खपाईआ। कलयुग काया जाए सड़, हरि सतिगुर आप जलाइंदा। अद्धविचकार ना जाए अड़, मध धार ना कोए वखाइंदा। सतिजुग सति सतिवादी फड़े लड़, पल्लू आपणी गंढु पुआइंदा। भगत भगवन्त एका अंदर बहण वड़, काया मन्दिर साढे तिन्न हत्थ इक्क सुहाइंदा। नानक निरगुण गोबिन्द वेखे चढ़, महल अटल फेरा पाइंदा। आपणी करनी करता पुरख लए कर, आपे घड़े आपे भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लहिणा आप चुकाइंदा। कलयुग चुक्के

लहिणा देणा, हरि जू हरि हरि आप चुकाईआ। गुरमुख वेखे आपणे नैणा, हरि सतिगुर आप वखाईआ। पुरख अकाल मन्नणा कहिणा, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। लख चुरासी खाए लाड़ी मौत डैणा, घर घर फेरा पाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले दरगाह साची घर साचे बहणा, दर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग विच सतिजुग धर, धरनी धरत दए सहाईआ। धरनी धवल हरि दए सहारा, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। सतिजुग साचा सच वरतारा, सति सतिवादी आप कराइंदा। गुरमुख गुर गुर मेला इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। नज़री आए एकओंकारा, बेनज़ीर आपणी नज़र नज़र नाल मिलाइंदा। खेले खेल परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा भेव चुकाइंदा। सतिजुग सच्चा सच अमाम, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। प्रगट नज़री आए राम, रम्मईआ बैठा जोत जगाईआ। हरि गृह खेले कृष्ना काहन, गोपी काहन नाच नचाईआ। हरि दर देवे सच पैग़ाम, ईसा मूसा करे पढ़ाईआ। बण बरदा दए सलाम, अलैकम आपणा सीस झुकाईआ। नानक निरगुण बोल सतिनाम, सरगुण करे सर्ब पढ़ाईआ। गोबिन्द डंका दो जहान, निरगुण सरगुण आप वजाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग कर प्रधान, पुरख अबिनाशी वेखे चाँईं चाँईंआ। चौदां तबक होए हैरान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब कुरलाण, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मंगण दान, दर बैठे सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे श्री भगवान, आपणी कल आप वरताईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग करनी कलयुग आयू जाए हर, हरि आपणा हुक्म वरताईआ।

५१३ १२

✳ २८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जेठा सिँघ दे गृह बठलाणा ✳

सतिगुर पूरा दीन दयाल, हरि दीनन दया कमाइंदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। एका देवे नाम सच्चा धन माल, सच खज़ाना आप वरताइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। सदा सुहेला वसे नाल, अंदर मन्दिर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे आप उठाइंदा। गुरसिख वेखे कृपानिध, आप आपणी दया कमाईआ। प्रभ मिलण दी साची बिध, गुर सतिगुर दए दृढ़ाईआ। मातलोक करे कारज सिद्ध, दरगाह साची दए वड्याईआ। घर उपजाए नौ निध, अठारां सिद्ध मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ।

हरिजन मेला सतिगुर धाम, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। पूरब विछड़े मेले आण, कलयुग अन्तिम होए सहाईआ। गुरसिख बख्शे नाम दान, दाता दानी आप वरताईआ। सति वखाए धर्म निशान, धर्म दुआरे आप बुझाईआ। आत्म परमात्म देवे दान, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआ दा इक्क भगवान, महाराज शेर सिँघ सच सरनाईआ। कागद कलम होए हैरान, लिख लिख भेख ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बेअन्त बेअन्त सारे गाण, दर बैठे सीस झुकाईआ। सृष्ट सबाई एका काहन, पुरख अबिनाशी लख चुरासी गोपी मात हंढाईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। गुरसिख जगत विछोड़ा कट, सतिगुर आपणा मेल मिलाइंदा। दूई द्वैती मेटे फट, नाम पट्टी इक्क बंधाइंदा। अनहद शब्द लगाए सट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, नूरो नूर डगमगाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। आत्म अंदर कर कर वास, धीरज धीर धीर धराइंदा। गुरसिख कदे ना होए निरास, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। नाता तोड़े दस दस मास, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। लेखे लाए रसन स्वास, स्वास स्वासां आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर, गुरमुख गुर गुर गोद बहाइंदा। गुरसिख तेरा सच्चा नाता, गुर चरन मिले सरनाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले बिधाता, परम पुरख वड वड्याईआ। साचा मन्त्र सुणाए गाथा, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। होए सहाई सगला साथा, अंग संग संग अंग आपणा बन्धन पाईआ। पार उतारे कलयुग घाटा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे पार लँघाईआ। गुरसिख पार जाणा लँघ, सतिगुर पूरा आप लँघाइंदा। नाम वखाए मुहाणा वंज, दो जहानां आप लगाइंदा। सचखण्ड सुहाए सेज पलँग, सेज सुहञ्जणी आप वड्याइंदा। गुरसिखां देवे इक्क अनन्द, रसना जिह्वा रस ना कोए चखाइंदा। लख चुरासी मुक्के पन्ध, जन्म मरन गेड़ कटाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल गुरमुख आपणा बन्धन पाइंदा। दरगाह साची बण दलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे पार कराइंदा। गुरसिख तेरा साचा राह, हरि सतिगुर आप बणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण मलाह, बेड़ा पार कराइंदा। जुग जुग देवे सच सलाह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। हरिजन सज्जण लए उठा, फड़ बांहों गले लगाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पढ़ाए एका मन्त्र, मन्त्र आपणा आप समझाइंदा। साचा मन्त्र अलख अभेव, अगम्म अथाह आप जणाईआ।

चरन सरन गुर साची सेव, सेवक सेवा इक्क रखाईआ। मेल मिलाए वड देवी देव, देव आत्मा हो सहाईआ। अमृत रस देवे साचा मेव, सोहँ हँसा फल खुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लगाए आपणे लड़ आपणा नाता पुरख बिधाता, निहकर्मी बिन कर्मां जोड़ जोड़ाईआ।

भूत प्रेत ना रहे जिन खवीस, हाकण डाकण सिर मुंडवाइंदा। शब्दी शब्द सुणाए सच हदीस, हज़रत आपणा नाउँ पढ़ाइंदा। पृथ्मी अकाश वेखणहारा बीसन बीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। भूत प्रेत दस्से राह, फड़ बांहों आप उठाईआ। सतिगुर पूरा मिले मलाह, लेखा सब दा दए चुकाईआ। मेरा जामा दए बदला, बदली करे थाउँ थाईंआ। गुरसिख सतिगुर अग्गे इक्क अरदासा दए करा, मेरी कटे पिछली फाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा दोहां दए मुकाईआ ।

✳ २८ हाढ़ २०१६ बिक्रमी राम सिँघ, गुरदेव सिँघ दे गृह माणक पुर कल्लर ✳

सति पुरख हरि शाह सुल्तान, सति सतिवादी खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, हरि पुरख निरँजण भेव चुकाइंदा। एकँकार वड बलवान, आदि निरँजण नूर प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा सच मकान, श्री भगवान सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ गुण निधान, निरगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत हो प्रधान, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। भूपत भूप बण राजान, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। सो पुरख निरँजण साचा रंग, सति सतिवादी आप रंगाईआ। हरि पुरख निरँजण सच पलँग, सचखण्ड दवारे आप सुहाईआ। एकँकारा सूरा सरबंग, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि निरँजण नूरी चन्द, निराकार आप चमकाईआ। अबिनाशी करता आपणी वंडण आपे वंड, श्री भगवान नाल मिलाईआ । पारब्रह्म प्रभ जाणे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। करे खेल हरि निरँकारा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। आदि पुरख पुरख उज्यारा, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। महल अटल उच्च मुनारा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, कमलपाती वेख वखाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, राजन राज नाउँ धराइंदा। हुक्मे हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा

५१५ १२

आप अलाइंदा। दर दरवेश बण , घर साचे अलख जगाइंदा। निउँ निउँ सीस जगदीस करे निमस्कारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप कराईआ। निरगुण रूप श्री भगवन, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, जोती जोत डगमगाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाईआ। साचा लेखा श्री भगवन्त, आप आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहाइंदा। करे खेल बेअन्त बेअन्त, बेअन्त नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची करनी रखे हथ्थ, प्रभ वडी वड वड्याईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। सचखण्ड दवारे साचे वस, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। एका नूर कर प्रकाश, प्रकाशवान वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणी रचना आप रचाईआ। रचना रच आदि आदि, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। लेखा जाणे जुगादि जुगादि, भेव कोए ना पाइंदा। देवणहारा साची दाद, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। निरगुण निरगुण करे लाड, घर साचे बंक सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप वड्याइंदा। गृह मन्दिर वेखे हरि मनार, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। प्रगट हो एकँकार, अकल कल आपणी खेल कराईआ। साचे मन्दिर निरगुण धार, निराकार आप प्रगटाईआ। अजूनी रहित हो त्यार, अनभउ प्रकाश वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे आपे खड़, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अवल्ला, सचखण्ड दवारे आप कराइंदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, एक ओंकारा वेस वटाइंदा। निरगुण निरगुण फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणे गंढु बंधाइंदा। जोती धार आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण एका मल्ला, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख एका नर, नर नरायण आपणा वेस वटाइंदा। नर नरायण वेस अपारा, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यारा, हरि पुरख निरँजण लए उठाईआ। एकँकारा कर पसारा, आपणा वेखे आपे थाउँ थाईंआ। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। श्री भगवान सच भण्डारा, दर घर साचे आप प्रगटाईआ। अबिनाशी करता बण वरतारा, आपणी झोली आप भराईआ। पारब्रह्म प्रभ बण भिखारा, दर बैठा अलख जगाईआ। करे खेल अपर अपारा, दिस किसे ना आईआ। आदि पुरख बण वणजारा, साचा हट्ट आप चलाईआ। सचखण्ड दवार खोलृ

किवाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा भेव आप चुकाईआ। हरि जू भेव आपणा चुक्क, अभेद आप जणाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण लुक, आपणा मुख छुपाइंदा। किसे नजर ना आए चार कुण्ट, दहि दिशा वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा एका एक, एकँकार दए वड्याईआ। आदि जुगादी साची टेक, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। आपे लिखणहारा लेख, लेखा आपणा ना किसे जणाईआ। आपणे अन्तर आपणा भेख, बण भेखी वेस वटाईआ। करे खेल आदि अन्त हमेश, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वड़, घर बैठा आसण लाईआ। घर आसण लाए हरि निरँकार, भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड दवारा कर त्यार, चार दुआर ना कोए वखाइंदा। आपणी इच्छया हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। साची भिच्छया निरगुण धार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणी खेल रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे साचा हट्ट चलाइंदा। सचखण्ड दवार साचा हट्ट, हरि जू हरि हरि आप खुल्हाईआ। आपणी वस्त अंदर घत, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ दाता बेपरवाहीअ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा जस, आपे होए सिफ्त सलाहीआ। आपे सिफ्त सलाह, दया कमाइंदा। आपे बणे सच मलाह, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। आप जणाए आपणा राह, साचा मार्ग आप वखाइंदा। आप सुहाए साचा थाँ, थान थनंतर आप वड्याइंदा। आपे पिता आपे मां, नार कन्त आपणी सेज सुहाइंदा। आपे निरगुण निरगुण पकड़े बांह, बांहों पकड़ गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वड़, गृह मन्दिर आप वड्याइंदा। गृह मन्दिर वड़या हरि जू हरि, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। आपे देवणहारा वर, आपे झोली रिहा भराईआ। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। आपे सेजा बैठा चढ़, सेज सुहञ्जणी आप सहाईआ। आपणी किरपा आपे कर, किरपन दए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख एका नर, नर निरँकार बेपरवाहीआ। आदि पुरख एकँकारा, आपणी कल धराइंदा। सचखण्ड दवारा कर त्यारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नारी कन्त बण भतारा, हरि आपणा रूप वटाइंदा। दाई दाया बण सेवादारा, साची सेवा आप कमाइंदा। जननी जन जणे सुत दुलारा, पूत सपूता गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। साचा पड़दा हरि जू लाह, आपणी दया आप कमाईआ। पूत

सपूता आपे जाअ, हरि शब्दी नाउँ धराईआ। जोती पिता जोती मां, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जाता वेखे नैण उठा, निज नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचा घाड़ण आप घड़ाईआ। घाड़न घड़या अबिनाशी अचुत्त, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। एका जणया साचा सुत, शब्दी नाउँ रखाइंदा। आप सुहाए आपणी रुत्त, आपे वेख वखाइंदा। पंज तत्त ना कोए बुत्त, निरगुण नूर डगमगाइंदा । साची धारों आपे उठ, प्रगट आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुत आप प्रगटाइंदा। साचा सुत सुत दुलारा, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। सचखण्ड दवारे दए हुलारा, हरि हरि आपणी गोद सुहाईआ। करे खेल अगम्मड़ी कारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। घर विच घर करे प्यारा, घर मन्दिर दए वड्याईआ। सचखण्ड अंदर थिर घर दुआरा, धुर दरबारी आप प्रगटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच करे रुशनाईआ। थिर घर देवे हरि जू माण, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। सुत दुलारे वेख मार ध्यान, ध्यान नाल रलाइंदा। साचा मन्दिर इक्क मकान, तेरी वंड वंडाइंदा। अठ्ठे पहर रहे निगहबान, आदि जुगादि वेख वखाइंदा। तेरा लेखा जाणे श्री भगवान, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे थिर घर साचे आप बहाइंदा। सुत दुलारा दोए जोड़, प्रभ मंगे सरन सरनाईआ। पुरख अबिनाशी एका तेरी लोड़, दूजा संग ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि जाणा, बौड़, चरन कँवल ध्यान रिहा लगाईआ। तेरे दरस एका औड़, मेरी तृखा ना कोए बुझाईआ। थिर घर अंदर तेरा पौड़, सचखण्ड दवारे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। सुत दुलारा शब्द नादान, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। हउँ बालक रूप अञ्याण, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। थिर घर वसां तेरे मकान, इक्क तेरी ओट तकाइंदा। सच संदेसा देणा हरि जू आण, इक्को दर तेरे आस रखाइंदा। तूं शाह पातशाह राज राजान, हउँ रईयत रूप वटाइंदा। नित गावां तेरा गाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस लगाइंदा। दर तेरे लग्गी आस, प्रभ वड्डे वड वड्याईआ। आदि जुगादि बुझाए प्यास, तृष्ना तृखा ना लागे राईआ। तेरा रूप मेरा साथ, निरगुण निरगुण विछड़ कदे ना जाईआ। साहिब दातार ठाकर स्वामी पुरख समराथ, निहचल तेरा थाम जिस दर बैठा आसण लाईआ। मैं सुणां तेरा इक्क पैग़ाम, सच संदेसा देणा अल्लाईआ। मैं बणया रहां गुलाम, बण बरदा सेव कमाईआ। तेरा पकड़ी रखां दाम, दामन छुट्ट कदे ना जाईआ। तेरे हुक्मे अंदर मन्ना तेरा निज़ाम, हकूमत तेरे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

५१६
१२

कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त आपणा मेला लए मिलाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। थिर घर दुआरे सुणे हाल, घर घर विच मेल मिलाइंदा। पूत सपूते साचे लाल, लालन तेरा रंग रंगाइंदा। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा आप खुल्हाइंदा। वस्त अमोलक तेरी झोली डाल, सच खज़ीना इक्क भराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा दीपक देवे बाल, जोती जोत जोत डगमगाइंदा। त्रैगुण माया देवे नाल, पंचम आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। धुर संदेसा आदि पुरख, सचखण्ड दवारे आप सुणाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता चिखा ना कोए जलाईआ। पूत सपूते कर कर तरस, रहिमत तेरे उत्ते कमाईआ। अमृत मेघ एका बरस, सांतक सति सति वरताईआ। तेरी अन्तिम मेटे हरस, हरि जू आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा जणाईआ। साचा भेव हरि जू खोल्हे, निरगुण निरगुण शब्द अल्हाइंदा। सचखण्ड दवारे आपे बोले, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। शब्द अगम्मी शब्दी कंडे तोले, साचा कंडा आपणे हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा, एका वार जणाइंदा। सच संदेशा साचा गीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण चलाए रीत, रीतीवान आप हो जाईआ। एकँकारा खेल करे अणडीठ, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। आदि निरँजण बैठा रहे अतीत, त्रैभवन धनी वड वड्याईआ। अबिनाशी करता जणाए सच प्रीत, प्रीतीवान इक्क हो जाईआ। श्री भगवान आदि जुगादि सब नूं जाए जीत, हार नज़र किते ना आईआ। पारब्रह्म गाए साचा गीत, सोहला ढोला इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दए वड्याईआ। सुत दुलारे जाणा जाग, हरि जू हरि हरि आप जगाइंदा। थिर घर लग्गे भाग, पुरख अबिनाशी आप लगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव जगाए चिराग़, तेल बाती आप टिकाइंदा। त्रैगुण माया बणाए साक, पंचम नाता जोड़ जोड़ाइंदा। लख चुरासी खोल्हे ताक, घर घर आपणा आसण लाइंदा। दो जहानां वेखे खेल तमाश, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा रंग रंगाइंदा। रवि ससि करे प्रकाश, किरन किरन किरन चमकाइंदा। निरगुण सरगुण करे वास, सरगुण आपणी कल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप समझाइंदा। सुत दुलारे कर ध्यान, हरि सतिगुर आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवान, तेरी महिमा आप बणाईआ। लोक परलोक देवे तेरा ज्ञान, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मारे तीर इक्क निशान, अणयाला आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप समझाईआ। शब्दी सुत वेख विचार, हरि जू हरि हरि आप

जणाइंदा। तेरे अन्तर मेरी धार, मेरी धार तेरा रूप वखाइंदा। मेरा नाउँ एकँकार, एकँकारा तेरा रूप वटाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, घर घर आपणा खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, परम पुरख प्रभ भेव चुकाइंदा। परमात्म आत्म दए अधार, धीरज धीर इक्क रखाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म वेखे खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। ईश जीव कराए वणज वापार, जगदीस साचा हट्ट चलाइंदा। अंस बंस तेरा परवार, सहँस आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा लैणा जाण, जानणहारा आप जणाईआ। आदि पुरख तेरी रचना रची आण, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। लख चुरासी कर प्रधान, सच प्रधानगी इक्क वखाईआ। निरगुण सरगुण कर परवान, मानस मानुख दए वड्याईआ। पंज तत्त जगत निशान, सति निशाना इक्क झुलाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी आप अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत रिहा जणाईआ। शब्द सुत हरि विहारा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। लख चुरासी खेल अपारा, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। सेवा लाए गुर अवतारा, गुर गुर तेरा नाउँ प्रगटाइंदा। चार कुण्ट कुण्ट जैकारा, जै जैकारा तेरा नाउँ कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा।
५२० साचा भेव खोल्हे दस्स, श्री भगवान दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा रस, बिन रसना आप चखाइंदा। अन्तर ५२०
आत्म हिरदे वस वस, हरी हरि आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गुआइंदा। सदा सुहेला रखे साथ, सगला संग निभाइंदा। तेरा मन्त्र पूजा पाठ, इष्ट देव तेरा नाउँ रखाइंदा। सर सरोवर तीर्थ ताट, तट किनारा तेरे अंग लगाइंदा। जुगा जुगन्तर वेखे वाट, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल तमाश, तेरी रचना आप रचाइंदा। साचे मन्दिर पावे रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। लहिणा देणा जाणे पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर आपणे हुक्म भुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा एका वार समझाइंदा। सच संदेसा सुणया कन्न, हरि शब्द ध्यान लगाईआ। सीस जगदीस झुकाया मन्न, मनसा होर ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी मेरा बेड़ा देणा बन्न्ह, दो जहान आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरे नाउँ कहिण धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। आपे घड़ें आपे लएं भन्न, भन्नण घड़नहार खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। दर तेरे झोली दिती अड्ड, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। थिर घर दुआरयों ना लैणा कढ्ढ, मैं बणया रहां मर्द मर्दाना। नाता जुड़े ना हड्ड मास नाड़ी तत्त, तत्तव तत्त ना कोए रखाना।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दूसर ओट ना कोए तकाना। दूसर ओट ना रखी आस, प्रभ सरन सच्ची सरनाईआ। जुग जुग वेखां खेल तमाश, मंडल मण्डप फेरा पाईआ। सेवा करां बण बण दास, सेवक आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, जिस घर वज्जे तेरी वधाईआ। जिस घर वज्जे तेरा नाद, तेरे नाम वड्याईआ। सो घर सज्जण लैणा लाद, मिल मिल खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी रखे लाज, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। साची साजन लए साज, साजनहारा देर ना लाईआ। भगत भगवन्त रचे काज, लोकमात खुशी मनाईआ। अंदर वड़ वड़ मारे आवाज़, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान खुशी मनाईआ। शब्द सुत तेरी पूरी करे आस, जन भगतां दर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच संदेसा श्री भगवान, आदि पुरख जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल महान, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। गुर गुर रूप विच जहान, पंज तत्त काया माण वड्याइंदा। पीर पैग़म्बर दे दे माण, सजदा सीस जगदीस झुकाइंदा। बोध अगाधा इक्क ज्ञान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए रूप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल जुग चौकड़ी चार, चार वरन जणाईआ। वेद शास्त्र सिमरत कर प्यार, गीता ज्ञान दए समझाईआ। अञ्जील कुरान दए अधार, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। खाणी बाणी खोल्ह किवाड़, एका मन्त्र दए समझाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल हरि अख्वाईआ। कोटन कोटि जुग करे पार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। शब्दी सुत तेरी धार, अबिनाशी अचुत्त आप चलाईआ। कलम शाही बण बण लिखार, तेरा लेखा कोए ना सके मुकाईआ। बेअन्त बेअन्त कह कह करन पुकार, ऊँची कूक कूक अल्लाईआ। प्रभ तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग उतरे पार, तेई अवतार सेव कमाईआ। भगत अठारां बण वणजार, लोकमात हट्ट चलाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद बोल जैकार, चार यारी कलमा नबी पढ़ाईआ। नानक निरगुण सतिनाम बोल सर्ब संसार, साची सिख्या गया समझाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्क प्यार, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, हँ ब्रह्म आपणी गोद सुहाईआ। सोहँ रूप आप निरँकार, निरगुण निरगुण मेला चाँईं चाँईंआ। गोबिन्द डंका वज्जे विच संसार, संसा कोए रहिण ना पाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, बेख़बर आप जणाईआ। सुत शब्द तेरा सच प्यार, पुरख अकाल आप वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे विच संसार, संसार सागर फोल फोलाईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जोत डगमगाईआ। तेरा

खेड़ा अपर अपार, अलख अगोचर आप वसाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मीनार, निरगुण सरगुण दए जणाईआ। साची सेजा बैठ निरँकार, तख्त निवासी आसण लाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, नाद धुंन तेरी शनवाईआ। मेल मिलावा अन्तिम वार, अन्तिम दृष्टी इक्क खुल्हाईआ। सृष्ट सबाई करे बेहाल, बिहबल रोवे सर्ब लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा कूके काल, काल नगारा इक्क वजाईआ। घर घर वज्जे ममता ताल, जूठ झूठ नाच वखाईआ। कोई नज़र ना आए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा मात ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट होए वैरान, हरि का नाम हट्ट ना किसे विकाईआ। पीर पैग़म्बर भुल्लण सर्ब कलाम, कलमा कायनात ना कोए सुणाईआ। नज़री आए ना सच इमाम, मिहबान बीदो बी खैर या अला आलमीन एका रंग ना कोए रंगाईआ। घर मन्दिर मिले ना किसे राम, सीता सुरती ना किसे परणाईआ। बंसरी वजाए ना कोए शाम, राधा कृष्न ना कोए मिलाईआ। नानक मन्त्र भुल्ले सतिनाम, नाम सति हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गोबिन्द सिख्या लग्गे कूड़ा फट्ट, जगत स्यासत करे लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे खेल आप समरथ, समरथ दाता इक्क अख्वाईआ। शब्द सुत तेरी देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त लए रख, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। नेत्र खोल्हे ज्ञान अक्ख, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। पंच विकारा सुआए सत्थर सथ्थ,
५२२ सत्थर यारड़ा आप हंढाईआ। पूत सपूते तेरा वसूरा जाए लथ्थ, प्रभ साचा दरस कराईआ। मन्दिर वेखणा साढे तिन्न हथ्थ, ५२२
हरि जू आपणा घाड़ण आप घड़ाईआ। निरगुण अंदर रिहा वस, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१२ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम मेला लए मिलाईआ। अन्तिम मेला कलयुग कल, हरि करता आप १२
कराइंदा। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, अछल अछल भेव कोए ना पाइंदा। भगत सिँघासण पुरख अबिनाशन आत्म सेजा बैठा मल्ल, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सच सुनेहड़ा एका घल्ल, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाइंदा। पावे सार डूँग्घी डल, काया कल्लर फोल फोलाइंदा। अमृत सीर प्याए ठंडा जल, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोत निरँजण जाए बल, दीपक दीआ आप प्रगटाइंदा। जुग जन्म दा मेटे सल, दूई द्वैती पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द आपे रल, जोती जोत खेल कराइंदा। जोती शब्दी निहकलंक, निरगुण नरायण धार चलाईआ। सचखण्ड निवासी सुहाए साचा बंक, बंक दुआरी भेव ना राईआ। सृष्ट सबाई वखाए एका अंक, अक्खर एका करे पढ़ाईआ। एका रंग रंगाए राउ रंक, राज राजान शाह सुल्तान ख़ाक मिलाईआ। इक्क नगारा वजाए साचा डंक, दो जहानां आप सुणाईआ। इक्क उठाए साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाईआ। एका मेल कराए भगत भगवन्त, भगवन आपणी बूझ

५२३
१२

बुझाईआ। एका गुरमुख खेल खेले नारी कन्त, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। एका गुरसिख गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। एका मेल मिलावे साची संगत, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोए रखाईआ। एका अंगीकार करे अंगत, जोती जाता जोती जोत लए प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी मानस जन्म होवे भंगत, जीव जंत दए दुहाईआ। लहिणा देणा चुक्के अण्डज जेरज, उत्भुज सेत्ज सार कोए ना पाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ पढ़ विद्या होए हल्काईआ। मुल्ला शेख़ पीर दस्तगीर होए पंडत, दस्त बदस्त लहिणा देणा ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी मेला गुरू गुर चेला, घर साचे खुशी मनाईआ। घर साचा सोहे हरी दुआर, आदि पुरख आप जणाइंदा। अन्तिम खेल करे निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जुग चौकड़ी पावे सार, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। सति सतिवादी ला दरबार, सच सिँघासण आसण लाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे ख़बरदार, सच संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द गुर वड्याइंदा। शब्द गुर तेरा साचा बल, कलयुग अन्त हरि जणाईआ। सदा वसणा निहचल धाम अटल्ल, अटल्ल पदवी इक्क रखाईआ। बोध अगाधा संदेसा घल्ल, जीव जंत जगत पढ़ाईआ। आत्म परमात्म जाणा रल, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी मिटे सल्ल, दूई द्वैती भाण्डा भरम भनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर जिस दिते घल, अन्तिम सब दा लेखा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क अखवाईआ। शब्द गुर आदि जुगादि, जुग जुग खेल कराइंदा। कलयुग अन्त वजाए निरगुण नाद, पंज तत्त ना कोए वखाइंदा। भेव खुलाए ब्रह्म ब्रह्मादि, ब्रह्मंड आपणी कार कमाइंदा। पकड़ उठाए सन्त साध, साधना आपणे विच जणाइंदा। भगत भगवन्त देवे दाद, निश्अक्खर आप सुणाइंदा। गुरमुख सज्जण गुर गुर लाध, गुर शब्दी मेल मिलाइंदा। गुरसिख पार किनारा करे हाद, नौ दुआरे पन्ध मुकाइंदा। सच दुआरे आपे सद्द, दरस दुआरी कुण्डा लाहइंदा। अमृत जाम प्याए मदि, सच खुमार इक्क वखाइंदा। लेखा चुक्के मास नाड़ी हड्ड, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाइंदा। जगत वासना विच्चों कढ्ढ, सतिगुर आपणे चरन लगाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू इक्क वड्याइंदा। शब्द गुरू वड बलवाना, बल एका एक रखाईआ। एका चिल्ला तीर कमाना, इक्क निशाना रिहा लगाईआ। एका खण्डा तेज़ कृपाना, चण्ड प्रचण्ड इक्क चमकाईआ। एका हुक्म एका हुक्मराना, हुक्मे हुक्म इक्क भुआईआ। एका मर्द इक्क मर्दाना, सच मर्दानगी इक्क कमाईआ। एका पुरख इक्क सुल्ताना, शाह पातशाह इक्क हो आईआ। एका वेखे दो जहानां, निरगुण

बैठा बेपरवाहीआ। एका गाए राग तराना, छत्ती राग भेव ना आईआ। एका गुर अवतारां देवे दाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग आपणी वस्त आप वरताईआ। एका पीर पैग़म्बर सुणाए सच कलामा, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। एका होए अन्तरजामा, घट घट बैठा सेज सुहाईआ। एका खेले खेल श्री भगवाना, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शब्द गुर इक्क सलाहीआ। शब्द गुर सिफ्त सलाह, सिफ्ती सिफ्त सलाहइंदा। बेऐब खुदाई बेपरवाह, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। मुकामे हक़ डेरा ला, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। लाशरीक इक्क खुदा, जल्वा नूर नूर प्रगटाइंदा। मुरीद मुर्शद वेखे थाउँ थाँ, मुर्दा रूप ना कदे वखाइंदा। मढ़ी गोर लहिणा दए चुका, आप आपणी गोद सुहाइंदा। साची नौबत एका दए वजा, दो जहानां आप सुणाइंदा। चौदां तबक दए हिला, एका डंका आप वजाइंदा। कागद कलम लेखा चुक्के शाह, शाही लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। नेत्र रोवे अल्ला राणी मारे धाअ, साचा खावंद नज़र किसे ना आइंदा। बीवी आपणा खावंद लै परणा, बेवा रंग ना कोए वखाइंदा। सदी चौधवी पैंडा रिहा मुका, बण पाँधी फेरा पाइंदा। मुहम्मद नेत्र नैण ना सके उठा, नैणी नैण नैण शरमाइंदा। चार यार यारी गए तुड़ा, सगला संग ना कोए निभाइंदा। उम्मत उम्मती दए सज़ा, पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म वरताइंदा। अमाम अमामा सिर फेरा पा, आपणी खेल आप समझाइंदा। नानक गोबिन्द लेखा पूर करा, पूरब लहिणा सर्ब मुकाइंदा। कूड़ कुड़यारा डेरा देवे ढाह, कलयुग जड़ आप उखड़ाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग ला, धरती धरत धवल सुहाइंदा। भगतां मेला दए करा, भगवन आपणी बूझ बुझाइंदा। साचा ढोला लए गा, गा गा आपणा गीत अलाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल रिहा खिला, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। हँ ब्रह्म लए परणा, परमात्म आत्म जोड़ जोड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर भेव चुकाइंदा। शब्द गुर जोधा सूर, सूरबीर वडी वड्याईआ। सर्ब कलां आपे भरपूर, दूजे दर ना मंगण जाईआ। पुरख अकाल जोती नूर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो के होए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां मिले ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूरी आप कराईआ। माया ममता माण तोड़े ग़रूर, गुरबत सब दी दए गुआईआ। जन्म जन्म दे बख़्शे आप कसूर, जो जन चरनी सीस झुकाईआ। त्रैगुण अग्ग ना तपे तन्दूर, सांतक सति सति वरताईआ। नाता तोड़ कलयुग कूड़, सच सुच्च करे कुड़माईआ। जिस जन मस्तक लाए चरन धूढ़, दुरमति मैल दए धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द गुर देवे एका वर, एका घर वज्जे वधाईआ। एका घर वज्जे वधाई, हरि जू हरि हरि

आप वजाइंदा। सुरती शब्द होए कुड़माई, घर साचे सगन मनाइंदा। गुरमुख वेखण चाँईं चाँईं, मनमुख नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग रैण अन्धेरी छाई, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। भरमे भुल्ले पाँधी राही, साचा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखणहारा थाउँ थाईं, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। गुरमुख गुरसिख इक्को ध्यान रहे लगाई, एका आस जणाइंदा। जन्म जन्म दी मेट जुदाई, आपणा मेल मिलाइंदा। घर विच घर रिहा वखाई, हरि अंदर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन साचे हरि जू तार, तारनहारा दया कमाईआ। अन्त किनारे लाए पार, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाईआ। नेत्र देवे दरस दीदार, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा ना सके वखाल, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लाड़ी मौत ना करे भाल, गुरसिख दुआरे फेरा ना पाईआ। सतिगुर सच्चा करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। अन्तिम गोदी लए उठाल, चुक्क चुक्क आपणी खुशी मनाईआ। गुरसिख वेखे साचे लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। फड़ बहाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा आप सुहाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जो जन दुआरे करे सवाल, लख चुरासी दए तुड़ाईआ। वेले अन्त ना खाए काल, महांकाल ना फेरा पाईआ। गोबिन्द गोदी दए सवाल, सोया पूत ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सहिज सुभा हरिजन मेला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। एका घर वसे गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द खेल कराइंदा। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। आवे जावे इक्क इकेला, अकल कल आपणा रूप वटाइंदा। कलयुग अन्तिम आया वेला, भेव अभेदा भेव जणाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, निरगुण जामा जोती जोत आप रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नेहकलक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुर गुर वेखे आण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार जणाइंदा।

५२५ १२

✳ २६ हाढ़ २०१६ बिक्रमी सन्तोख सिँघ दे गृह पिण्ड सोडीआं ✳

सचखण्ड खेल श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। तख्त निवासी हो मेहरवान, मेहर नज़र आप उठाइंदा। शाहो भूप बण सुल्तान, राजन राज भेव चुकाइंदा। आदि जुगादी वड प्रधान, हुक्मी हुक्म खेल कराइंदा। जोधा सूरबीर वड बलवान, बल आपणा आप रखाइंदा। दरगाह साची सच निशान, धर्म दुआरे आप झुलाइंदा। निरगुण सरगुण खेल

महान, दो जहानां वेख वखाइंदा। शब्दी मेला सुत निधान, बाली बाला भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल हरि सचखण्ड, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। इक्क इकल्ला वंडे वंड, दूसर संग ना कोए रखाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, सचखण्ड निवासी आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण बेऐब परवरदिगारा, नूर नुराना नूर प्रगटाइंदा। हरि पुरख निरँजण पावे सारा, नर हरि नरायण नज़र किसे ना आइंदा। एकँकारा कर पासारा, भेव अभेदा आप जणाइंदा। आदि निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, दर घर साचा आप सुहाइंदा। अबिनाशी करता करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाह आपणा पर्दा आप उठाइंदा। श्री भगवान सच निशान दए हुलारा, सति सतिवादी आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखणहारा, वेख वेख पेख आपणी खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। सचखण्ड दवारे आसण ला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। तख्त निवासी बेपरवाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादी बण मलाह, जुग जुग बेड़ा आप चलाईआ। शब्द अगम्मी नाउँ धरा, नाम निरँकार पड़दा लाहीआ। साचा मार्ग आपे ला, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे वड़, निरगुण आपणी कल आप धराईआ। निरगुण कल अकल कल धार, सचखण्ड दवारे खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण हो उज्यार, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। आदि जुगादी साची कार, हरि करता आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहार अधार, त्रै पंज आपणा मेल मिलाइंदा। लख चुरासी खोलू किवाड़, दुआर बंक आप सुहाइंदा। जुग चौकड़ी हो त्यार, त्रैगुण अतीता फेरा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर त्यार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, रूप अनूप आप धराइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, महांसारथी बण बण सेव कमाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर त्यार, त्रैभवण धनी आपणा नाम प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहानां वेख वखाइंदा। दो जहानां हरि जू वाली, एकँकारा खेल कराइंदा। निरगुण नूर जोत अकाली, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। अनभउ प्रकाश खेल निराली, निरगुण आपणी आप कराइंदा। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाली, चाल निराली इक्क रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे दलाली, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा हक़ हलाली, हक़ीक़त आपणा पड़दा लाहइंदा। निरगुण सरगुण बण बण माली, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, सचखण्ड आपणा रूप प्रगटाइंदा। सचखण्ड दवारे साचा रूप, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। निरगुण नूर सच सरूप, स्वच्छ सरूपी भेव ना राईआ। मात पिता बण सपूत, पूत सपूता गोद बहाईआ। ताणा पेटा एका सूत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवार सच महल्ला, सो सतिगुर पुरख आप सुहाइंदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी खेल खलाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, बिस्मिल आपणा आप वखाइंदा। सच संदेस नर नरेश आदि जुगादि जुगा जुगन्तर घल्ला, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म पकड़े पल्ला, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईश जीव मेटणहारा सल्ला, जगदीस आपणा संग निभाइंदा। हरि जगदीस खेल अपारा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची भेव चुकाईआ। आदि अन्त इक्क दातारा, गुर गुर एका बूझ बुझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग करे पार किनारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंडाईआ। सेवा ला तेई अवतारा, मार्ग दे भगत अठारां, गुर दस दस करे पढ़ाईआ। ईसा मूसा इक्क सहारा, संग मुहम्मद दे किनारा, चार यारी एका घर बहाईआ। कातब बण बण लेख लिखारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी भेव चुकाईआ। जुग चौकड़ी खेल करतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप कराइंदा। सच संदेसा नर नरेसा देवे वारो वार, बोध अगाधा अक्खर नाम पढ़ाइंदा। लिख लिख लेखा कर त्यार, भरम भुलेखा कढु संसार, साची साची इक्क समझाइंदा। पंज तत्त मेला गुर अवतार, जोती शब्दी इक्क सितार, अनाद अनादी नाद सुणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोल्ह किवाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग जुग राह पुरख अगम्म, एकँकारा आप चलाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। पवण स्वास ना लए दम, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। नेत्र नीर ना रोवे छम्म छम्म, छहबर नैण ना कोए लगाईआ। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता चिखा ना कोए जलाईआ। निरगुण नूर श्री भगवन, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। दो जहानां बेड़ा बन्न्ह, पुरख अबिनाशी आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार देवे नाम धन्न, वस्त अमोलक झोली पाईआ। एका राग सुणाए कन्न, कन्ना मुक्ता ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे जननी जन, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, थिर कोए रहिण ना पाईआ। वसणहारा सचखण्ड दवारा बिन छप्पर छन्न, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि खेल कर, जुग करता वेख वखाईआ। जुग करता हरि करने जोग, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख

चुरासी भोगे भोग, भस्मड़ आपणा रूप वटाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लेखा जाणे धुर संजोग, आत्म परमात्म मेला मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त कटणहारा हउमे रोग, माया ममता मोह चुकाइंदा। सति सतिवादी देवे एका जोग, जीवण जुगत आप जणाइंदा। करे प्रकाश काया कोट, पंज तत्त अग्नी नूर वखाइंदा। शब्द नगारे लाए चोट, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जन्म जन्म दा कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। इक्क वखाए साची गोत, ब्रह्म पारब्रह्म पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म हरि निरँकार, दो जहानां आप जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल करे अपार, लोआं पुरीआं आपणा फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार कर प्यार, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। सब दा लहिणा चुकाए विच संसार, देणा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। लिख लिख लेखा गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे निरँकार, निरगुण अपणा रूप वटाईआ। जोती जाता वड बलकार, बल बावन भेख चुकाईआ। महांबली उतरे आपणी वार, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। कल कल्की लै अवतार, करे खेल बेपरवाहीआ। सम्बल वसे धाम न्यार, सच सिँघासण आसण लाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। सचखण्ड वसे आप करतार, साचे तख्त सोभा पाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, लोकमात वेख वखाईआ। निरगुण हो हो बणे दलाल, भेव अभेदा आप जणाईआ। गुरसिख वेखे छोटे बाल, बाल अञ्याणे लए मिलाईआ। एका देवे साचा दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। सुरती मेला शब्दी काहन, घर बंसरी नाम वजाईआ। आत्म परमात्म गीत सुहागी एका गाण, गोबिन्द वेखे चाँईं चाँईंआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया मकान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ नज़र किते ना आईआ। करे खेल पुरख अकाल, अकल कल आपणा वेस वटाईआ। दीनां बंधप हो दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। इक्क सुहाए सच्ची धर्मसाल, चार वरन दए वड्याईआ। एका घर शाह कंगाल, राज राजान इक्क दए वखाईआ। करे खेल श्री भगवान, सब दा लेखा आप चुकाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं लेखा चार युग, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलयुग औध जाए पुग, वेला अन्तिम अन्त वखाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जो बैठा रिहा लुक, निरगुण आपणा रूप प्रगटाइंदा। शब्द सरूपी हो हो रिहा बुक्क, दो जहानां आप जगाइंदा। कूड़ी क्रिया कढ्ढे कुट्ट, माया ममता मोह मिटाइंदा। सन्त सुहेले गोदी लए चुक्क, घर आपणे खुशी मनाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां कोलों रिहा पुच्छ, पिछला

लेखा मंग मंगाइंदा। इक्को वार सारे पओ उठ, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। ठाकर स्वामी दीन दयाल गया तुठ्ठ, मेहरवान आपणी मेहर नज़र उठाइंदा। वेखणहारा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार गुठ्ठ, दहि दिशा पड़दा लाहइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, चितवित ठगोरी कोए ना पाइंदा। आप सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, जोत निरँजण नूर प्रगटाइंदा। भाग लगाए काया बुत्त, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर आप सुहाइंदा। गोबिन्द सूरा पुरख अकाल वेखे साचा सुत, जन जननी ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म पुरख अकाल, अकल कलधारी आप जणाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम हो दयाल, दीनन आपणा भेव खुल्हाईआ। गुरसिख वेखे गुर गुर लाल, पूरब लहिणा आप चुकाईआ। अन्त नेड़ ना आए काल, महांकाल ना दए सज़ाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। जन्म जन्म दी लेखे पाए घाल, जिस जन आपणा दरस कराईआ। फल लगाए साचे डाल, पत्त डाल्ही आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण फेरा, निरवैर पुरख आपे पाइंदा। गुरसिखां मन चाओ घनेरा, घर सुहञ्जणी रुत्त सुहाइंदा। प्रभ नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। लख चुरासी कटे गेड़ा, राए धर्म ना फंद लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरि जू आपणा खेल वखाइंदा। साचा खेल करे निरँकार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़, चौदां लोकां डेरा ढाहीआ। चौदां विद्या कर खुआर, चौदस चन्द मुख शरमाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना राईआ। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विष्नूं दर करे पुकार, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। शंकर लाह के बाशक तशका हार, हथ्थ त्रिसूल ना कोए उठाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आया पंज तत्त धूढ़ी मंगे ख़ाक शार, मस्तक टिक्का एका लाईआ। तेई अवतार वेखण नैण उठाल, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत अठारां होए हैरान, हरि जू आपणी कार कमाईआ। ईसा मूसा नज़र ना आए सच निशान, मुकामे हक़ ना नैण उठाईआ। मुहम्मद करे गिरयाज़ार, चार यारी संग ना कोए निभाईआ । नानक निरगुण वेख सर्ब संसार, सृष्ट सबाई लेखा रिहा चुकाईआ। किसे घर नज़र ना आए करतार, बेमुख बैठे मुख भुआईआ। गोबिन्द वेखे खोल्ह किवाड़, आत्म ताकी एका लाहीआ। किसे मन्दिर शब्द धुंन ना कोए जैकार, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। फतहि डंका ना वज्जे नौ दुआर, जगत वासना ना कोए कढ्ढाईआ। सृष्ट सबाई आपा गई हार, पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। पंचम खेल करे करतार, पंचम मीता वड

वड्याईआ। दरगाह साची हो त्यार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। कलयुग कल कल्की लै अवतार, कल कलेश दए मिटाईआ। नाम डंका विच संसार, राउ रंकां आप सुणाईआ। एका बंस बणाए आप करतार, चार वरन अठारां बरन रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दवारा वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारा साचा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। पुरख अबिनाशी घाड़न घड़, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। सति सतिवादी अंदर वड़, वड़ वड़ खुशी मनाइंदा। शब्द अगम्मी एका पढ़, एका राग अलाइंदा। लख चुरासी जम की फाँसी हरिजन चुकाए भउ डर, भय अवर ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त आपे बन्ने आपणे लड़, साचे पल्लू गंढु दुआइंदा। निरगुण सरगुण किरपा कर, कृपानिध ठाकर स्वामी दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। करे खेल साचा हरि, सर्ब जीआं घट घट अन्तरजामी घट घट आपणी जोत जगाइंदा। सति सतिवादी हरिजन साचे देवे वर, बोध अगाध एका बाणी अनहद नादी आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा वेस आप वटाइंदा। साचा वेस श्री भगवन्त, निरगुण आपणा आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग करता बेपरवाहीआ। कलयुग महिमा जाणे बेअन्त, बेअन्त आपणी खेल कराईआ। लख चुरासी माया पाए गढ़ बणाए हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए दरसाईआ। गुरमुख विरले लाए आपणे अंग अंगीकार करे अंगत, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। दूजे दर ना जाए मंगत, जिस मिल्या हरि रघराईआ। सचखण्ड सति सतिवादी भगत भगवन्त, बणाए साची संगत, सगला संग आप निभाईआ। पंज तत्त काया चोली चाढ़े रंगत, रंग मजीठी इक्क रंगाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पांधा पंडत, मुल्ला शेख़ मुसायक देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साची धारा आप चलाईआ। साची धारा सति सतिवाद, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। कलयुग मेटे वाद विवाद, कूड़ कुड़यारा डेरा ढाहइंदा। दो जहान वजाए साचा नाद, लोआं पुरीआं आप सुणाइंदा। जेरज अंडां देवे दाद, उत्भुज सेत्ज झोली आप भराइंदा। वेखणहारा सन्त साध, गुर चेले आपणा रंग वखाइंदा। सच निशाना एका गाड, दो जहानां आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, साची दात आप वरताइंदा। साची वस्त नाम धन, धन ख़ज़ीना आप लुटाईआ। चार वरन जाए मन्न, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। एका राग सुणाए कन्न, राग रागनी मुख शरमाईआ। एका नूर चाढ़े चन्न, अन्ध अन्धेरा दए गुआईआ। एका मन्दिर वखाए बिन छप्पर छन्न, चार दीवार ना कोए छुहाईआ। जन भगतां हरि जू बेड़ा बन्ने, लोकमात पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम फेरा पा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर चार जुग दे विछड़े मेल मिलाइंदा। सचखण्ड दवारे लए बुला, नाम संदेसा इक्क सुणाइंदा। रल मिल सारे करो सलाह, इक्को नाम पढ़ाइंदा। सोहँ ढोला लैणा गा, शब्द विचोला इक्क बणाइंदा। मौला रूप आप खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। नाम सति मन्त्र दृढ़ा, सतिनाम आपणा नाम वखाइंदा। राम रूप वेखे थाउँ थाँ, राम रम्मईआ घट घट आपणा आसण लाइंदा। कान्हा कृष्ना वेस वटा, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप अख्वा, नाम बंसरी आप वजाइंदा। साची सख़ीआं मंगल गा, मंडल रास आप नचा, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। आदि जुगादी एका नाम ब्रह्म ब्रह्मादी दए सुणा, विष्न ब्रह्मा शिव रहे ध्या, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखणहारा उच्चे टिल्ले पर्बत डूँघे जल थल अस्गाह, भँवरी आपणा फेरा पाइंदा। सृष्ट सबाई पकड़ उठाए बांह, लख चुरासी आपणा भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म दए मिला, दूई द्वैती पड़दा आपे लाहइंदा। बजर कपाटी कुण्डा दए खुल्ला, घर घर विच मन्दिर आप सुहाइंदा। निरगुण दीवा बाती दए जगा, कमलापाती आपणा नूर वखाइंदा। बण साकी साचा जाम दए प्या, अमृत रस निझर झिरना आप झिराइंदा। साची सेजा दए सुहा, आत्म खाट आप वखाइंदा। निरगुण निरगुण मेल मिला, मिल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। गुर चेला वसे एका थाँ, एका मन्दिर वड्याइंदा। जिथे कोई दूसर ना, पुरख अकाल एको नज़री आइंदा। ना कोई पिता ना कोई मां, भैण भ्रा ना कोए वखाइंदा। ना कोई नार कन्त रही हंढा, ना कोई पूत गोद उठाइंदा। पुरख अबिनाशी बैठा इक्को शहिनशाह, सचखण्ड आपणा डेरा लाइंदा। जुग जुग लेखा दए मुका, गुर पीर अवतार पैग़म्बर कोए रहिण ना पाइंदा। पंज तत्त काया माटी करे सुआह, अन्तिम खाकी ख़ाक मिलाइंदा। एका नाम शब्द जपा, गुर शब्दी आप प्रगटाइंदा। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां अन्तिम आसा पूर दए करा, निहकलंका फेरा पाइंदा। बंक दुआरा दए सुहा, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। गुरसिख गुर गुर लए जगा, जागरत जोत आप वखाइंदा। कागों हँस लए बणा, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान चरन कँवल देवे थाँ, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्तर मां, आपणी गोद रिहा सुहा, सुहञ्जणी रुत्त नाल मिलाइंदा। काग़ज़ कलम शाही कोई लिखे ना, समुंद सागर मारन धाह, बनास्पत होए अन्त सुआह, भार अठारां तोल ना कोए तुलाइंदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, जुग जुग खेल रिहा करा, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलयुग अन्तिम लेखा आप मुकाइंदा। गुरमुखां बख्शे जन्म जन्म दे सर्ब गुनाह, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप बहाइंदा। आत्म परमात्म जणाए साचा नाम, सोहँ

५३१
१२

सोहला इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग देवे साचा वर, गुरमुख लाए आपणे लड़, आपणा बन्धन एका पाइंदा। आपणा बन्धन नाम रस, रस रसीआ आपे पाइंदा। आपे भगतां होए वस, भगत आपणे वस कराइंदा। आत्म अन्तर मार्ग दस्स, जगत बसन्तर आप बुझाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, चन्द चांदनी नूर चमकाइंदा। तीर निराला मारे कस्स, पंचम डेरा आपे ढाहइंदा। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। गुरसिख रंगे साचा रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। आत्म सेजा वेख पलँग, सच सिँघासण रिहा सुहाईआ। धुंन अनादी इक्क मृदंग, वड मृदंगा आप वजाईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउँ भनाईआ। सोहँ ढोला सुणाए छन्द, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, एका बन्धन रिहा वखाईआ। साचा रस देवे निजानंद, निज घर अमृत मुख चुआईआ। लख चुरासी आवण जावण चुक्के पन्ध, मात गर्भ फेरा दए मुकाईआ। सतिगुर पूरा पुरख अकाल सदा बख्शंद, बख्शश आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत सतिजुग साचे चाढ़े चन्द, साचा नूर करे रुशनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान सूरा सरबग, समरथ पुरख महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ।

✳ ३० हाढ़ २०१६ बिक्रमी जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला जलन्धर ✳

सचखण्ड सच्चा दरबार, सति पुरख निरँजण आप लगाइंदा। इकट्ठे कर गुर अवतार, दर साचे आप बहाइंदा। पीर पैग़म्बर वेखे यार, पूरब लहिणा भेव चुकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खोल्हणहार किवाड़, दो जहानां कुण्डा लाहइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। साचे सन्त वेखे लाल, लालन आपणा भेव चुकाइंदा। करे खेल श्री भगवान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। शाहो भूप राज राजान, शहिनशाह आपणा हुक्म चलाइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, घट घट आपणा आसण लाइंदा। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे पहचान, अञ्जील कुरान पड़दा लाहइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखणहारा मार ध्यान, चारों कुण्ट नैण उठाइंदा। दहि दिशा खेल महान, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा भेव चुकाइंदा। लेखा जाणे ज़िमी असमान, गगन गगनंतर आपणा फेरा पाइंदा। चौदां तबक वेखणहार दुकान, चौदां

लोकां फोल फोलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कराइंदा। साची कार सचखण्ड दवारे, हरि साचा आप कराईआ। इकट्ठे कर गुर अवतारे, गुर गुर बूझ बुझाईआ। पीर पैग़म्बर सोहन बंक दुआरे, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। सच संदेसा नर नरेशा एका देवे एकँकारे, एका हुक्म सुणाईआ। सारे बोलो इक्क जैकारे, जै जैकार करे लोकाईआ। सोहँ शब्द अगम्म अपारे, अलख अगोचर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म लख चुरासी बण वणजारे, लोकमात हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा हरि हरि गीत, आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर घर साचे बणो मीत, जगत विछोड़ा आप मुकाइंदा। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ वंड ना कोए वंडाइंदा। सृष्ट सबाई चले एका रीत, रीतीवान आप चलाइंदा। निरगुण सरगुण सच प्रीत, पुरख अकाल आप वखाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच एका रंग रंगाइंदा। सदा सुहेला वसे चीत, गृह मन्दिर आसण लाइंदा। कलयुग अन्तिम वेला रिहा बीत, सो पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। सचखण्ड निवासी बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार आप समझाइंदा। सच संदेसा एकँकार, कलयुग अन्तिम आप जणाईआ। सृष्ट सबाई एका धार, एका मार्ग दए वखाईआ। पूरब लेखा सर्ब संसार, कलयुग अन्तिम दए मुकाईआ। सतिजुग साचा बोल जैकार, जै जैकार करे शनवाईआ। गुर अवतार करो निमस्कार, पीर पैग़म्बर सीस झुकाईआ। एका कलमा अपर अपार, परवरदिगार आप सुणाईआ। एका मन्त्र दए अधार, जीवण जुगत जगत जणाईआ। एका दीप होए उज्यार, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। एका चरन कँवल प्यार, सतिगुर एका नज़री आईआ। एका धरत धवल अखाड़, एका धरनी सोभा पाईआ। एका वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कंदर आपणा फेरा पाईआ। एका समुंद सागर करे विचार, जल थल महीअल एका वेख वखाईआ। एका लेखा जाणे पुरख नार, नर नरायण वडी वड्याईआ। एका सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे पार, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। एका शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणे लिखार, बण कातब लेख लिखाईआ। एका गुर अवतारां दए अधार, नाम निधाना झोली पाईआ। एका कलयुग अन्तिम प्रगट होवे विच संसार, महांबली आपणा नाउँ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे आदि शक्ति आदि भवानी चतुर्भुज बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक़ हक़ हक़ीक़त वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, आपणी कल धराइंदा। लहिणा देणा चुका गुरू अवतार, साचा मार्ग आपे लाइंदा। कलयुग अन्तिम

करे खुआर, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। साचा छन्दा बोल जैकार, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वखाइंदा। सच दुआरा साचा रंग, हरि जू हरि हरि आप रंगाइंदा। सतिजुग मंगे एका मंग, आपणी झोली अग्गे डाहइंदा। कलयुग अन्तिम होया नंग, सिर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। चौदां लोक भागां मंद, साचा सबक ना कोए पढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई होई खण्ड खण्ड, वरन बरन आप लड़ाइंदा। घर प्रकाश ना होए साचा चन्द, जोत निरँजण नूर ना कोए वखाइंदा। आत्म रस ना मिले अनन्द, साचा अमृत ना कोए मुख चुआइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे ना कोए गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी दिस किसे ना आइंदा। नौ खण्ड होए वैरानी, वैरानगी भेव ना कोए खुलाइंदा। कलयुग अन्तिम अन्त निशानी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। अनहद नाद ना सुणे कोए बाणी, रसना जिह्वा सर्ब गाइंदा। अमृत आत्म सच सरोवर मिले ना ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ सर्ब कुरलाइंदा। सतिगुर शब्द मिले ना साचा हाणी, सुरती नार ना कोए प्रनाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां लोकमात नेत्र नैण आप वखाइंदा। नेत्र वेखो आपणा हाल, हरि जू आप सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए बेहाल, बेहबल हो हो दए दुहाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। अन्त दिसे ना कोए
५३४ दलाल, सब बैठे मुख भुवाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल दीन दयाल, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई ख़ाली वेखे ५३४
धर्म धर्मसाल, धर्म दुआरा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण सर्ब खुलाईआ।
१२ नेत्र खोल वेखो अक्ख, हरि अक्खर अक्खर आप जणाइंदा। कलयुग कूड़ कुड़यारा दिसे भट्ठ, त्रैगुण अग्नी तत्त तपाइंदा। १२
सति सरूप ना कोए मन्दिर मस्जिद मट्ठ, गुरुदुआर गुर गुर रंग ना कोए रंगाइंदा। जगत विभचारी होया इकट्ठ, नार वेसवा सर्ब हंढाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मिले ना कमलापति, कँवल नैण नैण ना कोए मिलाइंदा। नाड़ बहत्तर उब्बले रत्त, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। सृष्ट सबाई खेड़ा दिसे भट्ठ, जगत भठयाला आप तपाइंदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी दो जहान श्री भगवान पैंडा वेखे नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। चार युग दा पिछला लेखा आपणे लेखे लए घत, अग्गे राह ना कोए जणाइंदा। सृष्ट सबाई नाता जुड़या मन मति, मन वासना नाल मिलाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर बैठे सत्थर घत, कूड़ी सफ़ा ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुर अवतारां भेव चुकाइंदा। गुर अवतार करन ध्यान, लोकमात वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई होई बेईमान, आत्म अन्तर हरि का नाउँ ना कोए ध्याईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश कूक कूक कुरलाण, कूड़ी क्रिया वंड वंडाईआ। नज़र ना

आए श्री भगवान, साहिब सुल्तान बैठा मुख छुपाईआ। ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान, आपणा कीता आपे पाण, लिख लिख लेखा सब दा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। चार युग दा अन्त किनारा, अन्तिम अन्त आप वखाइंदा। सृष्ट सबाई नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, नैण नैण ना कोए उठाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव ना कोए जणाइंदा। बेअन्त बेअन्त कह कह गए गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर सजदा सीस झुकाइंदा। राह तक्कदे गए परवरदिगारा, परवरदिगार आपणा फेरा पाइंदा। निहकलंक नरायण नर लै अवतारा, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। जोती जाता कर पसारा, पुरख बिधाता खेल कराइंदा। राती रुत्ती थिती ना जाणे कोए वारा, घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। शब्द अगम्मी साची धारा, थिर घर वासी बाहर कढाइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना नूर वखाइंदा। पूरब लेखा गुर अवतारा, अन्तिम पूर कराइंदा। सृष्ट सबाई वेखणहारा, इष्ट दृष्ट इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। साचा मन्दिर उच्च महल्ला, सतिगुर साचा आप वसाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर डेरा लाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद सच संदेस एका घल्ला, भगत भगवन्त साध सन्त करे पढ़ाईआ। आत्म सेजा सच सिँघासण एका मल्ला, घर घर विच बैठा जोत जगाईआ। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे चढ़ लोकमात वेखे चाँईं चाँईंआ। लोकमात हरि चाउँ घनेरा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर हेरा फेरा, अछल छल आपणी खेल कराइंदा। जन भगतां करे हक़ नबेड़ा, पूरब लेखा झोली पाइंदा। देवे दरस ना लाए देरा, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाइंदा। काया मन्दिर अंदर मिटाए जूठा झूठा अन्धेरा, सच सुच्च दीपक जोत आप जगाइंदा। नाता तोड़े जगत विछोड़े मेल मिलाए तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा एका रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि सुल्तान, आदि अन्त जणाईआ। कलयुग मेटे कूड़ दुकान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे जीव शैतान, शरअ हद्द ना कोए वखाईआ। सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। इक्क सरोवर तट अशनान, इक्क किनारा दए जणाईआ। एका नज़री आए श्री भगवान, दूसर रूप ना कोए वखाईआ। एका मेला साचे काहन, लख चुरासी गोपी आप प्रनाईआ। एका वेखे सीआ सुरती साचा राम, घट घट बैठा जोत जगाईआ। एका ईसा मूसा पीर पैग़म्बर संग मुहम्मद दए कलाम, कलमा नबी

इक्क पढ़ाईआ। एका नानक जाणे सतिनाम, नाम सति सति समझाईआ। एका गोबिन्द जै जैकार करे श्री भगवान, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। सृष्ट सबाई दे के गया पैग़ाम, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए महांबली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे निशान, सतिजुग साचा राह चलाईआ। नौ खण्ड पृथमी बणाए इक्क विधान, रइयत एका रूप वखाईआ। आत्म परमात्म जीव जंत सारे गाण, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। निमाणयां देवे साचा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शाह सुल्ताना राज राजाना आए हाण, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा मार्ग आपे लाईआ। सतिजुग मार्ग सति सतिवाद, सति पुरख निरँजण आप लगाइंदा। दो जहानां देवे दाद, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा नाम वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहे आराध, रैहबर एका राह वखाइंदा। लख चुरासी अन्तर नाद, अनादी धुंन उपजाइंदा। कलयुग खेल करे विच ब्रह्माद, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड वंडाइंदा। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। गुर पीर अवतार पैग़म्बर होए विस्माद, बिस्मिल आपणी खेल जणाइंदा। भगत भगवन्त लए लाध, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। राती सुत्तयां मार आवाज़, फड़ बांहों आप उठाइंदा। किरपा कर ग़रीब निवाज़, गुरबत सब दी बाहर कढाइंदा। आत्म अन्तर साजण साज, साची सेजा आप सुहाइंदा। गुरसिख गुर गुर रच रच काज, घर मन्दिर ढोला गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचा आप वखाइंदा। दर घर साचा साढे तिन्न हथ्थ, हरि जू हरिजन बणत बणाईआ। अंदर वड़ पुरख समरथ, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। नाम निधान देवे वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। देवणहारा एका ब्रह्म मत, गुर ज्ञान शब्द दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जगाए आप प्रभ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। पूरब लहिणा मेटे सब, पिछला लेखा दए चुकाईआ। अमृत झिरना झिराय कँवल नभ, जगत तृष्ना हिरस मिटाईआ। जगत दुआरा पार हद्द, जूठा झूठा नाता दए तुड़ाईआ। अमृत जाम साची मदि, मधुर रस इक्क वखाईआ। दर घर साचे लडाए साचा लड, पिता पूत वेस वटाईआ। लख चुरासी नालों कर कर अड, गुरसिख गुर गुर दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन धाम सुहञ्जणा, घर साचा सोभावन्त। प्रभ मिले इक्क निरँजणा, मेल मिलावा नार कन्त। होए सहाई दर्द दुःख भय भंजना, लेखा जाणे आदि अन्त। चरन धूढ़ कराए मजना गुरमुख वेखे साचे सन्त। दो जहानां बण बण सज्जणा। महिमा जणाए आप अगणत। वेले अन्तिम पड़दा कज्जणा, गढ़ तोड़े हउमे हंगत। त्रैगुण

५३६
१२

अग्न ना गुरसिख दझणा। हरि जू मेले साची संगत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि गुरसिख, काया चोली चाढ़े रंगत। काया चोली रंग चलूल, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। चार युग दा लहिणा अन्त ना जाए भूल, कलयुग लेखा लेखे लाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी भगत भगवन्त बरसणहारा फूल, एका छहबर आपणे नाम लगाईआ। सतिजुग दा सच असूल, असलीअत आपणा भेव खुल्हाईआ। गुरमुख विरला करे कबूल, काबलीयत चले ना किसे चतुराईआ। सच पघूंड़ा लए झूल, सति सतिवादी आप झुलाईआ। जन्म माणस दा लहिणा देवे मूल, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे पार कराईआ। हरिजन पार करे आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। गुरसिखां बणे माई बाप, पिता पूत गोद सुहाइंदा। नाता तोड़े ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। सरोवर वखाए एका घाट, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाइंदा। निर्मल नूर जोत ललाट, घर घर विच आप प्रगटाइंदा। एथे ओथे बणे सज्जण साक, कूड़ा नाता मोह चुकाइंदा। मेल मिलावा कमलापात, गुरमुख कमली कोझी नार आपणे अंग लगाइंदा। नाम अगम्मी देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। चरन कँवल उपर धवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। सोहँ अक्खर पूजा पाठ, काया पाठशाला आप वखाइंदा। वेले अन्तिम पुच्छे वात, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जानणहारा कायनात, काया काअबा डेरा लाइंदा। प्यावणहारा आबे हयात, सच प्याला हथ्थ उठाइंदा। प्रगट हो साख्यात, साहिब सुल्तान दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन आपणी गोद बहाइंदा। हरिजन गोदी आपणी चुक्क, चार वरन दए वड्याईआ। गुरमुख बूटा ना जाए सुक्क, सतिजुग साचे हरा कराईआ। पुरख अबिनाशी रखे आपणी कुक्ख, जननी जन ना कोए वड्याईआ। जन्म जन्म दा मेटे दुःख, चिंता रोग ना लागे राईआ। इक्क उपजाए साचा सुख, ब्रह्म पारब्रह्म कुड़माईआ। पंच विकारा विच्चों कढ्ढे कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना रहिण ना पाईआ। आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी फंद कटाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना आप झिराईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, रातीं सुत्तयां दरस दिखाईआ। होए वसेरा काया किला कोट, बंक दुआर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेला साचे घर, घर मन्दिर इक्क सुहाइंदा। घर मन्दिर एकँकार, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। सतिजुग साची बन्ह्रे धार, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त कह कह सर्ब सुणाइंदा। साडा लहिणा चुक्कया अन्तिम वार, बाकी अवर

ना कोए कढाइंदा। सतिजुग तेरा चले सच विहार, तेरा तेरे रंग समाइंदा। कर किरपा आपणे अंदर लैणा वाड़, दर तेरा एका भाइंदा। तेरा गुरमुख तेरी बणे सच्ची सरकार, दो जहानां हुक्म चलाइंदा। असीं फिर के आए आपणी वार, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरन सरन गए पढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई विद्या रहे पढ़, एका पल्लू नाम फड़, सोहँ ढोला साचा गा, आपणा आप गए मिटा , निरगुण विच निरगुण समा, सरगुण रूप नज़र कोए ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अपणा खेल करे सहिज सुभा, कलयुग सतिजुग सतिजुग कलयुग धार धार नाल बदलाईआ ।

✳ ३० हाढ़ २०१६ बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड दोसांझ खुरद ✳

आत्म गुर शब्द संदेस, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। आत्म परमात्म कर उपदेश, आपणी महिमा आप जणाइंदा। आदि जुगादी वसणहार हमेश, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आत्म परमात्म लए वेख, निज नेत्र पर्दा लाहइंदा। जोती जाता धर धर भेख, भेख अवल्लड़ा वेस वटाइंदा । जुग चौकड़ी मेटणहारा रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार वसाए आपणे देस, चरन कँवल आप बहाइंदा। पीर पैग़म्बर सच संदेस, जुगा जुगन्तर आप सुणाइंदा। निरगुण सरगुण खेले खेड, खेलणहारा नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जानणहारा चार वेद, चारे युग फोल फोलाइंदा। लख चुरासी पावे सार काया खेत, घट घट आपणा वेस धराइंदा। वसणहारा नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। भगत भगवन्त करे साचा हेत, नित नवित मेल मिलाइंदा। साचे सन्तां रखे रुत्त बसन्ती चेत, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ज्ञान इक्क समझाइंदा। शब्द ज्ञान गुर आत्म देव, परमात्म वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण कर कर सेव, सेवक बण बण सेव कमाईआ। आदि जुगादी अलख अभेव, भेव अभेदा आपणे विच छुपाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल सदा नेहकेव, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। अमृत आत्म साचा रस आपणा नाउँ देवे मेव, हँ ब्रह्म आपणा रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आत्म गुर शब्द ज्ञान, हरि साचा सच दृढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। वसणहारा सच मकान, थिर घर साचे आसण लाइंदा। बोध अगाधा धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। जुग जुग खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त वेखे आण, घर मन्दिर फेरा पाइंदा। एका देवे नाम निधान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सच झुलाए इक्क

निशान, सति सतिवादी हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। शब्द ज्ञान आत्म नाद, परम पुरख आपणा आप सुणाईआ। जुगा जुगन्तर देवे दाद, साची वस्त आप वरताईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड पड़दा दए उठाईआ। गुरमुख गुर गुर आपे लाध, गुरसिख साचे लए समझाईआ। लेखा जाणे सन्त साध, साधना आपणी आप जणाईआ। भगत भगवन्त सद रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, एका आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए समझाईआ। आत्म परमात्म बोध ज्ञान एका अक्खर, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। लिखण पढ़न तों रखे वक्खर, कलम शाही ना रंग रंगाइंदा। जन भगत वरोले नीर अथ्थर, नीर सीर इक्क वखाइंदा। बजर कपाटी तोड़ पत्थर, पाथर आपणा भेव चुकाइंदा। पंच विकारा करे सत्थर, ढह ढह ढेरी ख़ाक कराइंदा। आपे चोटी चढ़ के बैठा सिखर, नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां करे आप फ़िकर, फ़िकरा लोकमात सुणाइंदा। साचे सन्तां कर कर ज़िकर, गुर बाणी रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। आत्म परमात्म साचा नाम, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। घर सखी मेला साचे काहन, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। सुरत सवाणी हाणी मिले राम, रमइया आपणे अंग लगाईआ। सच मुहम्मद दे पैग़ाम, एका आयत करे पढ़ाईआ। करे खेल श्री भगवान, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। लेखा जाणे जीव जहान, जीवण जुगत हरिजन साचे दए समझाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुख दए मिटाईआ। निरगुण जोती नूर महान, कर प्रकाश अन्धेर चुकाईआ। रसना जिह्वा एका गाण, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। वेखणहारा पवण मसाण, पवण पवणां विच समाईआ। हरिजन साचे कर परवान, परम पुरख होए सहाईआ। एका नाद इक्क धुन्कान, एका हरि जू राग अल्हाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर वखाए मकान, मक्का काअबा इक्क समझाईआ। सच दुआरे वसे सद मेहरवान, मेहर नज़र आप उठाईआ। जुग चौकड़ी आप बणया रहे बेज़बान, ज़बान आपणी ना कोए हलाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दे कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म सच संदेस, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। घर घर अंदर घर घर वेख, घर घर आपणा आसण लाइंदा। घर घर सज्जण मिले हमेस, घर घर आपणा जोड़ जोड़ाइंदा। घर घर नेत्र लए पेख, घर घर आपणी अक्ख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म साचा नाम, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। गुरसिख गुर गुर पीए एका जाम, अमृत रस इक्क चखाईआ। एका मन्दिर वसे इक्क मकान,

दर घर साचे डेरा लाईआ। इक्क संदेसा दए पैग़ाम, एका सुण सुण खुशी मनाईआ। एका नगर खेड़ा वसे ग्राम, साची गगरीआ वंड वंडाईआ। भाग लगाए काया माटी चाम, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। कर प्रकाश कोटन भान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाईआ। शब्द अगम्मी मारे बाण, अणयाला तीर आप चलाईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, लख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। रातीं सुत्तयां करे पहचान, मुख पड़दा आपे लाहीआ। कागद कलम होए हैरान, लिख लिख शाही ना लेख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र नाम सति, सति सतिवादी आप जणाईआ। आत्म परमात्म मन्त्र नाम सति, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। एका देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म प्रभ आप पढ़ाइंदा। एका नाम रंगे रत्त, रत्ती रत्त ना कोए वखाइंदा। धीरज सन्तोख देवे साचा जत, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरन कँवल बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। शब्द अगम्मी सुणाए गथ, पिछला लेखा सर्ब चुकाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा वेस वटाइंदा। गुरसिख सज्जण लए रख, आप आपणी गोद बहाइंदा। जन भगतां जुग जुग करे पक्ख, लख चुरासी दर दुरकाइंदा। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, चारों कुण्ट आप भुवाइंदा। वसणहारा घट घट, नव नौ आपणा पड़दा लाहइंदा। आपणी महिमा जणाए अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। सोहँ शब्द साची वथ, हरिजन साचे झोली पाइंदा। आपणे विच्चों पुरख अबिनाशी कढ्ढ, गुरसिख मन्दिर अंदर आप टिकाइंदा। साचा मार्ग निरगुण दस्स, सरगुण सिख्या इक्क समझाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, चिंता दुःख ना कोए रखाइंदा। जन भगतां करे पूरी आस, आसा आसा नाल मिलाइंदा। एका नाम कर प्रकाश, सृष्ट सबाई नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द ज्ञान गुर आप वड्याइंदा। शब्द ज्ञान गुरू गुर एक, आदि जुगादि समाईआ। पीर पैग़म्बरां रखे टेक, इष्ट देव वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर लिखणहारा लेख, लिख लिख लेखा दए समझाईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, महल अटल करे रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम धारे भेख, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया नज़र ना आईआ। लेखा जाणे गुर दस्मेश, गुर शब्दी लए प्रगटाईआ। लहिणा चुकाए विष्नूं बाशक सुत्ता सेज, सेज सांगोपांग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक्क प्रगटाईआ। साचा मन्त्र इक्को इक्क, एकँकार प्रगटाइंदा। गुर अवतार ना वंडे कोई हिस, हिस्सा होर ना कोए रखाइंदा। दो जहानां श्री भगवान निरगुण रूप घट घट अंदर आए दिस, प्रकाश प्रकाश नाल कराइंदा। कर किरपा चरन लाए जिस, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। बिन नेत्र रातीं सुत्तयां पए दिस, दर दर घर घर

फेरा पाइंदा। आत्म परमात्म लाई रखे खिच्च, दूजा सबक ना कोए पढ़ाइंदा। गुरमुखां अंदर वड़या रहे विच, विचला भेव ना किसे जणाइंदा। बणया रहे मात पित, पूत सपूत गोद सुहाइंदा। कलयुग अन्तिम करे हित, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। करे खेल आप अनडिठ, लख चुरासी भरम वखाइंदा। आपे सुत्ता दे कर पिठ्ठ, करवट आपणी ना आप बदलाइंदा। लेखा जाणे नित नवित, जुग जुग अपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ज्ञान इक्क जणाइंदा। सच ज्ञान आत्म रस, बिन रसना आप चखाईआ। हिरदे हरि जू जाए वस, वसणहारा बेपरवाहीआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी मस, सतिजुग साचा चन्द वखाईआ। पंच विकारा चरनां हेठां देवे झस्स, करे खेल बेपरवाहीआ। त्रैगुण माया कटे फास, फाँसी राए धर्म ना कोए लटकाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां वेख वखाईआ। जन भगतां लेखे लाए रसन स्वास, पवण पवण नाल मिलाईआ। सेवा करे बण बण दासी दास, सेवक आपणी घाल आपणे लेखे आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र आत्म देव, आत्म देवा आप जणाइंदा। आत्म देवा एका रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। साचे मन्दिर वेखे लँघ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। सुहाए सुहञ्जणी सेज पलँग, परम पुरख वड वड्याईआ। देवणहारा इक्क अनन्द, अनन्द आपणा आप जणाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, गुरमुख आपणा बन्धन पाईआ। सोहँ गीत सुहागी छन्द, साचा सोहला छन्द पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ सदा बख्शंद, विष्नूं विश्व धार चलाईआ। भगवान जै जैकार करे सूरा सरबंग, बल आपणा आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे नव खण्ड, नौ नौ पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आत्म अन्तर एका एक करे शनवाईआ। सच शनवाई हरि का नाउँ, संसा रोग ना कोए रखाइंदा। कलयुग अन्तिम चार वरन पकड़े बांहों, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दूई द्वैती भेव चुकाइंदा। एथे ओथे दो जहान करे सच न्याउँ, न्याँकार आपणा फेरा पाइंदा। वेखणहारा थाईं थाउँ, थान थनंतर खोज खोजाइंदा। गुरसिख हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, कागों हँस उडाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत गोद सुहाइंदा। एका नाउँ रसना गाओ, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, गुर शब्दी गुर गुर दया कमाइंदा। गुर शब्दी गुर सतिगुर ठाकर, बेअन्त वडी वड्याईआ। वेखणहारा कलयुग डूँघे सागर, भँवरी कवरी आपणा फेरा पाईआ। एका देवे नाम रत्ती रतनागर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। एका नाम वणज सौदागर, सतिजुग साचा हट्ट चलाईआ। काया लेखा जाणे काची गागर, अंदर वड़ वड़ भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

५४१ १२

किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, आत्म परमात्म इक्क पढ़ाईआ। आत्म परमात्म साचा जोड़, सो पुरख निरँजण आप जोड़ाइंदा। सृष्ट सबाई नाता तोड़ गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। पंच विकारा देवे होड़, एका होड़ा मूल रखाइंदा। लख चुरासी फल वेखे मिट्ठा कौड़, कूड़ी क्रिया मोह तुड़ाइंदा। जन भगतां जन्म जन्म दी मेटे औड़, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। दरस दिखाए दौड़ दौड़, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। शब्द अगम्मी चढ़या घोड़, शाहसवारा फेरा पाइंदा। सचखण्ड निवासी लाया पौड़, गुरमुख ताकी आप खुल्हाइंदा। आपे वेखे कर के ग़ौर, दूसर नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे जाए बौहड़, बहुबिध आपणा मेल मिलाइंदा। बहुबिध मेल शब्द गुर पूरा, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। सति सतिवादी हाज़र हज़ूरा, सति पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरिजन रंग चाढ़े गूढ़ा, दो जहानां आप रंगाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चरन कँवल उपर धवल बख्शे साची धूढ़ा, धूढ़ी मस्तक टिक्का एका लाइंदा। नाम खुमारी दए सरूरा, झूठी मध ना कोए वखाइंदा। दिवस रैण रैण दिवस सदा सुहेला हाज़र हज़ूरा, हरि मन्दिर आपणा आसण लाइंदा। सर्ब कला आपे भरपूरा, पारब्रह्म प्रभ खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिस जन आपणा नाउँ समझाइंदा। साचा नाउँ जन जाए जाण, लिखण पढ़न विच ना आईआ। निष्अक्खर कर परवान, अक्खर अक्खर वंड वंडाईआ। घर सतिगुर मिले आण, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। घर खेल करे श्री भगवान, भगवन आपणा रूप वटाईआ। घर मन्दिर होए परवान, परम पुरख प्रभ फेरा पाईआ। गुरमुख गुर दर बह बह खुशी मनाण, हरि पाया शहिनशाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा सर्ब जस गाण, सो जस भगतां आपे गाईआ। लोकमात कर ना सके कोए पहचान, पहिचाण विच किसे ना आईआ। कलयुग अन्त सर्ब पछताण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। काग़ज़ कलम शाही पिच्छों रहि जाए निशान, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। पढ़ पढ़ रसना जिह्वा गाण, नेत्र नैणां रो रो नीर वहाईआ। अछल अछल करे खेल आप भगवान बिन हरि भगतां आपणा नाउँ ना किसे जणाईआ। जिस जन किरपा कर देवे वर, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जै जै जैकार सुणाईआ। तिस लेखा चुक्के दो जहान, लख चुरासी फंद कटाईआ। अन्तिम जोती मेले आण, जोती जोत जोत समाईआ। सचखण्ड वसाए सच मकान, चरन कँवल दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जिस जन वखाए आपणा नाम दर, दर आपणे दए वड्याईआ। दर वड़याई दए दुआर, हरि दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। फड़ फड़ बांहों लाए पार, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। माणस जन्म पैज स्वार,

मानुख आपणे रंग रंगाइंदा। जिस जन एका नाम देवे कर प्यार, सच प्रेम इक्क रखाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच जैकार, कलयुग अन्तिम वार पीर पैग़म्बर गुर अवतार दर बह बह मंग मंगाइंदा।

✳ ३१ हाढ़ २०१६ बिक्रमी मुनी लाल सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ✳

हरिजन मेला आदि जुगादि, जुग करता आप कराइंदा। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्मादि, दो जहानां खोज खोजाइंदा। लख चुरासी विच्चों लाध, हरिजन आपणा भेव चुकाइंदा। आत्म अन्तर एका नाद, धुंन अनादी आप सुणाइंदा। शब्द अगम्मी बोध अगाध, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। डूँघी भँवरी मेट अन्धेरी रात, निरगुण जोत चन्द चढ़ाइंदा। नज़री आए इक्क इकांत, घर सेजा डेरा लाइंदा। दरस दिखाए बहु बिध भांत, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। सति सतिवादी देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। नाता तुट्टे जगत साक, सज्जण सैण हरि जू इक्को नज़री आइंदा। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां आप जगाइंदा। हरिजन मेला हरि पुरख, सति सतिवादी आप कराईआ। निरगुण सरगुण दे दे दरस, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। अमृत मेघ एका
५४३ बरस, जगत तृष्ना भुख मिटाईआ। लेखा जाण अर्श फर्श, काया कुरा खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ५४३
आपणी किरपा कर, हरिजन मेला बेपरवाहीआ। हरिजन मेला सच महल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। खेले खेल
१२ इक्क इकल्ला, नित नवित वेस वटाइंदा। पावे सार जलां थलां, समुंद सागर डूँघी कंदर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाइंदा। १२
सन्त सुहेले आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणे नाम गंढु दिवाइंदा। जोती शब्दी शब्दी जोत निरगुण रल्ला, पंज तत्त काया मन्दिर अंदर डेरा लाइंदा। सच संदेश नर नरेश निरगुण निराकार एका घल्ला, एकँकारा अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। दूई द्वैत मेटणहारा सल्ला, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। इक्क वखाए निहचल धाम अटल्ला, घर घर विच आप सुहाइंदा। कर प्रकाश दीपक जोत आपे बला, तेल बाती ना कोए टिकाइंदा। जुगा जुगन्तर करे खेल अछल अछला, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। आदि जुगादी साचा मेला, गुरमुख गुर गुर आप कराइंदा। एका घर वखाए गुरू गुर चेला, रूप अनूप आप वटाइंदा। निरगुण निरगुण सज्जण सुहेला, सरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण सगन मनाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान बणे सज्जण सुहेला, आवण जावण पत्तत पावण पन्ध कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन मेला सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। लेखा जाणे अंदर बाहर, गुपत ज़ाहर आपणा पर्दा लाहीआ। आत्म परमात्म करे प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। ईश जीव दए आधार, जगदीस आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। हरिजन रंग इक्क मजीठ, एकँकारा आप रंगाइंदा। करे खेल साहिब आप अनडीठ, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। काया मन्दिर अंदर साचे टिल्ले चढ़ चढ़ गाए सुहागी गीत, गोबिन्द आपणा राग अल्हाइंदा। गुरमुख नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ लेखा चुकावणहारा अठसठ घर सरोवर इक्क नुहाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा होए विनास, चन्द चांदना इक्क चमकाइंदा। हरिजन पूरी करे आस, मेल मिलावा शाहो शाबाश, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा भेव चुकाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ अंदर पावे रास, गोपी काहन खेल तमाश, सुरती शब्दी आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। हरिजन सोहे सच दुआर, हरि जू हरि हरि आप सुहाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े मेले मेलणहार, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। लहिणा देणा जाणे पुरख नार, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। पुरख पुरखोतम हो त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन वेखे थान थानंतर, दो जहानां फोल फोलाइंदा। पावे सार गगन गगनंतर, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट आपणा वेस वखाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म निरंतर, माया ब्रह्म पड़दा पाइंदा। सदा सुहेला हरिजन पढ़ाए एका मन्त्र, मन्त्र अन्तर आप जणाइंदा। जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, त्रैगुण अग्नी अग्ग ना कोए तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी दया कमाइंदा। हरिजन दया करे आप, आपीनड़ै रंग रंगाईआ। आपे बणे माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणे अंग लगाईआ। इक्क जपाए साचा जाप, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म देवे दात, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरन कँवल कँवल चरन उपर धवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाईआ। सदा सदा सद वसे साथ, हरि जू हरिजन विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, आदि अन्त आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात वेस वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे सहारा, एका अक्खर नाम पढ़ाईआ। भगत भगवान बण वणजारा, साचा हट्ट मात चलाइंदा। साचे सन्तां देवे नाम आधारा, नाम सति झोली पाइंदा। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, नेत्र नैण नैण दरसाइंदा। गुरसिख वेखे साचा लाड़ा, सतिगुर आपणे रंग रंगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आदि जुगादि

जुग जुग करे पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग वेखे विगसे वेखणहारा, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। कागद कलम लिख लिख हारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव कोए ना आइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी वसणहारा सब तों बाहरा, निरगुण निराकार सचखण्ड निवासी सच दुआरे आसण लाइंदा। भगतां मेला अगम्म अपारा, करे कराए आपणी धारा, धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यारा, जोती जोत जोत चमत्कारा, शब्दी शब्द शब्द धुन्कारा, अमृत आत्म सरोवर ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर मन्दिर आप सुहाइंदा। दर मन्दिर सोहे काया बंक, बंक दुआरी दए वड्याईआ। आपणी महिमा जणाए बेअन्त, बेअन्त आपणा नाउँ सुणाईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। लोकमात बणाए बणत, घड़न भन्नणहार समरथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरिजन हरि जू मार्ग दस्स, हिरदे अंदर आपे वस, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। तीर निराला अणयाला मारे कस, साचा चिल्ला इक्क उठाईआ। पंच विकारा करे भञ्ज, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। जन भगतां वसे सदा साथ, हरि जू आपणा संग निभाईआ। लेखा जाणे सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, हथ्थो हथ्थ रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अंदर बैठा वड़, सच महल्ले आपे चढ़, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। निरगुण निरगुण बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। बदलणहार तकदीर, तदबीर आपणी आपणे हथ्थ रखाइंदा। नाम खण्डा सच शमशीस, शाह पातशाह इक्क चमकाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ ज़ंजीर, ज़रा ज़रा आप कराइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा सीर, सांतक सति सति वरताइंदा। गुरमुखां मिले पैंडा चीर, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे अंग लगाइंदा। अंगीकार आपे कर, हरि करता वेख वखाइंदा। घर विच घर खोल्हे दर, दर मन्दिर आप सुहाइंदा। दर मन्दिर साचे बैठा चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सच सिँघासण आपणा अक्खर रिहा पढ़, जगत विद्या ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन खोल्हे बन्द किवाड़, काया ताकी आपे लाहइंदा। काया ताकी देवे खोल्ह, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। शब्द अनाद अनादी वजाए ढोल, मृदंगा एका ताल सुणाईआ। कृपानिध ठाकर स्वामी साचे मन्दिर आपे बोल, नाम जैकारा दए अल्हाईआ। आत्म परमात्म वसे कोल दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणी खेल कराईआ। करनहारा उलटा कौल, नाभी कँवल आप उलटाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए आपणा घर, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। घर मन्दिर काया गागर, गृह गृह आपणा खेल कराइंदा। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, हरि जू उजरत ना कोए लगाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ग़रीब निमाणयां देवे आदर, फड़ बांहों गले लगाइंदा। कलयुग अन्तिम पार किनारा करे डूँघा सागर, शौह दरयाए ना कोए रुढ़ाइंदा। एथे ओथे दो जहानां देवे आदर, आपणा आदरश आप वखाइंदा। करता करीम रहीम कादर, कुदरत करता वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन आपणे संग रखाइंदा। हरिजन साचे संग रख, रख्या आपणी आप जणाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, साख्यात दरस कराईआ। सृष्ट सबाई नालों कर कर वक्ख, वक्खरा राह आप समझाईआ। हिरदे अंदर आपे वस वस, आप आपणा मेल मिलाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर सदा सुहेला गाए जस, जन भगतां आप सालाहीआ। सचखण्ड निवासी लोकमात निरगुण रूप आया नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। हरिजन देवे साची वथ, गुरमुख झोली नाम भराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग उलटी गेड़नहारा लठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरि जू आपणे लेखे पाईआ।

✳ ३१ हाढ़ २०१६ बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे गृह करतार पुर ज़िला जलन्धर ✳

सचखण्ड दवारे सच्चा शहिनशाह, हरि सतिगुर आसण लाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर बुला, सच संदेसा आप जणाइंदा। नेत्र नैण लओ खुला, पूरब लेखा सर्ब वखाइंदा। रल मिल सारे करो सलाह, सलाहगीर आप जणाइंदा। दो जहानां वेखो थाउँ थाँ, थान थनंतर आप समझाइंदा। आदि जुगादी कवण मलाह, खेवट खेटा कवण अख्वाइंदा। कवण फड़ फड़ पाए राह, रैहबर आपणा राह वखाइंदा। कवण नाम वस्त देवे झोली पा, दस्त बदस्त आप फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सचखण्ड साचे खेल कराइंदा। सचखण्ड दवारे हरि निरँकारा, एका आपणा खेल कराईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह हो उज्यारा, निरगुण आपणा पड़दा लाहीआ। अजूनी रहित कर पसारा, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। अनभउ प्रकाश अनडिठड़ी धारा, जोती जाता जोत रुशनाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त आसण लाईआ। सच संदेसा एका वारा, निरगुण निरगुण आप जणाईआ। लेखा जाण गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर संग वखाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। मुकामे हक़ इक्क नज़ारा,

लाशरीक आप जणाईआ। साची नौबत नाम नगारा, परवरदिगार आप सुणाईआ। एका नाम मन्त्र आदि बोल जैकारा, जै जैकार करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे खड़, दरगाह साची धाम सुहाईआ। सचखण्ड दवार पुरख अबिनाशा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण निरगुण नूर आपे जाणे आपणी रासा, दूसर संग ना कोए वखाइंदा। एकँकारा वेखणहारा खेल तमाशा, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। आदि निरँजण नूर प्रकाशा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता शाहो शाबाशा, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। श्री भगवान आपे करे आपणी पूरी आसा, आशा आसा नाल मिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दासी दासा, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवार सच महल्ला, सति सतिवादी आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, एकँकारा आसण लाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर शब्द अगम्म फड़ाए पल्ला, जोती जोत बन्धन पाईआ। सच संदेस नर नरेश निरगुण सरगुण आपे घल्ला, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह एकँकारा, आप आपणा खेल कराइंदा। आदि पुरख वेखे विगसे वेखणहारा, अन्त आपणी कल धराइंदा। धर भेख निरगुण जोत निराकारा, आदि निरँजण आपणा ज़ोर प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल आपणे हथ्थ, आदि पुरख आदि आदि रखाईआ। सचखण्ड दवारे बैठ समरथ, समरथ आपणी कल वरताईआ। निरगुण निरगुण सुणाए महिमा अकथ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। आप चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, सचखण्ड दवारे आपणी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा वेस आप धराईआ। आपणा वेस आपे रख, अकल कलधारी खेल कराइंदा। निरगुण निराकार निरवैर हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। सर्ब कल हो समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। वेखणहारा सचखण्ड, खण्ड सच्च, आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा राह चलाईआ। निरगुण निरगुण देवे दान, निरगुण दाता निरगुण भिखारी निरगुण बैठा झोली डाहीआ। निरगुण मन्दिर निरगुण मकान, निरगुण वसे नौजवान, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। निरगुण नार निरगुण कन्त, निरगुण खेल श्री भगवन्त, निरगुण सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वड़ आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव हरि करतार, आदि आपणे हथ्थ

रखाइंदा। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर नज़र किसे ना आइंदा। नार कन्त बण भतार, साची सेज आप हंढाइंदा। दाई दाया सेवादार, बण सेवक सेव कमाइंदा। जननी जन पूत सपूता जणे एका वार, दूजी वार कुक्ख ना कोए बणाइंदा। साचा सुत कर त्यार, हरि शब्दी नाउँ धराइंदा। देवे वर एकँकार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तेरा लेखा इक्क दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। सचखण्ड वसे आप निरँकार, थिर घर पड़दा तेरा लाहइंदा। बंस सरबंस कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पाइंदा। महल अटल तेरा मुनार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरे रंग रंगाइंदा। नूरो नूर किरन किरन उज्यार, रवि ससि आप चमकाइंदा। मंडल मण्डप दे सहार, आदि पुरख आपणी दया आप कमाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी बाण आपणे हथ्थ रखाइंदा। सुत दुलारा सेवादार, साची सेवा आप लगाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत लख चुरासी तन शंगार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। करे खेल आप निरँकार, निरगुण निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर उज्यार, घट घट आपणा आसण लाइंदा। आत्म परमात्म खेल अपार, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। ईश जीव दे आधार, जगदीस सोभा पाइंदा। एका अक्खर कर त्यार, निष्अक्खर आप जणाइंदा। निरगुण नाउँ बोल जैकार, जै जैकार बिन रसना जिह्वा गाइंदा। शब्द सुत करे प्यार, अबिनाशी अचुत्त गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव हरि जू खोल्ह, सचखण्ड दवार सुणाईआ। सुत दुलारे तेरा ढोल, थिर घर दए वजाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सद वसे तेरे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा नूर लए वरोल, नूर नूर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा एका वार सुणाईआ। सच संदेसा साचा गीत, आदि पुरख आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी साची रीत, थिर घर दुआरे आप चलाइंदा। निरगुण निराकार बैठ अतीत, त्रैगुण आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे साची वस्त तेरी झोली पाइंदा। साची वस्त देवे दान, देवणहार इक्क अख्वाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव इक्क ज्ञान, अक्खर आखर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, लख चुरासी सोभा पाइंदा। घट घट अंदर खोल्ह दुकान, घर घर आपणी वस्त टिकाइंदा। घर घर अंदर राग धुर धुन्कान, रागी आपणा राग सुणाइंदा। घर घर अंदर अमृत आत्म पीण खाण, सर सरोवर आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वंड निरगुण हथ्थ निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण रंग अपर अपार, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। आत्म सेजा कर त्यार, त्रैभवण धनी बैठा आसण लाईआ। शब्द सुत कर प्यार, साचा वणज आप वखाईआ। घट घट अंदर बोल

५४८
१२

जैकार, दिवस रैण ढोला गाईआ। लुकया रहे निरगुण धार, सरगुण आपणे उपर पड़दा पाईआ। पंज तत्त बाहर आकार, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। नौ दुआरे जगत किवाड़, आसा तृष्ना माया ममता हउमें हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, सच दुलारे तेरा खेल दर अपारे, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता दए समझाईआ। जुग करता हरि करतार, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। विष्नूं देवे विश्व भण्डार, ब्रह्मा पारब्रह्म पढ़ाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कार, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। एका मन्दिर कर त्यार, एका घर बहाइंदा। एका गुफ़त शनीद पावे सार, अंदर बाहर एका रंग रंगाइंदा। एका बोल सच जैकार, जै जैकार आपणा नाम समझाइंदा। एका वंडां पावे वंडणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाइंदा। एका जाणे धुर दी कार, चार वेदां मुख सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी देवणहारा साचा वर, थिर घर आपणी वस्त वरताइंदा। शब्दी सुत बाल अञाणा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सुल्तान सच्चा राजाना, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। हउँ दर दरवेश दर सीस झुकाना, निष्उँ निउँ सजदा सीस कराईआ। तूं साहिब सुल्तान मर्द मर्दाना, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। तेरा नूर नूर नुरना, तेरी जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला आपणा लेखा लए लगाईआ। कवण वेला लेखा जाए लग्ग, शब्दी सुत मंग मंगाइंदा। तेरा खेल सूरे सरबंग, मोहे बाले भेव ना आइंदा। तेरे हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड लए रच, रवि ससि सूरज चन्न पृथ्मी आकाश गगन मंडल आप सुहाइंदा। तेरा नाउँ प्रकाश कर सच्च, सच सच सर्ब दृढ़ाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर त्रैगुण माया पंज तत्त, माटी कच्च लख चुरासी घाड़त घड़त घड़ाइंदा। मन मति बुध अंदर रख, उपर आपणा पर्दा पाइंदा। आत्म परमात्म कर कर वक्ख, घर घर विच आप टिकाइंदा। तेरा खेल पुरख समरथ, दो जहानां आप चलाइंदा। कवण बिध गावें आपणा जस, सिफ्त सालाही सिफ्त विच ना आइंदा। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म एकँकार रिहा हस्स, हस्स हस्स आपणी खुशी मनाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर जाए वस, वस वस आपणा डेरा लाइंदा। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी फेरा पाइंदा। शब्द सुत तेरी साची यद्द, लोकमात आप प्रगटाइंदा। गुर अवतार अन्तर अन्तर पार कराए हद्द, हद्द आपणी आप वखाइंदा। तेरा नाउँ वजाए नद्द, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। तेरा रस जाम प्याए मध, एक अमृत मुख चुआइंदा। तेरी कुक्खों आपे कढ्ढ, लोकमात धराइंदा। नाता जोड़ रक्त बूंद मास नाड़ी हड्ड, पंचम आपणा खेल कराइंदा। बोध अगाधा मार्ग दस्स, स्वच्छ सरूपी आपणा दरस कराइंदा। करे खेल पुरख समरथ, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। लख

५४६
१२

चुरासी पाए नथ्थ, डोरी आपणे नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप जणाइंदा। साची सिख्या श्री भगवान, शब्दी सुत आप जणाईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, गुर अवतार मात प्रगटाईआ। भगत भगवन्त कर परवान, साची सिख्या इक्क रखाईआ। सन्तां देवे सति दान, नाम सति सति झोली पाईआ। गुरमुखां बख्शे इक्क ध्यान, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। गुरसिख सज्जण वेखे आण, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। एका नाम कर प्रधान, दो जहानां हुक्म चलाईआ। सच संदेसा देवे आण, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन परवान, सब बैठण सीस झुकाईआ। देवणहार श्री भगवान, आदि अन्त आप वरताईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, निरगुण सरगुण आप वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे मार ध्यान, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। नौ नौ चार होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान रसन पढ़ाईआ । अञ्जील कुरान संग ज़बान, बेज़बान आप वखाईआ। खाणी बाणी कर प्रधान, जगत नाता मात जुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गा गा जाण, सच संदेसा लोकमात सुणाईआ। कलयुग अन्तिम सृष्ट सबाई होए बाल नादान, साची बुध ना कोए रखाईआ। मन मति दिसे झूठ निशान, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। घर घर वड़े पंज शैतान, नार कन्त ना कोए हंढाईआ। नज़र आए ना श्री भगवान, साचा इस्म ना कोए जणाईआ। नौ खण्ड पृथमी होए वैरान, सत्त दीप धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत देवे वर, तेरा लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। साचे सुत वड बलवान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी चले दुकान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेवा लाइंदा। कोटन कोटि रूप धर श्री भगवान, अनुभव आपणी खेल कराइंदा। लिख लिख लेखा जगत महान, बण कातब कलम चलाइंदा। रसना जिह्वा दे दे ज्ञान, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ खेल महान, चार दीवारी गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत कर ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाया। हरि पुरख निरँजण हो हैरान, भेव अभेदा आप खुल्हाया। एकँकारा वड बलवान, आपणा पड़दा दए उठाया। आदि निरँजण नूर महान, दो जहान करे रुशनाया। अबिनाशी करता देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताया। श्री भगवान सच निशान, दरगाह साची दए झुलाया। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। ब्रह्म वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण इक्क खुल्हाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सब दा लेखा मंगे आण, बचया कोए रहिण ना पाया। प्रगट हो वड मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा दए चुकाया। तेरा लहिणा चुक्के अन्तिम मात, हरि जू हरि

हरि आप जणाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। कलयुग कोए ना निभे साथ, सगला संग सर्ब तजाइंदा। किसे कम्म ना आवे चार लख बत्ती हज़ार लिखी गाथ, गाथा जगत नाल वंडाइंदा। करे खेल एका समराथ, समरथ आपणी धार वखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। वेखणहारा चौदां लोक हट्ट, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाइंदा। चौदां तबकां मारे एका सट्ट, नाम निधाना हथ्थ उठाइंदा। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रात, धूंआँधार सर्ब मिटाइंदा। लहिणा देणा चुकाए ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। राज राजानां शाह सुलातानां करे ख़ाक, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देवे दात, चार वरन अठारां बरन आप पढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई बणाए इक्क जमात, जुम्मला अक्खर इक्क सुणाइंदा। वेखणहारा कायनात, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाइंदा। अठ्ठे पहर रखाए इक्क प्रभात, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे देवे वर, तेरा अन्तिम रूप आपणे नाल मिलाइंदा। अन्तिम रूप हरि निरँकार, निरगुण निरगुण नाल मिलाईआ। लेखा चुक्के गुर अवतार, पीर पैग़म्बर पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतार, मकरूज़ कोए रहिण ना पाईआ। शब्द संदेसा घल्ले एका वार, सति सतिवादी आप सुणाईआ। सचखण्ड दवारे चरन कँवल चल के आउणा निरगुण धार, सरगुण रूप ना कोए वखाईआ। कागद कलम शाही अन्तिम गई हार, लिख्या लेख आपणे लेखे पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो वंडां वंडदे रहे विच संसार, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रूप वटाईआ। अन्तिम सब दा लेखा लिख्या इक्को वार, पुरख अबिनाशी आप मुकाईआ। इक्क वखाए सच दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। नज़री आए परवरदिगार, ईसा मूसा मुहम्मद संग चार यार बैठे सीस झुकाईआ। तेई अवतार करन निमस्कार, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। अठारां भगत बोल जैकार, जै जैकार रहे सुणाईआ। दस गुर इक्क गुफ़तार, एका सोहला ढोला गाईआ। पारब्रह्म तेरी साची कार, घर साचे मोहे भाईआ। अन्तिम लहिणा चुकया विच संसार, लोकमात लेखा रहे ना राईआ। निरगुण मिले निरगुण धार, सरगुण इष्ट ना कोए वखाईआ। इक्को तेरा नाउँ प्यार, दूजा मित्र ना कोए बणाईआ। साक सैण सज्जण ना कोए आधार, सगला संग ना कोए निभाईआ। कर किरपा एका बख़्श चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क जणाईआ। सच संदेसा हरि करतारा, एका एक जणाइंदा। रल मिल बहो गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर नाल मिलाइंदा। हरि हरि गाओ इक्क जैकारा, दूजा नाअरा ना कोए सुणाइंदा। मक्के काअबे वसे परवरदिगारा, दो दो आबा मेल मिलाइंदा। तन रबाबा इक्क सितारा, बण अहिबाब आप वजाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत सुत वड्याइंदा। शब्द सुत हरि जाणा जाग, हरि जू एका वार जगाईआ। कलयुग अन्तिम लग्गे भाग, घर तेरे वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ा मिटे चिराग़, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। चार वरन धोवे दाग़, दुरमति मैल आप धुवाईआ। फड़ फड़ हँस बणावे काग, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका घर बहाईआ। आत्म परमात्म मेला कन्त सुहाग, घर सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। त्रैगुण माया ना तपे आग, अमृत मेघ आप बरसाईआ। लेखा जाणे दो जहान आदि जुगादि, जुग करता भुल्ल ना जाईआ। साचे भगतां देवे नाम दाद, मुर्शद मुरीद लए मिलाईआ। सूफ़ी वखाए साचा हाज, हक़ हक़ीक़त पड़दा लाहीआ। एका हुजरे वखाए सच निमाज़, नाम मुसल्ला हेठ विछाईआ। शब्द अगम्मी मार आवाज़, सुरती शब्द मेल कराईआ। राम सीता सीता राम सुरत सवाणी खेले खेल विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड करे आप कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द तेरा वर, कलयुग अन्तिम पूर कराईआ। कलयुग अन्तिम सच निशान, सो पुरख निरँजण तेरा आप झुलाइंदा। लेखा जाणे गोपी काहन, घर घर बंसरी नाम वजाइंदा। सच संदेसा दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप सुणाइंदा। नज़री आए एका शाम, घनईया आपणा रंग रंगाइंदा। एका नाम प्याए जाम, निरगुण अमृत रस चखाइंदा। नानक सरगुण कर परवान, साख्यात वेख वखाइंदा। गोबिन्द गुर गुर देवे दान, पुरख अकाल दया कमाइंदा। सुत दुलारा कर बलवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका फ़तेह डंका वज्जे विच जहान, सृष्ट सबाई आप सुणाइंदा । कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, मात पित ना कोए रखाइंदा। सृष्ट सबाई लेखा मंगे आण, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बचया कोए रहिण ना पाइंदा। कूड़ी क्रिया नाता तोड़े जगत शैतान, शरअ शरीअत फ़ातया आप पढ़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। नज़री आए श्री भगवान, जोती जाता डगमगाइंदा। रसना किसे कह ना सके ज़बान, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहइंदा । नज़र ना आए किसे विच चार दीवार मकान, तीर्थ तट जल धार ना डेरा लाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ देवे माण, घर घर विच आपणा नूर धराइंदा । दिवस रैण नाद सुणाए सच्ची धुन्कान, धुंन आत्मक राग अलाइंदा। एका अमृत रस देवे पीण खाण, पीआ प्रीतम निझर झिरना आप झिराइंदा । भगत भगवन्त मेले आण, जगत विछोड़ा पन्ध कटाइंदा। साचे सन्तां कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। गुरमुखां देवे एका दान, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाइंदा। गुरसिख गुर गुर शब्द ज्ञान, अक्खर आख़र आप पढ़ाइंदा। सतिजुग साचे करे प्रधान, सृष्ट सबाई हुक्म वरताइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार ब्रह्म ब्रह्मांड सर्ब कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आत्म रखे उत्तम जाता,

ब्रह्म नीच रूप ना कोए वखाइंदा। नीच ऊँच ना कोए ज़ात, कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ। सब दा मेला करे कमलापात, कँवल नैण आपणा दरस दिखाईआ। आत्म खोल्हे काया ताक, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। घर मिले सज्जण साक, निज घर बैठा डेरा लाईआ। आदि जुगादी पाकी पाक, पत्तत रूप ना कोए वटाईआ। कलयुग अन्तिम करे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। गुरमुख विरले पूरी करे आस, जिस जन आपणी दया कमाईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, सोहबत आपणे नाम जणाईआ। लहणा चुक्के दस दस मास, मात गर्भ ना फेर भुवाईआ। अन्तिम करे बन्द ख़ुलास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना आए पास, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां करे पूरी आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। आदि अन्त ना कोए निरासा, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। एथे ओथे दो जहान चरन कँवल दए भरवासा, भरम भुलेखा भउ कढाइंदा। सदा सुहेला अंग संग वसे साथा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दासी दासा, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत देवे वर, गुर सतिगुर तेरा नाउँ वड्याइंदा। शब्द सुत अन्त तेरा नाउँ, नर निरँकारा दए वड्याईआ। प्रगट करे सभनी थाउँ, सोहँ तेरा रूप वखाईआ। कोई पकड़ ना सके बांहों, हथ्थ पैर मूँह नक्क नज़र किसे ना आईआ। आत्म निरगुण परमात्म देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। करे खेल जिउँ पुत्रां माउँ, गुरसिख बाल अञ्याणे आपणी गोद बहाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करनहारा सच न्याउँ, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। नथाव्यां देवे साचा थाउँ, दरगाह साची आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका अक्खर दए समझाईआ। एका अक्खर सोहँ धार, सतिजुग सति सति हरि जणाइंदा। गुरमुख गुर गुर कर विचार, गुर चेला रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यार, प्रेम प्यारा मेल मिलाइंदा। लख चुरासी भरमे भुला सर्ब संसार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ार, कूक कूक कूक सुणाइंदा। धरनी धाहां रही मार, सीस भार ना कोए उठाइंदा। नज़र ना आए कोए गुर अवतार, पीर पैग़म्बर मुख छुपाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआरे हाहाकार, हरि का नाउँ नज़र किसे ना आइंदा। जगत स्यासत मारे मार, विच हिरास्त सर्ब वखाइंदा। अन्तिम लहिणा देणा चुक्के विच संसार, पुरख अबिनाशी पन्ध मुकाइंदा। बीस बीसा हो त्यार, सच हदीसा आप सुणाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां होणा ख़बरदर, बेख़बर आप जगाइंदा। शब्दी शब्द सुत आया बलकार, सतिगुर गुर गुर रूप वटाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज मारे मार, हुक्मी हुक्म हुक्म चलाइंदा। ना कोई मेटे मेटणहार, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्दी सुत एका वर, तेरा दर आप खुल्हाइंदा। तेरा दर जाए खुल्ह, शब्द गुर इक्क वड्याईआ। पुरख अबिनाशी तोले तोल, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, ना डोले ना कोए डुलाईआ। कलयुग जीव रहे अनभोल, रातीं सुत्तयां रैण विहाईआ। गुरमुखां देवे वस्त अनमोल, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला वसे कोल, घर घर विच डेरा लाईआ। अन्तर अन्तर जाए मौल, मौला आपणा खेल कराईआ। उलटा करे नाभ कौल, कँवल नाभ आप उलटाईआ। सच प्याए एका पौहल, बिन रसना रस चखाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, ग्रन्थी पन्थी मुल्ला शेख़ मुसायक नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। त्रैगुण माया जगत विकारा करया घोल, पंज तत्त तत्त लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, बेपरवाह अगम्म अथाह, श्री भगवान सच निशान दो जहान, रहिमत रहिमान रहीम आप कमाईआ। रहीम रहिमान हरि रहिमाना, इलम आलम आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर तालब तुलबा कर परवाना, साचे मकतब आप पढ़ाइंदा। एका अल्फ़ नूर महाना, ये युकती हथ्थ रखाना, रसूल आपणे रंग रंगाइंदा। एका अक्खर कर प्रधाना, तिन्न पंज पैंती अक्खरी कर परवाना, आख़र आपणा भेव छुपाइंदा। जोधा सूर मर्द मर्दाना, पीर पैग़म्बर
५५४ वड सुल्ताना, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम पहरे बाणा, सम्बल वसे सच मकाना, नानक गोबिन्द मेल ५५४
मिलाइंदा। ईसा मूसा कर परवाना, संग मुहम्मद देवे दाना, चौदां तबकां इक्क कलामा, नबी रसूल आप पढ़ाइंदा। नानक
१२ निरगुण पहरे बाणा, सति सति निशाना, सचखण्ड वसे श्री भगवाना, निरगुण जोती जोत डगमगाइंदा। गोबिन्द सुत बाल १२
अञ्याणा, खेले खेल श्री भगवाना, साचा छत्र सीस झुलाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे गुण निधाना, निहकलंक कल कल्की पहरे आपणा बाणा, बावन लेखा चुक्के विच जहाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग वखाए सच निशान, सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, एका मन्त्र इक्क विधान, एका रसना इक्क ज़बान, इष्ट देव आत्म परमात्म इक्क जणाईआ।

✳ पहली सावण २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✳

सचखण्ड दवारे खेल महान, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, निरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। एकँकारा वड जवान, बलधारी बल प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, नूर नुराना नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी

करता लेखा जाणे दो जहान, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। श्री भगवान सति निशान, सति सतिवादी आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, परम पुरख प्रभ सीस झुकाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमाण, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। बोध अगाधी बेज़बान, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। शाह पातशाह हुक्मरान, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। चतुर्भुज खेल महान, आदि शक्ति पड़दा लाहइंदा। मुकामे हक़ हो प्रधान, जल्वा नूर आप धराइंदा। सचखण्ड दवारा खोल्ह दुकान, महल अटल आप वड्याइंदा। थिर घर अन्तर जोत महान, नूर नुराना नूर रखाइंदा। करे खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। साची करनी करता कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शाहो भूप आपे बण, तख्त निवासी तख्त सुहाईआ। सीस जगदीस ताज धर, हुक्म हाकम आप सुणाईआ। शब्द संदेसा एका घल्ल, नर नरेशा करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण खेल अगम्म अपर, अलख अगोचर आप कराईआ। निरभउ भय चुकाए डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। सच दुआरे आपे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी हरि करतार, करता पुरख आप कराइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब परवरदिगार, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। हक़ हक़ीक़त पावे सार, लाशरीक आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण निरगुण हो उज्यार, निरवैर आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेद श्री भगवान, आदि जुगादी आपणे हथ्थ रखाईआ । सचखण्ड निवासी खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। निरगुण निरगुण हो प्रधान, परम पुरख वेस अनेक एकँकारा आप वटाईआ। देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारे साचा चा, सो पुरख निरँजण आप मनाइंदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, आपणी धारा आप प्रगटाइंदा। एकँकारा नाउँ रखा, नाउँ निरँकार आप समझाइंदा। आदि निरँजण नूर धरा, नूरो नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता शहिनशाह, राजन राज वेस वटाइंदा। श्री भगवान सति निशान झुला, दो जहानां आप वखाइंदा। साची सिख्या इक्क समझा, साख्यात वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ पुरी रचन रचा, मंडल मण्डप डेरा लाइंदा। रवि ससि नूर चमका, धरत धवल पृथ्मी आकाश गगन गगनंतर आपणा खेल कराइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी साचा सोहला ढोला आपे गा, नाउँ निधाना आप जणाइंदा। पड़दा ओहला दए उठा, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सरगुण चोला आप बदला, त्रै पंज साचा मेल मिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझा, समझ समझ नाल मिलाइंदा। कागज़ कलम लिख लिख शाह, साची साखी आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी कल आपे रख, हरि जू आपणी खेल कराईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रतख, थिर घर देवे माण वड्याईआ। निरगुण नाउँ निरगुण रख, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। साचा मार्ग एका दस्स, एकँकारा राह चलाईआ। एका नूर कर प्रकाश, एका वेखे चाँईं चाँईंआ। एका होए सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वड वड्याईआ। एका सेवक बणे दासी दास, दर साचे फेरा पाईआ। एका लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां उपर डेरा लाईआ। एका वेखणहारा खेल तमाश, खेले खेल खेलणहारा नज़र किसे ना आईआ। एका जाणे मंडल रास, गोपी काहन आप नचाईआ। एका शाहो शहिनशाह बणे शाबाश, शाह पातशाह आपणा बल आप प्रगटाईआ। एका पूरी करे आस, आसा आसा विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करने योग, युगती आपणे हथ्थ रखाइंदा। पुरख अबिनाशी है भी होग, निरगुण नूर नुराना डगमगाइंदा। सचखण्ड दवारे सच संजोग, नार कन्त रूप वटाइंदा। भस्मड़ हो हो भोगे भोग, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। साचे वसे किले कोट, छप्परी छन्न चार दीवार ना कोए बणाइंदा। इक्को इक्क निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे देवे साचा वर, वर दाता आप हो जाइंदा। वर दाता हरि देवे दान, देवणहार अख्वाईआ। आदि जुगादी एका काहन, मुकंद मनोहर लखमी नरायण इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर हो प्रधान, जुग जुग आपणा भेव चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। पंचम तत्त खेल महान, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश वेखे आण, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। लिख लिख लेखा लेख महान, शब्द अगम्मी देवे दान, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। एका अन्त निरगुण नूर नूर भगवान, पंज तत्त ना कोए निशान, तत्तव तत्त ना कोए कुड़माईआ। सति सतिवादी नौजवान, वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकान, बाल बिरध रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणा पड़दा आप उठाईआ। आपणा पड़दा आपे चुक्क, हरि जू आपणा भेव चुकाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण लुक, निरगुण वेख वेख ख़ुशी मनाइंदा। निरगुण नूर निरगुण जोत, निरगुण बिमल रूप समाइंदा। निरगुण किला निरगुण कोट, निरगुण अंदर आसण लाइंदा। निरगुण शब्द नगारा चोट, निरगुण आपणा राग अलाइंदा। निरगुण लेखा जाणे ओत पोत, पूत सपूता वेख वेख वखाइंदा। निरगुण वरन निरगुण गोत, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण साचे चढ़, एकँकारा आसण लाइंदा। एकँकार आसण गया लग्ग, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सच सिँघासण बैठ सूरा सरबग,

भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। आपे जाणे आपणी हद्द, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निरगुण सरगुण बणा बणा आपणी यद्द, लोकमात विश्व खेल कराईआ। काया मन्दिर अंदर आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द वजाउँदा रहे नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत आत्म जाम प्याए साची मदि, मधुर रस इक्क वखाईआ। आपणे विच्चों आपे कढ्ढ, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। शब्दी गुर लडाए लड, सतिगुर आपणी गोद सुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मास नाड़ी चम्म ना कोए हड्ड, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वस, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण वसावणहारा सच महल्ला, थिर घर साचा आप वड्याइंदा। एकँकारा फड़ावणहारा पल्ला, गुर पीर अवतार आपणे लड़ बंधाइंदा। आदि निरँजण निरगुण जोत आपणे प्रकाश आपे बल्ला, दीवा बाती कमलापाती संग ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान सच निशान दो जहान झुलाए आण, निरगुण आपणी सेव कमाइंदा। अबिनाशी करता देवे दान, पारब्रह्म ब्रह्म करे परवान, ब्रह्म वेता वसणहारा नेतन नेता, नेरन नेरा आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे वड़, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। गृह मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आपे बणे नार कन्त, दाई दाया आप अख्वाईआ। आपे जन जननी बण बणाए बणत, सुत दुलारा आपे जाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आपे देवे नाम मणीआ मंत, मन वासना ना कोए रखाईआ। आपे आदि आपे अन्त, मध अपणी धार चलाईआ। आपे खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा हरि निरँकारा, निरगुण धारा नूर रुशनाईआ। निरगुण धार पुरख अकाल, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। वसणहारा, सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच दुआरे डेरा लाइंदा। आदि जुगादी दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्म होए सदा निहकामी, निरगुण आपणा रंग आप रंगाइंदा। निरगुण रंग अगम्म अपार, नज़र किसे ना आईआ। सचखण्ड निवासी वेखे वेखणहार, वेख वेख आपणी खुशी मनाईआ। किरपा करे अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण दए आधार, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। नाम वस्त झोली डार, अनडिठड़ी दात आप वरताईआ। आत्म परमात्म कर प्यार, परम पुरख मेला लए मिलाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म दए आधार, आप आपणे अंग लगाईआ। ईश जीव खोल्ह किवाड़, जगदीस होए सहाईआ। नाता जोड़ विच संसार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। एका अक्खर कर त्यार, निषअक्खर दए समझाईआ।

जिस दा अन्त ना पारावार, सो आपणा भेव खुल्हाईआ। गुर अवतार कर त्यार, त्रैगुण अतीता देवे सति सालाहीआ। लोकमात सच विहार, हरि नाउँ शब्द शनवाईआ। हुक्मे अंदर करनी कार, करता पुरख दए समझाईआ। सृष्ट सबाई सृष्ट विहार, दृष्ट दृष्ट नाल मिलाईआ। इष्ट एक एकँकार, आदि जुगादि समाईआ। साची सिख्या गुर अवतार, पारब्रह्म प्रभ एका वार पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर भुल्ल ना जाए विच संसार, संसा होर ना कोए रखाईआ। आत्म ताकी खोल्ह किवाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। अमृत आत्म सच प्याला देवे ठंडा ठार, निझर झिरना एका वार झिराईआ। त्रैगुण अग्नी ना सके साड़, पंज तत्त ना करे लड़ाईआ । नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना दए चुकाईआ। आत्म परमात्म कर प्यार, प्रेम रीती इक्क सिखाईआ। छोटे बाले उठाए गुर अवतार, सतिगुर आपणी सिख्या आप समझाईआ। लोकमात करो विहार, करनी करता दए जणाईआ। रसना गाओ इक्क करतार, जिह्वा आपणी नाल मिलाईआ। बत्ती दन्द जगत विहार, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। गीत सुहागी छन्द घर घर करे जैकार, जै जैकार आपणा नाउँ दृढ़ाईआ। मन्दिर अंदर मन्दिर रख, करे खेल पुरख समरथ, घर घर विच लए बणाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, नूर नूर नूर रुशनाईआ। आप ओहले हो हो रिहा हस्स, आपणा भेव ना कोए जणाईआ। जे कोई गुर अवतार अग्गों पुच्छे प्रभ मार्ग दस्स, शब्दी शब्द दए समझाईआ। इक्को गाउणा मेरा जस, मेरा जस तेरी वड्याईआ। तेरा काया तन चलावां रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। बिन चरनों चरनी जाणा ढठ्ठ, हरि का चरन नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा जिस नूं आपणा आप देवे दस्स, बिन नेत्र नज़री आईआ। मेहरवान मेहरवान काया मन्दिर अंदर जाए वस, साचा खेड़ा दए सुहाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ पूरी करे आस, गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। सृष्ट सबाई खेल तमाश, ख़ालक खलक वेखे चाँईं चाँईंआ। अन्तिम आपणे अंदर रखे डूँघा ख़ात, जिस दा किनारा नज़र कोए ना आईआ। जे कोई वेखे मार झात, चरनां हेठां हेठां दए दबाईआ। जे कोई मंगे प्रभ तेरा साथ, निरगुण नूर दरस दरस दरस कराईआ। जे कोई मंगे रहिवां तेरे साथ, छोटे बाले बणा के आपणी उँगली लाईआ। जे कोई मंगे दस्स आपणी गाथ, इक्को नाउँ दए समझाईआ। जे कोई पुच्छे दस्स साची ज़ात, ज़ात पात ना कोए समझाईआ। मेरा दरस वडी करामात, दूसर वस्त ना कोए विकाईआ। गुर अवतार पहली बणाई इक्क जमात, पहला अक्खर आप पढ़ाईआ। लेखा लिख लिख दस्सया बिन कलम दवात, ना कोई रखी नाल शाहीआ। अंदर वड़ वड़ आपे मारे झात, झाकी आपणी आप वखाईआ। कर किरपा खोल्हे ताक, कुंजी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां इक्को वार दस्सया पुरख अकाल तुहाड्डा साक, दूजा सज्जण नज़र

कोए ना आईआ। पंज तत्त माटी होए ख़ाक, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। जे किसे मिलणा रसूल पाक, पारब्रह्म प्रभ इक्को नज़री आईआ। इक्क वखाए साचा हाट, चरन दुआरा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर एका करे सच पढ़ाईआ। इक्क पढ़ाई इक्को अल्फ़, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सारे उठ के लओ हल्फ़, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। लोकमात जाणा मुड़ के आउणा परत, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। मेरा नाउँ लैणा निधड़क, अक्खर आखर आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। साची सिख्या सच दरबार, दरगाह साची आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, निरगुण सरगुण दए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरे पार, लोकमात फिर फिर सेव कमाईआ। सो पुरख निरँजण करे आपणी कार, करनी करता आप कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे पढ़ाईआ। गीता ज्ञान कर उज्यार, अञ्जील कुरान सिफ्त सालाहीआ। खाणी बाणी जगत विहार, सच निशान दए जणाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार, भगत भगवन्त लए प्रगटाईआ। पीर पैग़म्बर दस्तगीर खेल न्यार, दो जहानां वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग करता पुरख करे आपणी कार, करनी हरि जू आप कमाईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यार, निरगुण निरगुण निरगुण वेस लए वटाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, लहिणा देणा नेत्र नैणा सब नूं दए वखाईआ। आदि अन्त हरि निरँकार, आपणा खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी कर कर पार, आप आपणे विच छुपाइंदा। लेखा जाण गुर अवतार, धुर मस्तक वेख वखाइंदा। सच संदेसा देवे वारो वार, जुगा जुगन्तर आप पढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे अपार, कल कल्की वेस वटाइंदा। निहकलंक नाउँ निरँकार, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। नाम डंका विच संसार, वड संसारी आप सुणाइंदा। कूड़ी क्रिया करे खुआर, जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सतिजुग साची करे विचार, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, उठ उठ आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, राउ रंक राज राजान एका दर बहाइंदा। साचा मार्ग दए सखाल, चार वरन सिख्या इक्क समझाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे प्रितपाल, प्रितपालक आपणी सेव कमाइंदा। अन्तर आत्म बणया रहे दलाल, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। भगत भगवन्त गुरमुख गुर गुर मेल मिलाए साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्तिम हो दलाल, गुरसिख गुर गुर जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाइंदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा कुण्डा लाहइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल,

जागरत जोत इक्क जगाइंदा। अमृत आत्म इक्क प्याल, रस रसीआ रस वखाइंदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंग अन्तिम कल, कलधारी आप रंगाईआ। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, अछल छल आपणा खेल कराईआ। जन भगतां अंदर गया रल, नज़र किसे ना आईआ। राती सुत्तयां पुच्छे गल्ल, गलवकड़ी आपणी पाईआ। वसणहारा जल थल, महीअल आपणी खेड जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, हरिजन उज्जल आप रखाईआ। निहचल धाम हरि का दुआर, दुआर बंक आप समझाइंदा। जिस दर बैठे कोटन कोटि गुर अवतार, पीर पैग़म्बर सीस झुकाइंदा। जिस दर विष्न ब्रह्मा शिव चरन धूढ़ी मंगण छार, निउँ निउँ सजदा सीस सर्ब कराइंदा। जिस दर भिखक बणे भगत भिखार, नाम भिच्छया साची पाइंदा। सो दर कलयुग अन्तिम खोल्हे आप निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग विछड़े मेले आण, आप आपणे नाल मिलाइंदा। लख चुरासी विच्चों भाल, गुर चेले आप जगाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वखाए सच्ची धर्मसाल, घर घर अंदर हरि जू डेरा लाइंदा। दिवस रैण अनहद नाद वजाए सच्ची धुन्कान, धुंन आत्मक राग सुणाइंदा। पंज तत्त काया किसे कम्म ना आयण कान, बिन कन्नां शब्द सुणाइंदा। आपे बोले बेज़बान, ज़बान जगत मूल मुकाइंदा। बिन नेत्र वेखे मार ध्यान, गुरमुख नेत्र आप खुल्हाइंदा। घर मन्दिर बैठ मकान, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, परम पुरख आपणी गोद बहाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे घर बहाइंदा। हरिजन तेरा सच दुआरा, सति सतिवादी आप जणाईआ। फड़ फड़ बांहों खड़े आप निरँकारा, अन्त आपणी सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखण वारो वारा, वाहवा वज्जदी रहे वधाईआ। जिस दी चार युग सिफ्त सलाह कर कर गाउँदे आए वारा, सो कलयुग अन्तिम गुरमुखां ढोले आपे गाईआ। जिस दा नज़र ना आया पार किनारा, हद्द हदूद किसे ना पाईआ। सो पुरख निरँजण कलयुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां करे प्यारा, ज़ात पात ना कोए वखाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे परवरदिगारा, मुकामे हक़ वसे सांझा यारा, सो नूर इलाही बण मलाही मुर्शद मुरीदां आपणी गोद उठाईआ। निरगुण सरगुण सूफ़ी सुणाए एका नाअरा, हक़ हक़ीक़त पावे सारा, लाशरीक आपणा वजूद ना कोए दरसाईआ। जिस दा गाउँदे आए सति नाम जैकारा, सो करे खेल आप करतारा, गुरसिख गुर गुर बाल अञ्याणे आप उठाईआ। जिस नूं गोबिन्द कहिन्दा रिहा पिता हमारा, सो पिता पुरख कलयुग अन्तिम बणया आप वणजारा, गुरसिख गुरमुख

हरिजन हरिभगत साचे सन्त फड़ फड़ कन्त नाल मिलाईआ। नाता तुट्टे जगत विभचार नारा, गुरमुख सख़ी करे सच्चा शंगारा, हरि जू मिले कन्त भतारा, अंगीकार आप कराईआ। लख चुरासी उतरे पार किनारा, मात गर्भ ना कोए सहारा, जूनी जून ना कोए भुवाईआ। अन्तिम अन्त श्री भगवन्त मिले आप करतारा, आदि जुगादि जिस दा सर्ब विहारा, बण बिवहारी आपणी कार कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा, जिस दा लेखा लिख लिख दस्सया वेद व्यासा बण लिखारा, ईसा मूसा संग मुहम्मद बोल बोल गए नाअरा, नानक गोबिन्द तक्कया इक्क सहारा, पुरख अकाल ओट रखाईआ। सो साहिब प्रगट होया विच संसारा, दिस ना आए जीव गंवारा, लख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ारा, बिन गुरमुख गुरसिख नेत्र नैण, नैण नेत्र निज घर निज आत्म परमात्म नज़र किसे ना आईआ। परमात्म नेत्र सके ना कोई पेख, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरि का रूप ना कोए रेख, रेखा सब दी आप बणाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, आदि जुगादि ना मूंड मुंडाईआ। सदा सुहेला रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। सिफ्त सालाह कर कर थक्के ब्रह्मा विष्न महेष, सिफ्त सालाही सिफ्त विच कदे ना आईआ। खेले खेल आदि अन्त नर नरेश, नर नरायण वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम आपणे नूर हो प्रवेश, नूर नूर करे रुशनाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा देणा गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां रिहा वेख, पड़दा पड़दे नाल उठाईआ। थोड़ा थोड़ा दस्स दस्स भेत, थोड़ी थोड़ी सिख्या गुर अवतारां आप जणाईआ। निक्का निक्का दस्सया हेत, जिउँ बाला मात करे मुख मंमां सीर रस वखाईआ। पारब्रह्म दूर दुराडा दरसन देवे नेतन नेत, नेड़े हो हो दया कमाईआ। एथे वसे आपे देस, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां आप सुणाए मेरी करो आदेस, आदेस आदेस कह कह ख़ुशी मनाईआ। लोकमात मैं खेलां आपणी खेड, लख चुरासी तुहाढ्ढी उँगली आप लगाईआ। जे कोई तुहानूं पुच्छे प्रभ केवड केड, बिन बेअन्त कहिण तों किछ कहिण कहिण ना जाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सब दी अक्खीं पावां रेत, रंग रूप ना किसे जणाईआ। कर किरपा गुर अवतारां अंदर कढ्ढां छेक, शंका सब दा आप गंवाईआ। पहलों लवां आप पेख, फेर आपणा दरस कराईआ। घर वखावां साची सेज, बिन लेफ़ तलाई विछाईआ। पलँग रंगीला पावा चूल ना कोई मेख सके ठोक, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। कर किरपा करे आपणा हेत, आपणा आसण आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर घट घट अन्तर आपणी खेल कराईआ। आदि अन्त खेल मौला, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। उलटा करनहारा नाभ कौला, नाभी कँवल आप उलटाइंदा। देवे माण उपर धौला, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपणे अंदरों कढ्ढे कोटन कोटि कान्हा कृष्ना सौला, कोटन कोटि राम आपणा

रूप वखाइंदा। जे कोई कहे भगवान बणया रहे बवरा, भोला भाला हथ्थ किसे ना आइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला गहर गवरा, गम्भीर आपणा राह चलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां एका नाम देवे सबरा, सबर सबूरी आप हंढाइंदा। हरि का लेखा किसे ना कढुया विच जबरा, सिफ़रा सिफ़रा रूप वखाइंदा। लभ्भ लभ्भ थक्के कोटन कोटि अरबा, अरबी फ़ारसी हिन्दी विच कदे ना आइंदा। निरगुण निरगुण पहने रखे आपणा बुरका, तुरकी तुरक ना रूप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पंज तत्त काया पहनाए कुड़ता, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो बन्धन पाइंदा। अंदर वड़ वड़ आत्म परमात्म नाल आप जुड़दा, बण जोड़ी खुशी मनाइंदा। शौह दरयाए कदे ना रुढ़दा, डूँग्घी धार ना कोए वहाइंदा । आपणा वर पाए आपे लोड़ दा, गुर अवतार नार रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द अनादी इक्को मन्त्र आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव एका घर वखाइंदा। एका घर वखावण आया, कलयुग कल कल्की लै अवतार। जिस नूं कहिन्दे रहे दाई दाया, सो भगतां रिहा पैज स्वार। जिस ने प्रगटाई त्रैगुण माया, सो त्रैगुण माया रिहा मार। जिस ने पंज तत्त काया खेल रचाया, सो खेल वेखण आया आप निरँकार। जिस जन आपणा पड़दा दए उठाया, सो अंदर वड़ लुक लुक वेखे घर मिल्या परवरदिगार। पुच्छ पुच्छ अंदर लँघ कोए ना जाया, अग्गे खड़े महांबली जगत विकार। जिस जन आपणी दया कमाया, बिन भगतीउँ लाए पार। आपणी शक्ती विच टिकाया, शरअ शरीअत करे खुआर। आदि जुगादि इक्को व्यिक्ति नज़री आया, बेनज़ीर एकँकार। सृष्ट सबाई आपणी ग्रिफ़त विच रखाया, जिस नूं कोई ना कर सके ग्रिफ़तार। कलयुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा दए मिटाया, सच सुच्च प्रगटाए विच संसार । सृष्ट सबाई एका मन्त्र नाम दए दृढ़ाया, नौ खण्ड पृथ्मी होए जै जैकार। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन ध्याया, तिस जन जन्म मरन विच्चों कढुया बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसाए साचा घर, जिस घर बह बह खुशी मनाया ।

✳ पहली भाद्रों २०१६ बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✳

सचखण्ड दवारे आपे वस, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। निरगुण रूप हो प्रतख, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। निराकार खेल समरथ, एकँकारा कार कमाइंदा। साहिब सुल्तान हो प्रगट, आदि निरँजण डगमगाइंदा। बेपरवाह महिमा अकथ, अबिनाशी करता भेव ना आइंदा। सच महल्ले रिहा वस, श्री भगवान निशान झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ एका एक

एक अलख, अलख अगोचर आपणी धार चलाइंदा। निरगुण निरगुण हो हो वस, बेवस आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा एका एक, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। हरि पुरख निरँजण धर धर भेख, एकँकारा भेव चुकाईआ। आदि निरँजण कर आदेस, अबिनाशी करता सीस झुकाईआ। श्री भगवान नर नरेश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। पारब्रह्म प्रभ रिहा वेख, वेखणहारा नज़र ना आईआ। वसणहारा सच दुआरे साचे देस, दरगाह साची धाम सुहाईआ। रूप रंग ना कोए रेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह परवरदिगार, नूरो नूर नूर धराइंदा। मुकामे हक़ हो त्यार, जल्वा आपणा आप प्रगटाइंदा। खेले खेल अगम्म अपार, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। आपणी करे आप गुफ़तार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवार सच महल्ला, हरि साचा सच सुहाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, हरि पुरख निरँजण डेरा लाईआ। एकँकारा वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, श्री भगवान खेले खेल बेपरवाहीआ। अबिनाशी करते सच सिँघासण एका मल्ला, पारब्रह्म प्रभ खुशी मनाईआ। निरगुण निराकार अजूनी रहित निरवैर आपणा फड़े आपे पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड

५६३ दवारा आप वसाईआ। सचखण्ड दवारे आपे वस, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। एका नूर कर प्रकाश, नूरो नूर नूर ५६३

१२ धराइंदा। लेखा जाणे शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, १२

आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, सच महल्ला आप वड्याइंदा। सच महल्ला उच्च मनारा, ऊँचो ऊँच ऊँच वड्याईआ। वसणहारा एकँकारा, अकल कल बेपरवाहीआ। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। सति पुरख निरँजण हो त्यारा, आपणी कल आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया बण वरतारा, साची भिच्छया आप बणाईआ। सचखण्ड दवारे खोल्ह किवाड़ा, घर घर विच खुशी मनाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहारा दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साची बणत बणाईआ। सचखण्ड दवारा साची बणत, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। आपे लेखा जाणे आदि अन्त, आदि अन्त आपणा भेव छुपाइंदा। आपे नाद आपे धुंन आपे शब्द आपे मंत, मन्त्र आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। आपे नार आपे कन्त, आपे रंग रंगे बसन्त, रंग रंगीला आपणा वेस वटाइंदा। आपे निरगुण जोत श्री भगवन्त, भगवन आपणा नूर आप धराइंदा। आपे महिमा जाणे बेअन्त, बेअन्त आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी करे करतार,

हरि वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह किवाड़, निरगुण वसे सच्चा माहीआ। खेले खेल पुरख नार, कन्त कन्तूहल बण शहिनशाहीआ । रंग रलीआं माणे अगम्म अपार, अगोचर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। एका नाता जोड़ धुर दरबार, दरगाह साची खुशी मनाईआ। एका सेजा सुत्ता पैर पसार, सचखण्ड दवारे आसण लाईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण दाता पुरख बिधाता कर उज्यार, एका नूर करे रुशनाईआ। इक्क इकांता वसणहारा ठांडे दरबार, दर दरबार इक्क सुहाईआ। अलख अलख बोल जैकार, अलख अलखणा आपणा राग अलाईआ। प्रतख प्रतख निरगुण निरँकार, निरगुण एका जोत करे रुशनाईआ। वक्ख वक्ख वसे वसणहार, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। गृह मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाया। मेल मिलावा नारी कन्त, नर हरि नरायण खुशी मनाया। आप बणाए आपणी आदि अन्त बणत, भेव कोए ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे घर, घर घर आपणा घर सुहाया। साचे घर कन्त हरि नार, नर नरायण खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, प्रेम प्यार आप समझाइंदा। निरगुण अंदर निराधार, निराकार आप टिकाइंदा। निरगुण सेवक बणे सेवादार, दाई दाया बण बण सेव कमाइंदा। निरगुण जननी जन जणे अपार, गोदी गोद गोद सुहाइंदा। निरगुण पूत सपूता बण दुलार, पिता पूत वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। पिता पूत खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। जननी जन जन जणे दुलारा, हरि शब्दी नाउँ धराईआ। समरथ अकथ बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत एका एक बणाईआ। एका सुत जणया लाल, हरि लालन दया कमाईआ। सचखण्ड दवारे कर प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाईआ। निरगुण दीआ बाती एका बाल, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। साचा मार्ग इक्क सखाल, सिख सिख्या दए समझाईआ। हरि सतिगुर वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दूजा दर ना कोए सुहाईआ। निरगुण निरगुण बण दलाल, वणज वणजारा हट्ट खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना हरि निरँकार, आदि आदि आप कराइंदा। सुत दुलारा कर त्यार, कर किरपा मेल मिलाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी एका भेव चुकाइंदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाइंदा। निरगुण निरगुण वसे नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, पुरख अबिनाशी सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सुत दुलारे छोटे बाले, हरि साचा

आदि जणाइंदा। करे खेल खेल निराले, निराकार दया कमाइंदा। सचखण्ड दवार अंदर खोल्ह किवाड़े आपणा पड़दा आप रखाइंदा। थिर घर खेल अपर अपारे, अपरम्पर आपणा नूर रखाइंदा। सुत दुलारा अंदर वाड़े, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच आप वसाइंदा। सचखण्ड अंदर थिर घर, सचखण्ड निवासी आप बणाईआ। सुत दुलारा अंदर वड़ निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सो पुरख निरँजण पल्लू ल्या फड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। सरन सरनाई गया पड़, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। दरगाह साची मल्लया गढ़, एका कोट वड वड्याईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, आदि अन्त ना कोए समझाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल एका मंगया साचा वर, बण दरवेश अलख जगाईआ। चरन कँवल नुहाउणा साचे सर, सर अमृत मुख चुआईआ। जिउँ भावे तिउँ घाड़न ल्या घड़, घड़न भन्नणहार तेरी वड्याईआ। ना जन्मां ना जावां मर, जन्म मरन विच ना आईआ। एका अक्खर वेता निरगुण निरगुण जावां पढ़, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। निरभउ चुकाउणा भय डर, भयानक रूप ना कोए वटाईआ। तेरा भाणा लवां जर, ज़ोर ज़बर ना कोए जणाईआ। तुध बिन किसे कोलों ना जावां हर, हरि तेरी एका ओट तकाईआ। तूं करता पुरख आपणी करनी रिहा कर, तेरी करनी मोहे भाईआ। ख़ाली भण्डार देणा भर, अतुट तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सुत दुलारा आदि आदि मंग मंगाईआ। सुत दुलारा नेत्र रो, नैणां नीर वहाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्को जाणा तेरी सो, सो पुरख निरँजण तेरा नाउँ वड्याइंदा। हँ ब्रह्म तेरा नूर हो, अंग अंग नाल मिलाइंदा। पुरख नार तेरी छोह, छहबर तेरे नाम जणाइंदा। तेरा प्रकाश मेरी लो, लोयण होर ना कोए रखाइंदा। तुध बिन साहिब ना दिसे को, दूसर संग ना कोए जणाइंदा। मैं मंगां ढोआ ढो, ख़ाली झोली अग्गे डाहइंदा। एका रस आपणा चो, अमृत निझर धार चुआइंदा। एका बीज साचा बो, पत डाल्ही फुल फल वेख वखाइंदा। दर तेरे गया खलो, दूजा नजर कोए ना आइंदा। तेरे चरनां लग्गा मोह, मोह मुहब्बत ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड दवारे एका झोली तेरे अग्गे डाहइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सति सतिवादी दया कमाईआ। सुत दुलारे कर ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। साची वस्त इक्क महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एका देवां आपणा दान, नाम निधाना झोली पाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। आदि जुगादी एका हुक्मरान, तख्त निवासी साचे तख्त वसे सच्चा माहीआ। शाहो भूप राज राजान, शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीवा बाती इक्क महान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। खेले

खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण रिहा जणाईआ। साचा गुण श्री भगवाना, एका एक जणाइंदा। साचे सुत वड बलवाना, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। तेरे अन्तर खेल महाना, खेलणहारा आप खिलाइंदा। मन्दिर सोहे इक्क मकाना, थिर दरबारा वड वड्याइंदा। पुरख अबिनाशी हो प्रधाना, सच प्रधानगी इक्क कमाइंदा। सति सरूपी एका कान्हा, सति पुरख निरँजण नज़री आइंदा। सचखण्ड वखाए इक्क निशाना, दरगाह साची आप झुलाइंदा। चरन कँवल कँवल ध्याना, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी बन्ने गाना, दरगाह साची सगन मनाइंदा। पुरख पुरखोतम रखे आणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। पुरख अबिनाशी पुरख समरथ, आपणा भेव आप जणाईआ। सुत दुलारे साची वथ, तेरा तेरी झोली पाईआ। एका नाउँ गाउणा अकथ, कथ ना कथिआ जाईआ। चरन दुआरे जाणा ढठ्ठ, ढह ढह मिले सरनाईआ। ख़ाली वखाउणे दोवें हथ्थ, हथ्थ रखे ना माण वड्याईआ। पारब्रह्म दा गाउणा जस, जस एका एक सुणाईआ। श्री भगवान मेला मेले हस्स हस्स, हँस मुख आप हसाईआ। जिस ने प्रगट कीता आपणी कुक्ख, बणया धन्न जणेंदी माईआ। आदि जुगादि तेरी वात लए पुच्छ, पुच्छ पुच्छ आपणी खुशी मनाईआ। हरि का बूटा ना जाए सुक्क, श्री भगवान आप लहराईआ। तेरी सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, चेतन आपणी धार चलाईआ। तेरे अन्तर जाए उठ, उठ उठ आपणी खुशी मनाईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी बेपरवाह परवरदिगार जाए तुठ्ठ, एका वस्त झोली पाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। इक्क वखाए साची ओट, पुरख अकाल आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए समझाईआ। साची सिख्या सुण लै बाल, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरे अंदर नूर जुम्माल, जल्वा आपणे रंग रंगाइंदा। तेरा मन्दिर सच्ची धर्मसाल, हरीदुआर आप बणाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला सद चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। सचखण्ड निवासी करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। आपे पुच्छे तेरा हाल, हाल आपणा तोहे सुणाइंदा। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाइंदा। दर दरवेश बणे दलाल, दिलबर आपणी गंढु खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता आप सुणाइंदा। सुण संदेसा श्री भगवान, शब्दी सुत सीस झुकाईआ। कर किरपा मेरे मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तेरी रहिमत मिले दान, रहीम तेरी वड्याईआ। तेरा नाउँ मेरी कलाम, कलमा सच इक्क पढ़ाईआ। मुकामे हक़ इक्क अमाम, नूर नुराना आसण लाईआ। मैं बरदा तेरा गुलाम, फ़रमांबरदार सेव कमाईआ।

५६६
१२

तेरा महल अटल उच्च मकान, तेरा हुजरा सोभा पाईआ। तेरी महिराब इक्क निशान, महबूब तेरी सरन सरनाईआ। तेरी रबाब सच धुन्कान, रागी राग राग अलाईआ। खेले खेल श्री भगवान, भगवन आपणा नैण उठाईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, तेरा लेख ना लख्या जाईआ। तूं देवणहार दयावान, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। थिर घर रखणा मेरा माण, सचखण्ड तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। सति पुरख निरँजण नौजवान, सति सतिवादी आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईंआ। सो पुरख निरँजण ठांडा सीत, सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। सुत दुलारे तेरी रीत, रीतीवान आप चलाइंदा। बैठा रहे सदा अतीत, आप आपणी खेल कराइंदा। आदि जुगादी एका मीत, मित्र प्यारा आप अख्वाइंदा। देवे दात इक्क अनडीठ, नेत्र नज़र कोए ना आइंदा। आप सुणाए साचा गीत, सो पुरख निरँजण ढोला अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप समझाइंदा। साचा नाम सुत दुलारे, हरि साचा सच जणाइंदा। एका हट्ट इक्क वणजारे, एका वस्त आप विकाइंदा। एका तोला तोला तोले तोलणहारे, दूजा तोल ना कोए रखाइंदा। एका धारन बोल पुकारे, बोल आपणा आप प्रगटाइंदा। एका वस्त रखे हरि थारे, थिर घर साचे आप टिकाइंदा। देवणहार आप निरँकारे, निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। आदि पुरख करे खेल न्यारे, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप समझाइंदा। साचा गुण गुणावन्त, गुण निधान हरि आप जणाईआ। सुत दुलारे तेरी बणाई बणत, बिन जम्मां पिता माईआ। आपणी रचना रची आपे आदि आपे जाणा अन्त, मध तेरा खेल रखाईआ। मेरी महिमा सदा बेअन्त, कोई कहिण कथन ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, थिर घर आपणा भेव चुकाईआ। सचखण्ड दवारा थिर घर धार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जोती माता सुत दुलार, सति सतिवादी दया कमाईआ। बोध अगाधी इक्क जैकार, जै जैकार दए सुणाईआ। तेरा मेरा इक्क प्यार, प्यार प्यार नाल बदलाईआ। तेरा मेरा इक्क विहार, पुरख अकाल दए समझाईआ। तेरा मेरा इक्क दुआर, दर दरवाज़ा दए खुलाईआ। तेरा मेरा इक्क वणजार, एका वणज वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे एका एक एक करे पढ़ाईआ। एका एक एक अपारा, अपरम्पर भेव अभेद जणाइंदा। सुत दुलारे तेरा दुआरा, सति पुरख निरँजण आप वसाइंदा। तेरी फलवाड़ी वेखे आप करतारा, कुदरत कादर खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण कर पसारा, शब्दी शब्दी वंड वंडाइंदा। विष्नूं विश्व विश्व आकारा, अकल कल आपणी कार कराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म आधारा, नाभी कँवल आप प्रगटाइंदा। शंकर खेल अगम्म

५६७ १२

अपारा, धूआँधारा सुन अगम्म आपणा रंग रंगाइंदा। त्रै त्रै मेला इक्क दुआरा, सच संदेसा एकँकारा, एका एक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप वरताइंदा। सुत दुलारे नेत्र खोल्ह, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तोले तोल, हरि तोला एका लाईआ। नाद अनादी वज्जे ढोल, मर्द मृदंगा आप सुणाईआ। अनभउ प्रकाश पड़दा खोल्ह, अबिनाशी आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोता पुरख बिधाता जाए मौल, आप आपणा संग रखाईआ। आदि करे साचा कौल, अन्त भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत सुत जणाईआ। साचे सुत लैणा जाण, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दिता दान, त्रैगुण माया झोली पाइंदा। पंचम पंच पंच प्रधान, पंचम नाता जोड़ जोड़ाइंदा। लेखा जाणे नूर नुरान, आकाश प्रकाश आप प्रगटाइंदा। किरन किरन कर प्रधान, रवि ससि डगमगाइंदा। चरन धूढ़ी धूढ़ी वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। बोध अगाध अगाध बोध ज्ञान, सुन्न समाध आप खुल्हाइंदा। गीत गोबिन्द एका गाण, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला आलमीन आपणा भेव चुकाइंदा। एका देवे सच सदा साहिब सुल्तान, आपणी आवाज़ आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। साची सिख्या एका वार, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। सुत दुलारे रहिणा ख़बरदार, बेख़बर आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण मेला विच संसार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। लख चुरासी वंडे वंड अपर अपार, चारे खाणी रंग रंगाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म विद्या दए आधार, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर अक्खर कर त्यार, वक्खर वक्खर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत रिहा सुणाईआ। साचे सुत कर ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाइंदा। चारे खाणी कर प्रधान, चारे बाणी वंड वंडाइंदा। चारे युग युग निशान, धरत धवल आप वखाइंदा। चारों कुण्ट शब्द ज्ञान, नाम निधान इक्क वखाइंदा। चार वरन कर परवान, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझाइंदा। साचे सुत रखणा याद, हरि साचा सच जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पावे रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। वेखे खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फेरा पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रखे निवास, घट घट एका आसण लाईआ। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पढ़ाए आपणी गाथ, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा एकँकार, आपणा आप जणाइंदा। आदि पुरख रचना रच सर्ब संसार, बण संसारी वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण जाणे धार, धार धार नाल मिलाइंदा। नौ

दुआरे खोल्ह किवाड़, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। पंचम पंच पंच प्यार, पंचम मेला मेल मिलाइंदा। मन मति बुध दे आधार, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। आसा तृष्ना कर विचार, हउमे हंगता गढ़ बणाइंदा। नाद नाद शब्द धुन्कार, घर घर विच राग अलाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठार, निझर सरोवर इक्क वहाइंदा। दीआ बाती कर उज्यार, आदि निरँजण नूर धराइंदा। वेखणहारा काया मन्दिर मनार, पंज तत्त आपणा डेरा लाइंदा। ईश जीव कर पसार, जगदीस रंग रंगाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। आत्म परमात्म कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। साची सिख्या सतिगुर धार, धरनी धरत धवल आप प्रगटाइंदा। किरपा कर निरगुण निराकार, सरगुण आपणा रंग वखाइंदा। शब्दी शब्द तेरा पसार, हरि शब्दी गुर वड्याइंदा। गुर शब्द नाम जैकार, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। इष्ट देव रूप करतार, करता पुरख नज़री आइंदा। कँवल नैण नैण उग्घाड़, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। प्रतख प्रतख प्रतख हो विच संसार, साख्यात रूप धराइंदा। वेस वटा गुरू अवतार, गुर गुर मार्ग आपे लाइंदा। सेवा करे बण बण सेवादार, सेवक सेवा सच कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा हरि मेहरवाना, मेहरवान आप जणाईआ। शब्दी शब्द तेरा निशाना, हरि सतिगुर आप झुलाईआ। गुर अवतार पहर पहर जामा, तन ख़ाकी ख़ाक हंढाईआ।
५६९
पंज तत्त खेले खेल महाना, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रंग रंगाईआ। बोध अगाध शब्द नाद नाद धुन्काना, आत्म नाद धुंन शनवाईआ। मन्दिर अंदर सच मकाना, बंक काया गढ़ सुहाईआ। परम पुरख बण मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी
१२
लए कमाईआ। एका नाउँ कर प्रधाना, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। रसना जिह्वा गाए गाना, गा गा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे पर्दा रिहा चुकाईआ। सुत दुलारे हरि समझाया, समझ समझ नाल मिलाइंदा। मेहरवान मेहरवान रमज़ लगाया, रहिमत रहिमान आप कमाइंदा। आपणा फ़र्ज़ आपे पूर कराया, आप आपणी सेव कमाइंदा। आपणी गर्ज़ सुत शब्द सेवा लाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपणी तर्ज़ राग सुणाया, आदि पुरख आपणा ढोला आपे गाइंदा। सो पुरख निरँजण विचोला बण के फेरा पाया, हँ ब्रह्म मेल मिलाइंदा। सोहँ आपणा रूप वखाया, गुर अवतार गंढु पुवाइंदा। पर्दा ओहला दए चुकाया, एका रंग रंगाइंदा। साचा सोहला एका गाया, गा गा ख़ुशी मनाइंदा। अनन्द मंगल अनन्द इक्क वखाया, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। बिन सूरज चन्द प्रकाश कराया, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। बिन बत्ती दन्द आपणा नाम जपाया, जिह्वा नाल ना कोए मिलाइंदा। शब्द सुत तेरा खेड़ा दए वसाया, दो जहानां डेरा लाइंदा। जुग जुग बेड़ा दए चलाया, आपणे कंध आप उठाइंदा। गुर अवतार लए प्रगटाया, प्रगट आपणा नाउँ सुणाइंदा।

हर घट वसया दए वखाया, घट घट आपे नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव खोल्हे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी एका जाप, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म वड प्रताप, सोहँ साचा रूप वखाईआ। निरगुण सरगुण बणाए प्रताप, वड प्रतापी दया कमाईआ। लख चुरासी डाल्ही पात, फुल फलवाड़ी मात महकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखे साथ, सगला संग आप समझाईआ। नाम अमोलक देवे दात, दाता दानी आप वरताईआ। अंदर वड़ वड़ वेखे मार झात, झाकी आपणी आप दरसाईआ। कुण्डा खोल्हे बन्द ताक, गुर अवतार पड़दा लाहीआ। आत्म परमात्म बणाए सज्जण साक, सगला संग आप रखाईआ। पार उतारे साचे घाट, घाटा आपणा पूर कराईआ। जुग चौकड़ी चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सुत शब्द दुलारे तेरा जाप, गुर मन्त्र नाम वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गाए रसना जिह्वा पाठ, पाठक होर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दए चुकाईआ। साचा पर्दा चुकाउणा हरि, हरि आपणी दया कमाइंदा। गुर अवतार दे दे वर, तेरा नाउँ वड्याइंदा। धरनी उपर आपे धर, धरत धवल सुहाइंदा। डूँग्घी कंदर काया मन्दिर आपे वड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरी पाइंदा। निरगुण अक्खर निरगुण पढ़, सरगुण सरगुण आप समझाइंदा। सति सतिवादी फड़ाए लड़, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खोजाइंदा। आदि जुगादी खेल कर, जुग जुग वेस वटाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण नज़र किसे ना आइंदा। लख चुरासी घाड़न घड़, बण ठठयारा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप दृढ़ाइंदा। साचे सुत रख विश्वाश, विश्व आपणी धार जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाश, तेरा रंग रंगाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर धरत मात, तन ख़ाकी रूप वटाइंदा। शब्दी नाता सज्जण साक, गुर गुर बन्धन पाइंदा। तख्त निवासी पाकी पाक, महबूब घर साचे सोभा पाइंदा। सति सतिवादी इक्को ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाइंदा। दो जहानां वेखे खात, लोक परलोक खेल कराइंदा। चौदां लोक एका ताक, चौदां तबक हट्ट वखाइंदा। हुक्मे अंदर पावे रास, गोपी काहन नचाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा खेल तमाश, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता त्रैभवण धनी आपणी कार जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव अलखना अलख, अलख अगोचर आप जणाईआ। निरगुण नालों निरगुण वक्ख, निरगुण अंदर निरगुण रिहा समाईआ। सरगुण मार्ग सारंगधर भगवान आपणा दस्स, सहिज सहिज सहिज गुण जणाईआ। गुर अवतारां देवे अन्तर अक्ख, दोए लोचण बन्द कराईआ। रसना जिह्वा खाणा पीणा रस, भोजन नाम वखाईआ। आत्म परमात्म गाए जस, घर घर विच राग अलाईआ। हँस मुख हरि

जू पए हस्स, हँस सरोवर एका एक जणाईआ। सदा सुहेला पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। शब्द सुहेले रंग नवेले गुरू गुर चेले तेरा लेखा जाणे दस दस मास, दहि दिशा फोल फोलाईआ। पड़दा चुक्के पृथ्मी आकाश, आकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दासी दास, करोड़ तेतीसा सुरपति चरन सरन सरन चरन सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरी सेवा साची मात लगाईआ। साची सेवा करनी मात, लग मातर ना कोए जणाइंदा। तेरा लेखा लिख्या बिन जो कलम दवात, कागद कलम ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी दिती दात, एका वार झोली पाइंदा। गुर अवतार तेरी ज़ात, तेरा नूर रखाइंदा। गुरमुख गुर गुर बणाए सज्जण साक, भगत भगवान तेरी वंड वंडाइंदा। साचे सन्तां बन्ने नात, नाता होर ना कोए जुड़ाइंदा। सुत शब्द तेरी कोई ना जाणे ज़ात, तेरी वंड ना कोए वखाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर गावण गाथ, सच संदेसा इक्क समझाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ, बण अनाथ मंग मंगाइंदा। खाणी बाणी तेरा गाए जस, जस वेद पुराण हथ्थ ना आइंदा। प्रभू ठाकर तेरे संग रिहा वस, वसणहारा आपणी दया कमाइंदा। तेरा प्यार त्रैगुण विच ना जाए फस, फाँसी होर ना कोए लटकाइंदा। तूं मेरा मैं तेरे वस, सोहँ तेरा रूप वखाइंदा। तेरी चरन धूढ़ी गुर अवतार मंगण हस्स हस्स, लोकमात तेरी ओट सर्ब तकाइंदा। मेरे राह मंज़ल उत्ते अद्धविचकारे सारे जाण थक्क, मेरा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। आपणे महल्ले उच्च अटल्ले निरगुण हो के रिहा वस, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप जगाइंदा। सुत दुलारे जाणा जाग, आदि पुरख आदि जगाइंदा। जुगा जुगन्तर लावे भाग, भगवन आपणा खेल कराइंदा। लख चुरासी ब्रह्म चिराग़, पारब्रह्म आपणी कल आप धराइंदा। लख चुरासी त्रैगुण आग, अग्नी तत्त आप रखाइंदा। लख चुरासी पंज तत्त साक, साचा नाता जोड़ जोड़ाइंदा। लख चुरासी आत्म परमात्म पाकी पाक, पतित पुनीत खेल वखाइंदा। लख चुरासी गुर शब्द किनारा एका घाट, दूजा तट ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी अन्तिम मुके वाट, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। लख चुरासी गुर अवतार रखे उत्तम ज़ात, आपणी ज़ात नाल मिलाइंदा। लख चुरासी देवणहारा दात, दाता दानी दया कमाइंदा। लख चुरासी अन्त कन्त भगवन्त मुकाए वाट, पाँधी कोए नज़र ना आइंदा। लख चुरासी सुट्टे डूँघे खात, खाता आपणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप जगाइंदा। साचे सुत जागरत जोत, जग जीवण दाता आप जणाईआ। आदि रख इक्को ओट, अन्त होए सहाईआ। चार जुग खेलणा खेल हो बेहोश, सुध सार ना कोए रखाईआ। निरगुण हो के रहिणा खामोश, सरगुण करनी मात पढ़ाईआ। पंज तत्त काया देणा

दोष, निर्दोष आपणा नाउँ रखाईआ। गुर अवतार तेरे दर्शन रहिण लोच, लोचा आपणी पूर कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरा निक्का इक्क सलोक, तेरी महिमा कथण ना जाईआ। त्रिलोकी अंदर घोख्या घोख, सोचनी सूची सच जणाईआ। काया माटी भाण्डा लैणा पोच, अंदर वस्त आपणे विच छुपाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर कर जाण सोच, सोच विच कदे ना आईआ। खाणी बाणी तेरा कर कर थक्के खोज, खोजिआं हथ्थ किसे ना आईआ। तेरी मेरी इक्को मौज, मेरा तेरा भेव ना राईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरे उत्ते रखणा बोझ, गुर अवतार लोकमात भार आपणा आपणा वंड वंडाईआ। अन्तिम रखणी इक्को ओट, ओट अकाल तकाईआ। पुरख अबिनाशी निर्मल जोत, जोती जाता होए सहाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सतिगुर सच्चा इक्को बहुत, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। अन्तिम जाण सारे रोत, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। आलणयों डिगे बोट, फेर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। आपणा भेव खोल्हे भगवन्त, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। मेरा लेखा आदि अन्त, मध तेरी धार चलाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर गुर अवतार भगत सन्त, गुरमुख गुरसिख आप उठाइंदा। सुरती शब्दी मेला नारी कन्त, कन्त सुहाग इक्क हंढाइंदा। तन माटी काया चोली रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। नाम निधाना मणीआ मंत, मन मणका आप भुआइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़यां हथ्थ किसे ना आइंदा। गुर अवतार दुआरे रहिण मंगत, बण सवाली झोली अग्गे डाहइंदा। सचखण्ड निवासी आपे जाणे साचा जन्नत, स्वर्ग आपणी धार रखाइंदा। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी महिमा सुणाए अगणत, गिणयां गणत ना कोए गणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप वखाइंदा। साचे सुत वेख कर विचार, हरि आपणा आप जणाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते विच संसार, हरि संसारी खेल कराया। गुर अवतार आवण वारो वार, पीर पैग़म्बर रूप वटाया। भगत भगवन्त दए सहार, सन्त साजण लए जगाया। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, गुरसिख गुर गुर गोद बहाया। हरिजन वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, त्रैगुण भट्ठ ना कोए तपाया। लेखा जाणे बैठा धुर दरबार, सच सिँघासण आसण लाया। शाहो भूप वड सिक्दार, शाह सहाना रूप वटाया। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए मिटाया। दाता दानी देवणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताया। साचा हुक्म अबिनाशी अचुत्त, आदि जुगादि वरताईआ। जुग चौकड़ी वेखे रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। गुर अवतार साचे सुत, पीर पैग़म्बर लए प्रगटाईआ। शब्द गुरदेव आपे उठ, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। सुरत सुआणी कोलों लए

५७३ १२

पुच्छ, शब्द हाणी पड़दा आप उठाईआ। पड़दे ओहले जो बैठा लुक, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। हरि का बूटा ना जाए सुक्क, अमृत सिंच हरा कराईआ। घर विच घर रखे आपणी कुक्ख, जन जननी सच्ची माईआ। गुर अवतार मेटे तृष्ना भुक्ख, सांतक सति सति कराईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना माया ममता कढ्ढे कुट्ट, हउमे हंगता रहिण ना पाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। अनहद शब्द अनादी लाए चोट, अनुरागी राग सुणाईआ। घर विच घर मेला धुर संजोग, हरि संजोगी आप मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क सलोक, हरि साचा दए पढ़ाईआ। जगत वासना कढ्ढे खोट, आसा आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत तेरी रखे माण वड्याईआ। साचे सुत सुत दुलारे, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। सतिजुग खेल करे न्यारे, निरगुण आपणी कार कराइंदा। द्वापर त्रेता कर वणजारे, साची सेवा सेव समझाइंदा। हुक्मे अंदर तेई अवतारे, हुक्मी हुक्म आप भुआइंदा। हुक्मे अंदर भगत वणजारे, एका आठा जोड़ जोड़ाइंदा। हुक्मे अंदर ईसा मूसा सजदा करे परवरदिगारे, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। हुक्मे अंदर मुहम्मद बणे भिखारे, काली कफ्नी तन हंढाइंदा। हुक्मे अंदर दस गुरू सेवा करन विच संसारे, नानक गोबिन्द धार चलाइंदा। हुक्मे अंदर वेद चारे, पुराण अठारां हुक्मे बन्धन पाइंदा। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत करन हाहाकारे, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। हुक्म अंदर गीता ज्ञान दए आधारे, उधर आत्म वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर अञ्जील कुरान काया कुरा करे ख़बरदारे, करबला जगत ना कोए जणाइंदा। हुक्मे अंदर नानक निरगुण सतिनाम पुकारे, पुनह पुनह आपणा वार निमख निमख वार कराइंदा। हुक्मे अंदर अर्जन बण बण लेख लिखारे, लिख लिख लेखा लिख्त लेखा आपणा पूर कराइंदा। हुक्मे अंदर गोबिन्द बोल फतहि जैकारे, एका डंका डंक वजाइंदा। हुक्मे अंदर सर्ब वणजारे, लोकमात फेरा पाइंदा। हुक्मे अंदर बण भिखारे, गुर अवतार झोली डाहइंदा। हुक्मे अंदर खेल संसारे, ख़ालक खलक आप कराइंदा। सुत शब्द नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेख नज़ारे, बेनज़ीर आपणी नज़र ना किसे वखाइंदा। निरगुण सरगुण रखे दे दे लारे, पर्दानशीं आपणा पड़दा ना कोए उठाइंदा। कूक कूक कूक करन सर्ब पुकारे, आपणी कूक ना किसे सुणाइंदा। सच संदेसा देवे एका वारे, एकँकार आप सुणाइंदा। अन्तिम पन्ध मुके जुग चौकड़ी चारे, चारे कूटां वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे जाण हारे, हरि हरि आपणा खेल वरताइंदा। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारे, नज़र किसे ना आइंदा। पूरब लहिणा चार जुग दा कर्ज़ उतारे, मकरूज़ आपणा फ़र्ज़ पूर कराइंदा। सच संदेसा दे दे जो कर गया उधारे, आप आपणा वेला आप सुहाइंदा। वेद व्यासा लेखा लिख लिख रिहा विचारे, पुराण अठारां लख चार सतारां हज़ार सलोक नाल मिलाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप तेरा लेखा लेखे पाइंदा। सुत दुलारा कर निमस्कार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा । तेरा अन्त ना पारावार, भेव कोए ना आइंदा। मैं सेवा करां जुग चौकड़ी विच संसार, गुर अवतार नाल रलाइंदा। तेरा नाम जपावां वारो वार, लख चुरासी मात पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर तेरी कार, हरि करते कार कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या वारो वार, नित नवित वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त लैणा उभार, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण बणना यार, यारड़ा सत्थर इक्क हंढाइंदा। ईसा मूसा करे पुकार, मुहम्मद मुसल्ला हेठ वछाइंदा। तेरी ओट मददगार, दस्तगीर तुध बिन दस्त ना कोए मिलाइंदा। नानक गोबिन्द कर पुकार, एका ओट अकाल रखाइंदा। अन्तिम प्रगट होवे दीन दयाल, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। सुत दुलारे वेखे लाल, लाल आपणी गोद सुहाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी झोली पाइंदा। सचखण्ड दवारे चरन कँवल सारे बह बह करन ध्यान, सीस अग्गे ना कोए उठाइंदा। चार जुग दी भुल्ले कलाम, कलमा नबी ना कोए पढ़ाइंदा। रसूल नज़र ना आए अमाम, अमानत सब दी आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू आपणा लेखा आप गिणाइंदा। सुत दुलारे वेख लेखा, आदि पुरख जणाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहे भरम भुलेखा, हरि का अन्त किसे ना पाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वंड वंडे मुच्छ दाढ़ी केसा, कोए मूंड मुंडाया। भगत भगवन्त निरगुण निराकार एका वेखा, रूप रंग नज़र कोए ना आया। तिस साहिब को गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन आदेसा, जो सचखण्ड दवारे बैठा डेरा लाया। तिस अग्गे चले ना किसे दी कोई पेशा, पेशी सब दी आपणे अग्गे लए कराया। नेत्र रोवे ब्रह्मा विष्न महेषा, गणपति गणेशा धीर ना कोए धराया। कलयुग अन्तिम धरया भेसा, निरगुण आपणा नूर प्रगटाया। आदि जुगादि रहे हमेशा, ना मरे ना जाया। लेखा जाणे विष्नूं बाशक सेजा, सागो पांग आप रखाया। सच संदेसा एका भेजा, भेव अभेद खुल्हाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आदि निरँजण दर्द दुःख भय भञ्जण निरगुण वटाया वेसा, वेस अवल्ला आप कराईआ। गोबिन्द करया साचा हेता, पिछला चेता ना रिहा भुलाईआ। सरगुण अंदर निरगुण खोल्हे भेता, अलख अलखणा वड वड्याईआ। काया दिसे जट्ट किरसाणा फिरे विच खेता, लख चुरासी आपणी खेती वेखे थाउँ थाईंआ। पारब्रह्म दा सुत दुलारा इक्को पुत जेठा, जेठ पंचम नाल मिले वड्याईआ। गुर अवतार कोई आया अगेता कोई पिच्छेता, सभे उठ उठ जाईआ। पारब्रह्म दा लभ्भदे रहे भेता, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। सचखण्ड दवारे सुत्ता रिहा हो के घेसला घेसा, आपणी करवट ना आप बदलाईआ। अञ्जील कुराना पढ़ पढ़ थक्के मुल्ला शेख़ा, शरअ हत्थ किसे ना आईआ। गुर अवतारां मिट गई रेखा,

रेखा रेखा विच रखाईआ। इक्को वसया साचा देसा, जिस देस वसे साचा माहीआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां करया साचा हेता, हितकारी आप हो जाईआ। बहत्तर नाड़ी लाई मेखा, जन बहत्तर लए प्रगटाईआ। सत्तरां गोबिन्द एका वेखा, बिन नेत्र नज़री आईआ। चौहत्तरां रख्या साया हेठां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरिसंगत सद्दी दे के नेंता, नाम गंढु इक्क घलाईआ। गुर शब्दी मेला मां पिउ बेटा, पिता पूत वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी खेवट खेटा, साचा बेड़ा रिहा चलाईआ। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी दिसे बरेता, साची नईआ ना कोए चढ़ाईआ। चार वरन चार कुण्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, वर दाता एका माहीआ। एका माही मेहरवान, हरि जू हरि हरि आप अख्वाइंदा। कलयुग अन्त वेखे आण, बेअन्त रूप वटाइंदा। चार जुग लेखा चुकाए आण, गुर अवतार आपणे खाते पाइंदा। एका घर वखाए मकान, मकबरा इक्को नज़री आइंदा। इक्क पैग़म्बर खेले खेल महान, एका सतिगुर रूप धराइंदा। एका लेखा लिखे दो जहान, दरगाह साची एका डेरा लाइंदा। एका सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सरगुण करे प्रधान, निरगुण एका हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा घर, थिर घर साचा आप वसाइंदा। थिर घर तेरा सच दरवाज़ा, सो पुरख निरँजण आप खुलाईआ। हँ ब्रह्म अगम्मी वाजा, हरि पुरख
५७५ निरँजण अनादी नाद सुणाईआ। एकँकार अकल कल धारी फिरे भाजा, दो जहानां फेरा पाईआ। आदि निरँजण भूपत भूप ५७५
१२ राजन राजा, शहिनशाह शाह आपणा हुक्म वरताईआ। अबिनाशी करता रच रच काजा, लख चुरासी वेख वखाईआ। श्री १२
भगवान जन भगतां देवे साचा दाजा, नाम वस्त इक्क वरताईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रखे लाजा, आत्म परमात्म होए सहाईआ। सति सतिवादी इक्क चढ़ाए सच जहाज़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। मेल मिलावा मोहन माधव माधा, मुकंद मनोहर लखमी नरायण नैण नैण नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम ग़रीब निमाणे वेखे ग़रीब निवाज़ा, गुर शब्द तेरा नाउँ संदेसा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम लेखा रखे हथ्थ, हथ्थो हथ्थ मुकाइंदा। निरगुण रूप पुरख समरथ, लोकमात फेरा पाइंदा। आपणी महिमा इक्क अकथ, जीव जंत सर्ब पढ़ाइंदा। कलयुग खेड़ा होया भढु, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सोहँ मार्ग साचा दस्स, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। विष्नूं अंदर विष्नूं वस, महाराज आपणा हुक्म कराइंदा। शेर सिँघ शेर ना होए किसे वस, बल आप नाल उपाइंदा। भगवान निशान तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। जै जैकार गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त साध सन्त, गुरमुख गुरसिख विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द गण गंधर्ब गावण जस, आप आपणी सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट

वासी साचे मन्दिर बह बह रिहा हस्स, वेखे सर्ब लोकाईआ। सृष्ट सबाई त्रैगुण माया अंदर गई फस, फाँसी सके ना कोए तुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर अन्तिम छड्ड गए आपणा हठ, मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर खाली मड्ड रहे कुरलाईआ। पारब्रह्म दी चरनी गए ढट्ठ, गल्ल पल्लू एका पाईआ। दरोही दरोही खुदा दी वास्ता रहे घत्त, नबी रसूल देण दुहाईआ। बिन तेरे रखे ना कोई पत, चारों कुण्ट होई हल्काईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भुली गुरमति, मन मति घर घर करे पढ़ाईआ। गुर का शब्द ना बीजया काया वत्त, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जग बूटा रिहा लाईआ। धीआं भैणां साध सन्त रहे तक्क, गुर गुरबाणी पढ़ पढ़ हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद विभचार रिहा नच्च, मुख बैठा घूँगट लाहीआ। कलयुग नैण रिहा मटक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कोई ना सके अग्गों हटक, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। बिन छुरीउँ गए झटक, आप आपणा आप कटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चार जुग जा के फेर ना आया परत, प्रतीनिध ना फेर अख्वाईआ। हरि के डूँग्घे खाते अंदर कोटन कोटि गुर अवतार होए ग़रक, पुरख अबिनाशी आपणे चरनां हेठ दबाईआ। लिख लिख लेखा खाणी बाणी मार्ग दस्स के गए सड़क, जगत राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत देवे वर, एका शब्द तेरी वड्याईआ। शब्द सुत मेरे साचे लालन, तेरा तेरा रंग उपाइंदा। तेरा नूर कोटन कोटि खेल गुआलण, गोपालन आपणी धार चलाइंदा। तेरी सेवा जोत अकालन, पुरख अकाल सेव कमाइंदा। तेरी बरदी बणे मालण, जगत बागीचा वेख वखाइंदा। तेरा बूटा आए पालण, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। तेरी घालण आए घालण, कीती घाल लेखे लाइंदा। तेरी चले अवल्लड़ी चालन, चाल निराली इक्क रखाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे आप भगवानन, भगवन आपणा रूप वटाइंदा। चार जुग दे विछड़े भगत भगवन्त आए संभालण, सभा साची आप लगाइंदा। साचे तख्त बहे बण नौजवानन, बिरध बाल ना रूप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चरन भालण, भाल्यां हथ्थ किसे ना आइंदा। आपणा खेल करे कमालण, चार जुग दी खाणी बाणी भेव ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाइंदा। आपणा राह एकँकारा, अकल कला वखाईआ। लोकमात होए उज्यारा, उदर अग्न ना कोए तपाईआ। मात गोद ना कोए सहारा, बूंद रक्त ना कोए वड्याईआ। जननी सीर ना कोए प्यारा, रस एका एक रखाईआ। नेत्र नैण ना कोए उग्घाड़ा, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। पंज तत्त ना कोए अखाड़ा, अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश ना बन्धन पाईआ। रजो तमो सतो ना कोए वणजारा, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। आत्म परमात्म ना कोए वणजारा, ब्रह्म वंड ना कोई वंडाईआ। शब्द नाद ना कोए धुन्कारा, रागी राग ना कोए सुणाईआ । जोती जोत ना कोए उज्यारा,

नूर नूर ना कोए दरसाईआ। आदि जुगादी सब तों वसे बाहरा, घर आपणे डेरा लाईआ। भगत शुनीद होए ज़ाहरा, दीद आपणी दए कराईआ। मुर्शद मुरीद जणाए नाअरा, महिदूद आपणी हद्द रखाईआ। रसूल पैग़म्बर परवरदिगारा, बेअसूल ना कोए वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करे कबूल ढह ढह पए चरन दुआरा, अल्ला राणी नैण शरमाईआ। मेरा मीआं आदि जुगादि रिहा कँवारा, नारी कन्त ना कोए परणाईआ। आपणी सेजे सुत्ता पैर पसारा, गलवकड़ी ना कोए पाईआ। आपे पुरख बणे भतारा, आपणा सपुत्तर आप सहाईआ। आपे जणे सुत दुलारा, शब्दी नाउँ रखाईआ। कलयुग अन्त कर प्यारा, आपणी गोद बहाईआ। पहलों रख्या नाम गुर गोबिन्द सिँघ विच संसारा, दुष्ट दमन माण वड्याईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ फड़ाईआ। पुरख अकाल इक्क सहारा, एका ओट रखाईआ। एका बोले जै जै जैकारा, फतहि एका डंक लगाईआ। अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, कल कल्की आपणे सीस ताज टिकाईआ। पिछला लेखा करे पार किनारा, अग्गे अपणा मार्ग लाईआ। चार वरन इक्क दुआरा, चारों कुण्ट दए वखाईआ। चारे बाणी इक्क जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी एका गाईआ। चारे यार इक्क हुलारा, साचे हुजरे दए वखाईआ। चार यारी पार किनारा, लेखा लेखे लए पाईआ। लहिणा देणा मुक्के गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर ना कोए पढ़ाईआ। निउँ निउँ सारे करन निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, चौदां तबक देण दुहाईआ। चौधवीं चन्द होया अन्धयारा, चौदस रूप ना कोए वखाईआ। चौदां सदीआं अन्त अन्त अखाड़ा, एक अल्फ़ आखर दए वखाईआ। ये दिसे ना कोए किनारा, युकती जीवन ना कोए जणाईआ। अल्फ़ी आरफा मिले इक्क सहारा, उलफत कम्म किसे ना आईआ। नानक निरगुण कहे पुकारा, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। महांबली उतरे आपणी धारा, मात पित ना कोए जणाईआ। सोहँ बोले साची धारा, नानक निरगुण सरगुण सरगुण रिहा समझाईआ। गुर गोबिन्द अन्त बण लिखारा, सोहँ तीर कमान भथ्था इक्क वखाईआ। करे खेल आप करतारा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। सतिजुग वरते सच वरतारा, साची वारता आप प्रगटाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी लावण इक्क जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना करे ख़ुआरा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। प्रगट होया इक्क निरँकारा, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। ठोकर मारे दो जहान त्रैभवण धनी आप करतारा, करनी आपणी आप कमाईआ। सचखण्ड दा सच दुआरा, लोकमात लए प्रगटाईआ। छत्ती युग दा कर्ज़ उतारा, छत्ती छत्ती पन्ध मुकाईआ। छत्ती छत्ती सच मुनारा, मुनी ॠषी देण दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दोए जोड़ करन निमस्कारा, निउँ निउँ चरन ध्यान लगाईआ। भगत भगवन्त सुहाए सच दुआरा, बहत्तर सत्तर चौहत्तर मिले

वड्याईआ। पंज पंज पंज अखाड़ा, पंचम देवे सर्ब मिटाईआ। चार चार चार प्यारा, चार चौकड़ चार वरन चार कुण्ट चार जुग चार वेद चार खाणी चार बाणी चौथे घर आपणा बन्धन पाईआ। पंचम मीता ठांडा सीता, अचरज रीता पतित पुनीता, बिन मन्दिर मसीता लोकमात चलाईआ। दरस कराए गुरू अनडीठा, मिठ्ठा करे काया रीठा, निरगुण सरगुण वसे चीता, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। मन मनुआं सतिगुर जीता, गुरमुख नाम निधान पीता, त्रैगुण तपे ना तत्त अंगीठा, सांतक सति सति कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पुज्ज ना सके कोटन गीता, गुरमुख मिले वड वड्याईआ। श्री भगवान सति सरूप जिस जन डीठा, तिस दा जस छत्ती राग ना सकण गाईआ। खाणी बाणी होए मीता, जिस मिल्या प्रभ सच्चा माहीआ। कलयुग अंदर सतिजुग चलाए साची रीता, रीतीवान फेरा पाईआ। मुहम्मद लेखा अन्तिम बीता, गोबिन्द लहिणा रिहा चुकाईआ। एका ढईआ एका नईया पीसन पीठा, एका सईआ वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू शब्द गुरदेव नमो आदि आदि सति सति सतिवादी इक्क जणाईआ। सति सति सतिगुर अवतार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। सति सति पीर पैग़म्बर दए आधार, दस्तगीर आपणा बन्धन पाइंदा। सति सति बोध अगाध, शब्द जैकार नाम निधाना आप समझाइंदा। सति सति कलमा नबी रसूल गए उच्चार, आपणी कलाम आप पढ़ाइंदा। सति सति विष्न ब्रह्मा शिव करे निमस्कार, असति हरि का रूप नज़र ना आइंदा। सति गुरदेव सति नाम सति कलमा सति अमाम, सति कायनात आप प्रगटाइंदा। सति नौ खण्ड पृथमी वेखे मार ध्यान, सति सत्त लोक सति आप सुणाइंदा। सति देवे इक्क ज्ञान, ज्ञान मन्त्र नाम प्रगटाइंदा। सति नूर एका भान, रवि ससि नूर धराइंदा। सति इक्क हुक्मरान, सच तख्त सोभा पाइंदा। सति संदेसा धुर फ़रमाण, आदि जुगादि सुणाइंदा। सति हुक्मे अंदर पावे आण, गुर अवतार हुक्म मनाइंदा। सति रूप श्री भगवान, दूजा कोए नज़र ना आइंदा। सति वसे सचखण्ड सच्चे मकान, चार दीवारी छप्पर छन्न ना कोए बणाइंदा। सति धार शब्द महान, सति सुत हरि जू हरि हरि आप प्रगटाइंदा। सति करे सति कल्याण, सति आपणा भेव खुल्हाइंदा। सति खेल विष्नूं भगवान, विश्व आपणे रंग रंगाइंदा। कलयुग लेखा चुकाए आण, चौकड़ आपणी झोली पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर होए हैरान, हरि की खेल वरताइंदा। जिसदी दस्सदे गए पहचान, सो बेपहचान फेरा पाइंदा। ग़रीब निमाणे कोझे कमले पकड़े आण, काया कपड़ा पड़दा आप उठाइंदा। राती सुत्तयां घर घर दए ज्ञान, रसना जिह्वा ना कोए समझाइंदा। गुरसिख सतिगुर गुर कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। आत्म परमात्म एका नैण वखाण, सोहँ आपणी धार जणाइंदा। बिन मेल्यां मिल्या आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। आपणा नाउँ रख विष्नूं भगवान, भगवन आपणी खेल कराइंदा। जिस

दे कोलों सारे मंगदे रहे दान, सो पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। बिन गुर नेत्र कोई ना करे पछाण, जगत नेत्र कम्म किसे ना आइंदा। पढ़ पढ़ थक्का जीव जहान, जीवन जुगत ना कोए समझाइंदा। मर मर थक्का बिरध बाल जुआन, बिन सतिगुर पूरे मरना किसे ना आइंदा। नानक दे के गया इक्क ब्यान, ब्याना हरि का नाम लिखाइंदा। निष्अक्खर कोए ना करे पहचान, पैंती अक्खर जगत वंड वंडाइंदा। भगत पढ़ाए गुण निधान, साची सिख्या आप समझाइंदा। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, आखर आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ जगत जहान, जीवन जुगत इक्क समझाइंदा। काया मन्दिर सच मकान, महबूब दया कमाइंदा। एका नूर कर महान, ज़हूर रूप वखाइंदा। शाह ग़फूर वड सुल्तान, आपणी रहिमत आप कमाइंदा। आसा पूर मेहरवान, सतिगुर आपणे रंग रंगाइंदा। आए नेड़े दिसे दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम गुरमुखां बख्शे जन्म जन्म दे जगत कसूर, पिछला किस्सा ना कोए सुणाइंदा। दरसन देवे हो के हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा रूप वटाइंदा। फड़ बेड़ा भरया पूर, ग़रीब निमाणे उपर चढ़ाइंदा। रातीं सुत्तयां दरसन दए ज़रूर, गुरसिख ज़रूरत पूर कराइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता बण के आया मज़दूर, भगत दुआर आप बणाइंदा। गुरसिखां दी लै लै चरन धूढ़, सचखण्ड दवार रंग रंगाइंदा। लेखे लाए मूर्ख मूढ़, जगत विद्या मोह चुकाइंदा। भाण्डा खाली करे भरपूर, गुरसिख दूजे दर ना मंगण जाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, माया ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दिता वर, कलयुग अन्तिम मेल मिलाइंदा। कलयुग अन्तिम मिलणा मेला, सो पुरख निरँजण आप जणाया। एका घर वसे गुरू गुर चेला, चेला गुर एका रूप वखाया। आत्म परमात्म सज्जण सुहेला, ब्रह्म पारब्रह्म बन्धन पाइंदा। जुग चौकड़ी जो वसदा रिहा नवेला, निरगुण आपणा आसण लाया। कलयुग अन्त सुहाए साचा वेला, सम्बल खेड़ा दए वसाया। जन भगतां धर्म राए दी कटे जेला, लख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अन्त लए तराया। हरिजन तारे अन्त आप, प्रभ आपणा दया कमाईआ। सोहँ जपाए साचा जाप, जपत जपत जीव सुख पाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे माई बाप, गुरसिख आपणी गोद उठाईआ। त्रैगुण नाता तोड़े तीनो ताप, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। जन्म कर्म दा मेटे पाप, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। इक्क इक्क देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। चार वरन बणाए साची ज़ात, अठारां बरन ना करे लड़ाईआ। मनमति कढ्ढे नार कमज़ात, कुलखणी गुर घर रहिण ना पाईआ। मन मनुआं दहि दिशा ना मारे झात, पंखी उठ ना नट्ठ नट्ठ जाईआ। काया कवरी डूँग्घी भँवरी मेटे अन्धेरी रात, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अनहद सुणाए आपणी गाथ, पंचम मिल मिल मंगल इक्क अलाईआ। साची सखी हरि जू काहन, पुच्छे वात,

नाम बंसरी इक्क वजाईआ। साचे पतण आवे घाट, जमना मथरा गोकल बिन्दराबन एका घर वखाईआ। एका मंडल पाए रास, एका नाच नचाईआ। इक्क बुझाए जन्म जन्म दी लग्गी प्यास, तृष्ना रोग गंवाईआ। एका राम पूरी करे आस, सीता सुरती लए परणाईआ। एका राम कटे बनबास, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाईआ। एका राम घट घट कर प्रकाश, नूरो नूर रिहा धराईआ। एका राम आपणी पूरी करे आपे आस, आप आपणा रिहा छुपाईआ। एका सतिगुर होए दास, नानक निरगुण गया समझाईआ। एका पुरख पुरख अबिनाश, अबिनाशी एका कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्द मिलावा साचे घर, पिता पूत होए कुड़माईआ। पिता पूत एका घर वसेरा, हरि गोबिन्द लेख चुकाइंदा। तत्तव तत्त वसे खेड़ा, खिड़की कुण्डी आपे लाहइंदा। निरगुण सरगुण मुक्के झेड़ा, घर घर विच मेल मिलाइंदा। करनी करता करे खुल्ह्ला वेहड़ा, बन्द किवाड़ ना कोए वखाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदा रिहा हेरा फेरा, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। जिस जन उपर आपणी करी मेहरा, कर मेहर नज़र आपणा मेल मिलाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होया निरगुण रूप सिँघ शेरा, पुरख अकाल आपणी भबक लगाइंदा। दो जहानां पाए घेरा, शब्दी डोर हथ्थ उठाइंदा। अन्तिम करे हक़ निबेड़ा, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रभ चरन ला ला बैठे डेरा, अन्त कोई ना आइंदा। जे कोई पुच्छे केहड़ा केहड़ा, कोटन कोटि राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द रूप धराइंदा। मातलोक पारब्रह्म दा निक्का खेड़ा, निक्के निक्के बाल सेवा लाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पिच्छों आपणा मारे फेरा, फेरी सब दी आप मुकाइंदा। निरगुण निरवैर अजूनी रहित इक्क दलेरा, बिन भगतां आपणी दलेरी ना किसे वखाइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया ढाहया डेरा, ढाह ढाह ख़ाक मिलाइंदा। जो जन दरसन दर ते करके जाए इक्क वेरा, लख चुरासी विच ना आइंदा। मात गर्भ ना पाए फेरा, उलटा रुख ना मुख लटकाइंदा। तत्तव तत्त चुकाए झेड़ा, झंझट होर ना कोए वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा चुकाए डर, तेरा संसा सर्ब मिटाइंदा। पिच्छे डर गुर अवतर, चार जुग जीव जंत ध्यान लगाइंदा। कोए राम कृष्न ध्यान रिहा धर, कोए पत्थर पाहन पूज पुजाइंदा। कोए विष्न ब्रह्मा शिव मंगे वर, कोए करोड़ तेतीसा सीस निवाइंदा। कोए तेई अवतार लड़ रिहा फड़, फड़ पल्लू गंढु पुआइंदा। कोई कहे ईसा मूसा दरगाह लाउण जड़्ह, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। कोई कहे मुहम्मद साचे घर बैठा चढ़, मुरीद मुर्शद नाल रलाइंदा। कोई कहे नानक निरगुण निरँकार अंदर ल्या फड़, पंज तत्त आपणा रंग रंगाइंदा। कोई कहे गुर गोबिन्द घाड़न ल्या घड़, घाड़त घड़त वेख वखाइंदा। पुरख अकाल कहे मैं आपणी करनी

५८०
१२

रिहा कर, मेरा भेव कोए ना पाइंदा। बिन नानक कबीर कोई ना पुज्जा सचखण्ड दर, मेरे चरनां सीस ना कोए टिकाइंदा। दूर दुराडे सारे रहे डर, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। कलयुग अन्तिम आपणी किरपा दिती कर, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। गुरसिख सज्जण लए फड़, फड़ बांहों गले मिलाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग धर, धरनी धरत धवल दुःख वंडाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर चुक्के डर, जल थल महीअल आपणा हुक्म वरताइंदा। लख चुरासी लेखा जाणे नारी नर, नरपत आपणी कार कमाइंदा । सतिजुग साचे देवे वर, सन्त सुहेले नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सुत दुलारे तेरा वसया इक्क घर, हरि खेड़ा आप वसाइंदा। वसे खेड़ा इक्क नज़दीक, नज़र किसे ना आईआ। पुरख अबिनाशी लाशरीक, सिरकत होर ना कोए वधाईआ । मार्ग दस्सया इक्क बारीक, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रिहा समझाईआ। जगत अन्धेरा मेटे तारीक, चन्द चांदना नाम रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ प्रगट होया ठीक, ठीकर सब दा दए भनाईआ। गुरमुख विरला मानस जन्म जाए जीत, जिस मिली हरि सरनाईआ। सोहँ ढोला गाए गीत, आत्म परमात्म इक्क पढ़ाईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ वेखण कोए ना जाईआ। काया मन्दिर अंदर मिले अतीत, घर बैठा आसण लाईआ। गुरसिख तेरे मिलण दी रखे इक्क प्रीत, प्रभ सच्चा सच गुसाईआ। नित नवित करे उडीक, घड़ी पल्ल थित वार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द लहिणा दए मुकाईआ। शब्द गुर तेरा साचा लहिणा, हरि लोकमात मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पाया गहिणा, पंज तत्त काया चोला रंग रंगाइंदा। अन्तिम भाणा प्या सहिणा, सहि सहि शुकर सर्ब मनाइंदा। वेख्या खेल नेत्र नैणां, नैण नैण नैण उठाइंदा। अन्तिम मन्नणा पए सब नूं कहिणा, पुरख अबिनाशी हुक्म जणाइंदा। वरन बरन ज़ात पात सृष्ट सबाई खाए बण बण डैणा, साचा रंग ना कोए रंगाइंदा। आत्म परमात्म नाता जोड़ गुरमुख गुरसिख बणना भाई भैणा, भैण भईआ फड़ाए बहीआ, साचा सईआ सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। धर्म राए ना कढ्ढे वईआ, चित्रगुप्त ना लेख लिखईआ, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे पौड़े आप चढ़ाइंदा। सतिजुग साचा इक्को पौड़ा, पौड़ी होर ना कोए लगाईआ। लेखा जाणे ब्राह्मण गौड़ा, गउड़ी राग ना सके समझाईआ। छत्ती राग नेड़ ना बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी करे दुहाईआ। साहिब सतिगुर जिस जन बौहड़ा, लग्गी औड़ दए बुझाईआ। फल मिट्ठा करे कौड़ा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्द खुलासा पुरख अबिनाशा खालक खलक दए समझाईआ। ख़ालक ख़लक आलमीन, आलम उल्मा

आप पढ़ाइंदा। नबी रसूलां दे यकीन, साचा जुम्मला इक्क सिखाइंदा। एका तसबी दे तसकीन, तालब तुलबा आप कमाइंदा। एका कर के गया तलकीन, तुअल्लक होर ना कोए वधाइंदा। खुदावंद ना होए ग़मगीन, ग़फ्लत विच ना कोए रखाइंदा। एका अल्फ़ करे तरमीम, ऐन अक्ख ना कोए वखाइंदा। ये युकती खिच्च ना सके हरि का सीन, साबत सूरत ना कोए धराइंदा। परवरदिगार बणया रहे नाबीन, नाबीना अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। मिहबान बीदो पेहरवान बी खैर या अल्ला आलमीन, आपणी खेल आप कराइंदा। आपे होया वड हुसीन, हुसन आपणा आप प्रगटाइंदा। जल्वा तके ना कोए नसीम, नसीहत आपणी ना किसे जणाइंदा। गहर गम्भीर ग़नी ग़नीम, गुरबत आपणे विच छुपाइंदा। पर्दानसीं बेनगीं, निगह नैण ना कोए उठाइंदा। ना कोई मज़्हब ना कोए दीन, शरअ वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई बकतर ना कोई ज़ीन, तन संग ना कोए वखाइंदा। शाह स्वारा ना कोए अज़ीम, अज़मत आपणी ना कोए वड्याइंदा। बेग़म कोए ना होए अधीन, बे ग़म ग़मख़ार आप हो जाइंदा। मुहम्मद की करे विचार मस्कीन, हरि मसख़रा एका खेल कराइंदा। चौदां लोक तड़फे जिउँ जल मीन, चौदां तबक धीर ना कोए धराइंदा। अन्तर अन्तर परवरदिगार तेरा कलमा रिहा चीन, चिन्ह् नज़र कोए ना आइंदा। महबूब तेरा अधीन, मैखाना जगत मोहे ना भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सुत दुलारे आप वखाइंदा। सुत दुलारे वेख मेरा हाल, हरि जू हरि हरि रिहा जणाईआ। गुर अवतार होए बेहाल, बैठे सीस झुकाईआ। नेत्र रोवे महांकाल, कूक कूक दए दुहाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव आया ज़वाल, लेखा सब दा रिहा मुकाईआ। ना कोई खण्डा ना कोई ढाल, तीर तलवार ना हत्थ उठाईआ। पंज तत्त ना कोए निशान, गुरू पीर ना वंड वंडाईआ। मुकामे हक़ इक्क जलाल, नूर नूर रुशनाईआ। सचखण्ड इक्क मकान, सम्बल डेरा लाईआ। बण पैग़म्बर वड अमाम, इबनुलवक्त वेख वखाईआ। मुश्कल होई विच जहान, मशवरा सब दा रिहा भुलाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक कूकण विच कबरस्तान, कूक कूक देण दुहाईआ। जिस दा किसे ना मिल्या कोए निशान, अञ्जील कुरान करे पढ़ाईआ। सो साहिब सुल्तान प्रगट होया विच जहान, शुबा सब दा दए मिटाईआ। अंदर बाहर वेखे मार ध्यान, संजीदगी सब दी दए कढ्ढाईआ। दीद ईद एका चन्द नज़री आए भान, भूमका मिले माण वड्याईआ। अञ्जील कुरान निउँ निउँ करे सलाम, तीस बतीस कम्म किसे ना आईआ। अल्ला राणी नैण शरमान, मुख घूँगट रही पाईआ। मेरा जोबन लुट्टया ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढाईआ। कागद कलम बड़ी शैतान, शरअ जगत वंड वंडाईआ। मैं भुल्ली बण अञ्याण, बाली बुध कम्म किसे ना आईआ। तूं मीआं वड सुल्तान, रहिमत तेरी मेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सुत दुलारे लए फड़, फड़ अक्खीं दए वखाईआ। अक्खीं वेख छोटे पुत्त, हरि की की खेल रचाइंदा। बारां मास ना कोए रुत्त, छे रुती ना वंड वंडाइंदा। जोतश भविख्त ना किसे कोलों लए पुच्छ, पुच्छण घर कोए ना आइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी बूटा आपणी हथ्थी दए पुट्ट, जड़ आपे आप उखड़ाइंदा। भगत भगवन्त गुरमुख गुर गुर गोदी चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अधभुत, पंज भूतक रूप ना कोए धराइंदा। प्रगट हो अबिनाशी अचुत्त, चेतन सब दी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे सच सिँघासण पुरख अबिनाशन इक्क इकल्ला एकँकार हरि करतार, तख्त निवासी शाहो शाबाशी चरन कँवल उपर धवल भगत दुआरा खेल अपारा अपरम्पर आप कराइंदा। सुत शब्द वेख मार ध्यान, हरि धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात प्रगटाईआ। जिस दुआरे गुर अवतार पीर पैग़म्बर पुरख अबिनाशी सारे गाण, गा गा खुशी मनाईआ। जिस गृह विष्न ब्रह्मा शिव पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ निउँ निउँ करन सलाम, सजदा बरदा सीस झुकाईआ। सो बेपर्दा होया आप भगवान, आपणा पर्दा दए उठाईआ। सचखण्ड दवारा सच मुनारा विच संसारा अगम्म अपारा आप बणाए नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना दो जहानां देवे पैग़ाम, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सर्ब जीआं दा साचा राम, कान्हा कृष्ना नज़री आईआ। उम्मत नबी रसूल इक्क अमाम, कलमा कातब दए समझाईआ। नानक गोबिन्द इक्क जमात, चार वरन वरन पढ़ाईआ। सतिजुग साचे साची दात, सति पुरख निरँजण आप वरताईआ। सोहँ ढोला गाओ गाथ, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। नानक निरगुण पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। बीस इकीसा हरि जगदीसा एका नूर करे प्रकाश, पंज तत्त लहिणा दए मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले, गुर शब्द मिलावा एका घर कराईआ। शब्द सुत तेरा सच्चा मेला, हरि मिलणी मेल कराइंदा। आदि निरँजण चाढ़े तेला, जोत निरँजण संग वखाइंदा। कलयुग अन्तिम आया वेला, मिल सखीआं गीत अल्लाइंदा। सोहे सतिगुर सज्जण सुहेला, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाइंदा। सतिनाम नाम सति अचरज खेल आपे खेला, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। हरिजन तेरा पार उतारा, हरि सतिगुर आप कराईआ। जगत पिता ना कोए सहारा, गुर गुर आपणी गोद बहाईआ। कागद कलम ना कोए लिखारा, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद ना कोए दुआरा, गुरुदुआर काया अंदर दए वखाईआ। दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती वेखे चाँईं चाँईंआ।

५८३
१२

शब्दी नाद सच्ची धुन्कारा, अनहद रागी राग सुणाईआ। वाहवा सखीआं मंगलचारा, पंचम मिल मिल खुशी मनाईआ। घर विच घर खोल्ह किवाड़ा, साची सेजा इक्क सुहाईआ। साची सेजा सोहे सोभावन्त हरि करतारा, निरगुण आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा गुर गुर संग, गुर गुर संग आत्म रंग, आत्म रंग उमंग पूर कराईआ। साची मंग गुरसिख रंगत, जुग जुग आप रंगाइंदा। गुर का बेड़ा हरि हरिसंगत, हरिसंगत खेवट खेटा आप अख्वाइंदा। जन भगत दुआरे आए मंगत, बण मंगता फेरी पाइंदा। मेल मिलाए साचे सन्त, सन्त सज्जण वेख वखाइंदा। जिस बणाई आदि बणत, सो अन्त फेरी पाइंदा। सृष्ट सबाई एका पंगत, पंडत रूप ना कोए वटाइंदा। चार वरन लाए अंगत, अंगीकार करे अंगत अंगीकार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा राह चलाइंदा। सचखण्ड दा साचा राह, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। सति सतिवादी बण मलाह, हरिजन साचे पार कराइंदा। चरन दुआरा दए वखा, कँवल चरन आप बहाइंदा। दूर दुराडा पन्ध मुका, अवण गवण डेरा ढाहइंदा। सुन्न समाधी पार करा, अगाध अगाधी भेव खुल्हाइंदा। अनहद नादी बन्द करा, धुंन नाद ना कोए सुणाइंदा। सुरती सुरत दए खपा, मूर्त अकाल रूप वटाइंदा। होए दयाल आपणे विच लए मिला, मेल मिलावा आप कराइंदा। साचे पौड़े दए चढ़ा, डण्डा हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। ब्रह्मण्डां चरनां हेठ दबा, गुरमुख आपणी उँगली लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तक्कण राह, जिस दुआरे गुरमुख फेरा पाइंदा। सतिगुर पूरा साची बख्शे इक्क सरना, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। थिर घर साचे दए बहा, धर्म दुआरा आप वड्याइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणी दया आप कमाइंदा। कीमत करता आपे पा, साचे हट्ट आप विकाइंदा। शाहो भूपी अनरंग रूपी एका नूर दए दरसा, नूर नुराना नज़री आइंदा। ज़ात विच ज़ात मिला, सिफ्त सफ़ात ना कोए सलाह, ज़ाबता ज़बत जज़ब आपणे विच कराइंदा। अन्तिम फातया इक्को वार पढ़ा, पीर पैग़म्बर गुर अवतार करे नक़ाह, सचखण्ड दवारे सारे कहिण साचा होया व्याह, कन्त कन्तूहल वड रसूल लैणा प्रना, दोए जोड़ चरन सरन मंगण सरना, चार युग दा वेख हाल मुख घूँगट पर्दा लैणा पा, कर किरपा हो मेहरवान पुरख अबिनाशी साडे वल जे करे ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। साडा अन्त कम्म ना आया ज्ञान, लख चुरासी फिरे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। किसे नज़र ना आए श्री भगवान, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। पंडत पांधा मुल्ला शेख़ मुसायक ग्रन्थी पन्थी घर घर मंगदे फिरदे दान, माया अग्गे आपणी झोली डाहीआ। सतिगुर पूरा इक्को सदा मेहरवान, सब दे खाली भाण्डे रिहा भराईआ। कलयुग अन्तिम होया प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। ना कोई खण्डा तीर कृपान, म्यान

रूप ना कोए वखाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाण, सच संदेसा दए सुणाईआ। जन भगतां मिल्या आण, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। कर किरपा करे परवान, परवाना आपणा नाम फड़ाईआ। जिस जन गाया सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिस काल ना नेड़े आईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, रातीं सुत्तयां लए पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई होई हैरान, हरि का पौड़ा नज़र किसे ना आईआ। हरीदुआर ना मिले कन्त भगवान, बेवा दिसे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सुत तेरा वसाए घर, घर मन्दिर इक्क बणाईआ। घर मन्दिर वसणा इक्को इक्क, हरि सतिगुर आप वसाइंदा। निरगुण लेखा रिहा लिख, ना कोई मेट मिटाइंदा। सतिजुग साची सिख्या लैणी सिख, साख्यात आप समझाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आए दिस, नज़रीआ नज़र आप बदलाइंदा। सन्त सुहेले रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत भगवन्त उठाए पेख, पेख पेखत पेखत आपणी दया कमाइंदा। रुत्त बसन्ती रहे चेत, गुरसिख फुलवाड़ी आप महकाइंदा। भगत भगवन्त करे हेत, हितकारी फेरा पाइंदा। वेखणहारा नेतन नेत, नित नवित दया कमाइंदा। आपणा दस्सण आया भेत, भेव हरि जू आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द आपणा माण रखाइंदा। शब्द सुत तेरा माण, सो पुरख निरँजण आप रखाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल महान, ख़ालक ख़लक मख़लूक आप कराइंदा। नर नरेशा धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क जणाइंदा। शाह सुल्तान राज राजान कोई ना दिसे विच जहान, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्को आया विच मैदान, मध आपणा डेरा लाइंदा। दो जहान नैण शरमाण, आपणा बल ना कोए रखाइंदा। साची चरनी डिगे आण, बांहों फड़ ना कोए उठाइंदा। जिउँ भावें तिउँ कर श्री भगवान, तेरा कीता ना कोए उलटाइंदा। कलयुग जीव होए शैतान, शर्म हया ना कोए वखाइंदा। मन्दिर मस्जिद मढ़ जगत विकारा खोल्ही दुकान, दुराचार वंड वडाइंदा। तेरा इष्ट ना मिले निशान, दृष्ट जीव ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दहि दिशा वंडाए हिस्सा, हरिजन साचे आप जगाइंदा। गुरसिख जगावण आया, हरि सतिगुर मेहरवान। दो जहानां फेरा पाया, लोआं पुरीआं मार ध्यान। रवि ससि मंडल मण्डप चरनां हेठ दबाया, नाता तोड़ ज़िमीं असमान। अवण गवण पन्ध मुकाया, लोक परलोक हो प्रधान। लोकमात वेख वखाया, पारब्रह्म पुरख सुल्तान। चारे कुण्टां पड़दा लाहया, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेखे हो मेहरवान। साची दिशा फोल फोलाया, दहि दिशा कर परवान। गुरमुख विरला नज़री आया, जिस हिरदे वसया आप भगवान। जन्म जन्म दा लेख चुकाया, पूरब लहिणा झोली पाया आण। सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाया, आत्म परमात्म वड ज्ञान। गायत्री मन्त्र ना कोए जणाया, बारां अक्खर

ना कोए विधान। जगत विद्या ना कोए पढ़ाया, दोए दोए ना सुणे कान। ब्रह्म पारब्रह्म समझाया, शब्दी सुरती खेल महान। अकाल मूर्ति रंग चढ़ाया, नाद तूरती इक्क धुंन कान। आपणी ज़रूरत पूरी लए कराया, गुरमुख साचे कर परवान। जगत महूरत रिहा वखाया, सतिजुग साचा झुल्ले निशान। सत्तर बहत्तर चौहत्तर एका घर बहाया, सच दुआरे कर परवान। भगत दुआरा आप बणाया, सेवा कर विच जहान। सच सिँघासण डेरा लाया, सति सतिवादी नौजवान। हरिसंगत हरि का रूप बणाया, हरि होया मेहरवान। दुःख दर्द दए मिटाया, रोग सोग चिंता चिखा नैण शरमान। सफल कुक्ख दए कराया, मात गर्भ ना फेर पछतान। चुक्क चुक्क दरगाह साची दए बहाया, जो ढोला साचा गाण। हरिसंगत मिले वड्याआ, वड वड्डा इक्क भगवान। बिन भगतां हथ्थ किसे ना आया, जुग जुग खेले खेल महान। बहत्तरां आपणा बन्धन पाया, सत्तरां पाई साची आन। चौहत्तरां किहा नट्ठ ना जाए शैतान, निरगुण आपणा मुख छुपाया। जिस दे पिच्छे गोबिन्द छोटे बाले कीते कुरबान, नीआं हेठ नेंह रखाया। तिस लहिणा चुकाए आण, देणा देणा झोली पाया। मस्तक टिक्का लाया विच जहान, साचा सिक्का दए वखाया। निक्का निक्का खेले खेल महान, फिक्का फिक्का रस गंवाया। जन भगतां दस्से एका गीत सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा गाणा गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे गाया। गा गा थक्के पीर पैग़म्बर, पहरा आपणा मात जणाईआ। कर कर गए लोकमात सुअम्बर, गुर चेले बण अडम्बर, जगत विद्या करी पढ़ाईआ। पुरख अकाल इक्क भरतम्बर, भरपूर रहया सर्ब घट थाईंआ। नौ खण्ड पृथमी सृष्ट सबाई इक्क वखाए गुरुदुआरा मन्दिर, मस्जिद इक्को नज़री आईआ। गुरसिख तेरा मन ना भवे बन्दर, सतिगुर एका बन्धन पाईआ। फड़ के मारे इक्को जंदर, ना कोई सके तुड़ाईआ। जिस नूं गोरख मुछन्दर लभ्भदे रहे उच्चे टिल्ले मन्दिर, अन्त हथ्थ किसे ना आईआ। जो धन्ने दे चारे वच्छे डंगर, सो साहिब फेरा पाईआ। जिस नामे देहुरा वखा ल्या आपणे अंदर, पंज तत्त डेरा ढाहीआ। सो मन्दिर मसीता करे खण्डर, खण्डा एका नाम चमकाईआ। सृष्ट सबाई सुणाए साचा छन्दन, गीत गोबिन्द अल़ाईआ। आत्म परमात्म परमानंदन, निजानंद रस दए वखाईआ। गुरसिखो तुहाढ्ढी आया टुट्टी गंढ्ढुण, घर गोबिन्द फेरा पाईआ। जे कोई जाणे गुजरी चन्दन, गुजरी चन्दन पंज तत्त वड्याईआ। सच वखाए इक्क अनन्दन, पुरख अकाल साचा सुत बणाईआ। लख चुरासी त्रैगुण माया सब दे कटणहारा फंधन, फंध एका आपणा पाईआ। गुरसिख गाउ बत्ती दन्दन, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। पूजा चुक्की करीर जंडन, इष्ट देव ना कोए वखाईआ। लेखा जाणे उत्भुज सेत्ज जेरज अंडन, अण्डज आपणा रंग वखाईआ। पड़दा खोल्ह़े विच ब्रह्मण्डन, वरभण्ड दए वड्याईआ। वेखो दर खलोता त्रिलोकी नंदन, चरनी बैठा सीस झुकाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वखाए साचा सागर डूँघी अंदर, काया गागर गहर गम्भीर दया कमाईआ। काया गागर साचा रस, हरि रसीआ आप भराइंदा। बण चात्रक होए वस, बिलप बिलप बिरलाइंदा। दूर दुराडा आए नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। गुरसिख तेरे प्यार अंदर जाए फस, सतिगुर आपणा प्यार आप वधाइंदा। जे गुरसिख अग्गों बोले हस्स, सतिगुर लख लख खुशी मनाइंदा। सतिगुर पूरा गुरसिखां दा सदा गाए जस, आपणा जस ना किसे सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा इक्को घर, घर मन्दिर इक्क वड्याइंदा। घर मन्दिर वड्डा वड, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। इट्टां गारे नालों रखे अड्ड, लुहार तरखाण ना कोए बणाइंदा। बाढी नींह ना देवे कोई रख, सूर धार ना कोए जणाइंदा। तेसी कांडी ना सके कोई कढ्ढ, ठोकर ठाकर ना कोए लगाइंदा। कर किरपा आपणे मन्दिर अंदर आपे जाए वस, वसेरा आपणा ना किसे समझाइंदा। जे कोई पुच्छे सच दस्स, अछल छल खेल कराइंदा। कर प्रकाश सब नूं करे बेवस, प्रकाश आपणे प्रकाश विच छुपाइंदा। जन भगतां कलयुग अन्तिम मार्ग दस्स, मृगशाला काया अंदर विच विछाइंदा। मार छाल बहे नट्ठ, आउँदा जांदा नज़र ना आइंदा। फड़ बांहों कर इकट्ठ, इकट्ठे एका वार कराइंदा। कर किरपा फेरे उलटी लट्ठ, मन मनुआं आप भुआइंदा। कूड़ी क्रिया करे भट्ठ, सच सुच्च मन्त्र दृढ़ाइंदा। लहिणा चुक्के तत्त अठ्ठ, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध कम्म किसे ना आइंदा। सुरती शब्द लवे रस, रस सुरत शब्द आप चखाइंदा। ईश जीव होए वस, जीव ईश आप कराइंदा। आत्म परमात्म प्यार अंदर जाए फस, फासला दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म गाए जस, हरफ़ बहरफ़ आप पढ़ाइंदा। अन्तिम आपणा लेखा कर के बस, बसता सब दा बन्द कराइंदा। वीह सौ उन्नी बिक्रमी सारे सत्थर बैठे घत्त, सत्थर यारड़ा ना कोए हंढाइंदा। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान पुरख समरथ, समरथ आपणी धार दो जहान आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दर आई देवे नाम वथ, सगल विसूरे आप मिटाइंदा। सगल विसूरे मिटाए संताप, सति सति दए जणाईआ। कर्म कांड ना कोए पाप, पुनीत पतित आप कराईआ। फड़ बांहों उतारे पार घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम नेड़े वाट, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे कुरलाईआ। कोई ना देवे किसे साथ, मात पित झूठा नाता भैण भाईआ। किसे कम्म ना आए ज़ात पात, वरन गोत ना कोए वड्याईआ। सर्ब जीआं दा एको कमलापात, परम पुरख बेपरवाहीआ। चरन कँवल कँवल चरन बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाईआ। एथे ओथे दो जहान रखे साथ, सगला संग निभाईआ। सोहँ अक्खर पूजा पाठ, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। राज राजाना सुट्टे आपणे खात, खाता एका रिहा वखाईआ। दीनां मज़्बां करे घात, छुरी

एका करद नाम चलाईआ। अन्तिम सब दा फातया पढ़ पढ़ करे सफात, सिफ़रा रूप सर्ब लोकाईआ। इक्को गुरमुख पारज़ात, परम पुरख दए वड्याईआ। जो जन आए सतिगुर घाट, पिछला पन्ध मुकाईआ। सारे रल मिल गाउ इक्को गाथ, पारब्रह्म प्रभ इष्ट इक्क ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दे संसे रिहा चुकाईआ। सब दा संसा करे काफूर, काफर कोए नज़र ना आईआ। शाह सुल्ताना बणाए मजदूर, मज़दूरी घर घर दए कराईआ। अन्तिम नाता तुट्टे कूड़, सच सुच्च करे कुड़माईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी आपणा खेल करे ज़रूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हरिसंगत गुरमुख गुर गुर इक्क दूजे दी मंगण चरन धूढ़, निउँ निउँ लागण पाईआ। ना कोई दिसे मूर्ख मूढ़, चतुर सुघड़ सर्ब बणाईआ। आत्म परमात्म देवे इक्क सरूर, मदि प्याला ना कोए प्याईआ। अठ्ठे पहर करे मखमूर, मुफ़त आपणा नाम विकाईआ। जन्म जन्म दे मेटे कसूर, कसर इशारीआ इशारे नाल मेटे सर्ब लोकाईआ। हरिसंगत तेरा बेड़ा पार करे जरूर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर उठ उठ वेखण चाँईं चाँईंआ। कल कल्की अवतार आया गुरसिखां आसा मनसा करे पूर, आप आपणी दया कमाईआ। जिस दी गुर गोबिन्द मंगी चरन धूढ़, सो पुरख अकाल आपणा वेस वटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हाज़र हज़ूर, निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, आत्म रत ना कोए रखाईआ।

५८८
१२

✳ १० भाद्रों २०१६ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड पधरी ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

सो इच्छा हरि आदि अन्त, आदि जुगादी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सो पुरख निरँजण महिमा अगणत, बेअन्त बेपरवाह नाउँ धराइंदा। हरि पुरख निरँजण खेले खेल नार कन्त, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। एक ओंकार साचा धाम इक्क सोहँत, सोभावन्त आसण लाइंदा। आदि निरँजण नूर अनन्त, अनभउ प्रकाश कराइंदा। श्री भगवान आपणा लेखा जाणे अगणत, लिख्त विच कदे ना आइंदा। अबिनाशी करता आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार खेल कराइंदा। पारब्रह्म एका नाउँ एका मंत, निराकार आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो इच्छया आपणी आप रखाइंदा। सो इच्छया हरि निरँकारा, एका एक रखाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। दीवा बाती कर उज्यारा, कमलापाती वेख वखाईआ। महल अटल उच्च मनारा, सति सतिवादी आप सुहाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, इक्क इकल्ला डेरा लाईआ। रूप रंग ते वसे बाहरा, रेख नज़र कोए ना आईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी नाउँ धराईआ। हुक्मी हुक्म सति वरतारा ,सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। धुर फ़रमाणा बोल जैकारा, जै

जैकार इक्क अलाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। मंडल मण्डप इक्क सहारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। रवि ससि ना कोए उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया आपणे हथ्थ रखाईआ। साची इच्छया श्री भगवान, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, दर घर साचे सोभा पाइंदा। एक ओंकारा नूरो नूर नूर महान, जोती जाता पुरख बिधाता आप आपणे नूर डगमगाइंदा। वेखणहारा खेल तमाशा, पूरी करे आपणी आसा, आशा आसा विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण साची इच्छया आपणी आप समझाइंदा। साची इच्छया हरि निरँकारा, एका एक जणाईआ। सचखण्ड खोले सच दुआरा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। मुकामे हक़ बेऐब परवरदिगारा, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। आपणी इच्छया पाए भिच्छया भरे सर्ब भण्डारा, सति सतिवादी आपणी झोली अग्गे डाहीआ। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। निरगुण निरगुण वेखणहारा, नेत्र नैण ना कोए रखाईआ। बण विचोला सुणाए ढोला, साचा सोहला आप सुणाईआ। एका बोला कर उज्यारा, पड़दा ओहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण साची इच्छा सचखण्ड दवारे आपणी आप प्रगटाईआ। साची इच्छया आदि पुरख, आपणी आपणी आप प्रगटाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता रोग ना कोए जणाइंदा। गृह मन्दिर घर स्वामी देवे दरस, दरस अमोघ आपणा आप प्रगटाइंदा। बिन नेत्र मिटाए आपणी हरस, हवस होर ना कोए रखाइंदा। आपणी आपे करे परख, हरि पारखू आपणा भेव आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया इक्क वखाइंदा। साची इच्छया एका एक, एक ओंकारा आप प्रगटाईआ। आपे लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी वसणहारा साचे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। निउँ निउँ करे निरँकारा आदेश, आदेस आदेस हरि सच्चे शहिनशाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सो पुरख निरँजण निराकार कर कर वेस, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, सो पुरख निरँजण आपणा खेल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए समझाईआ। साची सिख्या हरि भगवाना, एका एक रखाइंदा। सचखण्ड दवारा खोले मकाना, दर घर साचा आप सुहाइंदा। निरगुण निरगुण कर परवाना, परम पुरख मेल मिलाइंदा। नारी कन्त देवे दाना, दाता दानी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया खेल कराइंदा। आपणी इच्छया हरि हरि खेल, इक्क इकल्ला आप कराईआ। निरगुण निरगुण कर कर मेल, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। कर कुड़माई चाढ़े तेल, दरगाह साची सगन मनाईआ। वसणहारा धाम नवेल,

महल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो इच्छया इक्क जणाईआ। सो इच्छया हरि भगवन्त, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे मेल मिलावा नारी कन्त, नर हरि आपणा बन्धन पाइंदा। निरवैर पुरख अकाल एका रंग चढ़ाए बसन्त, बसन बनवारी आप रंगाइंदा। एका नाउँ एका मंत, मन्त्र नाउँ निरँकार इक्क दृढ़ाइंदा। एका महिमा जाणे अगणत, अगणत आपणा भेव खुल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया नाल नार कन्त, कन्त कन्तूहल एका सेज सुहाइंदा। एका सेज कन्त कन्तूहल, नर निरँकार आप सुहाईआ। एका देवे लहिणा देणा मूल, एका वस्त अमोलक झोली पाईआ। एका भूशन बस्त्र देवे साचे फूल, बण मालण सेव कमाईआ। एका सच पंघूड़ा लए झूल, झूला आपणा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप धराईआ। आपणी इच्छया आपे रख, आदि पुरख खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण होए वस, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। निरगुण निरगुण देवे रस, रस रसीआ रस चखाइंदा। निरगुण निरगुण मार्ग देवे दस्स, भेव अभेद आप खुल्लाइंदा। निरगुण निरगुण महिमा सुणाए अकथ, कथनी कथ ना कोए जणाइंदा। निरगुण निरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। निरगुण निरगुण कहे पुरख समरथ, दूसर ओट ना कोए धराइंदा। निरगुण निरगुण गाए जस, जस आपणा नाउँ सुणाइंदा। निरगुण प्यार निरगुण धार अंदर निरगुण जाए फस, दूसरी फांधी ना कोए बणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सो पुरख निरँजण आपणी इच्छया हो प्रगट, दर घर साचा आप सुहाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारा खोल्ल हट्ट, बण वणजारा सेव कमाइंदा। वस्त अमोलक एका घत, अतोट अतुट आप वखाइंदा। नारी नर नरायण रखे आपणी पत, नार कन्त आपणी सेज सुहाइंदा। आपणे अन्तर आपा कर उतप्त, आपणा खेल आप सुहाइंदा। आपे मात आपे पित, पिता मात आप हो जाइंदा। आप सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। पंज तत्त ना कोए तत्त, त्रैगुण बन्धन ना कोए रखाइंदा। आपणी कुक्खों आपे फुट, जन जननी नाउँ धराइंदा। आपे लेखा जाणे साचे सुत, सुत आपणा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण आपणी इच्छया आप समझाइंदा। साची इच्छया श्री भगवाना, आदि आदि जणाइंदा। सचखण्ड दवारे खेल महाना, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवाना, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला इलाही नूर आप प्रगटाइंदा। एक ओंकारा वड बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। आदि निरँजण नूर महाना, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता देवे दाना, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। श्री भगवान झुलाए निशाना, सच दुआरे आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखे मार ध्याना, नेत्र

नैण ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड दवार सोहे सच मकाना, सति पुरख निरँजण आपणी धार जणाइंदा। खेले खेल श्री भगवाना, आप आपणी कल वरताइंदा। जनणी जन बण बण जणे बाला, जन जणेंदी माई आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणी इच्छया जणया सुत, हरि शब्दी नाउँ रखाईआ। सचखण्ड दवारे आपे उठ, उठ उठ आपणी खुशी मनाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी निहकर्मी निहकामी आपे गया तुठ्ठ, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो इच्छया एका एक वखाईआ। सो इच्छया सचखण्ड दवार, हरि साचा सच जणाइंदा। शब्द दुलारा कर त्यार, सति सतिवादी साचा हुक्म सुणाइंदा। बिन नेत्र नैण नैण उग्घाड़, अक्ख प्रतख इक्क वखाइंदा। जोती जोत दीपक बाल, अज्ञान अज्ञान ना कोए रखाइंदा। निरगुण निरगुण वसे नाल, सगला संग आप समझाइंदा। सचखण्ड दवारे पुरख अकाल, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया साची धर्मसाल आप बणाइंदा। धर्मसाला साचा धर्म, हरि साचा सच जणाईआ। सुत दुलारे तेरा नाउँ निहकर्मी कर्म, कर्म कांड ना कोए वड्याईआ। ना कोई गोत ना कोई वरन, वंडण विच कदे ना आईआ। परम पुरख प्रभ एका सरन, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। सतिगुर साहिब तरनी तरन, तारनहार हथ्थ वड्याईआ। मस्तक धूढ़ी टिक्का चरन, चरन चरनोदक मुख छुहाईआ। आदि पुरख घाड़न घड़न, घड़नहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इच्छया दए जणाईआ। एका इच्छया सुत दुलारे, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। तेरा मेल अगम्म अपारे, आदि जुगादि आप कराइंदा। घर विच घर कर त्यारे, तेरा मन्दिर आप सुहाइंदा। थिर घर खोल्हे इक्क किवाड़े, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहइंदा। कर किरपा अंदर वाड़े, सिर एका हथ्थ टिकाइंदा। आदि जुगादि करे गुफ़तारे, भेव अभेद आप सुणाइंदा । सति सतिवादी आदि जुगादी इक्क इकल्ला बोध अगाधी वाजां मारे, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा । सदा सुहेला इक्क इकेला तेरी पैज स्वारे, सदा सद आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया साचे सुत जणाइंदा। शब्द सुत उठ कर ध्यान, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। थिर घर दुआरा तेरा मकान, बेमुकाम आप बणाईआ। जिस दा दिसे ना किसे निशान, निशाना तीर ना कोए लगाईआ। एका हुक्म एका हुक्मरान, एका शहिनशाह करे सच्ची शहिनशाहीआ। एका दाता दानी देवे दान, दीनन आपणी दया कमाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा तेरी झोली पाईआ। एका इच्छया कर परवान, साची सिख्या दए समझाईआ। सो पुरख निरँजण नौजवान, निरगुण निरगुण आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

५६१ १२

आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकार एका वार सुणाईआ। सुण संदेसा हरि निरँकार, शब्दी सुत सीस झुकाइंदा। तेरी इच्छया मेरा भण्डार, भण्डार तुट कदे ना जाइंदा। तेरा नाउँ मेरा वपार, दर तेरे हट्ट खुल्हाइंदा। तेरी किरपा मेरा सुधार, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। नित नवित सद मंगां तेरा दीदार, तेरी दीद मेरा रंग रंग नाल मिलाइंदा। तूं साहिब सुल्तान सच्ची सरकार, तेरा हुक्म मोहे भाइंदा। हउँ बरदा ख़ाक छार, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी इच्छया साची भिच्छया झोली एका आपणी पाइंदा। तेरी इच्छया झोली पा, पुरख अबिनाशी शुकर मनाया। सचखण्ड दस्से तेरा थाँ, जिस दुआरे आसण लाया। थिर घर बैठा तेरे गीत लवां गा, गा गा आपणी खुशी मनाया। तेरे चरन कँवल बिन नेत्र दरस लवां पा, आपणी तृष्ना तृखा बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, छोटा बाला मंग मंगाया। सुत दुलारा छोटा बाला, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। श्री भगवान तेरा खेल निराला, हउँ भेव ना जाणां राईआ। तेरी किरपा होया उजाला, निरगुण मिली नूर रुशनाईआ। तूं साहिब सदा गोपाला, गोबिन्द आपणी धार चलाईआ। आदि जुगादि बणें रखवाला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। साची सिख्या दृढ़ विश्वाश, विश्व धारी आप जणाइंदा। सुत दुलारे ना होणा उदास, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। निरगुण वेखे तेरा खेल तमाश, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। सति सतिवादी वसे पास, सगला संग निभाइंदा। तेरे अन्तर साची रास, बण गोपी काहन आप नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो इच्छया आप वखाइंदा। सो इच्छया लैणी वेख, शब्दी सुत जणाईआ। तेरा लहिणा बिन लेख रेख, रेख रूप ना कोए वड्याईआ। तेरा अन्तर तेरा मन्त्र लए वेख, वेखणहारा बेपरवाहीआ। थिर घर वसे तेरा देस, देवे माण वड्याईआ। तूं रहिणा सदा हमेश, मरन जम्मण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत सुत समझाईआ। छोटे बाले चढ़या चा, चाउ घनेरा इक्क रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिल्या मलाह, खेवट खेटा बेड़ा लए चलाईआ। सति सरूपी देवे सति सलाह, साचे मार्ग आपे लाईआ। समरथ पुरख महिमा अकथ दए जणा, कथनी कथ करे पढ़ाईआ। साचे रथ दए चढ़ा, महांसारथी सेव कमाईआ। थिर घर दुआरे जिस मेरी बणत लई बणा, सो साहिब नज़र किसे ना आईआ। आदि आदि एका निष्अक्खर रिहा पढ़ा, आपणा भेव आप चुकाईआ। साचा वक्खर झोली रिहा पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भिच्छया इक्क वखाईआ। सो इच्छया शब्द दुलारे, हरि हरि आप जणाइंदा। तेरे खेल अगम्म अपारे, अलख अगोचर

आप कराइंदा। तेरे अंदर निरगुण धारे, जोती जोत डगमगाइंदा। तेरे अंदर नर निरँकारे, साचे आसण सोभा पाइंदा। तेरे गुण अपर अपारे, बण हट्टवाणा हट्ट चलाइंदा। तेरा खेल करे आप करतारे, करता आपणी करनी आप कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे दुलारे, त्रै त्रै एका रंग वखाइंदा। त्रैगुण माया तत्त भण्डारे, पंचम एका जोड़ जोड़ाइंदा। रवि ससि कर उज्यारे, किरन किरन किरन टिकाइंदा। मंडल मण्डप तेरे अखाड़े, लोआं पुरीआं नाच नचाइंदा। दो जहान पावे सारे, लोक परलोक आपणा राह चलाइंदा। त्रैभवन धनी तेरा काज आप स्वारे, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप वखाइंदा। साची इच्छया रखणी याद, हरि साचा सच जणाईआ। आदि जुगादि सुणे फ़रयाद, सचखण्ड वासी सच्चा माहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाद, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता एका वस्त नाम अमोलक झोली पाईआ। करे खेल पत्तत पुनीता, निरगुण चलाए साची रीता, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण धाम वखाए इक्क अनडीठा, सरगुण तपे इक्क अंगीठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। सति सतिवादी आदि जुगादी नर निरँकारा ठांडा सीता, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे पर्दा दए उठाईआ। सुत दुलारे पर्दा खोल्ह, हरि साचा आप जणाइंदा। थिर घर दुआरे पए बोल, राग अनादी इक्क अलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तोले तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। लख चुरासी कुण्डा देणा खोल्ह, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। सति पुरख निरँजण एकँकारा खेल अपारा सदा सुहेला रहे अडोल, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी एका कंडा तोलणहारा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। लख चुरासी करे घोल, बल बावन आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया एका एक जणाइंदा। साची इच्छया पुरख अबिनाशा, एका एक जणाईआ। लख चुरासी खेल तमाशा, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाईआ। ईश जीव जगदीस पाए रासा, आत्म परमात्म कर कुड़माईआ। नौ दर रखे जगत वासा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मन मति बुध दए चतुराईआ। काया कफ़नी जानणहारा भेव खुलासा, पड़दा पड़दा विच रखाईआ। डूँग्घी कंदर पावे रासा, निरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया इक्क एका एक रखाईआ। साची इच्छया पंज तत्त, तत्तव तत्त तत्त जणाइंदा। लेखा जाणे रक्त बूंद रत्त, रत्ती रत्त रंग रंगाइंदा। करे खेल दाता दानी देवणहारा ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म एका घर जाए वस, बंक दुआरी बंक सुहाइंदा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, कोटन कोटि भान मुख शरमाइंदा। अनहद नादी गाए जस, जस वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी हुक्मी हुक्म फिराइंदा। जोती जोत सरूप

५६३
१२

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत एका एक एक भिच्छया आप वरताइंदा। सुत दुलारा चरनी ढह, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी आदि जुगादी एका रहे, रैहबर बणे सर्ब लोकाईआ। सदा सुहेला सति सतिवादी भाणा आपणा आपे सहे, सद भाणे आप समाईआ। सचखण्ड दवारे साचे बहे, सच सिँघासण डेरा लाईआ। एकँकारा सच जैकारा, साचा नाम बोले जै, जै जै आपणे नाउँ वड्याईआ। हरि का मन्दिर ना जाए ढह, सचखण्ड दवारा महल अटल मुनारा एका एक एक रुशनाईआ। सच संदेसा नर नरेशा शब्दी सुत तेरी धार अंदर कहे, कह कह आपणा हुक्म सुणाईआ। लेखा जाणे तूं मैं, मैं तूं एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी इच्छया झोली पाईआ। साची इच्छया हरि करतार, शब्दी शब्द शब्द वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा सहार, प्यार एका एक जणाइंदा। त्रैगुण माया तेरी धार, धार धार नाल मिलाइंदा। पंज तत्त तेरा विहार, बिवहारी आप कराइंदा। निरगुण सरगुण खोल्ह किवाड़, अंग अंग नाल मिलाइंदा। घर विच घर कर त्यार, तेरा मन्दिर आप सुहाइंदा। नौ दुआर वेखे जगत किवाड़, बन्द ताकी आप जणाइंदा। डूँघी भँवरी खेल अपार, सुखमन टेढी बंक सुहाइंदा। ईड़ा पिंगल पहरेदार, सेवादार सेव लगाइंदा। बेसबर प्याला कर त्यार, मदि जाम इक्क वखाइंदा। निझर झिरना ठंडा ठार, आत्म रस रस वखाइंदा।
निज नेत्र देवे खोल्ह दीदार, जगत लोचण बन्द कराइंदा। बजर कपाटी जड़्ह दए उखाड़, साची हाटी आप जणाइंदा। कमलापाती हो त्यार, बण साकी खेल कराइंदा। अन्धेर राती मिटे धूआँधार, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। शब्दी सुत तेरा प्यार, सुरती सुरत नाल कराइंदा। अकाल मूर्त वेखणहार, मूल आपणा ना किसे जणाइंदा। लख चुरासी घट घट अंदर गृह गृह निर्मल दीआ कर त्यार, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। जोत निरँजण कर शंगार, वेखणहारा सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा घर, लख चुरासी अंदर आप बणाइंदा। सुत दुलारे तेरा गृह, घट घट अंदर आप बणाईआ। निरगुण हो के निरगुण बहे, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। मनमति ना सके कहे, बुद्धि चले ना कोए वड्याईआ। गुर शब्द जो तेरी चरनी ढहे, तिस मेलां सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत रिहा जणाईआ। सुत दुलारा मंगे मंग, हरि अग्गे सीस झुकाइंदा। मेरा रूप ना कोए रंग, रेख भेख ना कोए जणाइंदा। कवण बिध वसां संग, सारंगधर तेरा भेव कोए ना आइंदा। तुध बिनां होया नंग, सिर पर्दा ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी अंदर पंच विकारा तेरा रचया जंग, जंगजू एका हुक्म वरताइंदा। अंदर मन्दिर लाई कंध, द्वैत पड़दा ना कोए उठाइंदा। कवण बिध तेरा गावां छन्द, सोहला ढोला इक्क प्रगटाइंदा। तुध बिन नार दुहागण होई

रंड, हरि जू कन्त नज़र कोए ना आइंदा। मेरी विच संसार पवे ना गंढु, शब्दी सुत प्रभ अग्गे झोली डाहइंदा। तेरा नूर निर्मल चन्द, शीतल शीतल धार वखाइंदा। आदि जुगादि इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। कवण धार कर प्यार, लख चुरासी आर पार मेटां पन्ध, बण पाँधी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठाकर स्वामी हो बख्शंद, शब्दी सुत सुत आप दृढ़ाइंदा। बख्शिश करे हरि मेहरवान, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। आदि रचना खेल महान, नज़र किसे ना आईआ। लिख लिख देवे ना कोए ब्यान, सिफ्त करे ना कलम शाहीआ। वसणहारा सच मकान, बेमुकाम डेरा लाईआ। सति सतिवादी करनहारा सच निज़ाम, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाईआ। शब्दी सुत देवे दान, दाता दानी बेपरवाहीआ। पंज तत्त तेरा निशान, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। जोती जोत जोत महान, दीपक दीप दीप रुशनाईआ। जीव जीव ईश मिले साचा काहन, जगदीस खेल कराईआ। करां खेल विच जहान, देवां मात मात वड्याईआ। चौदां लोक होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नैण शरमाण, नेत्र सके ना कोए उठाईआ। बण भिखारी मंगण दान, भिक्खक बैठण डेरा लाईआ। तेरा नाउँ प्रगट करां वड बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत गुर गुर तेरा नाउँ रखाईआ। शब्द सुत तूं साचा गुर, श्री भगवान आदि सुणाया। तेरा लेखा लिख्या धुर, ना कोई मेटे मेट मिटाया। मेरा नाउँ तेरी सुर, सुर ताल सुरत मिलाया। पुरख अकाल चरनी जाणा जुड़, जुड़ जुड़ आपणा बन्धन पाया। पारब्रह्म नूं तेरी लोड़, तुध बिन पारब्रह्म कम्म किसे ना आया। अबिनाशी करता वसणहारा अन्ध घोर, चन्द चांदना आपणा नूर लए प्रगटाया। निरगुण निरगुण बन्ने डोर, तन्दी तन्द ना कोए रखाया। आप बैठा रहे बण के चोर, सचखण्ड साचे मुख छुपाया। तेरा नाउँ पावे शोर, लोकमात डंक वजाया। करे प्रकाश काया गोर, डूँघी कवरी फोल फोलाया। एका उपर लाए होड़, काया सस्सा किला दए वखाया। एका होड़ा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी दुःख दए मिटाया। हँ ब्रह्म तेरे अग्गे देवे तोर, तुरया राग इक्क सुणाया। आप वखाए आपणा ज़ोर, ज़ोर रहिण कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया एका शब्द सो पुरख निरँजण आप धराया। साचा शब्द आपे धर, धर धर वेख वखाइंदा। देवणहारा आपे वर, वर देदे खुशी मनाइंदा। चुकावणहारा भउ डर, निर्भय आपणा नाउँ धराइंदा। सचखण्ड दवारे आपे खड़, थिर घर आपणी खेल रचाइंदा। लख चुरासी अंदर वड़, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। सुत शब्द तेरा खेल चेतन जड़, चात्रक तेरी तृखा आप बुझाइंदा। पंज तत्त तत्त लए फड़, फड़ फड़ आपणा बन्धन पाइंदा। रजो तमो सतो तोड़ गढ़, गढ़ हँकारी

मेट मिटाइंदा। आपणी अग्नी तेरे प्रेम जाए सड़, तेरा प्रेम आपणी अग्न वखाइंदा। सच महल्ले जाए चढ़, आउँदा जांदा नज़र ना आइंदा। लोकमात खोल्ह ताक, पंज तत्त, ब्रह्म मति आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इच्छा साचे शब्द झोली पाइंदा। शब्द सुत सच तेरी धार, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। वंडां वंड अपर अपार, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, त्रै त्रै मेला मेल मिलाइंदा। चार चार दा वणज वपार, चारे मुख मुख सालाहइंदा। चार चार कर त्यार, चारे खाणी भेव चुकाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वसे वसणहार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा राग अल्हाइंदा। सच सुगंधी एकँकार कमलापाती कँवल कँवल कर त्यार, झिरना निझर आप झिराइंदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, शीतल शीतल एका धार, बख्शश आपणी आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरा नाउँ रख गुर अवतार, पंज तत्त करां शंगार आत्म दीपक एका बाल, जोती जोत नाल मिलाइंदा। काया चोटी चढ़ खोल्हां दुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाला दीन दयाला सुत शब्द बणे दलाला, सच दलाली आप कमाइंदा। सच दलाली करे अकाल, अकल कला वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, थिर घर देवे माण वड्याईआ। सुंन अगम्म करनहारा पार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। तोड़नहारा जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सुत शब्द नौ खण्ड पृथ्मी वखाए इक्क सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाईआ। तेरी चरन सरन रखाए काल महांकाल, काल तेरे नाउँ वड्याईआ। तेरा रूप वेख दयाल, दयालता आपणी दए समझाईआ। जुग जुग वेखे तेरा कमाल, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। तेरी वाग डोर लए संभाल, संभल संभल आपणा राह जणाईआ। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। गुर अवतार तेरा नाउँ दए सिखाल, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ। तेई अवतार कर कर भाल, त्रैगुण मेला दए मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण रसना जिह्वा गाए बेमिसाल, आपणा मसला आप जणाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारी वेखे हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणा पड़दा लाहीआ। नूरी जल्वा इक्क जलाल, ज़ाहर ज़हूर इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया साचे सुत जुगा जुगन्तर सुहाए तेरी रुत्त, तेरी रुत्त आपणे नाम महकाईआ। साचे सुत कर विचार, हरि विचार विच ना आइंदा। तेरा नाउँ गुर अवतार, गुर गुर तेरा खेल कराइंदा। कलमा कलाम कर त्यार, कायनात आप पढ़ाइंदा। शरअ शरीअत वसे बाहर, शरअ आपणा हुक्म जणाइंदा। पंज तत्त पंज आधार, पंचम पंचम मेला हरि करतार, पंचम आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया आप रखाइंदा। साची इच्छया चार जुग, जुग चौकड़ी आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी औध जाए पुग, जुग

जुग गेड़ा आप भुवाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेवा लाए लुक लुक, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम वेला आए ढुक, वेखणहारा खलक खुदाईआ । नानक निरगुण दस्सणहारा साची ओट, ओट एका एक जणाईआ। पंच तत्त काया किला कोट, कोट बंक सुहाईआ। कबीर जुलाहा कहे निर्मल जगे जोत, जोती जाता करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत शब्द तेरी धार, गुर अवतार विच टिकाईआ। गुर अवतार तेरा रंग, पीर पैग़म्बर सोभा पाइंदा। पंज तत्त काया तेरी सेज पलँग, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। बोध अगाधा शब्द अगम्मी तेरा मृदंग, अनहद नादी सेव कमाइंदा। आर पार दो धार हरि निरँकार खण्डा जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। शब्दी तूरा जोती नूरा वसे संग, सगला संग आप निभाइंदा। मेटणहारा भेख पखण्ड, परम पुरख खेल कराइंदा। खिचणहारा तीर कमंद, साचा चिल्ला हथ्थ उठाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत शब्द दुलारे, दस्से खेल हरि करतारे, कुदरत कादर आप जणाइंदा। कुदरत कादर दस्से भेव, अभेद आप जणाईआ। शब्द सुत साची सेव, चाकर चाक लगाईआ। करे खेल निहकेवल निहकेव, निहकर्मी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गा ना थक्के रसना जिहव, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। पारब्रह्म प्रभ आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साचा देव, नमो नमो करे पढ़ाईआ। अलख अलख अलख अभेव, अगोचर अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया एका एक कराईआ। एका इच्छया हरि करतारा, शब्दी शब्द जणाइंदा। नौ नौ चार होए पार किनारा, नव सत्त ना कोए वड्याइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, रूप अनूप, आप वटाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, गुर गुर आपणा पड़दा लाहइंदा। खाणी बाणी अञ्जील कुरान वेखणहारा, वेख वेख पेख पेख पेखत आपणा रंग जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरी इच्छा तेरा तेरी झोली पाइंदा। तेरी इच्छा अन्तिम पूर, हरि सतिगुर पूर कराईआ। निरगुण सरगुण हाज़र हज़ूर, हरि हरि एका रंग रंगाईआ। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। नानक गोबिन्द साची धूढ़, गुर शब्द शब्द रमाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, मोह ममता माण मिटाईआ। हउमे हंगता तोड़ ग़रूर, गुरबत सब दी दए गंवाईआ। पीर पैग़म्बर कर कर थक्के कसूर, सब दे उत्ते फ़तवा लाईआ। कलयुग त्रैगुण तत्त तपे तन्दूर, सांतक सति ना कोए कराईआ । जिस ने जल्वा तक्कया कोहतूर, सो मूसा ध्यान लगाईआ। मुहम्मद हड्डीआं होण चूर चूर, सदी चौधवीं रही विहाईआ। अल्ला राणी ना दिसे हूर, मुख घूँगट ना कोए उठाईआ। तेई अवतार आसा कर ना सके पूर, आसा पूर ना कोए कराईआ। भगत अठारां होए दूर, कबीर जुलाहा दए दुहाईआ। वरन बरन ज़ात पात

रही झूर, झंजट देवे ना कोए मिटाईआ। ईसा मिले ना कोए नूर, इस्म आज़म ना कोए वखाईआ। सतिगुर नानक कहे प्रभ सब में रिहा भरपूर, सब थाईं होए सहाईआ। गोबिन्द कहे मेरा पिता पुरख अकाल ज़रूर, दूजी ज़रूरत ना कोए रखाईआ। अमृत प्याला दिता सरूर, अठसठ तीर्थ रहे शरमाईआ। गुरमुख आसा करी पूर, पंचम आपणा जोड़ जोड़ाईआ। आत्म परमात्म दिता नूर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। साहिब तुट्ठा होया हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पुरख अबिनाशी होया रिहा मफ़रूर, बिन भगतां हत्थ किसे ना आईआ। जिस नूं कहिन्दे वसदा दूर, सो सतिगुर नेरन नेर दसाईआ। पंच विकारा काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे चूरो चूर, नाम खण्डा इक्क उठाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर तेरा धरवासा आदि जुगादि खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक वेखे चाँईं चाँईंआ। सतिगुर कहे शब्द गुर मीता, गोबिन्द देवे माण वड्याईआ। हरि का शब्द सदा अनडीठा, नज़र किसे ना आईआ। गोबिन्द प्याला जिस ने पीता, पीर पैग़म्बर बैठे सीस झुकाईआ। नानक धाम ठांडा सीता, जिस घर मिले सच्चा माहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त चलाए साची रीता, रीतीवान फेरा पाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन जणाए इक्क प्रीता, परम पुरख बेपरवाहीआ। एका घर बहाए हस्त कीटा, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी एका राग सुणाए गीता, पुरख अकाल ढोला गाईआ। जिस बणाईआं मन्दिर मसीतां, शिवदुआले मट्ठ सुहाईआ। सो साहिब घर घर अंदर परखणहारा नीता, निज घर बैठा डेरा लाईआ। गुरसिख ना मरया ना जीता, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। शब्द गुर सदा सदा सद मीता, मित्र प्यारा इक्क हो जाईआ। मुर्शद मुरीद मुरीद मुर्शद एका धाम डीठा, जिस धाम वसया हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो इच्छा सुत दुलारे एका तेरे हत्थ फड़ाईआ। हरि की इच्छया शब्द हत्थ, हरि शब्दी खेल कराइंदा। हरि की इच्छया नाउँ वथ्थ, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। हरि की इच्छया महिमा अकथ, वेद कतेब भेव ना आइंदा। हरि की इच्छया सगल विसूरे गए लथ्थ, हरि जू हरिजन मेल मिलाइंदा। हरि की इच्छया हरि सतिगुर गुर गुर सरनी जाए ढट्ठ, ढह ढह शुकर मनाइंदा। हरि की इच्छया पंज तत्त, मन मति बुध नाल रलाइंदा। हरि की इच्छया निरगुण सरगुण कर प्रगट, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। हरि की इच्छया घर घर निर्मल जोत दए रख, जोत निरँजण डगमगाइंदा। हरि की इच्छया तन कंदर अंदर मारे अनहद सट्ट, ठोकर आपणे नाम लगाइंदा। हरि की इच्छया पंच विकारा सत्थर बैठे घत्त, सफ़ा मलेछ ना कोए चलाइंदा। हरि की इच्छया उपजे ब्रह्म मत्त, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। हरि की इच्छया ना उब्बले रत्त, बहत्तर

नाड़ ना अग्न तपाइंदा। हरि की इच्छया सगल विसूरे जायण लथ्थ, जो जन सतिगुर पूरे दरसन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द तेरा नाउँ सतिगुर मात समझाइंदा। शब्दी नाउँ सतिगुर मात, गुर अवतार तत्त कुड़माईआ। करे खेल बहु बिध भांत, भेव अभेद ना किसे जणाईआ। गा गा थक्के सारे गाथ, आदि अन्त ना कोए जणाईआ। सिफ्त करे ना कलम दवात, सेवा करे ना कलम शाहीआ। बनास्पत खोलू ना सकी आपणा ताक, अठारां भार ना भार तुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ इक्को ज़ात, गुर गुर आपणी ज़ात जणाईआ। चरन चरन बंधाए नात, सरन सरन सरनाईआ। शब्दी शब्द साचा हाट, हरि शब्द गुरू खुलवाईआ। सरगुण निरगुण देवे दात, निरगुण दानी आप वरताईआ। मनमति मेटे नार कमज़ात, कुलखणी गृह रहिण ना पाईआ। गुरू शब्द जिस वसया साथ, तिस नानक गोबिन्द होए सहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत्त तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद चार यार नानक गोबिन्द मंगदे गए प्यार, पुरख अकाल अन्तिम फेरा पाईआ। निहकलंक महांबली उतरे आपणी धार, मात पित जननी जन ना कोए रखाईआ। गोबिन्द कहे सम्बल वसे धाम न्यार, महल अटल उच्च करे रुशनाईआ। कल कल्की पावे सार, वेद व्यासा बण लिखार, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले कूक कूक गया जणाईआ। ईसा नेत्र रोवे गिरयाज़ारी करे ज़ारो ज़ार, मेरा खुदाए मेरे पिच्छे फेरा पाईआ। मुहम्मद कहे मेरा यार मुकामे हक़ वसे परवरदिगार, मुख नक़ाब पड़दा दए उठाईआ। सदी चौधवीं आए हार, चौदां सद खेल करतार, खुदी खुदाए दए मिटाईआ। गोबिन्द सूरा प्रगट होए इक्क बलकार, नौ खण्ड पावे सार, सत्तां दीपां दए माण वड्याईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका नाद इक्क धुन्कार, एका रागी राग सुणाईआ। एका इष्ट देव गुर करतार, करता पुरख इक्क सरनाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, सति पुरख निरँजण हरिजन साचे सुत लए प्रगटाईआ। राती सुत्तयां दए दीदार, सुफन सखोपत जागरत तुरीआ आपणा खेल वखाईआ। ग़फ्लत विच करे बेदार, उल्फ़त आपणी आप समझाईआ। एका कलमा कर त्यार, मुरीद मुर्शद करे पढ़ाईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा करे खेल आप निरँकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सो इच्छा हरिभगत भण्डार, साचे सन्तां आप वरताईआ। सन्त जन किहा रसना दयो उच्चार, सो इच्छा लेख लिखाईआ। हरिसंगत तेरा वड्डा दरबार, जिस दरबार गुर अवतार पीर पैग़म्बर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रूप वखाईआ।

✳ १० भाद्रों २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह मुंडी जुमाल ज़िला फिरोज़पुर ✳

सुत शब्द तेरा सच दुआरा, धुर दरबारी आप बणाइंदा। सचखण्ड अंदर खोल्ह किवाड़ा, थिर घर तेरा दर उपाइंदा। जोती नूर कर उज्यारा, नूरो नूर नूर धराइंदा। साचे मन्दिर खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप वखाइंदा। सच संदेसा एका वारा, नर निरँकारा आप सुणाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाह बेऐब आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत तेरा घर गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर सुहाए आप, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वेखे वड प्रताप, बेअन्त कन्त दए वड्याईआ। एकँकारा निष्अक्खर अक्खर कराए आपणा जाप, एकँकारा आप पढ़ाईआ। आदि निरँजण खोल्ह ताक, दीवा बाती कमलापाती दर घर साचे आप वखाईआ। अबिनाशी करता लहिणा देणा चुकाए बाकी आदि जुगादि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। श्री भगवान सति सरूपी सति सतिवादी एका बणे सज्जण साक, सगला संग आप रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे माई बाप, पिता पूत एका गोद सुहाईआ। एका बस्त्र एका खाट, एका सेजा दए वखाईआ। एका वस्त एका हाट, एका घर दए वड्याईआ। इक्क बंधाए साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाईआ। शब्दी शब्द तेरी साची ज़ात, निरगुण निरगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश गगन गगनंतर तेरी रास रचाईआ। लख चुरासी कर प्रकाश घर घर वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। पंज तत्त तेरा दासी दास, त्रै त्रै लेखा लेखे लाईआ। हुक्मे अंदर पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां आप फिराईआ। करे खेल शहिनशाह शाहो शाबाश, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। सदा सुहेला इक्क इकेला प्रगट होए साख्यात, दर घर साचे आपणा वेस वटाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर वेखे मार झात, घर घर विच पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे एका वस्त वस्तू हरि वरताईआ। साची वस्त साची दात, हरि साचा सच वरताइंदा। आदि जुगादि बन्न्हे नात, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाइंदा। ख़ालक ख़लक मख़लूक वेखे खेल तमाश, बेऐब आपणा भेव चुकाइंदा। परवरदिगार बणे सज्जण साक, साहिब सुल्तान आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण वखाए एका घाट, साचे पत्तण डेरा लाइंदा। आत्म पारमातम ब्रह्म पारब्रह्म वेखे वाट, ईश जीव पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्दी आप जणाइंदा। शब्द सुत वेख उठ बल धार, बलधारी आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, निरगुण सरगुण देवे माण वड्याईआ। तेरा लेखा विच संसार, वड संसारी आप चुकाईआ। तेरा लेखा शब्द दुलार, थिर दरबारे दए वड्याईआ। घर घर अंदर कर

त्यार, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। आत्म सेजा बैठ निरँकार, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। सारंग सारंगा बिन तन्द सतार, अनहद नादी नाद सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी भेव न्यार, सति सतिवादी करे पढ़ाईआ। बोध अगाधी नाद धुन्कार, धुंन आत्मक एका राग अलाईआ। शब्दी शब्द शब्द वणजार, शब्द वणजारा एका हट्ट खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी धार आप समझाईआ। शब्दी धार हरि हरि आसा, आसा आसा विच मिलाइंदा। शब्दी धार खेल प्रकाशा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। शब्दी धार साचे मन्दिर करे वासा, थिर घर साचे डेरा लाइंदा। शब्दी प्यार पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल मण्डप आपणा रंग वखाइंदा। शब्दी प्यार पवण स्वासा, लख चुरासी विच रखाइंदा। शब्दी आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत अबिनाशी अचुत्त आपणा भेव आप खुलाइंदा। खोले भेव हरि करतारा, कुदरत कादर दए जणाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। आदि अन्त मेरा विहारा, मध खेल गुरू अवतार गुर गुर आपणी सेव लगाईआ। शब्दी शब्द सच भण्डारा, ब्रह्म ब्रह्मांड आप वरताईआ। शास्त्र सिमरत वेद दए आधारा, अञ्जील कुरान सिफ्त सालाहीआ। खाणी बाणी बोल जैकारा, ढोला सोहला इक्क सुणाईआ। आपे वसे सब तों बाहरा, बेऐब नाम खुदाईआ। एका नाउँ वणज वपारा, चौदां लोक हट्ट चलाईआ। चौदां तबक तबक अखाड़ा, साचा सबक इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत वसाए तेरा घर घर मन्दिर देवे वड्याईआ। शब्द सुत तेरा साचा मन्दिर, हरि साचा सच वसाइंदा। लख चुरासी डेरा अंदर, घर घर सेज सुहाइंदा। वेखणहारा अन्धेरी डूँघी कंदर, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। तोड़नहारा कूड़ा जंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत आप सालाहइंदा। शब्द सुत सिफ्त सलाह, सलाहगीर आप जणाईआ। आदि जुगादि जुग जुग मलाह, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बण बण सेव कमाईआ। भगत भगवन्त ध्यान लगा, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। नाम निधान ज्ञान दृढ़ा, इष्ट दृष्ट इक्क खुलाईआ। जुग चौकड़ी काल विहा, कोटन कोटि चरनां हेठ दबाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटा, वेखे चाँई चाँईंआ। नौ नौ चार पन्ध मुका, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाईआ। दो जहानां डेरा ढाह, साचा घर इक्क वसाईआ। सच संदेसा नर नरेशा अगम्म अथाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे देवे वर, वर दाता सच्चा माहीआ। देवे वर पुरख समरथ, शब्द दुलारा खुशी मनाइंदा। दो जहान चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। लख चुरासी पाए नथ्थ, तन्दी तन्द ना कोए बंधाइंदा। पंज तत्त अंदर निरगुण वस, सरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, गुर गुर आपणा वेस वटाइंदा। साचे मंडल पावे रास,

निरगुण गोपी काहन नचाइंदा। तख्त निवासी शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। शब्द सुत तेरे वसे पास, परम पुरख विछड़ कदे ना जाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला आदि जुगादि तेरी पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। सच संदेसा देवे ख़ास, नाउँ निरँकार आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे तेरा माण आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा माण रखे हथ्थ निरँकार, निरगुण निरगुण दया कमाईआ। जुग चौकड़ी कर कर पार, गुर अवतार सेव लगाईआ। पीर पैग़म्बर मंगण धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का एका लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पंज तत्त होए खुआर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना कोए वड्याआ। कागद कलम ना कोए विचार, लिख लिख लेख शाही ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पीर पैग़म्बर कहिण मददगार, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। मुकामे हक़ वसे सांझा यार, लाशरीक इक्क खुदाईआ। जल्वा नूर नूर ज़हूर खेल करे अपर अपार, महबूब मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला, अज़मतो अज़मत खेल करे बेपरवाहीआ। बेनज़ीर शाह हकीर, तेरी तकदीर तेरी तकसीर तेरी तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे वखाए तेरा घर, दर मन्दिर कर आप जणाईआ। दर दुआर कीता साचा चाओ, हरि शब्दी सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी फड़ फड़ बांहों, सचखण्ड दवारे आप फिराइंदा। ना कोई पिता ना कोई माउँ, बालक गोद ना कोए सुहाइंदा। करे खेल अगम्म अथाहो, अलख अलखना आपणी अलख लगाइंदा। आदि जुगादि करनहारा सच न्याउँ, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी एका घर वड्याइंदा। शब्द सुत छोटा बाला, घर साचा वेख वखाईआ। एका दिसे हरि गोपाला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती दीपक एका बाला, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। एका मार्ग दस्से सुखाला, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। नज़र ना आए काल महांकाला, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक्क बणाईआ। आदि जुगादि करे प्रितपाला, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। आपे फल आपे डाल्ह, पत्त टहिणी आप महकाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी निहकर्मी चले अवल्लड़ी चाला, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द प्रगटाईआ। शब्द गुर शब्द अवतार, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। शब्द नाद शब्द धुन्कार, हरि शब्द राग अल्हाइंदा। शब्द मेला सच दरबार, शब्द गुर चेला रूप वटाइंदा। शब्द सज्जण सुहेला पावे सार, समरथ महिमा अकथ आप दृढ़ाइंदा। गुर शब्द वसे धाम न्यार, धाम आपणा आप प्रगटाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप सालाहइंदा। शब्द सुत हरि साची सेव, एका एक लगाईआ। आदि जुगादी अलख अभेव, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। दाता दानी वड देवी देव, देवत सुर होए सहाईआ। महल अटल वसे निहकेव, निहचल आपणा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी तेरा रंग रंग लए प्रगटाईआ। शब्द सुत तेरा साचा रंग, निरगुण आपणा रंग जणाइंदा। सति सरूप सूरा सरबंग, सैभं ना रूप वटाइंदा। अन्तर अन्तर इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, नूरो नूर डगमगाइंदा। सति सुगंधी दए सुगंध, वासना विश्व आप रखाइंदा। सचखण्ड निवासी थिर दुआर मुकाए पन्ध, बण पाँधी फेरा पाइंदा। पिता पूत देवे एका गंढ, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। गीत सुहागी साचा छन्द, हरि निरँकारा आप जणाइंदा। साहिब दयाल ठाकर स्वामी हो बख्शंद, बख्शश आपणी आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा रूप धराइंदा। सुत शब्द तेरा साचा रूप, रेख नज़र कोए ना आईआ। तेरा वासा चारे कूट, दहि दिशा तेरी वड्याईआ। गुर अवतार तेरा ताणा पेटा सूत, सूत्र धारी आप बणाईआ। पंज तत्त तेरा कलबूत, काया बंक बंक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा श्री भगवन्त, आदि पुरख आप जणाइंदा। शब्द सुत तेरी साची बणत, सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। निरगुण निरगुण खेल नार कन्त, कन्त कन्तूहल संग रखाइंदा। लख चुरासी जीव जंत, जीवण जुगत इक्क दृढ़ाइंदा। सदा सुहेला साचा मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा नाउँ आप रखाइंदा। सो पुरख निरँजण नाउँ रख, रख्या आपणी आप कराईआ। हं हं कर प्रतख, पारब्रह्म दए समझाईआ। एका नेत्र एका अक्ख, एका इष्ट गुरदेव मनाईआ। एका नूर इक्क प्रकाश, एका घर करे रुशनाईआ। एका खेल इक्क तमाश, एका वेखे चाँईं चाँईंआ। एका मंडल एका रास, एका गोपी काहन नचाईआ। एका आदि पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता इक्क अख्वाईआ। एका खेले खेल पृथ्मी आकाश, प्रिथम आपणा नाउँ प्रगटाईआ। एका लख चुरासी देवे पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाईआ। एका गुर अवतार पीर पैग़म्बर पंज तत्त देवे धरवास, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ। एका एक शब्द गुर तेरी पूरी करे आस, तृष्ना अवर ना कोए वधाईआ। एथे ओथे दो जहान त्रैभवण देवे साथ, सगला संग निभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूजा पाठ, पूरन ब्रह्म करे पढ़ाईआ। वेखणहारा तीर्थ ताट, सर सरोवर डेरा लाईआ। तेरी रचना मन्दिर मस्जिद माठ, शिवदुआले बंक वड्याईआ। शास्त्र सिमरत तेरी गाथ, पुराण अठारां पुराणी करे पढ़ाईआ। गीता ज्ञान तेरा घाट, घर घर दए समझाईआ। अञ्जील

कुरान तेरा साक, तीस बतीसा बन्धन पाईआ। खाणी बाणी खेल तमाश, धुर संदेसा शब्द अल्लाईआ। आदि जुगादि तेरा निवास, निज घर निज आत्म निज मन्दिर दए समझाईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा साचा घर, थिर दरबारा आप बणाईआ। थिर दरबारा तेरा गृह, गृह मन्दिर आप समझाइंदा। पुरख अबिनाशी एका रहे, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड निवासी साचे तख्त बहे, सीस जगदीस आपणे ताज टिकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भाणे अंदर करे खै, थिर कोए नज़र ना आइंदा। रसना जिह्वा गीत गोबिन्द निरगुण सरगुण अकथ कहाणी आपे कहे, कह कह आपणी धार आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा आपणा आप वखाइंदा। सुत दुलारा कर निमस्कारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। आदि पुरख तेरा खेल अपार, हउँ बालक जाणां ना राईआ। दर दरवेश बण भिखार, अग्गे झोली डाहीआ। लेखा लिख धुर दरबार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरे हुक्मे अंदर करां कार, करनी किरत इक्क कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल लवां उसार, लोआं पुरीआं बणत बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यार, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। पंज तत्त कर अखाड़, लख चुरासी नाच नचाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखणहार, वेख वेख आपणी खुशी मनाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी बोल जैकार, जै जैकारा एका लाईआ। ब्रह्म वेता कर उज्यार, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। विष्नूं विश्व दे भण्डार, वास्तक आपणा रंग रंगाईआ। शंकर देवे इक्क हुलार, शरअ सब दी आप मिटाईआ। लख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण एका बन्धन पाईआ। पंचम पंच पंच अखाड़, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। प्रगट कर गुर अवतार, गुर गुर शब्द नाम वड्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। पीर पैग़म्बर दे सहार, अल्फ़ ये करे पढ़ाईआ। मुख नक़ाब पड़दा दए उतार, महबूब सति सबूत आपणा आप वखाईआ। तेरा कलमा सच्ची गुफ़तार, गुफ़त शुनीद करे पढ़ाईआ। रहिमत कर आप निरँकार, रहिमान तेरी वड्याईआ। तेरे हुक्मे अंदर खेल करां संसार, जग सागर वेख वखाईआ। तेई अवतारां दे आधार, तरह तरह आप समझाईआ। भगत अठारां आप उठाल, नित नवित वेस वटाईआ। ईसा मूसा बण दलाल, जगत दलाली इक्क कमाईआ। मुहम्मद आपणा रंग वखाल, हक़ीक़त आपणे रंग रंगाईआ। पर्दानसीं बेमिसाल, पर्दा आपणा आप उठाईआ। नानक निरगुण वखाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, हरि शब्द शब्द समझाईआ। एका दीपक जोती बाल, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सुरती सुरत सुरत संभाल, मूर्त अकाल कर कुड़माईआ। दीना बंधप दीन दयाल, दया रूप रूप समझाईआ। नाता तोड़ जगत जंजाल, जीवण जुगत दए वड्याईआ। चरनां हेठ दबाए काल महांकाल, महांकाल आप वखाईआ। गोबिन्द

सूरा साचा लाल, पूत सपूता आपे जाईआ। शब्द सुत तेरा खेल कमाल, आदि जुगादि सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप वखाईआ। अन्त प्रीती निभे नाल, मध विच ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुत दुलारा सुण सुण गीत, घर आपणे खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मिल्या मीत, मित्र प्यारा इक्क अख्वाइंदा। जुग जौकड़ी चले रीत, दो जहान आप चलाइंदा। करे खेल साहिब अनडीठ, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। बैठा रहे सदा अतीत, त्रैगुण फंद ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्क सुणाए सुहागी गीत, साचा ढोला इक्क अलाइंदा। जगत विहारा मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ बणाइंदा। जन भगतां वसे सदा चीत, चित वित ठगौरी कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण वेखणहारा नीत, नीतीवान दया कमाइंदा। लेखा जाण हस्त कीट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर तेरा माण रखाइंदा। शब्द गुर गुर साचे उठ, हरि सतिगुर आख सुणाया। सो पुरख निरँजण रिहा तुट्ठ, तुट्ठ आपणी दया कमाया। हरि पुरख निरँजण जाम प्याए एका घुट्ट, अतोट अतुट वरताया। एकँकारा तेरा नूर वखाए निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर ना कोए प्रगटाया। आदि निरँजण निर्मल जोत, नूर नुराना नूर रुशनाया। अबिनाशी करता तेरा घर वखाए साचा किला कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। श्री भगवान तेरा साहिब इक्को बहुत, जुग जुग सच निशान दए झुलाया। पारब्रह्म प्रभ वेखे ओत पोत, शब्द सुत पूत सपूता गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा माण दो जहान आप रखाया। सुत शब्द चरनी लाग, लागत आपणी खुशी मनाया। मेरा होया वड वड भाग, वड भागी मिल्या सच्चा माहीआ। घर मन्दिर जगाया चिराग़, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। थिर घर बणया सज्जण साक, बन्धन बंधप ना कोए रखाईआ। पत्तत पुनीत पाकी पाक, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आप सुणाए आपणी गाथ, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दीनन आपणी दया कमाईआ। दीनन होए दयाल आप, बाला बाली बुध जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरा वड प्रताप, पुत्त पोतर रूप वटाइंदा। गुर अवतार करन तेरा जाप, रसना जिह्वा नाल हिलाइंदा। बत्ती दन्द दन्द अलाप, भेव अभेदा आप सुणाइंदा। अक्खर अक्खर पूजा पाठ, वक्खर वक्खर धार बनाइंदा। आत्म परमात्म साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म वेखे खेल तमाश, लख चुरासी डेरा लाइंदा। ईश जीव जगदीस पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोए वटाइंदा। गुर शब्द तेरा इक्को ताक, हरि सतिगुर आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जणाया भविख्त वाक्, अन्त पूरा आप कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव कोई ना सके लिख कलम दवात, शाही लेख ना कोए जणाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त

६०६
१२

सारे कह कह जोड़न हाथ, हरि की हाथ किसे ना आईआ। रसना जिह्वा कर कर जस, जस वेद पुराण सुणाईआ। सत्त समुंदर रोवे मस, सत्त सागर देण दुहाईआ। नेत्र रोवण तत्त अठ, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। हरि का शब्द हर घट रिहा वस, बिन सतिगुर नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग निरगुण सरगुण कर प्रगट, सरगुण देवे माण वड्याईआ। अन्तिम सारे गल विच पल्लू पा पा वास्ता गए घत्त, तेरे अग्गे ना कोए चतुराईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, तेरी इक्को ओट तकाईआ। खाली हथ्थ दिसण सक्ख, बिन हरि नामे संग ना कोए जाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गे हो के वेखे आप समरथ, सहिज सहिज आपणा गुण जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रभ सरनाई जायण ढट्ठ, ढह ढह आपणा सीस झुकाईआ। तेरा नूर तेरी रत्त, बिन रक्त बूंद वड्याईआ। तेरा ज्ञान तेरी मति, तेरे मन्दिर इक्क पढ़ाईआ। लख चुरासी खेड़ा भट्ठ, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। निरगुण दुआरे निरगुण हो के आए नट्ठ, सरगुण नाता मात तुड़ाईआ। अगला मार्ग साचा दस्स, कवण बिध मिले वड्याईआ। इकवन्जा बवन्जा आपणे चरना हेठां दए झस्स, सिर सके ना कोए उठाईआ। बहत्तरां होए आपे वस, बहत्तर नाड़ करे कुड़माईआ। सत्तरां मार्ग आपे दस्स, सति सतिवादी सिफ़रा रूप वटाईआ। चुहत्तरां पूरी करे आस, चौथे युग सत्त दीप दए वड्याईआ। गुर अवतारां चरन दुआरे सद्द, सद्दा एका नाम दिवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखो आपणी हद्द, दीन मज़्ब वंड वंडाईआ। अकाल पुरख दी इक्को यद्द, दूजा बंस ना कोए बणाईआ। अन्तिम सारे गए छड्ड, शरअ संग ना किसे रखाईआ। खाली दिसण हड्ड, हदूद अरबा वंड ना कोए वंडाईआ। यामबीन मुबीन मिले जीव जंत सच्चा रब्ब, रबी उलसानी जमादउलसानी आपणा जल्वा ना कोए दरसाईआ। नानक निरगुण वसे सचखण्ड, सच दुआरे सोभा पाईआ। गोबिन्द फड़ तेज़ चण्ड प्रचण्ड, चण्डका एका रूप वखाईआ। शब्द गुर विच वरभण्ड, साची भंडी रिहा पाईआ। प्रभ मेटणहारा भेख पखण्ड, दोए दोए आपणा खेल कराईआ। लख चुरासी होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। साध सन्त घर घर रहे मंग, खाली झोली रहे वखाईआ। किसे ना मिल्या परमानंद, परम पुरख ना कोए मिलाईआ। काया कूड़ कुड़यारा जूठ झूठ खाधा गंद, सच सुच्च ना कोए वखाईआ। माणस जन्म ना मुक्या पन्ध, मनुश देवे ना कोए वड्याईआ। गा गा थक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। गुर शब्द ना मिल्या सूरा सरबंग, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। सच सरोवर नहा पाए ना कोई ठंड, अठसठ अग्नी अग्न तपाईआ। टुट्टी देवे ना कोई गंढ, नाम गंढ ना कोए रखाईआ। कलयुग मेटे ना कोई झूठी कंध, दूई द्वैत ना कोए हटाईआ। आत्म परमात्म ना गाए सुहागी छन्द, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए सरनाईआ। शब्द सुत तेरी पूरी मंग, सो पुरख निरँजण अन्त कराईआ।

६०६
१२

लख चुरासी तोड़ घमंड, घुंमण घेरी एका पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोई ना दिसे संग, बैठे संग तजाईआ। जीव जंत भागामंद, काग बुद्धि काग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर तेरा खेड़ा दए वसाईआ। शब्द गुर तेरा वसे खेड़ा, हरि कलयुग अन्त वसाइंदा। चार वरन दा चुक्के झेड़ा, चारों कुण्ट रंग रंगाइंदा। चार युग दा बन्ने बेड़ा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाइंदा। चार वेद दा चुक्के झेड़ा, चार युग ना वंड वंडाइंदा। चार खाणी चार बाणी लहिणा देण मुकाए हेरा फेरा, फेरा एका वार पाइंदा। आत्म परमात्म कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा एका घर सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण नेरन नेरा, हँ ब्रह्म डेरा आपे ढाहइंदा। सोहँ शब्द एका रंग रंगाए सञ्झ सवेरा, दिवस रात ना रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त करे हक़ नबेड़ा, हक़ो हक़ वेख वखाइंदा। आपणी करनी बध्धा बेड़ा, हरि जू आपणे कंध उठाइंदा। गुर शब्दी चाओ घनेरा, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। पुरख अबिनाशी शेर दलेरा, शहिनशाह आपणी सेव कमाइंदा। लख चुरासी भुलाए कर कर हेरा फेरा, हरि के पौड़े ना किसे चढ़ाइंदा। जन भगतां उपर करे आपणी मेहरा, मेहर नज़र बेनज़ीर आप उठाइंदा। कूड़ी क्रिया भरमां ढाए ढेरा, ढाह ढाह माटी ख़ाक मिलाइंदा। आत्म परमात्म देवे गेड़ा, मन मनुआ मुख भुवाइंदा। गुर शब्द तेरा सच घर वसेरा, हरि साचा आप वसाइंदा। कलयुग अन्तिम मुक्के झेड़ा, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान दो जहान पावे घेरा, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग निरगुण सरगुण खेल वेखदा रिहा कर कर वड्डा जेरा, ज़ेर ज़बर बेसबर ना कोए जणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो के करे आप नबेड़ा, निज घर आपणा डेरा लाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब जीआं घट वसे नेरन नेरा, गुरमुख विरले निज नेत्र नज़री आइंदा। सोहँ रूप तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर वेखे साचे घर, घर बंक दुआर एकँकार गुरमुख मन्दिर आप सुहाइंदा।

✳ ११ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बाग़ीचा सिँघ दे गृह मुंडी जुम्माल ज़िला फिरोज़पुर ✳

आदि जुगादि जुग जुग मार्ग मग, हरि पन्थी पन्थी जणाइंदा। सुत शब्द घर साचे सद्द, सद्दा एका वार समझाइंदा। थिर घर तेरी वंडी हद्द, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। आपणी कुक्खों आपे कढ्ढ, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। निरवैर पुरख बणाई यद्द, बंस आपणा आप वड्याइंदा। ना कोई जाणे निक्का वड्डा कद्द, लेखा गणत ना कोए गणाइंदा। बोध अगाध आपणा नद, नाउँ निरँकार आप सुणाइंदा। वस्त अमोलक एका वंड, ख़ाली झोली आप भराइंदा। कर खेल पुरख

समरथ, समरथ आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत माण रखाइंदा। शब्दी सुत तेरा राह, हरि रैहबर आप जणाईआ। ठाकर स्वामी दया कमा, दर घर साचे दए वड्याईआ। कागद कलम ना कोए शाह, शहिनशाह आपणा लेख लिखाईआ। बिन चप्पू बेड़े बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। थिर घर दुआरे दए वसा, आप आपणा बन्धन पाईआ। तेरा डंका आपणा नाउँ दए वजा, वाह वाह आपणा गीत अलाईआ। साचा खेल दए खला, खेलणहारा इक्क हो जाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटा, वास्ता आपणे नाल मिलाईआ। करे खेल बेपरवाह, परदे अंदर मुख छुपाईआ। बरदा बणे आप खुदा, खुद साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। मार्ग पन्थ हरि जू दस्स, शब्दी सुत सुत वड्याइंदा। जोती नूर मेरा प्रकाश, प्रकाश तेरी धार वखाइंदा। बिन इच्छया रखणी आस, बिन आसा आसा पूर कराइंदा। बिन सुआसां रखणा याद, स्वास स्वासी आपणा खेल वखाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला साहिब सतिगुर वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। एका पत्तण एका घाट, तट किनारा इक्क वखाइंदा। इक्क सरोवर मारे ठाठ, लहर लहर नाल टकराइंदा। एका दीवा बाती करे प्रकाश, कमलापात कँवल नैण नैण खुलाइंदा। आदि जणाए आपणी गाथ, अन्त आपे वेख वखाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, मंडल मण्डप रास रचाइंदा। सुत शब्द तेरी साची शाख़, शरअ आपणी आप बणाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लए राख, रखणहारा नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर घाड़न घड़ त्रिलोकी नाथ, अनाथ अनाथां दया कमाइंदा। शब्द सालाही बेपरवाही इक्क सुणाए आपणी गाथ, सच संदेसा सद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक्क लगाईआ। शब्द सुत मार्ग सच्च, आदि पुरख पुरख जणाइंदा। लख चुरासी खेल काया माटी कच्च, गगरी समग्री आप टिकाइंदा। त्रैगुण माया रखे आंच, अग्नी तत्त तत्त तपाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण रच, रच रच आपणा मुख छुपाइंदा। अगम्म अथाह बेपरवाह सच महल्ले आपे नच्च, बण नटुआ रास वखाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी नाउँ निरँकारा गाए जस, जस आपणा आप सुणाइंदा। पुरख पुरखोतम आपणे अन्तर हो के वस, वस आपणा ना कोए जणाइंदा। सच संदेसा देवे हस्स हस्स, नर नरेशा आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा साचा राह, हरि रैहबर आप जणाइंदा। कवण राह दस्स भगवान, दर बैठा सीस झुकाईआ। शब्द सुत बाल अञ्याण, तेरी सार कोए ना आईआ। नेत्र नैण नैण शरमाण, शरअ शरअ ना कोए वड्याईआ। चरन कँवल कँवल ध्यान, कँवल नैण नैण मिलाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान एका मंगां साचा दान, खाली झोली अग्गे डाहीआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी

आदि जुगादी तेरा वेखां इक्क निशान, दूजी वस्त नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरा दरस दरस महान, दीद दीद दीद कराईआ। मेरी हरस ना कोए पीण खाण, तृष्ना होर ना कोए जणाईआ। आदि जुगादि सद मन्नां तेरी आण, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। कर किरपा साहिब भगवान, रहिमत आपणी आप जणाईआ। परवरदिगार तेरा नूर महान, जल्वा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ ढह प्या सरनाईआ। सरन सरनाई आपे ढट्ठ, शब्द सुत सीस झुकाइंदा। तूं साहिब सुल्तान पुरख समरथ, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। तेरे मन्दिर बह बह गावां तेरा जस, तेरा जस आपणे विच समाइंदा। तूं मार्ग देणा हस्स हस्स, हँस मुख तेरा नाउँ वड्याइंदा। तेरे नाम दुहाई दरोही दर तेरे आया नस्स, अवर पन्ध ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर एका मंग मंगाइंदा। दर मंगां मंग दोए जोड़, जोड़ जोड़ वास्ता पाईआ। पुरख अबिनाशी तेरी लोड़, तुध बिन तेरा सुत कम्म किसे ना आईआ। एका देणा साचा घोड़, रास आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण निरगुण जाणा बौहड़, सरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दे मति आप समझाईआ। देवे मति सच असीस, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। करे खेल साहिब जगदीस, जगदीसर आपणी धार चलाइंदा। एका छत्र झुल्ले साचे सीस, पुरख अकाल आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह शहिनशाह शाहो शाबाश, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। सुत शब्द उठ मार ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। सचखण्ड दा सच निशान, पुरख अबिनाशी चरनां हेठ रखाइंदा। थिर घर मन्दिर कर परवान, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे दे दान, त्रै पंज तेरी झोली पाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खोल्ह दुकान, वस्त अमोलक एका हट्ट वरताइंदा। लख चुरासी बण बण वेखे साचा काहन, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। नाद शब्द धुंन धुन्कान, राग अनादी नाद वजाइंदा। अनहद सेवा करे महान, बण सेवक सेव कमाइंदा। सच संदेसा देवे आण, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण करे पहचान, बेपहचान आपणे उपर पड़दा पाइंदा। करे खेल विच जहान, दो जहानां वाली आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत तेरी सुहाए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप सुहाइंदा। साची रुत्तड़ी सोहे बसन्त, हरि साचा सच सुहाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा राह चलाईआ। एका नाउँ मणीआ मंत, मन्त्र आपणा नाउँ समझाईआ। आदि जुगादि रहे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। करे खेल खेल बेअन्त,

बेअन्त वड वड्याईआ। आप बणा तेरी बणत, घड़न भन्नणहार वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह एका वार समझाईआ। साचा राह गुरू गुर अवतार, गुर गुर भेव चुकाइंदा। पंज तत्त काया हो उज्यार, जागरत जोत डगमगाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, बिन तन्दी तार सुणाइंदा। बन्द कवाड़ी खोल्ह ताक, ताकी आपणी आप जणाइंदा। बोध अगाध भविख्त वाक्, भाख्या आपणी आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म बणे सज्जण साक, ब्रह्म पारब्रह्म नाता जोड़ जुड़ाइंदा। त्रैभवन चौदां लोक खोल्हे हाट, अवण गवण वेख वखाइंदा। नव नौ वेखे घाट, सत्त सत्त फेरा पाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड रच रच रास, मंडल आपणा डेरा लाइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गा गा जस, जस आपणा आप जणाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, जुग जुग आपणी खेल कराइंदा। शब्दी सुत तेरा कर प्रकाश, प्रकाश पंज तत्त जणाइंदा। गुर अवतार कर कर दासी दास, सेवक सेवा इक्क समझाइंदा। पीर पैग़म्बर पूरी कर कर आस, मुर्शद मुरीद रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द तेरा साचा दर, दो जहानां आप वखाइंदा। मार्ग पन्थ दस्से मीत, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। शब्द सुत तेरी साची रीत, हरि पुरख निरँजण आप चलाईआ। एकँकारा खेल करे अनडीठ, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। आदि निरँजण इक्क अतीत, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। अबिनाशी करता लेखा जाणे मन्दिर मस्जिद मसीत, शिवदुआले मट्ठ फेरा पाईआ। श्री भगवान ठांडा सीत, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ गाए गीत, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म वसे चीत, चेतन आपणा भेव खुल्हाईआ। पंज तत्त नेतन नेत, नित नवित वेख वखाईआ। पावे सार काया खेत, बंक दुआरा वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण कर कर हेत, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। निरगुण सरगुण बन्न्हे नाता, नाता आपणा जोड़ जोड़ाइंदा। करे खेल पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाइंदा। मेल मिलाए सज्जण साका, सैण आपणा रंग रंगाइंदा। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताका, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। साची सेज सुहाए खाटा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। एका रस प्याए जाम बाटा, अमृत चरन कँवल झिराइंदा। बोध अगाधी अनाद अनादी निरगुण सरगुण सुणाए गाथा, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। पंज तत्त अंदर कर कर वासा, विश्व आपणा आप समझाइंदा। आपे जाणे भोग बलासा, सेज सुहञ्जणी डेरा लाइंदा। आपे वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत तेरा राह, सिफ्त सालाही दए चला, चाल निराली इक्क चलाइंदा। चाल निराली रखे इक्क, एकँकार वडी वड्याईआ। आदि पुरख तेरा लेखा दिता लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरी सिख्या पंज

६१० १२

तत्त काया गुर अवतार पीर पैग़म्बर लैणी सिख, साख्यात करे पढ़ाईआ। निक्का निक्का छोटा छोटा लोकमात वंडणा हिस, किणका किणका आप वरताईआ। आप सुत्ता रहिणा दे कर पिट्ठ, करवट आपणी ना मूल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी हिस्सा सवा गिट्ठ, मानुख माणस बूझ बुझाईआ। सुत शब्द नेत्र रो, नैणां नीर वहाइंदा। पुरख अबिनाशी तेरी सो, तुध बिन होर ना कोए जणाइंदा। तेरा नाता सच्चा मोह, मुहब्बत होर ना कोए वधाइंदा। सचखण्ड दिसे ना दूसर को, थिर घर डेरा ना कोए वखाइंदा। तूं साहिब साचा ढोआ दिता ढो, खाली झोली अग्गे डाहइंदा। आपणा अमृत रस चो, तृष्ना तृखा भुख गवाइंदा। आपणे जिहा आपे हो, आप आपणा रूप प्रगटाइंदा। तेरे चरना जावां छोह, दूसर संग ना कोए निभाइंदा। तेरी जोत साची लो, जोती जाता इक्को नज़री आइंदा। मेरे अन्तर बीज आपणा बो, रंग तेरा मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे भिक्खक मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। सुत शब्द उठ उठ नट्ठ, प्रभ ठोकर नाम लगाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर चरन दुआरे तेरा इकट्ठ, दूजा घर ना कोए बणाईआ। एका जोत नूर कर प्रकाश, प्रकाश नाल वखाईआ। साचा मार्ग देवां दस्स, दहि दिशा तेरी वड्याईआ। पंज तत्त अंदर आपे फस, पर्दा रक्त बूंद टिकाईआ। अंदर वड़ वड़ गावां जस, जस तेरा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा मार्ग लोकमात आप लगाईआ। शब्दी मार्ग गुर अवतार, हरि हरि खेल कराइंदा। भगत भगवन्त कर उज्यार, भावी भउ सर्ब समझाइंदा। सन्त कन्त दे आधार, उदर अधर दया कमाइंदा। गुरमुख गुर गुर पावे सार, निरगुण सरगुण गोद बहाइंदा। गुरसिख गुर गुर कर विचार, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। जुगा जुगन्तर जै जैकार, सोहला ढोला आप दृढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी आपणा काल बिताइंदा। अन्तिम बोला एका वार, एकँकारा आप सुणाइंदा। जिस रचना रची सर्ब संसार, सो साहिब वेख वखाइंदा। तेरा मेरा इक्क विहार, बिवहारी आप समझाइंदा। छोटे बाले कर त्यार, गुर अवतार मात घलाइंदा। हुक्मे अंदर कर कर कार, करता हुक्मे आप फिराइंदा। अन्तिम सद्दे दर दुआर, चरनां हेठ रखाइंदा। लहिणा देणा मंगे वारो वार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। सुत शब्द सद पहरेदार, पहर घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। पीर पैग़म्बर आवण जावण वारो वार, पंज तत्त काया चोला सर्ब तजाइंदा। खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी शास्त्र सिमरत रसना जिह्वा कर त्यार, त्रै वेला गुर अवतारां बन्धन डोरी नाम बंधाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणे हथ्थ रखे आपणा वेला, थित वार ना किसे

समझाइंदा। शब्दी शब्द सज्जण सुहेला, सगला संग संग वखाइंदा। निरगुण वसे इक्क इकेला, निरँकार निराकार निज घर आपणे डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत अबिनाशी अचुत्त, चात्रक कर चरितर तेरी चिता ना कोए बणाइंदा। सुत शब्द गया झुक, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। तेरा मेरा पैंडा ना जाए मुक्क, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। चिता उपर रखे ना कोई चुक्क, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। तेरी करनी प्या उठ, तेरी सरन सच्ची सरनाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां एका नाम देवां निक्की निक्की मुट्ठ, लोकमात सेव लगाईआ। अन्तिम फड़ फड़ रखां सचखण्ड दी निक्की गुट्ठ, आपणे चरनां हेठ दबाईआ। इक्क दूजे नूं लैण पुच्छ, हरि का भेव कोए ना पाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत अग्गे दिसे ना कुछ, खाली हत्थ देण दुहाईआ। हरि का नाउँ सच सुच्च, माणक मोती नैण शरमाईआ। काया माटी भाण्डा पोच, पाच तन ख़ाकी ख़ुशी मनाईआ। हरि का शब्द गुर सतिगुर किसे ना आवे सोच, सोच सोच थक्की सर्ब लोकाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार भगत सन्त गुरमुख गुरसिख प्रभ दरसन दर रहे लोच, नेत्र लोचण नैण ध्यान लगाईआ। किसे हत्थ ना आवे बंक दुआरे किले कोट, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड रही कुरलाईआ। साचा मार्ग मग अनडिठ, पन्थ गुरमुखां हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, एका सिख्या सुत शब्द जणाईआ।

✳ ११ भाद्रों २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जुम्माल ज़िला फिरोज़पुर ✳

गुर अवतार तेरा नाद, जुगा जुगन्तर मात वजाईआ। गुर अवतार तेरा राग, बण बण रागी राग सुणाईआ। गुर अवतार तेरा स्वाद, बिन रसना जिह्वा खाईआ। गुर अवतार तेरा खेल तमाश, लोकमात वेखण चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार तेरा साथ, सरगुण बण बण सेव कमाईआ। गुर अवतार तेरा घाट, पत्तण एका एक समझाईआ। गुर अवतार तेरी ज़ात, ज़र्रा ज़र्रा नूर रुशनाईआ। गुर अवतार तेरी करामात, साची करनी दए जणाईआ। गुर अवतार तेरी दात, जुगा जुगन्तर मात वरताईआ। गुर अवतार तेरी शाख़, डाल्ही डाल्ही आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे एका घर वड्याईआ। गुर अवतार तेरा संग, निरगुण सरगुण जोड़ जोड़ाइंदा। गुर अवतार तेरा अनन्द, अनन्द मंगल इक्क समझाइंदा। गुर अवतार तेरा छन्द, साचा ढोला एका गाइंदा। गुर अवतार तेरा चन्द, नूर नुराना डगमगाइंदा। गुर अवतार तेरा जगत पन्ध, बण पाँधी फेरा पाइंदा। गुर अवतार तेरा सितार तन्द, बिन तन्दी राग अल्लाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। गुर अवतार तेरी वंड, वंडणहारा आप वंडाईआ। गुर अवतार तेरी हद्द, हद्द हद्द नाल मिलाईआ। गुर अवतार तेरी यद्द, यद्द एका एक बणाईआ। गुर अवतार तेरी मध, मध रसना नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार तेरी कल, अकल कलधारी आप जणाइंदा। गुर अवतार खेल अछल, अछल अछल आप जणाइंदा। गुर अवतार साचा फल, पंज तत्त बूटा मात महकाइंदा। गुर अवतार वखाए धाम अबचल, अबचल आपणा डेरा लाइंदा। गुर अवतार अन्तर अन्तर जाए रल, जोती जोत जोत मिलाइंदा। गुर अवतार सच संदेसा घल्ल, जुगा जुगन्तर आप जणाइंदा। गुर अवतार आत्म सेजा बहे मल्ल, घर सुहञ्जणा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेड़ा आप वसाइंदा। गुर अवतार तेरा खेड़ा, खिड़की आपणी आप खुल्हाईआ। गुर अवतार तेरा वेहड़ा, पंज तत्त दीवार बणाईआ। गुर अवतार तेरा डेरा, घर मन्दिर सोभा पाईआ। गुर अवतार भेव चुकाए सञ्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। गुर अवतार देवे गेड़ा, जुग जुग गेड़ा आप वखाईआ। गुर अवतार करे नबेड़ा, हक़ हक़ हक़ समझाईआ। गुर अवतार पाएं घेरा, चारों कुण्ट कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार तेरा संग, सगला संग निभाइंदा। गुर अवतार तेरा मृदंग, मर्द मर्दाना आप जणाइंदा। गुर अवतार खेल वरभण्ड, वरभण्डी कार कमाइंदा। गुर अवतार दूई द्वैती ढाए कंध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंक आप सुहाइंदा। गुर अवतार सच संदेसा, हरि सच सच जणाईआ। गुर अवतार एका पेशा, बण पेशवा आप समझाईआ। गुर अवतार वखाए साचा देसा, देस दसन्तर आप फिराईआ। गुर अवतार सेव लगाए हमेशा, जुग जुग हुक्म चलाईआ। गुर अवतार अन्तिम मेटे आपे रेखा, रेखा आपणी आपणे विच समाईआ। गुर अवतार निउँ निउँ सजदा सीस करन आदेसा, आदेस आदेस अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार तेरा नाउँ सालाहीआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कर किरपा कृपानिध किरपन करे कुड़माईआ।

✳ ११ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बलवन्त सिंघ दे गृह तलवंडी ज़िला फिरोज़पुर ✳

गुर अवतार तेरा निशान, त्रैभवन धनी आप प्रगटाइंदा। गुर अवतार देण ब्यान, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहइंदा। गुर अवतार करन ध्यान, दीर्घ रोग इक्क लगाइंदा। गुर अवतार मन्नण आण, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। गुर अवतार

होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार बाल अञ्याण, निरगुण सरगुण खेल वखाइंदा। गुर अवतार तेरे तेरी करन पहिचाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे गृह दए वड्याईआ। गुर अवतार दासी दास, सेवक सेव सेव जणाइंदा। गुर अवतार तेरी रास, तेरे मंडल आप बहाइंदा। गुर अवतार तेरा साथ, सत्थर तेरा इक्क सुहाइंदा। गुर अवतार डाल्ही पात, पत डाल्ही मात महकाइंदा। गुर अवतार तेरा नात, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। शब्द सुत सच दुआर, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। लख चुरासी कर पसार, घट घट डेरा लाईआ। एका नाद सच धुन्कार, गृह गृह राग सुणाईआ। साची सखीआं मंगलाचार, मंगल आपणे नाउँ वड्याईआ। खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। पंज तत्त तत्त आधार, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सहाईआ। कर्म कर्म कर विचार, धर्म धर्म वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण रूप वेस धराईआ। कवण रूप वेस रख, रख्या सर्ब कराइंदा। कवण रूप हो प्रतख, पारखू आपणी दया कमाइंदा। कवण रूप मार्ग दस्स, महिमा सिफ्त सालाह जणाइंदा। कवण रूप देवें रस, बण रसीआ एका रस चखाइंदा। कवण रूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा मोहे भाइंदा। दर तेरा सद उडीक, नित नवित ध्यान लगाईआ। परवरदिगार लाशरीक, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा मार्ग बेनज़ीर बारीक, नज़र किसे ना आईआ। दो जहान बिन कलम शाही खिच्चें लीक, सच निशाना इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध अग्गे मेरी अरज़ोईआ। तुध अग्गे अरज़ोई साहिब सुल्तान, दोए दोए जोड़ सीस झुकाया। कवण बिध खेल करें जहान, दोए जहानां दोए दोए रूप धराया। निरगुण सरगुण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाया। कवण वस्त अमोलक देवें दान, दाता दानी बण वरताया। कवण मन्दिर वसें मकान, गृह मन्दिर डेरा लाया। कवण रूप झुलाएं निशान, सच निशान इक्क वखाया। कवण रूप गाएं गान, मन्त्र अन्तर अन्तर मन्त्र निष्अक्खर अक्खर वक्खर आप पढ़ाया। कवण रूप आपणा नाउँ परसिद्ध करें श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आया। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया कमाइंदा। शब्द सुत साचे लाल, लालण एका रंग रंगाइंदा। करे खेल गुर गोपाल, गुर गुर वेस धराइंदा। पंज तत्त दुआर बणाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाइंदा। दीपक दीआ आपे बाल, जोती जाता डगमगाइंदा। निर्मल जीआ कर निहाल, निहचल

आपणा धाम वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। भेव अभेदा श्री भगवाना, एकँकारा एका वार जणाईआ। बोध अगाध शब्द तराना, निरगुण निरगुण करे पढ़ाईआ। शब्द गुर गुर खेल महाना, गुर गुर वेखे थाउँ थाईंआ। सतिगुर रूप सद सद जणाए इक्क पद निरबाणा, निरबाण पद इक्क प्रगटाईआ। पंज तत्त ब्रह्म मति पारब्रह्म सुणाए साचा गाणा, गा गा आपणा हुक्म मनाईआ। सति संदेसा नर नरेशा देवणहारा चतुर सुजाना, मूर्ख मूढ़ दए वड्याईआ। करे खेल विच जहाना, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुर अवतार पहरे बाणा, बांहों पकड़ आप उठाईआ। अन्तर आत्म बन्न्हे गाना, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द वसेरा एका घर, पूत सपूते दए वड्याईआ। पूत सपूते तेरा राग, अनरागी आप जणाइंदा। पूत सपूते तेरा वैराग, बण वैरागी आप प्रगटाइंदा। पूत सपूते तेरा ताग, बिन तन्दी तन्द बंधाइंदा। बिन नेत्र खोल्हे जाग, बिन अक्ख अक्ख प्रतख मिलाइंदा। कन्त सुहेला सच सुभाग, घर सख़ीआं मेल मिलाइंदा। निर्मल निर्मल धोवणहारा दाग़, उज्जल उज्जल रूप वटाइंदा। आपणे अन्तर आपे काढ, आप आपा गोद सुहाइंदा। निरगुण सरगुण लडाए लाड, समरथ पुरख महिमा अकथ, कथ कथ आपणा राग अल्हाइंदा। आपे जाणे आपणी आर पार मध हद्द, गृह गृह घर घर आपणा ताल वजाइंदा। पंच पंचम मार्ग एका दस्स, पंचम पंचम पंच जोड़ जोड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द सालाहइंदा। शब्द सालाह साहिब गुर पीर, पैग़म्बर एका रंग रंगाईआ। दस्सणहार आप तदबीर, तरतीब आपणे हथ्थ वखाईआ। पढ़नहार आप तकबीर, तसबी माला ना कोए बणाईआ। घड़नहार आप ज़ंजीर, शरअ ज़ंजीर इक्क वखाईआ। वेखणहारा अन्त अख़ीर, आख़र आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। वसे धाम बेनज़ीर, नज़रीआ रूप ना कोए जणाईआ। साहिब सुल्तान शाह हकीर, शहिनशाह आपणा नाउँ धराईआ। आदि जुगादि ना होए दिलगीर, एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। शब्दी राग शब्दी धुंन, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। शब्दी लेखा सचखण्ड दवारे थिर घर मेला सुत सुत आपे चुण, अबिनाशी अचुत्त दया कमाइंदा। सुन अगम्म ना कोई गुण, गुणवन्ता भेव ना कोए रखाइंदा। लेखा जाणे आपणा फुन, फुन मन्त्र हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव शब्द गुर मीत, हरि सज्जण सच जणाइंदा। तेरी इच्छया साची रीत, गुर अवतार रूप धराइंदा। अन्तर वड़ हरि अनडीठ, अनडिठड़ा धाम सुहाइंदा। बिन रसना गाए गीत, गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। माणस जन्म मानुख जीत, हार जित ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, साचा भेव आप खुलाइंदा। शब्द सुत चरनी ढट्ठ, मस्तक चरनां नाल छुहाईआ। सचखण्ड दवारे रिहों वस, थिर घर देवें मोहे वड्याईआ। इक्को मार्ग देणा दस, जिस मार्ग निउँ निउँ लागां पाईंआ। इक्को नाउं देणा दस्स, आदि जुगादि सिफ्त सालाहीआ। एका मन्दिर जावां वस, दूसर छन्न ना कोए छुहाईआ। एका ढोला गावां जस, लेखा लिखे ना कलम शाहीआ। अन्त कन्त भगवन्त पारब्रह्म मेरी पूरी करनी आस, आस तेरे अग्गे इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे नाउँ नाउँ रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी सच्चा ठाकर, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। मेरा खेल अथाह सागर, डूँग्घा नज़र किसे ना आइंदा। पूत सपूते देवे आदर, बाले बाली गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर पर्दा आप चुकाइंदा। दर पर्दा चुक्के चुकाए ओहला, वाह वा आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। पुरख अबिनाशी बणे गोला, बण सेवक सेव कमाईआ। शब्दी सुत तेरा ढोला, आपणा नाउँ प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण आपे मौला, मौला आपणी खेल कराईआ। निझर रखे अमृत कौला, चरन चरन नाल रगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी धार आप बंधाईआ। तेरी धार हरि निरँकार, वड्डा निक्का आप बणाइंदा। आपणी इच्छया हो त्यार, साची भिच्छया आप वरताइंदा। असंख असंखा किणके विच्चों किणका किणका कर त्यार, भोरा भोरा वंड वंडाइंदा। गुर पीर अवतारां दे आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा बंस आप बणाइंदा। असंख असंखां विच्चों वंड, आपणी साची वंड वंडाईआ। सब तों निक्का हो हो खण्ड खण्ड, खण्डा आपणा नाम उठाईआ। निरगुण निरगुण हो प्रचण्ड, प्रचण्ड वेस वटाईआ। साहिब दयाल सूरा सरबंग, सूरबीर इक्क रघुराईआ। कर किरपा सचखण्ड दवारयों बाहर सुणाए आपणा छन्द, बन्द आपणा बन्धन पाईआ। नाता जोड़ बत्ती दन्द, रसना जिह्वा अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तोहे देवे वर, गुर अवतार तेरी झोली पाईआ। गुर अवतार निक्के निक्के, नंन्हे नंन्हे बाले आप प्रगटाइंदा। पीर पैग़म्बर दरगाह साची इक्को अक्खर सिक्खे, सिख्या सिख सिख दृढ़ाइंदा। बिन कलम दवात, शाही हरफ़ हरूफ़ आपे लिखे, अल्फ़ ये ना नाल मिलाइंदा। पैंती अक्खर ना किसे हिस्से, आपणा हिस्सा ना किसे वखाइंदा। देवणहारा जिथे किथे, इधर उधर आपणी धार चलाइंदा। गुर अवतार पढ़ाए आपणे बाहर मुखी चिट्ठे, अन्तर हरफ़ ना किसे दसाइंदा। सारे अन्तिम होयण फिक्के, मिट्ठा रस आपणा आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन आपणे किसे उत्ते ना विसे, डोरी हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। डोरी देवे ना हथ्थ करतार, बन्धन एका आपणा पाईआ। सेवा ला गुर अवतार, धुर

६१६
१२

संदेसा इक्क अल्लाईआ। हुक्मे अंदर कर त्यार, त्रैगुण मेला लए मिलाईआ। गुर चेला वेखणहार, सज्जण सुहेला देवे माण वड्याईआ। वक्त वेला विच संसार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप कराईआ। साचा अक्खर ना देवे दान, अक्खर सिफ्त ना सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गायण गान, गा गा आपणा हुक्म मनाइंदा। आपे बणया सब दा जाणी जाण, आपणी पछाण ना किसे वखाइंदा। जिउँ भावें तिउँ झलक देवे आण, पलक अक्ख अक्ख खुल्लाइंदा। सारे झोली अड्ड के मंगण दान, भरया नज़र कोए ना आइंदा। वाहवा खेल करे भगवान, सुत दुलारे जगत वणजारे लोकमात मातर हट्ट चलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि इक्को यातर, यात्रा सब दी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच संदेसा देंदा रहे पात्र, पट्टी आपणे नाम पढ़ाइंदा। सिफ्त सालाह कर कर जायण वेद शास्त्र, सिमरत विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे उत्ते आपे होए शाकर, शुकरीआ सब तों आपणा आप कराइंदा।

६१७ ✳ ११ भाद्रों २०१६ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह रज्जी वाला ज़िला फिरोज़पुर ✳ ६१७

१२ शब्द सुत दर मंगे मंग, हरि चरन मिले सरनाईआ। कवण खेल सूरा सरबंग, सूरबीर दए वरताईआ। कवण रूप गुर अवतार रंग, रंग रंगीला इक्क चढ़ाईआ। कवण सेज सुहञ्जणी पलँग, कवण आसण डेरा लाईआ। कवण नाद धुंन मृदंग, कवण रागी राग सुणाईआ। कवण बोध अगाधी छन्द, छहबर आपणे नाम लगाईआ। कवण दुआरे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच प्रगटाईआ। कवण बेड़ा देवे बंध, बन्न्हणहार कवण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे इक्क अरज़ोईआ। इक्क आरज़ू इक्क अरदास, चरन सरन सरन चरन इक्क रखाइंदा। कवण बिध खेल तमाश, हरि जू हरि हरि खिलाइंदा। कवण बिध पाए रास, मंडल मण्डप डेरा लाइंदा। कवण बिध कर प्रकाश, नूरो नूर नूर धराइंदा। कवण बिध देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। कवण बिध सुणाए गाथ, भेव अभेद खुल्लाइंदा। कवण बिध होए अनाथां नाथ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कवण बिध बणे पित मात, पिता पूत गोद सुहाइंदा। कवण बिध करे उत्तम ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाइंदा। कवण बिध बन्न्हे नात, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। कवण बिध करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। कवण बिध गाए जस, रसना जिह्वा ना कोए रखाइंदा। कवण बिध सचखण्ड दवारे जाए वस, थिर घर आपणा आसण लाइंदा। कवण बिध आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रिहा नस्स, दो

जहानां पन्ध मुकाइंदा। कवण बिध तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। कवण बिध साची धार अंदर जाए फस, कवण फांदी बन्द बंधाइंदा। कवण बिध करें खेल इक्क अकथ, रसना जिह्वा कथ ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सुत शब्द झोली डाहइंदा। कवण बिध खेल तमाशा, खेलणहारा खेल कराईआ। कवण बिध सचखण्ड निवासा, सो पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। कवण बिध साचे मंडल पावे रासा, हरि पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। कवण बिध एकँकारा पूरी करे आपणी आसा, तृष्ना अवर ना कोए जणाईआ। कवण बिध आदि निरँजण नूर प्रकाशा, परम पुरख बेपरवाहीआ। कवण बिध श्री भगवान होएं दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। कवण बिध श्री भगवान खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल फेरा पाईआ। कवण बिध पारब्रह्म ब्रह्म देवे सच भरवासा, धीरज धीर इक्क धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, इक्को तेरी ओट तकाईआ। कवण बिध तेरी ओट, तेरा तेरी इक्क रखाइंदा। कवण बिध किला कोट, बंक दुआर इक्क जणाइंदा। कवण बिध निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। कवण बिध नाता बन्नाए ओत पोत, पिता पूत वेस वटाइंदा। कवण बिध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। साची बिध श्री भगवान, बहु भांती आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी सच मकान, सति सतिवादी डेरा लाईआ। शाहो भूपी राज रजान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। तख्त निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जोती नूर नूर महान, प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, धुर दी धार आप जणाईआ। दर दरवेशा बण भगवान, बण सेवक सेव कमाईआ। आदि आदि इक्क आदेसा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। निरगुण निरगुण कर कर वेसा, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला वसे साचे देसा, दूसर रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाईआ। साचा देस सच महल्ल, हरि साचा सच जणाइंदा। आदि जुगादि रहे अटल्ल, जुग जुग वेख वखाइंदा। सच सिँघासण बैठा मल, पावा चूल ना कोए वखाइंदा। दीपक प्रकाश जोती आपे बल, नित नवित डगमगाइंदा। मुकामे हक़ हक़ अटल्ल, अटल्ल आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा आप खुलाइंदा। साचा पर्दा देवे लाह, करे खेल सच्चा शहिनशाह, हुक्मरान वड वड्याईआ। सुत दुलारा निक्का बाला दए समझा, समझ समझ नाल मिलाईआ। निरगुण निरगुण रमज़ इशारा इक्क वखा, रहीम रहिमान दया कमाईआ। अल्फ़ ये हमज़ा ना रूप सके कोए वखा, अक्खर वक्खर ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

६१८
१२

साचा पड़दा आपे लाहीआ। साचा पड़दा देवे लाह, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। सुत शब्द ध्यान लगा, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। फड़ बांहों राहे दए पा, रैहबर आपणा खेल कराइंदा। साची सिख्या इक्क जणा, साख्यात रूप वटाइंदा। नेत्र नैण दए वखा, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप जणाइंदा। साची धारा एकँकार, एका एक जणाईआ। आदि आदि खेल अपार, अपरम्पर वेख वखाईआ। बेऐब बेऐब सांझा यार, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। करे खेल अपर अपार, खालक आपणा खेल कराईआ। सालस बणे सच दरबार, दरगाह साची डेरा लाईआ। पिता पूत करे विहार, बण विचोला वेस वटाईआ। साचा ढोला बोल जैकार, सोहला एका नाउँ सुणाईआ। तोला बण तोलणहार, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। पड़दा ओहला दए निवार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सत सत कर प्यार, अबिनाशी अचुत्त गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा नर निरँकारा इक्क जणाईआ। सच संदेसा साचा मीत, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। गुरू अवतार गुर गुर रीत, पंज तत्त काया खेल कराइंदा। धाम अवल्लड़ा इक्क अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। निरगुण निरगुण गाए गीत, सरगुण सरगुण आप सुणाइंदा। सदा सुहेला चलाए साची रीत, पत्तत पुनीत दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप वखाइंदा। साचा रंग हरि रंग राता, रंग रंगीला इक्क जणाईआ। पंज तत्त मेला पिता माता, पंज तत्त तन करे कुड़माईआ। पंज तत्त खेले खेल तमाशा, पंचम आपणा भेव छुपाईआ। पुरख अबिनाशी आपे जाणे आपणा खेल तमाशा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। काया बंक वेखे कासा, कसबा आपणा दए वसाईआ। निर्मल नूर कर प्रकाशा, जोती जोत डगमगाईआ। अनहद धुंन धुंन धरवासा, धुर दी बाणी बाण अल्हाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव बुझाए प्यासा, तृष्ना रोग रहिण ना पाईआ। लेखा जाण पवण स्वासा, उणंजा पवण आपणे विच टिकाईआ। बोध अगाध खोल्ह खुलासा, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। लेखा जाणे रक्त बूंद रत्ती रत्त तोला मासा, भार तुल ना कोए तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दए उठाईआ। तोलणहारा तोल तोला मासा, अतुल दया कमाइंदा। पंच तत्त तत्त प्रकाशा, तत्त आपणा रंग रंगाइंदा। खेले खेल खेल तमाशा, मंडल मण्डप रास रचाइंदा। पंज पंच दे भरवासा, पंचम आपणा भेव समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा घर वखाइंदा। ब्रह्म नेता ब्रह्म वेता ब्रह्म खेता ब्रह्म चेता, ब्रह्म पारब्रह्म दए जणाईआ। ब्रह्म हेठां पारब्रह्म लेटा, सेज सुहञ्जणी दए वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म ताणा पेटा, सूत्रधारी खेल कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म एका वेखा, बंक आपणे रंग रंगाईआ। अन्तर बाहर ना

कोए रेखा, रूप रंग ना कोए जणाईआ। तत्तव तत्त वटाए भेसा, पंचम पंच करे कुड़माईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेले खेल नर नरेशा, निरगुण सरगुण देवे माण वड्याईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर कर हेता, पारब्रह्म प्रभ देवे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। ब्रह्म बाला ब्रह्म गोपाला, ब्रह्म जोत पारब्रह्म दया कमाइंदा। ब्रह्म वसे धर्मसाला, ब्रह्म वेखे जगत जंजाला, ब्रह्म लेखा काल महांकाला, पारब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा अछल अछेदा, पुरख अकाला दीन दयाला दयानिध ठाकर स्वामी पड़दा आपणा आप चुकाइंदा। शब्द सुत हरि पड़दा चुक्क, चुक्क चुक्क दया कमाईआ। आदि जुगादि जुग जुग मेटे तेरी तृष्ना भुख, भुख्यां भुख गंवाईआ। निर्मल निराकार नूर नुराना जोत उजाला उज्जल करे मुख, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ। जननी जन बण बण रखे आपणी कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी बणे माईआ। आपे पिता आपे मात आपे पुत, बण बण दाई दाया सेवक सेवा सच कमाईआ। लोकमात सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। नेत्र खोल्ह वेख उठ, हरि जू आपणा भेव चुकाईआ। पुरख अबिनाशी एका तुट्ठ, अतुट भण्डार वरताईआ। लेखा जाणे पंज तत्त काया अधभुत, भविख्त भेव ना कोए जणाईआ। किसे दवारिउँ ना लए पुच्छ, सलाह अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द सच देवे वर, वर इक्को इक्क जणाईआ। इक्को वर इक्क दातार, देवणहारा इक्क अख्वाइंदा। एका वणज इक्क वपार, एका हट्ट चलाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका गृह सोभा पाइंदा। एका नूर जोत उज्यार, एका नूरो नूर समाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कार, एका अनरागी राग अल्हाइंदा। एका आदि जुगादि खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणी धार जणाइंदा। एका निरगुण सरगुण लए उभार, त्रै पंज मेला मेल मिलाइंदा। एका विष्न ब्रह्मा शिव दए सहार, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका लख चुरासी वेखे अखाड़, घर घर आपणा नाच नचाइंदा। एका लेखा जाणे पंचम धाड़, पंच विकारा वंड वंडाइंदा। एका वेखणहारा डूँग्घी गार, काया कवरी भँवरी फोल फोलाइंदा। एका दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, मन्दिर अंदर आप टिकाइंदा। एका साकी बण बण सति प्याला देवे ठंडा ठार, मधुर रस इक्क वखाइंदा। एका आत्म परमात्म कर प्यार, अन्तर आत्म मेल मिलाइंदा। एका सति सतिवादी सति शृंगार, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। एका लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। एका शाहो भूप बण सिक्दार, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। एका देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेसा आप सुणाइंदा। एका होए जाणी जाण, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। एका वेखणहारा पंज तत्त मकान, काया मन्दिर अंदर सोभा पाइंदा। एका देवणहारा

६२० १२

ज्ञान, गुरू ज्ञान आप हो जाइंदा। एका नाउँ करे प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। एका वेखणहार मार ध्यान, लख चुरासी पड़दा आप उठाइंदा। एका खेल करे महान, महांबली महांबीर हरि आपणा बल धराइंदा। एका देवणहारा दान, दाता आपणी वस्त आप वरताइंदा। एका लेखा जाणे गोपी काहन, गोपी काहन आपणा रूप वटाइंदा। एका सतिगुर गुर गुर कर निशान, गुर आपणा नाउँ वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा घाड़न घड़, पंज तत्त तेरा दर सुहाइंदा। पंज तत्त तत्त दरवाज़ा, धुर दरबारी आप जणाईआ। खेले खेल ग़रीब निवाजा, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। निरगुण सरगुण रच रच काजा, करता पुरख करनी आप कराईआ। शब्द अगम्मी एका वाजा, बिन तार सितार वजाईआ। भूपत भूप हरि राजन राजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। काया मन्दिर साचा गढ़, हरि हरि जू आप बणाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण वड़, निराकार खेल कराइंदा। आत्म परमात्म आपे फड़, आप आपणा मेल मिलाइंदा। आपणा अक्खर निश आपे पढ़, आपणा राग अल्हाइंदा। आपणे महल्ले आपे खड़, खड़ खड़ सोभा पाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, हरि घड़ घड़ खुशी मनाइंदा। सरगुण निरगुण फड़ाए लड़, पल्लू एका गंढु पुवाइंदा। गुर अवतार नाउँ धर, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। आपणी मरनी आपे मर, मर मर ख़ुशी मनाइंदा। सच संदेसा देवे घर घर, घर घर विच डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा रंग महल्ल, पंज तत्त वखाए इक्क अटल्ल, अटल्ल अटल्ल आप रखाइंदा। अटल्ल अटल्ल गुरू गुर धार, हरि सतिगुर आप जणाईआ। शब्दी शब्द शब्द प्यार, हरि शब्दी आप जणाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। पंज तत्त काया खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आप वखाईआ। सच संदेसा देवे वारो वार, वारता आपणी आप जणाईआ। लोकमात सच विहार, बिवहारी आप कराईआ। कागद कलम कर त्यार, लेखा शाही हथ्थ फड़ाईआ। ब्रह्म वेता दे आधार, नेत्र नैणां नज़री आईआ। गुर अवतार सेवादार, बण चाकर सेव कमाईआ। सिफ्त सालाही सलाहकार, साचा मार्ग आप लगाईआ। लिख लिख शास्त्र सिमरत वेद चार, चार खाणी चार बाणी चार युग करे पढ़ाईआ। चार कुण्ट दे आधार, चार वरन वरन सरनाईआ। सच संदेसा एकँकार, अकल कल धारी आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फ़रमाबरदार, लोकमात सेवक साची सेव कमाईआ। दोए दोए जोड़ प्रभ दर मंगण दरस दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत हरि देवे वर, तेरा नाउँ गुरू गुरू गुरदेव वड्याईआ। गुरदेव नमो सति, सति सतिवादी तेरा नाउँ प्रगटाइंदा। गुरदेव ब्रह्म मति, पारब्रह्म प्रभ आप दृढ़ाइंदा। गुरदेव अलख अभेव निरगुण सरगुण कर प्रगट, प्रगट

आपणा रंग वखाइंदा। तत्त तत्त चलाए हट्ट, बण वणजारा हट्ट खुल्हाइंदा। साची वस्त इक्को घत्त, वस्त अमोलक इक्क जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे खेल तमाश, जुग जुग आपणा नाउँ समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सेवक रूप वटाइंदा। शब्दी गुर सतिगुर सेवा, चाकर ख़ाक पा ख़ाक जणाईआ। आदि जुगादि सदा निहकेवा, निहचल बैठा डेरा लाईआ। गीत गोबिन्द गाए बिन रसना जिह्वा, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। आदि अन्त इक्को मेवा, मध आपणा रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे सच कुड़माईआ। शब्द कुड़माई तत्तव धार, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। सरगुण सरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण भेव खुल्हाइंदा। गुर गुर लेखा धुर दरबार, धुर दरबारी आप जणाइंदा । वेखे विगसे वारो वार, आवण जावण पत्तत पावण आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरी साची सेवा, गुर अवतार लगाए देवी देवा, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। गुर अवतार सेवक जुग चार, चार चार वंड वंडाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी सच्चा शहिनशाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी वेखे वेखणहार, निरगुण सरगुण अंदर डेरा लाईआ। भगत भगवन्त दे आधार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। साचे सन्तन कर प्यार, परम पुरख दए वड्याईआ। गुरमुखां खोल्ह बन्द किवाड़, गुरुदुआर इक्क जणाईआ। गुरसिखां करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाईआ। लेखा जाणे पुरख नार, नर नरायण वडी वड्याईआ। सुत दुलारा एकँकार एका वार, बण जननी जन जाईआ। जुग चौकड़ी पावे सार, नित नवित आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे आधार, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत हरि देवे वर, माकूल एका हुक्म सुणाईआ। एका हुक्म हरि माकूल, महिफल अवर ना कोए लगाइंदा। आदि पुरख बध्धा असूल, असलीअत आपणी आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर कोटन कोटि रसूल, रसूलिल्ला आप अल्हाइंदा। गुर अवतारां बणया रहे मूल, आपणा मूल ना किसे जणाइंदा। आदि जुगादि ना जाए भूल, अभुल्ल आपणी खेल वखाइंदा। कोटन कोटि शंकर फड़ फड़ बैठे त्रिसूल, त्रै लोआं पार ना कोए कराइंदा। कोटन कोटि ब्रह्मा बण बण बैठे मज़दूर, लख चुरासी मज़दूरी सर्ब कमाइंदा। कोटन कोटि विष्नूं मंगण चरन धूढ़, चरन दुआरे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर दरस मंगण हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा मुख छुपाइंदा। सुत शब्द तेरी आरज़ू करे मन्ज़ूर, उजरत हरि ना कोए लगाइंदा। सदा सुहेला सर्ब गुणां भरपूर, भरपूरी आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंज तत्त तेरी धार जणाइंदा। पंज तत्त धार अलख अभेद, हँ ब्रह्म

चतुराईआ। तेरा खेल अछल अछेद, आदि अन्त ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार तेरी खेड, निक्के बाले मात घलाईआ। किसे ना दस्सें आपणा भेत, खुल्ह खुल्ह ना हाल जणाईआ। निक्की मोरी निक्का छेक, काया मन्दिर घर घर विच आप कराईआ। निक्की जोत निक्का हेत, निज नेत्र दए दरसाईआ। मेहर नज़र मेहरवान रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा भेव भेव खुल्हाईआ। आपणा भेव दस्स हाल, बेहाल मंग मंगाइंदा। सुत दुलारा तेरा लाल, लालन तेरी आस तकाइंदा। तुध बिन होया रहे कंगाल, दो जहान ना कोए वड्याइंदा। गुर अवतार जगत दलाल, बिन तेरे दलाली ना कोए कमाइंदा। तेरा नाम हक़ हलाल, हक़ीक़त पड़दा आप उठाइंदा। तेरा नूर बेमिसाल, नेत्र नैण नज़र ना आइंदा। तेरे हुक्मे अंदर बाल निधान, बाली बाला सेव कमाइंदा। तूं साहिब बख्शणहारा सच्चा दान, दाता दानी इक्क हो जाइंदा। गुर अवतार तेरा निशान, काया तत्त बंक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन इष्ट ना कोए मनाइंदा। तुध बिन इष्ट ना कोए जगदीस, जगदीसर तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा पीसण रहे पीस, जुग जुग सेवा मात कमाईआ। तेरा कलमा नाम सच हदीस, कायनात करन पढ़ाईआ। अन्त कहिण लाशरीक, शरअ विच कदे ना आईआ। सच निशाना तेरा ठीक, तुध बिन धायल ना कोए कराईआ। सरन चरन तेरी सच प्रीत, सो पुरख निरँजण मोहे भाईआ। हँ ब्रह्म साची रीत, रीतीवान इक्क जणाईआ। सोहँ रूप तेरा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जाए बीत, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत सन्त होण भय भीत, भउ भय तेरा इक्क वखाईआ। तूं वसें धाम अनडीठ, अनडिठड़ा आसण लाईआ। कर किरपा नानक कबीरे खोल्ह वखाई निक्की जेही झीत, बिन अक्खां कर रुशनाईआ। कर दरसन होए सीत, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। रसना जिह्वा कह कह गए मेरा साहिब बीठलो बीठ, बेपरवाह बेपरवाहीआ। आदि अन्त आपणी दस्से ना किसे तरीक, भेव अभेद ना किसे जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात बणाए जगत शरीक, शरअ शरअ नाल टकराईआ। आपे वसणहारा नज़ीक, दूर दुराडा आपे डेरा लाईआ। आपे गाए सुहागी गीत, साचा ढोला आप अल्हाईआ। आप बणाए मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ रचन रचाईआ। आपे अठसठ तीर्थ परखे नीत, नीतीवान वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा घर तेरा वर तेरे गृह दए मिलाईआ। गृह तेरे लग्गे भाग, वड भागी आप लगाइंदा। निर्मल दीआ दीपक जोत जगे चिराग़, चारों कुण्ट नूर वखाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार भगत भगवन्त रच रच काज, जुग जुग मेला मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे जीव समाज, समझ समझ

विच टकराइंदा। मक्का काअबा हाज़ी हाज़, हुजरा हरि जू आप सुहाइंदा। शाह पातशाह बण नवाब, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। अहबाब वजाए सच रबाब, तार सितार ना कोए जणाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखणहारा आप महाराज, मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सति सरूपी मार आवाज़, चार युग दे विछड़े आप जगाइंदा। अभुल्ल अभुल्ल अभुल्ल खुल्हाए पिछला पाज, पड़दा उपर ना कोए रखाइंदा। वरन बरन ना रखे कोए लाज, दीन मज़्हब मुख शरमाइंदा। कूड़ी क्रिया डुब्बे जहाज़, चप्पू ला पार ना कोए कराइंदा। चार कुण्ट रखे ना कोए लाज, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। शब्द गुरू गुरदेव सच्चा ताज, सीस जगदीस इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि खेल महान, जुग करता जुग करनी कार करता पुरख आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण चुकाए निरगुण लहिणा, सरगुण देवे सरगुण देणा, देणा लहिणा लहिणा देणा सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण दोहां आपणे हथ्थ रखाइंदा।

✳ १२ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनावां ज़िला फिरोज़पुर ✳

आदि पुरख आदि निरँकारा, एकँकार खेल कराइंदा। आदि शब्द सुत दुलारा, पूत सपूता एका जाइंदा। आदि महल अटल मनारा, सचखण्ड आप सुहाइंदा। आदि दर खोल्ह किवाड़ा, थिर घर आपणा बन्धन पाइंदा। आदि दीपक कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। आदि सिँघासण कर त्यारा, पावा चूल ना कोए रखाइंदा। आदि पुरख हो त्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। आदि भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह नाउँ धराइंदा। आदि हुक्म सति वरतारा, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। आदि आदेस कर निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप रखाइंदा। आदि पुरख अगम्म अथाह, अलख अगोचर खेल कराईआ। तख्त निवासी शहिनशाह, शाह पातशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म जणा, हुक्मे अंदर भेव जणाईआ। सचखण्ड दवार रचन रचा, रच रच वेख वखाईआ। दर दरवाज़ा आप खुल्हा, ग़रीब निवाज़ा डेरा लाईआ। बोध अगाधा नाद सुणा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ वखाईआ। आदि पुरख अकल कल धार, कल आपणी आप धराइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण मेला मेल मिलाइंदा। निरगुण नार कन्त भतार, सच सुहञ्जणी सेज हंढाइंदा। निरगुण सुत सुत दुलार, पूत सपूता रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा

६२४ १२

खेल आप रचाइंदा। साचा खेल हरि हरि करतार, नर हरि नरायण आप रचाईआ। सचखण्ड निवासी हो त्यार, थिर घर आपणा भेव चुकाईआ। पूत सपूते दे आधार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। इक्क असीस एका वार, एकँकारा आप जणाईआ। सच हदीस अलख अगोचर बेऐब परवरदिगार, परम पुरख करे पढ़ाईआ। जोधा सूरबीर वड बलकार, बल एका झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा माण वड्याईआ। माण वड़याई रखे हथ्थ, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। पुरख अकाल अकाल समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड दवारे साची वथ, निरगुण दाता आप प्रगटाइंदा। आपणी महिमा गा अकथ, कथ कथ आप सुणाइंदा। सति सरूपी साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। दर दुआरे हो प्रगट, प्रगट आपणी कल वरताइंदा। सुत दुलारे देवे मति, सच सुच्च इक्क दृढ़ाइंदा। सति पुरख निरँजण एका बीज बीजे आपणे वत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साची खेल श्री भगवान, भगवन आपणी आप कराईआ। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। शाहो भूप राज राजान, शख्सीअत आपणी दए जणाईआ। दाता दानी देवे दान, दयावान वडी वड्याईआ। निरवैर पुरख बण बण साचा काहन, घनईया आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत नूर महान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। परवरदिगार वड मेहबान, हक़ मुकामे सोभा पाईआ। कलमा कलाम इक्क निशान, नाद अनादा आप वजाईआ। थिर घर वेखे मार ध्यान, धुर दरबारा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रच रचना खुशी मनाईआ। रचना रच श्री भगवन्त, सचखण्ड साचे खुशी मनाइंदा। सज्जण सुहेला नार कन्त, कन्त कन्तूहल सोभा पाइंदा। आपणी महिमा गा बेअन्त, बेअन्त आपणा नाउँ रखाइंदा। आपणा नाउँ मणीआ मंत, मन्त्र इक्को इक्क दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल करे करतार, करनहार इक्क अख्वाईआ। थिर घर साचा खोल्ह दुआर, शब्द सुत दए वड्याईआ। एका वस्त हट्ट वणजार, नाम वणजारा दए खुल्हाईआ। देवणहार बण वरतार, दाता दानी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा आदि पुरख एका एक सुणाईआ। सच संदेसा छोटे बाल, हरि सज्जण सच जणाइंदा। सुत दुलारे तेरा ताल, तलवाड़ा होर ना कोए रखाइंदा। नूर नुराना एका लाल, जोती जाता डगमगाइंदा। थिर घर वसाए सच्ची धर्मसाल, छपर छन्न ना कोए छुहाइंदा। इक्क इकेला सद वसे तेरे नाल, पुरख अबिनाशी विछड़ कदे ना जाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग घाले तेरी घाल, कीती घाल तेरी लेखे पाइंदा। साहिब सुल्तान निहकर्मी बणे दलाल, सच स्वामी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत तोहे समझाइंदा।

सुण सुत मेरी अंस, सरबंस तेरा वखाइंदा। तेरी महिमा रूप गाए सहँस, सहँसर रंग ना कोए रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त वस्त अमोलक एका वार झोली पाइंदा। झोली भर श्री भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, सरन चरन सरनाईआ। तेरा खेल दोए जहानां, दोए दोए रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण पहरे जामा, बेअन्त बेपरवाहीआ। खेले खेल गोपी कान्हा, मंडल मण्डप रास रचाईआ। देवणहारा सच निशाना, नाम निशाना इक्क दृढ़ाईआ। बोध अगाधी इक्क ज्ञाना, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाईआ। भेव अभेदा छोटे सुत, हरि हरि जू आप जणाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। पंज तत्त ना काया बुत्त, त्रैगुण बन्धन ना कोए रखाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण उठ, उठ उठ आपणी खुशी मनाइंदा। सचखण्ड निवासी साहिब तुट्ठ, मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। किसे कोलों ना लए पुच्छ, मंगण दर किसे ना जाइंदा। एका नाउँ देवे साची सुच्च, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी धार चलाइंदा। सुत शब्द तेरी सच दलील, हरि दिलबर आप जणाईआ। आदि जुगादि ना कोए वकील, शरअ होर ना कोए वंडाईआ। एथे ओथे ना कोए अपील, एका हुक्म हुक्म वरताईआ। आदि पुरख पुरख अनील, अनहद तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सद्दा इक्क सुणाईआ। साचा सद्दा धुर फ़रमाना, धुर दरबारी आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी एका राणा, एका हुक्म वरताइंदा। सचखण्ड निवासी साचा भाणा, परम पुरख आप समझाइंदा। बोध अगाधा एका गाणा, एकँकारा आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। शब्दी सुत देवे माणा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी साचा दाना, विष्न ब्रह्मा शिव झोली पाइंदा। त्रै त्रै मेला खेल महाना, पंचम जोड़ जोड़ाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाना, चारे खाणी रंग रंगाइंदा। चारे बाणी बोल तराना, तुरया आपणा राग अलाइंदा। खेले खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा राह चलाइंदा। आपे मर्द आप मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। आपे वरते आपणा भाणा, सिर सिर भाणा आप मनाइंदा। आपे लेखा लिखे महाना, वेद पुराणा आपे गाइंदा। आपे शास्त्र सिमरत करे प्रधाना, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। आपे पंज तत्त काया चोला देवे माणा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश नूरो नूर नूर धराइंदा। आपे मन मति बुध करे परवाना, आपे काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काना, घट अन्तर आपे डेरा लाइंदा। आपे अमृत आत्म देवे सच प्याला, आपे निरगुण दीपक जोत करे उजयाला, अन्ध अन्धेर आप मिटाइंदा। आपे वसे साढे तिन्न हथ्थ सच्ची धर्मसाला, तोड़नहारा

आप जंजाला, जीवण जुगत आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण बणे दलाला, करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा भेव चुकाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पहरे जामा, रूप अनूप शाहो भूप लोकमात आप वखाइंदा। सच संदेसा नर नरेसा एकँकार कर प्यार लख चुरासी देवे दाना, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। ईश जीव बन्ने गाना, काया मन्दिर हो प्रधाना, परम पुरख पुरखोतम आपणा राह आप जणाइंदा। बोध अगाधा शब्द ज्ञाना, नाद धुन सच तराना, आत्म अन्तर आप पढ़ाइंदा। कागद कलम होए हैराना, करे खेल नौजवाना, बलधारी आपणा बल आप प्रगटाइंदा। सुत शब्द तेरा खेल करे विच जहाना, चार वरन चार युग चार कुण्ट चार खाणी चार बाणी तेरा निशाना, सच निशाना इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सद्दा इक्क जणाइंदा। साचा सद्दा सच असीस, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। सुत शब्द तेरा मेला हरि जगदीस, जगदीसर देवे माण वड्याईआ। आदि जुगादी लख चुरासी विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पीसण लए पीस, बण सेवक सेव कमाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना देवे सच हदीस, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। एका छत्र झुल्ले तेरे सीस, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा लेखे लाईआ। तेरा लेखा लेखे लाए भगवान, लेखा होर ना कोए जणाईआ। सचखण्ड सच मकान, सच सच साचा राग अलाईआ। थिर घर तेरा दर कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। पंज तत्त वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। देवे वस्त इक्क महान, महांबीर हो सहाईआ। करे खेल नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ । पंच तत्त सति दुकान, बण वणजारा आप खुलाईआ। गुर गुर रूप हो प्रधान, सतिगुर आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा लहणे पाईआ। गुर अवतार शब्द सुत तेरा साचा लहिणा, लहणेदार हरि अख्वाइंदा। पंज तत्त तन पाए गहिणा, बस्त्र होर ना कोए ओढाइंदा। शब्द अगम्मी दस्से कहिणा, हुक्मी हुक्म हुक्म मनाइंदा। निज नेत्र वखाए आपणा नैणां, दोए लोचण बन्द कराइंदा। गुरमुख गुर गुर सच धाम एका बहणा, धाम अवल्लड़ा आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची कल आप रखाइंदा। साची कल करता पुरख, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। निरगुण सरगुण कर कर परख, गुर अवतार लए प्रगटाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिंता रोग ना कोए जणाईआ। जोत निरँजण आदि निरँजण दरस, दरसी दरस दरस कराईआ। अमृत मेघ मेहरवान एका बरस, तृष्ना भुख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा नाउँ लए प्रगटाईआ। तेरा नाउँ हरि जू रख, गुर गुर वेस वटाइंदा। पंज तत्त काया आपे वस, आपणा राह चलाइंदा। सति सतिवादी

६२७ १२

मार्ग दस्स दहि दिशा वेख वखाइंदा। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, दो जहानां फेरा पाइंदा। खाणी बाणी गाए जस, वेद पुराण सिफ्त सालाहइंदा। अन्तर अन्तर एका रस, रस रसीआ आप चखाइंदा। कृपानिध ठाकर स्वामी पुरख अबिनाशी होए वस, बण सेवक सेव कमाइंदा। लेखा जाणे तत्त अठ्ठ, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर दरवाज़ा आप खुलाइंदा। दर दरवाज़ा हरि जू खोल, खालक ख़लक दए जणाईआ। नाउँ निरँकारा एका बोल, अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। लख चुरासी तोले तोल, एका कंडा नाम उठाईआ। गुर अवतारां सद वसे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नाद अनादी अगम्म अगम्मड़ा वज्जे ढोल, मृदंगा मृदंग आप सुणाईआ। दिवस रैण करे चोल, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द आपे बोल, अनबोलत राग अलाईआ। काया कवरी डूँघी भँवरी आपणा पर्दा आपे फोल, मुख घूँगट दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा घर, गृह मन्दिर आप वसाईआ। गृह मन्दिर वसे तेरा खेड़ा, सो पुरख निरँजण आप वसाइंदा। हं बंहम चुक्के झेड़ा, शब्दी शब्दी तार हिलाइंदा। निरगुण सरगुण बन्ने बेड़ा, पुरख अबिनाशी आपणे कंध उठाइंदा। दो जहानां खुल्ला रखे वेहड़ा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आकाश पतालां ज़िमीं असमानां आपणी

६२८ धार जणाइंदा। वसणहारा नेरन नेरा, दूर दुराडा आपणा डेरा लाइंदा। शब्द सुत तोहे चाउ घनेरा, नाता जुड़या तेरा मेरा, ६२८

सोहँ रूप वखाइंदा। गुर अवतारां पाए घेरा, आपणा हुक्म मनाइंदा। आदि पुरख अबिनाशी करता इक्को वड्डा रखे जेरा,

१२ अडोल अडुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ १२

टिकाइंदा। सिर रख हथ्थ करतार, कुदरत कादर दए जणाईआ। सुत शब्द तेरा सच विहार, लख चुरासी तेरी झोली पाईआ। घाड़त घड़न बण ठठयार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। अग्नी तत्त तत्त आधार, ब्रह्म मति इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल लैणा जाण, आदि पुरख जणाइंदा। गुर अवतार तेरा माण, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। शब्द संदेसा धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण अलाइंदा। करे खेल दो जहान, दोए दोए रूप वखाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, नाम प्रधानगी हथ्थ फड़ाइंदा। जुग जुग वेखे वेखणहारा आण, नित नवित वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे दान, आपणी वस्त आप वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चरन कँवल कँवल चरन सीस सर्ब झुकाण, झुक झुक सजदा सर्ब कराइंदा। दर दरवेश बण दरबान मंगण दान, दर्दी दर्द दर्द वंडाइंदा। इक्क इकल्ला हुक्मरान, हुक्मे हुक्म सर्ब फिराइंदा। तू ही तु ही सारे गाण, बेअन्त बेअन्त आपणा

नाउँ अख्वाइंदा। हं हं बण नादान, ब्रह्म ब्रह्म जीव अञ्याण, पंज तत्त काया चोला डेरा लाइंदा। साचा सोहला एका गाण, आदि पुरख प्रभ देवे दान, पीर पैग़म्बर गुर अवतार झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द सुत वड्याइंदा। सुत शब्द तेरा बल, बलधारी आप जणाईआ। निरगुण अंदर निरगुण रल, सरगुण सरगुण लए समझाईआ। दरस दिखाए अग्गे खल, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। महल्ल मनारा इक्क अटल्ल, अचल्ल बैठा डेरा लाईआ। सच संदेसा आपे घल्ल, जुग जुग करे पढ़ाईआ। बिन तेल बाती दीपक जाए बल, साचे घर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार तेरी सेवा मात लगाईआ। सेवा तेरी करन मात, हरि सतिगुर आप लगाइंदा। तेरा नाउँ साची दात, इक्को इक्क वरताइंदा। तेरा रखे डूँघा खात, भेव अभेद छुपाइंदा। बिन तेरे पंज तत्त चोले कोए ना पुच्छे वात, तेरा नाउँ गुर शब्दी आप प्रगटाइंदा। तेरी उत्तम रखे ज़ात, अज़ाती वंड ना कोए वंडाइंदा। तुध बिन कोए ना मेटे अन्धेरी रात, अज्ञान अन्धेर ना कोए चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छणहारा आपे वात, सदा सद तेरा संग निभाइंदा। मेरा संग मेरे सज्जण, कवण बिध आप रखाईआ। कवण वेला होएं परदे कज्जण, एका पर्दा उपर पाईआ। कवण दुआरे कराएं मजन, चरन धूढ़ सच सरोवर नुहाईआ। कवण धार खेल करें घड़न भज्जण, घड़न भन्नणहार तेरी वड्याईआ। कर किरपा मेरी रखें लज्जण, लाजावन्त तक्की तेरी इक्क सरनाईआ। पुरख अबिनाशी सचखण्ड निवासी बैठा मग्न, एका नूर जोत रुशनाईआ। सदा सदा सद तेरी मेटे हरसन, हिरस रहे ना राईआ। निरगुण सरगुण देवे आप दरसन स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। बिन कसवटीउँ आए परखण, नाम पारखू सच्चा माहीआ। लेखा जाणे अर्श फर्शन, ज़िमी असमान फोल फोलाईआ। सुत शब्द तेरा लाहे कर्ज़न, कर्ज़ा मकरूज़ आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर आए वर्जण, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। बिन तेरे नाम लोकमात ना परचण, पर्चा होर ना कोए पढ़ाईआ। सच्ची वस्त इक्को खरचण, खरचा धुर दरबारी हथ्थ वखाईआ। खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी गीता ज्ञानी रसना जिह्वा बत्ती दन्द कर कर जावण चरचन, चर्चा लोकमात समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रचनन, रच रच रचना आदि जुगादि अन्तर वेख वखाईआ।

✳ १२ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सदा सिँघ वाला गुरबचन सिँघ दे गृह ज़िला फिरोज़पर ✳

सो पुरख तेरा भरवासा, सुत दुलारा शब्द जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण तेरी आसा, इक्को ओट तकाइंदा। एकँकार तेरा दिलासा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। आदि निरँजण तेरा नूर प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश विच रखाइंदा। श्री भगवान तेरा तमाशा, पेख पेख खुशी मनाइंदा। अबिनाशी करता तेरा दासा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दासी दासा, हउँ सेवक सेव कमाइंदा। सचखण्ड दवारे साची रासा, गोपी काहन रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बाला मंग मंगाइंदा। छोटा बाला शब्दी धार, निरगुण अग्गे करे अरज़ोईआ। सो पुरख निरँजण खेल न्यार, बेपरवाह बेपरवाहीआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण किरपा धार, एकँकारा हो सहाईआ। आदि निरँजण खोल्ह् किवाड़, अबिनाशी करता पर्दा लाहीआ। श्री भगवान दे दीदार, अबिनाशी करता तृसन बुझाईआ। पारब्रह्म ख़बरदार, बेख़बर आपणी आस दए मिटाईआ। सालस बण सच दरबार, थिर घर बेड़ा आप चलाईआ। दूसर कोए ना मददगार, चरन सरन इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल दे वर, हउँ ढह प्या सरनाईआ। श्री भगवान वड मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। सुत दुलारे कर परवान, सीस जगदीस झुकाइंदा। आदि जुगादी देवे दान, दाता दानी आप वरताइंदा। सचखण्ड वखाए सच मकान, सच सिँघासण आसण लाइंदा। थिर घर तेरी खोल्ह् दुकान, वस्त अमोलक विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त झोली पाइंदा। साची वस्त हरि करतारा, एका एक जणाईआ। आदि पुरख बण दाता एकँकारा, आपे रिहा लुटाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, अक्खर अक्खर ना कोए सालाहीआ। खेले खेल अपर अपारा, अपरम्पर धार चलाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। मात पिता गोद सुहाए सुत दुलारा, जन जननी दे वड्याईआ। जै जै जै बोल जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा भेव चुकाईआ। थिर घर खोल्ह् हरि दरवाज़ा, सचखण्ड निवासी खेल कराइंदा। सीस जगदीस सुहाए ताजा, भूपत भूप आपणा रंग वखाइंदा। घर विच घर रच रच काजा, करनी करता आप कमाइंदा। बोध अगाधी निरगुण निरवैर पुरख अकाल अगम्मी अगम्म मारे वाजां, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। सति सतिवादी आपणा साजण आपे साजा, आपे पेख पेख खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे आप समझाइंदा। सुत दुलारे तेरा मनारा, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। थिर घर खोल्ह् ठांडा दरबारा, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। आदि जुगादि रहे रखवारा,

एकँकारा दया कमाईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। श्री भगवान दे सहारा, सदा सुहेला संग निभाईआ। अबिनाशी करता बण वणजारा, श्री भगवान साची वस्त वंड वंडाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। थिर घर देवे माण निरँकारा, निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। महल अटल उच्च दुआरा, निहचल धाम इक्क सुहाईआ। छप्पर छन्न ना कोए दीवारा, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। सूरज चन्द ना कोए सितारा, प्रकाश प्रकाश ना कोए वखाईआ। करे खेल करनेहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख आदि आदि सुत दुलारे देवे दाद, थिर घर आपणा रंग वखाईआ। थिर घर वखाए साचा रंग, रंग रंगीला दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण सुहाए सेज पलँग, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। हरि पुरख निरँजण सूरा सरबंग, बल आपणा आप धराइंदा। एकँकारा इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। आदि निरजंण करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जाता डगमगाइंदा। श्री भगवान साची वस्त आपे वंड, वंड वंड आपणी ख़ुशी मनाइंदा। अबिनाशी करता ठाकर स्वामी दयाल बख़्शंद, बख़्शश आपणी आप कराइंदा। पारब्रह्म करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी धार चलाइंदा। सुत दुलारे देवे माण, थिर घर आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। सुत दुलारे कर विचार, हरि हरि जू आप जणाइंदा। वसदा रहे तेरा दुआर, बण दर्दी दर्द वंडाइंदा। आदि आदि तेरी बन्नी धार, मध कोए वेख ना पाइंदा। अन्त आपे पावे सार, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। अगम्म अगम्मड़ी दस्से कार, करनी करता इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा भेव अभेद जणाइंदा। छोटा सुत शब्द धार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। एका दस्स सच प्यार, दूजा आपणा बन्धन पाईआ। तीजा नैण दरस दीदार, चौथे आपणा घर वसाईआ। पंचम मेला अपर अपार, छेवें छपर छन्न ना कोए वड्याईआ। सत्तवें सति सतिवादी तेरी कार, हउँ बालक जाणां ना राईआ। अठ्ठवें अठ्ठ अठ्ठ खेलें करें प्यार, पारब्रह्म नावें नव नौ देवें इक्क आधार, बिन उदर बिन जननी बणें पिता माईआ। दहि दिश इक्क आकार, निराकार करे रुशनाईआ। सचखण्ड तेरा पसार, परम पुरख तेरी शहिनशाहीआ। थिर घर खोल्ह इक्क किवाड़, मेरा आसण दिता लाईआ। फड़ बांहों दिता वाड़, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा तार, तारनहार सच्चे माहीआ। आदि जुगादि सदा सद नित नवित करां दीदार, दीद दीद नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि पुरख आदि तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तेरे अग्गे इक्को आस, आसा पूर ना कोए रखाइंदा। पारब्रह्म तेरे मिलण दी बुझे प्यास, तृष्ना रोग ना कोए जणाइंदा। निरगुण

निरगुण वसणा साथ, सगला संग इक्क मंगाइंदा। हउँ बालक अनाथां अनाथ, तूं दयावान दया कमाइंदा। तेरी सरन ना कोए घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, साची दात मंग मंगाइंदा। साची वस्त दे एक, मेरे प्रभ सच्चे गुसाईआ। थिर घर रखी तेरी टेक, सचखण्ड वसें बेपरवाहीआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा वेख, बिन नेत्र नैण नैण उठाईआ। मेरा रूप रंग ना कोए रेख, ना कोई पिता ना कोई माईआ। निरगुण निरगुण तेरे संग सच्चा हेत, दूसर प्रीत ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, जिस बिध तेरा मेल विछड़ ना जाईआ। सो पुरख निरँजण दयानिध स्वामी, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी निहकर्मी निहकामी, कर्म कांड ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि अन्तरजामी, अन्तरगत आप समझाइंदा। शब्द सुत तेरा पद निरबाणी, निरबाण पद आप वखाइंदा। शहिनशाह शाहो इक्क सुल्तानी, राज राजान इक्क हो आइंदा। सति सतिवादी सति कहाणी, सति पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपणा पर्दा चुक्क भगवान, शब्दी सुत जणाईआ। उठ दुलारे मार ध्यान, मेहरवान दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारा सच मकान, दूसर नज़र कोए ना आईआ। एका दीपक जगे महान, नूर नूर रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी साचा काहन, घर मन्दिर डेरा लाईआ। निरवैर पुरख बेपहचान, नज़र विच ना आईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। हुक्मी हुक्म करना परवान, सति परवाना इक्क फड़ाईआ। करे खेल वड बलवान, बल आपणा आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। सुण बाले बाली बुध, नर हरि नरायण आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे बैठा कुद्द, महल अटल सोभा पाइंदा। कर किरपा देवे तैनूं सुध, भेव अभेद खुल्हाइंदा। तेरा मेरा भेव कोई ना सके बुझ, अलख अगोचर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे खड़, थिर घर शब्दी सुत जणाइंदा। शब्द सुत चरनी ढट्ठ, नेत्र नैण नीर वहाईआ। श्री भगवान मार्ग साचा दस्स, दर तेरे मंग मंगाईआ। कवण बिध कवण धार कवण घर दर आवां नस्स, दरसन पेखां चाँईं चाँईंआ। कवण वेला मिलें हस्स हस्स, पारब्रह्म आपणी आप दस्स वड्याईआ। कवण हुक्म गावां तेरा जस, ढोला सोहला नाउँ धराईआ। कर किरपा करनी पूरी आस, आसा आसा विच रखाईआ। तेरा नूर मेरा प्रकाश, थिर घर तेरे नाउँ वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा भेव जणाईआ। आपणा भेव दस्सां खोल्ह, हरि हरि जू आख सुणाइंदा। मेरा नाउँ सदा अनमोल, अनमुलड़ी वस्त आप वरताइंदा। सचखण्ड दवारे तोलां तोल, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। आदि

जुगादि रहां अडोल, अडुल आपणी धार वखाइंदा। एका वस्त रखां कोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म हरि करतार, करता पुरख आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। तख्त निवासी एकँकार, राजन राज आप हो जाईआ। दासन दासी सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। सुत दुलारे कर प्यार, परम पुरख दए वड्याईआ। आपणा दस्से पिछला हाल, तेरा अहिवाल आप जणाईआ। थिर दर वसे नाल नाल, घर घर वेखे चाँईं चाँईंआ। सति सतिवादी धर्मसाल, धर्म दुआरा आप सुहाईआ। अगम्म अगम्मड़ा दीपक बाल, दीआ बाती करे रुशनाईआ। कमलापाती हो त्यार, साचा साकी जाम प्याईआ। खोल्हे ताकी बन्द किवाड़, आपणा पर्दा दए उठाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दर लेखा दए चुकाईआ। एथे ओथे दो जहानां सच मुकामा बण दलाल, दरगाह साची होए सहाईआ। मुकामे हक़ जल्वा जलाल, नूरो नूर करे रुशनाईआ। इक्क इकेला करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकाईआ। साचा भेव खोल्हु करतार, करता पुरख दया कमाइंदा। उठ सुत सुत कर दीदार, दरसी आपणा दरस वखाइंदा। तेरा मेरा मेरा तेरा इक्क प्यार, नाता बिधाता जोड़ जोड़ाइंदा। रूप रंग रेख तों वसे बाहर, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहइंदा।
६३३ आपे जाणे आपणी कार, कर कर आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, घर मन्दिर आप वड्याइंदा। घर मन्दिर वेख बाला, बाली बुध खुशी मनाईआ। प्रभ मिल्या दीन दयाला, विछड़ कदे ना जाईआ। थिर घर मिली सच्ची धर्मसाला, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे इक्क रखवाला, रक्षक बणया सच्चा माहीआ। एका मार्ग दस्से सुखाला, औझड़ राह ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। दर्दी दरवेश, दयावान खेल कराइंदा। आदि जुगादी रहे हमेश, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। सुत दुलारे करे हेत, थिर घर आपणा मेल मिलाइंदा। नज़री आए नेतन नेत, नेरन नेर फेरा पाइंदा। करे कराए साची खेड, खेलणहारा आपणा राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी करनी आप समझाइंदा। साची करनी करने योग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण निरगुण सच संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। नारी कन्त भोगे भोग, भस्मड़ आपणी धार चलाईआ। अगम्म अगम्मड़ी चुगे चोग, तृष्ना भुख ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दवार साचा कोट, किला बंक दए वड्याईआ। सच नगारे एका चोट, पुरख अबिनाशी आप लगाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आपे लेखा

जाणे ओत पोत, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे खड़, थिर घर आपणा दर खुल्हाईआ। थिर घर खोल्ह श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, मिहबान बीदो आपणा पड़दा आप चुकाइंदा। हरि पुरख निरँजण वेखे आण, इक्क इकल्ला फेरी पाइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। आदि निरँजण दे दे दान, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। अबिनाशी करता बण बण काहन, साची सखीआं रास रचाइंदा। श्री भगवान सति निशान, निरगुण निरगुण आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर ध्यान, बिन नेत्र वेख वखाइंदा। शब्दी सुत बाल अञ्याण, फड़ बांहों गले लगाइंदा। किरपा निध देवे वस्त इक्क निधान, निज घर आपणा डेरा लाइंदा। बोध अगाधा इक्क ज्ञान, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। आपणी दस्से सच पहचान, सो आपणा रूप धराइंदा। हं हं तेरा मकान, मकबरा होर ना कोए जणाइंदा। सोहँ रूप श्री भगवान, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। थिर घर देवणहारा माण, माण आपणे हथ्थ जणाइंदा। बण विचोला गुण निधान, पिता पूत जोड़ जोड़ाइंदा। तागा सूत इक्क दुकान, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। तन्दी तन्द बन्न्हे गान, हथ्थ गानां सगन मनाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप जणाइंदा। अग्गे करे खेल महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी आपणा भेव चुकाइंदा। सोहँ धार हरि निरँकार, आदि पुरख जणाईआ। जोती शब्द प्यार अगम्म आधार, उदर उधारी आप हो जाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, पेखत खुशी मनाईआ। करे खेल सचखण्ड सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी जोत जोत जोत शब्द विच समाईआ। शब्दी जोती इक्को नाता, थिर घर साची वंड वंडाईआ। सचखण्ड बैठ पुरख बिधाता, आपणी खेल रिहा समझाईआ। दोहां विचोला इक्को जाता, जुग जुग ना अंग कटाईआ। इक्को मन्दिर इक्को हाता, एका घर वसाईआ। एका वस्त इक्को खाता, एका हट्ट चलाईआ। इक्को पिता एका माता, एका बालक रूप सखाईआ। इक्को चरन इक्को नाता, एका जोड़ जोड़ाईआ। एका करे सचखण्ड निवासा, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। एका देवे थिर घर भरवासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका देवे साची दाता, बण दानी दया कमाईआ। इक्क सुणाए साची गाथा, सोहँ करे पढ़ाईआ। एका पुच्छणहारा बाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा पर्दा दए चुकाईआ। पर्दा पर्दा चुक्या ओहला, थिर घर साचे वज्जी वधाईआ। सुत दुलारा बणया गोला, गोला बण बण सेव कमाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा ढोला, ढोआ मिले मेरी वड्याईआ। बोध अगाधी साचा सोहला, सो पुरख निरँजण रिहा गाईआ। घर ठाकर मिल्या मौला, मोह मुहब्बत इक्क रखाईआ। सच दुआरे कर कौला, कीता

कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, थिर घर तेरी मंग मंगाईआ। थिर घर तेरी रखी ओट, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। कर किरपा भरदे पोट, तूं आदि जुगादी बीना दाना। दे वस्त इक्क अतोट, शाह पातशाह श्री भगवाना। तेरा वसे साचा कोट, सचखण्ड सच्चा मकाना। तेरी निर्मल इक्को जोत, नूरो नूर नूर महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार सदा मेहरवाना। मेहरवान हरि सच्चा ठाकर, एका गुण जणाईआ। एका नाउँ रतन रतनागर, पुरख अबिनाशी आप प्रगटाईआ। अगम्म अथाह डूँघा सागर, गहर गम्भीर रिहा वखाईआ। पूत सपूते देवे आदर, आदरश आपणा आप जणाईआ। किरपा करे करीम कादर, करता पुरख होए सहाईआ। लेखा जाणे पिदर मादर, पिसर आपणा रंग रंगाईआ। बलधारी होए आप बहादर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। साचा भेव दस्से दहि दिश धार, कुण्ट कुण्ट ना वंड वंडाईआ। सुत शब्द तेरा बलकार, बल आपणा आप जणाईआ। हुक्मे अंदर कर त्यार, हरि साची कार समझाईआ। लोअ पुरी ब्रह्मण्ड खण्ड महल अटल लए उसार, रवि ससि किरन किरन रुशनाईआ। मंडल मण्डप दे आधार, ज़िमी असमानां दो जहानां बन्धन पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसार, रजो तमो सतो गंढु पुवाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश अखाड़, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त दए वरताईआ। साची वस्त इक्को इक्क, एकँकार आप वरताइंदा। सचखण्ड दवारे लेखा दए लिख, थिर दुआरे हथ्थ फड़ाइंदा। साची सिख्या लैणी सिख, बिन अक्खर अक्खर आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दा वाक् भविख्त, हरि जू आपणा आप जणाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग शब्दी गुर वखाए इष्ट, इष्ट देव आप मनाइंदा। लख चुरासी वेख सृष्ट, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। खोलणहारा ख़ालक दृष्ट, मख़लूक आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल खेल जुग चार, चौकड़ी एका बन्धन पाईआ। साचा हुक्म अपर अपार, ब्रह्मा वेता करे पढ़ाईआ। साचा लेखा विच संसार, निरगुण सरगुण दए जणाईआ। बणे विचोला एकँकार, गुर गुर आपणा नाउँ धराईआ। लेखा जाणे सच दुआर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। लेखा जाणे आप निरँकार, निरगुण आपणा पड़दा दए चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आदि जुगादी वेखे वारो वार, नित नवित वेस वटाईआ। हुक्मे अंदर पंज तत्त कर ख़बरदार, ब्रह्म मति करे पढ़ाईआ। अनाद धुंन शब्द जैकार, अनहद रागी राग सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी दे आधार, पारब्रह्म पड़दा दए चुकाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, बन्द ताकी दए खुल्हाईआ।

अमृत देवे ठंडा ठार, बण साकी जाम प्याईआ। शब्द सुणाए अगम्मी धार, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। निरगुण सरगुण दए आधार, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। प्रगट कर गुर अवतार, गुर गुर साचा हट्ट चलाईआ। शब्दी शब्द तेरा वपार, लोकमात आप जणाईआ। कागद कलम कर त्यार, लेखा शाही नाल रलाईआ। अक्खर अक्खर दए आधार, वक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। गुर अवतारां सुण पुकार, पूरी आसा दए कराईआ। लिख लिख वेद चार, शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान आपणा गुण जणाईआ। अञ्जील कुराना पावे सार, हक़ हक़ीक़त फोल फोलाईआ। लाशरीक परवरदिगार, बेपरवाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सच आवाज़ बोल जैकार, अनादी नाद नाद सुणाईआ। कलमा कायनात कर त्यार, नबी रसूल देण गवाहीआ। अल्फ़ ये पावे सार, नुकता नून ना कोए समझाईआ। एका अक्खर एकँकार, ओंकार रिहा जणाईआ। नानक निरगुण दे आधार, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। तिन्न पंज पंज तिन्न जोड़ा जोड़ विच संसार, पैंती अक्खर वंड वंडाईआ। बावन अक्खर खेल अपार, एका साता रिहा जणाईआ। गुर गुर लेखा धुर दरबार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। बोध अगाधा नाद अनादा अगम्म अगम्मड़ा खेले खेल अपर अपार, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा घर, घर सुहञ्जणा इक्क वसाईआ। घर सुहञ्जणा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। लख चुरासी मेल मिलावा हरि जू कन्त, कन्त कन्तूहल आपणा पर्दा पाइंदा। लख चुरासी जीव जंत काया चोली रंगे बसन्त, बसन बनवारी आपणा रंग रंगाइंदा। नमो सति चलाए मंत, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म महिमा सुणाए अगणत, ईश जीव भेव चुकाइंदा। करे खेल भगत भगवन्त, भगवन आपणा पड़दा लाहइंदा। लहिणा देणा चुका साचे सन्त, सति असति वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर तेरा एका रंग जणाइंदा। शब्द सुत तेरा रंग गूढ़, हरि निरँकारा आप चढ़ाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, माया ममता मोह चुकाईआ। अज्ञान अन्धेरा करे दूर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। एका बख्शे साचा नूर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अनहद वज्जे साची तूर, रागी राग ना कोए अलाईआ। सर्ब कल हो भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। सदा सुहेला हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा नाउँ धराईआ। आदि जुगादी आसा पूर, मनसा मनसा विच धराईआ। तेरा लेखा लेखे पाए ज़रूर, ज़रूरत तेरी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत सुत सुहेला, आदि जुगादी इक्क इकेला, अकल कल धारी होए सहाईआ। अकल कल धारी खेल अवल्ला, आलमीन कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, महिफल आपणी आप लगाइंदा। जुगा जुगन्तर

अछल अछला, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फिरे हो हो झल्ला, आपणी झलक ना किसे वखाइंदा। सच संदेसा इक्को घल्ला, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, फड़या पल्लू छुट्ट ना जाइंदा। सन्तां अन्तर आपे रला, रल मिल आपणी खुशी मनाइंदा गुरमुख पार कराए डूँघी डल्ला, काया कवरी फोल फोलाइंदा। गुरसिखां अंदर निरगुण हो हो आपे बला, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी करदा रहे वल छल्ला, अछल छल आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त कन्त भगवन्त तेरा नाउँ इक्क प्रगटाइंदा। तेरा नाउँ अपर अपार, सति सति वड्याईआ। गा गा थक्कण तेई अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। भगत अठारां बोल जैकार, जै जैकार अलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद मंगण बण बण भिखार, दर दरवेश झोली डाहीआ। दस गुरू गा गा तेरी वार, वारता सके ना कोए मुकाईआ। अन्तिम उच्ची कूक कूक गए पुकार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरी महिमा कथन ना जाईआ । आदि रचया जिस पसार, जुग जुग शब्दी धार चलाईआ। सो पुरख निरँजण वसे धाम न्यार, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। लख चुरासी सांझा यार, एका कलमा नबी पढ़ाईआ। मुकामे हक़ परवरदिगार, प्रभ बैठा डेरा लाईआ। कलयुग आए अन्तिम वार, पीर पैग़म्बर गुर अवतार बैठे ध्यान लगाईआ। निहकलंक नाउँ रखे अगम्म अपार, मात पित ना कोए बणाईआ। साचे वसे धाम न्यार, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। शब्द गुरू इक्क बलकार, बल आपणा लए धराईआ। लख चुरासी जीव जंत राउ रंक राज राजान वेख संसार, संसा सब दा दए मुकाईआ। चार वरन करे खुआर, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश मेट मिटाईआ। अठारां बरन मारे मार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर दुआरे मंगणहार, निउँ निउँ बैठण सीस झुकाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। नौ खण्ड पृथमी हाहाकार, जीव जंत रहे कुरलाईआ। सत्त दीप ना पाए कोई सार, सति सतिवादी नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई होई नार विभचार, हरि जू कन्त ना कोए हंढाईआ। जगत अन्धेरा धूआँधार, निरगुण चन्द ना कोए चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ होया बलकार, बल आपणा रिहा वखाईआ। उच्ची कूक कूक करे पुकार, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तीर्थ अठसठ आपणा फेरा पाईआ। कागद कलम शाही लिख लिख गई हार, सत्त समुंदर रोवण ज़ारो ज़ार, बनास्पत दए दुहाईआ। बौहड़ी बौहड़ी बौहड़ी सब तों विछड़या एकँकार, आत्मा परमात्मा गई भुलाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म ना करे प्यार, खुशी ग़म ना रूप वटाईआ। जीव ईश ना दए आधार, ईश्र ईश्वर बैठा मुख छुपाईआ। सुरत सुवाणी शब्द हाणी मिले ना सच दुआर, दर दरवाज़ा ना कोए खुलाईआ। अमृत मिले ना ठंडा ठार, निझर झिरना ना कोए

झिराईआ। घर विच घर ना मिले गुरुदुआर, सतिगुर पूरा नज़र ना आईआ। फड़ बांहों बेड़ा करदे पार, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रभ अबिनाशी अग्गे करन निमस्कार, सजदा सीस जगदीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम आई तेरी वार, साडा बल रिहा ना राईआ। कर किरपा एकँकार, इक्क तेरी ओट तकाईआ। राह दस्स के आए सर्ब संसार, सृष्ट सबाई गई भुलाईआ। धरनी धरत धवल रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। खुलड़े केस फिरे दुआर, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। मैथों चुक्कया ना जाए भार, भावी तेरी बेपरवाहीआ। कर किरपा मेरी सरकार, शहिनशाह सच्ची तेरी शहिनशाहीआ। मेरा दुखड़ा दे निवार, दुखी होई सर्ब लोकाईआ। तेरे भगत मेरी छाती उत्ते बह बह करन पुकार, अंदर वड़ वड़ ध्यान लगाईआ। बाहर लुट्टण ठग्ग चोर यार, अंदर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आपणा बल वखाईआ। जिस दर जावां चारों कुण्ट धक्के रहे मार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मक्के फिर फिर आई वारो वार, सारे मकबरा रहे बणाईआ। तबस्सरा करे सर्ब जहान, ग़फ्लत सुत्ती सर्ब लोकाईआ। तेरा नाउँ ना वणज वपार, कूड़ी क्रिया हट्ट चलाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे होए ठग्गणहार, जगत ठगौरी रिहा पाईआ। काग़ज़ कलम शाही कर कर थक्के निमस्कार, निमख निमख दुःख ना कोए कटाईआ। हरख सोग दी भरी आई तेरे दुआर, दर्दी देणा दर्द वंडाईआ। चौदां लोक हाहाकार,
६३८ त्रैकाल दरसी तेरी सार किसे ना पाईआ। चौदां तबक झूठी कार, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। अल्ला राणी होई खुआर, ६३८
मुख घूँगट ना सके उठाईआ। किसे हथ्थ ना आया परवरदिगार, पुरख अबिनाशी बैठा मुख छुपाईआ। कर किरपा दे दीदार,
१२ मुख नक़ाब दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए १२
सहाईआ। सुण धरनी उठ नेत्र नैण खोल्ह, ख़ालक ख़लक आप जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ तोलणहारा तोल, जुग जुग कंडा हथ्थ उठाइंदा। कलयुग अन्त सुत्ती रहीं ना अनभोल, भुल्ली भटकी राहे पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वसे भगतां कोल, दूजे दर ना फेरा पाइंदा। अंदर वड़ के हौली हौली रिहा बोल, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। उठ सुवाणी आपणा कुण्डा खोल्ह, ख़ालक ख़लक फेरा पाइंदा। देवे दरस इक्क अनमोल, अमुल मुल कोए ना लाइंदा। तेरा बदल देवे चोला चोल, चोली आपणे रंग रंगाइंदा। फड़ बांहों उठाए अडोल, आपणी गोद बहाइंदा। जा के दुखड़ा आपणा फोल, दीनां नाथ दुखियां दर्द वंडाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रोल, मुल्ला शेख़ मुसायक सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। लख चुरासी कोलों कर के बैठा पर्दा ओहल, गुरसिखां कोलों पर्दा आप उठाइंदा। दर घर वजाए सच्चा ढोल, ढोलक छैणा ना कोए रखाइंदा। रातीं सुत्तयां करे चोल्ह, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद बहाइंदा। आदि पुरख शब्द दुलारे संग करया कौल, कलयुग

अन्तिम कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। देवे वड़याई साची धौल, धरनी धरत दया कमाइंदा। भगत दुआरे जा के कर सेवा घोली घोल, कीती सेवा घाल लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेस श्री भगवान, तेरा मोहे इक्को भाइंदा। कवण दुआरे मिले गुण निधान, कवण वेला वक्त सुहाइंदा। कवण झुलाए सच निशान, कवण दुआरे हथ्थ उठाइंदा। कवण गुण जणाए विच जहान, गुणवन्ता फेरा पाइंदा। मैं कमली कोझी चरनी डिगी आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी इच्छया पूर कराइंदा। इच्छया पूर करे करतारा, धरनी धरत धवल जणाइंदा। प्रगट होया हरि निरँकारा, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। जिस रचया आदि पसारा, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। जिस घल्ले गुर अवतारा, सो पुरख वेस वटाइंदा। जिस दर मंगदे बण भिखारा, विष्न ब्रह्मा शिव झोली डाहिंदा। सो साहिब बणया वरतारा, साची वस्त झोली पाइंदा। जा के कर चरन निमस्कारा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। हरि जू वसे भगत दुआरा, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस गृह सुणाए सच जैकारा, जै जैकार आप अल्लाइंदा। सोहँ शब्द आदि जुगादि सति वरतारा, सति सतिवादी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दुखड़ा दुःख मिटाइंदा। तेरा दुःख मिटाए दुखड़ा, दीनां अनाथां होए सहाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग दा प्रभ जो भुखड़ा, भुख्यां भुख दए गंवाईआ। लहिणा देणा चुकाए मात गर्भ उलटा रुखड़ा, लेखा लेखे लए पाईआ। उज्जल कराए तेरा मुखड़ा, दुरमति मैल धुवाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुतड़ा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लख चुरासी जीव जंत घुथड़ा, पाँधी राह ना कोए वखाईआ। गुरमुख रखे इक्को मुठड़ा, मुट्ठी आपणी विच बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। सच संदेसा मेरे दयाल, तेरा मोहे भाइंदा। चारों कुण्ट कूके काल, महांकाल मोहे डराइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले थक्की भाल, गुरमुख पूरा नज़र कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप मैं चल चल थक्की आपणी चाल, तेरा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। खाली दिसे दीपक गगन थाल, जोती नूर ना कोए जगाइंदा। दरोही खुदाए होई बेहाल, खुदी तकब्बर ना कोए गवाइंदा। वेख वेख थक्की शाह कंगाल, तेरे नाम कंगाली झोली कोए ना पाइंदा। लख चुरासी फल ना दिसे किसे पत डाल, सिम्मल रुक्ख सर्ब लहराइंदा। त्रैगुण माया नज़र आए जंजाल, जागरत जोत ना कोए जगाइंदा। साध सन्त होए बेहाल, बेवा रूप सब ही नज़री आइंदा। तेरा खेड़ा वसे इक्क गोपाल, गोबिन्द तेरा रंग रंगाइंदा। बणना विचोला अन्त दलाल, सच दलाली इक्क वखाइंदा। लहिणा देणा चुकाउणा हक़ हलाल, हक़ीक़त तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। गुरमुख तेरे गुरसिख लाल, लाल अनमुलड़े हट्ट विकाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा अन्तिम वार, हरि जू हरि हरि आप चुकाईआ। भगत भगवन्त कर त्यार, भावी दए मिटाईआ। बहत्तरां लेखा अन्त संसार, वड संसारी आप चुकाईआ। सत्तरां खोल्हे आप किवाड़, घर मेला सहिज सुभाईआ। चुहत्तरां लेखा आर पार, दो जहान इक्क सरनाईआ। हरिसंगत मेला धुर दरबार, गुर चेला लए मिलाईआ। सज्जण सुहेला एकँकार, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्तिम वेला प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, नारी पुरष लए तराईआ। जिस नेत्र देवे आप दीदार, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। धरनी तेरा हौला करे भार, हौली हौली सब दी सफा दए उठाईआ। बीस बीसा खेल करे करतार, जगत जगदीसा सच्चा शहिनशाहीआ। हुक्मे अंदर करे कार, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। निधड़क फिरे आप निरँकार, निरभउ भय ना कोए रखाईआ। अजूनी रहित हो त्यार, अनभउ प्रकाश इक्क कराईआ। साकत निन्दक दुष्ट कर खुआर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। आत्म परमात्म इक्क जैकार, सोहँ ढोला दए जणाईआ। शब्द सुरत नाता जोड़ करतार, कुदरत कादर लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे दरस दीदार, जन्म मरन मरन जन्म लख चुरासी जम की फाँसी आवण जावण पत्तत पावण गेड़ा दए चुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर एका जोत नूर प्रकाश, प्रकाशवान बेऐब नूर खुदाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत सन्त गुरमुख गुरसिख गुरदेव सेवक कर कर दासन दास, दहि दिशा वेख वखाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी एकँकार इक्क अबिनाशी, दूसर कोए थिर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सोहँ रूप पवण स्वास, पवण पवणा अवण गवणा त्रैभवना लोक परलोक सच सलोक विष्न ब्रह्मा शिव दे दे मोख, गुर अवतार पीर पैग़म्बर मिटा मिटा हरख़ सोग, लहिणा देणा चुका चौदां लोक, जुग जुग सुणा सच सलोक, सोहला ढोला साहिब सतिगुर सदा सद एका एक जणाईआ।

✳ १३ भाद्रों २०१६ बिक्रमी ज़ोरा सिँघ दे गृह सद्दे वाला ✳

अकल कल धारी कल करे घात, घाउ आपणा नाम लगाईआ। जगत अन्धेरी मेटे रात, नाम निधाना चन्द रुशनाईआ। लहिणा चुकाए ज़ात पात, आत्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई देवे दात, लख चुरासी झोली पाईआ। बोध अगाध सुणाए गाथ, अक्खर वक्खर इक्क जणाईआ। हरिजन मेल मिलाए कमलापात, कँवल नैण सच्चा शहिनशाहीआ। इक्क वखाए

डूँग्घा खात, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। सच जुड़ाए हरि जू नात, गुर अवतार पीर पैग़म्बर देण गवाहीआ। लेखा जाणे कायनात, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। अकल कल धाम खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, इलाही नूर पड़दा लाहइंदा। बिस्मिल हो हो आपे रला, आप आपणा भेव छुपाइंदा। वसणहारा जला थला, घट घट आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप जणाइंदा। साची धारा कलयुग कल, हरि करता आप चलाईआ। करे खेल अछल अछल, वल छल भेव ना जाणे राईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन बैठा मल्ल, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती शब्दी निरगुण निरगुण रल, सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। सति प्रकाश दीपक जोत आपे बल, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सति संदेसा श्री भगवान एका घल्ल, ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। लख चुरासी वेखणहारा खाणी बाणी फल, पत्त डाल्ही फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग लेखा रखे हथ्थ, कुलवन्ता आपणी दया कमाईआ। सदा सुहेला चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आदि जुगादि महिमा अकथ, कथनी कथ आप समझाईआ। सति सतिवादी साचा मार्ग दस्स, हरिजन साचे लए जगाईआ। तीर

६४१ अणयाला मारे कस, बिरहों रोग मिटाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अनहद शब्द गाए साचा ६४१

जस, जस वेद पुराण ना कोए सुणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हरिभगत प्यार जाए फस, दूजा फांदी नज़र कोए ना आईआ।

१२ लहिणा देण चुकाए हथ्थो हथ्थ, पूरब लेखा आप मुकाईआ। वेखणहारा अठसठ, सठ अठ आपणा बन्धन पाईआ। भेव १२

जणाए मन्दिर मट्ठ, मस्जिद पड़दा एका लाहीआ। सति दुआरे सति इकट्ठ, जन भगतां आप कराईआ। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल करनी दए मिटाईआ। कल करनी अन्धेरा चौथे युग, कूक कूक कूक सुणाईआ। अन्तिम औध गई पुग, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कूड़ी चोग जीव जंत रहे चुग, सच सुच्च रस ना कोए रखाईआ। आपणा आप ना सके बुझ, गुर मन्त्र ना कोए दृढ़ाईआ। काया कवरी डूँग्घी भँवरी बैठे लुक, पार किनारा ना कोए वखाईआ। साहिब सतिगुर सीस गया ना किसे झुक, सजदा मुर्शद मुरीद ना कोए जणाईआ। अंदर वड़ वड़ गृह मन्दिर हाल मुरीदां कोए ना सके पुच्छ, बेहबल होई सर्ब लोकाईआ। साधां सन्तां हथ्थ ना वस्तू कुछ, खाली हथ्थ देण दुहाईआ। रसना जिह्वा रहे बुक्क, आत्म रो रो आपणा नीर वहाईआ। बिन अमृत बूटे गए सुक्क, हरे सिंच ना कोए कराईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर आए गए

उठ, लोकमात फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी चरनां हेठां रखे एका गुठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ना कोई रखे काया बुत्त, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। इक्क इकल्ला सच दुलारा शब्दी पुत, पूत सपूता इक्क सुहाईआ। सुहावणहारा साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। नाम ख़ज़ाना गुण निधाना आदि जुगादी आपे लुट्ट, जन भगतां झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया वेख वखाईआ। कलयुग क्रिया करे पुकार, नाअरा एका एक सुणाया। चार वरन होए बेज़ार, बेदार रही कराया। मात पित ना कोए प्यार, भैण भाई ना संग रखाया। नाता तुट्टा पुरख नार, कन्त कन्तूहल ना कोए हंढाया। हरि जू मिल्या ना सच्चा यार, सतिगुर संग ना कोए निभाया। रसना जिह्वा ना कोए आधार, आत्म रस ना कोए चखाया। कागद कलम गई हार, हरि का लेख ना किसे मुकाया। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए गुरू अवतार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। वाहवा कुदरत तेरी परवरदिगार, कादर तेरा अन्त किसे ना आया। तेरी महिमा लिख ना सके वेद चार, ब्रह्मा वेता आपणा बल रखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग उतरया पार, आप आपणा पन्ध मुकाया। कलयुग आई अन्तिम वार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। संगी सगली साथी गए हार, साचा संग ना कोए निभाया। गल्लीं बातीं मेल मिलावा दस्सण हरि करतार, बांहों फड़ ना कोए मिलाया। रातीं सुत्तयां करन पुकार, आलस निंद्रा ना कोए मिटाया। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्की विच संसार, पढ़ पढ़ पन्ध ना किसे मुकाया। अक्खर अक्खर सरगुण धार, निरगुण बिन अक्खर आपणा राह चलाया। पट्टी लिखे ना अक्खर मेटे कर प्यार, कर किरपा आपणा नाउँ आप समझाया। रत्ती रत्त लए उभार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणा वेस धराया। कल कलवन्ता काला मुख, कारन आपणा रिहा छुपाईआ। नव नौ चार इक्को दुःख, घर घर पई लड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आत्म परमात्म देवे ना कोए सुख, सुख शांत ना कोए कराईआ। प्रभ अबिनाशी कोलों सारे बैठे लुक, आपणा आपणा पड़दा पाईआ। लोकमात नाता तुट्टा गए रुठ्ठ, रुठड़ा यार ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा भेव जणाईआ। कलयुग तेरा अन्त किनारा, अन्त अन्त जणाइंदा। नेत्र रोवे गुर अवतारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। वली गौंस ना कोए प्यारा, पीर पैग़म्बर नैण शरमाइंदा। शास्त्र सिमरत ना पावे कोई सारा, वेद पुराण राह ना कोए जणाइंदा। गीता ज्ञान ना कोए आधारा, अञ्जील कुरान डेरा ढाहइंदा। खाणी बाणी सुत्ती पैर पसारा, बिन सतिगुर पूरे अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। लेखा चुक्का गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर पन्ध मुकाइंदा। एका हुक्म वरते हरि करतारा, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। मेटणहारा धूआँधारा, निरगुण साचा चन्द चढ़ाइंदा। भगत भगवन्त दए हुलारा, आत्म

सेजा सोभा पाइंदा। सति सतिवादी करे साची कारा, करता पुरख करनी आप कराइंदा। एका सुत शब्द दुलारा, सिर सभना हथ्थ टिकाइंदा। जुग चौकड़ी मेटे वारो वारा, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। सतिजुग साचा धरे संसारा, संसार सागर वेख वखाइंदा। नाम सति इक्क जैकारा, नौ खण्ड पृथ्मी आप जणाइंदा। काया मन्दिर सच गुरुदुआरा, गुर सतिगुर आप खुल्हाइंदा। नित नवित दए दीदारा, हरि दरसी दरस जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया कूड़ी खाण, हरि ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, दीन दयाल दया कमाईआ। सन्त सुहेले आप पहचान, गुर चेले अंग लगाईआ। एका देवे नाम दान, नाम निधाना झोली पाईआ। सोहँ अक्खर सति निशान, सति सतिवादी दए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे गाण, नानक गोबिन्द गया सुणाईआ। तीर चिल्ला इक्क महान, साचा भथ्था वंड वंडाईआ। नाम सति सति प्रधान, सति सतिवादी हुक्म जणाईआ। निरगुण निरगुण कर परवान, सरगुण सरगुण लेखे लाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे दुकान, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सच संदेसा देवे आण, परम पुरख वडी वड्याईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन एको गान, एका नाम वज्जे वधाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। पीर पैग़म्बर सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। नाता तुट्टे शरअ ईमान, उम्मत नबी ना कोए वड्याईआ। लेखा चुक्के अञ्जील कुरान, बिन लेखिउँ लेखा दए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लोअ पुरी ब्रह्मण्ड खण्ड विष्न ब्रह्मा शिव गावण गाण, एका राग अल्हाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम खेल महान, दो जहानां देवे दान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आत्म परमात्म परमात्म आत्म आण, ब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म करे आप कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा मात धर, धरनी धरत धवल दए सुहाईआ।

६४३
१२

✳ १३ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सीतल सिँघ दे गृह
पिण्ड डगरू ज़िला फिरोज़पुर ✳

सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा, हरि जू हरि हरि आपणा खेल जणाइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, तख्त निवासी वेस वटाइंदा। सच संदेसा एका वारा, एकँकारा आप सुणाइंदा। निरगुण निरगुण कर पसारा, दरगाह साची धाम वड्याइंदा।

सच सपूता इक्क दुलारा, धुर दरबारी आप उपाइंदा। जोधा सूरबीर वड बलकारा, बल आपणा आप जणाइंदा। करनी करता किरत करे कराए करनेहारा, करता पुरख सेव लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि सुल्ताना, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। आदि पुरख पुरख प्रधाना, अन्त वेखे चाँईं चाँईंआ। मध लेखा दो जहानां, लोआं पुरीआं ब्रह्मंडां खण्डां नाच नचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाना, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। लख चुरासी बन्ने गाना, निरगुण सरगुण सगन मनाईआ। सति सरूपी हो प्रधाना, शाहो भूपी नाउँ धराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आत्म अन्तर दे ज्ञाना, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। सति संदेसा नर नरेशा एका देवे दो जहानां, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। जुग चौकड़ी वंड संसारा, वंडण आपणे हथ्थ रखाइंदा। खाणी बाणी बोल जैकारा, जै जै आपणे नाउँ कराइंदा। कागद कलम शाही सेवादारा, साची सेवा सेव लगाइंदा। गुर अवतार दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लोकमात कर उज्यारा, साची सेवा इक्क लगाइंदा। शास्त्र सिमरत वसे बाहरा, हथ्थ किसे ना आइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, निरगुण सरगुण नाच नचाइंदा। अनहद अनादी साची धारा, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। साची सिख्या एका वारा, एकँकारा आप सुणाइंदा। शब्दी सुत सुत दुलारा, घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव आदि अन्त, आदि पुरख आप जणाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग वेख वखाईआ। निरगुण बणाए सरगुण बणत, घड़न भन्नणहार घड़ भाण्डे डेरा लाईआ। एका नाउँ प्रगट कर कर मणीआ मंत, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। सच संदेसा साचे सन्त, हरि सतिगुर आप सुणाईआ। चरन सहारा पूरन भगवन्त, जन भगत माण वड्याईआ। गुरमुख गढ़ तोड़े हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क समझाईआ। गुरसिख साचे महिमा सुणाए अगणत, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग शब्दी धार, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। लेखा जाण गुरू अवतार, गुर गुर वेस वटाइंदा। चाकर ख़ाक सेवादार, सेवक सेवा सच लगाइंदा। नव नौ उतरे अन्तिम पार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर नाच नचाइंदा। कलमा नबी इक्क जैकार, रसूल रसूलां आप पढ़ाइंदा। तसबी मणका तोड़ हँकार, शरअ शरीअत मेट मिटाइंदा। लाशरीक परवरदिगार, सच परवाना इक्क फड़ाइंदा। अनाद अनादी तराना गाए एका घर बार, मन्दिर मस्जिद आप सुहाइंदा। गुर गुर खोले आप किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। भगवन देवे भगतन वस्त

थार, थिर घर साचे आप वरताइंदा। जुग चौकड़ी बीते चार चार, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। चारे खाणी चारे बाणी चारे वरन रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, हरि ख़ालक ख़लक कराइंदा। धुर दरबारी बोल जैकार, धुर दी बाणी आप अल्ाइंदा। सुत दुलारे कर प्यार, हरि शब्दी आप उठाइंदा। नेत्र खोल् कर दीदार, दरसी आपणा दरस कराइंदा। कलयुग अन्तिम एथे ओथे दो जहान आई हार, सगला संग ना कोए निभाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड रोवण ज़ारो ज़ार, धरनी धरत धवल बेड़ा पार ना कोए कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए बेज़ार, सीस जगदीस हथ्थ ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान आपणी दया आप कमाइंदा। वेख नेत्र खोल् अक्ख, हरि आख़र आप जणाईआ। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप हरि का बुरज रिहा ढट्ठ, मन्दिर नज़र कोए ना आईआ। जगत अखाड़ा होया कट्ठ, कलयुग आपणा नाच नचाईआ। ना कोई धीरज ना कोई सति, सति सन्तोख ना कोए वड्याईआ। गुर का शब्द ना कोए मत्त, मनमति रही कुरलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सत्थर बैठे घत्त, आपणा बल ना कोए जणाईआ। लख चुरासी उब्बले रत्त, अग्नी तत्त रही तपाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अबिनाशी कोई ना बन्न्हे नत्त, नाता तुट्टा सर्ब लोकाईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब नज़र ना आए कोई घाट, डूँग्घी भँवरी पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा एका वार, हरि शब्दी आप जणाईआ। शब्द सुत उठ वेख विचार, हरि हरि हरि आख सुणाइंदा। लहिणा चुक्के जुग चार, चार यारी ना कोए निभाइंदा। सदी चौधवीं होए ख़ुआर, चौदां लोकां ख़ाक मिलाइंदा। चौदां तबकां हाहाकार, सही सलामत नज़र कोए ना आइंदा। चारों कुण्ट धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। पीर पैग़म्बर होए शर्मसार, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। अल्ला राणी होए ख़ुआर, मीआं मुहब्बत मोह ना कोए वधाइंदा। खुली मींढी फिरे विच संसार, सीस जगदीस ना कोए गुंदाइंदा। मैंहदी रंग ना कोए गुलाल, कज्जल धार ना कोए वखाइंदा। नाता छड्ड गए चार यार, मुहम्मद नेत्र रो रो नैणां नीर वहाइंदा। ईसा मूसा कर पुकार, इस्म आज़म इक्क तकाइंदा। तेरी ओट परवरदिगार, तुध बिन पार ना कोए कराइंदा। कलयुग खेल तेरा करतार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। शरअ शरीअत गई हार, शरअ रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण साचे चढ़, आपणा ध्यान आप लगाइंदा। गुर पीर अवतार पैग़म्बर रहे कुरला, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणया करबला, काअबा नज़र कोए ना आईआ। अग्गे दिसे ना कोई आरज़ू अरबला, सारे बैठे पन्ध मुकाईआ। इक्को ओट तेरी तका, तकवा होर ना कोए जणाईआ। परवरदिगार सच ख़ुदा, ख़ुदी

माण ना कोए रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर लेखा करदे रहे जुदा, जुदा जुज़ आपणा आप बणाईआ। अन्तिम तेरे चरनां उत्ते होए फिदा, फितरत आपणी सर्ब मिटाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी लख चुरासी मार्ग दस्स सिध्धा, साबत सूरत आपणी आप जणाईआ। आपणे मिलण दी इक्को बिध्धा, एका वार दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे वेखे चाँईं चाँईंआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग उतरे पार, कलयुग कूक कूक सुणाईआ। साडी सिख्या किसे कम्म ना आई विच संसार, सृष्ट सबाई भुल्ली अन्त लोकाईआ। कागद कलम शाही नाल लिख लिख थक्के तेरी महिमा परवरदिगार, बिन तोहे किसे ना भाईआ। पढ़ पढ़ सारे होए खुआर, खर का रूप वटाईआ। नर मिल्या ना एकँकार, नरायण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। साकत निन्दक दुष्ट दुराचार होए विभचार, विभचारी कर्म कमाईआ। कन्त सुहागी पीआ प्रीतम ना करे प्यार, गलवकड़ी ना कोए पाईआ। रातीं सुत्तयां ना दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। माया कुठयां करे खुआर, एका धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे वज्जदी रहे वधाईआ। वज्जे वधाई सच घर, हरि नौबत नाम वजाइंदा। पीर पैग़म्बर लए फड़,
६४६ गुर अवतार दर मंगाइंदा। साचे तख्त आपे चढ़, सचखण्ड दवारे आसण लाइंदा। निष्अक्खर अक्खर आपे पढ़, साचा ढोला आपे गाइंदा। लख चुरासी अंदर वड़, गृह गृह डेरा लाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख कार कमाइंदा। ६४६
१२ ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन विच ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर धरनी धरत धवल उपर धर, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करे आखर, अख़ीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी रिहा शाकर, शुकरीआ सब दे कोलों कराईआ। निरगुण सरगुण करदा आया ख़ातर, ख़तरा एका एक समझाईआ। निक्के बाले छोटे पुत्त गुर अवतार, दे दे घल्लदा रिहा पात्र, पाती आपणा नाम पढ़ाईआ। लोकमात दी करके गए यातर, यात्रा पंज तत्त हंढाईआ। अन्तिम निशान रिहा ना कोए मातर, प्रभ आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी करे करता कादर, करीम वड्डा वड वड्याईआ। सदा सुहेला इक्क सौदागर, वणज वपार इक्क अख्वाईआ। बाल अञ्याणयां देवे आदर, गुर अवतारां सीस हथ्थ टिकाईआ। मेहर नज़र करे करीम कादर, सच दुशाला देवे चादर, धार चिट्टी चिट्टी नाल बंधाईआ। काया भाग लगाए साची गागर, काची गगरीआ आपणे लेखे लाईआ। निर्मल जोत करे उजागर, दीआ बाती इक्क टिकाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर बैठा आसण लाईआ। हरि मन्दिर लाए हरि जू आसण, सोभावन्त सोभा पाइंदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता कार कमाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशन, आकाश आकाशां फोल फोलाइंदा। शहिनशाह शाहो शाबाशन, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। खेले खेल आप गुणताशन, गुणवन्ता आप हो आइंदा। लहिणा देणा चुकाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा खेल आप जणाइंदा। हरि हरि खेल अवल्लड़ा, आदि जुगादी कार। वसणहारा निहचल धाम अटल्लड़ा, महल अटल उच्च मनार। गुर अवतार फड़ाए पलड़ा, पीर पैग़म्बर दे सहार। सच संदेसा एका घलड़ा, जुगा जुगन्तर दे आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबारी आप हरि, वड्डा वड वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रथ चलाईआ। गुर अवतार धरनी धर, धवल दए सुहाईआ। अक्खर वक्खर आपे पढ़, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लाए जड़, खाणी बाणी नाल मिलाईआ। अठसठ सरोवर तीर्थ तट सर, अमृत इक्क वखाईआ। घड़न भन्नणहार खेल कर, घड़ वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लहिणा आप चुकाईआ। सब दा लहिणा हरि करतार, आदि अन्त चुकाइंदा। जुग चौकड़ी बीते चार, चार चार वंड वंडाइंदा। गुर अवतार करन पुकार, पीर पैग़म्बर मंग मंगाइंदा। प्रगट होए हरि निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, आत्म परमात्म आप सुणाइंदा। जगत विचोला एकँकार, साचा सोहला आप पढ़ाइंदा। तोला बणया तोलणहार, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। पड़दा ओहला खोल्ह किवाड़, घर मन्दिर वेख वखाइंदा। कूड़ी क्रिया करे पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द वड वड्याइंदा। सुत शब्द तेरा बल अपार, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपार, करता पुरख पुरख कराईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्दी डंक अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा इक्क सुणाईआ। दो जहानां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलार, सुरपति इन्द नाल मिलाईआ। गुर अवतार लए उठाल, पीर पैग़म्बर नाल रलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंज तत्त करे रुशनाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, राज राजानां पड़दा लाहीआ। सति सरूपी वज्जे ताल, सति पुरख निरँजण आप वजाईआ। लहिणा देणा चुकाए काल महांकाल, महिमा आपणी सिफ्त सालाहीआ। साचा मार्ग दए वखाल, नौ खण्ड पृथ्मी नैण खुल्हाईआ। शब्दी शब्द बणे दलाल, गुर शब्दी रूप वटाईआ। लहिणा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त

वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी इक्को धर्मसाल, घर मन्दिर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर तेरा साचा घर, दो जहानां आप वसाईआ।

✳ १३ भाद्रों २०१६ बिक्रमी धन्ना सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फिरोज़पुर ✳

साहिब सतिगुर तेरा नाउँ, कलयुग अन्त इक्क वड्याईआ। नज़री आए हर घट थाउँ, थान थनंतर बूझ बुझाईआ। हरिजन पकड़े साचे बांहों, फड़ बांहों गले लगाईआ। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, कागों हँस बणाईआ। सदा सुहेला सिर देवे ठंडी छाउँ, अग्नी तत्त बुझाईआ। एथे ओथे दो जहान निरगुण सरगुण करे न्याउँ, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ दए वड्याईआ। हरि का नाउँ हरि का जस, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। भगतन अन्तर आपे वस, वस्त आपणी आप वखाइंदा। आत्म परमात्म सच्चा रस, रस रसीआ रस चखाइंदा। तीर अणयाला मारे कस, बिरहों रोग मिटाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, जोत निरँजण डगमगाइंदा। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, नूर नुराना डगमगाइंदा। मेल मिलाए हस्स हस्स, संसा रोग सर्ब चुकाइंदा। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, निरगुण सरगुण घर घर फेरा पाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। जगत जुग बुझाए तृष्ना प्यास, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, पवण पवणां रंग रंगाइंदा। नाता तुट्टे दस दस मास, मात गर्भ ना फेर लटकाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, हरि सतिगुर विछड़ कदे ना जाइंदा। दरस दिखाए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। चरन कँवल बंधाए नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। नाम अनमुल्ली देवे दात, राम नाम आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम हरि वरताइंदा। हरि का नाउँ एका राम, रमत रमत आपणा भेव चुकाईआ। हरि का नाम इक्को शाम, साची बंसरी नाद सुणाईआ। हरि का नाम इक्को गान, गीत गोबिन्द अल्लाईआ। हरि का नाम बेपहचान, नज़र विच ना आईआ। हरि का नाम गुरू गुर ध्यान, गुर अन्तर मेल मिलाईआ। हरि का नाम अमृत पीण खाण, तृष्ना भुख दए मिटाईआ। हरि का नाम सच ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। हरि का नाम सच निशान, दरगाह साची धाम वखाईआ। हरि का नाम साचा काहन, सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। हरि का नाम वसे सच मकान, थिर घर आपणा डेरा लाईआ। हरि का नाम मेल मिलाए श्री भगवान, भगवन आपणा पड़दा आप उठाईआ। हरि का नाम चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़े लए तराईआ। हरि का नाम काग़ज़ कलम दए

ब्यान, गुर अवतार देण गवाहीआ। हरि का नाम पीर पैग़म्बर करन सलाम, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। हरि का नाम सच पैग़ाम, साची सिख्या दए समझाईआ। हरि का नाम दामनगीर पकड़े दाम, दामन आपणा हथ्थ फड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि का नाउँ करे सच नज़ाम, मेट मिटाए झूठी शाहीआ। हरि का नाउँ सच नयामत, अमृत रस इक्क वखाइंदा। हरि का नाउँ सही सलामत, आदि जुगादि एका रंग रंगाइंदा। हरि का नाउँ हरि अमानत, जन भगतां हथ्थ फड़ाइंदा। हरि का नाउँ देवे सद ज़मानत, एथे ओथे पल्लू आप छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नामा नाम दृढ़ाइंदा। हरि नामा नाम अगम्म अपार, अपरम्पर आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम बोल जैकार, जै जैकारा आप अल्ल़ाइंदा। वरन बरन कर खुआर, ख़बर साची आप सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जुग चौकड़ी गए हार, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। भिक्खक बण बण मंगदे गए भिखार, पुरख अबिनाशी देवणहारा इक्क अख्वाइंदा। दीद ईद नेत्र नैण मंगदे गए दीदार, चरन कँवल कँवल चरन सरन सरन सरन तकाइंदा। पारब्रह्म तेरा ठांडा दरबार, दूजा दर नज़र ना आइंदा। लख चुरासी तेरी गुलज़ार, गुलशन एका एक महकाइंदा। फुल फलवाड़ी विच संसार, पत्त डाल्ह़ी नाल रलाइंदा। बण माली एकँकार, हरि जू साची सेव कमाइंदा। कली कली कर त्यार, कल आपणी आप जणाइंदा। वल छल एकँकार, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा। महांबली वड बलकार, बल आपणा आप जणाइंदा। जोधा सूर कर त्यार, बीरता आपणा नाउँ भराइंदा। खड़ग खण्डा तेज कटार, नाम प्रचण्ड हथ्थ वखाइंदा। तिक्खी रखे दोवें धार, निरगुण सरगुण धार जणाइंदा। लेखा जाणे आर पार, मध आपणी खेल कराइंदा । पंज तत्त तत्त प्यार, परम पुरख मोह वधाइंदा। नाम सति सति जैकार, सति सतिवादी आप कराइंदा। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त भण्डार, सालाहन सलाहकार सहिज सहिज आपणा गुण जणाइंदा। हरि का नाम सच्चा सिक्दार, सिर सिर आपणा हुक्म मनाइंदा। एका अक्खर कर त्यार, निष्अक्खर भेव चुकाइंदा। आदि रचन रच संसार, अन्तिम नर हरि वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क समझाइंदा। साचा नाउँ सोहँ सो, आदि पुरख बीज बजाया। आपणे जिहा आपे हो, आपणा मन्त्र आप पढ़ाया। कर प्रकाश पुरी लोअ, ब्रह्मण्ड खण्ड वसाया। गुर अवतारां ढोआं ढो, साची वस्त झोली पाया। अन्त आपणे ख़ज़ाने रखे खोह, बल आपणा आप वखाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बिन हरि नामे बणया रहे निर्मोह, मोह मुहब्बत ना कोए वड्याआ। बिन भगतां किसे अंग ना सके छोह, लख चुरासी काया चोली दए दुरकाया। एकँकारा सन्त प्यारा नेत्र नैणां लवे रो, नीर नीर नीर बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

६४६
१२

हरि, एका नाम रिहा प्रगटाया। एका नाम प्रगट सो, हँ ब्रह्म जणाइंदा। हँ ब्रह्म प्रभ आपे हो, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। दुरमति मैल देवे धो, धूआँधार गवाइंदा। अमृत रस निझर चो, कँवल मुख खलाइंदा। राम नाम प्रभ आपे हो, एका दे दे सर्ब सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त जुगा जुगन्त, लख चुरासी काया पंज तत्त माटी देवे कोह, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां आप फिराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला इक्क मेहरवान, महिव आपणा हुक्म एका नाउँ वखाइंदा।

✳ १३ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह निधांवाली ज़िला फिरोज़पुर ✳

साचे तख्त बैठ सुल्तान, आदि पुरख आसण लाईआ। निरगुण नूर नूर महान, जोती जाता जोत रुशनाईआ। शाहो भूप राज राजान, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाईआ। इक्क इकेला हुक्मरान, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सति सतिवादी सच निशान, सति पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सच सिँघासण सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। एकँकार बणाए बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाइंदा। आदि निरँजण नूर अनन्त, अनन्त कल आपणी आप धराइंदा। एकँकार महिमा बेअन्त, बेअन्त आपणी खेल वखाइंदा। श्री भगवान साचा कन्त, नर नरायण वेस वटाइंदा। अबिनाशी करता आपे आदि आपे अन्त, आपणा भेव आप छुपाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण मंगत, दर निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे डेरा लाइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। खेले खेल आदि अन्त, अन्त आदि आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण पुरख निरगुण नार निरगुण हरि जू बण बण कन्त, सेज सुहञ्जणी इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दए वड्याईआ। साचा दर दर दरवाज़ा, धुरदरगाही आप खुल्हाइंदा। हक़ मुकाम ग़रीब निवाज़ा, भेव अभेद आप जणाइंदा। भूपत भूप राजन राजा, राउ रंक रूप ना कोए वखाइंदा। निरगुण निरगुण रच रच काजा, आपणी करनी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त आपे चढ़, साचा दर आप सुहाइंदा। साचा दर श्री भगवान, आदि पुरख आप सुहाईआ। इक्क इकल्ला नौजवान, निरगुण आपणा रूप प्रगटाईआ। करे खेल वड मेहरवान, मिहबान आपणी रचना आप समझाईआ।

इक्क इकल्ला जाणी जाण, जानणहार नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर वसे बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। आदि पुरख हो उज्यारा, निरगुण निरगुण नूर धराइंदा। भूपत भूप बण सिक्दारा, हुक्म हाकम आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा बोल जैकारा, जै जैकार आपणे नाउँ अलाइंदा। आप लगाए सच दरबारा, धुर दरबारा वेख वखाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, एका आपणी अलख जगाइंदा। अगम्म अगम्म करे खेल निराकारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणी धार आप बंधाइंदा। आदि पुरख साची धार, इक्क इकल्ला आप बन्नाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, आपे वेख वखाईआ। रूप रंग ते वसया बाहर, रेख नज़र कोए ना आईआ। करे खेल अगम्मड़ी कार, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाईआ। साचा हुक्म हरि भगवाना, भगवन हरि जू आप जणाइंदा। सीस जगदीस इक्क सुहाना, सोभावन्त आप सुहाइंदा। आपणी इच्छया सच मकाना, बेमुकाम आप प्रगटाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए छुहाना, चार दीवार ना कोए वखाइंदा। सूरज चन्द ना कोए रुशनाना, नूर नूर ना कोए समाइंदा। करे खेल वड बलवाना, बल आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, आपणा मन्दिर आपे आप उपाइंदा। एका मन्दिर सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप उपाईआ। आपे पाए आपणी वंड, वंडणहार आप अख्वाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। अगम्म अगम्मड़ा चाढ़े रंग, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। सति सतिवादी इक्क वखाए सच पलँग, पावा चूल ना कोए बणाईआ। निरवैर पुरख इक्क अनन्द, मूर्त अकाल करे रुशनाईआ। सदा सुहेला ना होए सैभं, साहिब सुल्तान आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणी दात आपे मंग, आपे झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारा कर पसारा, निरगुण धारा नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दवारा सच महल्ला, हरि जू हरि हरि आप उपाइंदा। जोती दीपक आपे बला, नूरो नूर नूर धराइंदा। पुरख अकाल इक्क इकल्ला, सति सतिवादी आसण लाइंदा। निरगुण निरगुण फड़ फड़ पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण एका मल्ला, अबिनाशी करता आपणा आसण लाइंदा। सच सिँघासण एका एक, एकँकारा आप सुहाईआ। आदि पुरख एका टेक, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। आपणा मन्दिर आपे वेख, हरि जू हरि हरि खुशी मनाईआ। आपे लिखणहारा लेख, लेखा लिखे ना कलम शाहीआ। निरगुण निराकार अजूनी रहित अनभउ प्रकाश वटाया वेस, वेस अवल्लड़ा आप कराईआ। सति सतिवादी वसया साचे देस,

देस वसे सच्चा माहीआ। आदि जुगादि रहे हमेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे घाड़त घड़, घड़ आपे वेख वखाईआ। सचखण्ड दवारा घाड़न घड़या, घड़नहार आप अख्वाइंदा। बिन पौड़ी डण्डे आपे चढ़या, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। सच सिँघासण आपे खड़या, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। आदि अन्त कदे ना मरया, जन्म मरन विच ना आइंदा। आपणी तरनी आपे तरया, तारनहार आप अख्वाइंदा। आपणी करनी आपे करया, करता पुरख नाउँ प्रगटाइंदा। आपणा वर आपे वरया, नार कन्त अंग लगाइंदा। साची सेजा आपे चढ़या, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण वड़या, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा घाड़न घड़, घड़ घड़ आपणा आप वेख वखाइंदा। सचखण्ड दवारा उच्च मनारा, ऊँचो ऊँच रखाईआ। करे खेल एकँकारा, अकल कल वड वड्याईआ। दीआ बाती इक्क उज्यारा, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। कमलापाती वसे वसणहारा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। साचा मन्दिर सोभनीक, हरि साचा सच सुहाइंदा। इक्क इकल्ला लाशरीक, परवरदिगार डेरा लाइंदा। आप आपणी रख उडीक, मेल मिलावा आपणे हथ्थ जणाइंदा। निरगुण निरगुण कर प्रीत, प्रीतीवान बन्धन पाइंदा। सच दुआरा ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल आप वड्याइंदा। महल अटल सच दरबारा, हरि दरबारी आप सुहाइंदा। इक्क इकल्ला कर पसारा, पुरख अबिनाशी डेरा लाइंदा। घाड़न घड़े अगम्म अपारा, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। जोती जाता जोत उज्यारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहारा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप वड्याइंदा। सचखण्ड दवारा वड्डा वड, हरि जू हरि हरि आप वड्याईआ। आपणी इच्छया कर प्रगट, आपणे अन्तर आप छुपाईआ। आपे खोल्ह साचा हट्ट, निरगुण दाता आप चलाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। आपे जाणे आपणा रस, रस रसया सच्चा माहीआ। निरगुण अंदर निरगुण होवे वस, दूजा बन्धन ना कोए रखाईआ। प्रेम प्यार अंदर पारब्रह्म प्रभ जाए फस, घर मन्दिर सोभा पाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी गाए जस, रागी आपणा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवार बणत बणाईआ। सचखण्ड दवार बणत, हरि सज्जण दया कमाइंदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, बेअन्त रूप वटाइंदा। मेल मिलावा नार कन्त, कन्त कन्तूहल दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा राह चलाइंदा। भगवन चले आपणा

राह, रैहबर एका एक अख्वाईआ। सचखण्ड दवारा आप सुहा, सुहबत आपणे नाउँ वड्याईआ। सच सिँघासण डेरा ला, तख्त निवासी वेख वखाईआ। निरगुण निरगुण बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सिफ्त सालाही दए सलाह, सलाहगीर इक्क रघुराईआ। आपणा मेला मेल मिला, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। नारी कन्त लए हंढा, घर साचे वज्जे वधाईआ। जननी जन बणे खुदा, बेनज़ीर नज़र नैण इक्क उठाईआ। दाई दाया बण सेवा लए कमा, सेवक आपणा नाउँ रखाईआ। पूत सपूता लए जा, वार थित ना कोए रखाईआ। आपणी गोदी लए उठा, जोती जाता मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारे चाउ घनेरा, सो पुरख निरँजण आप रखाइंदा। लहिणा जाणे तेरा मेरा, मेरा तेरा आपणा रूप वटाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण डेरा, पुरख अकाल आप लगाइंदा। सति पुरख निरँजण पा पा फेरा, पर्दानशी पर्दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला आप वड्याइंदा। सच महल्ला हरि भगवाना, सचखण्ड दवार दए वड्याईआ। करे खेल इक्क महाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सुत दुलारा बाल अञ्याणा, शब्दी शब्द उपजाईआ। करे खेल गोपी कान्हा, घर मन्दिर रास रचाईआ। साची सखी कर परवाना, सति परवानगी इक्क जणाईआ। बोध अगाधी दे दे दाना, दाता दानी खुशी मनाईआ। जोधा सूरबीर मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप वखाईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवाना, सचखण्ड दवारे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, भिक्खक देवे माण वड्याईआ। राजन शाहो भूप आप, घर आपणे दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी वड प्रताप, परम पुरख आप प्रगटाइंदा। निरगुण निरगुण माई बाप, पिता पूत खेल कराइंदा। आप प्रगटाए आपणी ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल आप धराइंदा। साची कल अकल कल धार, पुरख अबिनाशी खेल कराईआ। सचखण्ड निवासी हो त्यार, निरगुण निरगुण लए उपाईआ। पूत सपूते दे हुलार, गोदी गोद गोद वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सचखण्ड दवारे आप कराइंदा। शब्दी सुत कर प्यारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका हट्ट खोल्ह वणजारा, नाम वस्त विच रखाइंदा। शब्द संदेसा एकँकारा, आदि जुगादी आप सुणाइंदा। हुक्मी हुक्म कर वरतारा, हुक्मी हुक्म आप भुवाइंदा। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़ा, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। सचखण्ड वखाए सच दुआरा, जिस घर हरि जू डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाइंदा। साची सिख्या एकँकार, एका वार जणाईआ। सुत शब्द रहिणा ख़बरदार, बेख़बर

आप उठाईआ। तेरी महिमा अगम्म अपार, अलख अगोचर करे पढ़ाईआ। तेरी सिफ्त करे आप करतार, आपणी सिफ्त तोहे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क जणाईआ। सच सुनेहड़ा इक्क इकल्ला, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। थिर घर तेरा वसे महल्ला, महिफ़ल तेरे नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या साख्यात, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। साची सिख्या सुण लै बाल, हरि साचा सच जणाईआ। पुरख अबिनाशी उपज्या इक्को लाल, एकँकारा होए सहाईआ। सो पुरख निरँजण बण दलाल, हरि पुरख निरँजण करे कुड़माईआ। आदि निरँजण दीपक बाल, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान तेरा हल्ल करे सवाल, दर तेरे फेरा पाईआ। अबिनाशी करता देवे सच्चा धन माल, अतोट अतुट इक्क वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ घाले तेरी घाल, बण सेवक सेव कमाईआ। हरि का नाउँ तेरा निशान, सच निशाना दए झुलाईआ। वस्त अमोलक देवे दान, अनडिठड़ी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाईआ। साचा भेव हरि करतारा, आदि पुरख चुकाईआ। शब्दी सुत तेरा सच पसारा, हरि साचा सच वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरा सहारा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। मंडल मण्डप तेरा अखाड़ा, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। रवि ससि सूरज चन्न चन्न सतारा, किरन किरन नूर रुशनाईआ। नाद धुंन शब्द जैकारा, अनरागी राग अलाईआ। विष्नूं विश्व तेरा पसारा, वास्तक एका गंढु रखाईआ। अमृत झिरना अगम्म अपारा, रिसक आपणा आप रिसाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म पारब्रह्म अधारा, ब्रह्म लेखा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा सुण लै सुत, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। त्रै पंज मेला अबिनाशी अचुत्त, हरि जू हरि हरि आप मिलाइंदा। लख चुरासी काया बुत्त, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण सुहाए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। तेरा हाल लए पुच्छ, दर दर घर घर फेरा पाइंदा। देवे वड़याई इक्को सुच्च, सुच्च आपणे नाउँ जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल हरि जू दस्स, एका गुण जणाईआ। पारब्रह्म पुरख समरथ रच, रचना वेख वखाईआ। निरवैर पुरख चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां विष्न ब्रह्मा शिव सुणाए आपणी गाथ, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाईआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर हरि जू वसे साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। इक्क इकल्ला सुणे सर्ब फ़रयाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क पढ़ाईआ। सच संदेसा एका पढ़ना, बसन बनवारी आप जणाइंदा। सचखण्ड दवारे साचे

६५४
१२

वड़ना, राह विच ना कोए अटकाइंदा। निरभउ चुकाए भय डरना, भय भयानक ना कोए वखाइंदा। सरन मिले साची सरना, सरनाई इक्को इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख सच संदेसा, नर नरेशा इक्क जणाइंदा। नर नरेशा साचा गीत, नर हरि आप जणाईआ। सुत शब्द तेरी साची रीत, पुरख अबिनाशी रिहा वखाईआ। थिर घर वसणा धाम अनडीठ, अनडिठड़ी सेज हंढाईआ। आदि जुगादि सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क सिखाईआ। साची सिख्या लई सिख, सुत शब्दी सीस झुकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ लेखा देणा लिख, तेरा लेख ना कोए मिटाइंदा। निज नेत्र पैणा दिस, नित नवित दरस तेरा मोहे भाइंदा। एका नाम दे दे हिस, दूसर वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा नाम वर, दर साचे मंग मंगाइंदा। नाम वर दे भगवान, हउँ भिखारी मंग मंगाइंदा। नज़री आए साचा काहन, दूसर रूप ना मोहे भाइंदा। सचखण्ड झुल्ले तेरा निशान, निशाना होर ना कोए झुलाइंदा। सति दुआरा तेरा मकान, मुकाम होर ना कोए वखाइंदा। धुर फ़रमाणा तेरा फ़रमाण, फ़रमांबरदार सेव कमाइंदा। एका दस्स सच्चा गान, गा गा तेरी खुशी मनाइंदा। हउँ बाली बुध अञ्याण, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। तेरे चरनी डिगा आण, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। कर किरपा वड मेहरवान, मेहरवान मेहरवान तुध बिन मेहर नज़र ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या पहली वार, आपे दस्से हरि निरँकार, सचखण्ड बैठ सच्ची सरकार, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा साचा ढोला, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण लाहे ओहला, पर्दा पर्दा आप चुकाइंदा। एकँकारा एका बोला, अकल कल आपणी खेल जणाइंदा। आदि निरँजण हो अडोला, अडोल अडुल दया कमाइंदा। अबिनाशी करता बण बण तोला, साचा कंडा इक्क वखाइंदा। श्री भगवान दए झकोला, सच हुलारा इक्क लगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ अन्तर अन्तर मौला, मवल मवल आपणी खुशी मनाइंदा। सति सतिवादी आपणा करे साचा कौला, कीता कौल आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा भेव खुल्हाइंदा। सुत दुलारे लैणा जाण, जाणी जाण आप जणाईआ। जिस रचना रची तेरी आण, सो साहिब सुल्तान पुरख रिहा समझाईआ। आदि जुगादि जुगो जुग सच्चा गाण, गावणहारा आप सुणाईआ। निरगुण निरगुण वेख बबाण, बबाणा आप उडाईआ। निरगुण निरगुण इक्क मकान, सच मकान आसण लाईआ। निरगुण निरगुण इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। निरगुण निरगुण एका माण, एका ओट रखाईआ। निरगुण निरगुण करे पछाण, घर साचे वज्जे वधाईआ। तूं मेरा छोटा पुत्त बाल निधान,

सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। एका देवां सच निशान, दो जहान झुलाईआ। भुल्ल ना जाणा बण अञ्याण, हरि बालक दए वड्याईआ। एका रस पीण खाण, तृष्ना भुख ना कोए जणाईआ। एका गाउणा साचा गान, गा गा खुशी मनाईआ। तेरा मेला श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ दए समझाईआ। साचा नाउँ हरि जू रख, आपणा खेल कराइंदा। थिर घर दुआरे हो प्रतख, हरि शब्दी वंड वंडाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा बोल अलख, अलख अलख आप सुणाइंदा। घर विच घर कर कर वक्ख, वक्खरी धार बंधाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, पारब्रह्म प्रभ अग्गा राह चलाइंदा। एकँकारा एका देवे वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। अन्तर अन्तर आपे वस, वस वस आपणी खुशी वखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा जस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। तेरा मेरा इक्को जस, हरि जू आख सुणाईआ। सच दुआरे जाणा वस, दूजा शरीक नज़र कोए ना आईआ। हरि पुरख मिलावा हस्स हस्स, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत नूर प्रकाश, शब्दी शब्द धुंन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वसावणहारा एका घर, घर मन्दिर डेरा लाईआ। घर मन्दिर वसे थिर घर, सचखण्ड निवासी आप वसाईआ। शब्द सुत लगाए तेरी जड़, आदि अन्त ना कोए उखड़ाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी सिर तेरे हथ्थ धर, देवे चरन सरन सरनाईआ। एका एक एक लैणा पढ़, बिन अक्खर कर पढ़ाईआ। साचा पल्लू लैणा फड़, पल्लू कोए छड्ड ना सके राईआ। तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव ना राईआ। सुण संदेसा चढ़े चाउ घनेरा, चाउ एका एक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचा नाता लए जुड़ाईआ। साचा नाता पिता पूत, सचखण्ड निवासी आप जुड़ाइंदा। एका तागा एका सूत, एका गंढु वखाइंदा। एका दिशा एका कूट, एका मन्दिर आसण लाइंदा। इक्क सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। कर खेल अबिनाशी अचुत्त, आप आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ एका वार समझाइंदा। साचा नाउँ सोहँ रूप, हरि हरि आप जणाईआ। शाह सुल्ताना साचा भूप, निरगुण निरगुण लए समझाईआ। थिर घर वसे साची कूट, कुटीआ एका एक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, सोहँ तेरी धार चलाईआ। सोहँ धार तेरी एक, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। तेरा मन्दिर आपे वेख, आपणा डेरा लाइंदा। आपे लिखणहारा लेख, लिख लिख लेखा आप जणाइंदा। आपे धरनहारा भेख, भेखी आपणा रूप वटाइंदा। आपे विष्नूं देवे टेक, विश्व आपणी कल जणाइंदा। सोहँ रूप सदा बबेक, ववेकी आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सोहँ धार सच समझाइंदा। सोहँ धार पारब्रह्म, प्रभ एका एक जणाईआ। ब्रह्मा वेता लए जम्म, बण धन्न जणेंदी माईआ। एका राग सुणाए बिन कन्न, अनादी नाद सुणाईआ। निरगुण निरगुण बेड़ा बन्न्, साचे मार्ग लए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म सोहँ रूप वखाईआ। सोहँ रूप धूआँधार, सुन्न अगम्म समाइंदा। सोहँ रूप शब्द धुन्कार, अनादी नाद वजाइंदा। सोहँ रूप आप करतार, करता पुरख खेल कराइंदा। सोहँ शंकर दए आधार, आप आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ एका घर वसाइंदा। सोहँ वसे साचे घर, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव घाड़न घड़, घड़ घड़ वेखे चाँईं चाँईंआ। घर घर सेजा आपे चढ़, बह बह आसण लाईआ। निरगुण अंदर निरगुण फड़, फड़ फड़ बन्धन पाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, पढ़ पढ़ आप सुणाईआ। आपे वेखे चोटी जड़, जड़ जड़ आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ एका राग सुणाईआ। सोहँ राग विष्न ब्रह्मा शिव धार, हरि साचा आप उपाइंदा। सोहँ मेला त्रैगुण प्यार, रजो तमो सतो गंढु पुवाइंदा। सोहँ लेखा पंज तत्त आधार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रूप वटाइंदा। सोहँ खेल लख चुरासी घाड़न घड़े अपर अपार, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा । सोहँ रूप आत्म परमात्म दए आधार, ईश जीव गंढु पुवाइंदा। सोहँ रूप ब्रह्म पारब्रह्म कर पसार, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। सोहँ रूप रवि ससि सूरज चन्न उज्यार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां बणत बणाइंदा। सोहँ रूप मन मति बुध कर पसार, काया कंचन गढ़ु बंक वड्याइंदा । सोहँ रूप पंज तत्त तत्त आकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना मोह प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत सुत अबिनाशी, अबिनाशी करता आप जणाइंदा। सुण सुत हरि नाम संदेसा, हरि जू हरि हरि आख सुणाया। रसना गाए विष्न ब्रह्म महेषा, गहर गम्भीर गम्भीर अलाया। दो जहान इक्क हदीसा, हरि जू हरि हरि आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत सुत उठाईआ। उठया सुत वड बलवान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। वाह वा तेरा खेल श्री भगवान, तेरी महिमा गणत गणी ना जाईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, बण चाकर सेवक सेव कमाईआ। लख चुरासी कर प्रधान, चारे खाणी वंड वंडाईआ । चारे बाणी बोल बेज़बान, ज़ेर ज़बर ना कोए लगाईआ। हक़ मुकामे इक्क अमाम, ईमान इक्को इक्क जणाईआ। दरगाह साची सच निशान, धुर दरगाही हथ्थ झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद चला तोहे रज़ाईआ। सद चलां तेरी रज़ा, रहिमत रख मेरे गुसाईआ। आदि जुगादि देणी ना कोए सज़ा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। साची

६५७
१२

६५८
१२

सेवा देणी समझा, समझ समझ नाल मिलाईआ। अल्फ़ ये ना नून पढ़ा, हमज़ा रूप ना कोए वटाईआ। नूरी जोत पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आपणा पर्दा देणा चुकाईआ। तेरा ढोला लवां गा, सोहँ अक्खर इक्क सुणाईआ। लख चुरासी काया चोला लवां बदला, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। पड़दा ओहला दयां उठा, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। साचा ढोला एका गा, गावत गावत ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण दुआरे तेरा सति सरूप, कवण वखाए साची कूट, कवण दिशा फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी सतिगुर मीता, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। लख चुरासी तेरी रीता, ब्रह्म पारब्रह्म रूप वटाइंदा। करे खेल अगम्म अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। त्रैगुण माया तपे अंगीठा, पंज तत्त अग्नी हेठां डाहइंदा । प्रगट हो पत्तत पुनीता, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। त्रैभवन धनी इक्क अतीता, त्रैगुण पर्दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ साचा रूप वखाइंदा। सोहँ रूप हरि करतार, गुर शब्दी शब्द जणाईआ। प्रगट कर गुरू अवतार, एका रंग समाईआ। खेल खेल जुग चौकड़ी चार, चार चार वंड वंडाईआ। पीर पैग़म्बर कर त्यार, कलमा नबी इक्क पढ़ाईआ। कायनात कर बेदार, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कोटन कोटि नाउँ रख विच संसार, पुरख अबिनाशी आपणी सिफ्त कराईआ। कोटन कोटि गुरू अवतार, छोटे बाले लए प्रगटाईआ। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर कढ्ढण वगार, दस्तगीर देण दुहाईआ। कोटन कोटि राम कृष्न बण बण फ़रमांबरदार, दर दर घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणी धार चलाईआ। सोहँ धार पीर पैग़म्बर, परवरदिगार आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण सच अंडबर, सरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म रच सुअम्बर, जोती जाता जोड़ जुड़ाइंदा। सर्ब कला आपे भरतम्बर, भरपूरी वेख वखाइंदा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी रच अडम्बर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। साची सिख्या सोहँ सो, सो पुरख निरँजण खेल कराईआ। गुर अवतारां बीज बो, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाईआ। निझर झिरना अमृत चो, रस रसीआ इक्क वखाईआ। नेत्र लोचण साची लो, नैण नैण आप खुल्हाईआ। तेरा नाउँ ढोआ देवे ढो, वस्त अमोलक झोली पाईआ। हरि का भेव ना जाणे को, गुर अवतार नैण शरमाईआ। आपणे जेहा आपे हो, आपणी करवट लए बदलाईआ। आदि जुगादी बणया रहे सदा निर्मोह, मोह मुहब्बत ना किसे वखाईआ। बिन भगतां किसे नाल ना जाए छोह, अंग नाल अंग ना कोए मिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार सचखण्ड दवारे बिन नानक सके ना कोई छोह, चरन कँवल ना कोए सरनाईआ।

आपणा आपणा आपे आप रहे जोह, आपणा बल आप वड्याईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता कलयुग अन्तिम सब दी इच्छया सब दे कोलों लवे खोह, हथ्थां ख़ाली चारों कुण्ट फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सुत दुलारे पल्लू फड़, साची गंढु पुवाईआ। घर मन्दिर वज्जे साची नौबत, नईया एका नाम वखाईआ। आदि जुगादि जुग जुग जाणे आपणी सुहबत, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा समझाईआ। सुत दुलारा कर अरदास, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाश, तोहे तेरा वेख वखाइंदा। मंडल मण्डप तेरी रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। तेई अवतार रसन स्वास, तेरा नाउँ ध्याइंदा। भगत अठारां नेत्र नैण नेरन नेर मंगण तेरा साथ, दोए जोड़ जोड़ मंग मंगाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद सजदा सीस जगदीस दए झुका, पुरख अबिनाशी नेत्र नैण नैण झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर दरवेश, बैठे अलख जगाईआ। पुरख अबिनाशी नर नरेश, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। चार कुण्ट चार वरन चौथे युग चले ना कोई पेश, चार यारी रही कुरलाईआ। ख़ाली हथ्थ फिरे विष्न ब्रह्म महेष, सच भण्डार ना कोए वरताईआ। अल्ला राणी खुलड़े केस, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। नेत्र लोचण रही वेख, मीआं नज़र किसे ना आईआ। सच्चा साहिब ना करे हेत, बैठा मुख भुवाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां कलयुग अन्तिम सुंञा होया खेत, पत्त डाल्ही ना कोए महकाईआ। पारब्रह्म दा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग लभ्भदे रहे भेत, हरि जू भेत ना किसे जणाईआ। किसे दस्सया वसे काया खेत, किसे नूरो नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप जणाए साचा मन्त्र, मन्त्र इक्को नाम दृढ़ाईआ। साचा मन्त्र इक्को आदि, आदि पुरख उपाया। जुगा जुगन्तर दे दे दाद, गुर पीर अवतार आप पढ़ाया। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड हुक्म चलाया। दो जहान वजाए नाद, लोआं पुरीआं आप सुणाया। खाणी बाणी बोध अगाध, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान लए प्रगटाया। लेखा जाणे जुग जुगादि, जीव जंत भेव ना राया। भगत भगवन्त उठाए साचे साध, सन्त सतिगुर वेख वखाया। लख चुरासी विच्चों काढ, एका ढोला गीत अल्हाया। तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी इक्को याद, साची याद विसर ना जाया। नानक निरगुण सुण फ़रयाद, सरगुण नानक लेखे लाया। सचखण्ड निवासी देवे इक्को दाद, मन्त्र सति सति पढ़ाया। जीउ पिण्ड साची रास, मंडल मण्डप आप वखाया। हरि जू बैठा इक्क इकांत, सच सिँघासण सोभा पाया। लख चुरासी भरम भरांत, जो घड़या भन्न वखाया। पुरख अबिनाशी इक्को पिता मात, धन्न धन्न जणेंदी माया। आदि जुगादी देवणहारा दात,

गुर अवतारां आप वरताया। कर किरपा बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। एका नाउँ सुणाए गाथ, साचा ढोला आप अलाया। नानक निरगुण कहे तूं मेरा सच्चा बाप, पिता पूत सहिज सुखदाया। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ तेरा सच्चा जाप, जपत जपत जपत सुख पाया। एका जोती खेल तमाश, दस दस आपणा रंग रंगाया। गोबिन्द दिता हरि जू साथ, पुरख अकाल वेस वटाया। पिता पूत माई बाप, बेटा बेटी गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि मन्त्र एका एक दृढ़ाया। इक्क दृढ़ाए नर हरि, हरि जू आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए वर, हरि कन्त आपणे अंग लगाइंदा। फड़ फड़ बांहों बिठाए दर, दर इक्को सोभा पाइंदा। रूप वखाए नारी नर, नर नरायण खेल कराइंदा। आत्म परमात्म सेजा चढ़, भोग बलास इक्क कराइंदा। बिन तन्दी तार लए फड़, शब्द डोरी बन्धन पाइंदा। अंदर वड़ वड़ डूँघी कंदर साचे मन्दिर निरगुण अक्खर रहे पढ़, निरगुण आपणा नाउँ बुझाइंदा। सोहँ रूप ना कोई सीस ना कोई धड़, आत्म परमात्म एका रंग वखाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग कलयुग अन्तिम गया हर, हरि का राह ना कोए वखाइंदा। अठसठ तीर्थ ना कोए सर, सरोवर मजन ना कोए कराइंदा। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले आवे डर, पुरख अबिनाशी नज़र किसे ना आइंदा। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी ज्ञान ध्यान पढ़ पढ़ थक्के मूँह दे भार डिगे डूँघी गार, फड़ फड़ बांहों पार ना कोए कराइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा नौ खण्ड पृथ्मी आवे डर, झूठा झेड़ा ना कोए मुकाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार पुरख अबिनाशी अग्गे अरदासे रहे कर, अरज़ोई हरि जू अग्गे सर्ब सुणाइंदा। तेरी कीती तूं हे जाणें तेरा सोहे साचा दर, दर तेरा तेरी वंड वंडाइंदा। तेरे हुक्मे अंदर तेरी बाणी आए पढ़, तेरा कलमा कायनात अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को तेरा साचा घर, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। इक्को दर सच्चा दरबारा, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। पीर पैग़म्बर कढ्ढण हाढ़ा, बौहड़ी बौहड़ी रहे कुरलाईआ। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, चार यार ना धीर धराईआ। सदी चौधवीं होए खुआरा, उम्मत संग ना कोए निभाईआ। चौदां लोक लग्गा अखाड़ा, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। तेरा नूर नज़र ना आए कोए उज्यारा, जगत अन्धेरा एका छाईआ। मक्के काअबे ना कोए पसारा, दो दो आबा ना मेल मिलाईआ। आबेहयात ना मिले ठंडा ठारा, रसना रस ना कोए चखाईआ। अहिबाब रबाब वजाए ना कोए सितारा, तन्दी तन्द ना कोए हिलाईआ। भुलया नाउँ तेरा परवरदिगारा, अञ्जील कुरान रहे कुरलाईआ। तीस बतीस कट के गए वगारा, तेरी सिफ्त ना किसे सालाहीआ। इक्को तेरा अन्त सहारा, गल पल्लू बैठे पाईआ। शरअ शरीअत पार किनारा, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त वखाउणा

६६०
१२

साचा घर, जिस घर मिले सच्चा माहीआ। साचा माही एकँकारा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आदि रचया आप पसारा, अन्त आपे वेखण आइंदा। लहिणा देण चुकाए तेई अवतारा, भगत अठारां लेखा लेखे लाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद पाए सारा, धारा गुर गुर आप जणाइंदा। कलयुग अन्त हो उज्यारा, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यारा, महल अटल आप वड्याइंदा। चार युग दा अन्त किनारा, कलयुग अन्तिम आप वखाइंदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाइंदा। पिछला मेटे सर्ब विहारा, अगला आपणा राह वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड बोले इक्क जैकारा, विष्न ब्रह्मा शिव आप सुणाइंदा। करोड़ तेतीसा लाए नाअरा, सुरपति इन्द सिफ्त सालाहइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार रसना बोलण सच जैकारा, तेरा मेरा मेरा तेरा एका घर वसाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, समुंद सागर नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। बनास्पत ना करे कोए प्यारा, पारब्रह्म आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। हरि का अन्त ना पारावारा, लिख लिख लेख ना कोए जणाइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। भगतन करे सच प्यारा, भगवन आपणा भेव चुकाइंदा। भगत भगवान मार्ग दस्से विच संसारा, चार वरन आप समझाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश पार किनारा, ऊँच नीच राउ रंक ना कोए वड्याइंदा। सर्ब जीआं दा इक्क दुआरा, इक्को घर वखाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सचखण्ड दवारे हरि निरँकारे इक्क सुणाए सच जैकारा, जै जैकार आपणा नाउँ सुणाइंदा। सतिजुग चले सच विहारा, करे कराए करनेहारा, करता कीमत कुदरत कादर आपे पाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दो जहानां इक्क जैकारा, सति सतिवादी आप समझाइंदा। सोहँ रूप सर्ब संसारा, संसार सागर रूप वटाइंदा। हँ ब्रह्म इक्क आधारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्त वेखे साचा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। दर दरवाज़ा खोल्ह मात, हरि जू आपणी खेल कराईआ। भगत भगवान खोल्हे ताक, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। निर्मल जोत जगाए ललाट, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। आत्म परमात्म सोए साची खाट, सेज सुहञ्जणी इक्क हंढाईआ। दूर दुराडी मेटे वाट, नेरन नेर नज़री आईआ। माणस जन्म पार घाट, फड़ बांहों पार कराईआ। निरगुण मिले निरगुण ज़ात, गुरमुख गुर गुर विच समाईआ। लेखा लिख्या बिन कलम दवात, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। भगत भगवान पुच्छे वात, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। चार युग दा लहिणा सुट्टे डूँघे खात, कोई सके ना बाहर कढ्ढाईआ। अन्तिम मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। अठ्ठे पहर रहे प्रभात, एका रंग दए रंगाईआ। सोहँ शब्द साची दात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आप वरताईआ। नाता तुट्टे ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए

जणाईआ। सर्ब जीआं प्रभ वसे साथ, घर घर बैठा डेरा लाईआ। उठो सिखो वेखो मार झात, बिन नैणां दरस दिखाईआ। रातीं सुत्तयां पुच्छे वात, फड़ बांहों गोद बहाईआ। लेखा जाणे बण बण पिता मात, पूत गोद सुहञ्जणी आप उठाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, नाता तोड़ सर्ब लोकाईआ। सोहँ चोला साची गाथ, गुरमुख गुर गुर लए जणाईआ। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। मेल मिलावा त्रिलोकी नाथ, मुकंद मनोहर लखमी नरायण नज़री आईआ। राम रमइया वसे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद पुच्छे वात, बीती कहाणी आप जणाईआ। नानक गोबिन्द चाढ़े राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। कलयुग लहिणा सुट्टे डूँघे खात, जूठ झूठ दए मिटाईआ। सतिजुग साचा लगाए विच मात, धरत मात गोद सुहाईआ। अंदर वड़ वड़ पुच्छे वात, निरगुण दाता दया कमाईआ। इक्क दूजे दा कोई ना करे घात, लख चुरासी नाता जोड़े भैण भाईआ। बिन नारी कोई किसे वल ना सके झाक, अक्ख अक्ख ना कोए उठाईआ। भाग लगाए तन माटी खाक, ख़ाकी ख़ाक दए वड्याईआ। बन्द ताक खोल्हे आप, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। अनहद शब्द अनादी आप जणाए आपणा जाप, छत्ती राग भेव ना आईआ। आत्म परमात्म साचा पाठ, बिन रसना जिह्वा गाईआ। सर सरोवर इक्को मारे ठाठ, अमृत आत्म दए जणाईआ। मेल मिलाए कमलापात, कँवल नैण होए सहाईआ। जन्म जन्म दा मेट संताप, दुक्खड़े दर्द दए गंवाईआ। दुरमति मैल देवे काट, मस्तक धोवे झूठी शाहीआ। करे प्यार जिउँ माई बाप, गुरमुख गुरसिख गोद बहाईआ। नेड़ ना आयण तीनों ताप, त्रैगुण अग्न ना कोए लगाईआ। निरगुण सरगुण बणे सज्जण साक, सगल कुटम्ब आप अख्वाईआ। गुरसिख तेरा कोए ना करे घात, छुरी ज़बाह ना कोए कराईआ। गऊ ना खाए कोई मास, सूर हड्ड ना कोए चबाईआ। हरि का नाउँ जपण स्वास स्वास, सतिजुग साचा ढोला गाईआ। इक्क दूजे दे वसण पास, घर घर ना पए लड़ाईआ। पिता पूत इक्को शाख़, पत्त डाल्ही इक्क महकाईआ। दरस दिखाए हरि जू बहु बिध भांत, अनभउ प्रकाश दृढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छे वात, राजयां राणयां दए सज़ाईआ। अन्तिम मेट अन्धेरी रात, धूआँधार दए गुवाईआ। प्रभ नज़री आए पाकी पाक, नबी रसूल सीस झुकाईआ। गोबिन्द तेरा पूरा करन आया भविख्त वाक्, कल कल्की फेरा पाईआ। पत्तण आया चल के घाट, इक्की इक्की पार कराईआ। बहत्तरां पुच्छे आपे वात, वातावरन ना कोए दृढ़ाईआ। सत्तरां दिता साचा साथ, सरसा ढह प्या सरनाईआ। चुहत्तरां खोल्ह इक्को अक्ख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। हरिसंगत हरि जू लए रख, जो चल आए सरनाईआ। सचखण्ड दवारे लए ढक, अन्तिम आपणा पड़दा पाईआ। करे नबेड़ा हक़ो हक़, हक़ीक़त वेखे ख़लक खुदाईआ। कलयुग फल गया पक्क,

अन्त हलूणा इक्को लाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा कोई ना सके नट्ठ, हरि सतिगुर घेरा इक्को पाईआ। मनमुखां खेड़ा होणा भट्ठ, वेले अन्त ना कोए बचाईआ। प्रभ गेड़नहारा लट्ठ, उलटा गेड़ा रिहा दिवाईआ। निरगुण दाता हो प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाईआ। बाहरों दिसे गंवार जट्ट, अंदर गोबिन्द सच्चा माहीआ। दो जहान चलाए हट्ट, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां चरनां हेठ दबाईआ। शब्द नगारे लाए सट्ट, अनहद नादी नाद वजाईआ। गुरसिखां नज़री आए घट घट, मनमुखां कोलों बैठा मुख छुपाईआ। शब्द दुशाला इक्को रखे पट्ट, तन्दी तन्द तन्द उठाईआ। जिस दे पिच्छे गुर गोबिन्द सत्थर बैठा घत, सो सतिगुर फेरा पाईआ। करे खेल पुरख समरथ, दूसर चले ना कोए चतुराईआ। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जिस आपणा दरस दिखाईआ। एका महिमा सुणाए अकथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जन्म जन्म दे कर्म देवे मथ्थ, निहकर्मी आपणी दया कमाईआ। फड़ के मेले आपणे हथ्थ, हथ्थो हथ्थी लहिणा रिहा चुकाईआ। पहलों गुरसिखां दे अंदर वड़ के आपे जाए ढट्ठ, फेर गुरमुख आपणे चरन लगाईआ। नाता तोड़ तत्त अठ्ठ, तत्तव तत्त इक्क समझाया। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त लेखे लाईआ। सर्ब जीआं देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त इक्को ढोला जुग जुग बदले आपणा चोला, चोली काया तन रंगाईआ। चोली तन रंग मजीठ, गुर गुर शब्दी शब्द रंगाइंदा। नाम सुहागी गा गा गीत, गोबिन्द आप अल्ह़ाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लेखा जाणे हस्त कीट, कीट कीटां विच समाइंदा। जुग चौकड़ी गई बीत, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्क अतीत, त्रैगुण माया वेख वखाइंदा। प्रगट करे दर दरबार ठांडा सीत, भगत दुआर नाउँ प्रगटाइंदा। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, गुरसिखां अंदर डेरा लाइंदा। जिस साहिब रख्या चीत, चितवित ठगौरी कोए ना पाइंदा। सतिजुग सच चलाए रीत, काया मन्दिर इक्क वड्याइंदा। आत्मा परमात्मा बन्न्ह सच प्रीत, प्रीती इक्को इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण ढोला सोहँ सो, आप सुणाए आपणे जेहा हो, पंज तत्त ना कोए रखाइंदा।

✳ १४ भाद्रों २०१६ बिक्रमी अर्जन सिँघ बस्ती ख़लील ज़िला फिरोज़पुर ✳

आदि जुगादि एका नाउँ, हरि एका एक उपजाइंदा। आदि जुगादि एका थाउँ, हरि दरगाह साची धाम सुहाइंदा। आदि जुगादि एका पिता एका माउँ, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आदि जुगादि सदा सुहेला इक्क इकेला देवे ठंडी छाउँ,

समरथ पुरख सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आदि जुगादि एका एक करे पसाओ, निरगुण निरगुण भेव चुकाइंदा। आदि जुगादि एका एक घनेरा चाओ, चाओ आपणे अन्तर आप प्रगटाइंदा। आदि जुगादि एका करे सच न्याउँ, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। आदि जुगादि एका नाम, आदि पुरख आप प्रगटाईआ। आदि जुगादि एका काम, करनी करता आप कमाईआ। आदि जुगादि एका ग्राम, गृह मन्दिर इक्क वड्याईआ। आदि जुगादि एका राम, राम रमइया सच्चा माहीआ। आदि जुगादि एका शाम, वड घनईया सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि इक्क सलाम, अलैकम आपणा नाउँ वड्याईआ। आदि जुगादि एका दान, हरि जू हरि हरि आप वरताईआ। आदि जुगादि इक्क निशान, श्री भगवान आप झुलाईआ। आदि जुगादि एका बख्शे माण, निमाणयां होए सहाईआ। आदि जुगादि एका काहन, मंडल मण्डप रास रचाईआ। आदि जुगादि एका वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। आदि जुगादि एका मन्दिर इक्क मकान, मुकामे हक़ इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादि एका नाद, अनाद अनादी आप वजाइंदा। आदि जुगादि एका दाद, निरगुण निरगुण झोली पाइंदा। आदि जुगादि इक्क स्वाद, रस रसीआ आप रखाइंदा। आदि जुगादि एका मोहण माधव माध, मोहणी रूप आप वटाइंदा। आदि जुगादि एका साजण लए साज, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। आदि जुगादि इक्क अगम्मी मारे आवाज़, दो जहानां आप सुणाइंदा। आदि जुगादि इक्क इकल्ला ग़रीब निवाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादी एका घर, घर मन्दिर दए वड्याईआ। आदि जुगादी एका नर, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादी एका वर, हरि कन्त आपणा बन्धन पाईआ। आदि जुगादी एका घाड़न घड़, घड़ वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि जुगादी इक्क महल्ले बहे चढ़, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। आदि जुगादी इक्क फड़ाए साचा लड़, पल्लू आपणे गंढु पुवाईआ। आदि जुगादी एका दरस दिखाए अग्गे खड़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि जुगादी इक्क वखाए साचा सर, सर सरोवर एका एक नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादी एका धार, हरि साचा सच प्रगटाइंदा। आदि जुगादी एका कार, करता पुरख आप कमाइंदा। आदि जुगादी इक्क विहार, बिवहारी आप जणाइंदा। आदि जुगादी इक्क वणजार, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। आद जुगादी इक्क सतार, बिन तन्दी तन्द वजाइंदा। आदि जुगादी एका नार, नर हरि आपणी सेज हंढाइंदा। आदि जुगादी इक्क प्यार, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। आदि

जुगादी इक्क उज्यार, कमलापाती आप कराइंदा। आदि जुगादी इक्क शंगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सोभा आपे पाइंदा। आदि जुगादि एका रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। आदि जुगादि एका संग, सगला संग सहिज सुखदाईआ। आदि जुगादि इक्क पलँग, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। आदि जुगादि इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच प्रगटाईआ। आदि जुगादि इक्क सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि इक्क छन्द, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। आदि जुगादि एका बंध, बन्धन आपणा नाम पाईआ। आदि जुगादि एका गंढु, निरगुण निरगुण गंढु पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आदि जुगादी एका राह, हरि रैहबर आप चलाइंदा। आदि जुगादी इक्क मलाह, पुरख अबिनाशी सेव कमाइंदा। आदि जुगादी इक्क सलाह, सलाहगीर आप हो जाइंदा। आदि जुगादी एका थाँ, दरगाह साची धाम वड्याइंदा। आदि जुगादी एका नाँ, नाउँ निरँकारा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल कराइंदा। आदि जुगादी एका वेस, वेस अवल्लड़ा आप कराईआ। आदि जुगादी एका देस, साचे देस वसे सच्चा माहीआ। आदि जुगादी इक्क नरेश, नर हरि आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। आदि जुगादी इक्क आदेस, आदेस आदेस कर कर सीस झुकाईआ। आदि जुगादी एका एक लए पेख, पेखणहारा बेपरवाहीआ। आदि जुगादी रहे हमेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। आदि जुगादी एका मन्त्र, मन्त्र आपणे नाम दृढ़ाइंदा। आदि जुगादी एका अन्तर, अन्तर आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादी खेल गगन गगनंतर, गगन मंडल सोभा पाइंदा। आदि जुगादी नूर बसन्तर, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर आप सुहाइंदा। आदि जुगादी एका राजा, राजन एक एक अख्वाईआ। आदि जुगादी इक्क नवाबा, शाह नवाब इक्क वड्याईआ। आदि जुगादी एका वाजा, पुरख अबिनाशी आप सुणाईआ। आदि जुगादी फिरे भाजा, निरगुण निरगुण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, एका एक वडी वड्याईआ। आदि जुगादी शाह सुल्तान, शहिनशाह सच्चा पातशाहीआ। आदि जुगादी देवणहारा धुर फ़रमाण, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। आदि जुगादी वड बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। आदि जगादी एका काम, बिन करनी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। आदि जुगादी खेल अवल्ला, हरि हरि हरि आप कराइंदा । आदि जुगादी इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी धार प्रगटाइंदा।

आदि जुगादी अछल अछला, वल छल आपणा खेल रखाइंदा। आदि जुगादी वसणहारा जल थला, जल थल महीअल आपणा डेरा लाइंदा। आदि जुगादी वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, महल अटल आप रुशनाइंदा। आदि जुगादी सच संदेसा एका घल्ला, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादी गुर अवतार फड़ाए पल्ला, पीर पैग़म्बर नाल रलाइंदा। आदि जुगादी सच सिँघासण एका मल्ला, लख चुरासी अंदर डेरा लाइंदा। आदि जुगादी जोती शब्दी निरगुण निरगुण धार आपे रल्ला, सरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा। आदि जुगादी बणया रहे झल्ला, रूप रंग रेख ना किसे वखाइंदा। आदि जुगादी एका अल्ला, आलमीन फेरा पाइंदा। आदि जुगादी निरगुण रूप सदा बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणी करनी आप कमाइंदा। आदि जुगादी इक्क सौदागर, साचा वणज हट्ट चलाईआ। आदि जुगादी इक्क बहादर, बल आपणा आप धराईआ। आदि जुगादी एका दादर, अनरागी राग सुणाईआ। आदि जुगादी इक्क उजागर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। आदि जुगादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाईआ। आदि जुगादी इक्क निरँकारा, निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा। जुगा जुगन्तर कर पसारा, पसर पसारी वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां दे हुलारा, लोआं पुरीआं फेरा पाइंदा। विष्न ब्रह्मा कर प्यारा, शंकर आपणा रंग रंगाइंदा। करोड़ तेतीसा कर वणजारा, सुरपति आपणे हट्ट विकाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक आप अलाइंदा। साचा मन्दिर कर प्यारा, गृह आपणे डेरा लाइंदा। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। वड साकी बण अगम्म अपारा, अमृत जाम जाम प्याइंदा। बन्द ताकी खोलू किवाड़ा, घर साचे मुख दिखलाइंदा। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणा पड़दा आप उठाइंदा। एका कूक इक्क पुकारा, कूक कूक आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप दृढ़ाइंदा। एका नाउँ निष्अक्खर, अक्खर विच वंड ना आया। एका नाउँ चढ़ के बैठा चोटी सिखर, फड़ फड़ हथ्थ ना किसे वखाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हरि के नाउँ दा करदे गए फ़िकर, बिन हरि नाउँ फ़िकरा मात ना किसे सुणाया। डरदे डरदे करदे रहे ज़िकर, मोह माण ना किसे वधाया। नेत्र उठा नैण वेख्या इधर उधर, जैंह पेखत हरि का नाउँ नज़री आया। सरगुण रूप बण के बैठे रहे गिदड़, भबक शेर ना कोए लगाया। पंज तत्त काया अंदर गए चिम्बड़, आपणा पड़दा ना कोए उठाया। जगत तृष्ना नाल रहे लिबड़, आसा मनसा मोह वधाया। अन्त कर बेनन्ती प्रभ अग्गे कहिण असीं भरीआं चिकड़, कर किरपा गल लगाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता पंज तत्त काया नाम मधाणे आए रिड़कण, गुर अवतारां आपणा रिड़कणा दए वखाया। शब्द अगम्मी नाल आए झिड़कण, नाम खण्डा इक्क

चमकाया। धरनी धरत उपर सब दे पैर थिड़कण, कोई सके ना सीस उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप वड्याआ। एका नाउँ बिन अक्खर अक्ख, बिन नेत्र नैण दृढ़ाईआ। एका नाउँ सदा प्रतख, पारखू बणे सर्ब लोकाईआ। एका नाउँ हथ्थ पुरख समरथ, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। गुर अवतार ख़ाली झोली डाह डाह मंगदे गए वथ, प्रभ साचा होए सहाईआ। पंज तत्त काया आत्म परमात्म पा पा नथ्थ, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। नंन्ही जोत कर प्रगट, नूर नूर नूर करे रुशनाईआ। चरन धूढ़ किणका निक्का अंदर सट्ट, देवे लोकमात वड्याईआ। आत्म परमात्म मेट फट, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। एका ठोकर मारे सट्ट, अनहद नादी राग सुणाईआ। छोटे बाल्याँ आपणा मार्ग दस्स, बाली बुध करे पढ़ाईआ। चरन कँवल कँवल चरन सच सरनाई जाणा ढट्ठ, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम आदि जुगादि, जुग करता आप जणाइंदा। एका नाम साची दाद, गुर अवतारां आप वरताइंदा। एका नाम ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म आप सुणाइंदा। एका नाम साचा नाद, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप अलाइंदा। एका नाम बोध अगाध, अक्खर अक्खर सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। एका नाम आपणे हथ्थ रखे गुरू महाराज, महिमा आपणी आप प्रगटाइंदा। एका नाम जुग जुग रखणहारा लाज, लाजावन्त आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप दृढ़ाइंदा। एका नाउँ बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। एका नाउँ आपणी जाणे सच तदबीर, तस्वीर रूप ना कोए वटाईआ। एका नाउँ सच ज़ंजीर, दो जहानां बन्धन पाईआ। एका नाउँ बस्त्र चीर, ओढन ढाकन पति राखे हर घट थाईंआ। एका नाउँ सच्चा सीर, अमृत रस इक्क चुआईआ। एका नाउँ बिन हरफ़ लकीर, लिखण पढ़न विच ना आईआ। एका नाउँ सच्चा पीर, पीर पीरां करे पढ़ाईआ। एका नाउँ बदलणहार तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। एका नाउँ सच शमशीर, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। एका नाउँ गहर गम्भीर, गुणवन्ता आपणे विच छुपाईआ। एका नाउँ ठांडा सीर, सांतक सति कराईआ। एका नाउँ कढे पीड़, बिरहों रोग दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि सच्चा शहिनशाहीआ। एका नाउँ डूँग्घा सागर, हथ्थ किसे ना आइंदा। एका नाउँ आदि जुगादि देवे आदर, आदरश आपणा रूप वखाइंदा। एका नाउँ सच सौदागर, दो जहानां हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाउँ आपे सिफ्त सालाहइंदा। हरि का नाउँ सिफ्त सालाह, सिफ़र सिफ़र रूप समाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बरां दए सलाह, साची सिख्या सिख दृढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी थिर घर दवारिउँ बाहर आ, आपणे नाउँ तन्द सतार हिलाईआ।

सुन्न अगम्म पार करा, अलख अगोचर दए वड्याईआ। पवण पवणां विच समा, अवण गवणा पर्दा लाहीआ। पंज तत्त काया दए वड़या, वड वड्डा दया कमाईआ। बेपर्दा चुक्के बेपरवाह, पर्दा आप उठाईआ। डुब्बदा सागर दए तरा, नईया एका नाम चढ़ाईआ। आपणी रमज़ दए समझा, रमज़ रमज नाल मिलाईआ। आपणा मन्दिर दए वखा, तन मन्दिर कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। पंज तत्त तत्त आधारा, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म प्यारा, परम पुरख आप कराइंदा। जोती जाता जोत उज्यारा, जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। साची सेजा दए हुलारा, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। सति सतिवादी सति श्रृंगारा, बस्त्र भूशन ना कोए रंगाइंदा। लाल गुलाला रंग एका चाड़्हा, उतर कदे ना जाइंदा। गुर गुर मेला हरि हरि चेला सरगुण होए सज्जण सुहेला, घर साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। साचा नाउँ निर्मल जोत, हरि सतिगुर आप जणाईआ। एका वसे साचे कोट, एका बंक सुहाईआ। एका नाद धुंन चोट, नगारा इक्को इक्क सुणाईआ। एका नाउँ आदि जुगादि सदा बहुत, बहु नाम कम्म किसे ना आईआ। कोटन कोटि नाउँ गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रभ दी सिफ्त कर कर दस्सदे गए सरोत, सरवण लोकमात सुणाईआ। साचे नाम दी रख के आप ओट, दोए दोए बैठे सीस झुकाईआ। जगत नाम रखाए कोटी कोट, पंज तत्त काया दए वड्याईआ। आपणे नाउँ उत्ते आपे होए मोहत, दूसर मुहब्बत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका नाउँ चलाईआ। एका नाउँ सर्ब पसारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। एका नाउँ सर्ब वणजारा, हरि पुरख निरँजण वणज वखाइंदा। एका नाउँ एकँकारा, पुरख अकाल आप समझाइंदा। एका नाउँ नूर उज्यारा, आदि निरँजण नूर धराइंदा। एका नाउँ वस्त हरि थारा, अबिनाशी करता आप वरताइंदा। एका नाउँ घड़न भन्नणहार करे पसारा, श्री भगवान निशान झुलाइंदा। एका नाउँ पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। एका नाउँ सचखण्ड वसे सच दुआरा, प्रभ चरनां हेठ रखाइंदा। एका नाउँ खोल्हे इक्क किवाड़ा, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। एका नाउँ सर्ब आधारा, उदर अधर मेल मिलाइंदा। एका नाउँ सर्ब प्यारा, प्रेम प्यार इक्क सिखाइंदा। एका नाउँ लख चुरासी दए सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। एका नाउँ गुरू अवतारा, पीर पैग़म्बर भेव चुकाइंदा। एका नाउँ इक्क नगारा, निराकार आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा नाउँ आप जणाइंदा। एका नाउँ सो पुरख निरँजण मीत, हँ ब्रह्म मेल मिलाईआ। एका नाउँ सदा अतीत, सचखण्ड साचे

आसण लाईआ। एका नाउँ गा गा थक्के गीत, कोटन कोटि सिफ्त सालाहीआ। एका नाउँ आदि जुगादि जुग जुग सृष्ट सबाई लए जीत, जितया आप कदे ना जाईआ। एका नाउँ वड़याई हस्त कीट, कीट कीटां माण रखाईआ। एका नाउँ पत्तत पापी करे पुनीत, दुरमति मैल धुवाईआ। एका नाउँ ठांडा सीत, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। एका नाउँ गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दस्से रीत, मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले नाउँ धराईआ। एका नाउँ अन्तिम सब नूं करे भय भीत, भय आपणा आप जणाईआ। एका नाउँ सब दी मेटे लीक, लिख्या लेखा सब दा दए मुकाईआ। एका नाउँ आदि जुगादि प्रभ आपणे हथ्थ रखे ठीक, ठीकर गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पंज तत्त काया चोला दए भनाईआ। एका नाउँ लाशरीक, शरक्त विच कदे ना आईआ। एका नाउँ सदा नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। एका नाउँ प्रभ करे प्रीत, प्रीतीवान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका नाम समझाईआ। आदि जुगादि इक्क नाम सहारा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। आदि जुगादि गुरू अवतारा, इक्को इक्क नाम ध्याइंदा। आदि जुगादि भगत भगवन्त आधारा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। आदि जुगादि सन्त दुआरा, सति सतिवादी पड़दा लाहइंदा। आदि जुगादि गुरमुख पसारा, गुर गुर हट्ट चलाइंदा। आदि जुगादि गुरसिख वणजारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आदि जुगादि इक्क वरतारा, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादी इक्क जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। आदि जुगादी इक्क भण्डारा, वड भण्डारी आप वरताइंदा। आदि जुगादी इक्क प्यारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। सोहँ रूप आप निरँकारा, दूजा इष्ट ना कोए वखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर पसारा, आदि जुगादि वेख वखाइंदा। अन्तिम मेला धुर दरबारा, दर आपणे आप कराइंदा। वाहवा वज्जदी रहे सितारा, नाम सति सति अल्हाइंदा। जिस दीआं गुर अवतार पीर पैग़म्बर गाउँदे गए वारां, सो वारता गुरमुखां आप सुणाइंदा। जिस दी चरन धूढ़ मंगदे गए ख़ाक छारा, सो ख़ाक गुरमुख चरन आपणे प्रेम रमाइंदा। जिस अग्गे कर कर सजदे मन्नदे रहे परवरदिगारा, सो बेऐब फेरी पाइंदा। जिस दा नाउँ सिफ्तां कर कर लिखदे रहे बण लिखारा, खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी शास्त्र सिमरत सिमर सिमर सालाहइंदा। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल आदि पुरख अन्तिम करन आया पार किनारा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। एका नाउँ सोहँ दस्से सच जैकारा, ब्रह्मण्ड खण्ड जै जैकार आप कराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब सहारा, सर्ब जीआं अंदर डेरा लाइंदा। चरन छुहाए जिस दुआरा, सो दर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका नाम देवे वर, सृष्ट सबाई सतिजुग साचा राह जणाइंदा।

६६६
१२

✳ १४ भाद्रों २०१६ बिक्रमी राम सिँघ दे गृह ग्वाल टोली फिरोज़पुर छाउणी ✳

आदि जुगादि हरि करतारा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। आदि पुरख बण वणजारा, हरि पुरख निरँजण सेव कमाइंदा। एकँकारा खोल्ह किवाड़ा, दर साचा इक्क वड्याइंदा। आदि निरँजण कर उज्यारा, दीपक दीआ इक्क टिकाइंदा। अबिनाशी करता हो त्यारा, सति सरूपी वेख वखाइंदा। श्री भगवान पावे सारा, निरगुण निरगुण दया कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी कल वरताइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी साचा तख्त इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल श्री भगवान, इक्क इकल्ला आप कराईआ। निरगुण निरगुण हो प्रधान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। आपणी इच्छया कर परवान, आप आपणी झोली पाईआ। साचा मन्दिर इक्क महान, महांबली लए प्रगटाईआ। सचखण्ड दवार कर परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेखे विगसे श्री भगवान, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, एकँकारा रंग रंगाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यारा, अबिनाशी करता पड़दा लाहइंदा। श्री भगवान दे हुलारा, पारब्रह्म प्रभ भेव अभेद खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे सोभा पाइंदा। सच दुआरा सोभावन्त, हरि जू आप सुहाईआ। निरगुण निराकार निरवैर बणाए बणत, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। अजूनी रहित महिमा जाणे आप अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे साचा आसण लाईआ। साचा आसण पुरख अबिनाशन, इक्क इकल्ला आपे लाइंदा। करे खेल शाहो शाबाशन, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। सेवक बण बण दासी दासन, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। आपे जाणे खेल तमाशन, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपे धार, करे खेल आप करतार, आपणा भेव आप जणाइंदा। एका इच्छया आपे रख, हरि करता खेल कराइंदा। आपणे अन्तर हो प्रतख, एका रूप धराइंदा। आपणी बोल अलख, अलख अलखना आपणी अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल एकँकार, आदि आदि जणाईआ। सचखण्ड दवार खोल्ह किवाड़, घर साचे सोभा पाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, तख्त निवासी दया कमाईआ। हुक्मी हुक्म इक्क निरँकार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, विचार विचार विच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण फड़े निरगुण पल्ला, निरगुण आपणा बन्धन आप रखाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण रल्ला, रल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण दीपक निरगुण बल्ला, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल करे करतार, सचखण्ड वज्जे सच वधाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, परम पुरख वेस वटाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। मुकामे हक़ हो उज्यार, नूर नुराना नूर इलाहीआ। करे मेला कन्त भतार, गृह मन्दिर सेज सुहाईआ। जननी जन बण एकँकार, आपणी कल लए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपा लए प्रगटाईआ। आप आपा करनेहारा, हरि करता आप अख्वाइंदा। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण खुशी मनाइंदा। आपे मन्दिर आप दुआरा, गृह आपे सोभा पाइंदा। आपे पिता मात आपे जणे सुत दुलारा, सत्त आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। साचा नाम इक्क आधारा, अपरम्पर आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपणा अंग रखाइंदा। आपे नाउँ आपणा अंग, आदि आदि बणाईआ। आपे सूरबीर सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपे जाणे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ।
६७१ ६७१
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क दृढ़ाईआ। साचा नाउँ हरि निरँकार, निरगुण आपणा आप जणाइंदा। आपे वेखे वेखणहार, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। एका मन्दिर कर त्यार, घर साचे आप बहाइंदा। सचखण्ड
१२ १२
दवार खोल्ह् किवाड़, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। परम पुरख प्रभ पाए सार, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा। सो पुरख निरँजण जाणे जानणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप उपाइंदा। साचा नाउँ उपमा योग, हरि जू आपणा आप जणाईआ। आपे कर कर धुर संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। आपे देवणहारा चोग, रस रसीआ रस चखाईआ। आपे रखे आपणी ओट, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आप वसाए साचे कोट, थिर घर देवे माण वड्याईआ। आपे रखे सदा अतोट, निखुट कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप दृढ़ाईआ। एका नाम श्री भगवाना, हरि जू हरि हरि आप उपाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका गृह आप वसाइंदा। एका राग इक्क तराना, एका नादी नाद अल्लाइंदा। एका खेले खेल महाना, खेलणहारा भेव छुपाइंदा। नर निरँकारा कर प्रधाना, निराकार निराकार निराकार वेस वटाइंदा। अनभउ प्रकाश खेल महाना, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ हरि समझाइंदा। एका नाउँ आदि आदि, हरि जू हरि हरि

आप उपाया। एका नाउँ जुगा जुगादि, जुग जुग आप धराया। एका नाउँ सदा विस्माद, बिस्मिल आपणा रंग वखाया। एका नाउँ देवे दाद, वस्त अमोलक आप वरताया। एका नाउँ कराए लाड, गोदी गोद आप सुहाया। एका नाउँ आपणे विच्चों आपे काढ, आप आपणे दर बहाया। एका नाउँ रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क रखाया। साचा नाउँ एका एक, आदि आदि प्रगटाईआ। साचा नाउँ सदा सद टेक, आदि अन्त होए सहाईआ। साचा नाउँ सदा बबेक, ववेकी रूप वखाईआ। साचा नाउँ धुर दी मेख, पुरख अबिनाशी आपे लाईआ। साचा नाउँ रूप रंग ना कोए रेख, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम देवे वड्याईआ। साचा नाम वड प्रधान, सच प्रधानगी इक्क कमाइंदा। साचा नाम इक्क ज्ञान, गुर ज्ञान नाम धराइंदा। साचा नाम एका दान, हरि जू हरि हरि आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाइंदा। साचा मन्त्र नाम इक्क, एकँकारा आप प्रगटाईआ। बिन कलम दवात शाही दए लिख, लिखणहारा शहिनशाहीआ। आपणी सिख्या आपे सिख, साची करे पढ़ाईआ। नेत्र नैण ना आए दिस, लोचण वेख कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाउँ दी साची बिध आप जणाईआ। साची बिध करता पुरख, हरि करनी आप कराइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता चिखा ना कोए जलाइंदा। सचखण्ड दवारे आपणी कर कर आपे परख, थिर घर डेरा आप वखाइंदा। आदि जुगादि रहे निधड़क, भय भउ ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वखाइंदा। साचा नाउँ श्री भगवन्त, आदि आदि उपाईआ। थिर घर दुआर बणाए बणत, घड़ भन्नण वेख वखाईआ। पूत सपूता खेले खेल महिमा जाणे बेअन्त, बेअन्त बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम लए प्रगटाईआ। एका नाम हरि वणजारा, सच साचा हट्ट चलाइंदा। एका नाम विष्न ब्रह्मा शिव भण्डारा, वड भण्डारी आप वरताइंदा। एका नाम त्रैगुण पसारा, रजो तमो सतो जोड़ जोड़ाइंदा। एका नाम पंज तत्त अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश गंढु पाइंदा। एका नाम लख चुरासी कर पसारा, चारे खाणी रंग रंगाइंदा। एका नाम चारे बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। एका नाम निरगुण सरगुण पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप रखाइंदा। एका नाउँ वणज वपार, हरि हरि जू आप जणाईआ। एका नाउँ दो जहानां करे ख़बरदार, बेख़बर आप उठाईआ। एका नाउँ सांझा यार, आदि जुगादि रिहा समाईआ। एका नाउँ सिफ्ती सिफ्त ते वसे बाहर, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। एका नाउँ

देवणहार, दाता दानी दया कमाईआ। एका नाउँ कर पसार, घट घट आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क रखाईआ। साचा नाउँ इक्क वरतारा, मेहरवान आप जणाइंदा। आदि जुगादी खेल न्यारा, जुग जुग वेख वखाइंदा। गुर अवतारां दए सहारा, पीर पैग़म्बरां आप पढ़ाइंदा। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़ा, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। घर विच घर पावे सारा, मन्दिर अंदर अंदर मन्दिर मेल मिलाइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वखाइंदा। साचा नाम श्री भगवान, आदि पुरख प्रगटाईआ। गुर अवतारां देवे दान, दाता दानी बेपरवाहीआ। पीर पैग़म्बर बाल अञ्याण, छोटे बाले लए उठाईआ। अल्फ़ ये कर ब्यान, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। तिन्न पंज कर प्रधान, पैंतीस अक्खर वंड वंडाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान सिफ्ती नाम सिफ्त सालाहीआ। दिस ना आए विच जहान, नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। अक्खर अक्खर करन ब्यान, जगत ब्याना इक्क जणाईआ। रसना जिह्वा गाए गान, बत्ती दन्द नाल सालाहीआ। मन मति बुध करे वख्यान, व्यिक्ति बणन कोए ना पाईआ। करे खेल श्री भगवान, साचा नाम इक्क रखाईआ। जिस दा लभ्भ लभ्भ थक्के सर्ब निशान, निशाना हथ्थ किसे ना आईआ। कोटन कोटि कर के गए ध्यान, ध्यान ध्यान ना कोए मिलाईआ। कोटन कोटि होए हैरान, हरि का नाउँ हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। सिफ्ती सिफ्त करन ब्यान, बेवा रूप सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए समझाईआ। एका नाम पुरख अकाला, अकल कला कल आप जणाइंदा। एका नाम दीन दयाला, दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। एका नाम सदा प्रितपाला, प्रितपालक सेव कमाइंदा। एका नाम वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। एका नाम लहिणा देणा चुकाए काल महांकाला, महांकाल आपणा भय वखाइंदा। एका नाम आदि जुगादि वेखणहारा त्रैगुण माया जगत जंजाला, जागरत जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सिफ्त सिफ्त सालाह, निरगुण सरगुण बण मलाह, गुर अवतार लए पढ़ा, पीर पैग़म्बर आप उठा, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। हरि का नाम ना कोए अल्फ़, आरफ़ करे ना कोए पढ़ाईआ। हरि का नाम दिसे ना किसे तरफ़, वंडण वंड विच ना आईआ। हरि का नाम कोई ना सके परख, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे ध्यान लगाईआ। हरि का नाम आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहान अद्धविचकार ना जाए अटक, राह विच ना कोए अटकाईआ। हरि का नाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक समझाईआ। हरि का नाउँ इक्को अल्फ़, अल्फ़ी तन ना कोए रखाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता वंड ना कोए वंडाइंदा। आदि जुगादि जुग

जुग आवे जावे परत, परतीनिध आप अख्वाइंदा। सरगुण देवे वड़याई उपर धरत, धरनी धवल सुहाइंदा। पीर पैग़म्बरां लावे किरत, करनी आपणी किरत जणाइंदा। कर किरपा सब दी मेटे आपे हिरस, हवस आपणी नाल वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क रखाइंदा। साचा नाम वड बलवान, हरि जू हरि हरि आप उपाईआ। साचा नाम जुगो जुग गान, गायत्री मन्त्र करे पढ़ाईआ। साचा नाम श्री श्रीराम, राम रमइया वेख वखाईआ। साचा नाम साचा काहन, एका बंसरी नाम सुणाईआ । साचा नाम घनईया शाम, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप अख्वाईआ। साचा नाम दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। साचा नाम इक्क इस्लाम, इस्म आज़म दए जणाईआ। साचा नाम एका एक करे इंतजाम, दो जहानां वेख वखाईआ। साचा नाम आदि जुगादि, जुग जुग लख चुरासी करे ग़ुलाम, आपणा बन्धन आपे पाईआ। साचा नाम एका मारे निराला बाण, अणयाला तीर आप चलाईआ। साचा नाम कोए ना सके पहचान, पहचान विच किसे ना आईआ। जिस जन कर किरपा देवे दान, तिस आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम सदा सदा छुपाईआ। साचा नाम छुपे सचखण्ड, थिर घर आपणा मुख छुपाईआ। जुगा जुगन्तर हरि जू वंड, अक्खरी नाम वड्याईआ। अक्खर अक्खर दे दे गंढु, गंढुण आप गंढाईआ। आदि जुगादि कदे ना होए खण्ड, खण्डा एका हथ्थ उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कोटन रहे मंग, चरन सरन ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्को मंगण साची मंग, अनन्द अनन्द अनन्द विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा मन्त्र आदि नमो सति, सति सतिवादी आपणे हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे मति, ब्रह्म विद्या इक्क जणाइंदा। लेखा जाण पंज तत्त, तत्तव तत्त अग्ग बुझाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त रत्त छुपाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल इक्क इकल्ला कर किरपा बीजे नाम वत, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। लख चुरासी सत्थर बैठी घत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वड्याइंदा। साचा नाम सतिगुर धार, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। साचा नाम खेल अपार, अपरम्पर करे बेपरवाहीआ। साचा नाम रहे सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। साचा नाम लख चुरासी दए भण्डार, वड भण्डारी आप वरताईआ। साचा नाम सतिजुग त्रेता द्वापर करे पार, कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। साचा नाम नौ सौ चुरानवे चौकड़ी गेड़ा दए निवार, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। साचा नाम तेई अवतारां लहिणा देणा दए नवार, लेखा लेखे विच पाईआ। साचा नाम वेखणहारा भगत दुआर, भगत अठारां लए जगाईआ। साचा नाम खोलणहार किवाड़, ईसा मूसा पड़दा दए चुकाईआ। साचा नाम साचा यार, यारी मुहम्मद नाल

निभाईआ। साचा नाम वसे सचखण्ड सच्चे दरबार, निरगुण सरगुण लए प्रगटाईआ। किरपा कर आप करतार, नानक निरगुण लए मिलाईआ। सरगुण चोला विच संसार, पर्दा ओहला दए मिटाईआ। एका ढोला बोल जैकार, साचा सोहला आप सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्क प्यार, दूजा बन्धन ना कोए रखाईआ। पिता पूत इक्क अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क उपाईआ। साचा नाउँ आदि जुगादी अपर अपारा, अपरम्पर धार जणाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कर पसारा, निराधार निरवैर पुरख अजूनी रहित अकल कल धारी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा वणज आप कराइंदा। साचा वणज सति नाम, हरि नामे करे पढ़ाईआ। साचा वणज धुर कलाम, कलमा नबी आप जणाईआ। साचा वणज इक्क पैग़ाम, परम पुरख दए वड्याईआ। साचा वणज साचा काम, करनी करता आप समझाईआ। साचा वणज चार वरनां देवे दान, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचा नाम वस्त अमोलक, अमुलड़ी दात हरि वरताया। नानक निरगुण भरी गोलक, सच ख़ज़ाना हथ्थ फड़ाया। कलयुग पंज तत्त काया वेखे ढोलक, घर मन्दिर राग अल़ाया। हरि का नाउँ सदा अणबोलत, अणडिठड़ा राग सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेसा देवे सद्दा हरि जू नानक निरगुण करे पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर सब कोई बध्धा, हुक्मे अंदर सर्ब लोकाईआ। हुक्मे अंदर सतिगुर नानक इक्को लध्धा, घर साचे खुशी मनाईआ। गृह अमृत वेखे जाम मदा, भर प्याला साकी हथ्थ फड़ाईआ । सरगुण दुआरे निरगुण फिरे नद्दा, बण बण पाँधी राहीआ। भाग लगाए तत्त अठ्ठा, मन मति बुध ना चले कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नानक कहे सतिगुर मेरा, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। कर किरपा वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कोझी कमली चुक्या झेड़ा, गेड़ा होर ना कोए वखाईआ। सुल्तान साहिब बन्ने बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड खुल्ल्हा वखाए वेहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नाम लए वरताईआ। नानक नाम मिल्या सति, सति सतिवादी आप वरताइंदा। नानक नाम मिल्या रथ, जीवां जंतां आप चढ़ाइंदा। नानक नाम मिल्या अकथ, कथनी कथ ना कोए गाइंदा। नानक नाम मिल्या वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। नानक नाम दिता दस्स, दहि दिशा पर्दा लाहइंदा। नानक नाम होया वस, वस आपणा आप कराइंदा। नानक नाम गाए जस, जस नाम नानक नानक गाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा रूप वटाइंदा। कोटन कोटि त्रिलोकी चरनां

हेठां मथ, नाम मधाना इक्क जणाइंदा। अक्खर अक्खर होया वक्ख, वक्खर वक्खर रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क उपजाइंदा। साची सिख्या श्री भगवाना, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। सतिगुर सूरा कर बलवाना, बल आपणा दए वड्याईआ। लोकमात दा राज राजाना, राज जोग दए समझाईआ। काया मन्दिर सच मकाना, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। घर विच घर सोहे महाना, गृह गृह नाल मिलाईआ। दीपक दीआ इक्क टिकाना, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। बन्द किवाड़ी इक्क वखाना, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। सर सरोवर अमृत रस महाना, निझर झिरना रिहा झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क प्रगटाईआ। साचा नाउँ सतिगुर पूरा, हरि नानक आप दृढ़ाइंदा। आदि जुगादि सदा हज़ूरा, विछड़ कदे ना जाइंदा। अज्ञान अन्धेर मिटा देवे नूरा, नूरो नूर जोत जगाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, कूड़ी क्रिया आप खपाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, सो नाम नानक आप वड्याइंदा। आदि जुगादी होए पूरा, पूरी इच्छया आप कराइंदा। सर्ब कल सद भरपूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क सलाहइंदा। साचा नाम सतिगुर प्यार, गुर शब्द वडी वड्याईआ। नानक कूके कूक पुकार, बोल बोल सुणाईआ। बोवो बोवो बोवो जीव गुआर, वेला गया हथ्थ ना आईआ। नेत्र रोवो ज़ारो ज़ार, अन्तर रो रो दयो दुहाईआ। प्रभ मिलण दी इक्को वार, माणस मिली जगत वड्याईआ। नेत्र खोल्हो बन्द किवाड़, घर मिले सच्चा माहीआ। नाता तोड़े पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। आसा तृष्ना देवे मार, हउमे हंगता दए खपाईआ। मनमति देवे मार, गुरमति करे पढ़ाईआ। सुरती शब्द इक्क प्यार, प्यार प्यार नाल मिलाईआ। नज़री आए सांझा यार, घर साची सेज हंढाईआ। साचा फल लग्गे विच संसार, अमृत रस इक्क खुआईआ। नानक अंदर बीजया आप करतार, नानक गुरमुखां अंदर बिजाईआ। इक्क दूजे दी बणो नारी कन्त भतार, बण नारी सेव कमाईआ। सतिगुर चरन धूढ़ी मंगो छार, मस्तक टिक्का ख़ाक लगाईआ। पत्त डाल्ही मौले खिड़े सच्ची गुलज़ार, गुलशन वेखे हरि रघुराईआ। महक महक महक आवे अंदर बाहर, जिस नानक मिल मिल हरि का नाम सिंच क्यारी आपणा हल्ल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बीज इक्क दृढ़ाईआ। साचा बीज बिन बीजे बीजा, कर किरपा हरि रघुराईआ। भेव चुकाए एका दूजा, दोए दोए रूप रहिण ना पाईआ। नेत्र खोल्हे निज घर तीजा, नैण नैण नाल मिलाईआ। चौथे घर आप पतीजा, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। पंचम करे साची रीझा, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। छेवें घर पार कराए दलीजा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सति सतिवादी ठांडा सीता, सतिगुर सच्चा इक्को माहीआ। अठ्ठां तत्तां

६७६ १२

६७७ १२

करे पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। नौ दुआरे करे खाली खीसा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। दस्म दुआरी गुरमुख तेरा बीज बीजा, कर किरपा आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क बुझाईआ। बीजो नाम सतिगुर मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। कलयुग कूड़ी चुक्के रीत, साचा राह आप वखाइंदा। काया अंदर मन्दिर मसीत, गरूदुआर आप जणाइंदा। वेखो साहिब इक्क अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। जिस दे छत्ती राग गौंदा गीत, सो सतिगुर अंदर नज़री आइंदा। सद बैठा रहे अतीत, त्रैगुण पन्ध ना कोए पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जन हरि आप समझाइंदा। हरिजन उठ वेख जाग, गुर गुर जाग जगाईआ। त्रैगुण माया लग्गा दाग़, कलयुग रूप वटाईआ। अग्न ना बुझे तत्ती आग, तृष्ना भुख ना कोए गंवाईआ। माया बन्धन झूठा साक, मोह मुहब्बत दए दुहाईआ। परवरदिगार ना मिल्या पाकी पाक, माटी ख़ाक ना लेखे लाईआ। उत्तम होए ना जगत ज़ात, जुगत जाणे ना कोए वड्याईआ। जिस जन सतिगुर पूरा देवे आपणी दात, सो नाम बीजे सहिज सुभाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल कल रिहा जणाईआ। कल आयो रे आयो कल, कल काती खेल कराइंदा। चौथा युग रिहा छल, चारे वरन वरन डराइंदा। धर्म अधर्म रिहा लड़, सति असति ना कोए वखाइंदा। नाता तुट्टा नारी नर, विभचार रूप नज़री आइंदा। सिंमल रुक्ख ख़ाली पत्त डाल्ही रिहा झड़, मानुख बिन हरि नामे कम्म किसे ना आइंदा। सतिगुर का शब्द लैणा पढ़, गुर सतिगुर आप समझाइंदा । दीन दयाल ठाकर स्वामी डूँग्घी कंदर काया मन्दिर जाए चढ़, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। आपणी हथ्थीं फड़ फड़ लावे जड़, गुरमुख बूटा बूटा आप महकाइंदा। जो नाम सतिगुर जुग जुग देवे मात धर, सो नाम फल लगाइंदा। साचे नाम दी मारे छल, हरिजन साचे आप तराइंदा। खाणी बाणी अञ्जील कुरान वेद पुराण शास्त्र सिमरत कलम शाही, बेपरवाही आपणी सेव लगाइंदा। बोवो बोवो बीज जन भाई, भाउ भय इक्क रखाईआ। कलयुग अन्त दए दुहाई, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथमी नैण रिहा शरमाई, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। बिन भगतां मिले ना किसे गोसाँई, घर आए ना फेरा पाईआ। एका नाम वसे हर घट थाईं, घट घट रिहा समाईआ। एका नाउँ सतिगुर देवे चाँईं चाँईं, गुरमुखां मेल मिलाईआ। एका नाउँ उठाए फड़ फड़ बांहीं, एका गूढ़ी नींद सुवाईआ। एका नाउँ मेटे दुरमति लग्गी शाही, एका नाउँ डूँग्घी भँवरी दए सुटाईआ। साहिब सतिगुर दा सच्चा नाउँ, बीज मातर इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर काग़ज़, कलम नाल लिख लिख गए पात्र पट्टी जगत जुगत पढ़ाईआ। किसे हथ्थ ना आया वेद शास्त्र, शरअ रही कुरलाईआ। सिफ्ती कर कर थक्के लग मातर, कंनां मुक्ता नाल रलाईआ।

सिहारी बिहारी होड़ा औंकड़, हरि का अन्त कहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर करके गए यातर, लोकमात फेरा पाईआ। कोई सुणावे दीद शुनीद कोई कहे बातन, कोई लुकया काया अंदर रिहा वखाईआ। नानक निरगुण कहे सतिगर पूरा सब दे साथन, घर घर मुख छुपाईआ। रल मिल गुरमुख गावो गाथन, गा गा शुकर मनाईआ। आपे होए पड़दे ढाकण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बीज बोवो फल वेखो डाल्ही पातन, पत्त डाल्ही आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वड्याईआ। साचा नाम सतिगुर सेवा, सेवा सतिगुर सच जणाइंदा। अमृत आत्म रस इक्को मेवा, रस रसीआ आप खुवाइंदा। देवे वड़याई वड देवी देवा, देवत सुर सीस झुकाइंदा। धाम वखाए इक्क निहचल निहकेवा, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर साचा बीज वखाइंदा। बीज बीजे गुर गुर आप, सतिगुर दया कमाईआ। पहलों कोट जन्म दे लाहे पाप, दुरमति मैल धुवाईआ। फेर निरगुण निरगुण जपाए जाप, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म बंधाए साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। दरस दिखाए साख्यात, सखी काहन रूप मिलाईआ। तन पहनाए इक्क पोशाक, बस्त्र भूशन दए रंगाईआ। बीज बिजाए पाकी पाक, पत्तत पुनीत आप उगाईआ। उपर पड़दा देवे ढाक, साढे तिन्न हथ्थ अंदर दए छुपाईआ। अंदर वड़ वड़ करे राख, बण राखा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन बीजों बीज वखाईआ। हरि का बीज ना कोए रूप, रंग नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादी सति सरूप, सति सति आप कराइंदा। अंदर वड़ वड़ कढ्ढे जूठ झूठ, सच सुच्च बूटा आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो बीज सतिगुर नानक गुरमुखां अंदर आप बिजाइंदा। बीज बीजो अमृत रस, रस रसीआ आप वखाइंदा। सतिगुर मेला हस्स हस्स, गृह मन्दिर आप कराइंदा। अन्ध अन्धेर करे प्रकाश, जोती जोत जोत जगाइंदा। करे खेल शाहो शाबाश, शहिनशाह एका घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बीज आप जणाइंदा। साचा बीज हरि का बूटा, तुलसी पुज्ज ना सके राईआ। अठ्ठे पहर पवण झूटा, बिन पवणां आप झुलाईआ। वेखणहारा चारे कूटां, दहि दिशा फेरा पाईआ। सतिगुर साजन जिस जन उपर तुठ्ठा, कर किरपा बीज दए बिजाईआ। हरि का नाम किसे ना बिजाया हथ्थ मुठां, बिन हथ्थां दए दबाईआ। जुग जन्म दा वेखे रुठ्ठा, गुर पूरा आपणे अंग लगाईआ। आपणी शाख़ों आपे फुट्टा, गुरमुख आपणी शाख़ लए प्रगटाईआ। नाम बीज नेत्र वेख उँगलां नाल किसे ना सुट्टा, हथ्थां नाल मिटी कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या सिख विचार, गुर सतिगुर

आप जणाइंदा। कर्म कुकर्मां देवे मार, गुर सतिगुर वेख वखाइंदा। लख चुरासी धूआँधार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। नानक आया कलयुग धार, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। चार वरन करे प्यार, धर्म बूटा इक्को लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बीज इक्क बिजाइंदा। साचा बीज गुरमुखां अंदर, नानक सतिगुर आप बिजाईआ। भाग लगाए डूँग्घी कंदर, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। मन वासना दब्बे बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। बजर कपाटी तोड़े जंदर, चन्द चांदनी करे रुशनाईआ। वेखणहारा डूँग्घा खण्डर, पड़दा ओहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बूटा इक्क वखाईआ। साचा बूटा वेखो मार ध्यान, सतिगुर नाम नाल लगाइंदा। नानक हुक्म करया परवान, हुक्म नानक आप सुणाइंदा। नानक हुक्म गुण निधान, गुणवन्ता आप प्रगटाइंदा। गुरमुख साचा करे परवान, कर परवान सोभा पाइंदा। अंगद दिता इक्को माण, अंगत नाल वटाइंदा। कर किरपा अंदर बीज दिता आण, बीज बीज नाल मिलाइंदा। बाहरों सके ना कोए पहचान, नेत्र नैण सर्ब शरमाइंदा। जो सतिगुर पूरे नाल आपणा बन्धन पाए आण, बन्दीख़ाना सर्ब तुड़ाइंदा। बीज बीजो विच जहान, हरि जू बूटे नाम लगाइंदा। गुर का मन्त्र सच निशान, गुरदेव आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बीज सतिगुर प्यार, साचा सच गुर शब्द आधार, गुर सतिगुर गुर गुर किरपा आप बिजाइंदा। साची बिधी सतिगुर हथ्थ, आदि जुगादि दया कमाइंदा। जिस जन कर किरपा देवे वथ्थ, दूजे दर ना मंगण जाइंदा। जिस बीज बीजया काया सीआं साढे तिन्न हथ्थ, सो अन्तर नाम आपणा बीज बिजाइंदा। दिवस रैण पहर अठ्ठ, अठ्ठ तत्त तत्त वखाइंदा। दर दुआरे आपणे सद्द, गुरमुख गुर गुर बीज बिजाइंदा। पार किनारा करे नौ दुआरे हद्द, हद्द आपणी फेर वखाइंदा। अमृत जाम प्याए मदि, मदि एका रस वखाइंदा। पंच विकार जाए छड्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। ईड़ा पिंगल लडाए लड, सुखमन टेढी मुख शरमाइंदा। बजर कपाटी पार कराए डूँग्घी खड्ड, साची हाटी हट्ट जणाइंदा। नाद अनादी मारे सट्ट, अनहद आपणा राग अलाइंदा। पंचम मेला झट्ट पट, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। साची बिधी रखे आपणे हथ्थ, जुग जुग आपणयां भगतां आप जणाइंदा। अंदर वड़ वड़ जाए दस्स, रसना बोल ना किसे सुणाइंदा। जिन्ना चिर गुरसिख कहे ना बस्स बस्स, ओनां चिर ना मुख छुपाइंदा। जो जन सतिगुर प्यार अंदर गया फस, तिस पड़दा आप उठाइंदा। मेल मिलाए हस्स हस्स, जोग अभ्यास ना कोए कराइंदा। डूँग्घी कंदर ना देवे सट्ट, उच्चे टिल्ले पर्बत चोटी ना कोए चढ़ाइंदा। तीर्थ फिराय ना अठसठ, मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर मट्ठ राह ना कोए जणाइंदा। कर किरपा अंदरे अंदर जोत जगाए लट लट, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। बीज बीजे साचे वत, वतर आपणा

वेख वखाइंदा। कोटन कोटि जीव जंत नौ खण्ड पृथ्मी रहे नट्ठ, नट्ठ नट्ठ पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जो सतिगुर पूरे चरनी जाए ढट्ठ, तिस बिधी आप पढ़ाइंदा। अंदरे अंदर अंदर जाए वस, वस वस आपणी खुशी वखाइंदा। जो बाणी बाहर गाए जस, तिस बाणी आपणा राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिधी विद्दत बिन विद्या विद्यार्थी आप पढ़ाइंदा। हरि सतिगुर सच्चा मेहरवान, आदि जुगादि जुग जुग दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण कर परवान, सति सतिवादी राह चलाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, सच संदेसा आप अलाइंदा। दो जहानां पावे आण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्म मनाइंदा। खाणी बाणी इक्क निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कराइंदा। साची कार श्री भगवाना, सतिगुर पूरा आप कराईआ। जोत सरूपी पहरया बाणा, रूप अनूप आप वटाईआ। बोध अगाधी इक्क तराना, शब्द अगम्मी आपे गाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर एका शब्द दे दाना, दाता दानी खुशी मनाईआ। भगत भगवान कर परवाना, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। साचे सन्तां देवे इक्क ज्ञाना, निष्अक्खर अक्खर कर पढ़ाईआ। गुरमुख होवे चतुर सुजाना, गुर गुर वज्जे वधाईआ। गुरसिख दे इक्क निधाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन तारे आप प्रभ, आपणी दया कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणे नाल मिलाइंदा। अमृत झिरना झिराय नभ, नाभी कँवल आप उलटाइंदा। जगत विकारा देवे दब्ब, उपर आपणा भार रखाइंदा। सन्त सुहेले साचे सद्द, सद्दा एका नाम जणाइंदा। साची अमृत प्याए मदि, रस इक्को इक्क वखाइंदा। कूड़ी क्रिया बाहर देवे कढ्ढ, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन आप तराइंदा। जुग जुग तारे हरिजन आप, हरि आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत वेस वटाईआ। मेटणहारा तीनो ताप, त्रैगुण नाता आप तुड़ाईआ। देवणहारा साचा जाप, साची सिख्या आप सिखाईआ। आत्म परमात्म साचा पाठ, ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। सच सरोवर मारे ठाठ, अमृत एका रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख तेरा गृह महल्ला, हरि जू एका एक वसाइंदा। आदि जुगादी जुग जुग फड़ाए इक्क पल्ला, पल्लू आपणा आप बनाइंदा। सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, खाणी बाणी राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्याइंदा। हरिजन तेरा दासी दास, खाणी बाणी सेव कमाईआ। तेरे अन्तर कर कर वास, घर साचा वेखे चाँईं चाँईंआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। पवण स्वास पावे सार, स्वास स्वासां विच समाईआ। महल अटल साची रास, गोपी काहन आप नचाईआ।

६८० १२

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुगन्तर गुरमुख साचे आप तराईआ। गुरसिख तेरा सच दुआरा, हरि जू हरि हरि आप प्रगटाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, जुग जुग चरन छुहाइंदा। कलयुग अन्तिम पावे सारा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। रागी नादी वसे बाहरा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। थित वार ना कोए विचारा, घड़ी पल ना कोए जणाइंदा। सूरज चन्द ना कोए उज्यारा, दिवस रैण ना वंड वंडाइंदा। जंगल जूह उजाड़ ना कोए पहाड़ा, समुंद सागर ना कोए वखाइंदा। आदि जुगादी खेल न्यारा, निराकार आप कराइंदा। गुर पीर पैग़म्बर पारब्रह्म दा तक्कदे रहे सहारा, नानक निरगुण ओट रखाइंदा। महांबली उतरे अवतारा, बल आपणा आप जणाइंदा। जन भगतां धुर मेले विच संसारा, संसार सागर पार कराइंदा। सतिजुग दा साचा नाअरा, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। हँ ब्रह्म दए आधारा, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। सोहँ रूप आप निरँकारा, गुर अवतार सदा सदा सद जस गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचा चले राह, हरि हरि आप चलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पुरख अबिनाशी कोलों मंगण पनाह, सिर सके ना कोई उठाईआ। चौथे जुग चारों कुण्ट अन्धेरा रहया छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भरी गुनाह, खुदी भरी सर्ब लोकाईआ। जिन्हां भुलया घनकपुर वासी बेपरवाह, मददगार ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। गुरमुख वेखे खेल घनेरा, हरि ख़ालस ख़लक वखाइंदा। चौदां तबकां पाए फेरा, चौदस चन्द मुख शरमाइंदा। चौदां लोक चौदां विद्या वेखा डेरा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेख वखाइंदा। मन्दिर मसीत चुक्के झेड़ा, साचा राह इक्क जणाइंदा। आत्म परमात्म देवे गेड़ा, एका मार्ग लाइंदा। कलयुग अन्तिम उजड़े खेड़ा, अग्गे हो ना कोई बचाइंदा। गुरसिख गुरमुख रसना कहिण तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ ढोला इक्क सुणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बैठा रहया करके वड्डा जेरा, जेरज अण्डज उत्भुज सेतज वेख वखाइंदा। हरि का भेव दस्से केहड़ा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम गुरमुख मेला मेल मिलाइंदा। गुरसिख मेला मिल्या हरि, कर किरपा दया कमाईआ। दरस दिखाए दर दर बण दर्दी दर्द वंडाईआ। शब्द अगम्मी घोड़े आपे चढ़, दो जहानां रहया भवाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लए फड़, भगत भगवान लए उठाईआ। सन्त साजण लाए लड़, लख चुरासी नालों कन्नी रिहा कतराईआ। हरिजन तोड़े हँकारी गढ़, सो अक्खर करे पढ़ाईआ। त्रैगुण माया उखेड़े जड़, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुरसिख नुहाए साचे सर, दुरमति मैल आप धुआईआ। करता पुरख आपणी करनी कर, हरि जू कीमत रहे पाईआ। जिस ने घाड़न ल्या

घड़, सो अन्त लए भनाईआ। गुरसिख गुरमुख हरि सरनाई डिगण दड़, दूसर ओट ना कोई रखाईआ। सतिगुर सच्चा पंचम तन वेखे कच्चा, आत्म परमात्म होए सहाईआ। मन वासना नौ दर नच्चा, बुद्धी होई हल्काईआ। हरि का भेव ना जाणे सच्चा, सच मिले ना कोई सरनाईआ। कलयुग जीव अन्तिम खेड़ा ढट्ठा, ढह ढह ख़ाक कराईआ। चौदां तबक फिरे नट्ठा, ज़िमी असमान रिहा कुरलाईआ। जिध्धर वेखे सत्थर लथ्था, गोबिन्द सत्थर इक्क वखाईआ। पुरख अकाल आप समरथा, समरथ धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण आप तराईआ। गुरसिख सज्जण तेरा जन्म अमोला, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ बणया तोला, एका कंडा हथ्थ उठाइंदा। शब्द सरूपी बण विचोला, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। इक्क दूजे दा रल मिल गाओ ढोला, सोहँ सो आप सुणाइंदा। बरदा बण बण आपे गोला, गुर गुर घर घर सेव कमाइंदा। राती सुत्तयां चुकाए ओहला, मुख नक़ाब पड़दा लाहइंदा। बाहरों दिसे भोला भाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन साचे जाणा जाग, जागरत जोत हरि जगाईआ। कलयुग अन्तिम लग्गा भाग, भागी भरया मिल्या माहीआ। घर मन्दिर जगाए चिराग़, नूरो नूर करे रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहानां रखे लाज, लोकलाज बैठे मुख शरमाईआ। सुरत सवाणी कर कर काज, शब्द दुआरे दए कराईआ। कोझी कमली दोहागण मारे वाज, नाद अनाद इक्क वजाईआ। कूड़ मुलम्मा लाहे पाज, कंचन रूप वटाईआ। सच चढ़ाए इक्क जहाज़, नईया नाम इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन उठ नेत्र खोल्ह, हरि ख़ालक ख़लक उठाइंदा। घर अंदर डूँग्घी कंदर उच्चे मन्दिर चढ़ चढ़ रिहा बोल, बोलणहारा नज़र ना आइंदा। पूरब जन्म दे कीते कर्म रिहा फोल, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। जिस नूं लभ्भदे अनभोल, अन सुरती आप उठाइंदा। सदा सुहेला इक्क अकेला कर कर हित नित नवित अबिनाशी अचुत वसे कोल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होया उपर धौल, धरत धवल धौल हौला पार कराइंदा। आदि जुगादि रहे अडोल, डुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजण साचे आप उठाइंदा। हरिजन उठया वेखी रुत्त, रुत्तड़ी आप सुहाईआ। प्रगट होया अबिनाशी अचुत्त, चेतन रिहा कराईआ। गुरसिख वेखे साचे सुत, सति गोद सहाईआ। करे प्यार जिउँ मावां पुत्त, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। आपे रातीं जावे उठ, गुरसिख गूढ़ी नींद सुआईआ। आत्म देवे अमृत घुट्ट, घुट्ट घुट्ट लेखे लगाईआ। लोकमात दा बूटा पुट्ट, सचखण्ड दवार लगाईआ। लहिणा देणा चुकाए मन मति बुध, बिबेकी एका वखाईआ। प्रभ मिलण दी साची सुध, सति सतिगुर

आप कराईआ। गुरमुख झोली बहे कुद, इक्को वार आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन जागया खुली अक्ख, नेत्र नैण खुलाईआ। प्रभ नज़री आए प्रतख, पारखू सच्चा माहीआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैग़म्बर मार्ग रिहा दस्स, सो मार्ग दस्सण आया सच्चा माहीआ। जिस दे अंदर खाणी बाणी रही वस, आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस कोलों मंगण रवि ससि, कोटन कोटि झोली डाहीआ। सो गुरमुखां अंदर करे प्रकाश, आपणा नूर वखाईआ। चिंता दुःख ना रहे कोई उदास, उदासी सब दी दए मिटाईआ। तिन्नां फड़ फड़ कटे जम ना फास, राए धर्म दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। गुरमुख मिल्या निर्मल जोत, हरि जोती जोत मिलाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोई रखाया। ना कोई मन्दिर ना कोई कोट, छप्पर छन्न ना कोई छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे अंग लगाया। गुरसिख करया अंगीकार, घर साचे वज्जे वधाईआ। साची सखीआं मंगलाचार, हरि हरि खुशी मनाईआ। प्रभ मिल्या एकँकार, एका घर दए वड्याईआ। नित नित उठ उठ करां दीदार, दीद ईद चन्द शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा लहिणा आप मुकाईआ। गुरसिख लहिणा जाए मुक, अन्त रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी गोदी लए चुक्क, सदा सुहेला होए सहाईआ। हरिजन बूटा ना जाए सुक्क, अन्तर आत्म हरा कराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा लुक्क, गुर अवतार पीर पैग़म्बर मात घलाईआ। कलयुग अन्तिम सिँघ हो के रिहा बुक्क, दो जहानां भबक सुणाईआ। कर किरपा जन भगतां मेटे तृष्ना भुक्ख, तृखा होर रहे ना राईआ। आपणी रखे साची कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। उज्जल करे मात मुख, मुख मुखड़ा आप महकाईआ। अबिनाशी करता गया तुठ्ठ, रहिमत रहिम रहिमान आप जणाईआ। परवरदिगार बेपरवाह आपे उठ, दोए दोए वखाए थाउँ थाईंआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां अंदर वड़ के लए पुच्छ, लभ्भण घर किसे ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जो गुरमुख गया रुस्स, कलयुग अन्तिम ल्या मिलाईआ। एका नाम निधान श्री भगवान साची सुच्च, गुरमुख सच्चा एक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे विच लुकाईआ। सतिगुर अंदर गुरसिख लुकणा, हरि हरि जू आप जणाइंदा। इक्को मार्ग सब ने पुच्छणा, दूजे राह ना कोई चलाइंदा। कलयुग वेला अन्तिम ढुकणा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। कूड़ कुड़यारी जड़ आपे पुट्टणा, थिर कोई रहिण ना पाइंदा। मनमुख बूटा मात सुक्कणा, गुरमुख गुर गुर आप उठाइंदा। शब्द निशाना कदे ना उकणा, अणयाला तीर मुख चलाइंदा। गोबिन्द गुर गुर गुरसिखां कोलों पुच्छणा, कवण दुआरे हरि

हरि दरस दिखाइंदा। फिरदा रहे चुप चुपना, ऊँची कूक ना कोई अलाइंदा। सद वसे अन्धेरे घुपना, अन्ध अन्धेर कोठड़ी आसण लाइंदा। जुगा जुगन्त सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी देदां रहे सची सूचना, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। अन्तिम सब ने करना कूचना, फड़ फड़ पाँधी आपणे राहे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन तारे सतिगुर मीत, मित्र प्यारे हथ्थ वड्याईआ। भगत भगवन्त गाए गीत, गा गा शुकर मनाईआ। वेखे धाम इक्क अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जाईआ। शब्द पढ़ाए इक्क हदीस, चौदां विद्या मुख सरमाईआ। लहिणा मुक्के राग छतीस, तीस बतीस ना कोई वड्याईआ। साहिब सुल्तान श्री भगवान एका छत्र झुल्ले सीस, राज राजाना ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे मन्दिर दए बहाईआ। साचा मन्दिर उच्च मुनारा, अगम्म अथाह आप रखाइंदा। साचा मन्दिर हरि दुआरा, हरि जू हरि हरि आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर निरगुण उज्यारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। साचा मन्दिर एकँकारा, एका आसण लाइंदा। साचा मन्दिर सच दरबारा, राज राजाना सोभा पाइंदा। साचे मन्दिर सच भिखारा, बण भिखारी झोली अग्गे डाहइंदा। साचे मन्दिर वस्त हरि थारा, धुर दरबारी आप वरताइंदा। साचे मन्दिर सच प्यारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। साचे मन्दिर हँ ब्रह्म दए अधारा, ब्रह्म आपणा अंग रखाइंदा। सोहँ शब्द सच जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव तिन्ने निउँ निउँ करन निमस्कारा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सीस झुकाइंदा। तेरी कुदरत साचे यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मुर्शद मुरीद आप मिलाइंदा। मुर्शद मुरीद आप मलाह, बेड़ा कायनात चलाईआ। परवरदिगार सुणाए सिफ्त सलाह, सलाहगीर आप हो जाईआ। हरि रहिमान बण खुदा, खुद तकबीर दए पढ़ाईआ। शरअ साची आप बणा, शरीअत नाल करे कुड़माईआ। मुकामे हक़ मुख छुपा, नक़ाब पड़दा रिहा पाईआ। आफताब रिहा शरमा, शमस अग्नी ना कोई तपाईआ। इक्क अहिबाब रबाब रिहा वजा, सच सतार हिलाईआ। पड़दा ओहला पीर पैग़म्बर पाक रसूल आप बणा, पाकी पाक नूर दरसाईआ। अन्तिम सब ते फतवा देवे ला, फातया सब दा देवे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण नाल करदा रिहा नक़ाह, लोकमात वड वड्याईआ। अन्तिम नाता दए तुड़ा, तुट्टी गंढु ना कोई पुवाईआ। कलम कलमा गए पढ़ा, कलाम इक्क अवाज़ सुणाईआ। अन्तिम लेखा सभदा दए मुका, लुक लुक मुखबरी आप कराईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे हस्ती जुदा, सो हस्ती सब दी दए मिटाईआ। जिस नूं कहिन्दे कदे ना होवे फिदा, सो फितरत सब दी गया गंवाईआ। चार जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर जो अक्खर वक्खर रिहा पढ़ा, लोकमात

हक़ीक़त हक़ जणाईआ। सो अन्तिम दीन मज़्ब ज़ात पात सब नूं करे सफा, सफ़ा सब दी दए उठाईआ। लिख लिख लेखा घलदा रिहा रफा, रफ़ लेखा आपणी झोली पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कदे ना होया फना, आपणा गुस्सा ना कोई प्रगटाईआ। जिस ने मुहम्मद लबां दिती कटा, सो लब ना कोए वखाईआ। जिस नूं नानक निरगुण रिहा ध्या, सो साहिब सच्चा माहीआ। जिस नूं मूसा कहे होया रुशना, कोहतूर डेरा ढाहीआ। जिस दी मंगदे रहे रज़ा, सद राजक राजक रहीम फेरा पाईआ। जिस नूं गोबिन्द गया ध्या, कल कल्की फेरा पाईआ। जिस दा दो जहान डंका रिहा वजा, नौबत नाम दए वजाईआ। जिस दी अञ्जील कुरान सिफ्त रहे गा, सही सलामत फेरा पाईआ। जिस दर तों मंगदे रहे आबे हयात, आबे हयात रिहा पिलाईआ। जेहड़ा गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां मिलदा रहे विच खुवाब, मन तन खैर खाह बणाईआ। सो गुरमुखां रिहा मिला, रल मिल सारे दर्शन लओ पा, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जन्म जन्म दा गेड़ा लओ चुका, गेड़ा फेर ना कोई भवाईआ। धर्म राए नूं धक्का देवे ला, चित्रगुप्त ना कलम उठाईआ। लाड़ी मौत जाए शरमा, गुरसिख दर ना फेरा पाईआ। गुरसिख ब्रह्मा विष्नूं शिव सीस देण झुका, निउँ निउँ लागण पाईंआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फूलन बरखा ला, सचखण्ड वज्जे सच वधाईआ। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी जन भगतां कटे सर्ब गुनाह, गुनाह इक्को इक्क जणाईआ। जुग जुग सब दा लेखा लेखे रिहा पा, परदे अंदर लेख लिखाईआ। कबीर जुलाहे ढोला रिहा गा, कूक कूक सुणाईआ। मुहम्मद चार यारी गया हंढा, यार साचा ना संग निभाईआ । ईसा तक्कदा रिहा राह, इक्को ओट तकाईआ। मूसा कहे मेरा बेपरवाह, मुर्शद सच्चा नूर अलाहीआ। भगत अठारां गए गा, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। तेई अवतार रूप वटा, पंज तत्त चोला गए हंढाईआ। सब नूं देंदा रिहा स्नेहा, चरनां हेठ मिले सरनाईआ। राम राम आप ध्या, कृष्न कृष्न ध्याईआ। तोबा तोबा आप सुणा, ऐली ऐली वज्जे वधाईआ। मौला मौला रहे गा, मलकल मौत करे कुड़माईआ। नानक निरगुण राहे पा, एका अक्खर दए समझाईआ। गोबिन्द पूत सपूता आप बणा, सिर छत्र दए झुलाईआ। अन्तिम सब दा लहिणा दए मुका, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। निहकलंक नरायण निरगुण दाता इक्क अकाला जाए आ, दूजा संग ना कोई रखाईआ। सम्बल महल्ला लए वसा, संभल संभल चरन टिकाईआ। सृष्ट सबाई दए भुला, अभल्ल भेव खुल्लाईआ। गुरमुख रुल्ला लए मिला, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। अन्तिम सब दी सुलाह दए करा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर दीन मज़्ब करे ना कोई पढ़ाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी दए पढ़ा, एका अक्खर दए जणाईआ। धरनी धरत धवल हौला भार दए करा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एका

नज़री आए ख़ुदा, एका राम राम वड्याईआ। एका इष्ट गुरदेव पुरख अकाल लए वटा, अकाल अकाल एका डंका लाईआ। साची धर्मसाल दए वखा, धर्म दुआरे कर रुशनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म सच परवान, दूसर करे ना कोई पढ़ाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जुग चार, चार वेद देण दुहाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव संसार, जीवण जुगत ना कोई वड्याईआ। पढ़ पढ़ थक्के वड बलकार, बल आपणा ना कोई रखाईआ। पढ़ पढ़ थक्के लोभ हँकार, हक़ हक़ीक़त ना कोई जणाईआ। बिन सतिगुर कोए ना पाए सार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे सन्तां गुरमुखां गुरसिखां गुर घर घर होवे सहाईआ।

✳ १५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी राम सिँघ दे गृह फिरोज़पुर ✳

वड संसारी खेल अपारा, हरि करता आप कराइंदा। आदि जुगादी बणे अवतारा, गुर गुर वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। नाम वस्त अमोलक ठांडी ठारा, दो जहानां आप वरताइंदा। किरपा कर एकँकारा, अकल कल धारी खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग आवे वारो वारा, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। बोध अगाधी बण लिखारा, लिख लिख सर्ब समझाइंदा। खाणी बाणी दए अधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेख आप लिखाइंदा। वड संसारा हरि मेहरवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। वसणहारा सच मकान, दरगाह साची आसण लाईआ। शाहो भूप राज राजान, शहिनशाह इक्को हुक्म वरताईआ। हुक्मे अंदर खेल महान, करता पुरख पुरख कराईआ। लख चुरासी वखाए सति निशान, धरत धवल दए वड्याईआ। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, सच संदेसा दए समझाईआ। सो पुरख अकाल गुण निधान, गुणवन्ता आपणा आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण गुण निधान, एकँकारा खेले खेल बेपरवाहीआ। आदि निरँजण वड बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। करता पुरख हो मेहरवान, अबिनाशी करता सच निशान झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे मार ध्यान, लख चुरासी अंदर वड़ वड़ आपणा खेल कराईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला, निरगुण सरगुण देवे दान, दर साची वस्त आप वरताईआ। खेले खेल श्री भगवान, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत लोकाई रिहा सुणाईआ। वेखणहारा संसार सागर, सहिसा होर ना कोए रखाइंदा। घट घट वसे काया गागर, काया गागर भाग लगाइंदा। जोधा सूरबीर वड बहादर, ज़ोर जोरू

ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड संसारी खेल कराइंदा। वड संसारी खेल अपारा, जुग जुग आप कराईआ। सतिजुग वेखे साची धारा, त्रेता एका बन्धन पाईआ। द्वापर खेल भगवन कारा, कलयुग पर्दा दए उठाईआ। शब्द अनादी बोल जैकारा, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। सेवा लाए गुर अवतारा, गुर गुर साची सेव कमाईआ। वस्त अमोलक बण वणजारा, दो जहानां आप वरताईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड संसारी भेव चुकाईआ। वड संसारी हरि निरँकार, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। सरगुण देवे नाम अधार, नाम निधाना आप अख्वाइंदा। निर्मल दीआ जोती जाता कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाइंदा। साचा मन्दिर इक्क दुआर, हरि मन्दिर इक्क वखाइंदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़, दूई द्वैती पड़दा लाहइंदा। महल अटल उच्च मिनार, गृह गृह आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संसार अन्तिम संसारी आपणा रूप वखाइंदा। संसार अंदर हरि जू वड़, वड़ वड़ खुशी मनाईआ। लख चुरासी अन्तर आत्म पौड़े गया चढ़, किसे नज़र ना आईआ। निरगुण सरगुण पल्लू लए फड़, फड़ पल्लू गंढु बन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस वटाईआ। बण संसारी श्री भगवान, भगवन आपणी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण देवे माणा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। बोध अगाध इक्क तराना, रागी राग इक्क अल्हाइंदा। घर मन्दिर सुहाए इक्क मकाना, काया बंक बंक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक्क समझाइंदा। साचा लेखा हरि करतार, करता आप जणाईआ। प्रगट कर गुरू अवतार, गुरू गुर दए समझाईआ। हरि का नाउँ अगम्म अपार, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। लख चुरासी होए उज्यार, जीव जंत होए सहाईआ। मानस मानुख होए पार, बेड़ा लोकमात तराईआ। रसना जिह्वा रखे आधार, बत्ती दन्द दन्द वड्याईआ। मनमति करे खुआर, बुद्धि बुध बिबेक कराईआ। रत्ती रत्त ना दिसे कूड़ गंवार, सच सुच्च दए वड्याईआ। गुर का शब्द गुर गुर करे प्यार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ब्रह्मा वेता लिख लिख लेखा वेद चार, शास्त्र नाल रलाईआ। वेद व्यासा पुराण अठारां गया जणा, प्राणी पुराण समझाईआ। कान्हा कृष्ना भेव चुका, गीता ज्ञान दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरानां कर ख़बरदार, मसला हक़ीक़त हक़ करे पढ़ाईआ। लाशरीक परवरदिगार, तौफीक आपणे हथ्थ रखाईआ। पीर पैग़म्बर कर त्यार, हक़ रसूल दए जणाईआ। माकूल असूल कर त्यार, आयत शरायत आप सुणाईआ। अञ्जील कुराना पा पा सार, काया कुरा दए वड्याईआ। मुकामे हक़ बोल नाअर, हक़ हक़ीक़त खोज खोजाईआ। लाशरीक परवरदिगार, धुर दा लहिणा दए दरसाईआ। सृष्ट सबाई वखाए सच्चा घर बार, गृह मन्दिर कुण्डा

लाहीआ। जोती जल्वा नूर उज्यार, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। मक्का काअबा खेल अपार, दहि दिशा वेख वखाईआ। साची सिख्या एका वार, एकँकारा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत संसारा सेवा लाईआ। हरि संसारी सच्चा राह, जन हरि आप जणाईआ। गुर गुर रूप दए सलाह, शब्दी बेड़ा इक्क वखाईआ। साची नईया लए चढ़ा, मँझधार आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई आप जणाईआ। सृष्ट सबाई साचा नाता, आदि जुगादी रूप वखाइंदा। जुगा जुगन्तर वेखे खेल तमाशा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। गोपी काहन बण बण पाए रासा, मंडल मण्डप रास रचाइंदा। करे खेल शाहो शबाशा, शहिनशाह आपणी कल वरताइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे भोग बलासा, घर घर विच सोभा पाइंदा। निज गृह कर कर वासा, सच मन्दिर इक्क सुहाइंदा। नूरो नूर जोत प्रकाशा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सति सतिवादी देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। तेई अवतार गायन गाथा, भगत अठारां नांल मिलाइंदा। ईसा मूसा सिर टेके आपे माथा, निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, खाणी बाणी लिख लिख साका, ख़ालक ख़लक आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संसार सागर राह जणाइंदा। संसार सागर एका टेक, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। जुग जन्म दी मेटे रेख, पूरब लहिणा झोली पाईआ। डूँघी भँवरी काया अंदर लए वेख, निज घर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, जुग जुग अपणा भेव खुल्हाईआ। सतिजुग साचा उतरया पार, अजूनी रहित आप समझाइंदा। त्रेते वेखे वेखणहार, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। अलख अगोचर द्वापर लेखा इक्को वार, अठ दस पड़दा लाहइंदा। कलयुग खेल कर अपार, पंज तिन्न खोज खोजाइंदा। इकवन्जा बवन्जा खेल अपार, बावन अक्खर वक्खर आपणे विच छुपाइंदा। अल्फ़ ये रोवे वारो वार, धीरज धीर ना कोई धराइंदा। इक्को अक्खर करन पुकार, आखर नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुग जुग मंगण वारो वार, प्रभ अग्गे सीस सर्ब झुकाइंदा। लेखा लिख लिख गए विच सर्ब संसार, लिख्या लेख सर्ब जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आप अख्वाइंदा। जुग करता हरि करने योग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी धुर संजोग, धुर दी धार आप बंधाईआ। वेखणहारा चौदां लोक, परलोक रिहा समझाईआ। सुणावणहारा सच सलोक, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवे जोत, निर्मल नूर नूर रुशनाईआ। करे प्यार काया कोट, किला बंक आप सुहाईआ। माया ममता हउमे हंगता कढ्ढे खोट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। किरपा निध ठाकर स्वामी खोल्हणहारा सोत,

सुरत सवाणी आप उठाईआ। जाप जपाए बिन रसना होट, बत्ती दन्द ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप दरसाईआ। साचा खेल श्री भगवन्त, आदि जुगादी आप जणाइंदा। सर्ब जीआं दा एका कन्त, दूसर होर ना कोई वखाइंदा। सदा सुहेला महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। मेल मिलावा साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाइंदा। एथे ओथे दो जहान बणाए बणत, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी एका मणीआ मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सागर वेख वखाइंदा। जगत सागर डूँघा ताल, हरि जू हरि हरि आप वखाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, चारों कुण्ट डोरू वाहीआ। सतिगुर दिसे ना किसे नाल, खाली फिरे सर्ब लोकाईआ। वरन बरन होए बेहाल, ज़ात पात दए दुहाईआ। त्रैगुण माया तोड़ सके ना कोई जंजाल, जागरत जोत ना करे कोई रुशनाईआ। अक्खरी लफ़ज़ घाल थक्के घाल, घाली घाल ना लेखे पाईआ। पुरख अबिनाशी चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क चलाईआ। दो जहानां वजाए आपणा ताल, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। लख चुरासी वेखे पत डाल्ह, फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सागर वेखे थाउँ थाईंआ। जगत सागर तेरी कलयुग लहर, लहर लहर नाल टकराइंदा। नौ खण्ड पृथमी दिसे कहर, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आइंदा। छत्ती राग गा गा थक्के आपणे तर्ज बहर, बहरापन ना कोए मिटाइंदा। सिफ्त सालाही कर कर थक्के शायर, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सलाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग सागर पड़दा आप उठाइंदा। जगत सागर वड संसार, वड संसारी वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम अन्त किनार, नव नौ चार हंढाइंदा। सचखण्ड निवासी हो त्यार, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सीस जगदीस ताज सहार, हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, हुक्म हाकम आप अल्हाइंदा। एका खोल्ह बन्द किवाड़, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। प्रगट होए इक्क परवरदिगार, बेऐब मुख नक़ाब ना कोई रखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोई मुकाइंदा। लेखा मंगे जगत दुआर, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। दर दर लभ्भदे गुर अवतार, दर दरवेश आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संसार सागर साची धार चलाइंदा। गुर अवतार होए अकट्ठे, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पीर पैग़म्बर आवण नट्ठे, दर दुआरे आप बहाइंदा। पुरख अबिनाशी चरन ढट्ठे, निउँ सजदा सीस झुकाईआ। इक्को वार सारे सत्थर लथ्थे, सत्थर बैठे इक्क वछाईआ। शरअ शरीअत दीन मज़्हब जो मार्ग दस्से, लोकमात मात जणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दिसे, अन्ध अन्धेर तेरा नूर ना कोई रुशनाईआ। चौदां तबक हक्के बक्के, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नाता

तुट्टे भैण भाई सके, पिता पूत ना कोई मनाईआ। साधा सन्तां पैंदे धक्के, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म तेरी सेव कर कर थक्के, आपणा बैठे बल गंवाईआ। जिउँ भावे तिउँ सब नूं रखे, सब चलण हुक्म रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत सागर वेख वखाईआ। जगत सागर वेख किनारा, हरि हरि आपणा खेल कराइंदा। नेत्र वखाए गुर अवतारा, गुर गुर बूझ बुझाइंदा। मातलोक दा लोक विहारा, लुक लुक पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैग़म्बर आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर खोलॄ अक्ख, लोकमात तकाईआ। उम्मत नबी दिसे सख, रसूल मिले ना कोई वड्याईआ। कलयुग खेड़ा होवे भट्ठ, भट्ठ खेड़ा दए वसाईआ। कूड़ा बुरज जाए ढट्ठ, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। नाता तुट्टे अठसठ, सठअठ ना कोई सहाईआ। लेखा चुक्के तीर्थ मट्ठ, शिवदुआला ना कोई वड्याईआ। कोई दुआर ना रखे कोई पत्त, मन्दिर मस्जिद रही कुरलाईआ। लख चुरासी भुल्ली ब्रह्म मति, पारब्रह्म ना कोई मिलाईआ। साहिब सतिगुर तुट्टा नत्त, जगत नाता करी कुड़माईआ। अंदर बाहर अन्धेरी रात, साचा नूर ना कोई रुशनाईआ। मनमुख जीव नार कमज़ात, हरि जू कन्त ना कोई हंढाईआ। अन्तिम वहणा डूँघे खात, खाता अक्खर इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि

६६० जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग फेरा एका माहीआ। जुग जुग फेरा सरगुण धार, निरगुण खेल कराइंदा। जुग जुग वेस ६६०

१२ गुरू अवतार, गुर गुर नाउँ धराइंदा। जुग जुग भगत भगवन्त करे प्यार, भगतन मीता आप अख्वाइंदा। जुग जुग साचे १२

सन्ता लए अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुग जुग साचे साजन पौड़े देवे चाड़ॄ, नाम पौड़ा इक्क लगाइंदा। जुग जुग गुरसिख साजन साचे अंदर देवे वाड़, फड़ बांहों आप बहाइंदा। जुग जुग बोध अगाधा बण लिखार, लिख लिख लेखा आप जणाइंदा। अक्खर वक्खर वक्खर अक्खर भेव न्यार, भेव अभेदा आपणे विच छुपाइंदा। गुर अवतार करन पुकार, कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। करे खेल आप करतार, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। गुरमुख विरले लाए पार, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। बांहों फड़ लए उठाल, आप आपणी गोद सुहाइंदा। एका अक्खर दए सिखाल, आत्म परमात्म सोहँ ढोला राग अलॄाइंदा। घर घर विच वखाए सच्ची धर्मसाल, दस्म दुआरी कुण्डा लाहइंदा। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर हो दयाल, मेहर नज़र उठाईआ। गुरसिख वेख साचे लाल, संसार सागर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्क जणाईआ।

✳ १५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी गुरचरन कौर दे गृह फिरोज़पुर ✳

आदि जुगादी सच भण्डार, हरि करता आप वरताइंदा। सो पुरख निरँजण सेवादार, बण सेवक सेव कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण वेखे विगसे वेखणहार, एकँकारा पड़दा लाहइंदा। आदि निरँजण कर पसार, नूर नुराना नूर धराइंदा। श्री भगवान हो त्यार, आप आपणा खेल कराइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबार, दर घर साचा आप सुहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दानी इक्क अख्वाइंदा। साचा दानी एकँकारा, आदि पुरख अख्वाईआ। निरगुण निरगुण बण वरतारा, साची वस्त आप वरताईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अलखणा आपणी अलख आप सुणाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। खोलणहारा आप किवाड़ा, थिर घर देवे माण वड्याईआ। शब्द अगम्मी इक्को थारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान आपणे हथ्थ रखाईआ। दयावान पारब्रह्म, प्रभ एका एक अख्वाइंदा। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, करनी किरत आप कमाइंदा । निरगुण निराकार अजूनी रहित बेड़ा बन्न्ह, पुरख अकाल आप चलाइंदा। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा दान रखे हथ्थ, हथ्थ नज़र किसे ना आइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा पड़दा लाहइंदा। निरवैर निरवैर देवे साची वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। साचे मन्दिर आपे रख, हरि जू आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव एका एक, एकँकारा आप जणाईआ। आपे लिखणहारा लेख, लिख लिख लेखा आप समझाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आईआ। वसणहारा साचे देस, दरगाह साचा देस सुहाईआ। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, सीस जगदीस ना मूंड मुंडाईआ। दर मंगण कोटन ब्रह्मा विष्न महेष, गणेश त्रै त्रै बैठे सीस झुकाईआ। तिन्न पंज करनहार हेत, नित नवित वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान इक्क समझाईआ। साचा दान आपणा रख, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। निरगुण नालों निरगुण कर वक्ख, सरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। पंज तत्त काया अंदर सति सरूपी वस्त रख, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रतख, प्रतख प्रतख आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दान आप वखाइंदा। साचा दान आत्म रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। साचा नाम सूरा सरबंग, आपणी वस्त झोली पाईआ। सदा सुहेला रखाए आपणा संग, संगी विछड़ कदे ना जाईआ। निज आत्म देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच

समाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती नूर नूर रुशनाईआ। नाम निधाना गाए बिन बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दात आपणी आप वरताईआ। साची दात दीनन दीन, एकँकारा आप वरताइंदा। लेखा जाणे लोक तीन, परलोक आपणा खेल जणाइंदा। जुग जुग सके ना कोए चीन, ज़ोर बल ना कोए धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त हथ्थो हथ्थ वखाइंदा। साची वस्त नाम भरपूर, भरपूरी आप रखाईआ। आदि जुगादि निरगुण सरगुण दए ज़रूर, ज़रूरत पंज तत्त पूरी आप कराईआ। दीआ बाती कमलापाती जगाए नूर, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। अनहद नादी आप वजाए साची तूर, तुरया राग राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दात आप वरताईआ। साची दात हरि का नाउँ, नाउँ निरँकारा आप वरताइंदा। देवणहारा थाईं थाउँ, थान थनंतर फोल फोलाइंदा। लेखा जाणे अगम्म अथाहो, अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणी करनी आप कराइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कर कर वेखे आप पसाउ, पसर पसारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतारा, कुदरत कादर आप उपाईआ। लख चुरासी भर भण्डारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आप वरताईआ। साचा नाम बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी आप सुणाईआ। साचा वणज इक्क वणजारा, सति सतिवादी सति सति दृढ़ाईआ। सच महल अटल मनारा, घर घर विच आप प्रगटाईआ। साचा दीआ बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। रसना जिह्वा कूक कूक करे पुकारा, अन्तरगत ना किसे जणाईआ। पंज तत्त रोवे ज़ारो ज़ारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश दए दुहाईआ। त्रैगुण माया सुट्टे मूँह दे भारा, रजो तमो सतो नेत्र नैण ना सके उठाईआ। विष्न ब्रह्म शिव दोए जोड़ करे निमस्कारा, पुरख अबिनाशी अग्गे सीस झुकाईआ। आत्म परमात्म खेल अपारा, निरगुण निरगुण वंड वंडाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म कर उज्यारा, घर घर एका नूर वखाईआ। देवणहारा वस्त थारा, साची वस्त आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, एकँकार आप अख्वाइंदा। आदि जुगादी मार्ग ला, जुग जुग वेख वखाइंदा। गुर अवतार दे सलाह, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। कलमा नबी इक्क जणा, कायनात फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची वस्त हरि हरि नाम, आपणे हथ्थ रखाईआ। कोटन कोटि मंगण राम, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि बैठे शाम, घनईया रूप वटाईआ। कोटन कोटि सुणन पैग़ाम, पीर पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। कोटन

६६२
१२

कोटि गुरू गुर गुर करन ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। कोटन कोटि गायण गान, ब्रह्मा वेता करे पढ़ाईआ। कोटन कोटि शास्त्र सिमरत वेखे श्री भगवान, पुराण प्राणी माण रखाईआ। कोटन कोटि गीता ज्ञान, अठारां अध्याए वड्याईआ। कोटन कोटि अञ्जील कुरान, काया कुरा दए समझाईआ। कोटन कोटि नानक करन प्रणाम, सीस पुरख अकाल झुकाईआ। कोटन कोटि गोबिन्द ढह ढह चरन मंगे दान, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। कोटन कोटि जोधे सूरबीर बली बलवान, बल आपणा गए जणाईआ। कोटन कोटि रवि ससि सूरज चन्द मंडल मण्डप शर्मसार होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कोटन कोटि ज़िमीं असमान, ज़रा ज़रा ख़ाकी ख़ाक उडाईआ। कोटन कोटि पुरी लोअ आकाश प्रकाश सजदा सीस झुकाण, निमख निमख आपणा आप कटाईआ। कोटन कोटि भगत भगवन्त दर अग्गे ख़ाली झोली सर्ब भराण, आसा आसा पूर कराईआ। कोटन कोटि सन्त छड्ड के माण, अभिमान रूप ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि ख़ाक रहे छाण, वरभण्डी भंडी पाईआ। कोटन कोटि बैठे काहन, गोपी मंडल रास रचाईआ। आदि जुगादी इक्क भगवान, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। सर्ब जीआं देवणहारा दान, आत्म परमात्म झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी रचना रच, आपे वेखे सच्चो सच्च, सच सुच्च एका नाउँ दृढ़ाइंदा। देवणहारा इक्को दाता, दाता दानी दया कमाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को ज्ञाता, ज्ञान ज्ञान ध्यान समझाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्क पिता माता, पुरख अकाल अख्वाइंदा। सर्ब जीआं जग इक्को नाता, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को गाथा, अन्तर मन्त्र आप पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को साथा, सगला संग निभाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ देवे दाता, बण दानी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तत्त तत्त नाल मिलाइंदा। सर्ब जीआं एका तत्त, तत्त तत्त जणाईआ। सर्ब जीआं एका रत्त, रत्त रत्त नाल मिलाईआ। सर्ब जीआं एका सथ्थ, सत्थर यारड़ा इक्क हंढाईआ। सर्ब जीआं एका वथ्थ, वस्त अमोलक रिहा वरताईआ। सर्ब जीआं पाए नथ्थ, लख चुरासी आपणे गेड़े विच रखाईआ। सर्ब जीआं नाता बंधाए तत्त अठ्ठ, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मनमति करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक इक्क वखाईआ। वस्त अमोलक इक्क अनडिठ, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां देवे कर के हित, कर किरपा झोली पाईआ। साहिब सतिगुर सज्जण मित, मित्र प्यारा इक्क अख्वाईआ। बिन कलम शाही लेखा दए लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। बिन नेत्र नैण आए दिस, निज नेत्र इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त हथ्थ रखाईआ। साची वस्त डूँग्घे सागर, हरि सतिगुर आप रखाइंदा। जन भगतां निर्मल कर्म

कर उजागर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। वणज वपारी इक्क सौदागर, गृह साचा हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वखाइंदा। काया अंदर वस्त अपार, हरि जू हरि हरि आप टिकाईआ। बिन दमां कराए वणज वपार, करता कीमत ना कोए लाईआ। हट्ट हटवाणा खोल्हे किवाड़, दर दरवेश सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वस्त इक्क दरसाईआ। सच वस्त इक्क आदरश, आदरशी आप जणाइंदा। मेटणहार जगत हरस, हवस होर ना कोए वधाइंदा। वखावणहारा ज़िमी असमान कुर्श, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप प्रगटाइंदा। साची वस्त कर प्रगट, प्रगट आपणी धार चलाईआ। जुग जुग चलाए हट्ट, गुर अवतार मात खुल्हाईआ। हरिजन लाहा लए खट, गुरमुख मिले माण वड्याईआ। सति देवे इक्को सति, असति रूप ना कोए वखाईआ। गृह गृह देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वखाईआ। साची वस्त साचे घर, हरि सतिगुर आप रखाइंदा। कर किरपा देवे जिस जन वर, वर इक्को इक्क जणाइंदा। फड़ पल्लू बन्न्हे लड़, बध्धा लड़ ना कोए छुडाइंदा। साचे मन्दिर जाए चढ़, काया गुरुदुआर आप वरताइंदा। निष्अक्खर अक्खर आख़र आपे पढ़, अक्खर अक्खर रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विद्या मोह वधाइंदा। साची वस्त आत्म नूर, नूर नुराना आप जणाईआ। साची वस्त शब्दी तूर, तुरीआ राग अल्हाईआ। साची वस्त वखाए नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त देवे घर, घर घर विच सोभा पाईआ। घर सोभा होए सोभावन्त, सोभनीक आप सुहाइंदा। घर मेला श्री भगवन्त, भगवन आपणा मेल कराइंदा। घर सेजा नारी कन्त, कन्त कन्तूहल आप सुहाइंदा। घर महिमा नाद अगणत, अनरागी राग सुणाइंदा। घर आत्म परमात्म बणे बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त एका दर वखाइंदा। एका वस्त जगत वणजारा, चार युग हट्ट चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। नौ खण्ड पृथमी पावे सारा, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दए हुलारा, लोआं पुरीआं आपणा हुक्म जणाईआ। लहिणा देणा चुकाए गुरू अवतारा, पीर पैग़म्बरां बाकी कोए रहिण ना पाईआ। नाता तोड़े कूड़ कुड़यारा, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। नार दिसे ना कोए विभचारा, साची सिख्या सिख समझाईआ। इष्ट देव गुरदेव आत्म परमात्म इक्क सहारा, परम पुरख सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त घर घर दए वखाईआ। साची वस्त घर घर पेख, पेख पेख खुशी वखाइंदा। नज़री आए बिन रूप रंग रेख,

रेखा सब दी आप मिटाइंदा। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुगा जुगन्तर गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप जणाइंदा। शब्दी नाद ब्रह्म ब्रह्माद, आदि जुगादि जुग करता आप वजाइंदा। भगत भगवन्त देवे दाद, सति सतिवादी आपे लाध, सुरती सुरत शब्द रखाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान रखे लाज, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ग़रीब निवाज साजण साज, निरगुण सरगुण रच रच काज, करता पुरख आपणी करनी आप कराइंदा। हरि का जाणे ना कोए समाज, कोटन कोटि समाजी हरि का भेव कोए ना पाइंदा। रसना जिह्वा खा खा खाज, बत्ती दन्द पीसण पीस सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त चार युग आप वरताइंदा। चार युग इक्को हट्ट, हरि हरि आप खुल्हाईआ। साची वस्त अंदर घत्त, अतोट अतुट वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जन भगतां मार्ग साचा दस्स, रैहबर आपणा नाउँ वड्याईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त एका एक वखाईआ। गुरमुख वस्त पाई एक, मिल्या एकँकारा। दो जहानां मिली टेक, जगत जुगती पार किनारा। त्रैगण माया ना लग्गे सेक, पंज तत्त ना कोए अखाड़ा। निज नेत्र निज आत्म लए वेख, करे कराए सच प्यारा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि सदा सदा बिबेक, बुद्धी पावे ना कोए सारा। निरगुण सरगुण धर धर भेख, लोकमात लए अवतारा। जीव जंत साध सन्त भगत भगवन्त लख चुरासी आपे वेख, चार कुण्ट दहि दिशा देवे इक्क हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी देवे दान, लख चुरासी देवणहारा।

✳ १५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सुलखण सिँघ दे गृह रुकना मुंगला ज़िला फिरोज़पुर ✳

सो पुरख निरँजण खेल महाना, गहर गम्भीर हरि आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण वड मर्दाना, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। एकँकारा नौजवाना, सति सरूप समाइंदा। आदि निरँजण खेल महाना, नूरो नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसे सच मकाना, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशाना, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ राज राजाना, शाह पातशाह आप अख्वाइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवाना, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। दर दरवेश बण दरबाना, दर आपणे अलख जगाइंदा। देवणहारा आपणा दाना, दाता दानी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। जुग

चौकड़ी खेल अपार, जुग करता आप कराईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाईआ। साचा ढोला बोल जैकार, सोहला एका नाम सुणाईआ। शब्द अगम्म करे गुफ़तार, हरफ़ बहरफ़ ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। जुग जुग धार बोध अगाध, हरि शब्दी शब्द जणाइंदा। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणा रंग रंगाइंदा। अनाद अनादी इक्क नाद, गृह मन्दिर आप सुणाइंदा। पकड़ उठाए साचे सन्त साध, सतिगुर आपणा भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म देवे दाद, नाता बिधाता इक्क बंधाइंदा। सति सतिवादी दस्से साची गाथ, अन्तर मन्त्र आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल आप धराइंदा। साची कल आपे रख, हरि करता खेल कराईआ। निरगुण निरगुण हो प्रतख, सरगुण सरगुण लए जगाईआ। एका नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सेवा करे बण बण दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। घट अन्तर पावे रास, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। हरि मन्त्र नाम आदि अन्त, एकँकारा आप प्रगटाइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग खेल कराइंदा। गुर अवतार बणाए बणत, पीर पैग़म्बर घाड़त, घड़त आप घड़ाइंदा। एका नाम देवे साचा मंत, मन्त्र आपणा आप समझाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाइंदा। साची धारा निरगुण सरगुण रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए सूरा सरबंग, ब्रह्म पारब्रह्म कुड़माईआ। गीत सुहाग सुणाए छन्द, अनहद सेवा सेव कमाईआ। देवणहारा सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। जुग जुग कटणहारा पन्ध, बण पाँधी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। भेव अभेदा रखे हथ्थ, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाए रथ, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। खाणी बाणी बोध अगाधी सुणाए गाथ, नाम निधाना आप दृढ़ाइंदा। पीर पैग़म्बर देवे साथ, गुर अवतार एका संग निभाइंदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। उत्तम रखे आपणी ज़ात, ज़ात पात विच कदे ना आइंदा। डूँघा रखे आपणा खात, खाता नज़र किसे ना आइंदा। जुग जुग देवणहारा साची दात, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप वरताइंदा। बैठा रहे सदा इकांत, अडोल अडुल कदे ना जाइंदा। लख चुरासी बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। दस्सणहारा भविख्त वाक, गुर अवतार आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे लोकमात, परलोक आपणा भेव चुकाइंदा। चौदां लोक वेखे खाट, अंदर वड़ वड़ सेज हंढाइंदा।

चौदां तबकां मेटणहार अन्धेरी रात, चौदस चन्द आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, जुग करता आपणी कार कराइंदा। साची करनी करे कार, करता पुरख वडी वड्याईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, सरगुण निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, धुर दी बाणी राग अल्लाईआ। कागद कलम कर त्यार, लेखा लिखे नाल शाहीआ। सिफ्त सालाही सिफ्त करे विच संसार, आपणा नाउँ आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा खेल रचाईआ। जुग जुग खेल करे अवल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, लख चुरासी गेड़ा आप दिवाइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, आप आपणी गंढु पुवाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, महल अटल डेरा लाइंदा। सच संदेस नर नरेश एका घल्ला, नाम नामा आप समझाइंदा। जोती जोत आपे बल्ला, दीआ बाती कमलापाती इक्क टिकाइंदा। सच सिंघासण साचा मल्ला, सचखण्ड दवारे डेरा लाइंदा। नूरी नूर नूरी अल्ला, आलमीन वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग करता जुग करनी करनेहारा आप कराइंदा। करनेहारा आप करतार, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रगट हो विच संसार, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा आया पार, कलयुग वेस एक वटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी सुट्टी डूँघी गार, सिर आपणा भार वखाईआ। लेखा जाण तेई अवतार, पीर पैग़म्बर मुर्शद करे पढ़ाईआ। गुर गुर देवे इक्क आधार, बोध अगाधी सच निशाना इक्क समझाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क आधार, आत्म परमात्म करे विचार, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी साचा राह चलाईआ। सति सतिवादी साचा राह, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, लख चुरासी बेड़ा कंध उठाइंदा। भगत भगवन्त लए जगा, जीवण जुगत जगत जणाइंदा। सन्त साजण लए मिला, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरमुख रंग लए रंगा, रंग मजीठी इक्क चढ़ाइंदा। गुरमुख कबीला लए बणा, बंस सरबंस आप सुहाइंदा। लख चुरासी दए रुढ़ा, मँझधार ना कोए बचाइंदा। राए धर्म दए सज़ा, कुम्भी नरक निवास रखाइंदा। करे खेल बेपरवाह, बेपरवाह भेव ना आइंदा। गुर अवतार लए प्रगटा, प्रगट आपणी कल वखाइंदा। साची सिख्या इक्क समझा, साख्यात रूप दरसाइंदा। धुर दा लेखा दए पढ़ा, रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। काग़ज़ कलम दए लिखा, लिख लिख आप बणाइंदा। निरगुण सरगुण नाउँ धरा, सरगुण आपणा पर्दा लाहइंदा। करे खेल सहिज सुभा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप वखाइंदा। साची धार आदि जुगादि, जुग करता आप जणाईआ। सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग सुणे अन्त फ़रयाद, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। देवणहारा साची दाद, वस्त वेखे हरि हरि थाईंआ। लेखा जणाए ब्रह्म ब्रह्माद, दो जहानां फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई सज्जण साक, नाता बिधाता इक्क जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा हरि भगवान, एका एक जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा आया दान, दाता दानी बण वरताइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग कर परवान, नाम परवाना गुर अवतार पीर पैग़म्बर हथ्थ फड़ाइंदा। चौदां विद्या कर प्रधान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। नाम निधाना सच ज्ञान, ज्ञान हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। नेत्र दिसे ना कोए निशान, नैण नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क वखाइंदा। साची सिख्या साख्यात, आदि जुगादि जणाईआ। हरिजन बणाए पारजात, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सति सरूपी देवे दात, दात आपणा नाम वरताईआ। इक्क जणाए वड करामात, करामात घर साचे कर रुशनाईआ। पंच विकारा करे घात, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। आपे मेट अन्धेरी रात, चन्द चांदनी आप चमकाईआ। गुरमुखां पुच्छे आपे वात, गृह मन्दिर फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम आई वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लिख लिख गए भविख्त वाक्, वातावरन जगत सुणाईआ। अन्तिम खोल्हे हरि जू ताक, दो जहानां कुण्डां लाहीआ। हरिभगत उतारे साचे घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी सुट्टे डूँघे खात, ना सके कोए बचाईआ। सतिजुग जणाए साची गाथ, कलयुग लेखा दए मुकाईआ। दिवस रैण रहे प्रभात, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करन दा चाउ, हरि हरि जू आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम करे सच न्याउँ, साचा अदल आप कमाइंदा। हरिजन वेखे थाईं थाउँ, थान थनंतर वेख वखाइंदा। लख चुरासी विच्चों पकड़े बांहों, फड़ बांहों गले लगाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत गोद सुहाइंदा। इक्क सुणाए साचा नाउँ, ढोला सोहला आप सुणाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, कागों हँस आप उडाइंदा। सदा सुहेला सद देवे ठंडी छाउँ, एथे ओथे दया कमाइंदा। इक्क वसाए नगर खेड़ा सच ग्राउँ, साढे तिन्न हथ्थ बंक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाइंदा। साची धारा सन्त सुहेला, सति सतिवादी आप जणाईआ। कलयुग आया अन्तिम वेला, वेला गया हथ्थ ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। लेखा जाणे गुरू गुर चेला, गुर चेला आपणा बन्धन पाईआ। वसणहारा धाम नवेला, जोती जोत करे रुशनाईआ। कटणहारा राए धर्म दी जेला, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर,

६६८ १२

६६६
१२

दर मन्दिर वज्जे वधाईआ। दर मन्दिर हरि सुहावणा, सोभावन्त करतार। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, आप लगाए एकँकार। चार वरन आप उठावणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश कर प्यार। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ावणा, आत्म परमात्म दए आधार। सोहँ ढोला साचा गावणा, रसना गाए सर्ब संसार। अमरापद इक्क वखावणा, अमर रूप आप निरँकार। साचा नाद इक्क वजावणा, धुन नाद अगम्म अपार। मिल सख़ीआं मंगल गावणा, गीत गोबिन्द जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमावणा। साची करनी लए कमा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटा, मिटे जगत अन्धेरा छाहीआ। जूठा झूठा भाण्डा दए भन्ना, खाली ठूठा सर्ब वखाईआ। जन भगतां रस अनडिठा दए चुआ, अनडिठड़ी धार वहाईआ। कँवल नाभी पुट्ठा आप करा, मुख कँवल कँवल खुल्हाईआ। निर्मल बाती आप टिका, अज्ञान, अन्धेर मिटाईआ। बूंद स्वांती आप प्या, तृष्ना भुख मिटाईआ। बन्द ताकी आप खुल्हा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। साची सेजा डेरा ला, आत्म सेजा दए वड्याईआ। सुरत सुवाणी लए जगा, शब्द हलूणा एका लाईआ। फड़ बांहों गले लगा, गलवकड़ी एका पाईआ। जन्म जन्म दा विछोड़ा दए मिटा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। साचा ढोला दए सुणा, सोहँ एका गाईआ। बण विचोला बेपरवाह, काया चोला दए बदलाईआ। मौला रूप आप खुदा, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। आपे बंस आपे होए जुदा, आपे काया बस्ती दए वखाईआ। आपे सहँस नूर रुशना, जल्वा नूर नूर धराईआ। आपे मुकामे हक़ डेरा ला, हक़ हक़ीक़त वेखे थाउँ थाईंआ। लाशरीक आप अख्वा, सिरक्त सब दी दए मिटाईआ। कलयुग अन्तिम ईसा मूसा मुहम्मद रखे गवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच रखाईआ। कलयुग लेखा लेखे लाए, भेव कोए ना आइंदा। पूरब लहिणा सर्ब चुकाए, बाकी होर ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चरन कँवल कँवल चरन सद रखाए, सरनगति इक्क जणाइंदा। दोए दोए जोड़ लागण पाए, सजदा सीस झुकाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लए चलाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। साचा खेल करे अगम्म, अगम्मड़ी कार कराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर बन्न्ह, बन्धन एका नाम पाईआ। देवणहारा नाम धन, धन ख़ज़ीना इक्क जणाईआ। वसणहारा बिन छप्परी छन्न, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। सुणनहारा बिन राग कन्न, बिन रसना रिहा गाईआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी कार कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे डंन, डंका एका नाम वजाईआ। काया माटी भाण्डा काचा देवे भन्न, घड़न भन्नणहार वेख वखाईआ। सतिजुग सति सतिवादी चाढ़े चन्न, बिन चन्द करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा बणे जननी जन, गुरमुख साचे गोद सुहाईआ। एका राग सुणाए कन्न, सोहँ ढोला साचा गाईआ। दहि दिशा

उडे ना मन, मन वासना दए खपाईआ। भाग लगाए काया तन, तन तन्दूर ना कोए तपाईआ। गढ़ हँकारी देवे भन्न, भय भयानक होए सहाईआ। दरस दिखाए नेत्र अन्न्, नैण नैण नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा नाम समझाईआ। सतिजुग साचा नाउँ, हरि साचा सच जणाइंदा। सृष्ट सबाई देवे थाउँ, चरन सरन सरन चरन इक्क जणाइंदा। जुग जुग विछड़े मेले फड़ फड़ बांहों, सेवक सेवादार आप हो जाइंदा। कलयुग अन्त करे न्याउँ, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी देवणहारा दान, दाता दानी दयावान इक्क अख्वाइंदा।

✳ १५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी कृपाल सिँघ दे गृह पिण्ड गोले वाला ज़िला फिरोज़पुर ✳

सतिगुर पूरा सदा दयाल, हरि जुग जुग दया कमाइंदा। गुरमुख गुर गुर वेखे लाल, लाल अनमुलड़े आप प्रगटाइंदा। दो जहानां बण दलाल, जगत विछोड़ा पन्ध कटाइंदा। जीवण जुगती घाले घाल, कीती घाल वेख वखाइंदा। सच वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क जणाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। गुरसिख लेखा विच जहान, दो जहानां वाली आप चुकाइंदा। अन्तर आत्म देवणहारा दान, परमात्म खेल वखाइंदा। सृष्ट सबाई झूठ दुकान, जगत नाता मोह ना कोए वखाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमाण, निरगुण सरगुण आप सुणाइंदा। चरन कँवल इक्क ध्यान, सुरती शब्द शब्द मिलाइंदा। घर मेला सतिगुर सख़ी काहन, वाहवा बंसरी नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा ठाकर स्वामी, घर ठांडा इक्क वखाईआ। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट रिहा समाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां बोध अगाध पढ़ाए बाणी, अनहद नादी नाद सुणाईआ। वेखणहारा चारे खाणी, चारों कुण्ट रिहा समाईआ। आपे जाणे आपणी अकथ कहाणी, कथनी कथ ना कोए मुकाईआ। देवणहारा पद निरबाणी, दर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा साहिब सुल्तान, शहिनशाह शाह आप अख्वाइंदा। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। वेखणहार ज़िमी असमान, गगन मंडल फोल फोलाइंदा। रवि ससि सूरज चन्न जोत महान, किरन किरन चमकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। सतिगुर पूरा वड बलवाना, बल आपणे हथ्थ रखाईआ। जोधा सूरबीर मर्द मर्दाना, मर्दानगी इक्को इक्क जणाईआ।

आदि जुगादी सच तराना, राग अनादी नाद अलाईआ। पावे सार दो जहानां, रूप अनूप वटाईआ। निरगुण सरगुण पहरे बाणा, गुर गुर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। सतिगुर पूरा उच्च अटल्ला, हरि एका एक अख्वाइंदा। वसणहारा सच महल्ला, दर घर साचा आप सुहाइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, जुग जुग खेल कराइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, सोभावन्त सोभा पाइंदा। निर्मल जोती आपे बला, प्रकाश प्रकाश नाल प्रगटाइंदा। सति संदेसा एका घल्ला, जुग चौकड़ी आप पढ़ाइंदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू एका गंढु रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साची कार कमाइंदा। सतिगुर सच्चा सदा सदा प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। दीनां नाथा दीन दयाल, दीनन होए आप सहाईआ। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करना, करनहार करतारा। लख चुरासी आपे वरना, वेखणहारा धुर दरबारा। गुरमुख गुर गुर आपे फड़ना, लख चुरासी विच्चों कर उज्जारा। साचे मन्दिर आपे चढ़ना, वेखणहार महल्ल मनारा। अक्खर वक्खर आपे पढ़ना, शब्द अगम्मी बोल जैकारा। साची तरनी आपे तरना, गुर सतिगुर तारनहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। सतिगुर पूरा नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। खेले खेल दो जहान, दो जहानां वाली फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, दाता दानी आप वरताईआ। गुर अवतारां देवे ज्ञान, पीर पैग़म्बरां कलमा नबी पढ़ाईआ। वसणहारा सच मकान, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। आदि जुगादि सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सतिगुर पूरा सूरा सरबंग, सूरबीर आप अख्वाइंदा। चाड़नहारा साचा रंग, रंग रंगीला रंग रंगाइंदा। वसणहारा सच पलँग, आत्म सेजा इक्क हंढाइंदा। करे प्रकाश निर्मल चन्द, नूरी जोत डगमगाइंदा। लख चुरासी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार आप हो जाइंदा। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। आत्म परमात्म सुणाए छन्द, साचा ढोला इक्क गाइंदा। घर विच घर देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीखाना तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। सतिगुर पूरा मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिगुर पूरा देवणहारा दान, दाता दानी दया कमाईआ। सतिगुर पूरा लावणहार निशान, निशाना जगत मात झुलाईआ । सतिगुर पूरा साचा काहन, काहन एका रूप वटाईआ। सतिगुर पूरा देवणहारा माण, निमाणयां होए

सहाईआ। सतिगुर पूरा तोड़नहार अभिमान, अभिमानी कोए रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा सर्ब जीआं दा जाणी जाण, जानणहारा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा सदा बेपहचान, जगत नैण नज़र ना आईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, जुग करता आप कराईआ। लख चुरासी बाल अञ्याण, जीव जंत भेव ना राईआ। चारे खाणी होए हैरान, हरि का रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि, जुग जुग खेल कराइंदा। सति सतिवाद वजाए नाद, अनादी राग सुणाइंदा। निरगुण सरगुण सुणे फ़रयाद, नेरन नेरा हो हो फेरा पाइंदा। गुरमुख गुर गुर लख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणे अंग लगाइंदा। पिता पूत लडाए लाड, माता आपणी गोद सुहाइंदा। वस्त देवे साची दाद, नाम निधाना झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। गुरमुख साचा लए उभार, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जन्म जन्म दा रोग निवार, दुरमति धोवे मैल छाहीआ। अमृत देवे ठंडा ठार, जगत तृष्ना भुख गंवाईआ। नेत्र खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। आत्म सेजा कर प्यार, प्रीतम प्यारा लए मिलाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द सुणाईआ। अनहद धुन सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक आप अल्हाईआ। जोती नूर कर उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, प्रेम प्यार इक्क सिखाईआ। आप आपा देणा वार हउँ घोली घोल घुमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा यार, यारी यारां नाल निभाईआ। लख चुरासी होए खुआर, जीव जंत जंत कुरलाईआ। मात पित धीआं पुत्तर भाई भैण साक, सज्जण रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरमुख सोहे सच दरबार, सतिगुर पूरा एका चरन दए सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे खुआर, कूड़ा कूड़े धन्दे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा बेपरवाह, भेव अभेदा आप जणाइंदा। गुरमुख सज्जणा लए तरा, तारनहारा एका आइंदा। सति सतिवादी नाम पढ़ा, नईया नाम आप चढ़ाइंदा। साचा सईया इक्क अख्वा, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। धुर दा लेखा दए चुका, लिख लिख लेखा आप मुकाइंदा। भरम भुलेखा दए कढा, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। नेतन नेता दरस दिखा, पिछला चेता आप जणाइंदा। जन्म जन्म दा भेता दए खुल्हा, अनभउ प्रकाश वखाइंदा। काया खेता हरा करा, पत्त डाल्ही आप महकाइंदा। कलयुग लेखा दए चुका, लेखा कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा दया कमाइंदा। सतिगुर सच्चा सूरबीर, नाम बीरता इक्क वखाईआ। शब्द निराला मारे तीर, अणयाला आप चलाईआ। चोटी चढ़े इक्क अख़ीर, आख़र आपणा चरन छुहाईआ। बदलणहारा आप तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ

रखाईआ। खिचणहारा सच तस्वीर, मुसव्वर दूजा नज़र कोए ना आईआ। देवणहारा ठांडा सीर, निझर झिरना दए झिराईआ। चिट्टे उत्ते खिच्च लकीर, पिछली लकीर दए मिटाईआ। कलयुग दिसे थोड़ी भीड़, भीड़ा पन्ध आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा सच्चा ज्ञाता, एकँकारा इक्क अख्वाइंदा। सतिगुर पूरा सच्चा दाता, दाता दानी दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा सच्चा नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। सतिगुर पूरा सुणाए साची गाथा, अन्तर मन्त्र आप सुणाइंदा। सतिगुर पूरा पुच्छे बाता, राती सुत्तयां आप उठाइंदा। सतिगुर पूरा मेटे अन्धेरी राता, निर्मल जोत डगमगाइंदा। सतिगुर पूरा जगत बंधाए साचा साथा, जग जीवण गंढु पुवाइंदा। सतिगुर पूरा पूरा करे घाटा, घाटा कोए रहिण ना पाइंदा। सतिगुर पूरा खाली भरे बाटा, अमृत रस विच चुआइंदा। सतिगुर पूरा लहिणा देणा देवे हथ्थो हाथा, हथ्थो हथ्थ आप फड़ाइंदा। सतिगुर पूरा सर्ब कला समराथा, समरथ आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरिभगत बणाए साची बणत, सन्त सतिगुर होए सहाईआ। गुरमुख लेखा लिख अगणत, अगणत दए समझाईआ। गुरसिख मेला साचे कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ । काया चोली रंग बसन्त, बसन बनवारी आप रंगाईआ। माणस जन्म ना होए भंगत, लख चुरासी ना कोए फिराईआ। जिस जन मेले आपणी संगत, सगला संग रखाईआ। नाता तोड़ भुख नंगत, साचा बस्त्र तन पहनाईआ। हरिजन होर ना जाए मंगत, दूजे दर ना कोए वड्याईआ। सतिगुर मेला आदि अन्त, गुर चेला होए सहाईआ। कूड़ी क्रिया जीव जंत, कूड़ा धन्दा सर्ब लोकाईआ। कलयुग माया पई बेअन्त, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। भरमे भुल्ले जीव जंत, जीवण जुगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ । सतिगुर पूरा सच्चा ठाकर, धुर दा ठेकेदार अख्वाइंदा। लख चुरासी करे वणज बण सौदागर, सौदा हट्टो हट्ट विकाइंदा। बूंद रक्त मेला काया गागर, गगरीआ काची माटी सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण देवे आदर, आदरश आपणा इक्क वखाइंदा। मेहरवान करीम करता कादर, कुदरत आपणा रंग रंगाइंदा। वड बलवान सूरबीर बहादर, जोधा आपणा बल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव खोल्हे करतारा, करनी आपणी आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दा सच विहारा, कलयुग अन्तिम आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेले यारा, पूरब लहिणा रिहा मुकाईआ। माणस जन्म ना होए खुआरा, खुआरी आपे रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाईआ। साचा लेखा लिखणहारा, लिख लिख आपणे हथ्थ

रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। कोटन कोटि नाम बोल जैकारा, जै जैकार सिफ्ती सिफ्त सालाहइंदा। गुर अवतार दे सहारा, गुर गुर आपणा इष्ट जणाइंदा। पीर पैग़म्बर कर उज्यारा, उज्जल मुख आप वखाइंदा। साचा सुख धुर दरबारा, दूजा दर ना कोए सुहाइंदा। लख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। मात पित ना कोए प्यारा, पूत सपूत गोद ना कोए सुहाइंदा। सृष्ट सबाई धुंआंधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। घर घर होए हाहाकारा, होका नाम ना कोए दिवाइंदा। एका भगत भगवन्त करे प्यारा, दूजा प्यार ना कोए जणाइंदा। माया बध्धा सर्ब संसारा, मोह मुहब्बत ज़ंजीर एका पाइंदा। लख चुरासी लग्गा अखाड़ा, नटुआ आपणा स्वांग वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख इक्क समझाइंदा। साचा सुख सतिगुर सहारा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर, रोंदा गया विच संसारा, पुत्तर धीआं कम्म किसे ना आईआ। बिन साहिब सतिगुर ठांडा दिसे ना कोए दरबारा, सृष्ट सबाई अग्नी चिखा तपाईआ। गोबिन्द साचा दस्स के गया सहारा, बाले नीहां हेठ दबाईआ। धृग जीवण संसारा, जिस मिले ना सच्चा माहीआ। घर मिले ना आप निरँकारा, सो बंक ना कोए सुहाईआ। गुरसिख तेरा वसदा रहे चुबारा, चार युग होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। सतिगुर का माण सच संदेस, सति सतिवादी आप जणाइंदा। कोटन कोटि नर नरेश, राए धर्म हथ्थ फड़ाइंदा। अग्गे किसे ना चले कोई पेश, पिता पूत ना कोए छुडाइंदा। नानक निरगुण दे के गया सच संदेस, आपणी वस्त अंगद झोली पाइंदा। कूड़ी क्रिया कूड़ी खेड, कूड़ा रंग रहिण ना पाइंदा। जिस जन सतिगुर देवे आपणा भेत, पिता पूत रूप हो जाइंदा। बिन साहिब सुंञा खेत, पहरेदार ना कोए अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ा लेखा लेख मुकाइंदा। सतिगुर पूरा साहिब इक्क, अकल कला अख्वाईआ। आदि जुगादी लेखा लिख, भगतां दए वड्याईआ। साची सिख्या लैणी सिख, साख्यात समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करतारा, करनी करता आप कमाइंदा। गुरमुख गुर गुर करे प्यारा, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा । बीज बीजे अगम्म अपारा, पत्त डाल्ही इक्क महकाइंदा। फल लग्गे अमृत रस ठंडा ठारा, लोकमात ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन दुक्खां गुरमुख गुर गुर इक्क वड्याइंदा। गुरसिख ना कोए दुःख, सतिगुर दुखड़ा आप चुकाईआ। गुरसिख ना कोए भुख, हरि भुक्ख्यां भुख गंवाईआ। गुरसिख लोकमात ना रहे लुक, लख चुरासी विच्चों मिले वड्याईआ। गुरसिख आंढ गुवांढ लए पुच्छ, पुत्तर

धीआं वाले रोवण मारन धाहींआ। अन्तिम खाली हथ्थ संग ना कुछ, कुछड़ बह संग कोए ना जाईआ। माणस सिंमल दीर्घ अतमुच, बिन हरि नामे ख़ाली रिहा लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख बूटा आप लगाईआ। गुरमुख बूटा लाए जन, ब्रह्मा महेष सेव कमाइंदा। सच दुआरे वेखे खड़, बिन नेत्र नैण उठाइंदा। पत्त डाली आपे फड़, तन्दी तन्द डोर बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा आप जणाइंदा। सच विहारा दस्से आप, बिवहारी दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ वड प्रताप, वड प्रतापी दए समझाईआ। सृष्ट सबाई खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रिहा वखाईआ। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ सीआं सब दी दिती नाप, नाम पैमाना हथ्थ उठाईआ। नाता तुट्टणहारा माई बाप, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। माणस मिटणहारी ज़ात, ज़ात नज़र कोए ना आईआ। प्रभ पुट्ट के आया डूँघा खात, खाता इक्को इक्क वखाईआ। आपे वेखे मार झात, झाकी आपणी हरि जू पाईआ। बीस बीसा खोल्हणहारा ताक, मगरों धक्का देवे लाईआ। मां पुत्त ना कोए नात, पुत्तर धी ना मिले जवाईआ। झूठा चुक्के जगत साक, साका आपणा हरि जू नवां बणाईआ। जन भगतां देवे सच्चा साथ, फड़ बांहों लए उठाईआ। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। गुरसिख साचे कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। कलयुग मिटण वाला निशान, निशाना कोए नज़र ना आइंदा। जीव जंत सर्ब कुरलाण, बौहड़ी बौहड़ी सर्ब सुणाइंदा। गुरू पीर पैग़म्बर कोए ना रिहा विच जहान, जो आया उठ उठ जाइंदा। किसे मिले ना पीण खाण, खाणा पीणा विष्नूं बन्द कराइंदा। ब्रह्मे देवे ना कोए माण, ब्रह्म आपणी झोली पाइंदा। शंकर त्रिसूल होई हैरान, हरि जू की की खेल वरताइंदा। एका चिल्ला इक्क कमान, बिन तन्दी तन्द चढ़ाइंदा। एका भूप सच्चा सुल्तान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। नाता तोड़े ज़िमी असमान, ज़ामन नज़र कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड करे गुलाम, फड़ बांहों अग्गे लाइंदा। अग्गे कोए ना दिसे अमाम, अमानत सब दी आप आपणे हथ्थ रखाइंदा। सारे निउँ निउँ करन सलाम, अलैकम रूप ना कोए वखाइंदा। सम्मत उँनी दे दे सुणाए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी करो पछाण, बेपहचान पहचान विच ना आइंदा। गुरसिख होए ना कोए हैरान, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। बूटा लाए विच जहान, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कीता कौल पूर कराइंदा। पूरा करे कीता कौल, इकरार भुल्ल कदे ना जाईआ। पहलों साफ़ करे धरनी धौल, धौल हौला भार कराईआ। फेर गुरमुखां अंदर जाए मौल, मौला आपणा रूप वटाईआ। लिख्या लेख मिटण ना देवे रत्ती चौल, रत्ती रत्त आपणे लेखे पाईआ। नेत्र वेखो हुंदा घोल, गुर

अवतार पीर पैग़म्बर फड़ फड़ बांहों टक्करा रिहा लगाईआ। लख चुरासी अंदर वड़ वड़ लुकया रिहा पड़दे ओहले ओहल, आपणा मुख ना किसे वखाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा लेखा ल्या फोल, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क जणाईआ। सच संदेसा सच्ची याद, याददाशत आप बणाइंदा। वेखणहार ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म प्रभ खेल कराइंदा। जिस रचना रची आदि, सो अन्तिम वेख वखाइंदा। जिस लख चुरासी ब्रह्मे दिती दात, सो ब्रह्म आपणी झोली पाइंदा। जन भगतां पुच्छणहारा वात, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया करे घात, घाउ आपणे नाउँ लगाइंदा। सतिजुग सच बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। गुरमुख गुर वखाए इक्क जमात, अक्खर वक्खर इक्क पढ़ाइंदा। वीह सौ इक्की बिक्रमी पहली चेत सब नूं कट्ठी देवे दात, खाली कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। पहली चेत्र पहली इकी, इक्की इकी दए वड्याईआ। सतिजुग दी साची सिक्खी, बिन सिख्या लए प्रगटाईआ। चार वरन दी धार तिक्खी, चौथे युग पार वखाईआ। रसना जिह्वा होए ना फिकी, फिका रस ना कोए वखाईआ। गुरमुख प्रेम प्रीती निक्की निक्की, निक्का हो हो आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार बेपरवाहीआ। पहली चेत्र देवे दान, चेता भुल्ल कदे ना जाइंदा। सतिजुग दा सच निशान, गुरमुख गुरसिख आप प्रगटाइंदा। एथे ओथे देवे माण, दो जहानां दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे पार कराइंदा। गुरसिख बेड़ा करे पार, पार उतारी आप कराइंदा। जननी जन दए आधार, माता कुक्ख आप सुहाइंदा। कलयुग दुखड़ा आप नवार, सतिजुग साचा सुख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रुत्त रुत्तड़ी आप सुहाइंदा। रुत्त रुत्तड़ी उज्जल मुख, हरि सतिगुर आप कराईआ। भाग लगाए साची कुक्ख, कुक्ख कुक्खड़ी आप महकाईआ। पिछला मेटे सारा दुःख, दुःख सुख विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग दा साचा बेटा, आपणा नाउँ वड्याईआ। सतिजुग देवे साची दात, हरि एकम्म एक एक दया कमाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, गुरमुख साचा चन्द चढ़ाइंदा। जगत बन्धन बंधाए नात, पिता पूत संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थित वार आप जणाइंदा। पहली चेत साची थित, इक्की इकी करे कुड़माईआ। निहकर्मी लेखा दए लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। सतिजुग दा साचा सिख, गुरसिख बाला लए प्रगटाईआ। सिँघ कृपाल मंगे भिख, प्रभ साचा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खाली भाण्डे दए भराईआ। खाली भाण्डे कर भरपूर,

७०७
१२

भरपूरी दया कमाइंदा। पूत सपूता साचा नूर, नूर नुराना आप धराइंदा। सतिजुग साचा बेड़ा बन्ने पूर, गुर शब्दी सुत उपजाइंदा। आसा मनसा पूरी करे ज़रूर, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग तपे वांग तन्दूर, गुरसिख अग्न ना कोए तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे माण दिवाइंदा। थित वार लैणी लिख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। घर विच प्रगट होवे साचा सिख, हरि सतिगुर सिख्या इक्क समझाईआ। बण सवाली मंगी भिख, खाली हथ्थ रहिण ना पाईआ। प्रभ अग्गे बेनन्ती कीती जिस जिस, तिस दा लहिणा पहली चेत्र इक्क इक्क नाल लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मात सुलखणी गोद सुहाईआ। नारी कन्त रखे आस, आसा पूरी हरि कराइंदा। जगत तृष्ना बुझाए प्यास, काया तृप्त आप कराइंदा। सेवक घर सेवक आए बण बण दासी दास, दासी दास रूप वटाइंदा। अठ्ठे पहर ना होए उदास, उदर अंदर आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर मन्दिर गृह वज्जे वधाई, वाहवा हरि हरि खेल कराया। सतिजुग साचे होए कुड़माई, हरि एका बन्धन पाया। गुरसिख घर गुरसिख आए चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक्क जणाया। पारब्रह्म प्रभ मिले सच्चा माही, जिस माता अन्तर आपणा नाम छुपाया। फड़ फड़ बांहों लए तराई, साचे बेड़े आप चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा पार कराया। सतिजुग सम्मत पहला साल, हरि जू पहली वंड वंडाईआ। गुरमुखां बख्शे साचे लाल, लालन आपणा रंग वखाईआ। सचखण्ड दवारिउँ आपे भाल, माणस जन्म दिवाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, महांबली होए सहाईआ। वेखणहारा दीन दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। गुरसिख सिख सिख कृपाल, कृपानिध निध वड्याईआ। त्रैगुण तोड़ जगत जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। घर मापिआं वज्जे ताल, मुख बाले सगन लगाईआ। करे खेल आप गोपाल, गोपालन आपणा रूप धराईआ। हरिजन खेड़ा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा दयाल सतिजुग बेमिसाल बेनज़ीर आपणा राह चलाईआ।

✳ १६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी गुरदेव कौर दे गृह गोले वाला ज़िला फिरोज़पुर ✳

हरि हरि खेल सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप कराइंदा। हरि हरि मेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड रंग रंगाइंदा। हरि हरि नाउँ साचा छन्द, सो पुरख निरँजण ढोला गाइंदा। हरि का प्रेम इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। हरि का बल सूरा सरबंग, सूरबीर आप अख्वाइंदा। हरि का नूर साचा चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा खेल कराइंदा। सचखण्ड दवार हरि जू चढ़या, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। निरगुण निराकार अंदर वड़या, रूप अनूप आप वटाईआ। साची विद्या बिन अक्खर पढ़या, पढ़ पढ़ खुशी मनाईआ। अजूनी रहित आपणा घाड़न घड़या, अनभउ प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची खेल रचाईआ। सचखण्ड दवार खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण करे कारा, करता करनी आप कमाइंदा। एकँकारा वेख पसारा, गृह मन्दिर खुशी मनाइंदा। आदि निरँजण नूरी धारा, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता सच सहारा, समरथ दया कमाइंदा। श्री भगवान खोल्ह किवाड़ा, गृह मन्दिर डेरा लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सच अखाड़ा, दरगाह साची आप लगाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। ऊँचो ऊँच अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणा नाउँ धराइंदा। जोधा सूरबीर बली बलकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड एका रंग रंगाइंदा। सचखण्ड दवार साचा रंग, हरि सतिगुर आप रंगाईआ। वेखणहारा सूरा सरबंग, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि सति सति जाणे अनन्द, अनन्द मंगल एका एक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची धार, आपे वेखे वेखणहार, पेखत पेखत खुशी मनाईआ। साची धार जोत अकाल, जोती जाता आप प्रगटाइंदा। परम पुरख हो दयाल, दया आपणी आप कमाइंदा। वसावणहारा सच सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाइंदा। वजावणहारा साचा ताल, ताल आपणा नाउँ रखाइंदा। घालणहारा साची घाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। चल्लणहारा नाल नाल, सद आपणा संग निभाइंदा। करनहार सदा प्रितपाल, प्रितपालक वेस वटाइंदा। बणनहारा सच दलाल, सति दलाली आप कमाइंदा। वेखणहारा हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। चलणहार अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप जणाइंदा। देवणहार सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ाना आप प्रगटाइंदा। प्रगटावणहारा साचे लाल, पूत सपूते आप जणाइंदा। जन जननी जणे साचे लाल, सुत दुलारा नाउँ धराइंदा। वेस वटाए श्री महांकाल, महिमा गणत ना कोए गणाइंदा। करे खेल आप करतार, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। दीआ बाती कर उज्यार, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। निरगुण ताकी खोल्ह किवाड़, नेत्र अक्ख अक्ख प्रगटाइंदा। महल अटल दे आधार, निहचल आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साची कार कमाइंदा। सचखण्ड दवारे साची कार, हरि करता आप कमाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा रूप वटाईआ। नूरी नूर नूर उज्यार, जल्वा जल्वा रूप वखाईआ। हक़ हक़ बेऐब परवरदिगार, मुकाम एका एक वड्याईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची धार, हरि साचा आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी साची धार, सति दुआरे आप प्रगटाइंदा। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर खेल कराइंदा। आपे थिर घर खोल्ह किवाड़, सुत दुलारे माण दिवाइंदा। आपे इच्छया भरे भण्डार, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपे करे सच प्यार, परम पुरख नाता जोड़ जुड़ाइंदा। आपे दस्से सच विहार, बिवहारी कार कराइंदा। आपे बन्धन पुरख नार, जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। आपे लेखा जाणे लिखणहार, लिख लिख लेखा आप समझाइंदा। आपे रूप वटाए निरँकार, एकँकारा ओअं आपणी खेल कराइंदा। आपे सोहँ रूप सच्ची सरकार, विष्नूं आपणा रूप वटाइंदा। आपे खेल करे अपार, ब्रह्म वेता आपे जाइंदा। आपे शंकर दए आधार, धूआँधार आप समाइंदा। सुन्न अगम्मी आपे हो उज्यार, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। आपे त्रैगुण दे भण्डार, त्रै त्रै मेला आप कराइंदा। आपे पंज तत्त अखाड़, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाच नचाइंदा। आपे लख चुरासी लए उभार, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। आपे खोल्हणहार दुआर, नौ दर आपणा बन्धन पाइंदा। आपे मन मति बुध कर पसार, जगत पसारी हट्ट चलाइंदा। आपे घर विच घर कर त्यार, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। आपे लहिणा देणा देवणहार विच संसार, वड संसारी नाउँ रखाइंदा। आपे बोध अगाधा बोल जैकार, जै जैकार आपणा नाउँ वखाइंदा। आपे नाद शब्द धुन्कार, धुंन आत्मक राग अल्हाइंदा। आपे सखीआं मंगलचार, बह बह गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। आपे जोत निरँजण कर उज्यार, घट घट अंदर डेरा लाइंदा। आपे अमृत आत्म ठंडा ठार, निज आपणा रस चखाइंदा। आपे वसणहारा सचखण्ड सच्चे दुआर, निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। आपे सरगुण कर पसार, पसर पसारी वेख वखाइंदा। आपे देवणहार आधार, मन्त्र आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। सोहँ रूप सच्ची सरकार, साचे तख्त सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण वणज वपार, दो जहानां हट्ट चलाइंदा। लोआं पुरीआं खोल्ह किवाड़, ब्रह्मण्ड खण्ड कुण्डा आपे लाहइंदा। सूरज चन्न कर उज्यार, नूर नुराना नूर वखाइंदा। कागद कलम कर त्यार, लिख लिख लेखा आप समझाइंदा। धरनी धरत धवल दे आधार, धुर दी धार आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर आपणा नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा राह चलाइंदा। सच्चा राह सचखण्ड निवासी, पुरख अबिनाशी आप चलाईआ। मंडल मण्डप पावे रासी, गोपी काहन नचाईआ। खेले खेल शहिनशाह शाहो शाबाशी, दो जहानां वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण सरगुण पूरी करे आसी, आसा आसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड बैठा वेखे सच्चा माहीआ। सच्चा माही बेपरवाह, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग ला, साचे धन्दे आपे लाइंदा। शास्त्र सिमरत

वेद पुराण पढ़ा, प्राणी पुराण पुराण समझाइंदा। गुर अवतार सेवा ला, साची सेवा इक्क समझाइंदा। आत्म परमात्म लए मिला, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। ईश जीव जगदीस दए समझा, रमज़ रमज़ नाल मिलाइंदा। दूई द्वैती पड़दा दए उठा, साचा मन्दिर इक्क वखाइंदा। नौबत वज्जे नाम खुदा, एका डंका नाम लगाइंदा। हस्ती नालों होए जुदा, जुदा हस्ती ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची कार कमाइंदा। सचखण्ड निवासी साची कारा, हरि करता आप कमाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। लख चुरासी भर भण्डारा, वड भण्डारी सेव कमाईआ। लहिणा देणा आदि जुगादी देवणहारा, बाकी रहिण ना कोए पाईआ। पंज तत्त काया करे शंगारा, चोली काया रंगण इक्क रंगाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, कँवल नैण सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे माण वड्याईआ। सचखण्ड दवारे देवे माण, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दा सच फ़रमाण, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। सचखण्ड दा साचा गाण, गावत गावत करे पढ़ाईआ। सचखण्ड दा सच ध्यान, ध्यान ध्यान विच समाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, सति सतिवादी आप वखाईआ। सचखण्ड दा साचा काहन, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। लख चुरासी वेखे आण, घर घर गोपी आप प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। वज्जे वधाई सचखण्ड, हरि साचा सच वजाइंदा। आदि जुगादी इक्क अनन्द, जुग जुग एका रस वखाइंदा। सदा सुहेला गाए आपणा छन्द, सोहला ढोला आप अलाइंदा। दो जहानां रखे बन्द, बन्दीखाना इक्क वखाइंदा। निरगुण सरगुण पर्दा कंध, पर्दा द्वैत ना कोए हटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहारा, करे कराए करनेहारा, करता पुरख करने योग, लेखा जाणे धुर संजोग, जगत विजोग ना कोए रखाइंदा। धुर संजोगी साचा मेला, निरगुण सरगुण आप कराईआ। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, सगला संग रखाईआ। करे खेल गुरू गुर चेला, गुर गुर आपणा वेस वटाईआ। आदि निरँजण चाढ़े तेला, जोत निरँजण सगन मनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिलण दा दस्से वेला, वार थित ना कोए जणाईआ। वसणहारा धाम नवेला, एकँकारा बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अचरज खेल आपे खेला, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची करनी, बिन कीमत आप कमाईआ। करनी करे बिन हरि जू कीमत, कथनी कह ना सके राईआ। हरि का खेल वड ग़नीमत, गुणवान ना जाणे राईआ। आदि जुगादि अज़ीम उलशान अज़ीमत, अज़मत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा साचा

७७१० १२

काम, करे कराए श्री भगवान, दूसर संग ना कोए रखाईआ। साचा काम हरि निरँकारा, निहकर्मी आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका धन्दे आपे लाइंदा। एका जुगा जुगन्तर लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। एका नाम शब्द भण्डारा, हरि एका एक वरताइंदा। एका मन्दिर सच दुआरा, एका हरि जू आसण लाइंदा। एका सज्जण मीत मुरारा, एका मिल मिल खुशी मनाइंदा। एका देवणहार सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका नूर जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। एका बणे सद्द पनहारा, बण सेवक सेव कमाइंदा। एका हट्ट इक्क वणजारा, हटवाणा इक्को इक्क चलाइंदा। एका एक श्री भगवाना, घर साचे सोभा पाइंदा। एका मर्द इक्क मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। एका चिल्ला तीर कमाना, एका खण्डा खड़ग खड़काइंदा । एका सूरबीर बलवाना, बल आपणा आप रखाइंदा। एका खेले खेल दो जहानां, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। एका गोपी एका कान्हा, राम रमइया इक्क अखवाइंदा। एका ईसा मूसा दए पैग़ामा, पीर पैग़म्बर इक्क पढ़ाइंदा। एका कराए सच सलामा, अलैकम एका नाम वड्याईआ। एका होए बीना दाना, बीना दाना शहिनशाहीआ। एका करे ठांडा सीना, आब हयात मुख चुआईआ। एका खेले खेल लोक तीनां, चौदां लोक आप प्रगटाईआ । एका बणया रहे नाबीना, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। एका होए सर्ब अधीना, घर घर आपणा आप छुपाईआ।
७११ एका होए सर्ब प्रबीना, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पूरी आसा आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड निवासी पूरी आसा, आदि जुगादी आप कराइंदा। जुग ७११
१२ चौकड़ी खेल तमाशा, ख़ालक खलक वेख वखाइंदा। मंडल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड पा पा रासा, जेरज अण्डज उत्भुज सेतज १२
नाच नचाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर कर कर वासा, आत्म परमात्म दे भरवासा, धीरज धीर धीर धराइंदा। लेखा जाणे पवण स्वासा, पवण उणंजा आप समाइंदा। वेखणहारा पृथ्मी आकासा, आकाश आकाशां उपर डेरा लाइंदा। दस्सणहारा सच खुलासा, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची कार, करे कराए करनेहार, हरि जू हार कदे ना जाइंदा। ना कोई हार ना कोई जित, आदि जुगादि आपणे रंग समाईआ। ना कोई वार ना कोई थित, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। आदि जुगादी जुग जुग हित, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। वेखणहारा नित नवित, रूप अनूप धराईआ। जन भगतां बणे मात पित, धन्न धन्न जणेंदी बणे माईआ। गृह मन्दिर साचे आए दिस, बिन नेत्र कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणी दया कमाईआ। दया कमाए गहर गम्भीर, गुणवन्ता वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी वड वड पीर, पारब्रह्म

बेपरवाहीआ। वसणहारा चढ़ के चोटी अख़ीर, आख़र आपणा डेरा लाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवणहारा तौफ़ीक, तौफ़ीक इक्को नाम खुदाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ। वसणहारा सद नज़दीक, नेरन नेरा डेरा लाईआ। पावे सार हस्त कीट, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। वसणहारा धाम अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठ, अमृत रस रस चखाईआ। चरन कँवल बंधाए प्रीत, प्रीतीवान इक्क हो आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त साचे सन्त सुणाए गीत, सोहँ ढोला इक्क अलाईआ। बणे विचोला आप अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। परखणहारा साची नीत, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे चढ़, साचा मता आप पकाईआ। साचा मता हरि निरँकार, बिन मतों आप पकाइंदा। आदि जुगादी खेल अपार, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। नव नौ चार दे आधार, दहि दिशा खोज खोजाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर पार, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। आपणी इच्छया दे भण्डार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग वेखे वेखणहार, कोटन कोटि रूप धराइंदा। सच संदेसा एकँकार, खाणी बाणी अञ्जील कुरानी गीता ज्ञानी वेद पुराणी शास्त्र सिमरत नाल रलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात मात निशानी, शब्द अगम्मी मारे कानी, बिरहों अणयाला तीर चलाइंदा। जगत सरोवर देवे पाणी, अठसठ खेले खेल महानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। साची कार करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जोधा सूरबीर बलकारा, बल आपणा दए जणाईआ। सचखण्ड निवासी हो त्यारा, त्रैभवन धनी हो उज्यारा, चौदां लोक दे हुलारा, विष्न ब्रह्मा शिव लए जगाईआ। गुर अवतारां नैण उग्घाड़ा, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। वेखणहारा जगत अखाड़ा, वरभण्डी आपणी भंडी पाईआ। फिरनहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाईआ। वसणहारा डूँघी गारा, समुंद सागर फोल फोलाईआ। करनेहारा साची कारा, चारों कुण्ट आपणा पन्ध मुकाईआ। देवणहारा सच सहारा, जन भगतां होए सहाईआ। सतिजुग त्रेता पार उतारा, द्वापर वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, निराकारा आप कराईआ। सचखण्ड दा सच विहारा, लोकमात दए जणाईआ। महल अटल इक्क मनारा, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दए आधारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, बनास्पत रही कुरलाईआ। समुंद सागर रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। धरनी कूक कूक करे पुकारा, खुली मींढी रही वखाईआ। पीर पैग़म्बर मारन नाअरा, दरोही दरोही खुदाए दुहाईआ। गुर अवतार करन विचारा, पुरख अबिनाशी विचार विच किसे ना आईआ। भगत भगवान

७१२
१२

७१३

१२

अग्गे कढ्ढुण हाढ़ा, हाए हाए कलयुग अग्नी अग्ग रही जलाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयारा, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। गुर का शब्द ना किसे विचारा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नार कन्त ना कोए प्यारा, विभचार सृष्ट सबाई रही कमाईआ। गुर दर मन्दिर मसजदि धूंआधारा, जगत अन्धेरा इक्क वखाईआ। कलमा नबी ना किसे उच्चारा, साचा हुजरा ना कोए सुहाईआ। सच महिराब ना कोए सतारा, तार सितार ना कोए हलाईआ। मक्के काअबे ना मिले परवरदिगारा, दो दो आबा मेल ना कोए मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बिन नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, अक्ख सके ना कोए उठाईआ। कलयुग चार कुण्ट होया बलकारा, बल आपणा रिहा जणाईआ। साधां सन्तां मारे मारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। धीआं भैणां करन वणज वपारा, साचा वणज ना कोए जणाईआ। सचखण्ड निवासी वेखणहारा, वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण आपणा नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साची करनी आप जणाईआ। सचखण्ड दी साची धारा, हरि लोकमात प्रगटाइंदा। सचखण्ड दा सच दुआरा, धरनी धरत धवल उपर सुहाइंदा। सचखण्ड दा सच प्यारा, जन भगतां नाल कराइंदा। सचखण्ड दा सच अखाड़ा, गुरमुख सखीआं नाच नचाइंदा। सचखण्ड दा सच जैकारा, सोहँ नाअरा आप सुणाइंदा । सर्ब जीआं दा बण प्यारा, प्यार प्यार नाल वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सचखण्ड दी साची दात, हरि लोकमात प्रगटाईआ। जन भगतां पुच्छणहारा वात, घर घर फेरा पाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात, शरअ मज़्हब ना कोए रखाईआ । चरन कँवल एका नात, ब्रह्म पारब्रह्म कुड़माईआ। साहिब सतिगुर दस्से एका घाट, प्रभ पत्तण डेरा लाईआ। कलयुग कूड़ी मिटे वाट, सतिजुग साचा राह चलाईआ। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै आपणा बन्धन पाईआ। पंचम बणे सज्जण साक, बंधप आपणा नाउँ रखाईआ। करे खेल हरि पाकी पाक, रसूल असूल इक्क जणाईआ। दो जहानां वेखणहारा खात, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। लख चुरासी करनहारा घात, खण्डा आपणा नाम चमकाईआ। जन भगतां पुच्छे वात, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला फेरा पाईआ। नाम जणाए साची गाथ, गा गा आपणा रंग रंगाईआ। लहिणा देण चुकाए पूरब माथ, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। घर सेजा आत्म भोग बलास, रस रसीआ रस रसाईआ। घर मेला पुरख अबिनाश, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी करे बन्द खुलास, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया फ़ाश फ़ाश, फ़ातया सब दा दए पढ़ाईआ। सतिजुग दी साची शाख, गुरमुख साचे आप प्रगटाईआ। सतिगुर सच्चा पत्त लए राख, ढाकण कू पतहारा सच्चा माहीआ। मेट मिटाए अन्धेरी

रात, सतिजुग साचा नूर दरसाईआ। कर किरपा पुच्छे बात, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सचखण्ड दी साची बात, गुरमुखां आप सुणाईआ। पारब्रह्म दी इक्को ज़ात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा खेल लोकमात आप दरसाईआ। लोकमात हरि खेल अकथ, अकथ अकथ जणाइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ धार चलाइंदा। नाम अमोलक साची वथ, काया गोलक आप टिकाइंदा। जगत विकारा पाए नथ, मन मनुआ ना उठ उठ धाइंदा। सुरत सुवाणी करे वस, गुर शब्दी रंग चढ़ाइंदा। मेटे अन्ध अन्धेरी रैण मस, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। अनहद शब्द अनाद सुणाए जस, अनादी आपणा राग अलाइंदा। भगत भगवान इक्क दूजे नाल जायण फस, प्रेम प्यार गंढु रखाइंदा। तीर अणयाला मारे कस, दूई द्वैती पड़दा ढाहइंदा। सचखण्ड निवासी सति दुआरे करे कठ, जन भगतां आप जगाइंदा। देवणहारा सति सन्तोख धीरज हठ, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाइंदा। इक्क जैकारा बोल अलख, आत्म परमात्म आप सुणाइंदा। सृष्ट सबाई नालों कर कर वक्ख, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। जुग जुग जन भगतां करदा आया पख, लख चुरासी धक्का लाइंदा। हँकारी भाण्डे करे सख, ख़ाली भाण्डे निवण सो अक्खर नाल भराइंदा। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चुमारा वंड वंडाइंदा। नाता तोड़े तत्त अठ, नौ दर ख़ाली आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी देवणहारा ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहारा, करे कराए करनेहारा, लोकमात मार झात, देवणहार सर्ब निजात, निज घर बैठा आसण लाईआ। निज घर वसे निज गृह मन्दिर, गृह गृह ख़ुशी मनाइंदा। भाग लगाए डूँग्घी कंदर, कंध द्वैती आपे ढाहइंदा। मन हँकारी बन्ने बन्दर, डोरी एका नाम पाइंदा। लख चुरासी माया ममता कीती अन्धड़, नेत्र नैण ना कोए खुलाइंदा। रसना जिह्वा होई गंदड़, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। बन्दीखाना वज्जा जंदर, बिन सतिगुर पूरे ना कोए तुड़ाइंदा। नव नौ दिसे खण्डर, महल अटल ना कोए वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, मेल मिलाए भगत भगवन्त सेज सुहाए नार कन्त, रंग चढ़ाए इक्क बसन्त, महिमा सुणाए आप अगणत, लेखे लाए साचे सन्त, देवे वड़याई विच जीव जंत, गढ़ तोड़े हउमे हंगत, आत्म परमात्म देवे मंत, मंत सोहँ सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सोहँ सो साचा मन्त्र, गुर पीर अवतार रहे जस गाईआ। वसणहारा सदा निरंतर, निरंतर ब्रह्म रिहा उठाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट रिहा समाईआ। जिस बणाई साची बणतर, सो वेखे चाँई चाँईआ। पावे सार गगन गगनंतर, मंडल आपणा फेरा पाईआ। वेखणहारा डूँग्घी कंदर, भँवरी भँवर रिहा फोलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब ज्ञान ज्ञान देव आत्म परमात्म एका बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म बूझे बूझ, बूझणहार गोपाला। घर विच घर देवे सूझ, बन्द किवाड़ी खोल्हे ताला। लहिणा देणा चुक्के एक दूज, दूआ एका एका मार्ग लाए सुखाला। भेव चुकाए हरि जू गूझ, गहर गम्भीर काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाला। गुरसिख गुर गुर दोवें इक्क दूजे तों जायण झूझ, जन्म मरन मरन जन्म जन्म मरन तों दोहां करे निराला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, दो जहान चरन कँवल वखाए सच्ची धर्मसाला।

✳ १६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पिपली ज़िला फिरोज़पुर ✳

सो पुरख निरँजण सति सुल्तान, सति सतिवादी हरि अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। एकँकारा वड मेहरवान, दीन दयाल नाउँ रखाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। श्री भगवान सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। आपणी इच्छया
७१५ कर परवान, भिच्छया साची झोली पाइंदा। करे खेल इक्क महान, अकल कल आपणी धार चलाइंदा। साचा मन्दिर हरि ७१५
महान, मेहरवान आप उपाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए निशान, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। दीआ बाती इक्क भगवान,
१२ १२
निर्मल जोती जोत टिकाइंदा। सच सिँघासण खेल महान, परवरदिगार आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सो पुरख निरँजण साचा सूरा, सूरबीर इक्क अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण सर्ब कला भरपूरा, बेअन्त वड वड्याईआ। एकँकारा हाज़र हज़ूरा, हज़रत आपणा नाउँ रखाईआ। आदि निरँजण जोती नूरन नूरो नूरा, नूर नूर नूर रुशनाईआ। श्री भगवान वसणहारा नेर दूरा, दूर नेर आपणा पन्ध रखाईआ। अबिनाशी करता रंग वखाए एका गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। पारब्रह्म आपणा खेल करे ज़रूरा, ज़रूरत आपणी ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। निरगुण दीआ कर उज्यारा, कमलापाती वेख वखाइंदा। वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहारा नज़र ना आइंदा। रूप रंग ते वसे बाहरा, रेख भेख ना कोए वखाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त आसण लाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, हुक्म हाकम आप जणाइंदा। दर दरवेश बण दरबारा,

दर आपणी अलख जगाइंदा। देवणहार आप करतारा, वस्त अमोलक आप वखाइंदा। साची वस्त एका थारा, थिर घर साचे आप टिकाइंदा। देवणहारा एकँकारा, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। आपे वणज आप वणजारा, हरि जू आपणा हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल पुरख समरथ, आदि आदि आप कराईआ। निरगुण रूप हो प्रगट, पुरख अकाल नूर धराईआ। अजूनी रहित सदा समरथ, समरथ आपणा नाउँ धराईआ। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवार चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपणे अन्तर आपे वस, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। आपे नूर आप प्रकाश, निरगुण आपे डगमगाईआ। आपे दासी आपे दास, बण सेवक सेव कमाईआ। आपे मंडल आपे रास, हरि जू आपे वेख वखाईआ। आपे खेल आप तमाश, खेलणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे हरि निरँकारा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपारा, बेपरवाह आपणी धार आप प्रगटाइंदा। महल अटल उच्च मनारा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। तख्त निवासी कर पसारा, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग पुरख सुल्ताना, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। सचखण्ड सोहे सच मकाना, दरगाह साची मिले वड्याईआ। धुरदरगाही धुर फ़रमाणा, धुर संदेसा आप सुणाईआ। धुर दरबारी धुर राज राजाना, धुर दरगाही सच्चा शहिनशाहीआ। खेले खेल नौजवाना, मर्द मर्दानगी आप रखाईआ। निरगुण निरगुण खेल महाना, निराकार निराकार वडी वड्याईआ। अजूनी रहित हो प्रधाना, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। अनभउ प्रकाश करे महाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, आपणी बणत आप बणाईआ। आपणी बणत बणाए आप, बेपरवाह वडी वड्याईआ। आपे जाणे वड प्रताप, दूसर संग ना कोए रखाईआ। खेले खेल बहु बिध भांत, भेव अभेद आप जणाईआ। आपे देवणहारा दात, दाता दानी नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची खेल खलाईआ। सचखण्ड साचा सच महल्ला, हरि साचा सच वसाइंदा। पुरख अकाल इक्क इकल्ला, आदि जुगादी डेरा लाइंदा। एका फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पुवाइंदा। जोती धार आपे रल्ला, धार धार विच मिलाइंदा। सच संदेस एका घल्ला, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, महल अटल आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवार आप वड्याइंदा। सचखण्ड दवार वड्डा वड, हरि वड्डा आप वड्याईआ। निरगुण अंदर निरगुण लडाए लड, करे

खेल बेपरवाहीआ। आर पार किनारा ना कोई हद्द, महिदूद रखे ना कोए थाईंआ। करे खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दुआरे धरे पग, तिस देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाईआ। सचखण्ड साचा सच सुहञ्जणा, हरि साचा सच जणाइंदा। जोत जगा आदि निरँजणा, आदि पुरख खेल कराइंदा। पुरख अबिनाशी दर्द दुःख भय भञ्जणा, दुःख दर्द ना कोए रखाइंदा। नेत्र आपणा आप पाए अंञणा, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। निरगुण निरगुण सज्जणा, सगला संग आप अख्वाइंदा। निरगुण निरगुण मजणा, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा आप सालाहइंदा। सचखण्ड दवारा महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा आसण लाईआ। आपे नार आपे कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। आपे नाउँ आपे मंत, मन्त्र आपणा आपे गाईआ। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड साचा सोभनीक, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। दूसर ना कोई दिसे शरीक, शिरक्त विच ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि आपणी रखे आप उडीक, आपणा मेला आप मिलाइंदा। निरगुण निरगुण सच प्रीत, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। पारब्रह्म दी इक्को रीत, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। एकँकारा इक्को गीत, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। आदि जुगादि रहे अतीत, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। सदा सुहेला ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड निवासी साहिब अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आसण लाइंदा। सचखण्ड दवारे साचा आसण, नर हरि नरायण आप लगाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता धार चलाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाशण, प्रकाशवान सच्चा माहीआ। सेवक सेवक दासी दासण, राजन राज आप अख्वाईआ। निज गृह कर कर आपणा वासण, निज धाम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। सचखण्ड वसे हरि निरँकारा, इक्क इकल्ला आसण लाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा करे आप पसारा, पसर पसारी आप अख्वाइंदा। आपे इच्छया आप भण्डारा, दाता दानी आप वरताइंदा। आपे दर दरवेश निउँ निउँ करे निमस्कारा, सीस आपणा हथ्थ आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा माण रखाइंदा। सचखण्ड दवारे साचा माण, हरि जू हरि हरि आप रखाईआ। वसणहारा श्री भगवान, वास्तक आपणा रूप धराईआ। सति सतिवादी सच निशान, सति पुरख निरँजण इक्क उठाईआ। इक्क इकल्ला राज राजान, शहिनशाह आपणा हुक्म चलाईआ। देवणहारा

धुर फ़रमाण, सच संदेसा लए सुणाईआ। आपणी मन्ने आपे आण, आपणे भाणे आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे देवे माण वड्याईआ। वड़याई माण देवणहारा, एका एक अखवाइंदा। आदि पुरख हरि कर पसारा, पसर पसारी वेख वखाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची सोभा पाइंदा। एका नूर नूर उज्यारा, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाइंदा। करे कराए साची कारा, करता पुरख आपणी करनी आप कमाइंदा। लेखा जाण पुरख नारा, नार कन्त सेज हंढाइंदा। जननी जन बण बण सिरजणहारा, पूत सपूता एका जाइंदा। नाउँ धराय सुत दुलारा, शब्दी शब्द वंड वंडाइंदा। महल अटल इक्क मीनारा, घर घर विच आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड अंदर खोल्ह किवाड़ा, थिर घर नाउँ धराइंदा। साचा दीआ कर उज्यारा, आपणा बीआ बीज बीजाइंदा। पूत सपूता करे प्यारा, हरि साची गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची कार कराइंदा। करे कार हरि करने जोग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे धुर संजोग, धुर धुर मेला मेल मिलाईआ। वसणहारा साचे कोट, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। रूप धराय निर्मल जोत, रेख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, अपरम्पर खेल कराइंदा। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, शब्दी सुत बहाइंदा। सच संदेसा एका वारा, एक ओंकारा आप सुणाइंदा। तेरा मेरा सच विहारा, हरि साचा बंधण पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, थिर घर साचा राह जणाइंदा। थिर घर साचे शब्दी सुत, हरि हरि जू आप उठाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। सच दुआरे मौली रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ । आपणी शाख़ आपे फुट, पत्त डाल्ही आप महकाईआ। आपणे अन्तर आपे उठ, नर हरि आपे वेख वखाईआ। ठाकर स्वामी आपे तुट्ठ, आपे दया कमाईआ। आपे जननी जन आपे पुत्त, पूत सपूता आपणी गोद बहाईआ। आपे थिर घर सार लए पुच्छ, सचखण्ड वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटे बाले दए वड्याईआ। छोटा बाला शब्दी लाल, सो पुरख निरँजण आप उठाइंदा। साचा मार्ग इक्क सिखाल, साची सिख्या इक्क पढ़ाइंदा। तेरा मन्दिर सच्ची धर्मसाल, थिर घर नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण निरगुण अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाइंदा। आदि जुगादि तेरा प्रितपाल, पुरख अबिनाशी आपणा प्रण निभाइंदा। निरगुण निरगुण बणे दलाल, सच दलाली आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एक ओंकारा, हरि निरँकारा एका वार सुणाइंदा। सुण संदेसा श्री भगवान, शब्दी सुत लए अंगड़ाईआ। तेरी किरपा इक्क महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। वसणहारा सचखण्ड मकान, शाह

पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, धुर संदेसा इक्क अल्लाईआ। हउँ बालक बाल अंञाण, तेरा भेव ना जाणा राईआ। चरन कँवल मंगां इक्क ध्यान, ढह ढह पवां सरनाईआ। साचा दे दे आपणा दान, नाम निधाना झोली पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तुध बिन मेरा ना कोए निशान, निशाना नज़र कोए ना आईआ। सदा सद रखी आप पहचान, बेपहचान तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, थिर घर वासी सुत दुलारा, आपणी मंग मंगाईआ। मंगे मंग कर पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं दाता दानी परवरदिगार, बेअन्त तेरा भेव कोई ना आइंदा। हउँ चाकर सेवक सेवादार, चरन धूढ़ी टिक्का मस्तक लाइंदा। आदि जुगादि रहिणा मददगार, इक्को तेरी आस तकाइंदा। बणया रहिणा सच्चा यार, यारी ला ना तोड़ वखाइंदा। तेरे उत्ते इक्क इतबार, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि आदि तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। तेरे अग्गे झोली दिती अड्ड, शब्द सुत मंग मंगाईआ। सचखण्ड दवारयों कीता अड्ड, थिर घर डेरा लाईआ। नित नवित सुणा तेरा छन्द, शहिनशाह सच्चे माहीआ। तेरा प्रेम इक्क अनन्द, अनन्द तेरे विच समाईआ। तेरी मेहर सदा बख्शंद, बख्शश तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि जुगादि होणा आप सहाईआ। पुरख अबिनाशी दाता दातार, दयावान दया कमाइंदा। सुत शब्द दए अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। तेरा मेरा खेल अपार, भेव कोए ना पाइंदा। एका सीस तेरे धरां दस्तार, दस्त आपणे नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप वड्याइंदा। शब्दी सुत सच्चा राजा, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। तेरे अंदर मेरा काजा, तुध बिन मिले ना कोए वड्याईआ। तेरा खेल मेरा जहाजा, साचा रैहबर राह समझाईआ। तेरी मेरी इक्को लाजा, लाजावन्त होए सहाईआ। मेरा नाउँ तेरी अवाज़ा, तेरी आवाज़ मेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण रिहा समझाईआ। साचे सुत शब्द बलकार, हरि जू बल आप जणाइंदा। तेरा मेरा इक्क विहार, बिवहारी खेल कराइंदा। तेरा मेरा नाता अगम्म अपार, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। तेरा मेरा मन्दिर इक्क दुआर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या खोल्ले जाग, हरि जागरत नूर दरसाईआ। तेरा मेरा इक्क वैराग, वैरागी आप जणाईआ। तेरे मन्दिर मेरा भाग, भगवान आप समझाईआ। करे खेल ग़रीब निवाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत बूझ बुझाईआ। साची बूझ श्री भगवान, आदि पुरख आप जणाइंदा। सुत दुलारे हो प्रधान, सच

प्रधानगी आप कमाइंदा। तेरा खेल करे महान, निरगुण नूर नूर प्रगटाइंदा। तेरा नाउँ सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। पुरख अकाला देवे दान, दयावान झोली पाइंदा। बंस सरबंस खेल महान, अंस अंस अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा एका एक, हरि जू हरि हरि आप सुणाईआ। पुरख अकाल साची टेक, दूजी अवर ना कोए सरनाईआ। बिन नेत्र नैणां लैणा पेख, हरि साचा आप वखाईआ। ना कोई रूप रंग ना रेख, तत्तव तत्त ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। माण वड्याई दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। शब्द सुत कर वणजारा, साचा हट्ट चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, त्रै त्रै मेल मेल मिलाइंदा। पंचम पंच पंच अखाड़ा, पंचम आपणा नाद वजाइंदा। लख चुरासी भर भण्डारा, चारे खाणी वंड वंडाइंदा। चारे बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। लेखा लिख्या धुर दरबारा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण निरगुण रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी हट्ट खुल्हाइंदा। शब्दी हट्ट हरि जू खोल्ह, खेल करनेहार अख्वाईआ। एका कंडे तोलया तोल, तोलणहारा नज़र ना आईआ। लख चुरासी अंदर मौल, रूप अनूप आप धराईआ। शब्दी सुत तेरे नाल करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। आदि जुगादि रहिणा अडोल, ना सके कोए डुलाईआ । जुग चौकड़ी तेरा घोल, हरि करता वेख वखाईआ। दर दरवाज़ा आपे खोल्ह, पंज तत्त सौदा हट्ट विकाईआ। आत्म परमात्म वसे कोल, घर घर विच आसण लाईआ। राग अनादि सुणाए साचा सोहला सोहल, बिन तन्दी तन्द सितार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दए वड्याईआ। शब्द सुत कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा ज्ञान, ज्ञान नेत्र इक्क वखाइंदा। तेरी धूढ़ सर्ब अशनान, लख चुरासी आप कराइंदा। तेरा मन्त्र दो जहान, निरंतर आप सुणाइंदा। तेरा खेल वेखे भगवान, भगवन आपणा वेस वटाइंदा। तेरा निशाना दो जहान, लोआं पुरीआं आप वखाइंदा। तेरा खेल खेल महान, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज नाल मिलाइंदा। वस्त अमोलक देवे दान, काया गोलक आप टिकाइंदा। अनबोलत आपणा देवे नाम निशान, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। घर घर खोल्हे तेरी दुकान, गृह गृह तेरा हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। साची सिख्या सुण लै मीत, हरि मित्र प्यारा आप जणाईआ। जुग जुग चले तेरी रीत, रीतीवान आप समझाईआ। तेरा खेड़ा इक्क अनडीठ, घर घर विच लए बणाईआ। निर्मल निर्मल तेरी प्रीत,

७२१
१२

प्रीतीवान आप समझाईआ। तेरी धारा ठंडी सीत, सांतक सति सति रखाईआ। तेरा ढोला साचा गीत, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। तेरा मन्दिर सदा अतीत, ढेरी ढाह ख़ाक ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा जणाईआ। सुत दुलारे उठ बलधार, हरि सतिगुर आप सुणाया। तेरा खेल अपर अपार, पुरख अबिनाशी आप रचाया। लख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण माया बन्धन पाया। पंज तत्त तत्त वेख अखाड़, निरगुण सरगुण नाच नचाया। लेखा जाण बहत्तर नाड़, हाडी हाडी मेल मिलाया। गाडी बणया एक ओंकार, बण रथवाही रथ चलाया। साथी होया अंदर बाहर, गुपत ज़ाहर भेव ना राया। साकी बणया आप करतार, अमृत जाम हथ्थ उठाया। ताकी खोल्ह बन्द किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। साची हाटी कर त्यार, दस्म दुआरी भेव चुकाया। निर्मल बाती कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए गुआया। साची घाटी देवे चाड़्ह, फड़ बांहों आप उठाया। तेरा नाउँ बोल जैकार, जै जैकार दए सुणाया। तेरी सेवा अपर अपार, अनहद रागी राग अल्हाया। ब्रह्म ब्रह्मादी हो त्यार, ब्रह्मांड तेरी वंड वंडाया। कर्म कांड ते रखे बाहर, परकिरती रंग ना कोए चढ़ाया। सूरा सरबंग तेरा नाउँ करे उज्यार, उजरत कीमत ना कोए लगाया। नौ खण्ड पृथ्मी देवे अधार, सत्तां दीपां आप समझाया। विष्न ब्रह्मा शिव पाणी हार, करोड़ तेतीसा सीस झुकाया। सुरपति मंगे चरन धूढ़ी छार, निउँ निउँ मस्तक टिका लाया। तेरा नाता विच संसार, पुरख बिधाता दए जुड़ाया। सरगुण सरगुण करे प्यार, निरगुण निरगुण वेख वखाया। कागद कलम जाए हार, तेरा अन्त किसे ना पाया। महल अटल तेरा मीनार, पुरख अबिनाशी आप वसाया। सुत शब्द उठ हो त्यार, निरगुण साची सेव लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा धन्दा आप जणाया। साचे धन्दे लाए भगवान, धूआँधार ना कोए रखाईआ। लख चुरासी देणा ज्ञान, गुर इक्को इक्क जणाईआ। तेरा नाउँ नाद प्रधान, दो जहानां देणा सुणाईआ। लख चुरासी कर परवान, धुर परवाना हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त रिहा दृढ़ाईआ। सुणया संदेसा धुर दरबारी, शब्द शब्दी सीस झुकाइंदा। तेरी महिमा अपर अपारी, भेव अभेद ना कोए रखाइंदा। तेरे हुक्मे करां कारी, साची करनी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला मेल मिलाइंदा। कवण वेला मेले मेल, मिल मिल आपणी ख़ुशी मनाईआ। कवण दुआरे बणे सज्जण सुहेल, लोकमात फेरा पाईआ। कवण घर वखाए नवेल, नज़र किसे ना आईआ। कवण रूप खेले खेल, भेव अभेदा भेव जणाईआ। कवण धार गुरू गुर चेल, गुर चेला नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी इच्छया पूर कराईआ। साची इच्छया करनी

पूर, प्रभ तेरे अग्गे अरज़ोईआ। कवण रूप हाज़र हज़ूर, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। कवण खेल खेले लख चुरासी चतुर सुघड़ मूर्ख मूढ़, ज्ञान ध्यान नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दए उठाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, घर साचे ख़ुशी मनाइंदा। सुत दुलारे मार्ग दस्स, साचा राह जणाइंदा। नित नवित आवां नट्ठ, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। सरगुण अंदर जावां वस, गुर गुर नाउँ रखाइंदा। तेरा नाउँ कर प्रकाश, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहइंदा। चाकर बण बण दासी दास, लख चुरासी सेव कमाइंदा। पूरी करां पंज तत्त आस, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। बिन नेत्र वेखां पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर चरनां हेठ दबाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे साथ, ईश जीव जोड़ जुड़ाइंदा। गोपी काहन पावे रास, नटुआ आपणा स्वांग वखाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप प्रगटाइंदा। सर्ब गुणां गुण आपे तास, गुणवन्ता नाउँ धराइंदा। नाउँ जणाए बोध अगाध, बोध अगाधा खेल वखाइंदा। निष्अक्खर आपणी दाद बिन हत्थां आप वरताइंदा। बिन पढ़यां देवे याद, याददाशत आपणे हथ्थ रखाइंदा। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द लगाए आवाज़, धुर नादी नाद सुणाइंदा। बिन खादयां पीतिआं दे स्वाद, अमृत रस इक्क चखाइंदा। लख चुरासी डूँग्घी कंदर विच्चों लए लाद, घर साचे फेरा पाइंदा। भगत भगवान बणाए सच्चे साक, नाता होर ना कोए जुड़ाइंदा। सन्तां देवे आपणी दात, नाम ख़ज़ाना हथ्थ उठाइंदा। गुरमुखां पुच्छे आपे वात, गुर गुर आपणी गोद बहाइंदा। गुरसिख रखे आपणी ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। आत्म सेज सुहाए खाट, पावा चूल ना कोए जणाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द चमकाइंदा। आदि जुगादि साची गाथ, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा । लेखा जाण त्रिलोकी नाथ, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ हुक्मे विच फिराइंदा। शब्द स्नेहुड़ा दे दे पात, गुर अवतार सेव कमाइंदा। पीर पैग़म्बरां खोल्ह ताक, झाकी आपणी इक्क कराइंदा। लेखे लाए माटी ख़ाक, पाकी पाक रंग चढ़ाइंदा। शब्द सुत तेरा इक्को वाक्, दो जहानां आप अल्ह़ाइंदा। त्रैभवन धनी खेलणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। चौदां लोक तेरी ज़ात, तेरी वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक्क रखाइंदा। साचा मार्ग इक्को इक्क, एक ओंकारा आप जणाईआ। आदि पुरख बिन कलम शाही दिता लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शब्द सुत तेरी झोली पाई भिख, भण्डार अतोट अतुट जणाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, सिख्या सके ना कोए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह शाह हरि निरँकारा, करता आपणी कार कमाइंदा। लख चुरासी भर भण्डारा, भरपूरी वेख

वखाइंदा। जुग चौकड़ी कर पसारा, नित नवित धार चलाइंदा। हुक्मे अंदर खेल न्यारा, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रैहबर आपणा नाउँ वड्याइंदा। रैहबर बणे आप मलाह, बेड़ा हरि जू आप चलाईआ। निरगुण सरगुण दए सलाह, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। बोध अगाधा भेव खुल्हा, भेव अभेदा दए जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद वड़या, पुराण प्राणी ढोला गाईआ। गीता ज्ञान इक्क दृढ़ा, दृढ़ विश्वास दए समझाईआ। अञ्जील कुराना आप सुणा, तीस बतीसा माण रखाईआ। सच हदीसा आप पढ़ा, नबी रसूलां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत तेरा राह चलाईआ। शब्दी सुत तेरी वंड, सो पुरख निरँजण आप वंडाइंदा। तेरा खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्माद तेरा नाद वजाइंदा। तेरा लेखा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज तेरा रंग चढ़ाइंदा। तेरा नाउँ गीत सुहागी छन्द, गुर अवतार गुर गुर गाइंदा। तेरा प्रेम सच्चा अनन्द, अनन्द अवर ना किसे भाइंदा। तेरा कोए ना मेटे पन्ध, पाँधी नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मिल्या वर धुर दरबार, शब्दी सुत खुशी मनाईआ। प्रभ मिल्या सच्चा यार, विछड़ कदे ना जाईआ। लख चुरासी दए भण्डार, वस्त अमोलक इक्क वखाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म कर त्यार, काया माटी हट्ट चलाईआ। डूँघी भँवरी खेल न्यार, निरगुण दाता

७२३ आप कराईआ। नौ दर खोल्ह आप किवाड़, आपणी खिड़की बन्द कराईआ। डूँघी रखे एका गार, सुखमण टेढी नाउँ ७२३

धराईआ। ईड़ा पिंगल पहरेदार, फड़ बांहों आप रखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना माया ममता गृह

१२ मन्दिर आप वसाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद रागी राग अल्हाईआ। अमृत आत्म ठंडा ठार, निझर बैठा बन्द १२

कराईआ। जोती नूर नूर उज्यार, आदि निरँजण सेव कमाईआ। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। आत्म सेजा इक्क न्यार, सेज सुहञ्जणी दए वड्याईआ। शब्दी मीता ठांडा सीता गाए आपणी वार, सोहला ढोला इक्क सुणाईआ। साचा मेला धुर दरबार, धुर दरबारी आप कराईआ। साची सखीआं मंगलचार, मिल मिल खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म करे प्यार, गलवकड़ी एका पाईआ। साची सेजा सोयण पैर पासार, दूसर सके ना कोए उठाईआ। नाता बणे कन्त भतार, कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। शब्द सुत तेरा महल्ल मुनार, पुरख अबिनाशी आप वसाईआ। आपणी किरपा आपे धार, निरगुण निरगुण नाल मिलाईआ। नाउँ रख गुर अवतार, गुर सिख्या सिख समझाईआ। खेले खेल चौकड़ी जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। सेवा ला तेई अवतार, त्रै त्रै वेखे थाउँ थाईंआ। भगत भगवन्त दे आधार, लोकमात होए सहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद हक़, हक़ीक़त सुणाए सच जैकार, मुकामे हक़ इक्क खुदाईआ। मिहबान

बीदो बी खैर या अल्ला परवरदिगार, मुकामे हक़ वसे शहिनशाहीआ। सतिगुर रूप निराकार, निरँकार इक्क हो आईआ। पंज तत्त देवणहार अधार, तत्तव तत्त नाल मिलाईआ। सरगुण नानक कर प्यार, निरगुण नानक लए पढ़ाईआ। इक्क बहाए सच दुआर, सचखण्ड दवारा इक्क वखाईआ। रसना बोल जै जैकार, बिन रसना जिह्वा गाईआ। साचा वणज वणज वापार, साचा हट्ट इक्क चलाईआ। सति सति करे प्यार, सति सतिवादी दए समझाईआ। सृष्ट सबाई एका धार, शब्दी रूप वखाईआ। शब्द गुरू शब्द अवतार, शब्द चेला नाउँ धराईआ। शब्द मन्दिर शब्द दुआर, शब्द मसीत मट्ठ बैठा रूप वटाईआ। शब्द काया वड़ करे प्यार, शब्द लख चुरासी ठीकर भन्न वखाईआ। शब्द अमृत ठंडा ठार, शब्द अंमिउँ रस रस आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण देवे माण वड्याईआ। शब्द रंग सदा रंग राता, रंग इक्को इक्क जणाइंदा। शब्द गुरदेव सदा पित माता, पिता पूत गोद सुहाइंदा। शब्द गुरू जुग जुग नाता, पंज तत्त काया जोड़ जुड़ाइंदा। शब्द गुरू गुर डूँग्घा खाता, हथ्थ किसे ना आइंदा। शब्द गुरू गुर गा गा गाथा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान, अञ्जील कुरान खाणी बाणी मात पढ़ाइंदा। शब्द गुरू गुर साचा साथा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहानां संग निभाइंदा। नानक निरगुण पारब्रह्म प्रभ वेख तमाशा, बलि बलि आपणा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ शब्द प्रगटाइंदा। नाम शब्द साची दात, गुर सतिगुर झोली पाईआ। जुग चौकड़ी मेट अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर गुआईआ। एथे ओथे दो जहान देवे साथ, सगला संग अख्वाईआ। लख चुरासी तोड़े नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दए वड्याईआ। शब्द गुरू गुर वड बलवाना, गुरदेव इष्ट अख्वाइंदा। आदि जुगादी पहरे बाणा, जुग जुग वेस वटाइंदा। बोध अगाध नाद तराना, तुरीआ राग सुणाइंदा। जागरत सोवत खेल महाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप जणाइंदा। साची धार एकओंकार, एका वार जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते चार, चार चार खेल कराईआ। पंचम पंच पंच सिक्दार, पंचम देवे माण वड्याईआ। ऊँचो ऊँच अगम्म अपार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। नीचो नीच नीच विच संसार, सतिगुर नानक गया समझाईआ। पारब्रह्म दा इक्क दरबार, दूजा घर ना कोए वखाईआ। जिस घर विच्चों प्रगट होवण गुर अवतार, पंज तत्त माटी हाटी बण बण लोकमात सेव कमाईआ। सो साहिब सब दा सांझा यार, आखर इक्को इक्क अख्वाईआ। सच तौफीक मददगार, दस्तगीर दस्त मिलाईआ। वेखणहारा शाह हकीर विच संसार, ऊँच नीच दए वड्याईआ। वरन बरनां वसे बाहर, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हद्द ना कोए रखाईआ।

आदि जुगादी जुग जुग कार, करनी करता आप कमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विहार, गुर अवतारां करे पढ़ाईआ। सच संदेसा देवे अन्तिम धार, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाईआ। पीर पैग़म्बर करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी देवे माण वड्याईआ। सुत शब्द चढ़या चा, हरि सतिगुर दया कमाईआ। आदि अन्त बणे मल्लाह, मेरा बेड़ा लए बन्नाईआ। जुग जुग देवे सच सलाह, गुर अवतार नाल रलाईआ। आपणा नाउँ लए प्रगटा, प्रगट आपणी कल वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए पढ़ा, साची विद्या इक्क वड्याईआ। निष्अक्खरों अक्खर लए बणा, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। बिन बूंद रक्त कुदरत कादर लए वसा, वस वस आपणी खुशी मनाईआ। लख चुरासी धन्दे दए लग्गा, नार कन्त जोड़ जुड़ाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए चला, हरि का भेव कोए ना समझाईआ। जुग जुग खेले खेल सहिज सुभा, चाल निराली इक्क रखाईआ। कागद कलम शाही बणे गवाह, गुरू गुर गुर दए समझाईआ। नव नौ चार पन्ध दए मुका, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नानक निरगुण सरगुण नानक गया समझा, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम फेरा पाए आ, महांबली आपणा बल धराईआ। निहकलंक नाउँ लए रखा, डंका एका शब्द वजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी मन का मणका दए भुवा, मन वासना आप मिटाईआ। जन जन का रूप दए बणा, हरिजन साची सिख्या इक्क समझाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्क दुआरे दए वखा, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। सोहँ ढोला साचा गा, काया चोला दए बदलाईआ। हौली हौली मुखड़ा दए वखा, लुकया रिहा जो सच्चा माहीआ। जन भगतां भुख दए मिटा, तृष्ना नेड़ ना लागे राईआ। कलयुग अन्तिम आपणा नाउँ धरा, निहकलंक आप अख्वाईआ। गोबिन्द मेला सहिज सुभा, गुर चेला वेस वटाईआ। सम्बल डेरा आपणा ला, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाईआ। कल कल्की फेरा पा, जगत जगदीस होए सहाईआ। साची शरअ दए समझा, शरीअत विच कदे ना आईआ। असलीयत सब दे अग्गे दए वखा, कूड़ी क्रिया मेटे सारी छाहीआ। दीन मज़्हब ज़ात पात झूठा नाता दए तुड़ा, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। इक्को नूर जल्वा खुदा, राम रहीम इक्क अख्वाईआ। एका कृष्ना रूप ल्या वटा, मुकंद मनोहर लखमी नरायण इक्क जणाईआ। एका कोहतूर जल्वा रिहा वखा, मूसे मुहब्बत इक्क वखाईआ। एका ईसा नूरी नूर कीता जुदा, खुदा एका रंग रंगाईआ। एका मुहम्मद डंका दिता वज्जा, डौरू एका हथ्थ फड़ाईआ। चौदां तबका फेरा पा, शब्द इक्को इक्क सिखाईआ। अल्फ़ ये करे नकाह, नुकता नून ना कोए समझाईआ। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त खुदा, बेनज़ीर बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम आपणा सौदा मुफ़्तो मुफ़्त दए वरता, कीमत करता ना कोए लगाईआ। जिस नूं सृष्ट कहिन्दी रही जुदा, सो प्रगट नज़री आईआ।

७२५ १२

जिस उत्तों पीर पैग़म्बर हुंदा रिहा फिदा, सो फितरत आपणी आप वखाईआ। जिस पिच्छे ज़िकरीए ज़िकर ल्या चला, सो ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। एका नाम दए वड़या, वड वडा आप प्रगटाईआ। छोटा निक्का आपणे राहे दए पा, रैहबर बणे बेपरवाहीआ। सबर प्याला दए प्या, बेसबर दए रुढ़ाईआ। मन जोर जबर जाबर दए गुवा, निवण सो अक्खर इक्क समझाईआ। साची पट्टी दए पढ़ा, आत्म परमात्म कर कुड़माईआ। हरि का रूप निज नेत्र सच अक्खीं दए वखा, घर विच घर मिले बेपरवाहीआ। गुरसिख काया कुली कक्ख भाग दए लगा, साढे तिन्न हथ्थ महल अटल कर रुशनाईआ। गुर गोबिन्द मेला सहिज सुभा, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। कलयुग अन्तिम फेरा पा, लख चुरासी वरोले थाउँ थाईंआ। पर्दा ओहला दए उठा, दूई धार रहिण ना पाईआ। साचा मार्ग दए लग्गा, चार वरन इक्क कुड़माईआ। साचा मन्त्र दए दृढ़ा, अन्तर आत्म कर रुशनाईआ। अग्नी बसन्तर दए बुझा, तत्ती वा ना लागे राईआ। साचे गगन दीपक जोत दए जगा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को पिता इक्को मां, पुरख अकाल अख्वाईआ। दूसर होए ना कोए सहा, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। राए धर्म दए सजा, फड़ फाँसी गल विच पाईआ। लाड़ी मौत करे नकाह, रंडी कूके दए दुहाईआ। चित्रगुप्त लेखा दए वखा, लेखा लेख ना कोए मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नेत्र रोवे मारे धाह, धीरज धीर ना कोए रखाईआ।
७२६ बिन हरि नामे कोई ना सके पार लँघा, मँझधार डुब्बे सर्ब लोकाईआ। साची सरन ना देवे कोई पनाह, गुनाह सके ना ७२६
कोए बख़्शाईआ। मनमुख जीव गुर का भुल्ले राह, मनमति करे लड़ाईआ। नानक गोबिन्द किसे ना मिल्या आ, सुंञी सेज
१२ बिन हरि कन्त ना कोए सुहाईआ। जूठे झूठे ढोले रहे गा, सोहला सच ना कोए दृढ़ाईआ। विभचार रहे कमा, गुरुदुआरा १२
वेसवा घर बणाईआ। पुरख अबिनाशी देवणहार सज़ा, सचखण्ड बैठा वेखे थाउँ थाईंआ। मक्के काअबे ना कोए रज़ा, हक़ हक़ ना कोए जणाईआ। बिन नकाहों होए नकाह, धीआं भैणां रहे तकाईआ। अल्ला राणी नैण रही शरमा, कुँवारी कन्या अक्ख ना सके उठाईआ। मिल्या मीआं ना बेपरवाह, मेरी रंगली मैंहदी कम्म किसे ना आईआ। सदी चौधवीं रही विता, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ । चार यार ना बणन गवाह, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। मुहम्मद बैठा मुख भुवा, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल महां, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। तेरी कोई ना पकड़े बांह, तेरा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रहिमत आपणे हथ्थ रखाईआ। अल्ला राणी रही कूक, कूक कूक सुणाया। मेरी अन्त ना चुक्की चूक, मेरा पन्ध ना किसे मुकाया । बिन तुध सति ना लाए कोई फूक, फ़िकरा नाम ना कोए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया।

परवरदिगार साचा मीआ, मेहरवान दया कमाईआ। अल्ला राणी तेरा तुट्टा हीआ, धीरज धीर ना कोए धराईआ। तेरी जड़ उखाड़ी गोबिन्द नीहा, ना सके कोए लगाईआ। उम्मत दस्सदे वंड मिले साढे तिन्न हथ्थ सीआ, पुरख अबिनाशी हिस्सा पाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे विच्चों जीआ, जीवण जुगत इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द तेरा खेल आप कराईआ। शब्दी खेल अपर अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। निरगुण निरगुण हो उज्यारा, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। वेखणहारा मन्दिर मट्ठ शिवदुआल गुरुदुआरा, मसीत आपणा फेरा पाइंदा। अठसठ जाणे तट किनारा, गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शब्द सुत देवे वर, आदि अन्त जुगा जुगन्त, तेरा नाम आप वड्याइंदा। तेरा नाउँ शब्द अकथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी वथ, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। जन भगतां अंदर देवे रख, कर किरपा आप टिकाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, अन्ध अन्धेरा दए गुआईआ। हिरदे अंदर आपे वस, हरि आपणी बूझ बुझाईआ। अमृत देवे साचा रस, कँवल नाभ उलटाईआ। पंच विकारा सत्थर लाहे सथ्थ, सके ना सिर उठाईआ। साचा मन्त्र इक्को दस्स, सोहँ करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि पुरख समरथ, शहिनशाह इक्क हो जाईआ। निरगुण दर्शन सगल विसूरे जायण लथ्थ, सरगुण शात सति कराईआ। लहिणा चुक्के तत्त अठ्ठ, नौ दर पैंडा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। कूड़ी क्रिया देवे कट, एका खण्डा नाम चमकाईआ। सच सुच्च चलाए साचा हट्ट, बण वणजारा सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई इक्को मत्त, गुर ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। सृष्ट सबाई इक्को रस, अमृत आत्म दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क समझाईआ। शब्द गुरू गुर आदि अन्त, मध आपणा खेल कराइंदा। जुग जुग बणावणहारा बणत, घड़ण भन्नण भन्नण घड़ण आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग करे हरि जू अन्त, अन्त लेखा आप मुकाइंदा। गुरमुख वेखे साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाइंदा। हउमे गढ़ तोड़े हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाइंदा। आत्म परमात्म एक मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाइंदा। मिले वड़याई विच जीव जंत, जो जन हरि चरनी चित लाइंदा। सुरती शब्दी मेला साचे कन्त, हरि सतिगुर आप वखाइंदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण सच सुच्च बणाए आप बणत, साची सिख्या साख्यात समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल करे आदि अन्त, जुगा जुगन्त जुग जुग वेस अनेक रूप वटाइंदा।

✳ १७ भाद्रों २०१६ बिक्रमी तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड सादिक ज़िला फिरोज़पुर ✳

सचखण्ड निवासी सच दरबारा, सति पुरख निरँजण आप लगाइंदा। तख्त निवासी शाह सिक्दारा, साचे तख्त सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाणा, नाद अनादी आप अलाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म हरि वरतारा, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी श्री भगवान, हरि करता आप कराईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे मार ध्यान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। देवणहारा साचा दान, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। पंचम पंच कर प्रधान, लेखा जाणे सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण खेल महान, लख चुरासी वंड वंडाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेतज देवणहारा दान, दाता दानी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे हरि निरँकारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। शब्दी सुत सुत प्यारा, पुरख अबिनाशी आप उपाइंदा। देवणहारा वस्त थारा, थिर घर साचे आप वरताइंदा। एका नाम इक्क वणजारा, हरि जू आपणा हट्ट खुल्हाइंदा। एका वेखे विगसे वेखणहारा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादी साची कारा, जुग करता आप कराइंदा। सच संदेसा एका वारा, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। बोध अगाधी बोल जैकारा, पारब्रह्म ब्रह्मवेता इक्क पढ़ाइंदा। चारे वेदां दए अधारा, आदरश आपणा इक्क जणाइंदा। वंडण वंड वंडे संसारा, विष्नूं आपणी कुल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल पुरख समरथ, आदि जुगादी इक्क कराईआ। निरगुण सरगुण दे दे वथ, घर मेला सहिज सुभाईआ। सरगुण निरगुण महिमा अकथ, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। अंदर वड़ चलाए रथ, रथ रथवाही शहिनशाहीआ। साचा मार्ग एका दस्स, एक ओंकारा नाउँ सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे विहार, कुदरत कादर खेल खलाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी वेख वखाइंदा। लख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। पंचम तत्त तत्त अखाड़, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। मन मति बुध दे आधार, आसा तृष्ना नाल मिलाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर श्रृंगार, हउमे हंगता गढ़ बणाइंदा। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाइंदा। घर विच घर कर त्यार, डूँघी भँवरी आसण लाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठार, निझर झिरना आप रखाइंदा। निरगुण जोती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी अनहद धार, धुंन अनादी

नाद वजाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, पारब्रह्म प्रभ खेल खलाइंदा। साचा मार्ग विच संसार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आप लगाइंदा। चारे खाणी कर प्यार, चारे बाणी आप पढ़ाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी निरगुण गाए सरगुण वार, साचा सोहला आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म दे आधार, ईश जीव गंढु पुवाइंदा। सुरती शब्द कर जैकार, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल हरि निरँकारा, लख चुरासी बणत बणाईआ। निरगुण सरगुण दे आधारा, अधर उदर होए सहाईआ। माणस मानुख कर प्यारा, मानव देवे वड वड़याईआ। शब्द अगम्मी सच जैकारा, जै जैकार आपणे नाउँ सुणाईआ। कागज़ शाही कलम लिखारा, लिख लिख लेखा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द सलाहीआ। हरि का शब्द हरि का नाउँ, हरि हरि आपणे रंग रंगाइंदा। हरि जू वसे हर घट थाउँ, घट घट आपणा आसण लाइंदा। करे कराए साचा न्याउँ, न्याँकारी आप हो जाइंदा। लख चुरासी पिता माउँ, पूत सपूते गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव निरगुण सरगुण धार, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। सेवा करे अगम्म अपार, बण सेवक सेव कमाईआ। प्रगट हो विच संसार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नाउँ धर गुरू अवतार, गुर गुर शब्दी नाद सुणाईआ। लख चुरासी करे बेदार, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। सच संदेसा देवे आण, पुरख अकाल अकाल पढ़ाईआ। राम रमइया सदा दयाल, दीनन आपणे रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल कमाल, खेलणहार सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लोकमात बणाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप जणाईआ। साची सेवा गुर अवतार, हरि करता आप जणाइंदा। ब्रह्मा सुत कर प्यार, सन्त कुमार आप सुहाइंदा। बराह देवे इक्क आधार, यगै पुरष वेख वखाइंदा। हाव ग़रीव कर पसार, मोहणी आपणा रंग रंगाइंदा। नर नरायण खेल न्यार, कपल मुन वड वड्याइंदा। दत्ता त्रै दे आधार, रिखप आपणा भेव चुकाइंदा। पिरथू खोल्हणहार किवाड़, मत्तस आपणा नाम दृढ़ाइंदा। कछप देवे इक्क आधार, धनंतर एका राह जणाइंदा। मोहणी रूप आप निरँकार, निरगुण निराकार रूप वटाइंदा। हँस हँसा बोल जैकार, पंखी पंछी लेखे लाइंदा। नर सिँघ खेल अपर अपार, बल बावन पर्दा उठाइंदा। हरी हरि हो त्यार, गज बन्धन आप कटाइंदा। ध्रू देवे इक्क आधार, नर नरायण सोभा पाइंदा। सतिजुग साची करे कार, एका आठा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। जुग जुग

७२६ १२

खेल पुरख समरथ, हरि जू हरि हरि आप कराईआ। निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। त्रेता त्रीया रूप कर प्रगट, त्रैगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। आप जणाए आपणा जस, पारब्रह्म ब्रह्म करे सच पढ़ाईआ। परसराम वखाए एका हट्ट, हट्ट हटवाणा कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस रमइया राम, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। आपणा खेल सदा निशकाम, आसा होर ना कोए वखाइंदा। लेखा जाण दो जहान, श्री भगवान वेस वटाइंदा। तोड़नहारा वड अभिमान, अभिमानी कोए रहिण ना पाइंदा। ग़रीब निमाणयां देवणहारा माण, सच फ़रमाण इक्क सुणाइंदा। खेले खेल नौजवान, नौबत एका नाम वजाइंदा। त्रेता वेखणहारा मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दृष्ट इष्ट गुरदेव वशिष्ट विश्व आपणा राग जणाइंदा। त्रेता अन्तिम आया पार, पारब्रह्म प्रभ मेट मिटाईआ। करे खेल आप करतार, करनहार सच्चा शहिनशाहीआ। साचे सुत दए आधार, सति सतिवादी करे पढ़ाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां गया समझाईआ। लेखा जाणे लख चार सतारां हज़ार, सति सति आपणा नाउँ दृढ़ाईआ। उच्ची कूक कूक पुकार, दरगाह साची गया सुणाईआ। लख चुरासी दए हुलार, एका नाम करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी खेल करे अपार, खेलणहारा नज़र ना आईआ। वेद शास्त्र सिमरत सिफ्त सालाही भरे सच भण्डार, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याईआ। कागद कलम शाही अन्त ना पारावार, बुद्धि चले ना कोए चतुराईआ। कान्हा कृष्ना मीत मुरार, त्रिलोकी नंदन नाथ अनाथां दए वड्याईआ। साचा छन्दन कर त्यार, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाईआ। अठारां अध्याए कर परवान, परवाना आत्म परमात्म दए फड़ाईआ। करे खेल वड मेहरवान, साची सिख्या इक्क जणाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे दान, दाता दानी सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाईआ। जुग जुग करे विहार, हरि करता आप कराइंदा। द्वापर अन्तिम उतरया पार, कलयुग आपणा फेरा पाइंदा। प्रभ चरनी डिगा आण, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। हउँ बाली बुध अञ्याण, तेरा भेव कोए ना आइंदा। कर किरपा श्री भगवान, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। एका देणा साचा दान, दाता दानी आप वरताइंदा। सर्ब जीआं दा साचा काहन, लख चुरासी गोपी नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बोध अगाधी एका मन्त्र, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, अन्तर आत्म वेख वखाइंदा। अन्तर आत्म हरि हरि रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। घर घर सेज सुहञ्जणी पलँग, बिन पावा चूल टिकाईआ। घर घर नाम सच्चा मृदंग, अनहद नादी नाद वजाईआ। घर घर अमृत सरोवर पाए ठंड, निझर झिरना रिहा झिराईआ। घर घर ढाहे

७३१ १२

द्वैती कंध, माया ममता पर्दा आप उठाईआ। घर घर गीत गोबिन्द छन्द, शास्त्र सिमरत भेव ना राईआ। घर घर दस्से इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। घर घर जोत निरँजण चन्द, सूरज चन्द मुख शरमाईआ। घर घर सूरबीर सूरा सरबंग, गृह मन्दिर आसण लाईआ। घर घर टेढी बंक रिहा लँघ, उच्च महल अटल फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल कलयुग धार, हरि साचा सच जणाइंदा। छोटे बाले तेरी अन्तिम वार, तेरा भेव चुकाइंदा। नूर इलाही मददगार, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। लाशरीक सांझा यार, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। तेरा मेला विच संसार, ईसा मूसा जोड़ जुड़ाइंदा। मुहम्मद करे इक्क त्यार, तेरी आसा आसा नाल प्रनाइंदा। लेखा जाणे विच संसार, वड संसारी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी कायनात, हरि करता आप जणाईआ। नबी रसूलां देवे दात, आलम उल्मा करे पढ़ाईआ। एका अल्फ़ दए नज़ात, ये युकती दए समझाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा परवरदिगार, बेपरवाह आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, अपरम्पर आप कराइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। लख चुरासी दे आधार, आत्म परमात्म मन्त्र इक्क पढ़ाइंदा। कोटन कोटि कोट बोल जैकार, तन चोट नगारे आप लगाइंदा। निर्मल जोत कर उज्यार, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। पीर पैग़म्बर पैज स्वार, दस्तगीर आपणा दस्त नाल मिलाइंदा। शरअ ज़ंजीर कर त्यार, अंग अंग नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या साख्यात समझाइंदा। साची सिख्या श्री भगवान, आदि जुगादि जणाईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म जणाईआ। गुर का नाउँ रसन वखाण, सतिगुर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी लेखे पाईआ। जुग चौकड़ी उतरे घाट, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चोला गया पाट, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग अन्त आए अन्धेरी रात, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। लख चुरासी जीव जंत नार होए कमज़ात, कुलखणी रूप आप वटाइंदा। हरि कन्त ना बन्ने कोए नात, नाता बिधाता ना कोए जुड़ाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार वखाइंदा। नानक निरगुण कर प्रगट, प्रगट आपणा हुक्म जणाइंदा। सचखण्ड दवार वखाए साचा हट्ट, सचखण्ड निवासी कुण्डा लाहइंदा। पुरख अकाल निर्मल नूर जोत हड्ड मास नाड़ी ना कोए रत्त, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। ना कोई विद्या ना कोई मति, मन बुध ना गंढु पुवाइंदा। इक्क इकल्ला

रिहा वस, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। नानक निरगुण मार्ग देवे दस्स, साची सिख्या आप समझाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को रस, रस रसीआ हथ्थ फड़ाइंदा। लोकमात देणा नस्स, नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। चार वरन मिलाउणा हस्स हस्स, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका घर बहाइंदा। सृष्ट सबाई कर इकट्ठ, पुरख अकाल दीन दयाल इष्ट देव गुर इक्क जणाइंदा। अमृत आत्म घर घर झट्ट, निझर झिरना इक्क झिराइंदा। शब्द अगम्मी मार सट्ट, नाम निधाना हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दात, वड करामात, निरगुण नानक सरगुण झोली पाइंदा। नानक मिल्या नाम निधाना, नाम सति दए वरताईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्ताना, सचखण्ड निवासी आप वरताईआ। सृष्ट सबाई देणा ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत होण हैराना, हरि का भेव ना कोए जणाईआ। मारना तीर इक्क निशाना, बिरहों अग्नी दए बुझाईआ। दरस दिखाए मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाईआ। बोध अगाधा खेल महाना, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर अक्खर करे परवाना, नाम परवाना दए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या साख्यात निरगुण सरगुण आप जणाईआ। नानक निरगुण कर परवान, लोकमात वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई एका दात, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी कमलापात, निरगुण शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। लख चुरासी इक्क जमात, दूजी पट्टी ना कोए पढ़ाईआ। श्री भगवान साचा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। आत्म परमात्म साची गाथ, साचा सोहला इक्क सुणाईआ। होए सहाई अनाथां अनाथ, दीनां नाथां दया कमाईआ। धुर दी बाणी गाए गाथ, एकँकारा मुख सालाहीआ। सति नाम मिली दात, करता पुरख दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा नाउँ आप दृढ़ाईआ। आपणा नाउँ शब्द गुर ज्ञान, निरगुण नानक नाम पढ़ाया। लेखा लिख लिख लेख महान, एका पांजा जोड़ जुड़ाया। त्रै त्रै मेला विच जहान, पंचम पंचम गंढ रखाया। नानक अंगद कर परवान, अमरू भेव चुकाया। अमर दास राम दास सच अशनान, सर सरोवर आप कराया। गुर अर्जन गुर गुर दे फ़रमाण, गुरू ग्रन्थ गुरदेव इक्क उपाया। सृष्ट सबाई देवे माण, अभिमान, कोए रहिण ना पाया। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सारे गाण, दूसर वंड ना कोए रखाया। भगत भगवन्त कट्ठे कीते आण, तेई अवतार गुरू दस ईसा मूसा मुहम्मद एका गंढ पुवाया। इक्क ख़ुदाए इक्क रहिमान, तौफ़ीक इक्को इक्क बेपरवाहया। एका रमइया एका राम, एका कृष्ना नाउँ धराया। एका नानक दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप सुणाया। सृष्ट सबाई करो ध्यान, करवट हरि जू रिहा बदलाया। कलयुग वेखे अन्धेरी शाम, जगत अन्धेरा छाया। धुर दरगाही इक्क

कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाया। शाह पातशाह सच्चा अमाम, सिर अमामां डेरा रिहा लगाया। एका जोती कर परवान, गोबिन्द आपणी गोद सुहाया। पुरख अकाल हो मेहरवान, पिता पूत लए उठाया । शब्द अगम्मी दे फ़रमाण, सति सतिवादी राह चलाया। नाम खण्डा तेज़ करपान, ब्रह्मण्डां पार कराया। गोबिन्द काया गात्रे पाया आण, लोहार तरखाण ना किसे घड़ाया। अमृत निधान दिता जाम, अंमिउँ रस आपणा रस चखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा मार्ग लाया। जुग जुग मार्ग हरि गोबिन्द, गोबिन्द धार चलाईआ। अमृत सरोवर सागर सिन्ध, सिन्ध आपणा रूप वटाईआ । पूत सपूता उपजी बिन्द, बिन्द एका एक प्रगटाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या गोबिन्द मीता, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम साची रीता, रीतीवान आप दरसाइंदा। हरि का नाउँ सदा अनडीठा, नज़र किसे ना आइंदा। हरि का अंमित अंमिउँ रस मीठा, रसना मुख ना कोए चुआइंदा। हरि का नाउँ साची गीता, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। हरि का मन्दिर गुरदवार मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआल मसीता, मसला हक़ हक़ सुणाइंदा। हरि का नाउँ पत्तत पुनीता, पत्तत पापी पार कराइंदा। हरि का मेल हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। हरि का नाउँ मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, अमृत रस इक्क भराइंदा। हरि का नाउँ सदा जीता, जन्म मरन विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पुरख अकाला दीन दयाला गुर गोबिन्द एह समझाइंदा। गोबिन्द मिल्या हरि निरँकारा, निज घर साचे वज्जी वधाईआ। नानक करया इक्क प्यारा, प्यार प्यार विच प्रगटाईआ। दूसर ना कोई दिसे सहारा, ओट अवर ना कोए तकाईआ। किला कोट सच मनारा, सचखण्ड साचा नज़री आईआ। जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। पिता पूत करे प्यारा, पूत सपूता गोद उठाईआ। एका वणज इक्क अपारा, एका हट्ट दए खुल्हाईआ। लोकमात दा सच किनारा, गोबिन्द तेरा घाट बणाईआ। सर्ब जीआं दा सच प्यारा, साची सिख्या इक्क जणाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां देणा इक्क आधारा, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। साचा मग पन्थ पुरख अकाल चले न्यारा, अकाल अकाल अकाल जणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करना ख़बरदारा, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण निरँकारा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग आपे लाईआ। गुर गोबिन्द सुणया हरि संदेसा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। साहिब सुल्तान तेरी सच आदेसा, दो जहान तेरी वड्याईआ। तेरा सति सरूप एका वेखा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ।

तेरी सिख्या मुच्छ दाढ़ी केसा, अंग भंग ना कोए कराईआ। आदि जुगादि जुग जुग रहे हमेशा, हरि सज्जण सच्चे माहीआ। नानक निरगुण सेवा करी धर धर मोढे भूरी खेसा, चारों कुण्ट दर दरवेश फेरी पाईआ। अर्जन गुर गुर लिख लिख लेखा, अग्नी तत्त तत्त गया जलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरा पैंदा रिहा भुलेखा, साचा नूर नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सिर मेरे हथ्थ रख स्वामी, सवाल इक्को इक्क रखाइंदा। आदि जुगादि सदा निहकामी, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घर घर आसण लाइंदा। बोध अगाध अगम्मी बाणी, गुर गुर नाद वजाइंदा। अमृत आत्म ठंडा पाणी, सर सरोवर वखाइंदा। महिमा तेरी अकथ कहाणी, कथना कथ ना कोए जणाइंदा। तेरा लेखा चार खाणी, चारे खाणी मेल मिलाइंदा। तेरा नाउँ चारे बाणी, चारे बाणी सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मोहे इक्को आस तकाइंदा। इक्को रखी तेरी आस, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। सदा सदा वसीं मेरे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। चार वरन बुझावां प्यास, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश तृखा ना कोए जणाईआ। साचे मन्दिर पावां रास, गोपी काहन आप नचाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छां वात, इक्को तेरी ओट तकाईआ। ऊँचां नीचां दयां नजात, निज घर मेला सहिज सुभाईआ। सृष्ट सबाई इक्को दात, तेरा नाउँ वरताईआ। पुरख अबिनाशी कमलापात, साक सज्जण सैण इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मार्ग तेरे दर तेरे घर वखाईआ। तेरा दर सच्चा दरवाज़ा, दरगाह तेरी सच वड्याईआ। तूं आदि जुगादि ग़रीब निवाज़ा, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। कर किरपा मेरा साजण साजा, दुष्ट दमन ख़ुशी मनाईआ। तेरा नाम अगम्मी वाजा, दिवस रैण करे शनवाईआ। एथे ओथे दो जहान, रखे लाजा, साहिब सुल्तान वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम रचा काजा, पंज तत्त करां कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सेवा सच कमाईआ। तेरी सेवा करां विच संसार, चाउ घनेरा इक्क रखाया। ऊँचां नीचां दे आधार, तेरा नाउँ इक्क समझाया। तेरा तत्त कर प्यार, पंचम मेला जोड़ जुड़ाया। पंचम मारनहार हँकार, पंचम नाद शब्द सुणाया। पंचम पंच कर सरदार, पंचम लेखा हथ्थ फड़ाया। लख चुरासी विच्चों कढु बाहर, सच निशाना इक्क रखाया। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, प्रेम प्यार नाल रंगाया। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर वेख वखाया। पंचम पंच कर त्यार, पंचम नाता मोह तुड़ाया। पंचम पंच बोल जैकार, तेरा नाउँ सुणाया। सब दा दाता पुरख अकाल, अकल कला वरताया। अमृत जाम इक्क प्याल, सबर प्याला हथ्थ फड़ाया। सेवा करे सदा महांकाल, काल नेड़ ना लागे राया। गुरमुखां त्रैगुण माया तोड़

जंजाल, जीवण जुगत दयां समझाया। तेरी किरपा वसां नाल नाल, विछड़ कदे ना जाया। झूठी माया जगत धन माल, गुरसिख पोह ना सके राया। रसना जिह्वा जपे अकाल अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाया। गुरसिख किसे अग्गे ना करे सवाल, बिन तुध मंगण दर ना किसे जाया। हरिजन आए ना कदे ज्वाल, ज़ालम हथ्थ ना कोए उठाया। सदा सदा सद करे प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ धराया। तेरी घालण दस्सां घाल, साची घालण इक्क समझाया। गुर गुर सतिगुर बण दलाल, जगत दिलासा इक्क रखाया। गुरसिख खाणा हक़ हलाल, दूसर वस्त ना नैण उठाया। सृष्ट सबाई धीआं भैणां जाण, मात पित रूप वखाया। गुर का शब्द सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़ दए तराया। गोबिन्द मारया तीर निशान, अणयाला आप चलाया। सेवा करे मात महान, सेवादार आप हो जाया। आपणी बिन्द लेखे लाए तेरे भगवान, पुत्तर नीहां हेठ दबाया। चारे वरन करे परवान, चारे सुत भेंट चढ़ाया। चौथे युग देवे दान, चार वरन इक्क सरनाया। बरन अठारां होण हैरान, नौ अठारां मोह तुड़ाया। तू ही तू ही सारे गाण, तुध बिन नज़र कोए ना आया। गुरसिख होए ना कोए बेईमान, तेरा नाउँ हट्ट ना किसे विकाया। जिस तेरा अमृत कीता पान, सो तेरे रूप समाया। जो मेरी सिख्या भुल्ले विच जहान, एथे ओथे सके ना कोए बचाया। नानक निरगुण ज़ामनी ना देवे आण, गोबिन्द अन्त ना लए छुडाया। झूठी माया ना करे कोई पछाण, साचा नाम धन्न गुरसिखां झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द धारा सच सुणाया। गोबिन्द सिँघ सिँघ गुर बलकार, एका एक जणाईआ। अमृत प्याला ठंडा ठार, गुरमुखां रस चखाईआ। पंचम पंच कर त्यार, त्रैगुण अतीता वेखे चाँईं चाँईंआ। आपे निउँ निउँ करे निमस्कार, गुरसिखां दए वड्याईआ। गुरसिख सच्चा सरदार, लोकमात सर्ब जस गाईआ। भुल्ल ना जाए हरि अबिनाश, अबिनाशी आपणा हुक्म सुणाईआ। हरि का मन्दिर खेल तमाश, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। गुरू दुआरे साचे हट्ट कोई ना रहे बदमुआश, बदी करन कोए ना पाईआ। एका मन्त्र नाम सति जणा ख़ास, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। वाहिगुरू वसे सदा पास, ख़ालस ख़ालसा दए जणाईआ। फ़तेह डंका वजाए शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणे नाउँ दए वड्याईआ। हरिजन रसन जपण स्वास स्वास, आत्म रस इक्क चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर साची धार आप समझाईआ। गोबिन्द धार इक्क अनडीठ, चार वरन समझाइंदा। कलयुग अन्तिम बदले रीत, रीतीवान इक्क अख्वाइंदा। सृष्ट सबाई साचा गीत, पुरख अकाल समझाइंदा। एकँकारा इक्क इकल्ला वसणहारा मन्दिर मसीत, ठाकर शिवदुआले फेरा पाइंदा। घट घट परखणहारा नीत, गृह गृह आपणा आसण लाइंदा। करनहारा पत्तत पुनीत, पत्तत पापी आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची

सिख्या सिख वड्याइंदा। साची सिख्या जाणा ना भुल्ल, अभुल्ल आप जणाईआ। गुरसिख गुर गोबिन्द बणाई आपणी कुल, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। एका देवे नाम अनमुल्ल, कीमत करता ना कोए लगाईआ। लोकमात फुल फुलवाड़ी जाए फुल, पत्त टहिणी आप महकाईआ। गुर चरन प्रीती जाणा घुल, दूसर सेव ना कोए कमाईआ। चार वरन दुआरा गया खुल्ह, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। अमृत भण्डार ना जाए डुल्ह, भर प्याला हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। साची सिख्या सतिगुर सज्जण, हरि हरि हरि आप जणाइंदा। गुरमुख तेरा इक्को मजन, गुर चरन अशनान कराइंदा। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। गोबिन्द सूरा पड़दे कज्जण, सिर सब दे हत्थ टिकाइंदा। एथे ओथे रखे लज्जण, लाजावन्त आप हो जाइंदा। बेमुख हो के जो दर तों भज्जण, तिन्ह धक्का आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। साची सिख्या गुरू गुर धाम, हरि मन्दिर माण वड्याईआ। गुरू ग्रन्थ गुर मारे बाण, बाणी अणयाला तीर चलाईआ। बाणी करे गुरू पहचान, पहचान गुरू बाणी रूप वटाईआ। दोहां मेला विच जहान, मिल मिल आपणी ख़ुशी मनाईआ। गुरदवारा जूठ झूठ ना होवे पीण खाण, सच सुच्च इक्क समझाईआ। मदिरा करे ना कोए पान, रस अमृत इक्क चखाईआ। विभचार ना कोए कमाण, धी भैण ना कोए तकाईआ। जे कोई भुल्ल गया विच जहान, गोबिन्द देवणहार सज़ाईआ। माया ममता ना कोए अभिमान, लोभ हँकार ना कोए लड़ाईआ। गुर दर वड़े ना कोए शैतान, शहिनशाह साचा गया समझाईआ। गुरसिख हिरस ना रखणी पीण खाण, गुर सेवा सेव कमाईआ। गोबिन्द रखणा चरन ध्यान, चरन ध्यान मिले वड्याईआ। भुल्ल ना जाणा बण अञ्याण, कलयुग काला रिहा डराईआ। गोबिन्द खण्डा रखे विच म्यान, मुट्ठ आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। जुग जुग कार करे करतारा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। कलयुग आए अन्तिम वारा, नौ खण्ड अन्धेरा छाइंदा। सृष्ट सबाई धूआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले हाहाकारा, गुरुदुआर गुर गुर रूप ना कोए वखाइंदा। गुर का शब्द ना किसे विचारा, विचार नाल विचार ना कोए मिलाइंदा। जगत स्यासत लग्गा अखाड़ा, मन मति बुध नाच नचाइंदा। त्रैगुण अग्नी लग्गी हाढ़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। ग्रन्थी पन्थी तपे तन अंग अंग्यारा, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। नानक अर्जण शांत ठांडा दरबारा, गोबिन्द शीतल धार रखाइंदा। भरमे भुलया सर्ब संसारा, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाइंदा। सिख नाल सिख ना करे प्यारा, सिख दा दुःख गुर कोलों झल्लया ना जाइंदा। सतिगुर पूरा सब दा वणजारा, दोहां एका

हट्ट विकाइंदा। कलयुग करे फड़ दो फाड़ा, दोही हथ्थीं चीर पुवाइंदा। सम्मत उन्नी इक्क नौ कढ्ढे हाढ़ा, नौ दर सर्ब हल्काइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। साचा खेल वरते भगवान, भावी आपणे हथ्थ रखाईआ। देवणहारा सच्चा दान, गोबिन्द मीता सिफ्त सालाहीआ। कलयुग अन्त बणे नादान, गुरमुख बुध ना कोए वड्याईआ। हरि मन्दिर मदिरा होया पीण खाण, हरि जू हरि हरि गए भुलाईआ। कुँवारी कन्या तक्कण इक्क रकान, नैण नैण नैण उठाईआ। सतिगुर पूरा मारनहारा बाण, अंग अंग दए भनाईआ । गुर का सिख ना होए बेईमान, बेमुख गुर दर रहिण ना पाईआ। गुरसिख गुरू उत्तों होण कुरबान, गुरू कुरबान गुरसिखां उत्तों आपणा आप कराईआ । जिस ने अमृत भेंटा दिता दान, सो दाता दानी वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम सारे होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। सम्मत वीह सौ उन्नी बिक्रमी धक्के सारे खाण, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी किरपा करे आप भगवान, मन मति दए गंवाईआ। गुरमति देवे इक्क ज्ञान, दूई द्वैती बाहर कढ्ढाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक गुरमुखां बणाए इक्क विधान, पंचम मेला मेले सहिज सुभाईआ । सभनां दस्से इक्क निशान, गोबिन्द निशाना इक्क झुलाईआ। राजे राणे मन्नण आण, ना कोई सके सीस उठाईआ। पुरख अकाल अकाल अकाल सारे गाण, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। आत्म परमात्म मिले आण, मिल मिल खुशी मनाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बैठण इक्क मकान, सच दुआरा इक्क वखाईआ। गुरमुख कदे ना होए हैरान, चिंता सोग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेखे घर घर कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ।

✳ १७ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह
नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✳

सचखण्ड दवारा साचा घर, महल अटल इक्क रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण बैठा चढ़, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्को दर, आदि जुगादि वड वड्याईआ। एकँकारा ना जन्मे ना जाए मर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि निरँजण जोत धर, दरगाह साची बैठा कर रुशनाईआ। श्री भगवान फड़ लड़, फड़या लड़ ना कोए छुडाईआ। अबिनाशी करता वखाए आपणा घर, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ साचा नर, नर नरायण इक्क अख्वाईआ। आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख सच्चा माहीआ। सच सुवाणी चुकाए डर, निरभउ भय ना कोए

रखाईआ। एका वार लए वर, जगत रंडेपा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए समझाईआ। साचा घर सच महल्ला, हरि पुरख निरँजण आप वसाइंदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, एकँकारा आसण लाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग फड़ाए आपणा पल्ला, एका गंढु रखाइंदा। नूरी जोत नूर रला, नूर नुराना डगमगाइंदा। सच संदेस एका घल्ला, साची सिख्या आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर उच्च मनारा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। हरि जू बैठा कर पसारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। मुकामे हक़ खेल अपारा, खेलणहार आप अख्वाईआ। देवणहारा सच हुलारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क वड्याईआ। साचा मन्दिर सोभावन्त, थिर घर साचा आप सुहाइंदा। निरगुण निराकार बणाए बणत, अजूनी रहित वेख वखाइंदा। अनभउ प्रकाश आदि अन्त, बेपरवाह आपणा आप कराइंदा। सदा सुहेला साचा कन्त, कन्त कन्तूहल नाउँ रखाइंदा। गुरसिख नार बणाए बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप वड्याइंदा। साचे मन्दिर हरि जू चढ़, घर साचा आप वसाईआ। एका अक्खर आपे पढ़, पढ़ पढ़ करे पढ़ाईआ। आपे लाए आपणी जड़, पत्त डाली आप महकाईआ।
७३८ आपे वेखे विगसे खड़, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा हरि निरँकारा, ७३८
१२ एका एक रखाईआ। सच दुआर साचा रंग, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। शब्द रंगीला इक्क पलँग, पावा चूल ना १२
कोए बणाइंदा। निरवैर वजाए सच मृदंग, तार सितार ना कोए हलाइंदा। आपणी कूटे आपे लँघ, आपे फेरा पाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मंडल मण्डप ना कोए रखाइंदा। ना कोई पर्दा ना कोई कंध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप उपाइंदा। साचा घर उपमा योग, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादी करे धुर संजोग, बण संजोगी मेल मिलाईआ। नाता तोड़े चौदां लोक, त्रैभवन ना कोए वड्याईआ। सच सुणाए इक्क सलोक, सोहला ढोला आपे गाईआ। इक्क रखाए साचा कोट, घर साचा बंक सुहाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। इक्क रखाए आपणी ओट, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप वसाईआ। साचे घर वसणहारा, आदि पुरख आप अख्वाइंदा। आदि जुगादी साची कारा, जुग जुग खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। लख चुरासी पावे सारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज फोल फोलाइंदा। राती रुत्ती थिती जाणे वारा, घड़ी पल वंड वंडाइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्न रवि ससि सतारा, मंडल

७३६
१२

मण्डप आपणे रंग रंगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा आप उपाइंदा। बोध अगाधा बोल जैकारा, जै जैकारा आपणा नाउँ सुणाइंदा। सच संदेसा देवणहारा, साची सिख्या आप जणाइंदा। गुरमुख गुर गुर नारी कर प्यारा, गोद सुहञ्जणी आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक्क रखाइंदा। इक्को मन्दिर इक्को आसा, हरि जू एका एक रखाईआ। इक्को गृह इक्क भरवासा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। एका पुरख पुरख अबिनाशा, दूसर कन्त ना कोए वड्याईआ। एका भोग भोग बलासा, भस्मड़ आपणे रंग वखाईआ। एका शहिनशाह शाहो शाबाशा, साचे तख्त वसे सच्चा माहीआ। एका मंडल एका रासा, एका गोपी काहन नचाईआ। एका पृथ्मी इक्क आकाशा, गगन गगनंतर इक्क सुहाईआ। एका सचखण्ड दवार करे प्रकाशा, प्रकाशवान सच्चा माहीआ। एका जन्म जन्म दी पूरी करे आसा, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। एका लेखे लाए पवण स्वासा, पवण पवणां विच समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे मेला मेल मिलाईआ। प्रभ मिलण दा चाउ घनेरा, मन इक्को ओट तकाईआ। साहिब सुल्तान मिले नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी चुक्के झेड़ा, अवण गवण दए मिटाईआ। मैं निमाणी बन्न्हे बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। इक्को वसे सच्चा खेड़ा, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। नाता तुट्टे तेरा मेरा, मेरा तेरा कोए रहिण ना पाईआ। ना कोई सञ्झ ना सवेरा, एका जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए समझाईआ। साचा घर एकँकार, आपणा आप जणाईआ। उठ सखी कर दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। सगन मनाए पहली वार, लोकमात फेरा पाईआ। बणे विचोला एकँकार, अकल कल बेपरवाहीआ। नैण नाई ना कीता कोए त्यार, सौहरे पेईए आपे हो हो आईआ। सच संदेसा देवे आपणी धार, धार धार नाल प्रगटाईआ। नेत्र वेखे खोल्ह उग्घाड़, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। प्रतख हो परवरदिगार, जल्वा नूर दए दरसाईआ। इक्क महल अटल मनार, ऊँचो ऊँच दए वखाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह सच्चा यार, यारी एका दए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वखाईआ। साचा घर खोल्हे दरवाज़ा, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। आदि जुगादी ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। शाहो भूप वड राजन राजा, राउ रंक खेल कराइंदा। सरगुण पिच्छे निरगुण फिरे भाजा, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख सुवाणी रखे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम रचया काजा, करनी करता आप कमाइंदा। देस सुहाया इक्को माझा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाइंदा। रातीं सुत्तयां मारे वाजां, ग़फ़लत विच बेदार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा।

७४० १२

साचा मन्दिर कर त्यार, घर घर विच दए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी सच प्यार, प्रेम प्यार इक्क सिखाईआ। आत्म परमात्म दए आधार, एका दूजा बन्धन तुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यार, निरगुण निराकार आप वखाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, धुंन आत्मक आप सुणाईआ। सुरती शब्द इक्क विहार, बिवहारी आप जणाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। नेत्र नैण दए उग्घाड़, प्रतख रूप गोसाँईंआ। करे खेल आप करतार, दूसर संग ना कोए रखाईआ। आवे जावे वारो वार, जुग जुग वेस वटाईआ। जन भगतां लए उठाल, फड़ बांहों आप उठाईआ। साचा मार्ग इक्क सखाल, भेव अभेदा आप खुलाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, जगत विचोला बणे सच्चा माहीआ। अंदर बाहर फिरे नाल नाल, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच दुआरा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए प्रनाईआ। हरिजन साचे रहिणा त्यार, त्रैगुण अतीता आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी करे प्यार, प्रेम प्यारा वेस वटाइंदा। गुरमुख गुरसिख वेखे सखी साची नार, साख्यात रूप धराइंदा। जन्म कर्म दी मैल दए उतार, दुरमति आप धुवाइंदा। तन भूसन करे सच शंगार, नाम रंगीला रंग रंगाइंदा। नेत्र कजला एका धार, सति सन्तोखी आप जणाइंदा। मींढी गुंदे पहली वार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाइंदा। सगन मनाए विच संसार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे अंग लगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिख ना कोए समझाइंदा। जिस दी ओट रखदे गए गुर अवतार, पीर पैग़म्बर ध्यान लगाइंदा। सो साहिब सच्चा सिरजणहार, सिर सिर आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। गुरमुख सज्जण लए भाल, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर सच पसारा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। लोकमात खेले खेल खेलणहारा, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। गुरमुख सज्जण कर त्यारा, मजन धूढ़ी चरन दए कराईआ। आपे आया पड़दे कज्जणहारा, सच दुशाला हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर साचा घर दए वखाईआ। गुरमुख नारी हरि शंगार, सति सतिगुर आप कराइंदा। कलयुग आई अन्तिम वार, अन्त कन्त वेस वटाइंदा। भगवन्त होया आप करतार, निरँकार आपणा खेल कराइंदा। सच दुआरे खोल्ह किवाड़, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहइंदा। ओथे ना कोई पुरख ना कोई नार, जगत सेज ना कोए हंढाइंदा। पुत्तर धी ना कोए प्यार, पिता पूत ना कोए अख्वाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणा पर्दा आप उठाइंदा। सुणनहारा इक्क गुफ़तार, अंदरे अंदर राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साची सिख्या इक्क सुणाइंदा। साची सिख्या लैणी जाण, हरि सतिगुर आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी मिले आण, कर किरपा मेल मिलाईआ। बाली बुध वेखे नादान, नंन्ही आपणी गोद उठाईआ। खेले खेल दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। सचखण्ड निवासी इक्क वखाए सच मकान, साचा मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क जणाईआ। जोत अकालण दस्से दर, गुरमुख सख़ी रही समझाईआ। उठ सहेली वर लै वर, प्रभ आया सच्चा माहीआ। जगत चुका भउ डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। सरन सरनाई साची पढ़, कोझी कमली लए गल लाईआ। पुरख अकाल इक्को नर, नर नरायण इक्क अख्वाईआ। वसणहारा साचे घर, घर आपणे दए बहाईआ। अग्गे हो हो फड़ ला लड़, फड़या लड़ छुट ना जाईआ। साची सेजे जाणा चढ़, चढ़ के उतर फेर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा दरसाईआ। जोत अकालण दस्से हाल, गुरसिख सख़ी आप समझाईआ। पुरख अबिनाशी आया दीन दयाल, बेअन्त बेपरवाहीआ। जिस मिल्या ना खाए काल, महांकाल ना भय वखाईआ। नाता तुट्टे त्रैगुण माया जाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। रातीं सुत्तयां पुच्छे हाल, जागदयां आपणा घर वखाईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। जोत अकालण सच सच दस्से, सच्चे माही हाल सुणाया। कलयुग रैण अन्धेरी मस्से, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। जीव जंत फिरन नस्से, नौ खण्ड फेरा पाया। साध सन्त माया फसे, पल्लू सके ना कोए छुडाया। डूंघे कीचड़ जगत धसे, सके कोए ना बाहर कढाया। मैं फिर के आई मदीने मक्के, मकबरा रूप वटाया। चार यारी कोए ना तक्के, मुहम्मद नैण ना कोए उठाया। ईसा मूसा पैंदे धक्के, धीरज धीर ना कोए रखाया। अल्ला राणी पर्दा कोए ना ढके, नक्क सुहाग ना कोए बणाया। चारों कुण्ट सिर खेह पैंदी घट्टे, घाटा पूर ना कोए कराया। किसे कम्म ना आए पत्थर पाहन वट्टे, पूजस सिला ना पार कराया। पंज तत्त काया बुत्त पए खत्ते, खाता आपणा ना किसे भराया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे हक़े बक्के, प्रभ जी आपणा खेल रचाया। सारे लिख लिख दे गए पत्ते, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान राह चलाया। चार युग चारों कुण्ट फड़ फड़ अंदर सारे डक्के, बाहर कोई सके ना मुख कढाया। पुरख अबिनाशी इक्को नकेल पाए नक्के, नाम तन्दी तन्द बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर रिहा वखाया। जोत अकालण करे इशारा, गुरमुख सख़ी रही समझाईआ। उठ प्यारी कर दीदारा, प्रीतम आया सच्चा माहीआ। जिस दा किसे हथ्थ ना आया किनारा, गुर अवतार बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू गए छुडाईआ। जिस नूं कहिन्दे गए बेऐब परवरदिगारा,

मुकामे हक़ नूर इलाहीआ। जिस दी नार बण बण सेवा करदे गए विच संसारा, निवण सो अक्खर इक्क समझाईआ। जिस दा महल अटल लभ्भदे गए मनारा, निहचल धाम नज़र ना आईआ। सो साहिब प्रगट होया विच संसारा, निहकलंक आपणा नाउँ रखाईआ। खोलूणहारा सच दुआरा, घर बंक दए वड्याईआ। करे कराए सच प्यारा, प्रेम प्रीती इक्क सिखाईआ। वाह वा वज्जदी रहे सतारा, सति सतिवादी आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। जोत अकालण दस्से राह, नैण नैणां नाल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ आया बेपरवाह, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुरमुख सखी देवे सच सलाह, सलाहगीर सिफ्त सालाहीआ। कलयुग अन्तिम भुल्ल ना जा, भुल्लआं ठौर कोए ना आईआ। लख चुरासी टुट्टणहारा नकाह, बीवी ख़ावंद ना कोए हंढाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सचखण्ड दवारे नेत्र रोवण मारन धाह, बौहड़ी बौहड़ी रहे कुरलाईआ। परवरदिगार सब दा फ़ातया रिहा पढ़ा, फ़तेह डंका इक्क वजाईआ। लख चुरासी सुरत सवाणी साची मींढी ना सकी गुंदा, रंगला रंग ना कोए चढ़ाईआ। इक्क प्रीतम सकी ना कोई मना, चारों कुण्ट फिरे दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। जोत अकालण खोले जाग, जागरत जोत इक्क जगाईआ। गुरमुख सखी घर लगा भाग, प्रभ आया सच्चा माहीआ। जन्म

७४२ जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल मिटाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, कागों हँस उडाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे आग, ७४२

१२ सांतक सति कराईआ। सति उपजाए इक्क वैराग, बिरहों तीर चलाईआ। नथ्थ वखाए इक्क सुहाग, सो पुरख निरँजण १२

आप घड़ाईआ। हँ ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ पकड़े वाग, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। जोत अकालण फड़ फड़ बांह, गुरमुख नार रही उठाईआ। उठ उठ नेत्र मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ होया मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कोट जन्म दे बख्शे गुनाह, बख्शणहार सच्चा शहिनशाहीआ। तेरी कीती घाल लेखे लवे पा, कीती घाल पाए थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर रिहा दरसाईआ। गुरसिख सखी नेत्र रो, नैणां नीर वहाईआ। कलयुग चार कुण्ट किते ना मिल्या ढोआ ढो, दर दर फिर फिर थक्की मांदी आपणा आप रही गंवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिली ना सच्ची सो, सोभा कोए ना मोहे सुणाईआ। दुरमति मैल ना देवे कोई धो, अठसठ नीर रहे शरमाईआ। अमृत मेघ देवे ना कोए चो, साचा रस ना कोए चखाईआ। मेरे अन्धेरे करे ना कोए लो, अन्ध अन्धेर ना कोए गंवाईआ। मैं आपणा आप बैठी खोह, खाली हथ्थ रही वखाईआ। मैं जगत कन्त ल्या जोह, वेले अन्त संग ना कोए रखाईआ। ना कोई देवे ढोआ ढो, ढोलक छैणे वजाए

सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला आपणा दर लए वखाईआ। गुरसिख सखी मार चीक, आपणा आप गंवाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी रखदी रही उडीक, मेरा पन्ध ना किसे मुकाया। भैण भाई साक सज्जण मात पित देवर जेठ बणे शरीक, जगत शिरक्त इक्क वधाया। चारों कुण्ट अन्धेरा तारीक, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। जुग जुग खेड़े कोटन कोटि वसे उजड़े हरि का घर किसे ना दस्सया ठीक, गुर अवतार पीर पैग़म्बर उँगलां नाल गए समझाया। सारे रख के गए उडीक, कलयुग अन्त ध्यान लगाया। किसे सच ना दस्सी तरीक, लेखा लिख्त ना कोए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मोहे निमाणी गले लगाया। गुरसिख सखी मारे धाह, जगत धौलर कम्म किसे ना आईआ। आपणी पति सृष्ट सबाई बैठी गवा, मेरी लाज ना कोए रखाईआ। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले फेरे आई पा, फेरे लए ना कोए सच्चा माहीआ। घर घर दर दर लभ्भदी फिरी मेरा करे कोई नकाह, मुख पर्दा दए उठाईआ। मेरी सेज सुहञ्जणी लए हंढा, हंडोला झकोला इक्क वखाईआ। घर बेपरवाह मिले आ, आ आपणी फेरी पाईआ। मेरी डुब्बदी नईआ लए तरा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जे भुल्ली बख्शे सर्ब गुनाह, अभुल्ल सच्चा मेरा माहीआ। कक्खां कुली दए वसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, तेरी इक्को आस रखाईआ। गुरसिख सखी कर शंगार, तन आपणा आप रंगाईआ। प्रभ मिलण दा सच प्यार, इक्को ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी बीते कोटन वार, कोटन कोटी वेस वटाईआ। जगत विचोले बणदे रहे गुरू अवतार, पीर पैग़म्बर देण सलाहीआ। पढ़ पढ़ थक्की वेद चार, शास्त्र सिमरत सिफ्त सालाहीआ। पुराण अठारां कर कर विचार, पुराण प्राणी ना कोए लेखे लाईआ। गीता ज्ञान जगत आधार, जीवण जुगत जुगत जणाईआ। अञ्जील कुराना खेल अपार, जगत हदीस करे पढ़ाईआ। खाणी बाणी मारे मार, अणयाला तीर चलाईआ। जिस दी सिफ्त करदे गए गुर अवतार, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सो साहिब मिले आण, मैं इक्को आस रखाईआ। बिन नेत्र करे पछाण, बिन अक्खीआं लए उठाईआ। बिन मंग्गयां देवे दान, ख़ाली झोली दए भराईआ। मेरे लेखे लाए प्राण, प्राण आधारी सच्चा माहीआ। मैं बाली नढ्ढी अञ्याण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। जिस दा गुरू अवतार पैग़म्बर लिख लिख दे के गए ब्यान, ब्याना आपणा नाउँ रखाईआ। सो साहिब सतिगुर मिले आण, श्री भगवान फेरा पाईआ। मैं उस दी नार रक़ान, दूसर अंग ना कोए छुहाईआ। लै के जाए सच मकान, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। पीर पैग़म्बर सारे करन सलाम, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। गुर अवतार करन ध्यान, वाहवा वज्जदी जाए वधाईआ। गुरमुख सखी चढ़े सच बबाण, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाईआ।

पार कराए दो जहान, ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। ओथे झुल्ले सच निशान, झुलावणहार इक्क हो जाईआ। तख्त बहे नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। मैं उस दी सेवा करां कर कर चरन ध्यान, दूजा दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे लए बहाईआ। जोत अकालण अग्गों बोल, गुरमुख सखी रही समझाईआ। हरि तोलणहारा पूरा तोल, अतुल नाउँ धराईआ। प्रेम प्यारी पीआ वसे तेरे कोल, तेरी आस पुजाईआ। तूं रहिणा अन्त अडोल, सके कोए ना मात डुलाईआ। आपणा कुण्डा रिहा खोल्ह, बन्द ताकी पर्दा दए उठाईआ । तेरे संग करे कौल, कौल आपणा पूर कराईआ। तेरे अंदर जाए मौल, मौला आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रही जणाईआ। जोत अकालण दस्से भेत, आपणा भेव खुल्हाया। पुरख अबिनाशी करन आया हेत, कलयुग अन्तिम वेस वटाया। वेखणहारा नेतन नेत, नेत्र आपणा इक्क खुल्हाया। जिस पिच्छे अर्जण पाई तत्ती रेत, सो गुरमुख शीतल धार वहाया। उठ प्यारी वेख खेड, परम पुरख आप वखाया। तेरी सुहाए सुहञ्जणी सेज, फूलन बरखा एका लाया। पहलों शब्द स्नेहुड़ा रिहा भेज, सोहँ ढोला इक्क सुणाया। फेर अग्न बुझाए जगत शमस तबरेज़, तबाअ आपणी लए बदलाया। तेरे नाल करे हेत, हितकारी आपणा नाउँ धराया। रुत्त सुहाए बसन्ती चेत, फुल फुलवाड़ी आप महकाया। पहलों तैनूं आपणी अक्खीं लए वेख, फेर नाता जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाया। सुण सखी साची बात, जोत अकालण रही जणाईआ। पुरख अबिनाशी कमलापात, निरगुण आपणा खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम चढ़नहारा लै के नाल बरात, गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन सलाहीआ। कर किरपा खोल्ह आपणा ताक, बन्द पर्दा दे उठाईआ। गोबिन्द लिख्या भविख्त वाक्, लेखा लेखे लए लगाईआ। जन भगतां बणन वाला साक, सज्जण आपणा नाउँ धराईआ। मेला मेले साचे घाट, पत्तण आवे सच्चा माहीआ। तेरा नाता तोड़े ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। तेरा रूप ना रहे नार कमज़ात, कुलखणी नाउँ ना कोए वड्याईआ। एका देवे साची दात, दाता दानी आप वरताईआ। तेरी मिटाए अन्धेरी रात, आपणा नूर कर रुशनाईआ। अमृत बूंद दे स्वांत, तेरी अग्नी अग्ग बुझाईआ। दरसन देवे इक्क इकांत, दूसर संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच संदेसा साचा गीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। गुरमुख तेरी सच प्रीत, परम पुरख आप निभाइंदा। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, गुरुदुआरा इक्को इक्क वखाइंदा। घर विच घर वखाए इक्क अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सखी साचा मेला आप कराए सज्जण सुहेला घर साचे आप बहाइंदा।

७४५ १२

साचा घर सच नगारा, हरि साचा सच वजाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, निराकार आप वखाईआ। गुरमुख खोले बन्द किवाड़ा, भेव अभेद जणाईआ। धुरदरगाही बणे सच्चा लाड़ा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। असव घोड़ा कर त्यारा, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। सोलां इच्छया भर भण्डारा, सोलां कलीआं गंढु पुवाईआ। तंग कसे पहली वारा, ज़ीन पाखर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी धार चलाईआ। सचखण्ड उठे शाहसवार, शहिनशाह आपणा बल रखाइंदा। उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारे दिशा लए विचार, दो जहानां नैण उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द करे ख़बरदार, बेख़बर आप जगाइंदा। गण गंधर्ब वजायण सितार, किन्नर यच्छप आप नचाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गाओ वार, वारता आपणी आप सुणाइंदा। उठो वेखो नेत्र करो दीदार, नैण नैणां आप वखाइंदा। कलयुग आए अन्तिम वार, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। निहकलंका हो त्यार, साचा डंका नाद वजाइंदा। सच महल्ला कर त्यार, इक्क इकल्ला आप वखाइंदा। छत्ती युग दा लाह लाह भार, छत्ती छत्ती बन्धन पाइंदा। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ मनार, समरथ आप प्रगटाइंदा। अंदर वड़ बहे निरँकार, नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां देवे आप आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आउँदे जांदे वेखे वारो वार, नेत्र नैण ना बन्द कराइंदा। साची सखी कर प्यार, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। भगत दुआरा इक्क अपार, पुरख अबिनाशी कर त्यार, त्रैगुण माया डेरा ढाहइंदा। पिछला कीता वणज वपार, आप आपणा उत्तों वार, धूढ़ी ख़ाक समाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वार, कलयुग अन्तिम लेख चुकाइंदा। करे खेल आप करतार, पुरख अबिनाशी बण भतार, गुरमुख नारी आप प्रनाइंदा। सति सतिवादी साची कार, दोए दोए रूप विच संसार, दोए अंक कर त्यार, जोड़ी जोड़ जोड़ जुड़ाइंदा। साता दूआ इक्क विहार, बहत्तरां करे आप शंगार, सीस जगदीस हथ्थ रखाइंदा। सेजे चढ़या पहली वार, आप आपणे अंग लगाइंदा। सत्तरां तोड़े नाता जगत कुँवार, कुँवारापन ना कोए रखाइंदा। चुहत्तरां भरया सच भण्डार, वस्त आपणी आप वरताइंदा। साचे डोले आपे चाड़्, बण कहार कंध उठाइंदा। सौहरे पेईए जाए वारो वार, बण पाँधी फेरा पाइंदा। सगन मनाए विच संसार, मुख मुखड़ा आप सुहाइंदा । पाणी वार आपणी धार, जोती माता नाल रखाइंदा। मिट्ठा रस दए खुवाल, दूजी विख ना कोए चखाइंदा। कर किरपा साचे घर दए बहाल, हरि हरि आपणा शुकर मनाइंदा। मुख तों घूँगट दए उठाल, लख चुरासी पर्दा आपे ढाहइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुख नारी कर प्यारी जगत कुँवारी सदा रखे आपणे नाल, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। अन्त ना खाए काल, धर्म राए ना दए ज़वाल, चित्रगुप्त लेख ना सके

वखाल, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे घर आप बहाइंदा। साचे घर अन्तिम बहणा, हरि साचा दए वड्याईआ। गुरमुख मन्नणा इक्को कहिणा, कह कह आप जणाईआ। प्रभ सरनाई साची रहिणा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। आप चुकाए लहिणा देणा, देवणहार हर घट थाईंआ। बस्त्र पाए नाम गहिणा, सच शंगार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे घर वसाईआ। साचे घर वसे गुरमुख पूरा, सतिगुर पूरा आप वसाईआ। सिँघ पाल ना होया दूरा, सवरन मिली सच वड्याईआ। मनजीते रंगया सच्चा चूड़ा, मैहन्दी रंगली इक्क वखाईआ। जगदीसे चढ़या रंग गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। सिँघ गुरदयाल बणया साचा सूरा, सूरबीर आपणा बल वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम करया कौल पूरा, बल बावन लेखे लाईआ। सचखण्ड दवारे चढ़ के उच्ची कूक सुणाए साची तूरा, गुरमुख सुणो सच्चे भाईआ। प्रभ अन्तिम मेले ज़रूरा, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। मैनूं लोकमात कहिन्दे रहे मूर्ख मूढ़ा, मैं गुर पीर अवतार दिते उठाईआ। मैं झट्ट वखाया इक्को घूरा, घूरी किसे दी रहिण ना पाईआ। प्रभ दिता इक्को नूरा, नूरो नूर नूर समाईआ। गुरसिख सखी तेरा भन्ने ना कोए चूड़ा, कन्त सुहाग इक्क हंढाईआ। आदि जुगादि जुग जुग सूरा, सूरबीर आप अख्वाईआ। सदा सुहेला शब्दी बचन पूरा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वखाईआ। सच सहेली दस्से इक्क, इक्को वार जणाईआ। जिस लेखा तेरा मेरा दिता लिख, सो वेखणहार बेपरवाहीआ। रल मिल मंगीए दर तों भिख, भिच्छया देवे पाईआ। साची सिख्या लईए सिख, एका करे सच पढ़ाईआ। साचा कन्त ना देवे पिठ, करवट आपणी लए बदलाईआ। चार युग दस्सदे गए वसे सवा गिठ, गुरमुख नारी साढे तिन्न हथ्थ अंग लगाईआ। कर किरपा वंड जाए हिस्स, हिस्सा साडी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र पाए रहिमान, रहिमत आपणी आप कमाइंदा। ख़ावंद बीवी करे परवान, बेवा रूप ना कोए वखाइंदा। मुकामे हक़ वखाए मकान, साचा हुजरा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सखी सहेली इक्क इकेली, वसणहारी रंग नवेली, रंग इक्को इक्क चढ़ाइंदा। रंग नवेला चढ़े वटणा, मिल सखीआं मंगल गाया। जिस नूं कहिन्दे वासी पटणा, सो प्रभ पट्टी बन्नण आया। जिस नूं कहिन्दे वसे पनघटना, गोकल मथरा फेरा पाया। जिस नूं कहिन्दे राम दसरथना, सो राम वेस वटाया। जिस नूं ईसा मूसा टेकण मथना, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। जिस नूं मुहम्मद कहे वसे मदीना मक्कना, मुकाम इक्को इक्क समझाया। जिस नूं कहे नानक निरँकारी रहे सचखण्डना, सचखण्ड साचा घर बणाया। जिस नूं गोबिन्द

कहे मेरा पित्तना, बण पूत सेव कमाया। सो कलयुग अन्तिम जन भगतां संग करे हितना, हितकारी फेरा पाया। लख चुरासी जाणे गति मितना, गति मित आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सखी साचे घर बहाया।

✳ १८ भाद्रों २०१६ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✳

सतिगुर पूरा आदि जुगादि, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। गुर गुर वजाए साचा नाद, अनादी हरि प्रगटाइंदा। जन भगतां देवे साची दाद, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सन्त सुहेले साचे लाध, घर घर मेल मिलाइंदा। गुरमुखां मेटे तीनों ताप, त्रैगुण माया मोह मिटाइंदा। गुरमुखां देवे साचा जाप, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म साचा पाठ, साची सिख्या आप जणाइंदा। घर सरोवर अमृत ठाठ, निझर झिरना आप झिराइंदा। मेटणहार अन्धेरी रात, साचा चन्द आप चमकाइंदा। नाम निधाना एका गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। महल अटल देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। निज घर आत्म कर कर वास, आप आपणा मेल मिलाइंदा। मंडल साचे पाए रास, निरगुण गोपी काहन नचाइंदा। वेखणहारा
७४७ खेल तमाश, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साची कार कमाइंदा। ७४७
सतिगुर दाता एकँकार, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। गुर गुर रूप अगम्म अपार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। भगत
१२ भगवन्त खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। हरि सन्त वखाए महल्ल मनार, ऊँचो ऊँच बेपरवाहीआ। गुरमुखां करे १२
आप प्यार, गुर गुर गोदी गोद सुहाईआ। गुरसिखां देवे दरस दीदार, नेत्र नैण नैण मिलाईआ। करे खेल आप करतार, करनी करता आपणे हथ्थ रखाईआ। आवे जावे वारो वार, जुग जुग वेस वटाईआ। हरिजन साचे लए उभार, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। कूड़ी क्रिया मारे मार, जूठा झूठा नाता दए तुड़ाईआ। इक्क वखाए ठांडा दरबार, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचे माहीआ। सतिगुर पूरा श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। गुर गुर देवे आपे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। भगत भगवान कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। साचे सन्तां देवे इक्क ज्ञान, ज्ञान नेत्र आप खुल्हाइंदा। गुरमुख बणाए चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ साचे धन्दे लाइंदा। गुरसिखां लहिणा देणा चुकाए आण, पूरब लेखा झोली पाइंदा। नाम निराला मारे बाण, अणयाला तीर चलाइंदा। निरगुण सरगुण कराए सच पहिचाण, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। अमृत देवे पीण खाण, तृष्ना भुख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी खेल कराईआ। गुर गुर रूप दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जन भगतां कर जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। साचे सन्तां देवे साची रास, घर साचे झोली आप भराईआ। गुरमुखां पूरी करे आस, आसा आसा नाल मिलाईआ। गुरसिख कटे तेरी जम जम फास, फाँसी जम रहिण ना पाईआ। जगत विकारा करे नास, नाम खण्डा इक्क चलाईआ। हउमें हंगता करे घात, घाउ इक्को इक्क लगाईआ। लहिणा चुक्के ज़ात पात, वरन गोत ना कोए लड़ाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, अन्ध अज्ञान दए गंवाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, नाता इक्को इक्क जुड़ाईआ। अमृत देवे बूंद स्वांत, अग्नी तत्त तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, आदि जुगादी इक्क अख्वाइंदा। गुर गुर जाणे आपणा कर्म, निहकर्मी कर्म जणाइंदा। भगत भगवान इक्को वरन, दूजा वरन ना कोए समझाइंदा। साचे सन्तां देवे साची सरन, सरनगति इक्क वखाइंदा। गुरमुखां नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र वेख वखाइंदा। गुरसिखां लहिणा देणा चुक्के मरन डरन, जन्म मरन भउ मिटाइंदा। सतिगुर पूरा तरनी तरन, तारनहार इक्क अख्वाइंदा। आदि जुगादी घाड़न घड़न, घड़ घड़ भाण्डे भन्न जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आपणा
७४८ नाउँ रखाइंदा। सतिगुर पूरा आदि निरँजण, एका एक वडी वड्याईआ। गुर गुर नाम एका अंजन, नेत्र नैण धार वखाईआ। ७४८
भगत भगवान सच्चा सज्जण, मीत मुरारा आप अख्वाईआ। साचे सन्त कराए मजन, चरन धूढ़ अशनान वखाईआ। गुरमुखां
१२ होए परदे कज्जण, नाम दुशाला उत्ते पाईआ। गुरसिख नेत्र लोचण नैण दरस कर कर रज्जण, जगत तृष्ना भुख बुझाईआ। १२
शब्द अनादी ताल वजण, नाम नगारा इक्क सुणाईआ। जगत किनारा पार हद्दन, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। करे खेल सूरा सरबंगन, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा सदा सदा होए सहाईआ। सतिगुर पूरा चार युग, एका एक अख्वाइंदा। गुर गुर देवे नाम लुट्ट, जगत वणजारा हट्ट खुल्हाइंदा। भगतां देवे नाम अतुट, अतोट अतुट वरताइंदा। सन्तां देवे निर्मल जोत, नूर नुराना डगमगाइंदा। गुरमुखां कढ्ढे कूड़ा खोट, खोटी वासना ना कोए रखाइंदा। गुरसिखां खोल्हणहारा सोत, नौ दर आपे पर्दा लाहइंदा। नाम जपाए बिन रसना होट, अजपा जाप आप समझाइंदा। लेखा जाणे ओत पोत, पिता पूत गंढु पुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा खेल कराइंदा। सतिगुर सच्चा साहिब सुल्तान, सचखण्ड निवासी इक्क अख्वाईआ। गुर गुर देवे वरभण्डी दान, ब्रह्मण्डी राग सुणाईआ। भगतां देवे भगवान निशान, सच निशाना इक्क जणाईआ। सन्त वखाए सति मकान, छप्पर

छन्न ना कोए छुहाईआ। गुरमुखां मारे अणयाला बाण, तिक्खी मुखी धार जणाईआ। गुरमुख गुर गुर मेले आण, गुरसिख देवणहार वड्याईआ। जुग जुग खेल करे जहान, जीवण जुगत जगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर दाता एका सिफ्त सालाहीआ। सतिगुर सच्चा सिफ्त सालाह, सिफ्ती सिफ्त विच ना आइंदा। गुर गुर रूप बण मलाह, निरगुण सरगुण बेड़ा आप चलाइंदा। भगत भगवन्त दए सलाह, साचे मार्ग आपे लाइंदा। सन्त साजण लए उठा, उठ उठ गले लगाइंदा। गुरमुख गोद लए बहा, बह बह खुशी मनाइंदा। गुरमुख गुरसिख साचे लए पढ़ा, साची सिख्या आप जणाइंदा। धुर दा लेखा दए वखा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। भुक्ख्यां भुख दए गवा, तृष्ना रोग ना कोए सताइंदा। रुठयां जग लए मना, फड़ नेत्र नीर पुंझाइंदा। राहों घुथिआं राहे देवे पा, साचा मार्ग इक्क प्रगटाइंदा। जगत लुट्टयां लए बचा, ठग्ग चोर यार नेड़ कोए ना आइंदा। रातीं सुत्तयां लए उठा, घर घर आपणा फेरा पाइंदा। बिन पुछयां आपणा पता दए बता, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क हो आइंदा। सतिगुर सच्चा हरि जू मीत, मित्र प्यारा हरि अख्वाईआ। गुर गुर चलाए रीत, लोकमात वडी वड्याईआ। भगत भगवन्त गाए गीत, गीत गोबिन्द सुणाईआ। सन्त सज्जण वखाए धाम अनडीठ, महल अटल रुशनाईआ। गुरमुखां वसे आपे चीत, चितवित ठगोरी कोए ना पाईआ। गुरसिखां परखणहारा नीत, नीतीवान सच्चा माहीआ। आदि जुगादि रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट रिहा समाईआ। सदा सुहेला साची बन्ने इक्क प्रीत, परम पुरख वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा सूरबीर, बीरता आपणी आप रखाइंदा। गुर गुर देवे साची धीर, धीरजवान दया कमाइंदा। भगत भगवान चोटी चाड़्ह अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। सन्तन तोड़ शरअ ज़ंजीर, शरीअत आपणा रूप वखाइंदा। गुरमुखां मेला बेनज़ीर, नज़रीआ नज़र नाल मिलाइंदा। गुरसिखां बदलणहारा तकदीर, तदबीर आपणी आप जणाइंदा। जुग जुग कटणहारा भीड़, औझड़ राह पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा खेल कराइंदा। सतिगुर सच्चा अगम्म अथाह, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। गुर गुर रूप गए गा, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। भगत भगवान कहिण बेपरवाह, अन्त कोए ना पाईआ। सन्त सज्जण कहिण सच्चा शहिनशाह, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। गुरमुख गुर गुर ध्यान लए लगा, ध्यान ध्यान विच टिकाईआ। गुरसिख निउँ निउँ सीस गए झुका, झुक झुक आपणा माण मिटाईआ। आदि जुगादी चले आपणी सच रज़ा, रज़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। कर किरपा

जिस नूं आपणे नाउँ मज़ा दए चखा, लज़त इक्को इक्क वखाईआ। कर किरपा जिस तन पर्दा दए उठा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जिस नूं आपणी सुहबत दए सुणा, सो गुर पीर अख्वाईआ। जिस मन्दिर नौबत नाम दए वजा, तिस हरि मन्दिर दए वड्याईआ। जिस गृह आपणा फेरा जाए पा, तिस देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा पुरख अकाल, दर घर साचे सोभा पाइंदा। गुर गुर रूप दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी कृपानिध किरपन आपणा हुक्म वरताइंदा। भगत भगवन्त वखाए सच्ची धर्मसाल, दीपक जोती इक्को बाल, नूर नुराना नूर दसाइंदा। सन्तां देवे सति जमाल, करे खेल आप कमाल, करनी करता आप कमाइंदा। गुरमुख वेखे छोटे लाल, फल लगाए साचे डाल, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। गुरसिखां चले नाल नाल, एथे ओथे करे प्रितपाल, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। आदि जुगादि अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा वेस वटाइंदा। सतिगुर सच्चा वेस अनेक, अकल कल धारी आप वटाईआ। गुर गुर सतिगुर आपे पेख, पेख पेख खुशी मनाईआ। भगत भगवान वखाए देस, देस दसन्तर सोभा पाईआ। सन्त साजण लिखे लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। गुरमुख नाता आदि जुगादि हमेश, हरि सतिगुर आपणा बन्धन पाईआ। गुरसिख मेला मेले कर कर आपणा वेस, नित नवित साचा हित आप जणाईआ। भेव ना पाए कोई औलीआ पीर शेख़, मुल्ला काज़ी देण दुहाईआ। पंडत पांधे हथ्थ ना आई रेख, रेखा वेख वेख बारां कुण्डली रास ना किसे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा सच्चा शाहो, हरि सज्जण इक्क अख्वाइंदा। कोटन कोटि गुरू गुर दरयाओ, आदि जुगादि वहण वहाइंदा। कोटन कोटि भगत भगवान देवे नाउँ, नाउँ निरँकारा आप सुणाइंदा। कोटन कोटि सन्त हरि कन्त पकड़े बांहों, फड़ बांहों गले लगाइंदा। कोटन कोटि गुरमुखां रखे मिलण दा चाओ, चाओ घनेरा इक्क जणाइंदा। कोटन कोटि गुरसिखां देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कोटन कोटि जुग जुग करे न्याउँ, न्याँकार आप हो आइंदा। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर वेखे थाईं थाउँ, ज़िमीं असमानां फेरा पाइंदा। कोटन कोटि हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा सतिगुर आप अख्वाइंदा। सतिगुर सच्चा हरि जू आप, आप आपनड़ा रंग रंगाईआ। आदि जुगादी वड प्रताप, वड प्रतापी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे दे जाप, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सरगुण निरगुण दे दे दात, दयावान दया कमाईआ। लोकमात दी साची गाथ, अक्खर अक्खर नाउँ सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा

राह चलाईआ। सतिगुर रैहबर एका एक, रहिमत आप कमाइंदा। आदि जुगादी साची टेक, जुग जुग वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर छिन मातर दे दे आपणा भेत, भोरा भोरा नाम वरताइंदा। भाग लगा पंज तत्त काया खेत, खेती आपणे नाम लहराइंदा। अमृत झिरना चरन कँवल झिर झिर देवे सेंत, सिंच हरी क्यार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा भेव चुकाइंदा। आपणा भेव श्री भगवाना, किणका किणका दए जणाईआ। गुर अवतार होण हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कवण दुआर वसे मकाना, कवण बिध रचन रचाईआ। कवण धार सुणाए तराना, तार सितार ना कोए हलाईआ। कवण रूप करे खेल दो जहानां, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। बिन वेख्या होए हैराना, हरि जू आपणा हुक्म वरताईआ। कर किरपा देवे चरन ध्याना, चरन सरन इक्क सरनाईआ। चार युग गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणा मुख ना किसे वखाना, चरनां उपर ध्यान ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा ऊँचो ऊँच, अगम्म अथाह अख्वाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देंदा रिहा सूचना सूच, साची सिख्या सिख समझाइंदा। आपणे हथ्थ दो जहानां रख्या कूच, जो आया सो उठ उठ धाइंदा। सोचिआ कोई ना सक्या सोच, सोची सोच सर्ब लगाइंदा। किसे जणाया काया कोट, किसे मन्दिर दर वखाइंदा। किसे वखाया नूर निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। किसे मोहणी रूप करे आप मोहत, मुहब्बत आपणा नाउँ वखाइंदा। किसे बणाए ओत पोत, पिता पूत गोद सुहाइंदा। किसे बणाई साची गोत, आप आपणी गंढु पुवाइंदा। अन्त सब नूं जणाए आपणी ओट, बलहीण सर्ब वखाइंदा। खुश कराए सुणा सुणा आपणी सरोत, सच संदेसा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाइंदा। सतिगुर सच्चा वड्डा वड, हरि वडी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे विच्चों कढु, निरगुण सरगुण सेवा लाईआ। चरन कँवल वखाई आख़र हद्द, चरनां हेठ सर्ब दबाईआ। सच प्रेम सच्चा रस, बिन रसना रस चखाईआ। दूर दुराडा बैठा मार्ग आपे दस्स, नेरन नेर राह वखाईआ। उच्च महल्ले बह बह रिहा हस, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। प्रभ मिलण दी जे कोई सचखण्ड रखे आस, सचखण्ड निवासी चल के लोकमात फेरा पाईआ। लोकमात दे के जाए शाबाश, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती नूर दे प्रकाश, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। अन्तिम मेला शाहो शाबाश, गुण साचा दए समझाईआ। आपणा कम्म किसे ना दस्सया ख़ास, खुलासा किसे ना दिता समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निक्की निक्की शाख़, लोकमात आप लहराईआ। आपणे घर विच्चों दे दे दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। अन्तिम सब दा कर के घात, आपणे चरनां

हेठ दबाईआ। दोए जोड़ सारे होए सफ़ात, लोकमात सफ़ा गए उठाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल बहु बिध भांत, भावी आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि की सिफ्त लिख लिख दे गए कलम दवात, कलमा रसना जिह्वा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह वड राजन राजा, हरि सतिगुर आप अख्वाइंदा। आदि जुगादि रच रच काजा, जुग जुग कार कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप निवाजा, निवाज़श आपणी आप समझाइंदा। एका नूर निक्का नंन्हा कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड करे प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाइंदा। कोटन कोटि त्रिलोकी आपणी निक्के नाउँ नाम करे निवासा, कोटन कोटि कृष्न ध्यान लगाइंदा। जिस घर सतिगुर रखे वासा, सो घर नज़र किसे ना आइंदा। बिन नानक चरन दिता ना किसे भरवासा, मस्तक बिनां कबीर धूढ़ ना कोए लगाइंदा। उपर तक्कण नज़र आए इक्को प्रकाशा, प्रभ मुख ना कोए रखाइंदा। कवण सेजा करे भोग बलासा, जिस मन्दिर बह बह गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रगटाइंदा। साची दस्से ना कोए शनाख़त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणे घर सुहाइंदा। सतिगुर घर अपर अपारा, अपरम्पर सोभा पाईआ। आदि जुगादी हो उज्यारा, सति सतिवादी आसण लाईआ। बोध अगाधी बोलणहारा, अनाद अनादी करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी बण वणजारा, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। लेखा जाण गुरू अवतारा, गुर गुर नाउँ सिफ्त सालाहीआ। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, जै जैकार इक्क लगाईआ। लोक परलोक दे सहारा, अवण गवण डंक वजाईआ। जुग चौकड़ी पावे सारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ । सृष्ट सबाई करे निमस्कारा, पुनहि पुनहि सीस झुकाईआ। खाणी बाणी सिफ्त भण्डारा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। करे खेल हरि करनेहारा, आपणी करनी किरत कमाईआ। नव नौ चार पार किनारा, तन वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण निरगुण लै अवतारा, सरगुण सरगुण लेखा दए मुकाईआ। जोधा सूरबीर बलकारा, बल आपणा आप रखाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। तिक्खीआं रखे दोवें धारां, दो जहानां दए सज़ाईआ। लेखा जाणे पुरख नारा, नार कन्त भेव ना राईआ। गुर गुर देवे आप सहारा, गुर शब्दी होए सहाईआ। भगत भगवन्त करे प्यारा, परम पुरख वडी वड्याईआ। सन्तां देवे सति नज़ारा, नज़र आपणी नज़र नाल मिलाईआ। गुरमुखां लहिणा देणा चुकाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँग्घी कंदर पार कराईआ। गुरसिख बणाए साचा लाड़ा, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। मेल मिलाए कलयुग अन्तिम वारा, अन्त आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा होए सहाईआ। सतिगुर सच्चा एकँकार, ओंकार सेव कमाइंदा। गुरमुख साचे लए उठाल, उठ उठ वेख वखाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह एका घर वखाइंदा। शब्द सरूपी

७५२
१२

बण दलाल, बण विचोला सेव कमाइंदा। लख चुरासी विच्चों भाल, फड़ फड़ आपणी गोद बहाइंदा। जन्म जन्म दी कीती घाल, कलयुग अन्तिम लेखे लाइंदा। साचा मार्ग इक्क सखाल, कूड़ी क्रिया तोड़ तुड़ाइंदा। त्रैगुण नाता तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क वखाइंदा। दीआ बाती दीपक बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा नज़र कोए ना आइंदा। भाग लगाए पंज तत्त काया माटी खाल, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। गुर शब्दी चले नाल नाल, गोबिन्द आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा खेल कराइंदा। सतिगुर पूरा खेले खेल, सति सतिवादी दया कमाईआ। गुरमुख सज्जण आपे मेल, मिल मिल खुशी वखाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां संग रल रल चाढ़े तेल, साचा सगन मनाईआ। वसणहारा धाम नवेल, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साची कार कराईआ। सतिगुर करे साचा धन्दा, हरि साची कार कमाइंदा। लख चुरासी वेखे जीव गंदा, नौ खण्ड पृथमी फेरा पाइंदा। बण तरखाण फेरे रंदा, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां होए सदा बख्शंदा, बख्शश आपणी आप कराइंदा। गुरमुख वेखे चन्द नौचन्दा, घर साचे आप रुशनाइंदा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड कोई रहिण ना देवे आंडा गंदा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। कलयुग अन्तिम आया कन्ढा, कन्ढी बैठा डेरा लाइंदा। चार युग बणया रिहा बख्शंदा, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां नाच नचाइंदा। हथ्थ विच फड़ के रख्या इक्को डण्डा, नाम डण्डा हथ्थ वखाइंदा। निउँ निउँ सीस सर्ब झुकंदा, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। पीर पैग़म्बर कहिण हउँ ख़ाकी बन्दा, बन्दगी आपणी सब नूं लाइंदा। किसे हथ्थ तीर किसे फड़ाई कमंदा, किसे रथवाही रथ चलाइंदा। आप कलयुग बण के आया अन्धा, आपणा नैण ना किसे वखाइंदा। कोटन कोटि नाउँ रख रख सुणाए छन्दा, शरअ शरअ नाल टकराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त, करया खेल आप बेअन्त, एका हरि एका मंत, सतिगुर पूरा आप दृढ़ाइंदा। सतिगुर पूरा छैल छबील, जोबन आपणा आप हंढाईआ। सतिगुर पूरा सच दलील, आदि जुगादि जुग जुग दए समझाईआ। सतिगुर पूरा सच वकील, दो जहानां दए छुडाईआ। सतिगुर पूरा इथे ओथे सुणे अपील, तख्त बैठा शहिनशाहीआ। सतिगुर पूरा पहनणहारा बस्त्र नील, बसन बनवारी भेख वटाईआ। सतिगुर पूरा लेखा जानणहारा भील, बलहीण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर इक्को इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा इक्को आख़र, अक्खर सिफ्त ना कोए सलाहइंदा। आपणे उत्ते होया शाकर, शुकरीआ होर ना कोए मनाइंदा। आपणा स्नेहुड़ा आपे देवे पात्र, कासद गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप बणाइंदा। दो जहानां

करे यातर, यातरू बण बण फेरा पाइंदा। लिखावणहारा वेद शास्त्र, सिमरत पुराण आप पढ़ाइंदा। बणावणहारा लग्ग मातर, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाइंदा। जानणहारा भेव बातन, ज़ाहरा आपणा खेल कराइंदा। लेखा चुकाए पुरातन, पिछला कीता भुल्ल ना जाइंदा। गुरमुखां बणया सच्चा साकन, सगला संग तजाइंदा। कलयुग अन्तिम आया राखण, बण रक्षक सेव कमाइंदा। सचखण्ड निवासी आया झाकण, झाकी आपणी आपे पाइंदा। लहिणा देणा चुकावण आया बाकण, बाकी नज़र कोए ना आइंदा। लेखे लाए माटी खाकण, खाक आपणे रंग रंगाइंदा। करे खेल पाकी पाकण, पतित पुनीत वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आपणा आप आप प्रगटाइंदा। सतिगुर पूरा प्रगट आप, आपणी कल धराईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत नाम वड्याईआ। आदि जुगादी हरि हरि नाउँ साचा पाठ, बण पाठक आप सुणाईआ। देवणहारा साची दात, दीना नाथ होए सहाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। सतिजुग सुणाए साची गाथ, सोहँ करे पढ़ाईआ। प्रगट हो पुरख समराथ, समरथ आपणी कल वरताईआ। जन भगतां बणया दासी दास, सेवक साची सेव कमाईआ। इक्को रखे साची आस, गुरसिख मिलणा चाँईं चाँईंआ। लोकमात पत्त मेरी लैणी राख, बिन भगत भगवान मिले ना कोए वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी इक्को बात, जगत कहाणी ना कोए सुणाईआ। तेरा मेरा इक्को साथ, मात पित भाई भैण संग ना कोए जाईआ। तूं मेरा पूरा करना घाट, मैं तेरा घाटा तेरी झोली पाईआ। अग्गे नेड़े आई वाट, प्रभ बैठा पन्ध मुकाईआ। बिन हरिसंगत दूजी कोई ना रहे जमात, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे देण दुहाईआ। मनमति कढ्ढे नार कमज़ात, गुरमति करे सच पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा कमलापात, लिख लिख पाती पत्तर जुग जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर हथ्थ फड़ाईआ। अन्तिम सब दा लथ्था सत्थर, सिफ़रा सिफ़र सिफ़र सिफ़र समाईआ। पारब्रह्म प्रभ बड़ा अक्खर, आपणी ज़िद ना छड्डे राईआ। तोलणहारा साचे तक्कड़, तक्कड़ आपणे हथ्थ उठाईआ। गुरमुख मनमुख कढ्ढे वक्खर, वाहवा वक्खरी वंड वंडाईआ। अल्फ़ ये पढ़ाए पैंती अक्खर, तिन्न पंज कर कुड़माईआ। आप चढ़ के चोटी बैठा सिखर, दूरों सिख्या रिहा समझाईआ। गुरमुख तेरा जुग जुग करदा आया फिकर, तेरा फिकरा सक्या ना कोए मिटाईआ। तेरा नाम मेरा ज़िकर, मेरा ज़िकर जगत जुगत बोध अगाध पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख देवे इक्को दान, दूजे घर ना मंगण जाईआ।

७५४
१२

✳ १८ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सुदागर सिँघ दे गृह नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✳

सोवत जागरत जगत विहारा, लख चुरासी बंधण पाईआ। ऊठत बैठत खेल न्यारा, सरगुण धार चलाईआ। रसना जिह्वा जगत जैकारा, कूक कूक सुणाईआ। नेत्र नैणां अक्ख उग्घाड़ा, वेखे सर्ब लोकाईआ। खाण पीण बत्ती दन्द दाढ़ा, रसना रस नाल भराईआ। चलणा फिरना जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। मिलणा जुलणा सज्जण यारां, साक सैण कुड़माईआ। नाता बन्नणा कन्त नारा, जगत सेज हंढाईआ। पुत्तर धीआं कर प्यारा, पिता पूत खेल कराईआ। क्षत्री ब्राह्मण शुदर वैश वणज करे संसारा, हट्टो हट्ट विकाईआ। कपड़ बस्त्र पहने तन अपारा, तन माटी पर्दा पाईआ। चरन पाहिणी कर प्यारा, अंगुसत लए टिकाईआ। पढ़ पढ़ वेद शास्त्र बणे सच्यारा, विदित विद्या नाल मिलाईआ। कलम शाही शाह लिखारा, लिख लिख लेख जणाईआ। पढ़ पढ़ बोले बोलणहारा, अणबोलत भेव ना आईआ। सतिगुर खेल अगम्म अपारा, नज़र किसे ना आईआ। ला के कन्न सुण लै सिँघ तारा, हरि सारंगी इक्क वजाईआ। किली दिसे ना कोए सितारा, सारंगा हथ्थ ना कोए उठाईआ। कंधे ला ना कोई कसे सुर नेत्र नैण ना कोए उग्घाड़, उँगली उँगली ना कोए हिलाईआ। घड़ी पल ना कोए विचारा, दिवस रैण ना दए कोए वड्याईआ। मास बरख ना कोए अधारा, जुग चौकड़ी रोवण मारन धाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि का दरस लभ्भदे गए गुर अवतारा, मन्दिर अंदर वड़ वड़ ध्यान लगाईआ। दोए दोए जोड़ करदे रहे निमस्कारा, निमख निमख आपणा आप कटाईआ। वेस अवल्ला करदे रहे श्रृंगारा, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रुमाईआ। ठरदे रहे अंदर जलधारा, डूँघे सरोवर तारीआं लाईआ। पुठे लटकदे रहे विच खूह दी गारा, तन माटी लेखे पाईआ। अग्गां नाल तपदे रहे वांग अंग्यारा, अग्नी हवण कराईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ लभ्भदे रहे डूँघीआं गारां, गुरमति आपणा आप वखाईआ। चार कुण्ट बन्नृ खण्ड फिरदे रहे अवारा, दहि दिशा फेरी पाईआ। हरि का भेव सर्ब तों न्यारा, निरँकारा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोवत जागत जागत सोवत आपणी खेल खिलाईआ। जागत किसे ना आया हथ्थ, हथ्थों हथ्थ रहे कुरलाईआ। सोवत किसे ना ल्या फद, फड़ बांहों ना कोल बहाईआ। अग्गे हो ना मिल्या कोई नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। सत्थर कोई ना बैठा घत्त, वेखणहारा सर्ब लोकाईआ। जुगा जुगन्तर खेलणहारा आप तमाश, तमाशबीन सच्चा माहीआ। पंज तत्त दस्सदा रिहा रास, गोपी काहन रूप वखाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रकाश, सरगुण देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रगट कर

७५५ १२

आपणी शाख़, शनाख़त थोड़ी थोड़ी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोवत जागत जागत सोवत दीदार, जमाल ना किसे जणाईआ। दीदार जमाल ना जाणे नूर, नूर नुराना ना कोए रुशनाईआ। आशक माशूक बणया रिहा जरूर, ज़रूरत आपणी पूर कराया। जे कोई पुच्छे दस्से नेड़ दूर, नेड़े हो हो भेव खुल्हाया। अन्तिम सब दी माटी कर गया कूड़ो कूड़, निशाना कोए रहिण ना पाया। जिस जन कर किरपा चाड़्हया रंग गूढ़, आदि जुगादि उतर ना जाया। जिस देवे साची धूढ़, मस्तक टिक्का नाम लगाया। सो जन होया मन्जूर, हरि जू आपणे लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाया। साचा खेल हरि निरँकारा, एका एक कराईआ। सुखन सखोपत जागरत तुरीआ चारे मारे मारा, मारनहार बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम खेल कीआ न्यारा, निरगुण आपणी दया कमाईआ। पुरख अकाल हो उज्यारा, एका नूर धराईआ। सुत्तयां देवणहार हुलारा, आपणी गोद बहाईआ। जागदयां मेला विच संसारा, सार आपे रिहा पाईआ। गुरमुख करया इक्क प्यारा, छड्डी सर्ब लोकाईआ। बिन करनीउँ कीता पार उतारा, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। बिन मंगया देवे दान सच दुआरा, दाता दानी सच्चा माहीआ। बिन पूजा पाठ जोग अभ्यास देवे दरस अपारा, दरसी आपणा दरस कराईआ। जागत सोवत दोवें रोवण ज़ारो ज़ारा, जिस मिल विछड़ विछड़ आपणा आप गंवाईआ। कलयुग अन्तिम करया खेल आप करतारा, करता आपणा भेव चुकाईआ। एथे ओथे दो जहान इक्को जिहा करे विहारा, दिवस रात करे प्रभात, प्रभाती एका रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सदा सुहेला सच्चा माहीआ। जिथे आप उथे गुरसिख, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। हरिजन लेखा तेरा लिख, लिख लिख दो जहान समझाईआ। सचखण्ड निवासी पाई भिख, भिच्छया एका वार वरताईआ। सतिजुग साचा वन्डया हिस्स, हिस्सा इक्को इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खेल कराईआ। जिस घर वसे आप प्रभ, सो थान थानंतर सुहाइंदा। गुरसिख गुरमुख आपे लभ्भ, हरिजन हरि हरि मेल मिलाइंदा। अमृत धार कँवल नभ, निझर रस चुआइंदा। शब्द अगम्मी एका नद, अनहद सेव कमाइंदा। जगत किनारा पार हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। सच दुआरे हरि हरि सद, फड़ आपणी गोद बहाइंदा। किरपा निध लडाए लड, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढ, साचे मार्ग आपे लाइंदा। अमृत जाम प्याए मदि, रस रसना इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप वड्याइंदा। जिस गृह वसे सतिगुर प्यारा, तिस देवे माण वड्याईआ। ओस घर वड़ के बोल सिँघ गिरधारा, प्रभ चरन मिली वड्याईआ। सिँघ गुरदयाल बोल जैकारा, एका रिहा

सुणाईआ। जट्टां मिल्या जट्ट गुआरा, जदो जहद सभना रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां रखे सदा साथ, साथ आपणा संग रखाईआ।

✳ १६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी महिंदर सिंघ दे गृह नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✳

करे खेल पुरख समरथ, हरि आपणा खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर वक्खो वक्ख, आदि जुगादि सर्ब रखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां रिहा दस्स, घर साचे सच जणाइंदा। जुग चौकड़ी करदा रिहा पक्ख, नित नवित सेव लगाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अकथ, अकथ आप दृढ़ाइंदा। निरगुण नूर हो प्रगट, लोकमात वेस वटाइंदा। दो जहानां इक्को हट्ट, श्री भगवान आप खुल्हाइंदा। सर सरोवर साचा तट, हरि अमृत इक्क भराइंदा। निरगुण नूर जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर गुआइंदा। साचा काहन पाए रास, लख चुरासी नाच नचाइंदा। जुग जुग देंदा रिहा शाबाश, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। नाम जणाउँदा रिहा खास, नाम नामा झोली पाइंदा। रखाउँदा रिहा इक्को आस, आप आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। समरथ पुरख खेल अपारा, हरि हरि जू आप कराईआ। जुग जुग दस्सदा रिहा कारा, हरि करनी किरत जणाईआ। सरगुण देंदा रिहा सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम निधाना वजाउँदा रिहा नगारा, तन रबाब सितार हिलाईआ। सिफ्ती सिफ्त भरदा रिहा भण्डारा, वड भण्डारी बेपरवाहीआ। कातब बण बण लिखाउँदा रिहा लिख लिख अलख लेख अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। समरथ पुरख खेल अवल्ला, एक ओंकारा आप कराइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैग़म्बर घल्ला, हुक्म संदेसा इक्क सुणाइंदा। अन्तर अन्तर फड़ाउँदा रिहा पल्ला, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। जोती धार जोती रल्ला, जोती जोत डगमगाइंदा। सच सिंघासण एको मल्ला, गुर गुर धाम वड्याइंदा। नाम मार्ग इक्क सुखल्ला, सुख सागर रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। समरथ पुरख सर्ब गुणवन्त, गुणवन्ता भेव जणाइंदा। खेलया खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाइंदा। गुर अवतारां दे दे मंत, मन्त्र हरि हरि नाम दृढ़ाइंदा। नारी रूप वखाए हरि जू कन्त, गुर गुर आपणे अंग लगाइंदा। काया चोली चाड़्ह रंग बसन्त, रूप अनूप आप वटाइंदा। पंज तत्त महिमा गा गा अगणत, बेअन्त आपणा नाउँ जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी साहिब सुल्तान, पुरख समरथ आप कराईआ। जुग जुग देवणहारा

७५७
१२

नाम निधान, नाम नामा झोली पाईआ। जुग जुग वखावणहारा सच निशान, शब्द निशाना इक्क झुलाईआ। जुग जुग देवणहारा माण, निमाणयां होए सहाईआ। जुग जुग देवणहारा ज्ञान, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जुग जुग वेखणहारा मार ध्यान, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जुग जुग करनहार कल्याण, लख चुरासी फंद कटाईआ। जुग जुग होए वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। जुग जुग जोधा सूरबीर बलवान, गुर अवतार लए प्रगटाईआ। जुग जुग शाह पातशाह सच्चा हुक्मरान, धुर फरमाणा हुक्म सुणाईआ। जुग जुग खेले खेल श्री भगवान, खेलणहारा भेव ना आईआ । जुग जुग नव नौ वेखे आण, चार चार वंड वंडाईआ। जुग जुग देवणहारा दान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जुग जुग करनहार पहचान, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी धार चलाईआ। समरथ पुरख अगम्म अथाह, अगम्म अगम्मी कार कराइंदा। निरगुण सरगुण दे सलाह, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। गुर गुर रूप मात धरा, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। नाउँ निरँकारा आप दृढ़ा, दृढ़ इष्ट इक्क प्रगटाइंदा। साचा मार्ग जुग जुग ला, जुग चौकड़ी खेल खलाइंदा। धुर दरगाही लेखा लेख लिखा, लिख्त भविख्त आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लग्गा, सेवक सेवा सच रखाइंदा। दो जहानां खेल खिला, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे धर, धरनी धरत दए वड्याईआ। आदि जुगादी अछल अछल, भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार मात घल्ल, जुग जुग करे पढ़ाईआ। आपणा खेल हरि प्रबल, आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, कलयुग द्वापर त्रेता सतिजुग सति सतिवादी आप हंढाईआ। सति सतिवादी शाह सुल्तान, हरि सच्चा सच जणाइंदा। आदि अन्त खेल महान, हरि जू आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेव कमाण, कर कर सेवा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। गा गा गए हरि का ज्ञान, गावणहारा गीत सुणाइंदा। ला ला गए अन्तर ध्यान, अन्तर मुख खेल खलाइंदा। मंग मंग गए मंगत दान, भिख्या झोली सर्ब पाइंदा। अन्तिम कह कह गए बाल अंञाण, आपणा बल ना कोए धराइंदा। हुक्मे अंदर दे दे धुर फ़रमाण, आपणा हुक्म ना कोए सुणाइंदा। इक्को ओट रख भगवान, भगवन एका आस तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा रथ आप चलाइंदा। आपणा रथ चलाए आप हरि, हरि जू आप जणाइंदा। उठो वेखो खेल तमाश, हरि करता आप कराइंदा। जिस दी पूजा करदे रहे पाठ, सो पाठक वेस वटाइंदा। जिस दी लभ्भदे रहे ज़ात, सो आपणी ज़ात प्रगटाइंदा। जिस

दी दस्सदे रहे करामात, सो कर्म कांड ना कोए रखाइंदा। जिस दे पिच्छे आपणा आप कर के आए घात, सो हरि जू आपणा घात आप कराइंदा। जिस दी लिख लिख दस्सदे आए बात, खाणी बाणी भेव चुकाइंदा। जिस ने आदि जुगादि विष्न ब्रह्मा शिव लख चुरासी गुर अवतार पीर पैग़म्बर लाया बाग़ात, सो बाग़ीचा वेख वखाइंदा। जिस ने चार जुग पढ़ाए इक्क जमात, एका अक्खर वक्खर आप जणाइंदा। जेहड़ा कोटन कोटि दृढ़ाउँदा रिहा नाम जाप, जीवण जुगत जगत समझाइंदा। जिस नेत्र पेख जाइन तीनो ताप, त्रैगुण अग्ग ना कोए जलाइंदा। जित दर्शन मिटे कोट जन्म दे पाप, पतित पापी पार कराइंदा। जिस नूं पीर पैग़म्बर मन्नदे रहे बाप, सो पिता वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम जन भगतां मेटे सर्ब संताप, संसा रोग ना कोए रखाइंदा। सच संदेसा देवे आप, आप आपणा भेव खुल्ह्‌ाइंदा। सोहँ देवे सच्चा जाप, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप जणाइंदा। साचा राह दस्से करतार, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जिस दी सोभा सुणदे रहे विच संसार, सो साहिब वेस वटाईआ। जिस दी तोबा तोबा करके करदे रहे पुकार, सो तुहमत सभदे उत्ते रिहा लाईआ। जिस नूं गोबिन्द गोबिन्द करके मन्नदे रहे बख्शणहार, सो बख्शणहारा फेरा पाईआ। जिस नूं राम राम कह कह करदे रहे निमस्कार, सो राम आपणा रूप धराईआ। जिस नूं कृष्न कृष्न कह कह मन्नदे रहे भगवान, सो भगवन आपणी धार चलाईआ। जिस दे दुआरे भगत बण भिखारी मंगदे रहे दान, सो दाता दानी फेरा पाईआ। जिस दे बण दे रहे बाल नादान, सो पिता वेख वखाईआ। उठो वेखो मार ध्यान, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, वेस अवल्लड़ा आप कराईआ। बिन कल्मयों करे परवान, बिन नबीउँ लए तराईआ। बिन कासद देवे पैग़ाम, ज़बराईल ना कोए वड्याईआ। मुरीद मुर्शद वेखे आण, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरसिख गुर सतिगुर कर परवान, पार किनारा पार कराईआ। गुरमुख गुर सतिगुर कर ध्यान, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। सन्त साजन हो मेहरवान, सति सतिवादी विच समाईआ। भगत भगवन्त वड़ गए इक्क मकान, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। छत्ती जुग होए हैरान, हरि जू की खेल वरताईआ। जिस दा लम्भया लभ्भ ना सक्या कोए निशान, सो आपणा निशाना रिहा वखाईआ। जन भगतां सेवा करे आण, बण सेवक सेव कमाईआ। जेहड़ा नामे धन्ने बणदा रिहा महिमान, सो गुरमुखां आपणे महिमान बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख खेल महान, ख़ालक ख़लक मखलूक मुखतलिफ ना खोल्हे कोए दुकान, हट्ट इक्को नाम वखाईआ।

✳ १६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह माढ़ी मुसतफ़ा ज़िला फिरोज़पुर ✳

सो पुरख निरँजण तेरी वड़याई, गुर अवतार रहे जस गाईआ। हरि पुरख निरँजण तेरी शहिनशाही, पीर पैग़म्बर सीस झुकाईआ। एक ओंकार तेरी सलाही, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। आदि निरँजण तेरी रुशनाई, दो जहानां नूर वखाईआ। श्री भगवान तेरी बेपरवाही, तेरा अन्त कोए ना आईआ। अबिनाशी करते तेरी जुदाई, निरगुण झल्ली कदे ना जाईआ। पारब्रह्म तेरी कुड़माई, लख चुरासी नाता जोड़ जुड़ाईआ। वसणहारा साचे थाईं, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा साचा वर, तेरी सरन मिले सरनाईआ। तेरी सरन इक्को तक्क, ओट हरि रखाईआ। जुग चौकड़ी गए थक्क, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स दस्स, अक्खर अक्खर करी पढ़ाईआ। अमृत आत्म दे दे रस, रस रसना मुख चुआईआ। तेरा गा गा आए जस, जस वेद पुराण सुणाईआ। इक्को तक्कदे रहे आस, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। घर जोत करे प्रकाश, निरगुण नूर रुशनाईआ। दो जहानां वेखे खेल तमाश, पृथ्मी आकाश फेरा पाईआ। साचे मन्दिर पावे रास, गोपी काहन नचाईआ। लख चुरासी अंदर करे वास, आपणा खेड़ा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी इक्को ओट तकाईआ। आदि जुगादी इक्को ओट, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। जुगा जुगन्तर साचा कोट, तन मन्दिर दए सुहाईआ। सदा सद घट निरंतर जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। नाउँ निधाना मन्त्र देणा पिता पूत, पूत सपूता झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। सो पुरख निरँजण तेरी कार, जुग जुग मात कराईआ। जुग चौकड़ी सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। नाउँ रख गुर अवतार, पीर पैग़म्बर तन हंढाईआ। बोध अगाध शब्द जैकार, धुन राग अनाद सुणाईआ। कागद कलम कर प्यार, लेखा शाही संग मिलाईआ। रसना जिह्वा बोल जैकार, बत्ती दन्द सिफ्त सलाहीआ। मन मति दए अधार, बुद्धि एका गुण समझाईआ। नेत्र लोचण खोल्ह किवाड़, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। घर मन्दिर पावे सार, गृह आपणा पर्दा लाहीआ। तेरा जल्वा नूर दीदार, निज आत्म इक्क रुशनाईआ। तेरी ब्रह्म किरन पसार, किरन किरन वेख वखाईआ। तेरा चरन सच दुआर, दुआरका बैठी डेरा ढाहीआ। तेरा नाउँ नर निरँकार, नर नरायण तेरी वड्याईआ। तेरा बंक अगम्म अपार, अगम्म अथाह तेरी शहिनशाहीआ। तेरा हुक्म सच वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निउँ निउँ झुक झुक करदे रहे निमस्कार, सीस जगदीस चरना हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

७६१
१२

वर, मिले सच्ची सरन सरनाईआ। सरन सरनाई दे स्वामी, दोए जोड़ मंग मंगाया। आदि जुगादि अन्तरजामी, अन्तरगत आपणे हथ्थ रखाया। करे खेल दो जहानी, दोए दोए रूप धराया। निरगुण सरगुण पढ़ाए अकथ कहाणी, आप आपणा नाउँ जणाया। सिफ्त सलाही साची बाणी, बाण निराला तीर चलाया। एका पद पद निरबाणी, निर्भय आपणा घर वसाया। एका अमृत ठंडा पाणी, रस एका एक वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच्चा एको मंग मंगाया। दर सच्चा दस्से भगवान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग आउँदे रहे विच जहान, दर दर तेरी सेव कमाईआ। जगत अक्खर दे दे ज्ञान, गुण गा गा खुशी मनाईआ। मार्ग मग पन्थ दस्स जहान, बण रैहबर राह चलाईआ। इष्ट दृष्ट दे दे दान, देवत सुर सुर समझाईआ। आत्म परमात्म खेल महान, महिमा अकथ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जगत द्वैती दे मिटाईआ। जगत द्वैती तेरी धार, तोहे तोहे वड्याईआ। आदि शक्ति नूर उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। चतुर्भुज खेल अपार, दूसर चले ना कोए चतुराईआ। अष्टभुज नौजवान, शस्त्र बस्त्र तन सज़ाईआ। पीर पैग़म्बर कर ख़बरदार, साची ख़बर आप सुणाईआ। एका मसला कर त्यार, बण मसीह करें पढ़ाईआ। तसबी मणका दे अधार, उँगली उँगली सेव कमाईआ। जन का रूप सक्या ना कोए विचार, तन तन का बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा पन्ध कटाईआ। जगत विछोड़ा कट पन्ध, प्रभ सच्चे सच गुसाँईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा अन्ध, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। हिन्दू मुस्लिम गायन एका छन्द, बन्द छन्द नाल मिलाया। दीन मज़्ह्ब होई कंध, पर्दा सके ना कोए उठाया। ज़ात पात पाया फंध, जीव जंत ना सके तुड़ाया। कूड़ी क्रिया खाण पीण खाधा गंद, अमृत रस ना किसे चखाया। भख भोज कीता बत्ती दन्द, लेंज फेंज रूप ना कोए वटाया। तुध बिन देवे ना कोए साचा अनन्द, अनन्द घर किसे ना पाया। दीन मज़्ह्ब गुर अवतार वंडां गए वंड, तेरी हद्द पार ना कोए कराया। दरोही खुदाए अन्तिम नंगी होई कंड, पर्दा सीस ना कोए टिकाया। लेखा लिखणो कलम होई बन्द, तेरा लेख ना किसे समझाया। अन्तिम डिगे डूँघी खड्ड, बांहों फड़ बाहर ना कोए कढाया। कर किरपा दे इक्क अनन्द, घर घर विच हो सहाया। असीं रल मिल गाईए तेरा छन्द, दूजा राग ना कोए अल्ह़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए सरनाया। इक्को गीत तेरा गाईए, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को मन्दिर सोभा पाईए, घर बह बह खुशी मनाईआ। इक्को कन्त सेज हंढाईए, पीर पैग़म्बर देण सलाहीआ। इक्को वस्त मंग मंगाईए, ख़ाली झोली दे भराईआ। इक्को रंगण

रंग चढ़ाईए, उतर कदे ना जाईआ। इक्को मृदंग सच वजाईए, मृदंगा तेरे नाउँ वड्याईआ। इक्क तुरंग सर्ब दृढ़ाईए, दो जहानां होए सहाईआ। इक्को अनन्द साचा पाईए, दूसर रस ना लागे राईआ। साहिब शब्द तेरा जस गाईए, जस वेद पुराण ना सके गाईआ। पिछली वंड दूर कराईए, वंडी वंड रहे ना राईआ। आपणी करनी तेरे चरनां हेठ दबाईए, चरन सरन मिले सरनाईआ। तोबा तोबा कर के भुल्ल बख्शाईए, बख्शणहार सर्ब गुनाहीआ। सर्ब घट रमिआ राम कह कह शुकर मनाईए, राम दसरथ बेटा निउँ निउँ लागे पाईआ। साचा काहन कन्त कन्तूहल बसन बनवारी इक्क हंढाईए, कान्हा कृष्ना दोए दोए जोड़ पए सरनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बण दरवेश रसना जिह्वा कहिण तेरी अलख जगाईए, अलख अलख अलख तेरी वड्याईआ। मुहम्मद कहे सजदा सीस झुकाईए, निउँ निउँ आपणा माण मिटाईआ। शरअ शरीअत लहिणा देणा अन्त चुकाईए, शरअ शरारत कम्म किसे ना आईआ। ग़फ्लत आलस निंद्रा दे गवाईए, उल्फ़त चले ना कोए वड्याईआ। मशरक मग़रब रूप वटाईए, दक्खण पहाड़ दिसे सच्चा माहीआ। बे सबर प्याला जगत तुड़ाईए, अन्त आबरू कोए नज़र ना आईआ। काया माटी पंज तत्त कबरस्तान कबर दबाईए, मकबरा जगत सुहाईआ। निरगुण हो के निरगुण पाईए, तत्त बिना हरि तत्त मिल जाईए, परवरदिगार इक्क मन्नाईए, रहिमत रहिमान आप कमाईआ। चौथे युग भुल्ल बख्शाईए, ढह
 ढह चरनी मस्तक लाईए, ख़ाकी ख़ाक तन रमाईआ। साची सिख्या मंग मंगाईए, एका मन्त्र साचा गाईए, पुरख अबिनाशी ७६२
इक्क रज़ाईए, प्रभ पूरी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सच
 तेरी सरनाईआ। सच सरनाई जिस दर देवे, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। पुरख अबिनाशी अलख अभेवे, भेव अभेद खुल्हाइंदा। १२
आदि जुगादी वड देवी देवे, देवत सुर सीस निवाइंदा। इक्को अमृत इक्को रस इक्क वखाए साचा मेवे, फल इक्को इक्क प्रगटाइंदा। लख चुरासी इक्को रसना इक्को जिहवे, एका पंज तत्त माटी काया ख़ाक रखाइंदा। इक्को पुरख इक्को नार इक्को कन्त घर एका सेवे, सेवक सेवा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच दुआरा जिस जन पाउणा, हरि एका एक सुणाईआ। आप आपणा माण गवाउणा, अभिमान रहे ना राईआ। दीन मज़्हब ना कोए जणाउणा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क मनाउणा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। हउमें हंगता गढ़ ढाउणा, दूई द्वैती मोह चुकाईआ। साचा सज्जण इक्क मनाउणा, जिस मिल्या विछड़ ना जाईआ। चरन ध्यान इक्क लगाउणा, हरि चरन वडी वड्याईआ। नेत्र नैण इक्क खुलाउणा, ख़ालक खलक रिहा समझाईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। उच्च महल्ले डेरा लाउणा, अटल्ल करे रुशनाईआ। तख्त निवासी

तख्त सुहाउणा, शाहो भूप सच्चे शहिनशाहीआ। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाउणा, सच संदेसा एका गाईआ। सोहँ ढोला सब ने गाउणा, एथे ओथे दो जहान करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सोहँ ढोला गाईए गीत, गुर अवतार रहे सुणाईआ। नाता छड्डीए मन्दिर मसीत, आपणा हक़ ना कोए रखाईआ। सेवा करीए बण बण कीट, कीट कीटां रूप समाईआ। बिन प्यार ना निभे प्रीत, प्रीत प्यार बिना नज़र ना आईआ। तुध बिन कोए करे ना ठांडे सीत, सांतक सति ना कोए वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखी जगत रीत, रीती तेरी खेल वड्याईआ। दीन मज़्ब कौम ज़ात पात चक्की पीसण ल्या पीस, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। कलमा कायनात जगत हदीस, नबी रसूल कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरा ढोला गाईआ। तेरा ढोला इक्को गाउणा, गा गा शुकर मनाईआ। आप आपणा पर्दा लौहणा, नूरो नूर कर रुशनाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े नाल मिलाउणा, मुहम्मद दूर दुराडा बांहां रिहा उठाईआ। सब दा पन्ध आप मुकाउणा, भुल्ले फिरदे पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मिले तेरी सरनाईआ। साचा मार्ग हौली हौली दस्सां, हरि हरि जू आप जणाइंदा। मुहम्मद पहलों वेख तैनूं हस्सां, हस्स हस्स आपणी ख़ुशी मनाइंदा। चौदां तबक फिर फिर नट्ठां, नट्ठ नट्ठ पन्ध मुकाइंदा। उम्मत उम्मती मार सट्टां, सिर सिर ठोकर लाइंदा। लब दाढ़ी तेरी कटां, अंग अंग कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा ढोला दस्सां आप, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। पिछला छड्डो सारे जाप, अगली सुणो इक्क पढ़ाईआ। पिछली कोए ना करे बात, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। वक्खरी वक्खरी आपणी छड्डो ज़ात, जोती जाता एका रंग वखाईआ। अन्तिम लेखा लिख्या कलम दवात, शाही शाह ना कोए बणाईआ। चौदस चौदां अन्धेरी रात, तबक सबक ना कोए पढ़ाईआ। अल्फ़ ये ना पटी पढ़े कोए जमात, लेखा लिख्त ना कोए रखाईआ। करे खेल साख्यात, सुरख़रू सब नूं दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ढोला दए जणाईआ। साचा ढोला सोहँ धार, गुर अवतार रूप वखाईआ। पीर पैग़म्बर इक्क आधार, घर साचे मेल मिलाईआ। लहिणा देणा चुक्के जुग चार, चौकड़ी लेखा रिहा मुकाईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, सरगुण झोली आपणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सोहला सो पुरख निरँजण इक्क सुणाईआ। सोहला सोहणा सोहणा रंग, रंग रंगीला इक्क वखाईआ। सचखण्ड दवारा सच पलँग, सति सतिवादी सेज हंढाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अगम्म अगम्मड़ा इक्क मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाईआ। निरगुण सरगुण देवे संग, सूरा सरबंग सहिज सुखदाईआ।

पिछली करनी चौदां चौदां करे भंग, भावी आपणे हथ्थ रखाईआ। पीर पैग़म्बर गाउणा इक्को छन्द, शहिनशाह समझाईआ। देवणहार साहिब बख्शंद, बख्शश आपणी रिहा कराईआ। निरगुण आप निरगुण छन्द, गाए सुणाए बिन बत्ती दन्द, वंड वंडाए गृह सचखण्ड, सच साची बणत बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्क अनन्द, अनन्द आपणा रस रखाईआ।

सो पुरख प्रभ आपे आप, आप आपणा खेल खिलाइंदा। सो पुरख प्रभ माई बाप, दूसर अवर ना कोए वड्याइंदा। सो पुरख उत्तम ज़ात, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। सो पुरख वड प्रताप, वड प्रतापी आपणा नाउँ धराइंदा। सो पुरख खेले खेल तमाश, खेलणहारा खेल रचाइंदा। सो पुरख देवणहारा दात, दाता दानी आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब आपणी कल आप जणाइंदा। सो साहिब सच्चा कुलवन्ता, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। आप बणाए आपणी बणता, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। आप सुहाए साचा धाम सुहंता, सचखण्ड सच्चे वसे सच्चा माहीआ। आपे नार आपे कन्ता, कन्त कन्तूहल आपणी रंगली सेज हंढाईआ। सो साहिब सदा बेअन्ता, बेअन्त आपणी धार आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो एकँकार इक्क अख्वाईआ। सो दयाल सो कृपाल, सो आपणी कल वरताइंदा। सो वस्त सो धन माल, सो वणजारा हट्ट चलाइंदा। सो मन्दिर सो धर्मसाल, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। सो नूर सो जोत जुम्माल, नूर नुराना डगमगाइंदा। सो वसे सच्ची धर्मसाल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप रखाइंदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरवाना, मेहरवान दया कमाईआ। आपणा देवे आपे दाना, हरि पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। हरि पुरख निरँजण कर कर खेल महाना, एकँकारा वेस वटाईआ। एकँकारा नूर नुराना, आदि निरँजण भेव चुकाईआ। आदि निरँजण वड बलवाना, अबिनाशी करता पर्दा लाहीआ। अबिनाशी करता शाह सुल्ताना, श्री भगवान दए वड्याईआ। श्री भगवान राज राजाना, साचे तख्त बहे सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हुक्मराना, साचा हुक्म आप जणाईआ। हुक्म हाकम कर परवाना, पारब्रह्म प्रभ सीस निवाईआ। करे खेल सो महाना, आपणी इच्छया आप जणाईआ। मन्दिर महल्ल इक्क मकाना, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो आपणा पर्दा दए चुकाईआ। सो साहिब सूरबीर, एका एका अख्वाइंदा। ना कोई बस्त्र ना कोई चीर, तन ख़ाक ना कोए हंढाइंदा। ना कोई शरअ ना ज़ंजीर, शरीअत रूप ना

७६४ १२

कोए वटाइंदा। ना कोई गुर अवतार ना कोई पीर, पैग़म्बर संग ना कोए रखाइंदा। मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला गहर गम्भीर, आपणा नाउँ धराइंदा। सच मुकामे चोटी चढ़ बैठा अख़ीर, आख़र आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो आपणा वेस वटाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, निरगुण निराकार आप कराईआ। अजूनी रहित हो उज्यारा, नूर नुराना नूर धराईआ। अनभउ प्रकाश खेल आपारा, भेव कोए ना राईआ। करे कराए साची कारा, करता पुरख वड वड्याईआ। नारी कन्त बण करे प्यारा, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। निरगुण अंदर निरगुण धारा, निरगुण निरगुण आप टिकाईआ। निरगुण जननी जन बणे अगम्म अपारा, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण जणे सुत दुलारा, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। शब्दी नाउँ करे प्यारा, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। सो पुरख निरँजण कर पसारा, शब्दी धार अगम्म अपारा, निरगुण विच्चों निरगुण होया उज्यारा, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। सो पुरख निरँजण माई बाप, आदि आदि आदि अख्वाइंदा। शब्द सुत बण प्रताप, घर साचे सोभा पाइंदा। हं हं दिती दात, ब्रह्म ब्रह्म वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ धार एकँकार, निरगुण निरगुण सच विहार, सरगुण देवे वस्त अपार, दोहां विचोला बण मेहरवान, करे खेल दो जहान, निरगुण सरगुण झुलाए निशान, बोध अगाधा इक्क ज्ञान, हँ ब्रह्म कर परवान, सो पुरख निरँजण गुण निधान, आत्म परमात्म परम पुरख पुरख आपणा रंग वखाईआ। आपे हं आपे सो, सो आपणे विच समाईआ। आपणा बीज आपे बो, आपे वेख वखाईआ। आपणे जिहा आपे हो, निरगुण निरगुण खुशी मनाईआ। आपे देवणहारा लो, प्रकाश प्रकाश नाल वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ धार सो अपार, हँ ब्रह्म इक्क आधार, नेम कर्म वसे बाहर, कर्म कांड ना कोए वीचार, जोती जाता मीत मुरार, पुरख बिधाता पावे सार, अंदर बाहर गुपत ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर निरगुण नूर, अनादी तूर सर्ब कला भरपूर, सो पद ना कोई जाणे हद्द, हँ ब्रह्म दर दुआरे सद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका दूआ दूआ एका, एकँकारा निराकारा, निरगुण धारा सरगुण पसारा, ईश जीव जगदीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ रंग सेज पलँग, आत्म अनन्द परमानंद निरगुण चन्द खेल सूरे सरबंग, मेल मिलावा सचखण्ड, वेखणहारा कोट ब्रह्मण्ड, वसणहारा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पावे बंध, सो बन्दीखाने विच कदे ना आईआ। सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, ऊँचो ऊँच अख्वाइंदा। हँ ब्रह्म दे सलाह पारब्रह्म पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म कर निकाह, जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। आसण सिँघासण डेरा ला, पुरख अबिनाशण सोभा पाइंदा। अंदर वड़ वड़ मेल मिला, डूँघी कंदर खेल खिला, रंग रंगीला

आपणा रंग चढ़ाइंदा। गुर चेला रूप वटा, सोहँ ढोला आपे गा, शब्द अमोला झोली पा, तोला बणे बेपरवाह, नवां निरोआ इक्क इकल्ला, एक ओंकारा आपणी कार कराइंदा। आदि जुगादी सोहँ सो, सो पुरख निरँजण खेल कराईआ। एका दूआ आपे हो, दोए दोए एका रूप समाईआ। एका लै के आए ढोआ ढो, दूआ आपणी झोली पाईआ। करे खेल प्रभ साचा सो, आपणी सो हँ ब्रह्म सुणाईआ। हँ ब्रह्म आपे हो, घट घट रिहा समाईआ। अमृत झिरना निझर चो, रस रसीआ रस चखाईआ। बिन हरिभगत दूसर जाणे ना को, सो जाणे जिस मिल्या सो, अंदर बाहर दुरमति मैल धो, अमृत आत्म रस निझर मुख चो, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड करे प्रकाश लो, सूरज चन्द वेख वेख रहे रो, सो पुरख निरँजण तुहाढ्ढे जीआ एका ढोआ देवे ढो, दिती वस्त ना सके कोई खोह, हरि का नाम वड भण्डार अग्गे हथ्थ पा कोई ना सके टोह, कोटन कोटि दूर दुराडे मंगण प्रभ चरन सके ना कोई छोह, कर किरपा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हं स्त्री कराए सच्चा मोह, मोह मुहब्बत इक्क वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप जीव जंत बिन परमात्म आत्म रही रो, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जिस गुरमुख रातीं सुत्तयां आपणी दे के जाए सो, सो गुरमुख मिल मिल खुशी मनाईआ। हं हं आपणा आप खोह, खोह खोह सतिगुर चरना भेंट चढ़ाईआ। दुःख दर्द दुःख भञ्जण अग्गे दस्से रो, तेरा विछोड़ा जुग झल्लया ना जाईआ। लख चुरासी अंदर फड़ फड़ मैनूं दिता कोह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता जूठ झूठ लोभ जगत छुरीआं कढ्ढ कढ्ढ मेरा अंग अंग रहे कटाईआ। कर किरपा मेरी दुरमति मैल धो, सो पुरख निरँजण देवे वड वड्याईआ। गुरमुखां जिहा आपे हो, भगतां अंदर वड़ जाए सो, सन्तां लहिणा चुकाए त्रै लोअ, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार किनारा आपणा डेरा लाईआ।

✳ १६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी नाज़र सिंघ, भाग सिंघ दे गृह माढ़ी मुसतफा ज़िला फिरोज़पुर ✳

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शाह पातशाह आप अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण राज राजान, भूपत भूप नाउँ धराइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता नौजवान, बिरध बाल ना रूप धराइंदा। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, आपणा मेला आप मिलाइंदा। करे खेल खेल महान, खेलणहारा नज़र ना आइंदा। आपणी इच्छया कर परवान, भिच्छया झोली आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साची भिच्छया

हरि निरँकारा, एका एक रखाईआ। आदि आदि कर पसारा, रचना रच रच वेखे बेपरवाहीआ। महल अटल उच्च मनारा, सचखण्ड दवार दए सुहाईआ। दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह शाह शाह श्री भगवान, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। तख्त निवासी नौजवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। धुरदरगाही धुर फ़रमाण, धुर दरबारी आप जणाइंदा। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। दर दरवेश बण दरबान, अलख अलखणा आपणी अलख जगाइंदा। देवणहारा साचा दान, दाता दानी दयावान आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी हरि करतार, आदि जुगादि कराईआ। निरगुण निरगुण खेल अपार, अपरम्पर वेख वखाईआ। वसणहारा धाम न्यार, निहचल आसण लाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जैकार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला, एक ओंकारा हुक्म अल्हाइंदा। दीपक जोत प्रकाश प्रकाश आपे रल्ला, नूर नूर नूर सुहाइंदा। सति सतिवादी आदि जुगादी निराकार आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू एका गंढु बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची खेल कराइंदा। सचखण्ड साची खेल करतार, हरि करता आप कराईआ। वेखे विगसे वेखणहार, वेखणहारा बेपरवाहीआ। लेखा लिखे धुर दरबार, कलम शाही ना कोए रखाईआ। सज्जण मीत ना कोए मुरार, संगी नज़र कोए ना आईआ। गुर पीर ना कोए अवतार, पैग़म्बर रूप ना कोए धराईआ। तत्तव तत्त ना कोए पसार, तत्त वेता सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा एकँकारा, निर्मल दीआ बाती कर उज्यारा, नूरो नूर नूर दरसाईआ। नूर नुराना एका एक, एक एक वड्याईआ। निज घर आपणा आप आपे वेख, पेख पेख खुशी मनाईआ। ना कोई रूप रंग ना रेख, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर दए वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क नरेश, नर नरायण नाउँ धराईआ। निरगुण धर अवल्लड़ा भेस, सचखण्ड बैठा मुख छुपाईआ। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। सदा सुहेला रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड नवासा खेल तमाशा पुरख अबिनाशा करनी करता आपणी आप कमाईआ। करनी करता करने योग, युगती आपणे हथ्थ रखाइंदा । दरगाह साची सच संजोग, हरि संजोगी मेल मिलाइंदा। निरगुण निरगुण भोगे भोग, भस्मड़ आपणी धार वखाइंदा। नाउँ निरँकारा सच सलोक, सोहला ढोला एका गाइंदा। आपे रखे आपणी ओट, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा।

आपे वसे साचे कोट, किला बंक आप वड्याइंदा। आपे निर्मल नूर जोत, जोती जाता खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची कार, करे कराए करनेहार, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। करनहार पुरख अगम्म, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादि बेड़ा बन्न्, बण खेवट आप चलाईआ। आपे जननी आपे जन, बणे धन्न जणेदी माईआ। वसणहारा बिन छप्पर छन्न, सच महल्ले सोभा पाईआ। सुणनहारा बिन राग कन्न, नादी नाद ना कोए वजाईआ। प्रकाश करे बिन सूरज चन्न, नूरो नूर नूर धराईआ। करे खेल श्री भगवन, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। साचा हुक्म एकँकार, एका वार जणाइंदा। सचखण्ड अंदर थिर घर कर त्यार, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहइंदा। शब्दी शब्द कर उज्यार, पूत सपूता आप बहाइंदा। देवणहारा सच भण्डार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। विष्नूं विश्व कर उज्यार, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। कँवल कँवला खिल गुलज़ार, गुलशन आपणे रंग रंगाइंदा। ब्रह्मावेता पारब्रह्म ब्रह्म हो न्यार, निरगुण निरगुण वंड वंडाइंदा। सुन्न अगम्मी धुंआंधार, आप आपणा मुख छुपाइंदा। शंकर मेला हरि करतार, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रूप वटाइंदा। तिन्नां विचोला अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कराइंदा। सच संदेसा एका वार, नर नरेशा आप सुणाइंदा। नेत्र खोल्ह करे बेदार, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा एका वार सुणाइंदा। सच संदेसा साचा ढोला, एक ओंकारा आप जणाईआ। निरगुण निरगुण बदले चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। आप चुकाए पर्दा ओहला, ओहला पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड खोल्ह आप किवाड़, हरि करता खेल कराइंदा। पूत सपूता इक्क दुलार, थिर घर साचे आप बहाइंदा। वस्त अमोलक देवे थार, अतोट अतुट्ट वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, निरगुण निरगुण आपणा खेल समझाइंदा। सच संदेसा एका वार, एकँकारा आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाणा सुण बाल, हरि साचा सच जणाईआ। करे खेल दीन दयाल, दीनन आपणा राह चलाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव चले नाल नाल, आपणा संग निभाईआ। वस्त अमोलक झोली देवे डाल, त्रैगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। त्रै त्रै मेला इक्क ओंकार, एका एक कराईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, लेखा अलेख ना किसे वखाईआ। पंज तत्त इच्छया दे भण्डार, सच भण्डारा झोली पाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश कर त्यार, उजरत कोए ना मंगे माहीआ। लख चुरासी

७६८
१२

घड़न भन्नणहार, घर भाण्डे वेख वखाईआ। शब्दी सुत कर सिक्दार, सच सिक्दारी इक्क वखाईआ। दो जहानां पाउणी सार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म चलाईआ। रवि ससि सूरज चन्न कर उज्यार, मंडल मण्डप दे अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा हुक्म वड बलकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग चौकड़ी तेरी धार, तेरा रूप वखाईआ। धुर दा लेखा अपर अपार, तेरे नाम वड्याईआ। तेरा नाउँ सच जैकार, ब्रह्मावेता गाईआ। ब्रह्मावेता गाए मुख चार, चार वेद पढ़ाईआ। चारों कुण्ट करे पासार, पसर पसारी वेख वखाईआ। चारे खाणी दए अधार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज मेल मिलावा चाँईं चाँईंआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चारे जुग खोल्ह किवाड़, जुग जुग कुण्डा देवे लाहीआ। चारे वरन कर त्यार, त्रैगुण मेला जोड़ जुड़ाईआ। गुर चेला विच संसार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। शास्त्र सिमरत कर त्यार, सिमरती आपणी बूझ बुझाईआ। गुर अवतार दे अधार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। बोध अगाध अगाध बोध देवणहारा आप करतार, अगम्म अगम्मड़ा राग सुणाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा वसे बाहर, चम्म दृष्टी नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म खेल अपार, ब्रह्म पारब्रह्म सलाहीआ। ईश जीव हो त्यार, घर मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड साचा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दवारा इक्को एक, हरि साचा आप सुहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे टेक, त्रैगुण जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। पंचम पंच नेत्र नैणा पेख, पेखत पेखत खुशी मनाइंदा। निरगुण सरगुण करे हेत, नित नवित वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा शब्द दुलारे, हरि सतिगुर आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलारे, नाम हुलारा इक्क रखाईआ। लख चुरासी घाड़ण घड़ बण ठठयारे, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। नौ दर वेखे जगत किवाड़े, घर घर विच भेव छुपाईआ। लेखा जाणे अंदर बाहरे गुपत ज़ाहरे पुरख नारे, बेपरवाह साचा माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी करे खेल न्यारे, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस अनेका रूप वटाईआ। कोटन कोटि नाम कर जैकारे, जै जैकार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा शब्द सुत समझाईआ। शब्दी सुत तेरा सच विहारा, हरि हरि आप जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, लख चुरासी डेरा लाइंदा। आत्म परमात्म मीत प्यारा, मित्र प्यारा इक्क अख्वाइंदा। काया मन्दिर अंदर सच्चा दुआरा, घर घर बंक आप वड्याइंदा। अनहद नाद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक राग अल्हाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठारा, निझर झिरना ताल सुहाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। आत्म सेजा सच प्यारा, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। सुरती शब्दी शब्दी सुरती

खेल न्यारा, निराकारा आप कराइंदा। कन्त कन्तूहल करे प्यारा, वेखणहारा साची नारा, नर नरायण फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी अंदर वड़, उच्चे मन्दिर आपे चढ़, निष्अक्खर अक्खर आपे पढ़, भेव अभेदा आप जणाइंदा। साचा भेव देवे खोल्ह, हरि शब्द शब्द जणाईआ। आदि जुगादि तोले तोल, तोलणहारा इक्क अख्वाईआ। सदा सदा सद रहे अडोल, ना डोले ना कोए डुलाईआ। सरगुण अंदर निरगुण मौल, मौला आपणी खेल कराईआ। आदि करे पूरा कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जुग चौकड़ी उपर धौल, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचा खेल श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। पंज तत्त देवे सच्चा दान, गुर गुर आपणा नाउँ रखाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाण, गीत तराना इक्क सुणाइंदा। नाम निधाना मारे बाण, अणयाला तीर आप चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग वेखे आण, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वंडण आप वंडाइंदा। साची वंड जुग चार, चार वेद करे कुड़माईआ। चारे खाणी कर पसार, लख चुरासी बन्धन पाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, जै जैकार दए सुणाईआ। चारे वरन कर त्यार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आपणी गंढु वखाईआ। चारे कुण्ट कर उज्यार, चार यारी लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैग़म्बर गुर अवतार, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। साचा मार्ग गुर अवतार, हरि साचा आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वारो वार, वेस अनेका आप कराइंदा। कोई कहे राम राम अवतार, कोई कृष्न कृष्न अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। साची करनी करनेहारा, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग खोल्हे बन्द किवाड़ा, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहीआ। निरगुण सरगुण दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ईसा मूसा कर त्यारा, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाईआ। कलमा नबी कर उज्यारा, सच रसूल करे पढ़ाईआ। मुकामे हक़ परवरदिगारा, बेऐब नूर रुशनाईआ। मिहबान बीदो सांझा यारा, बी खैर या अल्ला इलाही एका नाअरा लाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, यामबीन बेपरवाहीआ। इक्क तौफीक खुदाए परवरदिगारा, दस्तगीर इक्क वड्याईआ। नौबत वज्जे सच नगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। जुग जुग धार हरि करतारा, कुदरत कादर खेल कराइंदा। ख़ालक ख़लक वेखणहारा, मखलूक आपणे रंग रंगाइंदा। देवणहारा सच भण्डारा, वस्त अतुल आप वरताइंदा। शरअ शरीअत वसे बाहरा, लाशरीक नाउँ धराइंदा। मुहम्मद नेत्र इक्क उग्घाड़ा, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। डूँघी कंदर

पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म जणाए सति, सति सतिवादी दया कमाईआ। आदि जुगादी इक्को तत्त, तत्त तत्त नाल मिलाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी चाल चलाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रगट, सरगुण देवे माण वड्याईआ। जगत निशाना नाम रख, नानक सिफ्त सालाहीआ। सचखण्ड दवारे आपे वस, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। साचा मार्ग एका दस्स, एका धंधे लाईआ। एका नूर हरि प्रकाश, दूजा नूर ना कोए धराईआ। सर्ब जीआं पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। घट घट अंदर रखे वास, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। लख चुरासी इक्क जमात, इक्को अक्खर आप पढ़ाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवे दात, नाम निधाना झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेलणहारा खेल तमाश, सच तमाशा कायनात वखाईआ। शब्द सुत वड बलवान, हरि एका गुण समझाइंदा। जुग चौकड़ी तेरा निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मन्नण तेरी आण, तेरे अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। दीन मज़्ब ज़ात पात बन्दीखाना विच जहान, बन्धन इक्को इक्क जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम गृह गृह नच्चे इक्क शैतान, शरअ आपणा नाच वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एका एक सुणाइंदा। इक्क संदेसा सुण लै सज्जण, हरि साचा सच जणाईआ। पंज तत्त भाण्डे सब दे भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। लोकमात कर कर जाण जगत मजन, पुरख अबिनाशी सेवा लाईआ। अन्तिम चोला सारे तजण, माटी ख़ाक ख़ाक समाईआ। पुरख अबिनाशी कोलों मंगण, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी देवणहारा साची रंगण, रंग एका वार रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एका एक सुणाईआ। सच संदेसा हरि जू हरि, आदि आदि सुणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जाए हर, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। दो जहानां आवे डर, भय भयानक ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खोल्हणहारा, एका वार जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेवा लाए तेई अवतारा, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाईआ। भगत भगवन्त दए सहारा, इक्क अठ्ठ जोड़ जुड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद हक़ हक़ीक़त दस्स नज़ारा, बेनज़ीर नूर दरसाईआ। एका नूर गुर अवतारा, दस्स दस्स आपणी बूझ बुझाईआ। दीन मज़्ब कर पसारा, पसर पसारी वेख वखाईआ। शास्त्र सिमरत बण लिखारा, लिख लिख लेखा दए समझाईआ। वेद कतेबां दस्सणहारा, गीता ज्ञान करे पढ़ाईआ। अञ्जील कुराना बोल नाअरा, तीस बतीसा आप सुणाईआ। ख़ाणी बाणी

वेख अखाड़ा, दो जहानां नाच नचाईआ। आपे वसणहारा सब तों बाहरा, निरगुण भेव कोए ना पाईआ। कागज़ कलम शाही ना पावे सारा, सार हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतारां देवणहार सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पीर पैग़म्बर कहिण मददगारा, बेपरवाह बेनज़ीर अकसीर आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी सांझा यारा, हर घट आपणा मेल मिलाईआ। सांझा यार एकँकार, एका एक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर पार, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम आए वार, नौ नौ चार डेरा ढाहइंदा। सचखण्ड निवासी सच लाए इक्क दरबार, साचे तख्त सोभा पाइंदा। चार युग दी वेखे कार करता कीमत आपे पाइंदा। हुक्म देवे एका वार, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। शब्दी सुत करया ख़बरदार, बेख़बर आप उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलार, सच हलूणा एका लाइंदा। गुर अवतार रहो त्यार, त्रैगुण अतीता आख सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर हो बेदार, बेदर्दी अक्ख खुल्हाइंदा। रल मिल सारे करो पुकार, हरि जू हरि हरि खेल कराइंदा। सृष्ट सबाई होई नार विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। गुर का शब्द ना कोए प्यार, गोझ ज्ञान ना कोए जणाइंदा। कलमा इलाही ना कोए आधार, साची बांग ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। साचा भेव हरि जू दस्से,
७७२ ७७२
गुर अवतार पीर पैग़म्बर रिहा जणाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरी मस्से, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। साध सन्त कूड़ी माया फसे, माया ममता मोह सके ना कोए तुड़ाईआ। मनमति गुरदर शिवदुआले मन्दिर मस्जिद मठ्ठ नच्चे, हर घट नाच नचाईआ।
१२ १२
लख चुरासी जीव जंत भाण्डे कच्चे, काची माटी कम्म किसे ना आईआ। हरि का शब्द ना कोई वाचे, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। त्रैगुण लग्गी अग्न आंचे, लग्गी अग्ग ना कोए बुझाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मारे तमाचे, मुख मुखड़ा ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उठो करो ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी भुल्ली सर्ब ज्ञान, गुर ज्ञान ना कोए मनाइंदा। नाता तुट्टा अञ्जील कुरान, गीता ज्ञान ना कोए माण, अठारां अध्याए वंड ना कोए वंडाइंदा। अठारां पुराण ना कोए माण, शास्त्र सिमरत खोल्ह दुकान, वेद वेदांत हट्टो हट्ट विकाइंदा। गुर का तीर ना कोए बाण, अणयाला निशान ना कोए लगाइंदा। घर घर वड़या जगत शैतान, शरअ शरीअत वंड वंडाइंदा। सति दिसे ना कोए निशान, नाम खण्डा ना कोए उठाइंदा। शाह सुल्तान राज राजान होए बेईमान, बेवा रूप सब बणाइंदा। कोई ना दिसे सच्चा काहन, लख चुरासी नाच नचाइंदा। नाता तुट्टा ज़िमीं असमान, धूआँधार सर्ब वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए शर्मसार, नेत्र नैण ना

कोए उठाइंदा। करोड़ तेतीसा रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करो विचार, हरि विचार विच कदे ना आइंदा। जुग चौकड़ी करदे रहे वणज वपार, वेद कतेब शास्त्र सिमरत हट्ट चलाइंदा। टिल्ले पर्बत डूँग्घी कंदर समुंद सागर वेखी गार, गहर गम्भीर नज़र किते ना आइंदा। नार कन्त ना कोए प्यार, पिता पूत ना कोए आधार, सुत जननी गोद ना कोए पसार, साची प्रीत ना कोए निभाइंदा। एका भुल्लया हरि करतार, ग़रीब निमाणयां हाहाकार, दुखियां दुःख ना कोए वंडाइंदा। जूठ झूठ विके बाजार, सच सुच्च ना कोए वपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां नेत्र खोल्ह शब्द बोल, अक्ख अक्ख नाल वखाइंदा। वेखो अक्ख अक्ख उग्घाड़, हरि साचा सच जणाईआ। कलयुग माया रही लताड़, सिर सके ना कोए उठाईआ। ग़रीब निमाणे रोवण ज़ारो ज़ार, दुखियां दुःख ना कोए गंवाईआ। साध सन्त करन विभचार, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। हरि कन्त ना कोए प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा रिहा जणाईआ। अन्तिम लेखा चौथे युग, हरि साचा सच जणाइंदा। सब दी औध रही पुग, विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो बैठा रिहा लुक, सो अन्तिम वेस वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जिस रखे आपणी कुक्ख, सो आपणा पर्दा लाहइंदा। लख चुरासी जिस उपाई माण दिवाया माणस मानुख, सो मानव रंग रंगाइंदा। दो जहानां श्री भगवाना वेखणहारा झुक झुक, त्रैभवण आपणा फेरा पाइंदा। साहिब सतिगुर इक्को गया उठ, पुरख अकाल बल धराइंदा। निरगुण ठाकर आपे तुठ्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप चुकाइंदा। साचा लेख अन्त चुकाउणा, हरि साचा आप चुकाइंदा। तेई अवतारां पन्ध मुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। भगत अठारां आपणे विच छुपाउणा, जोती जोत जोत मिलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद डेरा ढाउणा, चौदां तबकां फेरा पाइंदा। नानक गोबिन्द गोबिन्द नानक एका रंग वखाउणा, लख चुरासी रंग रंगाइंदा। त्रैगुण माया अग्न बुझाउणा, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। पंज तत्त चोला आप बदलाउणा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। साचा मार्ग इक्को लाउणा, सति सतिवादी राह वखाइंदा। ऊँचां नीचां एका घर बहाउणा, राउ रंकां भेव मिटाइंदा । साचा डंका नाम वजाउणा, दो जहानां आप सुणाइंदा। साचा मन्दिर इक्क सुहाउणा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सोहँ ढोला सब ने गाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सीस झुका, ढह पए सरनाईआ। प्रभ दाता बेपरवाह, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। जिउँ भावे तिउँ लै चला, चाल निराली तेरी मोहे भाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाउँदे रहे जगत राह, बण बण रैहबर मार्ग लाईआ। तेरी इक्को ओट तकदे गए खुदा, खुदी

तकबर दे मिटाईआ। बे सबर जाम प्याला दए प्या, हिरस हवस रहे ना राईआ। तेरे दर सजदा करीए आ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए सरनाईआ। गुर अवतार मंगण दान, प्रभ तेरे अग्गे अरज़ोईआ। तूं साहिब सच्चा मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जुग जुग मंगदे रहे तेरा नाम दान, दाता दानी आप वरताईआ। कलयुग अन्त होए हैरान, तेरा नाउँ ना कोए ध्याईआ। लिख लिख दे के आए ब्यान, जीव जंत जंत समझाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। आत्म परमात्म सच ज्ञान, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल महान, ख़ालक ख़लक रूप वखाईआ। ईश जीव इक्क निशान, जगदीस निशाना इक्क झुलाईआ। कर किरपा हो मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। हउँ याचक मंगे दान, देवणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस तकाईआ। तेरे दर तक्की आस, इक्को ओट रखाईआ। कलयुग अन्तिम बुझे प्यास, तृष्ना रहे ना राईआ। सदा सदा सद वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। हउँ बालक सेवक दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दान, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ । साची सिख्या एकँकार, कलयुग अन्त अन्त जणाइंदा। गुर पीर अवतार करो विचार, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, नर हरि आपणा वेस वटाइंदा। मूसे मिले सच्चा यार, नूरी जल्वा नूर वखाइंदा। ईसा देवे ईद दीदार, दीद दीद नाल रखाइंदा। मुहम्मद लेखा चुक्के चौदां तबक खोल्ह किवाड़, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहइंदा। अल्ला राणी वेख शंगार, मुख नक़ाब पर्दा आप उठाइंदा। वेस वटाए परवरदिगार, पर्दा पर्दानसीं ना कोए जणाइंदा। हक़ हक़ीक़त वेखे आण, शरीकत सब दी आप गवाइंदा। चरन सरन सरन चरन हरि मंगे इक्को दान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। चार यारी होई बेईमान, चौथे युग कम्म कोए ना आइंदा। चौधवीं सदी फ़ातया पढ़ना आण, फ़तेह डंका तेरे हथ्थ सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, घर साचा मोहे भाइंदा। साचा घर नानक गोबिन्द धार, राम राम राम समाईआ। कृष्न कृष्न कृष्न उज्यार, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए वड्याईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, जै जैकारा नाद सुणाईआ। पुरीआं लोआं दए हुलार, हुजरा एका इक्क वसाईआ। सच मेहराबे वसे साचा यार, नूरी जल्वा नूर धराईआ। खोल्हणहारा आप किवाड़, थिर घर वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारे कर पसार, परम पुरख आपणी कार कराईआ। कलयुग अन्तिम करे खुआर, जगत खुआरी दए मिटाईआ। सति सतिवादी बन्न्हे धार, साचा राह चलाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्ताना करे इक्क प्यार, दूसर

वंड ना कोए वंडाईआ। वरन बरन मारे मार, अठारां बरन धीर ना कोए धराईआ। रसना जिह्वा एका वार, गीत गोबिन्द दए समझाईआ। सोहँ ढोला जै जैकार, जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, कलयुग अन्तिम आप कराइंदा। सतिजुग दी साची धारा, सति पुरख निरँजण आप समझाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क विहारा, एका धन्दे लाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, इष्ट गुरदेव इक्क प्रगटाइंदा। एका रसना इक्क जैकारा, एका नाद सुणाइंदा। एका मित्र मीत प्यारा, पीआ प्रीतम इक्क अख्वाइंदा। एका आवे जावे वारो वारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी अन्तिम कल, कल काती आप कराईआ। लख चुरासी खेल वल छल, अछल छल धारी भेव कोए ना राईआ। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा डेरा लाईआ। जोती शब्दी आपे रल, लोक परलोक फेरा पाईआ। सच संदेसा एका घल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। अन्तिम मेटे सब दा सल, सुलाह एका वार कराईआ। सरन सरनाई आउणा चल, सच संदेसा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क वखाईआ। सच दुआरा लोकमात, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। निरगुण खोल्हे आपणा ताक, बन्द ताकी आप खुल्हाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरे करे भविख्त वाक, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरिजन वेखे सज्जण साक, सगला बंध पुवाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पाकी पाक, पत्तत पुनीत आप तराइंदा। अन्त उतारे साचे घाट, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी देवे दात, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई वखाए इक्क जमात, एका अक्खर आख़र आप पढ़ाइंदा। पारब्रह्म दी इक्को ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। जूठ झूठ ऊँच नीच माया ममता सुट्टे डूँघे खात, फड़ बांहों बाहर ना कोए कढाइंदा। कोई ना करे किसे घात, प्रेम प्यार इक्क वखाइंदा। देवणहारा आप नजात, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा आप चुकाइंदा। कलयुग लेखा चुक्के चूक, सो पुरख निरँजण आप चुकाईआ। चौथा युग सोए घूक, तिन्न युग ना कोए उठाईआ। वेखणहारा छोटा पूत, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दए चुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए अन्त, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी नाच नचाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को कन्त, नर हरि नरायण आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा।

साची करनी पुरख समरथ, कलयुग अन्त आप कराईआ। सृष्ट सबाई चलाए एका रथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म पाए नथ्थ, मन वासना दए खपाईआ। मति मतवाली ना पए नच्च, नटुआ नट स्वांग ना कोए रचाईआ। बुध बिबेकी सत्थर पए घत्त, सत्थर एका यार हंढाईआ। नव नौ चार मार्ग साचा दस्स, चार चार करे पढ़ाईआ। ऊँचां नीचां अंदर वस, राउ रंकां माण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क चलाईआ। साचा राह चले इक्क, इक्क इकल्ला आप चलाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ लेखा लिख, लिख लिख आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दर मंगण भिख, वेला अन्त सर्ब समझाइंदा। लहिणा देणा चुकणा बीस बीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप समझाइंदा। सच संदेसा बीस बीस, हरि सतिगुर आप जणाईआ। साचा लेखा इकीस इकीस, एका इक्की देवे पाईआ। साचा हुक्म नाम हदीस, हरिजन हरि जू दए पढ़ाईआ। साचा छत्र झुले प्रभ सीस, राज राजान कोए रहिण ना पाईआ। दीन मज़्हब ख़ाली खीस, माया नाच ना कोए नचाईआ। लेखा जाणे राग छतीस, छत्ती युग वंड वंडाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैग़म्बर करदे गए उडीक, लिख लिख लेखा जगत समझाईआ। सो साहिब प्रगट होया लाशरीक, शिरक्त सब दी दए गंवाईआ। जगत अन्धेरा मिटे तारीक, चन्द चांदनी इक्क रुशनाईआ। एका माण रखाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। बिन मंग्गयां देवे भीख, साची भिच्छया झोली पाईआ। चार वरनां करे इक्को रीझ, मुख मुखड़ा मात सुहाईआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर नज़री आए खड़ा विच दहिलीज़, दहि दिशा आपणा नूर वखाईआ। किसे उत्ते ना जाए पतीज, निरगुण आपणा बल प्रगटाईआ। सतिजुग बीजे साचा बीज, गुरमुख फुलवाड़ी आप लगाईआ। अमृत मेघ देवे सीज, सिंच क्यारी हरी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह मार्ग दस्से, दहि दिशा माण वड्याईआ। सचखण्ड दवारे चढ़ चढ़ हस्से, हँस मुख सालाहीआ। कलयुग मिटे अन्धेरी मस्से, सतिजुग सच नूर रुशनाईआ। घट घट अंदर हरि जू वसे, ख़ाली कोए रहिण ना पाईआ। जगत तृष्ना जग चों नट्ठे, त्रैगुण नाता दए तुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर इकट्ठे, सब दी सुलाह दए कराईआ। ना कोई पूजे पत्थर वट्टे, पाहन सेव ना कोए कमाईआ। काग़ज़ां कोलों लाहा कोई ना खटे, खट्टी साची दए समझाईआ। पंज वक्त निमाज़ कोई ना दस्से, वुज़ू बांग ना कोए कराईआ। शरअ शरीअत दीन मज़्हब फड़ फड़ चाढ़े फट्टे, गल विच फाँसी एका पाईआ। दुरमति मैल दो जहानां निरगुण आपे कटे, बिमल रूप रूप दरसाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद संग चार यार चरनी ढट्ठे, ढह ढह मंगण सरनाईआ। अल्ला राणी रोवे मेरी पत्त कोए ना रखे, खुल्ही मींढी रही वखाईआ। मैहन्दी सिर

७७७ १२

कोई ना झस्से, रंग गुलाल ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी एका होड़ा लाया उपर सस्से, निरगुण सरगुण रूप वखाईआ। शाहसवारा साचे असव तंग एका कसे, सोलां कलीआं आसण पाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चौदां तबकां चरनां हेठा झस्से, उपर आपणा भार रखाईआ। बौहड़ी बौहड़ी कर पुकार तोबा तोबा करदे आउण नट्ठे, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मुल्ला शेख़ दाढ़ी रत्ते, । पाणी दिसे किसे ना हुक्के, हक़ हक़ीक़त बैठी मुख छुपाईआ। मक्के काअबे कोई ना पुच्छे, सन्तुशटी फेर ना कोए जणाईआ। दरगाह साची साहिब सच्चा ना रुस्से, रुस्स जाए सर्ब लोकाईआ। पाक रसूल होए ना गुस्से, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव आप जणाईआ। पीर पैग़म्बर मारन नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाया। परवरदिगार तेरा दुआरा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। कलयुग आया अन्त किनारा, कन्नी सके ना कोए तुड़ाया। उम्मत उम्मती मारे मारा, मर्द मर्दाना दए सज़ाया। चारों कुण्ट धूआँधारा, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाया। ईसा मूसा मुहम्मद करे की विचारा, अद्धविचकारे डेरा लाया। राह तक्के मीत मुरारा, नेत्र नैण नैण तरसाया। अमाम मैहन्दी अन्तिम आवे सच्चा लाड़ा, आपणा रूप वटाया। उम्मत इक्क दूजे नाल खहिन्दी , खहि खहि आपणा माण गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वार, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। सच स्वांगी वरते स्वांग, भेव कोए ना आइंदा। चारों कुण्ट चढ़ाए कांग, जगत अन्धेरा एका छाइंदा। सच ना मंगे कोई मांग, जूठी झूठी वस्त घर घर आप वखाइंदा। प्रभ मिलण दी कोई ना रखे तांग, आस आस ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आप चुकाइंदा। अन्तिम लेखा चुकाए आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत नाता जोड़ जुड़ाईआ। नव नौ दस्से एका पाठ, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। जीव जंत इक्को ज़ात, आत्म परमात्म दए समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बन्ने नात, साक सज्जण सैण ना कोए वड्याईआ। सोहँ ढोला साची गाथ, रसना जिह्वा रस चखाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार रखाईआ। सतिजुग महिमा जणाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान, करे आपणे वस, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग दए साचा दान, आत्म परमात्म इक्क ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म करे परवान, घर साचे साचा मेल मिलाईआ।

✳ २० भाद्रों २०१६ बिक्रमी नछत्तर सिँघ दे गृह पंज गराईं ज़िला फिरोज़पुर ✳

सो पुरख निरँजण साचा दाता, हरि आदि जुगादि अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण पिता माता, निरगुण निराकार रूप प्रगटाइंदा। एक ओंकारा सज्जण साका, सदा सुहेला संग निभाइंदा। आदि निरँजण नूर प्रकाशा, जोती जोत डगमगाइंदा। श्री भगवान सचखण्ड दवारे करे निवासा, महल अटल इक्क सुहाइंदा। अबिनाशी करता शाहो भूप शाह सबासा, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आदि जुगादी इक्क भरवासा, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, एकँकारा सिफ्त सालाहीआ। आदि निरँजण नूर महान, अबिनाशी करता जोत रुशनाईआ। श्री भगवान सच निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। आपणी इच्छया देवे दान, साची भिच्छया आप वरताईआ। महल अटल उच्च मकान, मेहरवान आप सुहाईआ। सचखण्ड दवारा कर परवान, परम पुरख सोभा पाईआ। शाहो भूप बण राज राजान, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमान, सति सतिवादी आप जणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। साची करनी हरि करतारा, आदि जुगादि कराइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। थिर घर खोल्हणहार किवाड़ा, घर घर विच प्रगटाइंदा। अनभउ प्रकाश पुरख अबिनाश निर्मल दीआ कर उज्यारा, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी धार रखाइंदा। शब्दी शब्द नाम जैकारा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल एकँकारा, एका एक कराईआ। आदि पुरख हरि कर पसारा, परम पुरख वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड अंदर थिर घर दुआरा, धुर दरबारी आप खुल्हाईआ। पूत सपूता कर प्यारा, सुत शब्दी विच टिकाईआ। सच संदेसा एका वारा, एकँकार सुणाईआ। तेरा मेरा मेरा तेरा इक्क दुआरा, दूजे दर ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादि सच प्यारा, प्रीतीवान प्रीती सच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी करनेयोग, हरि साचा खेल कराइंदा। नाउँ निरँकारा इक्क सलोक, साचा सोहला आपे गाइंदा। सति सतिवादी एका रखाए साची ओट, समरथ सिर आपणे हथ्थ आप टिकाइंदा। महिमा जाणे आप अकथ, अकथ अकथ आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची कार आप कराइंदा। साची कार श्री भगवान, आदि पुरख आप कमाईआ।

देवणहारा साचा दान, वस्त अमोल इक्क वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। सच संदेसा देवे आण, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। लख चुरासी कर प्रधान, प्रधानगी एका हथ्थ फड़ाईआ। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह आपणा नाउँ प्रगटाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रच रच खेले खेल महान, रवि ससि सूरज चन्न चन्न रुशनाईआ। हुक्मे अंदर वेखे मार ध्यान, निरगुण निराकार निरवैर आपणी कल धराईआ। अजूनी रहित पावे सार, लख चुरासी जून उपाईआ। सच संदेसा देवे एका वार, विष्न ब्रह्मा शिव करे शनवाईआ। नाम निधाना एकँकार, इक्क इकल्ला आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या साचा मीत, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। त्रै त्रै गाउणा इका गीत, गीत गोबिन्द सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्क अतीत, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। सरन सरनाई सच प्रीत, चरन दुआरा इक्क वखाइंदा। जुग चौकड़ी जाणे रीत, एका बन्धन बंध बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सुण संदेसा श्री भगवान, विष्नूं चरनी सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। प्रभ वसे सचखण्ड सच्चे मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। किरपा कर गुण निधान, हउँ बालक खाली झोली अग्गे डाहीआ। एका देणा सच्चा दान, दाता दानी बण वरताईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। नेत्र लोचन दरस अन्तर अन्तर पीण खाण, तृष्ना भुख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या पारब्रह्म, प्रभ एका एका जणाइंदा। निहकर्मी करे साचा कर्म, कर्म कांड ना कोए रखाइंदा। आप बणाए आपणा वरन, अवरन रूप ना कोए धराइंदा। ब्रह्मावेता प्रभ एका सरन, सरन सरनाई इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नूर नूर प्रगटाइंदा। नूरो नूर नूर उजाला, नूरी राह चलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मार्ग दस्से सुखाला, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। सचखण्ड दवारा सच विद्याला, विदित एक भेव दए चुकाईआ। एका वस्त देवे नाम सच्चा धन माला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कराईआ। साची कार श्री भगवान, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। विष्नूं अन्तर ब्रह्म परवान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा अंग कटाइंदा। एका नाम इक्क ज्ञान, इक्क निशान वखाइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमान, एका राग अलाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका सोभा पाइंदा। एका पुरख पुरख सुजाण, एका देवणहारा माण, सीस आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका जाणी जाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पारब्रह्म ब्रह्म एका एक पढ़ाइंदा।

पारब्रह्म ब्रह्म देवे दाद, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। आपणे विच्चों आपा काढ, आपणा रंग रंगाईआ। एका धुन एका नाद, आपे रिहा सुणाईआ। आपे बोध आप अगाध, हरि आपे करे पढ़ाईआ। आपे वेखे खेल तमाश, खेलणहार सच्चा शहिनशाहीआ। आपे मंडल आपे रास, हरि जू आपे सोभा पाईआ। आपे नूर आप प्रकाश, निरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क रखाईआ। साची सिख्या ब्रह्म धार, पारब्रह्म जणाइंदा। हरि का नूर सच प्यार, प्यार प्यार नाल वटाइंदा। हरि का मन्दिर इक्क दुआर, सच दुआरा इक्क वखाइंदा। हरि चरन सदा भिखार, भिक्खक एका झोली भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाईआ। वस्त ना दिसे कोई कोल, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। साहिब सुल्तान तोलणा तोल, तोलणहारे वड वड्याईआ। मेरे अन्तर जाणा मौल, मौला आपणा आप वखाईआ। आदि कर सच्चा कौल, अन्त देणा आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, समरथ आपणी दया कमाईआ। देवे वर पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। आदि जुगादी तेरा कम्म, निरगुण निरगुण आप समझाइंदा। लख चुरासी बेड़ा बन्न्ह, घर घर मेल मिलाइंदा। भाग लगाउणा काया तन, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। त्रैगुण माया मिले धन्न, जगत वणजारा हट्ट चलाइंदा। सच संदेसा सुण लै कन्न, बिन कन्नां आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुल्हाइंदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। हउँ बालक सेवादार, जुग जुग सेव कमाईआ। लख चुरासी कर प्यार, निरगुण सरगुण गंढु पुआईआ। अण्डज जेरज दे अधार, उत्भुज सेत्ज मेल मिलाईआ। तेरा नाउँ सच जैकार, जै जैकारा एक राग सुणाईआ। चारे बाणी कर प्यार, बाण निराला तीर लगाईआ। ख़ालक ख़लक कर प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह प्या तेरी सरनाईआ। ब्रह्म मंगे दान चरन कँवल, देवणहार वडी वड्याईआ। खेलां खेल उपर धवल, धरनी धरत धवल सुहाईआ। तेरा रूप निर्मल कँवल, कँवल कँवल रूप वटाईआ। हरि का नूर आदि जुगादी अव्वल, दूसर संग ना कोए रखाईआ। हर घट अंदर जाए मवल, रूप रेख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक्क वखाईआ। साची वस्त तेरी निरँकार, बिन नैणां नज़री आईआ। आदि जुगादि रहिणा मददगार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं सेवा करां विच संसार, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, चारे खाणी बन्धन पाईआ। डूँग्घी भँवरी वड़ वड़ गार, काया माटी आसण लाईआ। नव नौ वेख जगत विहार, दहि दिश तेरा राग अल्हाईआ। सर सरोवर ठंडा ठार,

७८०
१२

कँवल कँवला नाभ भराईआ। नाउँ अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद रागी राग सुणाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, जोत निरँजण इक्क रुशनाईआ। घर विच घर खेल अपार, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला बणे सज्जण सुहेला, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेहरवान, हरि साचा सच जणाइंदा। जुग जुग खेल करे महान, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। प्रगट होवे विच जहान, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्दी शब्द कर प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। निरगुण सरगुण दे फ़रमाण, साचा सोहला आपे गाइंदा। जुग चौकड़ी तेरा रखे माण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण आपणा खेल जणाइंदा। आवण जावण देवे दस्स, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म तेरे संग जाए वस, वसणहारा नज़र किसे ना आइंदा। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाइंदा। खेले खेल खेल तमाश, खेल अवल्ली आप कराइंदा। वेखणहारा पृथ्मी आकाश, पुरी लोअ खण्ड गगन गगनंतर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। साचा भेद श्री भगवान, एका एक खुल्हाईआ। निरगुण सरगुण प्रगट होवे विच जहान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। गुर गुर रूप नौजवान, सतिगुर वेस वटाईआ। पंज तत्त काया जगत निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। शब्द अनादी दे ज्ञान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। धुर संदेसा सच फ़रमाण, लख चुरासी रिहा सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे आण, कलयुग आपणी फेरी पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी खेल करे महान, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। तेई अवतारां देवे दान, बण दाता आप वरताईआ। भगत अठारां खोल्ह दुकान, सृष्ट सबाई साचा हट्ट चलाईआ। पीर पैग़म्बर कर प्रधान, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मुकामे हक़ खेल महान, लाशरीक आप कराईआ। ईसा मूसा दए पैग़ाम, संग मुहम्मद करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या रिहा समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा मेला, जुग जुग आप कराइंदा। खेले खेल गुरू गुर चेला, गुर चेला वेस वटाइंदा। एथे ओथे दो जहानां सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। आत्म परमात्म चाढ़े तेला, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याइंदा। वसणहारा धाम निवेला, निरगुण निरगुण आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या आदि जुगादि, जुग जुग करे पढ़ाईआ। गुर पीर अवतारां देवे दाद, मन्त्र आपणा नाम समझाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्मादि, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। इक्क वजाए तुरीआ नाद, भूपत सच्चा सच्चा माहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणे फरयाद, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे

ना जाईआ। गुर अवतार लडाए लाड, पीर पैग़म्बर गोद सुहाईआ। भगत भगवान देवे दाद, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। साचे सन्तां रखे लाज, समरथ पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुखां सुणाए आपणी गाथ, अन्तर मन्त्र करे पढ़ाईआ। गुरसिखां वखाए खेल तमाश, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। ब्रह्म रोवे नेत्र नैणां नीर, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। आपणा वेला दस्स अख़ीर, कवण वेले लए मिलाईआ। जुग चौकड़ी लख चुरासी काया बस्त्र पहना चीर, कोटन कोटि रूप वटाईआ। मेल मिलावा साध सन्त जगत फकीर, फ़िकर तेरा इक्को मोहे सताईआ। जुग चौकड़ी रहां दिलगीर, दिलबर धीर ना कोए धराईआ। लोकमात ज़ात पात वरन बरन शरअ शरीअत वज्झा रहे ज़ंजीर, दीन मज़्हब बन्धन जगत रखाईआ। कवण वेला मिले साहिब गुणी गहीर, गहरी मेरी दर्द मिटाईआ। तुध बिन मिले ना अमृत सीर, अठसठ नीर ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोटन कोटि घत के जायण वहीर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कवण वेले होए सहाईआ। साचा वेला दस्स भगवान, इक्को इक्क मंग मंगाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी तेरा निशान, ब्रह्म पारब्रह्म झुलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देण ज्ञान, सिख्या साख्यात दृढ़ाईआ। लिख लिख लेखा विच जहान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अंजील कुरान नाल मिलाईआ। खाणी बाणी खेल महान, जगत निशानी इक्क प्रगटाईआ। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाही सारे गाण, गा गा तेरा शुकर मनाईआ। पीर पैग़म्बर दस्तगीर सजदा सीस सर्ब झुकाण, कलमा नबी रसूल इलाहीआ। तेरा हक़ हक़ पैग़ाम, तेरा हक़ हक़ नज़ाम, तेरी रहिमत नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी बणया रहां ग़ुलाम, बण सेवक सेव कमाईआ। लख चुरासी तृष्ना ताम, अग्नी तत्त तत्त लगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे ना कोए बिसराम, मिले सच ना सच्ची सरनाईआ। बिन तुध चरन ना निहचल धाम, दो जहान ना कोए वड्याईआ। बिन तेरे प्रकाश ना कोए भान, अन्ध अन्धेरा नज़री आईआ। बिन तेरे नाउँ ना कोए ज्ञान, वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अंजील कुरान खाणी बाणी तेरी सिफ्त सालाहीआ। साहिब सतिगुर दस सच मकान, कवण मन्दिर डेरा लाईआ। कवण वेला मिले आण, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, भेव अभेद रिहा जणाईआ। साचा भेव दस्से निरँकारा, आदि पुरख दया कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदारा, बेख़बर आप समझाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। सेवा ला गुरू अवतारा, गुर गुर आपणा नाउँ जपाइंदा। पीर पैग़म्बर दे अधारा, साची सिख्या इक्क वखाइंदा। कागद कलम बण लिखारा, लिख लिख लेखा मात दृढ़ाइंदा।

आपे वसे सब तों बाहरा, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी करे पार किनारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी झोली पाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां इक्क वखाए अन्त किनारा, तट किनारे आपणा डेरा लाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग करे विहारा, गुर गुर आपणा भेव खुल्हाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन बण वणजारा, बरन अठारां हट्ट चलाइंदा। दीन मज़्हब लग्गे अखाड़ा, हिन्दू मुस्लिम वंड वंडाइंदा। शरअ शरीअत खेल न्यारा, नर निरँकारा आप कराइंदा। सृष्ट सबाई करे विभचारा, विभचारी आपणी धार चलाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, आसा तृष्ना नाल मिलाइंदा। पंज तत्त काया गढ़ उच्च मनारा, जगत विकारा विच रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वेखणहारा, वेस अवल्ला आप धराइंदा। धरत धवल ज़िमीं असमान रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। पीर पैग़म्बर पारब्रह्म परवरदिगार दुआरे कढ्ढुण हाढ़ा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। ना कोई सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कंदर समुंद सागर पार ना कोए कराइंदा। एथे ओथे दो जहान लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कोए ना दिसे सहारा, फड़ बांहों गले ना कोए लगाइंदा। बिन तुध तेरा ब्रह्म रोवे ज़ारो ज़ारा, वरन बरन बरन वरन कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कर सच इकरारा, दर तेरे सीस झुकाइंदा। सच इकरार करे हरि सज्जण, आदि पुरख वड्याईआ। जो घड़े सो अन्तिम भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार जगत जुग लज्जण, सो पुरख निरँजण आप रखाईआ। हरि पुरख निरँजण परदे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाईआ । साचा लेखा हरि करतारा, एका एक जणाइंदा। जुग चौकड़ी पार किनारा, पार उतारा आप वखाइंदा। लोकमात बणाए सचखण्ड सच्चा दुआरा, सचखण्ड निवासी फेरा पाइंदा। निरगुण नूर करे उज्यारा, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। महल अटल इक्क मनारा, अलख अगोचर आप सुहाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार आपणे नाउँ सुणाइंदा। सच सच करे सच विहारा, साची धारा आप जणाइंदा। कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, माया ममता मोह मिटाइंदा। जिस दी महिमा लिख लिख गए गुर अवतारा, गुर गुर भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। निरगुण आप आप अपरम्पर, भेव कोए ना आइंदा। निरगुण आप निरगुण मन्त्र, हरि निरगुण नाम दृढ़ाइंदा। निरगुण बणाए निरगुण बणतर, निरगुण निरगुण जोड़ जोड़ाइंदा। निरगुण खेल गगन गगनंतर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा चुक्क हरि निरँकारा, भेव अभेद जणाईआ। विष्न ब्रह्मा दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग आए अन्तिम वारा, नौ सौ चुरानवें

७८३ १२

चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। प्रगट होए हरि करतारा, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। सृष्ट सबाई करे प्यारा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। चार वरन ना कोए आधारा, बरन अठारां डेरा ढाहीआ। इष्ट देव ना कोए वणजारा, घर घर हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क प्यारा, पीआ प्रीतम नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क उपाईआ। सच संदेसा उपमा योग, हरि साचे सच सुणाया। जुग जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाया। आत्म सेजा भोगे भोग, भस्मड़ एका रंग चढ़ाया। वसणहारा साचे कोट, किला बंक इक्क जणाया। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूरो नूर नूर धराया। शब्द अगम्मी ला चोट, तन नगारा नाद सुणाया। जगत विकारा कढ्ढ खोट, ख़ालस आपणा रूप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा रिहा जणाया। साचा लेखा अन्तिम कल, हरि करता आप जणाईआ। प्रगट हो श्री भगवन, भगवन आपणी धार बंधाईआ। लख चुरासी वेखे जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। साचा राग सुणाए कन्न, ढोला सोहला एका गाईआ। आत्म परमात्म बेड़ा देवे बन्न्ह, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा खेल नौ नव चार, चौकड़ आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार करन पुकार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, लिख लिख लेखा गया जणाईआ। ईसा मंगे मंग बण के ख़ाक सार, परवरदिगार झोली अन्त भराईआ। मुहम्मद कहे मेरा यार, मिहबान बीदो फेरा पाईआ। नानक निरगुण करे प्यार, ओट इक्क अकाल जणाईआ। महांबली उतरे आपणी धार, मात पित ना कोए रखाईआ। गोबिन्द मेला मेले सुत दुलार, गुर चेला रंग रंगाईआ। कल कल्की लै अवतार, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मारे मार, जूठ झूठ दए गंवाईआ। साची सिख्या देवे विच संसार, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका दर दए बिठाल, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, कंगाल शाह आपणे रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ । हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई काया मन्दिर अंदर साची धर्मसाला दए वखाल, घर वसे सच्चा माहीआ। एका शब्द गुरू बणे दलाल, दूजा वणज ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म करे बहाल, जगत विकारा नेड़ ना आईआ। ब्रह्म पारब्रह्म चले नाल नाल, मिल मिल आपणी ख़ुशी वखाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त करे प्रितपाल, सतिजुग साचा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मवेता नेतन नेता करे हेता नित नवित, अबिनाशी अचुत्त सुहाए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। रुत्तड़ी रुत्त मौले संसार, ब्रह्म पारब्रह्म

वड्याइंदा। कलयुग मिटे धूआँधार, जगत अन्धेरा रहिण ना पाइंदा। सतिजुग सच करे विहार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क प्यार, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाइंदा। ईश जीव इक्क घर बार, घर मन्दिर इक्क सुहाइंदा। शब्द नाद धुन्कार, गीत अनादी आप अलाइंदा। निर्मल जोती जोत उज्यार, अज्ञान अन्धेरा सर्ब चुकाइंदा। सर्ब जीआं इक्को करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। मुकामे हक़ परवरदिगार, मुख नक़ाब पर्दा लाहइंदा। हक़ हक़ीक़त लए विचार, लाशरीक खेल खलाइंदा। नानक गोबिन्द सच प्यार, प्रेम प्यारा इक्क अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ वखाइंदा। आपणा खेल रखे हथ्थ, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां महिमां दस्से अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। कलयुग अन्तिम नौं खण्ड पृथ्मी लख चुरासी जीव जंत बिन डोरीउँ लए नथ्थ, तन्दी नाम इक्क उठाईआ। जूठा झूठा खेड़ा करे भड्ड, लोकमात रहिण ना पाईआ। जिस दे पिच्छे वछाया सत्थर सथ, सो यारड़ा सत्थर हंढाईआ। गोबिन्द रखे पत्त, गोबिन्द मीता सच्चा माहीआ। कलयुग नाड़ बहत्तर चार कुण्ट उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए सुकाईआ। साधां सन्तां घर घर प्रनाई मनमति, मन वासना दए दुहाईआ। सति सन्तोख तुट्टा धीरज जत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म लेखा लए मुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल अपारा, आदि अन्त कराइंदा। जुगा जुगन्तर जगत शंगारा, निरगुण सरगुण आप वखाइंदा। नित नवित नाम अधारा, हरि नाम मन्त्र दृढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम कर प्यारा, पीआ प्रीतम मेल मिलाइंदा। साचा सोहला सति जैकारा, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। इक्को बोला एकँकारा, एका एक जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेखणहारा, पेख पेख आपणा रंग रंगाइंदा। इक्को वणज इक्क वणजारा, सतिगुर साचा हट्ट चलाइंदा। सृष्ट सबाई दए हुलारा, अधर उदर दया कमाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सरनाई इक्क जणाइंदा। सच सरनाई हरि सतिगुर चरन, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जन भगतां खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण नैण रुशनाईआ। भौ चुकाए मरन डरन, मरन डरन ना कोए जणाईआ। दीन दयाल तरनी तरन, तारनहारा वेख वखाईआ। करे खेल भन्नण घड़न, घड़न भन्नण आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेले आया फड़न, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। सच महल्ले आया चढ़न, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। इक्को अक्खर आया पढ़न, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। भाग लगाए धौल धरन, धरती धवल आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी खेल कराईआ। सति सतिवादी साचा मीता, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा।

आदि जुगादी ठांडा सीता, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। सदा सुहेला इक्क अतीता, एकओंकारा रंग रंगाइंदा। आदि निरँजण हरि हरि मीता, मित्र प्यारा खेल वखाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा धाम अनडीठा, अनडिठड़ी कार आप कमाइंदा। श्री भगवान कौड़ा करे मिट्ठा रीठा, अमृत रस रस चुआइंदा। पारब्रह्म आदि जुगादि जुग जुग जाणे आपणी रीता, जिउँ भावे तिउँ कार कमाइंदा। कलयुग अन्तिम वेला बीता, बीती कहाणी ना कोए सुणाइंदा। नाता तुट्टा मन्दिर मसीता, मस्जिद मेल ना कोए मिलाइंदा। जगत अग्नी तपे अंगीठा, सांतक सति ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरा देणा तेरे नैणां तेरे झोली पाइंदा। तेरी झोली हरि जू भर, भरम दए चुकाईआ। अन्तिम लेखा गया हर, हरि जू रिहा सुणाईआ। चौदां तबक वेख खड़, चौदां लोक ना कोए रुशनाईआ। चौदां विद्या वेख पढ़, ब्रह्म ज्ञान ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सज़ाईआ। चौदां लोक चौदां तबक, चौदस चन्द नज़र ना आइंदा। चार जुग जो पढ़या सबक, सिफ़रा रूप सर्ब वखाइंदा। पुरख अबिनाशी निरगुण रूप सति सरूप निराकार एकओंकार इक्क इकल्ला आया परत, परतीनिध आप अख्वाइंदा। भाग लगाए उपर धरत, धरनी धरत धवल आप सुहाइंदा। चार युग दा लाहे कर्ज, मकरूज नज़र कोए ना आइंदा। आपणा पूरा करे फ़र्ज, लख चुरासी फाँसी तन टिकाइंदा। दो जहानां इक्को राग सुणाए तर्ज, ताल तलवाड़ा आप वजाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म लए वरज, नव नौ आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची धार बंधाइंदा। सतिजुग बन्ने धार प्रभ, दीनन आपणी दया कमाईआ । जुग चौकड़ी विछड़े लभ्भ, कलयुग अन्तिम मेल मिलाईआ। अमृत झिरना कँवल नभ, कँवल मुख भुवाईआ। सन्त सुहेले घर साचे सद्द, सद्दा इक्को नाम लगाईआ। नौ दुआरे पार हद्द, सुखमन टेढी बंक टपाईआ। ईड़ा पिंगल मूँह दे भार सट्ट, करे खेल बेपरवाहीआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर सगला संग साहिब समरथ, निरगुण साचा संग रखाईआ। अनहद शब्द सुणाए अनाद अनहत, एका राग अलाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोत निरँजण नूर रुशनाईआ। सुरत सवाणी शब्दी दास, सतिगुर हाणी मेल मिलाईआ। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर चरनां हेठ रखाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म करे निवास, सच सिँघासण सोभा पाईआ। साचे मंडल साची रास, गोपी काहन आप नचाईआ। ब्रह्म तेरी पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग देवे अन्त धरवास, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सृष्ट सबाई लख चुरासी गाए रसन स्वास, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नाता, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। जन भगत रखाए

७८६
१२

उत्तम ज़ाता, वरन बरन ना वंड वंडाइंदा। शब्द अगम्मी सच सुणाए गाथा, मकतब पढ़न कोए ना जाइंदा। मन्दिर अंदर सुहाए साढे तिन्न तिन्न हाथा, घर घर विच डेरा लाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म करे पूजा पाठा, अक्खर अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। सोवत जागत ऊठत बैठत आप सुणाए आपणा साका, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। बत्ती दन्द ना पाए बातां, बिन दन्दां आपणा नाउँ समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणा राह चलाइंदा। समरथ चलाए एका राह, रैहबर इक्क अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया दए खपा, सतिजुग साचा घर वखाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक कोई रहिणा ना, नौ खण्ड पृथ्मी करे सफ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर शिवदुआले मट्ठ किसे बहणा ना, बह बह राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीआं दा इक्को दर, दर दरवाज़ा इक्क खुलाईआ। दर दरवाज़ा साचे हट्ट, हरि सतिगुर आप खुलाइंदा। वस्त अमोलक अंदर वथ, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। आत्म परमात्म मार्ग देवे दस्स, औझड़ राह ना कोए वखाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म मेला हस्स हस्स, सोहँ हँसा मुख सालाहइंदा। तीर अणयाला मारे कस, तिक्खी मुखी धार बंधाइंदा। भगत भगवन्त इक्क दूजे दा गाउण जस, बिन भगतां भगवन कम्म किसे ना आइंदा। पन्ध मुकावण नस्स नस्स, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। खाणी बाणी रसना रस, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहइंदा। जिस हिरदे अंदर सतिगुर पूरा जाए वस, लिखण पढ़न पन्ध मुकाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। आत्म परमात्म भोग बलास, साची सेजा आप हंढाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वसे पास, घर साचे डेरा लाइंदा। सोहँ शब्द सतिजुग दात, दाता दानी आप वरताइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी रखी आपणे खात, बिन गुरू पीर खाता ना किसे वखाइंदा। कलयुग अन्तिम सब दा पढ़ के फ़ातया फ़ात, फ़तेह डंका नाम वजाइंदा। शाह सुल्तानां देवणहारा आब हयात, अमृत रस मुख चुआइंदा। वसणहारा कायनात, कलमा आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। राम कृष्न एका ज़ात, नानक गोबिन्द खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाइंदा। साचा मन्त्र नमो सति, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाईआ। हँ ब्रह्म इक्को तत्त, तत्तव वेता मेल मिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोए रत्त, रत्ती रत्त ना कोए वखाईआ। आपे जाणे मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा बीज आपे घत्त, फुल्ल फलवाड़ी आप महकाईआ। ब्रह्मे वेते खोल्या हट्ट, लख चुरासी विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण मेला सरगुण चेला, चेला गुर लेखा जाणे लिख्या धुर, धुर लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर लहिणा लहणेदार, परवरदिगार आप अख्वाइंदा। सदी चौधवीं कर कर पार, एका चौका जोड़ जुड़ाइंदा।

पहले घर वसे करतार, चौथे पद गुरमुख मेल मिलाइंदा। पीर पैग़म्बर कर त्यार, अद्धविचकारे सिफ्त सालाहइंदा। अल्फ़ ये दे आधार, हरफ़ बहरफ़ आप समझाइंदा। हमज़ा कोए ना पावे सार, स्त्री पुरष ना रूप वटाइंदा। ख़ावंद बीवी ना कोए आधार, मीआं रंग ना कोए रंगाइंदा। अल्ला राणी ना कोए शंगार, शाहो भेव कोए ना आइंदा। कलयुग अन्तिम सारे रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। प्रगट होए आप निरँकार, निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। सतिजुग सच करे विहार, बिवहारी आपणा राह चलाइंदा। पिछला लेखा दए निवार, भरम भुलेखा सर्ब कढाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार कट्ठे कर इक्क दुआर, सचखण्ड आपणे चरनां हेठ रखाइंदा। बिन हुक्म कोए ना जाए विच संसार, दीन मज़्हब ना कोए प्यार, शरअ शरीअत ना रंग रंगाइंदा। अन्तिम सब दे बस्त्र देवे पाड़, कलयुग अग्नी देवे साड़, तत्तव तत्त तत्त तपाइंदा। अग्गे मार्ग लाए सुखाल, एका घर बहाए शाह कंगाल, शाह कंगाल आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी देवणहारा दान, वस्त अमोलक लख चुरासी काया गोलक घर घर दर दर अंदर मन्दिर नाम निधाना श्री भगवाना सोहँ ढोला बदले चोला चुकाए पर्दा ओहला, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म सच्चा वेस, विश्व आपणा खेल कराइंदा। एथे ओथे सति संदेस, सति सतिवादी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी चले ना कोए पेश, सीस अग्गे ना कोए उठाइंदा। दर मंगण विष्न ब्रह्मा महेष, कोटन कोटि झोली डाहइंदा। निरगुण दाता आदि जुगादि रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आइंदा। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, सीस जगदीस ना मूंड मुंडाइंदा। तख्त निवासी सच नरेश, नर नरायण आप अख्वाइंदा। सतिजुग देवे सच संदेस, सोहँ मन्त्र इक्क दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म सदा वशेश, विश्व आपणा रंग रंगाइंदा। जिस दी महिमा करे सहँसर मुख शेष, सो शेष सांगोपांग रूप वटाइंदा। तिस साहिब सर्ब आदेस, आदि जुगादि जुग जुगन्तर जुग जुग पीर पैग़म्बर गुर अवतार हरि निरँकार चरन कँवल सीस झुकाइंदा। सो साहिब हुक्मी हुक्म करे वरतार, सतिजुग साची बन्ह्े धार, आत्म परमात्म करे प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पुरष नारी इक्क ज्ञान, नारी पुरष इक्क मकान, पुरष नारी इक्क भगवान, नारी पुरख नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जिस जन मिल्या आप भगवान, तिस लहिणा देणा दए मुकाईआ। लख चुरासी चुक्के काण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। अन्तिम मेला मेले आण, जोती जोत जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साची रासी मंडल मण्डप दो जहान, गोपी काहन आप नचाईआ।

७८६
१२

✳ २० भाद्रों २०१६ बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे गृह पंज गराईं ज़िला फिरोज़पुर ✳

आदि जुगादी इक्क भगवान, हरि जुग जुग खेल कराइंदा। आदि जुगादी इक्क निशान, हरि जुग जुग आप झुलाइंदा। आदि जुगादी इक्क ज्ञान, हरि जुग जुग आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादी इक्को दान, हरि जुग जुग आप वरताइंदा। आदि जुगादी इक्को राम, जुग जुग वेस वटाइंदा। आदि जुगादी एका शाम, जुग जुग रास रचाइंदा। आदि जुगादी इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप सुणाइंदा। आदि जुगादी इक्क अमाम, ईसा मूसा नाउँ धराइंदा। आदि जुगादी इक्क इस्लाम, इस्म आज़म भेव वखाइंदा। आदि जुगादी एका काम, हरि करता आप कराइंदा। आदि जुगादी इक्क जवान, बल आपणा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। आदि जुगादी एका मीत, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। आदि जुगादी एका रीत, जुग जुग आप चलाईआ। आदि जुगादी एका गीत, सोहला ढोला मात प्रगटाईआ। आदि जुगादी खेल अनडीठ, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। आदि जुगादी वसे चीत, चेतन आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादी एका गुर, हरि सतिगुर नाउँ धराइंदा। आदि जुगादी एका सुर, देवत सुर वेख वखाइंदा। आदि जुगादी लेखा धुर, धुर मस्तक आप जणाइंदा। आदि जुगादी जाए बौहड़, जुग जुग मेल मिलाइंदा। आदि जुगादी एका पौड़, दो जहानां आप लगाइंदा। आदि जुगादी वेखणहारा मिट्ठा कौड़, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। आदि जुगादी मिटाए औड़, जन भगतां अमृत रस चखाइंदा। आदि जुगादी रिहा दौड़, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ चलाइंदा। आदि जुगादी आपणा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप जणाईआ। आदि जुगादी एका पिता एका माउँ, लख चुरासी गोद बहाईआ। आदि जुगादी देवणहारा ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादी एका एक अगम्म अथाहों, बेपरवाह आपणी कल धराईआ। आदि जुगादी एका करे पसाउ, लख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। आदि जुगादी इक्क वसाए साचा थाउँ, दरगाह साची दए वड्याईआ। आदि जुगादी हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, कागों हँस उडाईआ। आदि जुगादी जुग जुग करे सच न्याउँ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि पुरख समरथ, समरथ आपणी खेल कराइंदा। निरगुण नूर कर प्रगट, प्रगट आपणा रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे रामा दसरथ, दहि दिशा भेव खुल्हाइंदा। भेव चुकाए त्रिलोकी नथ, नाथ अनाथा दया कमाइंदा। सेवक सेवादार चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। भगत भगवान समां दस्स, बोध अगाध आप समझाइंदा।

गीता ज्ञान ज्ञान अकथ, कथ कथनी ना कोए कथाइंदा। हरि सन्तन हिरदे आपे वस, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। भगत भगवान होए वस, बेवस आपणा बल ना कोए जणाइंदा। प्रेम प्यार अंदर जाए फस, रस्सी डोर नाम रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कार कराइंदा। आदि जुगादि भगत भगवन्त, एका ओट रखाईआ। आदि जुगादि साचे सन्त, हरि सतिगुर मेल मिलाईआ। आदि जुगादि गुरमुख बणाए बणत, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। आदि जुगादि गुरसिख महिमा गाए अगणत, लिख लिख लेखा दए जणाईआ। आदि जुगादि खेले खेल नारी कन्त, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि काया चोला रंगे बसन्त, रंग मजीठी इक्क रखाईआ। आदि जुगादि गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हउमे रोग दए गुआईआ। आदि जुगादि ग़रीब निमाणयां कटे भुख नंगत, भुख्यां नग्गयां गले लगाईआ। आदि जुगादि हरिजन मेले साची संगत, सगला संग आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाम प्रगटाईआ। आदि जुगादि नाउँ अपारा, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। चतुर्भुज हो उज्यारा, भेव अभेव आप खुल्हाइंदा। आदि शक्ति नूर निरँकारा, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। परवरदिगार सांझा यारा, लाशरीक खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता आपणा नाउँ धराइंदा। जुग करता हरि जू नाउँ रख, जुग जुग खेल कराईआ। गुर अवतार हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ पर्दा लाहीआ। सृष्ट सबाई मार्ग दस्स, जीव जंत एका राह चलाईआ। गुरमुखां हिरदे आपे वस, काया खेड़ा दए वसाईआ। सन्त सुहेले सुणाए जस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादि वडी वड़याई, हरि वड्डा वड्ड कराइंदा। सतिजुग अठारां अवतार करी कुड़माई, एका आठा बन्धन पाइंदा। त्रेते वज्जे सच वधाई, परसराम राम राम राम रूप वटाइंदा। द्वापर खेल खेल रघुराई, वेद व्यासा आप पढ़ाइंदा। कान्हा कृष्ना रूप वटाई, मुकंद मनोहर लखमी नरायण, नरायण आपणी कल धराइंदा। ग़रीब निमाणयां बणया साक सज्जण सैण, बिदर सुदामा गोद बहाइंदा। रसना जिह्वा ना सके कहिण, कह कह शुकर ना कोए मनाइंदा। आदि जुगादि चुकावणहारा लहिणा देण, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। भगत भगवान बणे साक सज्जण सैण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धराइंदा। जुग जुग आपणा नाउँ धर, राम राम करी पढ़ाईआ। जुग जुग आपणा वेस कर, कान्हा कृष्ना बंसरी नाम वजाईआ। जुग जुग आपणा ज्ञान कर, वेद शास्त्र दए जणाईआ। जुग जुग आपणा वेख घर, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जग मन्त्र दए सलाहीआ। जग मन्त्र नाम देव, देव आत्मा

आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव साची सेव, करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द मेल मिलाइंदा। हँ ब्रह्म अलख अभेव, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल धाम डेरा लाइंदा। हरि का गीत गा ना सके रसना जिहव, बत्ती दन्द ना कोए वड्याइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह वड देवी देव, देवत सुर आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि साचा मेव, अमृत रस आप चखाइंदा। आदि जुगादि विश्व रंग, विष्नूं हरि हरि रूप वटाईआ। आदि जुगादि ब्रह्म अनन्द, पारब्रह्म वड्याईआ। आदि जुगादि शंकर अखण्ड, शरअ त्रिसूल इक्क रखाईआ। आदि जुगादि सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। आदि जुगादि जीउ पिण्ड, पंज तत्त दए वड्याईआ। आदि जुगादि अमृत धारा सागर सिन्ध, लख चुरासी विच टिकाईआ। आदि जुगादि भगत भगवान उपजाए आपणी बिन्द, पूत सपूता नाउँ रखाईआ। आदि जुगादि दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करनी आप कराईआ। आदि जुगदि खेल ब्रह्मादि, पारब्रह्म कराइंदा। आदि जुगादि अगम्मी नाद, घट घट अंदर आप वजाइंदा। आदि जुगादि रखे लाज, जन भगतां पैज रखाइंदा। आदि जुगादि मारे आवाज़, गुरमुख सोए आप उठाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग रच रच काज, लख चुरासी नाता जोड़ जोड़ाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग चलावणहारा नाम जहाज़, समुंद सागर फोल फोलाइंदा। आदि जुगादि गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां आपणे हथ्थ रखे वाग, चारों कुण्ट आप भुआइंदा। आदि जुगादि धोवणहारा दाग़, दुरमति मैल धुआइंदा। आदि जुगादि खोल्हणहारा पाज, कूड़ी क्रिया पर्दा लाहइंदा। आदि जुगादि शहिनशाह शाहो भूप इक्क नवाब, लख चुरसी रईयत वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुग जुग कातब बण बण लिखे किताब, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अक्खर वक्खर गंढ़ पुआइंदा। आदि जुगादि जुग जुग लेखा जाणे पुंन सुआब, पतित पापी आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका नाम वड्याइंदा। आदि जुगादि हरि नाउँ अपारा, जीव जंत शरनाईआ। हरि का नाउँ सच वपारा, हरि एका हट्ट खुल्हाईआ। हरि का नाउँ जगत अधारा, दो जहानां होए सहाईआ। हरि का नाउँ हरि प्यारा, हरिजन हरि हरि दए मिलाईआ। हरि का नाउँ सच विहारा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। हरि का नाउँ करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, नाड़ी नाड़ी फोल फोलाईआ। हरि का नाउँ मेटे पंचम झूठी धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। हरि का नाउँ ऊँच नीच करे पार किनारा, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। हरि का नाउँ वखाए सच दरबारा, मन्दिर मस्जिद बैठे सीस झुकाईआ। हरि का नाउँ हरिजन मेले हरि निरँकारा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका

नाउँ करे पढ़ाईआ। एका नाउँ आदि अन्त, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। एका नाउँ सतिगुर मंत, मन्त्र कोटन रूप वखाइंदा। एका नाउँ जीव जंत, जीवण जुगत जगत जणाइंदा। एका नाउँ सतिगुर सन्त, सति सतिवादी आप वरताइंदा। एका नाउँ साचा पंडत, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। एका नाउँ सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। एका नाउँ वसे जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज डेरा लाइंदा। एका नाउँ सृष्ट सबाई मंगत, इच्छया साची झोली पाइंदा। एका नाउँ नाता कटे भुख नंगत, भुक्ख्यां नग्गयां गले लगाइंदा। एका नाउँ मिलाए साची संगत, संगत हरि का रूप जणाइंदा। एका नाउँ गढ़ तोड़े हउमे हंगत, निवण सु अक्खर इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ वखाए साचा जन्नत, दरगाह साची मेल मिलाइंदा। एका नाउँ सोहँ सो, हरि आदि अन्त दृढ़ाईआ। जुगा जुगन्तर बीज बो, लख चुरासी मात महकाईआ। गुर अवतारां ढोआ ढो, देवणहारा मात वड्याईआ। कर प्रकाश निरगुण लो, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। दुरमति मैल देवे धो, पतित पुनीत कराईआ। सृष्ट सबाई नालों करे निर्मोह, मोह आपणा इक्क वधाईआ। सुरत सुआणी शब्दी कन्त नाल जाए छोह, शौह मिले सच्चा माहीआ। आपणे जिहा आपे हो, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सदा समझाईआ। एका नाम सोहँ रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा।
७६२ एका सेज इक्क पलँग, पुरख अबिनाशी इक्क हंढाइंदा। एका नाद इक्क मृदंग, धुंन एका राग सुणाइंदा। एका मंगल ७६२
इक्क अनन्द, गीत गोबिन्द इक्क अलाइंदा। एका सोहला एका छन्द, एका बन्दी बन्द अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,
१२ आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा नाउँ आप जणाए हर घट थाउँ, घट घट आपणा नाउँ वसाइंदा। घट घट १२
वसे नाम निधाना, नज़र किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई होई हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। छत्ती राग गायन तराना, रसना जिह्वा नाल सलाहीआ। मिल्या हरि ना श्री भगवाना, भगवन मेल ना कोए मिलाईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए विच जहाना, जह देखां नज़री आईआ। पूजा पाठ ना कोए वखाना, जोग अभ्यास ना कोए कराईआ। जिस जन उपर होए आप मेहरवाना, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे बजर कपाटी तोड़े काया विच मकाना, महिफल आपणी इक्क वखाईआ। अनन्द अनन्द मंगल इक्क तराना, तुरीआ राग अनाद सुणाईआ। तख्त निवासी श्री भगवाना, शाहो शाबाशी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ वज्जे वधाईआ। हरि का नाउँ सच वधाई, वाहवा सतिगुर आप वजाइंदा। सो पुरख निरँजण करे कुड़माई, हँ ब्रह्म आप परणाइंदा। एका घर धी जुआई, सौहरे पेईए एका दर वखाइंदा। एका सेजा सुत्ता गुसाँईं,

दूसर नज़र कोए ना आइंदा। एका मेला चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक्क जणाइंदा। निरगुण सरगुण पकड़े बाहीं, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। भगत मिलावा अगम्म अथाहीं, अलख अगोचर आपणी कार कराइंदा। देवणहारा ठंडी छाईं, छहबर आपणे नाउँ लगाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे थाउँ थाईं, थान थनंतर फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एक नाम, जन भगत प्याए साचा जाम, अमृत रस इक्क वखाइंदा। अमृत रस भगत भगवान, एका एक जणाईआ। कलयुग अन्तिम कर परवान, परम पुरख होए सहाईआ। काया मन्दिर वेख मकान, डूँघी कंदर आसण लाईआ। सच संदेसा देवे आण, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण नौजवान, जन्म मरन विच ना आईआ। सचखण्ड निवासी साचा काहन, गुरमुख गोपी मेल मिलाईआ। एका नाम करे प्रणाम, नाउँ निरँकारा सीस झुकाईआ। सोहँ शब्द साचा दान, लख चुरासी आप वरताईआ। कलयुग भुल्ले जीव नादान, गुण निधान नज़र ना आईआ। मगर लग्गा जगत शैतान, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। मन मनुआं होया बलवान, बल आपणा इक्क रखाईआ। गुरमति ना मिले निशान, मनमति होई हल्काईआ। सृष्ट सबाई भुल्लया इक्क भगवान, भुल्यां मार्ग देवे लाईआ। सतिजुग साचा बणाए इक्क विधान, नौ खण्ड पृथ्मी हुक्म सुणाईआ। राज राजान शाह सुल्तान ख़ाक सर्ब मिल जाण, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। दीन मज़्ब होण वैरान, शरअ शरअ नाल टकराईआ। उम्मत उम्मती दिसे इक्क इस्लाम, इस्म आपणा इक्क वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण नज़री आए श्री भगवान, भगवन आपणा नूर धराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर सारे करन सलाम, नमो नमो नमो सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क जणाए साचा घर, घर साचे वसे माहीआ। साचा घर सचखण्ड निवासा, हरि साचा सच जणाइंदा। भगत भगवान दे भरवासा, लोकमात पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम पूरी करे आसा, साता दूआ जोड़ जुड़ाइंदा। बहत्तर नूर इक्क प्रकाशा, साता सिफ़रा पर्दा लाहइंदा। सत्त सरूपी शाहो शाबाशा, सत्तर आपणा अंक रखाइंदा। सत्त चार कर निवासा, दो जहान वेख वखाइंदा। लहिणा देण पृथ्मी अकाशा, प्रिथम आपणा मूल मुकाइंदा। चौहत्तरां बण बण दासी दासा, हरि जू सेवा सेव कमाइंदा। सोहँ शब्द कर प्रकाशा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सतिजुग सति सतिवादी खोल्हे आपणा आप खुलासा, सचखण्ड बैठा ख़ुशी मनाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां वेख वेख करे हासा, आपणी कीती अन्त आप उलटाइंदा। जुग चौकड़ी वेहिन्दा रिहा तमाशा, रजो तमो सतो नाच नचाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो पुरख अबिनाशा, अबिनाशी राह चलाइंदा। एका नाउँ एका गुर इक्क इष्ट देव भरवासा, पुरख अकाल इक्क अख्वाइंदा। एका परवरदिगार वसे साथा, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाइंदा। एका मेला त्रिलोकी

नाथा, त्रै त्रै बन्धन आप तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म देवे ज्ञान, मन मति बुध बल ना कोए रखाइंदा ।

✳ २० भाद्रों २०१६ बिक्रमी भान सिँघ दे गृह पंज गराईं ज़िला फिरोज़पुर ✳

आदि जुगादी नवां ख्याल, हरि सतिगुर आप कराइंदा। नित नवित बण दलाल, जुग जुग सेव कमाइंदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, निरगुण सरगुण आप वखाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल कमाल, हरि पुरख निरँजण आप कराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सब दे सिर ते कूके काल, डंक नगारा इक्क वजाइंदा। सुरत सवाणी होए बेहाल, शब्दी गुर नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आप जणाइंदा। अगला लेखा श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, करे खेल बेपरवाहीआ। चौथे जुग वेख निशान, सच निशाना लए प्रगटाईआ। सृष्ट सबाई बेईमान, सच सुच्च ना कोए कुड़माईआ। आत्म परमात्म ना कोए ज्ञान, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सके ना कोए पछाण, पर्दा दूई ना कोए उठाईआ। घर घर वड़या पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। साध सन्त धीआं भैणां नैण तकाण, विभचार होए सर्ब लोकाईआ। अठसठ तीर्थ ना कोए अशनान, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ, सति सरूप नज़र ना आए किसे भगवान, भगवन आपणा रूप ना कोए दरसाईआ। गुरुदुआरे खेले खेल ना गुण निधान, गुण आपणा ना किसे जणाईआ। मनमति होई प्रधान, गुरमति भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुर का शब्द ना कोई ज्ञान, गोझ ज्ञान ना कोए समझाईआ। अगला करे ना कोए ध्यान, पिछला पढ़ पढ़ गए भुलाईआ। वेखणहारा दो जहान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग खेले विच जहान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवणहारा दान, दाता दानी आप अख्वाईआ। लेखा जाणे वेद पुराण, शास्त्र सिमरत कर पढ़ाईआ। गीता ज्ञान खेल महान, अठ दस करे कुड़माईआ। अञ्जील कुरान बेमिसाल, मसला आपणा इक्क समझाईआ। पीर पैग़म्बर मुरीद मुर्शद खेले खेल परवरदिगार मेहरवान, मिहबान बीदो आपणा रंग रंगाईआ। गुर गुर नूर नूर महान, जोती जाता पुरख बिधाता एका नूर धराईआ। लख चुरासी घर मकान, गृह गृह डेरा लाईआ। अनहद नाद सच्ची धुन्कान, धुंन आत्मक राग सुणाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना इक्क समझाईआ। दीपक जोती जोत महान, जोत निरँजण डगमगाईआ। सर्ब जीआं इक्क निशान, सच निशाना इक्क दरसाईआ। सर्ब जीआं

इक्क मकान, सचखण्ड दवारे दए जणाईआ। सर्ब जीआं इक्को दान, हरि आपणा नाउँ वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अगला लेखा वेखणहारा, एकँकार आप अख्वाइंदा। गुर अवतारां दे सहारा, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। शब्द अनादी बोल जैकारा, जै जैकार एका नाउँ सुणाइंदा। अक्खर वक्खर कर त्यारा, त्रैगुण अतीता धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे विच छुपाइंदा। अगला लेखा श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मिटे निशान, कलयुग मात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार लिख लिख दे दे गए ब्यान, सृष्ट सबाई जगत सुणाईआ। नव नौ चार होए वैरान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्त खेल महान, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। प्रगट होवे नौ जवान, नौ दर खोजे चाँईं चाँईंआ। मन्दिर वसे सच मकान, सच महल्ला आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा पिछली याद दए समझाईआ। पिछली याद गुर अवतार, वेद व्यासा करे लिखाईआ। वाहवा कुदरत तेरी यार, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। ईसा मंगे इक्क भिखार, खाली झोली अग्गे डाहीआ। तूं दाता परवरदिगार, बेऐब तेरी वड्याईआ। मुकामे हक़ खेल न्यार, जल्वा नूर नूर रुशनाईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, तूं पिता सहिज सुखदाईआ। सच संदेसा देणा विच जहान इक्को मंग मंगाईआ । कवण वेला अन्तिम मेला मेल मिलाए आण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछली याद रिहा समझाईआ। पिछली याद मुहम्मद मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। जगत सजदा जगत मसीत, मसल्ला हक़ हक़ पढ़ाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बैठा रहे सद अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। जुग चौकड़ी लए जीत, हार जित आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम जाए जीत, एका चौका बन्धन पाइंदा। चौदां तबक सुणाए गीत, साचा ढोला आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा अग्गे घर वखाइंदा। पूरब लेखा एका मंग, हरि साचा सच जणाईआ। एका सेजा इक्क पलँग, एका डेरा लाईआ। एका नाम इक्क मृदंग, एका नाद सुणाईआ। एका सूरबीर सरबंग, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। एका गीत सुहागी छन्द, नानक गोबिन्द ढोला गाईआ। एका मंगे साची मंग, प्रभ अग्गे ढह सरनाईआ। आदि जुगादि तेरा अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, चन्द चांदनी मुख शरमाईआ। आत्म परमात्म पाउणी गंढ, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। एथे ओथे साची ठंड, अग्नी तत्त ना कोए जणाईआ। कर किरपा देणी मंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा दए जणाईआ। पिछला लेखा नानक निरँकार, निरगुण वेख वखाइंदा। सच

७६५
१२

संदेसा देवे आपणी वार, धार धार विचो प्रगटाइंदा। कलयुग अन्तिम महांबली आवे आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। निहकलंका नाउँ उच्चार, मात पित ना कोए बणाइंदा। शब्द डंका अपर अपार, दो जहानां आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, देवत सुर आलस निंद्रा लाहइंदा। गोबिन्द बोल सच जैकार, जै जैकारा एका नाउँ अलाइंदा। आत्म सेजा कर प्यार, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। सच संदेसा देवे विच संसार, सदा एका नाम वखाइंदा। कल कल्की लए अवतार, कलयुग कलेश मिटाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। रूप रंग ना कोए विचार, रेख नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछली जाणे सारी गल्ल, करे खेल अछल अछल, वल छलधारी वड बलकारी जोत निरँकारी निरगुण अगला राह आप जणाइंदा। अगला राह आए जग, जग जीवण दाता आप जणाईआ। वरन बरन ज़ात पात सृष्ट दृष्ट अन्त लग्गी अग्ग, लग्गी अग्न ना कोए बुझाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना माया ममता भट्ठी रही तप, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। आत्म परमात्म ईश जीव लख चुरासी भुलया जप, जपत जपत सुख कोए ना पाइंदा। जगत वासना नौ दुआर मनमति दुहागण रही नट्ठ, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। फिरी दरोही अठसठ, सर सरोवर नज़र कोए ना आइंदा। जगत वासना जगत जज्ञासू गई चट्ट, चेतन रूप ना कोए रखाइंदा। काया खेड़ा होया भट्ठ, कलयुग भठयाला अग्नी हेठां डाहइंदा। मिल्या मेल ना पुरख समरथ, समरथ नज़र किसे ना आइंदा। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी पढ़ पढ़ रहे दस्स, दहि दिशा नैण ना कोए खुलाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गुर गुर कथा गायन जस, जस आपणा गुरू ना किसे जणाइंदा। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। माया ममता अंदर कलयुग जीव गए फस, फाँसी जम ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगली क्रिया वेख वखाइंदा। अगली क्रिया लग्गा दुःख, दुखी दुःख ना कोए मिटाईआ। शाह सुल्तानां लग्गी भुख, भुख्यां भुख ना कोए गुआईआ। ग़रीब निमाणयां ना सके कोई पुच्छ, घर घर बैठे रोवण मारन धाईआ। गुरमुख बूटा रिहा सुक्क, अमृत सिंच हरा ना कोए कराईआ। जननी साबत दिसे ना कोई कुक्ख, धन्न जणेंदी बणे ना माईआ। गुरमुख नज़र ना आए कोई पुत्त, पिता पूत दए वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नाता होया जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया करी कुड़माईआ। बाहरों देवण सन्त साध आपणा सबूत, अंदर सिदक सबूरी ना कोए वखाईआ। पंज तत्त माटी काया पोच कलबूत, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगली दिशा रिहा वखाईआ। अगली दिशा नेत्र वेखो, वेखणहारा हरि वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी घर घर भेखो, भेखी आपणी बल जणाइंदा। गुर का शब्द ना कोए

७६६
१२

हेतो, हित नार भतार वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी करनी वेख वखाइंदा। लख चुरासी करनी कूड़, कूड़ी क्रिया जगत कमाईआ। पुरख अबिनाशी होया दूर, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। दर दर भरया इक्क गरूर, गुरबत दिवस रैण लड़ाईआ। हउमे हंगता करया चूर, तन ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। अमृत रस ना मिल्या किसे सरूर, सांतक सति ना कोए कराईआ। पुत्त पिउआं रहे घूर, नाता तुट्टा धी जुआईआ। कलयुग अन्तिम भरया पूर, कन्ढे नेड़े डेरा लाईआ। कोई ना मन्ने आपणा कसूर, कसूर गुरुआं पीरां उत्ते रहे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। अगला लेखा वेखणहारा, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। सृष्ट सबाई नार विभचारा, हरि जू कन्त ना कोए हंढाइंदा। दीन मज़्हब लग्गा अखाड़ा, ज़ात पात नाच नचाइंदा। नज़र ना आवे कोई गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर मुख ना कोए वखाइंदा। चार यारी पार किनारा, यारी यार ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला खेल आप दृढ़ाइंदा। अगला खेल अगम्म अपारा, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सृष्ट सबाई होए खुआरा, चार वरन धीर ना कोए धराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मारे मारा, दीप सत्त दए सज़ाईआ। गुरमुख विरला करे पार किनारा, सच किनारा इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा लेखे विच मुकाईआ। अगला लेखा मुक्कण वाला, हरि मौका वेख वखाइंदा। कलयुग बूटा सुक्कण वाला, पत्त डाल्ही ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी राए धर्म आपणी गोदी चुक्कण वाला, लाड़ी मौत नाल रलाइंदा। जूठा झूठा पैंडा मुक्कण वाला, वेला अन्तिम आइंदा। पुरख अबिनाशी सिँघ शेर दो जहानां बुक्कण वाला, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। मनमुख जीव लुकणहारा, नेत्र नैण शरमाइंदा। शब्द गुरू गुरदेव इक्को उठण वाला, सतिगुर आपणा बल धराइंदा। मन्दिर मस्जिद गुरदवार शिवदुआले मट्ठ तीर्थ अठसठ पुच्छणहारा, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। लख चुरासी खुसणहारा, कोह कोह ख़ाक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आप समझाइंदा। अगला लेखा रखणा याद, भुल्ल रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल तमाश, जगत तमाशा वेखे चाँईं चाँईंआ। कूड़ी क्रिया करे नास, सच सुच्च लए प्रगटाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, बीस बीसा खुशी मनाईआ। निरगुण सरगुण वसे पास, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। अगला खेल श्री भगवाना, बीस बीसा आप कराइंदा। सम्मत उँनी बन्न्हे गाना, कलयुग सगन मनाइंदा। चारों कुण्ट होए हैराना, हरि जू की की खेल रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता आप कमाइंदा। करनी करता करने आया, करनहार करतारा। कलयुग

७६७
१२

अन्तिम वेखे माया, निरगुण सरगुण पावे सारा। पुरख अबिनाशी बेपरवाहया, बेपरवाह आपणी कार कमाया। जन भगतां बणे आप मलाह, जुग जुग बेड़ा कंध उठाया। जीव जंत साध सन्त सारे सिमरो एको नाम, आत्म परमात्म रंग चढ़ाया। पुरख अबिनाशी हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाया। सृष्ट सबाई देवणहारा सज़ा, मलकुल मौत रिहा उठाया। किसे मढ़ी गोर दए दबा, किसे गुरमुख आपणी गोद बहाया। अरदासा सोध जिस नानक सतिगुर गोबिन्द ल्या मना, तिस तत्ती वा ना लागे राया। अगला पिछला लेखा दए चुका, एथे ओथे होए सहाया। सो साहिब लओ ध्या, जिस मिल्या विछड़ ना जाया। दोए जोड़ बख्शाओ गुनाह, गुणी गहीर गम्भीर बख्शश आपणे हथ्थ रखाया। कर किरपा देवणहारा पनाह, ग़रीब निमाणे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा हरि, अग्गे पिच्छे पिच्छे अग्गे, गुरमुखां अंदर वड़ वड़ जोती रूप जगे जग, जग आपणा नूर दरसाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आप जणाए भाई भैण सके, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जगत शरअ मारे धक्के, दूई द्वैती मूँह दे भार सुट्टे, उत्ते ठोकर नाम लगाईआ। नानक गोबिन्द मार्ग इक्को दस्से, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल अबिनाशी करता सतिगुर सच सच्चे, सच देवे सरनाईआ। अग्गे भन्नणहारा भाण्डे कच्चे, काची गगरी काया रहिण ना पाईआ। कलयुग कलंदर घर घर नच्चे, आपणा डौरू ताल वजाईआ। सृष्ट सबाई जगत अग्नी मच्चे, हाहाकार लोकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सारे बच्चे, जिस प्रभ मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा लिख लिख सब नूं रिहा समझाईआ।

✳ २० भाद्रों २०१६ बिक्रमी गुलज़ार सिँघ दे गृह पिण्ड साहो ✳

आदि जुगादि पुरख समरथ, हरि समरथ खेल कराइंदा। सचखण्ड दवारे निरगुण वस, थिर घर साचा आप प्रगटाइंदा। साचा मार्ग आपे दस्स, रैहबर आपणा राह चलाइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाइंदा। आपणी महिमा सुणाए अकथ, कथ कथ आपणा नाउँ सलाहइंदा। चलावणहारा साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। इक्को नाम कर प्रगट, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। दो जहानां खोल्ह हट्ट, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। साचा नाम एका सति, एकओंकारा आप प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर वस, हुक्मे हुक्म आप फिराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे

७६८ १२

खेल तमाश, लोआं पुरीआं आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। एका नाउँ हरि निरँकारा, निरगुण आपणा आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड निवासी साची कारा, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण शाह सिक्दारा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। हरि पुरख निरँजण वेखणहारा, अगम्म अथाह पर्दा लाहइंदा। एकँकारा वड भण्डारा, दर घर साचे आप वखाइंदा। आदि निरँजण कर पसारा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। श्री भगवान देवणहार हुलारा, प्रभ आपणी कार कमाइंदा। अबिनाशी करता वड बलकारा, बल आपणा आप रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सेवादारा, बण सेवक सेव कमाइंदा। सचखण्ड खोल्हे सच दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। एका नाम कर प्यारा, सच प्रीती आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप प्रगटाइंदा। साचा नाउँ श्री भगवान, आदि पुरख आप प्रगटाईआ। सति सतिवादी सत्त निशान, सत्त दुआरे दए वखाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणी कल वरताईआ। बोध अगाधी इक्क ज्ञान, हरि मन्त्र नाम पढ़ाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कान, रागी राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क दरसाईआ। साचा नाम पुरख अबिनाश, एका एक प्रगटाइंदा। आदि जुगादि वेखणहारा खेल तमाश, जुग जुग वेस वटाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पाए रास, गोपी काहन रूप वटाइंदा। रवि ससि कर प्रकाश, नूर नूर नूर दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप रखाइंदा। साचा नाउँ आपे रख, एका नाउँ दए वड्याईआ। निरगुण निराकार कर प्रतख, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। खेले खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। वस्त अमोलक एका वथ, घर साचे लए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम सिफ्त सलाहीआ। साचा नाम सिफ्त सलाह, हरि साचा सच जणाइंदा। साचा नाम सद मल्लाह, दो जहानां बेड़ा आप चलाइंदा। साचा नाम नर निरँकारा दए सिखा, साची सिख्या इक्क प्रगटाइंदा। साचा नाम विष्न ब्रह्मा शिव लए पढ़ा, संसा अवर ना कोए जणाइंदा। साचा नाम लख चुरासी दए सुणा, सो पुरख निरँजण ढोला गाइंदा। साचा नाम हँ ब्रह्म जाए समा, पारब्रह्म प्रभ पर्दा लाहइंदा। साचा नाम नाद अनादी दए वजा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाइंदा। साचा नाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आप सुणाइंदा। साचा नाउँ साचा गीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हँ ब्रह्म करे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। आदि जुगादी साची रीत, रुत्त रुत्तड़ी मात सुहाईआ। खेले खेल बैठ अतीत, त्रैभवण धनी वडी वड्याईआ। वसणहारा हस्त कीट, घट घट बैठा जोत जगाईआ। करे खेल इक्क अनडीठ, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। हरि का नाउँ सच प्रीत, प्रीतीवान प्रीत सिखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ मात धराईआ। एका नाउँ मात धर, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। एका नाम साचा वर, हरि जू हरि हरि आप समझाइंदा। एका नाउँ खोल्हे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। एका नाउँ तोड़े गढ़, बंक दुआरी कुण्डा लाहइंदा। एका नाउँ साचे मन्दिर जाए वड़, डूँग्घी कंदर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क दृढ़ाइंदा। साचा नाउँ एका मन्त्र, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म भेव जाणे अन्तर, अन्तर आत्मा वेख वखाईआ। त्रैगुण बुझाए लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त ना कोए वखाईआ। वेखणहारा गगन गगनंतर, गहर गम्भीर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क रखाईआ। साचा नाम सति सतिवाद, हरि साचा सच प्रगटाइंदा। साचा नाम आदि जुगादि, जुग जुग सेव कमाइंदा। साचा नाम आपणे विच्चों काढ, दो जहानां आप वसाइंदा। साचा नाम लख चुरासी करे लाड, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाइंदा। साचा नाम पार कराए हाद, हद हदूद ना कोए रखाइंदा। साचा नाम तन वजाए रबाब, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। साचा नाम प्याए हयात आब, आब हयात मुख चुआइंदा। हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप समझाइंदा। साचा नाउँ समझण योग, समझ विच किसे ना आईआ। साचा नाउँ चौदां लोक, लोक परलोक ढोला गाईआ। साचा नाउँ वसे साचे कोट, थिर घर आपणा आसण लाईआ। साचा नाउँ निर्मल जोत, पुरख अबिनाशी लए मिलाईआ। साचा नाउँ ना कोई वरन ना कोई गोत, बरन रूप ना कोए वखाईआ। साचा नाउँ ना कोई ममता ना कोई खोट, कूड़ी क्रिया ना कोए प्रनाईआ। साचा नाउँ इक्क अतोट, अतोट अतुट हरि रखाईआ। साचा नाउँ इक्को बहुत, बहु नाम आपणी सिफ्त सालाहीआ। साचा नाम साचा जोग, जोग जोगीशर आप रखाईआ। साचा नाम साचा भोग, भस्मड़ भोगी वेख वखाईआ। साचा नाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए समझाईआ। साचा नाम डूँग्घा सागर, नज़र किसे ना आइंदा। साचा नाम दो जहान सौदागर, लख चुरासी वणज कराइंदा। साचा नाम देवे आदर, दर आयां गले लगाइंदा। साचा नाम वड बहादर, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। साचा नाम मेल मिलाए करीम कादर, बेऐब परवरदिगार हक़ हक़ दृढ़ाइंदा। साचा नाम साचा साबर, सबर सबूरी इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप वड्याइंदा। साचा नाम साचा राम, रम्मईआ आपणा रंग वखाईआ। साचा नाम साचा शाम, बंसरी एका नाम सुणाईआ। साचा नाम सच पैग़ाम, ईसा मूसा करे पढ़ाईआ। साचा नाम सच इस्लाम, मुहम्मद इस्म दए वखाईआ। साचा नाम सच कलाम, कातब कलमा दए लिखाईआ। साचा नाम सच गुलाम, दो जहानां

फेरा पाईआ। साचा नाम सच अमाम, साचे तख्त डेरा लाईआ। साचा नाम सच निज़ाम, हुक्मी हुक्म सर्ब भुआईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क जणाईआ। साचा नाम इष्ट गुरदेव, आत्म परमात्म वेख वखाइंदा। साचा नाम अलख अभेव, अलख अगोचर खेल कराइंदा। साचा नाम सदा निहकेव, निहचल आपणा आसण लाइंदा। साचा नाम साचा मेव, अमृत फल नाउँ रखाइंदा। साचा नाउँ गीत सुणाए रसना जिहव, बत्ती दन्द मुख वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वड्याइंदा। साचा नाम वड्डा वड, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि का नाम साचा नद्द, दो जहानां रिहा सुणाईआ। हरि का नाउँ सच निशाना देवे गड्ड, श्री भगवान आप झुलाईआ। हरि का नाउँ पाए सार डूँघी खड्ड, समुंद सागर फोल फोलाईआ। हरि का नाउँ आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी नालों होए ना अड्ड, घर घर बैठा मुख छुपाईआ। हरि का नाउँ उच्चा लम्मा ना कोई कद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप उपाईआ। साचा नाम हरि भगवाना, एका एक उपाइंदा। साचा नाम दो जहानां, दोए दोए धार वखाइंदा। साचा नाम विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाना, करोड़ तेतीसा राह चलाइंदा। साचा नाम बोध अगाधा इक्क ज्ञाना, ज्ञान गुरदेव नाउँ रखाइंदा। साचा नाउँ सच तराना, तुरीआ राग सुणाइंदा। साचा नाम वड प्रधाना, सच प्रधानगी मात कमाइंदा। साचा नाम सच राजाना, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। साचा नाउँ पीणा खाणा, तृष्ना भुख मिटाइंदा। साचा नाउँ पद निरबाणा, एका घर वसाइंदा। साचा नाउँ सद रखाए आपणा भाणा, भाणा इक्को इक्क मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम आप उठाइंदा। साचा नाम उठाए आदि, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण देवे दाद, एकँकारा होए सहाईआ। आदि निरँजण रखणा याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। श्री भगवान सुणे फरयाद, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। पारब्रह्म वसे आंड गुआंड, नेरन नेरा डेरा लाईआ। स्वांगी वरते आपणा स्वांग, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप सलाहीआ। साचा नाउँ कर उज्यारा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। गुर गुर रूप कर पसारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। आत्म परमात्म इक्क अधारा, अधिआत्मक खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ गुर अवतारां झोली पाइंदा। साचा नाउँ गुर अवतार, हरि सतिगुर बूझ बुझाईआ। साचा नाउँ पीर पैग़म्बर पावे सार, पारब्रह्म प्रभ सच सरनाईआ। साचा नाउँ रहे जुग चार, जुग चौकड़ी सेवा लाईआ। साचा नाउँ चार खाणी चार बाणी, चारों कुण्ट रही जस गाईआ। गुर अवतार गायण अकथ कहाणी, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। अक्खर अक्खर बोल बाणी, बाण

निराला तीर चलाईआ। एका नाउँ सच निशानी, लोकमात रखाईआ। करे खेल पुरख सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाउँ दए वड्याईआ। साचा नाम बिन सिफ्त सलाह, सिफ्त विच कदे ना आइंदा। अक्खरी नाम कोटन कोटि रहे गा, गा गा शुकर मनाइंदा। पीर पैग़म्बर रहे ध्या, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। गुर अवतार रहे समझा, समझ विच किसे ना आइंदा। रमज़ नाल रमज़ रहे मिला, निरगुण सरगुण जोड़ जोड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी एका नाम वड्याइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। गुर गुरदेव नाम अधारा, नमो सति सति जणाईआ। चतुर्भुज पावे सारा, आदि शक्ति नूर उज्यारा, नूरो नूर नूर समाईआ। सति सतिवादी सति जैकारा, आप सुणाए एकँकारा, अकल कल वड्याईआ। हरि का नाउँ लिखण पढ़न ते वसे बाहरा, अल्फ़ ये ना कोए समझाईआ। पैंती अक्खर रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। हरि का नाउँ अन्त ना पारावारा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सिफ्ती ढोले गायण वारा, गा गा शुकर मनाईआ। तेरा रूप आदि जुगादि न्यारा, अजूनी रहित तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। अनभउ प्रकाश तेरा उज्यारा, उज्जल मुख सर्ब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग नाम जणाईआ। जुग जुग नाम एक अनेक, जुग जुग आप जणाइंदा। कलम शाही लिख लिख लेख, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। बिन नेत्र लोचण वेख, वेख वेख खुशी मनाइंदा। आदि जुगादी कर कर भेख, निरगुण सरगुण नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त नाम दान, गुण निधान आप वरताईआ। गुर अवतारां हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। अन्तर अन्तर इक्क ज्ञान, मन्त्र मन्त्र सच पढ़ाईआ। आत्म परमात्म खेल महान, महातम आपणा दए समझाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म करे कल्याण, कलमा आपणा आप जणाईआ। सजदा सीस झुकाए आण, नमो नमो नमो दए समझाईआ। साचे तख्त बैठ नौजवान, नौबत एका नाम वजाईआ। महल अटल उच्च मकान, बेमुकाम आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम साची सिफ्त जुग जुग देवे दस्त बदस्त, दस्तूर आपणा ना कदे बदलाईआ। जुग जुग नाम देवे वंड, वंडणहारा इक्क अख्वाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पाए गंढु, पल्लू आपणी गंढु रखाइंदा। खेले खेल विच वरभण्ड, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्धन एका नाम पाइंदा। एका नाम पाए बन्धन, बन्दीखाना इक्क वखाईआ। एका नाम ललाटी चन्दन, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। एका नाम सदा बख्शंदन,

बख्शिश इक्को इक्क रखाईआ। एका नाम तोड़नहारा फंधण, जगत जंजाला दए तुड़ाईआ। एका नाम मनोहर मुकंदन, लखमी नरायण वेस वटाईआ। एका नाम सूरा सरबंगण, सूरबीर आप हो जाईआ। एका नाम वसे सचखण्डण, थिर घर आपणा डेरा लाईआ। एका नाम सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पार कराए कन्ढुण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। एका नाम तेई अवतार गायण छन्दन, भगत अठारां नाल मिलाईआ। एका नाम ईसा मूसा मुहम्मद दोए दोए जोड़ मन्नण, मन मनसा ना कोए रखाईआ। एका नाम नाम सति नानक निरगुण करे परबंधण, परबंधक मिल्या सच्चा माहीआ। एका नाम गुर गोबिन्द मार्ग आए दस्सण, लख चुरासी एका घर वसाईआ। एका नाम साचा खण्डण, खड़क खण्डा आप वखाईआ। एका नाम चण्ड प्रचण्डण, चण्डकां लेखा दए गुआईआ। एका नाम टुट्टी गंढुण, गंढुणहार गोपाल गुसाँईआ। एक नाम करे खेल आत्म परमात्म देवे अनन्दन, अनन्द अनन्द इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम लए जणाईआ। एका नाउँ इक्क इकल्ला, एकँकार आप वखाईआ। एका नाउँ सच महल्ला, दरगाह साची सोभा पाईआ। एका नाम वसे जलां थल्लां, जल थल महीअल आपणा रूप वखाईआ । एका नाउँ सच संदेस घल्ला, पुरख अबिनाशी निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। एका नाउँ गुर अवतार फड़ाए पल्ला, पल्लू एका गंढु वखाईआ। एका नाम लख चुरासी अंदर वड़ वड़ होया झल्ला, बेअकल अकल ना कोए जणाईआ। एका नाउँ नौ खण्ड पृथ्मी पाए तरथल्ला, सत्तां दीपां दए हिलाईआ। एका नाउँ रूप वटाए राणी अल्ला, बिस्मिल आपणी धार चलाईआ। एका नाउँ ख़ाक विछाए धरनी धरत मुसल्ला, एका नाउँ सजदा सीस झुकाईआ। एका नाउँ परवरदिगार बेऐब खुदा नूरी नूर जोती रल्ला, जल्वा नूर नूर दरसाईआ। एका नाउँ करे सच्चा हल्ला, जुग चौकड़ी ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ दए वड्याईआ। एका नाउँ वड बलकारा, बल बावन खेल कराइंदा । एका नाउँ तेई अवतारा, दर दर वेख वखाइंदा। एका नाउँ वेद शास्त्र सिमरत दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। एका नाउँ भगत भगवान दए भण्डारा, वस्त अमोलक हथ्थ रखाइंदा। एका नाउँ सन्तां खोले बन्द किवाड़ा, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। एका नाउँ गुरमुखां अमृत देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना रस चखाइंदा। एका नाउँ गुरसिख वखाए चरन दुआरा, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। एका नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जुग करता आप वरताइंदा। एका नाउँ वणज वापारी, सतिजुग त्रेता द्वापर खेल कराईआ। एका नाउँ जोत निरँकारी, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। एका नाउँ तेज कटारी, तिक्खी धार वखाईआ। एका नाउँ गुर अवतारी, गुर गुर शब्द सलाहीआ । एका नाउँ राम कृष्न मुरारी, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप उपाईआ। एका नाउँ सच मकाना, मकबरा रूप ना कोए वटाइंदा। एका नाउँ श्री भगवाना, भगवन आपणा खेल जणाइंदा। एका नाउँ मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी मात कमाइंदा। एका नाउँ पहरे जामा, जुग जुग वेस वटाइंदा। एका नाउँ तीर कमाना, चिल्ला इक्क कमंद रखाइंदा। एका नाउँ चण्ड परंचड चमकाना, तिक्खी धार बंधाइंदा । एका नाउँ सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुरू पीर अवतार पैग़म्बर दे दे ज्ञाना, आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव खुल्हाइंदा। एका नाउँ होए मस्ताना, मस्ती इक्को इक्क जणाइंदा। एका नाउँ बन्ने गाना, सच्चा सगन मनाइंदा। एका नाउँ सखी करे परवाना, सुरत सुआणी मेल मिलाइंदा । एका नाउँ जाणी जाणा, जानणहार इक्क हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को इक्क जुग जुग लेखा दए लिख, विष्न ब्रह्मा शिव सिख्या लैण सिख, गुर अवतार पीर पैग़म्बर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नाम लेखा लिखणहारा, कलम शाही ना कोए रखाईआ। जुग जुग करे सच विहारा, बिवहारी वड वड्याईआ। नव नौ चार वेखणहारा, निरगुण दाता शहिनशाहीआ। कोटन कोटि काल करे पार किनारा, थिर नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पिछला कर्ज़ा दए उतारा, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दा सच दुआरा, लोकमात प्रगटाईआ। लख चुरासी वेखे विगसे वेखणहारा, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी बोल जैकारा, जै जैकार सुणाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, परवरदिगार अख्वाईआ। इक्को नाम नाम प्यारा, प्रेम प्यार नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका नाम दए वड्याईआ। आदि जुगादि एका नाम, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। आदि जुगादि सच पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। आदि जुगादि साचा राम, निरगुण आपणा नूर वखाइंदा। आदि जुगादि साचा शाम, घनईआ आपणी रास रचाइंदा। आदि जुगादि सच इमाम, मूसा ईसा सेव लगाइंदा। आदि जुगादि फड़ाए दाम, दामनगीर मुहम्मद इक्क वखाइंदा। आदि जुगादि सच सलाम, अलैकम आपणा भेव खुल्हाइंदा। आदि जुगादि खेल महान, दो जहानां आप कराइंदा। आदि जुगादि हक़ कलाम, चौदां तबकां आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप रखाइंदा। आदि जुगादी साचा रंग, हरि नामे नाम वखाईआ। आदि जुगादी सच पलँग, हरि साची सेज सुहाईआ। आदि जुगादी सच मृदंग, हरि मर्द मर्दाना आप वजाईआ। आदि जुगादी सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। आदि जुगादी खेल ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड करे कुड़माईआ । आदि जुगादी वसे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ। आदि जुगादी इक्को नाम देवे वंड, गुर अवतारां झोली पाईआ। आदि जुगादी

मेटे भेख भखण्ड, कूड़ी क्रिया दए गुआईआ। आदि जुगादी नाता तोड़े दुहागण रंड, जगत रंडेपा दए गुआईआ। आदि जुगादी दूई द्वैती ढाहे कंध, कन्ढा आपणा इक्क वखाईआ। आदि जुगादी सोहला ढोला गाए छन्द, विचोला बणे सच्चा माहीआ। आदि जुगादी लख चुरासी रखे बन्द, हुक्मे अंदर आप छुपाईआ। आदि जुगादी करे खण्ड खण्ड, अंग अंग दए कटाईआ। आदि जुगादी वसे विच वरभण्ड, वरभण्डी आपणा रूप वटाईआ। आदि जुगादी नूर नुराना चाढ़े चन्द, चन्द चांदनी आप रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पार गए लँघ, वेला अन्तिम सोभा पाईआ। प्रगट होया साहिब बख्शंद, बख्शिश इक्को इक्क कराईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, हरिजन साचे लए मिलाईआ। राग सुणाए बिन तन्दी तन्द, अनहद एका नाद वजाईआ। जन भगतां देवे साची मंग, नाम अमोलक झोली पाईआ। सच सरोवर नुहाए एका गंग, गंगा गंगोतरी रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणा नाउँ धराईआ। साचा नाउँ हँ ब्रह्म प्यार, सो पुरख निरँजण करे कुड़माईआ। नानक निरगुण बोल बोल जैकार, सरगुण नानक गया समझाईआ। गोबिन्द सूरा बण लिखार, अन्तिम लेखा गया लिखाईआ। मेरा भथ्था तीर कमान, सोहँ चिल्ला रूप वटाईआ। मेरा रूप निराकार, निरँकार होए सहाईआ। मेरा पिता पूत उज्यार, शब्दी सुत दए वड्याईआ। एका नाउँ करे उज्यार, दो जहानां सोहला गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, दर बैठे सीस झुकाईआ। लख चुरासी होए पनिहार, सीस सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मंगण भिखार, दर आपणे अलख जगाईआ। तेरा नाउँ वड बलकार, बल जाणे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका नाउँ आप समझाईआ। आदि अन्त नाउँ अगम्म, हरि साचा सच जणाइंदा। हरि का नाउँ ना पए जम्म, मरन विच कदे ना आइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता रूप ना कोए रखाइंदा। माया ममता ना कोए तम, तृष्ना हिरस ना कोए वधाइंदा। नक्क मूँह ना कोए कन्न, हथ्थ पैर ना कोए प्रगटाइंदा। ना कोई जननी ना कोई जन, कुक्ख बाल ना कोए बहाइंदा। खावे पीवे ना कोई पाणी अन्न, निरगुण आपणे रंग समाइंदा। करे वसेरा बिन छप्पर छन्न, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी धार वखाइंदा। एका नाम देवे दान, दो जहानां वंड वंडाइंदा। लख चुरासी बणे काहन, गोपी काहन आप प्रनाइंदा। जीव जंत दए ज्ञान, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। राती सुत्तयां मिले आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जागत सोवत आपणा खेल कराइंदा। साचा नाम कदे ना सोया, आलस विच कदे ना आईआ। आदि जुगादि कदे ना रोया, नेत्र नैण ना नीर वहाईआ। हरि का नाम भेव ना जाणे कोआ, कूक कूक रहे

कुरलाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां देवे ढोआ, धुर दरबारी लै के आईआ। हरि का नाउँ नवां नरोया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप जणाईआ। एका नाउँ अन्तिम धार, हरि साचा सच जणाइंदा। एका नाउँ जगत पसार, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। एका नाउँ सिफ्त सालाह वेद चार, चारे युग वंड वंडाइंदा। एका नाउँ चारे खाणी चारे बाणी भरे भण्डार, चार वरन आप वरताइंदा। एका नाउँ लख चुरासी सुरती वरे नार भतार, कन्त कन्तूहल सेज हंडाइंदा। एका नाउँ जुग जुग मारे मार, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। एका नाउँ सतिजुग साचे करे प्यार, धरत धवल गोद बहाइंदा। एका नाउँ कूड़ी क्रिया करे खुआर, माया ममता मोह तुड़ाइंदा। एका नाउँ सच सुच्च करे वणजार, साचा मार्ग एका लाइंदा। एका नाउँ नौ खण्ड पृथमी देवे हार, एका नाउँ गुरमुख गोदी चुक्क चुक्क बहाइंदा। एका नाउँ वसे अन्ध अन्धयार, एका नाउँ जोती जोत जोत रुशनाइंदा। एका नाउँ दोहां विचोला बण संसार, साचा ढोला आपे गाइंदा। एका नाउँ तोला तोलणहार, एका कंडा हथ्थ उठाइंदा। एका नाउँ पर्दा ओहला दए निवार, काया चोला इक्क बदलाइंदा। एका नाउँ हौला करे भार, धरनी धरत धवल वंड वंडाइंदा। एका नाउँ डोबे मँझधार, डूँघे सागर पार ना कोए कराइंदा। एका नाउँ एथे ओथे दो जहानां जाए तार, तारनहारा इक्क हो जाइंदा। एका नाउँ आपणे नाउँ रखे बेशुमार, शुमार विच
८०६ किसे ना आइंदा। एका नाउँ बणया रहे गुआर, घर घर धक्के खाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ८०६
आप आपणा भेव चुकाइंदा। एका नाम खाए धक्का, कलयुग अन्तिम दए दुहाईआ। एका नाम फिर फिर आए मदीना मक्का,
१२ हाज़ी हज़ ना कोए जणाईआ। एका नाउँ वेखणहारा भैण भाई सका, रत्ती रत्त रंग ना कोए रंगाईआ। एका नाउँ आदि १२
जुगादि करे खेल ठंडा तत्ता, अग्नी तत्त तत्त दरसाईआ। एका नाउँ देवे ब्रह्म मत्ता, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। एका नाउँ करे हेता हिता, लख चुरासी फाँसी गल लटकाईआ। एका नाउँ सच समग्री करे इकट्ठा, साची वस्त इक्क वरताईआ। एका नाउँ मूर्ख मूढ़ां अग्गे ढट्ठा, आपणा बल ना कोए जणाईआ। एका नाउँ गुरमुखां अंदर वसा, वस वस आपणी खुशी मनाईआ। एका नाउँ मनमुखां कोलों नस्सा, ना सके मुख भुवाईआ। एका नाउँ मेटे रैण अन्धेरी मस्सा, साचा चन्द करे रुशनाईआ। एका नाउँ त्रैगुण माया अंदर फसा, आपणा पर्दा ना सके उठाईआ। एका नाउँ पुरख अबिनाशी गाए जसा, जस वेद पुराण सालाहीआ। एका नाउँ पारब्रह्म ते होवे ख़फ़ा, गुस्सा आपणा आप वधाईआ। एका नाउँ सचखण्ड दवारे बह बह हस्सा, घर साचे वज्जे वधाईआ। एका नाउँ डूँग्घी कंदर ढट्ठा, मूँह आपणा बैठा भनाईआ। एका नाउँ मिल्या मेल पुरख समरथा, समरथ पुरख होए सहाईआ। एका नाउँ सत्थर घत के सुत्ता, सत्थर यार ना कोए हंढाईआ। एका

नाउँ कलयुग अन्तिम हरि जू करे प्रगटा, प्रगट आपणा नाम जणाईआ। आत्म परमात्म गाए साची कथा, कथनी कथ ना सके राईआ। ब्रह्म पारब्रह्म नाता जुड़ाया पिता पूत एका प्यार बध्धा, बन्धन इक्को इक्क रखाईआ। सो पुरख निरँजण देवे सद्दा, हँ ब्रह्म लए उठाईआ। सोहँ रूप पुरख अकाल आप जणाए आपणी मध्धा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका नाम वड्याईआ। हरि का नाउँ सोहँ रूप, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाइंदा। एका ताणा पेटा एका सूत, एका तन्दी तन्द बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र आप दृढ़ाइंदा। साचा मन्त्र ब्रह्म पारब्रह्म, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। ना कोई गोत ना कोई वरन, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। जन भगतां नेत्र खोले हरन फरन, निज फुरना दए समझाईआ। दयाल ठाकर स्वामी तरनी तरन, तारनहारा फेरा पाईआ। निहकर्मी करे आपणा कर्म, कर्मकांड दए गंवाईआ। सतिजुग सति सतिवादी इक्क वखाए धर्म, अधर्म रूप ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल साची सरन, सरनगति इक्क समझाईआ। जीव जंत साध सन्त सोहँ अक्खर एका पढ़न, पढ़ पढ़ खुशी मनाईआ। साचे पौड़े मन्दिर चढ़न, चढ़ चढ़ सोभा पाईआ। निज घर निज मन्दिर निज आत्म परमात्म मिले साची सरन, सरन मिले सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप दृढ़ाईआ। हँ ब्रह्म एका नाउँ, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। आप जणाए अगम्म अथाहो, अलख अगोचर पर्दा लाहइंदा। सच चलाए नईया नाओ, नौका इक्को इक्क रखाइंदा। अन्त सहाई पकड़े बांहों, फड़ बांहों पार कराइंदा। करे कराए सच न्याउँ, साचे तख्त आसण लाइंदा। गुरसिख गुरमुख फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ एका पिता माउं, एका गोद बहाइंदा। रसना जिह्वा गाओ नाउँ, गुर मन्त्र आप दृढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाओ, लख चुरासी फंद तुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क घर वसाओ, घर मन्दिर आप खुलाइंदा। जस कीर्तन सोहला एका गाओ, गावणहारा गीत अलाइंदा। परम पुरख पतिपरमेश्वर एका पाओ, दूजा दर ना मंगण जाइंदा। साचा नाउँ रिदे वसाओ, वसया नाउँ बाहर ना कोए कढाइंदा। अमरापद घर साचे पाओ, पद चौथे आप बहाइंदा। सुन्न अगम्म डेरा ढाओ, एका राह चलाइंदा। थिर घर बह बह खुशी मनाओ, शब्दी सुत मिलाइंदा। सचखण्ड दवारे रखो चाओ, चाओ घनेरा इक्क वखाइंदा। पुरख अबिनाशी पकड़े बांहों, जो जन सोहँ ढोला गाइंदा। कलयुग अन्तिम करे सच न्याउँ, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वखाइंदा। साचा नाम सोहँ मीत, मित्र प्यारा आप जणाईआ। काया मन्दिर अंदर मसीत, मुसल्ला हक़ हक़ विछाईआ। पीर पैग़म्बर सुणाए गीत,

एका अल्फ़ अल्फ़ पढ़ाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार भगत भगवन्त राह तक्कण ठीक, नेत्र नैण उठाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे लाशरीक, सब दी सिरक्त दए मिटाईआ। आपणे हथ्थ रखे तरीक, थित वार ना किसे समझाईआ। नैण उठाए बीसन बीस, बीस बीस जगदीस कुड़माईआ। छत्तर झुल्ले प्रभ साचे सीस, शाह सुल्तान कोए रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क हदीस, हज़रत हाज़र करे पढ़ाईआ। लेखा जाण राग छतीस, छत्ती छत्ती वंड वंडाईआ। भगत भगवन्त रख उडीक, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। अन्त निभाए सच प्रीत, प्रीतीवान फेरा पाईआ। हरि का नाउँ आदि जुगादि जुग चौकड़ी लए जीत, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी देवे दान, कलमा सुणाए बेज़बान, ज़ेर ज़बर ना कोए रखाईआ।

✳ २१ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बुग्घर सिँघ दे गृह बरगाड़ी ✳

भगत भगवान खेल महान, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। भगत भगवन्त देवे दान, नाम निधाना झोली पाइंदा। भगत भगवन्त सच निशान, सति सतिवादी इक्क वखाइंदा। भगत भगवन्त इक्क ज्ञान, बिन अक्खर आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्क मकान, दरगाह साची धाम वखाइंदा। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त इक्को रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। भगत भगवन्त इक्को सेज पलँग, सच सिँघासण सोभा पाईआ। भगत भगवन्त इक्क मृदंग, नाम निधाना आप वजाईआ। भगत भगवन्त एको संग, सगला संग रखाईआ। भगत भगवन्त इक्को मंग, प्रेम प्रीती झोली पाईआ। भगत भगवन्त इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। भगत भगवन्त एको गंढु, ना कोई खोल्ह खोल्ह खुल्हाईआ। भगत भगवन्त इक्को छन्द, सोहँ ढोला रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाईआ। भगत भगवन्त इक्क महल्ल, घर साचा इक्क सुहाइंदा। भगत भगवन्त सच स्नेहुड़ा देवे घल, बोध अगाध दृढ़ाइंदा। भगत भगवन्त आत्म परमात्म रल, ब्रह्म पारब्रह्म पर्दा आप उठाइंदा। भगत भगवन्त दूई द्वैती मेटण सल्ल, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाइंदा। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव चुकाइंदा। भगत भगवन्त एका मीत, मित्र प्यारा इक्क अख्वाईआ। भगत भगवन्त सदा अतीत, त्रैगुण पोह ना सके राईआ। भगत भगवन्त वसण दर ठांडे सीत, धुर दरबारे आसण लाईआ। भगत भगवन्त खेल अनडीठ,

८०८
१२

जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवन्त एका गाउण सुहागी गीत, सोहँ अक्खर नाउँ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। भगत भगवन्त एका संग, सगला संग निभाईआ। भगत भगवन्त इक्क दूजे दे मन्दिर जायण लँघ, लँघ लँघ आपणी खुशी मनाईआ। भगत भगवन्त निरगुण नूर प्रकाश करन साचा चन्द, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाईआ। भगत भगवन्त पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। भगत भगवन्त साची दात देवे वंड, वस्त अमोलक झोली पाईआ। भगत भगवन्त सदा बख्शंद, बख्शश एका गुण जणाईआ। भगत भगवन्त दो जहानां मेटे पन्ध, आवण जावण दए मुकाईआ। भगत भगवन्त जुग जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढु एका नाम पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त सच निशान, निरगुण सरगुण आप वखाइंदा। भगत भगवन्त गोपी काहन, साचे मंडल रास रचाइंदा। भगत भगवन्त मिल मिल गाण, साची सखी एका राग अल्लाइंदा। भगत भगवन्त कर पहचान, बेपहचान रूप वखाइंदा। भगत भगवन्त कर प्रधान, वड प्रधानगी इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, जन भगतां मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त साचा मेला, गृह मिल मिल खुशी मनाईआ। भगत भगवन्त गुरू गुर चेला, गुर गुर साथ रखाईआ। भगत भगवन्त सज्जण सुहेला, सगला संग निभाईआ। भगत भगवन्त सुहाए वेला, वार थित ना कोए रखाईआ। भगत भगवन्त लख चुरासी नालों वसे धाम निवेला, निहचल धाम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। भगत भगवन्त सच मुनारा, निरगुण सरगुण आप प्रगटाइंदा। भगत भगवन्त जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। भगत भगवन्त ठांडा दरबारा, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्क जैकारा, आत्म परमात्म ढोला गाइंदा। भगत भगवन्त इक्क सहारा, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त इक्क सितारा, बिन तन्दी तन्द वजाइंदा। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त काया चोली, बण विचोला आप रंगाईआ। भगत भगवन्त चुक्के डोली, जगत कहार ना कोए वखाईआ। भगत भगवन्त बणे गोली, बण सेवक सेव कमाईआ। भगत भगवन्त रुत्त एका मौली, रुत्त बसन्ती आप महकाईआ। भगत भगवन्त उलटी करे नाभ कौली, अमृत झिरना मुख झिराईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बन्धन पाईआ। भगत भगवन्त एका बंध, बन्दीखाना ना कोए तुड़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्क अनन्द, अनन्द मंगल इक्क सुहाइंदा। भगत भगवन्त कदे ना

८०६
१२

देवे कंड, करवट हरि ना आप बदलाइंदा। भगत भगवन्त निरगुण सरगुण चढ़ाए साचे चन्द, चन्द चांदनी रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त नेत्र पेख, निज नेत्र दए वखाईआ। भगत भगवन्त साचा हेत, नित नवित वेस वटाईआ। भगत भगवन्त खेले खेल, लख चुरासी खेल वखाईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा राह चलाईआ। भगत भगवन्त इक्को राह, रैहबर नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवन्त इक्क सलाह, सलाहगीर आप अख्वाइंदा। भगत भगवन्त इक्को नाँ, सोहँ अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्को पिता इक्को मां, पूत सपूता गोद बहाइंदा। भगत भगवन्त इक्को थाँ, थान थनंतर आप वड्याइंदा। भगत भगवन्त पकड़े बांह, फड़ बांहों गले लगाइंदा। भगत भगवन्त देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत भगवन्त हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाइंदा। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। भगत भगवन्त इक्को मीत, हरि सज्जण वड वड्याईआ। भगत भगवन्त इक्को रीत, रीतीवान इक्क हो जाईआ। भगत भगवन्त वसे इक्क मसीत, काया मन्दिर सोभा पाईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड वड्याईआ। भगत भगवन्त एका ओट, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त एका जोत, निर्मल नूर नूर वखाइंदा। भगत भगवन्त एक कोट, सचखण्ड दवार सोभा पाइंदा। भगत भगवन्त ओत पोत, पिता पूत वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त इक्क दूजे उत्ते होण मोहित, सति मुहब्बत इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका राह वखाइंदा। भगत भगवन्त डूँग्घा सागर, भेव कोए ना पाइंदा। भगत भगवन्त इक्क दूजे दा करन आदर, आदरश इक्को नज़री आइंदा। भगत भगवन्त मेला करता करीम कादर, मुरीद मुर्शद रंग चढ़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्को सबर इक्को साबर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त खोल्हे भेव, पर्दा आप उठाईआ। भगत भगवन्त सदा निहकेव, निहचल धाम डेरा लाईआ। भगत भगवन्त हँ ब्रह्म देवे साचा मेव, सो पुरख निरँजण फल खुआईआ। भगत भगवन्त वड देवी देव, देवत सुर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त सच समाज, हरि साचा सच बणाइंदा। भगत भगवन्त रच रच काज, जुगा जुगन्तर खेल कराइंदा। भगत भगवन्त मार आवाज़, निरगुण सरगुण आप उठाइंदा। भगत भगवन्त देवे दाद, नाम सति झोली पाइंदा। भगत भगवन्त चलाए जहाज़, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। भगत भगवन्त खेल ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गोद बहाइंदा। भगत भगवन्त रखे लाज, जुग

जुग आपणा वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त साजण साज, पंज तत्त काया जोड़ जुड़ाइंदा। भगत भगवन्त आत्म परमात्म सुणाए राग, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। भगत भगवन्त कन्त सुहाग, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन एका राह वखाइंदा। भगत भगवन्त सच प्यार, परम पुरख आप जणाईआ। भगत भगवन्त लेखे तोड़े नौ दुआर, नौ रस ना कोए वड्याईआ। भगत भगवन्त जगत तृष्ना देवे मार, तृष्ना लोभ ना कोए हल्काईआ। भगत भगवन्त खोल्हे बन्द किवाड़, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। भगत भगवन्त सुखमन टेढी बंक करे पार, ईड़ा पिंगल मूँह दे भार सुटाईआ। भगत भगवन्त अनहद शब्द सुणाए धुन्कार, अनहद रागी राग अल्हाईआ। भगत भगवन्त साची सख़ीआं मंगलचार, बह बह गीत गोबिन्द अल्हाईआ। भगत भगवन्त निर्मल दीआ बाती कर उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। भगत भगवन्त अमृत आत्म देवे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। भगत भगवन्त आत्म सोई परमात्म दए उठाल, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। भगत भगवन्त साचा मार्ग दए वखाल, हरि मन्दिर कर रुशनाईआ। भगत भगवन्त बण दलाल, सुन्न अगम्मी पार कराईआ। भगत भगवन्त थिर घर वखाए साचे लाल, पूत सपूता उँगली लाईआ। भगत भगवन्त सचखण्ड बहाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क जणाईआ। भगत भगवन्त नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह आपणी गोद उठाईआ। भगत भगवन्त हल्ल करे सवाल, मसला कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवन्त इक्क जलाल, नूरी जल्वा दए दरसाईआ। भगत भगवन्त इक्क मुकाम मुकामे हक़ करे रसाईआ। भगत भगवन्त इक्क पैग़ाम, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। भगत भगवन्त इक्क मकान, सच मकान इक्क वड्याईआ। भगत भगवन्त इक्क निशान, एथे ओथे दो जहान झुलाईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे लए मिलाईआ। भगत भगवन्त सच महल्ला, पुरख अबिनाशी इक्क रखाइंदा। भगत भगवन्त उच्च अटल्ला, ऊँचो ऊँच डेरा लाइंदा। भगत भगवन्त निरगुण धार निरगुण रल्ला, सरगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। भगत भगवन्त फड़ाए पल्ला, फड़या पल्लू छुट्ट ना जाइंदा। भगत भगवन्त दीपक जोती नूर नुराना आपे बला, तेल बाती ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां पैज रखाइंदा। जुग जुग भगतां पैज रख, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। पतिपरमेश्वर हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। सदा सुहेला करदा आया पक्ख, आप आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों करे वक्ख, वक्खरा आपणा राह चलाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्स, चौदां विद्या ना कोए पढ़ाईआ। लोक परलोक चरनां हेठां झस्स, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा ढाहीआ । लोआं पुरीआं पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, निरगुण आपणा बल धराईआ। भगत भगवन्त कर इकट्ठ, घर साचे करे कुड़माईआ।

८११
१२

सति सरूपी गाए जस, जस वेद पुराण ना सकण गाईआ। अन्त मिलावा नस्स नस्स, मिल मिल आपणी ख़ुशी रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, भगत भगवन्त इक्को मन्त्र अन्तर करे सच पढ़ाईआ। भगत भगवन्त इक्को मंत, मन्त्र एका नाम दृढ़ाइंदा। भगत भगवन्त इक्को बणत, निरगुण सरगुण घड़ वखाइंदा। भगत भगवन्त इक्को नार इक्को कन्त, एका सेज सुहाइंदा। भगत भगवन्त चाढ़े रंग बसन्त, मजीठी उतर कदे ना जाइंदा। भगत भगवन्त इक्को पंडत, दूसर गुरू नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवन्त सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। भगत भगवन्त पार किनारा जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता करता पुरख करनेहारा, भगत भगवन्त इक्क दुआरा, दर दरवाजा आप खुल्हाइंदा। दर दरवाज़ा हरि जू खोल्ह, भगवन भगतन आप जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तोलदा आया तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। सचखण्ड दवारे बैठा रहे अडोल, सच सिंघासण सोभा पाईआ। सति सतिवादी निॺअक्खर एका बोल, जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। धर्म दुआरा दरगाह साची एका खोल्ह, वस्त अमोलक हट्ट विकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वजाए ढोल, मृदंगा एका हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी जाए मौल, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका बन्धन पाईआ। भगत भगवन्त पूरा करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। प्रगट होए उपर धरनी धौल, धरत दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां मेल मिलाईआ। भगत भगवन्त इक्को आस, आसा आसा विच रखाइंदा। भगत भगवन्त बुझाए प्यास, तृष्ना भुख ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त जोत प्रकाश, प्रकाश इक्को नूर धराइंदा। भगत भगवन्त खेल तमाश, ख़ालक ख़लक नाच नचाइंदा। भगत भगवन्त एको रास, गोपी काहन रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त इक्को शाख़, पत डाल्ही आप महकाइंदा। भगत भगवन्त इक्को हाट, साचा हट्ट इक्क चलाइंदा। भगत भगवन्त इक्को खाट, साची खाट डेरा लाइंदा। भगत भगवन्त इक्को ज़ात, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। भगत भगवन्त इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। भगत भगवन्त साचा साथ, सतिगुर सगला संग निभाइंदा। भगत भगवन्त इक्को गाथ, गा गा शुकर मनाइंदा। भगत भगवन्त इक्को घाट, एका पत्तण डेरा लाइंदा। भगत भगवन्त इक्को माई इक्को बाप, एका पूत सपूत सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां आप तराइंदा। भगत भगवन्त तारे आप, आपणी दया कमाईआ। कोट जन्म उतारे पाप, दुरमति मैल धुआईआ। इक्क जणाए साचा जाप, ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, जुग जुग भगतां रिहा समझाईआ। जुग जुग भगतां देवे राह, एका राह जणाइंदा। नित नवित वेस वटा, निरगुण सरगुण पर्दा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे थाउँ थाँ, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल समझाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जुग जुग गेड़ा, हरि एका एक जणाईआ। नित नवित लख चुरासी निरगुण सरगुण रहे झेड़ा, झंझट सके ना कोए मुकाईआ। पंज तत्त काया वसे खेड़ा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। अन्तिम ख़ाकी ख़ाक ढाहे ढेरा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक समाईआ। बिन भगवन्त भगत कोए ना बन्ने बेड़ा, मँझधार ना पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां रिहा समझाईआ। भगत भगवन्त देवे दाद, दाता दानी आप वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रखणा याद, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम फेरा पाइंदा। सो पुरख निरँजण खेलणहारा खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणे रंग रंगाइंदा। धुरदरगाही इक्क नाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आप सुणाइंदा। भगत भगवान सुणाए राग, अनरागी आपे गाईआ। अन्तर आत्म इक्क वैराग, वैरागी आपणा भेव चुकाईआ। सृष्ट सबाई जगत त्याग, त्यागी वंड वंडाईआ। सुरत सुआणी जाए जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, पतित पुनीत कराईआ। निरगुण सरगुण बणे सज्जण साक, सगल कुटम्ब छुडाईआ। पंच विकारा करे घात, घाउ इक्को नाम लगाईआ। कलयुग अन्तिम पुच्छे बात, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। वेखणहारा कायनात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगत भगवन्त चाउ घनेरा, इक्को ओट तकाईआ। भगत भगवन्त नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। भगत भगवन्त नाता तुट्टे सन्झ सवेरा, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। भगत भगवन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां रिहा समझाईआ। सच संदेसा सुण भगत, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। आदि जुगादि तेरी शक्ति, सखशीअत तेरे हथ्थ वड्याईआ। लख चुरासी बूंद रक्त, तेरी घाड़त घड़त घड़ाईआ। आत्म परमात्म तेरी हरक्त, घट घट रिहा समाईआ। ब्रह्म सरूप तेरी बरक्त, साची वस्त इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाईआ। भगत भगवन्त करे अरज़ोई, प्रभ इक्को आस रखाईआ। कवण वेला देवें ढोई, लोकमात फेरा पाईआ। आत्म सुरती उठे सोई, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। तुध बिन जुगो जुग सदा रहे अधमोई, जीवण जुगत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला लए मिलाईआ। कवण वेला सोभावन्त, कवण घड़ी मिले वड्याईआ।

कवण थित महिमा अगणत, कथनी कथ ना सके राईआ। कवण गृह हरि मिले कन्त, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। कवण वड़याई देवे विच जीव जंत, जीवण जुगत दए समझाईआ। कवण गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता दए खपाईआ। कवण नाता तोड़े भुख नंगत, भुक्ख्यां नग्गयां अंग लगाईआ। कवण मिलाए साची संगत, सगला संग निभाईआ। इक्क तेरे दुआरे होए मंगत, दूजा दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचे घर वज्जे वधाई, गृह गृह खुशी जणाइंदा। कलयुग अन्तिम कर कुड़माई, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त वेखे थाउँ थाईं, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता एकँकारा एका वार सुणाइंदा। सच संदेसा सुण सज्जण, भगत भगवान रिहा जणाईआ। कलयुग अन्तिम आवे परदे कज्जण, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। इक्क दुआर कराए साचा मजण, दुरमति मैल दए धुआईआ। लख चुरासी भाण्डे भज्जण, घड़न भन्नणहार खेल कराईआ। जीव जंत साध सन्त तन ख़ाकी माटी चोला तजण, चोली रंग ना कोए रंगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बीर बैताले नच्चण, डौरू आपणे हथ्थ उठाईआ। मूढ़ मुग्ध अञ्याण त्रैगुण अग्नी मच्चण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। भगत भगवान घर साचे वसण, बह बह खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उठ उठ नट्ठण, बण पाँधी फेरा पाईआ। पारब्रह्म घर साचा तक्कण, नेत्र नैण उठाईआ। फिरे दुहाई मदीना मक्कण, मकबरा रूप रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला लए मिलाईआ। भगत भगवन्त दस्से हाल, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम आवे दीन दयाल, दीनन आपणा रूप वखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। लख चुरासी होए बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सब ते कूके काल, कलयुग आपणा डंक वजाइंदा। सच दिसे ना कोए मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला धर्मसाल, धर्म दुआरा ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणा भेव चुकाइंदा। भगतन हरि जू भेव चुकाउणा, बोध अगाधा करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम डेरा ढाउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पूरब लेखा पूर कराउणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। साचे मन्दिर आसण लाउणा, सिँघासण इक्को इक्क विछाईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म जणाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना तख़्तो लौहणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात शरअ शरीअत पन्ध मुकाउणा, लोकमात नज़र ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी एका नाद शब्द अगम्मी हरि वजाउणा, ब्रह्माद करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म भेव खुल्हाउणा, अनभउ प्रकाश वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर

दर दुआरे फड़ बहाउणा, एका आपणा बन्धन पाईआ। लोकमात ना किसे राह तकाउणा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। समरथ पुरख नाम अकथ इक्क चलाउणा, दो जहानां रथ वखाईआ। कूड़ी क्रिया सत्थर सथ वखाउणा, सत्थर यारड़ा इक्क वड्याईआ। भगत भगवन्त सिर हत्थ टिकाउणा, देवणहारा माण वड्याईआ। कृपानिध ठाकर स्वामी निहकर्मी हरिजन तेरा जस गाउणा, गा गा राग अल्हाईआ। तेरा मन्दिर महल अटल उच्च मीनार लोकमात प्रगटाउणा, प्रगट आपणा रंग रंगाईआ। साढे तिन्न हत्थ डेरा ढाउणा, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म कुड़माईआ। ईश जीव गंढ पुआउणा, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। सच सुगंध इक्क वखाउणा, दुर्गन्धी तन रहिण ना पाईआ। जगत घुमंडी डेरा ढाउणा, निवण सु अक्खर करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त एका सेजा सौणा, गलवकड़ी एका पाईआ। पुरख अकाल इक्क मनाउणा, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सोहँ ढोला पंज तत्त चोला रूप चढ़ाउणा, रंग रंगे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला एका घर, घर इक्को इक्क सुहाईआ। भगत मिलावा एको एक, एकँकारा दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण साची टेक, हरि पुरख निरँजण आस रखाइंदा। एकँकारा लिखणहारा लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। आदि निरँजण रिहा पेख, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा साचे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। श्री भगवान नर नरेश, शाहो भूप शहिनशाह आपणा हुक्म चलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे आदेस, दर दरवेश निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। ब्रह्म वेता ब्रह्म नेता ब्रह्म हेता ब्रह्म खेता ब्रह्म चेतन चेत्रा ना किसे जणाइंदा। आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद बोध अगाध शब्द नाद, गुरदेव मन्त्र सति सतिवाद देवे दाद, भगत भगवन्त एको राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेले आपे फड़, फड़ आपणा नाम मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त आसा पूर, पूरी आसा अन्त कराईआ। सन्त कन्त हरि हाज़र हज़ूर, एका नूर दरसाईआ। गुरमुखां पन्ध मुकाए नेड़ा दूर, दूर दुराडा भेव चुकाईआ। गुरसिखां क्रिया मेटे कूड़ो कूड़, सच सुच्च इक्क दृढ़ाईआ। किरपा निध देवणहारा चरन धूढ़, सच स्वामी मस्तक टिक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। भगतन मीता हरि करतारा, करनी आप कमाइंदा। कलयुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यारा, नज़र किसे ना आइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, दो जहानां जै जैकार आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सीस झुकाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह अन्त कोए ना आइंदा। भगत भगवान दे सहारा, नौबत वजाए नाम नगारा,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। नौबत नाम वज्जे मृदंगा, मर्द मर्दाना आप वजाईआ। साहिब सुल्तान सूरा सरबंगा, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम पार किनारा वेखे कन्ढा, दूसर भेव ना जाणे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सदा बख्शंदा, बख्शश एका एक जणाईआ। बख्शश करे हरि मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कलयुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना आप झिराईआ। रसना जिह्वा साचा गाण, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा साचा नाता, सोहँ शब्द निरगुण निरगुण कर परवान, परवाना सरगुण आप फड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग चौकड़ी आपणी खेल वखाईआ।

✳ २१ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बरगाड़ी ✳

८१६ भगत भगवान सुहाए बंक, बंक दुआरी दया कमाइंदा। भगत भगवान वखाए अंक, अन्तर बूझ बुझाइंदा। भगत भगवान देवे मंत, मन्त्र नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वखाइंदा। भगत भगवन्त निरगुण वेस, सरगुण बूझ बुझाईआ। भगत भगवन्त वसे साचे देस, देस इक्को इक्क वड्याईआ। भगत भगवन्त रहे हमेश, सदा सदा रुशनाईआ। भगत भगवन्त इक्को रेख, रेख भेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान एका नूर वखाईआ। भगत भगवान इक्को हद्द, हद्द आपणी आप जणाइंदा। भगत भगवान इक्को यद्द, जुग जुग बंस सुहाइंदा। भगत भगवान इक्को सद्द, हरि सद्दा नाम अलाइंदा। भगत भगवान इक्को मदि, प्रेम प्याला रस चखाइंदा। भगत भगवान लडाए लड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। भगत भगवान एका बस्त्र, तन माटी ख़ाक ना कोए रंगाईआ। भगत भगवान एका शस्त्र, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। भगत भगवान एका अस्त्र, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवान एका मन्त्र, मति भेद दए गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। भगत भगवान एका जोग, जुगती आपणे हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवान इक्क संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाइंदा। भगत भगवन्त इक्क रोग, दीर्घ रोग नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवन्त इक्क साची सोच, सोच अवर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान वेख वखाइंदा। भगत भगवान वेखण आया, वाहवा वज्जे सच वधाईआ। त्रैगुण झूठी मेटे माया, माया

ममता मोह तुड़ाईआ। सेवा करे वड दाई दाया, सेवक आपणा नाउँ रखाईआ। सीस जगदीस रखे छाया, छहबर आपणे नाम लगाईआ। करे कराए जो मन भाया, गुरसिख मन मनसा विच खपाईआ। आपणा तन ना कोए रखाया, तन भगत दए वड्याईआ। आपणा कन्न ना कोए जणाया, जन भगतां कन्न आपणा राग अलाईआ। आपणा बेड़ा ना कोए बन्नाया, जन भगतां बेड़ा पार कराईआ। आपणा मन्दिर ना कोए सुहाया, जन भगतां मन्दिर रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्क वड्याईआ। इक्क वड़याई हरिभगत, भगवन आप जणाइंदा। माण रखाए सृष्ट जगत, जीवन जुगत जणाइंदा। लेखे लाए बूंद रक्त, रत्ती रत्त फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी बूझ बुझाइंदा। भगत भगवान बूझे बूझ, भेव अभेद खुलाईआ। भेव चुकाए एका दूज, द्वैती रूप नज़र ना आईआ। आत्म परमात्म देवे सूझ, सच सुच्च संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण खेल निरगुण वेख वखाईआ।

८१७ ✳ २१ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बिकर सिँघ दे गृह जैतो ज़िला बठिंडा ✳ ८१७

१२ आदि जुगादी इक्क सुल्तान, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। वसणहारा सचखण्ड मकान, दरगाह साची आसण लाइंदा। सति झुलाए इक्क निशान, सो पुरख निरँजण हथ्थ उठाइंदा। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, महिमा कथ ना कोए सुणाइंदा। १२ एकँकार वड बलवान, बल आपणा आप रखाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता देवणहारा दान, दाता दानी वेस वटाइंदा। श्री भगवान खेल महान, खेलणहारा नज़र ना आइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, सच परवान हथ्थ फड़ाइंदा। सति सतिवादी सति ज्ञान, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। शाह पातशाह हरि राजन राजा, भूपत भूप वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर रच रच काजा, हरि वेखे थाउँ थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव साजन साजा, शब्दी घाड़त घड़त घड़ाईआ। त्रै पंज देवणहारा दाजा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। नाद अनादी अगम्मी वाजा, बिन तन्दी तार वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शहिनशाह इक्क वड वड्याईआ। शहिनशाह हरि निरँकारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड निवासी साचा खोल्ह दुआरा, साचे तख्त आसण लाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, शब्द सुत नाल प्यारा, अबिनाशी अचुत्त रंग चढ़ाइंदा। निरगुण निरगुण वड भण्डारा, देवणहारा

वस्त थारा, थिर घर साचे आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह आपणा हुक्म चलाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, नानक निरगुण आप जणाईआ। सच संदेसा नौजवान, नौबत आपणे नाउँ जणाईआ। मुकामे हक़ बण प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। साची वड़याई रखे हथ्थ, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। साचा मार्ग एका दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव राह चलाइंदा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, नूरो नूर डगमगाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। लख चुरासी इक्को ख्वाहिश, ख़ाली भण्डारे आप भराइंदा। कर खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग हरि हरि ला, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। लख चुरासी जोड़ जुड़ा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा बन्धन पाईआ। पंज तत्त मेला सहिज सुभा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश एका घर वसाईआ। साचा मन्दिर दए सुहा, सोहबत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा एका गाईआ। धुर संदेसा गाए गीत, गावणहारा इक्क अख्वाइंदा। सचखण्ड निवासी हरि अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। आदि चलाई एका रीत, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। वसणहारा हस्त कीट, घर

८१८ घर आपणा डेरा लाइंदा। नाम अगम्मी इक्क अनडीठ, अगम्म अगम्मड़ा आप सुणाइंदा। वसणहारा चेतन चीत, जोती जोत ८१८

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह एका हुक्म वरताइंदा। साचा हुक्म आदि जुगादि, जुग करता आप वरताईआ।

१२ साचा हुक्म अगम्मी नाद, नर निरँकारा आप सुणाईआ। साचा हुक्म बोध अगाध, लिखण पढ़न विच ना आईआ। खेले १२

खेल विच ब्रह्माद, पारब्रह्म आपणी बूझ बुझाईआ। साचा हुक्म लोआं पुरीआं देवे दाद, सूरज चन्द चन्द समझाईआ। साचा हुक्म सच निशाना देवे गाड, दो जहानां आप झुलाईआ। साचा हुक्म जुग जुग लडाए लाड, आप आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म आदि निरँजण, आदि आदि जणाइंदा। करे खेल दर्द दुःख भय भञ्जण, भय भओ आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी बण बण सज्जण, सगला संग निभाइंदा। आत्म परमात्म एका मजण, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण मार्ग आए दस्सण, भेव अभेद खुल्लाइंदा। पंज तत्त काया आए वसण, सच वसेरा इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह आपणा रंग वखाइंदा। शहिनशाह हरि साचा रंग, रंग रंगीला आप वखाईआ। आपे डोर आप पतंग, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। आपे नाद आप मृदंग, आपे सोहला रिहा गाईआ। आपे सूरबीर सरबंग, बल आपणा आप वखाईआ।

आपे वसणहारा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। आपे चारे खाणी सुणाए छन्द, चारे बाणी राग अलाईआ। आपे जाणे परमानंद, परम पुरख वडी वड्याईआ। आपे नाम ख़जाना देवे वंड, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे चले हुक्म रज़ाईआ। साचा हुक्म एका एक, एकँकारा आप जणाइंदा। जुगा जुगन्तर साची टेक, दो जहानां आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बदले भेख, भेखी आपणा रूप वटाइंदा। ना कोई रूप रंग ना दिसे रेख, रेखा सब दी आप बदलाइंदा। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, सीस जगदीस ना कोए मुंडाइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, धुर फ़रमाणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कराइंदा। हुक्मे अंदर साची कार, हरि करता आप कमाईआ। हुक्मे अंदर खेल जुग चार, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार, गुर शब्दी नाउँ वड्याईआ। हुक्मे अंदर बोल जैकार, नाउँ निरँकारा दए समझाईआ। हुक्मे अंदर खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। हुक्मे अंदर महल अटल लए उसार, ऊँचो ऊँच आसण लाईआ। हुक्मे अंदर जल थल महीअल पावे सार, हुक्मे अंदर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर रिहा समाईआ। हुक्मे अंदर लख चुरासी काया चोला देवे पाड़, हुक्मे अंदर लख चुरासी रिहा उपाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, प्रकाशवान सर्ब लोकाईआ। हुक्मे अंदर बण बण दासी दास, सेवक सेवा सच कमाईआ । हुक्मे अंदर जुग जुग रखे आस, निरासा आपणी आप प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर शहिनशाह शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा हुक्म चलाईआ। हुक्मे अंदर पावे रास, गोपी काहन नचाईआ। हुक्मे अंदर वासा दस दस मास, मात गर्भ सेज हंढाईआ। हुक्मे अंदर खेल पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर रिहा समाईआ। हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। हुक्मे अंदर करनी करता करे करतारा, कुदरत कादर खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण धारा, सरगुण आपणा रंग वखाइंदा। हुक्मे अंदर गुर अवतारा, गुर गुर बूझ बुझाइंदा। हुक्मे अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वारा, कलयुग आप हंढाइंदा। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत लेखा जाणे वेद चारा, पुराण पुराणा नाल पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर गीता ज्ञान बोल जैकारा, इक्क अठ जोड़ जुड़ाइंदा। हुक्मे अंदर अञ्जील कुराना दए सहारा, तीस बतीसा सोहला गाइंदा। हुक्मे अंदर खाणी बाणी बोल जैकारा, जै जैकार आपणा नाउँ वड्याइंदा। हुक्मे अंदर तेई अवतारा, त्रैगुण अतीता राह चलाइंदा। हुक्मे अंदर भगत अठारां, भगवन भगती आपणी लाइंदा। हुक्मे अंदर ईसा मूसा मुहम्मद दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा । हुक्मे अंदर हो उज्यारा, मुकामे हक़ नूरो नूर प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर लाशरीक परवरदिगारा, नबी रसूल आप पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर कातब बणे सच

लिखारा, लिख लिख लेखा आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर खोल्हे सचखण्ड दवारा, सचखण्ड निवासी आपणा आसण लाइंदा। हुक्मे अंदर नानक निरगुण दए आधारा, अधर उदर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। हुक्मे अंदर निर्मल जोत, जोती जोत जगाईआ। हुक्मे अंदर किला कोट, बंक बंक सुहाईआ। हुक्मे अंदर ओत पोत, पिता पूत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। हुक्मे अंदर गोबिन्द धार, गुर गुर आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर शब्द जैकार, जै जैकार अलाइंदा। हुक्मे अंदर पावे सार, महांसारथी खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर हो त्यार, त्रैभवन खोज खोजाइंदा। हुक्मे अंदर अवन गवन भर अपार, लोक परलोक डेरा ढाहइंदा। हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर आपा रख, आपणा खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर हो प्रतख, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। हुक्मे अंदर बोल अलख, अलख अलख आप सुणाइंदा। हुक्मे अंदर हो हो वक्ख, वक्खरा धाम वड्याइंदा। हुक्मे अंदर गाए जस्स, खाणी बाणी सिफ्त सलाहइंदा। हुक्मे अंदर जाए नस्स, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। हुक्मे अंदर तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। हुक्मे अंदर मार्ग दस्स, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणा राह वखाइंदा। हुक्मे अंदर मेटे रैण अन्धेरी मस्स, जगत अन्धेर दूर कराइंदा। हुक्मे अंदर चलाए मग पन्थ, हुक्मे तन्द बंधाइंदा। हुक्मे अंदर लाए त्रैगुण अग्ग, हुक्मे अंदर अमृत मेघ बरसाइंदा। हुक्मे अंदर हँस बणाए कग्ग, कागों हँस उडाइंदा। हुक्मे अंदर दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा रूप दरसाइंदा। हुक्मे अंदर प्रगट होवे जग, जागरत जोत जोत जगाइंदा। हुक्मे अंदर भगत भगवान लए सद्द, सद्दा एका नाम दुआइंदा। हुक्मे अंदर वरन बरन ज़ात पात बणाए हद्द, हुक्मे अंदर तोड़ तुड़ाइंदा। हुक्मे अंदर विष्नूं यद, विश्व आपणा खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर कूड़ी क्रिया देवे दब्ब, हुक्मे अंदर सच सुच्च वड्याइंदा। हुक्मे अंदर लोकमात लख चुरासी नाता देवे छड्ड, हुक्मे अंदर दो जहानां वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पार करी हद्द, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर मनमुख सुट्टे डूँघी खड्ड, मँझधार आप रुढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर गुरमुख साचे गोदी चक्क, चक्क चक्क खुशी मनाइंदा। हुक्मे अंदर रखणहारा पत, जन भगतां पैज बढाइंदा। हुक्मे अंदर देवे साची वथ, आत्म परमात्म नाम जपाइंदा। हुक्मे अंदर लेखे लाए रत्ती रत्त, रत्त आपणे रंग रंगाइंदा। हुक्मे अंदर देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर धीरज जत, सति सन्तोख गंढु रखाइंदा। हुक्मे अंदर चलाए मनमति, माया ममता लोभ मोह हँकार काम क्रोध अंग लगाइंदा। हुक्मे अंदर बोध अगाध महिमा अकथ, गीत सुहागी

आप सुणाइंदा। हुक्मे अंदर जुग जुग चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर जन भगतां अग्गे जाए ढट्ठ, आपणा बल ना कोए जणाइंदा। हुक्मे अंदर लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर गुरदवार मन्दिर शिवदुआले मट्ठ, मस्जिद आपणा रूप वटाइंदा। हुक्मे अंदर वेखणहारा तीर्थ तट, किनारा एका घाट रखाइंदा। हुक्मे अंदर खोल्ह हट्ट, साचा नाम वणज कराइंदा। हुक्मे अंदर खेल करे पुरख समरथ, समरथ आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म एकँकार, एका वार जणाईआ। जुग चौकड़ी करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेवा करन वारो वार, बण सेवक सेव कमाईआ। नाम निधाना सच भण्डार, जीवां जंतां जगत वरताईआ। लिख लिख ब्यान सच निशान, हरि सिफ्ती सिफ्त सुणाईआ। कलम शाही कर परवान, कागद अंग अंग मिलाईआ। नेत्र पेख जगत ज़बान, बत्ती दन्द करे कुड़माईआ। बुद्धि बणाए जगत विधान, विदित एका घर वखाईआ। मति मतवाली होए हैरान, भेव कोए ना आईआ। मन वासना बणे शैतान, शरअ शरअ रूप वटाईआ। सच संदेसा देवे हुक्मरान, हाकम आपणा हुक्म जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुक्के विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैग़म्बर पंज तत्त काया चोला सर्ब हंढाण, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। सचखण्ड दवारे बण भिखारे बह बह मंगणदान, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। देवणहारा गुण निधान, एका वस्त रिहा वरताईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बणया रिहा नादान, आपणा बल ना किसे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वखाईआ। साचा हुक्म इक्क अटल्ल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। साचा हुक्म ना कोई करे वल छल, अछल छल ना कोए वखाइंदा। साचा हुक्म ना जाए हल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। साचा हुक्म धुर दा बल, बल आपणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे दे मन्त्र, मन्त्र आपणा हुक्म जणाइंदा। मन्त्र नाम सच फ़रमाणा, अन्तर करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, सच प्रधानगी इक्क कमाईआ। लख चुरासी साचा राणा, रहिमत आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए रूप वखाईआ। निरगुण सरगुण पहरे बाणा, गुर अवतार दए वड्याईआ। बिन अक्खर गाए गाणा, गा गा गाणा अक्खर रूप वटाईआ। खेले खेल मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ चौकीदार, चौकस चार कुण्ट वखाइंदा। सच संदेसा गुर अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव सिफ्त सलाहइंदा। पीर पैग़म्बर कर पुकार, कलमा नबी रसूल पढ़ाइंदा। हक़ हक़ीक़त करे वीचार,

लाशरीक शरीकत अवर ना कोए रखाइंदा। नूर नुराना परवरदिगार, पर्दानसीं मुख नक़ाब पर्दा लाहइंदा। दो जहानां पावे सार, मुर्शद मुरीद दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। कलयुग वेखे वेखणहार, पेखत पेखत आपणा नैण खुल्हाइंदा। एका हुक्म धुर दरबार, धुर दरबारी आप मनाइंदा। साचे तख़्त बैठ सच्ची सरकार, सच संदेसा इक्क जणाइंदा। चार जुग दे विछड़े यार, फड़ बांहों आप मिलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर इकट्ठे कीते एका वार, एकँकारा हुक्म जणाइंदा। नेत्र वेखो खोल्ह उग्घाड़, अक्ख प्रतख रूप जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी अग्नी लग्गी तत्ती हाढ़, शीतल धार ना कोए वहाइंदा। दीन मज़्हब लग्गा अखाड़, ज़ात पात नाच नचाइंदा। फिरी दरोही बहत्तर नाड़, सोई सुरती ना कोए उठाइंदा। काया खेड़ा दिसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चा टिल्ला पर्बत सोभा कोए ना पाइंदा। नाता तुट्टा पुरख नार, लख चुरासी होई विभचार, साचा कन्त ना कोए हंढाइंदा। गुर का शब्द ना कोए प्यार, सजदा झुके ना परवरदिगार, आत्म मेल ना कोए राम, परमात्म गंढु ना कोए पुआइंदा। ख़लक खुदाई होई गुलाम, पंज शैतान लाया अलजाम, साध सन्त होए बदनाम, काया चोला ना कोए बदलाइंदा। इस्म आज़म ना कोए कलाम, मन्त्र नज़र ना आए सतिनाम, चतुर्भुज ना वेस वटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होई हैरान, चारों कुण्ट झूठ निशान, कलयुग आपणा डौरू वाइंदा। पुरख अबिनाशी साचा हुक्मरान, सचखण्ड दवारे बैठा वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम विगड़ गया निज़ाम, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बन्धन कोए ना पाइंदा। अन्तिम नाता छड्ड गए तमाम, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां कोए ना दए पैग़ाम, अनहद्द धुंन ना कोए सुणाइंदा। सुरत सुआणी सीता छुटया राम, रम्मईआ अंग ना कोए लगाइंदा। नज़र ना आए घनईआ शाम, राधा बंसरी ना कोए वजाइंदा। ईसा मूसा ना कोए सुणाए कलाम, कलमा कायनात ना कोए पढ़ाइंदा। मुहम्मद नेत्र नैण शरमाण, सदी चौधवीं मुख ना कोए उठाइंदा। चार यार होए बेईमान, सगला संग ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताइंदा। हुक्मे अंदर खेल अवल्ला, सो पुरख निरजंण आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतारां पीर पैग़म्बर फड़ाउँदा रिहा पल्ला, नाम आपणी गंढु वखाइंदा। कलयुग अन्तिम सच संदेस एका घल्ला, लेखा सब दा आपणे लेखे लाइंदा। आपे वेखणहारा राणी अल्ला, आलमीन आप हो जाइंदा। आपे खेले खेल हो बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी धार जणाइंदा। आपे तीर कमान चढ़ाए चिल्ला, सच निशाना आपे लाइंदा। आपे वेखे उच्चा टिल्ला, डूँग्घी कंदर आपे डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर अन्त कन्त भगवन्त, लेखा सर्ब मुकाइंदा। हुक्मे अंदर कलयुग कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। हुक्मे अंदर

जन भगतां आसा मनसा करे पूर, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। हुक्मे अंदर देवे सति सरूर, रस एका रस चखाईआ। हुक्मे अंदर पन्ध मुकाए नेड़े दूर, आत्म परमात्म एका घर वखाईआ। हुक्मे अंदर हाज़र होए हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर आपणा भाणा वरते ज़रूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हुक्मे अंदर लख चुरासी तोड़े ग़रूर, गुरबत कोए रहिण ना पाईआ। हुक्मे अंदर माफ करे सर्ब कसूर, जो जन ढह पए सरनाईआ। हुक्मे अंदर आवे जावे सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर खेल रखाईआ। हुक्मे अंदर रखी तांघ, गुर अवतार ध्यान लगाइंदा। हुक्मे अंदर स्वांगी वरते आपणा स्वांग, नटुआ आपणा नाच नचाइंदा। हुक्मे अंदर मंगे मांग, मंगणहारा आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म आपणा नाउँ वड्याइंदा। हरि का नाउँ वड्डा वड, सतिगुर आप प्रगटाईआ। आदि जुगादी इक्को नद, राग अनराग सुणाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर युग चौकड़ी गए लद्द, सरगुण सेवा मात कमाईआ। कलयुग अन्तिम आई हद्द, पार किनारा दए वखाईआ। भगत भगवन्त लए सद्द, रातीं सुत्तयां आप उठाईआ। पुरख पुरखोतम लडाए लड्ड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचा नाउँ एका दस्स, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म होए वस, पर्दा दए उठाईआ। निरगुण करे निरगुण जस, सरगुण देवे मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका हुक्म रिहा जणाईआ। एका हुक्म साचा डंका, हरि सज्जण आप वजाइंदा। आप उठाए राउ रंका, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। नव नौ चार कढ्डणहारा शंका, संसा रूप ना कोए वखाइंदा। लख चुरासी साचा कन्ता, कन्त कन्तूहल फेरा पाइंदा। सतिजुग बणाए साची बणता, साचा मार्ग आपे लाइंदा। हरिजन उठाए साचे सन्ता, सति सतिवादी पर्दा लाहइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगता, हँ ब्रह्म इक्क वखाइंदा। मेल मिलावा साची संगता, संगल शरअ ना कोए रखाइंदा। काया चोली आपे रंगदा, रंग मजीठी इक्क रंगाइंदा। बांहों फड़ उठाए भुखा नंगता, भुक्ख्यां भुख आप गवाइंदा। एका नाम एका मंता, मन्त्र इक्को इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर पिछला लहिणा आपणे लेखे पाइंदा। हुक्मे अंदर लेखे जाए लग्ग, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। सन्त साजण लए रख, गुरमुखां देवे माण वड्याईआ। लख चुरासी सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, त्रैगुण नाता जोड़ जुड़ाईआ। जगत दुआरे वेख इकट्ठ, नौ खण्ड पृथ्मी धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणी करनी आप कमाईआ। हुक्मे अंदर करनी करतार, हरि करता

आप कराइंदा। हुक्मे अंदर मारे मार, मूर्ख मूँह दे भार सुटाइंदा। हुक्मे अंदर गेड़ा लख चुरासी वारो वार, जुग चौकड़ी आप भुवाइंदा। हुक्मे अंदर राए धर्म करे खुआर, हुक्मे अंदर चित्रगुप्त सेव कमाइंदा। हुक्मे अंदर लाड़ी मौत करे शंगार, सीस मींढी जगदीस गुंदाइंदा। हुक्मे अंदर जन भगत लए उधार, अन्तर आत्म मेल मिलाइंदा। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी करे पार, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। हुक्मे अंदर सोहँ शब्द कर जैकार, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। चार वरन दए आधार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। सोहँ मन्त्र आदि अन्त, अन्तर अन्तरीव जणाईआ। लख चुरासी जुगा जुगन्तर, हं रूप वखाईआ। सो साहिब वसणहारा गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। हँ ब्रह्म बणाए बणतर, घड़न भन्नणहार अख्वाईआ। गुरमुख विरला भेव जाणे निरंतर, निज नेत्र दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुणाए सोहँ ढोला, शब्दी गुर बण विचोला, रौला अवर ना कोए पाईआ। शब्द विचोला आप प्रभ, गुर गुर नाउँ रखाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लभ्भ, आप आपणा मेल मिलाइंदा। अमृत झिरना झिराय कँवल नभ, रस रसीआ इक्क वखाइंदा। नौ दुआरे पार हद्द, डूँघी भँवरी पार कराइंदा। शब्द अनाद वज्जे अनहद, पंचम सख़ीआं बह बह मंगल गाइंदा। आत्म परमात्म इक्क दुआरे सद्द, सदके वारी घोली घोल घुमाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा हो के अड्ड, कलयुग अन्तिम भगतां विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, देवणहारा धुर फ़रमान, सति संदेसा नर नरेशा एकँकारा कर पसारा विच संसार सोहँ धारा लख चुरासी करे कुड़माईआ।

सतिजुग चले सच विहारा, एका मन्दिर एक गुरुदुआरा, गुरदेव इष्ट इक्क जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लख चुरासी लाए नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, परवरदिगार ख़ुदाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मेल मिलाए इक्क दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। ऊँचां नीचां करे प्यारा, राउ रंकां दए सहारा, कीट कीटां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर लख चुरासी सृष्ट सबाई जीव जंत साध सन्त भगत भगवन्त इक्क वखाए सच्चा घर, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। आवण जावण जन्म मरन भय भओ चुक्के डर, भयानक रूप ना कोए रखाईआ। नव नौ चार चार पंज दो एका अक्खर जायण पढ़,

आख़र आपणी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर देवणहारा साचा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर किरपा होए पार, बेड़ा मात रुढ़न ना पाईआ। गुर का शब्द दए अधार, धीरज धीर रखाईआ। सुरत सुआणी करे प्यार, घर मेला कन्त सहिज सुखदाईआ। जगत दुखड़ा दए निवार, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। आसा ममता माया ममता तोड़े गढ़ हँकार, हउमे बल रहिण ना पाईआ। साची संगता मेल विच संसार, साचा संग दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। सतिगुर पूरा होए मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। साचा देवे नाम निधान, निज आत्म रस चखाइंदा। जूठ झूठ सर्ब मिट जाण, कूड़ी क्रिया मोह तुड़ाइंदा। एथे ओथे करे पहिचाण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जो जन सतिगुर चरनी डिगे आण, फड़ बांहों पार कराइंदा। लेखा जाणे बिरध बाल, जुआन मात गर्भ फंद कटाइंदा। सतिगुर पूरा वड बलवान, दो जहानां बल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल्याण आप जणाइंदा। सतिगुर साचे मिले सरन, सरनगति समझाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र रूप दरसाईआ। नाता तुट्टे मरन डरन, दुःख दर्द ना लागे राईआ। त्रैगुण माया मूल ना सड़न, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। अद्धविचकार कदे ना अड़न, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। साचे पौड़े अन्तिम चढ़न, चढ़ चढ़ खुशी मनाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा निरगुण दाता पुरख बिधाता अग्गों आए फड़न, सरगुण आपणी उँगली लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। सतिगुर पूरा खोल्हे हट्ट, इक्को नाम विकाइंदा। जन्म जन्म दा दुखड़ा देवे कट, तिक्खी छुरी हत्थ रखाइंदा। दूई द्वैती मेटे फट्ट, पट्टी इक्को नाम बंधाइंदा। भरम भुलेखा कढ्ढे वट्ट, दूजी हद्द ना कोए जणाइंदा। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, भय भओ ना कोए वखाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, दुखियां दर्द दर्द गुआइंदा। गुरमुखां पूरी करे आस, घर एका मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ करे पाश पाश, पासा गुरसिख आप उलटाइंदा। अठ्ठे पहर पावे रास, घर मन्दिर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार तोड़े नाता, नित आपणा खेल कराइंदा। करे वेस पुरख बिधाता, बिध आपणे हत्थ रखाइंदा। नाम निधान नौजवान सुणाए गाथा, गहर गम्भीर आप पढ़ाइंदा। खोल्हणहारा बन्द किवाड़ी ताका, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। आप सुणाए आपणा साका, दूजी साखी ना कोए सुणाइंदा। लेखे लाए पंज तत्त माटी ख़ाका, खाली भाण्डा आप भराइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी किसे हत्थ ना आए गल्लीं बाता, गलवकड़ी गुरमुख विरला पाइंदा। सदा सहाई देवणहार निजाता, निज आत्म मेल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया

८२५
१२

जूठ झूठ सुट्टे डूँग्घे खाता, खाता फेर ना कोए खुल्हाइंदा। कर किरपा जिस मेटे अन्धेरी राता, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पुच्छे वाता, लख चुरासी जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा एका हरि, जुग जुग बन्धन मात कटाइंदा। दुःख दर्द दलिद्दर जाए नट्ठ, काम क्रोध ना कोए लड़ाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा, शब्द अगम्मी मारे सट्ट, ठोकर नाम लगाईआ। दुरमति मैल देवे कट, निर्मल जोत कर प्रगट, पारखू आपणी परख दए वखाईआ। जानणहारा मित गत, लेखे लाए रत्ती रत्त, रुत्ती रुत्त आप महकाईआ। कूड़ी क्रिया जड़्ह देवे पट्ट, नाम कुहाढ़ा हथ्थ उठाईआ। कर किरपा मिले जिउँ धन्ने जट्ट, जट्ट जट्टां लए उठाईआ। गुरमुख लाहा रहे खट्ट, मनमुख बैठे मुख भुआईआ। हरि का नाम सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। इक्क लख अस्सी हज़ार, भूत बेताल करे वस, नानक गोबिन्द दए सलाईआ। छोटे बाले मार्ग गए दस्स, आपणे आप नीहां हेठ चिणाईआ। जिस साहिब होए वस, तिस काल महांकाल नेड़ ना आईआ। गुरमुख पूरा गुर चरनी जाए वस, दु:ख दर्द ना लागे राईआ। पुरख अकाल आपणी गोदी चुक्के हस्स हस्स, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख दर्द फड़ नाम करद कुतरा कुतरा कुतरा दए कराईआ।

✳ २१ भाद्रों २०१६ बिक्रमी हरचन्द सिँघ दे गृह हररायपुर ज़िला बठिंडा ✳

सो पुरख निरँजण गहर गम्भीर, आदि अन्त खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण चोटी चढ़ अख़ीर, आख़र आपणे हथ्थ रखाइंदा। एकँकारा वड पीरन पीर, दस्तगीर नाउँ धराइंदा। आदि निरँजण जुगा जुगन्तर बन्न्हे बीड़, बन्धन एका नाम पाइंदा। अबिनाशी करता निरगुण सरगुण निष्अक्खर वखाए बिन लकीर, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान दो जहानां घत वहीर, गृह मन्दिर फोल फोलाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द निराला मारे तीर, अणयाला आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, आदि जुगादि कराईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। शब्द अगम्मी मार्ग दस्स, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। पंज तत्त काया अंदर वस, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला हस्स हस्स, घर साचे वज्जे वधाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वारो वारा,

नित नवित वेस वटाइंदा। वसणहारा ठांडे दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी चौकड़ी जुग, जुग करता आप कराईआ। सरगुण अंदर निरगुण लुक, लुक लुक मुख छुपाईआ। खेले खेल अबिनाशी अचुत्त, भेव कोए ना राईआ। देवे माण शब्दी सुत, सुत शब्द दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बहाए कुक्ख, बणे धन्न जणेदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। साची करनी सुत दुलारा, हरि शब्दी धार चलाइंदा। निरगुण सरगुण कर पसारा, लख चुरासी वेख वखाइंदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश पंज तत्त अखाड़ा, त्रैगुण आपणा नाच नचाइंदा। जुगा जुगन्तर वेखे विगसे वारो वारा, रूप अनूप आप धराइंदा। नाम निधान बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। गुर अवतारां दे सहारा, पीर पैग़म्बरां राह जणाइंदा। भगत भगवन्त खोल्ह किवाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल रचाइंदा। जुग जुग खेल हरि अवल्ला, एकँकारा आप रचाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, एका बन्धन पाईआ। पीर पैग़म्बर सच संदेस एका घल्ला, गुर गुर करे नाम पढ़ाईआ। जोती जाता जोती रला, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता बेपरवाहीआ। जुग करता हरि आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटाईआ। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। बोध अगाधा एका नाद, त्रैभवन धनी आप सुणाईआ। सरगुण रखणहारा लाज, निरगुण आपणी दया कमाईआ। भगत भगवन्त मार अवाज़, सुरती शब्द लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करनी आप कराईआ। जुग जुग करनी करता खेल, करनेहारा आप कराइंदा। आत्म परमात्म मेला मेल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। करे प्रकाश बिन बाती तेल, जोत निरँजण डगमगाइंदा। सतिगुर मिले सज्जण सुहेल, सगला दुःख वंडाइंदा। अचरज करे आपणी खेल, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका नाद, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाइंदा। शब्द अनाद अगम्म अथाह, बेपरवाह आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मार्ग ला, लख चुरासी धन्दे लाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ा, कलमा नबी रसूल सिखाईआ। मन्त्र नमो सति सतिनाम आप दृढ़ा, दृष्ट इक्क लए प्रगटाईआ। आत्म परमात्म पर्दा दए चुका, दूई द्वैत रहे ना राईआ। निझर झिरना अमृत रस साचा अमृत दए प्या, तृष्ना भुख गंवाईआ। दीआ बाती कमलापाती गृह मन्दिर दए जगा, साढे तिन्न हथ्थ करे रुशनाईआ। अनहद नादी नाद सुणा, साची सखीआं एका मंगल

गाईआ। आत्म सेजा होए सहा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। भगत भगवन्त होए सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। करे खेल बेपरवाह, दूजा संग ना कोए रखाईआ। मुरीद मुर्शद लए उठा, कलमा कलाम इक्क सुणाईआ। रहिमत रहीम रहिमान इक्क इकल्ला इक्क खुदा, खुदी सब दी दए गंवाईआ। पीर पैग़म्बर कर फिदा, फितरत आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा वजूद ना दस्से कोई जुदा, जज़्व अंग ना कोए बणाईआ। मुकामे हक़ डेरा ला, परवरदिगार खेल कराईआ। सही सलामत शहिनशाह, जन्म मरन विच ना आईआ। जुग चौकड़ी पन्ध दए मुका, कलयुग अन्तिम वेखे थाउँ थाईंआ। चौदां तबक दए हिला, चौदां सदीआं दए हिलाईआ। चौदां विद्या देवे पन्ध मुका, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। एका चौका बंधण पा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। चार यारी लए जगा, मुहम्मद एका अक्ख खुल्हाईआ। ईसा मूसा लए समझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, आपणी कार आप कराईआ। करे कार अन्तिम कल, हरि अचरज खेल कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, महल्ल इक्को इक्क सुहाइंदा। जुग चौकड़ी करदा आया वल छल, अछल अछल भेव ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मात घल्ल, सच संदेसा नाम पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल आदि अन्त, जुग चौकड़ी आप कराईआ। करे

८२८ खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार बंधाईआ। वेखणहारा जुगा जुगन्त, निरगुण सरगुण सच्चा शहिनशाहीआ। जोती ८२८

१२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म श्री भगवान, १२

निरगुण नर हरि आप जणाइंदा। परम पुरख हो प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाइंदा। इक्क वखाए सच निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे मार ध्यान, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। चार वरन प्या झेड़ा शरअ शैतान, शरीअत सके ना कोए मुकाईआ। दीन मज़्ह्ब नेत्र रोवण नीर वहान, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सति सतिवादी आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ईश जीव ना मिले किसे भगवान, भावी देवे ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करनी वेख वखाईआ। जग करनी नाता कूड़, सच सुच्च नज़र ना आइंदा। पुरख अबिनाशी सब तों होया दूर, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। ज़ात पात राउ रंक ऊँच नीच मनमति भरया ग़रूर, गुरमति ना कोए रखाइंदा। हरि सरन ना मिले साची धूढ़, मस्तक टिक्का ना कोए लाइंदा। सुघड़ सयाणे होए मूर्ख मूढ़, माया ममता मोह हल्काइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे चूर चूर, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, कलयुग अन्तिम करनी वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम करनी रही कूक, चार कुण्ट दए दुहाईआ। त्रैगुण माया रही फूक, सांतक सति ना कोए कराईआ। घर घर वड़या जूठ झूठ, मन्दिर मस्जिद ना कोए वड्याईआ। नाता तुट्टा पिता पूत, साक सैण कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करनी वेखे थाउँ थाईंआ। जुग करनी वेखे कलयुग अन्त, अन्तरजामी खेल कराइंदा। जीव जंत भुल्ले गुरमंत, मन्त्र गुर ना कोए दृढ़ाइंदा। नाता तुट्टा नारी कन्त, सच सुहञ्जणी सेज ना कोए हंढाइंदा। काया चोली चढ़े ना रंग बसन्त, दुरमति मैल ना कोए धुआइंदा। माया ममता पई बेअन्त, दूई पर्दा ना कोए उठाइंदा। भरमे भुल्ले जीव जंत, ज़ात पात दीन मज़्हब पन्ध ना कोए मुकाइंदा। हरि सरन सरनाई मिले ना साची संगत, संसा रोग ना कोए गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी वेख वखाइंदा। साची करनी कलयुग धार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, सति धर्म ना कोए रखाईआ। धीआं भैणां तक्कण गुरदर मन्दिर नैण उग्घाड़, निवस सो अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म ना देवे कोए आधार, सांतक सति ना कोए कराईआ। गुर चेले रोवण ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बिन गोबिन्द बेड़ा कोए ना करे पार, पुरख अकाल ना कोए मिलाईआ। नानक निरगुण बोल जैकार, सति सति गया समझाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को यार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाईआ। एथे ओथे दो जहान पावे सार, साहिब समरथ बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणे लए उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धयार, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मारे मार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। ब्रह्मण्डां सुणाए इक्क जैकार, जै जैकार आपणा नाउँ अल्लाईआ। जेरज अंडां दए अधार, उत्भुज सेत्ज होए सहाईआ। चारे खाणी वेखणहार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा राग अल्लाईआ। चौथे पद हो त्यार, जगत हद्द पार कराईआ। गुरमुख सज्जण सद दुआर, सदके घोली वार आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करनी वेखे बेपरवाहीआ। जुग करनी कलयुग कूड़ी रास, वस्त सच ना कोए रखाईआ। लख चुरासी अन्त निरास, निराकार नज़र ना आईआ। ना कोई करे बन्द खुलास, बन्दीखाना ना कोए तुड़ाईआ। लहिणा चुक्के ना दस दस मास, मात गर्भ ना कोए सहाईआ। आत्म परमात्म ना कोए धरवास, पर्दा दूई ना कोए उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वसे ना पास, जगत विछोड़ा रिहा कुरलाईआ। हरि का नाम जपे ना कोए रसन स्वास, रसना रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम करनी वेखे बेपरवाहीआ। कलयुग करनी धरया बल, बल आपणा आप जणाईआ। कूड़ कूड़यारे अंदर गई रल, नज़र किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई

करया छल, माया एका पर्दा पाईआ। गुरमुख विरला कोए प्रबल, जिस परम पुरख दया कमाईआ। साध सन्त गए हल्ल, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी क्रिया अन्तिम फल, इक्को इक्क जणाईआ। कूड़ा फल कूड़ा रस, रस रसीआ वेख वखाइंदा। कलयुग रैण अन्धेरी मस्स, चार वरन अन्धेरा छाइंदा। सृष्ट सबाई भुलया हरि का जस, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। दहि दिशा मनुआं रिहा नट्ठ, मन वासना ना कोए चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरी करनी एका बन्धन पाइंदा। तेरी करनी बंधे डोर, नाम डोरी हथ उठाईआ। पकड़नहारा पंजे चोर, चोरी करन कोए ना जाईआ। वेखणहारा अन्ध घोर, काया कवरी फोल फोलाईआ। माया ममता ना पाए शोर, हउमें हंगता दए तुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शब्द अगम्मी चढ़या घोड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां चरनां हेठ दबाईआ। वेख वखाए रस मिट्ठा कौड़, गृह गृह आपणा फेरा पाईआ। साचा असव चुक्कणहारा पहला पौड़, गोबिन्द वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। नेत्र नैण वेखणा कर के ग़ौर, गहर गम्भीर खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरी करनी डेरा ढाहीआ। अन्तिम डेरा जाणा ढट्ठ, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी गेड़े उलटी लट्ठ, चारों कुण्ट आप फेराइंदा। अन्तिम सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। जन भगतां मार्ग इक्को दस्स, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। हरि जू हिरदे अन्तर वस, अन्तरजामी भेव चुकाइंदा। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, नूरो नूर नूर धराइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, आपणी कल वरताइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म महिमा सुणाए अकथ, कथनी कथ ना कोए जणाइंदा। सोहँ शब्द साची वथ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग करनी लेखे लाइंदा। कलयुग करनी मिटे दुःख, दुखियां दर्द आप गवाइंदा। सति सतिवादी इक्क उपजाए साचा सुख, सुख आत्म जोड़ जुड़ाइंदा। मात गर्भ ना होए उलटा रुख, जिस जन आपणा नाम जपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा लहिणा आप चुकाइंदा। कलयुग करनी होए दूर, नेरन नेर रहिण ना पाईआ। सतिजुग सति सतिवादी दिसे हाज़र हज़ूर, हरि हज़रत लए मिलाईआ। देवे वस्त नाम भरपूर, भरपूर रिहा सब ठाईआ। एका मस्ती सति सरूर, नाम खुमारी दए चढ़ाईआ। एका जोती निर्मल नूर, नूरो नूर नूर दरसाईआ। एका नाद अगम्मी तूर, तुरीआ राग अलाईआ। एका दाता जोधा सूर, सूरबीर इक्क अख्वाईआ। कलयुग मेटे क्रिया कूड़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। सतिजुग मार्ग लाए ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग निरगुण सरगुण वेखे आण, लख चुरासी मंडल रासी, पुरख अबिनाशी शाहो शबासी, शहिनशाह बेपरवाह जगत मलाह नाम निधान सृष्ट सबाई देवे ज्ञान, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव जगदीश गंढु पुआइंदा।

✳ २१ भाद्रों २०१६ बिक्रमी जगीर दास दे गृह ख्याली वाला ज़िला बठिंडा ✳

अलख अगोचर अगम्म अथाह, हरि हरि जू खेल कराइंदा। आदि जुगादी सच्चा शहिनशाह, तख्त निवासी तख्त सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण नाउँ धरा, हरि पुरख निरँजण सिफ्त सलाहइंदा। एकँकार खेल खिला, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। श्री भगवान दए सलाह, सिफ्त सलाही आप अख्वाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, अनभउ प्रकाश कराइंदा। सचखण्ड दवारा इक्क सुहा, छप्पर छन्न ना कोए रखाइंदा। दीआ बाती इक्क टिका, निर्मल जोत रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल श्री भगवान, सति सतिवादी आप धराईआ। करे खेल नौजवान, नौबत एका नाम वजाईआ। शाहो भूप बण राज राजान, सच सिँघासण आसण लाईआ। सति संदेसा धुर फ़रमान, बोध अगाध सुणाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्मरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह श्री भगवाना, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क तराना, एकँकारा आपे गाइंदा। करे खेल आप महाना, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, सचखण्ड निवासी आप वखाईआ। निरगुण निरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। निरगुण महिमा गाए अकथ, निरगुण करे पढ़ाईआ। निरगुण मार्ग निरगुण दस्स, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, आदि पुरख कराइंदा। सचखण्ड दवार खोल्ह किवाड़ा, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। भूपत भूप बण सिक्दारा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। हुक्मे अंदर करे कारा, करनी करता आप कराइंदा। लेखा जाणे सुत दुलारा, शब्दी वड वड्याइंदा। पावे सार ठांडा दरबारा, थिर घर आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रैहबर आप अख्वाइंदा। साचा रैहबर बणे आप, आप आपणी दया कमाइंदा। एकँकार इक्क जपाए साचा जाप, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। एका

मन्दिर पावे रास, निरगुण निरगुण गोपी काहन नचाइंदा। एका जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाइंदा। एका वसे सदा साथ, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप कराईआ। निरगुण निरगुण कर कर वंड, थिर घर घाड़त लए घड़ाईआ। नाद अनादी एका छन्द, सोहला ढोला आपे गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पाए बंध, बन्धन एका एक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, आदि जुगादि कराइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वारो वारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। चारे वेदां दे हुलारा, चारे मुख ब्रह्म सलाहइंदा। चारे कुण्ट बोल जैकारा, चार वरनां आप सुणाइंदा। चारे खाणी दए हुलारा, चारे बाणी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा, इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कल धारी आप जणाइंदा। सच संदेसा श्री भगवाना, एका एक जणाईआ। नव नौ चार कर परवाना, धुर फ़रमाना आप समझाईआ। वेखणहारा दो जहानां, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। लख चुरासी देवणहारा दाना, घट घट रिहा समाईआ। गावणहारा शब्द अगम्मी इक्क तराना, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। झुलावणहारा सच निशाना, निरगुण सरगुण लए उठाईआ। देवणहारा साचा माणा, गुर अवतारां होए सहाईआ। वरतणहारा आपणा भाणा, सद भाणे रिहा वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। साचा खेल एकँकार, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। जुग चौकड़ी कर कर पार, रूप अनूप आप वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, वेखणहारा नज़र ना आइंदा । लेखा जाणे सूरज चन्द धरत धवल ज़िमीं असमान, गगन गगनंतर फोल फोलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवणहारा साचा दान, नाम ख़ज़ाना इक्क वरताइंदा। वेखणहारा गोपी काहन, बंसरी नाम नाद वजाइंदा। जानणहारा सीता राम, सति सतिवादी भेव खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। जुग जुग खेल रखे हथ्थ, दूसर दए ना किसे वड्याईआ। निरगुण सरगुण हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। नाम निधाना बोल अलख, अलख अलख इक्क सुणाईआ। लख चुरासी नालों कर कर वक्ख, भगत भगवन्त लए जगाईआ। अन्तर आत्म मार्ग दस्स, जगत बसन्तर दए बुझाईआ। हिरदे हरि जू आपे वस, हरि के पौड़े दए चढ़ाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस्स, साचा चन्द करे रुशनाईआ। तीर निराला मारे कस, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हुक्मरान, हुक्म एका एक रखाइंदा। वेखणहारा

दो जहान, दोए दोए धार चलाइंदा। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। पीर पैग़म्बर देवणहार ज्ञान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। वसणहारा सच मकान, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। सच तौफीक इक्क मिहबान, मिहबान बीदो खेल कराइंदा। देवणहार हक़ पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। जानणहारा सच इस्लाम, इस्म आज़म नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल करे करतारा, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण लए अवतारा, गुर गुर वेस वटाईआ। शब्दी शब्द शब्द वणजारा, एकँकारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पाए बन्धन, खेले खेल त्रिलोकी नंदन, त्रै त्रै लोआं लाए चन्दन, एका चन्दन नाम वखाईआ। साचा चन्दन नाम हरि, हरि हरि जू आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवे वर, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। साचे सन्त चुकाए भओ डर, निरभउ आपणे रंग रंगाइंदा। अनहद शब्द वजाए अनादी मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। साची डोरी आपे गंढु, जन्म जन्म दा पन्ध मुकाइंदा। गीत सुहागी सुणाए छन्द, सोहला ढोला एका गाइंदा। निज आत्म परमात्म रस, रसीआ इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे चढ़, दरगाह साची सोभा पाइंदा। दरगाह साची उच्च महल्ला, हरि महिफल नाम लगाईआ। नूर वखाए एको अल्ला, आलमीन सुखदाईआ। सच सिँघासण साहिब सुल्तान मल्ला, बेऐब रूप खुदाईआ। जोती जोत आपे बला, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। करे खेल इक्क इकल्ला, कुदरत कादर वेख वखाईआ। पीर पैग़म्बर आपे घल्ला, साची घालण इक्क समझाईआ। आप सुणाए एको मसल्ला, मुसल्ला हेठां इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस वटाए आप, आपणा खेल कराइंदा। चार वरन सुणाए एका जाप, मन्त्र अन्तर आप पढ़ाइंदा। मेटणहारा तीनो ताप, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। एका अक्खर एका पाठ, पाठशाला इक्क वखाइंदा। इक्को मकतब इक्क जमात, जुम्मला इक्को हरूफ़ बणाइंदा। कोई ना सके झाक, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। कर किरपा खोल्ह्णहारा ताक, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणा भविक्ख वाक्, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। सन्त भगत भगवन्त बणाए सज्जण साक, सगला संग आप रखाइंदा। नूर इलाही पाकी पाक, मुरीद मुर्शद वेख वखाइंदा। लेखा जाणे तन माटी खाक, खाकी खाक लेखा लाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रखणहारा आपणी याद, याददाशत ना कदे भुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, सच दुआरा इक्क सुहाइंदा। सच दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण वज्जे

वधाईआ। हरि पुरख निरँजण साचा कन्त, एका साची सेज हंढाईआ। एकँकार बणाए बणत, घड़न भन्नणहार अख्वाईआ। आदि निरँजण महिमा अगणत, लख चुरासी जोत निरँजण दीवा इक्क टिकाईआ। श्री भगवान गाए छन्द, सोहँ ढोला राग अलाईआ। अबिनाशी करता मणीआ मंत, मन मणका दए भुआईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी करे आप निरँकार, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। लख चुरासी वेखणहार, बिन नेत्र नैणां वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी पावे सार, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। अक्खर वक्खर कर त्यार, साची सतर आप जणाइंदा। अल्फ़ ये दे अधार, उलफत आपणी विच रखाइंदा। तिन्न पंज जोड़ इकरार, अंक अंक नाल मिलाइंदा। पैंती अक्खर कर गिफ़तार, आप आपणा बन्धन पाइंदा। त्रैगुण माया खोल्ह किवाड़, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी वसणहारा साचे घर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। घर मन्दिर सच मुनारा, हरि सतिगुर आप उपाइंदा। एका वसे वसणहारा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। एका शब्द नाद धुन्कारा, धुंन आत्मक राग सुणाइंदा। एका अमृत ठंडा ठारा, निझर झिरना रस चखाइंदा। एका दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती वेख वखाइंदा। एका पुरख एका नारा, सेज सेहंजणी इक्क सुहाइंदा। एका वेखे वेखणहारा, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। एका वणज इक्क वणजारा, हरि जू इक्को हट्ट चलाइंदा। एका इष्ट देव गुर संसारा, पुरख अकाल इक्क अख्वाइंदा । जुग चौकड़ी हो त्यारा, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। सरगुण खेल विच संसारा, सृष्ट सबाई बन्धन पाइंदा। पुत्तर धी मात पित जगत विहारा, हरि साचा खेल वखाइंदा। नार कन्त करे शृंगारा, वेस अवल्ला इक्क रखाइंदा। कागद कलम बण लिखारा, सिफ्त सलाही सिफ्त जणाइंदा । वेद शास्त्र सिमरत पुराण अञ्जील कुरान दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर खोल्ह किवाड़ा, कुदरत कादर आप जणाइंदा। एथे ओथे दो जहानां वेखे विगसे वेखणहारा, पेखत पेखत आपणी खुशी मनाइंदा। आपणा भेव ना किसे दस्से वसे सब तों बाहरा, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सर्ब पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। हरि जू वसे धाम न्यारा, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। थिर घर बैठा सुत दुलारा, शब्दी आपणा रंग रंगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलारा, सच हुलारा इक्क रखाइंदा। करोड़ तेतीसा बन्न्हे धारा, सुरपति इन्द नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी बाणी बाण उठाइंदा। लख चुरासी करे आर पारा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। वेखणहारा डूँग्घी गारा, काया मन्दिर आप सुहाइंदा। आत्म परमात्म सुणाए सच जैकारा, जै जैकारा इक्को नाउँ कराइंदा। गुर अवतार करे निमस्कारा, पीर

पैग़म्बर सजदा सीस झुकाइंदा। साचे तख्त वसे धाम न्यारा, एका आपणा आसण लाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करया खेल विच संसारा, कुदरत कादर नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर मन्दिर इक्क वड्याइंदा। वड मन्दिर घर अगम्मा, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। ना मरे ना कदे जम्मां, जन्म मरन विच ना आइंदा। जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणा कम्मां, करनी करता आप कमाइंदा। दो जहानां बेड़ा बन्ना, खेवट खेटा आप हो आइंदा। आपे बणे जननी जणा, धन्न जणेदी माई आप अख्वाइंदा। आपे राग सुणाए बिन कन्ना, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। आपे वसे बिन छप्पर छन्ना, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। आपे घड़े आपे भन्ना, घड़न भन्नणहार भेव ना आइंदा। आपे देवणहारा डंना, लख चुरासी गेड़ चलाइंदा। आपे करनहारा गल्लां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण शब्द विचोला मेल मिलाइंदा। आपे मेटणहारा सल्ला, दूई द्वैती पार कराइंदा। आपे बोलणहारा हल्ला, जुग जुग डेरा ढाहइंदा। आपे सचखण्ड दवारे जोत सरूपी निरगुण खल्ला, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। आपे पावे सार राणी अल्ला, मीआं आपणा रूप वटाइंदा। आपे शब्द अगम्मी फड़े भल्ला, दो जहानां आपे ढाहइंदा। आपे पावणहार तरथल्ला, जल थल महीअल खोज खुजाइंदा। आपे करे वल छल्ला, अछल छलधारी लख चुरासी पर्दा पाइंदा। आपे पकड़नहारा पल्ला, फड़ पल्लू गंढु पुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। जुग चौकड़ी मेटे पन्ध, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार सुणाए छन्द, पीर पैग़म्बर सोहला गाईआ। भगत भगवन्त दए अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। साचे सन्तां निर्मल जोत चढ़ाए चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गुरमुखां टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार इक्क गुसाँईआ। गुरसिखां आवण जावण लख चुरासी मेटे पन्ध, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। बण वैरागी गाए छन्द, जगत त्यागी रूप वटाईआ। हँस कागी वेखणहारा नेत्र अन्ध, जगत विष्टा ना खाए गंद, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। सचखण्ड दवारे गुर अवतार रहे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर होए भंग, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी काल गए लँघ, काल सब दा लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल कराईआ। जुग जुग खेल करे करतारा, हरि करनी आप कमाइंदा। नौ नौ चार उतरया पारा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाइंदा। दहि दिशा खोल्हणहार किवाड़ा, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे लग्गा अखाड़ा, कलयुग कूड़ी क्रिया नाच नचाइंदा। चारों कुण्ट अग्नी लग्गी तत्ती हाढ़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। बहत्तर

नाड़ी वज्जे ताड़ा, बिन तन्दी तन्द हिलाइंदा। वरन बरन रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। ज़ात पात हाहाकारा, ऊँच नीच सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव चुकाइंदा। जुग जुग भेव चुकाणहारा, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम पावे सारा, अकल कल वेख वखाईआ। नव नौ दिसे धूआँधारा, अन्ध अन्धेर समाईआ। सृष्ट सबाई हाहाकारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सच दिसे ना कोए दुआरा, गुरदर मन्दिर शिवदुआले मढ्ढ अग्नी तत्त ना कोए बुझाईआ। नाता तुट्टा तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खुल्हे केस रही वखाईआ। कलयुग अन्तिम सीस ख़ाक सब दे रहे घत्त, मींढी सुहाग ना कोए गुंदाईआ। साधां सन्तां उबली रत्त, सांतक सति ना कोए कराईआ। किसे ना दिसे धीरज जत, मन मनुआ दहि दिश उठ उठ धाईआ। आपा करे ना कोए वस, जीव जंत करन पढ़ाईआ। माया ममता गए फस, फाँसी जम ना कोए तुड़ाईआ। भोग बलास नौ रस, नौ दुआरे होए कुड़माईआ। माया ममता आसा तृष्ना गायण जस, हरि का नाउँ ना कोए सुणाईआ। धीआं भैणां रहे तक्क, नेत्र गुर नैण दरस कोए ना पाईआ। हक़ीक़त कोए ना जाणे हक़, हक़ हक़ ना कोए वखाईआ। जूठे भाण्डे रहे लक्क, कलयुग जीव सवान रूप वटाईआ। आपणा पर्दा सके ना कोई ढक, कलयुग नंगी होई लोकाईआ। कोई ना रखे किसे पत्त, शाह सुल्तान बैठे मुख भुवाईआ। घर घर नच्चे मनमति, मुख घूँगट रही उठाईआ। कोई ना जाणे गुरू मति, गुर गुर इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेखे थाउँ थाईंआ। जुग जुग वेखे नेत्र खोल्ह, बिन नैणां खेल कराइंदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद माया राणी पाया घोल, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। सच वस्त ना किसे कोल, मन्त्र नाम ना कोए दृढ़ाइंदा। साध सन्त ना रहे अडोल, माया ममता पर्दा पाइंदा। बजर कपाटी कोई ना सके खोल्ह, डूँघी कंदर अंदर वड़ साचे मन्दिर चढ़, साचा कन्त ना कोए मनाइंदा। त्रैगुण अग्नी रहे सड़े, चौदां विद्या पढ़ पढ़, पढ़ पढ़ पन्ध ना कोए मुकाइंदा। आपणी करनी रहे कर, निहकर्मी वेख वखाइंदा। वरन बरन रहे लड़, साची सरन ना कोए तकाइंदा। इक्को भुल्लया साचा हरि, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। दीन मज़्हब रहे मर, मर जीवत ना कोए कराइंदा। शाह सुल्तानां बणया हँकारी गढ़, हँकार विकार ना कोए मिटाइंदा। कलयुग नौ खण्ड पृथमी लख चुरासी नाल रिहा लड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लख चुरासी वेख वखाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा, घट घट आसण लाईआ। जीव जंत पावे सारा, अभुल भुल कदे ना जाईआ। चारों कुण्ट दिसे विभचार नारा, विभचार करे लोकाईआ। गुर का शब्द ना किसे प्यारा, गुर इष्ट देव ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

८३६
१२

आपणी किरपा कर, वेखणहारा सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई हरि जू तक्क, आपणा खेल जणाइंदा। करे नबेड़ा हक़ो हक़, हक़ हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए थक्क, बण पाँधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साथ गए छड्ड, सगला संग ना कोए रखाइंदा। आत्म परमात्म नालों होई अड्ड, फड़ बांहों मेल ना कोए मिलाइंदा। विश्व दिसे ना कोए यद्द, दीन मज़्हब वंड वंडाइंदा । गुर अवतार पीर पैग़म्बर तोड़नहारा हद्द, महिदूद नज़र कोए ना आइंदा। कलयुग अन्तिम सारे लए सद्द, सदा इक्को नाम सुणाइंदा। सचखण्ड दवारे आउणा भज्ज, तेई अवतारां भाजड़ पाइंदा। भगत अठारां मार आवाज़, हरि इक्को वार जगाइंदा। पीर पैग़म्बर ईसा मूसा मुहम्मद अन्त पढ़नी इक्क निमाज़, निउँ निउँ सजदा इक्क जणाइंदा। दस दस गुरू रच रच काज, करता पुरख आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम डुब्बदा वेखो जहाज़, बेड़ा बन्ने कोए ना लाइंदा। सच दिसे ना कोए समाज, समग्री सति ना कोए वरताइंदा। सृष्ट सबाई करे नाच, कलयुग नटुआ आप नचाइंदा। घर घर लग्गी आंच, धुंआंधार वखाइंदा। सृष्ट सबाई होई बांझ, साचा सुत ना कोए जणाइंदा। गुर शब्दी टुट्टी सांझ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रंग रंगाइंदा। कोई प्यार ना दिसे आंढ गवांढ, सज्जण सैण मीत ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जुग तेरा वेख वखाइंदा। कलयुग तेरा वेखे जुग, जुग करता सच्चा माहीआ। सचखण्ड निवासी बैठा लुक, नज़र किसे ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखे अपणी कुक्ख, कर किरपा कुक्खों बाहर कढ्ढाईआ। पंज तत्त काया माटी उज्जल कर कर मुख, सरगुण देंदा रिहा वड्याईआ। अन्तिम गोदी आपणी चुक्क, नाता लोकमात तुड़ाईआ। लेखा जाणे काया माटी पंज तत्त बुत्त, पंज भूतक खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। जुग जुग वेस हरि निरँकार, एका एक रखाइंदा। कलयुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सचखण्ड निवासी साचा लाए इक्क दरबार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा । चरन बहाए गुर अवतार, पीर पैग़म्बर वेख वखाइंदा। उठो सारे वेखो हाल, कलयुग की कल वरताइंदा। सृष्ट सबाई लेखा काल, नाम धन ना कोए रखाइंदा। जीव जंत होए कंगाल, जगत कंगाली ना कोए गवाइंदा। साचे मन्दिर ना करे कोए सवाल, सवाली सवाल ना कोए रखाइंदा। अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा इक्क वजाइंदा। इक्को इक्क मुरीद मुर्शद पुच्छे हाल, हाल मुरीदां आप सुणाइंदा। निरगुण चली अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाइंदा। तोड़नहारा त्रैगुण जाल, जोती जाता वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले साचे भाल, फड़ फड़ आपणे अंग लगाइंदा। काया मन्दिर वखाए

सच्ची धर्मसाल, सतिगुर पूरा नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव देवे दस्स, पर्दा रिहा उठाईआ। हरिजन हिरदे जाए वस, बे नक़ाब माहीआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, प्रगट जोत करे रुशनाईआ। चार वरन बणाए ख़ालसा ख़ालस ख़ास, आपणा रंग रंगाईआ। निज आत्म कर निवास, परमात्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल करंदा, करनहार अख्वाइंदा। कलयुग मेटे कूड़ा धन्दा, धूआँधार मिटाइंदा। वेखणहारा नौ नौ खण्डा, सत्त सत्त आपणा फेरा पाइंदा। भेव खुल्हाए विच ब्रह्मण्डां, जेरज अण्डज पर्दा लाहइंदा। कलयुग अन्तिम आया कन्ढा, कन्ढे बैठा राह तकाइंदा। समरथ स्वामी इक्को फड़या डण्डा, नाम खण्डा इक्क जणाइंदा। कलयुग अन्तिम तोड़े घमंडा, खुदी तकब्बर मेट मिटाइंदा। निरगुण सरगुण चाढ़े रंदा, जगत बाढी खेल कराइंदा। कोई रहिण ना देवे गंदा, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। साहिब दयाल सदा बख़्शंदा, बख्शश आपणी आप कराइंदा। सृष्ट सबाई इक्क सुणाए सुहागी छन्दा, सोहँ ढोला राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे रंग, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई होई भंग, कलयुग भंगड़ा रिहा वखाईआ। रसना जिह्वा खायण गंद, आत्म रस ना कोए रसाईआ। कूड़ी क्रिया चुक्की पंड, हौला भार ना कोए वखाईआ। मनमुख जीव भागांमंद, भगवन गीत ना कोए गाईआ। सृष्ट सबाई नेत्र अन्ध, निज नेत्र ना कोए रुशनाईआ। किसे कम्म ना आए बत्ती दन्द, बिन हरि जू सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम वेखे आप, हरि आपणा रूप धराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी रही कांप, धरत धवल भार ना कोए उठाइंदा। त्रैगुण माया डस्सणी डस्से सांप, सति सति राह ना कोए चलाइंदा। नाता तुट्टा पूत बाप, बाप पूत गोद ना कोए सुहाइंदा। झेड़ा लग्गा ज़ात पात, झगड़ा जगत ना कोए मुकाइंदा। पुरख अबिनाशी अन्तिम सुट्टे डूँघे खात, वरन बरन कोए रहिण ना पाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणाए इक्क जमात, इक्को अक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बन्न्हे नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म गावे गाथ, बोध अगाधा राग सुणाइंदा। सगल विसूरे जायण लाथ, जिस जन आपणा दरस वखाइंदा। अन्तिम लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, जन्म मरन मरन जन्म गेड़ा आप चुकाइंदा। गुरमुख कदे ना जले अग्नी काठ, मढ़ी गोर ना कोए दबाइंदा। साहिब सतिगुर अन्तिम पति लए राख, बण रक्षक सेव कमाइंदा। कलयुग तेरी अन्तिम दिशा रिहा झाक, झाकी आपणी आपे पाइंदा। गोबिन्द पूरा करे भविख्त वाक्, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुर अवतारां पीर

पैग़म्बरां एका खोल्ह वखाए ताक, नेत्र नैण नैण जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा अन्तिम वेला, लेखा जाणे गुरू गुर चेला, चेला गुर वेख वखाइंदा। चेला गुर रिहा तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलयुग फल गया पक्क, वेला अन्तिम आईआ। प्रभ करे नबेड़ा हक़, प्रगट होवे सच्चा शहिनशाहीआ। जूठ झूठ गया थक्क, बैठा ढेरी ढाहीआ। पीर पैग़म्बर गया अक्क, साची करे ना कोए पढ़ाईआ। शरअ शरीअत नकेल पाई नक्क, चारों कुण्ट रही भुवाईआ। गुरमुख विरला जाए बच, जिस प्रभ आपणी दया कमाईआ। इक्को घर वखाए सच्च, सच घर नाम वधाईआ। लेखे लग्गे पंज तत्त माटी कच्च, कच्च कंचन रूप वटाईआ। साहिब दयाल सतिगुर स्वामी निहकर्मी अंदर जाए रच, ठाकर आपणा रंग रंगाईआ। वेखणहारा रत्ती रत्त, रुत्त रुत्तड़ी रुत्त महकाईआ। देवणहारा ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। सोहँ शब्द साचा रथ, सतिजुग साचे लए प्रगटाईआ। कलयुग चौथा युग बहे सत्थर घत, सफ़ा सके ना फिर उठाईआ। लोकमात विच्चों जाए नट्ठ, बौहड़ी बौहड़ी दए दुहाईआ। अन्तिम कोए ना रखे पत्त, अल्ला राणी कूक सुणाईआ। मेरी उम्मत मारी गई मति, मतवाली भेव कोए ना पाईआ। दोए जोड़ वास्ता रही घत्त, ढह पई सरनाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, संगी नजर कोए ना आईआ। बिन तुध लथ्थी मेरी पत्त, मेरी कीमत कोए ना पाईआ। चौदां सदीआं तेरे नालों रही वक्ख, वक्खरा आपणा राह चलाईआ। अन्तिम खेड़ा होया भट्ठ, ढह ढह ढेरी ख़ाक समाईआ। चौदां तबक ना कोए हट्ट, ख़ाली हट्टी दए दुहाईआ। मैं तेरे कोल आई नट्ठ, परवरदिगार होए सहाईआ। मेरी लथ्थी अन्तिम पत, नक्क सुहाग रहिण ना पाईआ। साचा मार्ग इक्को दस्स, मैं जावां चाँई चाँईआ। मेरी अन्तिम होई बस, बलहीण रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों हस्स, उँगली नाल समझाईआ। मेरे भगतां जा के चरनी ढट्ठ, तैनूं देण माण वड्याईआ। दोवें जोड़ सरनाई पैणा हथ्थ, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। नेत्र नीर वहाउणा अथ्थ, तेरी आबरू लैण बचाईआ। जा के सुण साची मति, एका एक होए पढ़ाईआ। आदि जुगादि पुरख समरथ, जुग जुग आपणा राह चलाईआ। वसणहारा घट घट, लख चुरासी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सुण संदेसा अल्ला राणी, नेत्र नैण उठाया। कवण सुणाए अकथ कहाणी, महिमा हरि जणाया। बिरहों कुठी होए निमाणी, कवण दर्दी दर्द वंडाया। बल बुध बाल अंञाणी, मेरी चले ना कोए चतुराया। आब हयात देवे ठंडा पाणी, भर प्याला जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक्क जणाया। साचा मार्ग एका एक, एकँकारा आप जणाईआ। सच दुआरे इक्को टेक, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। सच दुआरे इक्को लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ।

सच दुआरे इक्को भेख, भेखाधारी आप वखाईआ। सच दुआरे इक्क आदेस, निउँ निउँ सीस इक्क झुकाईआ। सच दुआरे इक्को रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। तिस साहिब अग्गे चले ना कोए पेश, तेई अवतार अठारां भगत ईसा मूसा मुहम्मद गुर दस बैठे सीस झुकाईआ। सो साहिब इक्को माण देवे दस दस्मेश, गोबिन्द आपणा राह जणाईआ। सुत दुलारे करे हेत, हितकारी फेरा पाईआ। रुत्त बसन्ती मौले चेत, फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। लख चुरासी उजड़न वाला खेत, राखा कोए नज़र ना आईआ। अग्नी लग्गे महीना जेठ, जेठा पुत्त सके ना कोए बचाईआ। बचया रहे ना कोए सेठ, माया राणी रोवे मारे धाहींआ। जन भगतां हरि जू दस्से आपणा भेत, चुक्क पर्दा दरस कराईआ। वसणहारा नेतन नेत, निज घर बैठा खुशी मनाईआ। निरगुण खेलणहारा खेड, इक्क अठ वेख वखाईआ। इक्क नौ करे खेद, ख़ालक ख़लक दए रुलाईआ। ज़िमीं असमानां पाए छेद, नाम वरमा इक्क चलाईआ। अन्तिम दिसे बालू रेत, कलर कंध रहिण ना पाईआ। जन भगतां करे साचा हेत, सतिगुर मिल मिल खुशी मनाईआ। निरगुण सरगुण आपे पेख, निज नेत्र करे रसाईआ। सचखण्ड निवासी लिखणहारा लेख, पिछला लेखा दए मुकाईआ। माण गंवाए औलीआं पीर शेख़, दस्तगीर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, एका गुण दए जणाईआ। एका गुण गुणावन्त, गुण सागर रूप वखाइंदा। एका नाम मणीआं मंत, मन वासना बन्द कराइंदा। एका साहिब श्री भगवन्त, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। एका सुहाग हरि जू कन्त, लख चुरासी नार प्रनाइंदा। एका आत्म बोध परमात्म पंडत, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। एका तोड़नहारा गढ़ हंगत, हँ ब्रह्म वेख वखाइंदा। एका मेलणहारा साची संगत, शंका कोए रहिण ना पाइंदा। एका वेखणहारा जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज इक्क समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा सच ज्ञान, नाम निधान एका झोली पाइंदा। नाम निधाना इक्को अक्खर, अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। बजर कपाटी तोड़े पत्थर, झूठी सिला दए हटाईआ। फड़ के चोटी चाढ़े सिखर, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। गुरसिख तेरा लख चुरसी चुक्के फ़िकर, तेरा फ़िकर करे सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह इक्क वखाईआ। साचा राह सतिगुर रंग, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। हरिजन मेला आत्म सेज पलँग, पावा चूल ना कोए वखाइंदा। हरिजन गीत सुहागी छन्द, अनबोलत राग अलाइंदा। हरिजन अमृत आत्म रस इक्क अनन्द, बिन रसना जिह्वा आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सच घर, सचखण्ड दवारा इक्क वड्याइंदा।

८४० १२

सचखण्ड दवार सतिगुर चरन, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, हरि जू आपणा पर्दा लाहीआ। नाता तोड़ वरन बरन, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। करे कराए करनी करन, करता कीमत आपे पाईआ। निरभउ चुकाए भय डरन, भयानक होए आप सहाईआ। भगत भगवन्त आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्को नाम पढ़न, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्क दूजे दे अंदर वड़न, अंदर वड़ वड़ खुशी मनाईआ। उच्चे पौड़े आपे चढ़न, महल अटल डेरा लाईआ। इक्क दूजे दे दरसन करन, जोती जोत जोत रुशनाईआ। इक्क दूजे दी सरनी पढ़न, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। इक्क दूजे दा पल्लू फड़न, नानक निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। निहकलंक तरनी तरन, तारनहार साहिब सुखदाईआ। जै जैकार सारे करन, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। सोहँ शब्द सारे पढ़न, पढ़ पढ़ खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी नौजवान, नौका नाम इक्क वखाईआ। नौका नाम हरि की नईया, जुग जुग करता आप चलाइंदा। पुरख अबिनाशी बण बण सईया, खेवट खेटा रूप धराइंदा। हरि जू चढ़ाए फड़ फड़ बहीआ, बाहों फड़ गले लगाइंदा। राए धर्म ना कढ्ढे वहीआ, चित्तर गुपत हिसाब ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। कलयुग अन्तिम लेखा दर, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ लए वर, पारब्रह्म करे सच कुड़माईआ। लेखा जाणे चोटी जड़्ह, मध आपणा रूप वखाईआ। सन्त साजण सतिगुर फड़, फड़ फड़ गोद बहाईआ। सृष्ट सबाई मरे लड़ लड़, गुर अवतार पीर पैग़म्बर पल्लू गए छुडाईआ। किसे हथ्थ ना आए हुक्का नड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल होए बिन खेल, ख़ालक ख़लक आप कराइंदा। सृष्ट सबाई सड़े बिन अग्नी तेल, अग्नी अग्ग इक्क लगाइंदा। राए धर्म दी घल्ले जेल, अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। जनक कुण्ड जो कीते वेहल, कलयुग अन्त आप भराइंदा। हरि का हिसाब होए ना फ़ेल, किताब लेख ना कोए जणाइंदा। जनाब कह कह सारे पाउण वेल, लख लख शुकर मनाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार बण बण गए चेल, सतिगुर इक्को पुरख अकाल अख्वाइंदा। धरनी धरत धवल तेरे उत्ते करे वेहल, वेहला आपणा घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख किनारा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर कन्नी गए कतराईआ। अठसठ रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज नज़र कोए ना आईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मद्दे हाहाकारा, हरि की पौड़ी ना कोए चढ़ाईआ। कागद कलम शाही गुर का शब्द ना किसे विचारा, अक्खर वक्खर भेव ना कोए खुल्हाईआ। रागी राग

गा गा थक्के वारा, आपणी वारता ना किसे सुणाईआ। साध सन्त पढ़ पढ़ थक्के अखबारा, आपणी ख़बर ना कोए पुचाईआ। पुरख अबिनाशी सब दे कोलों होया बे एतबारा, एतबार किसे उत्ते ना मात रखाईआ। इक्को भगत करे प्यारा, मिल मिल गलवकड़ी एका पाईआ। हरिभगत कहे मैं रिहा कुँवारा, तुध बिन कन्त ना कोए मनाईआ। भगवन्त कहे मैं करां शंगारा, बस्त्र नाम तन पहनाईआ। भगत कहे मैं करां निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भगवान कहे मैं चुक्कां डोली बण कहारा, दो जहानां पार कराईआ। भगत कहे मैं वेखां तेरा दुआरा, जिस घर नानक कबीरा बैठे आसण लाईआ। भगवान कहे तूं मेरा सच्चा हीरा, हरि जू तेरा रूप आपणे विच समाईआ। भगत कहे तूं गहर गम्भीरा, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। भगवान कहे मैं ठांडा सीरा, रल मिल जन भगतां अंदर आपणी खुशी मनाईआ। भगत कहे तूं सब दा चीरा, सीस जगदीस ताज सुहाईआ। भगवान कहे मैं भगतां पिच्छे बणया रहां फ़कीरा, जुग जुग दर दर घर घर जा जा फेरा पाईआ। भगत कहे तूं बदलणहारा तकदीरा, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। भगवान कहे बिन भगत मैनूं कोए ना देवे धीरा, मेरा संग ना कोए रखाईआ। भगत कहे तूं कटणहारा शरअ ज़ंजीरा, शरीअत रूप ना कोए रखाईआ। भगवान कहे तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक्को ढोला इक्को सोहला इक्को चोला, सोहँ तेरा मेरा रूप वटाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगत दुआरे बणया रिहा गोला, बण सेवक सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम पर्दा लाहे ओहला, प्रगट होवे सच्चा शहिनशाहीआ। सत्तर बहत्तर चुहत्तर अठ्ठ पहर रखे कोला, कीता कौल भुल ना जाईआ। देवे नाम इक्क अनमोला, अनमुलड़ी दात वरताईआ। नानक निरगुण कहे सोहँ ढोला, गोबिन्द सोहँ चिल्ला तीर कमान बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी इक्को मौला, हर घट रिहा समाईआ। कलयुग अन्तिम बदले चोला, सतिजुग साचा धरनी धरत धवल गोद बहाईआ। कोई ना जाणे पंडत पांधा रौला, हिसाब किताब विच कदे ना आईआ।

✳ २२ भाद्रों २०१६ बिक्रमी आस कौर ख़िआली वाला ज़िला बठिंडा ✳

सच दरबारा श्री भगवान, हरि एका एक लगाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। सच संदेसा हुक्मरान, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। नेत्र खुल्हाए दो जहान, नैण नैण जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेद खोल्हे हरि, वड वड्डा वड वड्याईआ। वसणहारा साचे घर, घर घर फोल फोलाईआ। देवणहारा सच्चा वर, जुग जुग वस्त वरताईआ। जुग चौकड़ी वेखे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप

८४२ १२

धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। आपणा खेल दस्से आप, भेव कोए ना पाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, खालक खलक रूप वटाइंदा। मेटणहार अन्धेरी रात, साचा नूर रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। निरगुण भेव आपणा चुक्क, हरि जू पर्दा आप उठाईआ। सति सरूपी एका उठ, उठ उठ खुशी मनाईआ। शब्द अगम्मी एका गीत, आपणा आप सुणाईआ। पिछला वेला गया बीत, जुग चौकड़ी नज़र किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी चली रीत, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। नाता जुड़या मन्दिर मसीत, गुर दर मन्दिर डेरा लाईआ। आत्म परमात्म गाए ना कोए गीत, घर वज्जे ना कोए वधाईआ। लख चुरासी झूठी होई नीत, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। माया ममता लग्गी प्रीत, इष्ट गुरदेव ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। पिछली कीती गई लँघ, अग्गा नज़र किसे ना आइंदा। माणस जन्म होए भंग, कलयुग आपणा भंगड़ा पाइंदा। आत्म सेजा किसे ना चढ़े कोए रंग, रंग रंगीला कन्त ना कोए हंढाइंदा। दीन मज़्ब वज्जी कंध, पार किनार ना कोए कराइंदा। हउमे हंगता बद्धी गंढु, कूड़ी क्रिया ना कोए कढाइंदा। कलयुग जीव आत्म होई रंड, कन्त सुहाग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। पिछली कीती जाणे कौण, भेव कोए ना पाइंदा। सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लेखा जाणे उणंजा पौण, पवण पवणां विच समाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी सुणाए गौण, गावत गा गा खुशी मनाइंदा। लोकमात कोए ना रिहा हँकारी रावण रौण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। सच संदेसा कलयुग धार, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी बीते काल, काल नगारा इक्क वजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या वारो वार, नित नवित वेस वटाइंदा। सेवा कर कर गए तेई अवतार, लोकमात फेरा पाइंदा। गा गा थक्के वेद चार, ब्रह्मा चारे मुख सलाहइंदा। लिख लिख थक्के लेख लिखार, शास्त्र सिमरत नाल मिलाइंदा। बल धारी अक्के विच संसार, बल बावन वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करनी खेल कराइंदा। जुग करनी खेल अन्तिम कलयुग, हरि करता आप कराईआ। नव नौ चार औध गई पुग, वेला अन्त समझाईआ। नव नौ नाता जुड़या जूठ झूठ, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। होए विभचार सेज हंढाए मां पुत्त, धी भैण ना कोए वड्याईआ। सन्त सतिगुर सोहे ना कोए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी ना कोए महकाईआ। कलयुग घर घर अंदर बैठा लुक्क, दिन दिहाढ़े लुट्टी जाईआ। बुध बिबेकी दिती कुट्ठ, मति मतवाली दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ।

कलयुग खेल इक्क अवल्ला, हरि सतिगुर आप कराइंदा। चारों कुण्ट प्या तरथला, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। बौहड़ी बौहड़ी हाए हाए करन अल्ला, अल्ला आलमीन ना कोए मनाइंदा। धरनी ख़ाक सत्थर विछाया मुसल्ला, मसला हक़ ना कोए पढ़ाइंदा। गुर अवतार फड़ाए कोए ना पल्ला, पल्लू गंढु ना कोए पुआइंदा। जगत वासना मन होया झल्ला, निरगुण झलक ना कोए वखाइंदा। करनी करनी कर्म कर्म डिगा डूँग्घी डल्ला, फड़ बांहों बाहर ना कोए कढाइंदा। काम क्रोध हँकार तिक्खा भल्ला, लख चुरासी आर पार वखाइंदा। नक्क सुहाग हथ्थ कोई ना साचा छल्ला, तन्दी तन्द ना कोए बंधाइंदा। सूकर सुआन कूकर मनमुख दहि दिशा फिरे भन्ना, चारों कुण्ट उठ उठ धाइंदा। बिन नेत्र ज्ञान होया अन्ना, दोए लोचण कम्म किसे ना आइंदा। पुरख अकाल साहिब सच्चा इक्को ना मन्ना, लख चुरासी नाता तोड़ तुड़ाइंदा। अन्तिम देवणहारा डंना, एका खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। सृष्ट सबाई करे खंन खंना, खण्ड खण्ड आपणी वंड वंडाइंदा। सुण लओ बचन खोल्ह के कन्नां, बिन कन्नां आप सुणाइंदा। हरि का भाणा जिस ने मन्ना, मन मणका आप भुआइंदा। अग्नी तत्त जलाए तना, तन ख़ाकी रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। कलयुग खेल अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा रिहा छाईआ। मनमति नार कमज़ात, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। साधां सन्तां करदी फिरे घात, हथ्थ फड़ छुरी कसाईआ। नाता बणाया ज़ात पात, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। साचा नाम ना विके किसे हाट, जीव जंत जगत वणजारे रहे हट्ट चलाईआ। आत्म परमात्म वसे ना साथ, सगला संग ना कोए रखाईआ। कोए ना उतरे आपणे घाट, घाटा पूर ना कोए कराईआ। सारे डिगे डूँग्घे खात, आपणा बल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेखे वेख वखाईआ। कलयुग वेखे आपणा बल, बल एका एक जणाइंदा। संग मुहम्मद गया रल, रल मिल ख़ुशी मनाइंदा। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, अछल छल जणाइंदा। दूई द्वैती पाया सल्ल, शरअ शरअ नाल टकराइंदा। कलमा इलाही एका घल्ल, कायनात सुणाइंदा। चौदां तबक मिल्या फल, फल इक्को रंग रंगाइंदा। अन्तिम कलयुग होई झल्ल, पत्त डाल्ही नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम दस्से हाल, अहिवाला आप जणाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। ज़ात पात वरन बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश होए बेहाल, बिहबल देण इक्क दुहाईआ। किसे ना पूरी होई घाल, घाली घाल लेखे कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, ना कोई सके तुड़ाईआ। हरि मन्दिर ना दिसया सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेखे

थाउँ थाईंआ। कलयुग रखे आपणा ज़ोर, ज़र ज़ोरू वेख वखाइंदा। लख चुरासी अग्गे तोर, झूठा डंका मगर वजाइंदा। चढ़या फिरे आपणे घोड़, घोड़ा नव नौ आप दौड़ाइंदा। साधा सन्तां मारे पौड़, मूँह दे भार सुटाइंदा। राज राजाना वेखे करके ग़ौर, गहरा आपणा हुक्म वरताइंदा। माया ममता पाए शोर, संसा रोग ना कोए चुकाइंदा। पारब्रह्म दी रखे ना कोए लोड़, आप आपणा रंग रंगाइंदा। अमृत रस मिट्ठा कीता कौड़, कौड़ी वासना नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम डूँग्घा सागर, संसार सागर तरन कोए ना पाईआ। निर्मल कर्म ना करे कोए उजागर, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। सच दुआरे दए ना कोए आदर, आदरश आपणा ना कोए वखाईआ। घर घर भुल्लया करीम कादर, रहिमत रहिमान ना कोए कमाईआ। साचा वणज ना कोए सौदागर, सौदा कूड़े हट्ट वखाईआ। निर्मल नीर मिले ना काया गागर, अठसठ भुल्ली भरम लोकाईआ। तन बस्त्र नाम ना मिले चिट्टी चादर, ओढण जीव लेफ तलाईआ। राग सुणाए ना कोए दादर, दहि दिशा ना कोए शनवाईआ। लेखा जाणे तेग़ बहादर, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग देवे माण वड्याईआ। कलयुग चढ़या इक्को चाओ, अन्तिम खेल कराइंदा। वेखणहारा थाईं थाउँ, गुरदर मन्दिर मट्ठ शिवदुआले वेख वखाइंदा। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर पंडत पांधे फड़ उठाए बाहों, बांहों फड़ आप हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम अन्ध अन्धेरा, साचा नूर नज़र ना आईआ। सृष्ट सबाई नेरा नेरा, कह कह रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा कर कर वड्डा जेरा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां उत्ते करदा रिहा मेहरा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भुलाउँदा रिहा कर कर हेरा फेरा, हेरा फेरा आपणे विच रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा रिहा गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। धरत मात दा खुल्ल्हा करनहार वेहड़ा, दहि दिशा फेरा पाईआ। लख चुरासी मेटणहारा झेड़ा, झगड़ा सब दा दए मुकाईआ। अन्तिम करे हक़ निबेड़ा, हक़ो हक़ खुदाईआ। सीस जगदीस इक्को रखे सेहरा, लख चुरासी लए प्रनाईआ। दो जहानां मारे फेरा, आउँदा जांदा नज़र ना आईआ। कलयुग ढह ढह होए ढेरा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा कूड़ा अन्ध, अन्तिम मेटे हरि जू पन्ध, बण पाँधी फेरा पाईआ। कलयुग तेरा कूड़ नगारा, नगर खेड़ा रंग रंगाइंदा। जीव जंत होया वणजारा, सौदा हट्टो हट्ट वकाइंदा। गुर का शब्द ना कोए प्यारा, अन्तर धारा ना कोए रखाइंदा। रसना जिह्वा बोल जैकारा, सृष्ट सबाई सर्ब सुणाइंदा। आत्म राम ना किसे प्यारा, हिरदे

हरि ना कोए वसाइंदा। खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्के वारा, वारता आपणी ना कोए सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन वीचारा, हरि जू विचार विच कदे ना आइंदा। अञ्जील कुरान हक़ लाशरीक बोलण नाअरा, सिरक्त जगत ना कोए मिटाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया कूड़ पसारा, कूड़ा धन्दा नज़री आइंदा। मानस मानुख होया गुआरा, मानव रंग ना कोए रंगाइंदा। धीआं भैणां करन वपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया आप समझाइंदा। कलयुग क्रिया कूड़ी रास, घर घर वस्त टिकाईआ। हरि का नाम ना किसे पास, ख़ाली भाण्डे देण दुहाईआ। साचा लेख ना लिखे कलम दुआत, मस रोवे नैणां नीर वहाईआ। अन्तिम पुच्छे ना कोए वात, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। भाई भाईआं करन घात, साक सज्जण सैण ना कोए वड्याईआ। पिता पूत ना पुच्छे वात, घर घर पई लड़ाईआ। नार दुहागण होई कमज़ात, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। गुरमुख अंदर वेखण ना मार झात, झाकी अंदर कोए ना पाईआ। गा गा थक्के रसना गाथ, बत्ती दन्द सिफ्त सलाहीआ। दरस ना पाया कमलापात, कँवल नैण नज़र ना आईआ। नाता तुटया ना ज़ात पात, चार वरन करे लड़ाईआ। कलयुग लख चुरासी बैठा खाट, खटका इक्को रिहा जणाईआ। अन्तिम पूरा करे ना कोए घाट, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग कूड़े उठ बलधार, हरि साचा सच जणाया। करे खेल आप निरँकार, निरगुण आपणा हुक्म वरताया। सचखण्ड दवारे सच दरबार, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। इकट्ठे कर गुरू अवतार, पीर पैग़म्बर आप जणाइंदा। नेत्र वेखो खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। कलयुग अग्नी तत्ती हाढ़, बालू रेत तपाइंदा। सृष्ट सबाई रही साड़, गुरमुख नज़र कोए ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मौत लाड़, सेहरा सीस ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त आप जणाइंदा। कलयुग अन्त कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। तेरा मिटे झूठ निशान, निशाना जगत रहिण ना पाईआ। तेरा मिटे माण अभिमान, अभिमाण दए तुड़ाईआ। तेरी अन्तिम चुक्के काण, भय नज़र कोए ना आईआ। नाता तुट्टे मढ़ी मसाण, पूजस पूज ना कोए कराईआ। सृष्ट सबाई करे हैरान, हरि जू अपणा हुक्म जणाईआ। लेखा जाण शास्त्र सिमरत वेद पुराण, पुराण प्राणी लए उठाईआ। पर्दा लाह अञ्जील कुरान, शरअ शरीअत नाच नचाईआ। खाणी बाणी दे ज्ञान, सच ज्ञाना इक्क दृढ़ाईआ। तेरी क्रिया मेटे आण, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दर गुर अवतार पीर पैग़म्बर करदे गए माण, सो निमाणयां होए सहाईआ। जिस दा गाउँदे रहे धुर फ़रमाण, सच संदेसा मात अल्ल्हाईआ। सो प्रगट होए आप भगवान, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। नव नौ पाए साची आण, एका हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सति उठाउणा, चौथे जुग खुशी कराईआ। साची रुत्त आप सुहाउणा, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। साचा मार्ग इक्क वखाउणा, भगत भगवन्त रंग रंगाईआ। साचा नाम इक्क जपाउणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। इष्ट गुरदेव एका नज़री आउणा, एकँकार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग तेरी बदले अन्त दलील, दयावान खेल कराइंदा। तेरी सुणे ना कोए अपील, फैसला आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरा संग ना कोए वकील, वकालत रूप ना कोए वखाइंदा। आपे पहरनहारा बस्त्र नील, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। आपे जोधा सूरबीर छैल छबील, बल आपणा आप रखाइंदा। आपे चौदां सदी देवणहारा ततील, तारीक आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्तिम वेला आया नज़दीक, बेनज़ीर नज़र आपणी इक्क उठाइंदा। शब्द निशाना मारे ठीक, लख चुरासी कूड़ा ठीकर भन्न वखाइंदा। आपणी धार जणाए बारीक, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। सृष्ट सबाई लाशरीक, परवरदिगार आपणे राह चलाइंदा। आत्म परमात्म सच प्रीत, सिख्या इक्क समझाइंदा। मन्दिर वखाए इक्क अनडीठ, चार दीवार ना कोए रखाइंदा। अनहद नाद सुणाए गीत, धुंन आत्मक राग अल्हाइंदा। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, घर घर विच भेव खुल्हाइंदा। सतिजुग चलाए साची रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लेख चुकाइंदा। कलयुग अन्तिम रोवे मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बौहड़ी बौहड़ी रिहा कुरला, करबला बल ना कोए रखाईआ। चार यारी होई जुदा, सगला संग ना कोए निभाईआ। परवरदिगार होया ख़फ़ा, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरा कलमा होया रफ़ा, अन्त संग कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग मेटे कूड़ी सफा, सच सुच्च दए प्रगटाईआ। कलयुग करे अन्त निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कर किरपा हरि निरँकार, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मैं छोटा पुत्त दुलार, चौथा जुग नाउँ धराईआ। नाता जुड़या मुहम्मद यार, यारी यार नाल रखाईआ। चौदां सद तेरा विहार, नड्ड नड्ड पन्ध मुकाईआ। गफ्लत कर सर्ब संसार, अल्फ ये बन्धन पाईआ। हस्स हस्स दे वर मेरे निरँकार, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मेरा बल गया हार, बलहीण रिहा कुरलाईआ। मेरी आयू लख चार बत्ती हज़ार, बत्ती दन्द दए वड्याईआ। गोबिन्द मार के गया मार, सिर मेरे तीर चलाईआ। मैं डिगा मूँह दे भार, ना सके कोए उठाईआ। ना दिसे कोए दुआर, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तुध बिन ओट ना कोए रखाईआ। दे वर मेरे भगवाना, तेरे अग्गे मेरी अरज़ोईआ। मैं चौथा पुत्त नादाना, बाली बुध वखाईआ। तेरा कीता पूर निशाना, लख

चुरासी भरम भुलाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात खेल कीती विच जहाना, घर घर करी लड़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार वड बलवाना, आसा तृष्ना नाच नचाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा सत्त दीप सुणाया झूठ तराना, सच सुच्च नज़र किसे ना आईआ। साधां सन्तां तोड़या माणा, माण कोए रहिण ना पाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वन्डया खाना, ख़ाकी तन वेख वखाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार वक्खो वक्खर गाया गाणा, जगत रसना जिह्वा नाल रलाईआ। अन्तिम तेरा मन्नणा प्या भाणा, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं बैठा बण बण एका राणा, रईयत वेखां थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले तेरी सच सरनाईआ। सच सरनाई दे ओट, इक्को आसरा रिहा तकाईआ। मैं आलणयों डिगा बोट, मेरी सार कोए ना पाईआ। मेरी भरी अज्जे ना पोट, तृष्ना भुख ना कदे मिटाईआ। घर घर वड़ वड़ जगत वासना कीती खोट, खोटा कर्म कमाईआ। नाता तुटया निर्मल जोत, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ ढह प्या सरनाईआ। ढह सरनाई मंगे दान, दोए जोड़ अरज़ोईआ। किरपा कर श्री भगवान, मैनूं मिले किते ना ढोईआ। चौदां लोक होए हैरान, तेरा भेव कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, नैण सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तैनूं गाण, तेरा नाअरा इक्को लाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरी मन्नण आण, सद चलण हुक्म रज़ाईआ। मैं छोटा बाला बाली बुध अञ्याण, मेरी चली ना कोई चतुराईआ। अन्तिम चरनी डिगा आण, मेरी भुल्ल दे बख्शाईआ। सृष्ट सबाई कीती वैरान, वरन गोत पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर मिले वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ वड मेहरवाना, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। कलयुग देवे सच निशाना, एका गुण जणाइंदा। प्रगट हो श्री भगवाना, तेरा मूल चुकाइंदा। गोबिन्द सूरा नौजवाना, वेस अवल्लड़ा आप वखाइंदा। तेरी जड़् उखेड़े विच जहाना, बाले नीहां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। नीहां हेठां दिते बाल, कलयुग तेरी जड़् उखड़ाईआ। प्रगट हो दीन दयाल, लहिणा देणा दए मुकाईआ। तेरी कूड़ी मेटे अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप जणाईआ। तेरी पूरी करे घाल, कीती घाल लेखे लाईआ। तेरा माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आपणे चरनां हेठां लए सवाल, तिन्न जुग ना कोए उठाईआ। सतिजुग साचा उठाए आपणा लाल, लाल अनमुलड़ा आप जगाईआ। धरत मात दी गोदी दए बहाल, गुर गुर खुशी मनाईआ । साचा देवे नाम धन माल, ख़ज़ाना इक्को वार लुटाईआ। समरथ पुरख चले नाल नाल, दो जहानां वाली पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त अन्त

कराईआ। तेरा अन्त करे करतार, अन्तष्करन ना कोए रखाइंदा। बीस बीसा बेड़ा पार, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जगत जगदीशा हो त्यार, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा सच हदीसा सुण लै अन्तिम वार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हँ ब्रह्म मम कर निमस्कार, तोहे एका राह वखाइंदा। निहकर्मी कर्म कांड तों करे बाहर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। कूड़ी क्रिया दए निवार, दुरमति मैल धुआइंदा। पाटा चीथड़ देवे पाड़, स्वच्छ सरूपी बस्त्र तन पुआइंदा। सांतक करे अग्नी हाढ़, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चौथे जुग तेरा पन्ध आप मुकाइंदा। तेरा पन्ध अन्तिम मुक्कणा, हरि सतिगुर आप मुकाईआ। लख चुरासी बूटा सुक्कणा, हरया सिंच ना कोए कराईआ। पुरख अबिनाशी इक्क उठणा, सब दा लहिणा देवे झोली पाईआ। सिँघ शेर गुर शब्द इक्को बुक्कणा, दो जहानां भबक लगाईआ। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। भेख पखण्ड अन्तिम छुपणा, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। तेरा बूटा आपणी हथ्थीं पुटणा, जड़ कोए नज़र ना आईआ। डूँग्घे खाते आपणे सुटणा, बांहों फड़ बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। सतिजुग साचा मात रखणा, रख रख आपणी खुशी मनाईआ। सति सतिवादी मार्ग इक्को दस्सणा, चार वरन मिले सरनाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश मिल मिल हस्सणा, दूई द्वैती दए चुकाईआ। करे प्रकाश कोटन रव ससना, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। आत्म परमात्म नाम सब ने जपना, सोहँ ढोला एका गाईआ। साचे मन्दिर सचखण्ड सुहाणे वसणा, शिवदुआला मठ्ठ गुरू घर इक्क वखाईआ। अठसठ तीर्थ चरन दुआरे ढठ्ठणा, ढह ढह सीस झुकाईआ। जन भगतां मले आपणे हथ्थीं वटना, सतिजुग साचा तग बन्नाईआ। दूजी दस्से ना कोए दुरघटना, दुबिधा मैल ना कोए रखाईआ। पए सरनाई ढह ढह बिधना, बिधना लेखा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आपे लिखणा, लिख लिख दए समझाईआ। कलयुग तेरा अन्तिम घर, हरि सच्चा सच वखाइंदा। चारों कुण्ट आउणा डर, तेरा दर्द ना कोए वंडाइंदा। वीह सौ इक्की बिक्रमी नट्ठ के अंदर जाणा वड़, पुरख अबिनाशी पर्दा पाइंदा। चुप करके बहणा दड़, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। सतिजुग साचे सच मुहल्ले वेखे चढ़, पुरख अबिनाशी कौण कूटे खेल कराइंदा। कृपानिध ठाकर स्वामी देवे मोहे इक्को वर, वर इक्को झोली पाइंदा। धरनी धरत धवल धर, धुर धाम लेखा आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को राम, राम रम्मईआ रूप वटाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को काहन, मुकंद मनोहर लखमी नरायण सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क पैग़ाम, ईसा मूसा आप सुणाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क अमाम, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई आपणा नाम, नानक मन्त्र सतिनाम जणाइंदा। सृष्ट सबाई एका जाम, गोबिन्द अंमित

रस चखाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क भगवान, पुरख अकाल नज़री आइंदा। सृष्ट सबाई इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क मकान, सचखण्ड दवार आप वड्याइंदा। सृष्ट सबाई इक्क अस्थान, सतिगुर चरन दुआरा सोभा पाइंदा। सृष्ट सबाई एका गान, आत्म परमात्म गीत अलाइंदा। सृष्ट सबाई एका भान, जोती जाता डगमगाइंदा। सृष्ट सबाई एका पीण खाण, निझर रस आप रखाइंदा। सृष्ट सबाई एका काहन, अनहद नादी राग सुणाइंदा। सृष्ट सबाई एका माण, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। सतिजुग साचा बणे विधान, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। पंचम पंच राज राजान, परपंच मेट मिटाइंदा। नौ सत्त देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सारे गाण, गुर अवतार पीर पैग़म्बर शुकर मनाइंदा। संसा रहे ना कोए विच जहान, हिंसा रूप ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग बेड़ा पार कर, सतिजुग धार आप चलाइंदा। सतिजुग धार चले मात, मातर भूमी दए वड्याईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सति असति वेख वखाईआ। श्री भगवान सुणाए गाथ, आप आपणा नाउँ दृढ़ाईआ। लेखा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हाथ, हथ्थो हथ्थ लेखा दए चुकाईआ। भेव चुकाए त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै लोआं खोज खुजाईआ। पावे सार राम दसराथ, दसरथ बेटा वेख वखाईआ। सतिजुग साचा देवे दात, पीर पैग़म्बर इक्क सरनाईआ। लेखा लिखे बिन कलम दवात, शाही रंग ना कोए चढ़ाईआ। आत्म परमात्म इक्क जमात, एका दूआ दूआ एका एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग साचा जाए लग्ग, श्री भगवान आप लगाईआ। प्रगट हो सूरा सरबग, वेखे खेल सर्ब घट थाईंआ। भगत भगवन्त कर अलग्ग, एका रंग चढ़ाईआ। हँस बणाए हरि हरि कग्ग, काग हँस रूप वटाईआ। गुरमुख गुरसिख हीरे नग, माणक मोती नाउँ धराईआ। दरस वखाए उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। मुख लगाए सगन सग, रस अमृत आप चखाईआ। अगम्मी नगारा जाए वज्ज, अनहद राग सुणाईआ। बजर कपाटी जाए भज्ज, पर्दा दूई रहे ना राईआ। आत्म परमात्म होए हज, साचे काअबे खुशी मनाईआ। सच महिराबे बहे सज, हुजरा इक्को इक्क दरसाईआ। करे खेल शाह नवाब, नौबत आपणे नाम रखाईआ। भूपत भूप राजन राज, शहिनशाह शाह आप हो जाईआ। कलयुग सतिजुग दोहां काज, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आप कराईआ। जुग जुग बदलणहारा समाज, समझ समझ दए समझाईआ। त्रैगुण बुझावणहारा आंच, अग्नी अग्ग दए गंवाईआ। वेखणहारा माटी काच, काची गगरीआ फोल फोलाईआ। सतिजुग मार्ग लाए साच, सच सुच्च इक्क रखाईआ। गुरमुखां निर्मल करे ज़ात, ब्रह्म आपणा अंग लगाईआ। एका सेज सुहाए खाट, आत्म अन्तर आसण लाईआ। नाता तुट्टे

आण बाट, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। अग्गे नेड़े रखे वाट, पिछला पन्ध रिहा मुकाईआ। गुरसिखां खोले बन्द ताक, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। दरस वखाए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। हरिजन बणाए पारजात, छोह आपणे अंग लगाईआ। एथे ओथे पुच्छे वात, दो जहानां होए सहाईआ। देवणहारा साची दात, सोहँ वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, अगला पिछला जाणे लेखा, मध आपणी धार चलाईआ। अगला पिछला लेखा चुक्के लोक, हरि सतिगुर आप चुकाईआ। कलयुग कूड़ी मारे फूक, त्रैगुण अग्नी अग्ग लगाईआ। कलयुग चरनी सुत्ता घूक, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। सतिजुग साचा उठ उठ मारे कूक, कूक कूक सुणाईआ। साहिब सुल्तान दा सच्चा पूत, सतिजुग वेखे चाँईं चाँईंआ। एका ताणा पेटा सूत, तन्दी तन्द इक्क रखाईआ। तन माटी ना कोए कलबूत, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अगला लेखा रखणा याद, हरि सतिगुर आप कराइंदा। पुरख अबिनाशी सुणन आया फरयाद, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां देवणहारा दाद, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सति निशाना देवे गाड, दो जहानां आप झुलाइंदा। शरअ मज़्ब

८५१ दी तोड़े हाद, नव नौ इक्को राह वखाइंदा। पारब्रह्म दा सच्चा नाद, ब्रह्म सुण सुण खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप ८५१

हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लहिणा वखाए नैणा, गुरमुख विरला वेख वखाइंदा। अगला लहिणा जिस जन वेखण

१२ दा चाओ, सो साहिब दए समझाईआ। प्रभ साचे दर लागे पाउँ, देवणहार वड वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांहों, १२

फड़ बांहों गले लगाईआ। सदा सदा सद देवे ठंडी छाउं, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्तिम करे न्याउँ, अनयाए कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला पिछला लेखा दए जणाईआ। अगला लेखा जिस जन वेखणा, प्रभ सच सच दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म करना हेतना, हित इक्को इक्क रखाईआ। दीन दयाल वसे नेतन नेतना, नेरन नेर डेरा लाईआ। अचरज खेल प्रभ ने खेडणा, वेद कतेब ना सके जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गा पिच्छा रिहा वखाईआ। अग्गा पिच्छा कोई ना वेखे, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। बाहरों बाहरों लभ्भदे भेते, अंदर वड़न कोए ना जाईआ। सृष्ट सबाई कल्लर रेते, कंध कूड़ी रहे ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बण किरसाना वढ्ढदा रिहा अगेत पिच्छेते, हाढ़ी सौणी रूप वखाईआ। कलयुग अन्तिम आपणे हथ्थ रखे दो जहानां ठेके, गुर अवतार डोर ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आदि मध आपणा खेल वखाईआ।

कलयुग करना अन्त, सतिजुग साचा मात लगाईआ। दोहां विचोला श्री भगवन्त, भगवन्त आपणा खेल वखाईआ। गुरमुख वेखे साचे सन्त, सति सतिवादी लए उठाईआ। इक्क जणाए नाम मंत, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, मजीठी उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। लेख चुकाए भुख नंगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल आप महान, कलयुग अन्त मेटे निशान, सतिजुग धरे मात बलवान, सृष्ट सबाई देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर वक्खर आप पढ़ाईआ।

✳ २२ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बख़तौर सिँघ दे गृह ख्याली वाला ज़िला बठिंडा ✳

जन्म अजन्म लेखे ला, धर्म अधर्म दए दुहाईआ। निहकर्मी लैणा कर्म कमा, कर्म कांड दए खपाईआ। साची बख्श इक्क सरना, सरनगति इक्क समझाईआ। मेहरवान होए मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। डुब्बदे पाथर लए तरा, मंझ बेड़ा पार कराईआ। साची सिख्या इक्क समझा, सिख सिख्या रूप समाईआ। आत्म पर्दा द्वैती लाह, परमात्म रंग चढ़ाईआ। सच महातम दए समझा, बिन आत्म परमात्म दूजी अवर ना कोए कुड़माईआ। ज़ाहर बातन दरस दए करा, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। अमृत मेघ मेघ बरसा, अग्नी तत्त तत्त बुझाईआ। लख चुरासी हरस मिटा, नाम निधान झोली पाईआ। अर्श फर्श वेखे दोए थाँ, काया कुरा खोज खोजाईआ। जन भगतां तरस करे आप होए निगह बां, निगह आपणी आप उठाईआ। नेड़ ना आए जगत शैतान, संसा रोग रहे ना राईआ। अन्तिम देवे पद निरबान, निरबाण पद वखाईआ। शब्द अगम्मी सच बबाण, गुरमुखां आप चढ़ाईआ। लेखा चुक्के आवण जाण, जन्म मरन फंद कटाईआ। जिस भगत मिले भगवान, सो भगत भगवन विच समाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, निरगुण आपणा नूर धराईआ। जोधा सूर बली बलवान, बल आपणा आप वखाईआ। लख चुरासी विच्चों कर पहिचाण, गुरमुख सज्जण लए उठाईआ। जिस जन सोहँ शब्द देवे दान, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुर पार कराईआ।

✳ २२ भाद्रों २०१६ बिक्रमी मुकंद सिँघ दे गृह मराज ज़िला बठिंडा ✳

सति पुरख तेरा ठांडा दरबार, सति सति वड्याईआ। हरि पुरख तेरा खेल अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ।

एकँकार तेरा सच विहार, भेव ना जाणे कोए राईआ। आदि निरँजण तेरा नूर अपार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करते तेरी साची धार, धार धार विच रखाईआ। श्री भगवान तेरा सच निशान, दर साचे सोभा पाईआ। पारब्रह्म तेरा रूप महान, रूप रेख नज़र कोए ना आईआ। शहिनशाह वड राज राजान, भूपत भूप खेल खलाईआ। परवरदिगार नौजवान, मुकामे हक़ तेरी रुशनाईआ। लाशरीक वड मिहबान, मिहबान बीदो तेरा अन्त कोए ना आईआ। तख्त निवासी तेरा धुर फ़रमाण, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीवा बाती इक्क महान, कमलापाती आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा भेव कोए ना आईआ। सो पुरख निरँजण तेरा उच्च मुनारा, ऊँचो ऊँच तेरी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण तेरा ठांडा दरबारा, दर घर साचा सोभा पाईआ। एकँकार कर पसारा, आदि निरँजण नूर वखाईआ। अबिनाशी करता दे हुलारा, श्री भगवान वेखे चाँईं चाँईंआ। पारब्रह्म प्रभ करे निमस्कारा, निरगुण निरगुण सीस झुकाईआ। तख्त निवासी शाह सिक्दारा, शहिनशाह आपणा खेल कराईआ। रूप रंग रेख ते वसे बाहरा, तत्तव तत्त ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। तेरी ओट पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर एक वखाइंदा। दीआ बाती एका बाल, अन्ध अन्धेर ना कोए जणाइंदा। खेलणहारा खेल निराल, चाल अवल्लड़ी आप चलाइंदा। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। तेरे दर झुके सीस, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। आदि जुगादी तेरी हदीस, मन्ने दो जहाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, खाली झोली मोहे भराउणा। देणा वर साहिब समरथ, समरथ तेरी वड्याईआ। सचखण्ड दवारे रिहों वस, लाशरीक इक्क खुदाईआ। आदि जुगादी मार्ग दस्स, जुग जुग राह चलाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। निज गृह निज मन्दिर निज घर कर कर वास, घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा वड वड्याईआ। वड दर तेरा सुल्तान, लेखा लिख्त विच ना आईआ। तेरी महिमा गणत महान, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। तेरा तख्त नूर महान, रूप रंग ना जाणे कोए राईआ। तेरा हुक्म सच फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सत्त चार ढह पए सरनाईआ। सत्त चार चरनी लग्ग, निउँ निउँ सीस झुकाया। किरपा कर सूरे सरबग, दर तेरा इक्क ध्याया। साडा पर्दा लैणा कज्ज, सिर आपणा

८५३
१२

हथ्थ टिकाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग नगारा गया वज्ज, दो जहानां नाद वजाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख्या भज्ज, बण पाँधी पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाया। सत्त चार होए हैरान, हरि जू भेव कोए ना आइंदा। दोए जोड़ मंगण दान, खाली झोली सर्ब वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेख्या खेल महान, ख़ालक ख़लक तेरा भेव कोए ना आइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, आदि जुगादी खेल रचाइंदा। दाता दानी गुण निधान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सत्त चार बाल अञ्याण, आपणा बल ना कोए रखाइंदा। दर तेरे डिगे आण, बाहों फड़ गले ना कोए लगाइंदा। लोकमात बण के बैठे रहे महिमान, महिमानी तेरी ना कोए सुणाइंदा। फिरदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान, साचा मन्दिर ना कोए वखाइंदा। समुंद सागर डूँघी कंदर वेखदे रहे मार ध्यान, तेरा ध्यान ना कोए जणाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गउँदे रहे गाण, तेरा राग ना कोए अल्हाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वड़दे रहे मकान, तेरा मकान ना कोए वखाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिलदे रहे शैतान, शरअ शैतान ना कोए गवाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सुणदे रहे कान, कानी तीर ना कोए लगाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश मन्नदे रहे ईमान, इस्म तेरा ना कोए वखाइंदा। सेवा करदे रहे बण बण ग़ुलाम, गुरबत मात ना कोए मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया वेख्या पीण खाण, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। लख चुरासी बेईमान, बेवा रूप सब ही नज़री आइंदा। तुध बिन कोए ना पुच्छे आण, सिर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। अन्तिम मिटदा जाए निशान, निशाना कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा, सत्त चार एका वार सुणाइंदा। सत्त चार मार्ग दस्स, हरि हरि जू दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर आउणा नस्स, पुरख अबिनाशी वेखे चाँईं चाँईंआ। त्रैगुण माया चरनी जाणा ढट्ठ, रजो तमो सतो आपणा माण मिटाईआ। पंज तत्त हरि चरन दुआर वहाउणी आपणी रत्त, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश माण गंवाईआ। करे खेल पुरख समरथ, सब दी आसा पूर वखाईआ। साचा मार्ग देवे हस्स हस्स, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। ओथे चले ना कोए किसे दा वस, बेवस सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रै त्रै मेले पंचम चेला सज्जण सुहेला एका घर मंगाईआ। साचे दर आउणा दरबार, हरि अवतरी अवतारां आप जणाइंदा। ब्रह्मे सुत रहिणा ख़बरदार, सन्त कुमार नैण खुल्हाइंदा। बराह वेख उठ बलधार, हरि जू आपणा पर्दा लाहइंदा। हाव ग़रीव कर पुकार, सुनणहारा फेरी पाइंदा। यगे पुरष कर निमस्कार, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। नरायण नैण कर दीदार, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। कपल मुन मंग चरन धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का एका लाइंदा। दत्ता त्रै पावे सार, त्रै त्रै

आपणा मूल चुकाइंदा। रिखव तेरा खोल्ह किवाड़, सति सरूपी राह जणाइंदा। पिरथू तेरी बन्ने धार, प्रिथमे पृथ्मी नाल मिलाइंदा। मत्तस तेरी पावे सार, जल थल महीअल फोल फोलाइंदा। कशप तेरा लाहे भार, मिन्दिरा पिठ ना कोए टिकाइंदा। मोहणी तेरा वेख शंगार, मोहण माधव आपणे अंग लगाइंदा। बावन बल दए आधार, दर दुआरा इक्क सुहाइंदा। हँसा बोल इक्क जैकार, पंखी सोहँ ढोला एका गाइंदा। करे खेल आप करतार, करनी करता आप कमाइंदा। नर सिँघ धर रूप निरँकार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म साची धार, परस परस परस जणाईआ। राम रामा राम अवतार, रघुपत लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। वेद व्यासा दे विचार, तेरी विचार विचार लए मिलाईआ। नेत्र उठ कर दीदार, दीद दीद नाल वखाईआ। त्रिलोकी नंदन खोल्ह किवाड़, बन्द किवाड़ा कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा एका वार सुणाईआ। सच संदेसा साचा मीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाई रीत, निरगुण सरगुण वेस धराइंदा। कलयुग वेखणहारा पत्तत पुनीत, पत्तत पावन आपणा खेल कराइंदा। बुध बिबेकी करे सीत, बोध ज्ञाना ज्ञान दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सत्त चार आप जगाइंदा। सत्त चार खोल्हो अक्ख, सचखण्ड निवासी खेल कराइंदा। निरगुण नूर होया प्रतख, प्रतख आपणी धार चलाइंदा। भगत अठारां करे वक्ख, फड़ बांहों आप उठाइंदा। धू्र प्रहिलाद मार्ग दस्स, बल बावन भेव चुकाइंदा। अमरीक मेला हस्स हस्स, दुरबाशा माण मिटाइंदा। जनक अंदर आपे वस, हरी चन्द हरि हरि रूप समाइंदा। बिदर सुदामे तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। रखणहारा दीपत पत्त, सभा आपणी इक्क जणाइंदा। जै देओ पढ़े अक्खर तत्त, पत्त डाल्ही लेख लिखाइंदा। रविदास चुमारा सत्थर इक्को घत्त, पाणां गंढु सीस झुकाइंदा। जै देव नामा मंगे मंग, त्रिलोचण एका गंढु पुवाइंदा। करे खेल श्री भगवन, हरि का भेव कोए ना आइंदा। गणका पूतना सुणाया छन्द, सोहला ढोला एका गाइंदा। बधक बेड़ा आपे बन्न्ह, आपणे कंध उठाइंदा। कबीर जोलाहा कहे धन्न धन्न, हरि सतिगुर इक्को नज़री आइंदा। उठ उठ सुणाए सारयां कन्न, कूक कूक अल्हाइंदा। जुग चौकड़ी जिस बेड़ा दिता बन्न, सो सतिगुर वेस वटाइंदा। जिस घड़या सो देवे भन्न, घड़न भन्नणहार आप हो जाइंदा। वसणहारा बिन छप्परी छन्न, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, निर्मल जोत डगमगाइंदा। सारे रल मिल दोए जोड़ मंगो मंग, प्रभ पूरी आस कराइंदा। नव नौ चार वेला गया लँघ, पार किनारा इक्क जणाइंदा। किसे ना मिले सच पलँग, सेज सुहञ्जणी

८५५
१२

ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप दृढ़ाइंदा। साचा हुक्म ईसा मूसा, परवरदिगार आप जणाईआ। रहिण ना देवे काला सूसा, काली धार धार मिटाईआ। पिछली भुल्ले सर्ब हदीसा, हज़रत करे सच पढ़ाईआ। खाली होए सब दा खीसा, वस्त कोए रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे इक्क नौ उनीसा, इक्क इकल्ला रिहा समझाईआ। आपणी ज़मीर ज़हीर गुणी गहीर बेनज़ीर वखाए शीशा, सुहरत आपणी आप जणाईआ। लेखा चुकाए तीस बतीसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे लए बुलाईआ। दर साचे वसे हक़ अमाम, नूरो नूर नूर धराइंदा। कलयुग अन्तिम पीर पैग़म्बर नबी रसूल करे सर्ब ग़ुलाम, फड़ बांहों आप उठाइंदा। वेखणहारा चौदां लोक नज़ाम, नज़म मुहम्मद इक्क सुणाइंदा। ज़बराईल मेकाईल असराईल असराफ़ील होए हैरान, हैरत विच सर्ब रखाइंदा। ना कोई ज़िमी ना असमान, कवण दुआरे परवरदिगार संदेसा देवे आण, रसना ज़बान ना कोए हिलाइंदा। नाता तुट्टा शरअ ईमान, सिरक्त सब दी आप गवाइंदा। नज़र आए ना कोए इस्लाम, अलैकम रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई क़ासद देवे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर गीत ना कोए अल्लाइंदा। सच दुआरे चल के आओ तमाम, तमां सब दी आप मिटाइंदा। मक्का काअबा होए वैरान, दो दो आबा मेल ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ईसा मूसा संग मुहम्मद इक्क लगाए आपणी रमज़, अल्फ़ ये लेखा आप मुकाइंदा। सच मुहम्मद हो त्यार, चार यारी नाल रलाईआ। दर बण के आउणा भिखार, खाली झोली रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं आई हार, चौदां तबक देण दुहाईआ। साचा सबक ना सिख्या मीआ यार, मुहब्बत मोह ना कोए वखाईआ। तोबा तोबा करन अन्तिम वार, सोभा कोए रहिण ना पाईआ। पर्दा ओहला चुकया एकँकार, अकल कल आपणी खेल कराईआ। फड़ बांहों सद्दे चरन दुआर, हद हदूद ना कोए जणाईआ। महिदूद रखे एकँकार, बल सके ना कोए जणाईआ। हज़ारा दरूद पढ़े ना कोए बोल जैकार, नाअरा हक़ ना कोए सुणाईआ। सारे होयण शर्मसार, नेत्र नैण सके ना कोए उठाईआ। अल्ला राणी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, खुली मींढी दए दुहाईआ। मेरी अल्फ़ी गई पाट, चुन्नी सीस ना कोए टिकाईआ। चोटी मुंनी परवरदिगार, पर्दा रखे ना कोए गोसाईआ। मुस्लिम सुन्नी होए खुआर, बेख़बर ख़बर कोए ना पाईआ। अन्तिम पासा आया हार, जित कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल परवरदिगार, बेपरवाह आपणी धार चलाईआ। सही सलामत एकँकार, आपणा फेरा पाईआ। वसणहारा धाम न्यार, मुकामे हक़ बैठा आसण लाईआ। राह तक्कण चार यार, नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, कोई ना दिसे मददगार, अली मदद ना कोए रखाईआ। इक्क दूजे नाल कर विचार, फड़ फड़ बांहों रहे उठाल, चलो चल के करीए सवाल, एका हाल

८५६ १२

सुणाईआ। किरपा करे दीन दयाल, साडी करनी करे बहाल, रहिमत रहीम रहिमान इक्क कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तरां एका हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म सतिगुर गुर, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। निरगुण नानक मेला धुर, धुर संजोगी मेल कराइंदा। जोती जोत नाता गया जुड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। पारब्रह्म प्रभ एका बौहड़, आप आपणे अंग लगाइंदा। मिट्ठा करे रस रीठा कौड़, अमृत रस इक्क चखाइंदा। दो जहानां ला ला पौड़, सच महल्ले आप बहाइंदा। निरगुण निरगुण वेखे कर के ग़ौर, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी आवाज़ लगाइंदा। निरगुण आवाज़ नाम नगारा, नौबत इक्को इक्क वजाईआ। एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जोधा सूर बली बलकारा, बल आपणा आप जणाईआ। लेखा जाणे गुपत ज़ाहरा, अंदर बाहर रिहा समझाईआ। नेत्र खोल्ह एकँकारा, ख़ालक ख़लक दए वखाईआ। सृष्ट सबाई धूआँधारा, जगत अन्धेरा छाईआ। गुर का इष्ट ना कोए प्यारा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। लख चुरासी नार होई विभचारा, कन्त कन्तूहल ना कोए हंढाईआ। अठसठ तीर्थ रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साध सन्त होए अवारा, मन वासना होई हल्काईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ, अग्नी लग्गी तत्ती हाढ़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लग्गा अखाड़ा, धीआं भैणां नाच नचाईआ। गोबिन्द वेख सुत दुलारा, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। चार वरन ना कोए प्यारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करन लड़ाईआ। हक़ मुकाम ना कोए नाअरा, बिस्मिल रूप ना कोए रखाईआ। गुर का शब्द ना किसे विचारा, पीर पैग़म्बर ना कोए पढ़ाईआ। अन्तर दीपक ना कोए उज्यारा, लख चुरासी जगत दीवाली करे रुशनाईआ। दर ना किसे दिसे ठांडा दरबारा, नौ खण्ड पृथ्मी होई हल्काईआ। उठो वेखो कलयुग अन्त नज़ारा, एका जोत जोत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर दस दर बुलाईआ। दस गुर सच संदेसा, पुरख अकाल सुणाइंदा। करे खेल आदि जुगादि जुग जुग हमेसा, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। शाह सुल्तान नर नरेशा, धुर फ़रमाना हुक्म अल्हाइंदा। वेखणहारा धारी केसा, मूंड मुंडाए पर्दा लाहइंदा। नेत्र खोल्ह दस दस्मेशा, दहि दिशा फेरी पाइंदा। भरमे भुल्ला औलीआ पीर शेखा, पीर पैग़म्बर नज़र कोए ना आइंदा। चार कुण्ट चार वरन चौथे जुग कोए ना करे किसे हेता, प्रेम प्यार ना कोए रखाइंदा। कूड़ी क्रिया कलयुग खेडा, साचा वणज ना कोए कराइंदा। आत्म परमात्म किसे ना मिल्या भेता, सोहँ ढोला बण विचोला नानक इक्क सुणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म भुलया चेता, चेतन रूप ना कोए वखाइंदा। कलयुग अन्तिम उजड़नहारा खेता, पीर पैग़म्बर गुर अवतार आप वखाइंदा। कलयुग अन्तिम पारब्रह्म पुरख अबिनाशी सब

नूं दिता नेंता, दर आपणे आप बुलाइंदा। अक्खीं वेखो आपणा पेशा, साख्यात दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौहत्तरां एका हुक्म सुणाइंदा। दस गुरू प्रभ चरन दुआर, आ आ सीस झुकाईआ। नानक निरगुण बोल जैकार, लख लख शुकर मनाईआ। गोबिन्द सूरा कर प्यार, परम पुरख विच समाईआ। जिउँ भावे तिउँ कर कार, तेरी कीमत कहिण ना जाईआ। हउँ बाली बुध बाल अज्ञाण, तूं साहिब सच्चा शहिनशाहीआ। तेरे हुक्मे अंदर खेल महान, खेल खेल खुशी मनाईआ। तेरा सरगुण नूर महान, निरगुण सरगुण विच टिकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतारां रख्या हथ्थ विधान, लोकमात बणत बणाईआ। लेखा लिख लिख दिता वेद पुराण, शास्त्र सिमरत कर पढ़ाईआ। खाणी बाणी कर प्रधान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। कलयुग अन्तिम होई बाल अज्ञाण, बाली बुध ना कोए वड्याईआ। दोए जोड़ सरनी डिगी आण, बलहीण रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौहत्तरां एका हुक्म जणाईआ। छे घर नौ दर, छीका नाया जोड़ जोड़ाइंदा। इक्क इकल्ला वेस कर, दोए दोए रूप वखाइंदा। त्रै त्रै लेखा आपे जाण, त्रै त्रै बन्धन पाइंदा। चार चार हो प्रधान, पंचम पंच पंच अलाइंदा। छे छे खेल करे भगवान, सति सति एका राह चलाइंदा। अठ्ठ अठ्ठ खोल्ह तत्त दुकान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल मिलाइंदा। नौ दर लेखा जीव जहान, नौ खण्ड पृथ्मी खोज खोजाइंदा। छे नौ अंक करे परवान, उनंतरां एका घर वसाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंच तत्त कर परवान, तेई अवतार गंढ बंधाइंदा। अठारां भगत दे दान, ईसा मूसा मुहम्मद भेव चुकाइंदा। चार यारी कर कल्याण, कला आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका जोती गुर दस दे ज्ञान, गुर मन्त्र नाम पढ़ाइंदा। उनंत्रां देवे चरन ध्यान, लेखा काया जोड़ जोड़ाइंदा। अग्गे दस्से सच मुकाम, सचखण्ड दवार इक्क वखाइंदा। निरगुण रूप वड मेहरवान, मेहरवानगी आप कमाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। गुरमुख साचे कर परवान, नाउँ परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। सोहँ बणाए सच विधान, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। तख्त निवासी राज राजान, साचे तख्त आसण लाइंदा। हाकम हुक्म हुक्मरान, हक़ हक़ीक़त खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम आपणा राह जणाइंदा। पंचम पंच करे प्रमुख, प्रमुख इक्को इक्क सलाहीआ। देवणहारा साचा सुख, सुख नाल मिलाईआ। मेटणहारा दो जहानां दुःख, दुखियां दुःख गंवाईआ। सफल करावणहारा कुक्ख, माता कुक्ख दए वड्याईआ। भगत भगवन्त गोदी चुक्क, दर साचे खुशी मनाईआ। निरगुण धारों निरगुण उठ, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण मां निरगुण पिता निरगुण पुत्त, निरगुण बणे धन्न जणेंदी माईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, दूसर संग ना कोए रलाईआ।

८५८
१२

सचखण्ड सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। आपणी धार किसे कोलों ना लए पुच्छ, जिउँ भावे चले रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम आपणा मेल मिलाईआ। पंचम नाता पुरख बिधाता, पंचम जोड़ जोड़ाइंदा। पंचम गाथा हरि समराथा, एका नाम पढ़ाइंदा। पंचम देवणहारा दाता, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। पंचम रखे उत्तम जाता, जात अजाती मेट मिटाइंदा। पंचम मेला इक्क इकांता, एका घर वखाइंदा। पंचम मेला करे साहिब सज्जण सर्ब सुख दाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल कराइंदा। पंचम मीता ठांढा सीता, पंचम आपणा रंग चढ़ाईआ। पंचम धाम वखाए इक्क अनडीठा, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। पंचम तत्त तन ना तपे अंगीठा, हवन कुण्ड ना कोए वखाईआ। पंचम नाद शब्द धुंन कोए ना गाए गीता, ज्ञान ध्यान ना कोए वड्याईआ। पंचम मेला त्रैगुण अतीता, त्रैगुण नाता तोड़ तोड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कराइंदा। भगत भगवन्त चाढ़े चन्द, दो जहान आप रुशनाइंदा। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्नृ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पार कराइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां सुणावणहारा राग कन्न, बोध अगाधी शब्द अनादी अनहद राग सुणाइंदा। देवणहारा लख चुरासी डंन, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका राह वखाइंदा। पंचम दस्से एका राह, नानक निरगुण संग समाईआ। पुरख अकाल बण मलाह, बेड़ा मात चलाईआ। देवणहारा सच सलाह, सलाहगीर फेरा पाईआ। आत्म परमात्म जपाए सच्चा नाँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। डूँग्घी भँवरों लए कढा, फड़ बाहों गले लगाईआ। साचे पौड़े दए चढ़ा, अध विचकार ना कोए अटकाईआ। साचे मन्दिर दए बहा, घर साचे वजे वधाईआ। आपणा खेल आप करा, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम निहकलंका नाउँ धरा, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पूरी आस कराईआ । जिस दा वेद व्यासा गया ध्यान लगा, ईसा नेत्र नैण उठाईआ। जिस दा मुहम्मद तक्के राह, रैहबर आवे सच्चा माहीआ। जिस दा ढोला नानक गया गा, महांबली फेरा पाईआ। जिस दा गोबिन्द जपया नाँ, सो पुरख अकाल वेस वटाईआ। वेखणहारा सभनी थाँ, थान थनंतर खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका बूझ बुझाईआ। पंचम बूझे इक्क ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। पंचम देवे इक्क ध्यान, एका राह चलाइंदा। पंचम देवे एका माण, एका घर वसाइंदा। पंचम पंच कर प्रधान, पंचम गाना आप बंधाइंदा। पंचम हथ्थ सच निशान, धुरदरगाही आप लहराइंदा। गुरमुख साचे कर परवान, नाम खण्डा हथ्थ वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लेखा चुक्के आण, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। विष्नूं विश्व कर कल्याण, वास्तक आपणा रंग रंगाइंदा। भगवन

८५६ १२

खेल करे महान, महिमा कथ ना कोए सुणाइंदा। ब्रह्मे छड्डुणी पए दुकान, ब्रह्म नाता तोड़ तोड़ाइंदा। शंकर अन्तिम आवे हाण, हथ्थ त्रिसूल ना कोए उठाइंदा। बासक तशका सहँसर मुख ना कोए गाण, सांगोपांग सेज ना कोए हंढाइंदा। त्रैगुण माया तोड़े माण अभिमान, रूप ना कोए वटाइंदा। पंज तत्त अन्तिम चुक्के काण, कल आपणी आप वखाइंदा। तेई अवतार दर डिगण आण, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। भगत अठारां करन ध्यान, नेत्र नैण सगल शरमाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद दूर दुराडे मंगण दान, सजदा सीस जगदीस झुकाइंदा। नानक गोबिन्द ढोला गाण, सोहला इक्को इक्क अल्लाइंदा। सोहँ रूप आप भगवान, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दिता दान, थिर घर साचा हट्ट चलाइंदा। निरगुण गोपी निरगुण काहन, निरगुण सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैग़म्बर दर आपणे आप मंगाइंदा। दर आए छे नौ, आपणा हाल सुणाईआ। लख चुरासी थक्के भौं, बन खण्ड फेरा पाईआ। रसना जिह्वा थक्के गौं, गा गा अन्त कोए ना आईआ। दे दे थक्के ढोआ ढ,ो लख चुरासी झोली पाईआ। अक्खरी नाउँ दे दे गए बो, बीज मन्त्र नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म तेरी दस्सदे रहे सो, हँ ब्रह्म कर रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम करया खेल ओह, ओहला पर्दा दए मिटाईआ। आपणे जिहा आपे हो, लोकमात फेरा पाईआ। त्रैभवन धनी दो जहानां करे लो, लोआं पुरीआं इक्क रुशनाईआ। सृष्ट सबाई वेखे अंदर वड़ वड़ टोह, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख विरले नाल जाए छोह, जिस आपणी दया कमाईआ। पंच विकारा देवे कोह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्तिम चार कुण्ट दहि दिशा दो जहान रवि ससि सूरज चन्न मंडल मण्डप रहे रो, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साध सन्त जीव जंत आपणी पत्त रहे खोह, पतिवन्ता नज़र कोए ना आईआ। सुगंधी बण गई बो, कसतूरी वासना मृग सुंघ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम देवे माण वड्याईआ। पंचम जागे वड वड भागे, वडिभागी दया कमाइंदा। पंचम मिल्या कन्त सुहागे, सेज सुहञ्जणी आप बहाइंदा। पंचम सुणाए अगम्मी वाजे, छत्ती राग ना कोए अल्लाइंदा। पंचम रचया आपे काजे, करनी करता काज रचाइंदा। पंचम हरि जू साजन साचे, सचखण्ड साचे आप बहाइंदा। करया खेल गुरू महाराजे, महाराज आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम साचा जोड़ जुड़ाइंदा। पंचम जुड़या साचा जोड़ा, जोड़नहार हरि अख्वाइंदा। पंचम मिल्या एको घोड़ा, शब्द अगम्मी आप बणाइंदा। पंचां सतिगुर इक्क बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी दुःख ना कोए सुणाइंदा। पंचां वेख्या सस्से उपर लग्गा होड़ा, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। पंचां मेला हाहा टिप्पी हँ ब्रह्म चुक्की औड़ा, तृष्ना भुख ना कोए रखाइंदा।

पंचां मिल्या इक्को पौड़ा, उच्चे डण्डे हथ्थ पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच परवान पंच प्रधान पंचां देवे एका माण, पंचे सोहे दर राजान, राज राजान शाहो भूप सति सरूप सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी बोध अगाधी शब्द अनादी एका राग सुणाइंदा। एका राग धुंन जैकारा, पंचम हरि हरि आप सुणाईआ। एका मन्दिर खोल्ह दुआरा, सचखण्ड साचे लए बहाईआ। एका मित्र मिल्या प्यारा, मिल्या मित्र विछड़ ना जाईआ। एका हुक्म सच्ची सरकारा, शाह आपणा नाउँ दृढ़ाईआ। पंचे मिल के सोहँ बोलो सच जैकारा, दो जहानां होए रुशनाईआ। विष्नूं निउँ निउँ करे निमस्कारा, ब्रह्मा बैठा सीस झुकाईआ। शंकर मंगे धूढ़ी छारा, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पंज तत्त करे पुकारा, कूक कूक सुणाईआ। पंजां सुणया इक्को नाअरा, पुरख अकाल इक्क दरसाईआ। पंजां मिल्या इक्क दरबारा, दर दरवाज़ा हरि खुल्हाईआ। करया खेल अपर अपारा, सिँघ पाल सदा सुखदाईआ। सवरन मिल्या सति हुलारा, ध्रू लेखा दए चुकाईआ। ब्रह्मे तेरा अन्त किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। शंकर रोवे ज़ारो ज़ारा, बलहीण बल ना कोए वखाईआ। जगत जगदीस बणया वणजारा, सोहँ साचा हट्ट चलाईआ। सुरपति इन्द डिगा मूँह दे भारा, करोड़ तेतीसा सके ना कोए उठाईआ। अप्पछरां दिसे ना कोए अखाड़ा, मोहनी नाच ना कोए नचाईआ। मनजीता जित के गया संसारा, जित इक्को इक्क वखाईआ। करे खेल आप करतारा, भेव कोए ना जाणे राईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण होए शर्मशारा, नेत्र नैण सके ना कोए उठाईआ। कलयुग तेरा अन्तिम किनारा, सिँघ गुरदयाल दए वखाईआ। बल बावन हो उज्यारा, अकाश प्रकाश फेरा पाईआ। इतल बितल सितल वेखे डूँग्घी गारा, ख़ाकी ख़ाक फोल फोलाईआ। छत्ती जुग दा देवे इक्क हुलारा, नानक लेखा दए समझाईआ। सृष्ट सबाई आर पार अन्त किनारा, मँझधार दए रुढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म प्रभ अग्गे कढ्ढण हाढ़ा, दर बैठे अलख जगाईआ। दरोही तेरे नाम खुदाए साडा चले ना कोए चारा, बाहू बल ना कोए रखाईआ। लोहार तरखाण जो घड़दा रिहा तलवारा, तिक्खी धार रहिण ना पाईआ। तेरा खण्डा इक्को नाम दो जहानां मारे मारा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। तेरा हुक्म सति वरतारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा बल वड्डा बलकारा, बलहीण सर्ब लोकाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, तेरी महिमा कथ ना सके कोए राईआ। तूं साहिब एकओंकारा, अकल कल तेरी वड्याईआ। लख चुरासी तेरा वणजारा, निरगुण सरगुण तेरा हट्ट खुल्हाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, सत्त समुंदर रोवे बनास्पत रही कुरलाईआ। अठारां भार ना कोए पसारा, महिमा सके ना कोए जणाईआ। प्रतख प्रतख प्रतख प्रगटया निहकलंक नरायण नर अवतारा, जिस दा गुर अवतार पीर पैग़म्बर बैठे ध्यान लगाईआ। कलयुग

८६१
१२

करे अन्त पार किनारा, जगत नईया वेखे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां दए इक्क सहारा, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। रातीं सुत्तयां दए दीदारा, दर्दी दर्द वंडाईआ। बन्द खोल्हे आप किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। सुखमन वेखे डूँग्घी गारा, ईड़ा पिंगल मूँह दे भार सुटाईआ। अमृत देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना इक्क झिराईआ। दीवा बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। आत्म सेजा कर पसारा, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेलणहारा, मिल मिल खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म वसे इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोले जैकारा, जन्म मरन विच ना आईआ। देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव फुल्ल बरख़ण वारो वारा, गण गणधरब किन्नर जच्छप एका राग सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर अग्गे करन प्यारा, फड़ फड़ बांहों गले लगाईआ। मुहम्मद अद्धविचकार मंगे चरन धूढ़ छारा, नेत्र नैणां नैण उठाईआ। बिन भगत भगवन्त साचे मन्दिर चढ़े ना कोए दुआरा, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। सृष्ट सबाई रुले विच संसारा, अन्तिम कीमत कोए ना पाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवारा, पुरख अबिनाशी नज़र ना आईआ। गुरमुख उपजे साची कुल्ले, धन्न कुल्ल धन्न जणेदी माईआ। हरिजन बूटा कदे ना हुल्ले, सिम्मल रुक्ख ना रूप वटाईआ। सतिगुर सरनाई चरन प्रीती जो जन घोल घुले, तिस राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए मिलाईआ। गुरमुख सज्जण एको इक्क, एकँकारा पाया। साची सिख्या लए सिख, सिख सतिगुर रूप समाया। साहिब सतिगुर लेखा देवे लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। आत्म परमात्म पावे भिख, साची भिच्छया आप वरताया। दो जहानां वंडे हिस्स, एथे ओथे डेरा लाया। सतिगुर पूरा लख चुरासी सुत्ता दे कर पिठ, आपणी करवट ना सके बदलाया। हरिजन विरला मानस जन्म जाए जित, जीवन जुगत जग दाता इक्क समझाया। सति स्वामी साचा हित, निहकर्मी कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर रंग समाया। गुरमुख रंग अगम्म अपार, अलख अगोचर आप रंगाईआ। गुरमुख महिमा लिखण पढ़न तों बाहर, शास्त्र सिमरत लेख लिख ना सके कोए राईआ। गुरमुख वसे धाम न्यार, जिस धाम रवि ससि सूरज चन्द नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख मिले सज्जण मीत मुरार, सतिगुर पूरा सज्जण इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सज्जण सुहेला लेखा जाणे गुरू गुर चेला, गुर चेला आपणा वेस वटाईआ। चेला गुर आपे आप, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाइंदा। सृष्ट सबाई माई बाप, दो जहानां वेख वखाइंदा। चौदां विद्या गावणहारा रसना जिह्वा पूजा पाठ, सोला इच्छया फोल फोलाइंदा। आदि जुगादि वेस वटाए नटुआ नाट, बण स्वांगी स्वांग रचाइंदा।

गुरमुख सज्जण सन्त सुहेले आपे लाध, मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। नाम सुणाए बोध अगाध, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सुरती शब्दी देवे दाद, शब्दी सुरती गंढ्ढ पुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख चाढ़े आपणा रंग, आत्म सेजा सच पलँग, नाम मृदंग इक्क वजाइंदा। नाम मृदंग वज्जे सितार, तन्दी नज़र कोए ना आईआ। बिन रसना जिह्वा गाए एकँकार, इकओंकार करे पढ़ाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, वाहवा आपणी कल वरताईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े यार, कलयुग अन्तिम लए मिलाईआ। दहि दिशा निरगुण सरगुण वेखे करे भाल, भाओ भगत भगवन्त आपणी आप जणाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, एथे ओथे बण दलाल, दो जहानां पार कराईआ। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस गृह वसे दीन दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणा रंग वखाईआ। गुरमुख रंग हरि सति सरूप, बिन रेखा रेख जणाइंदा। वसणहारा दहि दिशा चार कूट, चार चार चार भेव खुल्हाइंदा। पंचम पंच पंच दे सबूत, साबत सूरत आप वखाइंदा। भाग लगाए पंज तत्त कलबूत, तन ख़ाकी माटी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक वेखे आण, सतिजुग साचा देवे दान, मुरीद मुर्शद दोवें मिल मिल गाण, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्क मकान, सोहँ रूप श्री भगवान, सन्त कन्त मिल खुशी मनाण, घर मन्दिर महल अटल उच्च मनार प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत कलयुग अन्तिम उतरे पार, ज़ात पात दीन मज़्हब शरअ इस्लाम हद्द हदूद बन्दीखाना कोए रहिण ना पाईआ। इक्को मिल्या हरि महबूब, मोह मुहब्बत सब दी दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ।

✳ २३ भाद्रों २०१६ बिक्रमी वधावा सिँघ दे गृह मराज ज़िला बठिंडा ✳

गुरमुख दुआरा इक्क सच्च, हरि सतिगुर आप सुहाइंदा। लख चुरासी रही मच्च, अग्नी तत्त तत्त तपाइंदा। आत्म परमात्म जपे ना कोए जप, रसना जिह्वा सर्ब कुरलाइंदा। माया राणी डस्सणी डस्से सप्प, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। पंज तत्त काया खेड़ा होया भट्ठ, कंचन गढ़ ना रूप वटाइंदा। नेत्र रोवण तत्त अठ, अठसठ धीर ना कोए धराइंदा। नाड़ बहत्तर उब्बले रत्त, सांतक सति ना कोए कराइंदा। गुरमुख विरला रिहा हस्स, जिस प्रभ आपणा दरस वखाइंदा। साचे मन्दिर रिहा वस, घर घर विच खुशी वखाइंदा। कोट जन्म दी पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। लेखे लाए

पवण स्वास, पवण उणंजा सेव लगाइंदा। निर्मल दीआ कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। पूरब लहिणा हथ्थो हाथ, सो पुरख निरँजण आप चुकाइंदा। सति सतिवादी मार्ग दस्स, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख बंक इक्क वड्याइंदा। गुरसिख दुआरा सच मकान, हरि जू हरि हरि बणत बणाईआ। लख चुरासी झूठ निशान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। मन वासना होई शैतान, जगत शरअ करे लड़ाईआ। सिदक सबूरी ना कोए ईमान, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। माया ममता होए गुलाम, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। आपणा गृह ना सके कोए पहिचाण, नौ दर भुल्ली भरम लोकाईआ। कूड़ी क्रिया पीण खाण, साचा रस ना कोए रखाईआ। पढ़ पढ़ थक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान निष्अक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। फिर फिर थक्के विच जहान, लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। गा गा थक्के रसना जिह्वा गाण, अनहद नाद ना कोए सुणाईआ। पी पी थक्के मदिरा पान, अंमिउँ रस रस ना कोए चखाईआ। सुण सुण थक्के जगत कान, बिन कन्नां नाद ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन महल्ल इक्क वड्याईआ। हरिजन महल्ला उच्च अथाह, सो सतिगुर आप वसाइंदा। लख चुरासी होए फ़नाह, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। बेवफ़ा करे गुनाह, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहइंदा। परवरदिगार भुलया नाँ, मुर्शद मुरीद ना कोए मिलाइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा रिहा छा, साचा नूर नज़र ना आइंदा। सन्त भुल्ले पाँधी राह, मार्ग पन्थ ना कोए वखाइंदा। डूँग्घा सागर वेख अस्गाह, जल थल पार ना कोए कराइंदा। बांहों फड़ ना लए कोए तरा, तारनहारा नज़र कोए ना आइंदा। जीव जंत रोवण मारन धाह, सगला संग ना कोए रखाइंदा। अन्तिम नाता तुट्टे पुत्तर मां, पिता पूत गोद ना कोए सुहाइंदा। कलयुग जीव कल काती होए काँ, हँस रूप ना कोए वखाइंदा। किसे मुख सूर किसे मुख गां, गऊ ग़रीब सर्ब कुरलाइंदा। पुरख अबिनाशी देवणहारा सज़ा, दो जहानां भेव खुल्ाइंदा। सब दे सिर ते कूके कज़ा, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। गुरमुख विरला चले सच रज़ा, रहिमत रहिमान आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे बेपरवाह, पर्दा सब दा आप उठाइंदा। फड़ बांहों छत्तरू लए उठा, मित्र नज़र कोए ना आइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां अथ्थरू रिहा पुंझा, मुख पल्लू इक्क फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख दुआरा इक्क वड्याइंदा। गुरमुख दुआरा सच्चा बंक, बंक दुआरी आप सुहाईआ। नाम अगम्मी वज्जे डंक, दो जहानां आप समझाईआ। पकड़ उठाए राउ रंक, राणा सोया कोए रहिण ना पाईआ। वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा डेरा लाईआ। घाड़त घड़त बणाए बणत, घड़न भन्नणहार समरथ महिमा अकथ

आप दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले देवे साचा मंत, मन्त्र आत्म परमात्म इक्क पढ़ाईआ। गृह मेला नारी कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख दुआरा इक्क सुहाईआ। गुरमुख दुआरा सच मुनारा नूर नुराना आप जणाइंदा। वेखणहारा एकँकारा, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। महल अटल कर त्यारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी आसण लाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान बणे सज्जण साचा मीता, मित्र प्यारा इक्क अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम सच जणाए आपणी रीता, रीतीवान फेरा पाइंदा। एका नाम दए अनडीठा, लिखण पढ़न विच लेख ना कोए रखाइंदा। त्रैभवन धनी सदा सदा सद अतीता, गुरमुख दुआरा अतीत वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेखे जगत अंगीठा, त्रैगुण माया अग्न तपाइंदा। भगत दुआरा डूँग्घा सागर, माणक मोती विच टिकाईआ। भगत भगवान देवे आदर, आदरश आपणा इक्क वखाईआ। लख चुरासी नाम वणज कराए बण सौदागर, साचा हट्ट इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा इक्क वड्याईआ। भगत दुआरा साचा सर, सर सरोवर सीस झुकाइंदा। भगत दुआरा इक्को हरि, हरि जू आपणा आसण लाइंदा। भगत दुआरा इक्को घड़, कोटन कोटि जीव तराइंदा। भगत दुआरा आपे चढ़, सच महल्ल सोभा पाइंदा। भगत दुआरा आपे खड़, निरगुण नूर नूर रुशनाइंदा। भगत दुआरा अक्खर पढ़, दो जहानां राग अल्हाइंदा। भगत दुआरा वसाए सच्चा घर, सचखण्ड आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचे मन्दिर खोल्ह ताकी, गुरमुख गृह दए वड्याईआ। भाग लगाए तन माटी ख़ाकी, ख़ालक आपणा भेव चुकाईआ। भर प्याला जाम प्याए साकी, अमृत सर रूप वटाईआ। जन्म कर्म वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच पूरब लहिणा चुकाए बाकी, देणा कोए रहिण ना पाईआ। बांहों फड़ पार कराए दो जहानां घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। मेटे कलयुग अन्तिम रैण अन्धेरी राती, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। मेल मिलावा कमलापाती, कँवल नैण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मन्दिर देवे माण परम पुरख श्री भगवान, भगवन आपणा भेव खुल्हाईआ। गुरमुख मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ, दूसर अवर ना कोए रखाईआ। अंदर वड़ पुरख समरथ, घर मेल मिलाए चाँई चाँईआ। शब्द अगम्मी गाए गाथ, कथनी कथ कथ सुणाईआ। साचा मार्ग आपे दस्स, दहि दिशा दए खुल्हाईआ। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि के पौड़े दए चढ़ाईआ। गुरमुख मेला नस्स नस्स, घर साचे वज्जे वधाईआ। इक्क दूजे दा गाउण जस, तूं मेरा मैं तेरा नाता जुड़या एका थाईंआ। सरन सरनाई साची ढट्ठ, ढह ढह ख़ुशी मनाईआ। इक्को नाद अगम्मी वज्जे सट्ट, तुरीआ

राग मुख शरमाईआ। एका निर्मल जोत होए प्रगट, परम पुरख रूप वटाईआ। आदि जुगादि इक्को नज़री आए सति, सति सतिवादी राह वखाईआ। एका नाउँ लैणा रट, सोहँ अक्खर सच पढ़ाईआ। दुरमति मैल देवे कट, कूड़ी क्रिया ना लागे राईआ। लख चुरासी किसे ना मिले हट्ट, भरमे भुल्ली भरम लोकाईआ। सतिगुर पूरा देवणहारा वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख महल्ल इक्क सुहाईआ। गुरमुख महल्ल साची बणत, बाढी कोए घड़न ना पाईआ। ना कोई जाणे आदि अन्त, मध नज़र किसे ना आईआ । सिफ्त सालाही साचे सन्त, सतिगुर धन्दे लाईआ। जुगा जुगन्तर महिमा अगणत, गुणवन्त दए वड्याईआ। जिस गृह हरि सतिगुर मिले हरि साचा कन्त, सो मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर करे रुशनाईआ। गुरमुख मन्दिर रंग अपार, रूप नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण नूर झिलमिलकार, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। बोध अगाध सच्ची धुन्कार, अनाद अनादी नाद सुणाइंदा। बिन सखीआं मंगलाचार, सोहला ढोला आपे गाइंदा। बिन गोपी काहन कर शंगार, साचे मंडल रास रचाइंदा। बिन तन्दी तन्द सितार, ताल तलवाड़ा आप जणाइंदा। बिन शाहो भूप सिक्दार, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। खेले खेल पुरख नार, परम पुरख वेस वटाइंदा। सच महल अटल मनार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। सच मनारा साची धार, धरनी धरत धवल ना कोए वड्याईआ। गुरमुख मन्दिर रहे जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरसिख खेड़ा वसे संसार, सतिगुर साचा आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क वखाईआ। साचा मन्दिर वेखो भाई, हरि सतिगुर आप वखाइंदा। निरगुण सरगुण बणत बणाई, घड़ भाण्डे डेरा लाइंदा। सुरती शब्दी कर कुड़माई, साचा सगन मनाइंदा। एका घर वसे धी जवाई, सौहरे पेईए एका रूप वटाइंदा। करे खेल बेपरवाही, बेअन्त आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हरिजन लेखा जाणे थाउँ थाईं, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्तिम निरगुण सरगुण वेखणहारा चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक्क जणाइंदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांहीं, राज राजानां ख़ाक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख घर आप वसाइंदा। गुरमुख घर वसे खेड़ा, खिड़की आप खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म खुल्ल्हा वेहड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म सोभा पाइंदा। जगत चुक्के झूठा झेड़ा, कूड़ा मोह ना कोए रखाइंदा। कलयुग अन्तिम देवे गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच भुवाइंदा। जन भगतां नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। साहिब सतिगुर शाह सुल्तान, सूरबीर वड शेरा, सिँघ आपणा बल धराइंदा। दो जहान सृष्ट सबाई लोआं पुरीआं पाए घेरा, नव नौ आपणा बन्धन पाइंदा। जन

भगत उपर करे मेहरा, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। नाता जोड़े तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक्को घर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर आप वड्याइंदा। साचा घर महल्ल अटारी, अटल्ल आप रखाईआ। एका वसे नर निरँकारी, निरगुण आसण लाईआ। एका मेला भगत दुआरी, भगवन आपणा मेल मिलाईआ। इक्क विचोला वड संसारी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। एका ढोला निरगुण सरगुण धारी, सोहँ आपणा नाउँ दृढ़ाईआ। एका गोला सेवादारी, बण सेवक सेव कमाईआ। एका होला खेडे वारो वारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। एका साहिब वड लिखारी, गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां लेखा लेख जणाईआ। एका सूरबीर वड बलकारी, बल बावन भेव चुकाईआ। एका नाम खण्डा तेज कटारी, ब्रह्मण्डां पार कराईआ। एका बस्त्र भूशन करे तन शंगारी, सच श्रृंगार इक्क वखाईआ। एका सीस जगदीस सोहे दस्तारी, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख मन्दिर साचे चढ़, घर साचे सोभा पाईआ। गुरमुख मन्दिर हरि जू चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख कार कमाइंदा। आदि जुगादि ना जाए हर, हार जित आपणी धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी ना जाए मर, जन्म मरन विच कदे ना आइंदा। भगत भगवन्त लए फड़, जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। दूई द्वैती हउमे हंगता निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए रखाइंदा। सर सरोवर नुहाए साचे सर, कोटन कोटि सुरस्ती माण गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख दुआरा इक्क सालाहइंदा। गुरसिख दुआरा सिफ्त सालाही, हरि साचा सच जणाइंदा। जिस घर वसे साचा माही, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। जन्म जन्म दी कटे फाही, फाँसी जम ना कोए रखाइंदा। जन्म जन्म दी धोवे शाही, निर्मल नीर नीर रखाइंदा। गोबिन्द बूटा पुटया काही, लख चुरासी जड़ उखड़ाइंदा। गुरमुख बेड़ा पार कराई, आपणे कंध उठाइंदा। प्रगट होए सच्चा शहिनशाही, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। वेखणहारा थाउँ थाईं, नौ खण्ड पृथमी फोल फोलाइंदा। करे कराए सच नयाई, न्याँकार आप हो जाइंदा। सच अदालत मंगे ना कोए गवाही, शहादत कीमत ना कोए रखाइंदा। अग्गे हो ना देवे कोए सफ़ाई, मुलज़म बरी ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, गुरमुख दर इक्क वखाइंदा। गुरमुख दर सच दरवाज़ा, हरि सतिगुर आप खुल्हाइंदा। अंदर वड़ ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणयां वेख वखाइंदा। सीस जगदीस रख रख ताजा, दो जहानां हुक्म जणाइंदा। ज़िमीं असमानां रचया काजा, करनी करता आप कराइंदा। लख चुरासी अंदर वड़ वड़ वजाए वाजा, सुर ताल ना कोए जणाइंदा। पीर पैग़म्बर पढ़ाए निमाज़ा, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। गुर अवतार मारन वाज़ा, उच्ची कूक कूक

८६७
१२

अलाइंदा। करे खेल शाहो शाबाशा, शहिनशाह आपणी कल धराइंदा। जुग चौकड़ी करदा रिहा हास बलासा, आपणा भेव ना किसे वखाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो जन भगतां देवे सच भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। अन्तिम पूरी करे आसा, आसा आसा विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर दर इक्को वड्याइंदा। गुरसिख दर सच दुआरा, गुर देवणहार वड्याईआ। गुरमुख प्रेम सच प्यारा, परम पुरख सिफ्त सालाहीआ। गुरसिख नेम सच विहारा, सृष्ट सबाई आप समझाईआ। गुरसिख हेम ठंडा ठारा, गोबिन्द शीतल धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वखाईआ। गुरमुख साचा घर वेख, वेख वेख खुशी मनाइंदा। ना कोई रूप ना कोई रेख, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। ना कोई तुलाई ना कोई लेफ़, तकीआ नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई माई बाप ना बेटी बेट, नार प्यार ना कोए वधाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्को इक्क करे साचा हेत, आप आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मन्दिर सोभा पाइंदा। गुरसिख मन्दिर मौले रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी हरि महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, रूप अनूप आप वखाईआ। सन्त सुहेले साचे सुत, हरि सतिगुर आप उठाईआ। पंच विकारा कढे कुट्ट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। नाम निधाना देवे तुट्ठ, अतोट अतुट वरताईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, जगत हरस मिटाईआ। आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। लेखे लाए पंज तत्त काया बुत्त, तत्तव तत्त तत्त समाईआ। जुग चौकड़ी भगत दुआरा आपे पुच्छ, घर बैठा सच्चा माहीआ। आपणी वस्त ना रखे कुछ, जन भगतां झोली पाईआ। जे कोई पुच्छे अग्गो हो जाए चुप्प, आपणा हाल ना किसे सुणाईआ। जे कोई लभ्भण लगे वसे अन्धेरे घुप्प, नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां अंदर आपे उठ, आप आपणा पर्दा लाहीआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, प्रगट करे साची जोत, जोत जोत नाल मिलाईआ। गुरमुख बणाए सच परोहत, बण ज़जमान सेव कमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो करदा रिहा भगतां नाल खोट, आपणी भुल्ल लए बख्शाईआ। कलयुग अन्तिम गुरमुखां रखी इक्को ओट, हरिजन तेरी सच्ची सरनाईआ। तेरा दुआरा गुरसिख इक्को बहुत, लख चुरासी कम्म किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई भरया खोट, खोटी वासना ना कोए गंवाईआ। माया ममता होई मोहत, मनमति ना कोए मिटाईआ। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी सब नूं देवे झोक, भट्ठी अग्नी एका ताईआ। बिन भगतां मिले ना किसे सच्ची मोख, साध सन्त देण दुहाईआ। शास्त्र सिमरत थक्के घोख, हरि का भेव कोए ना पाईआ। प्रभ दरसन नूं सारे रहे लोच, बिन किरपा नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर थक्के कर कर सोच, सोचिआं सोच ना सक्या कोए राईआ। भगत भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण नूर इक्को जोत, मिल

८६८
१२

जोती खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारे वसण सारे किले कोट, बंक दुआर मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर बली बलवान, गुरमख साचे कर परवान, लेखे लाए काया मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ मकान, वेले अन्त जगत मकबरा ना कोए बणाईआ। जगत कहे वधावा वाधू, वाधल दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मेरा सच्चा साधू, सगला संग रखाईआ। पिछला जन्म देहुरा दादू, गोबिन्द मिली वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को मिल्या मोहण माधू, मधुर धुन धुन धुनी राग सुणाईआ।

✳ २३ भाद्रों २०१६ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह भदौड़ ज़िला बठिंडा ✳

सो पुरख निरँजण वड सुल्तान, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण कर मेहरवान, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाइंदा। एकँकारा वड बलवान, निरगुण निरगुण आपणा नूर प्रगटाइंदा। आदि निरँजण खेल महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा सच मकान, सच महल्ले सोभा पाइंदा। श्री भगवान उठावणहारा सच निशान, सचखण्ड दवारे आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ राज राजान, भूपत भूप नाउँ धराइंदा। खेले खेल नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। आपणी इच्छया कर बलवान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल आदि अन्त, हरि करता आप कराईआ। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग जुग रूप धराईआ। बणावणहारा साची बणत, साचा घाड़ण लए घड़ाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, विष्न ब्रह्मा शिव भेव चुकाईआ। नाता जोड़ नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाईआ। बोध अगाध एका मन्त्र, गुर मन्त्र नाम इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख समरथ, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। सचखण्ड दवारे हो प्रगट, साची धार चलाइंदा। वस्त अमोलक देवे वथ, निरगुण निरगुण आप वरताइंदा। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। नाम जणाए महिमा अकथ, कथ कथ आप अलाइंदा। सच दुआरे आपे वस, गृह मन्दिर खुशी मनाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। आदि जुगादी वसे साथ, आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी हरि करतारा, आदि जुगादि कराईआ। जुग चौकड़ी लए अवतारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, निहचल आपणा आसण लाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अगोचर आपणी धार बंधाईआ। शब्दी शब्द नाद जैकारा, नर निरँकारा आप

दृढ़ाईआ। सेवक सेवा करे सेवादारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त एका धार बंधाईआ। आदि अन्त खेल अवल्ला, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड दवार सचखण्ड महल्ला, दरगाह साची सोभा पाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, रल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण एका मल्ला, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। सच संदेस दो जहानां एका घल्ला, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डा आप उठाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाए पल्ला, पल्लू एका गंढु वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आपणी करनी आप कमाइंदा। आदि जुगादि खेल अबिनाशा, अबिनाशी करता आप कराईआ। वेखणहार दो जहान तमाशा, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। मंडल मण्डप पावे रासा, गोपी काहन नचाईआ। लेखा जाणे पृथमी आकाशा, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साची कार, करता पुरख आप कमाईआ। करता पुरख करनेहारा, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा राह चलाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी अगम्म अगम्मड़ा बोल जैकारा, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। करे खेल सचखण्ड निवासी एकँकारा, इकओंकारा हुक्म मनाइंदा। कागद कलम बण बण लिखारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ करे निमस्कारा, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल कर, करनी आप कराइंदा। जुग करता श्री भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। देवणहारा साचा दान, विष्नूं विश्व वस्त इक्क वरताईआ। ब्रह्मे देवे एका माण, ब्रह्म लेखा थाउँ थाईंआ। शंकर वेखे मार ध्यान, शरअ शरीअत इक्क समझाईआ। तिन्नां विचोला नौजवान, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। भूपत भूप राज राजान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। बोध अगाधा दे ज्ञान, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। ब्रह्मावेता कर परवान, परम पुरख सिफ्त सालाहीआ। रसना जिह्वा बिन गाए गाण, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। बिन अक्खर अक्खर हरि का पढ़ना, पारब्रह्म प्रभ आप पढ़ाइंदा। बिन पौड़े पौड़े साचे चढ़ना, सो पुरख निरँजण आप चढ़ाइंदा। बिन पल्लू पल्लू एका फड़ना, फड़या लड़ छुट्ट ना जाइंदा। बिन चरन सरनाई साची पड़ना, चरन सरन इक्क रखाइंदा। बिन नेत्र खोल्ह हरना फरना, नैण नैण नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मावेता देवे नेता, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। निज नेत्र आपे खोल्ह, खोल्ह खोल्ह समझाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोल, चारे मुख करे पढ़ाईआ। तोलणहारा साचा तोल, तोला बणया साचा माहीआ। एका वस्त रखे कोल, आदि

अन्त वरताईआ। अमृत नाभी जाए मौल, कँवल कँवला दए वड्याईआ। सच दुआर एका खोल्, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी करनी आप समझाईआ। आपणी करनी हरि करतारा, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। लख चुरासी भर भण्डारा, त्रैगुण झोली आप भराइंदा। पंचम पंच लाए अखाड़ा, पंचम आपणा नाच नचाइंदा। मन मति बुध दए अधारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नौ दर खोल् किवाड़ा, नव नौ वंड वंडाइंदा। रक्त बूंद कर त्यारा, सच मुनारा इक्क सुहाइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, घर रागी राग सुणाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठारा, निझर झिरना कँवल भराइंदा। बन्द किवाड़ी लाए ताला, आपणा हथ्थीं बन्द रखाइंदा। सुखमण टेढी खेल न्यारा, नज़र किसे ना आइंदा। ईड़ा पिंगल होए बेहाला, नेत्र नीर नीर वहाइंदा। घर विच घर वखाए खेल निराला, निरगुण आपणा भेव चुकाइंदा। लेखा जाणे काल महांकाला, महांकाल आपणी कल जणाइंदा। जुग चौकड़ी वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, साचा खेल आप जणाइंदा। सरगुण सरगुण पहरे बाणा, काया चोला आप हंढाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाना, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन निरगुण सरगुण दए ध्याना, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता खेल कराइंदा। जुग करता पुरख समरथ, हरि जू आपणी धार चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर दे दे वथ, कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर अवतारां मार्ग दस्स, पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। भगत भगवान हिरदे वस्स, हरि हरि रूप वखाईआ। साचे सन्तां पूरी कर कर आस, आसा मनसा दए मिटाईआ। गुरमुखां मेट अन्धेरी रात, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरसिखां पुच्छे आपे वात, जुग जुग फेरा पाईआ। खोल्णहारा बन्द ताक, हरि मन्दिर दए वखाईआ। फड़ बांहों कराए पार घाट, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाईआ। अन्त कन्त कल पुच्छे वात, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। मंडल मण्डप पावे रास, बंसरी एका नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी करे आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी संदेसा देंदा रिहा विच संसार, शब्द अगम्मी राग अल्लाइंदा। गुर अवतारां कर प्यार, प्रेम प्रीती इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क रखाइंदा। साची सेवा विच संसार, हरि सतिगुर आप जणाईआ। प्रगट कर गुरू अवतार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म करना सच प्यार, परम पुरख पुरख समझाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म दए अधार, ब्रह्म लेखा थाउँ थाईंआ। ईश जीव इक्क घर बार,

जगदीस वेखे चाँईं चाँईंआ। एका नाद शब्द धुन्कार गावणहारा इक्क अख्वाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका सतिगुर सोभा पाईआ। एका दीआ बाती कर उज्यार, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। एका साकी जाम प्यावणहार, मधुर प्याला हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बन्ने धारा, धार आपणी ना किसे जणाइंदा। गुर अवतार खोलू किवाड़ा, कुंजी आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका देवे वस्त हरि थारा, नाम निधाना आप वरताइंदा। सच सिँघासण बैठ निरँकारा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। देंदा आया वारो वारा, वार थित ना किसे जणाइंदा। सृष्ट सबाई परवरदिगारा, हक़ मुकामे डेरा लाइंदा। नूर इलाही हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, पर्दा आपणा आप उठाइंदा। हक़ हक़ीक़त बोल जैकारा, आपणा नाअरा आप सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर दे हुलारा, नबी रसूल आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी खेल कर, हरि करता वेस वटाईआ। गुर अवतार धरनी धर, धवल दए वड्याईआ। साचा अक्खर लैण पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। साचे मन्दिर वेखण चढ़, प्रभ वसे सच्चा माहीआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्त नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। थाईं लेखा जाणे थनंतर, दो जहानां वेख वखाइंदा। गुरदेव आदि अन्त इष्ट सति मन्त्र, मन्त्र आपणा नाम समझाइंदा। वेखणहारा गगन गगनंतर, दो जहानां फोल फोलाइंदा। लख चुरासी बणावणहारा बणतर, घड़न भन्नण आपणा राह चलाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार चार चार पन्ध मुकाइंदा। नव नौ चार चुक्के झेड़ा, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा गेड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड दए भुआईआ। हरिजन बन्नणहारा बेड़ा, भगवन आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी पाए घेरा, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। कलयुग अन्तिम आया नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। किसे ना दीसे सञ्झ सवेरा, जगत अन्धेरा रिहा छाईआ। पंच वकार लग्गा झेड़ा, पंच शब्द ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। जुग जुग आपणा फेरा पा, पारखू आपणी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, साचा चप्पू नाम लगाइंदा। सति पुरख निरँजण देवे सति सलाह, साची सिख्या इक्क पढ़ाइंदा। गुर अवतार नाल रला, पीर पैग़म्बर अंग लगाइंदा। कलमा कलाम आप समझा, कातब लेखा आप लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म हरि निरँकार, आपणा आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव

करन निमस्कार, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। त्रैगुण माया रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पंज तत्त ना कोए अधार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुर अवतार करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, तेरा भेव कोए ना आईआ। पीर पैग़म्बर हाहाकार, हू हू नाअरा रहे सुणाईआ। तू ही तू सच्ची सरकार, तेरा लेख ना लख्या जाईआ। तेरी किरन किरन उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। वेखणहारा ख़ालक ख़लक, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। भेव चुकाए अर्श फर्श फलक, पर्दानसीं पर्दा आप उठाइंदा। कलयुग अन्त चारों कुण्ट जूठ झूठ चढ़या कटक, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। मति मतवाली रही लटक, मन का मणका ना कोए भुआइंदा। लख चुरासी अद्धविचकार रही लटक, पार किनारा ना कोए वखाइंदा। मन वासना रही भटक, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाइंदा। कूड़ी छुरी कर रही झटक, सीस धड़ अड्ड ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग आपणा वेस रख, रक्षक आपणा खेल कराइंदा। सति सरूपी हो प्रतख, सति सतिवादी राह चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान मार्ग दस्स, दहि दिशा वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट रैण अन्धेरी होई मस्स, साचा चन्द नज़र कोए ना आइंदा। जगत खेड़ा होया भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा भेव खुल्हाइंदा। जुग जुग खोल्हे आपणा भेत, भेव अभेद जणाइंदा। निरगुण सरगुण कर कर हेत, गुर अवतार मेल मिलाइंदा। दरस दिखाए नेतन नेत, निज आत्म डेरा लाइंदा। हरया करे काया खेत, अमृत सिंच दया कमाइंदा। रुत्त बसन्ती करे चेत, पत्त डाल्ही आप महकाइंदा। पंज तत्त काया माटी वेख, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। शब्दी शब्द गुरू गुर खेड, हरि करता आप कराइंदा। देवणहारा साचा भेत, द्वैती पर्दा आप उठाइंदा। नाम निधान लगाए मेख, लग्गी मेख ना कोए कढाइंदा। हरि का भेव ना पाए कोई औलीआ पीर शेख, शरअ विच कदे ना आइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रहे हमेश, हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। मुछ दाढ़ी ना कोए केस, जगदीस मूंड ना कोए मुंडाइंदा। तख्त निवासी इक्क नरेश, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेश, दर दर सीस झुकाइंदा। गुर अवतार लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा। पीर पैग़म्बर बणाए रेख, दस्तगीर आपणा दस्त मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जुग जुग नाउँ हरि निरँकार, आपणा आप चलाईआ। सेवा ला तेई अवतार, त्रै त्रै नाता तोड़ तुड़ाईआ। एका दे दरस अपार, दरसी दरस

कराईआ। हवस हिरस मेट संसार, तृष्ना भुख भुख गंवाईआ। एका नूर कर उज्यार, नूरो नूर नूर रखाईआ। इक्क ज़हूर सच प्यार, ज़ाहरा ज़हूर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेई अवतार आप जगाईआ। तेई अवतार खोल्ह अक्ख, निरगुण सरगुण भेव चुकाया। सति सतिवादी मार्ग दस्स, माया पर्दा लाहया। हिरदे अंदर आपे वस, हरि हरि रंग चढ़ाया। पन्ध मुकाया नस्स नस्स, दो जहानां फेरा पाया। अणियाला तीर मारया कस, तिक्खी मुखी धार जणाया। कर खेल पुरख समरथ, साचा मन्त्र आप पढ़ाया। जुग जुग गेड़ी उलटी लठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। जो उपज्या सो होया सथ्थ, अन्तिम सत्थर गया विछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कराया। साची सेवा तेई अवतार, लोकमात कराईआ। सतिजुग वेखे इक्क अठ धार, दोए दोए त्रेता वेस वटाईआ। द्वापर दोहरा गाए एका वार, वारता आपणी आप जणाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मी कार आपणे हथ्थ रखाईआ। वेद व्यासा दे अधार, पुराण प्राणी भेव चुकाईआ। मुकंद मनोहर लखमी नरायण कँवल नैण नैण इक्क उग्घाड़, प्रतख अक्ख वखाईआ। भगतन मीता ठांढा सीता करे सच प्यार, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पाए बन्धन, करे खेल त्रिलोकी नंदन, ऊँचां नीचां राउ रंकां वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी बीते काल, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर किसे ना निभिआ नाल, कलयुग बैठे ढेरी ढाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद होए बेहाल, बिहबल होए देण दुहाईआ। चार यारी होई कंगाल, सच वस्त नज़र कोए ना आईआ। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां छहबर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेखे थाउँ थाईंआ। जुग जुग वेखे श्री भगवन्त, वेखणहारा नज़र ना आइंदा। कलयुग अन्तिम माया पई बेअन्त, द्वैती पर्दा कोए ना लाहइंदा। किसे ना मिल्या हरि जू कन्त, सच सुच्च ना कोए हंढाइंदा। सृष्ट सबाई भुली भगवन्त, भगवन आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल गुर गुर धार, शब्दी शब्द नाद जणाईआ। नानक गोबिन्द करे विचार, हरि विचार विच ना आईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए पुकार, पुकार पुकार अग्गे सुणाईआ। आदि जुगादी एकँकार, इक्क इकल्ला सच्चा माहीआ। वसणहारा धाम न्यार, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, थिर घर वासी राग सुणाईआ। रागी नादी गए हार, ब्रह्म पारब्रह्म खोज ना पाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज होए खुआर, बिन हरि नामे ना कोए चतुराईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी गा गा थक्की वार, साची वारता ना कोए सुणाईआ। सन्त साध नेत्र खोल्ह खोल्ह थक्के किवाड़, बन्द कुण्डा ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग अग्नी तत्ती हाढ़,

८७४ १२

सृष्ट सबाई रही जलाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, ना सके कोए बुझाईआ। नाता छुट्टया गुर अवतार, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। अठसठ तीर्थ होए खुआर, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले हाहाकार, हरि हरि नाम ना कोए ध्याईआ। नौ खण्ड पृथमी होई नार विभचार, सच सुच्च नज़र कोए ना आईआ। कागद कलम शाही लिख लिख गई हार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। पढ़ पढ़ थक्का जीव संसार, पढ़ पढ़ मुक्त किसे ना आईआ। साची युगती हथ्थ रखे निरँकार, बिन भगतां ना किसे समझाईआ। कोटन कोटि उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ वाजां रहे मार, कूक कूक सुणाईआ। कोटन कोटि डुब्बे जल जल धार, कोटन कोटि डूँघी गार बैठे आसण लाईआ। कोटन कोटि काया माटी मल मल छार, धूणी बैठे जगत तपाईआ। कोटन कोटि फिर फिर गए हार, बणखण्ड फेरा पाईआ। कोटन कोटि पढ़ पढ़ सुणावण वार, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग वेखे चाँई चाँईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, कलयुग अन्तिम आइंदा। कूड़ कूड़यारा वज्जे मृदंग, नौ खण्ड पृथमी राग सुणाइंदा। माया ममता गाए छन्द, हउमे हंगता गीत अल्लाइंदा। जीव जंत होए नंग, सति पर्दा ना कोए रखाइंदा। कर्म धर्म होया खण्ड, खण्डा नाम ना कोए चमकाइंदा।
८७५ जगत वासना होया घुमंड, निवण सो अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। सुरत सुआणी होई रंड, शब्द हाणी कन्त ना कोए मिलाइंदा। ८७५
रसना खा खा थक्के गंद, सच सुगंधी ना कोए महकाइंदा। जगत नेत्र पेख पेख थक्के जगत चन्द, गृह प्रकाश ना कोए
१२ कराइंदा। गा गा थक्के बत्ती दन्द, बिन दन्दां राग ना कोए अल्लाइंदा। जात पात दीन मज़्हब दूई द्वैती होई कंध, शरअ १२
पर्दा ना कोए चुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जगत वंडां गए वंड, हद्द किनारा नज़र किसे ना आइंदा। साहिब दयाल ठाकर स्वामी इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आत्म परमात्म इक्क अनन्द, निजानंद रस चखाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, आपणा बंधण पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग जुग चले राह निराला, निरगुण आपणी धार चलाईआ। कलयुग अन्तिम हो उजाला, जोती जाता वेस वटाईआ। किरपा निध दीन दयाला, सिर दीनन हथ्थ टिकाईआ। इक्क वखाए सच सच्ची धर्मसाला, घर घर विच कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जीवण जुगत जुगत जणाईआ। भउ चुक्के काल महांकाला, भयानक होए आप सहाईआ। एथे ओथे चले नाल नाला, सगला संग निभाईआ। मार्ग दस्से इक्क सुखाला, चार वरन राह वखाईआ। फल लगाए काया डाला, फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरि सतिगुर बणाए सच्चा लाला, बाल अञ्याणा

गोद उठाईआ। एका देवे नाम सच्चा धन माला, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग साचा राह वखाईआ। कलयुग अन्तिम दस्से राह, लख चुरासी आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क मलाह, पुरख अबिनाशी बेड़ा इक्क उठाइंदा। आदि जुगादी इक्को नाँ, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप दृढ़ाइंदा। पुरख अकाल पिता मां, लख चुरासी पूत उपाइंदा। देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ हँसा जाप जपाइंदा। कलयुग अन्तिम लेखा दए मुका, लोकमात रहिण ना पाइंदा। लख चुरासी सोई सुरती दए जगा, शब्दी डंका इक्क वजाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए उठा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। भगत भगवन्त लए हिला, हरक्त आपणी आप रखाइंदा। सब दी सिरक्त दए मिटा, लाशरीक फेरा पाइंदा। मर्द मर्दाना आप अख्वा, नाम मृदंगा इक्क वजाइंदा। दीन मज़्हब डेरा देवे ढाह, ज़ात पात रहिण ना कोए पाइंदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका धाम दए बहा, शाह सुल्ताना संग रखाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साचा मन्त्र दए पढ़ा, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। साचे मन्दिर कुण्डा देवे लाह, काया बंक आप सुहाइंदा। निझर झिरना दए झिरा, अमृत रस मुख चुआइंदा। कलयुग कूड़ा झेड़ा दए मुका, झंजट कोए रहिण ना पाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत अंगीकार लए करा, अंग अंग नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता खेल कराइंदा। जुग करता श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। झुलावणहारा सच निशान, शब्द निशाना हथ्थ उठाईआ। धुरदरगाही हुक्मरान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रिहा बुलाईआ। सच संदेसा नौजवान, एका वार सुणाईआ। नेत्र खोल्ह मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्मी लोकमात रही कुरलाईआ। किसे नज़र ना आए सच ईमान, मुरीद मुर्शद ना कोए सहाईआ। किसे मिले ना मन्त्र सति नाम, नाम सति ना कोए कुड़माईआ। चारों कुण्ट शरअ होई शैतान, शरीअत आपणा घूँगट लाहीआ। दर दर घर घर नच्चे आण, बण स्वांगी स्वांग वटाईआ। नेत्र नैण नैण शरमाण, गुरमुख नैण ना कोए उठाईआ। बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाण, कूक कूक देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आप मुकाईआ। कलयुग लेखा अन्त मुकाउणा, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लेख जणाउणा, लेख आपणे हथ्थ रखाइंदा। त्रैगुण माया डेरा ढाउणा, पंचम गढ़ ना कोए सुहाइंदा। तेई अवतारां पन्ध मुकाउणा, भगत अठारां जोत मिलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद नूरी जल्वा नूर दरसाउणा, ज़हूर अग्गे ना कोए रखाइंदा। नानक गोबिन्द गोबिन्द नानक एका गोद बहाउणा, आप आपणी गोद सुहाइंदा। चार वेद झोली पाउणा, शास्त्र सिमरत नाल रलाइंदा। पुराण अठारां मोह चुकाउणा, गीता ज्ञान गंढु पुवाइंदा। अञ्जील कुराना पर्दा लौहणा,

लाह लाह शुकर मनाइंदा। खाणी बाणी बाणी खाणी गुर गुर रूप समाउणा, गुर गुर एका राह चलाइंदा। पूरब लेखा पूर कराउणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। वेद व्यासा नैण खुल्हाउणा, मूसा एका नूर दरसाइंदा। ईसा आस पूर कराउणा, नूर इलाही फेरा पाइंदा। मुहम्मद पन्ध आप मुकाउणा, सदी चौधवी चौदां तबकां राह जणाइंदा। नानक गोबिन्द लेखा लेखे लाउणा, लेखा आपणा हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अजूनी रहित अनभउ प्रकाश इक्क कराउणा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। महांबली अवतार आपणा नाउँ धराउणा, मात पित ना कोए बणाइंदा। नाम डंका इक्क वजाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाइंदा। कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाउणा, बण पाँधी फेरा पाइंदा। सृष्ट सबाई एका इष्ट वखाउणा, गुरदेव इक्को नज़री आइंदा। भगत भगवन्त दृष्ट खुल्हाउणा, दृष्टी आपणी एका पाइंदा। जनत बहश्त चरनां हेठ दबाउणा, चरन कँवल कँवल वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस करे करतारा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। थिर घर खोल्हणहार किवाड़ा, सुन्न अगम्मी डेरा लाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी आदि जुगादी जाणे आपणी कारा, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खोजाईआ। अनाद अनादी बोल जैकारा, विस्मादी विस्माद करे शनवाईआ। वरन बरन ज़ात पात ते वसे बाहरा, दीन मज़्हब वंड ना कोए रखाईआ। काग़ज़ कलम शाही पावे ना कोए सारा, सत्त समुंदर मस नेत्र रोवे अठारां भार बनास्पत रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग पैंडा आप मुकाईआ। कलयुग पैंडा जाए मुक्क, हरि सतिगुर आप मुकाइंदा। दूर दुराडा नेड़े हो के वेखे झुक, अंदर वड़ वड़ कुण्डा लाहइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त काया माटी बुत्त, बुत्त आपणा ना कोए रखाइंदा। कलयुग जीव अपराधी होए सुत, पूत सपूता नाउँ ना कोए धराइंदा। घर घर अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकार बैठा लुक, दिन दिहाढ़े लुट्टी जाइंदा। हउमे हंगता माया ममता पई लुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे माही, मेहरवान वडी वड्याईआ। निरगुण निरगुण कर रुशनाई, जोती जाता वेस वटाईआ। जन भगत सुहेले लए उठाई, गुर चेले मेल मिलाईआ। आदि अन्त जो बणदा रिहा साँई, बण सेवक सेव कमाईआ। जिस नूं कहिन्दे आदि शक्ति माई, सो मइया खेल कराईआ। जिस नूं कहिन्दे चतुर्भुज गुसाँईं, सो निरगुण खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ । जिस नूं गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे मनाई, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जिस नूं भगत मन्नदे रहे बेपरवाही, सो बेपरवाह फेरा पाइंदा । जिस दी झल्ले ना कोए जुदाई, साध सन्त सर्ब कुरलाइंदा। आदि अन्त करे कुड़माई, लख चुरासी नाता जोड़ जुड़ाइंदा। कलयुग

अन्तिम निहकलंका आपणा नाउँ धराई, दो जहानां डंक वजाइंदा। गुरमुख पकड़े साचे बाहीं, फड़ बांहों गले लगाइंदा। जन्म जन्म दी कटणहारा फाही, फाँसी जन ना कोए वखाइंदा। राए धर्म ना दए सज़ाई, चित्रगुप्त नेड़ ना आइंदा। लाड़ी मौत ना लए परणाई, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। जुग जुग रंग चढ़ाए रंगीला, एका रंग चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे मिलण दा आपे करया हीला, जगत विचोला ना कोए बणाईआ। चढ़णहारा असव नीला, नीली धार पार कराईआ। शाह सुल्तान छैल छबीला, शाह सवार वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम वेखण आया आपणा कबीला, गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी बदलणहार दलीला, सच दलील इक्क दृढ़ाईआ। भगत भगवान बणे आप वकीला, सच वकालत रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए तराईआ। जुग जुग तारे आप प्रभ, निर्धन दया कमाइंदा। कूड़ी क्रिया मिटे हद्द, झूठी वंड ना कोए वंडाइंदा। अमृत रस प्याए मदि, नाम खुमारी इक्क चढ़ाइंदा। पंच विकारा विच्चों कढ्ढ, पंचम मेल मिलाइंदा। सच दुआरे गुरमुख सद्द, एका छन्द सुणाइंदा। कोटन कोटि काल गए लद, कलयुग अन्त रहिण ना पाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जो बैठे हो के अड्ड, अन्तिम हरि जू मेल मिलाइंदा। चरन दुआरे सारयां आउणा भज्ज, लुकया कोए रहिण ना पाइंदा। मेट मिटाए लोक लज्ज, लज्जया विच कदे ना आइंदा। भगत भगवान पर्दा लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी चरन दुआरे चार वरन बहणा सज, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा आप मुकाइंदा। लहिणा देणा मुक्के जग, जगजीवण दाता आप मुकाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे अग्ग, सांतक सति सति कराईआ। जन भगतां दरस दिखाए उपर शाह रग, रघुपत आपणा मेल मिलाईआ। मुरीद मुर्शद कराए हज्ज, काया काअबा इक्क सुहाईआ। साची नौबत जाए वज्ज, अनहद रागी राग सुणाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी दरगाह साची बैठा जज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम मुक्के पन्ध, पाँधी मात रहिण ना पाईआ। कोई खाए ना मदरा मास गंद, अमृत मुख चुआईआ। कोई ना दिसे नार रंड, सुहाग कन्त इक्क हंढाईआ। कोई ना रहे भागां मंद, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। कोई ना होए नेत्र अन्ध, अज्ञान अन्धेर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा दए लगाईआ। सतिजुग साचा लग्गे मात, हरि सतिगुर आप लगाइंदा। ग़रीब

निमाणया देवे दाद, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। इक्को मन्त्र इक्को जाप, एका पुरख अकाल पढ़ाइंदा। इक्को पूजा इक्को पाठ, इष्ट गुरदेव इक्क रखाइंदा। इक्को नाता कमलापात, पुरख बिधाता आप जुड़ाइंदा। इक्को रसूल पाकी पाक, रैहबर इक्को नज़री आइंदा। इक्को सज्जण इक्को साक, सगला संग इक्क निभाइंदा। इक्क सिँघासण इक्को खाट, एका हरि जू सोभा पाइंदा। इक्क सरोवर एका ताट, अमृत इक्को इक्क नुहाइंदा। एका मेटणहारा वाट, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। एका बन्नृणहारा नात, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। एका करणहारा घात, लख चुरासी भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सति सतिवादी राह चलाइंदा। सति सतिवादी हरि का नाउँ, नर निरँकार आप दृढ़ाईआ। लेखा जाणे अगम्म अथाहो, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणया पकड़े बांहों, फड़ बांहों गले लगाईआ। चार वरन देवे एका थाउँ, अठारां बरन एका घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी करने योग, जीवण दाता दया कमाइंदा। आत्म परमात्म साची चोग, सोहँ माणक मोती मुख रखाइंदा। लेखा जाणे चौदां लोक, अवन गवन वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई इक्क सलोक, सोहँ ढोला आप जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म निर्मल जोत, जोती जाता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे रंग रंगाइंदा। रंग रतड़ा हरि निरँकारा, एका रंग समाईआ। गुरमुख वेखे मीत मुरारा, मित्र प्यारा दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग चौकड़ी बणया रिहा यारा, कलयुग अन्तिम यारी यारां नाल निभाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे दरबारा, थिर घर एका कुण्डा लाहीआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, कलयुग अन्तिम फेरी पाईआ। पिछला लेखा करे पार किनारा, अगला मार्ग आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त सन्त सज्जण गुरमुख गुरसिख सारे बोलण इक्को नाअरा, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सोहला दए सुणाईआ। साचा सोहला एकँकार, कलयुग अन्त आप जणाइंदा। सतिजुग साची बन्नृे धार, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। लख चुरासी करे प्यार, जीव जंत मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म दे अधार, सांतक सति सति कराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेला विच संसार, मिल मिल ख़ुशी मनाइंदा। बण विचोला इकओंकार, पर्दा ओहला आप उठाइंदा। सोहँ शब्द अगम्मी धार, निरगुण निरगुण रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। वस्त अमोलक देवे दात, मेहरवान आप वरताईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बणाए इक्क जमात, एका पट्टी दए पढ़ाईआ। निष्अक्खर वक्खर लिखे बिन कलम दवात, भेव ना जाणे कोए शाहीआ।

बोध अगाध सुणाए गाथ, गीत गोबिन्द अलाईआ। लहिणा देणा जाणे मस्तक माथ, पूरब लेखा वेख वखाईआ। चरन बहाए त्रिलोकी नाथ, अनाथ अनाथां दए वड्याईआ। सृष्ट सबाई एका पाठ, आत्म परमात्म दए जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्को ज़ात, दूजी ज़ात ना कोए रखाईआ। नेड़ ना आए शरअ कमज़ात, कुलखणी फेरा कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी हथ्थीं करे घात, घाउ इक्को इक्क लगाईआ। अन्तिम कलयुग चुक्के वाट, पाँधी पन्ध ना कोए रखाईआ। तिन्न जुग सुत्ता रहे खाट, करवट सके ना फेर बदलाईआ। सतिजुग साचा खुल्ले हाट, हरि सतिगुर आप खुलाईआ। जन भगतां देवे इक्को दात, दयावान वरताईआ। दरस दिखाए बहु बिध भांत, भेव अभेद खुलाईआ। रातीं सुत्तयां पुच्छे वात, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत मेल मिलाया कमलापात, घर साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी शाहो शबासी चरन कँवल वखाए निवास, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। शाह सुल्ताना मर्द मर्दाना श्री भगवाना नौजवाना वसे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन साचे उठ उठ जाग, हरि जागरत जोत जगाइंदा। दीपक जोती दए चिराग़, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। गुरमुख मेला सतिगुर सज्जण साक, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। करनहारा पूरा भविख्त वाक्, पिछला कीता भुल्ल ना जाइंदा। पाक रसूल पाकी पाक, पतित पुनीत आप तराइंदा। निझर रस अंमित झिरना लैणा चाट, रस मिठ्ठा इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गृह मन्दिर इक्क सुहाइंदा। गृह मन्दिर सुहाए आप, आपणी दया कमाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाए पाठ, आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जुग चौकड़ी वेखे आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे दान, दाता दानी दयावान, बख्शंद ठाकर निहकर्मी निहकामी अन्तरजामी लख चुरासी घट अंदर काया मन्दिर डूँघी कंदर उच्च महल अटल मुनार वेखे विगसे वेखणहार, वेखणहारा नज़र किसे ना आइंदा।

✳ २४ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सुखराम दे गृह पिण्ड चक्कर ज़िला लुधियाणा ✳

सचखण्ड निवासी श्री भगवन्त, आदि पुरख हरि खेल खिलाइंदा। जुगा जुगन्तर साचा कन्त, निरगुण सरगुण आप परणाइंदा। आत्म परमात्म बणाए बणत, थिर घर साची वंड वंडाइंदा। लख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा नूर धराइंदा।

बोध अगाधी मणीआ मंत, अक्खर वक्खर नाम धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप चुकाईआ। निरगुण सरगुण वेखे मार ध्यान, लख चुरासी फोल फोलाईआ। अन्तर मन्त्र इक्क ज्ञान, गुर गुर शब्द पढ़ाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। राग सुणाए अगम्मी गाण, गावणहारा आप अलाईआ। सति सरूपी पीण खाण, अमृत आत्म रस चखाईआ। बजर कपाटी खोल दुकान, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। नाता तोड़ पंज शैतान, जगत शरीअत दए मिटाईआ। तीर निराला मारे बाण, अणयाला आप चलाईआ । जुग चौकड़ी खेल महान, जुग करता आप कराईआ। जन भगतां देवे साचा दान, भगवन एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख अथाह, अलख अगोचर आपणी कार कराइंदा। भगत भगवन्त बण मलाह, निरगुण सरगुण बेड़ा पार कराइंदा। सिफ्त सलाही देवे नाँ, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। भेव अभेदा आप खुल्हा, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। साची सिख्या इक्क दृढ़ा, सच सुच्च संदेसा आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। तारनहारा आदि जुगादि, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। सति सरूपी सति सतिवादी वजाए सच्चा नाद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सज्जण सन्त सतिगुर आपे लाद, आप आपणा मेल मिलाईआ। सुरती शब्द लडाए लाड, दूसर संग ना कोए रखाईआ। त्रैगुण माया विच्चों काड, ममता मोह दए तजाईआ। नौ दुआरे पार हाद, जगत वासना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन तेरा काया बंक, पंज तत्त माटी वेख वखाइंदा। जगत तृष्ना होया शंक, संसा रोग आप चुकाइंदा। एकँकार इक्क सुणाए आपणा अंक, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त आप दृढ़ाइंदा। साचे सन्त सन्त हरि मीता, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेखे रीता, रीतीवान बेपरवाहीआ। करे खेल इक्क अनडीठा, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कलयुग तपे अंगीठा, अग्नी तत्त ना कोए बुझाईआ। नाता तुट्टा सुरत सुआणी राम सीता, साचा कन्त ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी वेखणहारा नीता, नीतीवान सहिज सुखदाईआ। जीव जंत होया कौड़ा रीठा, मिट्ठा रस ना कोए चखाईआ। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्के गीता, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। साक सज्जण मिल्या मित्र मीता, मित्र प्यारा अंग ना कोए लगाईआ। रसना जिह्वा मदि प्याला पीता, अमृत रस ना कोए चखाईआ। आत्म परमात्म सुत्ता दे कर पीठा, करवट सके ना मात बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेखणहारा जगत बसन्तर, रूप

अनूप आप धराईआ। गुरसिख काया माटी जगत हट्ट, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। वस्त अमोलक अंदर रख, निरगुण सरगुण पर्दा पाइंदा। जगत वासना रही नट्ठ, नट्ठ नट्ठ पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जो जन सतिगुर सरनाई जाए ढट्ठ, तिस पर्दा आप उठाइंदा। दुरमति मैल देवे कट, निर्मल नीर सीर प्याइंदा। अनहद शब्द मारे सट्ट, ताल तलवाड़ा आप वजाइंदा। जोत निरँजण कर प्रगट, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। आत्म सेजा जाए वस, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। इक्को देवे अमृत रस, रस रसीआ मुख चुआइंदा। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, निरगुण निरगुण पर्दा लाहइंदा। सन्त साजण मार्ग दस्स, साचे मग आप चलाइंदा। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। जगत विकारा होए सथ्थ, सत्थर धरनी खाक समाइंदा। भगत भगवन्त देवे वथ, नाम अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जिस जन किरपा करे ठाकर, ठोकर आपणे नाम लगाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, उजरत कोए ना मांगे माहीआ। साचे दर वणज कराए बण सौदागर, दो जहानां हट्ट खुल्ह्हाईआ। किरपा करे करीम कादर, बेऐब परवरदिगार नूर इलाहीआ। दो जहानां देवणहारा आदर, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि पुरख समरथ, दूसर नज़र कोए ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी भगत भगवन्त मार्ग दस्स, महिफल इक्क घर वखाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान पन्ध मुकाए नस्स नस्स, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां आत्म परमात्म देवे साचा रस, रस फीका ना कोए वखाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म होए वस, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। मेल मिलावा कमलापात, ईश जीव गंढु पुआइंदा। बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त आप सुकाइंदा। जानणहारा मित गत, सन्त सुहेले वेख वखाइंदा। देवणहारा ब्रह्म मति, जगत विद्या ना कोए पढ़ाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, साचे धन्दे आपे लाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, सोहँ हँसा हँस मुख सलाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सतिगुर वेख वखाइंदा। सन्त सतिगुर वेखे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादी माई बाप, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। मेटणहारा तीनो ताप, त्रैगुण नाता दए तुड़ाईआ। सति सतिवादी देवे साचा जाप, बिन रसना जिह्वा आप जपाईआ। आत्म अन्तर इक्को पाठ, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। सर सरोवर इक्को घाट, तट किनारा इक्क वखाईआ। इक्को नाउँ इक्को गाथ, एकँकारा करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, पवण उनन्जा चवर झुलाईआ। सच कराए भोग बलास, भस्मड़ साची सेज हंढाईआ। हरिजन होए ना कदे उदास, सतिगुर पूरा सीस

जगदीस हथ्थ टिकाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर चरनां हेठ दबाईआ। निर्मल जोती कर प्रकाश, अगम्म निगम सूझ जणाईआ। साचे मन्दिर काया बह बह पाए रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। अग्गे पिच्छे मेटे वाट, आप आपणा बन्धन पाईआ। लहिणा चुक्के ज़ात पात, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रखे डूँग्घा खात, वड भण्डार आप वरताईआ। वड भण्डार हरि का नाउँ, हरि जू हरि हरि आप वरताइंदा। खेले खेल अगम्म अथाहो, बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। भगत भगवान मिलण दा रखे चाओ, चाओ घनेरा इक्क जणाइंदा। अजपा जाप जपे नाउँ, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। सतिगुर सच्चा पकड़े बांहों, फड़ बांहों गले लगाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत आप हो जाइंदा। दो जहानां देवे ठंडी छाउँ, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तत्त ज्ञान ब्रह्म निशान, ब्रह्मवेता नेतन नेता निज आत्म आप दरसाइंदा। निज आत्म खोल्हे बन्द किवाड़, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। अग्नी तपे ना तत्ती हाढ़, सांतक सति वखाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँग्घी कंदर फोल फोलाईआ। पावणहारा साची सार, घर घर वसया सच्चा माहीआ। गृह गृह दीपक कर उज्यार, जोती जाता वेख वखाईआ। कमलापाती मीत मुरार, मिल मिल सखी खुशी मनाईआ। गुरसिख साचे करे प्यार, प्रेम प्रीती इक्क जणाईआ। कलयुग अन्तिम आई वार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। नाता तुट्टा सगला यार, सृष्टी कूके दए दुहाईआ। दृष्टी होई नार विभचार, साचा कन्त कोए ना पाईआ। बुध भृष्टी हाहाकार, सति सन्तोख ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त साजन मेले साचे घर, घर मन्दिर दए वड्याईआ। सन्त साजण इक्को रंग, सो पुरख निरँजण आप चढ़ाइंदा। आत्म सेजा सति पलँग, हरि पुरख निरँजण आप हंढाइंदा। एकँकारा अंदर लँघ, चरन कँवल कँवल चरन आप टिकाइंदा। आदि निरँजण करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। श्री भगवान वजाए मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। अबिनाशी करता गाए छन्द, निरगुण निरगुण ढोला गाइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। जुग चौकड़ी टुट्टी गंढ, एका बन्धन पाइंदा। लेखा तोड़ भेख पखण्ड, जागरत जोत इक्क रुशनाइंदा। नाता जोड़े बिन तन्दी तन्द, प्रेम बन्धन एका पाइंदा। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। गुरमुख नार दुहागण ना होए रंड, सतिगुर कन्त आप प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखा आप चुकाइंदा। गुरमुख लेखा जाए चुक्क, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिगुर सच्चा जाए तुट्ठ, मेहरवान मेहर नज़र

इक्क उठाईआ। अंदरे अंदर पए उठ, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। आपणी वस्त देवे नाम कुछ, भेव अभेदा आप जणाईआ। नाता तोड़े मात गर्भ उलटा रुख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। सन्त सज्जण करे उज्जल मुख, मुख मुखड़ा आप सलाहीआ। आवण जावण लख चुरासी कटे दु:ख, दु:ख रोग ना लागे राईआ। लहिणा देणा मुकाए मात कुक्ख, जन जननी इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त पार कराईआ। साचे सन्त एक ओट, दूजा इष्ट ना कोए रखाइंदा। साचे सन्त एका कोट, सचखण्ड दवार इक्क वड्याइंदा। साचे सन्त एका जोत, पुरख अकाल जोत मिलाइंदा। साचे सन्त जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे दर बुलाइंदा। साचा सन्त साचा मीता, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण ठांडा सीता, घर साचे सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरजंण इक्क अतीता, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। एकँकारा जाणे आपणी रीता, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। आदि निरँजण वसे चीता, चितवित ठगौरी कोए ना पाइंदा। अबिनाशी करता सुणाए गीता, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। श्री भगवान छत्र झुलाए साचा सीसा, सीस जगदीस आप सुहाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए हदीसा, साची सिख्या इक्क दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सति सति समाइंदा। सन्त सतिगुर साची धार, निरगुण निरगुण आप प्रगटाईआ। सतिजुग त्रेता

८८४ द्वापर वेख्या विच संसार, नव नौ चार फोल फोलाईआ। भेव चुका गुर अवतार, पीर पैग़म्बर नाद सुणाईआ। कलयुग ८८४

१२ अन्तिम खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। सन्त सज्जण लए उभार, लख चुरासी फोल फोलाईआ। सोवत जागत १२

जागत सोवत दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। सखोपत करे इक्क प्यार, प्रेम प्यार नाल रखाईआ। तुरीआ नाद अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणा आप सुणाईआ। सन्त सुहेले लए मिला, मिल मिल भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला दए समझाईआ। सन्त मिलण दा साचा वेला, हरि आदि जुगादि रखाइंदा। लेखा जाणे गुरू गुर चेला, गुर गुर वेस वटाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, लख चुरासी अंदर मन्दिर सोभा पाइंदा। साहिब सुल्तान सज्जण सुहेला, सगला संग रखाइंदा। करे खेल इक्क इकेला, अकल कल आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साचे सन्तां संग समाइंदा। सन्तां अंदर हरि जू वड़, आपणा खेल कराइंदा। नाता चुक्के पुरख नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। अक्खर वक्खर आपे पढ़, साचा ढोला एका गाइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। ना जन्मे ना जाए मर, सतिगुर पूरा सो अख्वाइंदा। हँ ब्रह्म लए फड़, फड़ पल्लू गंढ पुआइंदा। दो जहानां पार कर, सच मकाना आप बहाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सज्जण वेख वखाइंदा। सन्त साजण वेखे हरि, पेख पेख खुशी मनाईआ। वसणहारा साचे दर, दर दुआरा दए खुल्हाईआ। कृपानिध आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम मेले सच्चा माहीआ। सरन सरनाई जो जाए पढ़, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। अद्धविचकार ना जाए अड़, जगत वासना रहे ना राईआ। सुखमन टेढी पार कर, ईड़ा पिंगला मूँह दे भार सुटाईआ। निर्मल नूर जोत प्रकाश कर, अन्ध अन्धेर गुआईआ। निरगुण निरगुण साथ धर, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति किनारा इक्क दरसाईआ। सति किनारा साचा घाट, हरि सतिगुर चरन रखाइंदा। सन्त सज्जण मुक्के वाट, अग्गे पन्ध ना कोए पाइंदा। मेल मिलावा आत्म खाट, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। बोध अगाध सुणाए गाथ, अगम्म अगम्मी ढोला गाइंदा। निरगुण निरगुण पुच्छे वात, सरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मिलाए आपणे घर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। गृह मन्दिर उच्च मुनारा, मुनी ऋषी ध्यान लगाईआ। राह तक्कण गुर अवतारा, नेत्र नैण उठाईआ। पीर पैग़म्बर करन पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। राह तक्कण परवरदिगारा, बेऐब नाम खुदाईआ। मुकामे हक़ खेल न्यारा, हरि जू हज़रत आप कराईआ। मुरीद मुर्शद दए अधारा, आप आपणा बन्धन पाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकारा, अकल कल आपणी खेल कराईआ। थिर घर खोल्ह आप किवाड़ा, शब्दी सुत दए वड्याईआ। शब्दी सुत कर पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव गोद बहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलारा, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाईआ। त्रैगुण माया कर पसारा, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण कर उज्यारा, लख चुरासी गंढु पुआईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले दए सहारा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा भेव खल्हाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। निरगुण निरगुण बण वणजारा, साचा हट्ट इक्क खुल्हाईआ। एका वणज इक्क वापारा, एका वस्त दए वरताईआ। सोहँ रूप सर्ब संसारा, सतिगुर साचा आप जणाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। ब्रह्मावेता ना पाए सारा, चारे वेद नैण शरमाईआ। शास्त्र सिमरत रोवण ज़ारो ज़ारा, हरि का अन्त किसे ना आईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, एका आठा जोड़ जुड़ाईआ। एका आठा बोल जैकारा, कान्हा कृष्ना दए वड्याईआ। अञ्जील कुराना खोल्ह किवाड़ा, तीस बतीसा सच हदीसा करे पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर नबी रसूल कलमा नबी नबी उच्चारा, लेखा जाण नूर कलाम इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि सच सुल्ताना, साचे तख़्त आसण लाइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, निरगुण सरगुण वेख

वखाइंदा। नाम निधाना बोल तराना, राग अनादी नाद सुणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी वेखे मार ध्याना, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। पावे सार दो जहानां, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। जेरज अंडां करनहारा कल्याणा, काल महांकाल आपणा हुक्म वरताइंदा। चतुर्भुज नौजवाना, आदि शक्ति नूर महाना, सो पुरख निरँजण मेहरवाना, हरि पुरख निरँजण देवे दाना, एकँकारा कर पसारा आदि निरँजण दीपक जोत जगाइंदा। श्री भगवान ला अखाड़ा, लख चुरासी वेखे लाड़ी लाड़ा, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दीपक आपणा इक्क वखाइंदा। अबिनाशी करता हो उज्यारा, वेखे विगसे वेखणहारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप अनूप आप धराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बण वणजारा, हट्ट चलाए विच संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म आदि जुगादी आपणा बन्धन पाइंदा। आदि जुगादी निरगुण निरगुण बन्धन, सरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाया। खेले खेल सूरा सरबंगण, सूरबीर बेपरवाहया। वसणहारा सच दुआर सचखण्डण, खण्डा खड़ग नाम चमकाया। पावे सार ब्रह्म ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड खोज खोजाया। लेखा जाणे जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज रंग चढ़ाया। जुग चौकड़ी करे भंगण, थिर कोए रहिण ना पाया। कलयुग अन्त वजाए इक्क मृदंगण, मर्द मर्दाना नाउँ धराया। जन भगतां देवे इक्क अनन्दन, अनन्द अनन्द विच रखाया। गीत सुणाए सुहागी छन्दण, सोहँ ढोला आप प्रगटाया। बण विचोला कटे फंदण, शब्द गुर आपणा नाउँ रखाया। गुरमुख मस्तक लाए साचा चन्दन, तिलक लिलाटी जोत रुशनाया। सन्त कन्त आदि जुगादि जुग जुग इक्क दूजे दा दर मंगण, प्रेम भिच्छया इक्क वरताया। गुरमुख माणस जन्म ना होए भंगण, जिस सतिगुर सच्चा नज़री आया। कलयुग अन्तिम बेड़ा कन्ढुण, कन्ढी बैठा राह तकाया। सृष्ट सबाई जीव जंत लख चुरासी एका नाम आया वंडण, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त कटे फंधण, फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, साचे सन्त काया चोली दए रंगाईआ। काया चोली रंग चलूल, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा। गुरमुख गुर गुर शब्द ना जाए भूल, गुर मन्त्र आप दृढ़ाइंदा। करनहारा सूलीउँ सूल, त्रिसूल हथ्थ ना कोए वखाइंदा। पूरब जन्म दा लहिणा देवे मूल, अग्गे लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणा जाणे सच असूल, असलीअत आपणे नाल परणाइंदा। मुरीद मुर्शद हुक्म करे कबूल, मकबरा कोए ना अन्त वखाइंदा। हरि का नाम सदा माकूल, इस्म आज़म इक्क दृढ़ाइंदा। बणखण्ड दहि दिशा फिरना फ़िज़ूल, घर मन्दिर इक्क सुहाइंदा। मन कातिल आशा मकतूल, आसा मनसा दोहां वेख वखाइंदा। जो जन साचे दर होए कबूल, सो सन्त सन्त सन्त मात अख्वाइंदा। फल फुलवाड़ी फुले फूल, पत्त डाल्ही आप महकाइंदा। अन्त राए धर्म ना मंगे कोए

८८६
१२

मसूल, चित्रगुप्त ना लेख वखाइंदा। लाड़ी मौत नेड़ ना आए हूर, कोटन कोटि बहश्त जन्नत चरनां हेठ दबाइंदा। साचे सन्त इक्क सरूर, सति पुरख निरँजण आपणा रस चखाइंदा। सृष्ट सबाई नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेले साचे घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर मन्दिर सोहे हरि निरँकारा, निरगुण आपणा आसण लाईआ। गुरसिख गुर गुर कर प्यारा, गुरमति इक्क दृढ़ाईआ। नानक गोबिन्द इक्क सहारा, पुरख अकाल सरनाईआ। राम कृष्न इक्क दुआरा, बैठे सीस झुकाईआ। ईसा मूसा बण भिखारा, झोली अग्गे डाहीआ। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सदी चौधवीं आई हारा, रो रो दए दुहाईआ। नाता तुटया यार यारा, चार यारी अन्त रहिण ना पाईआ। अल्ला राणी होई खुआरा, मीआं ख्वाहिश ना पूर कराईआ। परवरदिगार आवे आपणी धारा, अमाम अमामा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त साजण आप मिलाईआ। आत्म परमात्म साची सेवा, निसफल कदी ना जाईआ। आत्म परमात्म गुरदेव देवा, देव आत्म वड वड्याईआ। अमृत रस मिले मेवा, बिन रसना रस चखाईआ। लेखा जाणे अलख अभेवा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। नाता तुट्टे रसना जिह्वा, बत्ती दन्द ना सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि साची सेवा, हरि सन्तन आप जणाईआ। साची सेवा आत्म रस, हरि अमृत आप जणाइंदा। मन वासना करनी वस, मनुआ उठ ना दहि दिश धाइंदा। कूड़ी क्रिया छड्डणी रस, विशा विकार मोह हँकार लोभ नेड़ ना आइंदा। आत्म परमात्म गाए जस, जस वेद पुराण सिफ्त सलाहइंदा। नेत्र नैण खोल्ह अक्ख, पर्दा दूई चुकाइंदा। सतिगुर साहिब हो प्रतख, साची सेवा आप लगाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा पन्ध मुकाइंदा। इक्क दूजे दे होणा वस, साची रीत आप चलाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, सति सतिवादी चन्द चढ़ाइंदा। गुरमुख पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाइंदा। साची सेवा जणाए जग, जग जीवण दाता दया कमाईआ। हरि सरन सरनाई जाणा लग्ग, मिले माण वड्याईआ। कूड़ी क्रिया देणी तज, ममता मोह ना होए हल्काईआ। भाण्डा भरम जाए भज्ज, हंगता गढ़ रहिण ना पाईआ। आत्म सेजा चढ़ना भज्ज, भज्ज भज्ज आपणी सेव कमाईआ। आपणा पर्दा लैणा कज्ज, गुरमुख इक्को सेवा बण आईआ। ग़रीब निमाणया अंदर बहणा सज, जगत हँकार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क दृढ़ाईआ। साची सेवा सतिगुर चरन, हरि सच्चा सच जणाइंदा। नेत्र खुल्ल्हे हरन फरन, निज नेत्र रूप वखाइंदा। नाता चुक्के मरन डरन, लख चुरासी

फंद कटाइंदा। गुरमुख पौड़े साचे चढ़न, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा। दरगाह साची घर साचे वड़न, थिर घर आपणा कुण्डा लाहइंदा। तूं मेरा मैं तेरा इक्को अक्खर पढ़न, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। इक्क दूजे दा पल्लू फड़न, फड़या पल्लू ना कोए छुडाइंदा। साहिब सुल्तान सतिगुर पुरख अबिनाशी नर नरायण इक्को वरन, हरि कन्त कन्तूहल दया कमाइंदा। सरन सरनाई साची सेवा करन, कीती घाल लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप जणाइंदा। किरपा अंदर किरपा रख, किरपन दया कमाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे वक्ख, सो अंदर वड़या सच्चा माहीआ। आपणा मार्ग देवे दस्स, साचा राह जणाईआ। अन्तिम मेला हस्स हस्स, घर घर विच खुशी मनाईआ। कर किरपा गुरमुख गुरसिख करे वस, वस आपणा गुरसिखां अग्गे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा इक्को नाम वड्याईआ। साची किरपा हरि का नाम, नाम निधाना दया कमाइंदा। साची किरपा अमृत जाम, अमृत रस चखाइंदा। साची किरपा बिरहों बाण, अणयाला तीर लगाइंदा। साची किरपा बख्शे चरन ध्यान, गुर सरन सरनाई जणाइंदा। साची किरपा निरगुण सरगुण दर्शन देवे आण, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। साची किरपा आत्म परमात्म देवे ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। साची किरपा इक्क निशान, सतिगुर शब्द आप झुलाइंदा। साची किरपा मूर्ख मुग्ध बणाए चतुर सुजान, सूखम आपणा भेव चुकाइंदा। कारण होए निगहबान, अस्थूल साची गंढ पुआइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी देवे दान, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक काया गोलक, इक्को इक्क टिकाइंदा। ना कोई गलती ना गुस्ताख़, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। घट घट अंदर रिहा भाख, भाख्या आपणी सर्ब सुणाईआ। अंदर वड़ वड़ वेखे ताक, डूँघी भँवरी फेरा पाईआ। कवण हँस कवण काग, कवण जगत रिहा कुरलाईआ। करे खेल आदि जुगादि, जुग जुग फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, अभुल्ल भुल्ल ना कोए जणाईआ। सो साहिब होए ठीक, झूठा ठीकर दए भनाईआ। काया मन्दिर मेटे अन्धेरा तारीक, निज नेत्र करे रुशनाईआ। मार्ग पार करे बारीक, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। पंच विकार ना रहे शरीक, सिरक्त कोए रहिण ना पाईआ। दूई द्वैती मेटे लीक, पट्टी साफ इक्क वखाईआ। भगत भगवान रल मिल इक्क दूजे दे गावण गीत, घर घर वज्जे वधाईआ। काया मन्दिर अंदर शिवदुआला ठाकर मट्ठ मसीत, हरि मन्दिर अंदर बैठा सतिगुर डेरा लाईआ। गुरसिख गुरचरन कर सच प्रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठीक निशाना दए लगाईआ। ठीक निशाना मारे तीर, त्रैगुण अतीता दया कमाइंदा। हउमे हंगता कढ्ढे पीड़, पीआ प्रीतम वेख वखाइंदा।

बदलणहारा तकदीर, तकसीर तदबीर आपणी आप जणाइंदा। तोड़नहारा शरअ ज़ंजीर, शरीअत गढ़ ना कोए वखाइंदा। वखावणहारा सच तस्वीर, साबत रूप आप समझाइंदा। चोटी चाढ़े फड़ अखीर, आखर आपणा मेल मिलाइंदा। सो साहिब ठीक होए गुणी गहीर, गहर गुण सागर गुरमुख भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे इक्को धीर, धीरज धीर आप रखाइंदा। संगत सारी करो दरस, हरि दरसी दरस जणाइंदा। आत्म बोधी करो परख, हरि पारखू फेरा पाइंदा। जन्म जन्म दी मेटो हरस, हवस ना कोए जणाइंदा। वसणहारा अर्श फर्श, नंगी पैरीं फेरा पाइंदा। बचन करो हो निधड़क, सब दे परदे आप उठाइंदा। जो अभ्यासी राह विच गया अटक, फड़ बांहों उपर उठाइंदा। जिस दा मन रिहा खटक, तिस अग्गे आप बुलाइंदा। पिच्छों कोई ना कहे जगत, आया नज़र किसे ना आइंदा। वखावणहारा साचा कन्त, साख्यात फेरा पाइंदा। लेखे लावे बूंद रक्त, पंज तत्त माटी फोल फोलाइंदा। प्रभ मिलण दा साचा वक्त, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर बाहर गुपत ज़ाहर दोवे रंग वखाइंदा। अंदर वड़े डूँग्घे सागर, नज़र किसे ना आईआ। ग़रीब निमाणयां निर्मल कर्म करे उजागर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर आयां सब नूं देवे आदर, एथे ओथे मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत लेखा लेखे पाईआ। संगत दरसन नेत्र नैण, नैण नैण खुल्लाइंदा। सृष्ट सबाई वहे डूँग्घे वहण, कलयुग बेड़ा पार ना कोए कराइंदा। कूड़ी क्रिया नाता तुट्टा भाई भैण, साक सैण ना कोए वखाइंदा। माया राणी खाए डैण, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, ग़रीब निमाणयां आया आप लैण, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण फेरा पाइंदा। बज्झी कुण्डी जाए तुट्ट, जिस जन सतिगुर दया कमाइंदा। डूँग्घी भँवरी विच्चों उठ, आपणा रूप वखाइंदा। गुरसिख फड़ के साचे सुत, आपणी गोद बहाइंदा। दो जहान मौले रुत्त, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द बरखा लाइंदा। जिस जन मिल्या पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, तिस दो जहान सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर अंदर डूँग्घी कंदर गृह गृह आपणा भेव चुकाइंदा। माया मोह तुट्टे जाल, जंजाल कोए रहिण ना पाईआ। अन्त ना कूके सिर ते काल, महांकाल ना भय वखाईआ। साहिब सतिगुर सच्चा मिले आण, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जिस दी घालणा रहे घाल, सो गोबिन्द बांहों फड़ लए उठाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्याल, निझर रस इक्क चखाईआ। लेखे लाए काया माटी पंज तत्त खाल, रक्त बूंद आपणी झोली पाईआ। देवणहारा सच्चा धन माल, नाम खज़ाना इक्क लुटाईआ। गुरसिख कदे ना होए कंगाल, शाह पातशाह

८८६ १२

राज राजान खाली हथ्थ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सदा सद सहाईआ। शाह कंगाल दोवें रोण, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुरमुख विरले गूढ़ी नीदे सौण, जिस सतिगुर मिल्या सच्चा माहीआ। बिन सतिगुर वात ना पुच्छे कोई कौण, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। रसना जिह्वा जीव जंत सारे गाउण, अंदर वड़ गुरमुख विरला दर्शन पाईआ। साध सन्त उच्ची फिरदे कर कर धौण, निवण सो अक्खर ना कोए समझाईआ। मोहणी रूप वेख पौण उणंजा झुल्ले पौण, पौण पौण रही कुरलाईआ। पारब्रह्म अन्तिम गेड़ा रखे अवण गवण, पार सके ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां होए आप ज़ामन, दरगाह साची आपणी ज़ामनी इक्क रखाईआ। सन्तन सेवा दिवस रात, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। अठ्ठे पहर वंडण दात, हरि हरि नाम वरताईआ। मन मति मेटण नार कमज़ात, गुरमति करन पढ़ाईआ। पुरख अकाल दस्सण इक्को सच्चा नात, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। उठो सारे बणो पारजात, पारखू इक्को सच्चा माहीआ। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, दीन मज़्ब ना कोए लड़ाईआ। घर मिले हरि जू कन्त कमलापात, सुरत सुवाणी लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन सेवा दिवस रैण रैण दिवस एका राह चलाईआ।

✳ २४ भाद्रों २०१६ बिक्रमी सन्त दरबारी लाल नाल लोपो ✳

सच पिआउणी नाम चाह, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। अमृत आत्म जाम देणा प्या, जग तृष्ना भुख रहे ना राईआ। त्रैगुण अग्नी देणी बुझा, पंज तत्त ना कोए लड़ाईआ। बन्द ताकी देणी खुल्हा, अंदर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। अनहद नाद देणा सुणा, शब्द अनरागी राग अल्हाईआ। निर्मल दीआ देणा जगा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म देणा मिला, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। साचा सोहला देणा सुणा, रसना जिह्वा कोए ना गाईआ। पर्दा ओहला देणा चुका, दूई द्वैत मेट मिटाईआ। पंज तत्त विकारा देणा सुवा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। सो पुरख निरँजण दरस देणा करा, हरि पुरख निरँजण मेला सहिज सुभाईआ। एकँकारा दर दरबारा देणा वखा, दरबार इक्को इक्क वड्याईआ। आदि निरँजण नूर देणा जगा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। सच निशाना देणा झुला, अबिनाशी करता हथ्थ उठाईआ। श्री भगवान देणा प्रगटा, प्रगट आपणी जोत धराईआ। पारब्रह्म प्रभ लेखा देणा मुका, लेखा लेख रहे ना राईआ। दो जहानां पन्ध देणा मुका, आवण जावण खेल ना कोए रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज डेरा देणा ढाह, ढाह

ढाह ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। अन्तर आत्म रंग देणा चढ़ा, रंगया रंग उतर ना जाईआ। सच प्याला देणा प्या, जाम इक्को हथ्थ उठाईआ। कोट जन्म दे बख़्श दए गुनाह, पतित पापी दए तराईआ। इक्क वखाए सच मकान, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। इक्क मिलाए सच राम, राम राम समझाईआ। इक्क मिलाए सच्चा काहन, गोपी काहन एका रास रचाईआ। एका देवे सच नाम, सच करे पढ़ाईआ। एका देणा सच निशान, निशाना इक्को इक्क लगाईआ। एका दस्सणा सच ज्ञान, लिखण पढ़न विच ना आईआ। चौदां विद्या होण हैरान, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी सर्ब कुरलाण, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। साचा लेखा चुक्के आण, लेखा लिख्या रहे ना राईआ। साचा पिआउणा एका एक जाम, मधुर प्याला हथ्थ उठाईआ। आए दर चल करो परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। जिस नाम गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दिता दान, भगत भगवन्त करी कुड़माईआ। सो सन्त देवण सच्चा जाम, धुरदरगाही प्याला हथ्थ उठाईआ। इक्को पीण आए सच्चा जाम, निशकाम शंक मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को चाह, सतिगुर मिले शब्द मलाह, दो जहानां बेड़ा देवे पार करा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। चाह पीण दा चाओ घनेरा, इक्को आस रखाईआ। नाता तुट्टे मेरा तेरा, तूं मैं रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जगत विकारा चुक्के झेड़ा, एका मिले सहिज सुखदाईआ। एथे ओथे करे हक़ नबेड़ा, हक़ हक़ीक़त वेख वखाईआ। घर विच घर वखाए खुल्ल्हा वेहड़ा, घर मन्दिर कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म दूई द्वैती चुक्के झेड़ा, झंजट कोए रहिण ना पाईआ। एका रंग वखाए सञ्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए चतुराईआ। गुरमुख हरिजन हरि सन्त भगत भगवान देवे नाम चाह साची कर कर मेहरा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। चाह पीण दी साची आस, गुरमुख सदा रखाइंदा। धन्न वड़याई जो बुझाए प्यास, तृष्ना रोग गवाइंदा। लेखे लग्गे पवण स्वास, स्वास स्वासां सोभा गाइंदा। लेखा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पार कराइंदा। निर्मल जोत करे प्रकाश, प्रकाशवान इक्क अख्वाइंदा। महल अटल मुनार खेल तमाश, ख़ालक ख़लक आप खलाइंदा। शहिनशाह शाहो शाबाश, राज राजान साचे तख़्त सोभा पाइंदा। जन भगतां साची चाह देवे भर ग्लास, सच प्याला हथ्थ उठाइंदा। साचे सन्तां कोलों कोई ना होवे निरास, निरासा रूप ना कोए वखाइंदा। हरिसंगत बण निमाणी मूँह विच घास, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जन्म जन्म दा कटो जम का फास, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। माया ममता पर्दा करना फास फास, कतरा कतरा कतरे कतरे नाल कतराइंदा। चाह पीवण दी सदा प्यास, बिन चाह सांतक सति ना कोए कराइंदा। चाह प्याओ नाम मदि, मधुर रस वखाईआ। आपणे

अंदर आपे सद्द, घर घर विच भेव खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे नद्द, धुंन आत्मक राग सुणाईआ। नौ दुआरे मुक्के हद्द, घर दसवें मिले वड्याईआ। आत्म परमात्म कराओ लड्ड, पिता पूत मिले सहिज सुखदाईआ। विश्व सोहे इक्को यद्द, विष्नूं आपणा रूप वखाईआ। कोई ना लाउणा अज पज, बिन पीतिआं मुड़ कोए ना जाईआ। दर दुआरे आए भज्ज, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ । इक्क दूजे दे साम्हणे रहे सज, ना कोए सके मुख छुपाईआ। इक्को मन्दिर कराउणा हज्ज, इक्को काअबा नज़री आईआ। इक्क नगारा जाए वज्ज, एका नौबत नाम सुणाईआ। दर दुआरे साची चाह पीए रज्ज रज्ज, मुड़ के फेर पीण दी लोड़ रहे ना राईआ। साची चाह करो त्यार, निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। साची भट्ठी दयो चाड़्ह, अग्नी जोती लम्बू लाइंदा। मिट्ठा पाओ अगम्म अपार, रस नज़र किसे ना आइंदा। काया नालों पत्ती तोड़ो पत्त डाल्ह, डाल्ही डाल्ही वेख वखाइंदा। छाण पुण करो त्यार, जगत दुरमति मैल ना कोए वखाइंदा। भर प्याला देणा विच संसार, संसारी जीव सर्ब तरसाइंदा। सन्त सतिगुर पूरा सदा सदा करे सच प्यार, साची चाह इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा साचा वर, दर दरवेश खलोता दर, इक्को आसा आस विच्चों प्रगटाइंदा। आसा विच्चों आस प्रगट, प्रगट धार वखाईआ। कर किरपा प्याला देणा झट्ट, दोवें हथ्थ वखाईआ। बिन रसना पीता जाए गट गट, ना सके कोए अटकाईआ। बजर कपाटी खुल्ल्हे झट्ट, निरगुण जोत होए रुशनाईआ। अनहद अगम्मी वज्जे सट्ट, मिल सखीआं मंगल गाईआ। इक्को मिले कमलापति, कवल नैण सच्चा माहीआ। अन्तिम रखे कलयुग पत, लख चुरासी नार दुहागण रही कुरलाईआ। सिर समरथ रख हथ्थ, दो जहानां लहिणा दए चुकाईआ। आंढ गुआंढ सारे रहे दस्स, सन्त दरबारी लाल आपणा दरबार खुल्हाईआ। जो आवे सो हो जाए वस, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कर किरपा मार्ग देणा दस्स, जिस दुआरे मिले सच्चा माहीआ। पन्ध मुकाईए नट्ठ नट्ठ, पैरीं चलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा साचा दर, चाह चाहना विच मिलाईआ। भोले भाले वेखो जट्ट, सुरती शब्द ना किसे मिलाईआ। सन्तां कोलों लाहा रहे खट्ट, दर दर फेरा पाईआ। बिन सन्त भगवन्त कोए ना चलाए लोकमात हट्ट, नाम ख़ज़ाना ना कोए लुटाईआ। कोटन कोटि मणका मणका माला रहे रट, मन का मणका ना कोए भुआईआ। कोटन कोटि बैठे तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती डेरा लाईआ। अमृत आत्म ना देवे कोई झट्ट, निझर रस ना कोए झिराईआ। सन्त साजण दुरमति मैल देणी कट, मैल कोए रहिण ना पाईआ। आओ सिखो वेखो खुल्ल्हा हट्ट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को रिहा खुल्हाईआ। जिस दुआरे कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर सन्त साध बैठे ढट्ठ, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। सो साहिब पुरख

समरथ, सर्ब जीआं देवणहार अख्वाईआ। सन्तां कोल सौदा हथ्थो हथ्थ, उधार कोए ना जगत कराईआ। इधरों कढ्ढ ऐधर रखण वथ, वस्तू आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा इक्को दर, इक्को आस रखाईआ। सन्त कोई ना करे निहाल, प्रभू अग्गे करन अरज़ोईआ। सन्त सदा मात दलाल, बण विचोले सेव कमाईआ। साचा मार्ग देण सिखाल, लख चुरासी पाँधी पन्ध मुकाईआ। अंदर वड़ वड़ चलणा नाल नाल, बाहरों रसना नाल समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आप वखाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दवार कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग सन्तां आपणे नाम देवे वड्याईआ। सो मुख सोहे जो रसना हस्से, बत्ती दन्द वड्याईआ। जिस हिरदे परम पुरख परमेश्वर वसे, तिस अठ्ठे पहर रुशनाईआ। कोटन कोटि करे प्रकाश रवि ससे, नूर इक्को इक्क जणाईआ। आपणा मार्ग सन्तां दस्से, सन्त मार्ग सृष्ट सबाई दए लगाईआ। आत्म परमात्म एका मन्दिर वसे, सोहँ सो पुरख निरँजण कर कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँसा सोहँ सोहँ हँसा आपणा रंग रंगाईआ। अद्धविचकार
८६३ निक्की कंध, पर्दा कोए नज़र ना आईआ। सोहँ इक्को छन्द, गोबिन्द गीत अल्लाईआ। अंदरे अंदर मुक्के पन्ध, बाहर सफर ना कोए कराईआ। सन्त महातम आत्म खोल्ले अपणी गंढ, साचा नाम दयो वरताईआ। भुख्यां नग्गयां पै जाए ठंड, अग्नी तत्त बुझाईआ। जन्म जन्म दी होई रंड, हरि कन्त लए मनाईआ। कलयुग औध रही लँघ, वेला गया हथ्थ ना आईआ। इक्क वखाउणी सेज पलँग, जिस सेज उपर सुत्ता सच्चा माहीआ। अठ्ठे पहर वजाए मृदंग, ढोलक छैणा ना कोए रखाईआ। बिन सूरज चन्द चढ़या चन्द, प्रकाश प्रकाश प्रकाशवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां सन्तां कोल रखी इक्को मंग, दूजी चाह ना कोए रखाईआ। कंध विचारी रही रो, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। बौहड़ी बौहड़ी सन्त इक्क दूजे नाल अजे ना सके छोह, मेरा पर्दा ना कोए उठाईआ। जगत विद्या वध्या मोह, अनुभव दृष्ट ना कोए जणाईआ। मेरी ख़बर ना देवे सो, हँ ब्रह्म दए जगाईआ। मेरे घर ना होई लो, मेरी ताकी ना किसे खुल्लाईआ। असीं वेखीए अग्गे हो, किस घर होए रुशनाईआ। कवण निझर झिरना रिहा चो, बूंद बूंद रिहा टपकाईआ। बांह सरहाणे लै के उत्ते ना जाए सौ, सच सिँघासण इक्क रखाईआ। इक्को देणा साचा ढोआ ढो, अतोट अतुट नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चाह मंगण दी इक्को आस रखाईआ। इट्टां कंध रोवे हस्से, दोवें कंध वखाईआ। मेरे अन्तर रैण अन्धेरी मस्से, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। जिंना चिर सन्त दरबारी लाल ना मार्ग दस्से, ओनां चिर मेरी खुशी कदे ना आईआ। बह बह चरन निमाणी झस्से, बण सेवक सेव कमाईआ।

८६४
१२

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंग मंगणहारा इक्को मंग मंगाईआ। दयाल गुरू ना कोए घाटा, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। अंदर बाहर नेड़े आई वाटा, निक्की कंध ना सके अटकाईआ। होए निमाणी खोहे झाटा, बिहबल हो दए दुहाईआ। भगत भगवन्त इक्को साका, हरि सज्जण आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त दुआरे वेख भण्डारे बोल जैकारे, एका अलख अलख अलख सुणाईआ। अलख अलख अलख निरँजण, अगम्म अगम्म सुणाइंदा। सन्त सज्जण दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराइंदा। नेत्र नाम निधान पाए अंञण, अज्ञान अन्धेर झुकाइंदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजण, अठसठ मुख शरमाइंदा। मिल सन्तां दीपक जोती जगण, जागरत जोत डगमगाइंदा। मुख लगाउणा साचा शगन, इक्को नाम मंग मंगाइंदा। त्रैगुण माया ना लग्गे अग्न, पंज तत्त ना कोए हल्काइंदा। अट्ठे पहर एका नूरी जोती नुरानी नाम रहे लगण, लागे कोए होर ना आइंदा। बिन सन्तां दिसे ना कोए सज्जण, लख चुरासी झूठा नाता मोह वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा साचा दर, गृह मन्दिर अंदर इक्को मंग रखाइंदा। राम नाम साची सेवा, दूजी सेवा कम्म किसे ना आईआ। आत्म परमात्म मिले देवी देवा, देव आत्म होए कुड़माईआ। लहिणा देणा चुकाए अलख अभेवा, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। सच्चा देणा इक्को मेवा, बिन रसना जिह्वा खाईआ। मस्तक लाउणा साचा थेवा, कौस्तक मणीआ नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां इक्को समझाईआ। इक्को इक्क आदि जुगादि, जम्मण मरन विच ना आईआ। इक्को इक्क बोध अगाध, आदि जुगादि करे पढ़ाईआ। इक्को इक्क अनादी नाद, अनादी दए सुणाईआ। इक्को इक्क कोटन कोटि उपाए सन्त साध, लोकमात सेव लगाईआ। इक्को इक्क देवणहारा दाद, लख चुरासी झोली आप भराईआ। इक्को इक्क गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे विच्चों काढ, अन्त आपणे विच समाईआ। सो साहिब दयाल ठाकर स्वामी जुगा जुगन्तर सब नूं रहे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ।

✳ २४ भाद्रों २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बधनी ज़िला फिरोज़पुर ✳

गृह मन्दिर घर सुहञ्जणा, हरिजन मिले माण वड्याईआ। प्रभ पाया दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। निम वास महकाए चन्दना, सच सुगंधी इक्क प्रगटाईआ। आत्म देवे सच अनन्दना, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। जम की फाँसी तोड़े फंधना, लख चुरासी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार

कराईआ। हरिजन बेड़ा उतरे पार, सतिगुर पूरा आप कराइंदा। अन्त बेड़ा ना कोए डोबे मँझधार, संसार सागर वेख वखाइंदा। साची नईया देवे चाड़्, नाम नौका इक्क वखाइंदा। सेवा करे आप करतार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण पार कराइंदा। गुरमुख सज्जण बेड़ा बन्न्, आपणे कंध उठाईआ। एका देवे नाम धन्न, वस्त अमोलक झोली पाईआ। एका राग सुणाए कन्न, शब्द अगम्मी नाद वजाईआ। एका वासना मारे मन, मन ममता दए खपाईआ। करे प्रकाश अन्धेर अन्न्, चन्द चांदनी इक्क रुशनाईआ। पंच विकारा देवे डंन, डंका इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। हरिजन लेखा चुक्के मात, आवण जावण रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा देवे दात, दाता दानी आप वरताईआ। निरगुण सरगुण सगला साथ, बण संगी आप निभाईआ। एका नाम देवे गाथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, अठसठ तीर्थ न्ावन कोए ना जाईआ। घर मिले पुरख समराथ, मेहरवान एका मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लहिणा झोली पाईआ। गुरमुख लहिणा चार जुग, जुग चौकड़ी आप मुकाइंदा। सतिगुर पूरा गोदी चुक्क, शब्द हुलार इक्क रखाइंदा। उज्जल करे मात मुख, दुरमति मैल धुआइंदा। नाता तोड़ मात गर्भ उलटा रुक्ख, अजून जून ना कोए भुआइंदा। आत्म परमात्म देवे सुख, सोहँ ढोला इक्क सुणाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चतुर्भुज आपणे रंग रंगाइंदा। सन्त सुहेले साचे सुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे वेख वखाइंदा। साचे घर वेखणहारा, दीनन आपणी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, ऊँचां नीचां भेव चुकाईआ। एका देवे चरन सहारा, हरि सरन वडी वड्याईआ। आवण जावण पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। नाम अगम्मी इक्क जैकारा, सोहँ सोहला रसना गाईआ। बण विचोला एकँकारा, सेवक साची सेव कमाईआ। जन भगतां अमृत रस देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना इक्क झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लेखा लेखे पाईआ। गुरसिख लेखा लेखे जाए लग्ग, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। रसना मुख भोग लगाए साचा सग्ग, सगन इक्को वार मनाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कग्ग, बुद्धि काग ना कोए कुरलाईआ। अन्तिम पर्दा देवे कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख होए आप सहाईआ। सदा सहाई गुरसिख तेरा, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। भेव चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा एका घर वसाइंदा। भाण्डा भरम भउ ढाहे ढेरा, ढेरी ढाह ख़ाक मिलाइंदा। एका रंग वखाए सञ्झ सवेरा, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाइंदा। हरिजन साचा पार लँघ, तट किनारे फेरा पाईआ। आत्म अन्तर सच पलँग, सच सिँघासण डेरा लाईआ। अठ्ठे पहर इक्क मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत सरोवर धारा गंग, निझर झिरना दए झिराईआ। दरस दिखाए सूरा सरबंग, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। गुरसिख जन्म ना होए भंग, माणस मानुख लेखे लाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। गुरसिख गुर गुर इक्को छन्द, गुर चेला करे पढ़ाईआ। दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शश आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम नाउँ निरँकारा रिहा वंड, जन भगतां झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बेड़ा मात बन्नृ, संसार सागर पार कराईआ।

✳ २४ भाद्रों २०१६ दयाल सिँघ दे गृह रामूं वाला ज़िला फिरोज़पुर ✳

कलयुग अन्तिम कूड़ पखण्ड, नौ खण्ड पृथ्मी रिहा समाईआ। साधां सन्तां आत्म होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। आपणी टुट्टी ना सके कोई गंढु, जगत जीवां धक्का रहे लाईआ। आत्म अन्तर अन्धेरा अन्ध, सच प्रकाश ना कोए कराईआ। अनहद अनादी ना कोए छन्द, बोध अगाध ना कोए पढ़ाईआ। अमृत आत्म ना कोए ठंड, सच सरोवर ना कोए नहाईआ। नंगी होई सब दी कंड, पर्दा सके ना कोए पाईआ। रसना जिह्वा कूक कूक पायण डण्ड, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जगत विकारा होए जंग, पंचम पंच परपंच करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। कलयुग क्रिया वड बलकार, बल आपणा रही जणाईआ। सृष्ट सबाई मारे मार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। साध सन्त करन विभचार, सति सन्तोख ना कोए वड्याईआ। रसना जिह्वा करन परचार, पर्चा नाम ना कोए फड़ाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद दिसे धूंआधार, सचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नानक नाम ना सक्या कोए विचार, गोबिन्द भेव कोए ना आईआ। अर्जन लेखा लिख्या इक्क अपार, अपरम्पर कर पढ़ाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतार, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, नित नवित वेस वटाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, भेव अभेद खुल्हाईआ। साचे सन्तां दए दीदार, दरसी आपणा दरस कराईआ। गुरमुखां देवे नाम आधार, नाम निधाना झोली पाईआ। गुरसिखां करे सच प्यार, बख्शे चरन सरन सरनाईआ। नाता तोड़ जगत प्यार, सच प्रीती इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। कलयुग जूठ झूठ रिहा कूक, कूक कूक सुणाइंदा। साधां सन्तां चुक्की चूक, चौथे पद ना कोए समाइंदा। अंदरों ख़ाली दिसण भूक, जगत मुलम्मा रंग चढ़ाइंदा। सुरत सुवाणी सुत्ती गूढ़ी

नींद घूक, शब्दी नाद ना कोए अलाइंदा। रसना जिह्वा कहिण जूठ झूठ, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाइंदा। पुरख अकाल बण बण बहण पूत, तागा सूत गंढु ना कोए पुवाइंदा। अन्तिम सब दा आवा जाणा ऊत, पुरख अबिनाशी लेखा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। कूड़ क्रिया मारे बोल, झूठ सटैंट दए दुहाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, ख़ाली हथ्थ रहे फिराईआ। सति ना तोले कोए तोल, नाम कंडा ना कोए उठाईआ। जगत तृष्ना लग्गा घोल, बल आपणा आप जणाईआ। बण बण बैठे पंडत रौल, आपणा आपणा रौला पाईआ। आत्म परमात्म कोए ना जाए मौल, मौला नज़र किसे ना आईआ। उलटा ना कोए नाभ कौल, कँवल नाभ ना कोए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया रिहा खपाईआ। कलयुग क्रिया मेटे अन्त, मेटणहारा फेरा पाइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा राह चलाइंदा। सच सच चलाए मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। कन्त सुहाग चाढ़े रंग बसन्त, चोली काया आप रंगाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म सर्ब समझाइंदा। मेल मिलाए साची संगत, सगला संग रखाइंदा। भगत दुआरे बणे मंगत, दर घर आपणी मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग क्रिया पार कराइंदा। कलयुग क्रिया करे पार, कूड़ कुड़यारा दए मिटाईआ। सति सतिवादी बन्ने साची धार,
८६७ सति पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। सृष्ट सबाई इक्क दुआर, सच दुआरा दए दरसाईआ। नौ खण्ड पृथमी इक्क प्यार, आत्म परमात्म जोड़ जोड़ाईआ। सत्तां दीपां इक्क जैकार, सोहँ ढोला आप सुणाईआ। लख चुरासी अमृत बख्शे ८६७
१२ ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। भगत भगवन्त मेटणहार अन्ध अन्धयार, ज्ञान नेत्र करे रुशनाईआ। महल अटल १२
पावे सार, डूँग्घी कंदर फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ा लेखा दए चुकाईआ। कूड़ कुड़यारा चुक्के पन्ध, लोकमात रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई देवे इक्क अनन्द, अनन्द आपणा नाउँ वखाईआ। भगत भगवन्त सुणाए छन्द, सोहला ढोला आपे गाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, आपणा बन्धन पाईआ। काया मन्दिर अंदर लँघ, डूँग्घी कवरी भँवरी होए सहाईआ। कर किरपा वजाए नाम मृदंग, सच मर्दानगी आप जणाईआ। सति सरूपी देवे इक्क अनन्द, रसना जिह्वा कथ ना सके राईआ। जूठ झूठ मिटाए पन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई वेखे मार ध्यान, घट घट अंदर आपणा खेल कराईआ। काया अंदर साचे साज, तन्दी तन्द ना कोए रखाईआ। अठ्ठे पहर वजाए ग़रीब निवाज, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए वाज, छत्ती राग रहे जस गाईआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर गुर का शब्द सच्चा नाद, धुंन आत्मक

रस वखाईआ। जिन्हां सतिगुर वसे पास, तिन्हां एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा साज सज्जण आप वजाईआ। गुरमुख बुद्धी सदा बिबेक, विवेकी आप जणाइंदा। गुर गुर सतिगुर नेत्र पेख, पेख पेख समझाइंदा। पतिपरमेश्वर इक्को टेक, एका घर वखाइंदा। त्रैगुण माया ना लग्गे सेक, अग्नी अग्ग ना कोए जलाइंदा। साहिब सतिगुर दा इक्को भेख, भेखां विच कदे ना आइंदा। जन भगतां लिखणहारा लेख, बिन कलम शाही लिख्त लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची बुध करे कारज सुध, रिद्ध सिद्ध दर दर धक्के लाइंदा।

✳ २५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह नवां रामूं वाला ज़िला फिरोज़पुर ✳

गुरमुख फुलवाड़ी गुलशन बहार, गुर सतिगुर रंग महकाईआ। सति सतिवादी सच प्यार, परम पुरख निभाईआ। पत्त डाली वेखे विच संसार, किरपा कर बेपरवाहीआ। वस्त अमोलक दे निरँकार, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख गुर का सच्चा बाग़, जुग जुग मात लगाइंदा। दीपक जोत रख चिराग़, नूर नूर प्रगटाइंदा। शब्द अगम्मी मार आवाज़, होका दे दे आप जगाइंदा। राखा बणे ग़रीब निवाज, दिवस रैण सेव कमाइंदा। लाजा रखे विच जहान, जीवण जुगत आप जणाइंदा। आत्म परमात्म देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे माण दिवाइंदा। हरिजन सच्चा साचा बूटा, लोकमात लहराईआ। पवण पवणी सच्चा हूटा, प्रेम प्रेम समाईआ। नाता तुट्टे जूठा झूठा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। साहिब सतिगुर इक्को तुट्ठा, देवणहार सरनाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्टा, निझर रस चखाईआ। आवण जावण लेखा छुट्टा, पन्ध कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुता, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। मात गर्भ दा उलटा रुक्खा, लोकमात फल फूल आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे जुग जन्म दा घुस्सा, फड़ बांहों आप मिलाईआ। गुरमुख बूटा पत डाली, हरि जू हरि हरि आप महकाइंदा। गोबिन्द सूरा साचा वाली, दिवस रैण वेख वखाइंदा। मेल मिलावा जोत अकाली, अकल कल समाइंदा। सृष्ट सबाई दिसे हथ्थां खाली, हरि का नाम हथ्थ ना कोए रखाइंदा। चारों कुण्ट घटा काली, जगत अन्धेरा छाइंदा। कोई ना दिसे सच्चा पाली, प्रितपालक मुख भुवाइंदा। गुरमुख विरले घाल घाली, कीती घाल लेखे लाइंदा। भगत भगवन्त बण सुवाली, साची झोली अग्गे डाहइंदा। देवणहार सच्चा धन माली, माल ख़ज़ाना आप वखाइंदा। निरगुण हो हो करे दलाली, सरगुण वणज कराइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप वखाइंदा। गुरमुख बूटा फुल्ले फुल्ल, हरिसंगत रंग रंगाइंदा। देवे वड़याई पंज तत्त कुल, काया कपड़ वेख वखाइंदा। वस्त अमोलक नाम अनमुल्ल, बिन मंगया झोली पाइंदा। तोलणहारा साचा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे दया कमाइंदा। दर घर सच्चा सुहञ्जणा, सोहे बंक दुआर। प्रभ पाया पुरख अलख निरँजणा, आदि जुगादी एकँकार। गृह मिल्या सच्चा सज्जणा, दो जहानां पन्ध निवार। चरन धूढ़ कराए मजणा, कूड़ी क्रिया मेटे छार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए आधार । हरिजन उधरे लोकमात, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। जिस जन देवे आपणी दात, नाउँ निरँकारा झोली पाइंदा। डूंघा भरे आपे खात, खाता आपणे हथ्थ रखाइंदा। निष्अक्खर वक्खर आपे वाच, आपणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जाता कर प्रकाश, प्रकाशवान खेल कराइंदा। लेखा जाणे रक्त बूंद हड्ड नाड़ी मास, पंज तत्त काया गंढु पुवाइंदा। देवणहारा पवण स्वास, स्वास पवण रूप वखाइंदा। जन्म जुग जग पूरी करे आस, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निज घर आत्म कर कर वास, गृह गृह सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा रंग रंगाइंदा। हरिजन बूटा सोहणा रुक्ख, हरि सतिगुर आप उपाया। लख चुरासी विच्चों माणस देह मानुख, मानव आपणा रंग चढ़ाया। आत्म परमात्म दस्से सुख, सुख सहिज सहिज समाया। जगत तृष्ना मेटे भुक्ख, भुख्यां भुख गंवाया। जगत विकारा मेटे दुःख, दुखियां दर्द वंडाया। दरस देवे लुक लुक, आपणा मुख छुपाया। भगत भगवान इक्क दूजे कोलों लैण पुच्छ, मुरीद मुर्शद हाल सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाया। हरिजन साचा ऊँचो ऊँच, एका एक अख्वाईआ। अंदर बाहर साची सुच, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। भाग लग्गे पंज तत्त काया माटी बुत्त, तन ख़ाकी सोभा पाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, सदा सुहेला होए सहाईआ। सच सुहञ्जणी सोहे रुत्त, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। ठग्ग चोर यार कोए ना जाए लुट्ट, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल आपणी गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख देवे नाम वड्याईआ। गुरमुख सोहणा सुच्चा बिरख, बिरछ रूप वखाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता चिखा ना कोए जणाइंदा। नेत्र लोचण साचा दरस, दरसी दरस आप वखाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हासल इक्को अंक जणाइंदा। अमृत मेघ अंमिउँ रस बरस, हँ ब्रह्म प्रनाइंदा। पूरब लहिणा लाहे कर्ज़, मकरूज आपणा फ़र्ज़ कमाइंदा। जन भगतां मिलण दी रखे ग़रज़, जुग जुग फेरा पाइंदा। लख चुरासी

कोई ना सके वर्ज, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाइंदा। गुरमुख बूटा रंग बसन्त, नूर नूर समाईआ। साहिब सतिगुर मिले सच्चा कन्त, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। गढ़ तुट्टे हउमे हंगत, हउमे रोग रहे ना राईआ। रूप वटाए साचा सन्त, सन्त सतिगुर सिख सिख समाईआ। महिमा जाण जणाए अगणत, बेअन्त बेपरवाहीआ। नाम निधाना गुर गुर मंत, मन्त्र अन्तर करे पढ़ाईआ। लेखा जाण जुगो जुगन्त, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। पावे सार जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहीआ। ज्ञान बोध प्रभ एका पंडत, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। नाउँ निरँकारा देवे अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराईआ। मेहरवान सूरा सरबंगत, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख चरनां हेठ दबाए स्वर्ग जन्नत, बहशत माण ना कोए रखाईआ। मेल मिलाए आपणा अन्त, आप आपणे विच समाईआ। गुरमुख महिमा सदा अगणत, वेद शास्त्र देण गवाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन मिलाए आपणी संगत, तिस लख चुरासी रहिण ना पाईआ।

✳ २५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ, बीबी महिंदर कौर दे गृह चड़िक ज़िला फिरोज़पुर ✳

करे खेल पुरख समराथा, खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाशा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। सचखण्ड निवासी वेखणहार तमाशा, भेव अभेद आप खुल्ह्लाइंदा। मंडल मण्डप पावणहारा रासा, दो जहानां नाच नचाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर फोल फोलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रखे दासी दासा, हरि हरि हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी देवणहार दिलासा, राग अनाद धुंन सुणाइंदा। भेव अभेद खोलणहार खुलासा, निष्अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार प्रगट कर कर सेवा लाए दासी दासा, सेवक सेवा इक्क समझाइंदा। कलयुग अन्तिम खोल्ह्ण आया खाता, पिछला लेखा वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जानणहारा नाता, नाता बिधाता आप जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी करनी आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण ठांडा सीता, सतिगुर साहिब वड वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क अतीता, दर घर साचे सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आप चलाए आपणी रीता, रीतीवान आप अख्वाईआ। जुग चौकड़ी वेखे खेल बीता, पर्दा सब दा दए उठाईआ। लेखा जाणे हस्त कीटा, घट घट रिहा समाईआ। कलयुग अन्तिम तपे अंगीठा, नौ खण्ड पृथ्मी अग्न लगाईआ। नाम निधान किसे ना पीता, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सुरत सवाणी मिल्या मेल ना राम सीता, सांतक सति ना कोए कराईआ। ज्ञान

ध्यान ना कोए गीता, गोबिन्द मेल ना कोए मिलाईआ। खेले खेल प्रभू अनडीठा, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। पुरख समरथ बेपरवाह, भेव कोए ना आइंदा। जुग जुग चलाए आपणा राह, रैहबर आपणा नाउँ रखाइंदा। शब्द अनादी दे सलाह, साचे मार्ग पाइंदा। दो जहानां खेड़ा दए वसा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणे रंग रंगाइंदा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड लए प्रगटा, त्रै पंज मेला जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क इकेला फेरा पा, घट घट डेरा लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढा, कलयुग आपणा भेव चुकाइंदा। नव नौ पन्ध दए मुका, लोकमात रहिण ना पाइंदा। सचखण्ड दवारे सच सिँघासण इक्क सुहा, सोभावन्त आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। ना कोई दूसर साजन संग, सगला संग ना कोए निभाईआ। आदि जुगादि वजाए मृदंग, नाम निधाना इक्क दसाईआ। साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, शहिनशाह आपणा नाउँ धराईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सुणाए आपणा छन्द, सोहला ढोला आपे गाईआ। लहिणा देणा चुकाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। आत्म परमात्म सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, समरथ पुरख वड वड्याईआ। समरथ पुरख हरि वड्डा वड, भेव कोए ना आइंदा। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, आपे रंग रंगाइंदा। निरगुण निरगुण लडाए लड, आपणी गोद बहाइंदा। बोध अगाधा एका छन्द, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। लख चुरासी पाए बन्धन बन्द, बन्दीखाना नज़र किसे ना आइंदा। भगत भगवन्त सच दुआरे लए सद्द दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महिमा अकथ आप जणाइंदा। समरथ पुरख महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दस्स, छोटे बाले राह चलाईआ। नाम अगम्मी पाए नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। अन्तर देवे इक्को रस, अमृत आत्म जाम प्याईआ। जोत निरँजण कर प्रकाश, आदि निरँजण वेखे चाँईं चाँईंआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर सदा रखे सगला साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। इक्को मन्त्र इक्को पूजा इक्को पाठ, इष्ट देव गुर इक्क समझाईआ। इक्को चरन इक्को कँवल इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। इक्को पिता इक्को मात, इक्को वस्त इक्को दात, देवणहार इक्क हो जाईआ। इक्को ब्रह्म इक्को ज़ात, पारब्रह्म प्रभ वंड वंडाईआ। इक्को मन्दिर इक्को खाट, इक्को भेव रिहा खुल्हाईआ। इक्को मंडल इक्को रास, गोपी काहन इक्क नचाईआ। एका भोग

इक्क बलास, एका सेजा रिहा हंढाईआ। एका शहिनशाह शाहो शाबाश, सति पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। एका पूरी करे आस, जुग जुग आपणी दया कमाईआ। एका वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। एका मुकामे हक़ रखे निवास, परवरदिगार सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी धार चलाईआ। समरथ पुरख प्रभ खेल अवल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, सचखण्ड निवासी वेस वटाइंदा। गुर अवतार फड़ाए पल्ला, पीर पैग़म्बर गंढु पुवाइंदा। नाम संदेस साचा घल्ला, जुग जुग आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। वसणहारा जला थला, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। धाम सुहाए इक्क अटल्ला, महल अटल आप वसाइंदा। आपणे दीपक आपे बला, दीवा बाती ना कोए रखाइंदा। सच सिँघासण साचा मल्ला, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा खेल कराइंदा। समरथ पुरख पुरख बेअन्त, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। लेखा जाणे नार कन्त, कन्त कन्तूहल वेस वटाइंदा। सृष्ट सबाई बणाए बणत, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। गुर अवतार दे दे मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। भेव खुल्हाए साचे सन्त, सन्त सतिगुर रंग रंगाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सु अक्खर इक्क समझाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़यां हथ्थ किसे ना आइंदा। आदि जुगादि रहे अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा रंग वखाइंदा। समरथ पुरख हरि साचा रंग, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। अनाद अनादी वजाए मृदंग, घर साचे राग अल्हाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी इक्क पलँग, परम पुरख प्रभ आप सुहाईआ। अन्तर आत्म निझर रस अनन्द, साचा झिरना आप झिराईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, खण्डा खड़ग इक्क चमकाईआ। पंच विकारा देवे दंड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। गुरमुखां तोड़े खाना बन्दी बन्द, आप आपणा बन्धन पाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, घर घर विच करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म गाए छंद, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, सुरती शब्दी लए मिलाईआ। बिन पाणीउँ पाए ठंड, त्रैगुण अग्नी दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी कल वरताईआ। समरथ पुरख पुरख बिधाता, सो पुरख निरँजण खेल रचाइंदा। मेटणहार अन्धेरी राता, सति सतिवादी साचा चन्द चढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण चलाए साचा राथा, बण रथवाही सेव कमाइंदा। इक्क जणाए पूजा पाठा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। भेव चुकाए त्रिलोकी नाथा, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ आपणी सेव लगाइंदा। हरिजन देवे सच भरवासा, चरन कँवल कँवल चरन उपर धवल इक्को माण रखाइंदा। जुग जन्म दी पूरी करे आसा, मनसा

मन मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग वखाइंदा। समरथ पुरख रंग अपारा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जाता जोत उज्यारा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहारा मुख छुपाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दए हुलारा, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी करे पारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, पीर पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा करे कराए करनेहारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नूर इलाही हो उज्यारा, सृष्ट सबाई सांझा यारा, मुख नक़ाब पर्दा दए उठाईआ। अहिबाब रबाब वजाए सितारा, चौदां लोकां खोलू किवाड़ा, चौदां तबकां दए जगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण नैण उग्घाड़ा, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, समरथ दाता बेपरवाहीआ। समरथ दाता एकँकार, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सो पुरख निरँजण हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण पावे सार, हँ ब्रह्म मेल मिलाइंदा। एकँकारा दे आधार, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यार, जोती दीपक जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता बन्ने चरन प्यार, चरन सरन इक्क समझाइंदा। श्री भगवान वखाए ठांडा दरबार, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे प्यार, साची गोदी आप बहाइंदा। ब्रह्म लेखा अन्तिम वार, हरि जू आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी बीते चार, चार चार वंड वंडाइंदा। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर करन पुकार, दर सजदा सीस झुकाइंदा। कोटन कोटि गुर अवतार, खाली झोली अग्गे डाहइंदा। कोटन कोटि दर दरवेश बणे भिखार, अल्फ़ी तन ना कोए रखाइंदा। कोटन कोटि सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां धीर ना कोए धराइंदा। एकँकारा बैठ सच्चे दरबार, सच सिँघासण आसण लाइंदा। वेखणहारा पुरख करतार, वेस अनेका रूप वटाइंदा । हुक्मे अंदर तेई अवतार, जुग जुग आपणी धार जणाइंदा। हुक्मे अंदर बोल जैकार, नाउँ निरँकारा आप सुणाइंदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण मेला मेल मलाइंदा। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत वेद पुराण दए उच्चार, हुक्मे अंदर राग अलाइंदा। हुक्मे अंदर गीता ज्ञान दए आधार, हुक्मे अंदर अञ्जील कुरान पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर खाणी बाणी पावे सार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप सुणाइंदा। हुक्मे अंदर चारे खाणी दए आधार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बन्धन पाइंदा। हुक्मे अंदर घड़े घड़ भन्ने भन्नणहार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जो आया सो उठ उठ गया आपणी वार, थिर कोए नज़र ना आइंदा। दोए जोड़ जोड़ करन निमस्कार, नमो नमो सर्ब सुणाइंदा। सजदा सीस झुके परवरदिगार, जगदीस आपणा हुक्म मनाइंदा। कातब बणया ना

कोए लिखार, लिख लिख लेखा ना कोए जणाइंदा। सृष्ट सबाई अन्तिम गई हार, हरि हरि रूप नज़र किसे ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी करे विभचार, धीरज जत्त ना कोए जणाइंदा। कूड़ कुड़यारा नैण शंगार, सच सुच्च रंग ना कोए रंगाइंदा। गुर का शब्द ना कोए प्यार, गुरू हट्ट ना कोए वखाइंदा। पीर पैग़म्बर गए हार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा राह चलाइंदा। समरथ पुरख लाए मग, पन्थ आपणा इक्क जणाईआ। जन भगतां दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा मेल मिलाईआ। निर्मल जोती जाए जग, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। इक्क बणाए साची यद, विश्व आपणा रूप दरसाईआ। दीन मज़्हब वरन गोत पार कराए हद्द, घर इक्को इक्क दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढ, झूठा नाता दए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म गृह मन्दिर साचे लए सद्द, घर हुजरा दए वखाईआ। बोध अगाध अगम्मी धुंन आत्म वज्जे नद, अनादी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा राह वखाईआ। समरथ पुरख वड बेअन्त, बेअन्त बेअन्त आप अख्वाइंदा। आपणी महिमा गणाए अगणत, लेखा लेख ना कोए रखाइंदा। कलयुग वेखणहारा अन्त, अन्तिम आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा राह चलाइंदा। समरथ पुरख हरि राह चलाउणा, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। नव नौ चार पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार एका दर बहाउणा, घर साचा इक्क सुहाईआ। अक्खर वक्खर इक्क पढ़ाउणा, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। साचा मन्त्र इक्क जपाउणा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। तू ही तू सब ने गाउणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी शब्द निशाना इक्क झुलाउणा, शाह पातशाह बैठण सीस झुकाईआ। धुर फ़रमाणा इक्क सुणाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। भगत विधान इक्क बणाउणा, तरमीम सके ना कोए कराईआ। जगत तक्सीम बन्द कराउणा, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। अल्फ़ ये वक्त चुकाउणा, चौदां विद्या नैण शरमाईआ। तिन्न पंज आपणे खाते पाउणा, पैंतीस अक्खरी पर्दा लाहीआ। बवन्जा अक्खर राह वखाउणा, बावन एका हुक्म वरताईआ। आदि पुरख निरँजण नज़री आउणा, दूसर कोए रहिण ना पाईआ। दर्द दुःख भय भंजन दर्द वंडाउणा, बण दर्दी फेरा पाईआ। जन भगतां नेत्र एका अञ्जण पाउणा, नाम अञ्जण नाल महकाईआ। सच सरोवर मजन आप कराउणा, अठसठ नाता दए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म पर्दा लौहणा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए पढ़ाउणा, बिन पढ़यां लेखा दए मुकाईआ। रातीं सुत्तयां दरस वखाउणा, जागदयां आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा भेव

खुल्हाईआ। समरथ पुरख भेव खोल्ह, अभेद आप जणाइंदा। लख चुरासी तोले तोल, तोलणहारा फेरा पाइंदा। आदि अन्त रहे अडोल, डुल कदे ना जाइंदा। कलयुग अन्तिम सचखण्ड दवार देवे खोल्ह, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सृष्ट सबाई रही अनभोल, हरि का भेव कोए ना आइंदा। अबिनाशी करता आत्म परमात्म वसे कोल, दूई पर्दा आपे लाहइंदा। घर घर वज्जे मृदंगा ढोल, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। अमृत आत्म देवे पौहल, रस रसना इक्क चखाइंदा। उलटा करे नाभ कौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा खेल कराइंदा। समरथ पुरख हरि खेले खेल, खेलणहारा बेपरवाहीआ। मेल मिलाए गुरू गुर चेल, गुर चेला एका रूप वखाईआ। एथे ओथे सज्जण सुहेल, हरि साचा संग हो जाईआ। आदि निरँजण चाढ़े तेल, जोत निरँजण सगन मनाईआ। कलयुग अन्तिम आया वेल, वेला गया हथ्थ ना आईआ। लख चुरासी पाए नकेल, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। समरथ पुरख धुर फ़रमाणा, एका एक जणाइंदा। शाहो भूप वड राज राजाना, धुर दरबारी वेख वखाइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। सब नूं मन्नणा पए भाणा, भाणे विच आप भुवाइंदा। कलयुग मिटे कूड़ निशाना, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सृष्ट सबाई एका गाणा, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। खेले खेल दो जहानां, दोए दोए आपणी धार वखाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पहरे बाणा, बाण अणयाला तीर चलाइंदा। आत्म परमात्म मारे निशाना, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। घर मन्दिर सुणाए साचा गाणा, अनहद रागी राग सुणाइंदा। इक्क वखाए पद निरबाणा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा खेल वखाइंदा। समरथ पुरख प्रभ करने योग, युगती आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे लोक परलोक, अवण गवण त्रैभवन रिहा समाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आदि अन्त गायण हरि सलोक, सोहला गुर अवतार पीर पैग़म्बर रिहा पढ़ाईआ। लख चुरासी एका ओट, एका इष्ट दए दृढ़ाईआ। सचखण्ड दवार किला कोट, एका बंक दए वखाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, बिमल जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा दए चुकाईआ। कलयुग लेखा चुक्के गुरमुख, गुर सतिगुर आप चुकाइंदा। जन्म जन्म दा मेटे दुःख, दुःख दलिद्दर रहिण कोए ना पाइंदा। सफ़ल कराए मात कुक्ख, दस दस लेखा मूल चुकाइंदा। उज्जल करे जगत मुख, मुख सोहँ हँसा जाप जपाइंदा। नाता तुट्टे उलटा रुक्ख, लख चुरासी फंद कटाइंदा। आपणी गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म सूरबीर शहिनशाह एका प्या बुक्क, भबक दो जहान लगाइंदा। कलयुग अन्तिम पैंडा रिहा मुक्क, बण पाँधी आप मुकाइंदा। हरि

८०६ १२

का भाणा जाए ना रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। मानुख बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। समरथ पुरख सर्ब गुण भरपूर, भरपूरी हरि अख्वाईआ। अन्तिम प्रगट होया हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां मेले आप ज़रूर, ज़ाहर बातन कर रुशनाईआ। जगत अन्धेरा करे दूर, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। माया ममता नाता तोड़े कूड़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। कोई ना खाए गाए सूर, सब दी शरअ दए मिटाईआ। जन भगतां बख्शे आप कसूर, पिछला लहिणा झोली पाईआ। हरिसंगत भरे साचा पूर, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख आपणी कल वरताईआ। समरथ पुरख वरते कल, कलयुग भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण करे अछल अछल, छलधारी आपणा वेस वटाइंदा। जुग चौकड़ी शब्द संदेसे रिहा घल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेव लगाइंदा। कलयुग अन्तिम आया चल, निरगुण वेस वटाइंदा। सम्बल डेरा बैठा मल, गोबिन्द चेला गुर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महांबली आपणा फेरा पाइंदा। महांबली श्री भगवान, दूसर कोए नज़र ना आईआ। जोधा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सम्बल वसे धाम मकान, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। वेद व्यासा होए हैरान, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा नाउँ धराईआ। मुहम्मद झुक झुक करे सलाम, अमाम अमामां नूर रुशनाईआ। ईसा दोए जोड़ करे प्रणाम, खाली झोली अग्गे डाहीआ। मूसा भुल्ले सच निशान, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। नानक निरगुण पुरख अकाला मिले आण, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्त होए प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। शहिनशाह शाहो भूप राज राजान, लख चुरासी रइयत वेख वखाईआ। सच संदेसा एका देवे हुक्मरान, हक़ हक़ीक़त दए समझाईआ। लाशरीक प्रगट होए मेहरवान, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर धराईआ। सच मुसल्ला ज़िमीं असमान, इक्को मसला लहिणा देणा चुकाए अञ्जील कुरान, काया काअबा दो दो आबा पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्तगीर दस्त आपणा लए मिलाईआ। समरथ पुरख हरि परवरदिगारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम पार किनारा, चौदां तबक वेख वखाईआ। सदी चौधवीं आए हारा, जित कोए रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए खुआरा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। साध सन्त रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, समरथ आपणी कल वरताईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्क पसारा, जुगा जुगन्तर वेखणहारा, नित नवित लए अवतारा, भगतां हित करे खेल न्यारा, अबिनाशी अचुत हो उज्यारा, साची रुत्त लोकमात आप महकाईआ।

हरि मन्दिर साचा साढे तिन्न हथ्थ, गुरू गुरदेव गए समझाईआ। पुरख अबिनाशी आवे नस्स, जिउँ नानक निरगुण मिल्या चाँईं चाँईंआ। अंगद अंदर नानक वस, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। करे खेल पुरख समरथ, लेखा लेख दए जणाईआ। नानक गोबिन्द मंगी मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। सृष्ट सबाई होई नंग, पर्दा कोए ना सीस रखाईआ। जगत विकारा होए जंग, शांत सति ना कोए वड्याईआ। दूई द्वैती होई कंध, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर इक्क अरज़ोईआ। पुरख अबिनाशी हरि मेहरवाना, आपणी दया कमाइंदा। अन्तर अन्तर दए ज्ञाना, नानक गोबिन्द आप समझाइंदा। जुगा जुगन्तर मेरा खेल महाना, भेव कोए ना पाइंदा। वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड सच्चा आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। भेव अभेव गुरू गुर सूरा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। लिख्या लेख करे पूरा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। साचा मन्दिर इक्क हज़ूरा, हरि जू हरि हरि आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक जोती गोबिन्द वेस वटाइंदा। गोबिन्द वेस अवल्ला हरि हरि, पुरख अकाल दए वड्याईआ। मेल मिलावा साचे घर घर, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गोबिन्द रिहा समझाईआ। गोबिन्द मंगे दान, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहीआ। देवणहारा श्री भगवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कलयुग अन्तिम खेले खेल महान, भेव कोए ना पाईआ। तेरा नाउँ करे प्रधान, शब्द डंका इक्क वजाईआ। हरि मन्दिर वेखे हरि जू आण, तेरा बंक सुहाईआ। चरन टिकाए श्री भगवान, हरि का चरन नज़र किसे ना आईआ। गुरू ग्रन्थ गुर देवे ज्ञान, बिन गुर शब्द बूझ ना पाईआ। डंका वजाए दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप जगाईआ। कल कल्की लै अवतार, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। सस्से उपर लाए होड़ा निरगुण सरगुण खेल करे महान, खेलणहारा दिस किसे ना आईआ। जिस दा नानक गाया गाण, सोहँ अक्खर कर पढ़ाईआ। जिस नूं गोबिन्द करया परवान, चिल्ला तीर हथ्थ कमान उठाईआ। सो साहिब सतिगुर हरि मन्दिर वसे आण, आपणा चरन टिकाईआ। करे खेल नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। तख्त निवासी राज राजान, शहिनशाह शाहो भूप इक्क अख्वाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी राह तक्के बण अञ्याण, कवण वेला हरि जू दए सुहाईआ। जन भगतां मिले आण, गुरमुखां मुख उज्जल दए कराईआ। गुरसिखां देवे इक्क ध्यान, जगत ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल मिल खुशी मनाण, घर मिले गोबिन्द सच्चा माहीआ। गोबिन्द मेला करे श्री भगवान, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर सोहे इक्क मकान, जिस मन्दिर अंदर गोबिन्द आपणा

रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर महल्ला इक्क इकल्ला उच्च अटल्ला सम्बल नगरी सच समग्री जोत इक्क्री अकाल मूर्त निरगुण सूरत नाद तुरीआ बिन तर्ज़ ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल वेखे चाँई चाँईआ।

✳ २५ भाद्रों २०१६ बिक्रमी जरनैल सिँघ, नछत्र सिँघ शाह वाला ज़िला फिरोज़पुर ✳

परमात्मा आत्मा लए खोज, जन भगत दए वड्याईआ। सन्त सज्जण जो रहे लोच, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। जगत विद्या जो पढ़ पढ़ रहे सोच, सोच विच किसे ना आईआ। वसणहारा पुष्कर लखण करौच जम्बु डेरा लाईआ। साल सलमल ना कोइ कुशा भेव ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। परमात्म आत्म खेल अपारा, हरि जू हरि हरि आप कराइंदा। आदि जुगादी लख चुरासी धारा, जून अजूनी रूप वखाइंदा। जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण लै अवतारा, सरगुण निरगुण बूझ बुझाइंदा। नाम निधाना बोल जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। भगतन मेला धुर दरबारा, धुर दरगाही आप कराइंदा। खोल्हणहारा बन्द किवाड़ा, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। महल अटल सच मुनारा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। कर प्रकाश एकँकारा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। रवि ससि करन निमस्कारा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा भेव चुकाइंदा। परमात्मा आत्म वसे कोल, घर घर विच रिहा समाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, ना सके कोए डुलाईआ। लख चुरासी करनहारा घोल, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज करे लड़ाईआ। सति दुआरा एका खोल्ह, भगत भगवन्त दए पढ़ाईआ। देवे वस्त इक्क अनमोल, नाम निधाना आप वरताईआ। सोहँ अक्खर साचा बोल, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। आत्म परमात्म पाए बन्धन, बन्दीखाना ना कोए रखाइंदा। तिलक ललाटी एका चन्दन, चन्द चादनी मुख शरमाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्त हारा टुट्टी गंढुण, गंढु आपणी इक्क वखाइंदा। वेखणहारा ब्रह्मण्ड ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड खोज खोजाइंदा। लेखा जाण त्रिलोकी नंदन, लोआं पुरीआं फेरा पाइंदा। दीन दयाल सदा बख्शंदन, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। नाम चिल्ला तीर कमंदन, साचा भथ्था आप उठाइंदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण वजाए इक्क मृदंगण, नाम मृदंगा हथ्थ उठाइंदा। कूड़ी क्रिया करे खण्डण, खड़ग खण्डा इक्क चमकाइंदा। नाता तोड़े भुख नंगण, भुक्ख्यां भुख आप मिटाइंदा।

इक्क जणाए परमानंदन, निज आत्म रस वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म खेल कराइंदा। परमात्म आत्म वेखे मीत, मित्र प्यारा खेल कराइंदा। काया मन्दिर अंदर सच मसीत, साचा देहुरा सोभा पाइंदा। साहिब सतिगुर सुत्ता इक्क अनडीठ, आपणी करवट ना कोए बदलाइंदा। अठ्ठे पहर गाए गीत, घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म बन्ने प्रीत, प्रीतीवान दया कमाइंदा। लख चुरासी परखे नीत, गृह गृह फोल फोलाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म चाढ़े रंग, रंग एका एक वखाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं पार लँघ, लख चुरासी माणस मानुख दए वड्याईआ। एका डोरी सति पतंग, गुर शब्दी आप उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म खोज खोजाईआ। आत्म परमात्म डूँघा सागर, घर घर विच आप उपाइंदा। आप वसाए काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ वेस वटाइंदा। भगत भगवान बणाए सच सौदागर, साचा वणज इक्क कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म चुक्के ओहला, पर्दा विच रहिण ना पाईआ। निरगुण गाए निरगुण सोहला, सरगुण ढोला राग अलाईआ। करनहारा उलटा कौला, कँवल कँवली मुख उलटाईआ। देवे वड़याई उपर धौला, धरनी धरत होए सहाईआ। आदि जुगादी नूर इलाही अवल्ला, आलमीन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परमात्म आत्म आत्म परमात्म एका घर वसाईआ। आत्म परमात्म सच घर वसेरा, मन्दिर इक्को इक्क वखाइंदा। वसणहारा नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जुग चौकड़ी देवणहारा गेड़ा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी चुकाए झेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म वंडे वंड, भेव कोए ना आइंदा। परमात्म वसे सचखण्ड, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। आत्म वसे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज विच समाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, साहिब सुल्तान वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुलाइंदा। आत्म परमात्म भेव दस्स, पर्दा आप उठाईआ। निरगुण निरगुण सरगुण अंदर वस, वासदेव इक्क समझाईआ। आत्म देव परमात्म प्यार जाए फस, बन्धन इक्को इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परम पुरख आपणा वेस वटाईआ। परम आत्मा परम पुरख, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। निरगुण आत्मा लख चुरासी सुख, घर घर विच रिहा छुपाईआ। पंज तत्त काया माटी माणस मानुख, रक्त बूंद कर कुड़माईआ। मन मति बुध धूंआं रिहा धुख, गृह मन्दिर अंदर आप टिकाईआ। सति सरूप बैठा लुक, भूप नज़र किसे ना आईआ। चारे कूट अन्धेरा घुप्प, साचा चन्द

६०६ १२

ना कोए रुशनाईआ। साहिब सतिगुर हरि सुल्ताना वड मेहरवाना जन भगत दुआरे पए उठ, निरगुण आपणा रूप धराईआ। ठाकर स्वामी जाए तुठ्ठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे कुट्ट, एका डंका रिहा वजाईआ। जन भगतां रिहा घर घर पुच्छ, दर दर फेरा पाईआ। नाता जुड़या जिउँ मात पुत्त, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। कलयुग अन्त सुहाए रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, अबिनाशी धार चलाईआ। हरिजन देवे साचा सुख, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। लहिणा चुक्के मात गर्भ उलटा रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, फड़ बांहों गले लगाईआ। अद्धविचकार ना देवे सुट्ट, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। इक्क वखाए साचा कोट, किला बंक दए वड्याईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, परमात्म पर्दा दए उठाईआ। आत्म दर्शन रही लोच, लोचा पूरी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। परमात्म आत्म रखी आसा, आसा इक्को इक्क जणाइंदा। निरगुण सरगुण सच भरवासा, धीरज धीर धीर धराइंदा। वेखणहारा खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। दीआ बाती कमलापाती निरगुण नूर जोत प्रकाशा, नूरो नूर डगमगाइंदा। दो जहान मंडल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड गोपी काहन पाए रासा, साची सख़ीआं नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। परमात्म आत्म खेल महान, घर घर विच आप कराईआ। साचा मेला गोपी काहन, निरगुण निरगुण बन्धन पाईआ। सुरत सुवाणी सीता शब्द गुर मिले राम, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाम बंसरी सुणे कान, मधुर धुन इक्क सुणाईआ। खेले खेल श्री भगवान, भगवन आपणा भेव चुकाईआ। राग नाद होण हैरान, छत्ती बैठे मुख शरमाईआ। धुर संदेसा देवे आण, पीर पैग़म्बर करे पढ़ाईआ। तख्त निवासी नौजवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। करे खेल विच जहान, जीवण जुगत दए जणाईआ। भगत भगवन्त वेखे आण, बिन नेत्र नैण मिलाईआ। सच्चा दस्से इक्को गान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म कर पढ़ाईआ। सोहँ शब्द सच निशान, सो सतिगुर आप झुलाईआ। आपा चीन पावे माण, माणस देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म बन्धन पाईआ। आत्म परमात्म खेल अपारा, गृह मन्दिर आप कराइंदा। लख चुरासी कर पसारा, घट घट वेस वटाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। पावे सार साढे तिन्न हथ्थ मुनारा, काया माटी बंक सुहाइंदा। वेखणहारा डूँघी गारा, काया कवरी भँवरी फोल फोलाइंदा। गुरमुख गुर गुर दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। दो जहानां पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म आप जगाइंदा। आत्म परमात्म जगाए सोई, एका अक्ख खुल्हाईआ।

दरगाह साची देवे ढोई, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुरमुख विरला जाणे कोई, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। नार भतार कबीरा लोई, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। साचा बीज रिहा बोई, पत डाल्ही फुल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म लए जगाईआ। आत्म जागे होए वैरागे, बिरहों रोग इक्क वखाइंदा। मेल मिलावा कन्त सुहागे वड वड भागे, गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। हँस बणाए कागे धोवे दाग़े, दुरमति मैल धुवाइंदा। लख चुरासी विच्चों काढे, चरन कँवल कराए लाडे, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नाम सुणाए बोध अगाधे, देवणहार साची दादे, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। गुरमुख सज्जण साचे साधे, मेल मिलाए माधव माधे, मोहणी आपणा रूप वटाइंदा। पावे सार ब्रह्म ब्रह्मादे, शब्द अगम्म वजाए नादे, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। भगत दुआरे हो विस्मादे, बिस्मिल आपणा रूप वखाइंदा। कलयुग अन्त सुणे फ़रयादे, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म आप जगाइंदा। आत्म परमात्म दे हुलारा, एका रंग वखाइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह किवाड़ा, गृह मन्दिर आप वड्याइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, हरि सज्जण आप जगाइंदा। सेवक सेवादार बण भिखारा, घर इक्को अलख जगाइंदा। मंगे मंग विच संसारा, अग्गे आपणी झोली डाहइंदा। सच प्रीती मिले आधारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म आप मिलाइंदा। आत्म परमात्म खोल्हे अक्ख, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। निरगुण दाता हो प्रतख, आपणा भेव चुकाईआ। शब्द अगम्मी बोल अलख, साचा नाअरा दए सुणाईआ। इक्क दूजे नालों होए वक्ख, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। भगत भगवन्त पत्त लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका मन्दिर जाण वस, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म लए जगाईआ। आत्म उठी उठ उठ रोवे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नज़र ना आए कोए, सृष्टी काग वांग कुरलाईआ। सच मुहब्बत करे ना कोई मोहे, नाता तुट्टा ख़लक ख़ुदाईआ। फिर फिर थक्की जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जूहे, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पई सरनाईआ। आत्म उठी करे पुकार, बौहड़ी बौहड़ी कुरलाईआ। प्रभ विसरया सच्चा यार, कूड़ा नाता रहिण ना पाईआ। नव नौ दिसे धुंआंधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं फिर फिर थक्की आर पार किनार, किनारा कोए नज़र ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्की शास्त्र सिमरत वेद चार, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नाल रलाईआ। मेरी आसा पूरी करे ना कोई विच संसार, संसा सके ना कोए मिटाईआ। खुल्हड़े केस दर दरवेश रोवे धाहां मार, मींढी सीस

६११
१२

ना कोए गुंदाईआ। नेत्र नैण कजला ना कोए धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। आत्म रोवे कुरलावे, कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम दुक्खड़ा खावे, बिरहों रोग लगाईआ। भगत सन्त दहि दिशा उठ उठ धावे, साचा दर नज़र कोए ना आईआ। अठसठ तीर्थ जा जा नहावे, दुरमति मैल ना कोए धुवाईआ। अमृत संधया उठ उठ गावे, रसना जिह्वा नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए थाईंआ। थान थनंतर वेख्या जग, नेत्र नैण खुल्हाया। नौ चण्ड पृथ्मी इक्को अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाया। तत्ती वा रही वग, पवण उणंजा रही जलाया। कोए ना बन्न्हे साचा तग, सति सतिवादी सगन ना कोए मनाया। हँस होए अन्तिम कग, काग काग वांग कुरलाया। गुरमुख विरले मंगण मंग, प्रभ साचा होए सहाया। इक्को देवे नाम अनन्द, रस रसना रहे ना राया। जन्म जुग दी टुट्टी देवे गंढु, आप आपणे अंग लगाया। कलयुग औध रही हंढ, वेला गया हथ्थ ना आया। फिरे दरोही नौ खण्ड, सत्त दीप कुरलाया। मैं निमाणी होई रंड, हरि कन्त नज़र ना आया। कर किरपा सतिगुर पा ठंड, मेरा दुक्खड़ा दर्द मिटाया। चौथे युग कटया पन्ध, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा राह तकाया। मेरा नज़र ना आए कोई बत्ती दन्द, रसना मुख ना कोए रखाया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ ना पावां डण्ड, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाया। तूं साहिब सदा बख्शंद, गुण अवगुण ना कोए जणाया। मेरा तोड़ ख़ानाबन्द, बन्दीख़ाना रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मिले सरनाया। मैं निमाणी कोझी कमली, बुधहीण रही कुरलाईआ। एका देणी सच तसल्ली, तसबी माला हथ्थ ना कोए रखाईआ। दर दर फिरां इक्क इकल्ली, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। बिरहों कुट्ठी होई झल्ली, तेरी झलक कोए ना पाईआ। सुक्कदी जाए अगम्मी कल्ली, कलयुग तत्ती वा रिहा लगाईआ। चार कुण्ट फिरां हो हो झल्ली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा दुक्खड़ा दे मिटाईआ। मेरा दुक्खड़ा कट भगवान, तेरे अग्गे मेरी अरज़ोईआ। मैं बाली बुध अञ्याण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, हथ्थ तेरे वड्याईआ। मैं चार कुण्ट फिर फिर होई हैरान, हरि का पौड़ा नज़र कोए ना आईआ। जहि देखां तहि जीव शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ सारे गाण, हिरदे कोए ना सके वसाईआ। तेरा नज़र ना आए सच मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। दर तेरे रखी इक्को ओट, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। जगत निमाणी कढु खोट, एका देणा ब्रह्म ज्ञाना। कर प्रकाश निर्मल जोत, ब्रह्म पारब्रह्म समाना। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवाना। नौजवान श्री भगवान, आपणी दया कमाइंदा। गुरसिख आत्म कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। उठ सपुत्तरी कर ध्यान, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। साचा मन्दिर सच मकान, गृह आपणा आप वखाइंदा। दीआ बाती नूर नुरान, कमलापाती आप जगाइंदा। साचा साकी प्याए जाम, अमृत प्याला हथ्थ फड़ाइंदा। इक्क वखाए सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। नेत्र खोल्ह वेख भगवान, हरि जू हरि हरि फेरा पाइंदा। तेरा मेला विच इस्लाम, इस्म आज़म आप वखाइंदा। तेरा खेल इलाही कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। तेरा भेव सच पैग़ाम, आयत शरायत आप जणाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आत्म आप मिलाइंदा। गुरसिख आत्म फड़ फड़ मीत, हरि आपणी दया कमाइंदा। उठ वेख प्रभ साचे दी साची रीत, जिस दा भेव कोए ना पाइंदा। जिस वखाई जगत मसीत, मुसल्ला हेठां इक्क विछाइंदा। गोबिन्द नाल बंधाई प्रीत, चार कहारी रूप वटाइंदा। अन्त निशाना दस्स के गया ठीक, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। परवरदिगार आए लाशरीक, सिरक्त सब दी आप गवाइंदा। आपणी निभाए सच प्रीत, प्रीतीवान भुल्ल कदे ना जाइंदा। उच्च दा पीर गाए इक्को गीत, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा भेव कोए ना आइंदा। सोहँ रूप सदा अतीत, आत्म परमात्म नाउँ धराइंदा। कलयुग अन्तिम जाए बीत, लोकमात रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा इक्क वखाइंदा। गुरसिख आत्म उठ उठ जाग, हरि साचा आप जगाइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, निर्मल निर्मल आप कराइंदा। दूर दुराडी कट के आए वाट, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख वेखे सेजा खाट, आत्म अन्तर फेरा पाइंदा। साची गाउणी इक्क गाथ, सिख्या सच सच दृढ़ाइंदा। मिल्या मेल पुरख समराथ, सो पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। सगल विसूरे जायण लथ, जन्म मरन फंद कटाइंदा। लहिणा देणा चुक्के हथ्थो हथ्थ, जगत उधार ना कोए कराइंदा। साचा मार्ग रिहा दस्स, भेव अभेद खुल्हाइंदा। आत्म परमात्म हो हो वस, वस्तू आपणी इक्क वरताइंदा। सोहँ ढोला गाउणा जस, आत्म परमात्म सिफ्त सालाहइंदा। एका मन्दिर जाणा वस, घर इक्को इक्क वड्याइंदा। इक्को पीणा अमृत रस, दूजा रस ना कोए चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आत्म आप तराइंदा । गुरसिख आत्म चढ़या चा, चाओ घनेरा खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम मिल्या बेपरवाह, बेपरवाही आपणी रिहा वखाईआ। जिस नूं पीर पैग़म्बर कहिन्दे रहे खुदा, आकाश आकाशां उपर रिहा समाईआ। जिस नूं गुर अवतार कहिन्दे सचखण्ड बैठा डेरा ला, महल अटल सोभा पाईआ। सो शहिनशाह शाह पातशाह कलयुग अन्तिम फेरा पा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुरमुख सज्जण घर घर रिहा जगा, फड़ फड़ बांहों आप उठाईआ। आत्म परमात्म रिहा मिला, मिल मिल

खुशी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। गुरमुख आत्म पई हस्स, प्रभ मिल्या सहिज सुखदाया। बिन डोरीउँ गया फस, प्रेम बन्धन इक्क रखाया। कलयुग अन्त ना जाए नस्स, गुरमख घेरा रहे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया। पुरख अबिनाशी बेनज़ीर, नज़र आपणी इक्क उठाइंदा। गुरमुखां तोड़ां अन्त ज़ंजीर, शरअ जंजीर ना कोए रखाइंदा। बदलणहारा तकदीर, तदबीर आपणी आप जणाइंदा। सोहँ नाम सच अकसीर, साचे हट्ट विकाइंदा। आत्म परमात्म देवे धीर, सांतक सति सति वखाइंदा। मुर्शद मुरीद मिले साचा पीर, दस्तगीर नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आत्म परमात्म विच समाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज़ाहर बातन आपणा हुक्म वरताइंदा।

✳ २६ भाद्रों २०१६ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✳

सृष्ट सबाई नाता कष्ट, सुख नज़र कोए ना आइंदा। राज राजानां बुद्धि होई भृष्ट, अनुभव रूप ना कोए रखाइंदा। सति सतिवादी भुल्लया इष्ट, गुरदेव ना कोए मनाइंदा। अन्तर आत्म ना खुल्ही दृष्ट, सति सन्तोख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां वेख वखाइंदा। दो जहानां वेखणहारा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण कर पसारा, निरगुण वेखे थाउँ थाईंआ। एकँकारा वड बलकारा, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। आदि निरँजण हो उज्यारा, नूरो नूर नूर दरसाईआ। अबिनाशी करता जोधा सूरबीर बलकारा, बल आपणा आप प्रगटाईआ। श्री भगवान सच निशाना मारे एका वारा, दो जहानां तीर चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखणहारा, बिन नैणां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि शाह पातशाह, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी राह चला, नित नवित वेस वटाइंदा। मार्ग पन्थ आप लगा, रैहबर आपणा रंग रंगाइंदा। जीव जंत जगत समझा, जुगती आपणी आप दृढ़ाइंदा। भगत भगवन्त मेल मिला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सच सुगंधी इक्क वखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल पुरख अगम्म, अलख अगोचर आप कराईआ। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्न्ह, सतिजुग त्रेता दुआवर कलयुग आप हंढाईआ। देवणहारा नाम धन्न, वस्त अमोलक आप वरताईआ। सुणावणहारा राग कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। गुरमुखां बेड़ा देवे बन्न्ह, कंध आपणे भार उठाईआ। कूड़ राजा देवे डंन, लोकमात

रहिण ना पाईआ। गढ़ हँकारी देवे भन्न, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि हरि निरँकारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जुग चौकड़ी हो त्यारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। सरगुण मेला विच संसारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। शब्द अगम्मी दे हुलारा, अनाद अनादी राग सुणाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म पावे सारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज एका गोद सुहाइंदा । कागज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख दर्द वेख वखाइंदा। दुःख दर्द वेखे भय भंजन, भय भयानक होए सहाईआ। गुरमुखां सतिगुर साचा सज्जण, सद सद सेव कमाईआ। नेत्र पाए नाम अञ्जण, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान परदे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चरन कँवल उपर धवल कराए साचा मजन, सच सुल्ताना सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जगत कष्ट होए दूर, तन नाता रहिण ना पाईआ। किरपा करे हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। सुखदायक सुख देवे ज़रूर, ज़रूरत इक्को पूर कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूती दुश्मण मित्र दए बणाईआ। साचा मित्र नाम प्यारा, पीआ प्रीतम खेल कराइंदा। रोग सोग तों वसे बाहरा, जन भगतां रोग सोग चिंता दुःख आप गवाइंदा। आत्म परमात्म दे सहारा, पंज तत्त काया माटी लेखे लाइंदा। मन मति बुध ना करे कोए विचारा, विचार विच कदे ना आइंदा। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, हउमें हंगता मूल मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्दी आपणा दर्द वंडाइंदा। जगत कष्ट ना आए नेड़े, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ खेड़े, काया मन्दिर आप सुहाइंदा। तारनहारा डुब्बदे बेड़े, शौह दरयाए पार कराइंदा। देवणहारा उलटे गेड़े, सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। वसणहारा सद नेरन नेरे, निज घर आपणा पर्दा लाहइंदा। हरिजन देवे चाओ घनेरे, चाओ घनेरा इक्क रखाइंदा। रातीं सुत्तयां घर घर मारे फेरे, बण दरवेश सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कटणहारा झूठे जेड़े, नाम खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। कटे कष्ट नाम खण्डा, सतिगुर पूरा खड़ग खड़काईआ। पावे सार विच ब्रह्मण्डां, लोकमात होए सहाईआ। लहिणा देणा चुकाए जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज ना फेरा पाईआ। गीत सुहागी एका छन्दा, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। तोड़नहारा ख़ानाबन्दा, बन्दीख़ाना दए मिटाईआ। साहिब दयाल सतिगुर सदा बख्शंदा, बख्शिश आपणी दए जणाईआ। कलयुग जीव हँकारी गंदा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। बिन ज्ञान नेत्र होया अन्धा, निज नेत्र ना कोए रुशनाईआ। सांतक सति सति सरूप ना पाए कोए ठंडा, बिन सतिगुर पूरे

अमृत जाम ना कोए प्याईआ। कलयुग अन्तिम आया कन्ढा, प्रभ सब दी करे सफ़ाईआ। निरगुण फड़या निरगुण खण्डा, गोबिन्द रिहा चमकाईआ। वंडणहारा साची वंडा, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लए जगाईआ। ढाहवणहारा द्वैती कंधा, दोहरी धार आप वखाईआ। देवणहारा टुट्टी गंढा, गंढु आपणे नाल पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दुःख दए गंवाईआ। कष्ट दुःख कटे रोग, दूती दुश्मण रहिण कोए ना पाइंदा। एका करे सच संजोग, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। होए सहाई चोदां लोक, परलोक आपणे हथ्थ रखाइंदा। देवणहारा साची मोख, मुक्ती चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण वेखे हरि निरँकारा, सरगुण दए वड्याईआ। आदि पुरख निरँजण हो उज्यारा, त्रैभवन धनी फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। जन भगतां वखाए इक्क दुआरा, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी नज़री आए जोत निराकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाईआ। हरिजन सिर रखे हथ्थ, लेखा हथ्थो हथ्थ मुकाइंदा। पुरख अबिनाशी साहिब समरथ, भय भयानक ना कोए डराइंदा। जिस भावे तिस लए रख, जम नेड़ कोए ना आइंदा। कलयुग डूँघी भँवरों बाहर कढु, सच सागर आप नुहाइंदा। अन्तिम मिटणहारी कूड़ी हद्द, सो पुरख निरँजण आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत कष्ट आप खपाइंदा। जगत कष्ट जुग जगत यार, यार यारां वेख वखाइंदा। यारी यार करे विभचार, विभचारी भेव जणाइंदा। वेखणहारा अंदर बाहर, गुपत ज़ाहर खेल कराइंदा। जगत स्यासत जाए हार, लेखा हरि जू आप मुकाइंदा। बिन हरिभगत ना होए कोए उज्यार, बिन शहिनशाह सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। बीस बीसा हरि जगदीसा नव नौ करे सर्ब ख़बरदार, बेख़बर आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान बेनज़ीर आपणी नज़र आप बदलाइंदा। नज़र बदला लए तक्क, परवरदिगार वडी वड्याईआ। करे निबेड़ा हक़ो हक़, हक़ हक़ीक़त वेखे लाशरीक खुदाईआ। कूड़ कूड़यारां पावणहारा नथ्थ नक्क, नाम डोरी रिहा उठाईआ। दो जहानां सचखण्ड निवासी रिहा तक्क, बचया कोए रहिण ना पाईआ। अन्त पर्दा सके ना कोई ढक, जिन्हां भुल्लया हरि रघुराईआ। जुग जुग जन भगतां करदा आया पक्ख, निरगुण सरगुण हो सहाईआ। बलदी अग्नी विच्चों लए रख, तत्ती वा ना लागे राईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस्स, साचा चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत कष्ट जाए लथ्थ, देवणहार ना कोए सज़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म एका जस, घर घर खुशी मनाईआ। गुरमुख गुर गुर मेला

हस्स हस्स, नेत्र नैण एका रंग रंगाईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। डूँघी भँवरी काया कवरी आत्म सेजा आपे वस, सेज सुहञ्जणी लए सुहाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, चन्द चांदनी दए मिटाईआ। करनहारा बन्द खुलाश, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। विगड़े कारज करे रास, करता कीमत आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा जगत वड्याईआ । जगत कष्ट रोवे मारे धाह, कूक कूक सुणाईआ। निरगुण देवणहार सच सलाह, सरगुण आपणा नाम दृढ़ाईआ। बण विचोला बेपरवाह, लेखा दए मुकाईआ। फड़ बांहों पार दए करा, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। विच संसार फिरना चाओ चा, चाओ घनेरा इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीनन दीनन दया नाथ दया कमाईआ। भविख्त अंदर वसया भवख, भेख नज़र कोए ना आइंदा। नानक गोबिन्द गया लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। दो जहानां वन्डया हिस्स, हिस्सा इक्को इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेद श्री भगवान, निरगुण निरँकार आप खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच रलाईआ। सचखण्ड वसणहारा सच मकान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। थिर घर देवणहारा माण, शब्द सुत दए वड्याईआ । विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, त्रै पंज मेला सहिज सुभाईआ। बोध अगाधा इक्क ज्ञान, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। नाउँ निरँकारा कर परवान, सति संदेसा इक्क सुणाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी देवे माण, चारे बाणी राग अल्हाईआ। चारे वेद कर कल्याण, चारे जुग खेल कराईआ। चार वरन जगत निशान, बरन अठारां दए चलाईआ। चार कुण्ट खेल महान, चार यारी संग रलाईआ। निरगुण सरगुण कर बलवान, बल आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा दए चुकाईआ। पर्दा चुक्के आप भगवान, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। निरगुण सरगुण खेल महान, गुर गुर वेस वटाइंदा। पीर पैग़म्बर दे फ़रमाण, कलमा नबी रसूल जणाइंदा। मुकामे हक़ बैठ अमाम, परवरदिगार खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग वेखे आण, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। सिफ्ती सिफ्त सलाही दए ज्ञान, अक्खर अक्खर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्म संदेसा इक्क जणाइंदा । जुग चौकड़ी गुर अवतार, पीर पैग़म्बर सेव लगाईआ। बोध अगाध बोल जैकार, जै जैकार सुणाईआ। शब्द अनादी नाद धुन्कार, ब्रह्म ब्रह्मादी आप जणाईआ। अक्खर वक्खर झोली डार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे पढ़ाईआ। अल्फ़ ये कर प्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता त्रैभवन धनी आपणा राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल जणाईआ। जुग

जुग खेल हरि अवल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाम अगम्मी फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पुआइंदा। सच संदेस सति सतिवाद एका घल्ला, आखर अक्खर आप पढ़ाइंदा। घट घट अंदर लख चुरासी जीव जंत सच सिँघासण एका मल्ला, आत्म परमात्म डेरा लाइंदा। वसणहारा जलां थलां, डूँग्घी कंदर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाइंदा। जोती शब्दी निरगुण रल्ला, सरगुण पंज तत्त काया वेख वखाइंदा। कर प्रकाश बिन तेल बाती आपे बल्ला, नूरो नूर नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार आप हंढाइंदा। नव नौ चार उतरे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलयुग रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सृष्ट सबाई धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ हाहाकार, गुरुदुआरे गुर गुर रंग ना कोए रंगाईआ। सर सरोवर होए विभचार, सति सन्तोख धीरज जत नज़र कोए ना आईआ। इष्ट गुरदेव भुल्लया जीव गंवार, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। आत्म परमात्म ना कोए प्यार, झूठा नाता बन्धन पाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए आधार, घर वज्जे ना सच वधाईआ। साची सखीआं ना मंगलाचार, गीत गोबिन्द ना कोए गाईआ। अन्तिम वेला लेखा लिख लिख दे गए गुरू अवतार, भविख्त वाक् जणाईआ। वेद व्यासा करे पुकार, ब्राह्मण गौड़ा पूत सपूता निहकलंका आवे सच्चा माहीआ। ईसा कहे मेरा परवरदिगार, दो जहानां सांझा यार, साची अल्फ़ी तन शंगार, नूरो नूर नूर दरसाईआ। एका कलमा करे त्यार, नबी रसूलां करे पार, उम्मती उम्मत करे पढ़ाईआ। मेरे पिच्छे आवे आपणी धार, मात पिता ना कोए बणाईआ। मुहम्मद रोवे धाहां मार, उच्ची कूक कूक करे गिरयाज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मंगे मंग बण भिखार, खाली झोली अग्गे डाहीआ। कर किरपा परवरदिगार, मेरी आसा पूर कराईआ। मेरी आसा अल्ला राणी कर त्यार, आलमीन वेख खुदाईआ। चौदां तबक हो सिक्दार, तेरा नाउँ डंक वजाईआ। चौदां सदीआं बीतण संसार, अन्त विछोड़ा तेरी झोली पाईआ। अमाम अमामा वड सिक्दार, रंग रंगीला इक्क चढ़ाईआ। नानक निरगुण बोले सच जैकार, जे जैकार गया सुणाईआ। महांबली उतरे आपणी धार, निहकलंका नाउँ धराईआ। पूत सपूता गोबिन्द सूरा करे सच प्यार, साची गोदी इक्क सुहाईआ। वसणहारा धाम न्यार, साचा मन्दिर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द वेखे धाम न्यारा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। हरि मन्दिर वसे आप निरँकारा, सो हरि मन्दिर लोहार तरखाण ना कोए बणाइंदा। सूरज चन्द ना कोए सितारा, चार दीवार ना कोए वड्याइंदा। मंडल मण्डप ना कोए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई गुरू अवतारा, पीर पैग़म्बर रूप ना कोए वटाइंदा। साचे मन्दिर वजाए आप नगारा,

निरगुण ताल इक्क रखाइंदा। गोबिन्द गुर करे प्यारा, प्रेम प्यार इक्क जणाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यारा, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। गोबिन्द कहे बोल जैकारा, जै जैकार सुणाइंदा । कल कल्की लए अवतारा, कलयुग लेखा आप चुकाइंदा। बीस बीसा शाह सिक्दारा, साचा हुक्म आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भविख्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। पिछला भविख्त होवे पूर, वीह सौ वीह बिक्रमी राह तकाईआ। सृष्ट सबाई भरया कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जन भगतां मस्तक लाए धूढ़, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। काया चोली चाढ़े रंग गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, आपणा नाउँ करे पढ़ाईआ। जेहड़े पैंडा तक्कदे रहे दूर, सो अन्तिम नेड़े आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। कलयुग लेखा मुक्के अन्त, अन्तशकरण वेख वखाइंदा। भरमे भुल्ले जीव जंत, जागरत जोत ना कोए जगाइंदा। त्रैगुण माया पई बेअन्त, मन का मणका ना कोए भुआइंदा। घर घर बणया गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सृष्ट सबाई मेटे पाप, पतित पापी पार कराईआ। इक्क जणाए साचा जाप, जीवण जुगत दए जणाईआ। शाह सुल्तान करे राख, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। सीस रखे ना कोए ताज, नौ खण्ड पृथमी दए दुहाईआ। मनमुखता होई लाड़ी मौत ख़ाज, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ । नाता तुट्टे पंज वक्त निमाज़, वुज़ू बांग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग खेड़ा रिहा ढाहीआ। कलयुग खेड़ा अन्तिम ढठ्ठणा, हरि सतिगुर आपे ढाहइंदा। गुरमुख विरला हरि जू रखणा, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। नाम मधाणे जीव जंत मथणा, दो जहानां आप रिड़काइंदा। करे खेल अलख अलखना, अलख अगोचर वेस वटाइंदा। तख्त ताज होए सक्खणा, हुक्म हाकम ना कोए जणाइंदा। मन्दिर महल अटल छड्ड छड्ड नस्सणा, साची सेज ना कोए हंढाइंदा। नौ खण्ड पृथमी होए दुरघटना, घट घट आप कराइंदा। गोबिन्द किसे नज़र ना आए विच पटणा, पुर अनन्द ना वेस वटाइंदा। निरगुण प्रगट हो के आपणा आप दस्सणा, गोबिन्द शब्द डंका इक्क वजाइंदा। वड वड्डा जगत दरबारी फट्टणा, फट एका घाउ लगाइंदा। बिन गुरमुख पूरे सति सतिवादी किसे ना मिलणा वटणा, साचे घोड़े ना कोए चढ़ाइंदा। लहिणा देणा देणा लहिणा चुकाए हथ्थो हथ्थणा, पुरख समरथ खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां अंदर निरगुण हो हो वसणा, सरगुण आपणी बूझ बुझाइंदा। मीआं हरि परवरदिगार, पारब्रह्म अख्वाइंदा। मुकामे हक़ खेल अपार, जल्वा नूर नूर रुशनाइंदा। शाहो भूप वड सिक्दार, तख्त निवासी हुक्म चलाइंदा।

हुक्मे अंदर ईसा मूसा कर त्यार, मुहम्मद पंज तत्त ख़ाकी रंग रंगाइंदा। मधुर प्याला देवे ठंडा ठार, भर जाम आप प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल कर आप, आपणी दया कमाईआ। मुहम्मद देवे वड प्रताप, कलयुग कल कुड़माईआ। मुहम्मद रखे इक्को ख्वाहिश, आपणी ख्वाहिश जणाईआ। मेरी इच्छया देवे मेरा साथ, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। इक्क मुहम्मद कर प्यार, पीआ प्रीतम दया कमाइंदा। तेरी इच्छया तेरी धार, तेरे नाल मिलाइंदा। मुहम्मद ढह ढह चरन धूढ़ लाए छार, परवरदिगार तेरा शुकर मनाइंदा। तूं मीआं देवणहार, मेरा हीआ पूर कराइंदा। बीज बीआ मेरी अन्तर नूरो नूर नूर रखाइंदा। मेरा अन्तर आए बाहर, मेरा भेव जणाइंदा। तिस नाल होए प्यार, परे आपणी आप बणाइंदा। मुहम्मद ख्वाहिश अल्ला राणी नार मुटयार, पंज तत्त ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। अल्ला राणी बड़ी लायक, लुकमा सब दा रही बणाईआ। वेखणहारी पीर पैग़म्बर मुसायक, मसला सब नूं रही पढ़ाईआ। लिख लिख दस्सी शरअ शरायत, शरीअत आपणी वंड वंडाईआ। सुण सुण हस्से इक्को आयत, एका कलमा नबी जणाईआ। कलयुग अन्तिम साचे मीए कोलों मंगे ख़राइत, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। कर किरपा कर इनाइत, दर तेरे चल के आईआ। तूं साहिब ख़ालक ख़लक कर इशाइत, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। चौदां सदीआं रही मुहम्मद मुताहित, तेरे हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। मन्नया तेरा कानून कवाइद, तेरा हुक्म सिर सिर ल्या टिकाईआ। पीर पैग़म्बर होए मुशाहद, मुशाअरा इक्को इक्क सुणाईआ। तूं लाशरीक खुदा वाहद, वाहवा तेरी वड्याईआ। दरोही ख़ुदाए दी लोकमात फेर मिले ना शायद, वेला गया हथ्थ ना आईआ। कलयुग अन्तिम मैनूं फेर ना करीं किसे दी कैद, बिन तेरे चरन ना कोए वड्याईआ। मैं नेत्र रो रो तेरे अग्गे करां जदोजहिद, रो रो आपणा हाल सुणाईआ। पीर पैग़म्बर मेरे नाल कर कर गए बहस, तबसरा जगत सुणाईआ। मैं बणी रही मुहम्मद ख्वाहिश, अन्तिम तेरी ख्वाहिश रखाईआ। चौदां लोक चौदां तबक तेरी करदी रही तलाश, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ फेरा पाईआ। अञ्जील कुरान दे ना सकी कोई निजात, निसबत तेरी कोए ना वंड वंडाईआ। कर किरपा मेरी कर इमदाद, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। ख़ाली हथ्थ वखावे कोई ना दिसे जायदाद, लोक परलोक नंगी पैरीं फेरी पाईआ। मैं नट्ठ नट्ठ थक्की विच कायनात, मक्का काअबा हुजरा महिराब वेख थाउँ थाईंआ। परवरदिगार तेरा नूर नज़र ना आया साख्यात, मीआं करी ना कोए रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम वेख मार झात, कोझी कमली दर बैठी सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा खेल तमाश, निरगुण

६२०
१२

आपणी करवट रिहा बदलाईआ। तेरी पूरी करां ख्वाहिश, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। मेरे भगतां दी बण दासी दास, चरन धूढ़ी टिक्का लाईआ। फिर होए सहाई अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। तेरा लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, प्रिथम आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अल्ला राणी खेल महानी निरगुण देवे निरगुण निशानी, सरगुण सरगुण सरगुण बन्धन पाईआ।

✳ पहली अस्सू २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✳

शहिनशाह तेरी शहिनशाही, शाह पातशाह नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मारन धाहीं, नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाइंदा। दो जहान श्री भगवान दर तेरे ना देवे कोए गवाही, सगला संग ना कोए निभाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भुल्ले रहे राही, रैहबर तेरा भेव कोए न पाइंदा। खाणी बाणी वेद पुराणी शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरानी दस्सदे रहे सच्चा माही, माही मेल ना कोए कराइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पंज तत्त त्रैगुण लग्गी शाही, निर्मल नीर ना कोए वखाइंदा। गोबिन्द चेला इक्क इकेला लोकमात बूटा पुट्ट के आया काही, धरत धवल खोज खोजाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी रहिमत रहीम रहिमान इक्क गोसाँईं, परवरदिगार बेनक़ाब मुख पर्दा ना कोए उठाइंदा। नाम रबाब सच अहिबाब धुन राग, रस रसीआ ना कोए जणाइंदा। निरगुण निरगुण ना कोए वैराग, सरगुण सरगुण ना कोए कन्त सुहाग, नारी रूप ना कोए वटाइंदा। नेत्र नैण ना खुल्ही जाग, ब्रह्म होए ना वड वड भाग, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आइंदा। शहिनशाह सच सुल्तान, तेरी महिमा कथन ना जाईआ। जुग चौकड़ी होई हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब कुरलाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। देवत सुर ध्यान लगाण, ध्यान विच ना किसे रखाईआ। काग़ज़ कलम दे ज्ञान, लिख लिख लेखा थक्की शाहीआ। रसना जिह्वा बोल ज़बान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर कर गए पढ़ाईआ। सच ना दस्सया किसे निशान, निरगुण वसे सति मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। लेखा बन्धन बंधप ज़िमीं असमान, मंडल मण्डप खेल शैतान, दो जहानां बेपहचान, नूर नुराना हरि मेहरवाना, श्री भगवाना भेव कोए ना राईआ। नव नौ वेखे मार ध्याना, चार चार नैण शरमाना, पंचम पंच मुक्का गाणा, गा गा गीत ना कोए अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। शहिनशाह सुल्तान मेरे महबूब, मेहर मुहब्बत नज़र किसे ना आईआ। तेरा किसे

कलमा सच ना दिता सबूत, साबत सूरत ना किसे वखाईआ। तेरा भेव ना पाया पंज तत्त काया कलबूत, पीर पैग़म्बर कोटन कोटि चोला गए हंढाईआ। तेरा सच ना दिसया अरूज, अर्श फर्श तेरी कुड़माईआ। तेरा नाउँ तेरी रहिमत नाल करदे रहे महिसूस, आपणी मजलिस ना कोए वखाईआ। दिन कट के गए बण माशूक, मशवरा आपणा ना सके सुणाईआ। तेरा मिल्या ना सच हकूक, तेरा लेखा हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वड वड्याईआ। शहिनशाह सुल्तान श्री भगवान, भगवन भेव तेरा ना आया। सेवा कर कर आए विच जहान, निरगुण सरगुण वेस वटाया। कागद कलम लिख लिख दे ब्यान, ब्याना तेरा नाम जणाया। तेरे उपर रख रख माण, माण आपणा नाल रखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवें जुग बीते आण, तेरी वारता सके ना कोए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए सरनाया। शहिनशाह वड राजन राज, रईयत तेरी रही कुरलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरा बणया इक्क समाज, समां आपणा रहे सुणाईआ। जुग जुग रच रच वेख्या काज, करता पुरख तेरी वड्याईआ। एका नाउँ वजाया नाद, अनादी धुंन सुणाईआ। भेव जणाया बोध अगाध, लेखा लिख्त विच ना आईआ। इक्को रखी तेरी याद, याददाशत ना होर बणाईआ। कर किरपा अन्तिम लैणा लाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सति सरूपी मार अवाज़, बिन कन्नां दे सुणाईआ। तुध बिन कोए ना रखे लाज, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। दरोही खुदाए दी भुल्ली निमाज़, रोज़ा बांग ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। शहिनशाह साचे भगवन्त, तेरा रंग नज़र ना आया। आदि जुगादी इक्को कन्त, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेज हंढाया । नाम चोली चाड़ रंगत, रंग रंगीला इक्क वखाया। निरगुण निरगुण कर कर मिन्नत, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। दर दुआर बणे बणत, घड़न भन्नणहार बेपरवाहया। तेरे दुआरे आए मंगत, आपणी झोली रहे वखाया। चौथा जुग होया नंगत, पर्दा कोए ना रिहा रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शाह पातशाह सचे शहिनशाहया। शहिनशाह रहीम रहिमान, रहिमत तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के कलमा कलाम, कायनात नात सुणाईआ। पीर पैग़म्बर रोवण अमाम, अमाम अमामां तेरी वड्याईआ। सच संदेसा जबराईल मेकाईल असराफील देंदे रहे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर नाल रलाईआ। दर कबूल सजदा सलाम, अलैकम तेरी ख़ाक रुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन नज़र ना दीसे कोए, चौदां तबक देण दुहाईआ। पीर पैग़म्बर रहे रोए, लोचन नैण

नीर वहाईआ। चौदां सदीआं रहे सोए, सोइआं रैण वहाईआ। तेरा कलमा लै के आए ढोए, ढोलक लोकमात वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठे अलख जगाईआ। अलख निरँजण तेरे दर अलख, लख लख वार सीस झुकाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहया। चल के आए ख़ाली हथ्थ, दोए दोए रहे वखाया। तूं साहिब दयाल ठाकर स्वामी समरथ, तेरा अन्त किसे ना पाया। वसणहारा घट घट, लख चुरासी डेरा लाया। आदि जुगादि खोल्हें हट्ट, दो जहानां आप जणाया। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां देवें वथ, नाम अमोलक झोली पाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाया। निरगुण सरगुण पाई नथ्थ, नाम डोरी तन्द बंधाया। सति सरूप हो प्रतख, स्वच्छ, सरूपी रूप वटाया। जुग चौकड़ी रखदा आया पत, पतिपरमेश्वर नाउँ धराया। गा गा थक्के तेरा जस, जस वेद पुराण सलाहया। तेई अवतार चरनी गए ढह्, बलहीण कूक कुरलाया। नेत्र नीर विरोलण अथ्थ, धीरज धीर ना कोए रखाया। कलयुग अन्तिम साडी होई बस्स, बौहड़ी बौहड़ी वास्ता पाया। तेरे चरनां गए ढह्, जिउँ भावे लै उठाया। खेलया खेल बाज़ीगर नट, बण नटुआ स्वांग वरताया। साचा मार्ग देणा दस्स, भेव अभेद जणाया। तेरे तेरे होवण वस्स, दूजी ओट ना कोए रखाया। पुरख अबिनाशी अग्गों हस्स, सोहँ ढोला इक्क
६२३ सुणाया। सारे उठ के पओ नह्, हरि जू मार्ग दए वखाया। कलयुग अन्तिम होया प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाया। इक्को ६२३
१२ मार्ग रिहा दस्स, आदि जुगादी आप जणाया। भगतां अंदर आपे वस, पर्दा दए खुल्हाया। नेत्र नैण वेखो झट्ट, पलक १२
पलक दए उठाया। शरअ द्वैती कढ्ढे वट्ट, भाण्डा भरम भन्नाया। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त रत्त रंगाया। चरन कँवल बंधाए नत्त, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। आत्म परमात्म देवे मति, ब्रह्म मत इक्क समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठे सीस झुकाया। शाह पातशाह भूपत भूप, बेअन्त बेऐब परवरदिगारया। आदि जुगादी तेरा नज़र ना आए रंग रूप, रेख भेख ना कोए विचारया। जुगा जुगन्तर वसणहारा चारे कूट, त्रैभवण धनी अवन गवन समा रिहा। निरगुण सरगुण ताणा पेटा सूत, लख चुरासी तन्दी तन्द बंधा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आ रिहा। शाह पातशाह आदि पुरख, सो पुरख तेरी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर वखाए आपणा दरस, दरस तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी आए भटक, भटकणा ना कोए मिटाईआ। दीन मज़्हबां विच रहे अटक, अटक कोए ना रिहा कढ्ढाईआ। कोटन कोटि पैग़म्बर रहे लटक, डोरी तन्द ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच्ची सरनाईआ। शाह सुल्तान दर लैण मंग, इक्को मंग मंगाईआ।

चार चौकड़ी कीते नंग, पर्दा कोए ना उपर पाईआ। सरगुण दिसे ना कोए संग, निरगुण मिले ना माण वड्याईआ। कल जीव माणस जन्म होया भंग, पारब्रह्म ना कोए सरनाईआ। किसे ना मिल्या आत्म आनंद, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। सुरत सुआणी होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। निरगुण जोत ना चढ़या चन्द, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। अनहद शब्द ना सुणया छन्द, रसना जिह्वा जगत हल्काईआ। दूई द्वैत ना ढाही कंध, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। पंच विकार ना खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पई लड़ाईआ। कूड़ी क्रिया चुक्की पंड, जूठ झूठ संग रखाईआ। ना कोई तोड़े बन्दीख़ाना बन्द, लख चुरासी लग्गी फाहीआ। साहिब दयाल इक्को सूरा सरबंग, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त इक्को दे वरताईआ। शहिनशाह हरि तेरा दुआर, दर दरवाज़ा इक्को नज़री आया। जुग चौकड़ी बण भिखार, लोकमात फेरा पाया। रसना जिह्वा बोल जैकार, तेरा डंका नाम सुणाया। जीवां जंतां कर कर ख़बरदार, बेख़बर नाल उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन भेव कोए ना आया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, एका धुंन सुणाईआ। सारे उठो नौजवान, नव जोबन दए वखाईआ। चरन कँवल कँवल चरन करो ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। सुणो संदेसा बिन रसना कान, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। करो वसेरा बिन छपर छन्न मकान, चार दीवार ना कोए वड्याईआ। होए प्रकाश बिन सूरज भान, चन्द चांदनी इक्क रुशनाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा दए वखाईआ। तख्त निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, सच सिँघासण बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर लेखा रिहा जणाईआ। सच सिँघासण हरि जू चढ़या, एका नज़री आइंदा। शब्द अनादी निश्अक्खर आपे पढ़या, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जिस घाड़त घाड़न घड़या, भन्नणहार खेल वखाइंदा। निरगुण हो के अंदर वड़या, नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बिन हथ्थां बाहवां फड़या, आपणी कल आप वरताइंदा। समरथ स्वामी सर्ब गुण भरपूर आपे भरया, मंगण दर किसे ना जाइंदा। निर्भय होए कदे ना डरया, भउ आपणा सर्ब वखाइंदा। पुरख अकाल आपणा नाउँ धरया, अजूनी रहित मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। दस दस मास ना अग्नी सड़या, त्रैगुण जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। आपणी करनी करता पुरख आपे करया, करनहारा आप अख्वाइंदा। ना जन्मे ना कदे मरया, जन्म मरन विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म शाह सुल्तान, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर उठो बाल अञ्याण, बाली बाले आप जगाइंदा। जुग

चौकड़ी बीते विच जहान, ज़ाहरा ज़हूर खेल कराइंदा। दो जहान झुलाउणहार निशान, सच निशाना इक्क वखाइंदा। विष्नूं देवे इक्क ध्यान, ब्रह्मे पारब्रह्म पढ़ाइंदा। शंकर शरअ कर कल्याण, त्रै त्रै लेखा आप मुकाइंदा। पंचम पंच वेखे आण, परपंच भेव मिटाइंदा। लेखा जाणे जीव जहान, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। देवणहारा दानी दान, खाणी बाणी वंड वंडाइंदा। नाम निधाना सच ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा साचा गीत, हरि सतिगुर आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर प्रभ साचे दी वेखो रीत, हरि जू आपणी रिहा चलाईआ। रसना जिह्वा बिन गाओ प्रभू दे गीत, गीत गोबिन्द इक्क पढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी वसे धाम अणडीठ, नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादी ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। वसणहारा सदा अतीत, त्रैगुण विच ना फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गए बीत, पिछला लेखा रिहा मुकाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, शिवदुआला मट्ठ ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म बंधाए प्रीत, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। ग़रीब निमाणयां काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। सदा सुहेला वसे चीत, चेतन आपणा पर्दा लाहीआ। दरस दिखाए नेतन नेत, नित नवित वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां दस्सया आपणा भेत, पर्दा हरि जू दिता उठाईआ। लहिणा देणा चुकाए मुल्ला शेख़, मुसायक कोए रहिण ना पाईआ। निरगुण धरया निरगुण भेख, सरगुण लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। मुछ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मुंडाए ना बेपरवाहीआ। जिस नूं दस्स गुर तेई अवतार कर कर गए आदेस, सो आपणा देस वेखण आईआ। शाह पातशाह सच्चा नरेश, नर नरायण वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर एका वार जगाईआ। जागो जागो जागो, हरि साचा आप जगाइंदा। भागो भागो भागो, हरि साचा राह वखाइंदा। लागो लागो लागो, प्रभ चरन राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, आपणा आप वरताईआ। भुल्ल ना जाणा बण नादान, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। अन्तिम लेखा मंगे आण, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। आपणा आपणा देणा पए सर्ब ब्यान, बिन कलम शाही लिख लिख रिहा जणाईआ। दो जहानां वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां भेव चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब कुरलाण, कूक कूक देण दुहाईआ। करोड़ तेतीसा आए हाण, सुरपति धीर ना कोए रखाईआ। तेई अवतार मंगण दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। भगत अठारां नैण सरमाण, सीस सके ना कोए उठाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सर्ब कुरलाण, कूक कूक रहे जणाईआ। गुरू दस्स कहिण श्री भगवान, तुध बिन ओट अवर ना कोए रखाईआ।

६२५ १२

चौथे जुग तेरा अन्त खेल महान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। तेरा अन्त ना पाया विच जहान, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सारे रखो इक्को आस, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण बुझाए प्यास, एकँकारा मेघ बरसाइंदा। आदि निरँजण करे प्रकाश, श्री भगवान अन्धेर चुकाइंदा। अबिनाशी करता देवे साथ, पारब्रह्म प्रभ ब्रह्म मिलाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा खेल तमाश, गुर अवतार सेव लगाइंदा। लख चुरासी देवणहारा पवण स्वास, आत्म परमात्म गंढु पुआइंदा। निरगुण सरगुण पावणहारा रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। शहिनशाह शाह पातशाह सर्ब गुणतास, गुणवन्ता गुण रखाइंदा। लेखा जाण पृथमी आकाश, गगन मंडल चरनां हेठ दबाइंदा। प्रगट हो साख्यात, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम करे वफ़ात, फातया सब दा आप पढ़ाइंदा। सतिजुग रखे इक्क जमात, पटी इक्को इक्क वखाइंदा। रल मिल सारे गाउण सच्ची गाथ, सो मन्त्र आप पढ़ाइंदा। वरन गोत ना ज़ात पात, दीन मज़्ब ना शरअ जणाइंदा। वुज़ू बांग, ना कोए निमाज़, सजदा सीस ना कोए निवाइंदा। मक्का काअबा ना कोए खुआब, हुजरे हज्ज ना कोए जणाइंदा। शहिनशाह शाह पातशाह इक्क नवाब, नौबत आपणी नाम वजाइंदा। काया मन्दिर अंदर वखाए सच महिराब, महबूब आपणा दरस कराइंदा। शब्द अगम्मी मार आवाज़, हू हू नाअरा एको लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे पुंन सवाब, पुनह पुनह वेख वखाइंदा। श्री भगवान सर्ब गुण दाता, गहर गम्भीर रिहा समझाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। सृष्ट सबाई वेद पुराण, शास्त्र सिमरत अंजील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्की गाथा, गा गा पन्ध ना कोए मुकाईआ। मन वासना नौ दुआर दहि दिशा होई नार कमज़ाता, कुलखणी घर घर फेरा पाईआ। पुरख पुरखोतम पारब्रह्म ब्रह्म बध्धा ना कोए नाता, आत्म परमात्म ना कोए जणाईआ। अनहद शब्द अनादी धुन धुन राग सुणाए ना कोए साका, सखी मिल मिल मंगल कोए ना गाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी मिल्या हरि ना कमलापाता, जगत सुहागण सोभा कोए ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर मूर्त अकाल अकाल वेखणहार तमाशा, आपणा खेल रिहा कराईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां अंदर करे वासा, वास निवासा रखे एका थाईंआ। बिन तेल बाती दीपक जोत करे प्रकाशा, प्रकाशवान सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा हाथ ना आया लख अकाश अकाशा, कोटन कोटि ब्रह्मण्डां भेव कोए ना पाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैग़म्बर सुणदे रहे भाखा, आपणा भाशण निक्का निक्का सुणाईआ। वांग बच्चिआं दस्सदा रिहा बातां, वांग पुत्रां कर पढ़ाईआ। आप बैठा रिहा इक्क इकांता, सचखण्ड साचा आसण लाईआ। बिन

नानक खोलॣ ना वखाया किसे ताका, ताकी आपणी बन्द वखाईआ। कबीर कहे प्रभ मेरा राखा, जिस मिली चरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी रहिमत इक्क वड्याईआ। रहिमत कर मेरे रसूल, रुसवा तेरी आस तकाईआ। अर्ज़ कर कबूल, कबरस्तान दए दुहाईआ। आदि जुगादी तेरा असूल, असल इक्को इक्क रखाईआ। नाम निधान तेरा माअकूल, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। दीन मज़्ह्ब तेरा लैंदे रहे मसूल, चुंगीखाना जगत बणाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी रसना जिह्वा गाउँदे रहे फज़ूल, फज़ल तेरा नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम लेखा तेरे हथ्थ रोंदे दोवें कातिल मकतूल, साचा हज्ज नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। परवरदिगार मेरे ख़ुदा, नेत्र नैण नैण शरमाइंदा। तेरे नालों होए जुदा, ज़ुज वक्खरा रूप वटाइंदा। एका मार्ग दस्स सिध्धा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। चौदां सदीआं अल्ला राणी नाल मिल के पाया गिध्धा, लोकमात सगन मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। सीस जगदीस इक्क झुका, निउँ निउँ चरन निमस्कार। पुरख अबिनाशी हो सहा, निरगुण बण मददगार। दोए रूप पार करा, सरगुण तेरा सच प्यार। तेरी रहे ओट तका, पारब्रह्म बेअन्त हरि निरँकार। बांहों फड़ गले लगा, दर्द विछोड़ा दुःख निवार। आपणी गोदी लै उठा, झल्लया जाए ना दुःख सांझे यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा दर सच्चा दुआर। तेरा दर उच्च महल्ला, मेहरवान तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि वसें इक्क इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा खेल जला थला, महीअल डेरा आपणा लाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा वला छला, अछल छल आपणी धार चलाईआ। नाउँ निरँकार फड़ाया पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। सच संदेस जुग जुग घल्ला, गुर अवतार पैग़म्बर लए पढ़ाईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, निरगुण सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति पुरख निरँजण सच गोसाँईंआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, सति सतिवादी दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण ब्रह्म ब्रह्माद, हरि पुरख निरँजण खोज खोजाइंदा। एकँकार अगम्मी नाद, दो जहानां आप सुणाइंदा। आदि निरँजण कर प्रकाश, निरगुण सरगुण नूर धराइंदा। अबिनाशी करता पावे रास, आत्म परमात्म नाच नचाइंदा। श्री भगवान साख्यात, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ देवे दात, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। गुर गुर बन्ने साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, रुत्त अगम्मड़ी आप सुहाइंदा। वेखणहारा साची ज़ात, अज़ाती आपणा

नाउँ समझाइंदा। जगत जुग पुच्छणहारा वात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव खोल्हे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। प्रगट होवे विच जहान, दो जहानां वाली फेरा पाईआ। धुरदरगाही सच निशान, सति पुरख निरँजण नाल उठाईआ। शाहो भूप बण राज राजान, साचा तख्त इक्क सुहाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कर परवान, सच परवाना दए फड़ाईआ। भूपत भूप बण राजान, रइयत वेखे चाँईं चाँईंआ। करे खेल नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा समझाईआ। साचा हुक्म सच संदेसा, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। शाह पातशाह हरि नर नरेशा, नर निरँकारा वेस वटाइंदा। पकड़ उठाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। वेखणहारा देस परदेसा, लोक परलोक डेरा ढाहइंदा। देवणहारा सच संदेसा, आदि जुगादि गुर मन्त्र आप सुणाइंदा। बणावणहारा साची रेखा, घड़ घड़ भाण्डे आप सुहाइंदा। देवणहारा साचा भेता, घर घर विच घर वड्याइंदा। करनहारा साचा हेता, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। रखणहारा साचा चेता, नित नवित वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा इक्को इक्क, एकँकारा आप जणाईआ। आदि पुरख आपणा लेखा आपे लिख, आपणे विच छुपाईआ। नेत्र नैण ना आए दिस, लोचण दरस कोए ना पाईआ। अग्गे हो ना सके कोई पुच्छ, गुर अवतार बैठे सीस झुकाईआ। इक्क दूजे पिच्छे रहे लुक, पिछली कीती नज़र ना आईआ। सब दा बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया सब दे मूँह विच प्या थुक्क, गुर का शब्द ना कोए गाईआ। अमृत जाम ना मिल्या घुट्ट, मदिरा मास होई हल्काईआ। कूड़ी क्रिया ना मिटी फुट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। रुत्त बसन्ती ना मौली अबिनाशी अचुत्त, फुल फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। बिन हरि नामे खाली दिसण बुत्त, पंज तत्त अग्नी तत्त तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे आप, आप आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादी वड प्रताप, हरि प्रतापी आप वखाइंदा। आदि जुगादी साचा जाप, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाइंदा। आदि जुगादी माई बाप, पिता पूत वेख वखाइंदा। आदि जुगादी देवणहारा साथ, निरगुण सरगुण संग निभाइंदा। आदि जुगादी गावणहारा पाठ, पढ़ पढ़ आपणा नाउँ सुणाइंदा। आदि जुगादी वेखणहारा मार झात, काया मन्दिर अंदर डेरा लाइंदा। आदि जुगादी सज्जण साक, निरगुण सरगुण सगला संग निभाइंदा। आदि जुगादी पाकी पाक, पत्तत पुनीत, आप कराइंदा। आदि जुगादी भविख्त वाक, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप सुणाइंदा। आदि जुगादी खेले खेल तमाश, खेलणहारा नज़र

कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा आप उठाइंदा। साचा पर्दा खोलण आया, ख़ालक ख़लक ख़लक करतार। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़न आया, निरगुण निरगुण लै अवतार। सच महल्ले उच्चे टिल्ले चढ़ने आया, महल अटल वेखे वेखणहार। उच्ची कूक कूक सुणावण आया, दो जहानां करे ख़बरदार। सृष्ट सबाई सुत्ती आप उठावण आया, सोया रहे ना कोए विच संसार। कलयुग रुत्ती अन्त मुकावण आया, कूड़ी क्रिया मेटे छार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अलख अगोचर अगम्म अपार। अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह वडी वड्याईआ। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, हुक्म हासल इक्क समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे मन्नो पनाह, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। गल विच पल्लू लओ पा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। वाहिगुरू राम सारे कहो खुदा, खुदी कोए नज़र ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे रहे जुदा, जुदा आपणी वंड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्त कन्त भगवन्त नारी कन्त लए प्रना, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। रल मिल सारे चरन कँवल सेवा लओ कमा, कँवल नैण मिले सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा, एको रिहा जणाईआ। तेरा संदेसा सोहणा लग्गा, लग्गा तीर न्यारा। सो पुरख निरँजण नज़री आए तेरा इक्को अग्गा, पिच्छा रिहा ना कोए किनारा। तेरा नाम नगारा इक्को वज्जा, दो जहानां करे ख़बरदारा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरे हुक्मे अंदर बज्झा, तेरे चरन करे निमस्कारा। धन्न भाग साहिब सुल्तान सच सिँघासण सजा, बेऐब परवरदिगारा। साडी चार युग दी लथ्थी लज्जा, नेत्र होण ना शर्मसारा। कृपानिध पर्दा कज्जा, ठाकर मिल्या एकँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा मिले चरन सहारा। चरन सहारा दे दे एक, एकँकार तेरी वड्याईआ। अन्त रख के आए तेरी टेक, इक्को आस तकाईआ। कलयुग अन्त आपणी किरपा आपे वेख, साडी होई जुदाईआ। असीं कह कह आए अन्तिम आए नर नरेश, निहकलंका नाउँ धराईआ। महांबली धरे भेख, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। वसे इक्को साचे देस, सम्बल आपणा चरन टिकाईआ। विष्नूं सेवा करे छड्ड सांगोपांग बाशक सेज, सेजा अवर ना कोए हंढाईआ। निज नेत्र निज नैण निज लोचण निज घर निज गृह निज मन्दिर लए वेख, आप आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त संदेसा दे के आया गुर दस्मेश, गोबिन्द नाम निधाना गाईआ। अन्त संदेसा तेरा सज्जण, मुरीद मुर्शद गया जणाईआ। परवरदिगार होए परदे कज्जण, बेऐब फेरा पाईआ। मर्द मर्दाना करे खेल सूरा सरबंगण, बल आपणा आप वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत जो घड़या सो भाण्डे

६२६ १२

भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुखां रखे अन्तिम लज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरन सरोवर कराए मजन, अठसठ तीर्थ डेरा ढाहीआ। सन्त सुहेले सतिगुर दुआरे बह बह सजण, भगत भगवन्त करे कुड़माईआ। गुरमुख दर्शन कर कर रजण, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। गुरसिख मिल मिल गुरसिख हस्सण, सोहँ ढोला एका गाईआ। हरि चरन दुआरे बह बह सजण, मिले सच्ची सरनाईआ। जगत नाता कूड़ा तज्जण, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। दोए जोड़ करन बन्दन, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। लख चुरासी छुट्टे फंदन, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, कौस्तक मणीआ रूप वखाईआ। मेल मिलावा त्रिलोकी नंदन, त्रिलोकी नंदन लेखा आप चुकाईआ। कल कल्की आए सर्ब बख्शंदन, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। किसे दुआरे ना जाए मंगण, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे चरनां हेठ रखाईआ। पिछला लेखा करे खण्डन, अग्गे खण्डा खड़ग खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ओहला पर्दा दए चुकाईआ। ओहला पर्दा चुकाए श्री भगवान, मुख नक़ाब ना कोए रखाईआ। कलयुग मिटे कूड़ निशान, कूड़ कूड़ा दए गंवाईआ। सतिजुग सच होए प्रधान, वड प्रधानगी आप कमाईआ। शाह सुल्ताना करे हैरान, हरि जू आपणी खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर बहा साचे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक आप जणाइंदा। सति सतिवादी अक्खर बोल, अक्खर अक्खर भेव चुकाइंदा। तोलणहारा साचा तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाइंदा। जुग जुग मारनहारा रोल, भेव अभेद आप छुपाइंदा। कलयुग अन्त जन भगतां वसे सदा कोल, विछड़ कदे ना जाइंदा। नौ खण्ड पृथमी वज्जे ढोल, ढोला इक्को हरि जू गाइंदा। आत्म परमात्म जाए मौल, मौला रूप इक्क वखाइंदा। अमृत रस नाभ कौल, कँवल कँवला आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल शहिनशाह, शाह एका एक जणाईआ। उन्नी कत्तक दिवस दए सुहा, लोकमात वज्जे वधाईआ। सच संदेसा सच लिखा, भेव अभेदा दए जणाईआ। वाली हिन्द दए उठा, उठ उठ आपणा राह वखाईआ। लिख लिख पाती दए पुचा, कमलापाती दया कमाईआ। पहली चेत ध्यान लगा, लगा ध्यान ना कोए छुडाईआ। नर नरायण जाए आ, निहकलंका वेस वटाईआ। साची सिख्या जाए समझा, समझ समझ नाल मिलाईआ। पंच प्यारे लए गवाह, शहादत इक्को इक्क समझाईआ। शब्द लिखारी दए सलाह, करे सच पढ़ाईआ। उन्नी साल पर्दा रख्या पा, पंज तत्त अन्तर डेरा लाईआ। बीस बीसा खुशी लए मना, आप आपणा बल धराईआ। भेव अभेद दए खुल्हा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। बिन हरिसंगत मिलणा ना कोई थाँ, पार

किनार ना कोए कराईआ। करे खेल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नराणि नर, हरिसंगत देवे इक्को वर, दर आया दर्दी दर्द दुःख लए वंडाईआ।

✳ ५ अस्सू २०१६ बिक्रमी महिंगा सिँघ दे गृह हरीपुर ✳

ब्रह्मण्ड खण्ड तक्कण राह, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। निउँ निउँ सजदा सीस रहे झुका, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। कवण वेला मिले प्रभ बेपरवाह, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहानां लेखा लवे ला, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। लोआं पुरीआं पर्दा दए उठा, आप आपणी दया कमाईआ। रवि ससि सूरज चन्द पन्ध दए मुका, बण पाँधी सच्चा माहीआ। निरगुण निरगुण सरगुण ढोला दए सुणा, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार दर आपणे लए बहा, नाम डोरी बंधण पाईआ। जुग चौकड़ी लेखा दए चुका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग माण अभिमाण ना कोए रखाईआ। ज़िमीं असमानां नाता दए तुड़ा, मंडल मण्डप वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी बंधण देवे पा, अण्डज जेरज सेत्ज उत्भुज एका हुक्म मनाईआ। कागद कलम लेखा दए चुका, गीत सुहागी एका गाईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख सज्जण लए उठा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। चात्रिक तृखा दए बुझा, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। रुत्त सुहञ्जणी दए महका, फल फुल पत्त डाल्ही आप महकाईआ। सच सुगंधी दए वखा, मन वासना गंदी बाहर कढ्ढाईआ। बिन तन्दी राग दए सुणा, अन्तर ढोला इक्को गाईआ। चन्द नौचन्दी दए चढ़ा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। कन्ढी बैठयां मिले आ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। बन्दीखाना दए तुड़ा, वेले अन्त ना कोए सज़ाईआ। साचा मन्दिर दए खुल्हा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। थिर घर नैण लए उठा, लोचण आपणे रंग रंगाईआ। शब्द मिलावा सहिज सुभा, जोती जाता वेख वखाईआ। पुरख बिधाता आपणा पर्दा दए उठा, मुख न क़ाब ना कोए रखाईआ। अहिबाब रबाब दए वजा, दस्तगीर दया कमाईआ। मुकामे हक़ चले इक्क रज़ा, रहिमत आपणी इक्क वखाईआ। सही सलामत साहिब खुदा, खुदी सब दी दए मिटाईआ। परवरदिगार पल्लू लए फड़ा, दस्त बदस्त एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड नेत्र रो, नैण नैणां नीर वहाया। कवण वेला प्रभ दस्से सच्ची सो, भेव अभेदा आप खुल्हाया। विष्न ब्रह्मा शिव अमृत रस देवे चो, करोड़ तेतीसा सांतक सति कराया। निरगुण सरगुण करे लो, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाया।

६३१
१२

साचा ढोआ देवे ढो, नाम संदेसा इक्क सुणाया। आत्म परमात्म जाए छो, दूई द्वैती पन्ध मुकाया। ब्रह्म पारब्रह्म आपे हो, ब्रह्म लेखा लए लगाया। दुरमति मैल देवे धो, काग हँस रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला देवे वर, दर घर साचे फेरा पाया। ब्रह्मण्ड खण्ड रहे उडीक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ बख्शे चरन प्रीत, प्रीत चरन इक्क समझाईआ। कलयुग मेटे कूड़ी रीत, सतिजुग साचा पन्ध वखाईआ। सृष्ट सबाई गाए गीत, सोहँ ढोला एका गाईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, मट्ठ शिवदुआला रहिण ना पाईआ। नज़री आए इक्क अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ठांडा सीत, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। वसणहारा हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक रिहा समाईआ। करे खेल आप अणडीठ, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, जिस जन आपणा अमृत रस चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर एका झोली पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड नेत्र रहे खोल्ह, नैण नैण नैण उठाया। कवण दिशा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा बोल, अनबोलत राग सुणाया। कवण कन्डे तोल रिहा तोल, तोलणहार सच्चा शहिनशाहया। कवण वस्त रखे कोल, जन भगतां दए वरताया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सुत्ते रहे अणभोल, आलस निंद्रा ना कोए मिटाया। आपणा आप ना ल्या फोल, पर्दा लए ना कोए चुकाया । घर मन्दिर वस्त अनमोल, गृह आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला देवे वर, सच संदेसा इक्क सुणाया। ब्रह्मण्ड खण्ड रहे तक्क, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। जुग चौकड़ी गए अक्क, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। रवि ससि गए थक्क, कोह करोड़ी चलत अन्त ना पाईआ। नव नौ लौदे भक्ख, भाख्या हरि ना कोए सुणाईआ। चार वरन भाण्डे सक्ख, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना कोए वड्याईआ। नाद सुणाए ना कोए हक़, हक़ीक़त पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी इक्को ओट तकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रहे उडीक, उतर पूरब पच्छिम दक्खण ध्यान लगाया। कवण वेला मिले प्रभ लाशरीक, पर्दानशी पर्दा आप उठाया। बेनज़ीर मेहर नज़र मेटे तारीक, अन्ध अन्धेर दए गुआया। जुग चौकड़ी पूरब लेखे मारे लीक, अगला लेखा दए समझाया। लख चुरासी परखे नीत, नीतीवान फेरा पाया। परा पसन्ती मद्धम बैखरी साचा ढोला गाए एका गीत, सोहँ अक्खर वक्खर आप पढ़ाया। त्रैभवन धनी करे खेल अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आया। जन भगतां वसे चीतन चीत, चित वित ठगौरी ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, लहिणा देणा दए चुकाया। ब्रह्मण्ड खण्ड रखण याद, याद याद विच समाईआ। कवण वेला सुणे फरयाद, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ।

जिस ने रचना रची आदि, सो जुगादि वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस विष्न ब्रह्मा शिव आपणे विच्चों लए काढ, अन्त आपणे विच समाईआ। जिस त्रैगुण माया पंच तत्त लख चुरासी दिती दात, अन्तिम लेखा लेखे लाईआ। जिस आत्म परमात्म लख चुरासी अंदर वजाया नाद, धुंनी धुंन राग सुणाईआ। जिस शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी सुणाई बोध अगाध, अगाध बोध कर पढ़ाईआ। जिस भगत भगवन्त सन्त सज्जण लए लाध, सो पुरख निरँजण वड दाता सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला देवे वर, गृह मन्दिर फेरा पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रखी आस, आस आसा विच रखाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लग्गी रही प्यास, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाया। लेखा मुक्कया ना पृथ्मी आकाश, आकाश आकाश रहे कुरलाया। लोअ पुरी ब्रह्मण्ड खण्ड अवन गवण त्रैभवन वेख खेल तमाश, साची रास ना कोए रचाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त बण बण दासी दास, आत्म परमात्म गए सेव कमाया। निरगुण सरगुण कर कर आस, सरगुण निरगुण ओट धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाया। ब्रह्मण्ड खण्ड मारन धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नव नौ भुलया राह, रैहबर नज़र कोए ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे मुख छुपा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। तेई अवतार आपणा

६३३ पर्दा रहे पा, पल्लू सके ना कोए उठाईआ। भगत अठारां मंगण चरन पनाह, सीस चरन कँवल झुकाईआ। ईसा मूसा ६३३

मुहम्मद निउँ निउँ सजदा रहे झुका, परवरदिगार बेऐब तेरी शरनाईआ। नानक गोबिन्द एका ओट लई तका, पुरख अकाल

१२ सच्चा माहीआ। हरि का शब्द आदि जुगादि गुर सतिगुर वेस वटा, नाउँ निरँकारा इक्क दृढ़ाईआ। दो जहानां वेखे थाउँ १२

थाँ, थान थनंतर खोज खोजाईआ। नव नौ चार वेला गया विहा, थित वार ना कोए समझाईआ। रवि ससि सूरज चन्द, मंडल मण्डप नेत्र नैणां नीर रहे वहा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। त्रैगुण अग्नी लग्गी भाअ, पंज तत्त रही जलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्का, हौला भार ना कोए वखाईआ। जीव जंत सृष्ट सबाई गुर का शब्द गए भुल्ला, सतिगुर सरन ना कोए तकाईआ। अठसठ तीर्थ दुरमति मैल ना सके कोई गुआ, आत्म अशनान ना कोए कराईआ। लिख लिख थक्की कलम शाह, कागद मिले ना कोए वड्याईआ। बिन हरि पकड़े ना कोए बांह, साध सन्त देण दुहाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा गया छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका रंग ना दए कोए रंगा, दूई द्वैती घर घर करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म ना देवे कोए मिला, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म लेखा सके ना कोए मुका, पूरब लहिणा झोली कोए ना पाईआ। नेत्र नैणा पतिपरमेश्वर दरस सके

ना कोए पा, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। अनहद अनादी नाद ना सके कोए सुणा, गा गा थक्की सर्ब सृष्ट रसना जिह्वा हो हल्काईआ। तेरा मेरा मेरा तेरा पन्ध सके ना कोए मुका, बण पाँधी जगत राहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अबिनाशी तुध बिन नज़र ना कोई आ, नव नौ वेख्या थाउँ थाईंआ। कर किरपा शहिनशाह, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। फड़ बेड़ा बांहों पार करा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कलयुग अन्तिम कर गए ना, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाया। कर किरपा श्री भगवान, कलयुग अन्त अन्धेरा छाया। सच मिले ना कोए निशान, साचा मार्ग ना कोए जणाया। जीव जंत होए बेईमान, बेवा रूप सरूप वटाया। हरि कन्त ना मिल्या आण, सेज सुहञ्जणी ना कोए सुहाया। घर आत्म परमात्म ना मिल्या दान, नाम वस्त ना कोए वखाया। हरि का शब्द ना सुणया बिन कान, छत्ती राग रहे जस गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाया। ब्रह्मण्ड खण्ड बोल अलख, अलख अलखना रहे ध्याईआ। कलयुग अन्तिम भाण्डे होए सक्ख, हरि का नाउँ नज़र कोए ना आया। निरगुण निराकार निरवैर मूर्त अकाल अज़ूनी रहित हो प्रतख, परम पुरख तेरी वड्याईआ। साचा मार्ग इक्को दस्स, लख चुरासी दे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म गावे तेरा जस, दूसर राग ना कोए सुणाईआ। जगत अन्धेरा मिटे मस, जोत निरँजण होए रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला हस्स, कँवल नैण खुशी मनाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, इक्क तेरी ओट तकाईआ। तूं वसणहारा घट घट, गृह गृह बैठा डेरा लाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त काया मट, सच सिँघासण आसण सोभा पाईआ। निर्मल जोत नूर प्रकाश लट लट, अवण गवण रिहा समाईआ। तेरा खेल चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबक तेरी सरनाईआ। तेरा लेखा तीर्थ अठसठ, सर सरोवर चरन धूढ़ी खाक रमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर तेरी चरन सरन सरन चरन रहे ढठ्ठ, आपणा बल ना कोए धराईआ। कलयुग वेला अन्त अन्त हो प्रगट, प्रगट आपणी कल वखाईआ। जुग जुग चलावणहारा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। लहिणा देणा मुका सीआं साढे तिन्न हथ्थ, रविदास चुमारा दए गुआईआ। अग्गे मार्ग तेरे हथ्थ, सतिजुग साची धार बंधाईआ। मन वासना पाउणी नथ्थ, मनुआं उठ ना दहि दिश धाईआ। लेखे लाउणी रत्ती रत्त, रत्ती रत्त तेरे लेखे पाईआ। जिस दुआरे गोबिन्द सत्थर बैठा घत्त, सत्थर यारता सेज हंढाईआ। सो साहिब सच्चा समरथ, हरि पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि आपणी महिमा जाणे अकथ, रसना कथनी कथ ना कोए गाईआ। चरन सरन श्री भगवान, तेरी गए ढठ्ठ, फड़ बांहों गले लगाईआ। दो जहान वेख्या

नट्ठ नट्ठ, दहि दिशा फेरी पाईआ। कोई ना रखणहारा पत्त, सारे बैठे नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, खाली झोली रहे वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वखावण झोली, पल्लू आपणा आप उठाया। साची वस्त ना कोए कोली, कँवल नैण तेरा नूर नज़र कोए ना आया। कलयुग अन्तिम कोए ना चुक्के डोली, चौथा जुग दए दुहाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोई ना सुणे बोली, रसना जिह्वा जिह्वा रसना बत्ती दन्द सलाहया। आत्म परमात्म रुत्त बसन्ती कोए ना मौली, पत्त डाल्ही ना कोए महकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर इक्को मंग मंगाया। पारब्रह्म प्रभ हो मेहरवान, एका नाद सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करो ध्यान, धरनी धरत धवल नाल मिलाईआ। रवि ससि दयो ज्ञान, मंडल मण्डप कर पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी श्री भगवान, सदा सदा सहिज सुखदाईआ। जुग चौकड़ी वेखे आण, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैग़म्बरां देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। करे खेल गोपी काहन मंडल मण्डप रास रचाईआ । बोध अगाधा इक्क ज्ञान, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अनुभव भेव अभेद जणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए रंग समाईआ। तख्त निवासी नौजवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, आदि जुगादि सुणाईआ। हुक्मे अंदर खेल महान, हुक्म हाकम इक्क जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप जणाइंदा। नव नौ चार खेल अपारा, ब्रह्मण्ड खण्ड समझाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे सहारा, लोकमात निष्अक्खर वक्खर आप पढ़ाया। आत्म परमात्म कर प्यारा, जोती जाता पुरख बिधाता एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेसा श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। कलयुग अन्त करे खेल महान, भेव कोए ना आइंदा। प्रगट होवे नौजवान, महांबली बल आपणा आप रखाइंदा। सम्बल वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। सच संदेसा देवे आण, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। भगत भगवन्त वेखे आण, लख चुरासी मोह तुड़ाइंदा। साचे सन्तां देवे माण, चरन कँवल कँवल चरन ध्यान रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। सच संदेसा एकँकार, एका वार सुणाईआ। कलयुग अन्तिम आए अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। निहकलंका नर अवतार, नर नरायण वेस वटाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यार, पंज तत्त तत्त ना कोए रखाईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी बोल जैकार, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मांड करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त लए उभार,

६३५
१२

राती सुत्तयां दरस दिखाईआ। सुरती शब्द करे प्यार, शब्द सुरत सुरत शब्द एका रंग रंगाईआ। दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। अनहद नाद सच्ची धुन्कार, धुंन आत्मक राग सुणाईआ। साची सखीआं मंगलाचार, बह बह गीत गोबिन्द अल्हाईआ। अमृत आत्म झिरना झिरे ठंडा ठार, कँवल नाभ आप उलटाईआ। आवण जावण पतित पावण दुक्खड़ा दए निवार, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना करे शृंगार, चित्रगुप्त लेख ना कोए जणाईआ। जोग अभ्यास तों करे बाहर, हठ तप ना कोए समझाईआ। एका अक्खर वक्खर कर प्यार, त्रैभवन धनी त्रैगुण अतीता त्रै त्रै लेखा आप मुकाईआ। सोहँ शब्द जै जैकार, अवन गवण उनन्जा पवण आप समाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, चरन कँवल दे अधार, शाह पातशाह हरि निरँकार, सचखण्ड निवासी कर प्यार, पति पतिवन्ता पति आपणे हथ्थ रखाईआ।

✳ ६ अस्सू २०१८ बिक्रमी हरि दयाल सिँघ दे गृह जलन्धर ✳

सो पुरख निरँजण खेल महान, हरि ख़ालक आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण शाह सुल्तान, रहिमत रहिमान आप कमाइंदा। एकँकारा नौजवान, बेऐब वेस वटाइंदा। आदि निरँजण नूर नुरान, जोती जल्वा डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सच निशान, सच दुआरे आप उठाइंदा। श्री भगवान वड मेहरवान, मिहबान बीदो खेल कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधान, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। सचखण्ड निवासी नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह करे खेल महान, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। वसणहारा सच मकान, तख्त निवासी शाहो शाबासी भूपत भूप राजन राज नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी करनी आप कमाइंदा। साची करनी करनेहारा, करता पुरख वडी वड्याईआ। आदि जुगादी हो उज्यारा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। महल अटल उच्च मुनारा, हरि साचा इक्क सुहाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्म हाकम आप समझाईआ। दर दरवेश बण चोबदारा, अलख निरँजण अलख जगाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, आपणी कल आप धराईआ। ना कोई दूसर मीत मुरारा, सज्जण सैण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। गृह मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। आदि पुरख आदि बणाई बणत, मध भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। लेखा जाण नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। पूत सपूता नाम निधाना मणीआ

मंत, नाउँ निरँकारा एका एक प्रगटाइंदा। अगम्म अथाह बेपरवाह महिमा अगणत, लेखा लिख्त लेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा एका एक, एकँकार आप सुहाईआ। सो पुरख निरँजण देवे साची टेक, हरि पुरख निरँजण सीस झुकाईआ। एकँकारा रिहा वेख, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता खोल्हे भेत, श्री भगवान पर्दा दए उठाईआ। प्रभ करे हेत, नित नवित आपणा मेल मिलाईआ। सचखण्ड दवारे साची खेड, इक्क इकल्ला उच्च महल्ला आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचा इक्क सुहाईआ। घर साचा सच महल्ला, सचखण्ड दवारा आप सुहाइंदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, अकल कलधारी वेस वटाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण नूर आपे रल्ला, नूर नूर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे रख, सचखण्ड दवारे खेल कराईआ। निरगुण अंदर हो प्रतख, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण पत्त आपे लए रख, पत्त पतिवन्ता सच्चा माहीआ। सच दुआरे गाए जस, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। निरँकार निरँकार अन्तर एका वस, घर साचे वज्जे वधाईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। करे खेल पुरख समरथ,
६३७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा आपे लाह, सो पुरख निरँजण ६३७
वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। एकँकारा दए सलाह, साची सिख्या आप उपाइंदा।
१२ आदि निरँजण कर रुशना, नूर नुराना नूर वखाइंदा। श्री भगवान चढ़े चा, चाउ घनेरा इक्क वखाइंदा। श्री भगवान सच १२
निशान लए झुला, निशाना इक्को इक्क वड्याइंदा। पारब्रह्म दोए जोड़ पए सरना, सरनगति इक्क अख्वाइंदा। आपे खेल करे सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। सीस जगदीस ताज इक्क सज़ा, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण साचे तख्त डेरा लाइंदा। धुर फ़रमाणा आप अला, बोध अगाधा दए सुणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या आप प्रगटाइंदा। साची सिख्या एकँकार, अकल कल धारी आप प्रगटाईआ। थिर घर खोल्हे आप किवाड़, चरन कँवल कँवल चरन दए सरनाईआ। आदि आदि करे प्यार, मध आपणा भेव जणाईआ। सच फ़रमाना देवे देवणहार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। वस्त अमोलक भर भण्डार, नाम निधाना झोली पाईआ। किरपा कर एका वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा श्री भगवान, एका एक जणाइंदा। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, मेहर नज़र बेनज़ीर इक्क उठाइंदा। सुत दुलारे देवे

माण, शब्दी शब्द समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। करे खेल दो जहान, दोए दोए धार आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा अछल, अछेदा आप खुल्हाइंदा। साचा भेव हरि जू दस्स, सुत शब्द करे पढ़ाईआ। थिर घर दुआरे आपे वस, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी सच्चा माहीआ। एकँकार ओंकार निरँकार गाए जस, जस आपणा आप सुणाईआ। अन्तर अन्तर आपे वस, गृह गृह खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सुत दुलारा लए उठाईआ। सुत दुलारे उठ उठ जाग, हरि साचा सच जगाइंदा। थिर घर दुआरे लग्गा भाग, वडभागी आप लगाइंदा। बिन तेल बाती जगे चिराग़, आदि निरँजण नूर वखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा इक्को सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा। नूर इलाही पाकी पाक, जल्वा ज़हूर आप प्रगटाइंदा। तेरा खोल्हण आया ताक, पर्दा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि पुरख करे भविख्त वाक्, भेव अभेदा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा साचा गीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। आदि पुरख चलाए आपणी रीत, हरि पुरख निरँजण वेखे चाँईं चाँईंआ। एकँकारा खेल करे अणडीठ, आदि निरँजण संग रखाईआ। अबिनाशी करता साचा मीत, मित्र प्यारा सोभा पाईआ। श्री भगवान बैठा रहे अतीत, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। पारब्रह्म प्रभ जणाए साची रीत, रीतीवान इक्क हो आईआ। थिर घर दुआरा ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप जणाईआ। साचा लेखा हरि निरँकार, आदि आदि जणाइंदा। सुत दुलारे हो त्यार, पुरख अबिनाशी आप उठाइंदा। तेरा मेरा इक्क बिवहार, बिवहारी बिवहार आप कराइंदा। पिता पूत सोहे इक्क दुआर, दूजा कोए रहिण ना पाइंदा। एको वस्त अमोलक देवे थार, थिर दरबारी आप वरताइंदा। सति सतिवादी भरया सति भण्डार, अतोट अतुट जणाइंदा। आदि अन्त तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुण दुलारा, प्रभ चरनी सीस झुकाइंदा। हउँ सेवक याचक ख़ाकी ख़ाक भिखारा, दर तेरे अलख जगाइंदा। बाली बुध बाल अंञाणा, तेरा भेव कोए ना आइंदा। थिर घर वसां सच मकाना, सचखण्ड तेरे चरन ध्यान लगाइंदा। इक्को गावां तेरा गाणा, गा गा आपणा शुकर मनाइंदा। आदि जुगादि सद मन्ना तेरा भाणा, भाणा आपणे सीस टिकाइंदा। शाहो भूप भूपत वड राणा, शहिनशाह तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरन ध्यान लगाइंदा। चरन कँवल प्रभ तेरे आस, दूजी आस ना कोए रखाईआ। थिर घर तेरे मिलण दी रहे प्यास, तृष्ना मूल ना लागे राईआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर निरगुण निरगुण देणा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। सिफ्त सलाही गावां तेरी गाथ, बिन अक्खर ढोला गाईआ। एथे ओथे रहे याद, याददाशत भुल्ल ना जाईआ। साहिब सतिगुर सुणी फरयाद, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद चलां तुध रज़ाईआ। श्री भगवान शाह सुल्ताना, शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरवाना, मेहरवान वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण वखाए सच निशाना, सति निशाना आप उठाइंदा। आदि निरँजण दे परवाना, परम पुरख अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। अबिनाशी करता गुण निधाना, गुण आपणा आप जणाइंदा। श्री भगवान लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणी कल वरताइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखे मार ध्याना, बिन नेत्र लोचण नैण वेख वखाइंदा। शब्द सुत सुत कर परवाना, सच परवाना हथ्थ वखाइंदा। तेरा खेल खेल महाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक्क जणाइंदा। साची वस्त देवणहारा, एका रिहा वरताईआ। सुत शब्द तेरा भर भण्डारा, भरपूर रिहा जणाईआ। सोहँ रूप हो त्यारा, निरगुण निरगुण वंड वंडाईआ। अंस बंस तेरा परवारा, सहँस सहँसर खेल कराईआ। विष्नूं विश्व तेरी धारा, तेरा नूर नूर रुशनाईआ। तेरा अमृत जल ठंडा ठारा, नाभी कँवल कँवल भराईआ। पत्त डाली खिले गुलज़ारा, पंखड़ी आपणा रंग वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दे सहारा, हरि आपणा रंग रंगाईआ। ब्रह्म वेता वेता हो न्यारा, निरगुण हेता इक्क जणाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। तेरी वंड वंडे करतारा, वंडणहारा दिस ना आईआ। सुन्न अगम्मी धूआँधारा, सुन्न समाध समाईआ। शंकर कंकर इक्क अंग्यारा, तत्त तत्त वड्याईआ। देवणहार हरि भण्डारा, हरि जू लेखा रिहा जणाईआ। चरन कँवल कँवल चरन सहारा, दुरमति मैल दए गुआईआ। रजो तमो सतो अखाड़ा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। अप तेज वाए पृथमी अकाश खेल न्यारा, निराकारा आप वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाईआ। तेरा भरे सच भण्डारा, लख चुरासी घाड़त दए घड़ाईआ। घाड़त घड़े बण ठठयारा, सेवक आपणी सेव कमाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी पावे सारा, करे खेल बेपरवाहीआ। मन मति बुध दे अधारा, आत्म परमात्म पर्दा पाईआ। ईश जीव कर प्यारा, जगदीश खुशी मनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बोल जैकारा, गीत गोबिन्द अलाईआ। अनहद राग सच्ची धुन्कारा, शब्दी तेरा राग सुणाईआ। घर घर विच मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, गृह गृह आपणा भेव चुकाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोत

निरँजण करे रुशनाईआ। अमृत आत्म ठंडा ठारा, निझर झिरना दए जणाईआ। डूँघी कंदर धूआँधारा, अन्ध अन्धेरा दए वखाईआ। लेखा जाणे काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, आसा तिष्ना नाल मिलाईआ। हउमे हंगता गढ़ न्यारा, काया कंचन वेख वखाईआ। चारे बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दए सुणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे खेल वारो वारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। सच संदेसा देवे विच संसारा, धरनी धरत धवल माण रखाईआ। ज़िमीं असमाना जाणे धारा, मंडल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। भेव चुकाए रवि ससि सूरज चन्द सितारा, किरन किरन करे रुशनाईआ। सेवा लाए गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाईआ। कागद कलम लिख लिख लेखा दए लिखारा, कातब आपणा कलमा करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान दए सहारा, खाणी बाणी नाल मिलाईआ। अठसठ तीर्थ जगत वखाए किनारा, घाट आपणा आप छुहाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे वसे सब तों बाहरा, शब्दी तेरा रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी तेरा पसारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या एका वार पढ़ाईआ। साची सिख्या हरि हरि सज्जण, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। दो जहानां एका मजण, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर परदे कज्जण, समरथ पुरख नाम पर्दा हथ्थ फड़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त पंज तत्त काया भाण्डे सब दे भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर शब्द गुरदेव स्वामी, गुर मन्त्र गुर निहकामी, निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण अन्तरजामी, बोध अगाध अगम्मी बाणी, सिफ्त सलाही सिफ्त जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, शब्दी तेरा नाउँ वड्याइंदा। शब्द दुलारे उठ बल धार, हरि साचा सच जणाइंदा। दो जहानां खेल अपार, अपरम्पर आप वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेवा आप लगाइंदा। जुग जुग प्रगट कर गुर अवतार, तेरा नाउँ नाद वजाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची आसण लाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे आपणी वार, कोटन कोटि वेस वटाइंदा। कागद कलम करन पुकार, बनास्पत रो रो नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। समुंद सागर ना पाए सार, डूँघी कंदर भेव ना कोए जणाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ राह तक्कण तेरा परवरदिगार, मुकामे हक़ हक़ हक़ीक़त ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तेरा हुक्म दो जहान आप वरताइंदा। तेरा हुक्म श्री भगवान, आदि जुगादि वरताईआ। तेई अवतार दे दे दान, चौकड़ी बन्धन पाईआ। भगत अठारां कर ज्ञान, गोहझ गोहझ समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कलमा पढ़ कलाम,

ਕ

कायनात दए सुणाईआ। नानक गोबिन्द इक्क मकान, सचखण्ड प्रभ चरन मिले शरनाईआ। अन्तिम सारे मंगण दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, तेरा अन्त कहिण ना पाईआ। कर किरपा गुण निधान, गुण अवगुण दे समझाईआ। लिख लिख थक्के नाल ज़बान, ज़ेर ज़बर ना देवे कोए गवाहीआ। पैंती अक्खर लभ्भ ना सकी तेरा कोई निशान, अल्फ़ ये पन्ध रही मुकाईआ। साचा मन्दिर ना मिल्या कोए मकान, बेमुकाम नज़र कोए ना आईआ। तेरी सिफ्त करे अञ्जील कुराण, ईसा मूसा मुहम्मद ढोला रहे सुणाईआ। नानक निरगुण कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। सच संदेसा देवे आण, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त करे पढ़ाईआ। गोबिन्द मन्ने एका आण, पुरख अकाल ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, तेरा माण तेरी वड्याईआ। शब्द सुत तेरा बल, बलधारी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी अछल अछल, वल छल आपणा खेल वखाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण रल, गुर अवतार नाउँ प्रगटाइंदा। सति संदेसा साचा घल, खाणी बाणी लेख लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। शब्द सुत चढ़या चा, आदि आदि खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या मलाह, बेड़ा सदा चलाईआ। नाउँ निरँकारा देवे सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याईआ। करे खेल दो जहान, दोए दोए रूप वेख वखाईआ। सरगुण निरगुण पकड़े बांह, दीनन आपणी गोद बहाईआ। सति सतिवादी सति झुलाए निशां, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सिर रखे ठंडी छाँ, तत्ती वा ना लगे राईआ। हउँ मंगां चरन पनाह, सरन मिले सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला आपणा मेला लए मिलाईआ। पुरख अबिनाशी हो खुशहाल, ख़ालक आपणा भेव जणाइंदा। सुत दुलारे साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी बीते काल, काल महांकाल खेल कराइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर घल्ले नाल नाल, सदा सद संग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। सुत शब्द कर ध्यान, हरि सतिगुर सच जणाया। नव नौ चार खेल महान, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाया। मंडल रासी गोपी काहन, मुकंद मनोहर वेख वखाया। कलयुग अन्तिम प्रगट होए विच जहान, महांबली आपणा नाउँ धराया। वेद व्यासा लिख लिख गया ब्यान, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाया। ईसा मंगदा रिहा दान, ख़ाली झोली अग्गे डाहया। मुहमंद कहे मेरा अमाम, सिर अमामां सच्चा शहिनशाहया। नानक गोबिन्द दस्स के गया पहिचाण, सच संदेसा इक्क सुणाया। निहकलंका आए विच जहान, रूप रंग रेख ना कोए वखाया । नाम खण्डा तेज़ कृपान, ब्रह्मण्डां दए चमकाया। जुग चौकड़ी लेखा

मुकाए आण, बाकी कोए रहिण ना पाया। सृष्ट सबाई देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म लए मिलाया। राउ रंक राज राजान ऊँच नीच ढोला एका गाण, सो पुरख निरजंण आप सुणाया। हँ ब्रह्म मारे बाण, तीर अणयाला आप उठाया। सुत दुलारे तेरा विधान, लोकमात लए प्रगटाया। अन्तिम मेला मेले विच जहान, मिल मिल आपणी खुशी मनाया। सम्बल वसे सच मकान, चार दीवार छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। भगत भगवन्त वेखे आण, सन्त सज्जण नाल रलाया। गुरमुखां राग सुणाए एका कान, धुंन अनादी नाद अलाया। गुरसिख विछड़े मेले कर पहिचाण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाया। नेत्र लोचण नैण दर्शन देवे आण, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत अबिनाशी अचुत, कलयुग अन्त सुहाए तेरी रुत्त, जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, गुरमुख फुलवाड़ी पए फुट्ट, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन नाम बाग़ीचा इक्क लगाया।

✳ ६ अस्सू २०१६ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह जलन्धर छाउणी ✳

लख चुरासी उतरे पार, जून अजून ना कोए भुवाईआ। लख चुरासी नाता तुट्टे संसार, डूँघे सागर ना कोए रुढ़ाईआ। सतिगुर पूरा मिले एका वार, घर साचे लए मिलाईआ। जीव जंत तन काया दए आधार, काया गगरीआ लेखे लाईआ। मन नाचे ना दहि दिश धार, मति मतवाली ना दए दुहाईआ। बुध बिबेकी करे कर प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए समझाईआ। लख चुरासी तुट्टे नाता, अवण गवण पन्ध मुकाईआ। साहिब सतिगुर मिले दाता, दाता दानी दया कमाईआ। अन्ध अन्धेरी मिटे राता, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। बिन रसना जिह्वा सुणाए गाथा, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत आत्म प्याए बाटा, निझर झिरना आप झिराईआ। करे प्रकाश जोत ललाटा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। पूरब जन्म दा पूरा करे घाटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आवण जावण मुक्के वाटा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। एथे ओथे दो जहान निभाए साथा, अद्धविचकार छड्ड ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी लेखा दए चुकाईआ। लख चुरासी होए दूर, बन्दीखाना बन्द तुड़ाइंदा। सर्ब कला सतिगुर भरपूर, हरि भरपूरी वेख वखाइंदा। नज़री आए जो दिसे दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। ठाकर दयाल स्वामी कोट जन्म दे बख्शे आप कसूर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, लख चुरासी नाता आप तुड़ाइंदा। लख चुरासी नाता जाए तुट्ट, आवण जावण रहे ना राईआ। मिले मेल पुरख अबिनाशी अचुत्त, हरि परमेश्वर होए सहाईआ। गुरमुख आत्म मौले रुत्त, परमात्म वेखे चाँईं चाँईंआ। हरिजन उठाए साचे सुत, सतिगुर आपणी गोद बहाईआ। बिन हथ्थां बाहवां लए चुक्क, औंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। गुरसिख गुरमुख हरिभगत हरि सन्त राह विच ना जाए रुक, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाए आपणा घर, तिस लख चुरासी दए मुकाईआ। लख चुरासी तुट्टे गंढु, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। राए धर्म देवणहारा दंड, चित्रगुप्त पर्दा लाहइंदा। साहिब दयाल सदा बख़्शंद, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा भेव चुकाइंदा। गुरसिखां देवे आत्म अनन्द, निजानंद इक्क रखाइंदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। कलयुग अन्तिम सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाए छन्द, तिस जम नेड़ ना आइंदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाइंदा। जन्म जुग दी टुट्टी देवे गंढु, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी गेड़ आप मुकाइंदा। लख चुरासी चुक्के गेड़ा, अवन गवन ना कोए भुआईआ। करे कराए हक़ निबेड़ा, हक़ीक़त वेखे थाउँ थाईंआ। निज आत्म निज गृह निज मन्दिर पावे फेरा, घर घर विच लए मिलाईआ। नाता तुट्टे मेरा तेरा, तेरा मेरा एका रूप वखाईआ । जिस जन उपर सतिगुर पूरा करे मेहरा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। तिस जमदूत ना पाए घेरा, जम फास ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल निर्भय निरवैर आपणा नाउँ धराय इक्को सिँघ शेरा, शेर भबक इक्क लगाईआ। दो जहान गुरमुख तेरा वसदा रहे खेड़ा, इथे ओथे पुरख अबिनाशी वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जम का दंड रिहा मुकाईआ। जम का दंड ना कोए फास, फाँसी गल ना कोए लटकाइंदा। गुरसिख जन्म जन्म दी मिटे प्यास, जिस सतिगुर पूरा नज़री आइंदा। लहिणा देणा चुकाए पृथमी आकाश, गगन मंडल चरनां हेठ दबाइंदा। निर्मल नूर वखाए इक्क प्रकाश, जोती जोत डगमगाइंदा। गुरसिख गुर सतिगुर पूरा रखे चरनां पास, चरन कँवल कँवल चरन इक्को इक्क जणाइंदा। लख चुरासी होवे नास, फातया सब दा आप पढ़ाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा जन भगतां दास, दासी दास सेव कमाइंदा। किरपा करे सतिगुर ठाकर, ठोकर नाम लगाईआ। निर्मल कर्म कर्म उजागर, उजरत कोए ना मंगे सच्चा शहिनशाहीआ। एका नाम वणज सच सौदागर, चौदां लोक खाली झोली रहे वखाईआ। भाग लगाए काया गागर, निर्मल नीर इक्क वखाईआ। दर आयां घर देवे आदर, आदरश आपणा इक्क जणाईआ। आवण जावण लख चुरासी बेड़ा पार

कीता डूँग्घा सागर, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। शब्द दुशाला पाए चिट्टी चादर, चारे कन्नीआं आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा लेखा दए मुकाईआ। घर घर अंदर नाम भण्डार, लख चुरासी हरि टिकाइंदा। गुरमुख विरले कर प्यार, आपणी बूझ बुझाइंदा। राती सुत्तयां दए दीदार, आलस निंद्रा पर्दा लाहइंदा। बांहों पकड़ लए उठाल, उठ उठ आपणा हाल सुणाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह शाह पातशाह आपणा पर्दा लाहइंदा। जुग चौकड़ी बण दलाल, गुर सतिगुर नाउँ धराइंदा। निरगुण सरगुण पुच्छणहार मुरीदां हाल, मुरीद मुर्शद आपणे रंग रंगाइंदा। बिन हरि नामे सृष्ट सबाई होई बेहाल, हरि का नाम नज़र किसे ना आइंदा। कर किरपा जिस सतिगुर पूरा दए वखाल, घर घर विच राग अलाइंदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले कोई ना करे भाल, भाल्यां हथ्थ किसे ना आइंदा। गुरमुख काया मन्दिर अंदर अणमुलड़ा लाल, गुर सतिगुर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आया सब दा लेखा लेखे पाइंदा। साइंस जुग रहे जुग चार, जुगती हरि जू आप बणाईआ। अथरवण लेखा लिख अगम्म अपार, ऐड़ा अक्ख अक्ख खुल्लाईआ। जगत बुद्धी दे अधार, आत्म सुधी सुध गुआईआ। ब्रह्म रुची गए हार, सुची वासना ना कोए वड्याईआ। चहुं गुठी हाहाकार, माण मोह हँकार करे लड़ाईआ। दहि दिशा होए खुआर, वेला अन्तिम नेड़े आईआ। ज़िमीं आसमानां जो चक्कर रहे मार, चक्कर सुदर्शन सब दा लेखा दए मुकाईआ। कोटन कोटि बीते काल, महांकाल सब दा लेखा रिहा मिटाईआ। जगत विद्या जगत साइंस किसे ना निभी नाल, स्यासत वरास्त ना कोए वखाईआ। बिन हरि नामे कोई ना मिल्या दलाल, एथे ओथे लए छुडाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी लख चुरासी पावणहारा जाल, डोरी डोर नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साइंस जुग जुग नाल टकराईआ।

✳ ६ अस्सू २०१६ सरदूल सिंघ दे गृह जलन्धर छाउणी ✳

शब्द सुत दर मंगे मंग, थिर घर आपणा सीस झुकाईआ। सचखण्ड निवासी सूरा सरबंग, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि देणा इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच प्रगटाईआ। साचा सोहला गावां छन्द, गीत गोबिन्द अलाईआ। बिन सूरज चन्द ना चढ़े चन्द, प्रकाश प्रकाश तेरी वड्याईआ। वस्त अमोलक एका वंड, खाली झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे दया कमाईआ। शब्द सुत करे पुकार, उच्ची कूक

कूक सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण तेरा ठांडा दरबार, आदि जुगादी एका नज़री आइंदा। हरि पुरख निरँजण तेरा सति प्यार, सति सतिवादी भुल्ल कदे ना जाइंदा। एकँकारा खोल्ह् किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। आदि निरँजण कर उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता दे अधार, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। श्री भगवान वेख विचार, नेत्र नैण ना कोए खुल्ह्आइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर वीचार, वीचार वीचार ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। तेरे दर अलख अलख निरँजण, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। दर दुआर आया मंगण, बण दरवेश फेरा पाईआ। दयावान दया कर ठाकर स्वामी सूरे सरबंगण, भूपत भूप तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नाम निधाना झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी दयानिध, दीनन आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी कारज करे सिद्ध, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। आदि जुगादि आपे जाणे आपणी बिध, बिध नाता आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकार इक्क सुणाइंदा। सुण संदेसा श्री भगवान, शब्दी सुत खुशी मनाईआ। तेरी महिमा दो जहान, कथनी कथ ना सके राईआ। तेरा हुक्म धुर फ़रमाण, धुर दरबारी तेरा भेव खुल्ह्आईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, सुत दुलारा निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। गृह मन्दिर तेरा रंग, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। थिर घर वज्जे मृदंग, मर्द मर्दान तेरी शहिनशाहीआ। निरगुण निराकार सदा वसणा संग, अजूनी रहित विछड़ ना जाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणा मुकाउणा आप पन्ध, पाँधी होर ना कोए बणाईआ। सुत दुलारे सुणाउणा एका छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दान, दाता दानी खेल वखाइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। आदि निरँजण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। अबिनाशी करता रखे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। श्री भगवान झुलाए निशान, सच निशाना आप वखाइंदा। पारब्रह्म लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए धारा आप बणाइंदा। करे खेल सचखण्ड सच्चे मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। शाहो भूप बण सुल्तान, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। आदि जुगादी सच संदेसा देवणहारा धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। शब्द सुत कर ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। सुणाए राग बिन कान, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर दरबारे आपणा हुक्म वरताइंदा। थिर दरबार सच संदेसा, नर निरँकारा आप जणाईआ। सुत दुलारे तेरा वेसा, वेस अनेक रूप वटाईआ। तेरी चरन कँवल सरन विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेशा, दर दरवेश देवे अलख जगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश, पाताल गगन मंडल तेरा लेखा, ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड तेरा रचन रचाईआ। रवि ससि सूरज चन्द कर प्रकाश, किरन किरन किरन तेरा नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या देवे ज्ञान, हरि अन्तर आप बुझाइंदा। वसे थिर घर तेरा मकान, बेमुकाम वेख वखाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन सच निशान, दो जहानां आप वखाइंदा। आदि अन्त मध मन्नणी पए आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। शब्द सुत बाल अञ्याणा, बाली बुध दए दुहाईआ। समरथ पुरख तूं साहिब सुल्ताना, बेअन्त तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण निराकार हो प्रधाना, सच प्रधानगी इक्क कमाईआ। निरवैर पुरख झुलाए सच निशाना, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। मेहरवान मेहरवान होए मेहरवाना, मोहे आपणा भेव खुल्हाईआ। हउँ सेवक बालक दर दरवेश दरबाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त श्री भगवान, एका मंग मंगाईआ। आदि जुगादी देणा दान, जुग जुग सेव कमाईआ। चरन कँवल कँवल चरन मिले माण, अभिमाण रूप ना कोए वखाईआ। वज्जदा रहे नाद धुन्कान, रागी राग ना कोए सुणाईआ। छप्पर छन्न ना कोए मकान, चार दीवार ना कोए वड्याईआ। थिर घर मेला बेपहचान, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। दूसर अवर ना कोए निशान, निशाना अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। इक्को ओट रखी आस, निर्धन तेरा ध्यान लगाईआ। निर्मल जोत नूर प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। शहिनशाह मेला शाहो शाबाश, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खेल तमाश, रव सस नाच नचाईआ। सदा सुहेला वसे पास, इक्क इकेला फेरा पाईआ। थिर घर दुआरे तेरा दास, दासी दास रूप वटाईआ। चरन सरोवर दे बुझाणी प्यास, तृष्ना मूल ना लागे राईआ। जुगा जुगन्तर देणा साथ, सगला संग निभाईआ। नाउँ निरँकार पढ़ाउणी गाथ, निष्अक्खर रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। आसा मन्नसा हरि जू पूर, आदि पुरख दया कमाइंदा। सुत दुलारे साचा नूर, पूत सपूता गोद बहाइंदा। जनणी जण बणे सर्ब कला भरपूर, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। प्रगट हो हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा वेस वटाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। साचा लेखा बिन कलम दवात, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। सुत दुलारे मार झात, सचखण्ड दवार वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी बैठा इक्क इकांत, इक्क इकल्ला सोभा पाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, जननी जण ना कोए बणाईआ। पुत्तर धी ना सज्जण साक, बंधप कोए नज़र ना आईआ। निरगुण निरवैर पाकी पाक, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। सच सिँघासण सुत्ता आपणे खाट, पावा चूल ना कोए बणाईआ। निर्मल जोत जोत प्रकाश, अनुभव आपणा खेल वखाईआ। बिन गोपी काहन पाए रास, बिन सख़ीआं खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे भेव खुल्हाईआ। सुत दुलारे खोल्ह अक्ख, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी हो प्रतख, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, साचे धन्दे आपे लाइंदा। पन्ध मुकावे नस्स नस्स, बण पाँधी फेरा पाइंदा। तीर निराला मारे कस, अणयाला नाम चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। साची सिख्या छोटे बाल, जन जननी रूप वटाइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए धार आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, साची सेवा सेवक लाइंदा। त्रैगुण माया देवे दान, पंज तत्त साचा जोड़ जुड़ाइंदा।
६४७ अप तेज़ वाए पृथमी आकाश खेल महान, हरि ख़ालक वेख वखाइंदा। मिहबान बीदो नौजवान, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। ६४७
१२ लाशरीक हो मेहरवान, बेऐब ख़ुदाई रूप अनूप आप धराइंदा। सच तौफ़ीक बेमकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १२
किरपा कर, सुत दुलारे आप वड्याइंदा। सुत दुलारे उठ उठ जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। सचखण्ड निवासी थिर घर दुआरे लाए भाग, भाग आपणा दए वंडाईआ। बिन तेल बाती दए चिराग़, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। बिन नारी कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द मारे आवाज़, बिन कन्नां रिहा सुणाईआ। सरन सरनाई जाणा लाग, चरन कँवल मिले वड्याईआ। निरगुण निरगुण चलाए जहाज़, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। आदि जुगादि रखे लाज, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। पंज त्रै रचया काज, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। लख चुरासी देवे दात, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। खेलणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। घट घट अंदर कर प्रकाश, नूर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, तेरा मन्दिर दए सुहाईआ। सुत दुलारे तेरा मन्दिर, लख चुरासी आप बणाइंदा। पुरख अबिनाशी वसणहारा डूँघी कंदर, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। तेरा नाउँ रखे बजर कपाटी अंदर जंदर, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। साची सिख्या देवे गोपाल, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर तेरी धर्मसाल, धर्म दुआरा दए वखाईआ। निरगुण निरगुण करे प्रितपाल, सरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। करे खेल हरि कमाल, नेत्र लोचण नैण नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर शब्द शब्द गुर बणे दलाल, पंज तत्त काया चोला मात हंढाईआ। साची सिख्या दए सिखाल, साख्यात करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द सुत तेरा रंग, हरि सतिगुर आप रंगाइंदा। घर घर सेजा सच पलँग, पुरख अबिनाशी आप सुहाइंदा। गृह गृह वज्जे तेरा मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। डूँघी भँवरी काया कवरी आपे लँघ, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। गीत सुहागी साचा छन्द, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। निज आत्म देवे निजानंद, निज मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा लेखा लेख समझाइंदा। शब्द सुत तेरी साची धार, घर घर आप जणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वेखे वेखणहार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर नाउँ धराईआ। बोध अगाधा बोल जैकार, जै जैकारा करे पढ़ाईआ। त्रै त्रै मेला विच संसार, पंचम पंच करे कुड़माईआ । चार चार दए आधार, चार चार वेखे थाउँ थाईंआ। नव नौ चार खोल्ह् दुआर, दर दुआरे फेरा पाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर रंग वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी तेरे हथ्थ रखे वड्याईआ। शब्द सुत चाउ घनेरा, घर साचे खुशी मनाइंदा। आदि पुरख प्रभ हेता मेरा, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। आवण जावण लख चुरासी बणाया गेड़ा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। नित नवित भरम भउ ढाहे ढेरा, भाण्डा भरम आप भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। साची वस्त नाम दात, नर निरँकारा झोली पाईआ। जुग जुग मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। गुर अवतार सुणाए गाथ, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर दए निजात, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेखणहारा डूँघा खात, समुंद सागर फोल फोलाईआ। लेखा जाणे डाल्ही पात, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। लख चुरासी करनहारा घात, नाम खण्डा रिहा चमकाईआ। काल महांकाल वेखे मार झात, त्रैभवण धनी वडी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। साचा हुक्म आदि अन्त, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। शब्द सुत हरि साचा कन्त, मन्त्र नाम नाम पढ़ाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी नार कन्त, आत्म

परमात्म सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर बणाए बणत, निरगुण सरगुण घड़ घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। सुत शब्द तेरा खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण फड़ाए पल्ला, पल्लू एका गंढु पुवाईआ। एकँकारा पावे सारा जलां थलां, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फोल फोलाईआ। आदि निरँजण आत्म परमात्म अन्तर रल्ला, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता सच संदेसा एका घल्ला, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। श्री भगवान वेखणहारा डूँघी डल्ला, काया मन्दिर अंदर खोज खोजाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ब्रह्म पारब्रह्म आपे रल्ला, दूई द्वैती पर्दा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा लेखा आप दृढ़ाईआ। साचा लेखा पुरख समरथ, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए रथ, वेस अनेक रूप वटाइंदा। गुर अवतारां मार्ग दस्स, ज्ञान ध्यान इक्क समझाइंदा। पीर पैग़म्बरां देवे रस, आबे हयात जाम प्याइंदा। भगत भगवान होए वस, नाम डोरी बन्धन पाइंदा। सन्त साजण मेल मिलाए हस्स हस्स, सोहँ हँसा जाप जपाइंदा। गुरमुखां तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। गुरसिखां कटे जम का फास, लख चुरासी फंद कटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे खेल तमाश, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतार कर कर दास, पीर पैग़म्बर सेवा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा बल वड्याइंदा। शब्द सुत तेरा बल बलवान, बलधारी आप जणाईआ। आदि जुगादि झुल्ले तेरा निशान, दो जहान वज्जे वधाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड मन्नण आण, पुरी लोअ सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण दान, करोड़ तेतीसा झोली डाहीआ। गुर अवतार तेरा निशान, पंज तत्त चोली काया हंढाईआ। तेरा नाउँ नाम निधान, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर देण ब्यान, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त खेल महान, सिफ्त विच कदे ना आईआ। चार वेद गायण तेरा गान, शास्त्र सिमरत पुराण अठारां ढोला अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा लेखा दए वखाईआ। तेरा लेखा गीता ज्ञान, दस अठ जोड़ जुड़ाइंदा। तेरा लेखा अञ्जील कुरान, तीस बतीसा सोभा पाइंदा। तेरा लेखा बेपहचान, खाणी बाणी भेव ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त होण हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा बल आपणे हथ्थ रखाइंदा। शब्द सुत तेरा वड्डा बल, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। आदि जुगादि अछल अछल, वल छल तेरी खेल रचाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर घल्ल, अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, उच्च महल्ल बैठा वेख वखाईआ। लेखा जाणे घड़ी घड़ी

पल पल, वार थित वंड ना कोए वंडाईआ। जोती शब्दी निरगुण धार निरगुण रिहा रल, एका नूर नूर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा साचा पन्ध, सतिगुर सच्चा आप मुकाईआ। कवण वेला मेरा मुक्के पन्ध, शब्दी सुत सीस झुकाया। कवण वेला मिले सूरा सरबंग, हरि सतिगुर दरस दिखाया। कवण वेला मेरी तुट्टी लए गंढु, आप आपणा बन्धन पाया। कवण वेला देवें इक्क अनन्द, लख चुरासी नाता तोड़ तोड़ाया। कवण वेला गाएं सुहागी छन्द, आदि पुरख आपणा ढोला अलाया। कवण वेला मेरा खुशी होए बन्द बन्द, बन्दीखाना कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण दुआरे लएं मिलाया। कवण वेला रखां आस, आस इक्को इक्क तकाईआ। कवण वेला बुझाए प्यास, तृष्ना मूल ना लागे राईआ। कवण वेला लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन मंडल ना कोए वड्याईआ। कवण वेला सेवा करां बण बण दासी दास, चरन कँवल मिले शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दर तेरे सीस गया झुक, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहया। कवण वेला पैंडा जाए मुक्क, मेटणहार बेपरवाहया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वेखां लुक लुक, गुर अवतार वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा पर्दा दएं चुकाया। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, घर साचे खुशी मनाईआ। सुत दुलारे मार्ग दस्स, भेव अभेद खुलाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा नस्स नस्स, दो जहानां फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर प्रकाश, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। बोध अगाधा शब्द ज्ञाना खोल अभ्यास, खाणी बाणी मूल रखाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कर सारे कराउण बन्द खुलास, अन्त कोए कहिण ना पाईआ। तेई अवतार होण निरास, भगत अठारां नैण शरमाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद मुख विच लैण घास, तोबा तोबा देण दुहाईआ। परवरदिगार तेरी कोई ना करे शनाख, शनाखत विच कदे ना आईआ। चोदां तबक बन्द खुलास, खुलासा आपणा ना किसे समझाईआ। मुकामे हक़ खेल तमाश, महबूब सच्चा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत साचा कलमा कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। साचा कलमा इलाही कलाम, कायनात जणाइंदा। आदि जुगादी धुर पैग़ाम, धुर दरगाही आप सुणाइंदा। गुर अवतार करन सलाम, अलैकम आपणा रंग रंगाइंदा। शाह पातशाह वड अमाम, सीस जगदीस ताज टिकाइंदा। पीर पैग़म्बर करे ग़ुलाम, मुल्ला शेख़ मुसायक कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा अन्तर धार, हरि साचा आप जणाईआ। जुग चौकड़ी उतरे पार, थिर कोए नज़र ना आईआ।

९५१ १२

कलयुग अन्तिम लेखा जाणे आप करतार, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। नानक गोबिन्द दे आधार, एका जोती नूर रुशनाईआ। भेव अभेदा खोल्ह किवाड़, साचा लेखा लेख सुणाईआ। महांबली उतरे अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। डंका वज्जे अगम्म अपार, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान दए सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलार, लोआं पुरीआं पर्दा दए उठाईआ। दो जहानां करे ख़बरदार, बेख़बर आपणी ख़बर आप सुणाईआ। ज़ेर ज़बर ना कोए प्यार, अल्फ़ ये पन्ध मुकाईआ। चौदां विद्या करे ख़ुआर, चौदां लोक देण दुहाईआ। चौदां तबक हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे जाण हार, कलयुग आपणा बल वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा धूआँधार, जगत अन्धेरा छाईआ। गुर का शब्द ना सके कोए विचार, शब्द गुर ना कोए कुड़माईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। धीआं भैणां करन वपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत रिहा समझाईआ। शब्द सुत वेला अन्तिम आउणा, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। शब्द विचोला इक्क बणाउणा, दो जहानां वेख वखाइंदा। नाम तोला लोकमात रखाउणा, लख चुरासी एका कंडे पाइंदा। बरन अठारां मेट मिटाउणा, चार वरन पन्ध मुकाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश कोई नज़र ना आउणा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। पंज तत्त काया चोला सर्ब हंढाउणा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। सति सरूपी शाहो भूपी स्वच्छ सरूपी रूप धराउणा, नूर नूर नूर प्रगटाइंदा। जुग चौकड़ी लेखा लहिणा झोली पाउणा, पूरब लेखा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत आप वड्याइंदा। शब्द सुत सुत वड्डा वड, वड तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोटन कोटि गए लद, तेरी सार किसे ना पाईआ। आपणी आपणी वंड के गए हद्द, पार हद्द ना कोए कराईआ। काया मन्दिर अंदर वजाउँदे गए नद्द, दो जहान राग ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल ढोला गाउँदे गए छन्द, आपणा नाम ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्तिम सारे गए फस, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। करे खेल पुरख समरथ, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सच दरबारे बैठा सज, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाईआ। पीर पैग़म्बर सारे लए सद, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्तिम पार करनी हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां झगड़ा देणा छड्ड, पुरख अबिनाशी रिहा समझाईआ। आत्म परमात्म विश्व यद्द, एका नूर ज़हूर दरसाईआ। कूड़ी क्रिया मिटया पन्ध, लोकमात रहिण ना पाईआ। अन्तिम सब दी नंगी होई कंड, पल्लू कोए ना उपर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरे नाउँ दए वड्याईआ। शब्द सुत तेरा नाउँ निरँकारा, एका एक

जणाइंदा। जिस दा गुर अवतार पीर पैग़म्बर लैंदे रहे सहारा, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। जिस दा रसना जिह्वा बोलदे रहे जैकारा, सो जै जैकार आप अलाइंदा। जिस दे दर दरवेश बण बण करदे रहे निमस्कारा, सो नमो नमो सीस झुकाइंदा। जिस नूं मन्नदे रहे परवरदिगारा, बेऐब खेल कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे मुकामे हक़ वसे सांझा यारा, सच तौफीक इक्क रखाइंदा। जिस नूं नानक निरगुण करे प्यारा, गोबिन्द पुरख अकाल सुणाइंदा। सो साहिब सुल्तान वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड आपणा रंग रंगाइंदा। सुत शब्द देवे इक्क हुलारा, थिर घर पर्दा आप उठाइंदा। कलयुग अन्तिम कराए सच वणज वणजारा, दो जहानां हट्ट चलाइंदा। लख चुरासी करे प्यारा, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म लेखा लिखणहारा, लिख लिख लेखा आप समझाइंदा। ईश जीव जगदीस दए सहारा, सीस आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग आया अन्त किनारा, हरि सतिगुर वेख वखाइंदा। सतिजुग बन्न्हे साची धारा, धरनी धरत धवल वड्याइंदा। जीव जंत इक्क जैकारा, साध सन्त आप पढ़ाइंदा। सोहँ शब्द कर प्यारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त शब्दी गुर तेरी खेल वखाइंदा। सो पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, हँ ब्रह्म दए वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, आत्म परमात्म पर्दा लाहीआ। एकँकारा देवे दान, ब्रह्म पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। आदि निरँजण खोल्ह दुकान, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता मार ध्यान, ईश जीव करे कुड़माईआ। श्री भगवान वखाए निशान, धर्म दुआरे इक्क झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, आत्म सेजा इक्क हंढाईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवान, रूप अनूप आप दरसाईआ। गुरमुख मेला विच जहान, गुर चेला नाउँ वड्याईआ। सुरत शब्द करे परवान, नाम परवाना इक्क फड़ाईआ। कागद कलम होए हैरान, हरि का अन्त कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क जणाईआ। सति संदेसा सति पुरख निरजंण, सति सतिवादी आप जणाइंदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण नेत्र नाम पाए अञ्जण, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजण, अठसठ मुख शरमाइंदा। अनाद अनादी ताल वज्जण, छत्ती राग सिफ्त सलाहइंदा। आत्म परमात्म आया परदे कज्जण, गुरमुख गुर गुर गोद बहाइंदा। साहिब सतिगुर सच्चा सज्जण, सगला संग रखाइंदा। लख चुरासी भाण्डे भज्जण, घड़न भन्नणहार नज़र किसे ना आइंदा। काल नगारे सिर ते वज्जण, चारों कुण्ट कलयुग डौरू वाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जन भगतां आया आपे सद्दण, सद्दा आपणा नाम रखाइंदा। पार किनारा करन हद्दण, हद्द हदूद ना कोए वंडाइंदा। लख चुरासी विच्चों आया कढ्ढण, फड़ बांहों गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क समझाइंदा। शब्द गुर गुरू गुरदेव, देव आत्मा आप जणाईआ। सतिजुग साची करनी सेव, सेवक सेवा इक्क रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले अलख अभेव, दूजी सरन ना कोए तकाईआ। नाता तुट्टा रसना जिहव, अजपा जाप दए दृढ़ाईआ। वसणहारा निहचल धाम सदा निहकेव, अटल्ल महल्ल करे रुशनाईआ। दाता दानी सूरबीर वड देवी देव, देवत सुर सरनी रिहा लगाईआ। जन भगतां देवे आत्म परमात्म साचा मेव, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो हं लेखा दए समझाईआ। सोहँ रूप आप प्रभ, आत्म परमात्म खेल कराइंदा। नानक निरगुण ल्या लभ्भ, सरगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। अमृत झिरना झिरया कँवल नभ्भ, निझर रस इक्क वखाइंदा। थिर घर दुआर पार हद्द, सचखण्ड दवार चरनी सीस झुकाइंदा। कृपानिध ठाकर स्वामी आपणे दर आपे सद, आपणा नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ सच सच वखाइंदा। नानक मिल्या सोहँ धार, मैं तूं रही ना राईआ। तेरा मेरा इक्क प्यार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। तेरा मेरा इक्क दुआर, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। तेरा मेरा इक्क शृंगार, बस्त्र भूषण ना कोए छुहाईआ। तेरा मेरा इक्क जैकार, नाम सति सति पढ़ाईआ। तेरा मेरा इक्क अखाड़, साची मंडल रास रचाईआ। तेरा मेरा इक्क अधार, उदर अदर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा दर, निरगुण निरगुण दए वखाईआ। नानक निरगुण तक्कया हरि, सरगुण नानक कम्म किसे ना आया। सच महल्ले एका चढ़, तख्त निवासी दर्शन पाया। सोहँ अक्खर निष्अक्खर पढ़, बिन अक्खर राग अलाया। ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन मरन जन्म विच ना आया। साची सिख्या धरनी धरत धवल धर, सच संदेसा गया सुणाया। कलयुग अन्तिम निहकलंक आवे नरायण नर, निरगुण आपणा रूप वटाया। भगत भगवन्त लए फड़, गुरमुख गुर गुर आप उठाया। सति सतिवादी अक्खर पढ़, सो पुरख निरँजण दए सुणाया। हँ ब्रह्म लगाए लड़, नार कन्त रूप वटाया। चार वरन खुलाए एका दर, बरन अठारां मार्ग पाया। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सरनी जाइन पढ़, सीस जगदीस इक्क झुकाया। शब्द सुत तेरा पूरा करे वर, वर दाता फेरा पाया। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप रहे ना राया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी कारज कर, करता पुरख खेल कराया। गुरू ग्रन्थ गुर प्रकाश, हरि सतिगुर शब्द जणाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुर वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुरमुख रास, गुर गुर हट्ट चलाइंदा। गुरू ग्रन्थ कलयुग जीवां जगत बणाया खेल तमाश, गुर कीमत कोए ना पाइंदा। गुर मन्दिर बह बह करन भोग बिलास, धीआं भैणां नैण तकाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुर सच्चा दाद बैठा करे बन्द खुलास, जो जन आत्म अन्तर ध्यान लगाइंदा। गुरमुख हिरदे गुर का

९५३ १२

नूर सदा प्रकाश, अठ्ठे पहर बन्द ना कोए कराइंदा। दिवस रैण शब्द गुर गुर देवे धरवास, अनहद रागी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ गुर अक्खर अक्खर मेल मिलाइंदा। गुरू ग्रन्थ पैंतीस अक्खर, तिन्न पंज करे कुड़माईआ। कलयुग जीव होए पत्थर, बजर कपाटी ना कोए तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया पाया सत्थर, सत्थर यार ना कोए हंढाईआ। जिस गुरसिख सतिगुर मिलण दा फिकर, सो रसना जिह्वा फिकरा पढ़न ना जाईआ। निरगुण सच महल्ले चढ़ के बैठा सिखर, बिन निज नेत्र नज़र किसे ना आईआ। छत्ती राग इकवन्जा बवन्जा पारब्रह्म दा करदे रहे ज़िकर, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए साचा घर, तिस गुरू ग्रन्थ काया अंदर दए प्रगटाईआ। काया अंदर गुरू ग्रन्थ, नानक अंगद अमरदास प्रगटाइंदा। राम दास वजाया संख, धुंन अनादी नाद सुणाइंदा। गुर अर्जन बणाया पन्थ, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। इकट्ठे कीते भगत भगवन्त, सन्त गुरसिख गुर गुर मेल मिलाइंदा। नानक निरगुण सच संदेसा दे के गया अन्त, गोबिन्द वेला वक्त समझाइंदा। प्रगट होए श्री भगवन्त, चार जुग दा लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए साचा कन्त, जोग अभ्यास पूजा पाठ ना कोए कराइंदा। काया चोली रंगे रंग बसन्त, रंग मजीठी इक्क रंगाइंदा। गुर का प्यार गुर इष्ट देव सच्चा गुरू ग्रन्थ,
९५४ गुर गुर आपणा रूप वखाइंदा। जिस नूं पढ़ पढ़ भुल्ला पन्थ, सो सतिगुर मनमुखां कोलों मुख छुपाइंदा। जोती जोत सरूप ९५४
हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त गुरू ग्रन्थ गुरदेव सदा सद सच प्रकाश रखाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुर
१२ आत्म रस, रसना रस ना कोए वखाईआ। हरिगोबिन्द हरि होया वस, हरिराय मिली वड्याईआ। हरिकिशन हरि जू मार्ग १२
दस्स, तेग बहादर करी रुशनाईआ। गुर गोबिन्द पुरख अकाल गाया जस, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। सत्थर विछाया यारड़ा सथ्थ, सूलां सेज आप हंढाईआ। बण पाँधी पन्ध मुकाया नस्स, नीहां हेठां बाले दिते दबाईआ। तेरा खेल अबिनाशी अचुत्त, चेतन तेरी धार वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मौले रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सुत दुलारे उत्ते होया खुश, आपणी खुशी इक्क समझाईआ। गुरसिखां कोलों जा के पुच्छ, पूरब लहिणा दे मुकाईआ। जिन्हां कोलों नदेड़ आयों लुक, आप आपणा मुख छुपाईआ। शब्द रूप हो के उठ, बल आपणा आप वखाईआ। ग़रीब निमाणयां उपर तुट्ठ, जो सरसे गिआं रुढ़ाईआ। आपणे कोल ना रख्या कुछ, गुरमुखां झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुरू ग्रन्थ गुर गुर रूप वखाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर साचा बोध, सतिगुर अंदरे नज़री आइंदा। बाहर करना पए ना कोए जोध, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। आत्म परमात्म माणे मौज, गुर चेला रंग वखाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ गुर घर ही नज़री आइंदा। गुरू ग्रन्थ एका रंग, रंग रंगीला इक्क जणाईआ । अठ्ठे पहर वज्जे मृदंग, नाम निधाना ढोला गाईआ। प्रगट होवे जो सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट लए बदलाईआ। जिस नूं लभ्भदे फिरदे कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, नेत्र नैण नैण उठाईआ। सो सतिगुर मुका के आया आपणा पन्ध, बण पाँधी फेरा पाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर सच सुणाया छन्द, बिन सतिगुर पार ना कोए लँघाईआ। जन्म जुग दी टुट्टी ना देवे कोई गंढ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर इक्को इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी इक्को गुर, हरि सतिगुर आप अख्वाइंदा। राग ताल ना कोए सुर, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाइंदा। निरगुण सरगुण जाए बौहड़, बौहड़ आपणा हाल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दर, घर साचा इक्क सुहाइंदा। सतिगुर पूरा सांतक सति, सति सति विच समाइंदा। अर्जन गुर बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए वखाइंदा। सृष्ट ज्ञान दे के गया मत्त, मूर्ख मुग्ध सर्ब समझाइंदा। निवण सु अक्खर मार्ग गया दस्स, रीती नीती जगत बणाइंदा। पुरख अकाल भाणा सहिणा हस्स हस्स, आपणा बल ना कोए धराइंदा। जगत प्यार ना गया फस, झूठी मुहब्बत ना कोए वधाइंदा। जन भगतां करदा गया जस, गुरू ग्रन्थ गुर आप सलाहइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू गुरदेव वखाए इक्क घर, जिस घर गुस्सा गिला हरख़ सोग नज़र ना आइंदा।

९५५ १२

✳ ७ अस्सू २०१६ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह ढड्डे कलां ✳

शब्द गुर सदा मेहरवान, आदि जुगादि दया कमाइंदा। आत्म परमात्म देवे ज्ञान, भेव अभेदा भेव खुलाइंदा। एका नाद सुणाए साचे कान, अनहद रागी राग अलाइंदा। अमृत आत्म देवे पीण खाण, निझर रस मुख चुआइंदा। निर्मल दीआ जोती जोत जगे महान, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। सच सुहाए मन्दिर मकान, साढे तिन्न हथ्थ बंक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दया कमाइंदा। शब्द गुर गहर गम्भीर, भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि चोटी चढ़ रहे अख़ीर, आखर आपणा रंग वखाइंदा। अणयाला मारे इक्को तीर, मुखी तिक्खी धार प्रगटाइंदा। बजर कपाटी देवे चीर, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा । अमृत देवे सच्चा सीर, रस रसीआ इक्क वखाइंदा। बदलणहारा तकदीर, तदबीर आपणी आप जणाइंदा। तोड़नहारा शरअ ज़ंजीर, शरीअत लेखा आप चुकाइंदा। लेखा जाण शाह फकीर, हकीर आपणे रंग रंगाइंदा। करे खेल बेनज़ीर, नेत्र नैण दिस किसे ना आइंदा। दाता जोधा

सूरबीर, बल आपणा आप जणाइंदा। लेखा जाणे पैग़म्बर पीर, मुरीद मुर्शद आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। शब्द गुरू वड मेहरवानी, दयावान दया कमाइंदा। आदि जुगादि गुर अवतार पीर पैग़म्बर सुणाए बाणी, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादि दरगाह साची सचखण्ड सच वखाए इक्क निशानी, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। एका देवे पद निरबानी, निरबान पद आपणा आप समझाइंदा। महिमा अकथ अकथ कहाणी, रसना जिह्वा भेव कोए ना आइंदा। शाह पातशाह शहिनशाह सुल्तानी, दो जहानां हुक्म वरताइंदा। घट घट अन्तर होए जाण जाणी, लख चुरासी अंदर डेरा लाइंदा। लेखा जाणे अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चार खाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी अक्खर वक्खर बाणी आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर गुरदेव स्वामी, निहचल आपणा महल्ल सुहाइंदा। शब्द गुर गुरू बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। आदि जुगादी ठांडा सीता मेहरवान, मेहर नैण इक्क उठाईआ। कागद कलम शाही ना सके पछाण, अल्फ़ ये कर कर थक्की पढ़ाईआ। पैंती अक्खर होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पीर पैग़म्बर सर्ब शरमाण, नेत्र नैण सके ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान खाणी बाणी दे दे सर्ब ब्यान, जगत सिख्या कर कर गए पढ़ाईआ। आदि अन्त कोए ना जाणे श्री भगवान, बेअन्त कह कह पल्लू रहे छुडाईआ। शब्द सतिगुर सद वसे सच मकान, उच्च महल अटल मुकामे हक़ डेरा लाईआ। दीवा बाती कमलापाती ना कोए रखे निशान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दीनन दीन, दयावान दया कमाईआ। दीनन दीन दयानिध ठाकर, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। भगत भगवन्त लख चुरासी पार कराए डूँघा सागर, सच किनारा इक्क वखाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत अन्ध अन्धेरा मेटे काया गागर, स्वच्छ सरूप शाहो भूप नूर नुराना आप वखाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सति सरूप, सति सति सति सिख्या इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुर गुर शब्द एका घर बहाइंदा। शब्द गुर गुर सच अपारा, अपरम्पर आपणा खेल कराईआ। आदि जुगादी लै अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वारा, आवण जावण पतित पावण आपणी धार चलाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। कातब लेखा लिखे बण लिखारा, लिख लिख लेख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुर इक्क वड्याईआ। शब्द गुरू गुर दातार, दयावान खेल कराइंदा। भगत भगवान लए उभार, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सन्त साजण लए उठाल, गृह मन्दिर फेरा पाइंदा।

गुरमुख लेखा चुकाए शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा मेल मिलाइंदा। गुरसिखां बणे आप दलाल, दो जहानां फेरा पाइंदा। एका देवे वस्त नाम धन्न सच्चा धन माल, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाइंदा। एथे ओथे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा नैण उठाइंदा। दीन दयाल सदा दयाल, दयानिध आपणी दया कमाइंदा। शब्द गुर करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। लेखा जाणे काया माटी पंज तत्त खाल, रत्ती रत्त खोज खोजाइंदा। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, घर घर आपणा नूर धराइंदा। शब्द अगम्मी वजाए ताल, अनहद रागी राग सुणाइंदा। गुरमुख उठाए साचे लाल, फड़ बांहों गोद बहाइंदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, राए धर्म ना मुख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दया कमाइंदा। गुर शब्द खोल्हे भेव, अभेद आप जणाईआ। आदि जुगादी साची सेव, आदि निरँजण रिहा कमाईआ। कोई गा ना सके रसना जिहव, कोटन कोटि जीव जंत रहे कुरलाईआ। जिस जन देवे आपणा नाम मेव, रस इक्को इक्क वखाईआ। मेल मिलाए वड देवी देव, देव आत्मा कर कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर आपणा पर्दा दए उठाईआ। शब्द गुरू गुर पर्दा खोल्हे, पर्दा कोए नज़र ना आईआ। बिन रसना जिह्वा आपे बोले, बिन बत्ती दन्द सलाहीआ। बिन मन्दिर मकान वसे कोले, घर बैठा सच्चा माहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज दो जहान लोआं पुरीआं आपे फोले, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुग जुग बणाए गोले, सेवक साची सेव लगाईआ। खाणी बाणी वेद पुराणी गाए ढोले, सोहले आपणा राग अल्हाईआ। लख चुरासी अन्तर आत्म आपे मौले, मौला आपणा खेल वखाईआ। जुगा जुगन्तर प्रगट होए उपर धौले, धरनी धरत दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क अख्वाईआ। शब्द गुरू अगम्म अथाह, अलख अगोचर भेव कोए ना पाइंदा। वसणहारा सच मकां, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। देवणहारा सच सलाह, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। दो जहानां वेखे थाउँ थाँ, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पकड़े बांह, करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द उँगली लाइंदा। किन्नर यच्छप लए उठा, ढोल मृदंग आप वजाइंदा। गोपी काहन वेस वटा, मधर नैण बंसरी धुन आप अल्हाइंदा। सीता सुरती खेल करा, राम रूप रूप रघुपत आपणा रंग वखाइंदा। ईसा मूसा पल्लू लए फड़ा, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्लाह इलाही नूर इक्क दरसाइंदा। मुहम्मद ख्वाहिश दए परणा, अल्ला राणी जोड़ जोड़ाइंदा। चार यारी चार कुण्ट चार जुग वंड वंडा, वरभण्डी वेख वखाइंदा। शब्द गुरू गुर वेस वटा, गुर गुर आपणा रंग रंगाइंदा। नानक गोबिन्द दए पढ़ा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। लेखा जाणे शहिनशाह, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। भूपत भूप राज राजान शाह सुल्तान, हुक्म

६५८
१२

हाकम आप सुणाइंदा। शब्द गुर आदि जुगादी लख चुरासी पिता मां, पिता पूत वेख वखाइंदा। जन भगत फड़ फड़ लए उठा, आलस निंद्रा मोह मिटाइंदा। जिस जन उपर दया दए कमा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। कागों हँस दए बणा, हँस काग रूप वटाइंदा। सोहँ माणक मोती चोग दए चुगा, सच सरोवर आप नुहाइंदा। वासना खोटी दए कढा, सच सुगंधी इक्क भराइंदा। निर्मल जोती दए जगा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। नाम सोटी हथ्थ दए फड़ा, साचा खण्डा इक्क चमकाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां डेरा देवे ढाह, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाइंदा। रवि ससि सूरज चन्द मंडल मण्डप सीस रहे झुका, जगदीस आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू गुर साख्यात, गुरमुख बणाए पारजात, लोहा कंचन रूप वटाइंदा। लोहा कंचन ढाले पासा, आपणी दया कमाईआ। पारस छोहे होए खुलासा, खुलासी आपणी लए कराईआ। आदि जुगादि जुगो जुग सतिगुर शब्द इक्क प्रकाशा, प्रकाशवान सर्ब लोकाईआ। लख चुरासी करे भोग बिलासा, भस्मड़ आपणा मुख छुपाईआ। भगत भगवन्त दे दिलासा, धीरज धीर इक्क धराईआ। साचे सन्त वखाए सच तमाशा, निरगुण निरगुण पर्दा लाहीआ। गुरमुखां पूरी करे आसा, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। गुरसिखां दरस दिखाए साख्याता, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। रातीं सुत्तयां करे बातां, आप आपणा भेव जणाईआ। गुर शब्द नाता तोड़े जातां पातां, वरन गोत विच कदे ना आईआ। एथे ओथे दो जहान सगला साथा, अद्धविचकार ना कोए डुबाईआ। चौदां लोक चौदां तबक इक्क निक्का जिहा हाटा, आपणा हट्ट ना किसे वखाईआ। वड्डा रख्या इक्को खाता, जिस खाते अंदर कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैग़म्बर रिहा छुपाईआ। सो साहिब आदि जुगादि सर्ब दा दाता, देवणहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द सुत देवे वर, सन्त भगत गुरमुख गुरसिख लए फड़, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म मंगे मेहर दान, कूक कूक कुरलाईआ। घर सतिगुर सच्चा मिले आण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ढूंडन कोए ना जाईआ। आसा तृष्ना मिटे जहान, मन मनसा पूर कराईआ। निर्मल दीआ जगे भान, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। नाता तुट्टे जगत जहान, जीवण जुगत दए समझाईआ। हउमे हंगता छुट्टे मोह अभिमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरन आसा दए कराईआ। पूरन आसा करे पूर, भरपूर रिहा सब ठाईंआ। नेड़े आए जो वसे दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हउमे हंगता रोग मिटाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च दए जणाईआ। मस्तक लाए चरन धूढ़, दुरमति मैल रहे ना राईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पूरब जन्म कर्म निहकर्मी मुआफ करे कसूर, अग्गे लेखा

मंगे ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। साचा घर सच महल्ला, हरि सतिगुर सच जणाइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, निरगुण डेरा लाइंदा। भगत भगवान फड़ाए पल्ला, जुग जुग खेल वखाइंदा। सच संदेस एका घल्ला, नर नरेश आप सुणाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। वसणहारा डूँघी डल्ला, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा। आत्म परमात्म मंगे रंग, इक्को ओट तकाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले सच पलँग, काया अंदर इक्क सुहाईआ। दिवस रैण वजाए मृदंग, ताल तलवाड़ा ना कोए रखाईआ। एका घर वहाए गंग, नीर सीर रूप वटाईआ। निर्मल जोत चढ़े चन्द, कोटन कोटि चन्द मुख शरमाईआ। आत्म देवे इक्क अनन्द, निजानंद होए रसाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार आपणी गंढु पुवाईआ। लख चुरासी करे खण्ड, खण्डा खड़ग नाम वखाईआ। भाण्डा भरम भउ ढाहे द्वैती कंध, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। ढोला गाउणा इक्को सुहागी छन्द, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहान होए बख्शंद, आत्म परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वस्त रिहा वंड, दो जहानां आप वरताईआ। इक्को वस्त सदा अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाइंदा। इक्को तोलणहारा तोल, तोला अवर ना कोए जणाइंदा। इक्को बैठा रहे अडोल, अडोल आपणा खेल वखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर नाम वस्त रखे कोल, जन भगतां आप वरताइंदा। आत्म ताकी पर्दा खोल्, अंदर डूँघी कंदर आप टिकाइंदा। निरगुण सरगुण करे चोल, प्रेम बन्धन एका पाइंदा। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणा भेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अनडिठ आप वखाइंदा। इक्को वस्त इक्को दात, इक्को रिहा वरताईआ। इक्को चरन इक्को नात, बिधाता इक्को जोड़ जुड़ाईआ। इक्को अक्खर इक्को जमात, एका पट्टी रिहा पढ़ाईआ। एका सतिगुर वसे साथ, दूजा संग कोए ना जाईआ। एका सेजा एका खाट, एका बैठा डेरा लाईआ। इक्क मुकावणहारा वाट, दो जहानां फेरा पाईआ। एका खेल खेले पुरख समराथ, समरथ दाता सच्चा शहिनशाहीआ। एका लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, जगत उधार ना कोए कराईआ। इक्को पूजा इक्को पाठ, इष्ट गुरदेव इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त रिहा वरताईआ । एका वस्त वस्त अमोलक, हरि अनमुलड़ा आप वरताइंदा। आप रखाए काया गोलक, घर घर विच आप सुहाइंदा। राग सुणाए एका अनबोलत, अनडिठड़ी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक्क वखाइंदा। सच्ची वस्त हरि हरि नाम, दूसर

अवर ना कोए वड्याईआ। गुर अवतारां देवे जाम, पीर पैग़म्बरां आब हयात प्याईआ। नाद धुंन सुणाए अगम्मी कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। लेखा जाणे शाह अमाम, शहिनशाह सच्चा पातशाहीआ। लख चुरासी करे ग़ुलाम, बरदे सब नूं रिहा बणाईआ। देवणहारा सच पैग़ाम, जबराईल मेकाईल असराईल असराफील रिहा समझाईआ। नानक निरगुण दिती वस्त सति नाम, नाम सति सति सति दृढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर निउँ निउँ सजदा करन सलाम, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वस्त हथ्थ रखाईआ। इक्को वस्त वड अस्गाह, भेव कोए ना पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाए राह, रैहबर आपणा नाउँ वड्याइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लए पढ़ा, खाणी बाणी वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस अनेका रूप धरा, धरनी धरत धवल रूप सुहाइंदा। अकाश प्रकाश पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पर्दा लाह, भेव अभेद आप जणाइंदा। एका वस्त दस्त बदस्त दए वरता, दयावान दया कमाइंदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां झोली दए भरा, जो जन सरन सरनाई सीस झुकाइंदा। आवण जावण पतित पावण लहिणा देणा लेखा दए मुका, लख चुरासी फंद कटाइंदा। थिर घर बहणा साची सिख्या दए समझा, नेत्र नैणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम वस्त आप वरताइंदा। नाम वस्त श्री भगवान, जुगा जुगन्तर आप वरताईआ। कोटन कोटि मंगण दान, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सर्ब कुरलाण, कूक कूक सर्ब सुणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पारब्रह्म तेरा खेल महान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ बाली बुध बाल अञ्याण, रसनी कथनी कहिण कुछ ना जाईआ। कर किरपा देणा एको दान, अतोट अतुट्ट वरताईआ। नाता तुट्टे पीण खाण, तृष्ना भुख नेड़ ना आईआ। रोग सोग सर्ब मिट जाण, चिंता चिखा ना कोए जलाईआ। घर मन्दिर गृह सतिगुर मिले आण, मिल सखीआं खुशी मनाईआ। इक्को ढोला सारे तेरा गाण, गा गा खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म चुक्के काण, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। ईश जीव जगदीस वसे इक्क मकान, सच मकान सोभा पाईआ। शब्द गुर गुर दयावान, गुरदेव स्वामी वेखे चाँईं चाँईआ। वस्तू वस्त इक्क महान, महांबली आप वरताईआ। गुरसिख भुल्ल ना जाए अणजाण, बाली बुध आप समझाईआ। जिस साहिब मिल्या आण, सो दूजे दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वस्त देवे हथ्थ, करे खेल पुरख समरथ, समझ समझ नाल मिलाईआ।

✳ ७ अस्सू २०१६ बिक्रमी गुरमीत सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर ✳

सो पुरख निरँजण तेरा दरबारा, दरगाह साची नज़र किसे ना आइंदा। हरि पुरख निरँजण तेरा उच्च मुनारा, मुकामे हक़ पर्दा कोए ना लाहइंदा। एकँकारा तेरा अगम्म अथाह पसारा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। आदि निरँजण तेरा नूर उज्यारा, जोती जाता पुरख बिधाता हथ्थ किसे ना आइंदा। अबिनाशी करते तेरा खेल न्यारा, अनुभव आपणी कार कमाइंदा। श्री भगवान तेरा सच हुलारा, सच निशाना इक्क उठाइंदा। पारब्रह्म शाहो भूप भूप वड सिक्दारा, तख्त निवासी तख्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण महिमा बेअन्त, कथनी कथ ना सके राईआ। हरि पुरख निरजंण आदि अन्त, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। एकँकारा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। आदि निरँजण महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। श्री भगवान आपे गाए आपणा मंत, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। अबिनाशी करता आपे करे आपणी मन्नत, इष्ट देव आप अख्वाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग करता सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराईआ। सो पुरख निरँजण तेरा सच महल्ला, दूर दुराडा नज़र कोए ना पाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। एकँकार फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणा गंढु पुआइंदा। आदि निरँजण बिन तेल बाती, सच प्रकाश आपे बल्ला, नूरो नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान सच संदेस एका घल्ला, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, महल अटल इक्क वड्याइंदा। पारब्रह्म जोती शब्दी निरगुण निरगुण धार आपे रल्ला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। हरि पुरख निरँजण साहिब समरथ, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। एकँकारा अन्तर अन्तर आपे वस, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। आदि निरँजण कर प्रकाश, दीवा बाती डगमगाईआ। श्री भगवान पावे रास, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। अबिनाशी करता खेल तमाश, हरि ख़ालक वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ दासी दास, सेवक सेवा इक्क कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सो पुरख निरँजण तेरा खेल अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। हरि पुरख निरँजण तेरी अगम्मी धारा, धार धार विच समाइंदा। एकँकार तेरा अखाड़ा, दो जहानां नाच नचाइंदा। आदि निरँजण तेरा उज्यारा, थिर घर साचे आप सुहाइंदा। अबिनाशी

करता वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र लोचन नैण ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान सांझा यारा, हक़ मुकामे डेरा लाइंदा। नूर इलाही परवरदिगारा, बेऐब खुदाई आपणा नाम रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करनी करता करनेहारा, पुरख पुरखोतम आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सचखण्ड, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। साहिब सतिगुर सूरा सरबंग, सो पुरख निरँजण आसण लाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। आदि निरँजण करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, रवि ससि ना कोए वड्याईआ। अबिनाशी करता शब्द अगम्मी गाए छन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। श्री भगवान साहिब दयाल ठाकर बख्शंद, बख्शिश आपणी आप जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मंगणहारा साची मंग, दर दरवेश आपणी अलख जगाईआ। करे खेल बिन रूप रंग, रेख भेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणे हथ्थ रखे वड़याई, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड दवारे वज्जे वधाई, वाहवा गीत आपणा आप अलाइंदा। निरगुण मेला निरगुण वेखे चाँईं चाँईं, चाओ घनेरा इक्क जणाइंदा। आदि जुगादि सद चले आपणी आप रज़ाई, दूजा हुक्म ना कोए मनाइंदा। करनहारा सच नयाईं, सच सिँघासण आसण लाइंदा। शाहो भूप राजन राज बेपरवाही, बे मुहताजे आपणा खेल आप कराइंदा। सचखण्ड दवारे रच रच काजे, करनी करता आप कमाइंदा। देवणहारा साची दात, वस्त अमोलक आप प्रगटाइंदा। आपणी पूरी करे आपे आस, आसा आसा विच रखाइंदा। निज गृह निज मन्दिर निज घर निज वासी वसे पास, विछोड़ा पन्ध ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड निवासी तेरा भेव अपारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण ना जाईआ। गा गा थक्के गुर अवतारा, अलखणा लख ना सके कोए राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। करोड़ तेतीसा करे पुकारा, सुरपति बैठा डेरा ढाहीआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी निरगुण निराकार सब तों वसे बाहरा, आपणी कल आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह शाह पातशाह, तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि जुग जुग चलाए राह, बण रैहबर दे समझाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म निरगुण सरगुण बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। अन्तर मन्त्र साचा सोहला ढोला दए पढ़ा, निष्अक्खर आपे गाईआ। पर्दा ओहला दए चुका, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। मौला रूप एका नूर सच खुदा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेख ना लख्या जाईआ। तेरा लेख ना जाणे लेखा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जुग चौकड़ी

९६३
१२

सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा भरम भुलेखा, भाण्डा भरम ना कोए भनाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुसायक करदे रहे चेता, नित नवित ध्यान लगाइंदा। बिन किरपा किसे ना दस्सया भेता, लख चुरासी जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। तुध बिन नज़र ना आए कोए, दो जहान फिरी दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गूढ़ी नींद सोए, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म बीज ना कोए बोए, सच किरसाणा हल्ल ना कोए चलाईआ। सच संदेसा नर नरेशा देवे ना कोई ढोए, वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। बिन तुध कलयुग अन्त जीवत होए मोए, जीवत रूप ना कोए रखाइंदा। खाणी बाणी वेद पुराणी शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरानी तेरी सुणी सोए, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। निरगुण तेरा वासा त्रै त्रै लोए, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तुध बिन अमृत रस कोए ना चोए, पीर पैग़म्बर सर्ब कुरलाइंदा। आपणा आप कलयुग जीव बैठे खोए, खाली हथ्थ सर्ब जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा मंग मंगाइंदा, तेरा दर सच दरबारा, दरगाह साची मिले वड्याईआ। कलयुग कूड़ा दोए जोड़ करे निमस्कारा, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। नव नौ दिसे हाहाकारा, चार चार पई लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ धूआँधारा, सच प्रकाश ना कोए कराईआ। सृष्ट सबाई होई नार विभचारा, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। गूढ़ी नींदे सुत्ते पैर पसारा, करवट सके ना कोए बदलाईआ। चौदां तबक करन पुकारा, सदी चौधवी रही कुरलाईआ। चौदां लोक लग्गा अखाड़ा, ज़िमीं असमान देण दुहाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार भगत भगवान अग्गे कढ्ढण हाढ़ा, बौहड़ी बौहड़ी रहे सुणाईआ। साध सन्त कोई ना दिसे जंगल जूह विच उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर साची लहर ना कोए वखाईआ। हरि का नाउँ ना किसे प्यारा, गुर गुर शब्द ना ढोला गाईआ। जूठ झूठ वणज वापारा, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। नानक गोबिन्द करन पुकारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। वेद व्यासा लेख लिखारा, लिख लिख एका मंग मंगाईआ । ईसा कहे मेरा परवरदिगारा, रैहबर आवे सच्चा माहीआ। मुहम्मद कहे मेरा सांझा यारा, साख्यात रूप वटाईआ। कलयुग कहे मेरी सुणे पुकारा, अन्त लेखा दए मुकाईआ। धरनी रोवे करे हाहाकारा, ख़ाकी ख़ाक रही उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस तकाईआ। कलयुग तेरी रखी आस, प्रभ साहिब सच्चे गुसाँईंआ। अन्त बुझाउणी जगत प्यास, कूड़ी क्रिया कर जुदाईआ। लोकमात करनी बन्द खुलास, चरन सरन सरन चरन मिले सरनाईआ। कूड़ी क्रिया कीता भोग बिलास, माया ममता सेज हंढाईआ। नव नौ ना दिसया कोए प्रकाश,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी साहिब गुण दाता, गहर गम्भीर दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाशा, निरगुण सरगुण नाच नचाइंदा। गोपी काहन पावे रासा, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। वेखे खेल पृथमी आकाशा, गगन गगनंतर सोभा पाइंदा। गुर अवतारा पीर पैग़म्बरां देवणहार दिलासा, सिर समरथ हथ्थ टिकाइंदा। आदि अन्त होए ना कोए निरासा, जो सरनाई आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग हरि जू आप समझाइंदा। कलयुग सुण साचे सुत, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरी अन्तिम आई रुत्त, हरि रुत्तड़ी वेख वखाइंदा। प्रगट हो अबिनाशी अचुत्त, नव नौ आपणा फेरा पाइंदा। आपणी कुक्खों आपे उठ, मात पित ना कोए बणाइंदा। ग़रीब निमाणयां लए पुच्छ, भगत भगवन्त आप जगाइंदा। झोली भरे सच सुच्च, कूड़ी क्रिया मोह मुकाइंदा। गुरसिख कोए ना दिसे सिंमल दीर्घ अति मुच, पत डाली फुल आप महकाइंदा। आपणे कोल ना रखे कुछ, गुरमुखां झोली आप भराइंदा। लख चुरासी कोलों बैठा लुक, बिन गुरमुख नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग तेरी जड़ देवे पुट्ट, लोकमात फेर ना कोए लगाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां भाग गए निखुट, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा सुण लै बाल, सो पुरख निरँजण आप जणाया। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा डंक वजाया। तेरी अन्तिम पूरी करे घाल, कीती घाल लेखे पाया। गुरसिख सज्जण लए उठाल, आप आपणा मेल मिलाया। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवन जुगत दए समझाया। भाग लगाए पंज तत्त काया माटी खाल, खालक ख़लक वेख वखाया। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा आप प्रगटाया। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर चले नाल नाल, आत्म परमात्म विछड़ कदे ना जाया। सतिजुग साची सिख्या दए सिखाल, अक्खर वक्खर आप पढ़ाया। दीना बंधप दीन दयाल, गोपाल स्वामी फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाया। सच संदेसा सुण लै जग, जगजीवन दाता आप जणाईआ। चार कुण्ट लग्गे अग्ग, अग्नी तत्त तत्त तपाईआ। जन भगतां मेला उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। नाद अनादी जाए वज्ज, धुंन आत्मक राग सुणाईआ। कलयुग तेरी पार हद्द, किनारा कोए नज़र ना आईआ। संगी साथी एथे जाणे छड्ड, राए धर्म दए सज़ाईआ। सब दी चोटी देणी वढ्ढ, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। धर्म दुआरयों देणे कढ्ढ, दरगाह साची ना कोए बहाईआ। आपणा आपणा भार जायण लद्द, गुर अवतार ना कोए सहाईआ। कूड़ी क्रिया जाण बज्झ, जगत जंजाल ना कोए तुड़ाईआ। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाईआ। किसे लाउण ना देवे अज पज, सीस सके ना

कोए छुपाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर वेखे भज्ज भज्ज, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डा फेरा पाईआ। गुरमुख विरले आपणी चरनी लए सद्द, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। अन्तिम पर्दा देवे कज्ज, नाम दुशाला उपर पाईआ। काया काअबा वखाए इक्क हज्ज, महबूब हुज़रा इक्क सुहाईआ। नौबत नाम जाए वज्ज, सच महिराब होए शनवाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान मेहरवान मेहरवान जन भगतां रखे आपे लज्ज, आपणी लज्जया भगतां हथ्थ फड़ाईआ। दो जहान श्री भगवान कूड़ी क्रिया देवे तज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरी सब दी आस कराईआ। पूरी आस करे भगवान, हरि भगवन आप जणाइंदा। कूड़ कुड़यारा मिटे निशान, लोकमात रहिण ना पाइंदा। सतिजुग सति सतिवादी देवे दान, सति पुरख निरँजण दया कमाइंदा। सृष्ट सबाई इक्को नज़री आए काहन, लख चुरासी गोपी आप परणाइंदा। लख चुरासी सीता सुरती दिसे इक्को सच्चा राम, मन रावण हँकारी मार मुकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद घर इक्को दए पैग़ाम, नूर इलाही कलमा कायनात आप पढ़ाइंदा। दामनगीर पकड़े दाम, ज़ामनी आपणी इक्क रखाइंदा। नानक गोबिन्द करे प्रणाम, निउँ निउँ एका अलख जगाइंदा। पुरख अकाल वड मेहरवान, मेहरवान बेनज़ीर नज़र इक्क उठाइंदा। सतिजुग साचा देवे ब्यान, ज्ञान गोझ आप जणाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, परम पुरख भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक्क दृढ़ाइंदा। साची सिख्या अन्तिम कल, कुलवन्ता आप जणाईआ। जोती शब्दी गया रल, निरगुण निरगुण धार प्रगटाईआ। सरगुण भुलाए कर कर वल छल, अछल छल आपणी खेल रचाईआ। सच सिँघासण बैठा मल्ल, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। नाम संदेसा देवे घड़ी घड़ी पल पल, वार थित ना कोए रखाईआ। वसणहारा महल अटल, साचा मन्दिर रिहा सुहाईआ। पावे सार जल थल, महीअल रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। तेरा लहिणा चुक्के अन्त, अन्तस करण वेख वखाइंदा। हरिजन मेले साचे सन्त, सन्त सतिगुर दया कमाइंदा। भगत प्यारा इक्क भगवन्त, भगवन आपणी गोद बहाइंदा। गुरमुख वड़याई जीव जंत, जीवन जुगत आप जणाइंदा। गुरसिख दृढ़ाए मणीआ मंत, मन्त्र आपणा इक्क वखाइंदा। कलयुग अन्त बणाए बणत, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। गढ़ तुट्टे हउमे हंगत, निवण सु अक्खर इक्क सिखाइंदा। गुरमुख दूजे घर ना जाए मंगत, पुरख अबिनाशी खाली झोली सर्ब भराइंदा। कोई ना दिसे पांधा पंडत, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर कोई रहिण ना पाइंदा। चौथे जुग तेरी आरज़ू होए खण्डत, खण्डा खड़ग इक्क चमकाइंदा। माण रखाए हरि जू हरि हरिसंगत, सगला संग आप हो जाइंदा। काया चोली चाढ़े रंगत, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। नाता तोड़े साक

सज्जण सैण बंधप, सगला संग आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा लेख चुकाइंदा। कलयुग तेरा लेखा चुक्के, चूक कोए रहिण ना पाईआ। चौथे जुग पैंडा मुक्के, पाँधी कोए नज़र ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आपे पुच्छे, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जीव जंत बिन हरि नामे बूटे सुक्के, हरया सिंच ना कोए कराईआ। साध सन्त कूड़ी क्रिया विच लुके, सब दे परदे दए खुल्हाईआ। फड़ फड़ अन्तिम टंगे पुट्ठे, ना सके कोए बचाईआ। एथे ओथे दो जहान देवे कुट्ठे, कुट्ठा खाधा बचया कोए रहिण ना पाईआ। सिँघ शेर एका बुक्के, दो जहानां भबक लगाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्ते, चेतन एका धार चलाईआ। गोबिन्द उठाया इक्क सुत्ते, पूत सपूता नाल मिलाईआ। गुरमुख लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठे, रातीं सुत्तयां लए जगाईआ। अमृत आत्म देवे निझर घुट्टे, कँवल नाभ आप उलटाईआ। कलयुग जीव कलयुग माया अंदर गूढ़ी नींद सुत्ते, सुत्तयां रैण विहाईआ। कलयुग तेरा लेखा साहिब सतिगुर घर घर पुच्छे, दर दर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन साचे जाणा जाग, सतिगुर पूरा आप जगाइंदा। किरपा कर धोवे दुरमति मैल दाग़, काग हँस रूप वटाइंदा। निर्मल जोती जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर गुआइंदा। पतित पापी करे पाकी पाक, पाक रसूल फेरा पाइंदा। लेखे लाए काया माटी खाक, खाकी खाक धूढ़ रमाइंदा। जगत कुड़ावा दिसे साक, सगला संग ना कोए रखाइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना निभे साथ, बेड़ा पार ना कोए कराइंदा। वेले अन्त ना पुच्छे वात, जम फास ना कोए तुड़ाइंदा। कलयुग करनहारा सब दा घात, घाउ इक्को इक्क लगाइंदा। अन्तिम कोई ना रहे जमात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सृष्ट सबाई दस्से एका पाठ, सोहँ मन्त्र आप पढ़ाइंदा। सोहँ मन्त्र पूजा पाठ, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म बणाए साक, घर सज्जण रंग वखाईआ। ईश जीव खोल्हे ताक, जगदीस वज्जे वधाईआ। गृह गृह सुणाए एका नाद, धुन अनादी नाद अलाईआ। अमृत सरोवर मारे ठाठ, निझर झिरना लए झिराईआ। पूरब जन्म दा लेखा पूरा करे घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख तेरी मुक्की वाट, जो चल आया सरनाईआ। सिर रखे दे कर हाथ, एथे ओथे होए सहाईआ। गुरसिख तेरा दरस करन त्रिलोकी नाथ, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जिन्हां वसया सतिगुर पास, पासा सब दा दए उलटाईआ। कलयुग अन्तिम पुरख अबिनाशी आपणी पूरी करन आया खाहश, खाहश भगतां आपणी झोली पाईआ। गुरसिख तेरा लेखे लग्गे स्वास स्वास, पवण उनन्जा मुख शरमाईआ। चरन चुम्मे पृथ्मी आकाश, रवि ससि निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस दुआरे नर

निरँकार बणया दासी दास, सो दुआरे मिले वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमीत गुर मित्र पिता पूत सहिज सुखदाईआ।

✳ ८ अस्सू २०१६ मनसा सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर ✳

रक्त बूंद हड्ड मास नाड़ी रत्त, तत्तव तत्त खोज खोजाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर देवणहारा ब्रह्म मति, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। सन्त सुहेले साजण रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लख चुरासी नालों कर कर वक्ख, आपणा बंधण आपे पाइंदा। दरस दिखाए हो प्रतख, भाण्डा भरम भउँ भनाइंदा। निरगुण सरगुण गाए जस, सोहला ढोला आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म कर कर वस, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। हिरदे अंदर आपे वस, हरि मन्दिर डेरा लाइंदा। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, अन्ध अन्धेर गुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हड्ड मास नाड़ी रत्त आपणे लेखे लाइंदा। हड्ड मास वेखे नाड़ी, तत्तव तत्त खोज खोजाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहर गुपत ज़ाहरी, भेव अभेद आप जणाइंदा। महल अटल पावे सार उच्च मुनारी, बंक दुआरा खोज खोजाइंदा। ईश जीव जगदीस मेल मिलावा एकँकारी, अकल कल आपणी खेल समझाइंदा। राती रुत्ती थिती ना कोए वारी, घड़ी पल्ल ना वंड वंडाइंदा। करे खेल अगम्म अपारी, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरि सज्जण साचा पार उतारी, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन माटी लेखे लाइंदा। तन माटी वेखे खाक, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। गुरमुख कहे उत्तम ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाइंदा। अठ्ठे पहर रहे प्रभात, संधया रूप ना कोए वखाइंदा। नेड़ ना आए मनमति नार कमज़ात, सतिगुर पूरा दर दुरकाइंदा। काया मन्दिर अंदर डूँघा खात, पर्दानशीं पर्दा आप चुकाइंदा। दिवस रैण रैण दिवस सदा सुहेला पुच्छे वात, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हड्ड मास लेखा लेखे लाइंदा। हड्ड मास ना उब्बले रत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। मेल मिलावा कमलापति, कँवल नैण होए सहाईआ। मार्ग एकँकारा दस्स, इक्क इकल्ला करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, हथ्थो हथ्थ दए मुकाईआ। नाम जणाए महिमा अकथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। सर्ब कला आपे समरथ, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे आप लगाईआ। हरिजन लेखा लेखे जाए लग, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, पंचम

तत्त ना कोए जलाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, रघुपत आपणा रूप वटाइंदा। जगत किनारा पार हद्द, भगत दुआरा इक्क वखाइंदा। गृह मन्दिर अंदर आत्म परमात्म आपे सद्द, सदा एका नाम लगाइंदा। राग अनादी वज्जे अनहद, धुंन आत्मक आप सुणाइंदा। कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढ, साचे धन्दे आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। तत्तव तत्त तत्त विचार, बेपरवाह खेल कराइंदा। मन मति बुध दे अधार, नव दर खोज खोजाइंदा। दहि दिशा पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जग जुग जगत जीव ईश आपणे दर बहाइंदा। कलयुग रोवे मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस दुआरे सतिगुर पूरा फेरा जाए पा, तिस गृह नेड़ ना आईआ। बिरध बाल अंञाणे लए तरा, डुब्बदे पाथर पार कराईआ। चरन सरन सरन चरन जिस जन सीस ल्या झुका, झुक झुक वेखे सर्ब लोकाईआ। गुरसिख गुरमुख गुर गुर रूप गया समा, आप आपा रिहा ना राईआ। जिस जन सोहँ ढोला ल्या गा, तिस जम पोह ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कल फास कलकाती रिहा मिटाईआ।

९६८ १२

✳ ८ अस्सू २०१६ बिक्रमी साधू सिँघ, प्रीतम सिँघ दे गृह फगवाड़ा ज़िला जलन्धर ✳

सचखण्ड निवासी सच दरबारा, दरगाह साची आप लगाइंदा। भूपत भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाइंदा। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, ना कोए मेटे मेट मिटाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे ख़बरदारा, बेख़बर आप जगाइंदा। शब्द सुत दए हुलारा, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी एकँकार, अकल कला कल खेल कराईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सीस जगदीस ताज टिकाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। थिर घर साचे खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। सच संदेसा देवे एका वार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा इक्क सुहाईआ। सच दरबारा सच महल्ला, हरि साचा सच लगाइंदा। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, हरि पुरख निरँजण सोभा पाइंदा। एकँकारा सच सिँघासण एका मल्ला, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। आदि निरँजण दीपक जोत एका बल्ला, नूरो नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान सच संदेस एका घल्ला, धुर फ़रमाणा आप अल्हाइंदा। अबिनाशी करता फड़ावणहारा पल्ला, पल्लू इक्को इक्क वखाइंदा। पारब्रह्म जोती धार आपे रला, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी श्री भगवान, सचखण्ड दवारे आप कराईआ। सुत दुलारे देवे माण, शब्दी शब्द पैज रखाईआ। वस्त अमोलक देवे दान, दाता दानी आप वरताईआ। थिर घर बणाए साचा काहन, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सच वखाए इक्क निशान, बिन रंग रूप आप झुलाईआ। वसणहारा सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। पुरख पुरखोतम हो प्रधान, वड प्रधानगी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड सच संदेसा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। आपे लिखणहारा लेखा, लेखा आपणे विच छुपाइंदा। आपे धारनहारा भेखा, निरगुण निरगुण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवन्त, एकँकारा आप जणाईआ। लेखा जाण आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। नाउँ निरँकारा मणीआ मंत, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी खेल रचाईआ। सचखण्ड दवारा हरि जू खोल्ह, साचे तख्त सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी एका बोल, जै जैकार आप सुणाइंदा। नाम निधाना तोले तोल, तोलणहारा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा हुक्म रखे हथ्थ, दूसर संग ना कोए रखाईआ। दो जहान चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां देवे मथ्थ, भेव अभेव ना जाणे कोई राईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका रस, रस रसीआ मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची डेरा लाईआ। दरगाह साची सोहे धाम, धाम अवल्लड़ा आप सुहाइंदा। निरगुण नूर एका राम, रम्मईआ आपणा खेल कराइंदा। साहिब सुल्तान सच्चा शाम, शहिनशाह एका रंग वखाइंदा। आदि जुगादि देवणहार पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। निउँ निउँ सजदा करे सलाम, सलामालैकम आपणा हुक्म वरताइंदा। वसणहारा सच ग्राम, खेड़ा इक्को इक्क सुहाइंदा। कर प्रकाश कोटन भान, नूरो नूर डगमगाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, गुर अवतार बन्धन पाइंदा। भगत भगवन्त देवे नाम, नाम अमोलक झोली पाइंदा। सन्त साजण आप पहचान, दूई द्वैती आप लाहइंदा। गुरमुख वेखे चतुर सुजान, लख चुरासी खोज खोजाइंदा। गुरसिख साचे कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। शाहो भूप वड सुल्तान, साचे तख्त डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे बैठा चढ़, नज़र किसे ना आइंदा। सचखण्ड दवार सच

६७०
१२

मुनारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एका वसे एकँकारा, अकल कलधारी आपणा खेल वखाईआ। रूप रंग ते वसे बाहरा रेख भेख ना कोए वड्याईआ। शब्द नाद ना कोए जैकारा, धुन राग ना कोए सुणाईआ। साध सन्त ना कोए अवतारा, गुर पीर ना कोए वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेखा ना कोए समझाईआ। साचे तख्त बैठा आप करतारा, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वेखे विगसे वेखणहारा, आपणा नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप जणाईआ। साची करनी सुत दुलारे, हरि शब्दी शब्द सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल न्यारे, करता पुरख आप कमाइंदा। प्रगट हो निहकलंक नर अवतारे, निरगुण डंका नाम वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदारे, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। तेई अवतार फड़ उठाले, आलस निंद्रा सब दी लाहइंदा। भगत अठारां रखे नाले, दस्स अठ जोड़ जुड़ाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद दस्से राह सुखाले, कलमा नबी इक्क जणाइंदा। नानक गोबिन्द बोल जैकारे, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। लख चुरासी पावे सारे, लुकया कोए नज़र ना आइंदा। कूड़ी क्रिया करे पार किनारे, शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा। चार वरन करे खुआरे, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सर्ब कुरलाइंदा। बरन अठारां हाहाकारे, चौदां लोक नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। चौदां तबक धाईं मारे, सति सन्तोख ना कोई जणाइंदा। प्रगट होया परवरदिगारे, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। लाशरीक खेल न्यारे, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। कलमा कायनात सुणाए सच जैकारे, इस्म आज़म आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा खेल कराइंदा। सचखण्ड खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाईआ। आदि जुगादी गुर अवतारा, गुर गुर बन्धन पाईआ। आदि जुगादी भगत भण्डारा, श्री भगवान आप वरताईआ। सदा सुहेला एकँकारा, सन्त साजण लए मिलाईआ। गुरमुखां वखाए इक्क दुआरा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। गुरसिखां करे पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। चार वरनां देवे एका नाम प्यारा, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तुट्टे सर्ब संसारा, साची साखी इक्क समझाईआ। घर घर वज्जे नाद धुंन सच्ची धुन्कारा, अनहद रागी राग अल्लाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना जाम प्याईआ। जोत निरँजण कर उज्यारा, गृह गृह करे रुशनाईआ। आत्म सेजा कर पसारा, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म चलाईआ। सचखण्ड निवासी बेपरवाह, धुरदरगाही हुक्म जनाइंदा। नव नौ चलाए एका राह, पूरब लहिणा पन्ध मुकाइंदा। वेखणहारा थल अस्गाह, उच्चे टिल्ले

पर्बत खोज खोजाइंदा। लख चुरासी जपावणहारा नाँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे सोभा पाइंदा। सच दुआरा सोभनीक, हरि सतिगुर आप सुहाईआ। दूसर ना कोई दिसे शरीक, लाशरीक इक्क खुदाईआ। आदि जुगादि जन भगतां करे सच प्रीत, प्रीतीवान बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म ढोला सुणाए साचा गीत, रसना जिह्वा सिफ्त सलाहीआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच मसीत, काया काअबा दो दो आबा मेल मिलाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच दए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अनडीठ, नेत्र नैण नज़र कोए ना पाईआ। लख चुरासी सुत्ता दे कर पीठ, जन भगतां पर्दा रिहा उठाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, चौदां लोक चौदां तबक देण दुहाईआ। प्रभ परखणहारा लख चुरासी नीत, घर घर वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणा खेल कराईआ। सचखण्ड निवासी साचा मीता, मित्र प्यारा इक्क अख्वाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाए आपणी रीता, रीतीवान दया कमाइंदा। कूड़ी क्रिया अन्तिम वेला बीता, लोकमात रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा । साचा खेल शब्दी सुत, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सति सतिवादी मौले रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सतिजुग सति सतिवादी जाए उठ, कृपानिध दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा हुक्म एका एक जणाईआ। साचा हुक्म वरते जग, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, पंचम तत्त ना कोए जलाइंदा। किरपा करे सूरा सरबग, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां दरस दिखाए उपर शाह रग, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। घर विच घर कराए हज्ज, मक्का काअबा आप वखाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे नद्द, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। भाण्डा भरम भउ जाए भज्ज, माया ममता मोह मिटाइंदा । हिरदे अंदर हरि जू वस, गुरसिख गुरमुख आप जगाइंदा। बिरहों तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलावा हस्स हस्स, सोहँ हँसा रूप वटाइंदा। भगत भगवान इक्क दूजे दा गावण जस, जस वेद पुराण ना सिफ्त सालाहइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया जाए ढट्ठ, बलहीण बल ना कोए धराइंदा। ग़रीब निमाणयां रखे हरि जू पत, पतिवन्ता फेरी पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा हुक्म वरताइंदा। हुक्म वरते हरि जगदीस, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लख चुरासी पीसण जाए पीस, कलयुग चक्की रिहा चलाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां खाली होवण खीस, दर दर फिरन रोवण मारन धाहींआ। कोई ना दिसे

सच हदीस, अञ्जील कुरान ना कोए पढ़ाईआ। राज राजान छत्र ना झुल्ले किसे सीस, ख़ाकी ख़ाक सर्ब मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। धुर फ़रमाना एका एक, आदि पुरख जणाइंदा। कलयुग अन्तिम साची टेक, श्री भगवान इक्क रखाइंदा। भगत भगवन्त करे बुध बिबेक, विवेकी आपणा रंग रंगाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, सांतक सति सति वखाइंदा। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म करे साचा हेत, ईश जीव जोड़ जुड़ाइंदा। भाग लगाए काया खेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सचखण्ड निवासी साहिब सुल्तान, एका हथ्थ रखे वड्याईआ। बीस बीसा हो प्रधान, हुक्म एका एक जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणे सच विधान, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। हँ ब्रह्म गीत सारे गाण, सोहँ ढोला इक्क समझाईआ। सति सतिवादी साची रखे इक्को आण, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जागे अन्तिम अन्त, हरि करता आप जगाइंदा। मेल मिलाए नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहाइंदा। निरगुण सरगुण बणाए बणत, गृह मन्दिर खोज खोजाइंदा। इक्क सुणाए साचा मंत, मन्त्र एका नाम दृढ़ाइंदा। भेव ना जाणे कोई पंडत, मुल्ला शेख़ सर्ब कुरलाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। चार वरन बणाए साची संगत, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। दूजे दर ना जाए कोई मंगत, पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया करे खण्डत, खण्डा शब्द हथ्थ उठाइंदा। माया ममता होए रंडप, जगत रंडेपा इक्क वखाइंदा। पावे सार जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज खोज खोजाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी शाहो भूप राज राजान किसे दर ना जाए मंगण, आपणी करनी आप कमाइंदा। सतिजुग साचे सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी चाढ़े साची रंगण, रंग रंगीला छैल छबीला एक रंग वखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान वरभण्डन, ब्रह्मण्डन खोज खोजाइंदा। पावे सार सूरज चन्दन, मंडल मण्डप गोपी काहन एका रास वखाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी आदि जुगादि जुग जुग बख़्शंदन, बख़्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां तोड़े लख चुरासी फंदन, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, निम कसतूर वांग महकाइंदा। गुरसिख गुरमुख गुर गुर इक्क दूजे नूं करन बन्दन, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे सच फ़रमान, देवणहार श्री भगवान, हरि करता आप सुणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप धराइंदा।

६७२
१२

✳ ८ अस्सू २०१६ बिक्रमी संसार सिँघ दे गृह डविडा रिहाणा ✳

सचखण्ड निवासी साचा राह, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, बेऐब खेल कराइंदा। एकँकारा सिफ्त सालाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याइंदा। आदि निरँजण नूर धरा, नूरो नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा नाउँ वड्याइंदा। अबिनाशी करता वेस वटा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्ला, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। लेखा जाणे दो जहां, दोए दोए वेस कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करनेहारा, एका एक वडी वड्याईआ। जुग चौकड़ी पावे सारा, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लख चुरासी वेखे चाँई चाँईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। बोध अगाधा बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा, खाणी बाणी खोज खोजाइंदा। बोध अगाधी अनाद अनादी बोल जैकारा, गृह गृह मन्दिर नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साचा नाउँ हरि करतार, आदि जुगादि प्रगटाईआ। शब्द सुत सेवादार, बण सेवक सेव कमाईआ। त्रै त्रै मेला विच संसार, विष्न ब्रह्मा शिव करे कुड़माईआ। आत्म परमात्म खोल्ह किवाड़, दूई द्वैती पर्दा दए उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधार, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सहिज सुखदाईआ। सहिज सुखदाई खेल अवल्ला, हरि करता आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। निरगुण जोत आपे रल्ला, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्दी शब्द फड़ाए पल्ला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप जणाइंदा। आपणा भेव दस्से करतार, महिमा कथ ना सके कोए राईआ। नव नौ वेखे वेखणहार, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल करे अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार सेवादार, पीर पैग़म्बर नाल मिलाईआ। भगत भगवन्त दए दीदार, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। साचे सन्तां कर प्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठाल, गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुरसिखां चले सदा नाल, एथे ओथे संग रखाईआ। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप कूड़ा वज्जे ताल, साची चोट ना कोए लगाईआ। जीव

६७३ १२

जंत साध सन्त होए बेहाल, बिहबल रोवे सर्ब लोकाईआ। नाम वस्त ना कोए धन माल, खाली झोली ना कोए भराईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। साची दिसे ना कोई धर्मसाल, गुरदर मन्दिर मस्जिद मढ्ढ शिवदुआले कूक कूक रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस करे निरँकार, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता फेरी पाइंदा। ठांडा सीता खेल करे न्यार, अमृत मेघ मेघ बरसाइंदा। पतित पुनीता वेखे वेखणहार, हस्त कीटा खोज खोजाइंदा। नाउँ जणाए अनडीठा विच संसार, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। जुग जुग कार करे भगवान, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी वेखे आण, वेस अवल्ला रूप धराईआ। भगत भगवन्त दे ज्ञान, गोझ ज्ञान दए समझाईआ। सन्त सज्जण देवे माण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुरमुख बणाए चतुर सुजान, सुघड़ आपणा पर्दा लाहीआ। गुरसिखां देवे इक्को दान, नाम निधाना झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखे आण, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाए गाण, गीत गोबिन्द गोबिन्द अलाईआ। भेव खुलाए शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव खुलाईआ। जुग जुग खोले आपणा भेव, अनुभव आपणी धार जणाइंदा। लेखा जाणे करोड़ तेतीसा देवी देव, सुरपति आपणा बन्धन पाइंदा। आदि जुगादी अलख अभेव, अगोचर आपणी खेल कराइंदा। हँ ब्रह्म आत्म परमात्म देवे मेव, सो पुरख निरँजण वस्त अमोलक झोली पाइंदा। नाम जपाए बिन रसना जिहव, बत्ती दन्द ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग जुग राह चलाए मीत, मित्र प्यारे वड वड्याईआ। सतिजुग चलाई आपणी रीत, कलयुग करी कूड़ कुड़माईआ। सदी चौधवीं गए बीत, चौदां तबक देण दुहाईआ। नेत्र रोवण मुल्ला शेख़ मुसायक मसीत, मुसल्ला हक़ ना कोए विछाईआ। परवरदिगार ना कोए प्रीत, हक़ ज़नाब ना कोए मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ चलाईआ। जुग जुग चलाए आपणा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा । कलयुग अन्तिम करे सच न्याउँ, साचे तख्त आसण लाइंदा। भगत भगवन्त उठाए फड़ फड़ बांहों, नेत्र लोचण नैण इक्क खुलाइंदा। जीव जंत हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाइंदा। आपे पिता आपे माउँ, पिता पूत खेल खिलाइंदा। वेखणहारा काया खेड़ा नगर ग्राउँ, साढे तिन्न हत्थ खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग

६७४
१२

आपणा भेव खुल्हाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कार, हरि करता आप कराईआ। कलयुग अन्तिम करे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया दए निवार, जूठ झूठ दए मिटाईआ। सच सुच्च सति विहार, सति सतिवादी आप जणाईआ। आत्म परमात्म इक्क प्यार, परम पुरख दए समझाईआ। सोहँ ढोला विच संसार, नौ खण्ड पृथ्मी दए समझाईआ। अन्तिम बोला एकँकार, एका घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धन्दे आपे लाईआ। जुग चौकड़ी लाए धन्दे, साची करनी आप कराइंदा। लख चुरासी वेखणहारा जीव जंत खोटे बन्दे, गृह गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। गुरमुख गुरसिख दीन दयाल ठाकर स्वामी सदा बख्शंदे, बख्शिश आपणी आप कराइंदा। आत्म परमात्म देवे इक्क अनन्दे, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्दे, जोती जोत डगमगाइंदा। लेखा जाणे नव नव खण्डे, नौ नौ आपणा राह वखाइंदा। माया ममता हउमे हंगता कलयुग जीव अन्धे, अज्ञान अन्धेर ना कोए चुकाइंदा। बजर कपाटी ना कोई तोड़े जंदे, दस्म दुआरी कुण्डा कोए ना लाहइंदा। अमृत जाम ना प्याए कोई ठंडे, निझर झिरना ना कोई झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी अन्तिम कल, हरि करता आप कराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा आया वल छल, अछल छलधारी वेस वटाईआ। जोधा सूरबीर वसणहारा महल अटल, उच्च मुनार डेरा लाईआ। सच संदेस नर नरेश एकँकार आपणा घल्ल, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग लेखा दए चुकाईआ। कलयुग लेखा चुकाए नरायण, नर हरि आपणी दया कमाइंदा। हरि की महिमा कोए ना सके कहिण, रसना कह कह पन्ध ना कोए मुकाइंदा। लख चुरासी अन्तिम खाए लाड़ी मौत डैण, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। नाता तुट्टे मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण संग ना कोए रखाइंदा। जन भगतां श्री भगवान आपे आए लैण, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। दरस देवे एका नैण, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग जाए लग, सतिगुर पूरा आप लगाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे जग, पंज तत्त ना कोए लड़ाईआ। मन वासना ना रहे कग, कूड़ी क्रिया ना कोए वखाईआ। नौ दुआरे पार हद्द, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। विष्नूं विश्व बणाए साची यद्द, ज़ात पात वरन गोत रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म लडाए लड, ब्रह्म पारब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। ईश जीव पाए गंढ, जगदीस एका बन्धन पाईआ। गीत सुहागी गाए छन्द, सो पुरख निरँजण एका ढोला रिहा सुणाईआ। हँ ब्रह्म इक्क अनन्द, निजानंद रहे रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह वखाईआ। जुग

जुग राह वखाए एक, एकँकारा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम मिटे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग साचे देवे टेक, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत भगवन्त बुध करे बिबेक, विवेकी आपणा रंग रंगाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। सृष्ट सबाई करे हेत, मित्र प्यारा वेख वखाइंदा। जन भगतां देवे आपणा भेत, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। सन्त सुहेले आपे वेख, पेख पेख खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वड्याइंदा। साचा राह वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। कलयुग पार किनारा अन्तिम हद्द, हदूद अवर ना कोए वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान दर दर सद्द, सच संदेसा दए सुणाईआ। कलयुग अन्तिम जाए लद, थिर कोए रहिण ना पाईआ। खाली दिसण काया हड्ड, हरि नाम ना कोए दिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दए वखाल, बेपरवाह खेल कराइंदा। सच ना दिसे कोई धर्मसाल, धर्म दुआर ना कोए सुहाइंदा। नव नौ चार होण बेहाल, बिहबल रूप सर्ब वखाइंदा। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा डंक वजाइंदा। गुरमुख विरला घाले घाल, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। सतिजुग साचा उठे लाल, धरनी धरत धवल गोद आप टिकाइंदा। पतिपरमेश्वर करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। सोहँ शब्द करे दलाल, आत्म परमात्म मेला मेल मिलाइंदा। नाता तुट्टे शाह कंगाल, ऊँच नीच एका घर वखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी इक्क धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाइंदा। धर्म दुआरा इक्को इक्क, एकँकारा दए जणाईआ। चार वरन पाए भिख, बरन अठारां संग मिलाईआ। सतिजुग लेखा देवे लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को पित, एकँकारा सच्चा माहीआ। करे खेल नित नवित, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम कर कर हित, भगत भगवन्त लए जगाईआ। ना कोई वार ना कोई थिर, घड़ी पल ना वंड वखाईआ। अमृत आत्म देवे सित, सिंच क्यारी हरी आप कराईआ। आपणे मिलण दी आपे बिध, सतिगुर पूरा दए समझाईआ। माण गंवाए नौ निध अठारां सिद्ध, अठ दस ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा दए लगाईआ। सतिजुग साचा लग्गे मात, मातर भूंमी आप वड्याइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी धार चलाइंदा। प्रगट होए साख्यात, निरगुण निरगुण जोती जाता डगमगाइंदा। पूरा करे भविख्त वाक्, वेद व्यासा लिख्या लेख लेखे लाइंदा। पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत देवे दात, दाता दानी वेख वखाइंदा। ईसा देवणहार निजात, परवरदिगार फेरा पाइंदा। मुहम्मद सुणाए बातन बात, गुपत ज़ाहर वेख वखाइंदा।

९७६ १२

नानक गोबिन्द पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। जन भगतां होए दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। कलयुग अन्तिम निरगुण जोत कर प्रकाश, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। गुरमुखां लेखे लाए पवण स्वास, पवण उनन्जा मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी देवे दान, सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, लख चुरासी साचा सोहला सोहँ ढोला आत्म परमात्म परमात्म आत्म आप जणाइंदा।

✳ ६ अस्सू २०१६ बिक्रमी जीत सिँघ दे गृह डविडा रिहाणा ✳

किरपा करे पुरख समरथ, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। हरिजन रखे दे कर हथ्थ, सीस जगदीस आप टिकाईआ। नाम निधान देवे वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। अमृत आत्म देवे रस, निझर झिरना सीर झिराईआ। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, जोत निरँजण नूर रुशनाईआ। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, माणस जन्म लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख समरथ हरि दीन दयाला, दीनन आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी खेल निराला, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो प्रधाना, लोकमात वेख वखाइंदा। बोध अगाधी शब्द ज्ञाना, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाइंदा। जीव जंत लख चुरासी साध सन्त देवे दाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। समरथ पुरख पुरख बेअन्त, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर महिमा अगणत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाउँ निरँकारा देवे मंत, एकँकारा करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, हरि सज्जण लए उठाईआ। मेल मिलाए भगत भगवन्त, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुखां तोड़े गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क दरसाईआ। गुरसिख माण दवाए जीव जंत, जीवण जुगत जगत जणाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी कार आप कराईआ। समरथ पुरख हरि निरँकारा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। पीर पैग़म्बर दे अधारा, मुल्ला शेख़ मुसायक आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार खोल्ह किवाड़ा, चौदां विद्या राह चलाइंदा। चौदां तबक एका नाअरा, चौदां लोक नाद वजाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां सच अखाड़ा, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। बोध अगाध नाम निधान बोल जैकारा, आपणा मन्त्र आप पढ़ाइंदा। सतिजुग

त्रेता द्वापर वेख्या वारो वारा, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणी करनी आप कराइंदा। समरथ पुरख हरि बेअन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सतिजुग सच जणाए मंत, मन्त्र इक्को इक्क पढ़ाईआ। लख चुरासी वेखे जीव जंत, घट घट अन्तर फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। समरथ पुरख हरि शहिनशाह, सचखण्ड दवारे आसण लाइंदा। थिर घर दरबारा आप खुल्ला, सुत दुलारा सोभा पाइंदा। सुन्न अगम्म डेरा ढाह, धूआँधार मेट मिटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटा, सुत अनादी नाउँ धराइंदा। त्रैगुण माया झोली पा, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। आत्म परमात्म खेले खेल सहिज सुभा, लख चुरासी अंदर डेरा लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, ब्रह्म आपणे अंग लगाइंदा। करे खेल दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेस वटा, वेस अवल्ला आप धराइंदा। पंज तत्त काया कोए दिसे ना, तत्तव तत्त ना कोए नचाइंदा। शब्द अगम्मी एका गा, साचा नाअरा आपे लाइंदा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द दए पढ़ा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर दरबार लए मंगा, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। चार जुग दा लेखा मंगे थाउँ थाँ, पूरब लहिणा वेख वखाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन लए जगा, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा भेव खुल्लाइंदा। समरथ पुरख भेव अवल्ला, एकँकारा आप खुल्लाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, दरगाह साची डेरा लाईआ। पावे सार जलां थलां, जल थल महीअल रिहा समाईआ। कलयुग अन्तिम नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सति सतिवादी फड़ाए एका पल्ला, पल्लू एका नाम वखाईआ। जोती शब्दी निरगुण धारा आपे रल्ला, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादि अछल अछला, वल छल धारी खेल रचाईआ। वसणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल्ला, समुंद सागर खोज खोजाईआ। सति संदेस नर नरेश दो जहान एका घल्ला, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। समरथ पुरख श्री भगवान, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण नौजवान, बिरध बाल ना रूप वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, मेहर नज़र बेनज़ीर इक्क उठाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। श्री भगवान सच निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। अबिनाशी करता वेखणहारा मार ध्यान, अनुभव आपणी खेल रचाइंदा। पारब्रह्म भूपत भूप राज राजान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, हुक्म हाकम

आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आण, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। नाम डंका वजाए दो जहान, लोआं पुरीआं आप उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत सन्त होए हैरान, हरि जू की की खेल कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान नैण शरमाण, खाणी बाणी नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, करे खेल श्री भगवान, आपणा बल आप रखाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे विच जहान, माया ममता हउमे हंगता मिटे निशान, सच सुच्च इक्क वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ आपणा खेल आप कराइंदा। समरथ पुरख बेपरवाह, बेअन्त वडी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा लेखा दए समझा, सति सति सति दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेला लए मिला, मिल मिल आपणा रंग रंगाईआ। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म ढोला एका गा, काया चोला दए बदलाईआ। तोला बणया शहिनशाह, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल अपारा, कलयुग अन्त अन्त कराइंदा। प्रगट हो विच संसारा, संसार सागर खोज खोजाइंदा। लख चुरासी वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। कागद कलम शाही लिख लिख करे पुकारा, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। सिफ्त सलाही हरि भण्डारा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त विच कदे ना आइंदा। जुगा जुगन्तर करे कराए साची कारा, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाइंदा। नव नौ चार लेखा जाणे अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा खेल आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, समरथ आपणा पर्दा आप उठाइंदा। समरथ पुरख आपणा पर्दा चुक्क, हरि आपणा भेव खुल्हाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जो बैठा रिहा लुक, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। मुकामे हक़ परवरदिगार नूर इलाही करे खेल अदिभुत, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। गृह मन्दिर अंदर महल अटल उच्च मुनार सच महिराबे आपे उठ, आप आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, समरथ आपणी कल आप वरताईआ। वरते कल अकल कलधार, कलवन्ता भेव ना आइंदा। कल कल्की लए अवतार, कलयुग लेखा आप मुकाइंदा । सम्बल वसे धाम न्यार, बंक दुआरा इक्क वड्याइंदा। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती सोभा पाइंदा। अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। अनहद नाद शब्द धुन्कार, धुंन आत्मक राग सुणाइंदा। सतिजुग सच करे विहार, सति सतिवादी खेल कराइंदा। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। आत्मा परमात्म मेला मेले आण, दूई द्वैती पर्दा आप चुकाइंदा। साची सेजा कर परवान, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, समरथ आपणा रंग रंगाइंदा। समरथ पुरख आपणा रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। आत्म सेजा वेख पलँग, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। गुरमुख गुरसिख अठ्ठे पहर वजाए मृदंग, नाम मृदंगा हथ्थ उठाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, निज नेत्र कर रुशनाईआ। जन्म जुग दी टुट्टी गंढु, आपणा बन्धन पाईआ। गीत सुहागी सुणाए छन्द, सोहँ ढोला एका गाईआ। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खोजाईआ। ठाकर स्वामी गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, बेअन्त बेअन्त बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। कलयुग अन्तिम अन्तिम मेला, हरि अन्तशकरण वेख वखाइंदा। लेखा जाणे गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द खेल कराइंदा। एथे ओथे दो जहान सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। जुगा जुगन्तर जानणहारा साचा वेला, वार थित वंड ना कोए वंडाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। कटणहारा राए धर्म दी जेला, लख चुरासी फंद कटाइंदा। गुरसिख सतिगुर गुर गुर मेला, कर किरपा आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख वखाए एका घर, घर मन्दिर इक्क सुहाइंदा।

✳ ६ अस्सू २०१६ बिक्रमी केसर सिँघ दे गृह डल्लेवाल ज़िला जलन्धर ✳

चौथे जुग दया कमा, चार वरन खोज खोजाइंदा। चौथे जुग वेस वटा, चारो कुण्ट फोल फोलाइंदा। चौथे जुग फेरा पा, नौ खण्ड पृथ्मी चरनां हेठ दबाइंदा। चौथे जुग जोत जगा, जगत अन्धेरा अन्ध मिटाइंदा। चौथे जुग चोग चुगा, गुरमुख गुरसिख वस्त अमोलक झोली पाइंदा। चौथे जुग जोग कमा, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। चौथे जुग रोग मिटा, जन्म मरन फंद कटाइंदा। चौथे जुग संजोग करा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा । चौथे जुग लोक परलोक डेरा ढाह, ब्रह्मण्ड खण्ड भेव चुकाइंदा। चौथे जुग सच सलोक इक्क सुणा, साचा सोहला आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। चौथे जुग खेल अपारा, हरि करता आप कराइंदा। चौथे जुग हो त्यारा, त्रैगुण आपणा वेस वटाइंदा। चौथे जुग भर भण्डारा, जन भगतां आप वरताइंदा। चौथे जुग सच प्यारा, परम पुरख प्रभ आप कमाइंदा। चौथे जुग बण वणजारा, साचा हट्ट इक्क खुल्हाइंदा। चौथे जुग गुरमुख गुरसिख दए अधारा, मेहरवान आपणी नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। चौथे जुग लाए भाग, वडभागी दया कमाईआ। चौथे जुग दीपक जोत जगाए चिराग़, तेल बाती ना कोए पाईआ। चौथे जुग जन भगतां बुझाए

तृष्ना आग, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। चौथे जुग हँस बणाए काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। चौथे जुग मेल मिलाए कन्त सुहाग, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। चौथे जुग दुरमति मैल धोवे दाग़, पतित पापी पार कराईआ। चौथे जुग लख चुरासी विच्चों काढ, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। चौथे जुग ग़रीब निमाणयां करे लाड, शाह सुल्तानां खाक मिलाईआ। चौथे जुग शब्द अगम्मी मारे वाज, रातीं सुत्तयां लए जगाईआ। चौथे जुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। चौथे जुग किरपा धार, दीनन आपणी दया कमाइंदा। चौथे जुग पावे सार, महांसारथी वेस वटाइंदा। चौथे जुग करे ख़बरदार, गुरसिख सोए आप जगाइंदा। चौथे जुग चरन कँवल कँवल चरन दे प्यार, सच प्रीती इक्क समझाइंदा। चौथे जुग वेखे विगसे वेखणहार, नेत्र नैण जगत नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे जुग रंग रंगाइंदा। चौथे जुग रंग रंगीला, हरि सतिगुर आप रंगाइंदा। चौथे जुग छैल छबीला, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। चौथे जुग लेखा जाणे काला पीला, दोए दोए धार बन्धन पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप मिलाए कर कर हीला, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। चौथे जुग लहिणा देणा, हरि सतिगुर आप मुकाईआ। चौथे जुग भाणा सहिणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चौथे जुग मन्नणा कहिणा, गुर अवतार सीस झुकाईआ। चौथे जुग एका धाम बहणा, ऊँच नीच राउ रंक ना कोए वड्याईआ। चौथे जुग कूड़ी क्रिया पार वहणा, डूँघे सागर दए रुढ़ाईआ। चौथे जुग हरि का नाम सब ने इक्को लैणा, पुरख अकाल आप पढ़ाईआ। चौथे जुग जन भगतां दरस कराए नेत्र नैणां, लख चुरासी गूढ़ी नींद सुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चौथे जुग चाढ़े चन्द, चन्द चांदनी आप चमकाइंदा। चौथे जुग हो बख्शंद, बख्शिश आपणी आप कमाइंदा। चौथे जुग टुट्टी गंढ, गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा। चौथे जुग गाए छन्द, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। चौथे जुग देवे अनन्द, परमानंद आप चखाइंदा। चौथे जुग ख़ुशी करे बन्द बन्द, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चौथे जुग लहिणा देणा चुक्के बत्ती दन्द, आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका रस वखाइंदा। चौथे जुग करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। चौथे जुग लेखा जाणे जीव जंत लख चुरासी वरभण्ड, वरभण्डी खोज खोजाइंदा। चौथे जुग पावे सार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहइंदा। चौथे जुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना इक्को वंड, गृह गृह आपणी वस्त टिकाइंदा। चौथे जुग नाम अगम्म, हरि पुरख निरँजण आप वरताईआ। चौथे जुग लेखा जाणे दमा दम, पवण स्वासां रिहा समाईआ।

९८१
१२

चौथे जुग करे कराए आपणा कम्म, करता पुरख वड वड्याईआ। चौथे जुग जो घड़या सो देवे भन्न, थिर कोए रहिण ना पाईआ। चौथे जुग गुरमुख चढ़ाए साचे चन्न, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। चौथे जुग भगत भगवन्त कहिण धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। चौथे जुग माया ममता देवे डंन, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। चौथे जुग ग़रीब निमाणयां बेड़ा बन्न्ह, आपणे कंध उठाईआ। चौथे जुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचा इक्क सुहाईआ। चौथे जुग बन्न्हे बेड़ा, खेवट खेटा फेरा पाइंदा। चौथे जुग करे हक़ नबेड़ा, हक़ हक़ीक़त खोज खोजाइंदा। चौथे जुग चुकाए झेड़ा, पंज तत्त ना कोए लड़ाइंदा। चौथे जुग गुरसिख वसाए इक्को खेड़ा, जिस गृह आपणा आसण लाइंदा। चौथे युग भाण्डा भरम भउ ढाए ढेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कराइंदा। चौथे युग खेल अपारा, हरि अपरम्पर आप कराईआ। चौथे युग दए सहारा, गुरसिख साचे पार कराईआ। चौथे युग विष्न ब्रह्म शिव नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चौथे युग राह तक्कण पीर पैग़म्बर परवरदिगारा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। चौथे युग सीस झुकावण गुर अवतारा, चरन धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। चौथे युग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। चौथे युग खेल करतार, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण निरगुण लै अवतार, जोती जाता वेस वटाइंदा। तख्त निवासी शाहकार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। दो जहानां कर ख़बरदार, आलस निंद्रा सर्ब गुवाइंदा। लोकमात खेल अपार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। गुरमुख गुरसिख लए उठाल, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, सच दलाली आप कमाइंदा। नाम ख़ज़ाना देवे हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप जणाइंदा। चौथे जुग करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। चौथे युग गुरसिखां पूरी करे घाल, कीती घाल लेखे पाइंदा। चौथे युग सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे युग खेल कराइंदा। चौथे युग खेल अवल्ला, आलमीन आप कराइंदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, चौदां तबक खोज खोजाइंदा। बिस्मिल रूप हो हो हर घट अंदर रल्ला, नूर नूर विच टिकाइंदा। कलमा अमाम एका घल्ला, कायनात आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे जग, चौथे युग फेरा पाईआ। चौथे युग लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सृष्ट सबाई रही मच्च, नव नौ दए दुहाईआ। कूड़ी क्रिया घर घर अंदर गई रच, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। नजर ना आए कोए सच्च, सच वस्त ना कोए वखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण फेरा, सो पुरख निरँजण आपे पाइंदा। चौथे युग ढाहे ढेरा, नव नौ खेड़ा नज़र कोए ना आइंदा। आपणा नाउँ जपाए तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा एका बन्धन पाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पाए घेरा, फड़ फड़ आपणे चरन बहाइंदा। हुक्म सुणाए सिँघ शेरा, शेर आपणी भबक लगाइंदा। जन भगतां उपर कर कर मेहरां, मेहरवान आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चौथा युग वेख वखाइंदा। चौथा युग वेखण आया, पारब्रह्म करतार। निरगुण आपणा नाउँ धराया, निहकलंक लै अवतार। लोआं पुरीआं खोज खोजाया, ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार। गुर अवतार लए उठाया, पीर पैग़म्बर रखे नाल। भगत भगवन्त लए जगाया, साचा देवे इक्क हुलार। राउ रंकां डेरा ढाहया, लेखा जाणे शाह कंगाल। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाया, आत्म परमात्म बण दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे युग करे खेल नराल। चौथे युग खेल निराला, जुग करता आप कराईआ। चौथे युग राह सुखाला, जग जीवण दाता आप जणाईआ। चौथे युग देवे नाम सच्चा धन माला, धन दौलत ना कोए वड्याईआ। चौथे युग गुरमुख वेखे साचे लाला, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। चौथे युग प्रगट हो हरि गोपाला, गोबिन्द आपणा फेरा पाईआ। चौथे युग नौ खण्ड पृथ्मी वखाए इक्को सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक्क बणाईआ। चौथे युग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। चौथे युग करनी कर, हरि करता खेल कराइंदा। वरन बरन जाए हर, ज़ात पात मेट मिटाइंदा। जीव जंत इक्क सरनाई जाए पड़, पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। एका अक्खर नाम लैण पढ़, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। हँ ब्रह्म बंधाए लड़, पारब्रह्म आपणी गंढु पुवाइंदा। दरस दिखाए गृह मन्दिर अंदर खड़, स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। कर प्रकाश बहत्तर नड़, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। लेखा जाणे चोटी जड़, गुरमुख आपणे अंग लगाइंदा। डूँग्घी कंदर उच्चे टिल्ले साचे पर्बत आपे चढ़, महल अटल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे युग वंड वंडाइंदा। चौथे युग वंडे वंड, वंडणहारा इक्क अख्वाईआ। जन भगतां देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाईआ। नाम सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे इक्को दान, आत्म परामतम परमात्म आत्म मेला आप मिलाईआ।

✳ ६ अस्सू २०१६ बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह डलेवाल ज़िला जलन्धर ✳

साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सचखण्ड साची खुशी मनाईआ। सच संदेसा देवे एकँकार, इक्क इकल्ला आप सुणाईआ। सुत दुलारा करे ख़बरदार, पूत सपूता शब्द जणाईआ। दो जहानां पावे सार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण करे खेल अपार, अपरम्पर आपणी कार कमाईआ। हरि पुरख निरँजण कर त्यार, साचा लेखा दए जणाईआ। एकँकारा वेखे विगसे पावे सार, दूसर संग ना कोए रलाईआ। आदि निरँजण कर उज्यार, एका नूर दए दरसाईआ। अबिनाशी करता हो त्यार, त्रैभवण धनी लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। अबिनाशी करता दए हुलार, ब्रह्मण्ड खण्ड आप हिलाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दा लेखा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचे तख्त श्री भगवान, तख्त निवासी आसण लाइंदा। शाहो भूप राज राजान, सच संदेसा हुक्म सुणाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आण, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। शब्द सुत मार ध्यान, वड ध्यानी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल करे करतार, हरि आपणी दया कमाईआ। तख्त निवासी हो उज्यार, शाहो भूप आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सच संदेसा देवे एका वार, इक्क इकल्ला करे पढ़ाईआ। मंडल मण्डप सोहे सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। ग़रीब निवाजा हो त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाया। आदि बणाई आपणी बणत, अन्त आपे वेख वखाया। जुग जुग लेखा जाणे साध सन्त, तख्त निवासी रंग रंगाया। जीव बणाए लख चुरासी जीव जंत, आत्म परमात्म वंड वंडाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मेला नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाया। गुरमुख गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग रंगीला एका रंग वखाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द अनादि सुणाए मणीआ मंत, नाद अनादी नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहाया। सचखण्ड साचा सोहे दरबार, दर दरवाज़े वज्जे वधाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, शाह पातशाह आसण लाईआ। तेई अवतार सद्दे चरन कँवल कँवल चरन कर प्यार, नर नरेशा इक्क संदेसा आप सुणाईआ। वेखे विगसे पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अगम्म अथाह, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। सच दरबारा इक्क लगा, साची करनी आप कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पा, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाइंदा। रवि ससि नूर

६८४ १२

चमका, जोती जोत डगमगाइंदा। गुर अवतारां सेवा ला, पीर पैग़म्बर हुक्म सुणाइंदा। भगत भगवन्त लए उठा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सन्त साजण लए जगा, जीवण जुगत आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी झुलावणहारा जगत निशान, सच निशाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचा खेल कराइंदा। सचखण्ड दवारे सच सिँघासण, सतिगुर पूरा आसण लाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी आपणी धार चलाईआ। लेखा जाणे पृथमी आकाशन, आकाश आकाशां वेख वखाईआ। लख चुरासी करे दासी दासण, गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्म मनाईआ । घट घट अंदर करे वासण, निरगुण सरगुण अंदर डेरा लाईआ। एका नूर करे प्रकाशन, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड सुहाए शाहो भूप, भूपत आपणी दया कमाइंदा। ना कोई रेख रंग ना रूप, भेख नज़र कोए ना आइंदा। आदि जुगादी सति सरूप, सति सतिवादी वेस वटाइंदा। वसणहारा चारे कूट, दो जहानां डंक वजाइंदा। कलयुग अन्तिम मेटे झूठ, कूड़ी क्रिया मोह तुड़ाइंदा। साहिब सतिगुर एका तुट्ठ, दीनन आपणी दया कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपे उठ, दो जहानां पाए लुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुलारा इक्क लगाइंदा। सच हुलारा सचखण्ड, हरि साचा
९८५ आप लगाईआ। आदि जुगादि वंडणहारा वंड, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। लख चुरासी देवणहारा दंड, वेखणहारा थाउँ ९८५
थाईंआ। गीत सुहागी सुणावणहार छन्द, गुर अवतार करे पढ़ाईआ। निज आत्म देवणहारा निजानंद, घर घर डेरा रिहा
१२ लाईआ। खड़कावणहारा चण्ड प्रचण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ । लख चुरासी देवणहारा दंड, कूड़ी क्रिया रिहा खपाईआ। १२
भरम भुलेखा ढावणहारा कंध, दूई द्वैती दए मिटाईआ। वसणहारा सदा संग, सगला संग आप निभाईआ। नाम निधाना वजावणहारा मृदंग, अनहद नादी नाद वजाईआ। आत्म सरोवर वखाए साची गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मुख शरमाईआ। गीत सुहागी सुणावणहारा छन्द, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। कलयुग करनहारा खण्ड खण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारे चढ़या चा, प्रभ साचा खुशी मनाइंदा। गुर अवतार लए बुला, पीर पैग़म्बर नाल रखाइंदा। उठ उठ सारे वेखो विच जहां, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। कोई ना जाणे मेरा नाँ, नाउँ निरँकारा नज़र किसे ना आइंदा। कोई खाए सूर कोई खाए गां, शरअ हक़ ना कोए जणाइंदा। चार कुण्ट अन्धेरा गया छा, गुर का शब्द साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। नाता तुट्टा पुत्रां मां, पिता पूत ना कोए सुहाइंदा। नार कन्त ना रही हंढा, विभचार सर्ब कमाइंदा। जीव जंत साध सन्त मारन धाह, सति सन्तोख नज़र कोए ना आइंदा। अठसठ

तीर्थ रोवण नेत्र नैणां नीर रहे वहा, निर्मल जाम ना कोए प्याइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत डूँघी कंदर समुंद सागर रहे कुरला, सन्त साजण संग ना कोए रखाइंदा। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कोए ना पकड़े किसे बांह, सिर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। नाता जुड़या पुत्रां मां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी कार कमाइंदा। सचखण्ड दवारे साचे चढ़, तख्त निवासी वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ा गढ़, चारों कुण्ट घेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए डर, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। शरअ अंदर गए सड़, शरीअत लेखा ना कोए चुकाईआ। जीवत जीवत जीवत गए मर, मर मर फेर फेरा कोए ना पाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आपणा कीता लैण भर, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बचया कोए रहिण ना पाईआ। लेखा देणा पए नारी नर, नर नरायण लेवणहारा साचा माहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल उच्च महल्ले वेखे खड़, दो जहानां नैण उठाईआ। कलयुग काला दरवेश लए फड़, नर नरैण हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणी रचण वखाईआ। सचखण्ड दवारे खेल न्यारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहारा नज़र ना आइंदा। आदि जुगादी लै अवतारा, गुर गुर रूप वटाइंदा। नाम अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार अलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखारा, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाइंदा। अञ्जील कुराना दए सहारा, खाणी बाणी भेव चुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर प्यारा, पंज तत्त काया आप हंढाइंदा। आत्म जोती नूर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक राग सुणाइंदा। सच संदेसा देवे वारो वारा, लोक परलोक आपे गाइंदा। अवण गवण पावे सारा, त्रैभवण खोज खोजाइंदा। चौदां लोक बण वणजारा, हरि जू इक्को हट्ट खुल्हाइंदा। चौदां तबकां वेख अखाड़ा, ज़िमीं असमानां नाच नचाइंदा। शब्द अगम्मी एका नाअरा, हक़ हक़ीक़त वेख वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे वेखणहारा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे साचे खड़, दो जहानां खिड़की आप खुल्हाइंदा। दो जहानां खोल्ह खिड़की, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणी किरती, किरत आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम सब दी हिली बिरती, सति सतिवादी ध्यान ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वेखे सच्चा माहीआ। सचखण्ड दवारे नेत्र खोल्ह, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा । लख चुरासी होई डोल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर ध्यान ना कोए लगाइंदा। सति नाम ना किसे कोल, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाइंदा। साधां सन्तां प्या घोल, आत्म परमात्म पर्दा ना कोए उठाइंदा। सुरती शब्दी ना जाए

कोए मौल, मौला रूप ना कोए वखाइंदा। झिरना झिरे ना अमृत नाभ कौल, कँवली नाभ ना कोए उलटाइंदा। झगड़ा प्या धरनी धरत धौल, साची वंड ना कोए वखाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर हथ्थ किसे ना आइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादी जुगा जुगन्तर आपे करे आपणा पूरा कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे वेखे रंग, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी होई नंग, हरि का नाम किसे घर नज़र ना आईआ। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ गृह गृह वजाए मृदंग, डौरू डंका हथ्थ रखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कसया तंग, चारों कुण्ट असव रिहा दौड़ाईआ। साध सन्त होए बैठे नंग, त्रैगुण पल्ला सके ना कोए छुडाईआ। किसे रस ना मिले निजानंद, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। खा खा थक्के मदिरा मास गंद, जगत तृष्ना ना कोए बुझाईआ। पंच विकारा ना होए खण्ड खण्ड, नाम खण्डा तन गात्रे ना कोए लटकाईआ। जीव जंत आत्म होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। कूड़ कुड़यार होया घमंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड बैठा वेखे सच्चा माहीआ। सचखण्ड निवासी कर ध्यान, दो जहानां वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल जगत शैतान, शरीअत शरअ नाल टकराइंदा। नव नौ चार बे ईमान, बेवा रूप सर्ब वखाइंदा। हरि का नाम ना कोए निशान, कूड़ निशाना सर्ब झुलाइंदा। भरमे भुल्ले राज राजान, शाह सुल्तान शहिनशाह सच ना कोए अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा हरि, निज नेत्र वेख वखाइंदा। निज नेत्र हरि जू आपणा खोल्हे, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी तोलणहारा साचा तोले, तोला इक्को बेपरवाहीआ। लख चुरासी पंज तत्त काया चोली वेखे डोले, अडोल बैठा सच्चा माहीआ। डूँघी भँवरी काया कवरी आपे फोले, गृह गृह आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, हरि सतिगुर आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला, दो जहानां खोज खोजाइंदा। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर निराकार करे खेल अछल अछला, वल छल धारी भेव कोए ना पाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सच संदेस सतिजुग त्रेता द्वापर घल्ला, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम निहकलंक सब दा फड़े पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्हे अक्ख, कलयुग आखर वेख वखाईआ। लख चुरासी रिहा तक्क, पर्दा सब दा रिहा चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो वसदा रिहा वक्ख, वक्खरी आपणी धार चलाईआ। कलयुग अन्तिम होए प्रतख, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। शब्द अगम्मी बोल

६८७ १२

अलख, अलख अलखना एक अलख जगाईआ। सर्ब कला हो समरथ, समरथ आपणी धार जणाईआ। भगत भगवन्त लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेल मिलाए नस्स नस्स, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दरस दिखाए हस्स हस्स, कँवल नैण सच्चा माहीआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। गुरसिखां गाए आपे जस, जस वेद पुराण गा ना सके राईआ। प्रेम प्यार अंदर फस, नित नवित वेस वटाईआ। साचा मार्ग जाए दस्स, गुरमति कर पढ़ाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश खोज खोजाईआ। लेखे लाए रत्ती रत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। नेत्र नैण खोल्ह निरँकार, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे वेखणहार, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। सृष्ट सबाई हाहाकार, सति सन्तोख ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। जगत स्यासत मारे मार, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा हुक्म वरताइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवाना, एका हुक्म जणाईआ। कूड़ी क्रिया वेख निशाना, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। कलयुग सुत वड बलवाना, आपणी मर्दानगी रिहा जणाईआ। चार कुण्ट करे वैराना, नव नौ खेह उडाईआ। कूड़ी क्रिया दिता पैग़ामा, घर घर नाद सुणाईआ। आत्म परमात्म भुलाया रामा, ईश जीव ना कोए चतुराईआ। हउमे हंगता गाया गाणा, रसना जिह्वा कर हल्काईआ। मदिरा मास पीणा खाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग रिहा सलाहीआ। कलयुग तेरा सच विहारा, हरि सतिगुर आप सलाहया। आपणी करनी करी विच संसारा, संसारी कोए नज़र ना आया। मूर्ख मुग्ध करे गंवारा, मनमति पर्दा पाया। नव नौ होया धूआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा लए लगाया। तेरा लेखा अन्त लगाए हरि, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। चल के आउणा साचे दर, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। आपणी करनी लई कर, अग्गे करता मार्ग पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए फड़, लेखा सब दा आप चुकाइंदा। निरभओ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए वखाइंदा। सरन सरनाई आ के पड़, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। एका चौका पूरा वर, चौदस चन्द चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा सुणया कन्न, कलयुग खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी गया मन्न, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। रसना कहे धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। तूं दाता जननी जण, हउँ बालक पूत सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर अग्गे सीस झुकाईआ। कलयुग उठ हो त्यार, त्रैगुण अतीता आप जणाइंदा। लोकमात अन्तिम वार, वेला अन्त समझाइंदा।

नाता तुट्टे विच संसार, पुरख बिधाता आप तुड़ाइंदा। पूरब लहिणा दए निवार, भाणा सहिणा हुक्म मनाइंदा । नेत्र नैणां दए वखाल, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी हरि जू ठाकर, आपणी दया कमाईआ। कलयुग तेरा वेख्या सागर, डूँघी भँवरी फोल फोलाईआ। लख चुरासी काया गागर, माटी काची थिर रहिण ना पाईआ। कोई ना मिल्या सच सौदागर, कूड़ी क्रिया जगत लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे आदर, मन्नया हुक्म सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कलयुग कूड़े चढ़या चा, चाओ घनेरा इक्क रखाया। पुरख अबिनाशी मिल्या अन्त मलाह, मेरा डेरा लए तराया। पिछले बख्शे सर्ब गुनाह, अग्गे मार्ग दए समझाया। मुख धोवे काली छाह, निर्मल नीर दए प्याया। मेरा दुखड़ा दए मिटा, दर्दी दर्द वंडाया। सुख सहिजे जाए समा, सांतक सति सति कराया। आपणी गोदी लए बहा, समरथ पुरख बेपरवाहया। पतित पापी रिहा तरा, पतित पावन आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाया। कलयुग उठ उठ नेत्र रो, नैणां दए दुहाईआ। कवण बिध पारब्रह्म चरनी जावां छोह, सच वस्त पल्लू कोई ना राईआ। आपणा आप ल्या कोह, रत्ती रत्त रत्त सुकाईआ। चार कुण्ट ना दिसे कोई लो, जगत अन्धेरा रिहा छाईआ। साहिब सतिगुर दी कोई ना दस्से साची सो, सो पुरख निरँजण ना कोए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया बीज दिता बो, कलयुग बूटा अन्त रिहा लहराईआ। कवण वस्त लै के ढोआ जावां ढो, प्रभ चरनां भेंट चढ़ाईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा उठ के वेखे सच नज़र ना आए को, कूड़ कुड़यारा नज़री आईआ । माया ममता लग्गा मोह, त्रैगुण फंद ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध तेरे लागां पाईंआ। पारब्रह्म प्रभ हो दयाल, कलयुग अन्त अन्त सुणाइंदा। छोटे सुत सुण लै लाल, हरि लालन रंग रंगाइंदा। तेरी सेवा काल महांकाल, महांबीर आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी बण दलाल, तेरा लेख चुकाइंदा। तेरा फल ना किसे डाल, सिंमल चारों कुण्ट नज़री आइंदा। ना कोए जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त रूप ना कोई वखाइंदा। काया माटी झूठी खाल, साचा तत्त ना कोए जणाइंदा। साध सन्त होए बेहाल, हरि कन्त ना कोए मनाइंदा। पुरख अबिनाशी तेरे अन्तिम चली अवल्लड़ी चाल, आपणा भेव खुल्लाइंदा। नाता तोड़ मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले धर्मसाल, जन भगतां अंदर डेरा लाइंदा। जा के आपणा मेरे गुरमुखां दस्स हाल, हवाला आपणा आप समझाया। गुरसिख तेरे हो जाए जे नाल, तेरा लेखा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा सुणया माही, कलयुग लख

लख शुकर मनाया। चारों कुण्ट उठ उठ वेखे कवण दुआरे बणा राही, आपणा पन्ध मुकाया। कूड़ राजा कूड़ प्रजा कूड़ी शाही, कूड़ी रईयत पन्ध वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा पर्दा दे चुकाया। मेरा पर्दा लाह भगवान, कलयुग दोए जोड़ करे अरज़ोईआ। आपणे भगतां दस्स सच निशान, जिस दुआरे मिले मोहे ढोईआ। मैं मूर्ख मुग्ध अञ्याण, नेत्र नैणां रिहा रोईआ। तेरा गुरमुख चतुर सुघड़ सुजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे इक्क अरज़ोईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, मिहबान दया कमाइंदा। जिस गृह खेल करे श्री भगवान, सो गुरमुख रूप वखाइंदा। जो रसना गाए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो भगत भगवन्त इक्को भाइंदा। तिन्हां चरनी डिगीं आण, तेरा लेखा लेख चुकाइंदा। अग्गे देवे सच फ़रमान, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। निमाणयां देवणहारा माण, ग़रीबां आपणी गोद बहाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करे महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। कलयुग अन्त मिटे तेरा निशान, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सति सतिवादी बणाए सति विधान, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सृष्ट सबाई गाए एका गाण, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वखाए इक्क मकान, मन्दिर दुआरा गुरू इक्क समझाइंदा। जीव जंत साचा ढोला एका गाण, सोहँ सो आप सुणाइंदा। इष्ट देव गुर
९९० इक्क मनान, पुरख अकाल नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा आप खुल्हाइंदा। ९९०
साचा पर्दा खोल्ह भेद, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणा मुकणा चार वेद, शास्त्र सिमरत आपणी
१२ झोली पाईआ। वेखणहारा चौदां विद्या जगत कतेब, अक्खर अक्खर खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १२
किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। कलयुग उठ करे वीचार, वीचार विच हरि कदे ना आइंदा। चौदां सद कट वगार, बण वगारी सेव कमाइंदा। मुहम्मद कहे मेरा आवे परवरदिगार, अमाम अमामां फेरा पाइंदा। ईसा कहे मेरा सांझा यार, नूरी जल्वा नूर रखाइंदा। वेद व्यासा बण लिखार, ब्राह्मण गौड़ा पूत सपूता राह तकाइंदा। नानक निरगुण दस्स के गया सच विहार, निहकलंका वेस वटाइंदा। गोबिन्द कहे मेरा पिता पुरख अकाल, अकल कला अख्वाइंदा। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आसण लाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करे कमाल, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्त बणे दलाल, कल कल्की वेस वटाइंदा। सम्बल वसे सच्ची धर्मसाल, सम्बल नज़र कोए ना पाइंदा। गुरमुख गुरसिख लए उठाल, सन्त साजण आप जगाइंदा। भगतां मार्ग दए सिखाल, साचा राह इक्क जणाइंदा। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर निरगुण सरगुण चले नाल नाल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। मेरी प्रीती लग्गी निभे नाल, आदि अन्त ना कोए तुड़ाइंदा। गुरमुखां त्रैगुण

माया तोड़े जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। अन्त सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाइंदा। सरसे डुब्बे लए भाल, लख चुरासी खोज खोजाइंदा। लेखे लाए पिछली घाल, पूरब लहिणा आप मुकाइंदा। आपे चुक्क चुक्क गोदी लाल, लख लख आपणा शुकर मनाइंदा। कलयुग तेरी करे फेर संभाल, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। तेरा हल्ल करे सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी वेस वटाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। कलयुग वेखण आए तेरा तमाशा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। लख चुरासी मूर्ख मुग्ध करे हासा, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रचाए साची रासा, गोपी काहन नाच नचाईआ। भगत भगवन्त दए भरवासा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लेखा जाण त्रिलोकी नाथा, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ लए उठाईआ। सति सतिवादी सुणाए साची गाथा, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे खड़, खण्डा खड़ग इक्क चमकाईआ। खण्डा खड़ग तेज़ कटार, तीर तरकश आप उठाइंदा। ना कोई घड़े लोहार तरखाण, बाढी बणत ना कोए बणाइंदा। आपणा खेल करे श्री भगवान, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चरन कँवल करन ध्यान, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। दो जहान होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सर्ब कुरलाण, कूक कूक वास्ता सर्ब पाइंदा। तेरी महिमा गाउँदे रहे नौजवान, कलम शाही संग रखाइंदा। तेरा अन्त ना दिसया किसे निशान, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरी सिफ्त सर्ब सलाहइंदा। तेरी कोई ना सक्या कर पहचान, तेरा हुलीआ ना कोए छुपाइंदा। गुर अवतार बण के आए बाल अञ्याण, जो आया सो तेरी ओट तकाइंदा। तूं दाता दानी देवणहारा दान, अतोट अतुट वरताइंदा। कलयुग अन्त खेल महान, भगवन्त तेरा भेव कोए ना पाइंदा। कर किरपा वड मेहरवान, मेहर नज़र मंग मंगाइंदा। मेरी क्रिया कर्म ना कोई पहचान, कलयुग रो रो वास्ता पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन कँवल इक्क ध्यान, दूजी आस ना कोए रखाइंदा।

✳ १० अस्सू २०१६ बिक्रमी हज़ूरा सिँघ दे गृह गुराया ज़िला जलन्धर ✳

किरपा कर हरि निरँकार, कलयुग अन्त रिहा समझाईआ। भगत दुआरा विच संसार, एकँकारा इक्क जणाईआ। जिस गृह वसे मीत मुरार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। समरथ पुरख हो त्यार, त्रैगुण अतीता डेरा लाईआ। दो जहानां पावे

सार, त्रैभवन खोज खोजाईआ। लेखा मुकाए गुर अवतार, पूरब कोए रहिण ना पाईआ। पीर पैग़म्बर करे ख़बरदार, नेत्र नैण दए खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जो करदा आया उधार, कलयुग लहिणा दए चुकाईआ। नेत्र नैणां दए वखाल, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। सतिगुर साहिब दयाल बण दलाल, जगत दलाली इक्क कमाईआ। गुरसिख सज्जण साचे भाल, भल आपणी दए वड्याईआ। अंदर बाहर चले नाल, जीवन जुगत जगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा रिहा जणाईआ। सच दुआरा हरि निरँकार, एका एक जणाइंदा। जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त कह कह पल्लू सर्ब छुडाइंदा। जिस गृह वसे सिरजणहार, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। जिस घर देवे नाम भण्डार, सति सतिवादी आप वरताइंदा। जिस मन्दिर बोल जैकार, जै जैकारा इक्क सुणाइंदा। जिस आसण बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। सच दुआरा भगत भगवान, एका एक दृढ़ाईआ। निरगुण निरवैर झुलाए निशान, सति निशाना हथ्थ उठाईआ। करे खेल दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर हैरान, हरि जू आपणी कार कमाईआ। काग़ज़ कलम शाही कर ना सकी पहचान, बेपहचान नज़र विच ना आईआ। जुग चौकड़ी गा गा थक्के गाण, गा गा गीत ना कोए मुकाईआ। अन्तिम सब तों लेखा मंगे आण, भुल्लया कोए रहिण ना पाईआ। वसणहारा सच मकान, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। सेवा करी बण तरखाण, बाढी आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। सच दुआरा पुरख अगम्म, एका एक जणाइंदा। सति सतिवादी बेड़ा बन्न्ह, दर साचा आप खुल्हाइंदा। कर प्रकाश निरगुण चन्न, नूर नुराना डगमगाइंदा। भगत भगवान गया मन्न, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। देवण आया नाम धन्न, सच ख़ज़ाना इक्क लुटाइंदा। लेखे लाए जनणी जण, आपणी गोद बहाइंदा। नाता तुट्टा पंज तत्त तन, निरगुण निरगुण बन्धन पाइंदा। नक्क मूँह ना कोए कन्न, नेत्र अक्ख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क जणाइंदा। सच दुआर सोभावन्त, हरि कलयुग आप जणाईआ। जिस गृह वसे निरभउ कन्त, नरायण डेरा लाईआ। तिस मन्दिर महिमा अगणत, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। चरन दुआर रखे साचे सन्त, सन्त साजण मेल मिलाईआ। माणस जन्म बणाए बणत, लख चरासी पार कराईआ। इक्क पढ़ाए साचा मंत, सोहँ अक्खर आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाईआ। भगत दुआर सच महल्ला, हरि साचा सच जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक्क इकल्ला, आदि जुगादि बणाइंदा। पावे सार जला थला, समुंद सागर खोज

९९२ १२

खोजाइंदा। वेखणहारा निहचल धाम अटल्ला, अटल्ल आपणा नाउँ वड्याइंदा। सच संदेसा साचा घल्ला, कलयुग सिख्या इक्क समझाइंदा। गुरमुख साचे फड़ाए पल्ला, बिन गुरमुख हरि जू नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग कूड़ कुड़यारा नौ खण्ड पृथ्मी होया झल्ला, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क वखाइंदा। सच दुआरा सच दरबार, हरि साचा सच जणाईआ। जिस गृह हरि जू करे प्यार, भगत भगवन्त आप मिलाईआ। जिस मन्दिर खोल्ह किवाड़, आपणा कुण्डा देवे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो मन्दिर दए समझाईआ। साचा मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ, हरि सतिगुर आप जणाया। अंदर वड़ चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाया। निरगुण सरगुण पाए नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाया। दिवस रैण एका नाम रट्ट, रसना जिह्वा एका गुण वखाया। अन्तर बाहर खोल्ह हट्ट, साची वस्त आप विकाया। कर प्रकाश लट लट, अन्ध अन्धेर मिटाया। नाम अमोलक एका घत्त, सच भण्डारा आम भराया। लेखे लाए रत्ती रत्त, नाड़ बहत्तर ना कोए तपाया। बीज बीजे साचे वत, अमृत फल आप वखाया। आत्म परमात्म देवे ब्रह्म मति, मनमति दए गंवाया। सति सन्तोख देवे धीरज जत, सांतक सति सति कराया। कूड़ी क्रिया देवे मथ, नाम मधाणा हथ्थ उठाया। हउमे हंगता बुरज रिहा ढट्ठ, उच्चा टिल्ला रहिण ना पाया। चरन दुआर बणाए अठसठ, सर सरोवर माण मिटाया। जन भगतां मार्ग आपणा दस्स, दहि दिशा पन्ध चुकाया। घर मन्दिर साचे आपे वस, निरगुण मेला मेल मिलाया। जन्म जुग दी पूरी कर आस, आसा तृष्ना दए गंवाया। करी भगतां बन्द खुलास, तेरा बन्दीखाना दए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेसा सुण निरँकार, कलयुग निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। मैं जावां अन्तिम वार, दर दर खोज खोजाइंदा। चरन धूढ़ी मंगां छार, निउँ निउँ मस्तक टिक्का लाइंदा। दोए जोड़ करां पुकार, रसना जिह्वा वास्ता पाइंदा। कलयुग अन्तिम गया हार, बलहीण बल ना कोए रखाइंदा। चारों कुण्ट नाता तुट्टा सर्ब संसार, सगला संग ना कोए रखाइंदा। चार वेद गए हार, चार वरन मुख भुवाइंदा। चार यारी होई खुआर, चार खाणी संग ना कोए निभाइंदा। चारे बाणी मारे मार, पारब्रह्म ना कोए मिलाइंदा। मैं फिर फिर गया हार, हरि का राह ना कोए वखाइंदा। अवगुण भरया सर्ब संसार, गुण नज़र कोए ना आइंदा। साध सन्त रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाइंदा। उच्ची कूक कूक करन पुकार, दोए जोड़ जोड़ वास्ता सर्ब पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, जिस गृह गुरमुख डेरा लाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल निराला, अचरज आपणा खेल रचाईआ। कलयुग अन्तिम हो उजाला, नूर नुराना नूर दरसाईआ। प्रगट हो गुर गोपाला, गोबिन्द

९९३
१२

आपणी धार जणाईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, जिस गृह आपणा चरन टिकाईआ । मन का मणका फेरे माला, तसबी हथ्थ ना कोए रखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जागरत जोत जगत जगाईआ। लेखा जाण शाह कंगाला, ग़रीब निमाणे रिहा उठाईआ। देवे नाम सच्चा धन माला, धन इक्को इक्क लुटाईआ। करे कराए सदा प्रितपाला, प्रितपालक हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा जणाईआ। साचा भेव हरि जू दस्से, सचखण्ड वासी दया कमाइंदा। कलयुग क्रिया वेख वेख हस्से, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। होया मातम अन्धेरी मस्से, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। पीर पैग़म्बर फिरन नट्ठे, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार लेखा मंगण हथ्थो हथ्थे, दोए हथ्थ सर्ब उठाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साचा मार्ग सब नूं दस्से, इक्को अक्खर आप पढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम हरि निरँकार किरपा धार भगत दुआरे आपे वसे, दूसर मन्दिर ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। ना कोई मन्दिर ना कोई मट्ठ, शिवदुआला ना कोए जणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेड़ा भट्ठ, भट्ठ खेड़ा आप वखाइंदा। पुरख अकाल हो प्रगट, प्रगट आपणी धार चलाईआ। दो जहानां खोल्हे हट्ट, बण वणजारा फेरा पाईआ। लेखा जाण अठसठ, तीर्थ तट ना कोए दरसाईआ। निर्मल जोत जगे लट लट, नूरो नूर नूर रुशनाईआ।
९९४ दुरमति मैल देवे कट, गुरमुख साचे लए उठाईआ। वस्त अमोलक अंदर देवे घत, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। मेल मिलाए ९९४
कमलापति, कँवल नैण खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त वेस वटाईआ।
१२ भगत भगवन्त वेस अपारा, हरि पुरख निरँजण आप कराइंदा। कलयुग उठ वेख खेल न्यारा, निरगुण करता आप कराइंदा। १२
चल के मंग इक्क दुआरा, दाती भिच्छया आप वरताइंदा। कागद कलम शाही रोवण ज़ारो ज़ारा, लेखा हथ्थ ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मति आप दृढ़ाइंदा। साची मति सुण लै कन्न, बिन कन्नां आप सुणाईआ। चल के आउणा बिन तन, बिन तत्तव दए मिलाईआ। भरम भुलेखा कढ्ढे जन, भरम भउ ना कोए वड्याईआ। करे प्रकाश नेत्र अन्न्ह, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या लैणी सिख, हरि सच्चा सच जणाइंदा। जिस लेखा तेरा दिता लिख, सो अन्तिम मेट मिटाइंदा। जन भगत दुआरे मिले भिख, दूजा मन्दिर ना कोए सुहाइंदा। चरन दुआर हरि निरँकार जा जा पेख, पेख पेख तेरा दुःख वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप समझाइंदा। साचा राह इक्को एक, एकँकारा आप जणाईआ । भगत भगवान करे हेत, नित नवित वेस वटाईआ। रुत्त सुहञ्जणी वेखे चेत, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ।

कलयुग अन्तिम मौलया खेत, ख़िज़ां रुत्त नैण उठाईआ। कोई ना रखे साया हेठ, अग्नी तत्त रही तपाईआ। आदि अन्त गुर अवतार पीर पैग़म्बर किसे ना पाया प्रभ का भेत, बेअन्त बेअन्त कह कह शुकर मनाईआ। कलयुग अन्तिम खेडण आया खेड, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। लख चुरासी आपणे अन्तर लए लपेट, पर्दा कोए ना सके लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख सो, सो साहिब सतिगुर आया। सति सतिवादी आपे हो, हरि आपणा खेल रचाया। नर निरँकारा ढोआ ढो, दो जहानां वेख वखाया। आदि निरँजण कर कर लो, प्रकाश प्रकाश रिहा मिलाया। अबिनाशी करता कर कर मोह, प्रेम प्यार इक्क वधाया। श्री भगवान अग्गे हो, हरिजन हरि जू रिहा उठाया। पारब्रह्म प्रभ अमृत रस निझर झिरना चो, रस अमृत मुख चुआया। हँ ब्रह्म सुणाए आपणी सो, सोहँ आपणा रूप जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आपणे हथ्थ रखाया।

✳ १० अस्सू २०१६ बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा ✳

दोए जोड़ कर निमस्कार, कलयुग चरनी सीस निवाइंदा। सो पुरख निरँजण तेरा सच दरबार, दो जहानां इक्को नज़री आइंदा। हरि पुरख निरँजण तेरा सति पसार, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। एकँकार तेरा विहार, बिवहारी भेव कोए ना पाइंदा। आदि निरँजण तेरा उज्यार, लख चुरासी नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान तेरा निशान, गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्म मनाइंदा। अबिनाशी करते तेरा दान, साध सन्त झोली डाहइंदा। पारब्रह्म तेरा खेल महान, महिमा कथ ना कोए सुणाइंदा। सचखण्ड खेल करे श्री भगवान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह एका नाउँ वड्याइंदा। धुरदरगाही सच संदेसा दे फ़रमाण, नाद अनादी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा आपणा घर, दूजा दर ना कोए जणाइंदा। कलयुग वेख हरि दरबारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बेअन्त बेपरवाह तेरा खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक वडी वड्याईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी देवे अन्त ना कोए गवाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात जुग जुग आ आ गाउँदे रहे तेरी वारा, वारता तेरी ना किसे जणाईआ। तेरा नाम संदेसा देंदे रहे इशारा, आदि अन्त ना कोए वखाईआ। जुग चौकड़ी कढ्ढदे गए वगारा, हुक्मे अंदर सेवक सेवा लैण कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन ओट ना कोए तकाईआ। शहिनशाह तेरा दर दरवाज़ा, दरगाह साची नज़री आइंदा। आदि जुगादी ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा।

६६५ १२

जुगा जुगन्तर रच रच काजा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। बोध अगाध अगम्मी वाजा, शब्द अनादी राग सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाजा, त्रै पंज जोड़ जुड़ाइंदा। गुर अवतार कर कर मेला सन्त सुभागा, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। अंदर बाहर आत्म परमात्म चलाए जहाज़ा, खेवट खेटा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को भाइंदा। तेरा दरबार सच मुनारा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। मैं आपा करया ख़ाक मंगां चरन धूढ़ी छारा, मस्तक धूढ़ी इक्क रमाईआ। नेत्र नैण वेख्या अखाड़ा, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाईआ। नाता तुटया गुर अवतारा, अन्तिम संग ना कोए निभाईआ। भगत कर कर बैठे किनारा, मँझधार ना कोए वेख वखाईआ। पीर पैग़म्बर रोवण ज़ारो ज़ारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। वेद शास्त्र अन्तिम हारा, हरि का राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा सच्चा घर, घर तेरे वड वड्याईआ। कलयुग वेख सच दरबार, धुरदरगाही सीस निवाइंदा। कलयुग अन्तिम मेरी धार, तेरा नूर तेरे विच समाइंदा। छोटे सुत कर प्यार, अबिनाशी अचुत्त मंग मंगाइंदा। गोबिन्द दिता इक्क अधार, नानक जोती जोत जगाइंदा। चोटी चढ़ आप निरँकार, सचखण्ड साचे खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दरबारे मंग मंगाइंदा। सच दरबारे

इक्को मंग, प्रभ एका वार मंग मंगाईआ। कूड़ी क्रिया ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। तुध बिन होया भाग मंद, मेरी कीमत कोए ना पाईआ। जूठ झूठ गाया छन्द, लख चुरासी राग सुणाईआ। नव नौ खण्ड पृथ्मी रचा खेल भेख पखण्ड, माया ममता नाल रलाईआ। जीव जंत नार दुहागण जगत रंड, हरि कन्त सेज ना कोए सुहाईआ। रसना जिह्वा कोए ना गाए बत्ती दन्द, बत्ती धार ना कोए बख्शाईआ। आत्म परमात्म होई अन्ध, दूई पर्दा ना कोए उठाईआ। मनमति चार कुण्ट पाए डण्ड, गुरमति बैठी डेरा ढाहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार चण्ड प्रचण्ड, कंचन गढ़ दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बिन तुध अंग ना कोए सुहाईआ। सच तेरा दरबार बेअन्त बेअन्त बेअन्त, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। प्रितपाल निधाना आया मंगत, दर दरवेश फेरा पाईआ। गढ़ तुट्टा माण हंगत, अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। मेरा बल होया खण्डत, बुध बैठी रही कुरलाईआ। चौथे जुग कोई ना साथी बणया पंडत, मुल्ला शेख़ पल्लू गए छुडाईआ। पीर पैग़म्बर होए नंगत, सच दोशाला हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। नाता तुट्टा जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। मिले सीर ना जमना सुरस्ती गोदावरी गंगत, गंगा बैठी मुख भुआईआ। नाम निधान ना चढ़ाए कोए रंगत, कूड़ी क्रिया सब ते पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, दर तेरे आस तकाईआ। तेरा सच दुआर हउँ दरवेश, बण पाँधी फेरा पाया। तूं शाह सच्चा नरेश, शहिनशाह तेरी वड्याआ। कोटन कोटि दर खड़े विष्न ब्रह्मा महेष गणेश, बैठे सीस झुकाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बरां किसे ना चले कोई पेश, नेत्र नैण सर्ब शरमाया। दोए जोड़ जोड़ करन सर्ब आदेश, देस दिसन्तर वेख वखाया। तेरा रूप रंग ना कोए रेख, भेख हर घट आप कराया। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, सीस जगदीस ना मूंड मुंडाया। आदि जुगादि रहे हमेश, जुग चौकड़ी सेवा लाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कर किरपा लए वेख, मेरा वेला अन्तिम आया। मेरा सुंञा होया खेत, तुध बिन होए ना कोए सहाया। मेरी बालू कंध कल्लर रेत, मेरा कर्म रिहा ढाहया। तेरे नाउँ ना करया हेत, कूड़ी क्रिया बन्धन पाया। तुध बिन किसे ना दस्सया तेरा भेत, चौदां विद्या पढ़ पढ़ होया हल्काया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर निक्के निक्के बाले मेरे विच खेडां गए खेड, मैं आपणी गोद बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाया । दर तेरे सीस गया झुक, मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना। मेरा अन्तिम पैंडा रिहा मुक्क, एका दस्स सच निशाना। कर किरपा गोदी चुक्क, आदि जुगादि वड मेहरवाना। चौदां सदीआं रिहा लुक, दस्सदा रिहों नाम निशाना। अन्तरजामी किरपा करके आपे उठ, आप बण मर्द मर्दाना। नेत्र वेखा गोबिन्द सुत, परम पुरख शाह सुलातना। तेरा नाउँ अबिनाशी अचुत्त, चेतन तेरा खेल महाना। मेरी अन्तिम होई रुत्त, सच दिसे ना कोई निशाना । आपणी हथ्थीं बूटा पुट्ट, फेर लगे ना विच जहाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तेरे चरन रहे ध्याना। सच दरबार मंगी मंग, दोए जोड़ शरनाईआ। मेरा दुखी होया अंग अंग, मेरा तन दरदां दर्द भराईआ। अन्त दिसे ना कोए संग, गुर अवतार पीर पैग़म्बर पल्लू गए छुडाईआ। मेरी करनी मेरे नाल गई हंढ, ना कोई सके पार कराईआ। ना कोई राग सितार ना कोई तन्दी तन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाईआ। पुरख अबिनाशी दयावान, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। सुण संदेसा साचे कान, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। कलयुग तेरा खेल वेख्या जहान, जीव जगत खोज खोजाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होई हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। पढ़ पढ़ थक्के मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत बाली बुध अञ्याण, बोध ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। अन्तर आत्म ना करे कोए ध्यान, ध्यान ध्यान ना कोए रखाइंदा। नाता तुट्टे ना पवण मसाण, पवण उणंजा ना मोह तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचा आप समझाइंदा। साचा वर साचा दर साचा घर साचा नर, हरि सच्चा सच जणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल कर तेरा लेखा तेरे अग्गे देवे धर, धरनी धरत धवल खोज

खोजाइंदा। तेई अवतार लए फड़, भगत अठारां नाल जड़, ईसा मूसा मुहम्मद संग रलाइंदा। दस गुर वखाए घर, पुरख अबिनाशी नरायण नर, आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा भाणा लैणा जर, निरभउ चुकाए भय डर, वेखणहारा दो जहानां खड़, खण्डां खड़्ग इक्क चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, कलयुग करनी आप जणाईआ। तेरे गात्रे विच्चों खिच्च तेरी कृपान, किरपा निध लए चमकाईआ। लख चुरासी मेटे तृष्ना भुख पीण खाण, आलस निंद्रा दए गुआईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज डूँघे सागर फोल फोलाईआ। सच दुआरा इक्क मकान, जिथे वसे श्री भगवान, दीवा बाती ना कोए निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। सच टिकाणा दस्से मात, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। जिस घर ना कोई जमात, जुम्मला अक्खर ना कोए बणाइंदा। जिस गृह ना कोए रात, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। जिस दुआर ना कोए ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। जिस गृह ना कोए तीर्थ ताट, किनारा इक्को इक्क वड्याइंदा। जिस दा आदि जुगादी पूजा पाठ, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। सो साहिब पुरख समरथ, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। कलयुग तेरी पति लए रख, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। साचा मार्ग दस्से मीत, मित्र प्यारा आप जणाईआ। कलयुग तेरा लेखा चुकाया मन्दिर मसीत, गुरदवार शिवदुआला मट्ठ तेरी धीर ना कोए धराईआ। सारे अन्तिम करके गए बस, बसता बन्नू के रहे वखाईआ। पारब्रह्म साडा कोए ना चले वस, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बिन ढाहियों गए ढट्ठ, बलहीण रहे कुरलाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। कलयुग तेरा अन्तिम अन्त, हरि सतिगुर आप कराइंदा। तेरी बणाए आप बणत, घड़ण भन्नणहारा वेख वखाइंदा। तेरी महिमा गाए अगणत, जिन गुर अवतार पीर पैग़म्बर लेखा सर्ब चुकावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखावणा। कलयुग तेरा लेखा वड्डा, हरि वडा आप मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दो जहानां दे दे सद्दा, चरन कँवल आप बहाइंदा। गुरमुख गुरसिख सन्त सज्जण भगत भगवन्त आपणे प्यार बध्धा, दूजी ओट ना कोए जणाइंदा। सच नगारा दो जहानां एका वज्जा, नौबत आपणे नाम सुणाइंदा। परवरदिगार बेपरवाह नूर नुराना फिरे भज्जा, लाशरीक आपणा खेल वखाइंदा। मक्का काअबा सच महल्ले कराए हज्जा, महिराब बेआब वेख वखाइंदा। मन्दिर

६६८ १२

मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तीर्थ तट किनार आपे बह बह सजा, तख्त निवासी वेस वटाइंदा। तेरा पर्दा जिस ने कज्जा, सो अन्तिम आप उठाइंदा। लख चुरासी तेरी दासी अन्तिम वेखे डूँग्घी खड्डा, भव सागर आप रुढ़ाइंदा। गुरमुख विरले रखे लज्जा, जिस जन आपणा भेव जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पार किनारा होई हद्दा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार पुरख अबिनाशी आपणे हुक्म अंदर बध्धा, नौ खण्ड पृथ्मी नैण ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सचखण्ड दवारे प्रभ सरनाई डिगे आण, लेखा मात ना कोए रखाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सतिजुग त्रेता दआपर कलयुग तेरी मन्नी आण, पंज तत्त काया चोला सेव कमाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी आत्म परमात्म गा गा आए गाण, ब्रह्म पारब्रह्म तेरा भेव चुकाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान, गीता ज्ञान खाणी बाणी दे दे आए ब्यान, सच संदेसा लोकमात सुणाया। कलयुग कूड़ी क्रिया होई प्रधान, सच सुच्च मिटया निशान, साध सन्त होए बेईमान, धीरज धीर सति सन्तोख ना कोए रखाया। माया ममता पीण खाण, धीआं भैणां सर्ब तकाण, नेत्र नैण ना कोए शरमाया। रसना गाउँदे गुरू ज्ञान, अंदर वड़या पंज तत्त शैतान, शरअ हक़ ना कोए रखाया। रसना जिह्वा कूड़ तूफ़ान, दर दर मंगदे फिरन दान, साची अलख ना कोए जगाया। नेत्र नैणहीण होया जहान नाबीना कोई ना सके तैनूं पछाण, बेपहचान तेरा नूर नज़र किसे ना आया। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन सर्ब कुरलाण, उच्ची कूक कूक देण दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, तुध बिन पार ना कोए कराया। तुध बिन कोए ना पार किनारा, जुग चौकड़ी तेरा राह तकाइंदा। तूं साहिब सुल्तान आदि जुगादी एकँकारा, अकल कल आपणी खेल वरताइंदा। रागां नादां वसे बाहरा, खाणी बाणी तेरा भेव ना आइंदा। गुर अवतार करन निमस्कारा, पीर पैग़म्बर सजदा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, घर मन्दिर तेरा मोहे भाइंदा। तेरा मन्दिर श्री भगवान, इक्को इक्क नज़री आईआ। जिथे झुल्ले सति निशान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जिथे वसे जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिस दुआरे देणा माण वड्याईआ। माण वड़याई देवे प्रभ, जुग जुग दया कमाइंदा। कलयुग भेव सुण लै सब, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कूड़ी क्रिया तेरी देवे दब्ब, नाम आपणा इक्क उठाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, गुरमुख गुरसिख आप उठाइंदा। आत्म जाम प्याए मदि, रस इक्को इक्क रखाइंदा। गृह मन्दिर आपणे साचे सद्द, छप्पर

९९९
१२

छन्न आप छुहाइंदा। लख चुरासी नालों कर कर अड्ड, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जगत विकारा पार हद्द, साची हद्द आप रखाइंदा। एका नाद सुणाए नद, छत्ती राग मुख भुआइंदा। चरन कँवल प्रीती देवे बध्ध, बन्दीखाना आप तुड़ाइंदा। लेखा चुकाए बत्ती दन्द, बिन रसना जिह्वा जाप जपाइंदा। आत्म परमात्म देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाइंदा। बिन सूरज चन्द करे प्रकाश काया ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खोजाइंदा। कलयुग अन्तिम करे साची वंड, वंडणहारा फेरा पाइंदा। नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मोह मिटाइंदा। मात गर्भ होए बख्शंद, बख्शिश आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा राह समझाइंदा। अनुभव खेल करे करतारा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग तेरा वेख पसारा, कूड़ी क्रिया खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करदे गए पुकारा, दोए जोड़ मंग मंगाईआ। कल आवे अन्त निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। रूप रंग ते वसे बाहरा, रेख भेख ना कोए जणाईआ। एका वसे धाम न्यारा, सम्बल बैठा आसण लाईआ। चार जुग दी पावे सारा, पूरब लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। चरन कँवल ल्याए गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर नाल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया वेखे अखाड़ा, नव नौ आपणी वंड वंडाईआ। पंचम पंच पंच प्यारा, पंचम लहिणा देणा दए चुकाईआ । कलयुग तेरा लेखा वेखे वेखणहारा, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। अथर्बण मंगे दर भिखारा, ऐड़ा इक्को अक्ख खुल्हाईआ। ईड़ी इष्ट एकँकारा, आदि पुरख बेपरवाहीआ। सस्सा सतिगुर हो त्यारा, सो पुरख निरँजण फेरा पाईआ। हाहा हँ ब्रह्म दए अधारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। ऊड़ा ओंकार जिस कीआ पसारा, सो निरँकार वेखणहारा अलंकार आपणा ना कोए वखाईआ। शास्त्र सिमरत वसे बाहरा, वेद पुराण ना कोए सहारा, आपणी महिमा कथ ना किसे जणाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, बेऐब खुदाई परवरदिगारा, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। सच तौफीक सांझे यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा भेव जणाईआ। अनुभव मेरा प्रकाश, हरि प्रकाशी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी सेवक दासी दास, आदि जुगादि हुक्म वरताइंदा। हुक्मे अंदर पृथ्मी अकाश, गगन मंडल आप फिराइंदा। रवि ससि गावण स्वास स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। गुर अवतार रखण आस, आसा सब दी पूर कराइंदा। कलयुग तेरा अन्तिम खेल तमाश, हरि ख़ालक वेख वखाइंदा। करे खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता रूप वटाइंदा। जिस दी भाख्या कोए ना सके भाख, बेअन्त आपणा भेव आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा आप मुकाइंदा। जुग जुग लहिणा मुके जग, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलयुग चार कुण्ट लैणा भज्ज, पुरख

अबिनाशी रिहा सुणाईआ। साक सज्जण मीत मित्र लैणे सद्द, जो तेरा संग निभाईआ। बुढ्ढे शेख़ भज्जणे हड्ड, हरि सतिगुर आप भनाईआ। जगत नाबीने डिगणा डूँग्घी खड्ड, नाम डंगोरी हथ्थ कोए ना आईआ। चौदां तबक हो के बैठा अड्ड, सदी चौधवी दए सफाईआ। अन्तिम वेला रिहा लद, सिर तेरे भार चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। कलयुग रोवे मारे धाह, बौहड़ी बौहड़ी हाल सुणाया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, तेरे चरनां सीस निवाया। मेरे खाली हड्ड विच ना कोई साह, सगला साथी नज़र कोए ना आया। पीर पैग़म्बर पल्लू गए छुडा, हज़रत तेरा लड़ ना कोए फड़ाया। अल्ला राणी तुट्टा निकाह, मुख पर्दा नैण शरमाया। मैं आपणा भार ना सका उठा, बण कुकर्मी कर्म कमाया। गुर अवतारां दिता लड़ा, पीर पैग़म्बर नाल टकराया। शरअ नाल शरीअत खण्डा दिता खड़का, बण अधर्मी धर्म मिटाया। तेरे भगत भगवान ख़ाक दिते मिला, सीस जगदीश अड्ड कराया। पुठी खल्ल दिती लुहा, आप आपणा हुक्म वरताया। जिस ने जपया तेरा नाँ, तिस अग्नी तत्त जलाया। जिस वेख्या तेरा थाँ, तिस सूलां सेज सुहाया। जिस तेरी ओट लई तका, तिस नीहां हेठ दबाया। बौहड़ी बौहड़ी मेरे ख़ुदा, मेरी ख़ुदी मोहे गुआया। अन्तिम तेरे चरनी डिगा आ, रहिमत कर बेपरवाहया। मेरे नाल सहिमत ना होया कोई विच जहां, दोए दोए लोचन वेख वखाया। मेरी बुद्धी होई काँ,
१००१ काग वांग रिहा कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाया। १००१
पुरख अबिनाशी दए हुलारा, एका एक जणाईआ। कलयुग वेख आपणा संसारा, नव नौ नैण उठाईआ। चारों कुण्ट धूआँधारा,
१२ अन्ध अधेरा छाईआ। साध सन्त पावे कोई ना मेरी सारा, मेरा रूप ना कोए समाईआ। घर घर चलया विभचारा, विभचार सर्ब लोकाईआ। अन्तिम वेखे वेखणहारा, आपणा नेत्र नैण खुल्हाईआ। तेरी कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, चरन कँवल ठोकर एका लाईआ। कोई सीस ना चुक्के गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर ना नैण उठाईआ। सारे कट्ठे बह बह करन निमस्कारा, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। जिस विच असीं कट दे आए वगारा, बण वगारी सेव कमाईआ। जिस विच चलया ना कोई चारा, चार कुण्ट पई दुहाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रोवण ज़ारो ज़ारा, ज़र्रा ज़र्रा दए दुहाईआ। शरअ शरीअत फिरया आरा, कर्म कांड फट्ट लगाईआ। माया मोह लग्गा अखाड़ा, जूठ झूठ नाच नचाईआ। साध सन्त वजाउण ताड़ा, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। अन्तिम सब नूं प्या पुआड़ा, पुरख अबिनाशी पुठी खल्ल लुहाईआ। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँग्घी कंदर फोल फोलाईआ। करे खेल नर निरँकारा, निरगुण आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब सज़ाईआ। कलयुग सुण मारी कूक, बिरहों राग अल्हाईआ। मेरी अन्तिम

चुक्की चूक, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। सो पुरख निरँजण हरि करता लख चुरासी देवे फूक, जोती अग्नी एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा निशाना अन्त मिट ना जाईआ। मेरा निशाना श्री भगवाना, लोकमात अन्त मिटाईआ। इक्को देणा सच्चा दाना, दर तेरे मंग मंगाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सदा रहें विच जहानां, दो जहानां आपणा खेल कराईआ। सूरबीर मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग वेला अन्त कवण टिकाणा, जिस दर देवें माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जिस बिध मिले मोहे वड्याईआ। पुरख अबिनाशी बांहों फड़, शब्द इशारे नाल जणाइंदा। कलयुग उठ वेख नेत्र खड़, सो पुरख निरँजण आप वखाइंदा। जिस मन्दिर अंदर बैठा वड़, सो गुरमुख आप वड्याइंदा। आत्म परमात्म बन्नाया आपणे लड़, पल्लू आपणी गंढु रखाइंदा। भगत भगवन्त आपणे जेहे कर, आप आपणा मेल मिलाइंदा। सचखण्ड निवासी निरगुण हो के मंगण आया दर, बण दरवेश फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशान इक्क वखाइंदा। सच निशान दस्से मात, भगवान, आप जणाईआ। गुरसिख मेरा पारजात, जो सोहँ ढोला गाईआ। गुरमुख बणाई इक्क जमात, इक्को पट्टी रिहा पढ़ाईआ। सन्त सुहेले दे दे दात, आपणा नाम वरताईआ। भगत भगवन्त कीती इक्को ज़ात, दूजी ज़ात ना कोए वखाईआ। कलयुग तेरी मिटे अन्धेरी रात, गुरमुख मेरा चन्द छुप ना जाईआ। सतिजुग साची बह बह गावे गाथ, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। दो जहानां रखे साथ, एथे ओथे होए सहाईआ। निरगुण प्रगट हो के साख्यात, स्वच्छ सरूपी दरस कराईआ। सचखण्ड निवासी लोकमात वेखे मार झात, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड दवारे गुर अवतार पीर पैग़म्बर बणाए सज्जण साक, लोकमात गुरमुख आपणा बंधण पाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाया हरि कमलापात, नर हरि आपणी दया कमाईआ। अन्तिम रखे आपणे पास, साची गोद आप उठाईआ। इक्क वखाए साची खाट, सचखण्ड दवारे आप विछाईआ। चार जुग जिस वल कोई ना सक्या झाक, सो गुरमुखां आपणी झाकी दए वखाईआ। थिर घर खोल्ह के आया ताक, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। गोबिन्द पूरा करे भविख्त वाक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जन भगतां चरन जोड़े सच्चा नात, नाता बिधाता आप बंधाईआ। कलयुग तेरा सच्चा साक, गुरमुख इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा निशाना दए वखाईआ। सच निशाना तेरा भगत, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। कवण वेला दस्स वक्त, मैं दर्शन पावां चाँईं चाँईंआ। जिस मेरे घर विच रखी बरकत, मेरा डुब्बदा बेड़ा पार कराईआ। लख चुरासी नालों छड्ड के शिरक्त, तेरे चरनां लिव लाईआ। मैं वेखां उहदी हरक्त, किस बिध तेरे

विच समाईआ। जुग चौकड़ी तेरा किसे ना कढुया फरक, तेरा फिकरा गए सुणाईआ। कवण बिध प्रभ आएं परत, आपणा निरगुण वेस वटाईआ। तेरा लेखा दस्सया ना किसे लिख्त पढ़त, चार जुग दी बाणी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां दर्शन पाईआ। मेरे भगत दा जिस दर्शन पाउणा, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। माण अभिमान सर्ब गवाउणा, हउमे रोग ना कोए रखाइंदा। नेत्र नैण नैण शरमाउणा, अक्ख ना कोए वटाइंदा। रसना बोल ना कोए गाउणा, अनबोलत भेव चुकाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन ध्यान इक्क लगाउणा, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। तिस उपर आपणा हथ्थ टिकाउणा, फिर आपणा भेव खुल्ाइंदा। आपणा भेव खोल् मार्ग पाउणा, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी मेरा रूप नज़री आउणा, दूजा नूर ना कोए तकाइंदा। सोहँ ढोला जिस ने गाउणा, तिस आपणे भगत मिलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां चरन दुआरे पाया रौला, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आदि जुगादी इक्को मौला, मवल आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां विच समाइंदा। भगत भगवन्त इक्को रंग, कलयुग अन्त आप जणाया। साढे तिन्न हथ्थ अंदर सेज पलँग, पुरख अबिनाशी आप हंढाया। रातीं सुत्तयां अंदर जाए लँघ, आउणा
१००३ जांदा नज़र किसे ना आया। उच्चे टिल्ले पर्बत करे खण्ड खण्ड, गढ़ हँकारी दए तुड़ाया। गुरसिख सखी मिल मिल पाए इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाया। साचा सोहला गाए छन्द, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा भेव कोए ना राया। जोती १००३
१२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान रिहा वड्याआ। भगवान कहे मेरा भगत महल्ला, दूजे दर ना कोए वड्याईआ। लोकमात जिस फड़या मेरा पल्ला, घर आयां लए बहाईआ। तिस दुआरे झाड़ू देवे बण सुआणी राणी अल्ला, खुल्ही मींडी सीस वखाईआ। चौदां तबक पए तरथला, थरहर कांपे सर्ब लोकाईआ। गुरमुख दीपक इक्को बला, बल बावन गया समझाईआ। पंचम शब्द सच संदेस जिस ने घल्ला, पंचम देवे माण वड्याईआ। सो सतिगुर जन भगतां पिच्छे बणया झल्ला, भेखी आपणा भेख वटाईआ। जे कोई फड़े कर के हल्ला, शाह सुल्तानां हथ्थ ना आईआ। जो गुरमुख गुरसिख गल विच पाए पल्ला, तिस दर आपणी अलख जगाईआ। लख चुरासी भुलाए कर कर वल छल्ला, अछल छल आपणा रूप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग देवे अन्त ज्ञान, बिन गुरमुख ना दीसे कोई निशान, निशाना सब दा दए मिटाईआ। इक्क दो दो इक्क, इक्क इक्क नाल मिलाया। तिन्न चार चार तिन्न लिख लेख, लेखा आपणे विच समाया। पंज छे छे पंज धार भेख, भेखी आपणा

खेल कराया। सत अठ्ठ अठ्ठ सत मेट रेख, रेखा आपणी दए समझाया। नौ दस दस नौ कर हेत, गुरमुख गुरसिख लए मिलाया। निरगुण खोल्ह सरगुण भेत, भेत आपणा नाल मिलाया। कलयुग अन्तिम खेडण आया खेड, पुरख अबिनाशी बेपरवाहया। चार जुग जो जगत माया नाल लए लबेड़, अन्तिम एका वार धुआया। वरन बरन जो छेड़ी छेड़, अन्तिम डेरा देवे ढाहया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जो घल्ले फेर फेर, फेरे अंदर फेरा आपणा नाम दुआया। दीन मज़्हब वंड रखी घेर घेर, घेरा शरीअत रूप वटाया। अन्तिम हक़ निबेड़ा दए निबेड़, हक़ीक़त वेखे थाउँ थाइंआ। प्रगट होया इक्को शेर, सिँघ शहिनशाह बेपरवाहया। जन भगतां उत्ते इक्को वार करे मेहर, मेहरवान आपणी दया कमाया। नाता तुट्टे सञ्झ सवेर, इक्को नूर नज़री आया। जिउँ भीलणी खाधे बेर, तिउँ ग़रीब निमाणयां दर दर घर घर चोग चुगण आया। गुरसिख तेरा कर्म कांड कूड़ी क्रिया सिर आपणे चुक्के ढेर, दुरमति मैल धुआया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव चुकाया मेर तेर, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोल इक्क सुणाया। गुरमुख सज्जण लख चुरासी विच्चों कढ्ढे हो के आप दलेर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। लख चुरासी मारे भेड़ भेड़, ठीकर सब दा भन्न वखाया। आपणा चालू रखे गेड़, त्रैगुण भट्ठा वारो वार तपाया। गुरसिखां नाल एथे ओथे सचखण्ड निवासी साची खेड रिहा खेड, अंदर बाहर बाहर अंदर आपणा राह वखाया। जोती जोत सरूप

१००४ हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दो दो इक्क अन्त इक्को रूप समाया। इक्क दो बणया आदि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। १००४

तिन्न चार वज्जा नाद, पंज छे करे शनवाईआ। सत्त अठ्ठ दिती दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। नौ दस खेल तमाश, हरि ख़ालक वेख वखाईआ। अन्त गुरमुखां करे पूरी आस, निरासी होए सर्ब लोकाईआ। इक्को कम्म करे खास, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाउँदा आया गुर अवतार पीर पैग़म्बर शाख़, शनाखत आपणी आप समझाईआ। आप बणया रिहा पाकी पाक, मुख नक़ाब पर्दा रिहा छुपाईआ। कलयुग अन्तिम खोल्ह ताक, पिछली कीती रिहा उलटाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां पारब्रह्म प्रभ बणया साक, राज राजाना शाह सुल्तानां धक्का देवे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क दो दो इक्क बिन इक्क दो कम्म किसे ना आईआ। इक्क दो तिन्न चार, चार चार खेल कराइंदा। पंज छे सत्त अठ्ठ धार, धार धार वंड वंडाइंदा। नौ दस दस नौ खोल्ह किवाड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुर कर प्यार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। जगत भिखारी बण भिखार, भगवन्त भगत दुआरा मंगण आइंदा। कर किरपा जन भगत प्रेम भिच्छया जे झोली देवे डार, भगवन लख लख शुकर मनाइंदा। लख चुरासी विच्चों लभ्भे इक्को यार, यारी आदि अन्त निभाइंदा। जन्मे मरे ना विच संसार,

१२ १२

जीवन मरन आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दो तिन्न चार दए आधार, चार तिन्न दो इक्क पावे सार, बिन इक्क चार मुख ना कोए सलाहइंदा ।

छदाउण माई पौण भन्ने सीस, नाम डण्डा हथ्थ उठाईआ। माई गोरजां अन्तिम पीसण ल्या पीस, कलयुग चक्की कूड़ चलाईआ। हाकण डाकण इक्क हदीस, हुक्म हाकम इक्क समझाईआ। सीर नीर पीए ना कोई ला के झीक, छल छिद्र ना कोए वड्याईआ। मूंडे सब दा फड़ के सीस, चोटी गुरसिखां हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे साचा वर, चिट्टा दुध निर्मल सीर कोए बंधण ना पाईआ ।

✳ ११ अस्सू २०१६ बिक्रमी धन्ना सिँघ दे गृह ढह पई ज़िला लुधियाणा ✳

सो पुरख निरँजण बेपरवाहया, हरि पुरख निरँजण खेल कराईआ। एकँकारा नाउँ धराया, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करते वेस वटाया, श्री भगवान निशान झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, निरगुण वेखे थाउँ थाईंआ। महल अटल इक्क सुहाया, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। सोहला ढोला इक्को गाया, बोध अगाधी नाउँ दृढ़ाईआ। धुर फ़रमाना इक्क जणाया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साचा तख्त इक्क सुहाया, तख्त निवासी आसण लाईआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार वेखण आया, नूर इलाही सच्चा माहीआ। सच संदेसा रिहा सुणाया, मुकामे हक़ वड वड्याईआ। हक़ हक़ीक़त खोज खोजाया, लोक परलोक वेखे थाउँ थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए जगाया, सोया कोए रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया डेरा देवे ढाहया, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। पंज तत्त लेखा दए मुकाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रिहा समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी जिस हंढाया, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार जिस प्रगटाया, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। पीर पैग़म्बर जननी जन बण जिस जाया, सो खेल करे नूर इलाहीआ। अक्खर वक्खर बोध अगाध मन्त्र अन्तर जिस पढ़ाया, साची सिख्या आप समझाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात वरन गोत जिस वंड वंडाया, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। धरत धवल ज़िमीं असमान, आकाश प्रकाश जिस कराया, रवि ससि सूरज चन्द रुशनाईआ। समुंद सागर डूँघी कंदर उच्चे टिल्ले पर्बत जिस डेरा लाया, जल थल महीअल रिहा समाईआ। त्रै पंज मेला गुर चेला जिस जोड़ जुड़ाया, लख चुरासी घाड़न घड़त घड़ाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज अनुभव आपणा खेल कराया, जोती नूर कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म

आत्म वंड वंडाया, निरगुण निरगुण खेले खेल बेपरवाहीआ। गीत सुहागी छन्द एका गाया, बत्ती दन्द दए वड्याईआ। जीउ पिण्ड जिस तन रचाया, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल जणाईआ। धरत धवल बणाया आकाश, आकाश आकाशां विच समाईआ। जिस नूं कहिन्दे पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा रंग रंगाईआ। आदि जुगादि सर्ब गुण तास, गुण वन्ता वड वड्याईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, दो जहानां खोज खोजाईआ। लख चुरासी देवणहारा पवण स्वास, पवण पवणां डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा खेल तमाश, मंडल मण्डप रास रचाईआ। भगतां पूरी करनहारा आस, भगवन आपणा फेरा पाईआ। नित नवित होए दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जिस नूं कहिन्दे श्री भगवान, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। शाहो भूप राज राजान, साचे तख्त सोभा पाइंदा। आदि जुगादी हुक्मरान, लोआं पुरीआं आप मनाइंदा। गुर अवतार देवणहारा दान, पीर पैग़म्बर झोली आप भराइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति दुआरे आप उठाइंदा। प्रगट करे हरि हरि नाम, कोटन कोटि जिह्वा जाप जपाइंदा। अमृत आत्म साचा जाम, निझर झिरना आप झिराइंदा। जुग चौकड़ी पूरा करे काम, करनी करता आप कमाइंदा। लेखा जाण श्री भगवान, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी साचा काहन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप वड्याइंदा। जिस नूं कहिन्दे श्री भगवन्त, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, गुर अवतार भेव ना आईआ। गा गा थक्के साध सन्त, कोटन कोटि रहे जस गाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान लिख लिख थक्की छंत, हरि का छन्द ना कोए लिखाईआ। आदि जुगादि बणाए बणत, घड़न भन्नणहार आपणा खेल वखाईआ। कोए ना जाणे प्रभ का अन्त, बेअन्त कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराईआ। जिस नूं कहिन्दे पुरख अगम्म, अलख अगोचर खेल कराइंदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। पवण स्वास ना कोए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। हड्ड मास ना कोए चम्म, नाड़ बहत्तर रत्ती रत्त ना कोए वखाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता रोग ना कोए सताइंदा। निरगुण रूप श्री भगवान, जोती जोत डगमगाइंदा। सचखण्ड वसे सच मकान, थिर घर आपणा हुक्म वरताइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे आण, जुग चौकड़ी फेरा पाइंदा। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए रखाइंदा। कागद कलम शाही लिख लिख दए ब्यान, सिफ्त सालाही सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी करनी आप कमाइंदा। जिस नूं कहिन्दे बेपरवाह, बेपरवाह वडी वड्याईआ। सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग वेखे आ, नित नवित वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण बणे मलाह, आपणे कंध उठाईआ। नाउँ निरँकारा दए दृढ़ा, आत्म परमात्म भेव चुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पर्दा दए उठा, ईश जीव करे कुड़माईआ। अनहद नादी नाद दए वजा, धुंन आत्मक राग सुणाईआ। निर्मल दीआ जोत दए जगा, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्या, अठसठ तीर्थ लेखा दए मुकाईआ। घर मन्दिर कर रुशना, गृह वेखे चाँईं चाँईंआ। नारी कन्त मेला सहिज सुभा, श्री भगवन्त आप कराईआ। बेअन्त बेअन्त खेल करे सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त करे खेल हरि रघुराईआ। जिस नूं कहिन्दे परवरदिगार, मिहबान बीदो खेल कराइंदा। मुकामे हक़ वसे सांझा यार, लाशरीक नाउँ धराइंदा। हक़ हक़ीक़त लए विचार, बेनज़ीर नज़र इक्क उठाइंदा। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़, चौदस चौदस चन्द चमकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद दे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप जणाइंदा। लोकमात कर गुलाम, बरदे आपणी सेवा लाइंदा। आपे बणया रहे अमाम, सिर अमामां नाउँ धराइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए आपणी कल वखाइंदा। तीस बतीसा गा गा गाण, अञ्जील कुरानां वंड वंडाइंदा। अन्तिम देवे सच्चा दान, दाता दानी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त आपणा खेल आप कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे सचखण्ड निवासी, सो सतिगुर खेल कराईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क अबिनाशी, अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे रासी, मंडल रासी आप रचाईआ। खोज खोजाए पृथ्मी आकाशी, गगन मंडल फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी वेखे सच्चे साथी, सगला संग कवण निभाईआ। लहिणा देणा चुकाए त्रिलोकी नाथी, नाथ त्रिलोकी लए उठाईआ। पीर पैग़म्बरां खोल्हे ताकी, साचा हुजरा आप वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर चुकाए बाकी, लहिणा कोए रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे आप साकी, हरि सज्जण फेरा पाईआ। लख चुरासी वेखे जीव ख़ाकी, धरनी धरत धवल खोज खोजाईआ। गुरमुख चाढ़े फड़ फड़ साची घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। निर्मल जोत जगे ललाटी, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाए कमलापाती, कँवल नैण रंग रंगाईआ। दरस दिखाए बहु बिध भांती, अनक कल आपणा खेल कराईआ। वसणहारा इक्क इकांती, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जिस नूं कहिन्दे सच ख़ुदा, नूरी जल्वा नूर धराइंदा। जिस दे उत्तों पीर पैग़म्बर होए फिदा, मुर्शद मुरीद राह तकाइंदा। जिस दुआरे कोटन कोटि मुहम्मद पायण गिध्धा, रसूल रसूलां सो अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब वेस वटाइंदा। सो साहिब सच्चा सुल्तान,

जिस हथ्थ वडी वड्याईआ। दरगाह बैठा सच मकान, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। डंक वजाए इक्क जहान, दो जहानां आप जगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण दान, दर बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन ध्यान, चरन कँवल मिले सरनाईआ। भगत भगवन्त मिल मिल गीत इक्को गाण, सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। भगत भगवन्त इक्को ढोला, हरि मन्दिर आप जणाइंदा। भगत भगवन्त इक्को सोहला, सो पुरख निरँजण आपे गाइंदा। भगत भगवन्त बण विचोला, लोकमात मेल मिलाइंदा। भगत भगवान उठाए ओहला, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। भगत भगवान नज़री आए इक्को मौला, मौला आपणा खेल वखाइंदा। भगत भगवान पूरा करे कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। भगत भगवान आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि जू बौहड़ा, नित नवित कर कर हित वेख वखाइंदा। जिस नूं मन्नदे रहे पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम आपणा वेस वटाइंदा। अन्तिम वेस करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जोधा महांबली अवतार, बल आपणा आप रखाईआ। लख चुरासी मारे मार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। शाह सुल्तानां करे खुआर, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। गुरमुख

१००८ सज्जण लए उठाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता १००८

१२ द्वापर कलयुग साची घालण जिस लई घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। १२

अंदर बाहर गुपत ज़ाहर चले नाल नाल, आत्म परमात्म परम पुरख वेख वखाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, महांकालका भय ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा फेरा आपे पाईआ। आपणा फेरा पा गोबिन्द, हरि जू आपणी खेल कराइंदा। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, बेअन्त रूप वटाइंदा। लख चुरासी लाए निन्द, निन्दक निन्दया मुख भराइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत उपजाए साची बिन्द, सुत अनादी नाउँ धराइंदा। अमृत जाम प्याए काया गागर सागर सिन्ध, अंमिउँ रस आपणा इक्क चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता वेस वटाइंदा। जुग करता वटाए वेस, रूप अनूप धराईआ। भगत भगवन्त लए वेख, लख चुरासी खोज खोजाईआ। निरँकार निराकार निरवैर धरया भेख, भेखी कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे देस परदेस, देस दसन्तर खोज खोजाईआ। पकड़ उठाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा सुरपति इन्द नाल मिलाईआ। बिन नेत्र नैणां बिन अक्खां रिहा वेख, बिन कन्नां रिहा सुणाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया होणा खेत, थिर कोए रहिण ना पाईआ। त्रैगुण

माया प्रभ चरन दुआरे चढ़नी भेंट, भेंटा आपणी आप कराईआ। जूठ झूठ कोए ना रहिणा कौड़ा रेठ, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। भगत भगवन्त रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति सतिवादी रुत्त मौले बसन्ती चेत, चेतन सब दी सुरती दए कराईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म करे साचा हेत, मित्र प्यारा मिल मिल खुशी मनाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्क इकल्ला रिहा खेड, खेडणहारा नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह आया जग, जग जीवण दाता खेल कराइंदा। सन्त सुहेले साचे सद्द, सद्दा इक्को नाम दवाइंदा। कूड़ी क्रिया पार हद्द, साचा मार्ग एका लाइंदा। विष्न बणाए विश्व यद्द, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। ग़रीब निमाणयां लडाए लड, साची गोदी गोद सुहाइंदा। डूँग्घे सागर आपे कढ्ढ, सच सिँघासण आप बहाइंदा। नाम निधान प्याए मदि, अठ्ठे पहर खुमार जणाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना देवे वढ्ढ, माया ममता मोह मिटाइंदा। गृह मन्दिर अंदर धुन राग सुणाए अनहद, रागी आपणा राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन मेला एकँकार, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। ठांडा सीता वसे सच दरबार, सम्बल आपणा आसण लाईआ। हस्त कीटा दे आधार, ऊँचां नीचां एका रंग वखाईआ। नाम मीठा कर प्यार, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। त्रैगुण अंगीठा तपे अंग्यार, अमृत मेघ रिहा बरसाईआ। पतित पुनीता पावे सार, पतित पापी दए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण आपणा खेल वखाईआ। निरगुण खेल गुरमुख मेला, भेव कोए ना पाइंदा। एका घर बहाए गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द संग निभाइंदा। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, सन्त साजन वेख वखाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, लोकमात वेस वटाइंदा। कटणहारा धर्म राए दी जेला, लख चुरासी फंद कटाइंदा। कलयुग जाणे अन्तिम वेला, वार थित ना कोए वड्याइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान भेव ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे करनी करता, सो आपणा खेल कराईआ। निरभउ होए कदे ना डरदा, भय आपणा सर्ब जणाईआ। ना जन्मे ना कदे मरदा, जन्म मरन विच ना आईआ। आपणे दर दरवेश बणे आपे बरदा, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़दा, आपे घड़े भन्ने सर्ब लोकाईआ। आपणे मन्दिर आपे चढ़दा, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। आपणा नाउँ आपे पढ़दा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर जुग जुग करे पढ़ाईआ। आप उठाए आपणा पर्दा, पर्दानशीं मुख नकाब ना कोए रखाईआ।

लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत घर घर दा, घर घर आपणा मुख छुपाईआ। करे वेस नर हरि नरायण नर दा, नर नरेश सच्चा माहीआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सज्जण आपे फड़दा, फड़ फड़ बांहों रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे विच जहान, ख़ालक ख़लक ख़लक ख़ालक हरि वेखे चाँईं चाँईंआ।

✳ ११ अस्सू २०१६ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✳

साचे तख़्त बैठा शहिनशाह, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। सो पुरख निरँजण रूप धरा, निरगुण खेल करे बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण वेस वटा, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। एकँकारा नाउँ धरा, नाउँ निरँकारा दए जणाईआ। आदि निरँजण कर रुशना, जोती जोत डगमगाईआ । श्री भगवान सच निशान लए बणा, सति सतिवादी आप उठाईआ। अबिनाशी करता वेखे नैण उठा, निज नैण आप खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ सीस झुका, दर आपणे मंग मंगाईआ। भूपत भूप राज राजान आप अख्वा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। मुकामे हक़ डेरा ला, जल्वा नूर नूर दरसाईआ। नूरी जल्वा इक्क खुदा, लाशरीक वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड बैठा शहिनशाह, शाह पातशाह वज्जे वधाईआ। सच संदेसा रिहा सुणा, नर नरेशा इक्को माहीआ। दो जहानां रिहा जगा, थिर घर आपणा हुक्म वरताईआ। सुन्न अगम्म पर्दा दए चुका, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा खेल कराईआ। सचखण्ड दवारे हरि निरँकारा, हरि जू आपणा आसण लाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची वेख वखाइंदा। निरगुण निरगुण कर पसारा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। सच संदेसा एका वारा, आदि जुगादी आप सुणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी सचखण्ड, हरि साचा सच कराईआ। करे खेल सूरा सरबंग, दूसर साथ ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि वजाए मृदंग, नाम निधाना इक्क रखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, गृह गृह मन्दिर खोज खोजाईआ। लेखा जाणे सूरज चन्द, ज़िमीं असमान दए वड्याईआ। लख चुरासी वंडण वंड, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड निवासी सच सुल्ताना, हरि साची कार कमाइंदा। महांबीर बली जोधा सूर बलवाना, बल आपणा

१०१० १२

आप रखाइंदा। सदा संदेसा देवणहारा धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। लेखा जाणे जीव जहाना, जीवण जुगत जोत आप जगाइंदा। देवणहारा पद निरबाना, निरबान पद इक्क वखाइंदा। बोध अगाधी एका गाणा, बिन अक्खर आप सुणाइंदा। दाता दानी देवणहारा दाना, दयानिध ठाकर स्वामी आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी ठांडा सीता, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी चलाए रीता, रीतीवान बेपरवाहीआ। त्रैगुण लेखा जाणे अतीता, पंज तत्त तत्त कुड़माईआ। अन्तर बाहर गुपत ज़ाहर निरगुण सरगुण ठांडा सीता, मेघ अमृत इक्क बरसाईआ। वसणहारा हस्त कीटा, ऊँच नीच डेरा लाईआ। करे खेल आप अनडीठा, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। सचखण्ड वसे हरि भगवाना, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादी मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमाना, जुगा जुगन्तर आप जणाइंदा। गुर अवतार कर प्रधाना, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पीर पैग़म्बर जगत निशाना, नाम निशानी हथ्थ फड़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, लोक परलोक वेख वखाइंदा। चौदां तबक सुणाए गाणा, चौदां लोक पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणी कार कराइंदा। सचखण्ड निवासी करे कारा, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादी हो त्यारा, त्रैभवण धनी वेस वटाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह सच्ची सरकारा, वेखे सर्ब लोकाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। आदि अन्त ना पारावारा, बेअन्त कह कह पल्लू सर्ब छुडाईआ। जुग चौकड़ी होए ख़बरदारा, साची ख़बर आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना रच निरँकार, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। घाड़ण घड़े बण ठठयार, घाड़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। त्रैगुण नाता जोड़ संसार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। मन मति बुध दे आधार, रक्त बूंद रंग रंगाइंदा। नाद शब्द सच्ची धुन्कार, घर आत्मक आप टिकाइंदा। आत्म सेजा खेल न्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणा राह चलाइंदा। सचखण्ड निवासी साचा राह, आदि जुगादि चलाईआ। जुगा जुगन्तर दे सलाह, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। गुर अवतार लए प्रगटा, प्रगट आपणी कल वखाईआ। निरगुण सरगुण रूप धरा, धरनी धरत धवल वड्याईआ। सच संदेसा दए घला, इक्क इकल्ला सच्चा माहीआ। लिख लिख लेखा दए समझा, कायनात करे पढ़ाईआ। अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ा, वक्खर आपणी धार रखाईआ। सत्थर साचा लए विछा, आत्म सेजा इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

१०११ १२
१०११ १२

खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगाईआ। साचा रंग हरि करतारा, एका एक रंगाइंदा। आदि जुगादी बण सेवादारा, सेवक साची सेव कमाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एथे ओथे दो जहान श्री भगवान बण वणजारा, चौदां लोक हट्ट चलाइंदा। नाम वस्त सच भण्डारा, अतोट अतुट वखाइंदा। देवणहार सदा संसारा, महांसारथी फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे विगसे वेखणहारा, वेखणहारा नज़र किसे ना आइंदा। सचखण्ड वसे एकँकारा, अकल कल आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल पुरख समरथ, आदि आदि कराईआ। विष्न ब्रह्मा देवे साची वथ, वस्त इक्को इक्क झोली पाईआ। अन्तर आत्म मार्ग दस्स, चार चार करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा गेड़ा गेड़े विच भुआईआ। जुग चौकड़ी गेड़ा गेड़णहारा, हरि जू वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, रूप अनूप धराईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पावे सारा, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। नाता तोड़े हउमे हंगत गढ़ कूड़ी क्रिया मेट अन्धयारा, निरगुण साचा चन्द चढ़ाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बण लिखारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड निवासी धुर फ़रमाना, धुरदरगाही आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर राजा राणा, सीस जगदीस सर्ब झुकाइंदा। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर गाए गाणा, हुक्मे अंदर राग अलाइंदा। हुक्मे अंदर आत्म परमात्म अमृत रस पीणा खाणा, निझर झिरना आप झिराइंदा। हुक्मे अंदर जोत प्रकाश अनभउ प्रकाश वखाणा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। हुक्मे अंदर चतुर सुघड़ सयाणा, हुक्मे अंदर मूर्ख मूढ़े गूढ़ी नींदे सुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचे तख्त हरि निरँकारा, इक्क इकल्ला आसण लाईआ। दीवा बाती ना कोए उज्यारा, जोती नूर नूर नूर नूर रुशनाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, अलख निरँजण आपणी अलख आप जगाईआ। आपे होए देवणहारा, आपणी झोली आप भराईआ। आपे जाणे आपणा सच विहारा, करनी करता आप कमाईआ। आपे लख चुरासी कर पसारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रखे थाउँ थाईंआ। आपे गुर अवतार पीर पैग़म्बर दे सहारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बन्धन पाईआ। आपे जुग चौकड़ी करे पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे

१०१२
१२

सच्चा माहीआ। सचखण्ड दवार सोहणा बंक, सो पुरख निरँजण आप बणाया। कोई लेखा ना जाणे आदि अन्त, मध आपणा खेल कराया। ना कोई राउ ना कोई रंक, एका रंग समाया। ना कोई मणीआ ना कोई मंत, मन्त्र शब्द ना कोए सुणाया। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर अवतार नज़र कोए ना आया। ना कोई पांधा ना कोई पंडत, मुल्ला शेख ना कोए पढ़ाया। ना कोई गढ़ हउमे हंगत, काया कोट ना कोए वड्याआ। ना कोई खण्डा ना कोई खण्डत, तीर कमान ना कोए उठाया। ना कोई जेरज ना कोई अंडत, उत्भुज सेत्ज रूप ना कोए वखाया। सचखण्ड दवारे पुरख अबिनाशी इक्को इक्क बोध ज्ञाना पंडत, पारब्रह्म आपणा नाउँ धराया। ना दरवेश ना कोई मंगत, भिखारी रूप ना कोए वखाया। ना कोई गुर ना कोई संगत, ना कोई चरन कँवल समझाया। आपे जाणे आपणी बणत, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे आपे चढ़, साचा खेल आप वरताया। साचा खेल वरते भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी रचन रचाईआ। कोटन कोटि साध सन्त, भगत भगवन्त सेव लगाईआ। कोटन कोटि नाम मणीआ मंत, रसना जिह्वा रही गाईआ। कोटन कोटि जगत नार कन्त, हरि कन्त इक्को इक्क नज़री आईआ। कोटन कोटि बस्त्र रंग चाढ़न बसन्त, हरि बसन्त रंग इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१०१३ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे आपणा पर्दा पाईआ। सचखण्ड निवासी बैठा लुक, नेत्र १०१३
नैण नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर रिहा चुप्प, गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्क पढ़ाइंदा। शब्द दुलारा
१२ कीता सुत, जन जनणी आपणा रूप वटाइंदा। दाई दाया सेवा करे अबिनाशी अचुत, साची सेवा आप कमाइंदा। थिर घर १२
मौले इक्को रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखे उठ, आप आपणा नैण खुल्हाइंदा। जिउँ भावे तिउँ जाए तुठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी करे जग, जुग जुग वेस वटाईआ। त्रैगुण माया वेखे अग्ग, लख चुरासी तपे लोकाईआ। जीव जंत होए कग, बुद्धि काग वांग कुरलाईआ। काया मन्दिर अंदर कोई ना बहे सज, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर टिल्ले पर्बत खोज खोजाईआ। अमृत आत्म पीवे कोई ना रज्ज, अठसठ तीर्थ भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। नौ दुआरे रहे नच्च, दसवें मेल ना सच्चे माहीआ। लेखे लग्गे ना काया माटी कच्च, काची गगरीआ कम्म किसे ना आईआ। हिरदे वसे ना हरि हरि सच्च, सच सुच्च ना कोए कुड़माईआ। मन वासना रहे नच्च, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। गुर का शब्द ना सके वाच, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। अजपा करे ना कोए पाठ, रसना जिह्वा सर्ब हल्काईआ। पंच विकारा करे ना कोए घात, खण्डा नाम हथ्थ

ना कोए चमकाईआ। आपणी पति कोए ना सके राख, बिहबल रोवे सर्ब लोकाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा अन्धेरी रात, आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। पुरख अबिनाशी वेखे खोल्ह ताक, दो जहानां पर्दा आप उठाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार कवण दुआरे बैठे घाट, आपणे पतण डेरा लाईआ। नेड़े दूर कवण तकाए वाट, बण पाँधी फेरा पाईआ। कवण निझर रस रिहा चाट, रसना रस ना कोए वखाईआ। कवण निरगुण विक्या सरगुण हाट, हट्टो हट्ट ना कोए भुआईआ। कवण दर्शन पाए कमलापात, कँवल नैण इक्को नज़री आईआ। कवण नाता तोड़े ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए रखाईआ। कवण लेखा जाणे पवण स्वास, उनन्जा पवणा रिहा समाईआ। कवण पूरी करे आस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जन भगतां मेल मिलाईआ। कवण प्रगट होए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। कवण गुरसिख बणाए पारज़ात, चरन कँवल दए वड्याईआ। कवण पूरब जन्म पूरा करे घाट, पूरब लेखा दए चुकाईआ। कवण लेखा मुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। कवण बणे माई बाप, पिता पूत गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड आपणा वेस वटाईआ। सचखण्ड दवारे वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, जुग जुग वेस वखाइंदा। गुर अवतार फड़ाया पल्ला, पल्लू एका गंढ्ढ पुआइंदा।
१०१४ नाम संदेस एका घल्ला, नर नरेश आप पढ़ाइंदा। दर दरवेश आपे खला, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्दी धार आपे रला, १०१४
१२ रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा १२
भेव चुकाइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्हे भेत, भेव आपणा आप जणाईआ। जुग चौकड़ी करे हेत, भगत भगवन्त लए उठाईआ। लख चुरासी वेखे खेत, बण किरसाणा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा देवे लाह, सचखण्ड निवासी खेल कराइंदा। सच संदेसा दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। विष्नूं दर लए बुला, ब्रह्मा एका हुक्म मनाइंदा। शंकर सीस रिहा झुका, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। त्रैगुण माया मारे धाह, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। पंज तत्त रहे कुरला, दोए जोड़ वास्ता सर्ब पाइंदा। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार लए बुला, बराह आपणा हुक्म सुणाइंदा। युगे पुरष लए उठा, हाव ग़रीब नाल रलाइंदा। नर नरायण चरनी डिगे आ, कपलमुन मस्तक टिक्का एका लाइंदा। दत्ता त्रै होए फिदा, फितरत आपणी आप मिटाइंदा। रिखव देव इक्को मंग रिहा मंगा, खाली झोली अग्गे डाहइंदा। पिरथू सेव लए कमा, साची सेवा झोली पाइंदा। मत्तस जल रिहा समा, जलधारा खेल जणाइंदा। कशप मिन्दिरा रिहा उठा, तेरा हुक्म सीस टिकाइंदा। मोहनी

मथण रिहा करा, समुंद सागर वरोल वखाइंदा। धनंतर लेखा रिहा चुका, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। हँसा आपणा नाउँ धरा, सोहँ गीत सोहला ढोला एका गाइंदा। नर सिँघ खेल करे बेपरवाह, दर आपणा इक्क जणाइंदा। बल दुआरे फेरा पा, बावण आपणा भेव खुल्हाइंदा। बावन तेरा लेखा दए मुका, पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म वरताइंदा। अन्तिम लहिणा दए चुका, बाकी कोए नज़र ना आइंदा। नर हरि वेस वटा, ध्रू बाले लेखा आप चुकाइंदा। गज़ तन्द आप कटा, हरीहर आपणा वेस वटाइंदा। हुक्मे अंदर लए बन्न्हां, नाम डोरी इक्क उठाइंदा। परस राम लए उठा, पिछली कीती याद कराइंदा। राम दसरथ बेटा लए जगा, प्रगट रम्मईआ राम आपणा हुक्म वरताइंदा। वेद व्यासा नैण दए खुल्हा, पुराण अठारां पर्दा लाहइंदा। गीता ज्ञान लहिणा देणा देवे झोली पा, त्रिलोकी नंद नंद आप जणाइंदा। फड़ बांहों चरनां हेठ लए दबा, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। मूसा इक्क संदेसा दए पहुंचा, कोहतूर नज़र कोए ना आइंदा। ईसा लेखा दए समझा, खुदा नूर ज़हूर इक्क दृढ़ाइंदा। मुहम्मद अहिमद पर्दा देवे लाह, अल्ला राणी गंढु पुवाइंदा। चार यारी जोड़ जुड़ा, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। हुक्मे अंदर खेल वरता, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। सचखण्ड खेल करे सच्चा शहिनशाह, निरगुण नानक सरगुण नानक आपणे नाल प्रनाइंदा। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, नाम सति झोली पाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लेखा दए जणा, ईश जीव ब्रह्म पारब्रह्म संग मिलाइंदा। चार वरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका घर दए वखा, ज़ात पात राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान ना कोए जणाइंदा। साची सिख्या इक्क दृढ़ा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। अगम्मी कार आप करा, अंगद एका अंग लगाइंदा। अंगद अमृत आत्म जाम प्या, अमर दास वेख वखाइंदा। राम दास काया मन्दिर भेव चुका, हरिमन्दिर राम दास पर्दा लाहइंदा। आदि जुगादी धुंन अनादी शब्द अनादी राग दए अला, गुर अर्जन अर्जन गुर भेव खुल्हाइंदा। बोध अगाधी शब्द सुणा, अनरागी आपणा राग अल्हाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग विछड़े लए मिला, गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त आपणा मेल मिलाइंदा। पंज इक्क पंज दो बावन अक्खर आपे हो, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पंज तिन्न तिन्न पंज पंचम आपणा मेल मिलाइंदा। गुरू ग्रन्थ बीज साचा बो, बोध अगाध सन्त साध लख चुरासी जीव जंत वंड वंडाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता हरि गोबिन्द मेटे चिन्द, सच कटार कर त्यार, प्रेम प्यार दो धार आप वखाइंदा। हरिराय दे अधार, आत्म अन्तर कर पसार, हरिकिशना कर विचार, किशना लेख ना कोए रखाइंदा। तेग़ बहादर तिक्खी धार, संसार सागर करे पार, डुब्बदे पाथर जाए तार, पाहन आपणा चरन छुहाइंदा। गोबिन्द सूरा ख़बरदार, पुरख अकाल करे प्यार, पूत सपूता आपणी गोद बहाइंदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पतालां जेरज अंडां

१०१५ १२

पावे सार, उत्भुज सेत्ज लेखा मूल चुकाइंदा। भगत अठारां वणज वणजार, ध्रू प्रहिलाद लए अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म पंचम मीता, पंचम पंच जणाईआ। आदि जुगादी जाणे रीता, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। वसे धाम इक्क अनडीठा, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। लख चुरासी सज्जण मीता, घर घर वेख वखाईआ। परखणहारा जीव जंत नीता, नीतीवान इक्को इक्क रघराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचे हरि, साची खेल आप रचाईआ। साची खेल करे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी करे अन्त, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। कलयुग खेल करे बेअन्त, बेअन्त भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची धार चलाइंदा। सचखण्ड निवासी साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, निरगुण आपणा रूप धराईआ। एकँकार महल अटल वेख मुनार, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। आदि निरँजण कर उज्यार, नूर ज़हूर इक्क दरसाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह ठाडा दरबार, श्री भगवान सति सतिवादी सच निशान उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे प्यार, ब्रह्मवेता सच्चा माहीआ। अन्तिम लेखा मेटे सर्ब संसार, भरम भुलेखा रहे ना राईआ। नर नरेशा सिरजणहार, सिर सिर रिज़क सभाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेई अवतार, भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद गुरू दस लए उठाल, हुक्म हाकम इक्क जणाईआ। नेत्र वेखो शाह कंगाल, कलयुग जीव रहे कुरलाईआ। सच ना मिले कोए दलाल, नाम दलाली ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल कराउणा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा नाउँ धराउणा, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। सति सतिवादी आदि जुगादी ढोला इक्को गाउणा, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। साचा मन्दिर इक्को सहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाईआ। साचा राह चलाए श्री भगवान, श्री भगवान वडी वड्याईआ। कलयुग अन्त लेखा चुकाए आण, लेखा आपणे विच छुपाईआ। शब्द अगम्मी तीर निराला मारे बाण, अणयाला आप चलाईआ। शाह पातशाह होण हैरान, हरि का भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी लेखा दए मुकाईआ। जुग चौकड़ी मुक्के पन्ध, थिर कोए रहिण ना पाया। कलयुग अन्तिम मिटना चन्द, जगत अन्धेरा छाया। लख चुरासी वासना गंद, हिरदे हरि ना कोए वसाया। आत्म बिन परमात्म होई रंड, सेज सुहञ्जणी ना कोए सुहाया। किसे ना मिले निजानंद, निझर झिरना ना

१०१७ १२

कोए झिराया। रसना जिह्वा खा खा थक्की गंद, कूड़ी वासना ना कोए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा देवे चुकाया। सब दा लहिणा चुकाउणा आप, प्रभ साचा दया कमाइंदा। पूरब लहिणा लख चुरासी वेखणहारा जन्म कर्म पाप, पतित पुनीत खोज खोजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े लभ्भदे सज्जण साक, गुरमुख गुरसिख आप उठाइंदा। तट किनारा वेखणहारा घाट, कलयुग अन्तिम पत्तण आपणा डेरा लाइंदा। पीर पैग़म्बर राह तक्कण अन्तिम मुक्की साडी वाट, चौदां सदीआं पन्ध मुकाइंदा। कवण सुत्ते डूँघे खात, कवण दुआरे बन्द रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी कलयुग आपणी कल आप वरताइंदा। कलयुग अन्तिम हरि बलवाना, निहकलंक नाउँ रखाईआ। वेद व्यासा लिख के गया ब्याना, वाक् भविख्त रिहा समझाईआ। ईसा मंगे दर दरवेश दाना, मेहरवान मेहरवान मेहरवान बेनज़ीर नज़र मेहर इक्क उठाईआ। मुहम्मद कहे मेरा अमाम अमामां, दस्तगीर आवे माहीआ। नानक निरगुण कहे निहकलंक महांबली उतरे वाली दो जहानां, ना कोई पिता ना कोई माईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल मेरा साहिब सतिगुर बीना दाना, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। ठाकर स्वामी मेरा ठांडा करे सीना, पूत सपूता गले लगाईआ। वेखणहारा मक्का मदीना, काया मकबरा खोज खोजाईआ। आदि जुगादि लोक परलोक अवन गवन त्रैभवन खण्ड ब्रह्मण्ड जिस रखे आपणे हदीना, गुर अवतार पीर पैग़म्बर हुक्मे अंदर रिहा फिराईआ। सो साहिब आए प्रबीना, प्रबल आपणा हुक्म मनाईआ। गुरमुखां ठांडा करे सीना, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। काया चोली चाढ़े रंग भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। बुझाए आस जगत गुरसिख मीना, सच सागर लए समाईआ। नाता तोड़े त्रैगुण माया लोक तीना, त्रिलोकी नंद ना कोए वड्याईआ। गुरमुखां होण ना देवे किसे हदीना, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत भगवान आदि जुगादि लख चुरासी नालों वक्ख कीना, वक्खरी आपणी धार चलाईआ। कलयुग राज राजनां शाह सुल्तानां भन्ने हँकारी बीना, हँकारी गढ़ दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, सचंखड निवासा पुरख अबिनाशा कलयुग अन्तिम लख चुरासी वेखे तमाशा, घर घर मन्दिर अंदर मण्डप आपणी रास रचाईआ। रास रचे हरि गोपी काहन, लख चुरासी खोज खोजाइंदा। लेखा जाणे सीता राम, सुरती सब दी आपणे हथ्थ रखाइंदा। लहिणा देणा चुकाए नाम सतिनाम, नानक निरगुण आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन्म मरन विच ना आइंदा। गोबिन्द सतिगुर गुर गुर प्याए साचा जाम, सच प्याला मधुर रस हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो श्री भगवान, गोबिन्द झुलाए सच निशान, दो जहानां आप वखाइंदा। लहिणा मुक्का ज़िमी असमान, चौदां तबक वेखे

मार ध्यान, चौदां लोक नाम इक्को गाण, कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव मंगण दान, दाता दानी दयावान, पुरख अकाल अकल कलधारी इक्को नज़री आइंदा। इक्क अकाल इक्क हरि, एकँकारा इक्क वड्याईआ। इक्क दरवेश इक्क दर, इक्को अल्फी रिहा हंढाईआ। इक्को अक्खर निष्अक्खर रूप रिहा पढ़, इक्को कारे आदि जुगादि पढ़ाईआ। इक्को नूर अनभउ प्रकाश धर, धरनी धरत धवल आकाश प्रकाश करे रुशनाईआ। इक्को दो जहानां खेल वेखे घर घर, लख चुरासी काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। इक्को आदि जुगादि जुगा जुगन्तर घाड़त लए घड़, इक्को अन्तिम भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, निहकलंक नरायण नर, जुग करता जुग करनेहारा कीती सब दी वेखे थाउँ थाईंआ।

✳ १२ अस्सू २०१६ बिक्रमी साधू सिंघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✳

सति भूमिका सोहे अस्थान, सच खाक मिले वड्याईआ। सोभावन्त सो मकान, जिस गृह मेहरवान नज़र टिकाईआ। सो दर होए परवान, जिस घर परवाना नाम हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। साची धरनी चढ़या चा, खुशी इक्को इक्क वखाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या आ, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। चौथे जुग लेखा रिहा मुका, लहिणा आप दवाईआ। ग़रीब निमाणे रिहा उठा, फड़ बांहों गले लगाईआ। साचा मार्ग रिहा जणा, आत्म परमात्म दे वड्याईआ। एका मन्दिर रिहा वखा, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। जन्म जन्म दा झेड़ा दए गुआ, झगड़ा तत्त ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। धरनी धरत पेखे नैण, नेत्र पेख खुशी मनाईआ। वाहवा हरि जू हरि हरि आया लैण, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। पूरब जन्म दा देवे देण, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। जिस नूं आदि जुगादि गुर अवतार पीर पैग़म्बर परम पुरख सुल्तान कहिण, सो शहिनशाह फेरा पाईआ। जिस दा वरन बरन शास्त्र सिमरत गायण गाण, गा गा शुकर मनाईआ। जिस नूं कहिन्दे वेस वटाए नाई सैण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। चरन वेखे चरन दुआर, हरि चरन मिले वड्याईआ। जिस विछड़यां लख चुरासी मारे मार, राए धर्म दए सज़ाईआ। जिस भुल्लयां होए हाहाकार, नव नौ ना कोए थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब फेरा पाईआ। धरनी करे असीस एक, दोए दोए निमस्कारया। पारब्रह्म तेरा अवल्लड़ा भेख, नज़र ना आए विच संसारया। मुछ दाढ़ी ना कोए

१०१८ १२

केस, ना कोए मूंड मुंडा रिहा। निरगुण रूप रहे हमेश, सचखण्ड साचे सोभा पा रिहा। कोटन कोटि सेवा लए विष्न ब्रह्म महेष, ब्रह्म आपणी अंस बणा रिहा। सतिजुग त्रेता द्वापर खेलिआ खेड, गुर अवतार हुक्म वरता रिहा। आपणे अंदर आपणा रख्या भेत, भेव आपणा आप छुपा रिहा। कलयुग अन्तिम कर कर हेत, रूप अनूप आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमा रिहा। धरनी कहे मेरा सोहया घर, घर आया पुरख अबिनाशा। चौथे जुग मिल्या वर, दिता सच दिलासा। लेखा जाणे नरायण नर, दो जहानां खोले खुलासा। ग़रीब निमाणयां लए फड़, सदा सुहेला रखे अपणे पासा। निरभउ चुकाए भय डर, करे खेल पुरख समराथा। गुरमुख सज्जण लए फड़, लेखा चुकाए हथ्थो हाथा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साहिब सर्ब घट वासा। धरनी कहे मेरी आदि उडीक, अन्त पूर कराईआ। पुरख अबिनाशी नज़री आया लाशरीक, शरअ संग ना कोए लिआईआ। कलयुग मेटे अन्त अन्धेरा तारीक, साचा चन्द करे रुशनाईआ। सच निशाना मारे ठीक, कलयुग ठीकर भन्न वखाईआ। ग़रीब निमाणयां लाए सच प्रीत, प्रीतीवान फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई दस्से इक्को रीत, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। नाता तोड़े मन्दिर मसीत, गुरुदुआर शिवदुआला मट्ठ एका एक घर वखाईआ। आत्म परमात्म सुणाए साचा गीत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। करे पाक पतित पुनीत, पतित पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। धरनी कहे मेरा आया शाह, शहु मेरे वडी वड्याईआ। कोझी कमली लए उठा, मेरा दर्दी दुःख वंडाईआ। चार कुण्ट मिले ना कोए थाँ, थान थनंतर ना कोए सुहाईआ। दीन मज़ब कलयुग अन्तिम सच दवारिउँ सारे कर गए ना, अग्गे हो सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र प्रभ इक्को रख, आपणा खेल वखाइंदा। लख चुरासी भाण्डे सक्ख, भरया कोए नज़र ना आइंदा। कूड़ी क्रिया जगत हट्ट, नाम वणजारा ना कोए रखाइंदा। त्रैगुण माया लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। ना कोई हाजी करे हज्ज, मक्का काअबा सर्ब कुरलाइंदा। ना कोए किनारा तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नैण शरमाइंदा। साधां सन्तां ख़ाली दिसण मट, हरि मन्दिर रूप ना कोए वटाइंदा। साचा दीपक जोत जगे ना लट लट, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। दूई द्वैती सब नूं लग्गा फट्ट, घाउ बन्द ना कोए कराइंदा। करे खेल पुरख समरथ, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। बिन गुरमुखां गुर गुर कोए ना रखे पत्त, पतिपरमेश्वर ना कोए मनाइंदा। जुग चौकड़ी जो रखे ढक, कलयुग अन्तिम पर्दा लाहइंदा। करे निबेड़ा हक़ो हक़, हक़ हक़ीक़त खोज खोजाइंदा। सचखंड निवासी बिन अक्खां रिहा तक्क, कलयुग नेत्र बन्द कराइंदा।

भाग लगाए कुल्ली कक्ख, जिस गृह गुरमुख डेरा लाइंदा। धरनी वछा के बैठी सथ्थ, सत्थर यारड़ा इक्क हंढाइंदा। गोबिन्द मीता ठांडा सीता मेरी पति लए रख, पति पतिवन्ता फेरी पाइंदा। मेरे नक्क सोहे सुहाग नथ्थ, पुरख अबिनाशी सगन मनाइंदा। जन भगतां साचा मार्ग रिहा दस्स, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। चार वरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक एका मन्दिर जाण वस, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ गाओ जस, दूसर जस कम्म किसे ना आइंदा। नर निरँकार दर्शन पाओ नस्स नस्स, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कलयुग अन्तिम ख़ाली हथ्थ रहे झस्स, बेवस सर्ब कुरलाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत मुनारा जाणा ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। भगत नगारा दो जहान जाणा वज्ज, श्री भगवान आप वजाइंदा। काया चोला सब ने जाणा तज, पंज तत्त संग ना कोए रखाइंदा। मात पित भाई भैण साक सज्जण सगला संग जाणा छड्ड, बिन सतिगुर संग ना कोए निभाइंदा। काया कवरी डूँघी भँवरी विच्चों करना अड, सच महल्ल इक्क वखाइंदा। गीत गोबिन्द गाओ छन्द, सोहला ढोला इक्क पढ़ाइंदा। आत्म पाओ निजानंद, निजानंद इक्क वखाइंदा। जन्म जुग दी टुट्टी लओ गंढ, गंढणहारा दया कमाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे साहिब बख़्शंद, सो साहिब फेरा पाइंदा। जो आदि जुगादि जुगा जगंतर वंडां रिहा वंड, सो अन्तिम सब दी वंड आपणे लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। धरनी कहे मेरा रंग, नज़र किसे ना आया। पुरख अबिनाशी सूरे सरबंग, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। मेरी नंगी होए ना कंड, पर्दा इक्को इक्क पाया। भगत भगवन्त मेरे हिस्से दिते वंड, मैं जा जा सीस झुकाया। जिथे गाउण सोहँ छन्द, तिस मन्दिर हरि जू रिहा समाया। अंदर बाहर इक्को अनन्द, दूजा रस ना कोए वखाया। मेरे कालजे पै गई ठंड, चार युग दा दुक्खड़ा दुःख गंवाया। मेरा तुट्टा माण घुमंड, बलहीण दयां दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, जिस गृह वसें साचे साँईंआ। सच्चा साँईं हरि गोपाल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जिस गृह वसे मेरा लाल, तिस गृह हरि जू सोभा पाइंदा। आदि जुगादी दीन दयाल, दीनन आपणे गले लगाइंदा। आपे पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाइंदा। स्वच्छ सरूपी दरस वखाल, दीद ईद ईद चन्द चढ़ाइंदा। सदा सुहेला चले नाल, साहिब सतिगुर विछड़ कदे ना जाइंदा। लेखा जाणे साह कंगाल, बण कंगाल आपणा भेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम बणया आप दलाल, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे खाते विच रखाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म हरि एका मार्ग दए वखाल, बण रैहबर राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल सच दुआर, दर दरवाज़ा

१०२०
१२

आप खुल्हाईआ। प्रगट हो परवरदिगार, पर्दा आपणा दए उठाईआ। जल्वा नूर नूर जलाल, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त वेखे थाउँ थाईंआ। मुकामे हक़ बेमिसाल, बेनज़ीर फेरा पाईआ। मिहबान बीदो बण दलाल, बी खैर या अल्ला इलाही नूर वेखे थाउँ थाईंआ। चौदां तबकां बण दलाल, साचा सबक इक्क सुणाईआ। एका कलमा कायनात कर त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा आप उठाईआ। पर्दा ओहला लाह समरथ, समरथ आपणा खेल कराइंदा। निरगुण नूर निराकार निरँकार हो प्रगट, प्रगट आपणा भेव चुकाइंदा। जिस नूं गुर अवतार पीर पैग़म्बर रसना जिह्वा गए रट, निउँ निउँ सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। सो देवण आया साची वथ, हं आपणी झोली पाइंदा। सर्ब कला आपे समरथ, समरथ आपणा खेल समझाइंदा। बोध अगाधी महिमा अकथ, कथ कथनी आप जणाइंदा। सति सतिवादी चलाए साचा रथ, सति पुरख निरँजण सेव कमाइंदा। जन भगतां देवे नाम वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। हिरदे अंदर आपे वस, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। दिवस रैण गाए जस, अनबोलत शब्द अल्हाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा भेव चुकाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, निरगुण जोत चन्द चढ़ाइंदा। तीर अणयाला मारे कस, बजर कपाटी पार कराइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए हस्स हस्स, हँस मुख सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। गुरमुख गुरसिख अद्धविचकार ना जए फस, जम का फास आप कटाइंदा। मेल मिलाए नस्स नस्स, बण पाँधी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी उत्ते गुरमुख घर, गुरमुख घर आपे वड़ काया मन्दिर साचे चढ़, सुरत सवाणी लए फड़, शब्दी अक्खर इक्को पढ़, आत्म परमात्म बन्हे लड़, पल्लू इक्को गंढु वखाइंदा। घर विच घर घर विच मन्दिर, घर घर विच खोज खोजाईआ। घर विच नाम घर विच मन्त्र, घर विच सिख्या दए समझाईआ। घर जोत घर निरंतर, घर वसे सच्चा माहीआ। घर अग्नी तत्त बसन्तर, घर अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख घर वेखे चाँईं चाँईंआ। घर विच घर घर टिकाणा, हरि घर घर आप सुहाईआ। घर घर शब्द घर बबाणा, हरि घर घर रिहा उडाईआ। घर घर मनुआं राजा राणा, आपणा हुक्म वरताईआ। घर घर सतिगुर वरते भाणा, मन मनसा दए खपाईआ। घर घर गाए अगम्मी गाणा, अनहद नादी नाद वजाईआ। घर घर देवे धुर फ़रमाना, सच संदेसा इक्क अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ। घर मन्दिर घर कोट, घर आसण सोभा पाइंदा। घर नूर निर्मल जोत, घर प्रकाश प्रकाश वखाइंदा। घर शब्द अगम्मी लग्गे चोट, घर डंका नाम वजाइंदा। घर दूई द्वैती कढ्ढे खोट, घर भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। घर पुरख अकाल रखाए इक्क ओट, इष्ट गुरदेव

१०२१
१२

इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप वसाइंदा। साचा घर वसे खेड़ा, गुरसिख मिले वड्याईआ। सतिगुर नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म खुल्ला करे वेहड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। पंच विकार ना करे झेड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए लड़ाईआ। डूँघे सागर कलयुग भँवरी बन्ने बेड़ा, आपणे कंध लए उठाईआ। इक्को नाता जोड़े तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख घर देवे वड्याईआ। गुरमुख घर सच मकाना, मकबरा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरबाना, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। दीपक जोत जगे महाना, नूरो नूर चमकाईआ। अनहद शब्द अगम्मी गाए गाणा, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा संग रखाईआ। गुरमुख विरले देवे माणा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क ध्याना, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख खेड़ा इक्क वसाईआ। गुरमुख खेड़ा वसे बंक, बंक दुआरी आप वसाइंदा। नाम निधाना वज्जे डंक, डौरू डंका इक्क सुणाइंदा। दूई द्वैती हउमे हंगता माया ममता
१०२२ कढ्ढे शंक, शरअ रूप ना कोए वखाइंदा। आत्म परमात्म बणाए साची बणत, बसन बनवारी आपणी दया कमाइंदा। घर १०२२
मेला नार कन्त, कन्त कन्तूहल साची सेज सुहाइंदा। एका नाउँ मणीआ मंत, मन वासना मेट मिटाइंदा। गुरसिख सच्चा
१२ ज्ञान बोध आत्म पंडत, जिस जन पारब्रह्म आपणा दरस दिखाइंदा। सो परवान होए साचा सन्त, जिस सति परवाना नाम १२
फड़ाइंदा। तिस लेखा जाणे भगत भगवन्त, जिस भगत आपणी गोद बहाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी होई नंगत, कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत साध सन्त कुरलाइंदा। दर भिखारी बणे ना कोए मंगत, जगत भिच्छया झोली सर्ब डाहइंदा। गढ़ तुट्टे ना हउमे हंगत, हरि का नाम हिरदे ना कोए वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बंक इक्क सलाहइंदा। गुरसिख बंक सलाहणयोग, जुगती हरि जू आप बणाईआ। जिस गृह मिले साची मोख, मुक्ती चरनां हेठ दबाईआ। आत्म परमात्म होए सच संजोग, धुर संजोगी मेल लए मिलाईआ। नाता तुट्टे चौदां लोक, लोक परलोक लहिणा दए मुकाईआ। जिस मन्दिर गाईए इक्क सलोक, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। गुरमुख पकड़े आलणयों डिगे बोट, नाम चोग हथ्थीं पाईआ। अन्त जणाए साची ओट, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। सतिगुर सच्चा इक्को बहुत कोटन कोटि, गुरू कम्म किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण ओत पोत, पुत पोतरे खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख दुआरा इक्क

सुहाईआ। गुरसिख दुआरा सच महल्ला, जिस गृह हरि हरि खेल कराइंदा। हरिसंगत रूप संगत रल्ला, सगला संग निभाइंदा। अंदर बाहर फड़ाए पल्ला, आपणा आप गंढु वखाइंदा। सच संदेस नर नरेश एकँकार एका घल्ला, इक्को वार सर्ब पढ़ाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत अन्तर आत्म आप रल्ला, रल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। साची सोझी जाए सुझ, सूचना हरि जणाईआ। आपा चीन आपा लए बुज्झ, बुझारत इक्को हरि समझाईआ। सतिगुर साहिब देवणहारा दात कुझ, कोझे कमले लए उठाईआ। प्यार परवार जाए रुझ, रुच्ची आत्म परमात्म लिव लाईआ। अंदर वसणहारा आपे लए पुच्छ, गुरमुख केहड़े रस्ते जाईआ। सतिगुर कोलों कोए ना सके लुक, पर्दा सके ना कोए छुपाईआ। जिस जन उपर किरपा कर जाए तुट्ठ, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। जिस अमृत प्याए जाम घुट्ट, तिस त्रैभवण दए बुझाईआ। गुरसिख बूटा कदे ना जाए सुक, सिंच हरया आप कराईआ। भाग लगाए माता कुक्ख, जनणी जन देवे वड्याईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत्त, चेतन सुरती दए कराईआ। पंज तत्त काया मौले सोहे रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। वखाए सुख पिओ पुत्त, पिता पूत एका रंग वखाईआ।

१०२३ १०२३

१२ १२

❊ १२ अस्सू २०१६ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पक्खोवाल जिला लुधियाणा ❊

काया माटी करे साफ़, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। कोट जन्म दे लाहे पाप, दुरमति मैल धुवाईआ। किरपा करे प्रभू प्रभ आप, जन मेले हरि गोसाँईआ। कर प्रकाश अन्धेरी रात, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। घर मन्दिर खोल्ह ताक, दर दरवाज़ा कुण्डा लाहीआ। नाम सुणाए साचा नाद, धुंन आत्मक राग अल्हाईआ। गृह मन्दिर करे लाड, आत्म परमात्म गोद सुहाईआ। हरिजन लेखा जाणे साचे साध, सिदक सबूरी सबर हंढाईआ। भेव चुकाए वाद विवाद, विख अमृत रूप वटाईआ। डूँग्घी कंदर हो विस्माद, विस्मादी विस्माद समाईआ। जुग जुग जन भगतां रखे याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक साची सेव कमाईआ। काया मन्दिर देवे धो, हरि जू हरि हरि दया कमाइंदा। करे प्रकाश साची लो, लोआं पुरीआं पर्दा लाहइंदा। हँ ब्रह्म आपे हो, सो पुरख निरँजण मेल मिलाइंदा। अमृत रस निझर चो, साची धारा आप वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मन्दिर वेख वखाइंदा। हरिजन मन्दिर दीआ बाती, हरि निर्मल जोत जगाईआ। करे खेल इक्क इकांती, अकल कल आपणे हत्थ रखे वड्याईआ। अंदर वड़ वड़ सुणाए साकी, साका आत्म परमात्म दए पढ़ाईआ। सोहँ अक्खर पूजा पाठी, पोथी पुस्तक इक्को इक्क वखाईआ।

पारब्रह्म प्रभ सगला साथी, घर साचा संग निभाईआ। शाहो भूप शहिनशाह शाह शाबाशी, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाईआ। करे कराए बन्द ख़लासी, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जिस गृह मन्दिर करे वासी, तिस देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मन्दिर इक्क सुहाईआ। हरिजन मन्दिर हरि जू वेख, आपणी ख़ुशी मनाइंदा। जिथे ना कोई औलीआ ना कोई पीर शेख़, पंडत पांधा ना कोए पढ़ाइंदा। पुरख अकाल इक्को टेक, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। सद वसे सच्चा देस, जिस देस हरि जू डेरा लाइंदा। कलयुग अन्तिम इक्क दूजे दा घर लैण वेख, गुरसिख गुर गुर पर्दा आप उठाइंदा। आत्म परमात्म खोल्ले भेत, भेव अभेदा आप जणाइंदा। तेरा मेरा इक्को हेत, हितकारी आप समझाइंदा। काया अंदर खेले खेड, खेडणहारा नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मन्दिर साफ़ वेख वखाइंदा। साफ़ मन्दिर वेख सोहणा, सो आपणी रिहा जणाईआ। गुरसिख मेरे जिहा होणा, मेरा रूप गुरमुख नज़री आईआ। भगत भगवन्त बीज बोणा, पत डाल्ली आप महकाईआ। लख चुरासी जीव जंत रोणा, रो रो दए दुहाईआ। हरि मन्दिर अंदर किसे ना सौणा, राए धर्म दए सज़ाईआ। गुरमुखां उठ उठ गीत गाउणा, सोहँ ढोला चाँईं
१०२४ चाँईंआ। पुरख अबिनाशी इक्क मनाउणा, जिस मिलयां दुःख रहे ना राईआ। गृह मन्दिर सच्चा इक्को पाउणा, जिस घर १०२४
ठग्ग चोर यार नज़र ना आईआ। साची सेजा इक्को सौणा, जिस सेजे सुत्तयां सके ना कोए उठाईआ। वर घर दाता इक्को पाउणा, जिस पा तोट ना आवे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मन्दिर मेला चाँईं
१२ चाँईंआ। गुरमुख मन्दिर सच मुनारा, ऋषी मुनी ध्यान लगाईआ। जिस घर वसे आप निरँकारा, सो घर सचखण्ड सोभा १२
पाईआ। जिस गृह लगे सच दरबारा, सो दर साची दरगाह रूप वटाईआ। जिस दर बोले नाम जैकारा, सो दर जै जैकार सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, हरि ख़ालक आप कराईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख विरला कर प्यारा, गुर गुर गुरमुख सलाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा, दर घर हरि इक्को इक्क वसाईआ।

✳ १२ अस्सू २०१६ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✳

सो पुरख साहिब समरथ, सचखण्ड निवासी खेल कराइंदा। सुत शब्द दुलारे देवे मति, बेपरवाह आप समझाइंदा। विष्नूं नेत्र खोल्ल अक्ख, हरि जू आपणी कल वरताइंदा। ब्रह्मे सति सरूप वेख प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणा आप वटाइंदा। शंकर त्रिसूल हथ्थों सट्ट, जोधा महांबीर हुक्म सुणाइंदा। त्रैगुण खेड़ा हुंदा जाए भट्ठ, सति सतिवादी आप जणाइंदा। पंज

तत्त लग्गण वाली अग्ग, तत्तव तत्त तत्त जणाइंदा। नाड़ बहत्तर उब्बले रत्त, रत्ती रत्त खोज खोजाइंदा। दो जहान चलावणहारा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। बोध अगाध महिमा अकथ, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। अवतारां मार्ग रिहा दस्स, सच संदेसा आप सुणाइंदा। जगत वेखो नट्ठ नट्ठ, हरि जू की की खेल कराइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां अंदर मन्दिर रिहा वस, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। लेखा जाणे रवि ससि, सूरज चन्न हुक्मे अंदर भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा साचा गीत, हरि सज्जण आप सुणाईआ। पीर पैग़म्बर वेखो आपणी रीत, रीतीवान रिहा समझाईआ। नाता तुट्टा मन्दिर मसीत, मस्जिद भेव कोए ना पाईआ। लख चुरासी होई पलीत, पतित पावन नज़र किसे ना आईआ। काया चोली चढ़े रंग ना कोए मजीठ, साध सन्त देण दुहाईआ। परमात्म आत्म आत्म परमात्म कोए ना गाए गीत, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। सतिगुर सच्चा सुत्ता दे कर पीठ, नेत्र नैण दरस कोए ना पाईआ। जीव जंत कौड़ा होया रीठ, अमृत रस ना कोए भराईआ। कलयुग अन्तिम रिहा बीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाईआ। सच संदेसा शहिनशाह, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, बेअन्त आपणी धार वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण निरगुण निरवैर वेस वटा, अजूनी रहित डगमगाइंदा। एकँकारा नाउँ निरँकारा सर्ब दए पढ़ा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। आदि निरँजण घट घट अंदर दीपक जोत दए जगा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। श्री भगवान सच निशान एथे ओथे दो जहाना दए झुल्ला, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणे हथ्थ रखाइंदा। अबिनाशी करता नाद अगम्मी दए वजा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां आप सुणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ लेखा दए मुका, ब्रह्म वेता ब्रह्म नेता नेतन नेत नेरन नेर आपणा खेल कराइंदा। भगत भगवन्त कर कर हेता, वेखणहारा काया खेता, पंज तत्त अंदर मन्दिर डूँग्घी कंदर फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क जणाइंदा। सच संदेसा हरि निरँकारा, दो जहानां आप जणाईआ। गुर अवतार करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवन्त दए हुलारा, नाम हुलारा इक्क रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीतया विच संसारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नौ सौ चुरानवें चोकड़ी युग नेत्र रोवण वारो वारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड दवारे लाया इक्क अखाड़ा, कोटन कोटि गोपी काहन नाच नचाईआ। दर दरवेश मंगण बण भिखारा, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द सीस झुकाईआ। अलख निरँजण बोल जैकारा, जै जैकार इक्को राग अलाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, करे कराए करनेहारा, त्रैगुण अतीता आपणा रूप अनूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला एकँकारा, चतुर्भुज भेव खुल्हाए आपणा गुझ, पर्दानसीं आपणा पर्दा आप उठाईआ। पर्दानशीं परवरदिगार, रहिमत रहीम रहिमान आप कमाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। मुकामे हक़ हक़ हो प्रधान, लाशरीक नौजवान, नौबत एका नाम वजाइंदा। चौदां तबक होए हैरान, पीर पैग़म्बर नैण शरमाण, ईसा मूसा मुहम्मद चार यार नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। कागद कलम सर्ब कुरलाण, लेखा लिख्या ना जाए बेपहिचाण, कातब हथ्थ ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क जणाइंदा। सच संदेसा सतिगुर मीता, सति सतिवादी आप जणाईआ। त्रैगुण माया तपे अंगीठा, नौ खण्ड पृथमी रिहा तपाईआ। किसे ना मिले राम सीता, सीता सुरती राम ना कोए प्रनाईआ। पढ़ पढ़ थके ज्ञान गीता, गुर ज्ञान हथ्थ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, करे खेल आप अनडीठा, अनडिठड़ी धार चलाईआ। साहिब सुल्तान सूरा सरबंग बैठा रहे अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्नेहुड़ा एका वार जणाईआ। सच स्नेहुड़ा श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। नाउँ निरँकारा वेखे मार
१०२६ ध्यान, एकँकारा वेस वटाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता पुरख बिधाता लख चुरासी खोज खोजाइंदा। अबिनाशी १०२६
करता देवे दान, अंदर बाहर गुपत ज़ाहर अनुभव आपणी खेल कराइंदा। श्री भगवान वड मेहरवान, आदि जुगादी देवणहारा
१२ ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड १२
दवारे साचे चढ़, तख्त निवासी शाहो शाबाशी साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचा तख्त एकँकार, एका एक बणाईआ। ना कोई दीसे चोबदार, सेवक रूप ना कोए वखाईआ। ना कोई घाड़त घड़े बण ठठयार, बाढी रूप ना कोए वटाईआ। आदि जुगादी खेल न्यार, जुग करता आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाए वारो वार, कोटन कोटि वेस वटाईआ। गुर अवतार बाल अञ्याणे सच संदेसा विच संसार, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। चौदां विद्या सुण पुकार, चौदां तबक दे हुलार, जै जैकार आपणा आप सुणाईआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता आपे वसे सब तों बाहर, रूप अनूप सति सरूप नज़र किसे ना आईआ। तेई अवतार करन पुकार, अठारां भगत खड़े दुआर, ईसा मूसा मुहम्मद रोवण ज़ारो ज़ार, गुर दस कर विचार, एका अक्खर मिले आधार, उदर अदर आत्म परमात्म मिले वड्याईआ। त्रैगुण नाता तोड़े विच संसार, पंचम जोड़े अलख अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, सो पुरख निरँजण

आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। पूरब लेखा करे विचारा, जुग चौकड़ी खोज खोजाइंदा। चरन कँवल बहाए गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर संग मिलाइंदा। साची सिख्या देवे एका वारा, इक्क इकल्ला आप पढ़ाइंदा। वरन बरन ज़ात पात पार किनारा, दीन मज़्ब ना कोए रखाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यारा, परम पुरख भेव चुकाइंदा। नज़री आए करतारा, हरि करनी आप कमाइंदा। कलयुग क्रिया सुट्टे डूँग्घी गारा, शहु दरयाए आप रुढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क प्रगटाइंदा। सच संदेसा प्रगटे जग, श्री भगवान आप सुणाईआ। सृष्ट सबाई एका मार्ग जाए लग्ग, दूजा राह ना कोए वखाईआ। एका आत्म परमात्म वज्जे नद्द, अनहद रागी राग सुणाईआ। पार किनारा होए हद्द, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। भगत भगवन्त घर साचे सद्द, सद्दा इक्को नाम रखाईआ। लेखा जाणे रक्त बूंद मास हड्ड, नाड़ बहत्तर खोज खोजाईआ। अमृत आत्म प्याए साची मदि, मधुर रस इक्क वखाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, गुरमुख आपणे अंग लगाईआ। आत्म परमात्म निज देवे सच अनन्द, अनन्द अनन्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा सतिजुग संग, हरि सतिसंगी आप सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम जाए लँघ, थिर मात रहिण ना पाइंदा। लख चुरासी आत्म परमात्म होई नंग, पर्दा सीस ना कोए टिकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी खण्ड खण्ड, हरि जू खण्डा खड़ग खड़काइंदा। बिन आत्म परमात्म परमात्म आत्म साध सन्त होए रंड, सेज सुहञ्जणी ना कोए वड्याइंदा। रसना जिह्वा पायण डण्ड, डौरू डंका इक्क वजाइंदा। जीव जंत भागांमंद, भय भउ नज़र ना कोए रखाइंदा। साचा चढ़या ना कोए चन्द, जोत उजाला ना कोए वखाइंदा। गा गा थक्के बत्ती दन्द, अजपा जाप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग राह चले करतार, चार कुण्ट दए वड्याईआ। चार युग लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा रहे ना राईआ। चार वरनां करे पार, अठारां बरन पन्ध मुकाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देवे इक्क आधार, एका मन्दिर दए वखाईआ। एका इष्ट देव विच संसार, सतिगुर पूरा नज़री आईआ। एका मन्त्र बोल जैकार, जै जैकार दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीवां इक्को नाम दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक्को दाता, एका घर सुहाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को नाता, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को ज्ञाता, अक्खर वक्खर नाम सिखाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को साथा, आदि जुगादि विछड़ ना जाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को साका, साक सज्जण हरि हो जाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को माई बापा,

पिता पूत गोद बहाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को कमलापाता, लख चुरासी नार हंढाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को पूरा करे घाटा, पूरब जन्मां वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई एका राह चलाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ एका रंग, एका वार वखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक्को मृदंग, घर अनहद नाद सुणाईआ। सर्ब जीआं प्रभ वखाए इक्को गंग, अमृत झिरना दए झिराईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक्क हंढाए सेज पलँग, आत्म परमात्म आसण लाईआ। सर्ब जीआं प्रभ सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं इक्क भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सर्ब जीआं देवे इक्क पहचान, बेपहचान आपणा पर्दा लाहइंदा। सर्ब जीआं वखाए इक्क मकान, मेहरवान चरन कँवल कँवल चरन इक्क वड्याइंदा। सर्ब जीआं झुलाए इक्क निशान, सति सतिवादी सति निशाना इक्क उठाइंदा। सर्ब जीआं देवणहारा माण, अभिमान रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सर्ब जीआं इक्क निरँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग जुग निरगुण सरगुण लै अवतार, लख चुरासी जीव जंत समझाईआ। सतिजुग त्रेता दुआवर वेख्या वारो वार, कलयुग अन्तिम रिहा हंढाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर कर गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। दोए दोए जोड़ मंगदे गए बण भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सर्ब जीआं दा सांझा यार, ज़ात पात विच कदे ना आईआ। दीन दुनी वेखे वेखणहार, निरँकार सच्चा शहिनशाहीआ। ईसा मंगे दरस दीदार, मूसा कहे परवरदिगार, मुहम्मद कहे मेरा यार, यारी यारां नाल निभाईआ। नानक कहे मेरा निरँकार, गोबिन्द कहे पुरख अकाल, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जुग जुग खेल करे निराल, हरिजन वेखे साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पूरी करे घाल, कीती घाल थाँए पाईआ। प्रगट होए दीन दयाल, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। चरनां हेठ दबाऐ काल महांकाल, महांबली आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क वड्याईआ। सच संदेसा गुर अवतार, लोकमात सुणाया। लिख लिख लेखा अक्खर वक्खर कर त्यार, खाणी बाणी बाणी खाणी वंड वंडाया। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी साची सेव कमाया। चारे खाणी करे विचार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज अन्त किसे ना पाया। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता लाशरीक बेऐब परवरदिगार, हक़ मुकामे एका खेल रचाया। एकँकारा हो त्यारा करे खेल अपर अपार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव अभेद जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्को इक्क पढ़ाया।

सच संदेसा पढ़ना मात, मातर भूमी आप जणाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कल वरताइंदा। जुग चौकड़ी वेंहदा रिहा खेल तमाश, गुर अवतार पीर पैग़म्बर सेवा लाइंदा। कलयुग अन्तिम सब दी पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फोल फोलाइंदा। लख चुरासी वेखणहारा पवण स्वास, पवण पवणां विच समाइंदा। भस्मड़ आपणी धार जणाइंदा। आदि जुगादि ना होए नास, जन्म मरन मरन जन्म विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची साखी आप प्रगटाइंदा। साची साखी साख्यात, हरि सतिगुर आप सुणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे मार झात, बण दाता दया कमाईआ। अन्तिम लेखा वेखे डूँग्घे खात, खाता आपे लए फोलाईआ। कलयुग होई अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जीव जंत कोए ना पुच्छे वात, सारे बैठे मुख भुवाईआ। माया राणी खाए खाज, सति सन्तोख ना कोए दृढ़ाईआ। मन मनुआ दहि दिशा रिहा भाज, डोरी शब्द बन्धन ना कोए पाईआ। हरि का नाउँ किसे ना आए हाथ, कलयुग सागर आपणे विच छुपाईआ। साथ छड्ड गए त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां ना कोए सहाईआ। वेखणहारा पुरख समराथ, सचखण्ड वेखे सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम निरगुण रूप सति सरूप पारब्रह्म प्रभ आया नट्ठ, निहकलंका आपणा नाउँ धराईआ। आत्म परमात्म ईश जीव जगदीस वेखे घट घट, गृह गृह आपणा फेरा पाईआ। जीव जंत साध सन्त मार्ग ल्या मनमति, गुरमति ना कोए दृढ़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रखे हट्ट, साचा वणज ना कोए कराईआ। दूई द्वैत लग्गा फट, नाम पट्टी ना कोए बंधाईआ। दीन मज़्ब उब्बले रत्त, रत्ती रत्त ना कोए सुकाईआ। हरि का गाए कोए ना जस, रसना जिह्वा कूड़ी सिफ्त सालाहीआ। रैण अन्धेरी होई मस, गुर ज्ञान शब्द चन्द ना कोए चढ़ाईआ। पंडत पांधे रहे नस्स, तीर्थ तट जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी फेरा पाईआ। कोई ना नाता तोड़े आन बाट, मात गर्भ ना फंद कटाईआ। मणका मणका माला रहे रट, मन का मणका ना कोए भुवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ रहे दस्स, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पंच विकारा कोए ना पाए नथ्थ, मुल्ला शेख़ मुसायक ग्रन्थी पन्थी चारों कुण्ट दहि दिशा उठ उठ धाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीते सब वस, आपणा बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। माया ममता अंदर गए फस, फाँसी जम ना कोए हटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दूर दुराडे बैठे रहे हस्स, वाहवा भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। असीं लोकमात साचा मार्ग आए दस्स, बिन हरि अन्त ना कोए सहाईआ। जिस दा गा गा आए जस, सो साहिब वेले अन्त फेरा पाईआ। सम्बल नगर जाए वस, गोबिन्द चले इक्क रज़ाईआ। हरिजन साचे मेले नट्ठ नट्ठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। एका घर एका वर एका हरि

एका नर इक्क नरायण करे इकट्ठ, एका मन्दिर दए वखाईआ। कलयुग खेड़ा करे भट्ठ, त्रैगुण अग्नी हेठां डाहीआ। पंज तत्त उपर देवे सट्ट, लम्बू इक्को वार लगाईआ। लख चुरासी काया माटी भन्ने कच्च, थिर कोए रहिण ना पाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा आप समझाईआ। आपणा नाउँ पुरख समरथ, समरथ पुरख खेल कराईआ। सतिजुग चलाए साचा रथ, बण रथवाही फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निरँकार निराकार आप जणाईआ। सच संदेसा श्री भगवन्त, भगवन आप जणाईआ। कलयुग लेखा मुके अन्त, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। प्रगट होवे नर हरि साचा कन्त, कन्त कन्तूहल दया कमाईआ। गुरमुखां काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। शब्द ज्ञान नाम निधान एका देवे मणीआं मंत, मन वासना दए खपाईआ। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक्क सहाईआ। कोए भेव ना जाणे पांधा पंडत, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी करता पुरख, आपणी आप कराइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता रोग ना कोए रखाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लए परख, नाम कसवट्टी हथ्थ उठाइंदा। ग़रीब निमाणयां उत्ते करे तरस, दयावान दीना नाथ
१०३० दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, जुग जन्म दी अग्नी तत्त बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १०३०
किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा सुण लै कलयुग, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरी औध गई पुग,
वेला अन्त अन्त वखाइंदा। चार कुण्ट ना जाणा लुक, दहि दिशा वंड ना कोए वखाइंदा। तेरी मेटे तृष्ना भुक्ख, तेरी हवस बन्द कराइंदा। सफल कराए धरत मात दी कुक्ख, तेरी सफ़ा आप उठाइंदा। ग़रीब निमाणयां कटया तेरे अंदर दुःख, दुखियां दु:ख आप गवाइंदा। घर घर पई दिसे भुक्ख, भुख्यां भुख ना कोए मिटाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाता गया छुट्ट, अग्गे संग ना कोए निभाइंदा। तेरा भाग गया निखुट, अग्गे भाग ना कोए वंडाइंदा। लेखा जाणे गोबिन्द सुत, सूरबीर आप जगाइंदा। जड़ तेरी देवे पुट्ट, बाले नीहां हेठ दबाइंदा। हुक्म देवे अबिनाशी अचुत्त, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां कोलों पुच्छ, हरि जू की की खेल कराइंदा। सारे बैठे इक्को गुट्ठ, फड़ बांहों आप बहाइंदा। प्रगट हो साहिब समरथ ग़रीब निमाणयां उपर गया तुट्ठ, तुट्ठ आपणी दया कमाइंदा। आपणे कोल वस्त रखी कुछ, कुछ आपणे हथ्थ ना होर रखाइंदा। तेरा सिम्मल बूटा उच्चां लम्मां दीर्घ मुच, वेले अन्त ख़ाली हथ्थ फिराइंदा। चार कुण्ट नज़र ना आई सच सुच्च, गुरुदुआर मन्दिर मस्जिद मसीत शिवदुआले मठ वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१२ १२

कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा सब नूं आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुणो जग मीत, लख चुरासी हरि जणाईआ। आपो आपणी वेखो नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। काया दिसे ना कोए ठंडी सीत, शीतल धार ना कोए वहाईआ। सतिगुर सच ना कोए प्रीत, प्रीती लग्गी जगत लोकाईआ। आत्म गाए ना कोए गीत, परमात्म वज्जे ना कोए वधाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो सुत्ता रिहा दे कर पीठ, कलयुग अन्तिम आपणी करवट लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। सच संदेसा आकाश प्रकाश, प्रकाशवान आप जणाइंदा। वेखणहारा खेल तमाश, हरि ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। सचखण्ड निवासी हो उदास, दो जहानां फेरा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप चलाई आपणी शाख़, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, हरि सतिगुर आप कराईआ। वेखणहारा राणी अल्ला, आलमीन फेरा पाईआ। पीर पैग़म्बर होया झल्ला, हरि झलक झल्ल ना सके राईआ। चौदां तबक वेखे डूँघी डल्ला, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। दरोही खुदाए मुहम्मद फड़े पल्ला, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला इलाही तेरा नूर रुशनाईआ। तेरी धार इक्क बिसमिल्ला, बिस्मिल तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक्क पुचाईआ। सच स्नेहुड़ा पैग़म्बर पीर, परवरदिगार आप पुचाइंदा। नेत्र वेखो शरअ ज़ंजीर, शरीअत वंड कवण वंडाइंदा। चार यारी होई दिलगीर, दिलबर नज़र कोए ना आइंदा। दाता दानी गुणी गहीर, गहर गम्भीर हुक्म वरताइंदा। बदलणहारा तकदीर, तकबीर तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग अन्तिम करे खेल बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आइंदा। जोधा सूर बली बलवान एका पकड़े शमशीर, शमस तबरेज़ नाल उठाइंदा। निउँ निउँ वेखे शाह हकीर, हकीर हकीरां मेल मिलाइंदा। अन्तिम कटणहारा पीड़, बेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा, पीर पैग़म्बर आप सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर रखणा याद, हरि साचा सच जणाईआ। कलयुग अन्त सुणे फरयाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। चौदां लोक कबरस्तान विच्चों लए काढ, आप आपणा मेल मिलाईआ। सच महल्ला वेखे महिराब, मक्का काअबा खोज खोजाईआ। लेखा जाणे दो दो आब, आलमीन नूर इलाहीआ। लहिणा देणा चुकाए पुन्न सवाब, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। प्रगट होवे शाह नवाब, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। चरन घोड़े दए रकाब, सोलां कलीआं आसण सुहाईआ। मुहम्मद पूरा करे खुवाब, अमाम अमामां वेस वटाईआ। देवणहारा सर्ब अज़ाब, उलफत आपणी करे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुसायक सारे होए लाजवाब, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। प्रगट

होया इक्क अहिबाब, सच रबाब सतार वजाईआ। पर्दानसीं मुख पर्दा उठाए होए बेनक़ाब, नक़ाब कोए नज़र ना आईआ। अगली पिछली जुग चौकड़ी सदी सदीव रखे याद, याददाशत आपणे हथ्थ रखाईआ। दीन इस्लाम इस्म आज़म इक्क कलाम, कलमा नबी रसूल असूल माकूल इक्क जणाईआ। सोहँ शब्द ना जाणा भूल, मुरीद मुर्शद सच सुगंधी साचा फूल, पत डाल्ही ख़ालक ख़लक मख़लूक आप महकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, निहकलंक नरायण नर बली बलवान, शाह पातशाह वड अमाम, निरगुण निरगुण निरगुण निरँकार सच्चा माहीआ।

✳१२ अस्सू २०१६ बिक्रमी सरवन सिँघ दे नाल जड़तौली ✳

हथ्थ रेख मस्तक भाग, हरि वडभागी वेख वखाइंदा। निर्मल दीआ दीपक जोत जगे चिराग़, निज नेत्र लो कराइंदा। अनहद शब्द अगम्मी वज्जे नाद, धुंन अनादी आत्मक राग अल्हाइंदा। लेखा जाणे बोध अगाध, अक्खर वक्खर निषअक्खर आप पढ़ाइंदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त भेव खुल्हाए सन्त साध, हरि सतिगुर मेल मिलाइंदा। नज़री आए इक्क इकल्ला इक्क इकांत, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। नानक गोबिन्द पुच्छे वात, गुरमुख गुर गुर मेला मेल मिलाइंदा। मेट मिटाए
१०३२ तीनो ताप, जगत संताप ना कोए रखाइंदा। काया मन्दिर अंदर सच्चा पूजा पाठ, बिन रसना जिह्वा आप कराइंदा। इष्ट १०३२
देव गुर हरि हरि आप, एकँकारा सति सरूप इक्क वखाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़
१२ जुड़ाइंदा। मस्तक रेख वेख दरस दिखाए साख्यात, अग्गे बह बह मेल मिलाइंदा। खोल्हणहारा बन्द ताक, बन्द किवाड़ी १२
कुण्डा लाहइंदा। चौदां लोक वखाए इक्को हाट, सतिगुर सच्चा हट्ट चलाइंदा। नानक गोबिन्द गुरसिखां पुच्छे वात, वातावरन आपणा आप बणाइंदा। एथे ओथे दो जहान देवणहार नज़ात, निज नेत्र नैण खुल्हाइंदा। सृष्ट सबाई विच्चों गुरमुख लभ्भे आपणे साक, दूजा सज्जण ना कोए बणाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे घात, नाम खण्डा उत्ते फेराइंदा। वेख हथ्थ नाल रलाए रास, बारां रासी मुख शरमाइंदा। जिस सतिगुर वसे पास, आस पास आपणे कोल बहाइंदा। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर, लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। लहिणा देण चुकाए पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर गगन मंडल खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद, गुरमुखां वेखे साचा हाथ, हथ्थो हथ्थ लेखा सर्ब मुकाइंदा। सच्चा हथ्थ सच्ची रास, हरि रासी आप बणाईआ। जगत क्रिया फ़ाश फ़ाश, फातया सब दा दए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दासी दास, ब्रह्म पारब्रह्म बण सेवक सेव कमाईआ। इक्को कम्म रख्या

खास, गुरमुखां पूरी ख्वाहिश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रेखा वेख वखाईआ। रेखा वेखे साचे नेत्र, कँवल नैण दया कमाइंदा। गुरमुख फुल फुलवाड़ी फुल मौले रुत्त बसन्ती चेत्र, चेतन आपणी धार चलाइंदा। भाग लगाए काया खेत्र, काया मन्दिर अंदर डूँघी कंदर खोज खोजाइंदा। आपणे मिलण दी आप बणाए आपणी वेतर, बिध नाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आत्म परमात्म परमात्म आत्म गुर चेला चेला गुर इक्को घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रेखा रेखा नाल मिलाइंदा। रेखा नाल मिले रेख, रेख सब दी रिहा बदलाईआ। निरगुण निरवैर निराकार अवल्लड़ा भेस, भेव कोए ना पाईआ। नानक बण के माही फड़ खूंडी मज्झीआं पिच्छे रिहा खेड, बण पाली सेव कमाईआ। गोबिन्द रूप सति सरूप वसणहारा साचे देस, लोकमात फेरा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल वेखणहारा पिछला लेख, लेखा पिछला रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लकीर बदलणहार तकदीर, तदबीर इक्को रिहा समझाईआ। सच तदबीर सच सलाह, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सतिगुर पूरा मिले मलाह, फड़ बेड़ा पार कराइंदा। गुरू ग्रन्थ गुरदेव सुणाए सच नाँ, नाउँ निरँकारा इक्क पढ़ाइंदा। पुरख अकाल फड़ फड़ बांहों पार लए कढा, लख चुरासी घुंमण घेर नज़र कोए ना आइंदा। एथे ओथे दो जहान समरथ
१०३३ सिर देवे ठंडी छाँ, तत्ती अग्ग अग्नी अग्ग ना कोए लगाइंदा। गुरसिख सिख सतिगुर गुर आपणी गोद उठाए जिउँ पुत्तर मां, पिता पूत खेल कराइंदा। सदी सतारवीं विछड़े बीसवीं लए मिला, हथ्थ नाल हथ्थ आप मिलाइंदा। गोबिन्द मिलण दा रख्या चा, गुर गोबिन्द दरस दिखाइंदा। सिखां अंदर रिहा समा, बिन सिखां गुरू नज़र किते ना आइंदा। नानक जोती जोत रिहा जगा, जोती जाता खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हथ्थ रेख मार मेख, पिछला पूरब लेखा वेख, जगत विछड़े जुग मेल मिलाइंदा। चालीआं विच इक्को सिख, गढ़ी चमकौर रिहा समझाईआ। बिन नेत्रां हरि जू लए वेख, बिन कन्नां रिहा सुणाईआ। गोबिन्द गुर भुल्ल ना जाए गुरसिख हेत, नित नवित आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला फेर दस्से भेत, पर्दा पिछला दए उठाईआ। नेत्र नींद ना आए अक्ख, अक्ख नीर नीर वहाईआ। जिस सतिगुर मिले प्रतख, सो फिरे चाँईं चाँईंआ। आपे नालों आपा करके वक्ख, प्रभ सच्चा लए मिलाईआ। सज्जणा मित्रां देवे दस्स, गोबिन्द मिल्या सच्चा माहीआ। जिस लैणी पति रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिखां गाउँदा फिरे जस, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याईआ। पूरब जन्म पूरी करे आस, अगली आसा आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म देवे नाम सच्ची रास, वस्त

इक्को झोली पाईआ। साचा मन्दिर सच मकानां, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दस्से सच टिकाणा, निरगुण नूर नूर नज़री आईआ। गुरमुखां अंदर इक्क टिकाणा, इक्को घर समझाईआ। अठ्ठे पहर शब्द बबाणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डा खण्डां विच फिराईआ। जो जन नौ खण्ड पृथ्मी उत्ते करे ध्याना, तिस मिले जा जा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल अटल्ल महल्ल एका एक करे रुशनाईआ।

✳ १२ अस्सू २०१६ बिक्रमी बाबू सिँघ दे गृह डेहलों ज़िला लुधियाणा ✳

सो पुरख निरँजण हरि समरथ, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। गुर अवतार कर इकट्ठ, सारे बैठे सीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर होए बेवस, वस चले ना कोए राईआ। चार युग दा हाल रहे दस्स, पूरब लेखा रहे जणाईआ। कलयुग अन्त रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द नज़र ना आईआ। त्रैगुण माया अंदर जीव जंत गए फस, फांदी फंद ना कोए कटाईआ। लग्गी अग्ग पंज तत्त तत्त अठ्ठ, तिन्न पंज करे लड़ाईआ। नौ दुआरे वेखे नट्ट नट्ट, जगत वासना होई हल्काईआ। साचे मन्दिर ना जाए कोई वस, दस्म दुआरी सुंञी सेज नज़री आईआ। पारब्रह्म तेरा कोई ना गाए जस, मनमति दए दुहाईआ।
१०३४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पीर पैग़म्बर दस्सण १०३४
हाल, प्रभ अग्गे खोल्ह सुणाया। गुर अवतार वसण नाल नाल, मेल मिलाया सहिज सुभाया। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी
१२ होई बेहाल, बेहबल हो हो दए दुहाया। साची वस्त नाम धन ना सके कोए वखाल, ख़ाली हट्ट रहे कुरलाया। साध सन्त होए कंगाल, नाम ख़ज़ाना ना कोए लुटाया। फल ना दिसे किसे डाल, सिंमल रुख रिहा लहराया। आत्म परमात्म कोए ना करे प्रितपाल, सेवक सेवा रूप ना कोए रखाया। नौ खण्ड पृथ्मी सब दे सिर ते अन्तिम कूके काल, काल नगारा डंक वजाया। बेअन्त बेपरवाह अवल्लड़ी तेरी चाल, चाल निराली भेव कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख खेल सृष्ट सबाया। पीर पैग़म्बर गुर अवतार खोल्हण भेत, भेव आपणा रहे जणाईआ। निरगुण भुल्ला सरगुण हेत, सरगुण निरगुण ध्यान ना कोए लगाईआ। कूड़ी क्रिया रहे खेड, चारों कुण्ट ख़ाक उडाईआ। कलयुग अग्नी तपी जेठ, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। नव नौ तपे बालू रेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच्चे सच्चे माहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे कूक, कूक कूक सुणाईआ। कलयुग क्रिया दिता फूक, जीव जंत देण दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप करया प्रकाश जूठ झूठ, सच सुच्च बैठा मुख छुपाईआ। तेरा १२

नज़र ना आए रंग रूप, रेख भेख ना कोए जणाईआ। साचा दिसे ना कोए नरेश, रइयत संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मारन नाअरा, इक्को एक मता पकाया। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, बिन हरि कोए ना वेख वखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग गाउँदे आए वारां, गीत गोबिन्द अल्लाया। जीवां जंतां साधां सन्तां देंदे आए आधारा, सच संदेसा इक्क सुणाया। कलयुग अन्तिम प्रगट होए महांबली अवतारा, निरगुण निहकलंका नाउँ रखाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां पावे सारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे हाल सुणाया। पुरख अबिनाशी लै अंगड़ाई, करवट रिहा बदलाईआ। सचखण्ड साचे वज्जे वधाई, दरगाह साची एका रंग वखाईआ। गुर अवतार बैठे सरनाई, पीर पैग़म्बर सजदा सीस झुकाईआ। जिउँ भावे तिउँ रिहा चलाई, तेरे भाणे सर्ब लोकाईआ। कलयुग अन्तिम वेख कूड़ी शाही, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नैण इक्क उठाईआ। पुरख अबिनाशी खोल्ह अक्ख, अक्ख अक्ख नाल मिलाइंदा। निरगुण रूप कर प्रतख, परम पुरख वेस वटाइंदा। सच संदेसा रिहा दस्स, अभुल्ल भुल्ल आप जणाइंदा।
१०३५ करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी खेल जणाइंदा। कलयुग अन्तिम देवे मथ, लहिणा देणा मात मुकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी पावे नथ्थ, चारों कुण्ट आप भुवाइंदा। लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खोज खोजाइंदा। १०३५
१२ फोल फोलाए मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, शिवदुआले पर्दा लाहइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा खोज खोजाइंदा। दो जहानां पन्ध मुकाए नस्स नस्स, बण पाँधी फेरा पाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाइंदा। मंडल मण्डप पावां रास, लोआं पुरीआं गोपी काहन नचाइंदा। आपणा नाउँ रख पुरख अबिनाश, अबिनाशी खेल आप कराइंदा। जन भगतां बण बण दासी दास, सेवक सेवा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा गुर अवतार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, त्रैगुण अतीता रिहा समझाईआ। एकँकारा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरँजण नूर उज्यार, लख चुरासी करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता सांझा यार, घर घर आपणा फेरा पाईआ। श्री भगवान दए हुलार, विष्न ब्रह्मा शिव लए जगाईआ। पारब्रह्म भेव न्यार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी सच दुआरा खोल्ह किवाड़, थिर घर आपणा कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच संदेसा पैग़म्बर पीर, १२

पारब्रह्म प्रभ आप जणाइंदा। आदि जुगादि दस्तगीर, दस्त बदस्त खेल कराइंदा। मुकामे हक़ वसे अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताइंदा। बेऐब परवरदिगार गुणी गहीर, गहर गम्भीर वेस वटाइंदा। लेखा जाणे शरअ ज़ंजीर, शरीअत आपणे हथ्थ रखाइंदा। बदलणहारा तकदीर तकसीर, तदबीर आपणी आप जणाइंदा। चौदां तबकां कटणहारा भीड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर खोल्ले कन्न, बिन कन्नां आप जणाईआ। परवरदिगार कहिणा लैणा मन्न, बेपरवाह रिहा समझाईआ। गीत सुहागी गाउणा छन्न, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्न, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम देवणहारा डंन, आपणा डंका रिहा वजाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सनेहुड़ा रिहा अल्लाईआ। सच स्नेहुड़ा पीर पैग़म्बर मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। नाता तुट्टा मन्दिर मसीत, मसला इक्को इक्क पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म गाउणा गीत, गीत गोबिन्द आप जणाइंदा। उम्मत उम्मती परखे नीत, नीतीवान फेरा पाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाइंदा। जो सुत्ता रिहा दे कर पीठ, आपणी करवट आप बदलाइंदा। सचखण्ड अबिनाशी बीठलो बीठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म हरि हरि, गुर गुर गुर करता आप जणाईआ। लेखा जाणे लिख्या धुर धुर, धुरदरगाही सच्चा माहीआ। आदि जुगादी निरगुण सरगुण जुड़ जुड़, सरगुण निरगुण दए वड्याईआ। जुगा जुगन्तर लेखा वेखे दर दर घर घर बौहड़ बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। सच संदेसा गुर अवतार, श्री भगवान एका एक जणाइंदा। नेत्र खोल्लो करो ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। जोधा सूर बली बलवान, बल इक्को इक्क प्रगटाइंदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान, शस्त्र बस्त्र ना कोए रखाइंदा। हुक्मे अंदर खेल महान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आण, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क समझाइंदा। सच संदेसा सुण लओ जग, जग जीवण दाता आप जणाईआ। अन्तिम करे कलयुग हद्द, हदूद कोए रहिण ना पाईआ। पीर पैग़म्बरां इक्को वार कराए हज्ज, मक्का काअबा इक्क दरसाईआ। गुर अवतारां लए सद्द, चार वरन नेत्र नैण दरसाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रहे भज्ज, ज़ात पात करी लड़ाईआ। बिन हरि नामे वेखो ख़ाली हड्ड, काया बुत्त दए दुहाईआ। कूड़ा रस कूड़ी मदि, कलयुग कूड़ा रस चखाईआ। आत्म परमात्म कोए ना करे लड, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए समाईआ। कोए रूप ना दिसे विश्व यद्द, एका पुरख ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा

१०३६
१२

लेखा दए वखाईआ। गुर अवतार वेखो लेखा, पीर पैग़म्बर आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ भुलेखा, हरि जू नज़र किसे ना आइंदा। भरमे भुल्ले औलीए पीर शेख़ा, पंडत पांधा भेव कोए ना पाइंदा। दिवस रैण पढ़न कतेबा, आत्म परमात्म पर्दा कोए ना लाहइंदा। दीन मज़्हब ल्या ठेका, ठोकर नाम ना कोए लगाइंदा। परवरदिगार हक़ हक़ीक़त देवे इक्को होका, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। निर्मल नूर जोत प्रकाश पुरख अबिनाशी इक्को जोता, जोती जाता डगमगाइंदा। वसणहार सचखण्ड दवार साचे कोटा, किला बंक ना कोए वड़्याइंदा। कलयुग अन्तिम किसे ना देवे धोखा, साख्यात सति सरूप निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। सतिजुग मार्ग लाए सौखा, चार वरन एका घर बहाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां हाज़र हज़रत वखाए मौका, नेत्र नैण नैण दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क वखाइंदा। सच संदेसा देवे देवण जोग, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां तबक रिहा हिलाईआ। लख चुरासी आलणयों डिगी बोट, कलयुग अन्त ना कोए उठाईआ। निर्मल नूर नज़र ना आए जोत, जोती जाता भुल्ला सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल कराउणा, हरि करता आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाल रलाउणा, सगला संग आप रखाइंदा। कूड़ी क्रिया डेरा ढाउणा, ढाह ढाह खुशी मनाइंदा। राजा राणा तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। राउ रंकां एका धाम बहाउणा, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। अक्खर वक्खर नाम निधाना इक्क पढ़ाउणा, आत्म परमात्म ढोला गाइंदा। निजानंद निज घर दरसाउणा, निज महल आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्त वेखे श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। प्रगट होवे नौजवान, नौ खण्ड नईया वेख वखाईआ। भगत भगवन्त करे परवान, भाग आपणा लए वंडाईआ। साचे सन्तां देवे दान, सति सतिवादी झोली पाईआ। गुरमुखां गुर गुर इक्क ज्ञान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। गुरसिख वेखे बाल अंञाण, फड़ बांहों गोद उठाईआ। कलयुग मेटे जीव शैतान, शरअ नाल शरअ टकराईआ। नाता तुट्टे ज़िमीं असमान, ज़ोर ज़बर ना कोए जणाईआ। सच संदेसा इक्को देवे धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। तेई अवतार करन ध्यान, भगत अठारां सीस झुकाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार होए हैरान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। नानक गोबिन्द खुशी मनाण, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम वेखे आण, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। निहकलंक बली बलवान, बल आपणा लए धराईआ। मात पित ना कोए निशान, भैण भाई ना कोए अख्वाईआ। तीर चिल्ला ना कोए कमान, खण्डा खड़ग

ना कोए खड़काईआ। सचखण्ड दवार लोकमात करे प्रधान, सच प्रधानगी इक्क कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण हरि खेल अवल्ला, एका एक कराइंदा। दो जहान फड़ाए पल्ला, दरोही खुदाए इक्क वखाइंदा। कलयुग अन्तिम पए तरथला, सृष्ट सबाई आप खपाइंदा। सच संदेस इक्को घल्ला, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। लहिणा देणा चुकाए राणी अल्ला, आलमीन वेख वखाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, अटल्ल हुक्म इक्क मनाइंदा। कूड़ी क्रिया सुट्टे डूँघी डल्ला, भव सागर आप रुढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क प्रगटाइंदा। सच संदेसा देवे आप, आपीनड़ा हुक्म आप जणाईआ। कलयुग मेटे कूड़ा पाप, पापी रूप ना कोए वखाईआ। सृष्ट सबाई देवे साचा जाप, अक्खशर बिन अक्खशर आप पढ़ाईआ। आत्म परमात्म इक्को पाठ, इष्ट देव इक्को नज़री आईआ। चतुर्भुज लेखा जाणे खेल तमाश, आदि शक्ति नूर रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण घट घट करे वास, निवासा इक्को धाम बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव खोल्हे भगवन्त, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, निरगुण आपणा रंग वखाइंदा। एकँकारा खेले खेल नार कन्त, सेज सुहञ्जणी

१०३८
आप सुहाइंदा। आदि निरँजण महिमा अगणत, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा मंत, नाउँ निरँकारा आप धराइंदा। श्री भगवान लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी खेल रचाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए बणत, लख

१२
चुरासी वंड वंडाइंदा। लख चुरासी पंज तत्त नाता जुड़े श्री भगवन्त, आत्म परमात्म रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे साचे सन्त, सन्त साजण आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। आपणा खेल दए वखाल, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। आदि जुगादी इक्क दलाल, गुर शब्दी नाउँ धराईआ। गुरमुख गुरसिख वेखे साचे लाल, लाल दुलारे लए जगाईआ। लेखा जाणे काल महांकाल, महांकाल होए सहाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त श्री भगवन्त चरन कँवल रिहा बहाल, घर साचा इक्क वखाईआ। सचखण्ड वेखो सच्ची धर्मसाल, जिस घर दीन मज़्ब ज़ात पात कोए नज़र ना आईआ। जुग चौकड़ी जगत मुशक्कत आए घाल, पुरख अबिनाशी सेवा लाईआ। अन्तिम पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता वड वड्याईआ। निरगुण दाता गहर गम्भीर, बेअन्त खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो वड पीरन पीर, पीर पैग़म्बर आप उठाइंदा। सदी चौधवीं होए दिलगीर,

दिलबर आपणा राह जणाइंदा। सब दे गलों लाहे शरअ ज़ंजीर, शरीअत वंड ना कोए वखाइंदा। निरगुण नाम हथ्थ पकड़ी शमशीर, तिक्खी धार आप जणाइंदा। प्रभ चरन दुआरे कढ्ढो इक्क लकीर, पिछला लेखा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर गए मन्न, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरे हुक्मे अंदर हंडाया तन, पंज तत्त कलबूत सुहाईआ। तेरा भाणा आए मन्न, जगत संदेसा कर पढ़ाईआ। कूड़ी काया ठीकर दिता भन्न, निशाना नज़र कोए ना आईआ। तेरा कलमा तेरा नाउँ कायनात चढ़ा के आए चन्न, चन्न चन्न नाल मिलाईआ। तेरी महिमा कह के आए धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। कलयुग जीव भेव पा ना सके नेत्र अन्न्ह, भरमे भुली ख़लक खुदाईआ। जिउँ भावे तिउँ बेड़ा बन्न्ह, दर तेरे इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। तेरा हुक्म होया कबूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तेरे बरदे बणे रसूल, ख़िदमतगार सेव कमाइंदा। कलयुग अन्त ना जाणा भूल, परवरदिगार तेरी शरनाईआ। तेरा मन्नीए सच असूल, असलीअत दे बुझाईआ। तूं आदि जुगादी इक्क महबूब, तेरी मुहब्बत वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म रिहा समझाईआ। साचा हुक्म दए संदेसा, सति सतिवादी आप जणाइंदा। पुरख अकाल नर नरेशा, परवरदिगार हुक्म जणाइंदा। पूरब लेखा छड्डो पेशा, पेशवा रूप ना कोए वटाइंदा। कलयुग अन्तिम मेटणहारा रेखा, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। चौदां तबक वेखे देसा, देस दसन्तर खोज खोजाइंदा। लेखा जाणे खुल्ल्हड़े केसा, मूंड मुंडाए भेव चुकाइंदा। चार युग दा पूरब रखे चेता, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी वंड वंडाइंदा। नानक गोबिन्द करे हेता, नित नवित वेख वखाइंदा। रविदास चुमारा साढे तिन्न हथ्थ वंड के गया वेंता, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। गोबिन्द बाले चाड़्ह के गया भेंटा, कलयुग तेरी जड़ उखड़ाइंदा। पुरख अबिनाशी अन्तिम बणे खेवट खेटा, निरगुण बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। वेस वटाए पिता पूत पुत्त बेटा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। सुत दुलारा होए साचा पंचम जेठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहुड़ा इक्क घलाइंदा। सच स्नेहुड़ा देवे घल्ल, हरि जू एका हुक्म जणाईआ। आदि जुगादि करदा रिहा वल छल, अछल छल आपणी खेल वखाईआ। वसदा रिहा उच्चे टिल्ले प्रबल, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती शब्दी निरगुण निरगुण गया रल, सरगुण रूप ना कोए वखाईआ। सच सिँघासण बैठा मल्ल, सचखण्ड दवारे आसण लाईआ। पावे सार लख चुरासी डूँघी डल, घर घर आपणा फेरा पाईआ। लेखा जाणे जल थल, महीअल आपणा रंग वखाईआ। करे प्रकाश घड़ी घड़ी पल पल, थित वार वंड ना कोए वंडाईआ। आदि जुगादि रहे अटल्ल, अटल्ल पदवी

इक्क समझाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा दूई द्वैती मेटे ना कोए सल, पटी नाम ना कोए बंधाईआ। अमृत आत्म दिसे ना कोए फल, विख रूप सर्ब वटाईआ। चोटी पर्बत उच्चे टिल्ले गए हल, धरनी हौला भार ना कोए कराईआ। सूफ़ी लुहा लुहा थक्के खल्ल, ख़ालक खुश ना किसे कराईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार पुरख अबिनाशी इक्क संदेसा देवे घल्ल, सति सतिवादी आप जणाईआ। कलयुग वेखो वडी झल्ल, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क वखाईआ। सच संदेसा देवणहारा, इक्को इक्क जणाइंदा। नेत्र नैण सर्ब उग्घाड़ा, अक्ख अक्ख नाल बदलाइंदा। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर डूँग्घी कंदर फोल फोलाइंदा। लेखा जाणे बहत्तर नाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खोजाइंदा। भेव चुकाए अमृत आत्म ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। अनाद अनादी बोल जैकारा, शब्द अगम्मी राग सुणाइंदा। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, बन्द ताकी आप खुल्हाइंदा। साची सेजा सोहे बंक दुआरा, सेज सुहञ्जणी इक्क वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा हत्थो हत्थ चुकाइंदा। लेखा हत्थो हत्थ जाए चुक, सो पुरख निरँजण आप चुकाईआ। हरि पुरख निरँजण सचखण्ड निवासी शेर गया बुक्क, दो जहानां भबक लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ भाणा जाए ना रुक, ना कोई मेटे मेट
१०४० मिटाईआ। कलयुग बूटा जाए सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। सतिजुग धरत मात दी रखे कुक्ख, आपे बणे पिता १०४०
१२ माईआ। ग़रीब निमाणयां मेटे दुःख, दुखियां दर्द लए वंडाईआ। गुरमुखां देवे इक्को सुख, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। १२
जन्म जन्म दी कटे भुख, तृष्ना प्यास दए मिटाईआ। सन्त सुहेले गोदी चुक, सच हुलारा दए लगाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी सतिगुर पूरा जाए तुट्ठ, भगत भगवान लए उठाईआ। अमृत निधान प्याए इक्को घुट्ट, अंमिउँ रस आपणा आप चुआईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। इक्क वखाए साचा कोट, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। भगत भगवान इक्को ओट, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। इक्क दूजे दे दर्शन रहे लोच, लोचा आपणी आपे पूर कराईआ। पारब्रह्म किसे ना आवे सोच, सोच सोच थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर निरगुण निरगुण लए फड़, आप आपणा बन्धन पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवे सद्दा, सदा इक्को इक्क लगाईआ। सारे दीन मज़्हब ज़ात पात पार करो हद्दा, हद्द कोए रहिण ना पाईआ। सच निशाना श्री भगवान इक्को गड्डा, दो जहानां दए वखाईआ। नाम नगारा इक्को वज्जा, इक्को नौबत रिहा सुणाईआ। साचे तख़्त

इक्को सजा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कूड़ कुड़यारा वेखो भज्जा, राह खैहड़ा नज़र कोए ना आईआ। खाली दिसण कूड़े हड्डा, कूड़ी क्रिया बैठी मुख छुपाईआ। मन मनुआ होए ना वड्डा, गढ़ हँकारी दए तुड़ाईआ। गुरसिख वेखे बाला नढ्ढा, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। भाग लगाए साची यद्दा, यद्द इक्को इक्क सुहाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दे प्यार अंदर बज्झा, पल्ला कोए ना सके छुडाईआ। भगतां अंदर श्री भगवान सजा, श्री भगवान दुआरे भगत बैठा आसण लाईआ। दोहां नूं इक्को जिही लजा, बेशर्मी रूप ना कोए वटाईआ। कलयुग अन्तिम पारब्रह्म सन्त सुहेले पर्दा कज्जा, नाम दुशाला हथ्थ उठाईआ। कलयुग नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा इक्क इकल्ला फिरे भज्जा, साथी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, सच संदेसा कलयुग अन्त अन्त रिहा जणाईआ। अन्त जणाए आप भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। मेटणहारा कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया वेख वखाइंदा। सति सतिवादी देवे दान, सति सति एका वस्त वरताइंदा। जुग जुग लेख चुकाए आण, लेखा सब दा आप मुकाइंदा। सो पुरख निरँजण मेहरवान, हरि पुरख निरँजण दया कमाइंदा। एकँकारा देवे इक्क ज्ञान, आदि निरँजण गुर समझाइंदा। अबिनाशी करता कर परवान, सति परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। श्री भगवान दए ज्ञान, गोझ ज्ञान आप समझाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बणाए सच विधान, साची धारा आप चलाइंदा। ब्रह्म लेखा वेखे आण, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त श्री भगवन्त लेखा जाणे जुगा जुगन्त, नाम मंत मन्त्र नाम आप दृढ़ाइंदा।

जिस दे पल्ले प्या नहीं कक्ख, तिस मार्ग दए समझाईआ। साध संगत चरनी जाए ढट्ठ, मन हंगता दए मिटाईआ। बीज बीजे साचे वत, पत डाल्ही आप महकाईआ। अंदर देवे ब्रह्म मति, मनमति रहे ना राईआ। हिरदे अंदर हरि जू वस, ज्ञान गोझ दए समझाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। पंच विकारा जाए ढट्ठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। अंदर वड़ के उलटी गेड़े लट्ठ, गेड़ा आपणा आप दिवाईआ। कर किरपा मार्ग देवे दस, बिन पढ़या ज्ञान समझाईआ। मोह ममता अंदर जो रहे फस, गुर का शब्द सुणन ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को पल्ला भराईआ। आत्म परमात्म पल्लू देवे भर, ख़ाली नज़र कोए ना आइंदा। गुरमुख सज्जण लए फड़, पूरब लेखा आप चुकाइंदा। अक्खर वक्खर जो जन लए पढ़, चौदां विद्या माण मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कक्खों लख लखों कक्ख

आप कराइंदा। नीवीं पदवी फिरे जग, लख चुरासी रही कुरलाईआ। सतिगुर वसे उपर शाह रग, घर साचे डेरा लाईआ। गुरसिखां दस्से आचार चज, मार्ग इक्को इक्क वखाईआ। नौ दुआरे पार हद्द, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। नाद अनादी जाए वज्ज, अनहद रागी राग सुणाईआ। भाण्डा भरम भउ जाए भज्ज, समझ समझ नाल मिलाईआ। गुरसिख गुर गुर दोवें साचे धाम बहे सज, माटी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्ची नीवीं पदवी आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को घर वखाईआ। संगत अंदर हरि का वासा, बिन संगत हरि जू कम्म किसे ना आईआ। संगत उत्ते गुर भरवासा, बिन गुर संगत ना कोए बणाईआ। बिन संगत गुरू रहे निरासा, गुर गुर कह कह सिफ्त ना कोए सालाहीआ। दोहां अंदर खेल करे पुरख अबिनाशा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाईआ। आदि अन्त पुरख अकाल इक्को गुरू जुग जुग वेखे तमाशा, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। नानक गोबिन्द दस जोती पाई साची रासा, मंडल मण्डप इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, हरिसंगत बणाए साची बणतर, नाम जणाए इक्को मन्त्र, लेखा जाणे गगन गगनंतर, सर्ब जीआं घट जाणे अन्तर, बिन अन्तर सतिगुर रूप ना कोए अख्वाईआ। संगत वडी गुर वड़याए, बिन गुर संगत कहिण कोए ना पाईआ। नाम रंगत गुर चढ़ाए, बिन गुर रंग ना कोए वखाईआ। नाम मृदंगा गुर वजाए, बिन गुर अनहद राग ना कोए सुणाईआ। संगत संग गुर बणाए, बिन गुर संगी नज़र कोए ना आईआ। हरिसंगत सतिगुर चन्द चढ़ाए, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। आदि जुगादी लिख्या लेखा ना कोई खण्डत कराए, अखण्ड इक्को रूप रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद संगत रिहा वड्याईआ। सतिगुर रूप भिन्न भिन्न, आदि जुगादि कराइंदा। गुरमुख विरला जाणे सच्चा चिन्न्ह, जिस आपणा निरगुण चिन्न्ह चक्कर वखाइंदा। कोटन कोटि रूप वटाए गिण गिण, ध्रू प्रहिलाद कवण रूप धराइंदा। पुरख अकाल वेस वटाए छिन्न छिन्न, छिन्न भंगर आपणा खेल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा रूप इक्क समझाइंदा। गुर का रूप आदि जुगादि इक्क, निरगुण नूर रुशनाईआ। बाहरों पंज तत्त चोला रिहा दिस, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोए वड्याईआ। अन्तर आत्मा दर्शन पाया जिस, बाहर वेखण कोए ना जाईआ। जगत लबास कलयुग वन्डया हिस, हिस्सा शहिनशाही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि गुरदेव इक्को रंग वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे तूफ़ान, कलयुग तोहफ़ा अन्त लिआईआ। सृष्ट सबाई होई हैरान, हरि का भेव ना जाणे कोए राईआ। गुर का भुल्ले शब्द निशान, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। मन्दिर

मस्जिद शिवदुआले मट्ठ बैठे बेईमान, बेवा रूप वटाईआ। धीआं भैणां तक्कण नैण उठाण, विभचार रहे कमाईआ। पूजा भेंटा सारे खाण, खा खा खुशी मनाईआ। साचा ढोला कोए ना गाण, कूड़ी रसना होई हल्काईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा मार ध्यान, सचखण्ड निवासी भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची क्रिया रिहा जणाईआ। साची क्रिया कूड़ी कुड़यार, कलयुग अन्त धन्दे लाया। कोई ना दिसे मित्र यार, यारी यार ना कोए निभाया। मां पुत्तर करे प्यार, भैण भइया संग रखाया। सृष्ट सबाई होई नार विभचार, हरि जू कन्त ना कोए हंढाया। वेद व्यासा लिख के गया लिखार, कलयुग अन्तिम भेव चुकाया। ईसा मंग दा गया बण भिखार, परवरदिगार अग्गे झोली डाहया। मुहम्मद दोए जोड़ करे पुकार, मेरा अमाम होए सहाया। चौदां सदीआं मेरी धार, चौदां तबक तबक वड्याआ। नानक निरगुण बोल के गया ललकार, उच्ची कूक कूक सुणाया। महांबली आवे अवतार, रूप रंग रेख ना कोए रखाया। गोबिन्द कहे पुरख अकाल, सम्बल आपणा डेरा लाया। कलयुग अन्तिम वेखे आण, पारब्रह्म बेपरवाहया। वीह सौ उन्नी बिक्रमी सृष्ट सबाई होई बेहाल, बेहबल हो हो दए दुहाया। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक सब दा सुणे हाल, शाह पातशाह आपणा फेरा पाया। वीह सौ वीह साचा मार्ग सब नूं दए वखाल, दुखियां दुःख दर्दीआं दर्द लए वंडाया। अंदर बाहर गुपत

१०४३ ज़ाहर आत्म परमात्म चले नाल नाल, जगत वछोड़ा पन्ध मुकाया। दो साल घालणा लओ घाल, पिछली कीती घाल अग्गे १०४३

लेखा लए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फेर आपणा हल करे सवाल, सवाल सब दे पूर

१२ कराया। जिस जन लाए सिध्धे राह, मार्ग आपणा दए वखाईआ। निरगुण सरगुण बणे मलाह, बेड़ा भँवरी पार कराईआ। १२

आपणी हथ्थीं पकड़े बांह, आउँदा जांदा दिस ना आईआ। स्वच्छ सरूपी दरस दए दिखा, बिन नेत्र नैण कर रुशनाईआ। आपणा पर्दा दए चुका, मुख नक़ाब ना कोए टिकाईआ। हौली हौली सब नूं रिहा समझा, अक्खर अक्खर कर पढ़ाईआ। वीह सौ इक्की बिक्रमी सच्चा मार्ग नौ खण्ड पृथमी दए वखा, भरम भुलेखा कोए रहे ना राईआ। गुरसिख गुरमुख गुर गुर रूप नज़री जाए आ, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। फ़र्ज़ी आपणा फ़र्ज़ पूरा दए करा, हिन्दी उर्दू फ़ारसी गुरमुखी लिपी टिप्पी इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मार्ग धन्दा वेखे चाँईं चाँईंआ।

✳ १३ अस्सू २०१६ बिक्रमी प्रकाश सिँघ दे गृह चीमां कलां ✳

सतिजुग तेरा साचा संग, सो पुरख निरँजण आप निभाईआ। दो जहान वजाए मृदंग, नाउँ निरँकारा हथ्थ उठाईआ।

ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे लँघ, पुरी लोअ फोल फोलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ढाहे कंध, जूठ झूठ दए खपाईआ। लख चुरासी सुणाए इक्को छन्द, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। गुरमुखां तोड़े ख़ानाबन्द, लख चुरासी बन्द कटाईआ। सेवा लाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा नाम ध्याईआ। कोई ना दिसे नेत्र अन्ध, ज्ञान नेत्र दए खुलाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, घर घर करे रुशनाईआ। अमृत आत्म पावे ठंड, निझर झिरना दए झिराईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। भगत भगवन्त इक्क अनन्द, अनन्द मंगल एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त बेपरवाहीआ। सतिजुग तेरी पूरी करे मंग, हरि पुरख निरँजण दया कमाइंदा। घर घर अंदर सेज पलँग, आत्म सेजा वेख वखाइंदा। शब्दी नाद वज्जे अनहद, नादी नाद आप सुणाइंदा। नौ दुआरे पार हद्द, घर दसवें खेल खलाइंदा। गुरमुख उपजाए साची यद्द, विश्व आपणी धार जणाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म लडाए लड, ईश जीव संग रखाइंदा। माया ममता विच्चों कढ्ढ, साचा मार्ग आपे लाइंदा। सति सतिवादी मार्ग दस्स, ब्रह्म ब्रह्मादी पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा संग रखाइंदा। सतिजुग तेरा मीता पुरख समरथ, समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण सरगुण चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। बोध अगाध महिमा गाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ।
१०५४ कूड़ी क्रिया करे भट्ठ, जूठ झूठ दए मिटाईआ। नाता तोड़े मनमति, गुरमति करे पढ़ाईआ। नाम बीजे साचे वत, लख १०५४
१२ चुरासी अन्तर हल चलाईआ। आत्म परमात्म जाए रच, जोती जोत जोत जगाईआ। खेल कराए इक्को सच्च, सच सुच्च १२
करे पढ़ाईआ। मन मनुआ दहि दिशा ना जाए नच्च, नौ दुआरे वासना दए कढ्ढाईआ। भाग लगाए काया माटी कच्च, काची गगरीआ कंचन रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा राह चलाईआ। सतिजुग तेरा चले राह, हरि रैहबर आप चलाइंदा। लख चुरासी दए सलाह, सृष्ट सबाई आप जणाइंदा। नाउँ निरँकारा इक्क समझा, नर निरँकारा पर्दा लाहइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका घर दए बहा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। राउ रंक राज रजान शाह सुल्तान एका हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेला दए मिला, गुर चेला रंग रंगाइंदा। सज्जण सुहेला बेपरवाह, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। सति सतिवादी धारा दए चला, सति असति रूप ना कोए वटाइंदा। साध सन्त श्री भगवन्त गुरमुख सज्जण लए उठा, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिख साचे धन्दे ला, साचा राह इक्क वखाइंदा। मूर्ख मूढ़े पापी गंदे दए खपा, कलयुग अन्तिम डेरा ढाहइंदा। भेख पखण्डा दए मिटा, नाम खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। दो जहानां कन्ढ़ा वेखे आ, खेवट खेटा रूप वटाइंदा। वरभण्डी लेखा जाणे

थाउँ थाँ, ब्रह्मण्डी खोज खोजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लेखा दए चुका, लेखा सब दा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर, जोती जोत लए मिला, जोती जोत जोत समाइंदा। किला कोट उच्चे पर्बत वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खोजाइंदा। हक़ हक़ीक़त करे न्याँ, लाशरीक दया कमाइंदा। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर दए मुका, दस्त आपणा सर्ब मिलाइंदा। शाह हकीर लए उठा, बेनज़ीर दया कमाइंदा। साची अल्फ़ी एका दए वखा, गल माला तसबी ना कोए लटकाइंदा। दो हरफ़ी हरफ़ दए पढ़ा, आरफ़ नज़र कोए ना आइंदा। आदि शक्ती लहिणा देणा दए चुका, चतुर्भुज आपणा हुक्म वरताइंदा। शब्द सुत जोधा सूरबीर लए उठा, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। दो जहानां पकड़े बांह, निरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सच निशाना दए झुला, सति सतिवादी आपणे हथ्थ उठाइंदा। भगत भगवन्त ब्रह्म ज्ञान दए दृढ़ा, ब्रह्म विद्या सर्ब पढ़ाइंदा। तीर निशाना इक्को दए लगा, अणयाला आप चलाइंदा। नाम खण्डा दए चमका, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाइंदा। जेरज अण्डज वेखे फोल फोला, उत्भुज सेत्ज खोज खोजाइंदा। सतिजुग तेरे अन्तर इक्क जपाए नाँ, इष्ट गुरदेव इक्को नज़री आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां लोक चौदां तबक एका सिख्या दए समझा, साख्यात आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा राह जणाइंदा। सतिजुग तेरा सच निशान, श्री भगवान आप झुलाईआ। एथे ओथे देवे माण, दोए दोए रूप आप वखाईआ। निरगुण सरगुण कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे दान, नाम निधाना झोली पाईआ। चरन धूढ़ सच अशनान, अठसठ तीर्थ माण मिटाईआ। लेखा चुक्के अञ्जील कुरान, शरअ शरीअत ना कोए वखाईआ। नज़री आए इक्क भगवान, परवरदिगार नूर सच खुदाईआ। वसणहारा सच मकान, हक़ मुकामे डेरा लाईआ। पीर पैग़म्बर मुरीद मुर्शद इक्को ढोला गाण, कलमा नबी रसूल इक्क पढ़ाईआ। गुर अवतार करन ध्यान, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ । भगत भगवन्त अग्गे मंगण दान, ख़ाली झोली रहे डाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब कुरलाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। करे खेल नौजवान, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। सतिजुग तेरा खेल करे महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। कलयुग अन्तिम मिटे निशान, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाउँ इक्क दृढ़ाईआ। साचा नाउँ एका मन्त्र, आत्म परमात्म भेव खुलाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जाणे बिध अन्तर, अन्तर आत्मा वेख वखाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म निरंतर, माया ब्रह्म पर्दा लाहइंदा। त्रैगुण बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। लहिणा देणा चुकाए गगन गगनंतर, गृह मंडल खोज खोजाइंदा। माणस

जन्म बणाए बणतर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी धार चलाइंदा। सतिजुग तेरी साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, सति सतिवादी मार्ग लाईआ। एकँकारा वेखणहार, पेख पेख खुशी मनाईआ। आदि निरँजण नूर उज्यार, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़, आत्म परमात्म पर्दा दए चुकाईआ। श्री भगवान सच निशान, धर्म दुआरे इक्क वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ वसे सच मकान, महल अटल करे रुशनाईआ। गीत गोबिन्द भगत भगवन्त सारे गाण, वाहवा वज्जदी रहे वधाईआ। उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारों दिशा वेखे आण, नव नौ आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग बाले देवे माण, बाली बुध बुध समझाईआ। चरन कँवल इक्क ध्यान, सरन चरन मिले सरनाईआ। शाहो भूप इक्क राजान, शहिनशाह इक्को नाम वखाईआ। सति सतिवादी बन्न्हे सच विधान, साची धारा आप बणाईआ। दो जहानां हुक्मरान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। करे खेल श्री भगवान, ख़ालक ख़लक वेखे चाँईं चाँईंआ। कागद कलम होए हैरान, सत्त समुंदर रोवे मस बण बण शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा संग रखाईआ। सतिजुग तेरा साचा मीता, मित्र प्यारा हरि अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम बदलण आया रीता, रीतीवान फेरा पाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां वेख वखाइंदा। आदि

१०४६ जुगादी ठांडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। जन भगतां दस्से सच प्रीता, सच प्रीती इक्क जणाइंदा। कूड़ी क्रिया १०४६

वेला बीता, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। तपणहारा अन्त अंगीठा, त्रैगुण अग्नी अग्ग लगाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखे चिखा,

१२ पंज तत्त हड्डीआं बालण अंदर डाहइंदा। आपे जाणे आपणा लेखा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। लख चुरासी भरम भुलेखा, १२

हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। सतिजुग साचे उठ वेख नैण, हरि साचा सच जणाईआ। कलयुग अन्तिम मुक्के देण, लहिणा कोए रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे साक सज्जण सैण, चार यारी संग गई तुड़ाईआ। माया राणी खाए डैण, लख चुरासी घर घर फेरा पाईआ। पीर पैग़म्बर इक्क दूजे नूं कहिण, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा जणाईआ। सतिजुग उठ वेख विचार, हरि साचा सच जणाइंदा। कलयुग अन्तिम धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। पीर पैग़म्बर गए हार, मुर्शद कोए नज़र ना आइंदा। उम्मत उम्मती होए खुआर, जगत खुआरी सर्ब वखाइंदा। चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ारी ना कोए हटाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ पई हाहाकार, हरि जू नज़र किते ना आइंदा। पंडत पांधे पत्तरी रहे विचार, पत्तण डेरा कोए ना लाइंदा। नछत्र गृह ना कोए पाए सार,

बारां रासी वंड ना कोए वंडाइंदा। गुर अवतार ना सके कोए मुख वखाल, पर्दा एका रख्या पाईआ। कलयुग अन्त होया कंगाल, शाह संग ना कोए निभाईआ। राज राजान बणे ना कोए दलाल, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। संगी साथी रिहा भाल, सगला संग ना कोए जणाईआ। अल्ला राणी मींढी खोहे वाल, सीस ना कोए गुंदाईआ। वेले अन्त आया ज़वाल, ज़ुलफ़ ज़हीर ना कोए सहाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नग़ारा रिहा वजाईआ। फल दिसे ना किसे डाल, सिम्मल रुक्ख नज़री आईआ। किसे घर ना हक़ हलाल, कूड़ी क्रिया देण दुहाईआ। अन्तिम लुट्टया जाणा धन माल, चारों कुण्ट वेखे थाउँ थाईंआ। सच दुआर कोई ना दिसे धर्मसाल, गुरुदुआरा सति ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, कलयुग अन्त दए वखाईआ। सतिजुग उठ उठ उठ जाग, हरि साचा आप जगाइंदा। कलयुग बुद्धि होई काग, चार कुण्ट काग वांग कुरलाइंदा। दुरमति मैल कोए ना धोवे दाग़, पत्तत पुनीत ना कोए कराइंदा। दीन मज़्हब लग्गी आग, ज़ात पात शरअ शरीअत नाल लड़ाइंदा। शाहो भूप कोए ना करे सच्चा राज, रइयत दुःख ना कोए मिटाइंदा। चार कुण्ट विगड़या समाज, समाजी रूप ना कोए वखाइंदा। मनमति सारे रहे भाज, गुरमति सीस ना कोए टिकाइंदा। कलयुग कुकर्मां डुब्बण लग्गा जहाज़, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोए ना रखे लाज, मनमुखां कोलों मुख सर्ब छुपाइंदा। लंगड़े लूले होए अपाहज, साबत सूरत नज़र कोए ना आइंदा। कूड़ी क्रिया खाधा खाज, आत्म रस भोजन कोए ना खाइंदा। किसे कम्म ना आई पंज वक्त निमाज़, पीर दस्तगीर नेत्र नैण दरस कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे आप जगाइंदा। सतिजुग उठ सुत दुलारे, हरि साचा आप जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हाहाकारे, हौका भरे सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मार्ग दस्स दस्स हारे, साचे मार्ग चले ना कोए लोकाईआ। सृष्ट सबाई होई नार विभचारे, कूड़ी क्रिया कन्त हंढाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए प्यारे, परम पुरख ना कोए मनाईआ। कुँवार कन्या करे शंगारे, सुहबत हरि जू मूल ना भाईआ। मन वेसवा बणया जगत वणजारे, जगत हट्ट रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम क्रिया वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग उठे छोटा बाला, बाली बुध ध्यान लगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वड गोपाला, गोबिन्द तेरा भेव कोए ना आइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बण रखवाला, तुध बिन सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम दिसे मूँह काला, मुख शाही ना कोए धुवाइंदा। लख चुरासी त्रैगुण माया प्या जंजाला, जागरत जोत ना कोए जगाइंदा। मन मनुआ करे बेहाला, दहि दिशा उठ उठ धाइंदा। मेरा तेरे अग्गे इक्को

१०४७ १२

इक्क सवाला, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। मैनूं दस्सणी भेव निराली चाला, जिस विच तेरा विछोड़ा कदे ना आइंदा। तेरे प्रेम प्यार मेरे अन्तर बणे माला, मणका होर ना मोहे भाइंदा। साहिब सतिगुर मार्ग दस्सणा इक्क सुखाला, सुख सहिजे वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तेरी अवल्लड़ी चाला, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, छोटे बाले दए वड्याईआ। सतिजुग तेरी झोली पाए दान, दाता दानी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, एका एक करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, गुरुदुआर इक्क वखाईआ। एका इष्ट श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। एका तोड़े माण अभिमान, एका साचा रंग वखाईआ। एका राग सुणाए कान, एका नाउँ नाद धुंन शनवाईआ। एका साहिब वेखे आण, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सोहँ शब्द करे प्रधान, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। भगत भगवन्त धाम इकट्ठे बह बह गाण, इक्क दूजे दा शुकर मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी इक्क पहिचाण, ब्रह्म पारब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। करे खेल नौजवान, सतिजुग नईया नौका आप चलाईआ। सचखण्ड निवासी दयावान, ठाकर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या दए समझाईआ। सतिजुग तेरा साचा संग, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। भगत भगवन्त चाढ़े रंग, रंग तेरे नाल मिलाइंदा। दोहां विच इक्क अनन्द, इक्को रूप समाइंदा। जगत नाता देवे गंढ, पुरख बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। रसना जिह्वा कोई ना खाए गंद, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। आत्म ना होए रंडेपा रंड, गुरमुख गुरसिख गुर गुर एका दर वखाइंदा। गीत सुहागी साचा छन्द, हरि सतिगुर आप सुणाइंदा। लेखा जाणे जीउँ पिण्ड इंड, ब्रह्मण्ड खोज खोजाइंदा। दयाल ठाकर स्वामी सदा बख्शंद, बख्शश आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा नाम देवे वंड, वंड इक्को वार कराइंदा। ज़ात पात कोई रहे ना कंध, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। गुरमुख अंदर गोबिन्द रंग, नानक निरगुण जोती जोत जगाइंदा। पुरख अकाल आपे जाणे अगला पन्ध, बण पाँधी वेख वखाइंदा। भगत भगवान सतिजुग सति सतिवादी दान साची मंग, बिन मंग्गयां झोली पाइंदा।

✳ १३ अस्सू २०१६ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह दोसांझ कलां ✳

सच दुआर सचखण्ड, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। होए प्रकाश बिन सूरज चन्द, पीर पैग़म्बर सीस झुकाईआ। आदि जुगादि इक्क अनन्द, विष्न ब्रह्मा शिव झोली डाहीआ। नज़री आए सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती

१०४६
१२

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड हरि सच दुआरा, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। हरि पुरख निरँजण कर पसारा, एकँकारा वेख वखाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खोलॄ किवाड़ा, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। श्री भगवान दए हुलारा, सच हुलारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दवारा उच्च महल्ला, हरि जू हरि हरि आप वसाईआ। आदि जुगादी वसे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रलाईआ। निरगुण निरगुण फड़या पल्ला, पल्लू छुट कदे ना जाईआ। जोती जोत जोत आपे रल्ला, नूर नूर नूर समाईआ। सच सिँघासण इक्को मल्ला, पावा चूल ना कोए वखाईआ। सति संदेस नर नरेश इक्को घल्ला, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दवार श्री भगवान, हरि सतिगुर आप सुहाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, पुरख अकाला सोभा पाइंदा। सति सरूपी सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। दर दरवेश बण दरबान, अलख अगोचर आपणी अलख आप जगाइंदा। लेखा जाण श्री भगवान, लेखा लिख्त ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क वड्याइंदा। सचखण्ड दवार सति प्रकाश, अनुभव आप कराईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मंडल ना कोए वखाईआ। ना कोई मंडल ना कोई रास, गोपी काहन ना नाच नचाईआ। ना कोई दासी ना कोई दास, राजन राज ना कोए अख्वाईआ। ना कोई दिसे त्रिलोकी नाथ, अनाथां नाथ ना कोए सहाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, अक्खर वक्खर ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई नारी ना कोई कमलापात, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चांद, रवि ससि ना कोए रुशनाईआ। ना कोई खेल ना तमाश, बाज़ीगर डंक ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे निरगुण जोत नूर प्रकाश, नूर नुराना इक्क धराईआ। नूर नुराना परवरदिगार, बेऐब आपणा खेल कराइंदा। मुकामे हक़ सांझा यार, लाशरीक डेरा लाइंदा। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला सच महल्ले कर पसार, महिफल आपणी इक्क वखाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अथाह आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवार आप वसाइंदा। सचखण्ड दवारा वसाए भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, निरगुण निरगुण लए प्रनाईआ। बोध अगाधी

मणीआ मंत, नाउँ निरँकारा दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारे खेल अपारा, हरि अपरम्पर आप कराइंदा। छप्पर छन्न ना कोए दीवारा, ना कोए बाढी बणत बणाइंदा। ना कोई घाड़त घड़े बण ठठयारा, नेत्र लोचण ना कोए वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए सालाहइंदा। ना कोए गुर ना अवतारा, साध सन्त ना डंक वजाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, निरगुण निरगुण कर पसारा, सच दर साचे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारा साचा रंग, हरि पुरख निरँजण आप रंगाईआ। सो पुरख निरँजण सूरा सरबंग, एकँकारा खेल कराईआ। आदि निरँजण इक्क अनन्द, अबिनाशी करता दए वखाईआ। श्री भगवान खेले खेल सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ वंडे वंड, दाता दानी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा खेल कराईआ। सचखण्ड दवार हरि निरँकारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। आदि पुरख पुरख कर पसारा, खेले खेल अगम्म अपारा, अगोचर आपणी धार जणाइंदा। तख्त निवासी हो उज्यारा, शाहो शाबाशी भेव न्यारा, राजन राज हुक्म आपणा आप वरताइंदा। धुर फ़रमाणा बोल जैकारा, सति लगाए इक्को नाअरा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, पिता पूत ना कोए आधारा, जननी जन
१०५० ना कोए वखाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकारा, आपणा करे आप पसारा, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। १०५०
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे
१२ करतार, आपणी किरत आप कमाईआ। आपे वेखे विगसे वेखणहार, दूसर संग ना कोए रलाईआ। आपणी इच्छया आपे १२
धार, आपे भिच्छया दए वरताईआ। आपे सिख्या देवे सच्ची सरकार, सति सति करे पढ़ाईआ। आपे लेखा लिख्या आपणा लए विचार, लेखा आपणा आप वंडाईआ। आपणा हिस्सा वंडे निरँकार, निरगुण निरगुण झोली आप भराईआ। साची सेजा कर त्यार, सचखण्ड सेजा आप हंढाईआ। आपे पुरख आपे नार, नर नरायण एका कन्त रूप वटाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुपत ज़ाहर आपणी खेल जणाईआ। जननी जन बण करतार, दाई दाया सेव कमाईआ। सुत दलारा कर त्यार, शब्दी शब्द नाउँ वड्याईआ। थिर घर दुआर खोल्ह किवाड़, सचखण्ड अंदर दए वड्याईआ। छोटे बाले अंदर देवे वाड़, फड़ बांहों आप उठाईआ। आपे चले नाल नाल, सगला संग निभाईआ। साची सिख्या इक्क सिखाल, साचा मार्ग दए जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे उपजाए बाल, बाली बुध नाल रलाईआ। करे खेल हरि गोपाल, गोबिन्द आपणी धार जणाईआ। चरन धूढ़ी खेल महांकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच घर लए प्रगटाईआ।

घर विच घर थिर घर, थिर दरबारी आप खुलाया। पुरख अबिनाशी घाड़न घड़, सचखण्ड अंदर वेस वटाया। सुत दुलारा अंदर कर, बाहर आपणा हुक्म वरताया। सच संदेसा देवे इक्को वर, एकँकारा एका वार सुणाया। ना जन्मे ना जाए मर, रूप रंग रेख ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप चलाया। आदि पुरख चलाए राह, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सुत दुलारा इक्क प्रगटा, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। थिर घर साचे दए बहा, महल अटल करे रुशनाईआ। दीआ बाती इक्क जगा, कमलापाती वेख वखाईआ। साचा साथी बण मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। साची सिख्या दए समझा, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। आपणा लेखा दए वखा, लेखा इक्को इक्क दृढ़ाईआ। करे खेल सच्चा शहिनशाह, सच सिँघासण आसण लाईआ। सीस जगदीस ताज टिका, धुर फ़रमाणा इक्क अलाईआ। सुत दुलारे तेरी सेवा दए लगा, सेवक एका गुण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे शब्द दए वड्याईआ। सुत दुलारा छोटा बाला, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। पारब्रह्म तेरा खेल निराला, हरि जू भेव कोए ना आइंदा। मोहे मार्ग दस्स इक्क सुखाला, जिस मार्ग तेरा दर्शन पाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन मिले माणा, अभिमान रूप ना कोए वटाइंदा। आदि जुगादि रहे तेरा ध्याना, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। साचा दस्स आपणा गाणा, गा
१०५१ गा तेरा शुकर मनाइंदा। सीस जगदीस मन्ना तेरा भाणा, तुध बिन अवर ना कोए नज़री आइंदा। किरपा करे श्री भगवाना, १०५१
१२ भगवन आपणी दया कमाइंदा। सुत शब्द वड बलवाना, बल तेरे विच टिकाइंदा। मेरा नूर तेरा निशाना, तेरा निशाना मेरा १२
नाउँ प्रगटाइंदा। मेरा नाउँ तेरा गाणा, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। मेरा मन्दिर तेरा मकाना, चरन कँवल टिकाणा इक्क रखाइंदा। मेरा प्रेम तेरा बबाणा, सच उडारी इक्क लगाइंदा। मेरा दर्शन तेरा पीणा खाणा, दूजी तृष्ना भुख ना कोए रखाइंदा। थिर घर वसे तेरा मकाना, श्री भगवान आप वसाइंदा। सचखण्ड वसे हरि मेहरवाना, मेहरवान मेहर नजर बेनज़ीर इक्क उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, थिर घर साचे माण रखाइंदा। सुत दुलारे चढ़या चा, थिर घर साचे वज्जी वधाईआ। आदि पुरख प्रभ दया दिती कमा, दीनन आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचे राहे देवे पा, फड़ बांहों दए समझाईआ। इक्क जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक्क दृढ़ाईआ। सदा सुहेला सिर रखे ठंडी छाँ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। चरन कँवल कँवल चरन देवे सच्चा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। आदि अन्त करे सच न्याँ, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर बणे पिता मां, बालक आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि आपणा हुक्म वरताईआ। आदि पुरख श्री भगवाना,

हरि हरि आपणा खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी वड प्रधाना, सति प्रधानगी इक्क कमाइंदा। सुत दुलारा नौजवाना, थिर घर दुआरे आप उठाइंदा। सच संदेसा दे परवाना, परम पुरख आप वड्याइंदा। करना खेल दो जहानां दोए दोए धार आप रखाइंदा। सति सतिवादी बन्ने गानां, घर साचे सगन मनाइंदा। निरगुण गोपी निरगुण कान्हा, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण मर्द निरगुण मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। निरगुण राग निरगुण तराना, निरगुण ताल तलवाड़ा वजाइंदा। निरगुण मन्दिर निरगुण मकाना, निरगुण साची सेज सुहाइंदा। निरगुण पहरे निरगुण जामा, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। निरगुण इच्छया निरगुण पूरन करे कामा, साची भिच्छया झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचा हरि, शब्दी शब्द वंड वंडाइंदा। शब्द सुत मार ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। थिर घर खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। धुर दरबारे देवे माण, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। वस्त अमोलक पावे दान, दाता दानी आप वरताईआ। विश्व करना खेल महान, विष्नूं नूर जोत रुशनाईआ। अमृत देणा पीण खाण, चरन चरन नाल रगड़ाईआ। नाभी रखणा आपे आण, आप आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म करे ध्यान, ध्यान ध्यान विच प्रगटाईआ। तेरा उपजाए सच निशान, आपणी वंडण वंड वंडाईआ। ब्रह्म प्रगट करे नूर महान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। कँवल कँवला कँवल परवान, पंखड़ी आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख देवे वर, सुत दुलारे वसाए तेरा घर, विष्नूं अंदर कँवल सर, कँवल सर अंदर ब्रह्म पारब्रह्म लए प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा तेरा साचा रंग, हरि साचा सच जणाइंदा। सुंन अगम्म खेल सूरा सरबंग, धूआँधार खोज खोजाइंदा। शंकर ला आपणे अंग, धूढ़ी धूढ़ ख़ाक रमाइंदा। देवणहारा इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। इके मंडल साची वंड, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सुत दुलारा चरनी ढह, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। आदि पुरख आदि जुगादि तेरा नाउँ रहे, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। सोहे धाम सुहञ्जणा जिस दुआरे साहिब सच्चा बहे, हउँ बालक सेव कमाईआ। तेरा मेरा संग सदा सद रहे, वछोड़ा देणा ना सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्दी सुत झोली रिहा डाहीआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। शब्द सुत तेरा मेरा इक्को रस, रस रसीआ आप वखाइंदा। इक्क दूजे दे होए वस, पल्लू आदि अन्त ना कोए छुडाइंदा। मैं तेरा खेल वेखां नस्स नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। आदि मार्ग देवां दस्स, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा मेरा गायण जस, जस इक्को इक्क वखाइंदा। करे

१०५२
१२

खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा राह चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे आपणी वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। त्रैगुण माया कर प्रगट, सतो रजो तमो तिन्नां झोली आप भराइंदा। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना कोए गाइंदा। पंचम तत्त बणाए रथ, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडाइंदा। लेखा देवे हथ्थो हथ्थ, साची वस्त आप फड़ाइंदा। निरगुण निरँकार निराकार अजूनी रहित पुरख अकाल आपणी पाए नाम नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा राह चलाइंदा। सुत दुलारे तेरा राह, सो पुरख निरँजण आ चलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रचना लए रचा, लोआं पुरीआं वेस वटाईआ। रवि ससि सूरज चन्द किरन किरन किरन वंड लए वंडा, गुर गुर नाल मिलाईआ। मंडल मण्डप दए वसा, लोक परलोक सोभा पाईआ। तख्त निवासी सचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, धुर फ़रमाणा दए सुणाईआ। ज़िमीं असमानां घाड़त लए घड़ा, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। जल थल महीअल जाए समा, समग्री आपणे हथ रखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत लए बणा, डूँघी कंदर वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा दए लगा, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। सच भण्डारा दए वरता, वस्त अमोलक इक्क रखाईआ। विष्नूं गोलक दए भरा, किरपा कर बेपरवाहीआ। ब्रह्मे पारब्रह्म दए समझा, ब्रह्म आपणी वंड वंडाईआ। परमात्म आत्म खेल करा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। लख चुरासी घाड़त दए जणा, घड़ घड़ आपे दए समझाईआ। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वंड दए वंडा, चारे खाणी नाउँ प्रगटाईआ। चारे बाणी दए सुणा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाईआ। चारे युगां हिस्सा देवे पा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल मिलाईआ। चारे वरन वेखे थाउँ थाँ, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश गंढु पुवाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल लए खला, धरत धवल धवल धरत दए सुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी निरगुण जोत करे रुशना, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे बण मलाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द सुत तेरा हुक्म दए वरता, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरे हुक्मे अंदर पंज तत्त दए वड़या, मन मति बुध नाल मिलाईआ। घर विच घर तेरा दए वसा, जुग चौकड़ी वेखण कोए ना पाईआ। बूंद रक्त पंज तत्त त्रैगुण मेल मिला, हड्ड मास नाड़ी रत सोभा पाईआ। नौ दुआरे दए खुल्हा, जगत तृष्ना नाल रलाईआ। शाह रग उपर डेरा देवे ला, करे खेल बेपरवाहीआ। डूँघी भँवरी वेस वटा, वेस अवल्ला दए समझाईआ। सुखमन टेढी बंक दए बणा, ईड़ा पिंगल सेव कमाईआ। अमृत आत्म कँवल नाभी दए टिका, झिरना आपणे हथ्थ झिराईआ। घर दीपक जोत निरँजण दए टिका, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी तेरा अनहद नादी नाद दए वजा, उपर आपणा पर्दा पाईआ। बजर कपाटी कुण्डा दए लगा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। आत्म सेजा दए विछा, घर सुहञ्जणी

१०५४ १२

सेज बणाईआ। परमात्म बैठे मुख छुपा, निज नेत्र नैण बिन नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी धन्दे लए लगा, लोकमात बन्धन पाईआ। शब्द सुत तेरा मार्ग दए जणा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। गुर अवतार लए प्रगटा, तेरा नाउँ करे रुशनाईआ। धुर फ़रमाणा श्री भगवाना बोध अगाधा दए सुणा, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। आत्म परमात्म पर्दा देवे लाह, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। निर्मल नूर कर रुशना, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अनहद नादी नाद दए सुणा, अठ्ठे पहर करे शनवाईआ। पंच विकारा दए खपा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। आसा तृष्ना दए मिटा, हउमे हंगता रोग मिटाईआ। आपणा दर्शन दए वखा, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। करे खेल बेपरवाह, शब्द सुत तेरा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लए मना, नाम पट्टी इक्क पढ़ाईआ। कोटन कोटि सिफ्ती नाउँ लए रखा, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी लए हंढा, नव नौ चार वेख वखाईआ। कागद कलम शाही लए रला, वेद पुराण शास्त्र सिमरत लेखा लए जणाईआ। अञ्जील कुराना तीस बत्तीसा लए गा, सच हदीसा इक्क पढ़ाईआ। खाणी बाणी मेला सहिज सुभा, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाईआ। शब्द गुर तेरा डंक दए वजा, गुरू गुर नजरी इक्को आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण चोला लए हंढा, नित नवित वेस वटाईआ। भगत भगवान लए मिला, भाग आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे सन्तां लए जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुरमुख गले लए लगा, आप आपणी गोद बहाईआ। गुरसिख लख चुरासी फाँसी दए तुड़ा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग तेरी सेवा दए लगा, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। तेई अवतार नाल रला, भगत अठारां देण सलाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद लेखा लेख जणा, पाक रसूल दए वड्याईआ। नानक गोबिन्द इक्को जोती जोत कर रुशना, दहि दिशा वेखे चाँईं चाँईंआ। तेरा नाउँ ढोला साचा सोहला नाम सति सति नाम मन्त्र इक्क दृढ़ा, दृढ़ विश्वास दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, गुर शब्दी तेरा नाउँ मंत, मन्त्र इक्को इक्क जणाईआ। आदि अन्त मन्त्र गुरदेव, हरि स्वामी आप जणाइंदा। चार युग करनी सेव, सेवा साची इक्क वखाइंदा। पारब्रह्म वड देवी देव, देवत सुर तेरे हुक्म रखाइंदा। अमृत आत्म रस साचा मेव, लख चुरासी बूटा आप महकाइंदा। आदि जुगादि सदा सद निहकेव, निहचल आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत तेरा मार्ग इक्क जणाइंदा। शब्द सुत चरन कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। हउँ बरदा सेवक दुआर, दर तेरे सेव कमाया। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रै पंज मेला मेल मिलाया। लख चुरासी घाड़न घड़ बण ठठयार, निरगुण सरगुण रूप धराया। लख

चुरासी हो उज्यार, जोत निरँजण डगमगाया। शब्द अगम्मी नाद धुन्कार, धुंन आत्मक राग सुणाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कर त्यार, त्रैगुण अतीता खेल कराया। भगत भगवन्त खोल्ह् किवाड़, साचा मन्दिर इक्क दरसाया। साचे सन्तां कर प्रकाश बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ी रोग गंवाया। गुरमुख साचे घोड़े चाड़्ह, वागां आपणे हथ्थ रखाया। गुरसिखां देवे इक्क सहार, प्रेम प्याला नाम प्याया। दीन दयाला एकँकार, जुग जुग आपणा खेल कराया। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया विच संसार, अन्त लोकमात रहिण ना पाया। कलयुग वेखे अन्तिम धार, पुरख अबिनाशी खेल कराया। नौ खण्ड पृथ्मी गई हार, हाहाकार सृष्ट सबाया। जीव जंत करन पुकार, उच्ची कूक कूक अल्हाया। राजे राणे गए हार, रइयत रूप ना कोए वखाया। नौ खण्ड पृथ्मी धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। गुर का शब्द ना करे कोए प्यार, नानक गोबिन्द गए भुलाया। ईसा मूसा मुहम्मद मिले ना सच्चा यार, चार यारी नाता रही तुड़ाया। भगत अठारां ना कोए आधार, धरनी धरत धवल दए दुहाया। तेई अवतार ना कोए प्यार, चरन प्रीती ना कोए निभाया। सीता सुरती ना पावे सार, राम मेल ना कोए मिलाया। कान्हा कृष्ना ना मीत मुरार, मधुर बंसरी राग ना कोए सुणाया। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी जीव जंत होया नार विभचार, हरि जू कन्त ना कोए हंढाया। सर सरोवर नंगे तारीआं रहे मार, लज्ज पति निज ना कोए जणाया। गुरदर मन्दिर मस्जिद मढ्ढ शिवदुआले कुकर्मी कर्म करे अकृतघण गुर नाउँ ना कोए विचार, हरि शब्द विचार विच ना आया। कलयुग खेल करे अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे इक्क वर, आदि अन्त श्री भगवन्त तेरे हथ्थ फड़ाया। शब्द सुत वड बलवाना, बल आपणा आप धराईआ। कलयुग वेखे कूड़ निशाना, जूठ झूठ दए दुहाईआ। हरि का नाम ना किसे वखाना, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अमृत आत्म मिले ना पीणा खाणा, तृष्ना भुख ना कोए गंवाईआ। अनहद नाद ना कोए गाना, छत्ती राग भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द गुर ना मिले काया सच मकाना, निज नेत्र नज़र किसे ना आईआ। नानक नाम सति ना सुणाए किसे तराना, बैठा आपणा मुख छुपाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद होए हैराना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। चौदां तबक दिसण वैराना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द सुत इक्क वड्याईआ। शब्द सुत सूरा सरबंग, जुग जुग वेख वखाइंदा। साचे असव कस कस तंग, सोलां कलीआं आसण पाइंदा। शाहसवारा लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डा वेखे लँघ, दो जहानां चरनां हेठ दबाइंदा। नर निरँकारा वजाए इक्क मृदंग, विष्न ब्रह्मा शिव आप जगाइंदा। कलयुग औध रही लँघ, वेला अन्त गया हथ्थ ना आइंदा। कूड़ी क्रिया ढहणी कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। शाह सुल्तानां नंगी करे कंड, सीस ताज ना कोए रखाइंदा। चार वरन होए भंग, अठारां बरन ना

कोए वड्याइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होणा खण्ड खण्ड, हरि जू खण्डा इक्क खड़काइंदा। फिरे दरोही विच ब्रह्मण्ड, करोड़ तेतीसा नीर वहाइंदा। प्रगट होए सूरा सरबंग, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क जणाइंदा। शब्द गुर हरि बोल जैकारा, जै जैकार सुणाईआ। कलयुग अन्तिम दिसे किनारा, सृष्ट सबाई रिहा समझाईआ। प्रगट होए महांबली अवतारा, बल आपणा आप प्रगटाईआ। नाउँ रखाए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सम्बल आपणा आसण लाईआ। दो जहानां करे ख़बरदारा, पीर पैग़म्बर लए उठाईआ। आदि जुगादी हो त्यारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता निर्मल जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी एका आउणा, चौथा युग ध्यान लगाईआ। निहकलंक नाउँ रखाउणा, ना कोए पिता ना कोई माईआ। रूप रंग ना कोए वखाउणा, भेख वेस ना कोए वटाईआ। शब्द अगम्मी ढोला इक्को गाउणा, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। कलयुग लहिणा झोली पाउणा, पूरब लेखा दए मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपणे विच छुपाउणा, जोती जोत जोत मिलाईआ। पुरख अकाल इक्को इष्ट सर्ब दरसाउणा, दृष्टी सब दी दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा एका वार जणाईआ। पुरख अबिनाशी आवे जग, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बुझाए अग्ग, तत्ती वा ना लागे राईआ। गुरमुखां पार कराए हद्द, मझधार ना कोए डुबाईआ। पिता पूत कराए लड, गोदी गोद आप बहाईआ। दो जहानां श्री भगवाना सति सतिवादी गाए इक्को छन्द, सोहँ ढोला आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी शाह सुल्ताना, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। भूपत भूप राज राजाना, हुक्म हाकम आप समझाइंदा। कलयुग मिटे कूड़ निशाना, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। गोबिन्द सूरा वड बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। नाम खण्डा इक्क उठाना, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाइंदा। लख चुरासी अन्तर आत्म वेखे मार ध्याना, काया मन्दिर अंदर डूँघी कंदर फोल फोलाइंदा। सतिजुग वखाए सच निशाना, आप उठाए श्री भगवाना, सति सतिवादी राह जणाइंदा। नव नौ गाए इक्क तराना, पुरख अकाल इक्क मनाना, इष्ट गुरदेव इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा अन्तिम इक्को इक्क खुल्हाइंदा। दर दरवाज़ा जाए खुल्ह, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी सच दुआरे तोले पूरे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग बैठा रिहा अडोल, गुर

१०५७
१२

अवतार पीर पैग़म्बर सेवा लाईआ। कलयुग अन्तिम सद्दे सारे कोल, लोकमात कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द सुत सतिगुर इक्को रूप प्रगटाईआ। शब्द गुरू गुर वड बलकारा, बल आपणा आप धराइंदा। कलयुग वेखे कूड़ पसारा, चार कुण्ट खोज खोजाइंदा। भगतां देवे इक्क आधारा, नाम प्यारा वणज कराइंदा। नौ खण्ड पृथमी लग्गा अखाड़ा, जूठ झूठ नाच नचाइंदा। वरन बरन अग्ग लग्गी तत्ती हाढ़ा, सांतक सति ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, नूर ज़हूर आप दरसाइंदा। नूर ज़हूर गुपत ज़ाहर, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सिफ्ती सिफ्त सालाह ते वसे बाहर, सिफ्त विच कदे ना आईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां बणे सज्जण यार, यारी यारां नाल निभाईआ। काया मन्दिर अंदर वड़ वड़ करे प्यार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सोई सुरती लए उठाल, अकाल मूर्त चले नाल नाल, नाद तूरत इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सुत वखाए साचा घर, घर घर विच आप प्रगटाईआ। घर मन्दिर ठाकर वसे स्वामी, गुरुदुआरा इक्को नज़री आइंदा। परम पुरख पतिपरमेश्वर सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, लख चुरासी खोज खोजाइंदा। बोध अगाध शब्द नाद अनहद धुंन आत्मक सुणाए साची बाणी, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। लेखा चुके चार खाणी, सुरती मिले शब्द हाणी, अमृत मिले ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ किसे कम्म ना आइंदा। सतिगुर सच्चा वड मेहरवानी एका देवे पद निरबाणी, सचखण्ड दी सच निशानी, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। सतिजुग दी सच कहाणी, सोहँ शब्द इक्क निशानी, आत्म परमात्म दिता दानी, दाता दानी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी कलयुग रासी लहिणा देणा नेत्र नैणां सर्ब चुकाइंदा।

✳ १४ अस्सू २०१६ बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे गृह नवां पिण्ड ✳

आदि जुगादि गुरदेव स्वामी, हरि करता खेल कराइंदा। जुगा जुगन्तर अकथ कहाणी, पारब्रह्म प्रभ आप पढ़ाइंदा। बोध अगाध अगम्मी बाणी, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। लेखा जाणे चार खाणी, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। जन भगतां देवे इक्क निशानी, नाउँ निरँकारा इक्क पढ़ाइंदा। पद वखाए इक्क निरबाणी, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। चरन सरन सरन चरन देवे सच ध्यानी, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाइंदा। अमृत सरोवर देवे ठंडा पाणी, तट तीर्थ इक्क वखाइंदा। नाता तोड़ माण अभिमानी, निवण सु अक्खर आप जणाइंदा। सर्ब जीआं घट जाण जाणी, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख गुर सतिगुर इक्क अख्वाइंदा। आदि जुगादी गुर गुरदेव, हरि करता आप अख्वाईआ। सदा सुहेला अलख अभेव, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। निरगुण निराकार सदा निहकेव, निहचल आपणा डेरा लाईआ। हरिजन लाए साची सेव, गुरमुख इक्को सेव बुझाईआ। नाउँ निरँकारा जणाए रसना जिहव, जिह्वा रसना हरि गुण गाईआ। आत्म परमात्म देवे साचा मेव, अमृत फल मुख खुआईआ। दरस कराए वड देवी देव, देव आत्मा लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी बेपरवाहीआ। गुरदेव स्वामी हरि हरि ठाकर, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी बण सौदागर, दो जहानां वणज कराइंदा। लख चुरासी वेखे काया गागर, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फोलाइंदा। जोधा सूरा बली बहादर, बल आपणा आप जणाइंदा। करता करीम हरि हरि कादर, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धो वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। गुरदेव स्वामी श्री भगवन्त, हरि सज्जण खेल कराइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाइंदा। लख चुरासी जीव जंत, घट घट अंदर डेरा लाइंदा। नाउँ निरँकारा मणीआ मंत, मन मणका आप भुआइंदा। तोड़नहारा गढ़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। बोध अगाधा इक्को पंडत, अक्खर वक्खर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। गुरदेव स्वामी श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, पुरी लो नैण उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, ज्ञाता इक्को इक्क करे पढ़ाईआ। लख चुरासी कर प्रधान, नाम प्रधानगी इक्क रखाईआ। नव नौ खेल करे श्री भगवान, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। गुरदेव स्वामी पुरख अगम्म, अलख अगोचर खेल कराइंदा। आदि जुगादी बेड़ा बन्न्, जुग जुग आपणे कंध उठाइंदा। वस्त अमोलक नाम धन्न, जन भगतां आप वरताइंदा। एकँकारा राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाइंदा। लेखा जाणे जनणी जन, जन जणेंदी आपणे रंग रंगाइंदा। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, घड़न भन्नड़हार खेल कराइंदा। भाग लगाए गुरमुख तन, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। करे वसेरा बिन छप्पर छन्न, महल अटल इक्क रुशनाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा खेल आप कराइंदा। गुरदेव स्वामी हरि भगवाना, भगवन आपणा खेल वखाईआ। जोधा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप प्रगटाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच मकाना, सच समग्री इक्क

जणाईआ। बोलणहारा राग तराना, तुरीआ राग आपे गाईआ। आदि जुगादी मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी आप कमाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल महाना, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहारा दाना, दाता दानी नाउँ धराईआ। गुर अवतार देवे माणा, पीर पैग़म्बर चरन सरन सरनाईआ। एका राग सुणाए काना, बिन अक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। गुरदेव स्वामी पारब्रह्म, ब्रह्म लेखा आप जणाइंदा। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप कमाइंदा। भाग लगाए काया पंज तत्त तन, तत्तव तत्त वेख वखाइंदा। वस्त अमोलक इक्क धन्न, नाम ख़ज़ाना हट्ट चलाइंदा। जन भगतां बेड़ा देवे बन्न्ह, हरि जू आपणे कंध उठाइंदा। जुग चौकड़ी देवणहारा डंन, एका डंका नाम वजाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्न, चन्द चांदनी आप चमकाइंदा। करे प्रकाश नेत्र अन्न्ह, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। गुरदेव स्वामी साहिब सुल्ताना, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। लेखा जाणे सीता रामा, आदि जुगादी बेपरवाहीआ। भेव खुल्ह्हाए गोपी कान्ह्हा, मंडल मण्डप रास रचाईआ। पीर पैग़म्बर खेल महाना, हरि ख़ालक ख़लक वखाईआ। कागद कलम दए परवाना, लिख लिख लेखा झोली पाईआ। बोध

१०५६ अगाधी इक्क तराना, त्रैगुण अतीता आप सुणाईआ। ठांडा सीता मर्द मर्दाना, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। जुग चौकड़ी १०५६

१२ गाए गाणा, गीत गोबिन्द अल्ल्हाईआ। खाणी बाणी जगत निशाना, सच निशानी लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १२

आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुरदेव स्वामी उच्च मुनारा, हरि इक्को इक्क सुहाइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, गुर अवतार भेव ना पाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब परवरदिगारा, हक़ हक़ीक़त खोज खोजाइंदा। लाशरीक सांझा यारा, शिरक्त वंड ना कोए वंडाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम पावे सारा, नव नौ खोज खोजाइंदा। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, नाम डंका इक्क वजाइंदा। पीर पैग़म्बर करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। सृष्ट सबाई वेखे हाहाकारा, हरि जू आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। गुरदेव स्वामी हरि गोबिन्द, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। आदि जुगादी सागर सिन्ध, भरपूर रिहा सब ठांईआ। भगत भगवान उपजाए आपणी बिन्द, सुत अनादी वड वड्याईआ। आतम परमातम मेटे चिन्द, दूई द्वैती दुक्खड़ा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुरदेव स्वामी ठांडा सीता, शीतल एका धार वखाइंदा। आदि जुगादी जुग जुग रीता, लख चुरासी वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण पत्तत पुनीता, पतित पावण दया कमाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां वेख वखाइंदा। वसणहारा धाम अनडीठा, कलयुग अन्तिम फेरी पाइंदा। जन भगतां करे सच प्रीता, प्रीतीवान दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। गुरदेव स्वामी सदा सति, सति सतिवादी दया कमाईआ। देवणहारा ब्रह्ममत, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नात, नाता बिधाता इक्क रखाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। सोहँ अक्खर सुणाए गाथ, सृष्ट सबाई दए समझाईआ। लहिणा चुक्के त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां दए वड्याईआ। दो जहानां इक्को पूजा पाठ, पाठशाला इक्को दए जणाईआ। इक्क सरोवर तीर्थ ताट, तट किनारा इक्क वड्याईआ। चौदां लोक वखाए हाट, बण वणजारा फेरी पाईआ। चौदां तबक वसे साथ, सगला संग निभाईआ। कलयुग अन्त वेखे खेल तमाश, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग साची देवे दात, सोहँ नाम झोली पाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। भगतां बणे सच्चा साथ, भगवन आपणा संग रखाईआ। आत्म परमात्म इक्को गाथ, साचा ढोला दए जणाईआ। अन्तिम मुक्के झूठी वाट, कूड़ी कंध रहिण ना पाईआ। गुरमुखां पूरा करे घाट, पूरब लेखा दए मुकाईआ। नाता तुट्टे ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाईआ। मेल मिलाए कमलापात, नर नरायण दया कमाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। आत्म सेजा वखाए खाट, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। निर्मल जोत जगे लिलाट, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे पुरख समराथ, समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मेल मिलाए नट्ठ नट्ठ, लख चुरासी खोज खोजाईआ। गुरमुख सज्जण कर इकट्ठ, हरिसंगत रूप वटाईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मट्ठ, शिवदुआला नज़र कोए ना आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म गाए साचा जस, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। जन भगतां अंदर जाए वस, निरगुण आपणा डेरा लाईआ। सतिजुग साचा मार्ग देवे दस्स, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तीर अणयाला मारे कस, तिक्खी मुखी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। गुरदेव स्वामी साचा सज्जण, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। गुरमुखां कराए इक्को मजण, हरि पुरख निरँजण दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम एकँकारा आया सद्दण, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। आदि निरँजण रखणहारा लज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। अबिनाशी करता एका नाम रखाए लग्न, दूसर ओट ना कोए जणाइंदा। श्री भगवान मेल मिलावा साचे सज्जण, सगला संग आप निभाइंदा। पारब्रह्म प्रभ परदे कज्जण,

१०६० १२

नाम दुशाला हथ्थ उठाइंदा। सति सतिवादी आया नाम वंडण, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। लख चुरासी विच्चों फड़ फड़ आया कढ्ढण, हरिजन आपणी गोद बहाइंदा। कूड़ी क्रिया भाण्डे आया भन्नण, जो घड़या भन्न वखाइंदा। गुरमुख साचा निर्मल चन्नण, निम वास ना कोए महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। गुरदेव स्वामी नीकन नीका, नज़र किसे ना आईआ। लेखा जाणे जीव जी का, घट घट रिहा समाईआ। कलयुग फल वेखे फीका, नव नौ फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर जिस दीआं रख के गए उडीकां, सो सतिगुर वेस वटाईआ। सब दीआं अन्त नेड़े आईआं तरीकां, हरि जू फैसला दए सुणाईआ। कूड़ी क्रिया वेला बीता, बीती कहाणी ना कोए जणाईआ। सतिजुग चलाए साची रीता, रीतीवान दया कमाईआ। गुरमुखां रंग रंगाए इक्क मजीठा, चढ़या रंग उतर ना जाईआ। कलयुग त्रैगुण तपे अंगीठा, लख चुरासी अग्नी लाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई मीता, भैण भाई ना कोए सहाईआ। झूठी नज़र आए प्रीता, अन्त संग कोए ना जाईआ। करे खेल साहिब अनडीठा, अनडिठड़ी धार वहाईआ। गुरमुख सच्चा ना मरया ना जीता, जीवण मरन विच कदे ना आईआ। नाम निधान जिस जन पीता, अमृत रस रस वखाईआ। आदि जुगादि ठांडा सीता, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। हरि चरन ध्यान इक्को कीता, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। नाउँ निरँकारा करया मीठा, जगत रस नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुरदेव स्वामी इक्क अनन्द, अनन्द आत्म आप जणाइंदा। घर विच घर वखाए परमानंद, परम पुरख खेल कराइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, चन्द चांदनी नूर चमकाइंदा। कलयुग अन्तिम वंडे इक्को वंड, वंडणहारा फेरी पाइंदा। कूड़ी क्रिया नाता तोड़ भेख पखण्ड, गुरमुख साचे मार्ग लाइंदा। जन्म जुग दी टुट्टी गंढ्ढ, गुर शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। आवण जावण मुक्के पन्ध, लख चुरासी फंद कटाइंदा। गीत सुहागी सच्चा छन्द, सोहँ सोहला आप जणाइंदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक इक्क वखाइंदा। गुरदेव स्वामी वस्त अपार, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सतिजुग देवे कर प्यार, परम पुरख प्रभ झोली पाईआ। निरगुण सरगुण दए आधार, सरगुण मिले माण वड्याईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आपणा भाग वंड वंडाईआ। लेखा जाण शाह कंगाल, ऊँच नीच दया कमाईआ। गुर शब्द सच्चा बण दलाल, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। सति सतिवादी साची धर्मसाल, धर्म दुआरा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी लहिणा दए चुकाईआ। गुरदेव स्वामी लहिणा देणा, जुग चौकड़ी आप चुकाइंदा। गुर

१०६१ १२

अवतार पीर पैग़म्बर वखाए नैणां, नेत्र अक्ख सर्ब खुल्लाइंदा। लख चुरासी कूड़ी क्रिया वहण वहणा, शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा। गुरमुख विरले गुर चरन बहणा, गुरमुख साचे आप जगाइंदा। मुरीद मुर्शद मन्ने कहिणा, मन्न मन्न शुकर मनाइंदा। गुर चेला धाम इकट्ठे इक्को रहिणा, धाम अवल्लड़ा आप प्रगटाइंदा। साहिब सतिगुर भाणा सहिणा, सिर सिर हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। गुरदेव स्वामी खेले खेल, खेलणहारा नज़र ना आईआ। हरिजन साचे रिहा मेल, मेल मिलावा आप कराईआ। करे प्रकाश बिन बाती तेल, दीपक इक्को जोत रुशनाईआ। आदि जुगादी सज्जण सुहेल, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम अचरज रचया खेल, भेव अभेद ना कोए पाईआ। साध सन्त कीते फेल, हल सवाल ना कोए कराईआ। अन्तिम घल्ले राए धर्म दी जेल, बन्दीखाना इक्क बणाईआ। फड़ बांहों देवे ठेल, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुरदेव स्वामी सांझा यार, सगला संग निभाइंदा। चार वरनां दए आधार, जो जन सरनाई आइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे प्यार, प्रेम प्रीती इक्क वखाइंदा। दूई द्वैती दए निकाल, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। साचा मन्त्र दए सिखाल, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। नेड़ आए अन्त ना काल, महांकाल भय चुकाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत आप
१०६२ वखाइंदा। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर इक्क प्रगटाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, अनहद नादी नाद १०६२
सुणाइंदा। अमृत जाम दए प्याल, मधुर प्याला हथ्थ उठाइंदा। एका जोत देवे बाल, नूर नुराना डगमगाइंदा। आत्म सेजा
१२ दए सुखाल, आसा तृष्ना भुख गवाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। कलयुग अन्त बण दलाल, १२
निरगुण आपणी दया कमाइंदा । सतिजुग त्रेता द्वापर जो गुरमुख घालणा आए घाल, कीती घाल लेखे लाइंदा। आपणी किरपा सब दा हल्ल करे सवाल, फिकरा नाल ना कोए मिलाइंदा। बिन अक्खां लख चुरासी विच्चों लए भाल, भाल्यां आप हथ्थ किसे ना आइंदा। इकट्ठे कीते शाह कंगाल, शाह कंगाल आपणा रूप वखाइंदा। कलयुग चली अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाइंदा। गुरसिख वेखे साचे लाल, लालन आपणी गोद बहाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। अंदर बाहर चले नाल नाल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। एथे ओथे रहे खुशहाल, खुशी ग़म ना रूप वटाइंदा। हरिजन अन्त ना खाए काल, हरि जू आपणी गोद बहाइंदा। जोती जाता जोत बेमिसाल, बेनज़ीर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। गुरदेव स्वामी रंगे रंग, रंगणहारा इक्क अख्वाईआ। आत्म सेजा सति पलँग, परम पुरख प्रभ आप हंढाईआ। हरि मन्दिर वजाए सच मृदंग,

गुरमुख गृह होवे शनवाईआ। आत्म परमात्म देवे इक्क अनन्द, निजानंद दए चखाईआ। जन्म जन्म दे विछड़या पावे ठंड, अग्नी तत्त तत्त मिटाईआ। आत्म परमात्म सुरती शब्दी देवे गंढु, बिन तन्दी डोर बंधाईआ। मुक्के रंडेपा रंड, कन्त सुहाग इक्क वखाईआ। रल मिल सखीआं गीत गायण गोबिन्द छन्द, छंत इक्को इक्क पढ़ाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी बख्शंद, बख्शश आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे पार कराईआ। गुरदेव स्वामी पार किनारा, गुरमुख गुर गुर आप जणाइंदा। डूँघा सागर वेखणहारा काया भँवरी कवरी खोज खोजाइंदा। देवणहारा सच सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, परम पुरख दया कमाइंदा। लख चुरासी पार उतरन दा इक्क विहारा, हरि जू इक्को वार समझाइंदा। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोले जैकारा, जन्म मरन विच कदे ना आइंदा। एथे ओथे मेल मिलाए आप निरँकारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरदेव स्वामी वसे साचे घर, घर मन्दिर इक्क सुहाइंदा।

बेग़मपुरी बे ग़म, चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम, चम्म दृष्टी ना कोए जणाईआ। महल अटल मुनार ना कोई छप्पर छन्न, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाईआ। बुध मति ना कोए मन, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। ना कोए जननी ना कोई जन, धन्न जणेंदी ना कोए माईआ। ना कोई राग ना कोई कन्न, नाद धुंन ना कोए वजाईआ। ना कोई बेड़ा रिहा बन्न्ह, चप्पू हथ्थ ना कोए उठाईआ। ना कोई देवणहारा डंन, राज भूप ना कोए अख्वाईआ। तिस दुआरे वसे इक्को इक्क श्री भगवन, परम पुरख प्रभ आसण लाईआ। जिस जन उपर साहिब जाए मन्न, तिस बेग़म पुरा दए वखाईआ। बेग़म पुरा बे बुनयाद, बुनयाद नज़र किसे ना आईआ। जिस घर सुणे सर्ब फरयाद, परम पुरख वसे सच्चा माहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां देवे आपणी दाद, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। ना कोई ओथे सन्त ना कोई साध, सतिगुर इक्को वसे सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुखां करे सच्चा लाड, प्रेम प्यार इक्क वखाईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, आपणे चरन दए सरनाईआ। इक्को जणाए आपणी याद, पिछली याददाशत दए भुलाईआ। इक्को आए सच स्वाद, सति सतिवादी एका रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस बेग़म पुरा हरि का रूप नज़री आईआ। बेग़म पुरा सचखण्ड, हरि साचे आप बणाया। जित्थे दूसर ना कोई वंड, वंडणहारा नज़र कोए ना आया। ना कोई भेख ना पखण्ड, कूड़ी क्रिया ना कोए रखाया। ना कोई गाए बत्ती दन्द,

तीस बतीस ना कोए सालाहया। तिस घर वसे सूरा सरबंग, शहिनशाह आपणा आसण लाया। गुरमुख गुर गुर हरिजन हरिभगत जिस जन वखाए आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मिलाए आपणे घर, तिस बेग़म पुरा दए समझाया। बेग़म पुरा हरि का दुआर, दूसर होर ना कोए जणाईआ। अठ्ठ पहर निर्मल जोत उज्यार, दीवा बाती ना कोई रुशनाईआ। सचखण्ड निवास सचखण्ड बैठे आप निरँकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए साचा घर, जिस घर वड़्या ग़म रहे ना राईआ। बेग़म पुरा सच दरवाज़ा, बाढी बणत ना कोए बणाइंदा। जिस घर वसे ग़रीब निमाज़ा, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह आपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी आत्म परमात्म रच रच काजा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर खेल कराइंदा। बोध अगाध शब्द अगम्मी वजाए वाजा, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। भगत भगवन्त आप आपणा साजण साजा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सतिगुर सच्चे गुरमुख सच्चा जो मात लाधा, तिस खुल्हाए घर दरवाजा, बेग़म पुरा हरि आप निवाजा, निवाज़श आपणे हथ्थ रखाइंदा। बेग़म पुरा ना होए बेज़ार, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। जिस घर वसे परवरदिगार, बेपरवाह आसण लाईआ। मुकामे हक़ नूर उज्यार, हज़रत बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। बेनज़ीर शाह हकीर कर किरपा जिस आपणा हुजरा दए वखाल, बन्द किवाड़ा ताकी कुण्डा लाहीआ। एका जल्वा नूर जलाल, जोती जाता जोत रुशनाईआ। तिस बेग़म पुरे मुरीद मुर्शद मुर्शद मुरीदां हल्ल करे सवाल, आपणा लेखा आप जणाईआ। बेग़म पुरे वसे बेग़म, गुरमुख सुरती बेग़म रूप वटाईआ। हरि ख़ौंत मिले इक्को एकम, एकँकार दया कमाईआ। चरन लग्ग करे सलामां अलैकम, आलमीन तेरी वड्याईआ। तेरा धाम मुकदस्स बैतल, बेपरवाह तेरी शहिनशाहीआ। मैं दूरों आई वेख के तेरी शैनत, तेरा नाम इशारा मेरी अक्खां नालों लथ्थीआ ऐनक, मेरा आईना होया रुशनाईआ। खुदावंद करीम मिल्या अचानक, भयानक रूप दए गंवाईआ। मैं कोझी कमली ना सकी पछानत, अग्गे बैठा सच्चा माहीआ। वेले अन्त किसे दी ना मंगे ज़मानत, गुरमुख साचे फड़ के बांहों बरी कराईआ। ला के बैठा इक्क अदालत, अदल सच्चा रिहा कमाईआ। ना कोई वुकला ना वकालत, वकील संग ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दी सच अमानत, गुरमुख बेग़म रूप वटाईआ। एथे ओथे सही सलामत, दुःख पोह ना सके राईआ। त्रैगुण माया ना कोए अलामत, पंच विकार ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेग़म पुरा शहर गुरमुखां बणा बेग़म लए वखाईआ। बेग़म बणाए हरि जू नार कन्त, कन्त कन्तूहल दया कमाइंदा। पहलों काया चोली फड़ फड़ चाढ़े

रंग बसन्त, दुरमति मैल धुवाइंदा। अन्तर आत्म परमात्म जपाए आपणा मंत, मन्त्र इक्को नाम दृढ़ाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाइंदा। बोध ज्ञान ज्ञान बोध होए पंडत, साची विद्या इक्क समझाइंदा। नाता तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां फड़ फड़ मेल आपणी संगत, सच्चा संग निभाइंदा। लेखा जाण आदि अन्त, मध आपणा खेल वखाइंदा। पंज तत्त काया रूप बणाए साची बणत, अंदर भगवन्त डेरा लाइंदा। तन माटी काची बणा बणत, फड़ आपणी गोद बहाइंदा। नाता तोड़ बहश्त जनत, चरन कँवलां विच रखाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत इक्को धाम सुहंत, जिस धाम बेग़म पुर नाउँ रखाइंदा। ना कोई मन ना कोई मंत, ना कोई रसना ना कोई जिह्वा ना कोई मूँह ना कोई नक्क, पुरख अकाल इक्क प्रतख नज़री आइंदा। रल मिल दोवें गुर गुरसिख जायण वस, तिस दुआर नाउँ बेग़म पुरा अख्वाइंदा। बेग़म पुरा निक्की खड्ड, घर घर विच टिकाईआ। आपणे नालों कर कर अड्ड, पारब्रह्म लख चुरासी वंड वंडाईआ। लुका के रखी विच काया माटी हड्ड, चमढ़ी उपर पर्दा पाईआ। गुरमुख खेल वेखे अंदर हट्ट, बाहर ढूंडण किते ना जाईआ। दूई द्वैती खोल्हे फट, आपणा फटा दए उठाईआ। विच्चों प्रगट होवे झट्ट, निर्मल जोत कर रुशनाईआ। गुरमुख चरन जाए ढट्ठ, वाह वा तेरी वड वड्याईआ। जिस तन दिता पंज तत्त मन मति बुध नाल रत्त,
१०६५ रत्ती रत्त रत्त नाल मिलाईआ। सो सतिगुर मार्ग देवे दस्स, आपणा घर दए वखाईआ। रल मिल अंदर जाईए वस, गलवकड़ी १०६५
इक्को पाईआ। प्रेम प्यार जाईए फस, ना कोई सके तोड़ तुड़ाईआ। इक्क दूजे दा दर्शन करीए हस्स हस्स, गुरसिख
१२ गुर गुर गोबिन्द विच समाईआ। बिन रसना बिन जिह्वा गाईए जस, बिन कन्नां राग सुणाईआ। माण अभिमान तोड़ जाईए १२
ढट्ठ, गढ़ हँकार ना कोए वखाईआ। नज़री आए घट घट, मेरा वसे सच्चा माहीआ। बेग़म पुरे दा राह देवे दस्स, जिस जांदयां राह विच ना कोए अटकाईआ। माया छाया प्रेम प्यार अंदर गए जे फस, कदम कदम चले ना कोए राहीआ। सतिगुर पूरा दूर दुराडे जाए नट्ठ, आपणी करवट लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेग़म पुर काया मन्दिर अंदर रखी खाट, पावा चूल ना कोए रखाईआ। जगत नेत्र वेखे आकार, निज नेत्र निराकार विच समाईआ। जिस धाम वसे निरँकार, सो साकार नज़र ना आईआ। आपणा रखे आप इखत्यार, हुक्म अगम्मी इक्क सुणाईआ। जोती शब्दी शब्दी जोती साची धार, ततव तत्त ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ।

✳ १४ अस्सू २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✳

निरगुण निरँकार लए अवतारा, गुर शब्द दए वड्याईआ। गुर शब्द सज्जण मीत मुरारा, आदि जुगादि संग निभाईआ। सगला साथी विच संसारा, भगत भगवन्त लए उठाईआ। भगतां देवे नाम अधारा, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म खेल न्यारा, हरि सन्तन दए वखाईआ। सन्तन सोहे सच दुआरा, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, प्रेम प्रीती इक्क सिखाईआ। घर विच घर घर उज्यारा, गृह मन्दिर दए वखाईआ। निर्मल दीआ जोती जाता कर पसारा, सति सरूपी वेख वखाईआ। सदा सुहेला वसणहारा ठांडे दरबारा, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। गुरमुख मेले मेलणहारा, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। श्री भगवान हरि निरँकारा, गुर शब्दी वेस वटाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करे पार किनारा, कलयुग आपणा रंग वखाइंदा। भगत भगवान दए अधारा, सति सन्तोख इक्क दृढ़ाइंदा। महल अटल उच्च मुनारा, घर मन्दिर खोज खोजाइंदा। पूरब लहिणा वेखे वेखणहारा, देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नामे तेरी सुणी पुकारा, कामा आपणी कार कमाइंदा। बहत्तर जामे कर पसारा, पसर पसारी वेख वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी रोवण ज़ारो ज़ारा, हरि का अन्त ना कोए पाइंदा। गुर अवतार करन निमस्कारा, पीर पैग़म्बर सीस निवाइंदा। कलयुग अन्तिम जन भगतां देवे इक्क अधारा, आत्म परमात्म बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण पुरख अबिनाशा, गुर गुर खेल कराईआ। गुर गुर खेल शब्द गुर वड प्रकाशा, प्रकाशवान सर्ब लोकाईआ। लेखा जाणे पृथमी अकाशा, आकाश आकाशां खोज खोजाईआ। जन भगतां होए दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। पूरी करे इक्को आसा, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। निरगुण सरगुण चले साथा, सगला संग निभाईआ। सतिजुग पढ़ाए आपणी गाथा, बोध ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। भाग चुकाए मस्तक माथा, जोत लिलाटी वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बन्न्हे नाता, बिधाता आपणा जोड़ जुड़ाईआ। अमृत जाम प्याए सच्चा बाटा, भर प्याला हथ्थ रखाईआ। अनहद नाद सुणाए अगम्मी गाथा, गा गा आपणा नाउँ वड्याईआ। उत्तम रखे हरिजन जाता, ज़ात पात ना कोए समझाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी संग निभाईआ। गुर शब्दी सज्जण साचा मीता, मित्र प्यारा आप अख्वाइंदा। सचखण्ड निवासी ठांडा सीता, थिर घर आपणा हुक्म वरताइंदा।

त्रैभवण धनी त्रैगुण अतीता, त्रै त्रै लेखा आप जणाइंदा। समरथ पुरख करे खेल इक्क अनडीठा, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द आप वड्याइंदा। गुर शब्द देवे हरि हरि बल, बल आपणा आप जणाईआ। आदि जुगादी अछल अछल, वल छल धारी खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम जोती शब्दी आपे रल, रल मिल आपणा वेस वटाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, अट्टल महल्ल करे रुशनाईआ। बिन तेल बाती दीपक गया बल, अज्ञान अन्धेर दए गंवाईआ। सच संदेसा रिहा घल, सतिजुग साची करे पढ़ाईआ। लख चुरासी देवणहारा फल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुर इक्क वड्याईआ। शब्द गुर वड बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दाना, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। बण विचोला श्री भगवाना, साचा मार्ग आपे लाइंदा। कलयुग मेटे कूड़ निशाना, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। जन भगतां बख्शे चरन ध्याना, सरन इक्को इक्क वखाइंदा। साचे सन्तां देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। गुरमुख बणाए चतुर सुघड़ सुजाना, मूर्ख मूढ़ नजर कोए ना आइंदा। गुरसिखां करे बदली जामा, जन्म जन्म विच बदलाइंदा। जिउँ नामे दर सेवा करे बण बण कामा, तिउँ भगतां भगवान तरस कराइंदा। निरवैर पहरया जामा, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, सो
१०६७ पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। लख चुरासी अन्तरजामा, घट घट आपणा खोज खोजाइंदा। गुरमुख वेखे बाल अञ्याणा, गुर १०६७
गुर आपणी गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क सलाहइंदा। शब्द गुर आदि
१२ अवतारा, हरि सतिगुर नाउँ वड्याईआ। नाम सति सति भण्डारा, सति पुरख निरँजण झोली पाईआ। ओअं सोहँ खेल १२
न्यारा, हँ ब्रह्म सो पुरख निरँजण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अगम्म, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। शब्द गुरू गुर बेड़ा बन्न्ह, देव देवा दया कमाइंदा। भाग लगाए साचे तन, तन मन्दिर आप सुहाइंदा। लेखा जाणे जननी जन, जन जननी वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण बेड़ा बन्न्ह, पुरख अबिनाशी आपणे कंध उठाइंदा। जन भगतां कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर सिफ्त सलाहइंदा। शब्द गुरू गुर साचा मीता, मित्र प्यारा इक्क अख्वाइंदा। वसणहारा धाम अनडीठा, मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले हथ्थ किसे ना आइंदा। चार वेद जिस बणाई रीता, शास्त्र सिमरत आप पढ़ाइंदा। गीता ज्ञान देवे ठांडा सीता, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द इक्क सलाहइंदा। सतिगुर शब्द वड्डा हितकारी, हित आपणा आप जणाईआ। निरगुण

रूप नर निरँकारी, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। वसणहारा थिर घर धाम अटल्ल अटारी, सचखण्ड ध्यान लगाईआ। पुरख अगम्म अथाह बेपरवाह वेखे विगसे एकँकारी, नर निरँकारी नैण उठाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण पावे सारी, महांसारथी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेला इक्क इकेला लेखा जाणे गुरू गुर चेला, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। शब्द गुरू गुर सच्चा सज्जण, हरि सतिगुर आप बणाइंदा। निरगुण सरगुण कराए मजण, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाइंदा। डूँग्घी गारों आए कढ्ढण, फड़ बांहों पार कराइंदा। घर आपणे आए सद्दण, सद्दा एको वार सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुर सेवा इक्क लगाइंदा। शब्द गुर सेवा गया लग्ग, हरि सतिगुर आप लगाइंदा। करे खेल सूरा सरबग, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। फिरे दरोही सारे जग, जग जीवण दाता आप जणाइंदा। नव नौ लग्गे अग्ग, लग्गी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। गुरमुख गुर गुर सन्त सुहेले सज्जण सद्द, आप आपणा पर्दा लाहइंदा। इक्क प्याए साची मदि, मधुर रस इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दया कमाइंदा। शब्द गुरू गुर दयाल दीनन, आपणी दया कमाईआ। एका रंग चाढ़े भीन्नण, भिनंड़ी रैण नाल रलाईआ। नाता जोड़े जिउँ जल मीनन, जल मीन रूप

१०६८ वटाईआ। लेखा जाणे लोक तीनन, त्रै त्रै लहिणा रिहा मुकाईआ। जन भगतां करे ठांडा सीनन, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। १०६८

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। शब्द गुरू गुर सांझा

१२ यार, यारड़ा सत्थर इक्क हंढाइंदा। ग़रीब निमाणयां करे प्यार, निताणयां आपणे रंग रंगाइंदा। बे मुहाणयां लाए पार, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। डूँग्घी भँवरी कढ्ढे बाहर, काया कवरी खोज खोजाइंदा। रातीं सुत्तयां दए दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। एका नाम दए खुमार, सच खुमारी इक्क वखाइंदा। जन भगतां पैज जाए संवार, समरथ आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्त कर प्यार, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दा दुखड़ा दए निवार, लख चुरासी फंद कटाइंदा। उज्जल मुख करे करतार, दुरमति मैल धुआइंदा। सोहँ नाम सच जैकार, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। पुरख अबिनाशी मिले सच्चा यार, मित्र प्यारा विछड़ कदे ना जाइंदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब व्यापी देवे इक्को दान, वड प्रतापी वखाए सच निशान, नाम निशाना इक्क रखाइंदा। १२

✳ १४ अस्सू २०१६ बिक्रमी तेज कौर दे गृह
रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✳

हरि दाता शब्द भिखार, गुर मांगणहार अख्वाईआ। देवणहार एकँकार, आदि अन्त वरताईआ। कलयुग अन्त भरे सच भण्डार, सति भण्डारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणी आप कमाईआ। आपणी करनी करे हरि करतारा, कलजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। शब्द वस्त सच भण्डारा, सति सतिवादी आप वरताइंदा। ग़रीब निमाणयां दे अधारा, अन्तर आत्म मेल मिलाइंदा। जगत निथाव्याँ सच सहारा, बण सज्जण आप रखाइंदा। डूँग्घी भँवरी पार किनारा, बे सबरी सबर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वस्त आप वरताइंदा। सच वस्त देवे दानी, दाता आपणी दया कमाइंदा। अतोट अतुट इक्क निशानी, निरगुण निराकार आप वखाइंदा। मन्त्र नाम नमो सति कहाणी, सति पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। उत्तम श्रेष्ठ इक्को बाणी, विषेश आपणे रंग रंगाइंदा। चरन कँवल पद निराबाणी, निरबाण पद इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख
१०६६ वखाइंदा। कलयुग अन्त ग़रीब निवाज़, निरगुण निर्धन वेख वखाईआ। निर्धन सरधन रखणहारा लाज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निमाण निमाणयां रच रच काज, करता पुरख शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पातशाह हो के बणया मंगतां, दर दर फेरी पाइंदा। आपे बणया भुखा नंगता, गुरमुखां भरपूर आप कराइंदा। चौथे जुग गुरसिखां अग्गे करे आप मिन्नतां, जुग जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। निरगुण करके आया आपणी हिम्मता, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग वखाइंदा। बण शहिनशाह होया गोला, कलयुग अन्तिम सेव कमाईआ। निरँकार निरगुण बदल्लया चोला, चोला तन ना कोए वखाईआ। माणस जन्म बणया भाला भोला, भाओ आपणा ना किसे जणाईआ। कलयुग अन्तिम गुरसिखां अंदर वड़ वड़ पाए रौला, सोहँ आपणा नाम जपाईआ। सच दुआरा इक्को खोल्ह्या, जिस दुआरे ग़रीब निमाणे लए तराईआ। आप चुकाए पर्दा ओहला, मुख आपणे लए प्रगटाईआ। गुरमुख तेरे प्रेम दा गाए सोहला, गा गा आपणा शुकर मनाईआ। निरगुण हो के बणया विचोला, विचला लेखा रिहा मुकाईआ। आपणी हथ्थीं गुरमुखां पिछला पर्दा फोला, लेखा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि रंग समाईआ।

✳ १४ अस्सू २०१६ बिक्रमी लक्ष्मण सिंघ दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✳

शाह पातशाह तेरी उडीक, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। परवरदिगार आवे लाशरीक, पीर पैग़म्बर नैण उठाईआ। दो जहानां दस्से सच प्रीत, प्रीतीवान सच्चा माहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाए साचा गीत, सति सतिवादी ढोला गाईआ। लख चुरासी परखे नीत, घर घर आपणा फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुकाए हस्त कीट, ऊँच नीच वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी तक्कण तेरा राह, गुर अवतार नैण उठाया। पीर पैग़म्बर रहे ध्या, ध्यान ध्यान विच रखाया। कवण कूटे प्रगट होवे सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा वेस वटाया। मुख नक़ाब पर्दा देवे लाह, जल्वा नूर करे रुशनाया। सिफ्त सालाही देवे सच सलाह, सलाहगीर फेरा पाया। शाह हकीर लए उठा, दस्तगीर आपणा दस्त मिलाया। शरअ ज़ंजीर दए तुड़ा, दीन मज़्ब ना कोए रखाया। आत्म परमात्म दए मिला, सच मिलावा इक्क जणाया। जूठी झूठी कंध देवे ढाह, भाण्डा भरम भउ भन्नाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ बांहों कड्ढे दए बहा, साची सिख्या इक्क समझाया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ढ गुर घर दए उठा, गुर सतिगुर फेरा पाया। नाम मृदंगा दए वजा, डंका एका शब्द लगाया। राउ रंकां दए जगा, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाया। साचा मार्ग देवे ला, रैहबर आपणा फेरा पाया। चौदां तबक दए हिला, चौदां लोक कुण्डा लाहया। त्रैभवण वेखे थाउँ थाँ, अवन गवन खोज खोजाया। रवि ससि सूरज चन्द लहिणा देणा दए मुका, बाकी कोए रहिण ना पाया। विष्न ब्रह्मा शिव दए समझा, सच संदेसा इक्क सुणाया। चौदां विद्या पन्ध दए मुका, पाँधी आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाया। सचखण्ड निवासी तेरी ओट, गुर अवतार रहे तकाईआ। पीर पैग़म्बर तेरा नूरी जल्वा निर्मल जोत, जोती नूर नूर दरसाईआ। मुकामे हक़ धाम न्यार सचखण्ड तेरा किला कोट, चार दीवार ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी तेरी आस, गुर अवतार रहे ध्याईआ। पीर पैग़म्बर हो के बैठे निरास, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलयुग कोए ना दिसे सच प्रकाश, प्रकाशवान ना कोए खुदाईआ। मुल्ला शेख़ मसाइक होए बेआब, आब हयात ना कोए प्याईआ। चौदां सदीआं लै के थक्के ख़वाब, सोइआं रैण गई वहाईआ। तेरी झल्ल ना सके कोई ताब, बेताब देण दुहाईआ। कवण वेला प्रगट होवे शाह नवाब, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। शाह सवारा चरन घोड़े दए रकाब, सच सिंघासण सोभा पाईआ। अज़ीम देवे सर्ब अज़ाब, ना सके कोए बचाईआ। मुरीद मुर्शद देवे खिताब, दीनन दया निध आप होए सहाईआ। दरोही खुदाए सारे होए लाजवाब,

नेत्र नैण रहे शरमाईआ। कोए ना दिसे सच्चा पाक, पाक रसूल ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया छाणी ख़ाक, अन्तिम ख़ाक मेल मिलाईआ। चार यारी मुक्कया साक, सैण कोए नज़र ना आईआ। चौदां तबक ख़ाली हाट, साचा हट्ट ना कोए वखाईआ। बुढे शेख़ काला चीथड़ गया पाट, बस्त्र तन ना कोए सुहाईआ। अन्तिम नेड़े आई वाट, बैठा पन्ध मुकाईआ। ना कोई लेफ ना कोई खाट, ना कोई तकीआ रिहा वखाईआ। कलयुग अन्तिम आई रात, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ देण दुहाईआ। किसे कम्म ना आए पंज वक्त निमाज़, रोज़ा बांग ना कोए सहाईआ। परवरदिगार बेपरवाह पर्दानसीं आपणा वटाए स्वांग, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी तेरा सहारा, गुर अवतार इक्क तकाईआ। कलयुग आया अन्त किनारा, सगला संग ना कोए निभाईआ। नेत्र रोवण तेई अवतारा, भगत अठारां देण दुहाईआ। साडा चलया ना कोई चारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जीव जंत होया गंवारा, मनमति करी कुड़माईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए प्यारा, खाणी बाणी संग ना कोए रखाईआ। मन ममता भरे हँकारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। गुर का शब्द ना किसे विचारा, गुर गुर बूझ ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध उपर इक्को ओट तकाईआ। गुर अवतार वेखण

१०७१ श्री भगवान, कवण वेला खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम पुज्जा आण, नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कुरलाण, करोड़ तेतीसा नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। त्रैगुण माया होई प्रधान, पंचम तत्त डंक वजाइंदा। घर घर वड़या जगत शैतान, झूठी क्रिया नाच नचाइंदा। नज़र ना आए नौजवान, पुरख अबिनाशी मुख छुपाइंदा। पंडत पांधे सर्ब पछताण, तिलक ललाटी ना कोए लगाइंदा। गल जञ्यू ना कोए निशान, एका बन्धन ना कोए पाइंदा। सीता सुरती ना मिले राम, गोपी काहन ना कोए प्रनाइंदा। नाम बंसरी ना कोए गाण, मधुर धुंन ना कोए सुणाइंदा। गोकल मथरा ना कोए माण, घनईया रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणा वेस धराइंदा। गुर गुर मंगे साची मंग, गुरू दस्स ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म सूरे सरबंग, तुध बिन अवर नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथमी होई रंड, सत्त दीप हरि कन्त ना कोए मनाईआ। साधा सन्तां नंगी होई कंड, उपर पर्दा कोए ना पाईआ। वरभण्डी कूड़ी क्रिया पाए डण्ड, भेख पखण्ड करे लड़ाईआ। किसे हथ्थ ना आए सच अनन्द, अनन्द विच ना कोए समाईआ। मदिरा मास खाण गंद, आत्म अन्तर निझर झिरना ना कोए झिराईआ। जोत निरँजण चढ़ाए ना कोए चन्द, सच प्रकाश ना कोए कराईआ। बन्दीखाना ना तोड़े कोए बन्द, लख चुरासी ना कोए छुडाईआ। विदवान होए नेत्र अन्ध, निज नेत्र

ना कोए खुल्हाईआ। रसना गौदे ढोले छन्द, अनहद नाद ना कोए वजाईआ। साचे मन्दिर कोए ना जाए लँघ, हरि मन्दिर हरि का दरस कोए ना पाईआ। जन्म जुग दी टुट्टी कोए ना सके गंढ, गंढणहार गोपाल दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर गुर बैठे सीस झुकाईआ। गुर गुर झुकया इक्को सीस, नानक गोबिन्द खेल वखाइंदा। सो पुरख निरँजण हरि जगदीस, जगदीशर आपणा वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण पीसण लए पीस, एकँकारा चक्की आप चलाइंदा। आदि निरँजण दए हदीस, श्री भगवान साची सिख्या आप समझाइंदा। अबिनाशी करता लेखा जाणे बीस इकीस, बीस बीसा नाउँ वड्याइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका ताज रखाए सीस, सहँस मुख भेव कोए ना पाइंदा। नाता तोड़ राग छतीस, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ध्यान लगाइंदा। गुर अवतार इक्क ध्यान, प्रभ उत्ते रहे लगाईआ। तूं दाता वड मेहरवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, तेरी सार ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी वेखे आण, नित नवित वेस वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी सारे गाण, गा गा तेरा शुकर मनाईआ। तूं वसें सच मकान, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। झुल्लदा रहे इक्क निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दीनां नाथां देवे दान, दीनन आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्त सारे होए हैरान, तेरा भेव कोए ना आईआ। लेखा लिख लिख लिखदे गए विच जहान, गुरू इष्ट देव समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक बली बलवान, सब दा लेखा दए मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर इकट्ठे पकड़े आण, चार युग दे विछड़े आपणे नाल मिलाईआ। साची सिख्या देवे चरन कँवल ध्यान, चरन सरन सरन चरन इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची आपणी बूझ बुझाईआ। सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सचखण्ड निवासी करे प्यारा, प्रेम प्यार इक्क जणाइंदा। कलयुग अन्तिम निरगुण आवे आपणी धारा, धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। गुर अवतारां दए सहारा, पीर पैग़म्बरां नाल मिलाइंदा। चार युग दा दुक्खड़ा कटे विच संसारा, सुकड़ा बूटा हरा कराइंदा। मेल मिलाए अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणा खेल वखाइंदा। कलयुग मेटे धूंआँधारा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सति सतिवादी बोल जैकारा, जै जैकारा इक्को नाम सुणाइंदा। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच करे पार किनारा, राउ रंक एका घर बहाइंदा। चौदां लोक चौदां तबक वणज कराए बण वणजारा, सति पुरख निरँजण इक्को हट्ट खुल्हाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। बेअन्त बेपरवाह परवरदिगारा, पारब्रह्म

प्रभ आपणा खेल कराइंदा। कल कल्की लै अवतारा, सम्बल वसे धाम न्यारा, उच्चे टिल्ले पर्बत डूँग्घे सागर आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा एकँकारा, एका वार जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदारा, त्रैगुण नेत्र नैण खुल्हाईआ। पंज तत्त तेरा वेखे अखाड़ा, लख चुरासी खोज खोजाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्क वखाए सच दुआरा, दर दरवाज़ा आप जणाईआ। साचा मार्ग लाए विच संसारा, महांसारथी फेरा पाईआ। भगत भगवान वखाए इक्क दुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। साचा खेल करे करतार, कलयुग अन्त अन्त जणाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, भगवन आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख वेखे गुर गुर लाल, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, हस्त कीट लए जगाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, घर घर आपणा वणज कराईआ। हक़ीक़त वेखे हक़ हलाल, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। नव नौ जणाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा हरि निरँकारा, हरि एका एक जणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट हो अगम्म अपारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। भगत वखाए इक्क दुआरा, श्री भगवान आप बणाइंदा। दीआ बाती कमलापाती
१०७३ कर उज्यारा, निरगुण जोत नूर रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। १०७३
कलयुग अन्तिम राह चलाउणा, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, मेहरवान दए समझाईआ। गुर
१२ अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवन्त एका धाम बहाउणा, सन्त सज्जण नाल मिलाईआ। लख चुरासी ढोला इक्को गाउणा, १२
सोहँ सो करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म बीज आप बिजाउणा, बण किरसाणा हल चलाईआ। अमृत मेवा फल लगाउणा, रस मिट्ठा इक्क भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए जणाईआ। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कलयुग उतरे पार किनार, सतिजुग वेखे चाँईं चाँईंआ। दो जहानां विचोला सिरजणहार, निरगुण आपणा खेल कराईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, उठ उठ आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम शब्द वड्याईआ। नाम शब्द गुरदेव स्वामी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। बोध अगाध अगम्मी बाणी, गुर गुर नाद वजाइंदा। सचखण्ड दी साची राणी, जन भगतां नाल प्रनाइंदा। आत्म परमात्म अकथ कहाणी, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा पाणी, निझर झिरना आप झिराइंदा। निरगुण जोत नूर नुरानी, नूर नुराना डगमगाइंदा। करे खेल श्री भगवानी, आपणा भेव चुकाइंदा। लेखा जाणे चारे खाणी, अण्डज जेरज

उत्भुज सेत्ज फोल फोलाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाए गाणी, गा गा आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा श्री भगवन्त, एका एक जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत, जीवण जुगत दए वड्याईआ। आत्म परमात्म मणीआ मंत, मन का मणका दए भुवाईआ। गुरमुख उपाए साचे सन्त, सन्त सतिगुर मेल मिलाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दरसाईआ। नाता तोड़ भुख नंगत, नाम ख़ज़ाना इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल कर कर, गुर अवतार रिहा वड्याईआ। निरगुण नूर धर धर, धरनी धरत धवल दए सुहाईआ। भगत भगवान आपे वर वर, पल्लू एका गंढु पुवाईआ। स्वच्छ सरूप दरस दिखाए अग्गे खड़ खड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। लहिणा देणा चुकाए सीस धड़ धड़, निधड़क आपणा फेरा पाईआ। गुरमुख मेले बांहों फड़ फड़, लख चुरासी खोज खोजाईआ। अंदर मन्दिर साचे पौड़े चढ़ चढ़, चढ़ चढ़ आपणा रंग वखाईआ। निष्अक्खर अक्खर वक्खर बाणी पढ़ पढ़, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण जन्मे मर मर, मर मर जम्मे भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। करनी करे करता ठाकर, गुर अवतार आप जणाइंदा। कलयुग वेखे डूँघा सागर, दो जहानां खोज खोजाइंदा। चोदां लोकां वणज करे बण सौदागर, साचा हट्ट आप चलाइंदा। गुरसिख करे कर्म उजागर, निर्मल नीर आप प्याइंदा। कलयुग अन्तिम देवे आदर, आदर्श आपणा इक्क वखाइंदा। मेहरवान मेहरवान करीम करता कादर, बेनज़ीर नज़र आपणी आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर हरि संदेसा, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। प्रगट होवे नर नरेशा, नर नरायण वेस वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव चले कोए ना पेशा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। फिरे दरोही देस परदेसा, दो जहानां आप जगाइंदा। जन भगतां करे साचा हेता, मित्र प्यारा बण बण गले लगाइंदा। चार युग दा भुल्ल ना जाए चेता, जुग विछड़े मेल कराइंदा। सद रखे साया हेठां, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर आप आपणी गोद बहाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जाणा सौं, हरि साचा सच जणाईआ। अबिनाशी करता दो जहानां रिहा भौं, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण घर घर करे रौं, आपणा रवय्या ना किसे समझाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगत मिलण दा रखे गौं, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ वेख वखाईआ। वेखणहारा नव नौ, चार चार फेरा पाईआ। आपणे जेहा आपे हो, निरगुण आपणा रूप धराईआ। माण

रखाए छब्बी पोह, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। चार युग दी पिछली समग्री सब दे कोलों लवे खोह, खाली हथ्थ सर्ब फिराईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण पैण रो, नीर नीर नाल वहाईआ। सच अमाम चरन ना सके कोई छोह, छोहरे बाले परां हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सिख मति इक्क समझाईआ। सिख मति सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। परम पुरख दा सच विहार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। दीन मज़्ब ज़ात पात लेखा लिख्या वरका दिता पाड़, दूजी सार कलम शाही कोए ना पाइंदा। नौ खण्ड पृथमी इक्को नज़री आए एकँकार, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। तोबा तोबा करे मुहम्मद यार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। ईसा कहे तेरी सच्ची गुफ़तार, गुफ़त शुनीद संग रखाइंदा। मूसा कहे मैं धूढ़ी मंगां चरन छार, मस्तक टिक्का इक्को लाइंदा। तूं महबूब सच्चा यार, मुहब्बत तेरे नाल प्रनाइंदा। चार यारी धाहां रही मार, चारों कुण्ट संग कोए ना आइंदा। अल्ला राणी होई शर्मसार, नेत्र कज्जल धार ना कोए बनाइंदा। नथ्थ सुहाग ना दिसे विच संसार, खुल्ही मींढी चारे कुण्ट भुवाइंदा। मैहन्दी रंग ना कोए देवे चाड़्ह, लालन रूप ना कोए वखाइंदा। नौ खण्ड पृथमी फिरे दरोही दुहागण नार, नर हरि कन्त ना नज़री आइंदा। अंदर वड़ वड़ रोवे ज़ारो ज़ार, चौदां तबकां बन्द ना कोए कराइंदा। प्रगट होया परवरदिगार, पारब्रह्म
१०७५ आपणा खेल वखाइंदा। सदी चौधवीं करे खुआर, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। नानक गोबिन्द मिले मीत मुरार, मित्र प्यारा १०७५
आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नाम डंका इक्क वजाइंदा। नाम डंका वज्जे जग, सो पुरख निरँजण आप वजाईआ। हरि पुरख निरँजण सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकारा दो जहानां वेखे लँघ, रूप अनूप आप वटाईआ। आदि निरँजण दर दरवेश मंगे मंग, नर नरेश अग्गे झोली डाहीआ। अबिनाशी करता आपणी वस्त देवे वंड, वंडणहारा दया कमाईआ। श्री भगवान गाए छन्द, गीत गोबिन्द इक्क अल्हाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम खेल करना, हरि करता आप जणाइंदा। भेव चुकाए बरनां वरनां, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। जन भगतां नेत्र खोल्हे हरना फरना, निज नेत्र पर्दा लाहइंदा। देवे वड़याई विच चरनां, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। नाता तुट्टे डरना मरना, जीवण मुक्त आप कराइंदा। दरगाह साची फड़ बांहों खड़ना, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। सोहँ अक्खर जिस जन पढ़ना, तिस जम नेड़ ना आइंदा। पुरख अबिनाशी घाड़न घड़ना, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। महल अटल उच्च मुनारे गुरसिख चढ़ना, उपर चढ़ चढ़ खुशी

मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म देवे इक्क ज्ञान, ध्यान ध्यान विच रखाइंदा। ध्यान विच रख ध्यान, धीरज सति सन्तोख दृढ़ाईआ। मति मतवाली ना होए हैरान, मनुआ उठ ना दहि दिश धाईआ। पंच विकार ना लड़े कोए शैतान, छुरी कूड़ ना कोए चलाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी, शब्द अनादी देवे इक्क ज्ञान, गोझ ज्ञान दए समझाईआ। भगत भगवान मिले आण, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। जन्म जन्म दी चुक्के काण, जिस प्रभ मिले सच्चा माहीआ। देवे वड़याई विच दो जहान, उज्जल मुख मात कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवे वर, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। काया अंदर बहत्तर नाड़, अग्नी तत्त तत्त तपाईआ। काया अंदर मन मति बुध करे विचार, मन मनसा नाल मिलाईआ। काया अंदर आसा तृष्ना करे विचार, मोह ममता रही समाईआ। काया अंदर इक्क लख अस्सी हज़ार भूत प्रेत फिरे बेताल, आपणा ताल वजाईआ। काया अंदर पवण स्वासी खेल निराल, स्वास स्वासां नाल रखाईआ। काया अंदर सुरती होए बेहाल, हरि का भेव ना जाणे राईआ। काया अंदर कूके काल, काल नगारा डंक वजाईआ। काया अंदर सच्ची धर्मसाल, सतिगुर वसे सच्चा माहीआ। काया अंदर शाह कंगाल, कंगालों शाह रूप वटाईआ। काया अंदर ख़ज़ीना धन माल, धन दौलत दए वखाईआ। काया अंदर मिले पीण खाण, तृष्ना तृखा भुख गंवाईआ। काया अंदर सच मकान, महिफल हरि जू रिहा लगाईआ। काया अंदर जगत शैतान, अठ्ठे पहर करे लड़ाईआ। काया अंदर मिले भगवान, घर मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख सिख्या साची जाण, घर सतिगुर आप जणाईआ। जो जन चरनी डिगे आण, तिस दे घाटे पूरे दए कराईआ। दु:ख दर्द रहे ना विच जहान, ज़हिमत नेड़े कोए ना आईआ। नाता तोड़े पवण मसाण, सीस चक्कर ना कोए भुआईआ। टूणा जादू ना कोए निशान, मढ़ी गोर ना कोए वखाईआ। बीर बेताले होण शर्मसान, रिद्ध सिद्ध ना कोए चतुराईआ। कर किरपा दु:ख मेटे विच जहान, चिंता चिखा रोग सोग दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया अंदर साचे मन्दिर तिन्न सौ सठ्ठ हड्डी वेख वखाईआ।

✳ १५ अस्सू २०१६ बिक्रमी पिण्ड समरा ✳

आदि जुगादी खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, हरि पुरख निरँजण दया कमाइंदा। एकँकारा निरगुण नूर जोत आपे रला, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सच संदेस एका घल्ला,

१०७७ १२

निष्अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। श्री भगवान आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण नूर फड़ाए पल्ला, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। पारब्रह्म शाहो भूप सति सतिवादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी हरि करतार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। सचखण्ड निवासी वसणहारा सच दुआर, दरगाह साची आसण लाईआ। शाहो भूप वड सिक्दार, शहिनशाह आपणा नाउँ धराईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल अपारा, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। धुर फ़रमाणा सच संदेसा देवणहारा, धुरदरगाही नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा श्री भगवान, हरि जू हरि हरि आप जणाईआ। आदि पुरख वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सचखण्ड दवारा सच मकान, बिन छप्पर छन्न छुहाईआ। दीआ बाती इक्क महान, कमलापाती नूर रुशनाईआ। तख्त निवासी नौजवान, सच सिँघासण डेरा लाईआ। निरगुण राजा भूप बण राजान, दर दरवेश आपणा खेल कराईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। देवणहारा दानी दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। करे खेल दो जहान, अनभउ प्रकाश वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह श्री भगवाना, हरि जू अपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादी मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणी कल वरताइंदा। सचखण्ड अंदर खोल्ह दुकाना, थिर घर आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। भेव अभेद श्री भगवन्त, आपणा आप जणाईआ। आदि जुगादी नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक्क हंढाईआ। निरगुण निरगुण बणाए बणत, ना कोई पिता ना कोए माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए समझाईआ। साचा खेल पारब्रह्म, प्रभ एका एक कराइंदा। निरगुण धार निरगुण जम्म, निरगुण रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। आपे जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप कमाइंदा। सति सतिवादी बेड़ा बन्ह, आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपणा पर्दा देवे लाह, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी बण मलाह, खेवट खेटा आप हो जाईआ। आपणी रचना आप रचा, आपे वेखे थाउँ थाईंआ। थिर घर साचे दए वड़या, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पूत सपूता एका जा, जन जणेंदी बणे माईआ। दाई दाया सेव कमा, साची सेवा इक्क समझाईआ। बाल अञ्याणा लए उठा, शब्दी आपणे अंग लगाईआ। थिर घर दुआरे दए बहा,

सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा दए समझा, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणा भेव आप जणाईआ। आदि पुरख हरि खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा । शब्दी शब्द सुत दुलारा, हरि साचा आप प्रगटाइंदा। एका वणज इक्क वापारा, एका हट्ट खुल्हाइंदा। एका वस्त देवे हरि थारा, थिर घर साचे आप बहाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। रूप रंग ते वसे बाहरा, रेख भेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। सुत दुलारा छोटा बाल, सतिगुर पूरा आप उठाईआ। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर चले नाल नाल, सगला संग निभाईआ। साची सिख्या दए सिखाल, बिन अक्खर कर पढ़ाईआ। वस्त अमोलक देवे नाम धन माल, नाउँ निरँकारा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सुत दुलारा एका जा, हरि साचे सगण मनाया। थिर घर साचे दए बहा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। आपणी सेवा दए लगा, सेवक सेवा रूप वटाया। निरगुण नूर जोत प्रकाश दए वखा, तत्तव तत्त ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक्क समझाया। सतिगुर शब्द कर प्यार, हरि हरि दया कमाइंदा। पूत सपूते रहिणा ख़बरदार, बेख़बर आप जणाइंदा। निरगुण बन्ने तेरी धार, निरवैर वेस वटाइंदा। मूर्त अकाल मीत मुरार, अजूनी रहित धार वखाइंदा। एकँकारा दए अधार, अकल कल आपणा भेव खुल्हाइंदा। सचखण्ड दवारे खेल अपार, थिर घर आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणी रचना आप जणाइंदा। आपणी रचना आपे रच, आपे वेख वखाईआ। निरगुण रूप सति सच्च, सच्चा सच समाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आप चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जाता हो प्रगट, प्रगट आपणा रूप धराईआ। सचखण्ड दवारे अंदर थिर घर खोल्ह हट्ट, पूत सपूता दए बहाईआ। सति सतिवादी मार्ग दस्स, साचे धन्दे दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह आदि निरँजण, आदि आपणी दया कमाइंदा। सुत दुलारे कराए साचा मजण, सरोवर इक्को इक्क वखाइंदा। नाम निधाना पाए अञ्जण, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। आदि जुगादि बणे सच्चा सज्जण, सगला संग आप निभाइंदा। निरगुण निरगुण होए परदे कज्जण, सरगुण रूप ना कोए वखाइंदा। दाता दानी सूरा सरबंगण, शाह पातशाह आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा कर प्यारा, हरि शब्दी आप वड्याइंदा। शब्द गुर हरि देवे माण, गुर इक्को इक्क जणाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण,

धुरदरगाही आप सुणाईआ। तेरा खेले खेल महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पाए आण, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। पंचम तत्त खोल्ह दुकान, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडाईआ। निरगुण सरगुण करे प्रधान, रक्त बूंद जोड़ जुड़ाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत्त कर परवान, करे खेल बेपरवाहीआ। मन मति बुध खेल महान, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, जगत तृष्ना दए मिलाईआ। करे खेल श्री भगवान, घर मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक्को इक्क अख्वाईआ। गुर शब्द सच्चा दाता, हरि शब्दी आप प्रगटाइंदा। आपे पिता आपे माता, बालक आपणी गोद बहाइंदा। आपे रखे साचा नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आप सुणाए साची गाथा, बोध अगाधा ज्ञान दृढ़ाइंदा। आपे पूजा आपे पाठा, मन्त्र नाम देउ आप अख्वाइंदा। आपे जाणे सर सरोवर तीर्थ ताटा, सर इक्को इक्क वखाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरू आप वड्याइंदा। साचा गुर शब्द रंग, रेख नज़र कोए ना आईआ। थिर घर बैठा चढ़ पलँग, पावा चूल ना कोए रखाईआ। दो जहानां वजाए मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाईआ। आदि जुगादि इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। गीत सुहागी गाए छन्द, सोहला एका ढोला सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा वेखे चाँईं चाँईंआ। चाउ घनेरा सति सतिवाद, सो पुरख निरँजण इक्क रखाइंदा। सुत दुलारे देवे दाद, गुर शब्दी नाउँ धराइंदा। आपणे विच्चों आप काढ, थिर घर दुआरे आप बहाइंदा। आदि जुगादि कराए लाड, नित नित वेख वखाइंदा। मेल मिलावा माधव माध, मिल मिल आपणी खुशी जणाइंदा। पंज तत्त ना कोए हाड, रत्ती रत्त ना कोए रखाइंदा। तार सितार ना कोए नाद, बोध अगाध भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द इक्क समझाइंदा। छोटा बाला शब्दी सुत, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी परमेश्वर अचुत्त, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। थिर घर मौली मेरी रुत्त, रुत्तड़ी तेरा रंग महकाईआ। तेरी कुक्खों प्या उठ, मोहे दुःख ना लागे राईआ। मैं निक्का बाला तेरा पुत्त, तेरी ओट इक्क तकाईआ। तेरा नूर निर्मल जोत, मेरा रंग वखाईआ। तेरा बंस चले ओत पोत, विष्न ब्रह्मा शिव मिले वड्याईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं रच रच वेखां तेरा कोट, बंक दुआरी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी मोहे वड्याईआ। सो पुरख निरँजण वड मेहरवाना, आपणी दया कमाइंदा। सुत दुलारे सति परवाना, तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देणा दाना, खाली झोली सर्ब भराइंदा। लख चुरासी कर प्रधाना, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। चारे बाणी

बोल तराना, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरा राग अल्लाइंदा। माणस मानुख चतुर सुजाना, पंज तत्त काया चोला खोज खोजाइंदा। करे खेल नौजवाना, नौ नौ आपणा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। साचा मार्ग जाए लग्ग, हरि साचा सच जणाईआ। करे खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सृष्ट सबाई वेखे जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। निरगुण नाद जाए वज्ज, दो जहानां आप सुणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, सरगुण आपणा रूप वटाईआ। शब्द सुत तेरी रखे पति, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। सरगुण मार्ग इक्को दस्स, गुर गुर बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। गुर शब्द तेरा सति पसारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, जोती जोत डगमगाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। दीआ बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अनहद नाद सच्ची धुन्कारा, आत्मक राग सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर बरखुरदारा, बाले तेरी सेव कमाइंदा। चौदां लोक हट्ट वणजारा, वस्त इक्को इक्क वखाइंदा। चौदां तबकां दए हुलारा, हुलारा आपणे हत्थ रखाइंदा। हक़ हक़ीक़त बोल नाअरा, लाशरीक आप सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे उज्यारा, गीता ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। अञ्जील कुराना दए सहारा, तीस बतीसा आपे गाइंदा। खाणी बाणी खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत अबिनाशी अचुत्त, गुर सतिगुर इक्क वड्याइंदा। शब्द गुर आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, सांतक सति सति वखाईआ। गुरमुखां देवे नाम मंत, अन्तर मन्त्र करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी घट घट रिहा समाईआ। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां बणाए बणत, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी सिफ्त सलाहीआ। शब्द गुरू वड डूँग्घा सागर, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण भाग लगाए काया गागर, आप आपणी दया कमाइंदा। नाम वणजारा बण सौदागर, साचा वणज आप वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां देवे आदर, आपणा दरस आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा खेल वखाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपारा, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लेखा जाणे तेई अवतारा, भगत अठारां कुण्डा लाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद देवणहार सच नज़ारा, मेहर नज़र आप उठाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब भेव ना आईआ। जुगा जुगन्तर करे

खेल गुपत ज़ाहरा, अंदर बाहर आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द वड्डा वड वड्याईआ। गुर शब्द वडा सूरबीर, बल आपणा आप जणाइंदा। आदि जुगादी लोकमात आए घत्त वहीर, दो जहानां पैंडा आप मुकाइंदा। नाम निराला अणयाला मारे तीर, सच निशाना आप रखाइंदा। भगत भगवन्त चोटी चढ़ के मेले आप अखीर, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। तोड़नहारा शरअ जंजीर, बन्धन बंध ना कोए पुआइंदा। वेखणहारा पीर फकीर, फिकरा आपणा नाउँ सुणाइंदा। दाता दानी गुणी गहीर, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। बाहरों दिसे पंज तत्त काया चीर, अंदर निरगुण जोती जोत जगाइंदा। जुगा जुगन्तर कटणहारा भीड़, नित नवित वेस वटाइंदा। कलम शाही लिख लिख लेखा जगत तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। बदलणहारा आप तकसीर, तालब तुलबा आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क सलाहइंदा। शब्द गुर वड सूरा सूर, सूरबीर नाउँ धराईआ। सर्ब कला हरि भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस कीता दूर, कलयुग अन्तिम दए विहाईआ। नानक निरगुण मिल्या साचा नूर, नूर नूर विच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख समरथ, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। आदि जुगादी महिमा अकथ, जुग जुग आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। नानक निरगुण सरगुण होया वस, सरगुण नानक निरगुण मेल मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी दर दुआरे साचे सद, सदा इक्को नाम लगाइंदा। दो जहानां पार हद्द, सचखण्ड दवारा सोभा पाइंदा। आपणे विच्चों आपणा नाउँ कढ्ढ, नाम सति आप वरताइंदा। सृष्ट सबाई देणी ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। आत्म परमात्म जोड़े नत्त, सोहँ ढोला इक्क पढ़ाइंदा। लख चुरासी बीजणा बीज साचे वत, अमृत बूटा आप लगाइंदा। दूई द्वैती मेटे फट, नाम पट्टी हथ्थ फड़ाइंदा। गुरदेव शब्द स्वामी मार्ग दस्स, निहकामी निहकर्मी आपणा कर्म जणाइंदा। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि आपणा पर्दा लाहइंदा। पुरख अबिनाशी गाए जस, रसना जिह्वा नानक इक्क हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करता पुरख, हरि सतिगुर आप कराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, नित नवित वेस वटाईआ। निरगुण निरगुण करे परख, सरगुण परख करे ना कोए राईआ। जिस जन कर किरपा देवे आपणा दरस, सो जन निउँ निउँ लागे पाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, दो जहानां वेख वखाईआ। नानक गोबिन्द कोई ना फरक, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। नानक बाणी पद निरबाण,

नर निरँकारा आप जणाइंदा। एकँकारा हो प्रधान, मन्त्र सतिनाम दृढ़ाइंदा। करता पुरख वडि मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, आत्म परमात्म पर्दा लाहइंदा। नाता तुट्टे जीव जहान, जीवन जुगत आप जणाइंदा। अंगद अंग कर परवान, अमरदास झोली पाइंदा। रामदास हरि मन्दिर वखाए सच मकान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। गुर अर्जन मारे अणयाला बाण, बाण निराला इक्क चलाइंदा। शब्द अनादि धुर फ़रमाण, सच संदेसा इक्क समझाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार इकवन्जा बवन्जा इकट्ठे कीते आण, गुरू ग्रन्थ गुरदेव इक्क वड्याइंदा। नानक निरगुण पारब्रह्म प्रभ अग्गे मंगे दान, आपणी झोली अग्गे डाहइंदा। गोबिन्द कहे मेरा पिता पुरख अकाल, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम साचा दान, गुर शब्दी हथ्थ फड़ाइंदा। नानक सतिगुर गुर शब्दी धार, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। रसना जिह्वा करे निरँकार, निरँकार निरँकार, अन्तर निरँकार रिहा समाईआ। गोबिन्द मेला दर दरबार, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल करे प्यार, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहानां वेख वखाईआ। दो जहानां नानक सतिगुर, गुर शब्दी शब्द जणाया। आदि जुगादी लेखा जाणे धुर धुर, लख चुरासी धुर मस्तक वेख वखाया। निरगुण निरगुण नाल जुड़ जुड़, सरगुण इक्को माण वधाया। ठाकर स्वामी जुगा जुगन्तर आवे जावे जन भगतां बौहड़ बौहड़, मिल मिल आपणा बन्धन पाया। रस वेखे मिट्ठा कौड़ कौड़, कूड़ी क्रिया दए खपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हरि जू आप सुणाया। धुर फ़रमाना कलयुग धार, हरि धरनी धरत धवल वड्याईआ। नानक निरगुण कर प्यार, पुरख अकाल रिहा जस गाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, ज्ञान गुरू समझाईआ। पुरख अकाल सब तों वसे बाहर, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। जिस दी सिफ्त करे गुरू अवतार, पीर पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। मिहबान बीदो सांझा यार, इलाही नूर नूर रुशनाईआ। जुगा जुगन्तर जुग चौकड़ी वेखे वेखणहार, वेखणहारा नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। गुरू ग्रन्थ गुर बाणी, सतिगुर गुरू नानक मोहर लगाईआ। आदि जुगादि अकथ कहाणी, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह शुकर मनाईआ। सुरत शब्द मिले सच्चा हाणी, घर साचे वज्जे वधाईआ। अमृत आत्म रस निझर मिले ठंडा पाणी, अग्नी तत्त ना लागे राईआ। आवण जावण जम्म की चुक्के काणी, जो गुर चरन ध्यान लगाईआ। हरि का खेल सदा महानी, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जन भगतां देवे इक्क निशानी, धुरदरगाही लै के आईआ। आदि निरँजण नूर नुरानी, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल बेपरवाहीआ। मोहर लाई गई लग्ग, गुर सतिगुर आप लगाइंदा। चार वरनां मार्ग दस्स, ऊँच नीच भेव चुकाइंदा। लहिणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, हथ्थो हथ्थ हट्ट आप खुल्हाइंदा। पंच विकारा पाए नथ्थ, जो जन रसना जिह्वा गाइंदा। अंदर काया मन्दिर मिले पुरख समरथ, समरथ आपणा रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म होए वस, दूजा बन्धन ना कोए रखाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया नौ खण्ड पृथ्मी होया अन्धेरा मस, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। जीआं जंतां हो गई बस, काया बसता खोल्ह ना कोए वखाइंदा। जगत तृष्ना रहे नद्ध, गुर का शब्द ना कोए सुणाइंदा। साधां सन्तां तुट्टा धीरज जत, सति सन्तोख ना कोए कमाइंदा। गुरुदुआरे ना कोए गुरमति, मनमति सर्ब कराइंदा। नानक गोबिन्द हिरदे किसे ना गया वस, लख चुरासी ख़ाली भाण्डा नज़री आइंदा। गुरू ग्रन्थ गुर जो मार्ग गया दस, कलयुग जीव राह ना कोए चलाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वसणहारा घट घट, जीव जंत वेख वखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दर दुआरे आपणे सद, सदी चौधवीं पुच्छ पुछाइंदा। कलयुग वेखो अन्तिम हद्द, हद्द हदूद इक्क समझाइंदा। चार वरन डिगे डूँग्घी खड, बांहों फड़ पार ना कोए कढाइंदा। गुरसिख गुरमुख सीस केस रहे वढ्ढ, मुच्छ दाढ़ी ना कोए रखाइंदा। गोबिन्द साबत रही ना कोई यद्द, गोबिन्द एका हिरख मनाइंदा। जिन्हां पिच्छे बाले नीहां हेठां आया दब्ब, पुरख अकाल झोली पाइंदा। सो सज्जण मैनूं गए छड्ड, मेरा संग ना कोए निभाइंदा। ख़ाली दिसण हड्ड, बिन हरि नामे तन कोए ना भाइंदा। पुरख अबिनाशी अग्गे सारे रहे दस्स, तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम खेड़ा करना भड्ड, नौ खण्ड पृथ्मी तेरा राह तकाइंदा। वेद व्यासा कहे मैं लिख लिख आया दस्स, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। ईसा कहे मैं लोकमात विच्चों आया नट्ठ, परवरदिगार तेरा अन्त राह तकाइंदा। मुहम्मद चरन दुआरे रिहा ढट्ठ, दोए दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। सच अमाम मेरा चले ना कोए वस, चौदां तबक सर्ब कुरलाइंदा। नानक गोबिन्द मार्ग दिता दस्स, पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। तुध बिन खेल ना करे कोई समरथ, कलयुग बेड़ा ना पार कराइंदा। दो जहान वेखे नट्ठ नट्ठ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग जुग चले राह जग, हरि सतिगुर आप जणाईआ। चार कुण्ट कलयुग लग्गी अग्ग, बिन हरि सके ना कोए बुझाईआ। प्रगट होए पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ रखाईआ। आपणी महिमा गाए अकथ, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। भगत भगवान मेले हस्स हस्स, निरगुण निरगुण बन्धन पाईआ। जगत विकार विच ना जाए फस, त्रैगुण पोह ना सके राईआ। सन्त सुहेले कर इकट्ठ, इक्को मन्त्र दए पढ़ाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अन्त, कलयुग हरि हरि आप कराइंदा। प्रगट हो श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार जणाइंदा। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म आप वखाइंदा। भेव ना जाणे कोई पंडत, जगत विद्या हथ्थ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुर शब्दी इक्को डंक वजाइंदा। गुर शब्दी डंक वज्जे संसार, हरि साचा आप वजाईआ। ना कोई मेटे मेटणहार, पुरख अबिनाशी खेल रचाईआ। नानक गोबिन्द करे प्यार, सति सतिवादी राह जणाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर सच विहार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ल जो होई खुआर, फड़ फड़ मार्ग दए लगाईआ। नज़री आए इक्को एकँकार, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। पुरख अकाल करन जैकार, जै जैकारा इक्क अल्लाईआ। फतेह डंका वज्जे संसार, डौरू इक्को इक्क उठाईआ। राउ रंक दए अधार, ऊँचां नीचां लए मिलाईआ। सतिजुग साचा दस्से विहार, सो पुरख निरँजण आपणी मोहर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा रंग वखाईआ। ब्राह्मण स्त्री कलयुग आशा, कूड़ी क्रिया जननी रूप वखाईआ। जिस अन्तर होए हरि प्रकाशा, मन हँकार सीस कटाईआ। निरगुण रूप साख्याता, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा दए समझाईआ। उत्तम रखे आपणी ज़ाता, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। ना कोई बणाए पिता माता, शब्दी धार धार वखाईआ। आपे जाणे आपणी गाथा, जगत कर कर थक्के पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्चा टिल्ला पर्बत दए समझाईआ। काया अंदर उच्चा टिल्ला पर्बत दिसे, घर घर विच आप बणाईआ। बजर कपाटी उत्ते वसे, थल्ले नज़र किसे ना आईआ। जगत जीव नौ दुआरे फिर फिर थक्के, साचा नूर नज़र किसे ना आईआ। जगत कतेबां पढ़ पढ़ थक्के, भेव अभेदा ना कोए खुल्लाईआ। सति सरूप नर निरँकार चार दीवारी अंदर कोए ना डक्के, फड़ बांहों कतल ना कोए कराईआ। जिस पीर पैग़म्बर गुर अवतार हुक्मे अंदर बद्धे, भगत भगवान साध सन्त आपणा हुक्म मनाईआ। तिस ब्राह्मण रूप कोई ना देवे धक्के, ब्राह्मणी मां ना कोए अख्वाईआ। नानक गोबिन्द इक्क घर इक्क पिता दे भाई सके, सज्जण इक्को नज़री आईआ। सूरा सरबंग शाह सुल्तान सचखण्ड निवासी इक्को गज्जे, गरज आपणी इक्क लगाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव फिरन भज्जे, अग्गे सीस ना कोए उठाईआ। सम्बल नगरी सच दुआर बह बह सजे, जिस गृह अंदर आपणा नूर करे रुशनाईआ। बिन तार सितारों तार अगम्मी वज्जे, सो पुरख निरँजण आप वजाईआ। निहकलंक सूरा सरबंग, दो जहनां श्री भगवाना जन भगतां फिरे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे आपणा फेरा पाईआ। लभ्भण गिआं किसे ना लभ्भे, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लख चुरासी विच्चों फड़ फड़ कढ्ढे, आप आपणा

मेल मिलाईआ। मां पित पुत्तर जिस जगत कुड़ावे छड्डे, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। सो गोबिन्द हर घट अंदर सजे, घट घट आपणा आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे फटे, दूई द्वैत दए मिटाईआ। लख चुरासी अमृत रस इक्को चट्टे, गुर गोबिन्द जाम प्याला दए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे राणी आपे राजा, आपे करे आपणा काजा, पिता पूत मात दाई दाया आप अख्वाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कहे बाणी, पुरख अकाल सदा जस गाईआ। सचखण्ड दी सच निशानी, सच सच जणाईआ। जुग जुग खेले खेल शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान ना मेटी निशानी, जिस वेले गुरू ग्रन्थ बणाईआ। जुग चौकड़ी सभदा लेखा जाणे जाण जाणी, जानणहार इक्क हो जाईआ। कलयुग अन्तिम निहकलंक महिमा महिमा अकथ आपे गाए आपणा दए ब्यानी, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। गुरू ग्रन्थ गुरबाणी पढ़ो, गुर गुर आप जणाया। नौ दुआरे तज अंदर वड़ो, घर साचा वेख वखाया। अंगद वाले मन्दिर चढ़ो, हरि मन्दिर गुर अमरदास समझाया। सतिगुर पूरे लड़ फड़ो, फड़या लड़ छुट ना जाया। त्रैगुण माया कदे ना सड़ो, अमृत रस मुख चुआया। पुरख अबिनाशी इक्को वरो, जिस मिल्या पूजा पाठ रहिण ना पाया। संसा रोग दुःख संताप सब हरो, हरि जू इक्को नज़री आया। इस गल तों मूल ना डरो, पुरख अबिनाशी क्यों आपणी सिफ्त रिहा लिखाया। नानक गोबिन्द गुरू ग्रन्थ गुरबाणी याद करो घरो घरो, घर घर विच पर्दा लाहया। कूड़ी क्रिया विच ना अड़ो, साची सिख्या इक्क समझाया। जीवत जीव जीवत मरो, मरन नेड़ कदे ना आया। सरन सरनाई साची सीस धरो, जगदीश इक्को सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी महिमा अकथ, सदा सदा सद जस गाया।

✳ १५ अस्सू २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिंघ दे गृह जंडिआला ज़िला जलन्धर ✳

आदि जुगादी ठांडा सीता, हरि ठाकर खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी इक्क अतीता, त्रैभवन वेस वटाइंदा। निरगुण निरगुण जणाए सच प्रीता, प्रीतीवान पर्दा लाहइंदा। आदि जुगादि जुग जुग जाणे आपणी रीता, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। वसणहारा धाम अनडीठा, दरगाह साची सोभा पाइंदा। भेव चुकाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। आदि जुगादी साचा सज्जण, हरि वड्डा वड वड्याईआ।

दो जहान कराए इक्को मजण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्को सर वखाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले निरगुण निराकार आए सद्दण, सति सतिवादी फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणयां होए परदे कज्जण, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप जणाईआ। साची रीत श्री भगवान, सति सतिवादी आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या आण, कलयुग निरगुण वेस वटाइंदा। लेखा जाणे सीता राम, गोपी काहन नाच नचाइंदा। पीर पैग़म्बर वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच प्रगटाइंदा। लेखा जाणे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान खोज खोजाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप वखाइंदा। साची रीती श्री भगवन्त, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। जुग चौकड़ी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। हरिजन मेले साचे सन्त, सन्त सज्जण लए उठाईआ। बोध अगाध शब्द जणाए महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। नाता जोड़े नार कन्त, कन्त सुहाग वडी वड्याईआ। शब्द जणाए मणीआं मंत, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। आपणे हथ्थ लेखा रखे अन्त, अन्त अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी चलाए राह, रैहबर आपणी दया कमाइंदा। नित नवित वेस वटा, वेस अवल्ला आप जणाइंदा। पंज तत्त काया महल्ला दए वसा, जिस गृह आपणा आसण लाइंदा। निहचल धाम अटल्ला दए सुहा, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। अज्ञान अन्धेरा दए चुका, दीआ बाती इक्क जगाइंदा। कमलापाती साचा खेल दए समझा, साची सिख्या इक्क पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी करे करतार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। लेखा जाण गुर अवतार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। नानक गोबिन्द सुण पुकार, सचखण्ड निवासी लए अंगड़ाईआ। पीर पैग़म्बर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। भगत भगवान अग्गे करन गिरयाज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। धरनी धाहां रही मार, खुल्ह्ड़े केस रही वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नेत्र रोवे सूरज चन्द सितार, मंडल मण्डप दए दुहाईआ। चारों कुण्ट रैण अन्धयार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ होया प्रधान, सच सुच्च ना कोए पढ़ाईआ। घर घर वड़या पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। गुर का शब्द ना सके कोए पहचान, निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। बत्ती दन्द बणया गाण, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। अठ सठ तीर्थ फिरन अञ्याण, आत्म सरोवर नावण कोए ना जाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मद्व दीपक रहे बाल, घर मन्दिर निरगुण जोत करे ना कोए रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया आसा तृष्ना बणया पीण

१०८६ १२

खाण, सति सन्तोख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। कलयुग वेखे वेखणहारा, बेअन्त फेरा पाइंदा। सृष्ट सबाई धूआँधारा, नूर नुराना चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। लख चुरासी लगा अखाड़ा, ज़ात पात नाच नचाइंदा। दीन मज़्ब मंगण वाड़ा, पुरख अबिनाशी दिस किसे ना आइंदा। ग़रीब निमाणे पारब्रह्म अग्गे कढ्ढण हाढ़ा, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। त्रैगुण माया लग्गी तत्ती हाढ़ा, अग्नी तत्त ना कोए बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप धराइंदा। साचा वेस करे भगवान, आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर नव नौ आपे खोज खोजाईआ। चार चार जाणे सच निशान, पंचम पंचम पंचम पर्दा लाहीआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणी कल वरताईआ। जोधा सूर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। आदि जुगादि नौजवान, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल करे जग, जगजीवण दाता दया कमाइंदा। कलयुग मेटे लग्गी अग्ग, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। सन्त सुहेले साचे सद, अक्खर वक्खर नाम पढ़ाइंदा। दरस कराए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा मेल मिलाइंदा। कूड़ कुड़यारा पार हद्द, सच सुच्च नाम दृढ़ाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आप आपणा बन्धन पाइंदा। नाम निशाना देवे गड्ड, श्री भगवान आप झुलाइंदा। जन भगतां करे पक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग मार्ग देवे दस्स, सोहँ अक्खर इक्क समझाइंदा। साचा नाम अमृत रस, रस रसना सर्ब मिटाइंदा। दरस कराए हस्स हस्स, अंदर बाहर गुपत ज़ाहर खोज खोजाइंदा। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी मस्स, जगत उजाला इक्क वखाइंदा। सृष्ट सबाई देवे धीरज जत, सति सन्तोख झोली पाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त रत्त सुकाइंदा। आत्म परमात्म देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। सर्ब जीआं जाणे मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग सति चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। लेखा जाणे तत्त अठ, अप तेज वाए पृथमी आकाश, मन मति बुध खोज खोजाइंदा। निरगुण रूप हो प्रगट, नौ खण्ड पृथमी नौ दर वेख वखाइंदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण साचा खोल्हे इक्को हट्ट, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। गुरसिखां अंदर आपे वस, आप आपणा भेव चुकाइंदा। बिन रसना जिह्वा गाए जस, नाद अनादी धुंन सुणाइंदा। तीर अणयाला मारे कस, मन का मणका आप भुआइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया करे भट्ठ, भट्ठ खेड़ा आप वखाइंदा। उलटी गेड़नहारा लट्ठ, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थ, समरथ पुरख दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप जणाइंदा। साची रीती सतिजुग

धार, सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। हँ ब्रह्म कर प्यार, आत्म परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधार, ईश जीव करे कुड़माईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। नर निरँकारा वसे सब तों बाहर, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। तत्तव तत्त करे विहार, बिवहारी आपणी खेल कराईआ। भगत भगवन्त कर प्यार, दर घर मेला लए मिलाईआ। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। सज्जण सुहेला एकँकार, दूजा संगी नज़र कोए ना आईआ। आण कलयुग भेख पखण्डा करे खुआर, आत्म रंडी रहिण ना पाईआ। सच सुगंधी आवे विच संसार, नव नौ चार दए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगत आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगत आपणी हथ्थ समरथ, दूजा घट ना कोए रखाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। चौदां लोकां पाए नथ्थ, चौदां तबकां डेरा ढाहइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर एका घर लए सद्द, दीन मज़्हब ना कोए वखाइंदा। ज़ात पात जाए लद, सब दे सिर ते भार चुकाइंदा। कलयुग पार किनार होवे हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। सतिजुग सच्चा धरत मात दी गोदी बहे सज, हरि सज्जण आप बहाइंदा। दो जहानां एका डंका जाए वज्ज, नर निरँकारा आप वजाइंदा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां जन भगतां पर्दा देवे कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लख चुरासी जो घड़या सो रिहा भज्ज, घड़न भन्नणहार आपणा खेल आप वखाइंदा। पंज तत्त काया चोला सब दा जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। मन वासना रिहा नच्च, मति मतवाली संग रखाइंदा। सतिगुर का शब्द ना जाणे सच्च, कूड़ी क्रिया मोह वधाइंदा। अन्तिम कलयुग माया जाए मच्च, पंज तत्त हड्डीआं बालण रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग चौकड़ी साचा राणा, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। कलयुग देवे धुर फ़रमाना, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए वैराना, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म भुलया गाणा, रसना जिह्वा रही कुरलाईआ। सति सति ना मिल्या पीणा खाणा, तृष्ना भुख ना कोए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रीती आपणी इक्क रखाईआ। साची रीती श्री भगवान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त चलाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाइंदा। त्रैगुण माया देवे दान, पंचम झोली आप भराइंदा। लख चुरासी खेल महान, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। चारे खाणी कर प्रधान, चारे बाणी रंग रंगाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी बोल ज़बान, ज़िमीं असमान खोज खोजाइंदा। दीन मज़्हब रख ईमान, अमन आपणा इक्क समझाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत मेल पुराण, पुराण प्राणी आप वखाइंदा। दस अठ भेव महान, अठ

दस गीता ज्ञान दृढ़ाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। तीस बतीसा एका गाण, अञ्जील कुराना वंड वंडाइंदा। मुकामे हक़ नौजवान, लाशरीक खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण शब्द अगम्मी इक्क धुन्कान, निरगुण सरगुण आप वजाइंदा। सच संदेसा देवे एका कान, बिन कन्नां आप सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होए महांबली बलवान, बल आपणा आप जणाइंदा। निहकलंक नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सतिजुग मार्ग लावे आण, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाण, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। बणे विचोला श्री भगवान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। भाग लगाए काया सच मकान, हरि मन्दिर इक्को रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग रीती आप चलाइंदा। कलयुग चले साची रीत, सतिजुग साचे माण दिवाईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुक्के मन्दिर मसीत, मुल्ला शेख़ कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी सोवे दे कर पीठ, आपणी करवट ना लए बदलाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन सुणाए इक्को गीत, साचा ढोला एका गाईआ। आत्म परमात्म करे प्रीत, परम पुरख हुक्म मनाईआ। लेखा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को गीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप जणाईआ। साचा राह लग्गे मात, लग्ग मातर ना कोए वखाइंदा। लख चुरासी बंधे नात, नाता कोए ना तोड़ तुड़ाइंदा। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए एका घाट, पत्तण इक्को नज़री आइंदा। सृष्ट सबाई माई बाप, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। लहिणा देणा मेट कलयुग अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक्को पूजा पाठ, मन्त्र आपणा नाम वड्याइंदा। सति सतिवादी खोल्हे हाट, बण वणजारा सेव कमाइंदा। भगत भगवन्त होवे दास, दासी आपणा रूप वटाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गगन मंडल खोज खोजाइंदा। गुरमुख अंदर कर कर वास, दर घर साचा आप सुहाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश आपणा निरगुण लेखा जाण पवण स्वास, पवण पवणी डेरा ढाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह चलाए भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सीस झुकायण, सजदा इक्को इक्क कराईआ। नाता तुट्टे अञ्जील कुरान, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। सोहँ ढोला सारे गाण, गा गा आपणा शुकर मनाईआ। नज़री आए इक्को राम, घट घट रमिआ सर्ब ठाईंआ। दरस दिखाए सच्चा काहन, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। ईसा मूसा सच पैग़ाम देवे आण, नबी रसूल करे पढ़ाईआ। मुहम्मद दस्से इक्क ईमान, एका घर वज्जे वधाईआ। नानक गोबिन्द शुकर मनाण, संसा कोए रहिण ना पाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, इक्क इकल्ला

साचा माहीआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्से आण, निहकलंक वडी वड्याईआ। राज राजान शाह सुल्तान चरनी डिगण आण, सीस ताज ना कोए रखाईआ। चरन धूढ़ी मंगण दान, मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। बाली बुध बण अंञाण, साची सुध ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग रीती आप चलाईआ। साची रीती सच सुल्तान, सचखण्ड निवासी आप चलाइंदा। थिर घर वसे नौजवान, नौबत आपणे नाम सुणाइंदा। सुन्न अगम्मी खेल महान, धूआँधार पर्दा लाहइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बाल अञ्याण, फड़ बांहों आप उठाइंदा। करोड़ तेतीसा देवे ज्ञान, सुरपति इन्द आप पढ़ाइंदा। त्रैगुण माया तोड़े माण, पंज तत्त अभिमान ना कोए जणाइंदा। लख चुरासी कर पहचान, गुरमुख सज्जण आप जगाइंदा। गुरसिखां देवे इक्क ध्यान, चरन कँवल समझाइंदा। सन्त कन्त मिले आण, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। भगत भगवन्त हो प्रधान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। सोहँ ढोला सारे गाण, गावणहार आप जणाइंदा। पतित पुनीत सर्ब हो जाण, पापी रूप ना कोए वटाइंदा। जूठ झूठ मिटे निशान, सच सुच्च आप जणाइंदा। आत्म परमात्म मिले आण, दूई द्वैती पन्ध मुकाइंदा। सति सतिवादी सति झुलाए निशान, दो जहानां आप उठाइंदा । तेई अवतार करन ध्यान, निउँ निउँ चरन ध्यान लगाइंदा। भगत अठारां बिन रसना जिह्वा गाण, पीर पैग़म्बर सिफ्त सालाहइंदा। नानक गोबिन्द खेल

१०६० महान, हरि ख़ालक ख़लक रूप वेख वखाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। सतिजुग साची १०६०

सब नूं मन्नणी पए आण, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग रीती आपणे

१२ हथ्थ चलाइंदा। जुग रीती हथ्थ करे करतार, कुदरत कादर खेल वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग उतरे पार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ज़िमीं असमान हाहाकार, मंडल मण्डप देण दुहाईआ। रवि ससि करन पुकार नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, अग्नी तत्त तत्त जलाईआ। विष्नूं खाली दिसे भण्डार, ब्रह्मे ब्रह्म ना कोए प्यार, शंकर त्रिसूल रिहा सुटाईआ। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। सेवा करदे रहे जुग चौकड़ी चार, चार चार रंग रंगाईआ। अन्तिम सारे गए हार, बलहीण देण दुहाईआ। साडी साहिब सुण पुकार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आई अन्तिम तेरी वार, तुध बिन अवर ना कोए सहार, जिउँ भावे तिउँ लैणा तार, समरथ पुरख तेरी वड्याईआ। तेरा दर ठांडा दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वसाउणा साचा घर घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा । कलयुग खेल करे न्यारा, निराकारा वेस वटाइंदा। त्रैगुण सदा वसे बाहरा, त्रैभवण धनी आपणा भेव जणाइंदा। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख ना कोए समझाइंदा। गुर

अवतार पीर पैग़म्बर सुणे पुकारा, सचखण्ड वासी दया कमाइंदा। भगत भगवन्त दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लख चुरासी पावे सारा, घट घट अंदर खोज खोजाइंदा। निरगुण निरगुण लै अवतारा, मात पित ना कोए बणाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्डा आप चमकाइंदा। दो जहानां करे खुआरा, कलयुग खुआरी मेट मिटाइंदा। तिक्खा रखे इक्को आरा, दो जहानां चीर पुवाइंदा। लहिणा देणा जाणे चंगा माढ़ा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया लग्गा अखाड़ा, धीआं भैणां नाच नचाइंदा। पावे सार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त जिस दीआं गाउँदे आए वारां, चार युग सिफ्ती सिफ्त सालाहइंदा। खाणी बाणी अञ्जील कुरानी अक्खर अक्खर जिस दा मिल्या सहारा, वक्खर वक्खर रूप वटाइंदा। महांबली उतरे आपणी धारा, धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। साचा मार्ग लाए विच संसारा, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी जीव जंत विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैग़म्बर सोहँ शब्द करन जै जैकारा, जै जैकार सर्ब अल्हाइंदा। तेरी कुदरत तेरा खेल न्यारा, कादर करीम रहीम रहिमत रहिमान आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग ला, सति सतिवादी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण बणे मलाह, साचा बेड़ा आप चलाईआ। एका नाउँ दए पढ़ा, नव खण्ड वज्जे वधाईआ। एका मन्दिर दए वखा, गुर इष्ट देव मनाईआ। सृष्ट सबाई भाण्डा भरम दए भन्ना, भउ आपणा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी करनेयोग, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। एका मेले धुर संजोग, बण संजोगी वेस वटाइंदा। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां तबक पर्दा लाहइंदा। दो जहान सुणाए इक्क सलोक, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। आत्म परमात्म देवे मोख, मुक्ती चरनां हेठ दबाइंदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता दुःख ना कोए रखाइंदा। काया वेखे किला कोट, गुरमुख बंक इक्क वड्याइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। सति पुरख निरँजण दस्से साची ओट, पुरख अकाल इष्ट बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग मार्ग लाए भगवान, श्री भगवान आपणी दया कमाईआ। सति सतिवादी झुलाए सच निशान, सति पुरख निरँजण शहिनशाहीआ। गुरमुख गुरसिख गुर गुर देवे ज्ञान, अन्तर मन्त्र कर पढ़ाईआ। सन्त सज्जण कराए चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ धन्दे लाईआ। भगत भगवन्त मिले आण, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टे जीव जहान, जीवण जुगत दए जणाईआ। दिवस रैण एको गाण, अठ्ठे पहर नाद धुंन शनवाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, अंमिउँ रस इक्क प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१०६१ १२

आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए लगाईआ। साचा मार्ग सतिजुग, जुग करता आप लगाइंदा। कलयुग औध गई पुग्ग, वेला अन्तिम नेड़े आइंदा। पारब्रह्म निरगुण रूप सरगुण अंदर जो बैठा छुप, प्रगट आपणा खेल कराइंदा। आदि जुगादि रिहा चुप्प, गुर अवतार सेव लगाइंदा। कलयुग अन्तिम जाए उठ, दीनन आपणी दया कमाइंदा। निर्मल नूर जोत प्रकाश, प्रकाश जोत आप वखाइंदा। खेले खेल खेल तमाश, दो जहानां वेख वखाइंदा। जन भगतां पति लए राख, रक्षक आपणी दया कमाइंदा। बोध अगाधी शब्द अगम्मी रिहा भाख, भाख्या आपणी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग रीती आप जणाइंदा। जुग रीती पारब्रह्म, ब्रह्म आपणा रूप वखाईआ। सतिजुग जणाए साचा धर्म, धर्मी धर्म वंड वंडाईआ। लख चुरासी जाणे कर्म, निहकर्मी फेरा पाईआ। नाता तुट्टे बरन वरन, वरन गोत ना कोए वड्याईआ। सच दुआरा सतिगुर चरन, दूजी मिले ना कोए सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म कोलों सारे डरन, दर बैठे सीस झुकाईआ। सोहँ ढोला जगत विचोला निष्अक्खर वक्खर सारे पढ़ण, पढ़ पढ़ रहे सुणाईआ। करता पुरख करनी करन, जुग जुग कीमत आपे पाईआ। आदि जुगादी आए तरनी तरन, तारनहारा इक्क रघुराईआ। लख चुरासी घाड़न घड़न, घड़ घड़ वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप उपाईआ।
१०६२ साचा मार्ग आदि अन्त, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। निरगुण सरगुण बणाए बणत, कर किरपा खेल कराइंदा। अन्तर आत्म इक्को मंत, अन्तर अन्तर आप दृढ़ाइंदा। हरिजन विरला जाणे सन्त, जिस सतिगुर बूझ बुझाइंदा। भेव ना पाए कोई पंडत, पढ़यां हथ्थ किसे ना आइंदा। भरमे भुल्ले जीव जंत, जागरत जोत ना कोए जगाइंदा। गुरमुख विरले मेला नार कन्त, हरि कन्त सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, चढ़या रंग उतर ना जाइंदा। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। नाता तुट्टे दोज़ख़ जन्नत, बहश्त स्वर्ग आस ना कोए कराइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा खोज खोजाइंदा। जिस जन देवे आपणा दरस, हरि दरसी मेल मिलाइंदा। एथे ओथे करे तरस, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत मिलाए फेर ना आए परत, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। साचे भगतां अमृत मेघ देवे बरस, मेघ मेघ रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वड़याई धरनी धरत, धवल आपणे रंग रंगाइंदा।

✳ १५ अस्सू २०१६ बिक्रमी महिंगा सिँघ दे गृह पिण्ड पबम ✳

हरि डंका नाम मृदंग, मर्द मर्दाना आप वजाइंदा। शहिनशाह सूरा सरबंग, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। साचे असव कस तंग, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लो आपे लँघ, लोक परलोक खोज खोजाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगतन रखे सदा संग, सगला संग आप निभाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गए लँघ, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। सृष्ट सबाई दिसे भेख पखण्ड, परम पुरख ना कोए मनाइंदा। आत्म अन्तर ना कोए अनन्द, रसना जिह्वा सर्ब हल्काइंदा। जगत विकारा वेखे तेज चण्ड प्रचण्ड, सति खण्ड खण्ड खण्ड कराइंदा। बिन परमात्म आत्म होई रंड, नर हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। साचा भेव ज़िमीं असमान, ज़र्रा ज़र्रा आप जणाईआ। लेखा जाण दो जहान, दोए दोए धार वेख वखाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, सच मार्ग इक्को लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए जणाईआ। साची करनी सच घर, हरि साचा सच जणाइंदा। आदि जुगादी देवणहारा वर, वर दाता खेल कराइंदा। पुरख अबिनाशी नरायण नर, नर आपणा नाउँ धराइंदा। आदि जुगादि लख चुरासी घाड़न घड़, नित नवित वेख वखाइंदा। सच दुआर हरि निरँकार निरगुण रूप आपे खड़, सरगुण आपणा नाम दृढ़ाइंदा। महल अटल उच्च मुनार बैठा चढ़, जोती जाता पुरख बिधाता जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। वेखणहारा खेल तमाशा, लोआं पुरीआं पावे रासा, गोपी काहन नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी धुर फ़रमाना, धुरदरगाही आप सुणाईआ। भूपत भूप राज राजाना, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण हो प्रधाना, सच प्रधानगी इक्क कमाईआ। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। सृष्ट सबाई जणाएं इक्को गाणा, गा गा अक्खर आप पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम मन्नणा सब ने भाणा, भाणे अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर रिहा रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा माहीआ। माहीगीर आया माही, बेपरवाह आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम मेटे कूड़ी शाही, शहिनशाह एका हुक्म जणाइंदा। गुरमुख वेखे भुल्ले राही, फड़ बांहों मार्ग पाइंदा। एका मन्त्र रिहा दृढ़ाई, दृढ़ निशचा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी भगत भगवान, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। मुरीद मुर्शद लए भाल, दीद

ईद चन्द चढ़ाईआ। लेखा जाण ज़िमीं असमान, काया कुरा खोज खोजाईआ। सच महिराबे बैठे आण, महबूब बेपरवाहीआ। जिस दी सिफ्त करे अञ्जील कुरान, तीस बतीसा ढोला गाईआ। सो साहिब प्रगट होवे मिहबान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। चौदां तबकां वेखे आण, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। चौदस चन्द चढ़े ना कोए जहान, जगत अन्धेरा इक्को छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करने आया, करनहार करतारा। साचा हुक्म सुनावण आया, धुरदरगाही हो उज्यारा। साचा मन्त्र पढ़ावण आया, आत्म परमात्म इक्क जैकारा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मिलावण आया, दीन मज़्ब करे पार किनारा। सही सलामत इक्को नूर रिहा दरसाया, जन्म मरन ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाही बेपरवाह, हरि आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, साची सेवा आप कमाइंदा। चौथे जुग फेरा पा, चार वरन डेरा ढाहइंदा। चारे खाणी लेखा दए मुका, चारे बाणी रंग रंगाइंदा। चार कुण्टां डंका दए वजा, चार यारी आप उठाइंदा। चारे वेद लेखा झोली देवे पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी चार चार, हरि साचा आप कराईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। कलयुग अन्तिम करे खुआर, खुआरी सब दी दए वखाईआ। गुरसिख गुर गुर लए उठाल, हरि हरि आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख चले नाल नाल, चाल निराली इक्क जणाईआ। सन्त सुहेले साचे लाल, सो पुरख निरँजण आपणी गोद बहाईआ। भगत भगवान कर परवान, नाम परवाना हथ्थ उठाईआ। कलयुग दा अन्त निशान, सतिगुर साचा आप प्रगटाईआ। निहकलंक बली बलवान, बली आपणी आप चढ़ाईआ। गोबिन्द लेखा विच जहान, जीवन जुगत दए वड्याईआ। सति धरनी देवे दान, धरत धवल खुशी मनाईआ। प्रभ मिल्या सच्चा काहन, घर बंसरी नाम सुणाईआ। लेखा चुका सीआ राम, सीता सुरती लए प्रनाईआ। निरगुण नूर कराए साचा भान, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल कर कर, करनी आपणी आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण रूप धर धर, धरत धवल वेख वखाइंदा। अक्खर वक्खर आपे पढ़ पढ़, बोध अगाध ज्ञान दृढ़ाइंदा। सच महल्ले आपे चढ़ चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर फड़ फड़, फड़ बांहों हुक्म मनाइंदा। लेखा जाणे सीस धड़ धड़, निधड़क आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल अन्तिम कल, हरि करता आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी अछल अछल, वल छल धारी भेव ना राईआ। निरगुण जोती बैठा रल, शब्दी आपणा डंक वजाईआ। सच

संदेसा साचा घल, गुरमुख सज्जण लए जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चलावणहारा हल, तिक्खा फाला मुख कराईआ। इक्को धार वहाए जल थल, जल थल महीअल आपणा रूप वटाईआ। पावे सार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल, समुंद सागर खोज खोजाईआ। लख चुरासी काया लग्गा वेखे फल, पत डाली पर्दा लाहीआ। घट घट अंदर जीव जंत साध सन्त वेखे कवण दुआरे दीपक जोती रिहा बल, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कवण दुआरा बैठे मल, हरि जू भेव अभेद चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। शब्दी सुत सच सरकार, धुर फ़रमाना हुक्म जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। त्रैगुण धाहां रही मार, सति सन्तोख ना कोए दृढ़ाइंदा। पंज तत्त होया खुआर, जगत खुआरी ना कोए मिटाइंदा। लख चुरासी करे गिरयाज़ार, गिरयाज़ारी सब दी आप वखाइंदा। गुर अवतार गए हार, हरि का रूप नज़र किसे ना आइंदा। पीर पैग़म्बर होए शर्मसार, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। महबूब नज़र ना आए सांझा यार, हुज़रा हक़ ना कोए वखाइंदा। जल्वा नूर ना कोए उज्यार, हज़रत फेरा ना कोए पाइंदा। साची रबाब अहिबाब ना वजाए कोए सतार, तन्दी तन्द ना कोए हलाइंदा। मुकामे हक़ ना परवरदिगार, मुख नकाब पड़दा ना कोए उठाइंदा। रातीं सुत्तयां
१०६५ ना कोए दीदार, दिने नज़र कोए ना आइंदा। सदी चौधवीं होण बेहाल, बिहबल संग ना कोए निभाइंदा। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा डंक वजाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर घट घट वासी चली अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाइंदा। सन्त सुहेले गुरमुख गुर गुर लए भाल, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। कलयुग अन्तिम निरगुण रूप बण दलाल, शब्दी गुर सेव कमाइंदा। लेखा जाण हक़ हलाल, मुरीद मुर्शद आप उठाइंदा। साचा मार्ग इक्क सिखाल, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आप पढ़ाइंदा। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, मस्जिद शिवदुआला मट्ठ इक्को रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म सच संदेसा, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। आदि जुगादी नर नरेशा, निरगुण दाता सच्चा माहीआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी रूप अनूप धारे भेखा, रंग नज़र कोए ना आईआ। वसणहारा देस परदेसा, दो जहानां खोज खोजाईआ। पावे सार ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, गणपति आपणा हुक्म सुणाईआ। चतुर्भुज इक्क आदेसा, आदि शक्ति सीस झुकाईआ। निरगुण सरगुण निज नेत्र एका पेखा, पेखत पेखत खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपार, आदि अन्त कराइंदा। कलयुग कूक सुण पुकार,

आपणी अक्ख आप खुल्हाइंदा। भगत रोवण ज़ारो ज़ार, सन्तन धीर ना कोए धराइंदा। गुरमुख राह तक्कण सांझे यार, यार नज़र कोए ना आइंदा। गुरसिख चरन धूढ़ी मंगण छार, ख़ाक मस्तक टिक्का कोए ना लाइंदा। रसना पढ़ पढ़ थक्का संसार, बण पाँधी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कलम शाही गई हार, मेरा नूर ना कोए वखाइंदा। वरन बरन रोवण ज़ारो ज़ार, साची सरन ना कोए जणाइंदा। रवि ससि ना कोए उज्यार, चन्द नूर ना डगमगाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार प्रभ चरन दुआरे बह बह करन विचार, विचार विच हरि किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दे हुक्मे अंदर कट के आए वगार, सो साहिब खेल कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे बेपरवाह परवरदिगार, पर्दानसी आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जिस नूं मन्नदे रहे एकँकार, सो अकल कल आपणा खेल वखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे राम रमिआ सर्ब संसार, सो रमइया वेस वटाइंदा। जिस नूं मन्नदे रहे काहन बंसरी सुणाए नाम धुन्कार, धुंन आत्मक राग अल्हाइंदा। जिस नूं मन्नदे रहे सचखण्ड वसे सच दरबार, निरगुण जोत डगमगाइंदा। सो साहिब कलयुग अन्तिम प्रगट होया आण, परम पुरख वेस वटाइंदा। करे खेल नौजवान, बिरध बाल ना रूप धराइंदा। सब नूं मन्नणी पए आण, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। ना कोए चिल्ला तीर कमान, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाइंदा। एका हुक्म तीर निशान, अणयाला आप चलाइंदा। राज राजान शाह सुल्तान चरनी डिगण आण, सीस जगदीस अग्गे ना कोए उठाइंदा। लेखा जाणे पवण मसाण, पवण पवणी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बल आप रखाइंदा। साचा बल आपे रख, बल बावण लए जगाईआ। गुरमुख गुर गुर कर प्रतख, परीख्या दए समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रख्या वक्ख, कलयुग अन्तिम मेल मिलाईआ। सचखण्ड दा सच्चा हट्ट, लोकमात खुल्हाईआ। वस्त अमोलक इक्को घत्त, हरि नाम रिहा वरताईआ। भगत भगवान मार्ग दस्स, रैहबर इक्को राह वखाईआ। दो जहानां पन्ध मुकाया नस्स नस्स, बण पाँधी राही फेरा पाईआ। जन भगतां अंदर हरि जू वस, हस्स हस्स आपणी खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम गावे जस, आपणा लेखा लिख्त वखाईआ। गा जस करे ना बस, बसता सब दा दए बंधाईआ। निरगुण निराकार निरँकार अन्तिम गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क आपणी खुशी मनाईआ। थिर घर साचे दए रख, हरि सज्जण सच्चा माहीआ। दीन दयाल करे पक्ख, परम पुरख वेख वखाईआ। फड़ बांहों पुरख समरथ, आपणी उँगली लए लगाईआ। सचखण्ड दवारे जाए वस, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, गुरमुख साचे विच मिलाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, आसा आपणे विच खपाईआ। आत्म परमात्म सेज सुहञ्जणी इक्को भोग बलास, भस्मड़ रूप ना कोए वटाईआ। करे खेल शहिनशाह शाहो शाबाश, शाह पातशाह बेपरवाहीआ।

गुर अवतार पीर पैग़म्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी प्रगटाउँदा रिहा निक्की शाख़, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाईआ। पीर पैग़म्बर देंदा रिहा दात, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। सिफ्त सालाही सच्ची दस्से ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाईआ। निक्के निक्के बाले गुर अवतार पीर पैग़म्बर हथ्थ विच फड़ा कलम दवात, आपणी सिफ्त सिफ्त समझाईआ। अंदर वेखण मार झात, झाकी आपणी दए दरसाईआ। प्रभ नज़री आए पाकी पाक, निर्मल नूर नूर रुशनाईआ। बंक दुआरी सोहे साची खाट, आत्म सेजा डेरा लाईआ। नाम निधान सुणाए गाथ, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। चरनी डिगण त्रिलोकी नाथ, कोटन कोटि सीस झुकाईआ। कोटन कोटि राम बेटे दसराथ, दर घर बैठे अलख जगाईआ। करे खेल पुरख समराथ, समरथ आपणा नाउँ धराईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। वेखे खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। सृष्ट सबाई लग्गा फट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्थर बैठी घत्त, यारड़ा सत्थर ना कोए हंढाईआ। नाड़ बहत्तर उब्बले रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। फिरे दरोही मनमति, मन वासना होए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करने आया, कल कल्की लै अवतार। त्रैगण माया मेटण आया, महांबली हो त्यार। सृष्ट सबाई वेखण आया, निरगुण सरगुण पावे सार। सृष्ट सबाई दृष्टी इक्क खुलावण आया, इष्ट जणाए इक्क एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच विहार। सच विहारा सतिगुर मीता, मित्र प्यारा आप कराइंदा। जन भगता खेल वखाए इक्क अनडीठा, लख चुरासी गूढ़ी नींद सुवाइंदा। गुरमुख विरले नाम निधान पीता, अमृत रस इक्क चखाइंदा। लख चुरासी त्रैगुण तत्त तपे अंगीठा, सांतक सति ना कोए कराइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता पीसण पीसा, साची वस्त ना कोए वखाइंदा। कलयुग अन्तिम राज राजाना शाह सुतलानां खाली करे खीसा, दर दर घर घर इक्को अलख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भगत भगवान आप मिलाइंदा।

✳ १६ अस्सू २०१६ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह चीमां ज़िला जलन्धर ✳

परवरदिगार लाशरीक, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी मुर्शद मुरीद रफ़ीक, सही सलामत तेरी वड्याईआ। दो जहानां चौदां तबक वेखणहारा चांदनी तारीक, अन्ध अन्धेरा रिहा समाईआ। पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुसायक तेरी करदे रहे उडीक, नेत्र ज़िमीं असमान उठाईआ। कलमा नबी रसूल दस्सदे रहे ठीक, ठीकर आपणा तन गंवाईआ। नूर इलाही

निराकार वसे सदा नज़दीक, निज घर बैठा डेरा लाईआ। सति सतिवादी पारब्रह्म बीठलो बीठ, बेपरवाह भेव ना राईआ। ऊँचो ऊँच नीकन नीक, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साचा मीत, मित्र प्यारा मिले माहीआ। आत्म अन्तर रूह बुत्त जणाए सच प्रीत, प्रीतीवान वड वड्याईआ। करे खेल आप अनडीठ, चौदां विद्या भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। लाशरीक तेरा सहारा, मेहरवान तेरी वड्याईआ। बेऐब तेरा किनारा, कादर नज़र किसे ना आईआ। पीर पैग़म्बर मंगदे रहे भिखारा, दर दरवेश अलख जगाईआ। कलमा नबी इक्क उच्चारा, कायनात नात सुणाईआ। मिहबान बीदो बोल जैकारा, जैकार करे लोकाईआ। सच तौफ़ीक तोहे परवरदिगारा, लासानी तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल न्यारा, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, दर बैठे सीस झुकाईआ। काला सूसा तुट्टा शृंगारा, अल्फी नज़र कोए ना आईआ। मस्ती सूफ़ी ना कोए विचारा, महिरूम दिसे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ सच्ची वड्याईआ। परवरदिगार सच सुल्तान, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। धुर दरगाही दयावान, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। ज़िमीं असमान सर्ब कुरलाण, नैणां नीर वहाईआ। तोबा तोबा सारे कह कह मुख शरमाण, अल्ला राणी घूँगट मुख पाईआ।
१०६८ दुआ सलाम करे ना कोए अञ्याण, अलैकम रूप ना कोए वटाईआ। सजदा झुके ना कोए मेहरवान, सरन मिले ना कोए १०६८
सरनाईआ। नाता तुट्टा अञ्जील कुरान, तीस बतीसा ना कोए वड्याईआ। अल्फ ये खाली दिसे मकान, अन्तिम मकबरा
१२ रिहा जणाईआ। तेरे बरदे बणे गुलाम, पीर पैग़म्बर बैठे माण गंवाईआ। तूं साहिब सच्चा अमाम, तेरे हथ्थ सच्ची शहिनशाहीआ। १२
कलयुग अन्तिम विगड़ गया निज़ाम, नौबत नाम ना कोए वजाईआ। घर घर दिसे कूड़ी क्रिया हराम, महिरम नज़र कोए ना आईआ। तेरा नाउँ निरँकार भुल्लया कलाम, कलमा नबी ना कोए वड्याईआ। साचा नूर ना कोए भान, चौदस चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चौदां तबक दिसण बेईमान, शरअ शरीअत पई लड़ाईआ। सच संदेसा कोए ना सुणे कान, जूठ झूठ दए दुहाईआ। अन्तिम दिसे फनाह मकान, फातया सब दा नज़री आईआ। नेत्र रोवण बेज़बान, ज़िबा छुरी रहे चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सरन मिले वड्याईआ। पीर पैग़म्बर नेत्र रो, नैणां नीर वहाया। तेरे चरन कँवल ना सके छोह, छोहरे बांके धीर ना कोए धराया। दरगाह साची मिले ना ढोआ ढो, दर दरवेश बैठे अलख जगाया। तुध बिन नज़र ना आए को, उच्ची कूक कूक अल्लाया। परवरदिगार बेपरवाह तेरा तुट्टा मोह, मोह मुहब्बत जगत विच फसाया। अल्ला राणी खुली मींडी रही खोह, सीस पट्टी ना कोए गुदाया । मैहन्दी लाल रंग ना वेखे को, रंगण

एका नाम ना कोए रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाया। पीर पैग़म्बर दोए जोड़, सजदा सीस झुकाईआ। शाह सवार जाईं बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी रहे कुरलाईआ। उम्मत उम्मती बूटा होया कौड़, रस मिट्ठा ना कोए रखाईआ। चौदां तबकां दिसे लग्गा पौड़, डण्डा कोए रहिण ना पाईआ। मुरीद मुर्शद वेखी करके ग़ौर, मेहर नज़र बेनज़ीर इक्क उठाईआ। आब हयात देणा करबला लग्गी औड़, औकड़ अन्तिम पूर कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख्या दौड़ दौड़, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। तेरा असव मारे इक्को पौड़, चौथे जुग डेरा ढाहीआ। साहिब सुल्तान हथ्थ तेरे डोर, जिउँ भावे लवें चलाईआ। तेरे बरदे तेरे दर खाली देणा ना मोड़, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अन्त अन्त प्रभ तेरी लोड़, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। निरगुण सरगुण जाणा ना छोड़, बन्धन आपणा एका पाईआ। निक्के बाले छोटे छोहर, शरअ हथ्थ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दर तेरे इक्क सलाम, दूसर नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादी इक्को राम, रहीम रहिमान दया कमाईआ। जुगा जुगन्तर साचा काहन, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। दो जहानां दए कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। साची दरगाह सच अमाम, सिर अमामां डेरा लाईआ। मन्त्र देवणहारा सतिनाम, नानक नानकि नानकु करे पढ़ाईआ। गोबिन्द
१०६६ मेला चरन ध्यान, गुर चेला रूप वटाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा सच निशान, सच टिकाणा इक्क जणाईआ। सतिजुग १०६६
१२ त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी वेखे विच जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। पीर पैग़म्बर देवणहारा दान, दाता १२
दानी नाउँ धराईआ। सेज सुहञ्जणी करें बिसराम, आर्शम आपणा ना किसे वखाईआ। जन्नत बहश्त सर्ब कुरलाण, स्वर्ग नैणां नीर वहाईआ। तुध बिन थिर कोए ना दिसे मकान, मकबरा सर्ब नज़री आईआ। शाह पातशाह श्री भगवान, शहिनशाह तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा मंग मंगाईआ। दर तेरा इक्को ल्या मंग, मंगत बैठे डेरा लाईआ। साहिब सतिगुर चाढ़े रंग, रंग उतर कदे ना जाईआ। नौबत नाम वज्जे मृदंग, दो जहानां करे शनवाईआ। लख चुरासी इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। लेखा जाण खण्ड ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड करे पढ़ाईआ। भेव चुकावे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज खोज खोजाईआ। लेखा जाणे नौ खण्ड, सत्त दीप वेस वटाईआ। नाता तोड़े लख चुरासी नार रंड, दुहागण कोए रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी सुणाए साचा छन्द, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल तेरी इक्को इक्क सरनाईआ। नाम निधाना साचा वंड, वरभण्ड दए दुहाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार पै जाए ठंड, दीन मज़्ब नज़र कोए ना आईआ। कूड़ कुड़यारे

ढाह कंध, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। इक्को नाम चण्ड प्रचण्ड, प्रचण्डका आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। साचा वर दे भगवान, परवरदिगार तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ बालक बाली बुध अंञाण, दर तेरे चले ना कोए चतुराईआ। पीर पैग़म्बर सर्ब कुरलाण, आप आपणा माण गंवाईआ। तेरी सरनी डिगे आण, डिगया बांहों पकड़ लए उठाईआ। सति पुरख निरँजण इक्को देणा सच ज्ञान, आप आपणा नाम समझाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा चुक्के विच जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात शरअ शरीअत सर्ब मिट जाण, मेटणहारे तेरे हथ्थ वड्याईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश कलमा नबी रसूल राम कृष्न नानक गोबिन्द एका गाण, पुरख अकाल खुशी मनाईआ। इष्ट देव आत्म, परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। उत्तम रखे आपणी ज़ातन, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी वखाए सच्चा घाटन, घाटा पिछला दए मुकाईआ। निरगुण सरगुण वखाए हाटन, साचा हट्ट इक्क खुल्लाईआ। लेखा जाणे ज़ाहर बातन, बात आपणी दए समझाईआ। भेव चुकाए मकतूल कातिल, कातिला आपणा नाउँ रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चरन दुआर धाम बणाए मुकदस्स बातल, सर सरोवर इक्क वड्याईआ। आपे बैठा रहे पातण, कन्ढी आपणा डेरा लाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशन, अबिनाशी आपणी खेल रचाईआ। निरगुण सरगुण बणे साथण, गुर अवतार पीर पैग़म्बर दए समझाईआ। लहिणा चुकाए त्रिलोकी नाथण, नाथ अनाथां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार, घर साचा सच जणाईआ। वाहवा तेरी कुदरत सच्चे यार, यारी यारां नाल निभाईआ। बेअन्त बेपरवाह परवरदिगार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। हुक्म हाकम शाह पातशाह सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा वड वड्याईआ। लेखा लिखे कातब बण लिखार, लिख लिख लेखा दए समझाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार कर मुख़ातब सुणाए इक्क जैकार, नाअरा आपणा नाम लगाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पिच्छे करे तुआकब, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। वेखणहारा सच इबादत, इबरत वेखे थाउँ थाईंआ। देवणहारा सच सदाकत, सदा सदा आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लेखा जाणे निन्दक साकत, दूती दुष्ट दए खपाईआ। बिन आपणे आदि अन्त किसे ना देवे इजाज़त, गुर पीर अवतार आपणे हुक्मे विच फिराईआ। जुग चौकड़ी चरन कँवलां विच रखे अमानत, अमानत इक्को इक्क टिकाईआ। कर सके ना कोए ख़िआनत, लेखा सब दा दए जणाईआ। घट घट अन्तर करे पछानत, बेपहचान नज़र किसे ना आईआ। आप बणया रहे अणजाणत, भोला भाओ वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार हो इकट्ठे, इक्को आस लगाईआ। शरअ शरीअत

दीन मज़्ब कटे रस्से, बन्धन कोए नज़र ना आईआ। परम पुरख तेरे प्यार अंदर फसे, फाँसी अवर ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्तिम सारे थक्के, आपणा पन्ध ना सके कोए मुकाईआ। सिख्या दे दे जगत थक्के, साडी वाह ना चले राईआ। फिर फिर आए मदीने मक्के, साचे हुजरे फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ी क्रिया पाणी भरया हुक्के, हक़ हक़ीक़त ना कोए रखाईआ। तैथों डरदे सारे लुके, लुक लुक लुक आपणा वक्त लँघाईआ। कवण वेला परवरदिगार सिँघ शेर एका बुक्के, कलयुग भबक दए लगाईआ। बेईमान फड़ फड़ टंगे पुट्ठे, दोहरी खल्ल दए लुहाईआ। आपणे निशानउँ कदे ना उके, तीर निराला इक्क चलाईआ। दरोही खुदाए बूटे अन्तिम सुक्के, आब हयात ना कोए प्याईआ। हक़ हक़ीक़त सब तों पुच्छे, लाशरीक फेरा पाईआ। बांहों फड़ फड़ सारे कुट्टे, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ हथ्थीं पुट्टे, बूटा फेर ना कोए लगाईआ। दिन दिहाढ़े शाह पातशाह राज राजान लुट्टे, खाली हथ्थ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार कर सलाह, संसा सारे रहे चुकाईआ। कलयुग अन्तिम वेला गया आ, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। प्रगट होवे बेपरवाह, बेपरवाह धार चलाईआ। पूरब लेखा दऐ मुका, बाकी कोए नज़र ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाँ थाँ, दो जहानां खोज खोजाईआ। जो जीव भुल्ल गए नाँ, तिन्हां फड़ फड़ दए सज़ाईआ। ना कोए सहाई पिता मां, भैण भाई कम्म किसे ना आईआ। लहिणा देणा चुकावे जिस खादी सूर गां, एथे ओथे दए सज़ाईआ। गुर पीर कोए ना पकड़े बांह, सारे पल्लू रहे छुडाईआ। कोई ना करे अग्गों हां, नेत्र नैण गए भुवाईआ। कलयुग अन्तिम मारे धाह, धरनी धरत धवल हिलाईआ। मेरा मुख काला होया सयाह, शाही सके ना कोए लाहीआ। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां जीव जंतां दिता फाह, फाँसी लोकमात लटकाईआ। चौदां सदीआं अल्ला राणी होण ना दिता नकाह, कुँवार कन्या रही कुरलाईआ। अन्तिम धक्का देवे ला, मूँह दे भार सुटाईआ। कलयुग चौधवीं सदी सुक्का साह, स्वास स्वास दए दुहाईआ। मैनूं मिले ना कोई थाँ, थनंतर नज़र कोए ना आईआ। पिच्छा अग्गा कोई जाणे ना, एथे ओथे ना कोए सहाईआ। बुद्धि काग रही कुरला, कूंज विछड़ी डार दए दुहाईआ। प्रगट होवे बेपरवाह, सब दा लेखा दए मुकाईआ। ग़रीब निमाणे गले लए लगा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साची सिख्या दए समझा, साख्यात नज़री आईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे ध्या, सो आपणा ध्यान दए लगाईआ। रैहबर बणे आप खुदा, खुदी सब दी दए मिटाईआ। सबर प्याला दए प्या, जाम हक़ीक़ी हथ्थ उठाईआ। नौबत नाम दए वजा, डंका इक्को इक्क लगाईआ। कोझे कमले गले लए लगा, दुखियां दर्द दए गंवाईआ। जिस आपणा दरस दए करा, तिस दो

११०१
१२

जहानां मिले वड्याईआ। शरअ करद ना देवे कोई चला, तिक्खी धार ना कोए रखाईआ। साचा मन्त्र दए पढ़ा, मन मनसा करे सफ़ाईआ। अन्तर आत्म बूझ दए बुझा, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। सुख सिहजे मेला लए मिला, नार कन्त खुशी मनाईआ। जोती शब्दी खेल खला, सोई सुरती लए उठाईआ। काया कोट गढ़ दए वसा, साढे तिन्न हथ्थ माण दवाईआ। निरगुण जोत दए टिका, तेल बाती ना कोए रखाईआ। अमृत जाम दए प्या, निझर झिरना आप झिराईआ। अनहद राग दए सुणा, छत्ती राग ना कोए पढ़ाईआ। मक्का काअबा दए वखा, साचे हुजरे फेरा पाईआ। नूरो नूर जल्वा आप धरा, ज़ाहर ज़हूर खेल कराईआ। अल्ला मीआं वेस वटा, मुहब्बत इक्को इक्क समझाईआ। सुहबत जाणे दो जहान, साहिब सुल्तान सच्चा शहिनशाहीआ। रहिमत करे आप खुदा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सूफ़ी सही सलामत लए बचा, आरफ़ उरफ़ा ना करे कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल महान, जुगा जुगन्तर हो प्रधान, निरगुण सरगुण वेखे आण, गुरमुख गुरसिख सन्त भगत भगवन्त कट्ठे करे आण, जुग चौकड़ी जगत विछोड़ा कटणहारा शाहसवारा चढ़ के घोड़ा, दो जहानां श्री भगवान सच निशाना वड मेहरवाना ज़िमीं असमानां आप झुलाइंदा। पीर पैग़म्बरां दे पैग़ामा, गुर अवतार जपाए नामा, भगत भगवाना करे पछाना, सन्तन देवे सति निशाना, गुरमुखां बख्शे चरन ध्याना, गुरसिखां देवे इक्क ज्ञाना, अक्खर वक्खर आपणा नाम पढ़ाइंदा। सतिजुग साचा राह चलाना, सोहँ ढोला सब ने गाणा, पीर पैग़म्बर गुर अवतारां शुकर मनाणा, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी सच सरनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, विश्व आपणी कल जणाईआ।

✳ १६ अस्सू २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह पिण्ड गांधरां ✳

परवरदिगार तेरी आस, पीर पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। चौदां तबक होए बेआस, आबे हयात ना कोए प्याईआ। सदी चौधवीं होए निरास, साचा संग ना कोए निभाईआ। नेत्र रोवे पृथ्मी आकाश, दीप लोअ देण दुहाईआ। अंदर बाहर ना कोए साथ, साचा संग ना कोए निभाईआ। उम्मत उम्मती दिसे घाट, घाटा पूर ना कोए कराईआ। अन्तिम नेड़े आई वाट, पाँधी रहे पन्ध मुकाईआ। तेरी नज़र ना आए साची ज़ात, पाक रसूल ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। गुर अवतार तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाया। पुरख अबिनाशी तुध बिन दिसे ना कोए मलाह, साचा बेड़ा लए चलाया। जुग चौकड़ी देवे कवण सलाह, सलाहगीर ना

कोए अख्याया। चार कुण्ट होई हैरान, दहि दिशा रही कुरलाया। दो जहान ना पकड़े कोई बांह, सिर हथ्थ ना कोए टिकाया। लख चुरासी रसना जिह्वा रही गा, नाउँ निरँकारा नज़र किसे ना आया। कोई खाए सूर कोई खाए गां, छुरी ज़बाह हथ्थ उठाया। निथाव्याँ देवे ना कोए थाँ, निमाणयां देवे ना कोए सरनाया। नाता तुट्टा भैणां भाई भ्रा, सगला संग ना कोए निभाया। हँस बुद्धि होई काँ, काग वांग रहे कुरलाया। शाह पातशाह देवे ना कोए ठंडी छाँ, अग्नी तत्त ना किसे बुझाया। चारों कुण्ट अन्धेर गया छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। हरि का शब्द गए भुला, गुर का नाउँ ना कोए सुणाया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले उच्ची रोवण मारन धाह, नेत्र नैणां नीर वहाया। तीर्थ तट रहे कुरला, अठसठ नेत्र नैण शरमाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, चरन ध्यान रहे लगा, चरन कँवल मिले सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क तेरी ओट तकाया। भगत मंगण इक्को दान, भगवन अग्गे झोली डाहीआ। किरपा कर वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी शरअ होई शैतान, घर घर पई लड़ाईआ। साचा दिसे ना कोए ईमान, सति धर्म ना कोए वखाईआ। साचा नाद ना सुणे कोई नाम, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। आत्म मिले ना पीण खाण, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। निरगुण जोत प्रकाश ना होए कोए भान, रवि ससि अग्नी तत्त रहे तपाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म देवे ना कोए माण, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। काया दिसे सुंञ मकान, सच सिँघासण सोभा कोए ना पाईआ। सृष्ट सबाई दिसे वैरान, वैरागी रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। सन्त रोवण करन पुकार, उच्ची कूक देण दुहाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयार, चन्द चांदना ना कोए रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए विभचार, सृष्ट सबाई हरि जू कन्त ना कोए हंढाईआ। साचे मन्दिर अंदर निरगुण सरगुण करे ना कोए प्यार, साख्यात रूप ना कोए वखाईआ। कागज़ कलम गए हार, लिख लिख थक्की शाहीआ। सत्त समुंदर रोवण ज़ारो ज़ार, बनास्पत उच्ची कूक दए दुहाईआ। किसे मिल्या ना सांझा यार, सगला संग ना कोए निभाईआ। भरमे भुल्ला जीव गंवार, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। बजर कपाटी ना खुला किवाड़, आत्म ताकी कुण्डा ना कोए लाहीआ। तेल बाती दीवे लए बाल, घर घर दीवाली रहे जगाईआ। नाता तोड़े ना कोए शाह कंगाल, शहिनशाह ना कोए मिलाईआ। ना कोए सुणाए मुरीदां हाल, मुर्शद मिल्या ना सच्चा माहीआ। फल दिसे ना किसे डाल, लख चुरासी सिम्मल बूटा नजरी आईआ। तुध बिन कवण करे प्रितपाल, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तेरी घालण रहे घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। इक्को मन्न सति सवाल, बण सवाली रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

११०३
१२

११०४
१२

देणा साचा वर, दर तेरे मिले सरनाईआ। गुरमुख वेखण तेरा राह, नेत्र नैण नैण उठाया। कवण कूटे फेरा लए पा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहया। डुब्बदे पाथर लए तरा, पाहन आपणा चरन छुहाया। साची सिख्या दए समझा, मरन बरन नाता तोड़ तुड़ाया। एका मन्त्र लए पढ़ा, आत्म परमात्म रंग रंगाया। लग्गी बसन्तर दए बुझा, अमृत मेघ इक्क बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरन कँवल मिले सरनाया। गुरसिख राह रहे तक्क, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फिर फिर गए थक्क, तेरा नूर नज़र ना आईआ। तेरा नूर करे नबेड़ा हक़, हक़ीक़त तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, जिउँ भावें रिहा भुवाईआ। असीं सत्थर बैठे घत, यारड़ा नज़र कोए ना आईआ। भरमे भुल्ले मनमति, गुरमति संग ना कोए रखाईआ। अन्तिम खेड़ा दिसे भट्ठ, खण्डा नाम ना कोए चमकाईआ। चौदां तबक ख़ाली हट्ट, तेरा नाउँ ना कोए विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पीर पैग़म्बर करन उडीक, नेत्र नैण नैण उठाया। कवण वेला प्रगट होए लाशरीक, बेपरवाह बेपरवाहया। मेटे अन्त अन्धेर तारीक, साचा नूर करे रुशनाया। आलम दस्से इक्क प्रीत, उल्मा करे सच पढ़ाया। सच निशाना मारे ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाया। मार्ग दस्से इक्क बारीक, दोए दोए लोचण नज़र ना आया। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीचां वेख वखाया। जुग चौकड़ी रिहा जीत, बल आपणा आप धराया। आदि जुगादी ठांडा सीत, शीतल एका धार वखाया। करे खेल आप अनडीठ, हरि अनडिठड़ी कार कमाया। मुकामे हक़ गावे गीत, दरगाह साची नाअरा इक्को लाया। इक्को घर वखाए मन्दिर मसीत, साचे हुजरे फेरा पाया। परखणहारा सब दी नीत, उम्मत उम्मती वेख वखाया। करवट लै जो सुत्ता दे कर पीठ, आपणा पासा लए बदलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, घर सच्चा इक्को पाया। गुर अवतार नेत्र खोल्ह, नैण नैण उठाईआ। सो पुरख निरँजण नाउँ सारे रहे बोल, सचखण्ड दवारे वज्जे वधाईआ। हरि पुरख निरँजण तोलणहारा तोल, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। एकँकार रहे अडोल, डोल कदे ना जाईआ। आदि निरँजण निरगुण जोत वजाए ढोल, ढोला आपणा नाउँ रखाईआ। अबिनाशी करता पूरा करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। श्री भगवान सच निशान झुलाए उपर धौल, धरनी धरत दए वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ अन्तिम करे भार हौल, हौला भार दए वखाईआ। सदा सुहेला वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। अंदर वड़ वड़ करे चोल, प्रेम प्रीती इक्क निभाईआ। रसना जिह्वा ना बोले बोल, बत्ती दन्द ना कोए सालाहीआ। सच दुआरा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक दए मिलाईआ। माणक मोती लए वरोल, किरपा कर बेपरवाहीआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवान मंगण मंग, इक्को आस रखाईआ। साहिब सुल्तान दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। निरगुण नूर चढ़े चन्द, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। गीत सुहागी इक्को छन्द, सोहँ ढोला लईए गाईआ। नंगी होवे ना साडी कंड, एथे ओथे हो सहाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड तेरी वड्याईआ। नाता तुट्टे दुहागण रंड, घर मिले सच्चा माहीआ। दाता दानी सूरा सरबंग, शहिनशाह इक्को इक्क अख्वाईआ। कवण वेला घर निमाणी आए लँघ, प्रीती कँवल कँवल चरन इक्क तकाईआ। आत्म सेजा बैठा पलँग, सच सुहाग दए वखाईआ। जन्म जुग दी टुट्टी गंढु, एका आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को भाईआ। गुरसिख सोहे चरन दुआर, चरन कँवल ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी मिले सांझा यार, मिल मिल आपणा खेल वखाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी गई हार, कलयुग वेला अन्तिम आया। सच्चा दिसे ना कोए यार, मित्र प्यारा संग ना कोए निभाया। नारी करे ना कन्त प्यार, सेज सुहञ्जणी ना कोए सुहाया। घर घर दिसे जगत विभचार, कूड़ी क्रिया रंग रंगाया। जूठ झूठ वणज वपार, कलयुग आपणा हट्ट चलाया। नौ खण्ड पृथ्मी गई हार, सति सन्तोख ना कोए कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कराया। विष्न
११०५ ब्रह्मा शिव कर ध्यान, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। अन्तिम तुट्टा ११०५
साडा माण, अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी हुंदी दिसे वैरान, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। बेपरवाह तेरा
१२ भुल्लया गान, गा गा शुकर ना कोए मन्नाईआ। भरमे भुल्ले राज राजान, शहिनशाह शाह शाही ना कोए कराईआ। जोती १२
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी वखाए खुलड़े केस, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। मेरा अन्तिम लथ्था वेस, कूड़ी क्रिया मेरे भार दबाईआ। साहिब सतिगुर सच सवाणी वेख, निहकामी निहकर्मी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी चले ना कोए पेछ, बलहीण दए दुहाईआ। संदेसा दे के गया दस दशमेश, पुरख निरँजण आवे सच्चा माहीआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोए मूंड मुंडाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। वेखणहारा नेतन नेत, आपणा वेस वटाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी वेखे खेड, बण किरसाणा फेरा पाईआ। मैं कोझी कमली करे हेत, मेरा दुखड़ा दए गंवाईआ। मेरे उत्ते गुर अवतार पीर पैग़म्बर गए खेड, मेरा दुःख ना कोए वंडाईआ। रुत्त बसन्ती ना मौले चेत, कलयुग आपणी ख़िज़ां वखाईआ। चारों कुण्ट अग्नी तपे जेठ, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए

ना आईआ। पीर पैग़म्बर कर सलाम, अलैकम एका वार जणाईआ। परवरदिगार तेरा सच पैग़ाम, कायनात पढ़ाईआ। शाह सुल्तान तूं वड अमाम, ईमान तेरे उत्ते रखाईआ। हउँ बरदे बणे ग़ुलाम, ग़ुरबत कोए रहिण ना पाईआ। चौदां सदीआं बणे रहे अणजाण, तेरा अन्त नज़र ना आईआ। उम्मत उम्मती ना सके पछाण, अल्ला राणी ना पर्दा लाहीआ। नेत्र नैण सर्ब शरमाण, अक्ख प्रतख ना कोए वखाईआ। कलमा नबी ना कोए गाण, तीस बतीस ना कोए पढ़ाईआ। अल्फ़ ये ना कोए कलाम, कलमा रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्तिम मेला लै मिलाईआ। गुर अवतार रख आस, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराया। कलयुग अन्त बुझाए प्यास, पुरख अबिनाशी फेरा पाया। राह तक्के गोपी काहन मंडल रास, राम रमइया ध्यान लगाया। कवण वेला देवे साथ, समरथ आपणा संग निभाया। वेखे खेल खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाया। प्रगट होए पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि बिन दूजा अवर ना कोए सहाया। भगत भगवान ओट लई रख, दूसर आस ना कोए तकाईआ। कवण वेला होए प्रतख, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जुग जुग भगतां करदा आया पक्ख, नित नवित वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम मार्ग देवे दस्स, बण रैहबर फेरा पाईआ। हिरदे अंदर जाणा वस, दूजा दर ना कोए वखाईआ। इक्को तीर निराला मार कस, अणयाला आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। गुरसिख मंगण चरन धूढ़, नेत्र नैण उठाया। कलयुग नाता दिसे कूड़, कूड़ी क्रिया बन्धन पाया। माया ममता कीते मूढ़, अज्ञान अन्धेर वधाया। कोई ना बख्शे तेरा नूर, कोटन कोटि साध सन्त बैठे आसण लाया। कोए ना होए आसा पूर, मनसा मनसा दए खपाया। दीन मज़्हब रहे घूर, दर दुआर रहे डराया। शरा शरीअत पाया जूड़, फंद सके ना कोए कटाया। पुरख अबिनाशी प्रगट हो ज़रूर, तुध बिन बेड़ा पार ना कोए कराया। साडा मुक्का अन्त शऊर, शहिनशाह सिर हथ्थ ना कोए टिकाया। कर किरपा बख्श कसूर, दीनां नाथ हो सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा मंग मंगाया। दर मंगे विष्न ब्रह्मा शिव, दोए जोड़ चरन कँवल सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी लोड़, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। दो जहानां आपे बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी देण सुणाईआ। कलयुग रीठा होया कौड़, मिट्ठा रस ना कोए भराईआ। सच दुआरे दिसे ना लग्गा पौड़, पौड़ा नाम हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। भेव ना पाए ब्राह्मण गौड़, पूत सपूता नज़र किसे ना आईआ। चारों कुण्ट तेरे नाम दी लग्गी औड़, सति प्याला जाम ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस तकाईआ। त्रैगुण माया पई हस्स, हँस मुख रही जणाईआ। लख चुरासी होई मेरे वस, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। मैं शाह सुल्तानां राज राजानां, चरनां हेठां देवां झस्स, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। अजे ना करां आपणी बस्स, साधां सन्तां मति गंवाईआ। घर घर वेखां नस्स नस्स, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुरदवार मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले रहिण ना देणी गुरमति, मनमति करां लड़ाईआ। नाड़ बहत्तर उब्बले रत्त, रत्ती रत्त रत्त सुकाईआ। किसे दा रहिण ना देवां धीरज जत, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। मां पुत्तर रल बहे जग, भैण भईआ संग निभाईआ। कलयुग बूटा रिहा पक्क, गोबिन्द बाले नीहां हेठ दबाईआ। कलयुग अन्तिम किसे ना रहे शक, हरि जू शिकवा सब दा दए गंवाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार सिख्या दे दे गए अक्क, सिख्या समझ किसे ना आईआ। पुरख अबिनाशी लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पावणहारा नथ्थ, डोरी इक्को हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेरा लहिणा दे मुकाईआ। पंज तत्त करे विचार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट तपे अंग्यार, दहि दिशा एका अग्न वखाईआ। हर घट होया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आपणा बल जणाईआ। आसा तृष्ना करे प्यार, हउँमे हंगता संग निभाईआ। माया ममता विच संसार, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। कूड़ी क्रिया जगत
११०७ शंगार, नाम नेत्र कज्जल ना पाईआ। साची सेजा मिले ना कन्त भतार, लख चुरासी भोग बलास कराईआ। इक्को भुल्लया हरि करतार, पंज तत्त रोवे दए दुहाईआ। मन मति बुध ना सके कुछ विचार, ना कोई चले अन्त चतुराईआ। बिन सतिगुर ११०७
१२ किरपा कोए ना उतरे पार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा १२
हरि, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। साची सिख्या श्री भगवान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, सच संदेसा इक्क अल्लाइंदा। त्रैगुण तेरा तोड़े माण, अभिमान रूप ना कोए वटाइंदा। पंज तत्त खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। तेई अवतार उठाए आण, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। ईसा मूसा देवे इक्क ईमान, चरन दुआर इक्क जणाइंदा। चार यारी करे परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। एका सति दए ज्ञान, नानक गोबिन्द राह चलाइंदा। पंचम मेला विच जहान, पंचम दरगाह साची धाम सुहाइंदा। करे खेल नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। साचे तख्त बैठ शाह सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म समझाइंदा। कलयुग प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। लख चुरासी पकड़े आण, भंडी सर्ब जणाइंदा। लेखा चुक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान, अञ्जील कुरान आपणे खाते पाइंदा। मिहबान बीदो बी ख़ैर इलाही नूर हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। हक़ मुकामे सच

निशान, लाशरीक आप झुलाइंदा। हक़ हक़ीक़त दो जहान, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। वसणहारा इक्क मकान, इक्को मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप जणाइंदा। सच संदेसा हरि नाम वैराग, वैरागी इक्क जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जाणा जाग, जागरत जोत रिहा जगाईआ। गुर अवतारां रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पीर पैग़म्बर लए निवाज, निवाज़श इक्को इक्क समझाईआ। मुरीद मुर्शद पूरा करे काज, करता आपणा फेरा पाईआ। नज़री आए इक्क नवाब, नौबत नाम दए सुणाईआ। सच अहिबाब वजाए रबाब, तार सतार ना कोए हलाईआ। सब नूं देवणहारा अज़ाब, वेखणहार जगत लोकाईआ। दो जहानां इक्क जनाब, एका हरफ़ करे पढ़ाईआ। अल्फ़ ये जिस दिता ख़ताब, मुख़ातब आपणे नाल कराईआ। आपे रखणहारा याद, याददाशत भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। गुर अवतार खोल्हो अक्ख, हरि आख़र सब जणाइंदा। निरगुण निरँकार हो प्रतख, प्रतख आपणा खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे रहे जो वख वख, अन्तिम एका बन्धन पाइंदा। दो जहान ब्रह्मण्डां खण्डां नाउँ निरँकारा देवे दस्स, दहि दिशा हुक्म मनाइंदा। घट घट अंदर रिहा
११०८ वस, गृह गृह नज़री आइंदा। अग्गे किसे दा चले ना कोए वस, सब दा लेखा आप मुकाइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, ११०८
समरथ आपणा राह चलाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१२ किरपा कर, साची सिख्या आप जणाइंदा। भगत भगवान ठांडा सीता, मित्र प्यारा दया कमाईआ। जुग चौकड़ी चलाई १२
रीता, रीतीवान फेरा पाईआ । दरस दिखाए इक्क अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। नाता तोड़े मन्दिर मसीता, काया मन्दिर इक्क वखाईआ। धाम वखाए साहिब अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। परम पुरख पत्तत पुनीता, पत्तत पावण पार कराईआ। लहिणा देण चुकाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, अमृत रस इक्क भराईआ। एका रखावे माण अठारां अध्याए गीता, गुर ज्ञान इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे भगतां रिहा समझाईआ। साचे सन्तो रखो याद, हरि साचा सच जणाइंदा। सदा सुहेला देवणहारा दाद, नाम अमोलक झोली पाइंदा। आपणे विच्चों आपा काढ, अन्तर आत्म आप धराइंदा। निरगुण सरगुण करे लाड, गोदी गोद गोद सुहाइंदा । खेले खेल मोहण माधव माध, मधुर धुंन आपणा राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां आप जणाइंदा। गुरमुख साचे वेखो उठ, हरि सतिगुर आप जणाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी गया तुठ्ठ, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, रस रसना ना कोए चखाईआ। आवण जावण

जाए छुट्ट, लख चुरासी रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया जड़ देवे पुट्ट, जूठ झूठ दए मिटाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत्त, चेतन आपणी धार जणाईआ। काया मौले साची रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। गुरमुख उठाए साचे सुत, जन जननी बणे पिता माईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गए रुट्ठ, वेले अन्त लए मिलाईआ। गलवकड़ी पाए इक्को वार घुट्ट, जोती शब्दी शब्दी जोती एका गंढु पुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे रिहा समझाईआ। गुरसिख साचे उठ बल धार, बलधारी आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, प्रेम प्रीती इक्क वखाइंदा। नाता तोड़ नौ दुआर, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। सुखमन टेढी करे पार, ईड़ा पिंगल मूँह दे भार सुटाइंदा। निर्मल जोत कर उज्यार, नूरो नूर डगमगाइंदा। अमृत बख्शे ठंडा ठार, नाभी कँवल आप उलटाइंदा । शब्द धार सच्ची धुन्कार, अनहद रागी राग सुणाइंदा। आत्म सेजा करे प्यार, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। बोध अगाधी बोल जैकार, सोहँ शब्द रूप वटाइंदा। बंस सरबंसा कर त्यार, सहँस सहँसा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दी आसा पूर कराइंदा। धरनी धरत धवल तेरी रखे पत्त, पात्र आपणा दए घलाईआ। सृष्ट सबाई देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सर्ब बन्न्हाए इक्को नत्त, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सति सतिवादी चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सतिजुग महिमा गाए अकथ, कलयुग लेखा अन्त चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पूरी आस कराईआ । पीर पैग़म्बर करो त्यारी, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। गुर अवतार वेखो जोत निरँकारी, हरि पुरख निरँजण नूर धराइंदा। भगत लाओ सच उडारी, नर निरँकारा आप उडाइंदा। गुरमुख वेखो आदि निरँजण जोत उज्यारी, घर घर आप जगाइंदा। गुरसिख मेला वारो वारी, श्री भगवान आप कराइंदा। साचे सन्त साचे घोड़े रिहा चाढ़ी, अबिनाशी करता सेव कमाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मीता तेरा दरबारी, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा । जुग चौकड़ी जो बणया रिहा जवारी, सार पाश खेल खलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लगाए जिस साची सेवा सेवादारी, सो सहिब फेरा पाइंदा। धरत धवल तेरी पैज दए संवारी, अन्तिम हौला भार कराइंदा। अल्ला राणी ना फिरे कुँवारी, ख़ावंद इक्को वेख वखाइंदा। चौदां तबक वज्जे नगारी, चौदां लोक नाअरा इक्को लाइंदा। त्रैभवण अवण गवण वेखे वड बलकारी, दो जहानां फेरा पाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठां रिहा लताड़ी, अग्गे सीस ना कोए उठाइंदा। करे खेल महांबली नर नरायण इक्क अवतारी, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा। काग़ज़ कलम लिख ना सके कोए लिखारी, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सारे उठ उठ करन निमस्कारी, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा।

११०६ १२

महल अटल तेरी अटारी, महिफल इक्को इक्क वखाइंदा। शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह दरबारी, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा एको एक, एकँकारा आप जणाईआ। पीर पैग़म्बर रखो टेक, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। गुर अवतार लओ वेख, बिन नेत्र रिहा वखाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहित अनभउ प्रकाश करे भेख, रेख रूप नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त जन भगतां करन आया हेत, दर दरवेश फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणयां अंदर रल रल रिहा खेल, आपणी खेल ना किसे समझाईआ। कर किरपा जिस खोल्या भेत, भगत भगवान इक्को नज़री आईआ। किसे हथ्थ ना आया मुसायक मुल्ला शेख़, शरअ सार कोए ना पाईआ। पंडत पांधा कोए ना सक्या वेख, बारां रास कुण्डली अंदर बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सच्चा देवे वर, सब दा लहिणा दए मुकाईआ। पुरख अबिनाशी सच जणा, एका हुक्म सुणाईआ। पीर पैग़म्बर लहिणा दए मुका, देणा कोए नज़र ना आईआ। गुर अवतारां भाणा सहिणा दए समझा, सद भाणे विच रखाईआ। भगतां भगवान कोल बहणा दए वखा, फड़ बांहों लए उठाईआ। साचे सन्तां नेत्र नैणां दरस दए करा, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। गुरमुखां कहिणा लए मना, गुरमति इक्क दृढ़ाईआ। गुरसिखां चरनी देवे साचा थाँ, सचखण्ड मिले वड्याईआ। धरनी धरत धवल पकड़े बांह, बांहों फड़ लए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणाए सच्चा नाँ, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। बणे विचोला बेपरवाह, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। पर्दा ओहला दए उठा, मुख नक़ाब ना कोए रखाईआ। मौला रूप नज़री जाए आ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान इक्क बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा लेखे लाईआ। साचा लेखा लेखे लाउणा, अलख निरँजण आप समझाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार एका धाम बहाउणा, दूई द्वैती कंध ना कोए रखाइंदा। भगत भगवान गोपी काहन सन्त सज्जण मेल मिलाउणा, मिल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। गुरमुख गुरसिख गोद बहाउणा, घर घर विच सोभा पाइंदा। त्रैगुण माया पंज तत्त तत्तव तत्त इक्क दृढ़ाउणा, अग्नी तत्त ना कोए रखाइंदा। सत्त चार मिल मिल गाउणा, चुहत्तरां एका बन्धन पाइंदा। सत्त दो धार वखाउणा, साचा मन्दिर इक्क सुहाउणा, बहत्तरां एका अंक जोड़ जुड़ाइंदा। साता सिफ़रा अंक जणाउणा, जेरज अंड पर्दा लौहणा, उत्भुज सेत्ज वेख वखाउणा, चारे खाणी चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाउणा, चार जुग चार कुण्ट चार यार चार वेद लेख लिखाउणा, लेखा आपणा दए जणाईआ। नव नौ चार आपणा बन्धन पाउणा, पारब्रह्म प्रभ भेव खुलाउणा, आत्म परमात्म मेल मिलाउणा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। सोहँ ढोला सब ने गाउणा, पुरख अकाल

शब्द विचोला इक्क बणाउणा, रौला पिछला दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण देवे निरगुण वर, सरगुण आसा पूर कराईआ। निरगुण दाता निरगुण दानी, दयावान निरगुण अख्वाइंदा । निरगुण परम पुरख पारब्रह्म वाली दो जहानी, निरगुण वेस अनेक वटाइंदा। निरगुण नाद धुंन बोध अगाध अकथ कहाणी, निरगुण नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण पंज तत्त लख चुरासी करे प्रधानी, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण धारा आप चलाइंदा। निरगुण धारा चौकड़ी जुग, जुग करता आप जणाईआ। निरगुण खेल चौदां लोक, परलोक वज्जे वधाईआ। निरगुण गाए सच सलोक, सोहला एका नाम समझाईआ। निरगुण आदि जुगादि इक्को ओट, दूसरी ओट ना कोए तकाईआ। निरगुण नूर सति सरूपी जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि जू किसे ना आवे विच सोच, सोच कोई ना सके राईआ। प्रभ दर्शन को गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे लोच, लोचा सब दी पूर कराईआ। भगत भगवान विच जहान लहिणा लैण मानण मौज, कलयुग अन्तिम खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप जगाईआ। हरिजन साचा गया जाग, हरि सतिगुर आप जगाईआ। पंज तत्त काया लग्गा भाग, प्रभ भागी मिल्या चाँईं चाँईंआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, निर्मल नीर सीर वखाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, काग हँस रूप वटाईआ। दीपक जोत जगे चिराग़, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। प्रभ मिल्या सज्जण साक, जग नाता दए तुड़ाईआ। धूढ़ी देवे मस्तक ख़ाक, टिक्का इक्को नाम लगाईआ। परवरदिगार पाकी पाक, पत्तत पुनीत दए कराईआ। पार किनारा दस्से घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम मुक्की वाट, पुरख अबिनाशी पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां देवे सच्चा साथ, सगला संग आप निभाईआ। इक्क जपाए पूजा पाठ, पुस्तक होर ना कोए पढ़ाईआ। अठसठ सरोवर मारे ठाठ, घर अमृत दए वखाईआ। नाता तोड़े ज़ात पात, वरन गोत ना कोए वड्याईआ। नाम विकाए इक्को हाट, साचा हट्ट दए खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गायण गाथ, गुर अवतार पीर पैग़म्बर रहे जस गाईआ। जिस दी आदि जुगादि किसे ना आई हाथ, बेअन्त कह कर गए पल्लू छुडाईआ। सो साहिब प्रगट होया आप समराथ, समरथ आपणा फेरा पाईआ। गुरसिख सगल विसूरे जायण लथ्थ, जिस जन आपणी दया कमाईआ। हर घट देवे साची वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। सतिगुर नज़री आए झट्ट, घर घर विच मेल मिलाईआ। सृष्ट सबाई बैठी सत्थर घत्त, कलयुग गूढ़ी नींद सुवाईआ। वेले अन्त रखे ना कोए

पत, प्रभ भुल्लया इक्को माहीआ। नक्क सुहाग ना कोई नथ्थ, खुल्ही गुत रही वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मुनारा जाणा ढट्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। चारे कुण्ट लैणा नट्ठ, भज्जयां बच कोए ना जाईआ। प्रभ मारन आया सट्ट, नाम खण्डां हथ्थ उठाईआ। वार करे झट्ट पट्ट, राज राजान सार ना आईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पारब्रह्म दी सरनी गए ढट्ठ, दर बैठे सीस झुकाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, तेरे हथ्थ तेरी लोकाईआ। असीं तेरे हुक्मे अंदर मार्ग आए दस्स, लिख लिख लेखा जगत समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अंदर गए फस्स, हरि जू तेरा नाम भुलाईआ। सारे बिन ढाइआं गए ढट्ठ, आपणा बल ना कोए प्रगटाईआ। तूं वसणहारा घट घट, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा खेल कर, करते कादर कुदरत तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नरेश आपणा हुक्म वरताईआ।

✳ १७ अस्सू २०१६ बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ✳

भगत वछल श्री भगवान, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।
१११२ एकँकारा देवे दान, दाता दानी झोली भराईआ। आदि निरँजण हो प्रधान, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता खेल करे महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। श्री भगवान झुलाए निशान, सच निशाना इक्क उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे १११२
१२ मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच जणाईआ। सचखण्ड निवासी वसणहारा सच मकान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। शाहो भूप १२
राज राजान, शहिनशाह आपणी खेल रचाईआ। तख्त निवासी नौजवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। दर दरवेश बण दरबान, घर साचे अलख जगाईआ। देवणहारा कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत वछल श्री भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। वस्त अमोलक मणीआ मंत, नाउँ निरँकारा झोली पाईआ। निरगुण सरगुण बणाए बणत, घड़न भन्नणहार सच्चा शहिनशाहीआ। देवे वड़याई विच जीव जंत, जीवण जुगत दए जणाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाईआ। भगत वछल पारब्रह्म, प्रभ आपणी खेल कराइंदा। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप कमाइंदा। लख चुरासी पवण स्वासी वेखे दम, घट घट आपणा आसण लाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिंता रोग ना कोए जणाइंदा। आत्म

परमात्म बेड़ा देवे बन्न्ह, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्न, नूरो नूर नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। भगत वछल हरि निरँकारा, हरि जू आपणी खेल कराईआ। आदि जुगादी लए अवतारा, नित नवित वेस वटाईआ। लेखा जाणे जुग चौकड़ी विच संसारा, कोटन कोटि वेस वटाईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड पावे सारा, उत्भुज सेतज फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत वछल आदि निरँजण, आदि पुरख वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर साचा सज्जण, सतिगुर सच्चा सच्चा माहीआ। नेत्र नाम पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। चरन धूढ़ कराए मजन, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। दो जहानां होए पर्दा कज्जण, निरगुण सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। जुगा जुगन्तर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क लगाए साची लग्न, दर साचा इक्क वखाईआ। भगत वछल हरि गिरधारा, गिरवर आपणा खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर करे खेल अपारा, अपरम्पर आपणा वेस वटाइंदा। नाम निधाना बोल जैकारा, जै जैकार आपणा नाउँ सुणाइंदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग हरिभगत आप प्रगटाइंदा। जुग जुग प्रगटाए हरि जू भगत, भगवन आपणी दया कमाईआ। सति पुरख निरँजण जाणे आपणा वक्त, थित वार ना वंड वंडाईआ। लेखा जाणे बूंद रक्त, पंज तत्त दए वड्याईआ। नाम खुमारी देवे मस्त, मस्ती इक्को इक्क चढ़ाईआ। भेव चुकाए कीट हस्त, हस्त कीट एका घर वड्याईआ। लहिणा देवे दस्त बदस्त, दस्तयाब सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां पैज रखाईआ। जुग जुग मेला भगत भगवान, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर देंदा आया दान, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। सति सरूपी शाहो भूपी लख चुरासी साचा काहन, गहर गम्भीर वेस वटाइंदा। आत्म परमात्म करे पहिचान, बेपहचान आपणा भेव खुल्हाइंदा। लेखा जाणे धुरदरगाही धुर फ़रमान, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी भगत भगवान, आपणी खेल कराईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, परम पुरख वेस वटाईआ। सच वड़याई देवे सच मकान, गुरमुख काया बंक सुहाईआ। निरगुण नूर नज़र आए श्री भगवान, सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। एका नाद सुणाए सच्ची धुन्कान, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत रस पीण खाण, तृष्ना

भुख ना लागे राईआ। करे प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। लेखा जाण दोए जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। सच संदेसा देवे आण, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हँ ब्रह्म मेले आण, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन देवे माण वड्याईआ। भगत दुआर सोहे भगत, भगवन आपणी खेल कराइंदा। निरगुण नूर निराकार आदि निरँजण इक्को शक्ति, शख्सीअत आपणी आप प्रगटाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग अन्तिम कढ्ढणहारा फ़र्क, फ़िकरा आपणा आप सुणाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार पुरख अकाल आया परत, परतीनिध ना कोए बणाइंदा। लेखा जाणे धरनी धौल धरत, धुरदरगाही फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणे रंग रंगाइंदा। भगवन रंग रंगीला, हरि भगतन आप रंगाईआ। सो पुरख निरँजण छैल छबीला, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों निरगुण सरगुण बणाए इक्क कबीला, आप आपणा बन्धन पाईआ। सत्त दो कीता मेला, अंक अंक नाल जुड़ाईआ। लेखा जाणे सूहा कंचन लाल चिट्टा पीला नीला, काली आपणी धार बंधाईआ। एथे कोए ना दए दलीला, दलील विच कदे ना आईआ। जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणा असूला, साचा मार्ग आप जणाईआ। आदि पुरख आदि निरँजण अबिनाशी करता कदे ना भूला, अभुल्ल आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, भगवन देवे माण वड्याईआ। भगत दुआर सच महल्ला, हरि साचा सच सुहाइंदा। वेखणहारा इक्क इकल्ला, एकँकारा खेल खलाइंदा। शब्दी सुरत फड़ाए पल्ला, पल्लू एका गंढु बंधाइंदा। आपे जोती निरगुण रल्ला, नूर नुराना वेख वखाइंदा। सच संदेसा एका घल्ला, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा खेल कराइंदा। भगवन खेले खेल अपारा, नज़र किसे ना आईआ। भगतां करे सच प्यारा, प्यार प्यार नाल मिलाईआ। सचखण्ड निवासी वजाए सच नगारा, नौबत आपणे नाम वजाईआ। गुर अवतार करे ख़बरदारा, पीर पैग़म्बर आप उठाईआ। चल के वेखो सच नज़ारा, हरि सतिगुर आप वखाईआ। लोकमात लगाए अखाड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाईआ। कलयुग आई अन्तिम वारा, निहकलंका वेस वटाईआ। भगत सुहाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। लख चुरासी सोए पैर पसारा, नेत्र ज्ञान ना कोए खुलाईआ। गुरमुख विरले दए हुलारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी इक्क सुणाए साचा नाअरा, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। विष्नूं उठ उठ नैण उग्घाड़ा, ब्रह्मा वेखे चार दीवारा, भोला नाथ ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावारा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग तेरा भगत तुध बिन रिहा कुँवारा, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। कलयुग अन्तिम धूआँधार, भरमे भुल्ला सर्ब संसार, गुर का शब्द

ना किसे विचार, हरि हरि नाम ना कोए ध्याईआ। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां ना कोए प्यारा, भगतां मिले ना कोए किनारा, कबीरा कूक कूक अलाईआ। वेद शास्त्र आई हारा, पुराण अठारां करे गिरयाज़ारा, अञ्जील कुरानां ना देवे कोई सहारा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तीर्थ तट ना कोई जल ठंडा ठारा, अठसठ तपे अग्नी हाढ़ा, अमृत जाम प्याए ना कोए विच संसारा, चारों कुण्ट अग्नी अग्ग रही तपाईआ। चार वरन ना कोए प्यारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, चारे बाणी ना कोए जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ना कोए गाईआ। चारे खाणी ना कोए विचारा, चारे वेद ना कोए सहारा, चार यार रोवण ज़ारो ज़ारा, यारी यारां नाल ना कोए निभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार किनारा, कलयुग अन्तिम वेखे परवरदिगारा, पारब्रह्म तेरी चरन सरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दी पूरी आस कराईआ। सो पुरख निरँजण ठांडा सीता, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्त जणाए साची रीता, रीतीवान फेरा पाइंदा। भगत दुआर इक्क अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। माणस जन्म गुरमुख जीता, जीवण जुगत हरि जणाइंदा। लख चुरासी विच्चों परखे नीता, नाम कसौटी हथ्थ रखाइंदा। दरस दिखाए इक्क अनडीठा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। त्रैगुण अग्नी ठांडा करे अंगीठा, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। नाम
१११५ निधान अंमिउँ रस पीता, जल इक्को इक्क वखाइंदा। सच जणाए सच प्रीता, प्रीतीवान आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत १११५
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान आप जणाइंदा। सारे जाणो खेल अवल्ला,
१२ हरि करता आप कराईआ। भगत फड़ाए आपणा पल्ला, भगवान गंढु पुआईआ। निरगुण सरगुण अंदर रल्ला, रल मिल १२
आपणी ख़ुशी वखाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लोकमात वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई कहे लाल झल्ला, लालन लाल आपणे रंग रंगाईआ। दीपक जोती एका बला, बलया दीपक बुझ कदे ना जाईआ। एथे ओथे फलया फुला, फल इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरे दए वड्याईआ। भगत दुआर रिहा सज, हरि सज्जण आप सजाइंदा। कलयुग अन्तिम रखणहारा लज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखण भज्ज भज्ज, बण पाँधी पन्ध मुकाइंदा। भगत भगवान तेरा जैकारा गायण गज्ज, सोहला ढोला इक्क सुणाइंदा। कूड़ी क्रिया पार हद्द, जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सन्त सुहेले आपे सद्द, आप आपणा बन्धन पाइंदा। लख चुरासी नालों करे अड्ड, वक्खरी हरि जू धार बंधाइंदा। गोद सुहञ्जणी सुहाए लड्ड, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन सेव आप कमाइंदा। भगत तेरा सोहे बंक, गुर अवतार रहे जस गाईआ। जिस

दुआरे राउ रंक, इक्को रंग वखाईआ। तुट्टा माण अन्तिम जनक, जनक बैठा सीस झुकाईआ। हरि जू मिल्या अन्त, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। सो सतिगुर मिल्या सन्त, मिल सतिगुर खुशी मनाईआ। नारी मिल्या नरायण कन्त, सेज सुहञ्जणी इक्क हंढाईआ। चाढ़े काया चोली रंग बसन्त, रंग बसन्ती उतर कदे ना जाईआ। नाम जणाए मणीआ मंत, मन मणका दए भुआईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगत दुआरा सद अनडिठ, जगत नेत्र नज़र किसे ना आया। निरगुण सरगुण करे हित, नित नवित वेस वटाया। आपे जाणे आपणी वार थित, जगत वंड ना कोए वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाया। भगत मिलावा सच घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वेखण खड़, पुरख अबिनाशी खिड़की रिहा खुल्हाईआ। डूँघी कंदर काया मन्दिर जाए चढ़, अउँदा जादा नज़र ना आईआ। आत्म परमात्म लए फड़, डोरी इक्को नाम बंधाईआ। किला तोड़ हंकरी गढ़, हउमे हंगता दए मिटाईआ। सच नुहाए साचे सर, अमृत सरोवर इक्क वखाईआ। कागों हँस देवे कर, काग हँस रूप वटाईआ। समरथ पुरख जिस उपर हथ्थ देवे धर, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। भगतन लेखा रखे हथ्थ, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। जुग जुग मार्ग देवे दस्स, रैहबर बणे सच्चा माहीआ। अन्तर आत्म एका रस, रसना पर्दा दए उठाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, नूर नुराना नूर धराईआ। तीर निराला मारे कस, शब्द अणयाला बाण उठाईआ। सरगुण अंदर निरगुण हो प्रगट, प्रगट आपणी धार जणाईआ। चौदां लोक चलाए हट्ट, घर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे चाँईं चाँईंआ। भगतन अंदर भगती रंग, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा। आत्म सेजा सच पलँग, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। अट्ठे पहर नाम मृदंग, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अमृत सरोवर इक्को गंग, निझर झिरना आप झिराइंदा। सुरती शब्दी इक्क अनन्द, मिल मिल सख़ीआं मंगल गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा संग निभाइंदा। भगतां अंदर सच्चा साथ, हरि सतिगुर आप निभाईआ। खेले खेल अनाथां नाथ, नाथ अनाथी वेस वटाईआ। निरगुण बणे निरगुण साक, सरगुण सज्जण रूप वखाईआ। आत्म परमात्म मेला पाकी पाक, परवरदिगार होए सहाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त माटी खाक, खाकी खाक आपणे रंग रंगाईआ। माही पत्तण मिले घाट, घाटा पिछला पूर कराईआ। चरन कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। समरथ पुरख निभाए आपणा साथ, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, भगतन देवे माण वड्याईआ। भगतां देवे हरि जू माण, अभिमाण रूप ना कोए वखाइंदा। चरन कँवल दए ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। एका राग सुणाए कान, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। एका मन्दिर सोहे मकान, घर घर विच डेरा लाइंदा। दीपक जोत जगे महान, तेल बाती कोए ना पाइंदा। अठ्ठे पहर इक्क धुन्कान, धुंन आत्मक राग अलाइंदा। पवण उनन्जा सेव कमाण, सेवक आपणा हुक्म मनाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। खेले खेल नौजवान, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। परवरदिगार वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। मुकामे हक़ सच निशान, लाशरीक आप झुलाइंदा। कलमा नबी रसूल पढ़ाए आण, कायनात हुक्म मनाइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। मुरीद मुर्शद मेले आण, मिल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां दस्सणहारा भूमिका अस्थान, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। निरगुण दाता वड मेहरवान, घर घर आपणा खेल कराइंदा। भगतन मेला विच जहान, गुर चेला एका घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां भगती इक्क दृढ़ाइंदा। भगतां अंदर भगती रख, भगवान आपणी खेल कराईआ। भाण्डे भरे आपे सक्ख, सक्खणे भाण्डे आप भराईआ। करनहारा कक्खों लख, लखों कक्ख दए बणाईआ। लख चुरासी पावणहारा नथ्थ, शब्दी डोरी हथ्थ उठाईआ। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, साचे धन्दे दए लगाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रगट, गुर अवतार नाउँ धराईआ। पीर पैग़म्बर खोल्ह हट्ट, चौदां तबकां माण वड्याईआ। भगत भगवान खेल अकथ, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। निरगुण सरगुण चलावणहारा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण करे इकट्ठ, घर मेला चाँईं चाँईंआ। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, दो जहानां चरनां हेठ दबाईआ। वसणहारा घट घट, हरि भगतन लए उठाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। घर विच घर खोल्हे ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। पुरख अबिनाशी वसे साथ, घर साचा संग निभाईआ। भगतां पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जुग जुग खेल करे करतारा, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण नूर धराइंदा। अबिनाशी करता दए सहारा, श्री भगवान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण वणजारा, लख चुरासी ब्रह्म हट्ट खुल्हाइंदा। पंज तत्त काया खेल न्यारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश रंग रंगाइंदा। रजो तमो सतो दए सहारा, सति सतवादी साची कार कमाइंदा। भगत वछल बण करतारा, कुदरत आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप

१११८ १२

हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे आप प्रभ, प्रभ आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लए लभ्भ, फोलणहारा थाउँ थाईंआ। अमृत झिरना झिराय कँवल नभ्भ, नाभी कँवल फुल्ल खलाईआ। अमृत जाम प्याए मदि, सच सरोवर इक्क वखाईआ। निरगुण सरगुण पार कराए हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। भगवान भगत बणाए आपणी यद्द, साचा बंस मात चलाईआ। निरगुण विच्चों निरगुण कढ्ढ, सरगुण चोला लए हंढाईआ। लख चुरासी जीव जंत देवे छड्ड, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। आत्म सिँघासण बहे सज, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। भगत जैकारा लाए गज्ज, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे चाँईं चाँईंआ। भगत मिलण दा चाओ घनेरा, हरि आदि जुगादि रखाइंदा। कलयुग अन्तिम आया नेरा, नेरन नेरा फेरा पाइंदा। कूड़ी क्रिया चुकावणहारा गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच भुआइंदा। गुरसिख तेरा वस्से खेड़ा, खेड़ा हरि जू आप वसाइंदा। आपे बन्नणहारा बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। भेव चुक्या मेरा तेरा, तेरा मेरा इक्को रंग नज़री आइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेखदा रिहा कर कर जेरा, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। हक़ो हक़ करे नबेड़ा, हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। नाम रखाए सिँघ शेरा, आपणी भबक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा घर वखाइंदा। भगवन वेख हरि का घर, हरि सतिगुर आप खुल्हाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए वड्याईआ। बिन कर्मां उपर जाणा चढ़, निहकर्मी लए चढ़ाईआ। बिन विद्या पढ़यां इक्को अक्खर जाणा पढ़, सचखण्ड करे पढ़ाईआ। बिन मरया जगत जाणा मर, जीवण मुक्त रिहा कराईआ। बिन तीर्थ नहावण साचे सर, चरन धूढ़ी रिहा नुहाईआ। आत्म परमात्म वखाए इक्को घर, घर मन्दिर दए खुल्हाईआ। भगत तेरा भगवान फड़या लड़, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आईआ। लोकमात दी साची जड़, हरिभगत इक्क प्रगटाईआ। जिस दुआरे दरस दिखाए अग्गे खड़, सो दुआरा सच रूप वखाईआ। करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला भगती लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वेखे सच्ची धर्मसाल, जिस दुआरे वसे सच्चा माहीआ। पोह ना सके काल महांकाल, महांकाल सीस झुकाईआ। गुर शब्दी बणया इक्क दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। वेखणहार पत्त डाल, फुल फुलवाड़ी सोभा पाईआ। आपे पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी घालण आए घाल, कलयुग अन्तिम लेखे लाईआ। भगतां करे हल्ल सवाल, पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ। एथे ओथे चले नाल, नाल सतिगुर

१११८ १२

पूरा विछड़ कदे ना जाईआ। प्रितपालक बण करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे थाउँ थाईंआ। भगत दुआरा डूँग्घा सागर, नज़र किसे ना आइंदा। प्रभ आप रखाए काया गागर, पंज तत्त पर्दा उपर पाइंदा। निर्मल जोत जगे उजागर, जोत उजाला इक्क कराइंदा। नाम वणजारा इक्क सौदागर, हरि जू साचा हट्ट खुल्हाइंदा। अंदरे अंदर देवे आदर, बाहरों भेव कोए ना पाइंदा। मिल्या मेल करीम कादर, करता आपणा रंग चढ़ाइंदा। सिदक सबूरी देवे साबर, सति सन्तोख ज्ञान दृढ़ाइंदा। मन मनुआ ना रहे जाबर, मन मनसा आप मिटाइंदा। इक्को राग सुणाए दादर, हज़ारा दरूद मुख भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन लेखा आप जणाइंदा। भगवन लेखा काया अंदर रख, रख्या आपणी आप जणाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रतख, प्रगट रूप वटाईआ। इक्क जणाए आपणा जस, जस वेद पुराण गा ना सकण राईआ। आत्म परमात्म मार्ग दए दस्स, औझड़ राह कोए ना जाईआ। अग्गों मिले नट्ठ नट्ठ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। लोकमात दस्म दुआरी चौथे घर करे इकट्ठ, अग्गे आपणी उँगली लाईआ। जगत विकार एकँकार प्यार जाए ढट्ठ, पंज तत्त नाता दए तुड़ाईआ। अग्गे कोई ना उब्बले बहत्तर नाड़ी रत्त, रत्ती रत्त ना कोए जणाईआ। नज़र ना आए बुध मन मति, मती मति ना कोए समझाईआ। सतिगुर पूरा हो प्रगट, निरगुण निरगुण
११९६ अंग लगाईआ। जोत उजाला नूर नुराना लट लट, शब्द धुंन ना कोए शनवाईआ। थिर घर दुआर खोल्ह हट्ट, अलख ११९६
अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा कुण्डा लाहीआ। सचखण्ड दवारे आपे वस, साची कार कमाईआ। जुग जुग जन
१२ भगतां गाए जस, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। कलयुग अन्त करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा भेव खुल्हाईआ। १२
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सच दुआर जिथे वसे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। ग़रीब निवाजा वसे सचखण्ड, सच दुआर सोभा पाईआ। ज़ात पात ना कोए वंड, दीन मज़्हब ना कोए रखाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को छन्द, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। वस्त अमोलक इक्को वंड, लख चुरासी झोली पाईआ। ना कोई भेख ना पखण्ड, कूड़ी क्रिया ना कोए वखाईआ। मदिरा मास ना कोए गंद, रसना जिह्वा ना कोए हल्काईआ। चिल्ला तीर ना कोए कमंद, शस्त्र बस्त्र ना कोए लड़ाईआ। रसना जिह्वा ना बत्ती दन्द, काग़ज़ कलम ना कोए उठाईआ। इक्क इकल्ला वसे सूरा सरबंग, सतिगुर आपणा आसण लाईआ। जन भगतां देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, आपणे अंग लगाईआ। भगत दुआर भगवन लँघ, भागवत एका कथा समझाईआ। आदि शक्ति चाढ़े रंग, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। चतुर्भुज वजाए मृदंग, मृदंगा इक्को हथ्थ उठाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर वसण

संग, संग इक्को नज़री आईआ। जिस दुआरे भगत जाए लँघ, तिस दुआरे विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां देवे साचा दान, गुरमुख वेखे साचा लाल, निरगुण सरगुण बण दलाल, नाता तोड़ काल महांकाल, इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, जोती जल्वा नूर जलाल, नज़री आए परवरदिगार बेऐब ख़ुदाई सांझा यार, मुकामे हक़ खेल अपार, सचखण्ड खोल्ह आप निरँकार, जन भगतां अंदर लए बिठाल, मुख पूंजे प्रेम नाल रुमाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले लए फड़, भगतां अंदर आपे वड़, साचे पौड़े जाए चढ़, सोहँ अक्खर इक्को पढ़, आत्म परमात्म लाए लड़, फड़या लड़ छुट्ट कदे ना जाईआ। हरि का लड़ कदे ना छुट्टे, सतिगुर साचा आप बंधाइंदा। लख चुरासी फड़ फड़ कुट्टे, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। जन भगतां अमृत जाम प्याए घुट्टे, घुट्ट आपणे नाल लगाइंदा। लोकमात दे साचे बूटे आपणी हथ्थीं पुट्टे, दरगाह साची सचखण्ड आप लगाइंदा। गुरसिख लाल कदे ना लुट्टे, कक्खों लख वखाइंदा। आवण जावण मात गर्भ लख चुरासी पैंडे पाँधी मुक्के, हरि पाँधी आप मुकाइंदा। भगत भगवन्त आपणी रखे कुक्खे, बण जननी जन सेव कमाइंदा। लोकमात जो रहे लुके, कर किरपा पर्दा लाहइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवान आपणी डोरी भगतां उत्ते सुट्टे, आपणे हथ्थ ना कुछ रखाइंदा। घर घर दर दर जा जा पुच्छे, बण राही पाँधी फेरा पाइंदा। निउँ निउँ सजदा कर कर झुके, जन भगतां सीस झुकाइंदा। भगत विरला लोकमात उठे, जिस आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा खेल वखाइंदा। भगत भगवान दोवें रहे हस्स, कलयुग अन्तिम ख़ुशी मनाईआ। इक्क दूजे दे प्यार अंदर गए फस, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। रल मिल गाउँदे इक्क दूजे दा जस, घर वज्जदी रहे वधाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा मार्ग दस्स, मार्ग भगतां कोलों पुच्छ पुच्छ आपणा राह चलाईआ। लख चुरासी कोलो बच, लुक लुक भगत दुआरे फेरा पाईआ। जे कोई पुच्छे सच्च, बिन भगतां सच ना किसे समझाईआ। लख चुरासी नौ दुआरे रही नच्च, नौ खण्ड पृथमी पई दुहाईआ। अन्तिम भाण्डा दिसे कच्च, थिर कोए नज़र ना आईआ। जिस हिरदे अंदर गया रच, तेरा मेरा मेरा तेरा पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। हरिभगत तेरा सच मुनारा, मुनी ऋषी भेव ना राया। चारों कुण्ट होए उज्यारा, गुर अवतार दरसन पाया। जिस घर वस्से निरँकारा, सचखण्ड रूप वटाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान करन पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाया। सिफ्त सलाही बेपरवाही सिफ्तां विच्चों वसे बाहरा, सिफ्त विच कदे ना आया। जन भगत दुआरे बण

भिखारा, जुग जुग आपणा फेरा पाया। दर दरवेश नर नरेश इक्को अलख बोल जैकारा, जै जैकार दए सुणाया। दरोही दरोही बिन भगत मोहे करे ना कोए प्यारा, बिन भगतां प्यार किसे घरों हथ्थ ना आईआ। लख चुरासी जीव जंत जगत वणजारा, हरि का नाम हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे थाउँ थाईंआ। वेखणहारा थान थनंतर, थिर घर वासी दया कमाइंदा। चार कुण्ट लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त तत्त जलाइंदा। फिरी दरोही गगन गगनंतर, मंडल मण्डप सर्ब कुरलाइंदा। जीव जंत भुल्ले गुरू का मन्त्र, गुरदेव नज़र किसे ना आइंदा। कूड़ी क्रिया कूड़ा मन्त्र, कलयुग आपणा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। भगत भगवान खोल्हे जाग, जागरत जोत इक्क जगाईआ। सच दुआरे लग्गे भाग, श्री भगवान आप वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जिस दी करदे रहे याद, सो साहिब फेरा पाईआ। जिस दी कोई ना जाणे बुनियाद, आदि अन्त ना किसे वखाईआ। जिस दी हथ्थ ना आई हाद, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू छुडाईआ। जिस नूं कहिन्दे वाहद लाशरीक गॉड, सरक्त आपणी ना कोए रखाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैग़म्बर सुणदे रहे नाद, अनाद अनादी आप वजाईआ। जिस ने खेल रचाई कोटन कोटी ब्रह्म ब्रह्मांड, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थाईंआ। जिस साहिब रचना रची आदि, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। सो सतिगुर भगतां रखे याद, जुग जुग भुल्ल कदे ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाउँदा आया जहाज़, बण खेवट खेटा सेव कमाईआ। कलयुग अन्त सुणे फरयाद, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। ग़रीब निमाणयां करे लाड, राजे राणयां ख़ाक मिलाईआ। सो गुरमुख गुरसिख सच्चा साध, जिस साधना हरि समझाईआ। भगत भगवन्त रखे लाज, लाजावन्त सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां नाल रचया काज, कारज अनन्द इक्क वखाईआ। साहिब सतिगुर सति पुरख दा इक्को इक्क समाज, आत्म परमात्म परमात्म आत्म वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मारे आप आवाज़, हरिभगत लभ्भण किसे थाँ ना जाईआ।

✳ १८ अस्सू २०१६ बिक्रमी नसीब सिँघ दे गृह पिण्ड बोपाराय ज़िला जलन्धर ✳

दासी दास श्री भगवान, सेवक सेवक सेव कमाईआ। जोत प्रकाशी विच जहान, प्रभ अबिनाशी दया कमाईआ। बन्द खुलासी करे आण, गुरमुख भगत दए वड्याईआ। माणस जन्म रासी करे विच जहान, जीवण जुगत दए जणाईआ। पृथ्मी

आकासी खेल महान, महिमा अकथ कथ जणाईआ। सतिजुग दा सच निशान, सति पुरख निरँजण आप वखाईआ। कागद कलम होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण देवे दान, दाता दानी फेरा पाईआ। गुरमुख बणाए साचे काहन, सुरती सीता लए प्रनाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण अंदर बाहर करे ध्यान, निज नेत्र वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी सोहँ ढोला बण विचोला देवे गाण, गावत गावत आपणा रंग वखाईआ। चरन कँवल उपर धवल देवे माण, अभिमान रूप ना कोए वटाईआ। आवण जावण जम की चुक्के काण, लख चुरासी रिहा तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता माया ममता मिटे तुफ़ान, तोहफ़ा आपणा नाम झोली पाईआ। नाम खण्डा तेज़ प्रचण्डा तिक्खी धार हरि करतार आप टिकाए काया विच म्यान, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। सति सरोवर आत्म अन्तर अमृत देवे पीण खाण, मिठ्ठा रस इक्क भराईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण दाता पुरख बिधाता जगाए आण, तेल बाती कोए ना पाईआ। इक्क इकांती शाहो शाबासी मंडल मण्डप पावे रासी गुरमुख लेखा जाणे श्री भगवान, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ। सच संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक सेवा आप कमाईआ। दासी दास श्री भगवन्ता, सेवा साची सच कमाइंदा। लेखा जाणे आदिन अन्ता, नित नवित वेस वटाइंदा। भेव खुल्हाए जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणी कार कराइंदा। साचा धाम इक्क सुहंता, सोभावन्त सोभा पाइंदा। महिमा अकथ सुणाए अगणता, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। भगत भगवन्त मेला नार कन्ता, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। इक्क दृढ़ाए साचा मंता, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। रूप वटाए साचे सन्ता, सतिगुर आपणा खेल कराइंदा। वेखणहारा लेखा जुगा जुगन्ता, ग़रीब निमाणा हो हो फेरा पाइंदा। गुरमुख लगाए अंग जिउँ नानक अंगदा, अंगीकार आप हो जाइंदा। करे खेल सूरे सरबंग दा, शहिनशाह शाह पातशाह आपणा वेस वटाइंदा। भगत दुआरा इक्को मंग दा, दूजे दर ना अलख जगाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण लँघणा, आपणा मार्ग आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सेवा आप कमाइंदा। दासी दासा पुरख अबिनाशा, सेवक बैठा कार कमाईआ। निरगुण सरगुण वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। मंडल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड पाए रासा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर नाच नचाईआ। लख चुरासी गृह गृह मन्दिर घट घट कर वासा, निज नेत्र निज आत्म परमात्म वेखे चाँईं चाँईंआ। लेखा जाणे पवण स्वासा, स्वास स्वासां रिहा समाईआ। शब्द अगम्मी भेव खुल्हाए सच खुलासा, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। निर्मल नूर जोत प्रकाशा, प्रकाशवान इक्क हो आईआ। जुगा जुगन्तर ना कदे विनासा, अबिनाशी आपणा रूप वखाईआ। भगतां कदे ना आवे हार पासा, जिस

सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी तुट्टे फासा, फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। तोलणहारा बिन तोले मासा, रत्ती रत्त ना कोए रखाईआ। जिस दरस दिखाए साख्याता, सखी सरवर फेरा पाईआ। पार कराए कायनाता, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। दरस दिखाए शाह शाबाशा, शहिनशाह आपणा रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण पूरी करे पूरब आसा, आसा तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक साची सेव कमाईआ। दासी दास श्री भगवान, सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। चरन कँवल कँवल चरन देवे इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। बोध अगाधा नाम ज्ञान, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म सति निशान, सति सतिवादी दए वखाईआ। एका मन्दिर सुहाए सच मकान, घर घर विच डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा इक्को इक्क समझाईआ। दासी दास सेवक सेवा घाल, घाली घाल लेखे पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक्क जणाइंदा। निरगुण सरगुण चले नाल नाल, जगत विछोड़ा ना कोए रखाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। हरिजन वेखे साचे लाल, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। फल लगाए काया डाल, पत्त डाली आप महकाइंदा। लेखा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। नाता तोड़ काल महांकाल, महिमा आपणी आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, चाल
११२३ निराली इक्क रखाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क प्रगटाइंदा। भगत वछल हरि दीन दयाल, ११२३
१२ दीनन आपणा रंग रंगाइंदा। लख चुरासी विच्चों भाल, गुरमुख सज्जण आप उठाइंदा। इक्को चाढ़े रंग गुलाल, गुलशन १२
आपणा आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाइंदा। दासी दास साची सेवा, बण सेवक आप कमाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह अभेद अभेवा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन मेला वड देवी देवा, देव आत्म पर्दा लाहीआ। अमृत रस अनडिठ खुवाए सच्चा मेवा, अमिउँ रस आपणा जाम प्याईआ। आदि जुगादि सदा निहकेवा, निहचल धाम दए वड्याईआ। कौस्तक मणीआं मस्तक लाए थेवा, चौदां रतन नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा साची सेव कमाईआ। दासी दास हरि सेवक ठाकर, आपणा खेल कराइंदा। वणज वपारी बण सौदागर, सौदा इक्को हट्ट विकाइंदा। भगत भगवान देवे आदर, आदरश आपणा इक्क वखाइंदा। किरपा करे करीम कादर, कुदरत कादर वेस वटाइंदा। वेखणहारा काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर सेवा खुशी मनाइंदा। दासी दास सेवक खुशहाल, खुशी इक्को इक्क रखाईआ। आदि जुगादि जुग जुग गुरमुख सज्जण सच्चे भाल, भल्ल आपणी दए वड्याईआ। एका वस्त नाम धन माल,

सच ख़ज़ीना झोली पाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह आपणे संग रखाईआ। बण विचोला दीन दयाल, दीनन साची सेव कमाईआ। गुरमुख कदे ना होए बेहाल, बिहबल हो ना दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा करे सच्चा माहीआ। दासी दास सेवक सेवा करे माही, महांबली नाउँ धराइंदा। आदि जगादि जुग जुग बणया रहे राही, बण पाँधी फेरा पाइंदा। लोकमात मार झात, त्रैगुण माया तोड़नहारा जगत फाही, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। ग़रीब निमाणे भगत भगवन्त उठाए फड़ फड़ बांही, फड़ बांहों गले लगाइंदा। दुरमति मैल दीनां नाथ आपणी हथ्थीं धोवे शाही, निर्मल उज्जल मुख कराइंदा। एथे ओथे दो जहान बणे पिता माई, बालक आपणी गोद सुहाइंदा। वेखणहारा थाउँ थाईं, निरगुण सरगुण मेला चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा बण चाकर आप कमाइंदा। दासी दास सेवक सेवा चाकर चाक, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी उच्च महल्ले बैठा रिहा झाक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण दुआरे सच दलारे गुरमुख बैठे साचे साक, सज्जण आपणे वेख वखाईआ। असव घोड़े सच पलाणे सोलां कलीआं उपर मार पलाक, दो जहानां वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी नाम निरँकारा सति सतिवादी देवे डाक, बिन तार सतार हिलाईआ। अन्तिम अन्त श्री भगवन्त गुर अवतार पीर पैग़म्बर पूरा

११२४ करे भविख्त वाक्, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख उत्तम रखे ज़ात, ज़ात आपणी दए समझाईआ । ११२४

१२ सति सरूपी चरन कँवल बंधाए नात, नाता इक्को इक्क जुड़ाईआ। सच सिँघासण सुहाए आत्म खाट, सेज सुहञ्जणी डेरा १२

लाईआ। दूर दुराडा पन्ध मुकाए वाट, नेरन नेरा फेरा पाईआ। राह तक्के बैठा पत्तण घाट, माहीगीर सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा कर कर खुशी मनाईआ। दासी दास सेवक सेवा कर कर, हरि जू आपणी खुशी मनाइंदा। दर दरवेश फिरे दर दर, घर घर आपणी अलख जगाइंदा। भगत भगवान साचे फड़ फड़, फड़ फड़ बांहों गले लगाइंदा। डूँघी कंदर काया मन्दिर अंदर वड़ वड़, आप आपणा पर्दा लाहइंदा । लेखा जाणे सीस धड़ धड़, निधड़क आपणा वेस वटाइंदा। पंच विकारे नाल लड़ लड़, कूड़ी क्रिया मोह चुकाइंदा। गुरसिख प्रेम प्रीती अग्नी सड़ सड़, आपणा तन ना कोए रखाइंदा। शब्द अगम्मी इक्को पढ़ पढ़, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़ खड़, खण्डा खड़ग हथ्थ उठाइंदा। करे खेल नरायण नर नर, नर नर आपणा रूप वटाइंदा। आपे जन्मे मर मर, मर मर जन्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। आप नुहाए साचे सर सर, सर सरोवर इक्क वड़्याइंदा। लेखा जाणे चोटी जड़ जड़, अद्धविचकारे फेरा पाइंदा। तोड़नहार हँकारी गढ़ गढ़, निवण सो अक्खर इक्क समझाइंदा। ग़रीब निमाणयां नाम भण्डारे आपे भर भर,

भर भण्डार वेख वखाइंदा। निरगुण भउ चुकाए भय डर डर, भयानक रूप ना कोए रखाइंदा। निरगुण निरँकार निरवैर बिन पैरां आए चल चल, बिन हथ्थां हथ्थ मिलाइंदा। आदि जुगादी अछल अछल छल, वल छल धारी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगतन सेवा आप कमाइंदा। दासी दास सेवक सेवा करे एकँकार, ओंकार दया कमाईआ। आपे वेखे सच पसार, बण पसारी फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे आधार, अक्खर अक्खर कर समझाईआ। लेखा जाण गुर अवतार, पीर पैग़म्बर रिहा जगाईआ। सेवा करने आया आप निरँकार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, प्रचण्डा रिहा चमकाईआ। दो जहानां पावे सार, लोआं पुरीआं खोज खोजाईआ। रवि ससि दए उठाल, मंडल मण्डप नाल रलाईआ। लख चुरासी करे विचार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। भगतन देवे आप दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। साचा मार्ग इक्क सिखाल, साची सिख्या दए समझाईआ। सेवक रूप बण दलाल, जगत दलाली इक्क कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता ठांडा सीता, आदि जुगादी जाणे रीता, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। दासी दास देस देसन्तर, सेवक साची सेव कमाईआ। आदि नमो निमस्कार जणाए साचा मन्त्र, नर निरँकारा करे पढ़ाईआ। वसणहारा देस दसन्तर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर आपणा
११२५ डेरा लाईआ। लहिणा देण चुकाए गगन गगनंतर, ज़िमीं असमान बणाई जिस बणतर, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ महिमा अकथ आप समझाईआ। आदि जुगादि निरगुण रूप सदा निरंतर, माया ब्रह्म ना कोए समाईआ। सृष्ट सबाई आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी गुरदेव देवा देवे इक्को मन्त्र, मन्त्र आपणा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन एका घर दए वड्याईआ। भगत नाम नमो सति, सति सतिवादी आप जणाइंदा। एकँकार हो प्रगट, ओंकार आपणी करनी आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह हट्ट, सौदा इक्को इक्क विकाइंदा। आत्म परमात्म देवे मति, ब्रह्म मति इक्क समझाइंदा। सति सतिवादी साचा नत, सोहँ आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवान इक्को नत, नाता आपणे नाल जोड़ाइंदा। एका मन्दिर जायण वस, सच मन्दिर इक्क वड्याइंदा। इक्को अमृत इक्को रस, रस रसीआ इक्क प्याइंदा। इक्को प्रकाश करे पुरख समरथ, समरथ आपणी धार वखाइंदा। इक्क चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। इक्को मार्ग देवे दस्स, दो जहानां राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान देवे दान, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। भगत भगवान एका नाउँ, नर निरँकारा आप जणाईआ। एका पिता एका माउँ, एका मन्दिर सोभा पाईआ। एका पकड़नहारा बाहों, एका मार्ग रिहा लाईआ। एका देवे ठंडी छाउँ, शहिनशाह इक्को दया कमाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। सेवा करे हरि गोपाल, गोबिन्द आपणा खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी कर कर भाल, नव नौ चार खोज खोजाइंदा। चार चार बण दलाल, पंचम पंच पंच मेल मिलाइंदा। लेखा जाण हक़ हलाल, हक़ीक़त आपणे रंग रंगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी जन भगतां फिरदा रिहा नाल नाल, नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम खेल कराइंदा। कलयुग अन्तिम सेवक बणया आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। धुरदरगाही धर दा लै के आया जाप, आपे ढोला रिहा गाईआ। पहलों गुरसिखां गुरमुखां जन्म जन्म दा उतारे पाप, फेर आपणी बूझ बुझाईआ। इक्को इक्क सुणाए पूजा पाठ, मन्त्र इक्को नाम वड्याईआ। बण सेवक पार लँघाए घाट, बेड़ा आपणा आप चलाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात, शरअ मज़्हब दए मिटाईआ। निरगुण सरगुण पुच्छणहारा वात, दुखियां दुःख दए गुआईआ। भगत भगवन्त वेखे खेल तमाश, हरि ख़ालक आप वखाईआ। आपणी पूरी करन आया आस, मिल भगतां ख़ुशी मनाईआ। जन भगतां रखे आपणे पास, आपणा पासा भगतां वल बदलाईआ। इक्को कम्म हरि जू अन्तिम रख्या खास, गुर अवतारां पूरी ख़ाहस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन मेला चाँईं चाँईंआ। सेवक बण के आया राम, रम्मईआ आपणी खेल कराइंदा। दासी दास दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप उठाइंदा। कलयुग अन्तिम विगड़ गया निज़ाम, शहिनशाह कोए नज़र ना आइंदा। झूठी मस्ती पीता जाम, अमृत रस ना कोए चखाइंदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले होया हराम, मस्तक टिक्का ना कोए लगाइंदा। सोहे धाम ना कोए भूमिका अस्थान, तट किनारा ना कोए वड्याइंदा। फिरी दरोही गाउँ ग्राम, नगर खेड़ा सोभा कोए ना पाइंदा। सच प्रकाश ना कोए भान, कलयुग अन्त अन्धेरा छाइंदा। सच सुच्च धर्म ना कोए निशान, कूड़ी क्रिया रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म गीत गोबिन्द कोए ना गाण, रसना जिह्वा जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी किसे ना मिल्या आण, साध सन्त नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बिन भगतां प्रभ जू किसे ना देवे दान, साचा हट्ट नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग अन्तिम सेवक सेवा करे श्री भगवान, बण निमाणा वेस वटाइंदा। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, आपणी सोझी आप जणाइंदा। दर दर घर घर फिरे बण बाल अञ्याण, बुध अञ्याणी आप जणाइंदा। गुरमुख वेख सच मकान, बण निमाणा अंदर डेरा लाइंदा। ख़ाली झोली अग्गे रख मंगे दान, धन्न गुरमुख जो प्रेम एका झोली नाल भराइंदा। जुग जन्म दा विछोड़ा कटे आण, दोहरा आपणा आप सुणाइंदा। हनोरा देवे सर्ब जहान, बांका छोहरा हरि जू नज़र किसे ना आइंदा। ढोरां ढोवे रविदास चमारा हो मेहरवान, मेहरवान आपणी

मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। कलयुग अन्त कर परवान, भगत भगवान वेखे आण, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। रल मिल सखीआं मंगल गाण, पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, घर घर मन्दिर खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दासी दास आपणा नाउँ धराइंदा। दासी दास ठांडा सीता, हरि सतिगुर सेव कमाईआ। जन भगत दुआर पीसण पीठा, आत्म परमात्म एका झोली रिहा भराईआ। सति सतिवादी सच चलाई रीता, रीतीवान दए समझाईआ। ऊँच नीच राउ रंक लेखा जाण हस्त कीटा, इक्को भोजन नाम छकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची सखी पुच्छे हाल, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। जन्म जन्म दा विछोड़ा कटे काल, काल नगारा ना कोए वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाइंदा। साची सेवा गुरमुख दुआर, दर दरबारी आप कराईआ। निरगुण बणे दर भिखार, लेखा एको मंग मंगाईआ। गुरसिख गुरमुख दर्शन देणा वखाल, पेखत पेखत आपणी खुशी जणाईआ। तुध बिन किसे दुआरे हरि जू ना होए निहाल, निहचल आपणा आवण जाण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा करे बेपरवाहीआ। भगत भगवान रिहा दस्स, सुण साहिब मेरे गोसाँईंआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, जिउँ भावे तिउँ
११२७ चलां तेरी रज़ाईआ। जुग चौकड़ी छिन मातर दरस दे दे जन भगतां कोलों गया नस्स, जगत जीव देण दुहाईआ। कलयुग ११२७
अन्तिम साचा मार्ग दस्स, जिस बिध होण ना तेरीआं जुदाईआं। पुरख अबिनाशी अग्गो दोवे जोड़ कहे हथ्थ, साचे भगत
तेरीआं वड़याईआं। तेरे कोलों कदे ना जावां नट्ठ, दो जहानां तेरे चरनां हेठ दबाईआं। मैं तेरे अंदर गया वस, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आया। तेरी करनी अंदर गया फस, करता आपणी करनी ना कोए कमाया। तेरे प्रेम पाई नथ्थ, सचखण्ड दवार लोकमात सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भुल्ल रिहा बख्शाया। पुरख अबिनाशी हो निमाणा, भगत अग्गे करे अरज़ोईआ। चार जुग दा खेल महाना, पूरब दए समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या विच जहाना, नित नवित वेस वटाईआ। निरगुण निरगुण गउँदा रिहा गाणा, बोध ज्ञान कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। हरिभगत दुआर तेरा वड, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। दो जहानां आए छड्ड, घर साचे जोत जगाइंदा। लख चुरासी नालों कर कर अड्ड, आप आपणा मेल मिलाइंदा। पार किनारा कर कर हद्द, हद्द आपणी आप समझाइंदा। जुग विछड़े चरन दुआरे सद्द, सदके वारी घोली घोल घुमाइंदा। लेखा जाणे अन्धेरी डूँघी खड्ड, कुण्डा खिड़की आपे लाहइंदा।

११२८ १२

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक्क वसाइंदा। सच दुआर वसे मात, मातर भूमी दए वड्याईआ। जिस दुआरे साहिब सतिगुर होया दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। जुग जन्म दी पूरी कर आस, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। दरस दिखाए साख्यात, सख़ी काहन मेल मिलाईआ। गुरमुख बणाए पारजात, परम पुरख बेपरवाहीआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, सौदा इक्क हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन देवे माण वड्याईआ। भगत दुआर सच मुनारा, मोह मुहब्बत इक्क जणाईआ। जिस गृह वसे आप निरँकारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। आदि जुगादि शब्द धुन्कारा, राग अगम्मी रिहा अलाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सुनणहारा, सुणा आपे आपणा रंग रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैण रोवण ज़ारो ज़ारा, गिरयाज़ार कर कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी खेल करे न्यारा, निरगुण आपणी धार चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या वारो वारा, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। लख चुरासी खोल्ह किवाड़ा, आपणा मन्दिर दए प्रगटाईआ। गुरमुख गुर गुर कर प्यारा, गुरसिख संग निभाईआ। सन्तां देवे सति सहारा, साची सिख्या कर पढ़ाईआ। भगतां मिल्या आप निरँकारा, भगवन आपणी दया कमाईआ। महल अटल वेखे सच मुनारा, सति सतिवादी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर बह बह खुशी मनाईआ। साचे मन्दिर हरि जू वड़या, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। साचे पौड़े आपे चढ़या, डण्डा हथ्थ ना किसे वखाइंदा। आपणी करनी आपे करया, करता पुरख खेल वखाइंदा। भगत भगवान आपे फड़या, फड़ फड़ आपणे अंग लगाइंदा। गुरसिख नसीबां अंदर आपे सड़या, गुरमुख नसीब आपणे हथ्थ रखाइंदा । बेनज़ीर शाह हकीर पीरन पीर गहर गम्भीर सच महल्ले आपे खड़या, खड़ खड़ आपणा दरस दिखाइंदा। अद्धविचकार कदे ना अड़या, अग्गे हो किसे ना फड़या, बिन किरपा हथ्थ किसे ना आइंदा। सच भण्डारा इक्को भरया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बण सेवक आप वरताइंदा। सेवक सेवा करे स्वामी, सोभा आपणे हथ्थ रखाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घट घट रिहा समाईआ। जुग चौकड़ी शब्द अगम्मी गाए बाणी, सतिजुग साचा सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। आत्म परमात्म राजा राणी, तख़्त निवासी एका घर वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर महिमा अकथ गायण कहाणी, कह कह आपणी खुशी मनाईआ। परवरदिगार बेपरवाह प्रगट होया इक्क लासानी, निशानी नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम चढ़या आप जवानी, जोबन आपणा आप रिहा हंढाईआ। ना कोई पुरख नार जनानी, रूप रंग ना कोए रखाईआ। आपे मर्द मर्दानी, सच मर्दानगी रिहा कमाईआ। करे खेल श्री भगवानी, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। ना कोई अल्फी ना कोई शेरवानी, बस्त्र

इक्को नाम हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दुआरा करे परवानी, परम पुरख एका फेरा पाईआ। गुरसिख गुरमुख मिल्या इक्को हाणी, मिल हाणीआं आपणी खेल खलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दिता इक्को पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को इक्क रखाईआ।

✳ १८ अस्सू २०१६ बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह ललीआं कलां ज़िला जलन्धर ✳

सो पुरख निरँजण सच सुल्तान, हरि सतिगुर सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल महान, अलख अगोचर अगम्म अथाह आप कराइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। अबिनाशी करता खेल महान, हरि ख़ालक आप कराइंदा। श्री भगवान सच निशान, सति पुरख निरँजण हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। सचखण्ड दवार सच मकान, सोभावन्त आप सुहाइंदा। मुकामे हक़ नूर महान, नूर नुराना डगमगाइंदा। परवरदिगार बेमुकाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल परवरदिगार, बेऐब आप कराईआ। वसणहारा धाम न्यार, दरगाह साची आसण लाईआ। सचखण्ड दवार खोल्ह् किवाड़, घर वसे साचा माहीआ। थिर घर जाणे आपणी कार, करनी करता आप कमाईआ। निरगुण निरगुण कर पसार, निरवैर वेखे चाँईं चाँईंआ। मूर्त अकाल हो उज्यार, अजूनी रहित डगमगाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाईआ। धुर फ़रमाना देवणहार, सच संदेसा इक्क अल्ह्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपार, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। निरगुण सरगुण पावे सार, सरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। दो जहानां खोल्ह् किवाड़, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पर्दा लाहइंदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकार, जै जैकार आप सुणाइंदा। सुत दुलारा सेवादार, साची सेवा इक्क कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसार, आप आपणा बंधण पाइंदा। नाम निधाना श्री भगवाना शब्द सुत दस्सणहार, सति सतिवादी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। करनी करे हरि करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। चौदां लोकां नूर उज्यारा, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। चौदां विद्या दे हुलारा, चौदस नूर चन्द रुशनाईआ। एका चौका कर प्यारा, घर साचा मेल मिलाईआ। चौथे घर वसे आप निरँकारा, एक ओंकार एका आपणा रंग वटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, अलख अगोचर अथाह चलाइंदा। सचखण्ड निवासी आपे जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। परवरदिगार बेड़ा बन्न्, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणे कंध उठाइंदा। वसणहारा बिन छप्परी छन्न, सच दुआरा इक्क सुहाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, निरगुण जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी आपे कर, हरि करता खेल कराईआ। निरगुण जोत आपे धर, नूर नुराना डगमगाईआ। सरगुण रूप अंदर वड़, सति सतिवादी वेस वटाईआ। लख चुरासी भाण्डे घड़, घड़ घड़ आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, आदि पुरख कराया। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, थिर घर आपणा बंक सुहाया। जनणी जणे सुत दुलारा, पूत सपूता गोद उठाया। वणज कराए इक्क वपारा, दरगाह साची हट्ट चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए जणाया। साची करनी हरि करतार, आदि आदि जणाईआ। सुत दुलारे कर प्यार, साची सेवा इक्क समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए अधार, आदरश इक्क वखाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी घाड़न घड़ बण ठठयार, रक्त बूंद मेल मिलाईआ। तत्तव तत्त

११३० कर पसार, ब्रह्म मति इक्क जणाईआ। मन मति बुध खेल अपार, हरि ख़ालक ख़लक वखाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, ११३०

जगत तृष्ना विच समाईआ। लेखा जाण बहत्तर नाड़, रत्ती रत्त रत्त महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१२ कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सुत दुलारे साची सेव लगाईआ। सुत दुलारा सेवा घाल, हरि अग्गे सीस झुकाइंदा। जुग १२

चौकड़ी खेल निराल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्रितपाल, बण प्रितपालक वेख वखाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत जगत जणाइंदा। कर खेल श्री भगवान, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। सच वखाए इक्क निशान, धर्म दुआरे इक्क झुलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे नाम ज्ञान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रंग वटाइंदा। नर नरेशा नौजवान, ब्रह्मा विष्न महेषा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी वड संसारा, हरि सतिगुर आप कराईआ। आदि जुगादी लै अवतारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। गुर गुर देवे नाम आधारा, नाम अमोलक झोली पाईआ। शब्दी नाद धुंन जैकारा, अनहद राग सुणाईआ। अमृत सरोवर ठंडा ठारा, निझर झिरना दए झिराईआ। दीआ बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताला, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ।

सति सरूपी बण दलाला, लोकमात वेख वखाईआ। लेखा जाण शाह कंगाला, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ। गुर अवतारां देवे नाम सच्चा धन माला, सच ख़ज़ाना इक्क लुटाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाला, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाला, वेद कतेब भेव ना राईआ। लख चुरासी वेखे फल लग्गा डाला, अण्डज जेतज उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, जुग करता आप कराइंदा। सृष्ट सबाई देवे दान, आत्म परमात्म झोली पाइंदा। लेखा जाण दो जहान, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां नाच नचाइंदा। रवि ससि कर भान, नूरी जोत जोत जगाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमान, बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान, लिख लिख लेखा आप दृढ़ाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी बोल ज़बान, ज़ेर ज़बर मेल मिलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर लोकमात बणाए विधान, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी देवे इक्क ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। नाम सति श्री भगवान, शब्द शब्दी सच निशान, दो जहानां आप फड़ाइंदा। कलयुग सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेखे आण, वेखणहारा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी शहिनशाह आपणा रूप वटाइंदा। शहिनशाह हरि रूप न्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। लख चुरासी पार किनारा, जुग चौकड़ी खेल रचाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या वारो वारा, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। लेखा जाणे तेई अवतारा, दर दुआरे लए बहाईआ। भगत अठारां दए सहारा, भगवन साची बूझ बुझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दए हुलारा, साचा हुजरा दए वखाईआ। नानक गोबिन्द कर प्यारा, सचखण्ड मेला सहिज सुभाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार रिहा जणाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, गुर गुर रूप वटाईआ। नाउँ धरा निहकलंक नरायण नर अवतारा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। प्रगट होए अलख अगोचर अगम्म अपारा, आपणा पर्दा दए उठाईआ। हक़ हक़ीक़त लाशरीक बोल जैकार, जै जैकार करे खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी कार कमाईआ। निरगुण कार करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सो पुरख निरँजण फेरा पाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। एकँकारा खोल्ह किवाड़, दो जहानां वेखे थाउँ थाईंआ। आदि निरँजण कर उज्यार, निरगुण जोती जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबार, दर दुआरा इक्क वड्याईआ। श्री भगवान पावे सार, परम पुरख बेपरवाहीआ। पारब्रह्म

११३१ १२

प्रभ बण बण सेवादार, साची सेवा आप कमाईआ। ब्रह्म लेखा जाणे जुग चार, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। आत्म परमात्म दए आधार, पारब्रह्म प्रभ मेला सहिज सुभाईआ। ईश जीव करे शंगार, जगदीश आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी गए हार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नज़र ना आए परवरदिगार, पर्दा सब ते रिहा पाईआ। एका भुलया एकँकार, घर घर वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ, श्री भगवान आप रखाइंदा। निरगुण रूप हो प्रतख, दो जहानां वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर सचखण्ड दवारे आपे सद्द, सद्दा नाम इक्क दिवाइंदा। ज़ात पात दीन मज़्हब पार किनार हद्द, हदूद अरबा ना कोए वंडाइंदा। निरगुण निरगुण उपजाए साची यद्द, विश्व आपणा हुक्म वरताइंदा। कूड़ कुड़यारा विच संसार लोकमात अन्तिम जाणा छड्ड, सगला संग ना कोए निभाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जो बैठे रहे अड्ड, अड्ड फड़ बांहों मेल मिलाइंदा। लहिणा जणाए शब्द अकथ, सोहँ ढोला आपे गाइंदा। गढ़ हँकारी बुरज जाणा ढड्ड, पुरख अबिनाशी आपे ढाइंदा। लेखा जाणे शिवदुआला मन्दिर मस्जिद मट्ठ, गुरदवार आपणा रंग रंगाइंदा। नज़री आवे घट घट, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। देवणहारा ब्रह्म मति, मनमति दूर कराइंदा। नाम जपाए इक्को सच्च, सच समग्री झोली पाइंदा। नाता तोड़े काया माटी झूठे कच्च, कंचन रूप आप वखाइंदा। मन मनुआ ना जाए नच्च, नट्टुआ स्वांग ना कोए वरताइंदा। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थ, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम सत्थर गया लथ्थ, सफ़ा सब दी आप उठाइंदा। नाम मधाणे देवे मथ, लख चुरासी गेड़े विच भुवाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार साध सन्त श्री भगवन्त इक्क दुआरे कर इकट्ठ, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। सच संदेसा नर नरेसा इक्को देवे ब्रह्म मति, तत्तव तत्त आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग लहिणा आप चुकाइंदा। जुग लहिणा चुक्के मात, हरि सतिगुर आप चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दिती दात, सो वेखे सच्चा माहीआ। जिस बणाई ज़ात पात, सो अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैग़म्बर गाउँदे गए गाथ, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। जिस नूं मन्नदे गए त्रिलोकी नाथ, कोटन कोटि सेव लगाईआ। जिस दी सेवा राम बेटा दसराथ, दहि दिशा वेख वखाईआ। जिस दी चरन धूढ़ी मंगे आदि, आदि शक्ति साहिब सूरा झाकी रिहा वखाईआ। जिस तों ईसा मूसा मंगदे रहे नज़ात, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जिस नूं मुहम्मद कहे मेरी ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाईआ। जिस दा सच संदेसा कलमा इलाही कायनात, नबी रसूल करन

११३२
१२

पढ़ाईआ। जिस दा लख चुरासी बाग़ीचा बाग़ात, सो बाग़वान फेरा पाईआ। जिस दी अञ्जील कुरान शरअ शरीअत करे सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जिस दी आदि जुगादि गुर अवतार पीर पैग़म्बर इक्क जमात, इक्को अल्फ़ रिहा पढ़ाईआ। ये युकती रखे आपणे हाथ, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। अन्तिम बैठा आपणे घाट, घाटे सब दे वेख वखाईआ। करे खेल पुरख समराथ, समरथ आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। आपणी करनी करे जग, जग जीवण दाता खेल खलाइंदा। प्रगट हो सूरा सरबग, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। लख चुरासी जीव जंत होए हँस कग्ग, काग हँस ना रूप वटाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप रही मच, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। मन वासना सृष्ट सबाई रही नच्च, कलयुग डौरू डंक वजाइंदा। हउमें हंगता माया ममता कोलों कोई ना सक्या बच, शाह शहिनशाह मूँह दे भार सुटाइंदा। साध सन्त बिन ढाइउँ गए ढढु, आपणा बल ना कोए धराइंदा। सब दा तुट्टा धीरज जत, सति सन्तोख ना कोए रखाइंदा। बहत्तर नाड़ी उब्बले रत्त, काम क्रोध लोभ मोह हँकार अग्नी रूप वटाइंदा। कोए ना रखे किसे पत्त, गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुख पर्दा आपणा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, आलमीन नूर खुदाईआ। बिस्मिल रूप आपे मिला, मिल मिल खुशी मनाईआ। आपे नाउँ जणाए इल लिल्ला, इस्म आज़म कर पढ़ाईआ। आपे तीर चढ़ा चिल्ला, सच कमान हथ्थ उठाईआ। आपे बस्त्र पहने नीला, नीली धार पार कराईआ। आपे होए छैल छबीला, शाहसवार वडी वड्याईआ। आपे वेखे पीर पैग़म्बर आपणा आप कबीला, करबला आपणा फेरा पाईआ। आपे देवणहारा सच दलीला, दलील इक्को इक्क रखाईआ। आपे बणे पीर पैग़म्बर सच वसीला, वसल आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। निरगुण रूप अपार अलख, निरँकार खेल खलाइंदा। सच सरूपी हो प्रतख, गुर अवतार भेव चुकाइंदा। पीर पैग़म्बर मार्ग दस्स, रैहबर आपणा नाउँ समझाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दो जहान वेखे नट्ठ नट्ठ, चौदां तबक चरनां हेठ दबाइंदा। दुरमति मैल जगत अन्धेर रिहा कट, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। साचे सन्तां देवे इक्को मति, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। गुरमुखां जाणे मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिखां चरन कँवल बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क सुणाए पूजा पाठ, अन्तर मन्त्र आपे गाइंदा। सगल वसूरे जायण लाथ, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। कोटन कोटि उच्चे टिल्ले मन्दिर डूँग्घी

कंदर लभ्भदे घाट, अठसठ नज़र किते ना आइंदा। बण बण पाँधी कट दे वाट, बण खण्ड फेरा जगत वखाइंदा। किसे ना मिले पुरख समराथ, ख़ाली हथ्थ सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नूर आप धराइंदा। आपणा नूर कर उज्यारा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। नव नौ चार पार किनारा, नईया कलयुग रिहा डुबाईआ। लख चुरासी वेखे वेखणहारा, बिन नेत्र नैण नज़र उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चारों कुण्ट धूंआंधारा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार करे पुकारा, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। पीर पैग़म्बर दर दरवेश बणे भिखारा, गल अल्फ़ी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी बणत आप बणाईआ। बणत बणाई कलयुग मात, सो पुरख निरँजण खेल खलाइंदा। मेटणहार अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चढ़ाइंदा। भगत भगवन्त सुणाए साची गाथ, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। अंदर बाहर गुपत ज़ाहर निरगुण सरगुण चले साथ साथ, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। साचा मार्ग श्री भगवन्त, कलयुग एका एक जणाईआ। दो जहानां मणीआ मंत, मन्त्र आपणा नाम
११३४ दृढ़ाईआ। ज्ञान बोध परमात्म पंडत, साची पट्टी दए समझाईआ। जिस दा कोई ना दिसे अंक, अंकड़ा रूप ना कोए वटाईआ। ११३४
आत्म परमात्म मेल मिलाए नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। भगत भगवान बणाए बणत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। देवे वड़याई विच जीव जंत, लख चुरासी माण गंवाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्को लाईआ। साचा मार्ग सच दुआर, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन जै जैकार, लोक परलोक नाअरा इक्को लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, करोड़ तेतीसा सीस झुकाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज गीत गोबिन्द गाए आपणी वार, वारता आपणी आप जणाइंदा। भगत भगवन्त दए आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साचे सन्तां खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। गुरमुख गुर गुर कर प्यार, काया घोर अन्धेरा आप मिटाइंदा। गुरसिख साचे लए उठाल, बांहों फड़ गले लगाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह एका घर वखाइंदा। सतिगुर शब्द बण दलाल, एकँकारा राह चलाइंदा। जल्वा नूर नूर जलाल, जुम्माल आपणा आप वखाइंदा। सति सतिवादी सच वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर इक्क खुल्हाइंदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, राए धर्म मुख भुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा राह समझाइंदा। सतिजुग

साचा राह एकँकार, एका एक जणाईआ। जिस घर वसण गुर अवतार, सो मन्दिर दए वखाईआ। जिथे आदि जुगादि एका नाद वज्जे धुन्कार, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। छत्ती रागां वसे बाहर, वेद कतेब महिमा कथन ना पाईआ। जुगा जुगन्तर करे कराए सच विहार, बिवहारी आपणी कार कमाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, फड़ बांहों गले लगाईआ। साचा मन्दिर दए वखाल, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस घर कबीर, जोलाहा वजाए ताल, नानक नानक रिहा ध्याईआ। नानक मेला मिले आण, निरगुण नानक नज़र कोए ना पाईआ। गोबिन्द मेला पुरख अकाल, अकाल पुरख विच समाईआ। तिस दुआरे गुरमुख सज्जण लए बहाल, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी विच्चों कर कर भाल, ग़रीब निमाणयां मेल मिलाईआ। कलयुग चली अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब शास्त्र सिमरत पुराण भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग सच्चा एका एक, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। पुरख अकाल साची टेक, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। गुर गोबिन्द सूरा मेटे लेख, भगत भगवान खुशी मनाइंदा। नानक लेखा जाणे लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। हरि का रूप मुछ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आइंदा। दर बैठे आण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, बण दरवेश सीस झुकाइंदा।
११३५ गुर अवतार पीर पैग़म्बर किसे ना चले कोई पेश, हुक्मे अंदर सर्ब फिराइंदा। सदा सदा सद करन इक्क आदेस, आदेस इक्को घर वखाइंदा। विष्नूं करे ध्यान उत्ते सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग रूप वटाइंदा। सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निराकार ११३५
१२ १२
रिहा भेज, सोहँ ढोला एका गाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म खोले आपणा भेव, दूई पर्दा ना कोए रखाइंदा। शंकर करना साचा हेत, हित आपणा रूप वखाइंदा। जन भगतां वसे नेतन नेत, निज घर आपणा डेरा लाइंदा। कलयुग अन्तिम खेडण आया खेड, खेडणहारा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करने योग, सो पुरख निरजंण आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि जुगादी जुग चौकड़ी कर संजोग, आपणा विछोड़ा दए मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आत्म सेजा भोगे भोग, भस्मड़ आपणा रूप धराईआ। लेखा जाणे चौदां लोक, परलोक आपणा हुक्म जणाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां सुणाए सच सलोक, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। पतिपरमेश्वर ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। आदि पुरख आदि जुगादी निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। सचखण्ड वसे साचे कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण आपणा फेरा पा, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। जन

भगतां बणे आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। साची सिख्या दए समझा, सोहँ ढोला इक्क सुणाइंदा। आत्म परमात्म मेला दए मिला, गुर चेला रंग रंगाइंदा। सज्जण सुहेला साचे मन्दिर दए बहा, काया अंदर कुण्डा लाहइंदा। वक्त वेला इक्को दए जणा, वार थित वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग वेखे साचे सन्त, सतिगुर आपणा फेरा पाईआ। शब्द जणाए महिमा अगणत, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। पार किनार लख चुरासी जीव जंत, सरनगति दए समझाईआ। मेल मिलाए आदि अन्त, जुग जुग आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा लेखे लाईआ। कलयुग लेखा अन्तिम लाउणा, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। सच दुआर इक्क सुहाउणा, धुर दरबार वज्जे वधाईआ। लोकमात भेव खुलाउणा, पर्दा आपणा दए उठाईआ। जोती नूरा इक्क जगाउणा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। साचा खेड़ा इक्क वसाउणा, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। गोबिन्द पूत सपूता आप उठाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड दवार आप सुहाउणा, सोभावन्त आसण लाईआ। महिमा अगणत साचा ढोला आपे गाउणा, गा गा खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे कल, हरि आपणी दया कमाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदा रिहा वल छल, अछल अछल भेव कोए ना आइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, अन्तिम लोकमात फेरा पाइंदा। जोती जोत दीपक गया बल, अज्ञान अन्धेर ना कोए रखाइंदा। सच सिँघासण बैठा मल्ल, सोभावन्त आप सुहाइंदा। जोती शब्दी आपे रल, रल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपणी करनी कलयुग कार, हरि करता आप कराईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, अवतारी वेस वटाईआ। लहिणा देणा मुकाए सर्ब संसार, लख चुरासी जीव जंत आपणी झोली पाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, साचा मार्ग दए सिखाल, सुख आत्म दए समझाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दिसे ना कोए कंगाल, जगत कंगाली दए गंवाईआ। शाह सुल्तान करे बेहाल, बिहबल हो हो देण दुहाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, डौरू डंक रिहा वजाईआ। नौ खण्ड पृथमी वज्जे ताल, तलवाड़ा हथ्थ किसे ना आईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक दस्तगीर परवरदिगार नूर इलाही रहे भाल, भाल्यां हथ्थ किसे ना आईआ। पंडत पांधे पत्तरी घर घर रहे वखाल, बारां रासी कुण्डली कुण्डल विच ना कोए रखाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा पुरख अबिनाशी घट घट वासी पावणहारा सर्ब जंजाल, ना सके कोए तुड़ाईआ। प्रगट होया दीन दयाल, सति दुआरे वसे सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा इक्क रखाईआ। भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख वेखे साचे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम हरि निरँकारा, आपणी खेल कराइंदा। निहकलंक लै अवतारा, सच दुआरा इक्क जणाइंदा। कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, जूठा झूठा मोह तुड़ाइंदा। सच सुच्च जणाए जगत वणजारा, चौदां लोकां हट्ट खुल्हाइंदा। नाम अगम्मी खोल्ह भण्डारा, पुरख अबिनाशी आप वरताइंदा। गुरमुख विरला बणे वणजारा, जिस आपणी बूझ बुझाइंदा। लख चुरासी सुत्ती पैर पसारा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाइंदा। मूर्ख मूढ़ होया गंवारा, ज्ञान ध्यान ना कोए लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। आपणा खेल करे समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। जन भगतां देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। साचा मार्ग देवे हस्स हस्स, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, तृष्ना देवे जगत मिटाईआ। लहिणा देणा मुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनां उपर दए सुहाईआ। गोपी काहन मिल मिल पाए रास, मंडल रास इक्क नचाईआ। जन भगतां वसे सदा पास, हरि जू विछड़ कदे ना जाईआ। कलयुग अन्तिम लेखे लाए स्वास स्वास, पवण पवणां विच समाईआ। कटणहारा जम का फास, लख चुरासी फंद कटाईआ। सेवा करे बण बण दासी दास, सेवक आपणा नाउँ धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग भगत भगवन्त प्रगटाउँदा रिहा आपणी

११३७ शाख, शनाखत आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी अन्तिम दिसे राख, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक समाईआ। कोई नज़र ना ११३७

आए पाकी पाक, पवित रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

१२ गुरमुख सज्जण लए जगाईआ। गुरमुख सज्जण अन्तिम जाग, हरि साचा आप जगाइंदा। लोकमात निरगुण सरगुण लगा १२

भाग, हरि भागी आप वखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां जो लडाए लाड, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर देवणहारा बोध अगाध, मन्त्र नमो नमो पढ़ाइंदा। लेखा जाणे सन्त साध, भगत भगवन्त खोज खोजाइंदा। गुरमुख गुर गुर आपे लाध, आप आपणे रंग रंगाइंदा। गुरसिखां देवे साची दाद, सोहँ झोली आप भराइंदा। मेटणहारा वाद विवाद, विख अमृत रूप वटाइंदा। गृह मन्दिर अंदर धुंन अनादी शब्द अगम्मी वज्जे नाद, अनहद एका राग अलाइंदा। आत्म परमात्म निज देवे सच स्वाद, अंमिउँ रस आपणा नीर विहाइंदा। आत्म परमात्म बणे माई बाप, पिता पूत गोद सुहाइंदा। हँ ब्रह्म सोहँ साचा जाप, जीवण जुगत जगत जणाइंदा। कोट जन्म दे उतारे पाप, पापी पत्तत पुनीत आप कराइंदा। भगत भगवान बणाए सज्जण साक, सगला बन्धन आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। नर हरि नरायण निरँकार, निरगुण आपणे हथ्थ

रखे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर पूरब कर्ज़ा दए उतार, लहिणा कोए नज़र ना आईआ। आपणा फ़र्ज जाणे विच संसार, वड संसारी फेरा पाईआ। साची ग़रज़ भगतां करां दीदार, गुरमुख गुर गुर लए जगाईआ। साची तर्ज बोल जैकार, इक्को नाअरा रिहा सुणाईआ। गुरसिख तेरा हर्ज होवे ना अन्तिम वार, लख चुरासी दए वधाईआ। तेरी वछोड़े वाली मरज़ दए नवार, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। हरिजन लेखा नर निरँकारा, निरगुण निरगुण आप चुकाइंदा। वेखणहारा साढे तिन्न हथ्थ मुनारा, रविदास चुमारा नाल रलाइंदा। पावे सार डूँग्घी गारा, डूँग्घी भँवरी खोज खोजाइंदा। लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी नाड़ा, अनभउ आपणी खेल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साची वंड वंडाइंदा। सतिजुग वंडे साची वंड, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण लेखा जाणे कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड आपणा फेरा पाईआ। एकँकारा दाता दानी सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि निरँजण नूर नुराना सति सतिवाद दो जहानां इक्को चन्द, चन्द चांदना इक्क चमकाईआ। अबिनाशी करता आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सति सरूपी पावणहारा ठंड, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। श्री भगवान धुर फ़रमाण सच संदेसा गाए छन्द, सोहला ढोला आप जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरगुण जाणे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच महल्ले चढ़ चढ़ वंडणहारा वंड, थिर घर आपणी घाड़त लए घड़ाईआ। पूत सपूता एका माण रखाया, सुरत शब्द हुलारा दए लगाया, घर साचे आप बहाईआ। निरगुण निरगुण कर पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव करे उज्यारा, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। पंज तत्त लगाए अखाड़ा, लख चुरासी भर भण्डारा, लेखा जाण गुर अवतारा, पीर पैग़म्बर माण रखाईआ। निष्अक्खर वक्खर कर त्यारा, देवे विच संसारी संसारा, ब्रह्मा वेता बण लिखारा, चारे वेदां दए सहारा, चारे खाणी कर त्यारा, चारे बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी नाद सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी हो उज्यारा, निरगुण सरगुण लै अवतारा, भगवन भगतन मेल मिलाए अगम्म अपारा, सन्त दुआर अलख जैकारा, गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, गुरसिखां देवे धूढ़ी छारा, मस्तक इक्को टिक्का लाईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, निरगुण सरगुण वेखे वारो वारा, गुर अवतार पीर पैग़म्बर करन पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। रागी नादी वसे बाहरा, रूप रंग रेख ना कोए ज़ाहरा, ज़हूर नूर इक्क रुशनाईआ। आदि जुगादी परवरदिगारा, वसणहारा धाम न्यारा, सर्ब जीआं दा सांझा यारा, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। सचखण्ड सोहे सच मुनारा, थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, विच बहाए सुत दुलारा, शब्दी शब्द नाउँ प्रगटाईआ। कलयुग

११३८
१२

अन्त कर प्यारा, लोकमात करे खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची करनी आप कमाईआ। शब्द गुर वड बलकारी, बल धारी आप उठाइंदा। मेल मिलावा जोत निरँकारी, निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। बण विचोला वड संसारी, लोकमात फेरा पाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कटारी, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ फड़ाइंदा। तिक्खी रखे दोवें धारी, धार धार नाल मिलाइंदा। दो जहानां फेरे वारो वारी, बण बाढी फेरा पाइंदा। करे खेल अगम्म अपारी, अलख अगोचर भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा वेस वटाइंदा। नर हरि नरायण वेस वटाया, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। सम्बल नगर डेरा लाया, गुर गुर मेला सहिज सुभाईआ। गुर चेला एका घर वसाया, घर मेला सहिज सुभाईआ। आपणा वेला ना किसे जणाया, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। धाम नवेला इक्क वड्याआ, जिस देवे आप वड्याईआ। इक्क इकेला फेरा पाया, फिर फिर आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता, सतिजुग आपणा राह चलाईआ। सतिजुग चले राह मात, हरि सतिगुर आप चलाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देवे दात, नाम इक्को हट्ट खुल्हाइंदा। नाता तोड़े ज़ात पात, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाइंदा। मेल मिलाए कमलापात, कँवल
११३६ नैण नज़री आइंदा। बन्द किवाड़ी खोल्ह ताक, दूई द्वैती पर्दा लाहइंदा। सोहँ ढोला सुणाए साची गाथ, आत्म परमात्म ११३६
मेल मिलाइंदा। लहिणा देणा चुक्के मस्तक माथ, धूढ़ी टिक्का इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत
१२ धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी साचा काहन, करे खेल दो जहान, निरगुण १२
रूप नौजवान, जन्म मरन मरन जन्म विच कदे ना आइंदा। ना जन्मे ना कदे मरया, अजूनी जून ना कोए भुवाईआ। निरभउ हो कदे ना डरया, भय सब नूं रिहा वखाईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। सचखण्ड दवारे सच सिँघासण आपे चढ़या, सचखण्ड निवासी सोभा पाईआ। सीस जगदीस ताज धरया, दो जहानां वेखे सच्ची शाहीआ। सति सरूपी शाहो भूपी बिन रंग रूपी आपणा पल्लू आपे फड़या, ना सके कोई छुडाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त गुर अवतार पीर पैग़म्बर अक्खर इक्को पढ़या, सोहँ ढोला सब गाईआ। नानक निरगुण भाणा जरया, सरन सरनाई साची पड़या, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग वेखण आया जग, जागरत आपणी जोत जगाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआं लोआं आया लँघ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। शब्द अगम्म वजाए मृदंग, मर्द मर्दाना नाद सुणाइंदा। नाम निधान श्री भगवान जन भगतां अन्तिम देवे

वंड, लख चुरासी कोलों मुख भुवाइंदा। मेट मिटाए भेख पखण्ड, कोई ना दिसे नार दुहागण रंड, जगत रंडेपा आप कटाइंदा। दूई द्वैती ढाह कंध, गीत गोबिन्द सुणाए छन्द, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। निज घर निझ घर वासी देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच प्रगटाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, जन भगतां होए आप बख्शंद, बख्शिश आपणी आप वखाइंदा। लेखा जाणे जीउँ पिण्ड फोल फोलाए इंड ब्रह्मण्ड, नव दस आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीवां देवे इक्क ज्ञान, देव आत्म मेल परमात्म परम पुरख पतिपरमेश्वर भेव अभेद आप खुल्लाइंदा। भेव अभेव जाए खुल्ल, ख़ालक खलक दए समझाईआ। देवे वस्त नाम अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाईआ। चरन प्रीती जो जन जाए घुल, घोल घुमाई लालन आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुख गुरसिख बूटा कदे ना जाए हुल्ल, सिम्मल रूप ना कोए वटाईआ। करता कीमत पाए मुल, लहिणा देणा दए चुकाईआ। भाग लग्गे साची कुल, जिस कुल गुरमुख फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पत्त टाहणी वेख वखाईआ। पत्त डाहणी वेखे तिन्ने डाहण, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। जै देव वेखे मार ध्यान, जै जैकार इक्क समझाइंदा। इक्को बूटा फल महान, अमृत रस विच भराइंदा। कोई ना जाणे जीव अञ्याण, जुगती जगत ना कोए समझाइंदा। आदि पुरख हो प्रधान, परम पुरख वेख वखाइंदा। गुरमुख गुर गुर चतुर सुजान, सोझी आपणी आपे पाइंदा। मनमुख भुल्ले जीव अञ्याण, हरि का भेव किसे ना आइंदा। खाणी बाणी काग़ज़ कलम शाही लिख लिख दे दे गए ब्यान, बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू सर्ब छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख मेले आपणे दर, जुग जन्म दे विछड़े फड़ फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। आपणा बन्धन पाए दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे सिँघ पाल, नाम पालकी लए बहाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, महांकाल खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अंदर बाहर गुपत ज़ाहर एथे ओथे चले नाल नाल, सगला संग संग रखाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जीवण जुगती दए समझाईआ। सचखण्ड निवासी साची धर्मसाल दए बिठाल, तत्ती वा ना लागे राईआ। भगत भगवन्त साचा मन्दिर दए वखाल, बिन नेत्र नैण खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे पार कराईआ। हरिजन उतरे आपणे घाट, सतिगुर पूरा पार कराइंदा। कलयुग अन्तिम मुक्के वाट, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जिस जन सोहँ गाई गाथ, तिस जम नेड़ कोए ना आइंदा। महाराज शेर सिँघ वसे साथ, विष्नूं बह बह सेव कमाइंदा। भगवन एथे ओथे देवे साथ, सगला संग आप निभाइंदा। जै जै जैकार

११४०
१२

करन त्रिलोकी नाथ, जिस दुआरे गुरमुख जाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार सारे रल मिल सोहँ ढोला गाउण गाथ, नानक सरगुण निरगुण नानक आप पढ़ाइंदा। मेल मिलावा पुरख समराथ, सिमरन होर ना कोए जणाइंदा। इक्क दूजे दा गायण जस, भगत भगवन्त भगवान आप सालाहइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर साचे ख़ुशी मनाइंदा। श्री भगवान कर ध्यान जन भगतां गलवकड़ी पाए नस्स नस्स, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। किरपा निध ठाकर स्वामी निरगुण दाता पुरख बिधाता होए निमाणा चरनी जाए ढट्ठ, भगत दुआर इक्क सुहाइंदा। आपणी डोरी रखे भगतां हथ्थ, आपणा माण ना कोए जणाइंदा। जुग चौकड़ी होया रिहा वस, बेबस हो हो फेरा पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भगत तार कदे करे ना बस, जुग जुग अग्गे आपणा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार बंधाइंदा। समरथ पुरख खेल न्यारा, निरगुण निरगुण आप कराईआ। भगतां करे सच प्यारा, प्रेम प्रीती इक्क सिखाईआ। बण विचोला सिरजणहारा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। नाउँ रख निहकलंक नरायण नर अवतारा, सरगुण वेखे चाँई चाँईआ। जो जन चरन कँवल करे निमस्कारा, तिस आपणी गोद बहाईआ। लख चुरासी पार किनारा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त ना कोए लिखारा, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लगाए नाअरा, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी चरन कँवल देवे इक्क सहारा, दरगाह साची आप सुहाईआ। आवण जावण होए पार किनारा, दरगाह साची मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्तिम भगत भगवन्त साचे सन्त नार कन्त रूप समाईआ। नार कन्त गोसाँई ठाकर, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। घर आयां दर देवे आदर, आदरश आपणा इक्क वखाइंदा। सेवक सेवा करे नाम दोशाला देवे चिट्टी चादर, पर्दा इक्को इक्क पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम बणया आप सौदागर, लख चुरासी हट्ट वेख वखाइंदा।

लख चुरासी वेखे हट्ट, घर घर फेरा पाईआ। निरगुण रूप रिहा नट्ठ, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। वसणहारा घट घट, गृह गृह फेरा पाईआ। गुरमुख विरले जो हरि हरि नाउँ रहे रट, आत्म अन्तर ध्यान लगाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर पंडत पांधे ग्रन्थी लग्गा दूई द्वैती फट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। मणका मणका माला अठोतरी रहे रट,

मन का मणका ना कोए भुवाईआ। जीवां जंतां रसना जिह्वा देण मति, ब्रह्म मति हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग इक्को दस्स, जन भगतां हिरदे हरि जू वस, हरि के पौड़े दए चढ़ाईआ।

✳ १६ अस्सू २०१६ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह
अहिमद पुर ज़िला जलन्धर ✳

बेइतफाकी सबाई जग, जीवण जुगत ना कोए जणाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। हँस रूप होए कग्ग, काग वांग सर्ब कुरलाइंदा। सच दुआरे कोए ना बहे सज, सतिगुर नज़र किसे ना आइंदा। कूड़ी क्रिया हउमें हंगता माया ममता पीती मदि, साचा रस ना कोए चखाइंदा। नौ दुआरे पार ना होए हद्द, अद्धविचकार सर्ब कुरलाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार ख़ाली करे कोए ना हड्ड, आसा तृष्ना पल्लू ना कोए छुडाइंदा। हउमे हंगता दूई द्वैती कोई ना सके वढ्ढ, नाम खण्डा ना कोए चमकाइंदा। नानक गोबिन्द बणे ना कोए साची यद्द, विश्व रूप ना कोए वखाइंदा। काया मन्दिर अंदर डिगे अन्धेरी खड्ड, दीपक जोत ना कोए जगाइंदा। नाम निधान ना सुणे अनहद, नादी नाद ना कोए जणाइंदा। हउमे हंगता गढ़ किसे ना जाए भज्ज, भाण्डा भरम ना कोए भनाइंदा। गृह गृह वड़ी मनमति, मन का मणका ना कोए भुवाइंदा। किसे ना दिसे धीरज जत, सति सन्तोख ना कोए रखाइंदा। कलयुग घर घर गृह गृह अंदर मन्दिर बैठा घट, आपणा डौरू डंक वजाइंदा। गुरमुख विरला आत्म अन्तर हरि का नाउँ रिहा रट, बिन रसना जिह्वा गाइंदा। दोए जोड़ कर असीस चरनी रिहा ढठ्ठ, माण मोह ना कोए रखाइंदा। किरपा निध ठाकर स्वामी जिस देवे आपणी नाम वथ, तिस सति संदेस दृढ़ाइंदा। गुरमुख गुर गुर घर साचे होए इकट्ठ, दूजा घर ना कोए वसाइंदा। कलयुग खेड़ा होण वाला भठ्ठ, भट्ठी इक्को आप तपाइंदा। उलटी गेड़णहारा लठ, जुग जुग गेड़ा आप दिवाइंदा। भगत भगवान मार्ग दस्स, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। सन्तां अंदर सतिगुर वस, साचे मार्ग आपे लाइंदा। गुरमुखां देवे अमृत रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। गुरसिखां मेल मिलाए हस्स हस्स, दूई द्वैती ना कोए रखाइंदा। गुरसिख आपणे काया खेड़े अंदर वेखे नठ्ठ नठ्ठ, चोर यार नज़र कोए ना आइंदा। पंच विकारा जाए ढठ्ठ, अग्गे सिर ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जग खेड़ा वेख वखाइंदा। जग खेड़ा वेखे हरि करतार, करनी आपणी आप कमाईआ। दो जहानां धुंआंधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, कूक कूक रहे सुणाईआ। चौदां तबक करन पुकार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। चोदां लोक रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल अपार, जेरज अंड आप कराईआ। उत्भुज सेत्ज वेख करे विचार, बेपरवाह सच्चा बेपरवाहीआ। घर घर खेड़ा तपया वांग अंग्यार, साढे तिन्न हथ्थ तत्त ना कोए बुझाईआ। हरि मन्दिर रूप नजर ना आए विच संसार, संसा सागर ना कोए मिटाईआ। गुर का शब्द ना सके विचार, सतिगुर मिल्या ना सच्चा माहीआ। घर घर वड़या कूड़ कुड़यार, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। कलयुग फड़या इक्को आर, तिक्खी धार जणाईआ। साची सिख्या ना पावे कोई सार, धुर दा लेखा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेड़ा वेखे थाउँ थाईंआ। जगत खेड़ा चार दीवार, काया माटी पोच पुचाईआ। इट्टां गारा महल्ल पसार, बाढी रल मिल बणत बणाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वरन बरन विच करन पुकार, कूक कूक सुणाईआ। दूई द्वैती कोई ना सके मार, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। इक्क दूजे उत्ते करन वार, आपणा वार ना कोए समझाईआ। बिन सतिगुर कोई ना पावे सार, सृष्ट सबाई होई हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेड़ा इक्क समझाईआ। साचा खेड़ा काया गढ़, हरिजन हरि हरि आप जणाइंदा। गुरमुख वेखे अंदर वड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। भगत भगवान लए फड़, फड़ पल्लू गंढु पुवाइंदा। कूड़ी क्रिया जाए झड़, माया ममता मोह मिटाइंदा। आत्म परमात्म जाए रल, द्वैती रूप ना कोए वखाइंदा। सच संदेसा देवे घल्ल, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। दीपक जोती जाए बल, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सुरती शब्दी गुरमुख रल, रल मिल आपणी खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेड़ा आप वसाइंदा। साचा खेड़ा काया बंक, बंक दुआरी आप बणाईआ। नाता तुट्टे राउ रंक, राज राजान ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म मिले हरि जू कन्त, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग रंगीला उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, निवण सो अक्खर दए समझाईआ। ज्ञान बोध आत्म परमात्म मेल मिलावे साचा पंडत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूई द्वैती दए मिटाईआ। काया खेड़ा सच मुनार, हरि साचा सच जणाइंदा। गुरमुख सच्चा करे विचार, विचार विचार नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहर गुपत ज़ाहर, ज़ाहरा ज़हूर वेख वखाइंदा। नाद अनादी सुणे सुणाए सच्ची धुन्कार, धुंन आत्मक राग अलाइंदा।

सो मन्दिर सोहे सच दुआर, सो खेड़ा अपर अपार, झेड़ा पंच नज़र कोए ना आइंदा। पंचम मीता यार प्यारा, करे कराए सच प्यारा, आदि जुगादी इक्क अवतारा, जुग करता आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नगर खेड़ा इक्क वसाइंदा। नगर खेड़े सच वसनीक, हरि साचा आप वसाईआ। गुरमुख तेरा कोई ना दिसे शरीक, शिरक्त नज़र कोए ना आईआ। मिटे अन्धेरा कूड़ी तारीक, चन्द चांदना इक्क रुशनाईआ। सति सतिवादी सच प्रीत, प्रीतीवान दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे खेड़े दए वड्याईआ। सो खेड़ा सोभावन्त, जिस खेड़े हरि जू खेल कराइंदा। गुरमुख सखी मिले साचा कन्त, मिल सखीआं मंगल गाइंदा। माणस जन्म बणाए बणत, घड़न भन्नणहार आपणी खेल आप समझाइंदा। देवे वड़याई विच जीव जंत, जोती जाता जोत जगाइंदा। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर आपणा रंग रंगाइंदा। नाम अनमोला मणीआ मंत, मन वासना मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेड़ा इक्क सुहाइंदा। साचा खेड़ा एका घर, घर घर विच फेरा पाईआ। निरगुण दाता दर दुआरे पहरेदार, सरगुण दुआरे अलख जगाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपे मेले फड़, फड़ फड़ बांहों गोद बहाईआ। इक्को अक्खर बोध अगाधी आत्म परमात्म पढ़ पढ़, साची विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे
११४४ खेड़े इक्को बन्धन पाईआ। साचा खेड़ा इक्को बन्धन, बन्दीखाना आप तुड़ाइंदा। जिस खेड़े अंदर गुरमुख चन्दन, निम्म ११४४
१२ वास सर्ब मिटाइंदा। लेखा जाणे आत्म परमात्म सच अनन्दन, निजानंद रस वखाइंदा। खोल्हे भेव ब्रह्म ब्रह्मण्डन, ब्रह्मांड १२
आपणा रंग रंगाइंदा। दाता दानी सूरबीर सूरा सरबंगन, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेड़ा आप वड्याइंदा। साचा खेड़ा सच दुआरा, हरि सतिगुर आप सुहाईआ। लेखा जाणे डूँघी गारा, घर घर फोल फोलाईआ। निमस्कार करे रवि ससि सूरज चन्द सतारा, सतह आपणी ना किसे समझाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां करे सच प्यारा, परम पुरख प्रभ फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम दए सहारा, शब्द अगम्मी बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुरमुख खेड़ा सच महल्ला, हरि महिफल नाम लगाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, निरगुण नूर नूर धराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म फड़ाए आपणा पल्ला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। लेखा जाणे डूँघी डल्ला, समुंद सागर खोज खोजाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत बजर कपाटी अंदर बाहर फिरे हो हो झल्ला, आपणी झलक आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे खेल अछल अछला, वल छल धारी भेव कोए ना पाइंदा। जिस खेड़े अंदर सच सिँघासण सतिगुर मल्ला, सो खेड़ा सतिगुर

रूप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेड़ा इक्क वड्याइंदा। साचा खेड़ा श्री भगवान, इक्को इक्क वसाईआ। गुरमुख काया सच मकान, बेमुकाम दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी कर निशान, नाम निशाना इक्क लगाईआ। सति सतिवादी सदा सदा सद हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जन भगतां दए भगती ज्ञान, भगवन सच्चा नाम झोली पाईआ। सन्तां देवे साचा माण, साहिब सतिगुर मिले सरनाईआ। गुरमुखां राग सुणाए कान, अनरागी राग अलाईआ। गुरसिख बणाए चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़े धन्दे लाईआ। नगर खेड़ा करे परवान, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, नाम बन्धन डोरी पाईआ। नाम बन्धन पाए डोर, डोरी शब्दी हथ्थ उठाइंदा। पकड़नहारा पंज चोर, चोरी चोरी खेल कराइंदा। वेखणहार अन्ध घोर, डूँघी कंदर फोल फोलाइंदा। चढ़या फिरे साचे घोड़, शब्द अगम्मी घोड़ा आप दौड़ाइंदा। गुरसिख गुरमुख हरि जू हरिजन जाए बौहड़, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। मिट्ठा करे रीठा कौड़, विख अमृत रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेड़ा इक्क सालाहइंदा। साचा खेड़ा सिफ्त सलाह, गुरसिख सज्जण मिले वड्याईआ। जिस अंदर वसे हरि मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। दिवस रैण दए सलाह, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एकँकारा नाउँ पढ़ा, नर निरँकारा दए जणाईआ। बजर कपाटी पर्दा लाह, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। आत्म सेजा दए बहा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोत निरँजण दए जगा, जोती जाता डगमगाईआ। दर्द दुःख भय भंजन दर्दीआं दर्द लए वंडा, बण सेवक सेव कमाईआ। नेत्र नाम अञ्जण देवे पा, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। सो खेड़ा वेखे सच्चा थाँ, जिस खेड़े चरन टिकाईआ। सर्ब सृष्टी आत्म परमात्म अक्खर वक्खर दए पढ़ा, नाम निधाना इक्क सुणाईआ। जो जन सोहँ ढोला लए गा, पर्दा ओहला दए उठाईआ। पंज चोर रौला सके ना कोई पा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए लड़ाईआ। साचे सन्तां सोभा दए दिवा, सुहबत आपणे नाम जणाईआ। इट्टां गारा मन्दिर जगत खेड़ा दए वसा, वस्तू इक्को विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, वर दाता बेपरवाहीआ। किरपा अंदर वसे ठाकर, ठोकर आपणे नाम लगाइंदा। किरपा अंदर वेखे डूँघा सागर, काया मन्दिर फोल फोलाइंदा। किरपा अंदर निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धुवाइंदा। किरपा अंदर साचा वणज कराए बण सौदागर, सौदा साचे हट्ट वखाइंदा। किरपा अंदर दर आया सच देवे आदर, आदरश आपणा आप जणाइंदा। किरपा अंदर मेल मिलाए करीम कादर, करता आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा किरपन हथ्थ फड़ाइंदा। किरपा अंदर वस्त अमोलक, हरि सतिगुर आप वरताईआ। गुरमुख विरले पाए काया गोलक, दूसर

११४५ १२

हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। राग सुणाए हरि जू अनबोलत, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवान रखे अडोलत, डुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा इक्को इक्क समझाईआ। इक्को किरपा हरि निरँकार, आदि जुगादि कराइंदा। भगतां देवे नाम भण्डार, सच ख़ज़ाना आप वरताइंदा। सन्तां खोल्ह्े बन्द किवाड़, आत्म ताकी कुण्डा लाहइंदा। गुरमुख साचे पौड़े देवे चाड़्ह, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। गुरसिख फड़ फड़ बांहों लाए पार, शहु दरया ना कोए रुढ़ाइंदा। दिवस रैण रैण दिवस देवे आप दरस दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी बोध अगाधी नाद अनादी बोल धुन्कार, अनहद नादी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर विच घर आप वसाइंदा। किरपा अंदर खेल अवल्ला, हरि सतिगुर आप कराईआ। किरपा अंदर घर विच घर वखाए सच महल्ला, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। किरपा अंदर सुरत शब्द फड़े पल्ला, फड़या पल्लू छुट्ट कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को किरपा जुग जुग रिहा वरताईआ। किरपा साची सतिगुर रूप, दूजा रंग ना कोए वखाईआ। हरि किरपा वेखे चारे कूट, दहि दिशा फोल फोलाईआ। गुर किरपा नाता तुट्टे जूठ झूठ, सच सुच्च मिले वड्याईआ। हरि किरपा प्रगट होए निर्मल जोत, जोती नूर नूर रुशनाईआ। गुर किरपा लेखा जाणे काया किला कोट, बंक दुआरा वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा इक्को वस्त वरताईआ। हरि किरपा हरि का नाउँ, हरि जू हरि हरि आप जणाइंदा। जन भगतां देवे फड़ फड़ बांहों, जुग जुग आपणी सेव कमाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, बालक आपणे अंग लगाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे कराए सच न्याउँ, साचे तख़्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि किरपा अंदर खेल कराइंदा। किरपा अंदर गुर अवतार, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। हरि पुरख निरँजण भर भण्डार, एकँकारा दए वरताईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, अबिनाशी करता सेव कमाईआ। श्री भगवान सांझा यार, सगला संग निभाईआ। पारब्रह्म प्रभ दए आधार, वेखे पेखे चाँईं चाँईंआ। किरपा अंदर खेल करे परवरदिगार, पीर पैग़म्बर लए पढ़ाईआ। लेखा जाणे मुकामे हक़ नूरी जल्वा इक्क उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नबी रसूल आप समझाईआ। किरपा अंदर खाणी बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। किरपा अंदर अमृत पाणी, सर सरोवर इक्क रुढ़ाइंदा। किरपा अंदर जोत नूरानी, नूरो नूर डगमगाइंदा। किरपा अंदर गुर अवतार पीर पैग़म्बर देवे सच निशानी, सति सतिवादी रूप वखाइंदा। किरपा

११४६ १२

अंदर लेखा जाणे दो जहानी, दोए दोए आपणा रूप वटाइंदा। जन भगतां उपर कर किरपा करे मेहरवानी, मिहबान बीदो बी ख़ैर अल्ला इलाही नूर आप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा अंदर आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग चौकड़ी खेल वखाइंदा।

✳ १६ अस्सू २०१६ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह अहिमद पुर ज़िला जलन्धर ✳

सतिगुर शब्द गुर पूरा स्वामी, आदि जुगादि खेल कराइंदा। जुगा जुगन्तर अकथ कहाणी, बोध अगाधी नाम दृढ़ाइंदा। सचखण्ड दी सच निशानी, सति सतिवादी आप जणाइंदा। अक्खर वक्खर खेल महानी, ख़ालक ख़लक आप समझाइंदा। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म एका देवे सच ध्यानी, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। अनाद अनादी अगम्मी बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द खेल कराइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब गुणवन्त, हरि वडा वड वड्याईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। नाम दृढ़ाए साचा मंत, मन्त्र इक्को इक्क समझाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत,
११४७ जीवण जुगत दए जणाईआ। मेल मिलाए साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ११४७
किरपा कर, सतिगुर शब्द दया कमाईआ। सतिगुर शब्द दीन दयाल, दया निध दया कमाइंदा। आदि जुगादी जुग जुग
१२ लेखा जाणे काल, महांकाल वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त आपे भाल, त्रैगुण माया नाता तोड़ तुड़ाइंदा। साचा मार्ग इक्क १२
सिखाल, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। नाम अनमुलड़ा देवे लाल, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप रखाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी खेल खलाइंदा। गुर शब्दी खेल अपार, आदि जुगादि कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, पंज तत्त चोला जगत हंढाईआ। नाम निधाना बोल जैकार, जै जैकार दए समझाईआ। अक्खर वक्खर कर त्यार, लिख लिख लेखा दए जणाईआ। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त भण्डार, साची सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शब्द सतिगुर बेपरवाह, आपणी खेल आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, लोकमात बेड़ा आप उठाइंदा। सति सतिवादी देवे सच सलाह, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। अनाद अनादी इक्क सुणा, धुंन आत्मक राग अलाइंदा। दीवा बाती इक्क जगा, कमलापाती नूर धराइंदा। साचा जाम दए पिला, बण साकी सेव कमाइंदा। निझर

झिरना दए झिरा, नाभी कँवल कँवल उलटाइंदा। बन्द ताकी दए खुल्ला, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। सन्त साजण लए मिला, आप आपणे अंग लगाइंदा। निहकर्मी आपणा कर्म लए कमा, कर्म कांड लेखा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणा खेल कराइंदा। गुर सतिगुर साचा सज्जण, सज्जण इक्को इक्क अख्वाईआ। दो जहान कराए साचा मजण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तीर्थ इक्क वखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर आपे होए परदे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी आपे होए मथन, नाम मधाणा हथ्थ उठाईआ। भगत भगवन्त साध सन्त गुरमुख साचे आए रखण, नित नवित वेस वटाईआ। साचा मार्ग आए दस्सण, दहि दिशा वेख वखाईआ। कलयुग अन्धेरी रैण मेटे मस्सण, साचा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। गुर शब्द सतिगुर सूर, सूरबीर इक्क अख्वाइंदा। सर्ब कला भरपूर, भरपूरी आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादी साचा नूर, नूर नुराना नूर धराइंदा। बोध अगाधी साची तूर, तुरीआ राग आप सुणाइंदा। वसणहारा नेड़े दूर, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। गुरमुख विरले लाए मस्तक साची धूढ़, नाम टिक्का इक्क वखाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर खेल कराइंदा। गुर शब्दी खेल अवल्ला, आलमीन वेखे सर्ब लोकाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, अटल्ल महल्ल करे रुशनाईआ। पावे सार जलां थलां, जल थल महीअल रिहा समाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल्ला, समुंद सागर खोज खोजाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, नाम डोरी बन्धन पा निरगुण सरगुण सिख्या दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर शब्द माण वड्याईआ। गुर शब्दी साची सेवा ला, सेवा आपणी आप जणाइंदा। अलख अगम्म बेपरवाह, आपे वेख वखाइंदा। दो जहानां बण मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। जुग चौकड़ी आप प्रगटाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। पंचम मेला सहिज सुभा, त्रै त्रै लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा सोहला आपे गा, ढोला आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द अलाइंदा। शब्दी राग शब्दी धुंन, शब्दी शब्द शब्द सुणाईआ। शब्दी लेखा जाणे महां सुन, सुन्न समाध रूप वटाईआ। शब्दी गुर लेखा जाणे आपणे गुण, अवगुण रूप ना कोए वखाईआ। गुर शब्दी लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पुकार लए सुण, घट घट रिहा समाईआ। लख चुरासी विच्चों चुण, गुरमुख सज्जण लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करतार, गुर शब्दी वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, सच सिँघासण आपणा आसण लाइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यार, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, जै जैकार इक्को घर सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर शब्दी नाउँ धराइंदा। गुर शब्दी आपणा नाउँ रख, सतिगुर आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हो प्रतख, प्रतख आपणी धार चलाईआ। सन्त सुहेले मार्ग दस्स, दहि दिशा दए खुल्हाईआ। हुक्मे अंदर रखे चौदां लोक चौदां तबक चौदां हट्ट, रवि ससि सूरज चन्न मंडल मण्डप हुक्मे अंदर फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ आप समाईआ। महिमा अकथ साची साखी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। गुर शब्द सति साची भाखी, भाख्या आपणी आप प्रगटाइंदा। करे खेल अलखना अलख अलाखी, लेखा लेख ना कोए गणाइंदा। वेखणहारा खेल तमाशी, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। भेव खुल्हाए बहु बिध भांती, भाव आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी राती, शब्दी चन्द गुरू चढ़ाइंदा। देवणहारा सब दी बाकी, लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां खोल्हे बन्द ताकी, डूँग्घी कंदर फेरा पाइंदा। मेल मिलाए कमलापाती, कँवल नैण वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म बणे साथी, सगला संग निभाइंदा। नाता तोड़े ज़ात पाती, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। शब्द गुरू गुरदेव स्वामी, आपे वेखे मार झाती, झाकी आपणी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। साचा मार्ग सतिगुर चरन, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। गुर शब्दी खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र नैण दरस दरसाईआ। नाता तोड़े मरन डरन, डरन मरन भय ना कोए रखाईआ। लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द गहर गम्भीर, गुण आपणे हथ्थ रखाइंदा। चढ़ के बैठा चोटी इक्क अख़ीर, आख़र आपणा रंग रंगाइंदा। नाम अणयाला मारे तीर, तीर निशाना इक्क लगाइंदा। दूई द्वैती शरअ शरैअती कूड़ी क्रिया देवे चीर, चीर इक्को इक्क पाइंदा। बदलणहार तकदीर, तकसीर तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। कटणहारा त्रैगुण माया जगत ज़ंजीर, पंज तत्त नाता आप तुड़ाइंदा। जुग जुग कटणहारा भीड़, गुरमुख गुरसिख वेख वखाइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह आपणा फेरा पाइंदा। चिट्टे उपर काली मारन वाला लकीर, आपणा नाउँ सिफ्त सालाहइंदा। आदि जुगादि ना होए कदे दिलगीर, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। दाता दानी वड पीरन पीर, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा।

करे खेल बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आइंदा। हथ्थ पकड़े नाम शमशीर, खण्डा खण्ड ब्रह्मण्ड आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी खेल कराइंदा। गुर शब्द सतिगुर साख्यात, सखी सरवर वड वड्याईआ। गुरमुख बणाए पारजात, परम पुरख बेपरवाहीआ। अन्तर आत्म मेटे अन्धेरी रात, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। नाम सुणाए अनहद नाद, धुंन अनादी नाद जणाईआ। अमृत आत्म देवे सच स्वाद, बिन रसना जिह्वा प्याईआ। नौ दुआरे पार हाद, सुखमन टेढी बंक डूँग्घी भँवरी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी दया कमाईआ। गुर शब्दी दया निध दयाला, दीनन आपणी दया कमाइंदा। घर घर विच वखाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआरा इक्क प्रगटाइंदा। जोती नूर कर उजाला, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मन्त्र गाए नाम सुखाला, सुख सागर रूप वटाइंदा। सुरत सवाणी करे बेहाला, बिहबल आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी रंग रंगाइंदा। गुर शब्दी साचा चाढ़े रंग, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। नाम निधान वजाए मृदंग, मृदंगा इक्को हथ्थ उठाईआ। डूँग्घी भँवरी आपे लँघ, सच सिँघासण वेख वखाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, साचा नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां पाए शब्दी ठंड, साची धारा आप वहाईआ। कूड़ी क्रिया खण्ड खण्ड, पंचम नाता दए तुड़ाईआ। पंचम शब्द गाए सुहागी छन्द, साचा ढोला आप सुणाईआ। निज आत्म देवे निजानंद, निज घर मेला सहिज सुभाईआ। गुरसिख सुरती नार सवाणी ना होए रंड, गुर शब्दी लए प्रनाईआ। नाता तोड़ इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड, जीव आपणे लेखे लाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सैभं रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि शब्दी नाउँ प्रगटाईआ। गुर शब्दी नाउँ हरि निरँकारा, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण कर पसारा, हरि पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। एकँकारा दए सहारा, आदि निरँजण दीप जगाइंदा। अबिनाशी करता दए हुलारा, श्री भगवान झूला इक्क झुलाइंदा। अबिनाशी करता बण वणजारा, पारब्रह्म हट्ट इक्क खुल्ल्हाइंदा। आत्म परमात्म इक्क किनारा, साचे भगतन मेल मिलाइंदा। गुर शब्द शब्द गुर पावे सारा, गृह अंदर मन्दिर खोज खोजाइंदा। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जिस गुरमुख सतिगुर गुर शब्द मिले प्यारा, प्रेम प्रीती इक्क सिखाइंदा। दो जहानां करे बाहरा, गुपत ज़ाहरा रंग वखाइंदा। महल अटल चढ़ बोले सच जैकारा, जै जैकार आप सुणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दूजा अवर ना कोए दुआरा, दर्दी होर नज़र कोए ना आइंदा। बिन भगवान भगत रहे कुँवारा, बिन सतिगुर गुरसिख ना कोए प्रनाइंदा। लख चुरासी जीव जंत कलयुग माया किसे कम्म ना आए शंगारा, कूड़ी क्रिया सर्ब वखाइंदा। जिस जन पारब्रह्म प्रभ पुरख प्रीतम मिले विच संसारा, सो

सोभावन्त सुहागण नार जगत जवानी जोबण माणे मुटयारा, दो जहानां एथे ओथे साचा सुख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी देवे साचा वर, गुरमुख मिले इक्को घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा।

✳ १६ अस्सू २०१६ बिक्रमी गुरचरन सिँघ दे गृह झंगी चक्क ज़िला जलन्धर ✳

परवरदिगार सच अमाम, पीर पैग़म्बर सीस झुकाईआ। निउँ निउँ सजदा करन सलाम, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। बेपरवाह तेरे बरदे बणे ग़ुलाम, माण ताण ना कोए रखाईआ। सति सतिवादी तेरा सति ईमान, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेले विच जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। चौदां तबक तेरा निशान, सच निशानी इक्क दृढ़ाईआ। चौदस चन्न तेरा भान, तेज़ तेज़ नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे ओट रखाईआ। गुर अवतार कहिण श्री भगवान, सचखण्ड तेरी वड्याईआ। आदि जुगादी सच्चा काहन, घर वसे सच्चा माहीआ। जुगा जुगन्तर नूरी राम, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। सच संदेसा दए पैग़ाम, निश अक्खर करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म देवे दान, लख चुरासी वंड वंडाईआ। शब्द अगम्मी बोल बिन ज़बान, साचा नाअरा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप

११५१ हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत कहे हरि जू मीता, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आदि जुगादि ११५१

ठांडा सीता, तत्तव तत्त ना कोए रखाइंदा। निरगुण चलाए सरगुण रीता, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। लेखा जाणे हस्त

कीटा, ऊँच नीचां मेल मिलाइंदा। धाम प्रगटाए इक्क अनडीठा, जगत नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सन्त सज्जण करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुरख अबिनाशी दर तेरा सच्चा दरबार, दरवाज़ा इक्को नज़री आईआ। जुग चौकड़ी पावें सार, नित नवित वेस वटाईआ। नाम निधाना भर भण्डार, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सति सतिवादी बोल जैकार, जै जैकार आपणा नाम दृढ़ाईआ। लेखा जाणे अंदर बाहर गुपत ज़ाहर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी खेल कर, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। गुरमुख कहे हरि पारब्रह्म, ब्रह्म वेता आप अख्वाइंदा। आदि जुगादी जाणे साचा कर्म, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। ना कोई वरन ना कोई बरन, साची सरन इक्क समझाइंदा। सति सतिवादी इक्को धर्म, धुर दी धार आप बंधाइंदा। आपे होए भन्नण घड़न, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ आपणी खेल रचाइंदा। लेखा जाणे जन्म मरन, मरन जन्म आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। गुरसिख कहे सतिगुर दयाल,

दीनन आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाईआ। गुरसिख वेखे साचे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण बणे दलाल, लोकमात फेरा पाईआ। लेखा जाणे हक़ हलाल, हक़ीक़त पर्दा आप चुकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, महिमा आपणी दए सुणाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दो जहान वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। मुरीद मुर्शद मंगे मंग, दर अग्गे झोली डाहइंदा। आदि जुगादि तेरा मृदंग, नौबत नाम इक्क वजाइंदा। गुपत ज़ाहर तेरा रंग, दीद शुनीद खेल कराइंदा। लेखा जाण कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड आपणा वेस वटाइंदा। सेवा ला सूरज चन्द, मंडल मण्डप आप भुवाइंदा। वसणहारा साचे खण्ड, थिर घर आपणा कुण्डा लाहइंदा। वस्त अमोलक परवरदिगार देवे वंड, साची वस्त झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। मुल्ला शेख़ मुसायक कहे पीर, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। तेरे हथ्थ शरअ ज़ंजीर, जुग चौकड़ी रिहा पाईआ। बदलणहार तकदीर, तकसीर तदबीर आपणी दए जणाईआ।
११५२ कलयुग वेला अन्त अख़ीर, आख़र नज़र कोए ना आईआ। तेरा खेल बेनज़ीर, नेत्र नैणां दिस किसे ना पाईआ। लोकमात ११५२
चौदां लोक चौदां तबक होए दिलगीर, दिलबर मिले ना सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१२ एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मारे धाह, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। कलयुग अन्तिम मिले १२
ना कोए मलाह, बेड़ा पार ना कोए कराइंदा। साचा मन्त्र ना देवे कोए दृढ़ा, आत्म परमात्म मेल ना कोए वखाइंदा। लख चुरासी भरमे भुल्ली मिले ना सच्चा थाँ, मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले तेरा रंग ना कोए रंगाइंदा। जीव जंत साध सन्त कर गए ना, सगला संग ना कोए निभाइंदा। ना कोई पिता ना कोई मां, पूत सपूता नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। त्रैगुण माया पई उठ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे पल्ले रिहा ना कुछ, ख़ाली पल्लू रही वखाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेलया लुक लुक, कलयुग अन्तिम पर्दा लाहीआ। सिँघ शेर प्या बुक्क, भय आपणा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस तकाईआ। पंज तत्त तक्के राह, रैहबर नज़र कोए ना आइंदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश रहे कुरला, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। कवण वेला मिले प्रभ मलाह, बेड़ा पार कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदे रहे गुनाह, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। एथे ओथे देवे कोए ना ठंडी छाँ, पर्दा नाम कोए ना पाइंदा। खा खा

थक्के सूर गां, आपणा आप ज़िबह ना कोए कराइंदा। आत्म परमात्म पकड़े कोए ना बांह, पल्लू हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। बिन पारब्रह्म करे ना सच न्यां, साचा तख्त ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाइंदा। धरनी धरत धवल करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बौहड़ी बौहड़ी परवरदिगार, बेपरवाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम आई हार, पासा जित ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया दब्बी भार, मेरा भार ना कोए वंडाईआ। सृष्ट सबाई होई नार विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। गृह मन्दिर धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नाता तुट्टा गुरू अवतार, पीर पैग़म्बर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग सूरा खोल्ह अक्ख, प्रभ चरन ध्यान लगाइंदा। पुरख अबिनाशी मार्ग दस्स, तेरी ओट तकाइंदा। राज राजान शाह सुल्तान कीते वस, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। साध सन्त माया ममता गए फस, जगत ज़ंजीर ना कोए तुड़ाइंदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद खेड़े कीते भट्ठ, अग्नी तत्त तत्त तपाइंदा। नाता तोड़या तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नैण शरमाइंदा। बहत्तर नाड़ उब्बले रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। घर घर नच्चे मनमति, कलयुग कूड़ा डौरू डंक वजाइंदा। किसे ना छड्डया धीरज जत, सति सन्तोख रहिण ना पाइंदा।
११५३ सृष्ट सबाई नेत्र घट्टा दिता घत्त, इक्को अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। कोई ना गाए तेरा जस, उलटी मति मत कराइंदा। ११५३
मैं खेल करया नट्ठ नट्ठ, तेरा हुक्म वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे
१२ चरनां सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। पीर पैग़म्बर करो ध्यान, धुरदरगाही रिहा समझाईआ। गुर अवतार देवे माण, निमाणयां गले लगाईआ। भगत भगवान करे परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। सन्त सज्जण वेखे आण, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। गुरमुखां गुर गुर दए ज्ञान, आपणा गोझ बुझाईआ। गुरसिखां बख्शे चरन ध्यान, मस्तक धूढ़ा टिक्का एको लाईआ। विष्नूं तेरा वेखे निशान, विश्व आपणा रंग रंगाईआ। ब्रह्मे भुल्ल ना जाणा बण अणजाण, बाली बुध आप समझाईआ। शंकर तेरा त्रिसूल वेखे श्री भगवान, त्रै त्रै मेला मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया ना हो हैरान, हरि जू बैठा राह तकाईआ। पंज तत्त तेरा करे कल्याण, कलमा आपणा आप पढ़ाईआ। धरनी धरत धवल तेरा रखे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग तेरा लेखा चुकाए आण, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। दहि दिशा होए हैरान, हरि का भेव किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा लैणा देवे झोली पाईआ। पीर पैग़म्बर रखी आस, आसा आसा विच टिकाईआ। शाह सुल्तान बुझा प्यास, मेहरवान दया कमाईआ।

मुकामे हक़ ना कोए होए निरास, निरासा रूप ना कोए वटाईआ। बेपरवाह देवे सच सलाह कलयुग अन्तिम करे आपणा कम्म खास, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए जणाईआ। गुर अवतार दए दिलासा, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। प्रगट होए पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी कल वरताइंदा। नौ खण्ड पृथमी वेखे जगत तमाशा, लख चुरासी नाच नचाइंदा। आपे बदलणहारा पासा, आपणी करवट आप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप जणाइंदा। भगत भगवान वखाए नेत्र, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। रुत्त बसन्ती एका चेत्र, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। भाग लगाए काया खेत्र, दर वेखे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। साचे सन्तां देवे सति, सति सतिवादी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। चरन कँवल बंधाए साचा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। बोध अगाध सुणाए गथ, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, रविदास चुमारा पन्ध मुकाइंदा। वसणहारा घट घट, गृह मन्दिर खोज खोजाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा पर्दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। गुरमुख साचे कर विचार, हरि सज्जण सच जणाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यार, परम पुरख बेपरवाहीआ। कलयुग मेटे कूड़ कुड़यार, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। हउमे हंगता क्रोध निवार हँकार, निवण सो अक्खर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा रिहा उठाईआ। गुरसिख उठ उठ जाग, सो पुरख निरँजण आप जगाइंदा। लोकमात लगा भाग, हरि सतिगुर आप लगाइंदा। दीपक जोत जगे चिराग़, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणाए साक, सज्जण आपणा मेल मिलाइंदा। खोल्हणहारा बजर कपाट, डूँघी ताकी कुण्डा लाहइंदा। आत्म सेज विछाई आपे खाट, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे वाट, बण पाँधी फेरा पाइंदा। दो जहान खुल्हाए इक्को हाट, चौदां तबक पर्दा लाहइंदा। आत्म परमात्म गाए साची गाथ, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। मेल मिलाए कमलापात, कँवल नैण इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर चढ़या चा, दर घर साची खुशी मनाईआ। गुर अवतार करन सलाह, घर साचे वज्जे वधाईआ। भगत भगवान ध्यान रहे लगा, निज नेत्र नैण उठाईआ। सन्त सज्जण साचे सोहले रहे गा, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। गुरमुख चरन कँवल ध्यान रहे रखा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। गुरसिख खाली झोली रहे भरा, भर भर आपणी खुशी मनाईआ । धरनी

११५५ १२

धरत धवल धूढ़ी ख़ाक रही रमा, मस्तक इक्को टिक्का लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चरनी डिगे आ, ढह ढह आपणा आप मिटाईआ। धन्न भाग प्रभ प्रगट होवे सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह फेरा पाईआ। कलयुग देवे पन्ध मुका, लेखा मात रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ दए खपा, कूड़ी क्रिया शौह दरया रुढ़ाईआ। सच सुच्च दए समझा, सच समग्री इक्क वरताईआ। रमज़ नाल रमज़ लए मिला, अल्फ़ ये हमज़ा ना कोए पढ़ाईआ। ग़फ्लत सब दी दए गुवा, उल्फ़त आपणी इक्क समझाईआ। नफ़रत करे ना कोए खुदा, हरफ़ बहरफ़ करे पढ़ाईआ। नूर इलाही होए ना कदे जुदा, जुज़ जुज़ा ना कोए बणाईआ। सूफ़ी जिस नूं मन्नदे रहे खुदा, सो फ़ितरत सब दी रिहा गवा, मार्ग इक्को दए लगा, इक्को कलमा दए पढ़ाईआ। इक्को हुजरा दए वखा, मक्का काअबा डेरा ढाहीआ। परवरदिगार नज़री जाए आ, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सलाम अलैकम दए दवा, दुआ इक्को इक्क वखाईआ। चौदां तबकां लेखा दए चुका, ज़िमीं असमान डेरा ढाहीआ। साची पट्टी दए पढ़ा, सिख्या आपणे हथ्थ रखाईआ । पिछला लेखा दए मुका, अगला लेखा दए समझाईआ। बख्शणहारा सर्ब गुनाह, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कर किरपा जिस दी पकड़े बांह, चरन कँवल दए सरनाईआ। आपे बणे पिता मां, बालक आपणी गोद सुहाईआ। पीर पैग़म्बर खुशीआं रहे मना, मुल्ला शेख़ मुसायक नाल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार चढ़या चाउ, चाउ घनेरा इक्क रखाईआ। प्रगट होया बेपरवाहो, पर्दा आपणा दए चुकाईआ। लेखा जाणे थाईं थाऊँ, थान थनंतर खोज खोजाईआ। एथे ओथे करे सच न्याउँ, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगतां चढ़ाए साचा रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। प्रगट होया सूरा सरबंग, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पाताल आकाशां वजाए मृदंग, मृदंगा आपणे हथ्थ उठाइंदा। लख चुरासी अंदर वेखे लँघ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव सुणाए साचा छन्द, बत्ती दन्द ना कोए अल्लाइंदा। जन्म जन्म दी तुट्टी गंढ, एका नाम देवे वंड, वस्त झोली इक्क भराइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी सदा सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, निरगुण निरगुण दए समझाईआ। पीर पैग़म्बर रहिणा ख़बरदार, नेत्र नैण नैण खुल्लाईआ। प्रगट होवे सांझा यार, यारी इक्को इक्क वखाईआ। दीन मज़्हब कर पार, पार किनारा इक्क दृढ़ाईआ। सतिजुग साचा करे विहार, सति सतिवादी सच्चा माहीआ। गुर अवतार मेले आण, मिल मिल

खुशी मनाईआ। भगत भगवन्त करे कल्याण, कल आपणे हथ्थ रखाईआ। सन्त सतिगुर देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। लेखा जाणे ज़िमीं असमान, अर्श कुर्श वेख वखाईआ। भेव चुकाए काया कुरा ईमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा जणाईआ। भेव अभेद हरि जू खोल्हे, ख़ालक ख़लक समझाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार नाम कंडे साचे तोले, एका कंडा हथ्थ उठाइंदा। नौ सौ चुरानमे चौकड़ी जुग सचखण्ड वसया रिहा ओहले, कलयुग अन्तिम पर्दा लाहइंदा । आपणा खेल करे हौले हौले, अभेव भेव ना किसे समझाइंदा। पूरब करे पूरे कौले, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। लख चुरासी अंदर मौले, मौला आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। देवे माण धरनी धौले, धौल हौला भार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे पुरख समरथ, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस चलाया रथ, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ । लख चुरासी जीव जंत पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया देवे मथ्थ, चरनां हेठ दबाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, साचे धन्दे लाईआ। जन भगतां अंदर आपे वस, घर साचा दए वखाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार करे वस, बचया कोए रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थ, कलयुग लेखा आप मुकाईआ। जोती

११५६ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा श्री भगवान, कलयुग अन्त अन्त जणाइंदा। ११५६

दो जहानां इक्क निशान, निरगुण दाता आप झुलाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर दर दुआरे वेखो आण, हरि जू की की

१२ खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर देंदा रिहा जो दान, साची वस्त झोली पाइंदा। सेवा लाए जिस कोटन कोटि काहन १२

कृष्न रमइया राम, दसरथ बेटा नाउँ वखाइंदा। वेद शास्त्र सिमरत पुराण देंदा रिहा ज्ञान, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाइंदा। अञ्जील कुरानां दए पैग़ाम, पीर पैग़म्बर आप पढ़ाइंदा। हक़ हक़ीक़त कलमा कलाम, कायनात आप सुणाइंदा। गुर गुर शब्द अगम्मी मारे बाण, तीर अणयाला आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाइंदा। साची करनी करे करता पुरख, पुरख पुरखोतम आप जणाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख़ चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान लए परख, सच कसौटी हथ्थ उठाईआ। सन्त सुहेले देवे आपणा दरस, दरसी आपणा दरस कराईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हवस होर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ इक्को बरस, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। अग्नी तत्त जाए बुझ, जिस आपणी दया कमाइंदा। अग्गा पिच्छा जाए सुझ, सतिगुर पूरा नज़री आइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे हथ्थ ना रखे कुछ, भगतां डोरी आप फड़ाइंदा।

कारज करदा रिहा लुक लुक, सतिजुग त्रेता द्वापर हथ्थ किसे ना आइंदा। तेई अवतार धुर संदेसा रहे पुच्छ, सच संदेसा आप जणाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद चरन कँवल रहे झुक, झुक झुक सीस सर्ब निवाइंदा। नानक गोबिन्द गुर सतिगुर साहिब तुट्ठ, साची वस्त झोली पाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण उठ, सरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी नव नौ चार, निरगुण सरगुण आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, साची सेवा इक्क समझाईआ। करोड़ तेतीसा दए आधार, सुरपति मेल मिलाईआ। गण गंधर्ब कर प्यार, किन्नर जच्छप वेख वखाईआ। साची सख़ीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या वारो वार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। ब्रह्मा वेता कर प्यार, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। चारे कुण्ट पावे सार, चारे जुग दए वड्याईआ। चारे खाणी दए आधार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बन्धन पाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। आपे वसया सब तों बाहर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। सेवा ला तेई अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग संग निभाईआ। भगत अठारां खोल्ह किवाड़, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। पीर पैग़म्बर दए आधार, एका कलमा दए समझाईआ। दस दस गुरू कर प्यार, प्रीती प्रीतम नाल निभाईआ। साची रीती विच संसार, साख्यात दए समझाईआ।
११५७ नानक गोबिन्द बोल जैकार, उच्ची कूक कूक अलाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, ना कोई पिता ना कोई माईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, दो जहानां दए समझाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे ख़बरदार, बेख़बर आपणी ख़बर आप जणाईआ। लख चुरासी आए हार, लेखा सब दा दए मुकाईआ। भगत भगवन्त कर किरपा लए उठाल, लख चुरासी फोल फोलाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, साचा वणज इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान दए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर रखो उडीक, हरि सतिगुर आप सुणाया। प्रगट होए लाशरीक, सब दी शिरक्त दए मिटाया। लख चुरासी बख्शे इक्क प्रीत, प्रीतीवान फेरा पाया। सतिजुग चले साची रीत, कलयुग कूड़ा दए खपाया। आत्म परमात्म गाए साचा गीत, सोहँ ढोला दए पढ़ाया। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, लोकमात उतर ना जाया। देवे नाम इक्क अनडीठ, अनडिठड़ी धार चलाया। मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, विख अमृत रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए लगाया। साचा मार्ग लाए मात, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ।

गुर अवतार पीर पैग़म्बर भगत भगवान बणाए इक्क जमात, इक्को अक्खर दए पढ़ाईआ। निरगुण मेला निरगुण चेला निरगुण बणे सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। निरगुण खाक निरगुण पाक, निरगुण खोल्हणहारा ताक, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लेखा दए मुकाईआ। सब दा लेखा हरि मुकाउणा, मोहर आपणे नाम लगाईआ। दो जहानां राह चलाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपणी जोत मिलाउणा, जोती जोत करे रुशनाईआ। गुरमुख साचे माण दिवाउणा, गुरसिखां आप प्रगटाईआ। ब्रह्म वेता आप बणाउणा, कर कर हेता वेखे चाँईं चाँईंआ। जेठा सुत इक्क उपजाउणा, शिव लेखा दए मुकाईआ। इन्दर लहिणा आप चुकाउणा, छोटे बाले दए वड्याईआ। धू पन्ध आप चुकाउणा, बन्दीख़ाना कोए नज़र ना आईआ। गुर का लाल गुर आपणे रंग रंगाउणा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच विधान इक्क बणाउणा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पंच परवान सब ने गाउणा, गा गा खुशी मनाईआ। पंच प्रधान हुक्म वरताउणा, सच प्रधानगी दए वड्याईआ। पंचां दर इक्क सुहाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। शाह पातशाह हुक्म चलाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार फड़ फड़ बांहों एका घर बहाउणा, पिछला लेखा आप चुकाईआ। रल मिल ढोला सोहला सब ने गाउणा, वाह
११५८ वा तेरी वडी वड्याईआ। दीन मज़्हब रौला किसे ना पाउणा, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। धरनी हौला भार कराउणा, ११५८
मूर्ख मूढ़े दए खपाईआ। गुरमुख सच्चे आप उपजाउणा, गुर गुर बूझ बुझाईआ। दीद ईद चन्द आप चढ़ाउणा, चारों कुण्ट
१२ होए रुशनाईआ। साचा मन्दिर आप सुहाउणा, गृह अंदर सोभा पाईआ। राग अनादी आपे गाउणा, धुंन आत्मक राग अल्हाईआ। १२
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग लेखा लेखे पाईआ। कलयुग अन्तिम दोए जोड़, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। चारों कुण्ट कीती दौड़, नट्ठ नट्ठ पन्ध मुकाइंदा। जीव जंत कीता रीठा कौड़, मिट्ठा रस ना कोए वखाइंदा। कूड़ी क्रिया लाया पौड़, सच्चा डण्डा हथ्थ कोए ना पाइंदा। तेरे नाम दी रखी औड़, साचा मेघ ना कोए बरसाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करते मेरी करनी वेख कर के ग़ौर, तेरी कीती भुल्ल ना जाइंदा। साधां सन्तां बदले तौर, तबअ सब दी आप बदलाइंदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले बैठे सर्ब चोर, चोरी गुर गुर सर्ब कमाइंदा। वसण आपे काया अन्धेरे घोर, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। तेरे हथ्थ किसे दी आउण ना दिती डोर, गुड्डी अध विच उडाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मचाए शोर, गीत मेरा इक्को गाइंदा। मैं तेरा बाला निक्का छोहर, चौथा जुग वास्ता पाइंदा। मैनूं ख़ाली हथ्थ ना तोर, तेरे अग्गे झोली डाहइंदा। प्रभ तेरी सदा लोड़, तुध बिन कम्म किसे ना आइंदा। बौहड़ी

बौहड़ी बौहड़ी जाईं बौहड़, चार यारी संग ना कोए निभाइंदा। मुहम्मद नाता गया तोड़, ईसा मूसा नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार गए छोड़, फड़ गले ना कोए लगाइंदा। अन्त तेरे उत्ते सुट्टी डोर, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। मंगां वर मेरे भगवान, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। नव खण्ड पृथ्मी झुलाया कूड़ निशान, बचया कोए रहिण ना पाईआ। घर घर वाड़या पंज शैतान, दिवस रैण करे लड़ाईआ। किसे नज़र ना आए साचा काहन, लख चुरासी गोपी दए दुहाईआ। राम रमइया ना मिल्या आण, सीता सुरती ना कोए प्रनाईआ। नानक गोबिन्द करे ना कोए पहचान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पीर पैग़म्बर ना सिफ्त सालाहीआ। मक्के मदीने होया हराम, हुरमत सब दी रिहा गंवाईआ। साबत रहिण ना दिता कोए अमाम, सिदक सबूरी ना कोए हंढाईआ। घर घर वध्या कूड़ कुड़यारा काम, कलमा नबी सर्ब भुलाईआ। आपणी मनाई सब नूं आण, सिर सिर हुक्म मनाईआ। तेरा हुक्म कर परवान, चौदां तबक फेरा पाईआ। अन्त चरनी डिगा आण, जिउँ भावे लै चलाईआ। मैं बालक बाल अञ्याण, तेरी सिफ्त कहिण ना जाईआ। नव खण्ड पृथ्मी खेलया खेल महान, ख़ालक ख़लक ख़ाक विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम देणा इक्को वर, दर तेरा मोहे भाईआ। तेरे दर मंगी मंग, मेरे साहिब सच्चे गुसाँईंआ। लख चुरासी कीता नंग, नाता तोड़या भैणां भाईंआ। त्रैगुण माया मारया डंग, आत्म परमात्म होई जुदाईआ। सच दुआरे वेखे लँघ, घर घर फेरीआं पाईआ। सृष्ट सबाई होई रंड, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भेख पखण्ड, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। कर किरपा अन्तिम मोहे देवीं ना कोए दंड, दर तेरे सीस झुकाईआ। तेरे चरनां माणां अनन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरन कँवल मिले सरनाईआ। पुरख अबिनाशी दस्से हाल, अहिवाल आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा वेख्या खेल कमाल, अछल अछल तेरी वड्याईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, मनमति दए दुहाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। सच दिसे ना कोए दलाल, पल्लू हत्थ ना कोए फड़ाईआ। बिन हरि नामे होए कंगाल, वस्त अमोलक नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। प्रगट हो दीन दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख गुरसिख साचे सन्त लए उठाल, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए समझाईआ। साची सिख्या कलयुग सिख, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरे भगतां कोलों मंग भिख, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। तेरा अन्तिम वंडण हिस्सा हिस, दर्दी दर्द दर्द वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क जणाइंदा। साचा राह दस्स मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कवण दुआरे दिसे तेरा निशान, निशाना कवण रिहा झुलाईआ। कवण सोहे मन्दिर मकान, कवण खेड़ा सोभा पाईआ। कवण गाए साचा गाण, गा गा खुशी मनाईआ। कवण रूप करे ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां भेव चुकाईआ। साचे भगतां दस्से भेव, हरि साचा सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी अलख अभेव, अगम्म अथाह वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम गुर अवतार पीर पैग़म्बर निरगुण सरगुण लाए सेव, साची सेवा आप जणाइंदा। जिन्नां अमृत रस देवे साचा मेव, रसना रस ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त आप समझाइंदा। साचे भगत सुण लै जग, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जिन्नां मिल्या सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जन्म जन्म दी मिटी अग्ग, तृष्ना भुख मिटाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। आत्म जोती गई जग, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। दरस दिखाए उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म लडाए लड, साची गोदी आप सुहाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, चरन कँवल दए सरनाईआ। तिस दुआरे जा के बोल अलख, अलख अलख इक्क सुणाईआ। प्रभ प्रगट होया आप प्रतख, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। भगत मिलाए हस्स हस्स, दस्त बदस्त दस्त फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह रिहा जणाईआ। साचा संदेसा सुण चढ़या चा, घर साचे खुशी मनाइंदा। कवण वेला उठ उठ जां, आपणा पन्ध मुकाइंदा। जन भगतां चरनी डिग्गां जा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाइंदा। सच संदेसा एकँकार, एका वार सुणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग निरगुण सरगुण करदा रिहा विहार, अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, उठ उठ आपणा रंग रंगाईआ। साचा मार्ग दए सिखाल, साची सिख्या इक्क समझाईआ। दर जाणा बण कंगाल, मन हँकार ना कोए रखाईआ। गल पल्लू लैणा डाल, नेत्र नैण शरमाईआ। जा के दस्सणा आपणा हाल, चौदां सदीआं भेव खुल्लाईआ। निरगुण वसे नाल नाल, नज़र किसे ना आईआ। तेरा भगत बणे दलाल, भगवन लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग रिहा जणाईआ। भगत दुआरे जा कलयुग, कलकाती आप जणाइंदा। अन्तिम औध रही पुग, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी पैण वाली लुट्ट, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। सब दी जड़ देवे पुट, बचया कोए नज़र ना आइंदा। लख चुरासी भाग गए निखुट, आपणा भाग ना कोए वंडाइंदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। जन भगतां उपर हरि जू

जाए तुड्ड, अतुट आपणी दया कमाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट, निझर झिरना आप झिराइंदा। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जन्म जन्म दा कढ्ढे खोट, सच समग्री इक्क वरताइंदा। जन भगतां देवे इक्को ओट, आसरा सच्चो सच जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल श्री भगवन्त, हरि सतिगुर आप जणाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुगा जुगन्त वेख वखाईआ। नाम निधाना मणीआं मंत, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। जिस रचना रची आदि सो वेखणहारा अन्त, बेअन्त आपणा नाउँ रखाईआ। आपे बण बण साचा कन्त, लख चुरासी नार हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग मार्ग आप लगाईआ। सतिजुग मार्ग हरि करतारा, कलयुग अन्त अन्त लगाइंदा। कलयुग देवे सच सहारा, भगत दुआर इक्क वखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ हथ्थ मुनारा, मुनी ऋषी भेव ना आइंदा। लेखा जाणे रविदास चुमारा, कबीर जोलाहा राह तकाइंदा। उच्चे मन्दिर करे पुकारा, कूक कूक कूक अल्लाइंदा। वाह वा तेरी कुदरत परवरदिगारा, तेरा खेल नज़र किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार वेख्या वारो वारा, नित नवित वेस वटाइंदा। पीर पैग़म्बर गुर अवतार नाम आधारा, नाम

११६१ हट्ट इक्क चलाइंदा। अन्तिम खेल करे आप निरँकारा, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। महल अटल इक्क उसारा, सम्बल ११६१

आसण डेरा लाइंदा। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाइंदा। सतिजुग चले राह न्यारा, निराकारा आप चलाइंदा। भगतां वखाए भगत दुआरा, भगवन हरि जू आप प्रगटाइंदा। सेवा करे बण बण सेवक सेवादारा, चाकर

१२ चाक आप अख्वाइंदा । नामे तेरा कर्ज उतारा, साता दूआ जोड़ जणाइंदा। बहत्तरां कराए वणज वणजारा, हट्ट इक्को इक्क १२

वखाइंदा। कलयुग देवे सच सहारा, हरि साचा सच समझाइंदा। मिल भगतां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोल जैकारा, तेरा हौला भार कराइंदा।

* * * *